















ମହା ଅନୁଷ୍ଠାନର ସ୍ୱାଧୀନତା ନଷ୍ଟ ହେଉ ନ ଶୁଭିଚ୍ଛା ।

॥ अहंकारात्मा अहंकारात्मा अहंकारात्मा अहंकारात्मा ॥

संश्लिष्ट भूला १ टैला  
संश्लिष्ट भूला १ टैला

আমি "স্বাধীনতা" নামে একটি একমুখী  
উপায় ও কুবিধা লইয়া গমন করিয়া মর্জীয়ে ন-  
কম্পেই রেডিওরী কলিকাতা উপস্থাপনা-  
বিন হাজরা অনুবাদ পত্রিকা-র প্রকাশ করি-  
তে যেহেতু আমি একাদিকার প্রাপ্ত হইয়াছি-  
অতএব সম্বন্ধেই অ. দেশ-অনুবাদি কার্য-কর-  
বার সর্ব সাধারনকে বিজ্ঞাপন করা হইতেছে  
যে অন্য কেহ যেসংস্থানের প্রকাশিত অনু-  
বাদ আইন-অধীন হাজরা অনুবাদ প্রেরণ  
পত্রিকা-কাহে প্রেরণ করিবেন। যদি কেহ  
আহা করেন তবে তিনি আমার কতি পুণ্যে  
দাও হইবেন।

সংস্কৃত ভাষায় পুঁজীকরণের বিজ্ঞানগোষ্ঠী প্রতিষ্ঠা  
হবে।

विष्णुपञ्चमः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

ନାମନର ଅଢ଼ି ।

[illegible]

୧. ଶିଳ୍ପକର୍ମ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ବିନାମାମାନଙ୍କ ଓ ଶିଳ୍ପକର୍ମ କାର୍ଯ୍ୟ  
 ଗୋଟିଏସମାପ୍ତ ହୋଇଥିବା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମର ଅନ୍ତିମାଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିବା  
 ପାଇଁ କର୍ମୀ ସହିଯାଆନ୍ତେ । ଯେହାତ ଗୋଟିଏସମାପ୍ତ ହୋଇଥିବା  
 କାର୍ଯ୍ୟର ଶେଷାଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିବା ପାଇଁ କର୍ମୀ ସହିଯାଆନ୍ତେ ।  
 ଯେହାତ ଗୋଟିଏସମାପ୍ତ ହୋଇଥିବା କାର୍ଯ୍ୟର ଶେଷାଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିବା  
 ପାଇଁ କର୍ମୀ ସହିଯାଆନ୍ତେ ।

44. 1945. 1946. 1947. 1948. 1949. 1950. 1951. 1952. 1953. 1954. 1955. 1956. 1957. 1958. 1959. 1960. 1961. 1962. 1963. 1964. 1965. 1966. 1967. 1968. 1969. 1970. 1971. 1972. 1973. 1974. 1975. 1976. 1977. 1978. 1979. 1980. 1981. 1982. 1983. 1984. 1985. 1986. 1987. 1988. 1989. 1990. 1991. 1992. 1993. 1994. 1995. 1996. 1997. 1998. 1999. 2000. 2001. 2002. 2003. 2004. 2005. 2006. 2007. 2008. 2009. 2010. 2011. 2012. 2013. 2014. 2015. 2016. 2017. 2018. 2019. 2020. 2021. 2022. 2023. 2024. 2025. 2026. 2027. 2028. 2029. 2030. 2031. 2032. 2033. 2034. 2035. 2036. 2037. 2038. 2039. 2040. 2041. 2042. 2043. 2044. 2045. 2046. 2047. 2048. 2049. 2050. 2051. 2052. 2053. 2054. 2055. 2056. 2057. 2058. 2059. 2060. 2061. 2062. 2063. 2064. 2065. 2066. 2067. 2068. 2069. 2070. 2071. 2072. 2073. 2074. 2075. 2076. 2077. 2078. 2079. 2080. 2081. 2082. 2083. 2084. 2085. 2086. 2087. 2088. 2089. 2090. 2091. 2092. 2093. 2094. 2095. 2096. 2097. 2098. 2099. 2100. 2101. 2102. 2103. 2104. 2105. 2106. 2107. 2108. 2109. 2110. 2111. 2112. 2113. 2114. 2115. 2116. 2117. 2118. 2119. 2120. 2121. 2122. 2123. 2124. 2125. 2126. 2127. 2128. 2129. 2130. 2131. 2132. 2133. 2134. 2135. 2136. 2137. 2138. 2139. 2140. 2141. 2142. 2143. 2144. 2145. 2146. 2147. 2148. 2149. 2150. 2151. 2152. 2153. 2154. 2155. 2156. 2157. 2158. 2159. 2160. 2161. 2162. 2163. 2164. 2165. 2166. 2167. 2168. 2169. 2170. 2171. 2172. 2173. 2174. 2175. 2176. 2177. 2178. 2179. 2180. 2181. 2182. 2183. 2184. 2185. 2186. 2187. 2188. 2189. 2190. 2191. 2192. 2193. 2194. 2195. 2196. 2197. 2198. 2199. 2200. 2201. 2202. 2203. 2204. 2205. 2206. 2207. 2208. 2209. 2210. 2211. 2212. 2213. 2214. 2215. 2216. 2217. 2218. 2219. 2220. 2221. 2222. 2223. 2224. 2225. 2226. 2227. 2228. 2229. 2230. 2231. 2232. 2233. 2234. 2235. 2236. 2237. 2238. 2239. 2240. 2241. 2242. 2243. 2244. 2245. 2246. 2247. 2248. 2249. 2250. 2251. 2252. 2253. 2254. 2255. 2256. 2257. 2258. 2259. 2260. 2261. 2262. 2263. 2264. 2265. 2266. 2267. 2268. 2269. 2270. 2271. 2272. 2273. 2274. 2275. 2276. 2277. 2278. 2279. 2280. 2281. 2282. 2283. 2284. 2285. 2286. 2287. 2288. 2289. 2290. 2291. 2292. 2293. 2294. 2295. 2296. 2297. 2298. 2299. 2300. 2301. 2302. 2303. 2304. 2305. 2306. 2307. 2308. 2309. 2310. 2311. 2312. 2313. 2314. 2315. 2316. 2317. 2318. 2319. 2320. 2321. 2322. 2323. 2324. 2325. 2326. 2327. 2328. 2329. 2330. 2331. 2332. 2333. 2334. 2335. 2336. 2337. 2338. 2339. 2340. 2341. 2342. 2343. 2344. 2345. 2346. 2347. 2348. 2349. 2350. 2351. 2352. 2353. 2354. 2355. 2356. 2357. 2358. 2359. 2360. 2361. 2362. 2363. 2364. 2365. 2366. 2367. 2368. 2369. 2370. 2371. 2372. 2373. 2374. 2375. 2376. 2377. 2378. 2379. 2380. 2381. 2382. 2383. 2384. 2385. 2386. 2387. 2388. 2389. 2390. 2391. 2392. 2393. 2394. 2395. 2396. 2397. 2398. 2399. 2400. 2401. 2402. 2403. 2404. 2405. 2406. 2407. 2408. 2409. 2410. 2411. 2412. 2413. 2414. 2415. 2416. 2417. 2418. 2419. 2420. 2421. 2422. 2423. 2424. 2425. 2426. 2427. 2428. 2429. 2430. 2431. 2432. 2433. 2434. 2435. 2436. 2437. 2438. 2439. 2440. 2441. 2442. 2443. 2444. 2445. 2446. 2447. 2448. 2449. 2450. 2451. 2452. 2453. 2454. 2455. 2456. 2457. 2458. 2459. 2460. 2461. 2462. 2463. 2464. 2465. 2466. 2467. 2468. 2469. 2470. 2471. 2472. 2473. 2474. 2475. 2476. 2477. 2478. 2479. 2480. 2481. 2482. 2483. 2484. 2485. 2486. 2487. 2488. 2489. 2490. 2491. 2492. 2493. 2494. 2495. 2496. 2497. 2498. 2499. 2500. 2501. 2502. 2503. 2504. 2505. 2506. 2507. 2508. 2509. 2510. 2511. 2512. 2513. 2514. 2515. 2516. 2517. 2518. 2519. 2520. 2521. 2522. 2523. 2524. 2525. 2526. 2527. 2528. 2529. 2530. 2531. 2532. 2533. 2534. 2535. 2536. 2537. 2538. 2539. 2540. 2541. 2542. 2543. 2544. 2545. 2546. 2547. 2548. 2549. 2550. 2551. 2552. 2553. 2554. 2555. 2556. 2557. 2558. 2559. 2560. 2561. 2562. 2563. 2564. 2565. 2566. 2567. 2568. 2569. 2570. 2571. 2572. 2573. 2574. 2575. 2576. 2577. 2578. 2579. 2580. 2581. 2582. 2583. 2584. 2585. 2586. 2587. 2588. 2589. 2590. 2591. 2592. 2593. 2594. 2595. 2596. 2597. 2598. 2599. 2600. 2601. 2602. 2603. 2604. 2605. 2606. 2607. 2608. 2609. 2610. 2611. 2612. 2613. 2614. 2615. 2616. 2617. 2618. 2619. 2620. 2621. 2622. 2623. 2624. 2625. 2626

दिए गए पत्र ।

### দোমপ্রকাশের স্থান

अविद्यया

[illegible]

শ্রীমদ্বৈষ্ণব তৌমিক চাকার সত্ত্ব  
অ. মীন কামাধার উদীপ।

মোমস্বয়ং :

● 第 2 次試験

발행처: 서울특별시

१२७७ आर्य समाज के संस्थापक महाराज श्री

कृत्तिदत्त, कृत्तिदत्त कृत्तिदत्त

[illegible]

**विषयशृङ्खला :**

[illegible]

## विष्णुधाम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

३०२ श्री. कृष्ण-१६३ कविः ।

बुद्धिमानों ने

2000

विष्णुपत्र ६

[illegible]



ভাঙ্গরা যদি কোন নৈবশক্তিই পুনঃ  
জীবিত হন, তাহা হইলে বোধ হয় তাঁ  
হারা এককবার ভারতবর্ষকে তখনকার  
ভারতবর্ষ বলিয়া চিনিতে পারেন না।

১। রাজস্ব—ইইবৎসর পূর্বে আমরা  
ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের স্বার্থের অসঙ্গতি  
দেখিয়া সাতিলক্ষ শক্তি হইয়াছিলাম।  
হয় কোটি টাকা ক্রিপে পরিপূর্ণ হইবে,  
তাহা ভাবিয়া দিবসে ভাব হইয়াছিল।  
উইলসন সাহেব আরবাসের সমস্ত বিধান-  
করিতে আসিয়া ইনকম ট্যাক্স প্রচলিত ও  
লাইসেন্স ট্যাক্স ও নোট প্রচলন প্র  
স্তাব করিয়া যান। তিনি ব্যয় সংকল্প  
যে সমস্ত উপায় অবলম্বনের সম্ভা  
করিয়াছিলেন, অকালে মৃত্যু হওয়াতে  
সে সম্ভাবনা সিদ্ধ হইল না। তাঁহার  
মৃত্যুর পর লেড সাহেব কলিকাতায় আ  
সিয়া ব্যয় সংকল্পগুলি গুরুতর গ্রহণ  
করিলেন। তিনি দেখিলেন মৃত্যুবিধ কর  
যারা অসঙ্গতি দূর করিয়া আসা। বহু দিন  
অপরিমিত সৈন্য, ও নানাস্থকার অমান-  
শ্যক যাব থাকিবে, ততদিন কোন ক্রমেই  
অর্থের অসঙ্গতি দূর হইবার সম্ভাবনা  
নাই। তিনি তন্নিমিত্ত সৈন্য ও রাজ্য  
সংক্রান্ত ব্যয়ের সংকল্পকার্যে প্রবৃত্ত  
হইলেন। বাহারা পূর্বেই প্রচার অনু-  
বরণ করিয়া আসিতেছিলেন, তাঁহার  
ব্যয় সংকল্পের নাম শুনিয়া নিশ্চয়  
ইয়া উঠিলেন। কিন্তু লর্ড ক্যানিং ও স-  
র বাউল কিরাত কাহারও বাক্যে গণপাঠ  
না করিয়া লেড সাহেবের সভাপতি  
করিতে লাগিলেন। অতঃ পর মিলে-  
টারি ও সিভিল কিনাজ কমিসন নি  
যুক্ত হইলেন। কর্নেল বালফোর সৈন্য  
সংক্রান্ত ও টেম্পল সাহেব রাজ্য সংক্রা-  
ন্ত অন্য ব্যয় সংকল্পে প্রবৃত্ত হই  
লেন। আফিসের অনাবশ্যক কর্মচারি  
ক ছাড়ান হইল। কয়েটি জেলা অ-  
ধীক্ষকসহ রিভিউমাত্র করা হই

ল। এতদ্বারা গবর্নমেন্ট যে বিষয়ে যে ব্যয়  
করিতেন, তন্মত্ব কাহারও কাছা বিবেচ-  
না করিয়া ব্যয় সংকল্পে প্রবেশ করা  
হইল। এজেন্ট এগালীর দৃষ্টি হইল।  
ব্যয় সংকল্পের এমনি আগ্রহ হইল। জে-  
টিগ যে কিনাজ কমিসন কয়েকটি কা-  
লেজ উঠাইয়া দিবার প্রস্তাব করিলেন  
কিন্তু পীড়াদায়ক ভারতবর্ষীয় গবর্নমে-  
ন্ট এই প্রস্তাবের অনুমোদন করিলেন না।  
এবং কর্নেল বালফোর বহুসংখ্য সিপা-  
হী ও পুলিশ সৈন্য ছাড়াইয়া দিবার এ-  
বং এক লক্ষ দশহাজার সৈন্য রাখবার  
অনুরোধ করিলেন। ইউরোপীয় সেনার  
সংখ্যা কমাইয়া দিবার তাঁহার ইচ্ছা হি-  
ল, লেড সাহেব ও ভারতবর্ষীয় গবর্নমে-  
ন্টও সেক্রেটারিকে এবিষয়ের জন্য  
লিখিয়াছিলেন, কিন্তু কাঁহাদিগের চেষ্টা  
সফল হইল না। বাহা হউক, সৈন্য সং-  
ক্রান্ত অনেক ব্যয় সংকল্প করা হয়।  
লেড সাহেব এগেল নামে আরবাসের  
হিসাব দিয়া বাবস্থাপক সভায় বলিলেন  
আর মৃত্যুবিধ করের প্রয়োজন নাই।  
আরবাসের সমতাবিধান হইয়াছে। এই  
কথা শুনিয়া সকলে দ্বিগ্ন করিলেন লাই-  
সেন্স ট্যাক্স প্রবর্তিত হইবে না। কিন্তু লে-  
ড সাহেব পীড়াবশতঃ টংলও বাওয়াতে  
এবং চীন দেশে অধিকেনের মুদ্রা মূল্য  
হওয়াতে ১ লা আগষ্ট সব বাউল কি-  
ব লাইসেন্স ট্যাক্স প্রচলিত করিলেন।  
চল্লিশের অসংখ্য ধনি উদ্ভিত হইল।  
আসেনসরেরাও আইনের অর্থ বিশদরূপে  
বুঝিতে পারিলেন না। এই করসংগ্রহ  
বন্ধ রহিল। পরিশেষে লর্ড ক্যানিং স্ব-  
দেশ যাত্রাকালে এই ঘণিত আইন উঠা-  
ইয়া দিলেন। কাঁহাদিগের নিকট হইতে  
লাইসেন্স ট্যাক্স লওয়া হইয়াছিল, তাহা  
দিগকে তাহা কিরাইয়া দেওয়া হইল।  
একপে ভারতবর্ষের অর্থের অসঙ্গতি  
দূর হইয়াছে যদি ইউরোপীয় সৈন্য

কমাচিয়া হয়, করা হয় ও তাহা টংল  
নাহা স্থান করা হয় তাহা হইলে আ-  
মাদিগর ২০০ বাসে বাসে খাবা উদ্ভূত  
হইতে পারে। এখনও যেই ওয়েবর  
ব্যয় দিলে প্রায় দুই কোটি টাকা তদ-  
থাকে। গবর্নমেন্টের ক্রমঃ দ্রুত হই-  
তে। ইনকম ট্যাক্স উঠাইয়া যাইবে, সব  
সে এই প্রকার সম্ভাবনা করিতেছেন  
ওদিকে মাধ্যমিকের চাহিদা বজায়  
অন্যদানী কর উঠাইয়া দেওয়া আছে  
ন। কিন্তু ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্ট, সাধারণ  
লোকের ২০০ টংলীয় পদ বৈধে তাঁহা  
দিগের এই গাধনা অন্যায় বলিয়া হই-  
তে উৎপত্তা প্রদর্শন করিয়াছেন

২। বাবস্থাপক সভা—লর্ড ক্যানিং  
সি ১৮৫৩ অর্থে বাবস্থাপক সভার স্থি-  
তির বাস। বাবস্থাপক সোসাইটিজিব এ-  
এক জন বৈতনভোগী প্রতিদিন গব-  
জেনরলেব কোর্সিলের মেম্বরেরা ও  
শ্রম কোর্টে অফিস টেডার সভাপতি  
মনোনীত হন। বহুসংখ্য চার্লস উড  
ইন্ডের রাজবংশীয়দিগকে অর্ধকোটি  
টাকা দেওয়াতে সকলে অতিশয় বির-  
হন, তৎকালে সর বাউল পিকক বাবস্থ-  
পক সভায় আসীন হইয়া সবিশেষ সাহ-  
সহকারে তাহার কারণ জিজ্ঞাস করেন  
গবর্নমেন্ট লাইসেন্স বিলেন বিষয় বি-  
চনা করিতে বলিলে তিনি স্পষ্টাঙ্গরে  
বলিলেন, প্রচলিত করের ব্যয়ের হিসাব  
ন পাইলে সভা মৃত্যুবিধ কব স্থাপনে  
সহায়তা করিবেন না। কাঁহার এই দ্বি-  
প্রতিজ্ঞা ও সাহসিকতা দর্শন করিয়া  
ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টে ভীত হইয়া সেক্রে-  
টারিকে পত্র লিখিলেন। সরচারল  
উড ইংলণ্ডীয় মহানভার অনুমতি লইয়া  
পূর্বেই বাবস্থাপক সভা উঠাইয়া দিলেন  
তৎপরিবর্তে ভারতবর্ষের স্বতন্ত্র, বন্ধন  
এবং মোছাই ও সাম্রাজ্য স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র সভা  
সংস্থাপন করিবার আজ্ঞা করিলেন। এ

কল সত্য অত্র্য রাজপুরুষের ইচ্ছা  
পী। ও এদেশীয়েরা প্রবেশ করিবার অ-  
মতি পাইয়াছেন। ইহা এদেশীয়দিগের  
কটী উদ্ভি'র সোপান মনে হ'ল। জি-  
কোটের জজের আর সভ্য বালি'। সক্রি-  
শিত নহেন। কিন্তু গবর্নর জেনরল ইচ্ছা  
রিলে তাঁহাদিগের মত হইতে পারিবে।  
এবং মাস অবধি এই সকল সভার কার্য  
পারিত হইয়াছে। যে যুক্তি অবলম্বন ক-  
রয়া সভা সংস্থাপন হইয়াছে তাহাতে  
সভার স্বাধীনতা নাই। পরাধীন সভা হই-  
কালিকত কলকাতার প্রত্যাশা করাও  
য না। কিন্তু এদেশীয় ব্যবস্থাপকগণ  
দূর সাহস, রাজনীতিকতা ও অদে-  
শীভিত্তি প্রদর্শন করিতেছেন, তাহাতে  
এদেশের সচিব ইচ্ছা হইবে একপ  
শাসকরাও হইতেছে। রাজা দিনকরাও,  
মহা প্রমথকুমার ঠাকুর, রাজা প্রতাপচন্দ্র  
সিংহ প্রভৃতি সকলেই স্বাধীনমুক্তি হইয়া  
স্বদেশের পারদর্শিতা সহকারে নিজ নিজ  
কর্তব্য কার্য সম্পন্ন করিতেছেন। বিশেষ  
ভাবে রাজা দিনকরাও যেকোন অসামান্য  
ব্যক্তি। তিনি এদেশীয় প্রদর্শন করিতেছেন,  
সহ্যে নি এখানে রাজনীতিক  
নাথ্য প্রদর্শিত হইয়া বিশেষরূপে এ  
দেশের কল'এ দেশে পরিতে পারিবে  
মনে হ'ল।

৩। মুহুরি বিচারালয় প্রকৃতি—যে  
এক কাল, মহ'স'য় ভারতবর্ষে মুহুরি  
ব্যবস্থাপক সভা স্থাপন করেন, তাহা হই-  
স'য় সভার পেরি'ও উচ্চ হই-  
চারালয় স্থাপন করিবার আজ্ঞা হইল। সি-  
বিলিয়ানের দল তাঁ' যদি এখানে এখানে  
প'য় সকল এতটুকি করিয়া রাখিয়া  
ছেন। গুণ ও কার্যদক্ষতা থাকক, তাহ  
না থাকক, সিবি'স্থান হইলেই কাণ  
সহকারে উচ্চতর পদ পাইয়া থাকেন। য  
হাসকা এই কুৎসিত কথা আংশিক পরি-  
বর্তিত করিয়া অটলিতদিগকে উচ্চপদ

নিজ আজ্ঞা করিয়াছেন। ইহার মধ্যেই  
হইলেন অটলিত সহকারী সেক্রেটারি  
হইয়াছেন। কখনও মুহুরি মুহুরি দ্বার উ-  
দ্বাশিত হইবে

সদর আদালত ৩ স্থিতি কোর্ট এনড  
করা হইবে। উচ্চতে ১ জন বিচার  
পতি হইবেন। বর্তমান স্ক্রিম কোর্টের  
বিচারপতিরা, সদর আদালতে। সিবি  
লিয়ান বিচারপতিরা, একজন বারি-  
ফে' এবং অন্যজন এডভোকেট বিচার  
কার্যে নিযুক্ত হইবেন। সকলেই  
বসন সমান হইবে। এদেশীয় ও ইউরো-  
পীয় বালি'। রাজপুরুষদিগের বস্ত্র প্রভৃতি  
যে পক্ষপাত বিরাজমান দুই ১২, ১৩, ১৪-  
ববে তৎপ্রভৃতি দুই হইতেছে না।  
বিচারপতিরা ন'খা মধ্যে একতরফ হই-  
বেন।

১৮৬২ খ্রি' অবধি আবৃত্ত অবধি ম  
অবিদ্যার আইন ও কোর্টের আইন  
প্রচলিত হইয়াছে। এই আইনের আ-  
শিক দেখা আছে, তাহ আমরা অস্বীকার  
করি না, কিন্তু পাপতিয়ার দমন বিবরণ  
ইহার সবিশেষ উপযোগিতা দুই হই-  
তেছে। এই আইন প্রচলিত হইয়া গিয়া  
সংস্কার প্রভৃতি অনেক সমিতি কামি-  
নাছে। কু'ন দ্বারা তাঁ'র আ' হই-  
তেছে। তাঁ'র আইন প্রচলিত হইয়া  
এখন লোক-। কিন্তু ভারতবর্ষে ই-  
হার প্রচলিত হইয়াছে বহু প্রতিবন্ধক  
আছে। বিচারালয়ের দ্বার একটি  
শাখা প্রচলিত। মকদ্দমে কোর্ট আদা-  
লত প্রচলিত হইয়াছে। বহুজন দ্বারি-  
ফে' ও সদর আলা এই সকল পদ প্রাপ্ত  
হইয়াছেন। কিন্তু বারিফে'দিগকে তৎপদ  
স্থান করাতে সবিশেষ উপায় প্রদর্শ-  
না।

৪। পুলিশ—ভারতবর্ষের বিশেষতঃ  
বঙ্গদেশের পুলিশ অতি অধনা। ভারত  
এদেশে কনস্টাবুলের ২০,০০০ পুলিশ হই

রাছে। এই অশালী অনুসারে একজন  
স্বাবধারণক ও কয়েকজন সহকারী ও কয়েক  
জন, ইনস্পেক্টর ও দারগা নিযুক্ত  
হেন। মালিকোটে'রা আর পূর্বেই পুলিশ  
উপরে সাফা' সহজে কনস্টা' চালাই  
রিতে পারিবে না। একজন ক্রিম  
এবিষয়ের প্রধান কথা হইবেন।

৫। সৈন্য—যেমন একদিকে পুলিশ  
উৎকর্ষ সাধিত হইতেছে, তেমনি  
দিকে সৈন্যদল কমান হইতেছে।  
বর্ষে ভারতবর্ষীয় ও ইংলণ্ডীয় উভয়  
সৈন্যের একতর। সৈন্যদল বরা হই-  
ছে। এই নিয়ম হওয়াতে পূর্বেই  
সৈন্যের সেনাপতিদিগের কিঞ্চিৎ  
বিধা হইয়াছে। অনেক পেন্সন লা-  
ছেন। অল্পদিনের মধ্যেই সৈন্য  
কোম্পানির নাম লোপ হইবে  
নাই। এক্ষণে ১,১০,০০০ সিপাহী  
৮০,০০০ ইউরোপীয় সৈন্য ভারত  
আছে। গভর্ণমেন্ট আমাদিগকে ২২,০০০  
অকর্মণ্য সৈন্য বেতন  
হইতেছে। ইংলণ্ডে ও এখানে  
সৈন্যের জন্য আমাদিগের আর  
কোটি টাকা (বঙ্গদেশের রাজস্ব।)  
গিতেছে। ভারতবর্ষীয় গবর্নমে-  
ন্ট ইহার প্রতিবাদ করিতেছেন,  
ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট এ পর্যন্ত তাঁহা  
কথা কণপাতি করেন নাই।

৬। নোট—১ লা মার্ক অব-  
গেটে' নোট প্রচলিত হইয়াছে  
জু'ব বঙ্গদেশীয় ব্যাঙ্কের সহিত  
হইয়া গিয়াছে। লোক গবর্নমেন্টের  
ল'তে অসম্মতি বা অনিচ্ছা প্রকাশ  
হইতেছে না। অধিক পরিমাণে  
চলন ব্যপ সংস্থাপের একটি উ-  
পায়। ব্যাঙ্ক নোট ক্রমে লোপ  
হইবে, কারণ ব্যাঙ্ক যে নোট  
দাওয়া অব ব্যক্তি করিতেছে না।  
সেই নোট কোর্ট কোর্ট কোর্ট



[illegible]

নীল প্রধান প্রদেশে গমন করিয়াছেন।

৮। তুলা—আমেরিকার গৃহ বিচ্ছেদ ওয়াশিংটনের তত্ত্বাবধানে গেল। হইতে তুলা আনয়ন করিয়া হইল। ভারতবর্ষে তাঁহানিগের দৃষ্টি স্থিত হইল। ভারতবর্ষের গণপরিষদ 'মান' দিকে ক্রমসমর প্রেরণ করিলেন। 'মান' সকল নিকা বিক্রয় করিবার আবেদন হইল। চতুর্দিকে রাজপথনি প্রস্তুত হইতে লাগিল।

৯। রেলওয়ে—ভারতবর্ষের রেলওয়ে রূপান্তর প্রস্তুত হইতেছে। এদিকে কলকাতা হইতে মুম্বই, আগ্রা হইতে অমৃতসর, কলকাতা হইতে বরেনা, এবং মাদ্রাস হইতে মাদ্রাস পর্যন্ত রেলওয়ে সার্কট চলিতেছে। (সংক্ষেপে প্রায় সহস্রকোশ রেলওয়ে খুলিয়াছে)। ওদিকে মাদ্রাসের রেলওয়ে কলকাতার পুর্বে। সুন্দরবনের পুর্বে পুর্বে রেলওয়ে গাড়ি চলিবার সম্ভাবনা আছে। এই দুইটী রেলওয়ে সম্পূর্ণ হইলে বাণিজ্যের বিবিশেষ প্রসারিত হইবার সম্ভাবনা আছে।

১০। পবিত্র ওয়ার্ড—গবর্ণমেন্ট রাজপথনির বিষয়ে বিশেষ যত্নবান হইয়াছেন। ইনকমট্যাক্স হটেল ৩২ লক্ষ ও সাধারণ রাজস্ব হইতে প্রায় দুই কোটি টাকা দেওয়া হইয়াছে। বাণিজ্য ও তুলা বস্ত্রাদি করিবার সুবিধা করাই এই ওয়ার্ডের প্রধান উদ্দেশ্য।

১১। শিক্ষা—গবর্ণমেন্ট শিক্ষা-কাৰ্য্যে ক্রিষ্ণ নবোদয়ী হইয়াছেন। এ বিষয়ে আর দশলক্ষ টাকা দিবার প্রস্তাব হইয়াছে। বঙ্গদেশের রাজস্ব হইতে শিক্ষা-সংস্কারের বাটীর জন্য দেড় লক্ষ টাকা দেওয়া হইয়াছে। নীচে একটি আভিসাধারণ শিক্ষা-পন্থী স্থাপিত হইবে, ইংলও হইবে এ বিষয়ে আশা আনিয়াছে। চতুর্দিক

কেই বিদ্যাবিস্তারী উন্নতি দৃষ্ট হইতেছে। আত্মীয় শিক্ষা-পন্থী স্থাপিত হইলে সমস্ত ভারতবর্ষ আরও বিস্তৃত হইবে সম্ভব নাই।

১২। চুক্তি ও মারীভা—১৩২২ সন উত্তর পশ্চিমপ্রদেশ ও গজাপুর চুক্তি হইয়া বিস্তৃত লোকে প্রচলিত করে। ভারতবর্ষের সত্য আপনানিগের স্বাভাবিক সম্পত্তি হইতে গুণ প্রত্যয় বৈধিক সম্পত্তি দেব সহিত মিলিত হইয়া এক টানা করিবে। এ দেশের সকল স্থান হইতে টানা আনিতে লাগিল। ইংলণ্ডের লোকেরা নৈসর্গিক বদান্যতা হেতু প্রায় দশলক্ষ টাকা প্রদান করিলেন। প্রায় ছয়মাস কাল চুক্তি ছিল। বৈধিক সম্পত্তির সেক্রেটারি উড সাহেব ও কর্ণেল বেয়াডি এই বিষয়ে যথোচিত কষ্ট ও পরিশ্রম স্বীকার করিয়া চুক্তিপত্র লোকের মধ্যে বণ্টনিত করিলেন। মিসনরিসা মধ্যকালে ও সর্বমুখেই দরিদ্রের সমায় ভা করিয়া থাকেন। গজাপুর প্রদেশে নাগে একজন পাদ্রি যারপর নাই কষ্ট সহ্য করিয়াছিলেন। অনন্তর, বাঙ্গলা দেশে বারা নত, জিবেগী, চালিস, প্রভৃতি স্থানে মারীভা উৎস্থিত হয়। কলিকাতা রাজস্ব মারীভা দ্রব্যবন্দন হইয়া এ বিষয়ে যথোচিত সাহায্য দান করেন।

১৩। এতদেশীয় রাজগণের সম্মাননা—১৩২২সন এতদেশীয় রাজগণের সম্মানার্থ এক প্রকার স্মৃতি সম্মানচিত্র প্রস্তুত হইয়াছে। মহারাজ সিদ্ধিগা, হোলকার, পাতিয়ালা, বাজা প্রভৃতি কয়েক জন প্রধান রাজা এই চিত্র প্রাপ্ত হইয়াছেন। লড ডেগহাউসি এ দেশীয় রাজগণকে উপেক্ষা ও অমান্য করিয়া যে অধিপ্রস্তুত করিয়া যান, লর্ড ক্যানিং এ দেশীয় প্রধান ব্যক্তিগণের সম্মাননা প্রকাশ্যে তাহা নিষেধ করেন। কলকাতা তিনি এই উপায় দ্বারা অনেক কার্য সাধন করিয়াছেন।

১৪। মনোনিবেশ মাজিস্ট্রেট—ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্টের আশঙ্কানুসারে এতদেশীয় অনেক সম্ভ্রান্ত ব্যক্তিকে অতৈহনিক মাজিস্ট্রেট পদ প্রদত্ত হয়। পঞ্জাব ও অযোধ্যায় ইহার উৎকৃষ্ট ফল প্রত্যক্ষ হইয়াছে। বঙ্গদেশে এ প্রথা প্রসারিত হইয়াছে। কিন্তু পঞ্জাব ও অযোধ্যায় মাত্র এখানে ফল দর্শন হইতেছে না।

১৫। ভারতবর্ষের সভা—আমাদিগের দেশের যে দিনদিন প্রবৃদ্ধি হইতেছে, তাহা দৃষ্টে নাহারাও মন্দ নাই। বিদ্যা শিক্ষা ইহার প্রধানতম কারণ। কিন্তু রাজনীতিগণিত যে উন্নতি লাভ হইতেছে, তাহার প্রধান কারণ ভারতবর্ষের সভা। এই সভাকে এতদধর্ম ধন্যবাদ দেওয়া উচিত। এই সভা এখন জাতীয়দিগের সভা বলিয়া পরিগণিত হইয়া ক্রমে সমস্ত ভারতবর্ষের প্রতিনিধি বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন। এক্ষণে দেশের সমুদায় লোকই প্রায় জাতীয়দিগের মতে চলিতেছেন। শিবপুর, বারাসত, ও লক্ষ্মী নগরে শাখা ভারতবর্ষের সভা স্থাপিত হইয়াছে। সভার অনুরোধে গবর্ণমেন্ট অনেক কার্য করিয়াছেন ও করিতেছেন। সম্ভ্রান্তিকার সমাজের উপরে টাক্স পরিত্যাগ ইহার একটি প্রধান প্রমাণ। মফস্বলের স্থানে স্থানে যনি শাখা ভারতবর্ষের সভা স্থাপিত হয় এবং সেই সেই সভা যদি এ দেশীদিগের শিক্ষাকার্যে মনোনিবেশ করেন, সুস্পকাল মধ্যেই এ দেশের সমগ্র প্রবৃদ্ধি হইয়া উঠে।

পূর্বদীর অন্য অন্য অংশে যে সমস্ত ঘটনা ঘটিয়াছে, তাহার মধ্যে আমেরিকার গৃহযুদ্ধই প্রধান। যেসকল সম্ভ্রান্ত ওয়াশিংটনে, তাহাতে ও যুদ্ধ প্রভৃতি শেষ হইবে একপ বোধ হইতেছে। টোনিতে স্বাধীনতা প্রদত্ত হইতেছে। রোম ও পিসি ডিয় আর সকল স্থানের লোকই রাজা বিবটের ইমানিউয়েলের স্বাধীনতা স্বীকার করিয়াছে। রুশিয়া



সম্রাট কৃষকদিগকে জমিদারদিগের দাস হইতে মুক্ত করিয়া দিয়াছেন। তদ্বার স্বাধীন শাসনশাসন স্থাপন করিবার ইচ্ছা ক্রমশঃ বলবতী হইতেছে। ইংলণ্ডের প্রধান ঘটনার মধ্যে রাজকুমার 'গালবার্টের' মৃত্যু। তিনি ইংলণ্ডেশ্বরের পাণ্ডিত্য করিয়া অধিবাসনসমূহ সার্বভৌমত্বের পক্ষে যথোচিত সহায়তা করিতেছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে সকলেই দুঃখিত হইয়াছেন।

আমলাদেব মঙ্গল নবদম

সমিচা হইয়াছে

এই প্রস্তাব গীতাংস' বড় সহজ নয়। অনেক অনেক ২. ১০১ গীতাংস' লিখিত পাইয়াছেন, কিন্তু অদ্যাপি ইহার প্রকৃত শিক্ষা হয় নাই। কেহ অর্থ প্রত্যর্থ, কেহ আইনের, কেহ বা আমলার কেহ বা বিচারপতির প্রতি দোষারোপ করেন। অর্থ প্রত্যর্থ দোষাবাদীরা নগেন, এদেশের লোকেরা বিশ্বাসী, প্রবন্ধ ও আলোচনী (সিবেশ না জানিয়া সাধারণ্যে এইরূপ দোষারোপ করা হইয়া থাকে) বাণীরা নন্দনা করিতে যায়, তাহারা আদালতে প্রায় সত্য কথা কয় না। সুমার বিষয়ে বিশ্বাসীরা আশঙ্ক করিয়া রাখে। নন্দনা কার্যদিগের এই একরূপ সংসার আছে, মিথ্যা না করিলে মকদ্দমা হয় হয় না। কেহ, যে স্থলে সকলই মিথ্যা, সেখানে বিচারপতি কি করিতে পারেন? সচিবের পক্ষ না পাইলে তিনি কিরূপে সচিব করিবেন?

বাঁহারা আইনের দোষ নেন, তাহারা বলেন, আইন অনুসারে বিচার করিবে। এখানে বিচারকর্তাকে বাহ্যিক উপকরণ উপরেই নির্ভর করিতে হয়।

এখন একতরফা দাবী দাবী। যে ব্যক্তি সাক্ষাদান করে আদালতে অধি

ও বিচারকর্তাকে অধিক প্রবন্ধনা করিতে পারে, সেই প্রশংসিত হয়। যে ব্যক্তি র বাধ্য নিয়ম করিয়া মকদ্দমার জয় পরাজয়ের অমুগতি নিতে হইবে, সেই যদি এইরূপ নিয়ম আকর হইল, তাহা হইলে যথার্থ সচিবের দর্শন প্রত্যক্ষ কোথায়?

আমলাদেবকর্তৃককারিরা বহিরা থাকেন, আদালতের আমলারাই সচিবের জাতের মতানুযায়ী। সাক্ষ্য, সচিবের দাবী দাবী প্রায় আদালতের আদালতে প্রবেশ করেন না। অসচ্চরিত ব্যক্তি দ্বারা আদালত পরিপূর্ণ। তাহা দৃশ্য ব্যক্তিদিগের কিছুই অসাধ্য নাই। উল্লেখ পাইলে ন্যায়কে অন্যায় বলিয়া এবং অন্যায়কে ন্যায় বলিয়া বিচারকর্তার মতিভ্রম জগাইয়া দেওয়া তাহাদিগের বড় চুকু হইয়াছে।

বাঁহারা বিচারকর্তাকে দ্বিভিত কান, তাহারা বলেন, বিচারপতিদিগের প্রায় সকলেরই এক একটা দোষ আছে। কতকগুলি অতিশয় উজ্জ্বল। তাহারা উজ্জ্বল বস্তুঃ বিচারক্রমের জটিল পথে প্রবেশ করিতে পারেন না। সুতরাং বাদি প্রতিবাদির ন্যায়ান্যায় নিকপণ তাহাদিগের পক্ষে সহজ হয় না। কোন কোন বিচারকর্তার পক্ষপাত দোষ আছে। তদ্বিক্রমে তাহারা বিচার দানে অন্ধ হইয়া যান, ন্যায়ান্যায় বুঝিতে পারেন না। কেহ কেহ অত্যন্ত মন্দ মেধ, তাহারা জটিল মকদ্দমার অস্তিত্ব দেখে কোনক্রমেই সমর্থ নহেন। কোন কোন বিচারকর্তার বিলম্বিত বুদ্ধি ও বিবেচনা শক্তি আছে, সচিবের প্রধান প্রতিদ্বন্দ্বক পক্ষপাতাদি দোষও নাই। কেবল এক আলস্য দোষের দাস হইয়া তাহারা মকদ্দমার সূক্ষ্ম ও যথার্থ বিচারে অক্ষম হইয়া থাকে।

যে সকল ব্যক্তি বিচারকর্তার দোষ

কেই সচিবের প্রতিদ্বন্দ্বক বলিয়া নির্দেশ করেন, আমরা তাহাদিগের একেবারে সম্পূর্ণ অনুমোদন করিতেছি। বিচারকর্তার যদি কোন লোভাদি পরিত্যাগ পূর্বক সত্য সত্যকারে কার্য করেন, অর্থ প্রত্যর্থের প্রবন্ধনাই বলা, সচিবের অনুমোদন বা দিতাই বলা, আর আমলাদের উল্লেখ কোচ গ্রাহ্যই বলা, কিছুতে কিছু কনিত হইতে পারে না। নিরোধ, অসম, ও পক্ষপাতাদি দ্বিভিত বিচারকর্তার নিকটেই আমলার প্রভুত্ব ও অর্থ প্রত্যর্থের প্রবন্ধনা থাকে। আমরা হাজার অনেক উদাহরণ দর্শন করিয়াছি। যে বিচারসনে নিয়া একজন বিচারকর্তা যে আমলা, আইন ও যে অর্থ প্রত্যর্থ লইয়া অর্থ প্রত্যর্থ বিচার করিয়া গিয়াছেন, সেই বিচারসনে আইন আইন হইয়া সেই আইন সেই আমলা ও সেই অর্থ প্রত্যর্থ লইয়া আইন পর ব্যক্তি সূক্ষ্ম ও সচিবের করিতেছেন। আমরা যে বিষয় লিপ্যন্তর করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি, তাহা নিজেই তাহার সাক্ষ্য দ্বারা দৃষ্টব্যমান অছি। আমাদিগের এক পাপাত্ম প্রবন্ধনা আমাদিগের টেক দিব্যের কিয়দংশ অধিকার করিয়া গিয়াছিল। এখন আদালতের বিচারকর্তা প্রতিপক্ষকেই সেই বিধেয়ভিত্তি দেন। সেখানে আপীল করিয়া আমাদিগের বিষয় আমাদিগের চেষ্টা। যদি আপীল আদালত না থাকিত, আমাদিগের বিষয় হইতে বঞ্চিত হইয়াছিল। বিচারকর্তাদিগের দোষে সচিবের বাধ্য অন্ধ বলিয়াই আপীল আদালতের হইয়াছে। বিচারপতিদিগের দোষ অন্ধ বলিয়াই আমরা মকদ্দমা বিশেষে আপীল রহিত করিবার প্রস্তাবে অনুমোদন করি না।

অন্য বদর্শে এ বিষয়ের প্রসঙ্গ হইয়াছে। সে এই—তাহার অজ্ঞের বিচারকর্তার অপটুতা নিবন্ধন যথেষ্ট অনিষ্ট ঘট







अत्रिंशत् साहस्रं दिवसि।  
अ। क ( साहस्रं दिवसम् ) २५०००



৩৫৯তম ডিবিআইসি-এর কার্যক্রম

कर्मचारी मंडल। यह विभाग मन्त्रालय कर्मचारी मंडल  
अधीन कार्य करता है। विभाग के अन्तर्गत निम्नलिखित

— ३३३ —

# সোমপ্রকাশ

এবর্তমান প্রকৃতিহিতায় পার্শ্বিক সরস্বতী প্রতিমতী ন দীপ্তা

ভাগ ১ } সন ১২৬২। ২ বৈশাখ। ইং ১৮৬২ ২১ এপ্রিল { দৈনিক মূল্য ১ টাকা।  
খণ্ড ২য় } বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

—••—

সোমপ্রকাশ প্রকাশকের প্রতি।

চৈত্র মাস অতীত হওয়াতে অনেকের  
সোমপ্রকাশের মূল্যকাল অতীত হই-  
তে, অতএব তাঁহাদিগকে বিনয় পূর্বক  
জ্ঞান দিতেছি, তাঁহার অগ্রগত পূর্বক  
করিয়া আগামী সর্বত্র অগ্রিম মূল্য প্রে-  
দেব।

—••—

## বিজ্ঞাপন।

সোমপ্রকাশের স্থান পরিবর্তন।

সোমপ্রকাশ যন্ত্র এতদিন যে স্থানে ছিল,  
সেই স্থানেই ১ লা ভবন তাহা পরিভ্রমণ  
করা হইয়াছে। অতঃপর আগামীপক্ষে প-  
ত্র লিখিতে হইলে আপাততঃ কলিকাতা  
সংকল্পে লিখিত হইবে। পরে আমরা  
নিবন্ধন করিয়া লিখিব।

## বিজ্ঞাপন।

প্রতি মাসের গবর্ণমেন্টের গেজেটে যে  
কল আইন ও সরকারি আদর্শ এবং রাজ-  
স্বত্ব বিজ্ঞাপন প্রকাশ হয় তাহাবর্তন অবি-  
নয় বাজালী অগ্রবাদ উত্তর করিয়া। নব  
বর্ষের সংহিতা নামক পত্রিকাভায়ে প্রতি  
মাসে প্রতি মাসে অগ্রিম প্রকাশ করিতেছি  
এবং অগ্রিমভায়ে প্রতি মাসে প্রকাশ  
করিতেও অগ্রিম হইয়াছি। তাইনামের  
বাঙ্গালী অগ্রবাদ সাপ্তাহিক পত্রিক, দৈনিক  
পত্রিকাভায়ে প্রকাশ করিবার একাধিকারী  
হইবার জন্য ১৮৬৭ সালের ২০ আইন মতে

সংকল্পে রেজিষ্টারী করিয়াছি। এখন আমি  
সাধারণের রাজ নিয়ম লিখন এবং স্থান  
উপস্থাপন ও সুবিধা সংস্থাপন করিয়া সকল  
গবর্ণমেন্টে রেজিষ্টারী করিয়াছি। এখন আই-  
নামের বাঙ্গালী অগ্রবাদ পত্রিকাভায়ে প্রচার  
করিতে কেবল আমি একাধিকার প্রাপ্ত হই-  
য়াছি, অতএব গবর্ণমেন্টের আদেশ অনুযায়ী  
ব্যক্তি করণার্থ সর্ব সাধারণকে বিজ্ঞাপন কর-  
য়াইতেছি যে অন্য কেহ যেন তিন মাসের  
প্রকাশিত সংসার আইনামের বাঙ্গালী অগ্র-  
বাদ প্রেরণী পূর্বক পত্রিকাভায়ে প্রচারন ক-  
রেন। যদি কেহ তাহা করেন তবে তিনি  
আমার কতি পুরণের দায়ী হইবেন।

জিরাফচন্দ্র ভৌমিক

চাকর মদন আদীন আদালতের উদীল।

## বিজ্ঞাপন।

সর্ব সাধারণকে জ্ঞাত করা যাইতেছে  
যে আমার চক্রে অর্থ কর্মসূচ্যে এক জন  
মকদ্দা মদন ১০ টাকা মাসিক বেতনে সরকার  
হইয়াছে যে কেহ উহার নিমন্ত উদ্দেশ্য হই-  
বেক সেই সাধারণ প্রতিষ্ঠা পত্র ৫ মকদ্দার  
নমুনা সংলিখিত দপত্র আমাকে পাঠাইবে,  
উহা দৃষ্টে যেমত বকুল চর পক্ষাৎ জ্ঞাত করা  
যাইবেক।

র. ওলদি দী } চাকর একলিউটিক চকি-  
১৮৬২ ১১ ৬০ } নিয়ম বাওলদি দীতিদ্রম  
সত্য।

## বিজ্ঞাপন।

সেবরেণ্ড লভ সাহেবের প্রতিমূর্তি

মূল্য ১ টাকা।

সংকল্পে বর্তমান পুস্তকালয়ে ও বাঙ্গালী  
রে ১০২ নং ভবনে তত্ত্ব করিলে পাইবেন

বাঙ্গালীভাষা ১ টাকা।

মূল্য ১০ টাকা।

সংকল্পে বর্তমান পুস্তকালয়ে বিক্রয় প্র-  
দত্ত আছে।

## বিজ্ঞাপন।

ঐযুক্ত চক্রেচন্দ্র বিদ্যাসাগর ও ঐযুক্ত  
সেবেজনাথ ঠাকুরের প্রতিমূর্তি দ্বিতীয়বার  
প্রদত্ত করা হইয়াছে। ইহার প্রত্যেক খণ্ডের  
মূল্য এক টাকা। সংকল্পে বর্তমান ও বিদ্যাসাগর  
নীচে ৮ নং গৃহে তত্ত্ব করিলে পাইবেন।

এন, সি, বোম্বাই প্রেস।

## সোমপ্রকাশ।

১ ই বৈশাখ।

১৮৬২ ৬০ অবের আর বার।

লেন্ড সাহেব গত বুধবার ১৮৬২.৬.৩  
অবের আর বার প্রসঙ্গ করিয়া দুই বর্ষ  
অধিক কাল এক দীর্ঘ বক্তৃতা করিয়াছেন  
উইলসন সাহেব স্মৃতিবিধি কর স্থাপন  
ও তৎপ্রস্তাব করিয়া যেমন সকলের বি-  
ব্রিষ্ট ও অবশোভাজন হইয়া যান, লেন্ড  
সাহেব তেমনি ব্যাতিলাভ করিলেন  
অল্প দিন হইল, পাঠকগণ জ্ঞান করিয়া  
ছেন, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট লাইসেন্স  
উঠাইয়া দিয়াছেন, এবারে আর এক  
আনন্দকর সমাচার জ্ঞান করুন। যাহা  
গের পাঁচ শত টাকার মূল্য আর, উ. হা.  
গকে কর দিতে হইবে না; পাঁচ.৫ টাকা  
উহ আনন্দ সাধিত করিলে পতক  
চারি টাকা কর দিতে হইবে।



জেনির লোকেরা যে এই উৎপাদ হইতে  
মুক্তি লাভ করিলেন, ইহা সামান্য আস্থা  
দেব বিবরণ নহে। এই স্থিতি কর এক  
কালে কবে উঠিয়া যাইবে, আমরা  
এখন এই ভীতীকা করিতেছি। লাই  
সেন্স টাক্স রহিত করা বল, আর ইনকম  
টাক্স হ্রাস করা বল, উভয়ই লেভ  
সাহেবের বন্ধে হইয়াছে। লেভ সাহেব  
মার্কেন্টের কাপড়ের শুল্ক কমাইয়া পাঁচ,  
ও হুতার শুল্ক ৩।০ টাকা করিয়াছেন।  
আমিকানী সন্মাক, সরাপ ও কাগজের  
মাল্যও কমান হইয়াছে। যাহার যে  
প্রার্থনা ছিল, লেভ সাহেব আংশিক  
তাহা পূর্ণ করিয়াছেন, কাহাকে বঞ্চিত  
করেন নাই। ইহা লেভ সাহেবের লোক  
বশতা ও বিনয়প্রাচিতার পরিচয় প্রদান  
করিতেছে।

লাইসেন্স টাক্স উঠিয়া গেল, ইনকম  
টাক্স ও বস্ত্র শুল্কের শুল্ক কমিয়া গেল,  
তথাপি ব্যয় অপেক্ষা প্রায় ছেড়কোটি  
টাকা আর অধিক হইবে। বর্তমান  
বৎসরে সমুদায় ভারতবর্ষে ৪২, ২১,  
৯০, ৯০০ টাকা আয় হইয়াছে। আগামি  
বর্ষে ৪৩, ৭৬, ৬২০০০, টাকা আয়  
হইবার সম্ভাবনা আছে। অনেক  
বাস সাধ দিয়া এই হিসাব ধরা হই  
য়াছে। অধিকন্তর বাক্স এক্ষণে গতে  
২৫০০ টাকায় বিক্রয় হইতেছে, কিন্তু লেভ  
সাহেব ১২০০ টাকা বাক্স গণনা করিয়া  
হিসাব করিয়াছেন। লবণে আপাততঃ  
কিছু কিছু কম আয় হইতেছে, তথাপি  
একপ সম্ভাবনা আছে, অধিক না হউক,  
পূর্ব বৎসরের মত আয় হইবে। কলকাতা  
মোটে ৪৩ কোটি টাকা আয় নিঃসন্দেহ  
করিয়া মাইতে পারে। আমাদিগের  
অধিশেষ আস্থার বিবরণ এই, ভূমিতে  
১০ লক্ষ, ইন্ডাস্ট্রি ৩০ লক্ষ ও পাবলিক  
২০ লক্ষ অধিক আয় হইয়াছে।  
কিন্তু এই সকল আয় হইলে কেবল

এক ভূমিতে অধিকতর আয় হইত সন্দেহ  
নাই।

১৮৬২। ৬৩ অব্দে ভারতবর্ষে ৩৫,২০  
৫৫২১০ টাকা আয় হইবে। বর্তমান বর্ষে  
[ ১৮৬১।৬২ অব্দে ] ৩৬,৪৬,৩৩,০২০ টাকা  
আয় হইয়াছে। এ হিসাবে ৫৫,৭৭,৮৮০  
টাকা আয় সংক্ষেপ হইতেছে। কিন্তু যথা  
র্থ ব্যয় অর্থাৎ সুদ, রেলওয়ের ফান্ডির  
টাক্স বাৎসরিক করিলে ২৫ কোটি ব্যয়  
হইয়াছে। সেনা দলের ব্যয় সংক্ষেপই  
হইবার প্রধান কারণ। বাৎসরিক মধ্য  
ব্যয়ই প্রধান। অন্য অন্য বর্ষের স  
হিত এতৎসংক্রান্ত ব্যয়ের মূল্য-তিরেক  
করিলে স্পষ্ট প্রমাণ হইবে, এ বিষয়ের  
বিস্তার ব্যয় কমিয়াছে যথাঃ

| বর্ষ     | টাকা ব্যয় |
|----------|------------|
| ১৮৬১। ৬০ | ২০২০২ ১০৭০ |
| ১৮৬০। ৫৯ | ১৫৮৬৮ ৮০০০ |
| ১৮৬১। ৬২ | ১২৮০০০০০০  |
| ১৮৬২। ৬৩ | ১২২০০০০০০  |

ভারতবর্ষে যদিগকে ইংলণ্ডে অর্থব্যয় সে  
না দলের যে ব্যয় দিতে হইতেছে, লেভ  
সাহেব এক প্রকাব তহবিল প্রতিষ্ঠা করি  
য়া যে কথা বলেন সে এই—

“ ভারতবর্ষের নামে ইংলণ্ডে যে সেনা  
আছে, তাহাদিগের জন্য আমাদিগকে  
রখা ব্যয় করিতে হইতেছে। ইংলণ্ডীয়  
গবর্নমেন্ট স্বীকার করিয়াছেন, দেশে  
যদি ইউরোপীয় সৈন্য আছে, হুতাপ  
করা বশতঃ তাহাদিগের সংখ্যা কমিয়া  
গেল তাহাদিগের পরিবর্তে আর সুতন  
সৈন্য প্রেরিত হইবে না। কলকাতা একপ  
বোধ হইতেছে যে অল্প কাল মধ্যে এখন  
বন্দোবস্ত হইবে আমাদিগের প্রয়োজন  
মত ইউরোপীয় সৈন্য থাকিবে। যদি ইং  
লণ্ডীয় গবর্নমেন্ট পূর্বে এই সম্প্রদায়  
রণ করিতেন, তাহা হইলে ভারতবর্ষ ঘোর  
তর বিপদের সম্মুখে এক গুরুতর হইতে  
হইত হইতে পারিতেন। কিন্তু শেষ মুখ

পরম মুখ; আমরা বিপদ হইতে উত্ত  
হইয়াছি। এক্ষণে আর অগণিত ইউ  
পীয় সৈন্য মাই : অনাবশ্যক সৈন্য দ  
পদ শূন্য হইলে তাহা আর পরিপূর্ণ  
হইবে না। আমরা একপ বিশ্বাস  
যাহে যদি ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট পূন  
আপনাদিগের সুবিধা হেতু ১৪০০০  
বা ১৫০০০ সৈন্য ইংলণ্ডে রাখিয়া তা  
বর্ষ হইতে তাহাদিগের বেতন লন, যে  
সেক্রেটারি ইন্টার নিবারণ করিবেন, এ  
দ্বারা স্পষ্ট প্রমাণ হইতেছে, যে  
সাহেবের অর্থতঃ ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট  
এই কথা বলা হইয়াছে, আমরা এত  
তামাদিগের সুবিধার জন্য প্রতি বৎস  
কয়েক কোটি টাকা অপব্যয় করিল  
কিন্তু আমরা আর তাহা করিব না। যা  
হউক দেখা যাইবে, ভারতবর্ষে গবর্ন  
এই প্রতিজ্ঞা পালন করিতে পারেন কিন  
হইবে। ৬৭। আমাদিগী ও রণানীর সুবি  
হেতু রক্ষা প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত এ  
মত আর এক কোটি টাকা দেওয়া হই  
হনকর টাক্স হইতে ৩৮ লক্ষ টাকা দে  
য়া হইয়াছে। বিদ্যা শিক্ষা ও রাস্তা  
কন্য প্রতি প্রেসিডেন্সিতে সুতন কর  
পন করা হইবে। তমাদিগের কর হ  
তবে বন্দোবস্ত সুতন কর আদা  
উপায় কি ? পান - পান ও তমাদ উত্ত  
সমান। তমাদেব কর সে সুতন পরিচ  
হইয়াছে, পানের করও সেট সুতন পরি  
ত্যাগ করা উচিত, অপর, বিদ্যা শিক্ষা  
সংক্রান্ত কর কোন ক্রমেই আমাদিগে  
অনুমোদিত নহে। বিদ্যা যে এমন প্র  
নীষ পদার্থ, করদ্রুত হইলে ইহাও  
লের নিত্য বিদিত হইয়া উঠিবে।

একটি বিশেষ আস্থার বিবরণ  
বিদ্যা বিষয়ে পূর্ব শুল্ক ৫০ লক্ষ টাকা  
৩৭। হইয়াছে। মশ বৎসর পূর্বে সমুদায়  
ভারতবর্ষের শিক্ষার জন্য ১১ লক্ষ  
ব্যয় দেওয়া হয়। বিদ্যাই দেশের

গা লাভের মূল। গবর্ণমেন্ট সেই বিদ্যা  
বিয়ে দে পরিমাণে সান করিবেন, সেই  
বিমাণে প্রমাণ সৌভাগ্যশালী হইবে।  
জার সৌভাগ্য হইবেই রাজার সৌ  
ভাগ্য।

পরিশেষে আমাদিগের মনের ভাব  
কি না করিয়া এ প্রস্তাবের উপসংহার  
কি বিবেচ্য হইতেছে না। ভারতবর্ষ যেন  
রাবব লেভ সঙ্কেতের ন্যায় সদয় ও দ্রুত  
ত রাজসংক্রান্ত কার্যকারক প্রাপ  
ব্যয় সংক্ষেপ দ্বারা রাজ্যের অর্থ  
সমৃদ্ধি বিধান সম্ভব। পাকিস্তান  
হারা পাকিস্তানকে অকার্য করপীড়া  
ন, তাঁহারা যেন রাজসংক্রান্ত প্রাণ  
সাকারক হইয়। চরিত্রবর্ধে না আট  
ন। তাদৃশ দুর্ভাগ্যকর পরবশ বাকি  
ই ভারতবর্ষের যত কষ্টের কারণ।

জুতা খুলিয়া সম্মান প্রদর্শন।

লর্ড ডেলহৌসি অনেক বিষয়ে  
আমাদিগের চিরস্মরণীয় হইয়াছেন। কি  
হেঁচ, বি ক্ষান্তি বৈধ, কি এদেশীয়দিগের  
অবমাননা, অনুধাবন করিয়া দেখিলে  
কি লাভ। মহাদেশেরই মূল। তাঁহার  
কর্তব্য দর্শন করিয়া, একদেশীয়দিগকে  
অপমান করা ইউরোপীয়দিগের একটি  
কর্ম হইয়া উঠিয়াছে। এক বার্তা জাতি  
বিদ্যা যুগ হইল, অমনি তাঁদের একেরা  
রাজ্যের এ দেশের যাবতী। লোককে পা  
ন নিতে আরম্ভ করিলেন। কয়েক মহা  
তজ্ঞা দিল্লীতে সিপাহী দিল্লীতে হইল  
অফিসে যাবতীয় ভারতবর্ষের নৃশংস  
রত্ন বালিয়া সমুদায় দেশ উৎসন্ন দিল  
প্রস্থান হইল। কয়েক জন হইল প্রহর  
গজ চুরি চাষিল, অমনি সমুদায় রাজ্য  
নকে চোর বলা হইল। আমরা কথঞ্চিৎ  
সকল বিষয়ে উপেক্ষা করিতে পারি  
কি লাভ ডেলহৌসি জুতা খুলিয়া ইউ  
রোপীয়দিগের প্রতি সম্মান প্রদর্শনের

যে নিয়ম করিয়া যান, তারা কোন ক  
মেই উপেক্ষণীয় নহে। বৃহৎ জীলোকের  
বেশ বিদ্যাস, অবিরেকির শাসনভাৱে  
২৭, অনতিক্রম্য পণ্ডিত বসিয়া পরিচর  
দান এবং জুতা খুলিয়া সম্মান প্রদর্শন  
এ গুলি নিত্যক অসহ্য।

লর্ড ডেলহৌসি এই নিয়ম করিয়া  
যান যে একদেশীয়েরা যখন গবর্ণর জেনে  
রলের দরবারে ও প্রধান আদালতে যাই  
যেন তখন তাহাদিগকে জুতা খুলিয়া যাই  
তে হইবে। ইউরোপীয়েরা টুপি খুলিয়া  
অধামের প্রতি সম্মান প্রদর্শন করেন।  
এ দেশীয়দিগকে জুতা খুলিয়া সেই সম্মান  
প্রদর্শন করিতে হই। এই বৃত্তি আইন  
প্রচলিত হওয়া অবধি আমাদিগের দে  
শের তেজস্বী তত্ত্ব লোকেরা কোন দরবারে  
বা সাধারণ স্থলে যাইতে চাহে না।  
অঙ্গ দিন হইল, সুরত নগরের জজ এক  
জন পারসীকে জুতা খুলিয়া এজল সে  
অসিত্তে বলেন, পারসী তাহাতে অসম্মত  
হন; পরে বিচারপতির সহিত তাঁহার  
অনেক তর্কবিতর্ক হয় শেষে সচিব  
তাঁহাকে জুতা হইয়া আসিতে দিলেন।  
এই বিবরণ শুনি বোম্বাই নগরে অসমান  
হইতেছে। ততঃ সটতে রিডিউ পার  
সীকে গালি দিয়া তদা প্রতিকারী  
অতিথাদের হাত হাতা কথা গান টুঁড়ি  
বাধ করিয়াছেন। কিন্তু শেষে এই সি  
দ্ধান্ত করিয়াছেন যাহা বিলম্বিত জুতা  
ও সোজা পরিধান তাহাদিগকে এই নিয়  
মাদ্বারা করা উচিত নহে। এই সিদ্ধান্ত অ  
ন্য কোর্টের সহিত সন্ধেহ নাই। বাংলা হউক,  
ত হউক সর্ব প্রধান পত্রিকা টাইমস  
অব ইন্ডিয়া নিজ অপকপাতিকা প্রদর্শন  
করিয়া এই বৃত্তি আইনকে এককালে  
উৎসর্গ দিবার অনুরোধ করিয়াছেন।

যখন আলেকজান্ডার পারস্যদেশ জয়  
করিয়া তত্ৰত্য নগর পরিধান করেন, তখন  
লে তাঁহার সেনাপতিগণ অস্ত্রের বিরুদ্ধে

হইয়াছিলেন; কিন্তু সেই সেনাপতির  
যদি এই সনতে উপস্থিত হইয়া ইউরো  
পীয় সভ্যতার জাতির উজ্জ্বল সম্মান  
পাইবার আশা দেখিতেন, তাহা হইলে  
তঁহাদের কি তাব অস্ত্র? ভারতবর্ষ  
ইউরোপীয়েরা তাবেন, ইউরোপীয়েরা  
এ দেশীয়দিগের আরাধ্য। ভারতবর্ষ  
বরাহ অবতার হইয়াছিলেন বলিয়া বি  
সবল পুত্রেরই চরণে দণ্ডবৎ পতিত  
হইয়া প্রণিপাত করিতে হইবে। অতঃ  
ইউরোপীয়েরা এমনি অভিমাত্রী হই  
উঠিয়াছেন, অতঃ অসম্মত ক্রটি দেখি  
নেই এককালে কোণে অধীর হইয়া  
ঠেন এবং সমান্য সম্মান লাভ হইলে  
তাঁহাদের সচিবের পরিসীমা থাকে না  
সমাজ চিরকাল একবিধ অবস্থায় থাকিবা  
নহে। বিদ্যা, সভ্যতা ও বাহ্যবস্ত্র প্রভৃতি  
ক্রমশঃ রীতিনীতি সকল পরিবর্তিত হই  
ছে। পূর্ব রাজা ও নবাবদিগের সম্মুখে  
সভ্যতা প্রণিপাত করিতে হইত, এক  
কোন ব্যক্তি অসম্মত ব্যবহার বলিয়া তাদৃ  
প্রদমে যুগ প্রদর্শন না করেন? সম  
নের বিষয়ে গবর্ণমেন্টকে সম্মত হইতে  
চাওয়া থাকিতে হয়। কুকিয়া রাজা  
গত্রে নিজ চরণ স্পর্শ করাইয়া সম্মান  
প্রদর্শন করে। পূর্বজন ইউরোপীয়  
জারা পোপের পদ চুম্বন করিতেন। এ  
থেকে কোন্ রাজা তাদৃশ কার্যে সম্মত  
বেন?

গাউন ভেবেব নিকটে কৃতজ্ঞতা  
প্রদর্শনার্হ সভা।

গত বুধবার ভারতবর্ষীয় সভা গু  
প্রান্তে সাহেবেব নিকটে কৃতজ্ঞতা প্র  
দর্শন একটি সভা হইয়াছিল। সকলে দি  
বসিয়াছেন সেন্টমন্টে গবর্ণর এক  
সুস দিয়া তাঁহার এক চিত্রিত প্রতিম  
দেখেন, কিন্তু আমরা এটি প্রস্তাবে  
সম্মত হইতে পারিতেছি না। যে বার



কৃষকদিগকে বহুকালের অভ্যাসে ও তা  
সহ শৃঙ্খল হইতে মুক্ত করিয়াছেন; যিনি  
চতুর্দিকে চুরপসার প্রতিবন্ধকতা সত্ত্বেও  
সমস্কপিত বিষয় পরিত্যাগ করেন নাই,  
যিনি বারবার তর্জিক তৎসিত ও বিজ্ঞত  
হইয়াও কখনকালের নিমিত্ত বিচলিত হই  
ন নাই; যিনি প্রবল শত্রুগণকে ভুজ ও  
প্রধানের সহিত বিবাহ করিয়াছেন, তাঁহার  
কি এই পুরস্কার? লর্ড ক্যানিং বরাবর  
উচ্চ শ্রেণির সম্মান ও নীলকরদিগের স  
হায়তা করিয়া আসিয়াছেন। তিনি এক  
প্রস্তরময়ী প্রতিমূর্তি পাইলেন, কিন্তু  
গ্রাণ্ট সাহেবের এক চিত্রপট মাত্র করা  
হইল? শুনি। অজ্ঞানিত হইলাম বাবু  
লাল বিহারী দে এ বিষয়ের প্রতিবাদ ক  
রিয়াছিলেন। সত্যোত্তর। তাঁহাকে নিরস্ত  
করিবার নিমিত্ত এই কথা বলেন, অধিক  
টাকা আদায় হইলে এক প্রস্তরময়ী প্রতি  
মূর্তি করা হইবে।

তারতবর্ষীয় সভা বা করেন করুন, কৃষ  
কেরা আজিত মৌরী হইয়া রহিয়াছেন  
কেন? তাঁহারা যদি তাহাদিগের উদ্ধার ক  
রিবার অরণ্য চাঁদা না করেন তাহা হইলে  
তাহাদিগকে অকৃতজ্ঞ হইতে হইবে। আ  
মরা তাহাদিগকে অধিক দিতে বলিতেছি  
না। এতোক ব্যক্তি দুই আনা করিয়া দি  
লেই যথেষ্ট হইবে। কেন প্রজা হইতে  
অসম্মত হইবেন? আমরা ঢাকা চণ্ডীম  
কুমিজা ময়মনসিংহ পাবনা বরিশাল  
রাজশাহী মুরসিদাবাদ নদীয়া যশোহর  
প্রভৃতি স্থানের লোকদিগকে অনুরোধ  
করিতেছি তাঁহারা অবিলম্বে এক সভা  
করিয়া চর্চা করুন। মধ্যম শ্রেণীর লোক  
দিগের এ বিষয়ে যত্নবান হওয়া অতিশয়  
আবশ্যিক। তাঁহারা কি এ অতীত সম্মা  
দনে সমর্থ নছেন? তবে তাঁহাদিগের কি  
সের জীৱিকি ও বিসের পোষক? কোথায়  
বা তাহাদিগের স্বদেশানুগাম?

নীলকরদিগের কর সংগ্রহ প্রসঙ্গ  
লটরা বালাসুবাদ।

সামান্যতঃ যদি প্রতিবাসির ও দল  
নিস্থির ব্যক্তিদিগের যেকোন পরস্পর  
জিগীষা দেখিতে পাওয়া যায় আমাদিগের  
কর্তৃপক্ষ রাজপুরুষদিগেরও সেইরূপ জি  
গীষা বৃদ্ধি বলবতী দৃষ্ট হইতেছে। এত  
খুলক কেবল যে প্রকৃত বিষয়ের মীমাংসা  
হওয়া চাহে হইয়াছে একপন্থে, চুরা  
চারেরাও প্রশ্রয় পাইতেছে। বোধ হয়  
পাঠকগণ বিম্বৃত হন নাই, পূর্বে সর  
বার্টন কিরার গবর্নর জেনেরলের না  
কপ কর্তৃক দ্বারা আদৃত হইয়া নীলকর  
দিগের কর সংগ্রহ প্রসঙ্গ লটরা অফিস  
লেণ্টেনেন্ট গবর্নর গ্রাণ্ট সাহেবকে অনু  
চিত্ত বাস্তবিকরূপে ও তিরস্কার করেন।  
গ্রাণ্ট সাহেবও তাহার সমুচিত উত্তর দা  
নে বিরুদ্ধ হন নাই। তারতবর্ষীয় গবর্নর  
জিগীষা পরবশ হইয়া পুনরাবৃত্তি গ্রাণ্ট সা  
হেবের প্রদত্ত উত্তরের প্রত্যাশায় দাঁড়  
করিয়াছেন। কিন্তু বিষয়ের বিষয় একে, তার  
তবর্ষীয় গবর্নরমেণ্টের এখনও পদাধি এই  
রূপ সংস্কার আছে যে তাহারা মধ্যম  
শ্রেণীর দ্বারা নীলকর ও প্রজাগণের পর  
স্পর বিবাদের মীমাংসা করিয়া দিবেন।  
গবর্নর জেনেরল স্যরঃ স্বল্পে স্বীকার  
করিয়াছেন, রাজনা লইয়া নীলকরদিগের  
সহিত প্রজাগণের যে বিরোধ হইতেছে,  
নীলকর তাহার আদি কারণ। ইহাও অব  
গতিত পয়েই তিনি কহিয়াছেন, পূর্বের  
ন্যায় নীল বপন না হওয়াতে নীলকরেরা  
অপত্তঃ বাকি রাজনা আদায় করিবর,  
রাজনা বৃদ্ধি করিবার এবং কেহ এড়াইত  
না, পূর্বে এই প্রতিপ্রায় কৃষি পরিমাণ  
সবিস্তর পূর্ণ অধিকতর যত্নবান হই  
তেন।

পূর্বন্ত নীল হইতেছে না বলিয়া যে  
সকল ব্যক্তি খাতিয়া বাড়াইতেছে, আর  
পাছে নীলকরের সম্পর্কে গেলে নীল

বপন করিতে হয়, এই ভয়ে যাহারা নী  
কর সম্পর্কে ঘাইতে চাহিতেছে না, মা  
দুতঃ তাহা সে উত্তরের বিবাহ নিষ্পত্তি  
হইবার সম্ভাবনা আছে কি না একপন্থে তা  
হা বিবেচিত হইতেছে। বিবাহ কারণে  
উন্মুলন না করিয়া বিরোধ মীমাংসা  
হইয়া বিড়ম্বনা। সেই কারণসত্ত্বে যদি ক  
তিম মীমাংসা করিয়া দেওয়া সম্ভাবি  
হয় সচরাচর প্রবলে ও চূর্বলে যেক  
বিবাহ নিষ্পত্তি হইয়া থাকে সেটুকু  
বে সাক্ষ্য নাই। দরিদ্র কৃষকদিগকে  
পাঠক নিঃসংশয় কতিপয় হইতে  
বে। পশ্চাত্তম মীমাংসাতে কতান্তরে  
অনর্থের মূল হইয়া উঠিবে। কলতঃ  
গবর্নর জেনেরল মধ্যম শ্রেণীর করিয়া মীমা  
সা চেষ্টা না করিয়া যদি নীল প্রধান  
দেশের কৃষির নিবন্ধ করিয়া রাজনা  
দিত্ত করিয়া দিতেন, সাময়িক কৃত্তর  
লাভ করিতে পারিতেন।

এ উত্তর কালোত্তর বালাসুবাদ।

উপার্টমেন্ট

যে সমস্ত ব্যক্তি কলিকতা মেডিকেল  
কালেক্টর বালাসুবাদ উপার্টমেন্টে  
করেন, তাহাদিগের পুস্তকেব সমস্ত  
ও শিক্ষার অংশঃ প্রকৃতি বা একটি  
নিয়ে উল্লেখ দ্বারা প্রকৃতি পূর্ব  
বালি আমাদিগের নিম্নে এক  
প্রতিপত্তি পত্র পাঠাইয়া দিয়াছেন, আমি  
তাহার কিম্বদন্তি এই পত্র গ্রহণ করিয়া  
প্রদত্তা বেটেলের কালেক্টর বালাসুবাদ  
উপার্টমেন্টে ডাক্তারিগণের পত্রের কথা  
লিখিয়া তাহাও পত্রের পত্রের বিষয়ই  
খিতে গম বিদ্য ভক্তি বিজ্ঞান ভয়ে সোম  
হয়। বোধকরা বিদ্য মান্তের উল্লেখ ক  
দাউতে।

প্রথম পুস্তকের অধ্যায় দ্বিতীয়, নম  
অধ্যায়। দ্বিতীয় শিক্ষকদিগের অনা  
চতুর্থ, গবর্নরমেণ্টের উপপক্ষ। প্রথম, জাতি  
রাজ্যের ভাষা ইংরেজী ৮, ১৮৮১ খ্রি. ৮

নাম : প্রকারণ সংকল্প ব্যবসায়ী টোলার  
 টোলার ন্যায় বাজাল। ডিপার্টমেন্টের ডা-  
 টাগকে অধিকাংশ পুস্তকই বহুতে লিখিয়া  
 দেওয়া হয় ইহা ও ডিপার্টমেন্টের যে বস্তু  
 তাহা সচক্ষেই জানে। অতএব করিতে  
 পারেন। কেবল এই করি ওতাব্যক্তি অপকার  
 হয়। প্রকৃতরূপে শিক্ষারও অনেক বাধা  
 দিয়া থাকে। মহাশয়! এ বৈশেষ যে সকল  
 ডিক্টে মেরিকেল কলেজে স্থাপিত হইয়া  
 ছন, তাহারা বিকিঃ মনোযোগ করিলে  
 তাহাদের পুস্তকাদি অসম্ভব দূর বিক্রে প-  
 ন। (কম ডিপার্টমেন্টের বস্তুদিগের নিম্ন  
 দর্শনীয় হই হইতেছে, তাহাব কারণ বি-  
 লম্বয়ে আলি সমর্থ নহি।

দ্বিতীয়, সমগ্রদ অক্ষত।। কিন বৎসর  
 হইয়া এই বাজাল। ডিপার্টমেন্টের হাউ-  
 সের নিখার কাল। ততকাল প্রিন্সিপল  
 টি নিয়ম করিয়া বান মে, এ দিন বৎসরে  
 দেওয়া হই বৎসর কলেজের শিক্ষা শেষ করিয়া  
 তার এক বৎসর কাল কেবল হাসপাতালে অস্ত্র  
 চিকিৎসা শিক্ষা করিতে হইবে। ইহা  
 বৎসর ২০১১ কালের মধ্যে আরো বিদ্যা  
 অগ্রসর শিক্ষা করা নিতান্ত অসম্ভবিত।  
 অগ্রসর শিক্ষা করা দুরে থাকুক, অতি  
 বিদ্যাক বিষয় কলিঃ ভালরূপে শিক্ষা হয়  
 । কিন বৎসরের পরিবর্তে যদি চারি অ-  
 বা পাচ বৎসর নিয়ম করা হয়, তাহা হইলে  
 কলিঃ ব্যাপ্তি হইবার সম্ভাবনা আছে।

তৃতীয়, শিক্ষকদিগের অনাস্থা।। শিক্ষক  
 ডিপার্টমেন্টে গাণন ও গাণন অধ্যাপনীয় বিষয়  
 কলি যথা কলিঃ উপদেশ দ্বারা শীঘ্র শীঘ্র  
 শেষ করিতে পারিলেই আপনাদিগের কলিঃ  
 শেষ হইল মনে করিয়া থাকেন। কিন্তু  
 প সময়ে মধ্যে দুরত বিষয় কলি শিক্ষা  
 করা ডিপার্টমেন্টের সাধারণ কলি। তাহারা  
 স বিবেচনা করেন না।

চতুর্থ, গবর্নমেন্টের উপেক্ষা।। গবর্নমেন্টে  
 দি মনোযোগ করেন, নিঃসন্দেহ উপরি উক্ত  
 বিষয় কলিঃ দোষ সংশোধন করিতে পারেন।  
 গবর্নমেন্টে কি অন্য যে ভবিষ্যে মনোযোগ  
 করেন না বলিতে পারি না।

পরে প্রেরক মেডিকেল কলেজের বা-  
 জাল। ডিপার্টমেন্টের বিষয় যে যে কথা  
 লিখিয়াছেন, তাহাও এসটি অসম্ভব  
 নহে। এই ডিপার্টমেন্টের কলিঃ বস্তু হই  
 লে তৎকালে আমাদিগের অন্তঃকরণ  
 এই উদ্দেশ্যে থাকে, গবর্নমেন্টে কেবল  
 প্রজাগণকে ছোত দিবার নিমিত্তই এই ডি-  
 পার্টমেন্টের সৃষ্টি করিয়াছেন। উক্ত প্র-  
 কৃতরূপ শিক্ষার স্থান করা গবর্নমেন্টের  
 অতিশ্রুত নহে উক্ত বদল শিক্ষার অনু-  
 করণ স্থান করা হইয়াছে। না অন্যতম  
 ক্ষার সল্পপায়, না আছে নিমিত্ত বাস্তি-  
 নিগের যথোচিত উৎসাহ দান। তবে  
 তাহারা যমসন্তোষের দেনীয় বৈদ্যদিগের  
 আলোচনা করিতে। গবর্নমেন্টে আবার কত  
 কলিঃ মনের দ্বিতীয় মনোনিবেশ প্রস্তুত ক-  
 রিয়া দিতেছেন। বাজাল। ডিপার্টমেন্টের  
 ছাত্রগণ! আমাদিগের এই লেখালে কলিঃ  
 হইও না। আমরা প্রকৃত কথা কহিতেছি।  
 আমাদিগের গবর্ন সুশিক্ষিত হইতেছে না।  
 তখন আমাদিগের হইতে সমগ্র দেশেই  
 সম্ভাবনা আছে। অনেক কাজ কলি মত  
 জামিলেও কলিঃ চলে বটে কিন্তু এ  
 কাজটা। পঁচ। কাট কলি মত জামিলে  
 চলে না। সে ময়েব নহে। ও দোষ তা-  
 মাদিগের নহে, গবর্নমেন্টে ও মাদিগকে  
 এই বিভ্রমের জেলিয়াছেন। উক্ত মত  
 মাদিগের লজ্জিত ও কলিঃ হইবার বিষয়  
 কি।

গবর্নমেন্ট যদি মেডিকেল কলেজের  
 বাজাল। ডিপার্টমেন্টের সংস্কার ক্রিয়ায়  
 যত্ন দান ছন, কলিঃ হইতে পারেন কি  
 না ও বৎসর উপায় অবলম্বন করিয়াই বা  
 সেই সংস্কার করিতে হইবে, এক্ষণে কলিঃ  
 যম বিবেচিত হইতেছে। প্রাপ্যতঃ কিন  
 বৎসর কাল বাজাল। ডিপার্টমেন্টের হাউ-  
 সের শিক্ষার সময় বিকলিত হইয়াছে  
 এবং এই সকল ছাত্র পণ্ডিত্যের উত্তীর্ণ হই-  
 রা কর্মার্থী হইলে উদ্যোগকে অতি যৎ

সামান্য বেতনে নিয়োজিত করা হই-  
 থাকে, কিন্তু এই সময়ের ও বেতনের কলিঃ  
 করিয়া দেওয়া কিছু বড় কঠিন কর্ম নয়  
 বাজাল। ডিপার্টমেন্টের চিকিৎসা  
 প্রণয়নই অতিশয় দুরত হইতেছে। যাহা  
 মেডিকেল কলেজে শিক্ষা করিয়াছেন  
 তাহারা অর্থোপার্জনেই ব্যস্ত সমস্ত, তা-  
 হারা যে স্বতঃপ্রসূত হইয়া আত্মক প্র-  
 ণয়ন করিয়া এ অসম্ভব দুর করিয়া দিবে  
 । স প্রজ্ঞাশা অক্ষ। গবর্নমেন্টকে এ  
 যম সনিবেশ মনোযোগী ও কলিঃ  
 কলিঃ অর্থ ব্যয় করিতে হইবে। তাহারা  
 প্রথমে কলিঃ ব্যক্তিকে মনোনিবেশ করিয়া  
 কিছু অধিক বৎসর ভালরূপে চিকিৎসা  
 পাত্রে সুশিক্ষা প্রদান করুন, পশ্চাৎ  
 সকল ব্যক্তিকে প্রস্তুত প্রণয়ন কার্যে নিয়ো-  
 জিত করিবেন। গবর্নমেন্টকে তাহাদিগের  
 মাসিক হাউ মিক। করিয়া দিতে হইবে  
 একপ করিলে তাহারা নিশ্চিন্ত মনে প্র-  
 ণয়নে সমর্থ হইবেন, অতীত সিদ্ধি  
 বে সম্ভব নহে। যত দিন লোকে স্ব-  
 উৎসাহী হইয়া এদ্বিধ কার্যে প্রস্তুত  
 ছন, তত দিন রাজসাহায্য নিতান্ত অ-  
 শাক। আমরা প্রাচীন কালের যে সম-  
 উৎসাহী প্রস্তু দেখিতে পাই, তাহাও অ-  
 কাশ রাজসাহায্য সাহায্য বলেই হইয়াছে

—

আমরা কলিঃ সঙ্কট শীকার ক-  
 তেছি বহুসময় দুরত্ব সমাজের অর্থ  
 সামগ্রিক। ১২৬৭ সালের। আর বাস  
 তির বিবরণ পুস্তক প্রস্তু হইয়াছি। যে  
 আর বস্তু স্থিতির বিবরণ এই -

| আয়                      | ব্যয়     | স্থিতি   |
|--------------------------|-----------|----------|
| ৩৩৮৫০/৫                  | ১২৮২৫০/১৫ | ২১০২০/০  |
| আয়ের বিবরণ।             |           |          |
| মাসিক দত্তব্য            |           | ১২১৮১০/০ |
| বার্ষিক দত্তব্য প্রাপ্তি |           | ৬৫       |
| এককালীন দত্তব্য প্রাপ্তি |           | ৫৪১০/০   |
| হাওলাতি টাকার মুদ্র      |           | ২৩ ১১/১০ |





বাহু টেকলাসচক্রে বহু-বিধি বিক্রয় করি  
সংসদে পরিবেশ লাভ করাতে প্রথমবার  
তাহাকে ১০০০ টাকা পুরস্কার দিয়াছেন।

গোষ্ঠী সাউন্ডে রিভিউ সম্পাদক বলেন  
মহারাজ সিদ্ধিলা বোম্বাই নগরে বাউন্ডেছেন।  
একটি জমজমাট রাজা ইংলণ্ডে যাইবেন।  
কুসংসার নিগত ক্রমশঃ শুরু হইতেছে।

যেখানে এডমন্টস্ট্রিটের বেসতা আছে,  
এই সত্য সত্য উইলিয়ম ডেনিসনের মিকটে বি-  
ডি-সি অধিকারের পোষী হইয়া এক আবেদন  
পত্র প্রদান করিয়াছেন। সিডি-সি বন্ধের অর্থ  
এই পত্রীগ্রামে যে সকল দুই পতিত আছে,  
অধিকারের তাহা আপনাদিগের অধীকারের  
অধীনত করিয়া লয়ন। তাহারা চিরকাল এই  
অর্থ ভোগ করিয়া আসিতেছেন। সত্য উইলি-  
য়ম ডেনিসন ডিআর্জিগের আবেদন গ্রাহ্য  
করিয়া বলিলেন “আমার এ বিষয় বিবেচনা  
করিবার সময় নাই ৩ টা বড় গ্রীষ্ম।

বিব্রেট বিভাগের জেলের অধ্যক্ষ ডাক্তার  
করবিশ কলিকাতায় আসিবান সময়ে বর্ধ-  
বান শুনিবেন। লেপটনেন্ট ফর্দন ডেনিস নামক  
এক জন আধিদর ওলাউঠায় আক্রান্ত হই-  
য়াছেন। তাহাকে মর্দন করিবার জন্য করবি-  
লক অভিযোগ করা হয়, কিন্তু বাঙ্গালীয় শকট  
ডািরা ঘটনা বলিয়া তিনি তাহা করেন নাই,  
এজন্য ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট তাহাকে পর-  
চাউ করিয়াছেন।

একটি পরীক্ষাভীর্ণ সি.বি.লি.রানিগকে ল-  
ইয়া সংবাদ পত্র মহাআন্দোলন হইতেছে।  
এই যুবকজিগের দুঃস্বভাব প্রকাশ হই-  
তেছে। “কম্পিটসন ওয়ালারা ৩ শেমে উ-  
পনিবেশের গবর্ণরের ন্যায় হইয়া উঠেন চে-  
খিতে পাউ।

দুই জন ইউরোপীয় নাবিক এক যাক  
চুইট চুটি করাতে তাহাদিগের এক মাস কারা  
বাসের আদেশ হইয়াছে।

আর এক জন ইউরোপীয় চুটি করাতে তা-  
হাৎ সেসিরনে মর্দন করা হইয়াছে। কমে  
নবক গুলজার হইতেছে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন সুখিমানার  
কমিশনর ডাক্তার বোম্বাই বিক্রম নামক সংবাদ  
পত্রের সম্পাদককে হাওয়াইয়া দিয়াছেন। কবি-

সংসদের অধিকারত কোন বিষয় লেখা ইহার  
কারণ। পত্রাবে স্বাধীনতার আধিপত্য রহিত  
করাতে ১২ জন সংসদ কেওঅব উত্তিয়ার ম  
লেন লোকের এক জির পার।

ইংলিস নামক এক জন ইউরোপীয় এক মত  
টাকার ব্যাক মোট চুটি করাতে তাহাকে সে-  
সিরনে মর্দন করা হইয়াছে। কেওঅব ইতি-  
রা ও ইংলিসমান প্রকৃতি এখনও কি ইউ-  
রোপীয়দিগের খতর ও এদেশীয়দিগের খতর  
আলোচনা রাখিবার চেষ্টা করিবেন?

উত্তর পশ্চিমাকলে এক জন ইউরোপীয়  
মর্দন রহিত আরও করিয়াছে। তথ্য ক্রমশঃ  
চুটিয়া ইউরোপীয়ের সংখ্যা রহি হইতেছে।  
ইহারাই কি উপনিবেশকারীদিগের আদর্শ?

গ্রীক সাহেবের মর্দনার্থ কর্তব্য অবধার  
নের উদ্দেশ্যে ভারতবর্ষের সত্যক্ষে এক  
মত হইয়াছে।

গত সপ্তাহে আর মত মত টাকার গবর্ণ-  
মেন্টে কাগজ বিক্রয় হইয়াছে।

কেওঅব ইতিয়া সম্পাদক এদেশীয়দিগের  
স্বরাগানে অবিকতর প্রকৃতি দেখিয়া আক্ষেপ  
করিয়াছেন। ইউরোপীয়দিগের সংসর্গে  
এ দেশীয়দিগের এই বিদ্যারই বিলকণ লিখা  
হইয়াছে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন, গত চারমাস-  
উত্ত আক্ষা দিয়াছেন প্রধানতম বিচারালয়  
হইতে ইংলণ্ডীয় প্রিভিকৌন্সিলে যে সমস্ত  
যোকককার আপীল হইবে সিগাল রিমেবু-  
সারকে তাহার সংক্ষেপ রূপে লিখিয়া দিতে  
হইবে।

আসাম হইতে সংসদ আসিয়াছে তত্ত্ব্য  
পোলবোগের কিঞ্চিৎ শান্তি হইয়াছে।

আমরা শুনিয়া চুখিত হইলাম রাজা  
মিনর রাও পীড়িত হইয়াছেন।

টোনসে হইতে বেলগোনে নিম্নলিখিত  
সমাচার আসিয়াছে। বিদ্রোহীরা অব্যাপিত  
হীনবল হয় নাই। সালের ২০ জ্যৈষ্ঠ পথের মধ্যে  
যত বিদ্রোহী আছে ইংলান্ড ৬ ক্রান্তী রশত  
রির অধ্যক্ষের তাহাদিগের সহিত মর্দন করা  
করিতেছেন। সাইহতে আর ৮০০০০ পলায়িত  
ব্যক্তি আসিয়াছে তাহাদিগের মর্দনকে আছা  
র যেওরা করিয়া হইয়া উঠিয়াছে। পিঞ্চি ও

আপান হইতে কোন সিঁচন সংবাদ আসিবে  
নাই। নাবিকের মর্দন অপর পরে সম্রাটের  
সেনারা যুদ্ধার্থে আগমন করিয়া গুলজিত হই-  
য়াছে।

নিউগো হইতে সংবাদ আসিয়াছে বিদ্রো-  
হী দিগের এক মত আহাঙ্ক দুইজন অধিকার  
করিবার জন্য প্রস্তুত হইয়াছে।

অন্য জোহালে বহুলোকের মর্দন হই-  
বে, তথ্য অনেক পুস্তক ও উৎকৃষ্ট মধ্য-  
দি প্রচলিত হইবে।

সম্রাট পত্রাবে জেলের প্রস্তুত করা  
মত মর্দন নির্দিষ্ট হয়, অনেক তাহা মর্দন  
করিয়া মর্দন হইয়াছেন। আলিপুরের জেলের  
মত্যাতি সাধারণের সম্মুখে উপস্থিত করা না  
হয় কেন?

এ, এ, রবটস সাহেব পত্রাবে রাজস্ব  
বিষয়ের কমিশনর হইয়াছেন। রবটস সাহেব  
ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সভার সভ্য হই-  
বেন।

লাহোর প্রিভিকৌন্সিল সম্পাদক বলেন কর্তার  
পুরে যে আকিসরের মর্দকীদিগের প্রতি দুর্ব্য  
বহার করিয়া খুঁত হন লেপটনেন্টগবর্ণর তাহা-  
দিগের উপর অতিশয় বিরক্ত হইয়াছেন।

একজন ক্রিচি কয়েকটি পুলিশ ও কম্পাস-  
চুটি করাতে তাহার দুই মর্দন কারাবাসের  
আদেশ হইয়াছে।

হরকরাসম্পাদক বলেন মর্দনার নামকসেফে-  
টারি আকিসের একজন কোরাণী ২০০ টাকা  
বেতনে হুতম কর্তাবুলারি পুলিশের একজন  
মর্দকারী হইয়াছেন। রাজ্যের অগাধুটে এই  
বেলা ভরিয়া বাইবে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন কিসার নামক  
একজন সিবি.লি.রানি জিবাখুরের রেসিডেন্ট  
হইয়াছেন। মিলেটারিরা আর রেসিডেন্ট হই-  
য়া থাকেন।

পরিষিটের মত্যাতি অতিশয় বিশ্বখ্যার  
রাখা হয় উক্তসম্পাদক তাহার প্রসঙ্গ করিয়া  
আক্ষেপ করিয়াছেন। বস্ততঃ কর্মচারিদিগের  
দোষে অনেক অভিপ্রায় হইয়া থাকেন।

রামপুর হাটে ওলাউঠার অতিশয় প্রা-  
চুর হইয়াছে।

ইংলিসমান লিখিত হইয়াছে, রাজা প্র-

আপাতত সিংহ কয়েক দিবস পূর্বে যখন বধ  
মানেন যান, তখনই হুতরাপানে উদ্ভূত হইয়া  
ছিলেন। এ সময়েই যজ্ঞ সজ্জা হয়। অত্যন্ত  
দুঃখের বিষয় সংকেত নাই, কিন্তু এ সংবাদ  
মিথ্যা। আত্মদানের বিলম্বিত বোধ হইতেছে।  
বোধ করি রাজাও ইহা অলীক বলিয়া প্রতি  
পাল করিবেন।

বোম্বাই গেজেট সম্পাদক বলেন, দাক্ষি  
ণাত্য কয়েকটি জুলাই আবাদ হইবে। ইউ-  
রোপীয় ভবনকে কাধা করিবে। কলিকতায়  
উদ্ভূতি যত হয় ততই ভাল কিন্তু ইউরোপী-  
য়েরা ক্রমি কাধা করিবে, এইটী শুনিয়াই লক্ষ্য  
জন্মিতেছে।

কিছু দিন হইল এক জন ইউরোপীয় জিরা-  
নপুরে রেই-এ-য়ে হইতে নাগিয়ার সমরে আ-  
পনার গলে তুলিয়া যান। সেদিন দুই জন  
লোক তাহা লইয়া যায়। তাহারা তৎক্ষণাত  
২৩০০ টাকায় নোট চুরি করিয়া ২৬টি ভগ-  
লির টেসন নাইটকে দেয়। ইতি মধ্যে টেলি  
গ্রাফে সংবাদ আসাতে তাহারা ধৃত হই  
য়াছে।

মুরসিদাবাদের নবাব গান্ধী সাহেবের অস-  
পাৰ্শ চিকিৎসার জন্য ২০০০ টাকা প্রদান করিয়া  
ছেন।

বোম্বাই বিশ্ববিদ্যালয়ের চারিজন ভাস-  
বি, এ, উপাধি পাইছেন। ইহারা সকলেই  
ব্রাহ্মণ। ১৮৬২-৬৩ অবদি ১০২ জন ব্রাহ্ম  
তথ্য প্রবেশিকা পরীক্ষা দিয়াছে।

হুতর নুপুরে আত্মও গোষ্ঠীর প্র-  
কোপ কমে নাই।

চারিটন সাহেব কিরদিগেসে অন্য গবর্নর  
জেনারেলের কোম্পানির মেম্বর হইয়াছেন।

এবার চীন দেশ হইতে ১০০ বস্তা চীন  
লিবরপুলে রাখা হইয়াছে।

সর উইলিয়াম ডেনিসন বিদ্যালয় ও  
প্রবন্ধ রচনা আনুষঙ্গিক বিলয়ে দুই প্রস্তাব  
বিলম্বিত। এসে লেখা গবর্নরদিগের অবশ্য  
কর্তব্য কর্তব্য নটে।

লাড কানিংহাম কল্যাণ দপন করিয়া গমন  
করিয়াছেন।

কাবুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে পারসীক  
সেনারা কল্যাণ ন মক একটি নগর অধিকার ক-  
রিয়াছে। জিরাটের নবাব ও আত্মদানের

যত্ন করিতেছেন। ইনকম টাক কমাইবার  
চেষ্ঠা হইতেছে, এ সময়ে আবার পারস্য  
যুদ্ধ উপস্থিত হইল।

লেন্ডনকে কর্বেল ক্রস ভাষ্যবর্ণের পু-  
লিফটমেন্টের জেনারেল হইয়াছেন। ক্রস সা-  
হেব লাড এলভনের কুটর।

নিম্ন লিখিত গবর্নমেন্ট নোট সকল তির-  
তিখ রাজ্যসমীতে প্রচলিত হইয়াছে।

|         |          |
|---------|----------|
| কলিকাতা | ২,৩০,০০০ |
| বোম্বাই | ১,১৪,০০০ |
| বাক্স   | ২১,০০০   |

মোট ৩,৬৫,০০০  
শীঘ্র চারি কোটি হইবে। এই সকল নোটের  
প্রতিবন্ধক টাকা রাখিয়াছে।

উক্ত সম্পাদক বলেন আত্মদানের  
সম্মত হইয়াছে। ছোলা প্রতি টাকায় ১১৩ ক-  
রিয়া বিক্রয় হইয়াছে। এবংসর উদ্ভূত কল  
জন্মিয়াছে।

গেণ্ডুলমের দ্বারা পাখা টানিবার যে হু-  
তন আবিষ্কার হইয়াছে, উক্ত পশ্চিম-  
লোর গবর্নমেন্ট তদন্তসারে কার্য করিবার  
চেষ্ঠা করিতেছেন ইহার আবিষ্কার কারী  
গ্রান্ট সাহেবের প্রতি আলাহাবাদে গমন ক-  
রিবার আদেশ হইয়াছে।

গোখোখোগেসেট সম্পাদক বলেন কান্দীর  
মন্ত্রদলপ্রধান শঙ্কু সিংহ ধৃত হইয়াছে।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন, লক্ষ্মী নগ-  
রস্থ ইউরোপীয় সেনাদলের এক জন সৈনিক  
পুরুষ কোন সামান্য অপরাধে কারাকন্দ হও-  
য়াতে গুলি করিয়া আত্মকত্যা করিয়াছে।  
সৈনিকপুত্রদেরা হুতর গুরুতর অপরাধ করি-  
য়া যত হয়, নতুবা সামান্য অপরাধ করিয়া  
কঠিন দণ্ড পায়।

টাইমস্ আর ইণ্ডিয়া সম্পাদক বলেন  
বোম্বাইয়ের ডেপুটি মাজিস্ট্রেটেরা তিন শ্রে-  
ণীতে বিভক্ত হইবেন। আত্মদানের ৫০০,  
৪৮০, ৩৮০ করিয়া বেতন হইবে।

বাহোর কলিকতায় লিখিত হইয়াছে এক  
ব্যক্তি এক জন ইউরোপীয়কে বধ করিয়াছে  
সন্দেহ করিয়া ততাত্য কর্তৃপক্ষ বিচার বিভাগে

তাহাকে বধ বার বৎসর কারাকন্দ করিয়াছেন।  
পক্ষাবের বৃদ্ধি এই চবিচার। অথবা পক্ষাবে-  
রই বা পোষ কি, আত্মদানের ঠিক জেনে অ-  
নেক তিন চারি বৎসর কারাকন্দ থাকে।

ভগলীতে সন্তোষিত রুতি ও কামদেবের  
পূজা হইয়া গিয়াছে। ভগলীকে পাঠা-  
নদের আদ হইয়াছে। শুনা যাউতেছে এক জন  
পেছারের উদ্ভূত-গে এই যুগিত পূজা হয়।  
এই সকল দপন করিয়া আত্মদানের এক এক  
বার উক্ত হয় যে গবর্নমেন্ট আইন ক্রিয়া  
বল পূর্বক কুৎসিত উৎসাহ সকল উঠাইয়া দেন।

বোম্বাইয়ের ব্যবস্থাপক সভার প্রথম মে-  
ম্বর মঙ্গ হইয়াছে। ইহার পর জবিন্দার  
বিল বিবেচনা করিবার হইবে, এইবেলা আত্ম-  
দানের ব্যবস্থাপকেরাও কিঞ্চিৎ বিব্রাণ কবি-  
য়া দিখ হউন।

চিরাপতিয়ার রাজ্য প্রথম নারায়ণ মে-  
বের যত্ন হইয়াছে। শিকার দান বিল যত্ন  
র বিশেষ উৎসাহ ছিল।

১৩ শুক্রবার নিম্ন লিখিত নুলেত অতি  
দেয় বিক্রয় হইয়াছে।

|         | সিদ্ধক | ইকা      |
|---------|--------|----------|
| বেজারের | ১৩০৪   | ১২৩১,৭৭৬ |
| কান্দীর | ১৩০৪   | ১২৩১,৭৭৬ |

গড়ে প্রতি সিদ্ধক ১৪০০ টাকায় বিক্রয়  
হইয়াছে।

টুকীল সন ১২৬২ নাম ৩৭১৫ কোটি হই-  
তে তাড়িয়া দেওয়া হইয়াছে, লাভ জালডা  
সংস্কা হইয়া প্রতিবাদ কলম না দেন।

—২—  
বহুদেশীয় ব্যবস্থাপক সভা।  
১২ ই এপ্রিল শনিবার।

মৌলবী আবদুল লতিফ টিকা পাঠিত ভা-  
ষ্য করিবার বিল অর্পণ করিয়া এক বক্তৃতা  
করিলেন।

মেটলাও সাহেব এই বিলের সঙ্গত কবি-  
কয়েকটি অম সংবাদ বহিলেন এবং ১৩  
করিলেন পার্লামেন্ট প্রকৃতির ভাষা নির্ণয় ক-  
কর্তব্য কিন্তু গবর্নমেন্টের হস্তে তাড়াত্তি কবি-

বার তার না দিয়া ব্যবস্থাপক সভা বহলে  
তার দেওয়া উচিত। এই বিল সিলেক্ট কমি-  
টি হস্তে সমর্পিত হইল।  
বাহুর মনোপ্রসাদ তার ১৮৬২ অব্দে ১১ অ-  
ইন সংবাদ বিল অর্পণ করিলেন  
এই বিল বিবেচনা হইল



ফরাসন সাহেবের প্রস্তাবক্রমে বাঙ্গালীরা  
সকল স্বার্থে অধা পত্রিক। কবিবাহ বিল  
পত্রিক পত্রিক হইল। কাউই সাহেব করেকটি  
সংশোধন করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮৫৯ অক্টো ১০ আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিবার প্র-  
স্তাব করিলেন। বাবু রমাপ্রসাদ বাবু এই বি-  
ল প্রতি আপত্তি করিয়া অধা সভা পূর্বা-  
হিত স্থগিত করিবার প্রস্তাব করিলেন।  
সিস্টেম সাহেব তাঁহার প্রস্তাব করিলেন,  
যদি ৮ জন সভা এখনও ২৭ জানুয়ারি এই বিল  
পাস করিতে চাইবে।

ফরাসন সাহেব কলিকাতার ডাকের বিল  
কমিটি রিপোর্ট পাঠ করিবার প্রস্তাব  
করিলেন। ইহা অধা সভা বিতর্ক করিবার  
প্রস্তাব করিল।

### ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা।

১৬ ই এপ্রেল বুধবার।

সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ হইল।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।  
সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

সিস্টেম সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টো ২ আইন পাঠ-  
করিবার বিল প্রস্তাব করিলেন। সিস্টেম সাহেব  
সিস্টেম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন  
সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিলেন।

ফরাসন সাহেবের প্রস্তাবক্রমে বাঙ্গালীরা  
সকল স্বার্থে অধা পত্রিক। কবিবাহ বিল  
পত্রিক পত্রিক হইল। কাউই সাহেব করেকটি  
সংশোধন করিলেন।

### যবর্ণযেটে বিজ্ঞাপন।

বাঙ্গালদেশীয় পোর্টল্যান্ড গবরিয়ের  
আমোদনকারী নিয়োগ।  
২৫৫ মার্চ।

এক, বি. সিংহন সাহেব যবর্ণযেটে প্রথম  
প্রেরিত বাজিটেট ও কালেক্টর হইবেন, কিন্তু  
যদি তিনি অন্য হুকুম না হয় পূর্ণিয়ার জন্মে  
প্রতিনিধি থাকিবেন।

এইচ এইচ. ডব্লিউ সাহেব মেসারী পুর্ন  
দ্বিতীয় প্রেরিত বাজিটেট ও কালেক্টর হইবেন।

আর, বি. ককবেল সাহেব একগে অস্থায়ী  
লইয়া অস্থায়ী আকেন ইনি চাকার বাজি-  
টেট ও কালেক্টর হইবেন।

এক, এম. হেন্সিং সাহেব রাজসারি আ-  
ইটে বাজিটেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

কিন্তু যদি তিনি অন্য হুকুম না হয় চাকার বাজি-  
টেট ও কালেক্টর থাকিবেন।

এইচ. চ্যানকি সাহেব দ্বিতীয় প্রেরিত আ-  
ইটে বাজিটেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

৪৩। আর্ডেল।

জিহটের ল. আকিল মোলবি মেলাউরার  
আলি কোজলাক আইনের ১৮৬১ সালের ৫  
আইন ১২ ধারা অনুসারে এই প্রকল্পে এখন  
প্রেরিত অধীন বাজিটেটের কমতা পাইবেন।

৭ই আর্ডেল।

যানকুমেদ অবগোড়ি রঘুনাথ পুন্ডের হুন-  
নেক মোলবি করকত আলি কোজলাক আইনের  
(১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২ ধারা নতে এবং  
১৮৬৪ সালের ১০ আইনে ১ ধারা নতে এই  
প্রকল্পে দ্বিতীয় প্রেরিত অধীন বাজিটেটের  
কমতা পাইবেন।

মোলবি আবদুল লতিফ পরীক। সভার এক  
জন সভ্য হইবেন।

৮ই আর্ডেল।

সংখ্যক পত্রাব পদাতিক সৈন্য হলের  
অধ্যক্ষ কর্ণেল এইচ. এক, ডেককোর্ড সি. বি.  
১৮৫০ সালের ১১ আইন নতে ৬ আইন সং-  
ক্রান্ত নকশার বিচার জন্য অনিত্য প্রদেশের  
কমিসনর হইবেন।

কিন্তু ৬ নম্বরের আভিসনাল প্রদেশের প্রতিনি-  
ধি ডব্লিউ এইচ. বার্টউ সাহেব এই সকল  
প্রদেশের আভিসনাল জজ হইবেন

এক, এক, ডেককোর্ড সাহেব সাহেব বাজিটেট ও

কালেক্টর প্রতিনিধি হইবেন

এক, এম. আরনটু সাহেব জিহটের আ-  
ইটে বাজিটেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনি-  
ধি হইবেন।

সি. ডি. ফিল্ড সাহেব পূর্ণিয়ার আইটে ও  
জিটেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হই-  
বেন।

৯ই আর্ডেল।

ডব্লিউ জি. ইন্ড সাহেব জিহটে প্রথম  
প্রেরিত বাজিটেট ও কালেক্টর হইবেন।

১০ই এপ্রেল

কালেক্টর, ডব্লিউ, ডি কেগান বঙ্গদেশীয়  
গণিত পুস্তিক সেনাদলের অধ্যক্ষ হইবেন।

লেপ্টেনেন্ট সি. ডি. সেকার, বি. সি. বিমি  
একগে বিচার দায় আর্ডেল প্রথম গণিত পু-  
স্তিক সেনাদলের অধ্যক্ষ হইবেন।

সি. ডি. কুলনাহেব প্রতিনিধি দ্বিতীয় সার্ট  
আর্টেগার্ট হইবেন।

জি. গ. সিং সাহেব সুীতডাল পদবিনায়  
নকশা করিলেন হইবেন।

১১ই এপ্রেল।

চাকার প্রতিনিধি অতিরিক্ত জজ এক, এ.  
ডালরিঙ্গল, এককিনুটোন সাহেব কিছু কি-  
মের জন্য উক্ত জেলার প্রতিনিধি নিবিল ও সে-  
সিমন জন্মের কর্তব্য করিবেন।

### প্রেরিত।

জিহট মোলপ্রকাশসম্পাদকের।

কুমারখালির অনন্তর দাহ।

বোধোচিত সম্মানপূর্ণসেবা নিবেদনমন্তব্য।

উঃ কি পরিচাপ। গত কল্য কিংগের রাজ্য  
প্রভাত হইয়াছিল, একে দ্বিপ্রহরের প্রচণ্ড দাহ  
ডাল, তাহাতে কটিকাসূন বাবুর বিষয়  
গ, বোধ হইতে লাগিল যেম বজ্রমণ্ডী প্রলয়ে  
হতে পত্রিক হইল। বাহ্যপ্র শব্দধরের না  
কল্পিত হইতেছেন। তখন যাহার দিকে দৃষ্টি পে-  
করা যায়, দেখা যায় তাহারই চিত্র বিকৃত, কো-  
স্বহৃদিত নহেন, বিশেষতঃ সেই সময় মৃত্যু  
ত্রেরই আগারের সময় উল্লিখিত, তাহাবো পাব  
প্রস্তাব: তাহাবো প্রস্তাব হইতেছে, কেহ আহ  
করিয়াছে, কেহ আহাবে করিয়াছে, এমন সম-  
এই কুমার খালির পশ্চিম দিকে অগ্নি লাগি-  
এক ঘণ্টার মধ্যে দক্ষিণ দিকের আর ৩, ৪ জে-  
বাগিরা যত বনভী বাগি ও গোলা বাগি দ্বি-  
সহস্রার দহ হইয়া যানবে ডালখালি পুঞ্জীক



সম্পাদক মহাশয় ! আমরা, অকিশোর দুঃখিত  
হইয়া প্রকাশ করিতেছি যে, আমরা আদালতের  
সম্মত আমিনীভ ঔকিল বাবু কানার্টাও দাস এফ-  
বীরোগে আক্রান্ত হইয়া গত এই এপ্রিল মাস-  
ব্যব জুর্বেগাদয়ের পূর্বে পরজোক গমন করি-  
তাহেন। ইনি স্বাক্ষর, ইংরাজী ও পারসী এই

মহাশয়! আমি কতকগুলি অগনুষ্ঠিত দান গ্রহণ করিয়া আভিশয় দীক্ষিত হইয়াছি। অতীত অধিক ছন্দে লেখা হইতে পারিতেছি না। অতএব

ন জাহাজেই আসালাভের কার্য নির্বাহ করা  
 তেন। কালীচাঁদ বাবু সম্রাটকে কখন কখন  
 টকবেন মাই। তিনি অতি পরিভ্রমী, মিঠা-  
 গুণী ও পরোপকারী লোক ছিলেন। ইংলিশ  
 কলেজের বিশেষরূপ নৈপুণ্য দর্শন করিয়া  
 দাসত্বের বিচার কর্তব্য। উহাকে "বায়" নামে  
 অভিহিত করিয়াছিলেন। বিশেষ আশ্চ-  
 র্য বিষয় এই যে ইংলিশের সহকারী ১৬ টা  
 ও ১৫ টা কন্যা। সম্রাটের ২১ টা সন্তান জন্ম  
 করিয়াছেন। এক্ষণে ইংলিশ ৮ টা পুত্র ও ৪ টা  
 কন্যা বর্তমান আছে। কালীচাঁদ বাবু একজন  
 চৌকিলিক ছিলেন বটে, কিন্তু তিনি অন্য ধর্ম  
 ধরেই ছিলেন না। ইংলিশ একসময় পুত্রের বখশ  
 ইংলিশের পুত্র প্রাকবন্দেব প্রাচীর পাঠে  
 "দাস করিম" প্রাকবন্দেব নিয়মামুসারে ইং-  
 লিশের উপাসনা-নিমিত্ত প্রাক সম্রাটের গমনাগ-  
 মন করিয়া লাগিলেন। তখন তিনি কোন নিব-  
 ঙ্গ প্রকাশ না করিয়া বরং নৌকায়ই প্রকাশ  
 করিয়াছিলেন। সুতরাং কালীচাঁদ বাবুর  
 জন্ম ১৮ বৎসর মাত্র হইয়াছিল।

১১ ই এপ্রিল ১৮৭২  
 বঙ্গদেশের

**মানাবরু জীবন সোমপ্রাশ সম্পাদক মহাশয়ের**

কল্প দিন হ'ল এ গগনবীরা কলি পদ পিন  
 ১৩ বার্তা "বিশ্ববাস" প্রকাশিত। "সত্য"  
 প্রকাশিত একটি সত্য প্রকাশ করিয়াছেন। "বস"  
 যি নিয়ম বালকদিগের ইংলিশ বিদ্যালয়ে  
 প্রচলিত। প্রাচীনকালে ইংলিশ প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত

২. প্রাচীনকালে ইংলিশ প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত

থাকেন তাহা লিখিয়া লেখ করা যায় না।  
 কিন্তু পোত হইল ইংলিশ অল্প, অধিকার এক ই-  
 ঙ্গকে কি প্রকারে অচ্যুতরূপে চালাইতে সমর্থ  
 হইবেন। লিখা সংগ্রহ কার্যের অধ্যক্ষ মহা-  
 শয়ের এ কামেতে দুই এক জন সুযোগ্য অধ্যাক-  
 শক প্রেরণ করা কর্তব্য।

৩. গত বৃহস্পতিবার বেলা অপরাহ্ন তিন  
 ঘটিকার সময় এখানে প্রচণ্ড বাতন হইয়া বহুতর  
 ভূমিকম্প হইয়া উঠিল। কলিকাতা হইয়া বহুতর  
 ভূমিকম্প হইয়া উঠিল। কলিকাতা হইয়া বহুতর  
 ভূমিকম্প হইয়া উঠিল। কলিকাতা হইয়া বহুতর  
 ভূমিকম্প হইয়া উঠিল। কলিকাতা হইয়া বহুতর

১৮৭২  
 ১৮৭২

**সোমপ্রাশ সম্পাদক**

মহাশয়ের  
 পশ্চাৎ ১৮৭২ সোমপ্রাশ সম্পাদক

অনুগ্রহ করিয়া  
 এক জন কৃষক জাতীয় লোক কো-২২২২২২

১. প্রাচীনকালে ইংলিশ প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত

২. প্রাচীনকালে ইংলিশ প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত  
 প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত প্রকাশিত

গমত না হওয়াতে সাহেব "কলিকাতা"  
 আদিত করিলেন। কি ভিত্তি! সাহেব বড়  
 আদিত করিতে সাহেবের কৃষ্ণি আদিত সাহে-  
 বের তই চীৎকার করিতে লাগিল, তখন সে  
 বহুতর ও ভূমিকম্প হইল, সাহেব অধিক  
 মিরল হইলেন না। কিন্তু এখন পরে কৃষ্ণি বহু-  
 কল্প দেহ ডাক্তার নামেরের মিকট এই বলিয়া  
 প্রেরিত হইল যে এ আর কত বেত থাকিলেও  
 করিবে না, ডাক্তার করিলেন আর মিরল  
 বেত ইংলিশ করিয়া বহুতর পারে। কিন্তু  
 আদিত না। অন্য দশ, আর তিনদিন পরে দশ,  
 এবং অধিক দশও এইরূপ। তৎপরে সাহে  
 কৃষ্ণির প্রতি করিলেন "কমল টোম মেটর হো-  
 গা মেট" সে করিল মোহাই সাহেব "আদিত  
 কলি দাও আদিত প্রকাশিত দাও না আদিত  
 গেলেও উহা পরিবর্তন।" লিখিয়া করিলেন  
 আদিত লে বাও জেলের লে বাও। সে দিল  
 এই অবধি।

**গৃহদাহ**

সম্রাট অধিকা কালমা নামক স্থানের গগে  
 অগ্নি লাগিয়া অনেকের অসুস্থত্ব অগচর হইয়া  
 গিয়াছে। কলি গেল এক জন মহাজনের প্রাণ  
 এক লক্ষ টাকার প্রাণ নষ্ট হইয়াছে; এইরূপে  
 অনেকেরই বিস্তর কতি হইয়াছে। এখন কি প্রাণ  
 উৎপাতে প্রাণচ্যবনী অনেকের অধিকার  
 গত প্রাণের করা সুখিয়া গিয়াছে অত্যন্ত দুঃ-  
 খের বিষয় বলিতে হইবে। সাহেবের বিষয় এই  
 এতদ্বারা একটাও প্রাণ চানি হয় নাই।

**কৌলকারী**

সম্রাট জিলা বর্জমান থানা মজিবরাত্তর  
 "ধেনো" নামক গ্রামে একটি বিলকণ কৌল-  
 কারী কাণ্ড হইয়াছে তৎক্ষণাত এইঃ—

এ গ্রামের জমীদার কৃষ্ণি পাড়া বিলকারী  
 জীবন মীলকমল বাসদাস তৎক্ষণাত লোকের  
 হুঁকুতা নিবন্ধন গ্রামে পালনে অধিক হইয়া পা-  
 দাস বহুতর প্রার্থনা করেন তৎক্ষণাত তৎ-  
 কার দাবোণা থানার একজন বরকদারকে পা-  
 টাইয়া দেন। প্রাচীন। সকলে মিলিত হইয়া  
 উহাকে বিলকণ উত্তম মধ্যম দ্বারা বিচার করে  
 সে থানার আসিয়া সবিশেষ সবল হুঁকুতা দা-  
 বোণাকে অবগত করিলে দাবোণা স্বয়ং লোক-  
 জন সমাজের হাথে থানার অতিমুখের মালিক-  
 এমিকে হুঁকুতা বিলকণ দলবল সহকারে দা-  
 বোণার প্রতি আক্রমণাদোণী হইয়া ২৮৬৬  
 বোণার হাথে অনেক ধুমধাম করিয়া এক দিলে  
 টাইয়া থানার হাথে থানার



অমনি এম্ব' জে'ক' ওঁহার মনের উপর  
পড়িল। বিলক্ষণ ওঁহার কবিতা এবং দারোগী-  
কে জানে না। মা'বির। ক'ক'গুল। পালাপালি দিয়া  
বিহার করিল। হ' দো'গাও অমনি এ'ণে' খ'না'য়  
আসিয়া উপস্থিত হইয়া। ডিপুটিমাজিস্ট্রেট, মা-  
জিস্ট্রেট ও পুলক-হুগরিষ্টেগেটের স্থান এক  
এক খানি রিপোর্ট করিলেন। সমস্ত কালনার  
ডেপুটিবাবু আসিয়া। অনেক লোককে বন্দী করি-  
য়া লইয়া গিয়াছেন একথেকে হুগ' বলা যায় না।  
আজিও এরূপ অবশিষ্ট খ'ন অনেক আছে।

এই জোরিতর লগে খানিতে চারটি বিষয় নির্ধারিত ছিল। তাহার একটি বিষয় মো'ন বা'কির আব্দুলক্বিম্বাবাদে বিপ্লব থাকতে প্রকাশ করা গেল না। সম্ভাব্যক।

ଆଗାଧାର ଶ୍ରେୟ ଶ୍ରୀ ସୋମବ୍ରହ୍ମା

जम्मा। नदेव ।

বাঙ্গালী দেশের দক্ষিণ পশ্চিম বিভাগের  
বিদ্যালয় সমূহের ইন্সপেক্টর জি.বু. হেনরি  
উক্ত সাহেব মহোদয় অত্র নগরে শুভাগমন  
করিয়া প্রায় সপ্তাহ অবস্থান করিয়া গিয়া  
ছেন। ইংরাজী বাঙ্গালী উভয় বিদ্যালয়ের  
স্বাক্ষরগণের পরীক্ষা গ্রহণ করিয়া তিনি পরি  
তোষ প্রাপ্ত হইয়াছেন। সংবাদ পত্রের কেবল  
আমরা তাঁহার শুভাগ্রাম পাঠ করিয়াছিলাম  
কখন নয়নগোচর করি। দশনেত্রিয়েব চরিত্র  
ভার্যতা লাভ করি নাই, এবার তাহা সম্পূর্ণ  
হইয়াছে। তিনি ২৮ এ. ডি. স্কুলে যিনি  
৮ মাসিকার সময় গবর্ণমেন্ট ইংরাজী বিদ্যালয়  
যে এক অল্পত ব্যাপার প্রদর্শন করিয়া  
ছেন, তাহা আমরা কখন কি বিস্মৃত হইতে  
পারিব। ই যিনিতে তিনি অত্রঃ প্রাস  
সম্প্রদায়িক সময়ে অদৃষ্টপূর্ণ হইয়া  
কিছু মূর্তি প্রদর্শন করিয়া সকলকে মো  
হিত করিয়া গিয়াছেন। বিদ্যালয় প্রাঙ্গণ  
আবৃত্ত হইলে না। সাহেব মহোদয় প্রত্যেক  
স্থিতির যে বাখ্য করিয়াছিলেন, তদাত্ত  
আহা প্রায় কখনোই প্রতিগোচর হয় নাই  
কিন্তু পরিবার ই. কালি বিদ্যালয়ের উচ্চতম  
পারি প্রায় চার এম. নগরস্থ বিদ্যালয়  
মহোদয়কে আশ্রয় করিয়া, ও প্র  
নকল্প গণের দৃষ্টি, প্রায় ইতিমধ্যে  
বার ৩০। প্রক্তি কাল, ইতিমধ্যে

টিব্রুত সুপ্রিঁ প্রদর্শন পূর্বক বিস্তারিত রূপে  
তাহার কারণ ব্যাখ্যা করিয়াছেন। তিনি অ-  
তিশয় পরিশ্রম শীল ও অধিরক্ত চিত্ত, সৎ-  
চেপতাঃ ইনিস্পেকটর গণের যে যে গুণ  
থাকা উচিত তাহা মহাশয় উল্লেখে বিন্য-  
মান আছে।

পঞ্চমঃ প্রবিচার নববর্ষাগমন উপলক্ষে  
অত্রত্য ত্রাঙ্গগঃ সঙ্ঘার পর সমাজ যুগে এক  
ত্রিত হইয়া নিয়ান্ত রূপে পর প্রের উণা  
সন, কবেন । উপাসনা শেষ হইলে উপাচার্য  
ঐযুক্ত ভোলানাথ চক্রবর্তী মহাশয় একটি  
বক্তৃতা পাঠ করিলেন । বক্তৃতাটি অতিশু-  
বল ও প্রোতুগণের অবলম্বন কর হইয়াছিল ।  
চক্রবর্তী মহাশয় আমাদের দর্শনোক্তাবে ঘন্য  
বাদ প্রাসন । তিনি ইংরাজি বিদ্যালয়ের প্র-  
ধান পণ্ডিতের সঙ্গে যত্নজন অধিবিত্ত হই  
য়াছেন, ততদিন তিনি এই সমাজ উপাচার্য  
পদ অধিকারিক রূপে দণ্ডন করিয়াছেন । সত্য  
প্রকাশ্য তাঁহার নিকট হইয়াছে পাশে নত  
আছে । তাঁহার বক্তৃতা শেষ হইলে শব্দমালা  
ইংরাজি বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষক ঐযুক্ত  
বাবু রাজনারায়ণ বসু মহোদয় সমাগত অ-  
গম, নবকে সঙ্গানান হইয়া একটি বক্তৃতা  
করিলেন । রাজনারায়ণ বাবুর মাত্র প্রবল ক-  
রিলে, এখানকার দাবতীয় রাখেন অন্তঃকরণে  
অকৃত্রিম কৃত্তি তাঁহাদের আনিষ্ঠা হইয়া  
পাকে । ফলতঃ তাঁহাদের সঙ্গে ও দৌর্য অতি  
অপারিতা মধ্যে মোদীনীপুরে তাঁহাদের অতি  
বিত্ত সত্যতার সফার হইয়াছে । সফার কা-  
র্য সমাধা হইলে যুবক প্রাকদল সঙ্গ মহোদ-  
য়ের বাণীতে একত্রিত হইয়া ভোজন সমাপন  
করয়া অষ্টচিহ্নে স্ব স্ব গৃহে প্রত্নন করিলেন ।  
এই সমস্ত লক্ষণ দেখিয়া আশাচরিত্র হইলে  
দেখিলে ইন্দ্রজিত উদ্বিগ্ন আশা সঙ্গাবিত্ত  
হইল ।

পারিবে না। কিন্তু সঙ্গতি নোষপ্রকাশে  
কারীর কথানি পত্র, তৎপরে তুদুগু  
আল এককালীন ১৩ মেথিয়া আনার দে  
মুহু হইর ছে, শুভবাং কাদির ডেপুটী  
কিদিং গুণাচকোহন নাকরিয়া কান্ত  
প রিলাঘনা। ম ১৭৭ তেএপ  
কীর্জন কবিত্তে গোল তাকহতা প্রযুক্ত  
লজিত হন, সেই এপ ইহার বস্ত  
কীর্জন করা বাউব না কেন তথাপি  
কেউ লজিত হইতে হয়। 'আহা' ইনি  
সম্বিচানক তেমনি দ্যায় পলায়ন, তেমন  
চাশীল-তেমনি অপকপাতা যদি  
সফল গুণের পুরস্কার প্রদান করেন  
লে ইনি যে ক্ষুদ্রাগ্রণ্য তাহাও আর  
নাই। ইহার কাছ'রিব কাছ, অপোন  
দিগেব জাতি ব্যবহার ও সম্বিচ'রের  
লিখিতে গেলে অতিশয় বিস্তারিত  
কালখালি নামক গ্রামে আসিয়া, যে চমৎকার  
বিহার নিম্পত্তি কবিত্ত, শিখাচেন কেনল  
হার বিসম্পত্তি লিখিতে

[illegible]

श्रीगुरुभ्यो नमः

২২শে মার্চ : কাম্বোজা প্রানিজাত্য ৪,৫৫৫০০০  
 গরম পোশাকের পোশাক ২২শে মার্চ : ৫৫০০০০  
 বিক্রয় : ৫৫০০০০ : ৫৫০০০০ : ৫৫০০০০ : ৫৫০০০০

এই সত্য-সংবাদে তাঁর মজা। বাকি দু'জনও সত্যকে  
সম্মানিত করে গেলেন। মর্দিনা ও 'দিলো' তা জানে না  
। মোসাব্বির আরও এই শিষ্টাচার

# সোমপ্রকাশ

“প্রবর্তনঃ প্রকৃতিহিতার পার্থিবঃ সরস্বতী জনিতমহতী ন দীযতাঃ”

২৭ ডিগ্রী  
সংখ্যা

সন ১২৬৯। ১৬ বৈশাখ। ইং ১৮৬২। ২৮ এপ্রেল

মাসিক মূল্য ১ টাকা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন

বিজ্ঞাপন।

শ্রীযুক্ত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর ও শ্রীযুক্ত দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের প্রতিমূর্তি দ্বিতীয়বার প্রদর্শন করা হইয়াছে। ইহার প্রত্যেক খণ্ডের মূল্য এক টাকা। সংক্ৰান্ত যন্ত্রে ও মিসনরীর নীচে ৮ নং হুচে তথ্য করিলে পাইবেন।

এন, সি. খোস কোম্পানি।

সোমপ্রকাশ।

১০ ই বৈশাখ।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

মাগুরার পত্র অতি অসারের মত লিখিত হইয়াছে এই চেষ্টা উপেক্ষিত হইল। কান্দীর পত্র প্রেরক হুরসিদ্দাবাদের শিক্ষা সংক্রান্ত ভেদটি ইনস্পেকটরের অসদত নিষ্পত্তি করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার পত্র আদৃত ও প্রকটিত হইল না।

লার্ড এলগিন ও ল্যাণ্ড  
হোল্ডার্স সভা।

কেহ বলেন লার্ড এলগিন গোঁয়ার ও একপুঁয়ে; কেহ বলেন, তিনি অতিশয় ধূর্ত, ডেলহৌসির বলের ন্যায় তাঁহার বিলক্ষণ চতুরতা আইসে; কেহ কেহ অনুমান করেন, তিনি স্বজাতিপক্ষপাতী। কিন্তু তাঁহার পূর্ব পূর্ব কার্য্য তাঁহার চরিত্রের একপ পরিচয় দেয় না। বাক্য ও কার্য্য দ্বারাই লোকের স্বভাব ও চরিত্রের পরিচয় হইয়া থাকে। তিনি দুই বার সর্ব্ব হ্রস্ব কমতা প্রাপ্ত হইয়া চীনদেশের যুদ্ধে গমন করেন, দুই বারই তিনি স্বজাতির গৌরব রক্ষা করিয়া সন্ধি করিয়া আই

সেন। তিনি যদি লার্ড ডেলহৌসির সের লোক হইতেন, আমরা এত দীর্ঘ চীনদিগকে স্বাধীন দেখিতে পাইতাম না। তিনি যে স্বজাতির প্রতি পক্ষপাত কোরে অন্ধ মহেন, লাও হোল্ডার্স সভার প্রদর্শন অতিনন্দন পত্রের প্রত্যুত্তর দানই তাহা কহিয়া দিতেছে। তিনি প্রত্যুত্তর দান কালে এই কথা বলেন।

“আমি তিন্ন তিন্ন জাতি পূর্ণদেহে বহিষ্টি করিতেছি, আপনারা মনে করিতেছেন, ভারতবর্ষে যে নানা জাতি আছে, আমি তাঁহাদিগের পরস্পরের মত সন্মান করিয়া দিতে সমর্থ হইব; কিন্তু এ স্থলে আমার বক্তব্য এই, গবর্ণমেন্ট এ বিষয়ে অসম্মত করিতে পারেন। গবর্ণমেন্টের কর্তব্য কর্ম্ম এই যে মধ্যস্থত কার্য্য করিয়া জাতি, বর্ণ ও ধর্ম্ম ভেদ করিয়া ইংলণ্ডেশ্বরীর সমুদায় জাতির প্রত্যেক সুলভ্যরূপে সুখ-সুখির চেষ্টা করেন; এবং যে স্থলে পরস্পরের স্বত্ব ও অধিকার হইয়া বিবাদ হয়, বিদ্যা পক্ষপাতে তাহার মীমাংসা করেন। অপর, ইংরাজেরা এদেশে যে সভ্যতা প্রবর্তিত করিতেছেন, তাহা একদেশীয়েদের মঙ্গলের বিষয় জ্ঞান করিবেন কি না, ইংরাজেরা এদেশীয় ব্যবসায় উৎপাদন বিষয়ে যে চেষ্টা করিতেছেন তাহা এ দেশের লোকেবা উপকারের কেহ বলিয়া বিবেচনা করিবেন কি না এবং একদেশীয়দিগের ধর্ম্ম অব্যাহত থাকিবে কি না, এই বিষয়গুলি তাবতবর্ষ্য হইতে ইংরাজ

বিজ্ঞাপন।

সোমপ্রকাশের স্থান পরিবর্তন।

সোমপ্রকাশ যন্ত্র এতদিন যে স্থানে ছিল, বৈশাখ মাসের ১ নং অবধি তাহা পরিবর্তন করা হইয়াছে। অন্তঃপত্র আমাদিগকে পত্রাদি লিখিতে হইলে আপাততঃ কলিকাতা সংক্ৰান্ত যন্ত্রে লিখিতে হইবে। পরে আমরা ইহা নিবারণ করিয়া লিখিব।

বিজ্ঞাপন।

পত্র সাধারণকে জ্ঞাত দেব। বাইতেছে আমাদের দপ্তরে স্বর্ধাৎ কক্ষ লয়ে এক জন কক্ষা নবিশ ৪০ টাকা মাসিক বেতনে সরকার ইয়াচ যে কেহ উহার নিমিত্ত উবেদার হইবে সেহ আপন প্রতিষ্ঠা পত্র ও নক্সার মূল্য সমলিত দরখাস্ত আমাকে পাঠাইবে, তাহা হুটে যেমত হুকুম কর পক্ষা জ্ঞাত করা হইবেক।

১০ ডিসেম্বর } চার্লস এডলিফিউট ইতি-  
১৮৬২ } লিয়ার ১০ ডিসেম্বর ১৮৬২



দিশের কার্যের উপরে প্রধানরূপে নির্ভর করিতেছে।

লর্ড কার্নিও চলিয়া গেলেন, লর্ড এলগিন তৎপদে প্রতিষ্ঠিত হইলেন। গবর্নর পরিবার সহকারে পূর্ব গবর্নরের অবলম্বিত রাজনীতিও পরিবর্তিত হইল, অনেকে এইরূপ আশঙ্কা করিয়াছিলেন, কিন্তু লর্ড এলগিনের উপরি লিপিত বাক্য দ্বারা সে আশঙ্কা এক প্রকার দূরীভূত হইতেছে, কার্যে যে ইহার বাস্তবিক ঘটবে একপও বোধ হইতেছে না। দাছা ইউক, জিহ্বা কানিদিগকে এ অধিকারকালটাও কিকিৎ অসুখে কেপন করিতে হইবে অসুখের কারণ এই, কার্যকালে জাতি ও বর্ণভেদ থাকিবে না, একথা শুনিলেই তাহাদিগের চিত্ত বিবস হয়। অথবা কেবল এই অধিকার বলিয়া কেন, ব্রিটিশ গবর্নর সন্ত সত্যতার যে উচ্চতর সোপানে অধিকৃত হইয়াছেন, তাহা হইতে যদি ভ্রষ্ট না হন, জিহ্বিকারীরা জাতি ও বর্ণভেদ ঘটিত পক্ষপাত বার্তা বড় শুনিতে পাইবেন না।

বিজ্ঞান শিক্ষার উৎসাহ দ গিনী  
সত্যর আশঙ্কতা ।

এই ভারতবর্ষে যৎকালে হিন্দুদিগের রাজত্ব ছিল, তৎকালে দর্শন বিজ্ঞানাদি বাস্তবিক বিষয়েরই অনুশীলন চইয়াছিল। কি চিকিৎসা শাস্ত্র, কি গণিত শাস্ত্র, কি খগোল, কি ভূগোল সকল শাস্ত্রেরই অনুশীলন-সম্বাদ আমাদিগের অতিগোচর হইয়া থাকে, বহু বিষয়ের আবিষ্কৃত্যও হইয়াছিল। ভাঙ্কবাচার্য্য পৃথিবীর গনোজ্ঞান নিরূপণ করেন এবং গ্রহ নক্ষত্রাদি দর্শন করিবার নিমিত্ত দূরবীক্ষণ যন্ত্রেরও সৃষ্টি করিয়াছিলেন। একপও অনেক বিষয় আছে যে ইউরোপীয়েরা সেই সেই বিষয় ভারতবর্ষ হইতে গ্রহণ করিয়া আবিষ্কৃত্য দ্রুত হইতে হুতা হইয়াছেন। কিন্তু

ভারতবর্ষের পরাধীনতা প্রভৃতি কয়েকটা দোষ নিবন্ধন সকল বিষয় সম্পূর্ণতা ও উৎকর্ষের পরমা সীমা প্রাপ্ত হয় নাই। দাছা ইউক, আমাদিগের কোন্ডের বিষয় এই, আমাদিগের পূর্ব পুরুষেরা যে সকল বিষয়ের আবিষ্কৃত্য ও উদ্ভাবন করিয়া গিয়াছেন, আমাদিগের দ্বারা তাহার জিহ্বিক না চইয়া ক্রমশঃ তাহার বিলোপ হইতেছে। অধিকতর কোন্ডের বিষয় এই, ইউরোপীয়েরা যে আবিষ্কৃত্য করিয়াছেন ও করিতেছেন, তদ্বারাও আমরা সেই ম্যন তা গুরুণ করিতে পারিলাম না।

এ স্থলে আমাদিগকে জিজ্ঞাসা করিতে পারেন, আমাদিগের দর্শন বিজ্ঞানাদি সংক্রান্ত জিহ্বিক লাতের কি কোন উপায় নাই উত্তর—উপায় আছে। দুই শতাব্দী পূর্বে ইংলণ্ডে বিজ্ঞান শাস্ত্রের সমধিক জিহ্বিক ছিল না। দ্বিতীয় চার্লসের সময়ে রয়াল সোসাইটি সত্তা সংস্থাপিত হয়, তদবধি বিজ্ঞান শাস্ত্র বিজ্ঞানবেগে জিহ্বিক লাভ করিতেছে। রয়াল সোসাইটির যত্নে অত্রাপূর্ব ও অদৃষ্টচর দেশ সকল আবিষ্কৃত হইয়াছে; অদৃষ্টপূর্ব বস্তু সকলের আবিষ্কৃত্য ও সৃষ্টি হইয়াছে; এবং অসাধারণ গুণ সম্পন্ন ব্যক্তির মিত্র নিজ বুদ্ধি ও বিদ্যাবলে স্বদেশের সম্যক উন্নতি সাধন করিয়াছেন। ডাক্তর লর্ড বার, ক্যাম্ব্রিজ কলেজের, সর জোসেফ ব্যাক্স, সব জন ক্রাফলিন প্রভৃতির নিকটে ভূগোল ও বিজ্ঞান কি পর্য্যন্ত না গুণগ্রস্ত আছেন? আমরা স্পষ্টাক্ষরে নির্দেশ করিতে পারি যদি রয়াল সোসাইটির সৃষ্টি না হইত, তাহা হইলে কি পৃথিবী উল্লিখিত পণ্ডিত গণকে প্রসব করিয়া কৃতার্থ হইতেন? ভারতবর্ষের পূর্বকল সম্ভানগণ দর্শন বিজ্ঞানাদি বিষয়ে যে ব্যুৎপত্তি লাভ করিয়া ছিলেন, উচ্চতর রাজগণের উৎসাহ দান কি তাহার কারণ নহে? রয়াল সোসাইটির ন্যায় ভারতবর্ষে একটা সত্তা করিবার

কাল উপস্থিত হয় নাই? কি সেনা সল কি বেলগেরে কি চিকিৎসা ডিপার্টমেন্ট অনুসন্ধান করিলে সর্বত্রই উপযুক্ত লোক মিলিতে পারে। তাহাদিগকে যদি যত্নে চিত্ত উৎসাহ দেওয়া হয়, এদেশে বিজ্ঞানের জিহ্বিক হইবে সন্দেহ নাই। রসায়ন বিদ্যা, পদার্থ বিদ্যা, ভূতত্ত্ব বিদ্যা অনুশীলনের স্থান ভারতবর্ষ অপেক্ষা উচ্চতর হয় না। হিমালয়, বিজ্ঞানগিরি প্রভৃতি পর্বত যে কত অদ্ভুত পদার্থ উদ্ভূত তাহার নির্ণয় নাই। আমাদিগের দেশের লোকেরা যদি উৎসাহ পান, এই সকল স্থানে কার্যমত বাক্য আবিষ্কৃত্য কার্যে ব্যাপ্ত হইবে সন্দেহ নাই। দিল্লীর রামজী রঘুনাথ কাকুলসের যে সূতন প্রণালী বাহির করিয়াছেন, ডিমরগান প্রভৃতি পাণ্ডিত্য তাহার ভূরি প্রশংসা করিয়াছেন।

আমরা গবর্নমেন্টকে এই সকল কার্যে অনুরোধ করিতেছি ইংলণ্ডের রয়াল সোসাইটির ন্যায় এখানে একটি সত্তা সংস্থাপন করুন। সত্তা আপাততঃ চিত্তশ লিখ অথবা ভারতবর্ষের সত্তাধ্বাে অধিবেশন রিবেন। পাবে বিশ্ববিদ্যালয়ের বাটী প্রাপ্ত হইলে ওখায় থাকিবেন। এতৎ সংস্থানস্থ যুধন বরিতা তাহা হইতে যদি উৎসাহ দ করা হয়, আমরা শীঘ্র বিজ্ঞানের সবিশেষ জিহ্বিক দর্শন করিব সন্দেহ নাই।

১৮৬৩ অকের দিব্যবিদ্যালয়  
প্রবেশিকা পরীক্ষার  
বাকলা পুস্তক ।

একের রাজত্ব গিয়া অপরের রাজত্ব হইলে কিয়ৎকাল প্রায় সমুদায় বিষয়ে বিশৃঙ্খলা ঘটে। একপ হইবার বিশি কারণ আছে। যিনি বহু দিনে লক্ষ্যপ্রতি হইয়া রাজ্যের অবস্থা বাহুল্যরূপে অবগত হন, তিনি চলিয়া যান, আর রাজ্যের স্থানান্তরিত ব্যক্তি, আগমন করেন। আমাদিগের বাহুল্য তাহা বিষয়ে এই ঘটনাটি আছে। বহু কালের লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠা

શાંત જાડાઈ+શ નિર્દોષ નેશન ૫.૧



আমি নবমগোচর হই না । তাঁরতচ্ছত্র বন্ধনে-  
শের প্রধান কনিষ্ঠা পরিগণিত হইয়া  
থাকেন । কনিষ্ঠ অংশে তাঁহার যে আখ্যান  
আছে, তাহাযে অস্বাভাবিক নাই । কিন্তু  
তৎপ্রণীত কাব্য আদিরস সুবিত্ত বলিয়া ইন্দ্ৰা-  
নীকন কালে সমাক্ষ কলোপধারী হইতেছে  
না । তাঁহা হইতে এদেশের একটা বহুৎ অনিষ্ট  
বর্তিত হইতে পারে । তাঁহার দৃষ্টান্তের অনুসরণ করিয়াই  
যে সে দুর্ভাগ্যবান চৌকীসী অক্ষর একত্র ক-  
রিয়া কাব্য লিখিতে লক্ষ্য হইয়া থাকে ।  
ঈশ্বরচন্দ্র গুপ্ত এই অনিষ্টকারিতার বিষয়ে  
তাঁরতচ্ছত্রের সবিশেষ সতর্কতা করিয়াছেন ।  
সাধারণ বস্তুক পদ্য রচনায় তাই ঈশ্বরচন্দ্রের  
বিলম্ব কবিত্ব শক্তি ছিল । কিন্তু হাজার বিঘ-  
য়ে তাঁহার কবিত্ব শক্তি দুর্বলপন চটক প-  
কির ন্যায় দূর গমনে নিভাস্ত অলম্ব ছিল ।  
আদিরসযুক্ত বর্ণনা বিষয়ে তাঁরতচ্ছত্রের  
শাস্ত্র তিনিও অসাধারণ কবিত্ব শক্তি প্রদর্শন  
করিয়া গিয়াছেন । কিন্তু কোন্ ব্যক্তি একে  
শুভার রস পূর্ণ কাব্যে অনুমোদন করিবেন ?  
সাধারণ শারীরিক জীবন্য চর্চন করিয়া মহা-  
ননা কোন্ ব্যক্তি মোহিত হইয়া থাকেন ?  
মুন্দর পুরুষ নবমগোচর হইলেই জীলোক  
বাত্তের চিত্ত বিকাশ করে, যে কবি একপ  
বর্ণনা করেন, তিনি যত্নে প্রকৃতির ও ধর্ম  
নীতির মর্মজ্ঞ নহেন । বিদ্যা মুন্দরের অন্তর্গত  
অভিমান প্রকরণটি পাঠ করিলে কোন্ মহা-  
ত্ম ব্যক্তির মনে কবির প্রতি ধনী বা জ্ঞান ?  
কলতঃ তাঁরতচ্ছত্রের কাব্যে প্রাণের কল সত্য  
পর্ষের প্রতি অনাস্তা করা হয় যে : তাঁহার  
লেখা দেখিলে স্পষ্ট বোধ হয় তিনি এত  
ধর্মের অস্তিত্বের প্রতি বিশ্বাস করিতেন না ।  
একপে প্রকৃত বিষয়ের অনুসরণ কথা : তাই  
তেছে । অনেক বিলাস বিল্যাসের ১০০  
রের ইচ্ছা । কাব্যের নাস্তিক কখন অসম্ভব হই  
না । এইসংসার থাকতে হরকালী বসন্ত  
কালের, পুরাতন ছাড়াখরা বর্ণনা লিখা  
আমার

“কুলম নিখিল আখি, গজিত বন্ধন পাখি  
কুল্য নাহি হয় ইন্দীবরে ॥  
নাশা তিনি তিল কুল, গুহা তিনি কন কুল,  
রক্তাখার বিধ ওষ্ঠাধর ।

মুন্সী কেরি বুঝি দস্ত, অভয়ে না হয় শাস্ত  
নাতে রহে অলখি কিতর ॥

মৃণাল জিনিয়া তুচ্ছ ইত্যাদি ৩ রূপে  
কাব্যের না মুন্সী অলখি হিনীর কপের কথা  
লিখিয়াছেন ।

বিলাসকপ রাজকুমার মুন্সী করিতে আ-  
সিয়া সন্ধ্যার সময়ে এক সরোবরতীরে  
নিদ্রিত হইলেন । এমনখস অলখি মোহিনী  
শিব পূজা । সন্ধ্যার সময়ে শিবপূজা ।  
করিতে আসিয়া তাঁহার ১০ রূপে মোহিত  
হইয়া তার ও অলখি পূজা করিয়া  
গৃহে প্রদান করিলেন । রাজকুমারের অল-  
খি করিয়া উঠিল, তিনি উৎকল্যে জাগ্রত  
হইয়া অস্বাভাবিক এক দুর্ভাগ্যে মগ্নে গমন  
করিয়া একসরোবরতীরে মালিনীর সহিত  
সাক্ষাৎ করিলেন এবং তাঁহার বাড়িতে গমন  
করিয়া কালীর বরে, মালিনীর বরে উভয়ে  
মিলন ঘটল । তৎপরে আদালতের উল্লিখিত  
শতাব্দীর তাঁরতচ্ছত্র বাসরের ১০০ বর্ণনা  
করিলেন । ১০০ পদ্য ১০০ পদ্য নাস্তি-  
কাকে করণ করিয়া : গেল, শেষে বহু  
কর্মে উভয়ের মিলন হইল, কাব্যেরও শেষ  
হইল । আমার বর্ণনার কথা বলিতেছি না,  
তাঁহা বহু অলখি হইতে পারে হইয়াছে । গ-  
পুটিও মুদ্রিত নহে । শ্রেষ্ঠ বিদ্যাবতী রাজক-  
ুমারী, সেই মালিনী সেই কালীর সহ সেট  
দৈবশক্তি ও সেই মিলন । মজুমদার কি এনে  
করেন, সর্ব সাধারণে এই অলখি পুস্তক পাঠ  
করিয়া আনন্দিত হইবেন । সকল প্রকার কি  
হীরক । কোন্ ব্যক্তি এই প্রকার বর্ণনায় আ-  
নন্দ মুখ অনুভব করিবেন ?

নাথেন্ডে বিজয়রূপ রাজার নন্দন  
১০০ ৩০০ সুবিখ্যাত নীতিজ্ঞ মুন্সী  
নীতিজ্ঞ মুন্সীজিত হেরিয়া বহন ।  
সমস্ত নীতি বিধি কিবা সুলক্ষণ ॥  
প্রথম : ১০০০০ জিল রাজপুত্র বাসা ।  
১০০০ ১০০০০ করিল খাণা খাণা ॥

### বিবিধ সংবাদ ।

বোম্বাই গবর্নমেন্টে ৩ নগর হইতে কল্যাণ  
পদার্থ ডাকের ইচ্ছা, জিবার বিজ্ঞাপন করি-  
য়াছেন । বোম্বাইয়ের ডাক কমিটিতে ডাক

আপেক্ষা ও অলখি, ইচ্ছা দিলে সেট বিল  
খালা তারও হইতে পারে ।

অলখি টেন্ডেন বাগানে পুনর্বার আভো  
বসী হইবে । এবার টিকিট অল্প মূল্যে বি-  
ক্রীত হইতেছে ।

নানাগোষ্ঠের প্রাক্ষিপ্ত রূপে সাভো  
পুত হইয়াছেন । এই ব্যক্তি পলায়ের অলখি  
পাতি সোমাই পরগণার কল্যাণিত ছিলেন  
তৎপ্রত্য ভেদপুষ্টি কমিসনর থাকার সাভো ত  
থাকার আভোগীর দ্বারের সাক্ষাৎ লইয়া এ  
পালকিতে জীলোকের বেশ পরিচয় রাখা স  
হেবকে ১০০ করিয়াছেন । রাষ্ট্র সাভো বলি  
ছেন, তিনি ১০০ পুস্তক, নাস্তি কখন জীলোক  
বালকটিগের শোণিতে দস্ত সিদ্ধ করেন নাই  
১০০০ বখাৎ মুন্সীজ্ঞানারে মুদ্রিত করিয়াছেন  
য বহুত নানা সাভোয়ের ১০০০ বখাৎ পা  
আছে, তাহার কথা নাই ।

কল্যাণ ১০ গণিত ১০ ১০০০ নেনাভো  
মহোৎসবটি প্রদেশে প্রতিষ্ঠিত । তাৎপরিণ  
যে সকল ব্যক্তি মুন্সীর ১০০০ আভোগীর  
তাঁহারাই এট রোজালাস হইতেছে । ১০০০  
বনই ওলাউটার আকর ।

বোম্বাই নগরে মালবেরীত অতিক্রমে  
মূল্য কমণ্য রক্তি হইতেছে । ১০০০ সন্ধ্যা  
প্রতিষ্ঠা : ১০০০ টাকার বিক্রীত হইয়াছে ।

১০০০ আভোগীর সোমাইট নগর ১০০০  
এখন বিলাসে জিলায় পল্লভেব তুলায় বাসি  
১০০০ যতিত কল্যে পানি পাত্র পাত্রিত হয় ।

খিনিজ সম্প্রদায় বাসীত আলোচ  
সরে এই বলিয়া আভোগ করিয়াছেন  
১০০০০০ আলো মলিন হইয়া, ১০০০ ১০০০  
১০০০০০ গাস কোম্পানিকে ১০০০ হইতে  
বলিয়াছেন । ১০০০ ব্যক্তি ১০০০ আলোচ  
লিন ১০০০ । গাস কোম্পানি ১০০০ ১০০০

বালটা জীপে এক জন ১০০০০ ১০০০০  
১০০০০ ১০০০ ১০০০ প্রকৃতি ১০০০ করি  
১০০০ হইতেছেন । ১০০০০ লোকের এমন  
১০০০ ১০০০

মজুমদারিট সম্প্রদায় বলেন নিরোটে  
১০০০ অলখি হইতেছে । মুন্সীজ্ঞের পর অলখি  
১০০০ ১০০০০ সর্বোচ্চ প্রাক্ষিপ্ত হইয়া  
১০০০ ১০০০ ১০০০০ গবর্নমেন্টে ইংল

সেই কণ্ঠচারির নিম্ন লিখিত হিসাব প্রকাশ  
করিয়াছেন:—

কথাটারি                      প্রত্যেকের যেমন ।

|  |      |      |
|--|------|------|
| ১ ইনস্পেকটর জেনরাল                     | ২৫০০ | ১০   |
| ৪ সহকারী                               | ৬    | ১২০০ |
| ৪ সহকারী ইনস্পেক্টর                    |      | ১০০০ |
| ৮ প্রথম শ্রেণির জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট |      | ৭০০  |
| ৮ দ্বিতীয় শ্রেণির                     | ৬    | ৩০০  |
| ২০ তৃতীয় শ্রেণির                      | ৬    | ৬০০  |
| ২০ প্রথম শ্রেণির সহকারী                | ৬    | ৪০০  |
| ৩০ দ্বিতীয় শ্রেণির                    | ৬    | ৩০০  |
| ৪০ তৃতীয় শ্রেণির                      | ৬    | ২০০  |
| ১০২ প্রথম শ্রেণির ইনস্পেকটর            |      | ১৫০০ |
| ২০১ দ্বিতীয় শ্রেণির                   | ৬    | ১০০০ |
| ২৪১ তৃতীয় শ্রেণির                     | ৬    | ৭০০  |
| ২৪ সহকারী ইনস্পেকটর                    | ৬    | ২০০০ |
| ২৪১ দ্বিতীয় শ্রেণির                   | ৬    | ২০০০ |
| ২৪১ তৃতীয় শ্রেণির                     | ৬    | ১০০০ |
| ২৪১ ওবরনিয়র প্রথম শ্রেণির             |      | ১০০০ |
| ২৪১ দ্বিতীয় শ্রেণির                   | ৬    | ১০০০ |
| ৩৮০০ তৃতীয় শ্রেণির                    | ৬    | ১০০০ |
| ৮০০০ প্রথম শ্রেণির কনস্টেবল            |      | ১০০০ |
| ৮৭৮০ দ্বিতীয় শ্রেণির                  | ৬    | ১০০০ |
| ৮৭৮০ তৃতীয় শ্রেণির                    | ৬    | ১০০০ |

সর্বশুদ্ধ ইহার জন্য ৫০ লক্ষ টাকা ব্যয়  
হইবে। রামপুর বোয়ালিয়া, ককবগর, কটক:  
পুরী, রাণীগঞ্জ, ঢাকা, কলিকাতা ও সমস্তপুরে  
হুতন প্রণিবেশ এক এক প্রেধার থানা হইবে।

অটোমটিক মাসিঙ্কেট মিশকে বে প্রশা-  
লিতে কার্য করিতে হইবে, তাহা স্থির করিয়া  
দিয়া নিমিত্ত করেকটি নিয়ম প্রকাশ করা হই-  
য়াছে। নিয়মগুলি স্থানান্তরে প্রকটিত হইল।  
আমরা তাহাদ্বারা দ্বিলায় অটোমটিক মাসি-  
ঙ্কেটের লাইসেন্স প্রাপ্ত করিয়া হইলেন।

আবার একে পাই পদ্মস। মত্তর আনা  
বিলম্ব হইতেছে। বিট পদ্মস। সাত্ত্ব যোন  
আনা।

অধোদ্যাব নবাবের চন্দী\* আগ্নিকি খাঁ  
বিদ্রোহ হইয়া বিনা অন্তর্মুখিতে নালিকাভাব  
বাহিরে ৫৩তে পাইতেছেন না : গবর্ণমেণ্ট  
সম্মতি উঃ : কে সম্মান স্থাপনতা প্রদান :  
কিছুকাল ।

কিন্তু দাঁড়িতে ইন্ডেন বাগান বিস্তৃত  
সমস্তই পড়িয়াছে। অনেক লক্ষ্য তথ্য  
অপস্থিত ছিলেন। এজিগোদান আমের-  
কো নহে। উহাতে প্রাকৃতিক জীব-  
সম্পদ আছে। ১৯৫০ সালে চাওদারগাও  
প্রাণী জরিপের সময় জাতীয়সংরক্ষণ  
কেন্দ্র ১৯৫০ সালে ১৯৫০ সালে ১ জন প্রাণ-  
জরিপ করিয়াছে, ১৯৫১ সালে ১ জন প্রাণ-



যে উপায়ে উভয় দেশেই

যোগান হয় শুভকর এক কমিসন নিযোজিত হইয়াছেন। জাহাঙ্গীর বিদায় এই প্রধান সে নাপতি এত দিনেরপর কমিসরিএটের জোর দিগের প্রতি দৃষ্টক্ষেপ করিয়াছেন। কিন্তু আ কমিসরের। বিশেষ সতর্কতা হইলে কমিসন কিছুই করতে পারিবেন না। পবনিক জোর- কের রাজস মিগের কি কিছুই হইবে না।

এখান সেনাপাত কাজ। কবিয়াছেন যে 'জান ওলাউটা' হইবে যেখানে হইতে সৈন্য সিগকে অঙ্গ স্থানে তাঁরুর তিত্তর রুহিতে হইবে। সেখানেও ওলাউটা গমন করিলে জোরের দুই ও জোরের ব'দুর বিপরীত দিকে বাইতে হইবে। ওলাউটার নিদারণ হইলে বাইবে বি শেষ। সে পরিবৃত্ত না কবিলে খেনাঙ্গিগকে প্রদত্ত উদ্যোগের কথা হইবে না। সরি কি পরোক্ষ আভিগম্যগকে এনিবহে মনোযোগে হইতে বলিয়াছেন। প্রজার ওলাউটার সৈন্যের উপায় করিতে হইবে সে কথাটি নই।

আমরা শুনিলাম শিক'সংক্রান্ত কার্গেতে ভুক্তপূর্ণ অধ্যক্ষ ইংরাজ সাহেব বক্তৃতাশীল সে হেটোরি হইবেন। ফেলিতে সাভোবের জিহ্বা পায়েবা কমেই দেখানিতেছেন।

নাহোর জনিকেল সম্প্রদায় উক্ত মণ্ডল পুরাতন মকল বংশীরদিগের অট্টালিকা, দই, ওলাউতা অস্থায়ী রাখিতে অল্পস্বার্থ করিয়া ছেন। কালো জ্যোতিঃপ্রসাদ এক লক্ষটাকা ব্যয় না কবিলে মনুনা মসিদ এতদিন কোথায় বাইত। তাহাও সরি হইরোজ চাভিয়া সেনাগ- ৭ের শিবিরস্থাপন করিতে বলিয়াছেন। চ'ওলোরা রোম মগবীর অট্টালিকা তথ্য কবিয়াছিল বলিয়া চিরকাল নিশানীর হইয়াছে। তাবতবর্ষস্থিত ইংরাজেরা কি সে তার উক্ত করেন :

সম্রাতি বেখুন মোসাইটীতে মালমার্জি সাহেব বাঙ্গালী যত্নের বিষয়ে এক উত্তম প্রস্তাব পাঠ দিয়াছেন। তাঁরুর ডকরাজ। মেমনা- রায়ণ সিংহের বক্তৃতার প্রত্যুত্তরে এই কথা বলেন এই মতান্তর এতদেশীয় ও ইটরোগীর অনেক ব্যক্তি উল্লেখ দান দ্বারা পরস্পরের মোহন্যান্বিত করিতেছেন। উক্তর আতির স- জ্ঞান হইবেক বলিয়া। যেহুসংসার আছে তাহা এতদ্বারা অমূলক বলিয়া প্রতীয়মান হইতে-

ছে। অদ্য ভারতবর্ষের একজন সমপ্রধান ক- লীল ও ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সমগ্র সভা, রাজা মেমনারায়ণ সিংহ উপস্থিত হইয়াছেন। তিনি এক প্রাচীন মহ'সম্রাট বংশের প্রতিনিধি, যে বংশ এদেশের ইতিহাসের মধ্যে প্রধান স্থান অধিকার করিয়াছেন। যে সভা মানবজাতির মধ্যে ১০ কোটি মনুষ্যের কল্যায় বাবস্থা প্রস্তুত করিয়াছেন, সেই সভায় এক জন এতদেশীয় আদীর প্রবেশ করিতে প্রকাশ পাইতেছে গবর্ণমেণ্টে এক নীতি অব লম্বন করিয়া উক্তর আতির পরস্পর বৈর শান্তি করিয়া সম্রাট করিয়া দিবার সম্রাট করি য়াছেন। সকলের দৃষ্টি এ কথাও মনেতে পা ওয়া যায় না।

করাটিকে বিনিময় সাহেব এলিয়া দ্বিত হইল, তাহাকে আত্মপিত্ত বৃত্ত কর। হইল। তাবতবর্ষীয় গবর্ণমেণ্টে তাহাকে কামপুত পা- ঠাইতে আত্ম করিয়াছেন। এ কটিক অতি দুর্ভাগ্য বলিতে হইবে নানা মতেন এত মি কোম নহেন যে পারস্য দেশ প'কতে করটি হইয়া মকর হইলেন।

ফিনলেসের এক জন পত্র প্রেরক প্রস্তাব করিয়াছেন নাগাজিগকে আক্রমণ না করিয়া তাহাদিগকে তাহাদিগের হস্তের বাণিজ্য করিতে উৎসাহ দেওয়া কর্তব্য। তাহা হইলে বেচা বদলিগেব সুবিধা হয় না।

কুণ্ড মন ইন্ডিয়া সম্প্রদায় সম্রাট প্রেসি ডেন্সির মায় কহুলাবে দিয়া। ১৮৭৫-৬-৭ লক্ষ টাকা দিবার অঙ্গবোধ করিয়াছেন। ১০ টাকা দেওয়া হইলে তাহা কুড়ীয়া ৩০-৩৫ কোটি এবং আয় এতৎকেন্দ্র সচ বিদ্যালয়ে ব্যয় করিতে হইবে। যে বলে কোন ব্যক্তি ৫০০০ টাকার অধিক দান করিবেন সে স্থলে গবর্ণ মেণ্টের সেই পবিন ৭ টাকা দেওয়া কর্তব্য। সম্প্রদায় নীল, মলিক প্রভৃতিকে এ বিষয়ে দান করিতে বলিয়াছেন। তবে বাগানে নাচে কে টাকা ব্যয় করিবে।

লক্ষী নগরে একটি বিদ্যালয় ও পুস্তকা- লয় স্থাপিত হইয়াছে। বাবু গিরিশচন্দ্র ঘোষ ইংরাজ উদ্যোগী। ভারতবর্ষের শিক্ষা ও রাজ্য সংক্রান্ত জীবিত বাঙ্গালী দিগের দ্বারা হই- বে।

সম্রাট হিন্দুস্থানী সম্প্রদায় শিবিরাঙ্কন একোনগরে একটি লীলাবীর লোক আনিয়া- ছে। সে সাহে পাঁচহাত লম্বা, মস্তকের বেত প্রায় পাঁচহাত, হস্ত পদাদি সেই পরিমাণে। কিন্তু সে অতিশয় দুর্বলতাইরে এক গরুর মার্কিত লইয়া বাইতে এর। সে এতদ্বা প্রায় ১০০ টাকা দান পাইতেছে।

### রংপুর দিক প্রকাশ হইতে উদ্ধৃত।

দিন দিন মত লোকের বিদ্যা বুদ্ধি সভ্যতা হ্রাস পাইতেছে, ছল এতরোণা এবকনাও তত বাড়িতেছে, বিশেষ বয়সেই তাহার প্রাচুর্য অধিক দেখা বাইতেছে, আবার হুগি অপেক্ষা জাগ্রতবেরা সে অংশে আরে। গাউ, গড় ও বর্ষের মধ্যে কলিকাতার দিকট বাসি অনেক ভলিন গনা দান। ধনি মছোদর মারুণ খদ্যার কল হই বা। আবার পথে পদ্যাপন করার গুরুতর রাস সচে মজিত হইয়াছেন, তাহার মধ্যে বাবু শিব- কৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায় বাবু বেণীশচন্দ্র প্রভৃতি ২। ও জন ভক্তি প্রধান লোক কারাবহা- রেনেই পকর পাইলেন, অপার কয়েক জন এখনও মও ভোগ করিতেছেন, উত্তরপাড়া নি- দাসি জীবুজ বাবু মরুকুজ বন্দ্যোপাধ্যায় ও শিব- কৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের দীপান্তর হইল সময়ে ২৪ পরগনার এচও সেনস কল মেং সাটুর সা- কেবের ঢকে পড়িয়া কারাবদ্ধ হইলেন পরিবর্তে তাপো তাপো পুণ্যবলে ৩।৪ মাস হাজতে থাকিয়া আপীল আদালতের হস্তে মুক্তি পান। গায়েব সে গরু হুর না হইতেই পুনরায় দ্বিতী- এক মোকদ্দমার লিপ্ত হইয়া সুখ্যাতির পরিপা- ক মরাইলেন।

আমরা সংবাদ দাতার পত্র প্রমাণে গত মং- ক পক্ষে তাঁহার বিবরণ চুপক বিবরণ মাত্র এক প কবিয়াছি, এক্ষণে কুণ্ড অব ইতিহাস, পত্র পা- আক্ষেপ পূর্ণক প্রকাশ করিতেছি, তাহা তাঁহা উপযুক্ত ভৃত্য জীবুজ পীতাম্বর বহু দ্বারা এ- পাউ। এতত্ত করিয়াছিলেন, বিচারে তাহা কুজিনহ প্রকাশ হইয়াব মদর নিশানত, জা- লতের বিচারে ৫ বর্ষের জন্য কারাবদ্ধ হই- ছেন, খাটনির বিনিময়ে ছল সম্রাট হই- দিতে হইবেক। শুনাযাইতেছে, কলিকাতা বাসিবাচুরা তাঁহাব মওজা মনু হওন মর্ষনার গবর্ণমেণ্টে আবেদন করিবেন, এং কোকোল মিউনিসিপাল সাহেব বহুর পুজকে লইয়া, প্রা- ব-



নিয়েল আপীল করা হইল। ইতিপূর্বে কাল প্রতিষ্ঠা করবার আপীল প্রবি  
কোম্পেন্সে কখনই নাই। সুপ্রিম কোর্টের  
সিদ্ধি। ও লোকের মতামত চক্কর। ইহা আশ্চ-  
র্য্য বটে। যদিও প্রতিকারের অবস্থাই এখন  
একপ হইতে গাণ্ডিল তখন সামান্য লোকের  
কা কথা, এই সকল মেথিরা তদ্বিহাই ইংল্যান্ডে-  
রা এদেশের লোকের প্রতি অগ্রদ্বা ও চক্কর-  
কেন

### ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপকসভা ।

২৩এ এপ্রেল বুধবার। দিনকর কাণ্ড পাণ্ড-  
লায় রাজ্য ব্যতিরিক্ত নামকায় সভা উপস্থি-  
ছিলেন।

বিভিন্ন সাহেব প্রস্তাব করিলেন ১৮৬৫  
অক্টোবর ২ আইনবিরোধিতা পরিবর্তন করি-  
বার যে বিল হইয়াছে তদ্বিষয়ক সিলেক্ট কমিটি  
রিপোর্ট পঠিত হইয়া বিল বিলম্বিত হয়।

চারিষ্ঠম সাহেব প্রস্তাব করিলেন, ১৮৬৫  
টাকা ও পয়সা ক্রয়বার বিল সিলেক্ট কমিটি  
প্রকারে স্থির করিয়াছেন তাহা পঠিত হইয়া বিধি  
বদ্ধ হয়

সিলেক্ট কমিটি কোম্পানির আইন সংশ্লি-  
ষণ বিষয়ক বিলের বিষয়ে রিপোর্ট করিয়া  
ছেন পীতন সাহেব তাহা সভায় অর্পণ করিলেন।  
আগামি সভায় এই বিল বিধিবদ্ধ করিবার প্র-  
স্তাব করা হইবে। উক্ত আইন দ্বারা পণ্যাবের  
জেল। কমিসনর দ্বিগেহ চলে গা ২২সর কাবা  
বাসনও হইবার যে কমপেন্স দয়া হয়, পণ্যাবিত  
বিল দ্বারা তাহা সীমিত করিয়া ডুইয়েসসর করা  
হইয়াছে

১৮৫৯ অক্টোবর ১৪ আইন সংশ্লিষ্ট নিম্নলিখিত  
বিলের বিষয়ে সিলেক্ট কমিটি যে রিপোর্ট  
করিয়াছেন সে সাহেব তাহা অর্পণ করিলেন।  
আর তিনি ১৮৫৯ অক্টোবর ১০ আইন সংশ্লিষ্ট  
বিষয়ক বিলের সিলেক্ট কমিটির বিধিগত বনি-  
বার প্রস্তাব করিলেন।

রাজ্য দেবনাগরী সংক্রান্ত বিলসেন লোক-  
সম্প্রতি বার্ষিক পাঁচশত টাকার চান আত গান-  
ব্যক্তিরিগেব ইনকনটাক্স বহিত করিবার যে ক্রান্ত  
করিয়াছেন অর্থাৎ তাহা সীমিত করা  
করিয়া থাকিতে পারিবা। এতদ্বারা প্রবিধ উপ-  
কার হইয়াছে। অথবা পরিব্রজলোকেরা পীতন  
হইতে মুক্ত হইয়াছে। দ্বিতীয়তঃ সকলের ইংল-  
ওয়েস্টার প্রতিভাও কমিয়াছে, তৃতীয়তঃ এই  
আইন ইংলওয়েস্টার চিব্বাঙ্গী হইবে বলিয়া

লোকের যে প্রকার অসন্তোষিত হইয়াছে তাহা  
বে লোকসাহেব এদেশে আন কিছুকাল অবস্থি-  
তি করেন এই প্রার্থনা করিয়া অধিকারের  
করিলেন।

সেইসাহেব ১৮৬৩ অক্টোবর ১৭ আইন সং-  
শ্লিষ্ট বিষয়ক বিলের ১৭ নীতি কমিটির রিপোর্ট  
প্রদান করিলেন।  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৬ আইন ১৮  
৫৯ অক্টোবর ১৮ আইন ও ১৮৬৫ অক্টোবর ১৬ আইন  
ইন সংশ্লিষ্ট আইন সকল অর্পণ করি-  
লেন

### ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপকসভা ।

১৯ এপ্রেল শুক্রবার ।

সভা প্রস্তাবিত বিল ব্যতিরিক্ত সমুদায়  
সভা উপস্থিত ছিলেন। ইংল সাহেব সভা  
পাঠ্যপুস্তক প্রাপ্তি সিলেক্ট কমিটির  
যলথ পদক তৎপরে প্র-তিষ্ঠিত হইলেন।  
১৮৬৫ আইন সংশ্লিষ্ট আইন সকল সাহেব  
সভায় অর্পণ করিয়া বিল সভায় অর্পণ করিয়া  
তাহা বিলম্বিত করিবার প্রস্তাব করাতে তাহ  
প্রায় হইল

সিলেক্ট কমিটি প্রস্তাবিত আইন ১৮৬৩ অ-  
ক্টোবর ১০ আইন সংশ্লিষ্ট বিষয়ক বিল বিল-  
ম্বিত হয়

অর্থমন্ত্রী তাহে বিল অর্পণ করিয়া যে-  
করম ছিল তাহা অর্পণ করিয়াছেন।

### গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন ।

বাংলাদেশীয় সেক্টরগে গবর্ণমেন্টের  
আদেশাদেশের নিয়োগ ।

এই এপ্রেল—নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা যশো-  
হরে লিখা সংক্রান্ত কমিটির সভা হইলেন।

বাবু কালীচন্দ্র রায়, বাবু বাপাচরণ এবং  
জিহাদ মোহ চৌধুরী

১৫ই এপ্রেল—১৮৬৩ সালের ৯ আইন  
সমুদায় নিম্নলিখিত লোকেরা ২৪ গবর্ণমেন্ট  
ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইলেন।

প্রাপ্তপুস্তকের কাজি কর্তার আহমদ।  
পাণ্ডুর বাবু নীলমণি মিত্র।

১৬ই এপ্রেল—ডব্লিউ জি ইংল সাহেব নব-  
দ্বীপে নিবল ও সেনিয়ার জেজের প্রতিনিধি  
হইলেন।

এস এক ডেবিস সাহেব সারনে প্রথম প্রে-  
ব মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইলেন।

১৭ই এপ্রেল সাহেব (মি) একনে অসমতি  
পাঠ্যপুস্তক বহু রূপে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর  
হইলেন

১৮ই এপ্রেল—মি এইচ সাহেব সাহেব বা-  
কুড়ার মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইলেন, কিছু  
আপাততঃ তিনি যে বিশেষ কার্যে নিযুক্ত  
হইয়াছেন তাহা বিবরণ

১৯ই এপ্রেল—নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা সমুদায়

সংক্রান্ত কার্যের কমিটির সভা হইলেন।

জ. এ. সাহেব। বাবু কালীচন্দ্র রায়  
এক. ১৮৬৩, সিলেক্ট সাহেব বসিমুল্লাহ  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব কমিটির মেম্বর হই-  
লেন।

১৮ই এপ্রেল ১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট হইল। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

১৯ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন।

২০ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২১ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২২ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৩ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৪ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৫ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৬ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৭ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৮ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

২৯ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

৩০ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

৩১ই এপ্রেল—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

১ম মে—১৮৬৩ সাহেব সাহেব সাহেব  
কমিটি হইলেন। ১৮৬৩ আইনের ২০ আইন  
১৮৬৩ অক্টোবর ১৮ আইনের ১৮ আইন সাহেব  
সিলেক্ট সাহেব সাহেব সাহেব সাহেব  
মাজিষ্ট্রেট কমিটি প্রাপ্ত হইলেন।

দ্বিগুণে এক মহাবুদ্ধি পরাজিত করিয়াছে। উক্ত  
কালের বিস্তার লোক হইয়াছে। সেনাপতি  
মাকিলন ফেরারকাস কোর্ট হাউসে প্রধান  
শিবির স্থাপিত করিয়াছেন। পটমাক নদী তীরস্থ  
পথ পরিষ্কৃত হইয়াছে।

ইটালিয় কুতন মন্ত্রি সম্মান্য বেরগে রাজ  
কার্য্য করিবেন, সেট অতিশয় প্রধান করিয়া-  
ছেন— রোমনগর রাজধানী ও বিনস  
বাহীন হইবে। দাঁকণ ইটালিয় সেনারা বাক্স  
দীর্ঘ সেনারসকল হইবে কণা হইতেছে।  
নাম নগরস্থিত কবালী দ্বিত পোপের সহিত  
আগমনে সাক্ষাৎ করিয়া ৩১ং পারিস যাত্রা  
করিয়াছেন।

এুনিয়ন মন্ত্রিবর্গের অনেকে পরজ্ঞান ক-  
রিয়াছেন। জাতি সাধারণ মনোর অস্তিনিধি  
পূর্ব কবিবার জন্য বিশেষ চেষ্টা করা  
হইতেছে।

কদালী মহাসভায় যে সমস্ত এঁঁ মিনি বি-  
বলীয় বাণিজ্য ব্যবসায় উপরে অধিক তুল্য ল-  
ভা অংশীদার বণিকদিগের সুবিধা করিতে  
সিদ্ধিলাভিলেন, তাঁহার বিনিয়োগ ইংলণ্ডের  
মহিত সম্পত্তি বাণিজ্য বিষয়ে যে লাভ হই-  
য়াছে তাহাতে ক্রাসকে কতিপয় হইতে  
হইবে।

হাউস অব কমন্স এই বলিয়া ডক্ বিতর্ক  
করিয়াছেন যে উপনিবেশানিতে যে সমস্ত  
গণ্যকৃত প্রকৃত করা যার গবর্ণমেন্টকে তদা-  
র্ক করা হয় করিতে হয়।

৭. পুসকর্ষক অসংখ্য পীড়িত হইয়া-  
ছেন

লবার্ভি লোকের প্রথম সমাধির সংরিন-  
সিত প্রত্যক্ষদর্শন করিয়াছেন।

ইটালির সর্গ হামের কাডীর রাইকল সভা  
স্থাপিত হইতেছে।

একপ জনজাতি গাবিবলডিং বাটেলির  
মিত সমুদায় হইয়াছে।

২৪ং দৃষ্টিতে গ্রীসের বিজ্ঞান শক্তি হ-  
য়াছে বটে কিন্তু বাস্তবিক হয় নাই।

কেনিগটনের কামডেন হাউস মাসক ২টি  
মিত পিচাছে। ইতিহাস রবায়ের কাঠখামাও  
হইয়াছে।

কতকগুলি প্রধান ব্যক্তি ইংলণ্ড হইতে ইউ-  
ইটেড স্টেটস পর্যন্ত টেলিগ্রাফ পরিবার ট-  
নে লার্ড লামার উদ্দেশ্য সহিত সাক্ষাৎ করিয়া-  
ন।

গেজেট প্রকাশিত হইয়াছে ভারতবর্ষের

সেনা দলের অনেক আফিলর উল পদে অধি-  
কৃত হইয়াছেন।

মিরসাবলী।

বিজ্ঞাপন

১৬ই এপ্রেল।

অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটদিগকে যে যে নিয়মে  
কার্য্য করিতে হইবে, তাহা সাধারণের গোচ-  
রাধ প্রকাশিত হইল।

১ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা নিজ নিজ  
কর্তব্য কর্তব্যের তার গ্রহণ কবিবার পূর্বে জেলা  
মাজিষ্ট্রেটের সম্মুখে নিম্ন লিখিত শপথ করি-  
বেন—

“আমি, অহুক, অহুক জেলায় অবৈতনিক  
মাজিষ্ট্রেট পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া শপথ করি-  
তেছি, যে আমি এই জেলায় মাজিষ্ট্রেটের  
এলাকার মধ্যে শান্তি স্বার্থ যথাযথ মাজি-  
ষ্ট্রেটের সহায়তা করি; আমি অপকথাতিতা  
ও তদ্রূপা সহকারে নিজ কর্তব্য কর্ম সম্পাদন  
করি, আমার কর্তব্য কর্ম সম্পাদনের সময়ে  
গবর্ণমেন্টের আজ্ঞা প্রতিরোধে সাক্ষ্য সহজে  
অথবা পরোক্ষে টাকা, অথবা পুরস্কারাদি গ্রহণ  
করিব না, এবং আমি প্রচলিত আইনের অঙ্ক  
সামী হইয়া যেমন জ্ঞান ও বিবেচনা তদনুসারে  
কার্য্য করিব।”

২য়। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা যে কমতা  
পাইবেন, তদনুসারে বিচার করিবেন। সময়ে  
সময়ে তাঁহাদিগকে কমতা দেওয়া হইবে। তা-  
হারা পুলিশের উপরে কোন কমতা প্রকাশ ক-  
রিতে পারিবেন না। কিন্তু কোন ব্যক্তিকে বন্দী  
কবিবার জন্য পুলিশের উপর পরমান দিতে  
পারিবেন।

৩য়। যদি বিচারের সময়ে অবৈতনিক মা-  
জিষ্ট্রেট কোন পুলিশ কর্মচারি কার্য্যের দোষ  
সন্দেহ করেন, তাহা হইলে তিনি তদ্বিষয় নিক-  
টবর্ত্তি পুলিশের প্রধান কর্মচারির গোচর কবি-  
বেন।

৪র্থ। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা নিজ নিজ  
জেলায় পুলিশ কর্মচারি কি অন্য ব্যক্তির বি-  
জ্ঞাপন ও আশ্রয়, যত্নে মোকদ্দমা গ্রহণ করিতে  
পারেন। মাজিষ্ট্রেট ইচ্ছা করিলে অবৈতনিক  
মাজিষ্ট্রেটের নিকটে যে যে কোজদারি মোক-  
দ্দমার অঙ্কনজান, গ্রহণ বিচার ও নিষ্পত্তির  
তার দিতে পারিবেন। তাঁহারা সেলিয়ানে ও  
জুজিরকোর্টে সমর্পণ করিবার মোকদ্দমাও এ-  
খন বিচার করিতে পারিবেন। কিন্তু এরূপ হলে

সেখানে হইবে অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। ন-  
পসেন্টের নিকটে উক্ত কমতা প্রাপ্ত হইয়াছে  
কিনা।

৫ম। জেলায় মাজিষ্ট্রেটের কামিনসে  
অঙ্কনজি অঙ্কনসারে কোন অবৈতনিক মাজি-  
ষ্ট্রেটের এলাকার সীমা বদ্ধ করিয়া দিতে পারি-  
বেন; অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট তাঁহার ব্যক্তি  
কমতা প্রকাশ করিতে পারিবেন না।

৬ষ্ঠ। যদি কোন অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট  
কোন মোকদ্দমার বিচারের সময়ে কেবল যে  
সাক্ষ্য সহজে অথবা পরস্পর সহজে তাহাতে  
তাঁহার নিজের আর্থ আছে, তাহা হইলে তি-  
নি তৎকণাৎ ঐ মোকদ্দমা মাজিষ্ট্রেটের নিকটে  
প্রেরণ করিবেন।

৭ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের কোজদারি  
আইনের ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় অবস্থা গ্রহণ  
প্রাপ্ত নবকারি মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইতে  
পারিবেন; এবং তদনুসারে কোজদারি বিচার  
পাত হইয়া মোকদ্দমা নিষ্পত্তি করিবেন।

৮ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা প্রধানতঃ  
কর্মচারিকে কোন পদার্থ প্রদিতে চাহিলে  
তাঁহা মাজিষ্ট্রেটের দ্বারা প্রেরণ করিবেন।

৯ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা এই বিষয়ে  
বিশেষরূপে দৃষ্টি রাখিবেন যে অর্থ প্রত্যর্ষ  
দ্বিগুণে হয়। বিচার করিয়া কষ্ট পাইতে না হয়।

১০ম। প্রধানতঃ কর্মচারির আশ্রয় অঙ্ক-  
নসারে অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটদিগকে পূজ্যকর্তী  
নিম্ন লিখিত হিসাবগুলি রাখিতে হইবে, মা-  
জিষ্ট্রেটরা যে সে সময়ে সেইগুলি যেমন সম্পূর্ণ  
সেখানে পাঠ্য—

জরুর কোষের হিসাব।

অন্য অন্য সাধারণ কোষের ঐ।

জরিমানার ঐ।

আবেদনের ঐ।

প্রত্যেক কমা ও ধরনের ঐ।

সেলিয়ানে সমর্পণ করিবার ঐ।

অর্থ প্রত্যর্ষ দ্বিগুণে আত্মক

মাজিরের ঐ

সমনের ঐ

প্রাপ্তি পরমানার ঐ

স্বাক্ষরিত সকলের ঐ

১১ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা ঐ সকল  
বিবরণের করণ মাজিষ্ট্রেটের নিকটে হইতে পাই-  
বেন।

১২ম। যেখানে সর্গ সাধারণে অবাধে ঘাই-  
তে পারেন। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা এরূপ  
হলে বিচার কবিবেন।



এই প্রাচীন এক জন স্বর্ণবলিকেশ গল্পী যুগ  
বংশ। দোষগণ্য হইয়াছে। ১৩ সুখবাসের এ  
নাতি হইবেলী ৩৩ উক্ত সুখ বংশের বংশ  
তে আগমন করিয়া, আগমনকে মধ্যস্থানী  
সংসারমাধ্যম ও নান্যাদি চিত্তবিন্দু, নিপ  
বলিয়া পবি দ্বিষ্ট। কাহিল যে আশি ভোয়া  
বলি তার মতবৎসাদে, বংশ, ১ মত্ব দ্বারা আ  
বেদ্য ক'বতে পারি। এই ৪র্থ প্রবণ করি  
সুখ, ১ ক ও তাহার দ্বী এই প্রবণতর নিক  
একবারে বেন। বন। মূলো বিজীত হইল এবং  
নাতিগত বাগ্ৰতা, ব সাহিত্য দোষ হুত কবিয়া  
অন্তরোধ কবিল। পর দিবস আগমনে বেন। ৪  
খটিকার মনয়ে সেই ৩৩ এ বংশের আশি  
আশি। তাহ'কে একটি সুখ্য কলম বাহি পু  
ক'বয়। তাহাতে বিন্দুহর টেল প্রকাশ করি  
যাখিতে এবং আতপততুল ও মিষ্টাদি টে  
বেদোর আশি, মন ৩১৩ ক'বয়। স্থানান্তর  
ময়ন কবিল। বাক্য তত্ত্বপ কবিল। ১৩৩ ২  
কক সাহসকালে একটি মৃত পতন পত্র 'বর্ষ'  
মত্বক হুত করিয়া উপস্থিত হইল। অনন্ত  
একটি কাষ্ট মনে বস্ত্রাচ্ছন্ন কবিল, তত্ত্বপাি উ  
পাত্ত মত্বক স্থাপন করিয়া পূজা কবিতে বসিল  
কিরতকণ পুরে বৃত্ত সুখ বাদকতারাকে কবি  
"তুমি মনুষ্য অলঙ্কার গায় হই। ১ উন্মো  
করিয়া যে যে অলঙ্কার যুগ্ম আছে অর্থাৎ  
অলঙ্কার দ্বিগুণে একটি ও বাদ্যে একটি  
বিধান করিতে হয়, তাহা'র এক এক পাট ক  
বার নিকট ও এক এক পাট করিয়া আগমন  
নিকট বাধ এবং যে অলঙ্কার অযুগ্ম আছে তা

৩০ আশ্বিন মাসের দশমী তিথি বসন্ত ঋতুর অল-  
সার কুতূহল করিতে। "অবশ্যই শ্রমের  
ফলপ্রসূত। সন্তান অলসতার খাতি হইতে  
লিখ। এক পাট বীজ মল, এক ছক, পুঁইছা  
এক ছক। অবিজ (এই গল্পনাগুলি রূপার)  
একটি সোনার কোষ ও একটি স্তম্ভ মত এবং  
কটি পিতলের হার একত্রে ৬ সকা অলসার  
কিছু দিয়া। অবশিষ্ট আপনাদের নিকট রাখিল।  
অনন্তর প্রভুরক দ্বান সমাপনান্তে এই বর্ণি  
কেনে শ্রম করিয়া আনিতে অস্বস্তি করি-  
বিলে গমন করিলে, খুঁজি তদীর ভাষ্যকে  
ক নিখালে রাখা হইতে সুস্থিত বাসুকা আন-  
ন করিতে আদেশ করিল। এইরূপে যখন তা  
রা উত্তরে বহির্গত হইল তখন খুঁজি শ্রীর ইউ  
ধঃমব সময় পাইয়া অলসারাদি হস্তধর করিয়া  
উত্তর দ্বারের দিকে পলায়ন করিল। অনন্তর  
কিছুক্ষণ বালুকানয়ন করিয়া জন সূন্য  
হইল। বিনয়াল হইল এবং পুরোক্ত বারি-  
কিত ঘটে হস্ত প্রবিষ্ট করিয়া তদন্তান্তরে যখন  
দীপ অলসার দেখিতে পাইল না, তখন একে-  
ভাবে ক্রন্দন করিয়া উঠিল। তৎপরে স্বর্গবিনিক  
যত্নাগমন করিয়া তদন্তান্তে দর্শন করিয়া সন্তান  
বহুদেবে ইতস্ততঃ অগণ করিল, তখন সে বাসীর  
ম। পার হইয়াছে আর তাকে পার কে? অবশ্যে  
প্রবন্ধকের অস্বস্তিমান না পাইয়া হস্তাশ হইয়া  
লিখে খবর দিল। দেখা বাউক পুলিসের বাবা-  
রা কি করেন? বাবা হটক, মহাপ্র। বৌ হা-  
র বিবরণটিতে কাকিতে পড়িয়াছে অর্থাৎ স্ব-  
বিনী মনে করিয়া পিতলের হার পাছাটি  
হইয়া গিয়াছে। এমন পর্যায়ে পুলিসে এবিষয়ের  
কিছু অস্বস্তিমান হয় নাই, পরে-বেল্পে বহু একাশ  
করিব নিবেদন।

মানিকুস পুরুলিয়া

সন ১২৬৯ ৬ বৈশাখ

কম্যাটিং পাঠক

০০০

## শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাপ্রেরণ।

২৪ইশাব্দ নিবাসী ব্যক্তিদিগকে একত্রে সৎ-  
করার অস্বস্তিমান ত্রুটি দেখা বাউতেছে। কির  
খবর হইল তাহার। উত্তর পশ্চিমাকাশের তলী-  
ক ছুঁজিকের এবং হুঁত মহাপ্রেরণের হুঁত  
আগের চাঁদার বিশেষ কাছাকাছি করিয়াছিলেন  
সাবাব এই বৈশাখ বেলা ৫ ঘটিকার সময় তাগী  
প্রদী তীরস্থ শ্রীযুক্ত বাবু পুলিনবিহারী সেনের  
দ্বন্দ্বা বৈঠক থানার জীল জীযুক্ত সার্ব কানিং

এবং আশ্বিনের লেপ্টেনেন্ট-গবর্নর মহাপ্র-  
কর শ্রী সোমপ্রকাশের নিকট হুঁতজতা প্রকাশ্য  
এক সভা আহ্বান করেন, ইহা কেখিরা সাতিন্দ  
আজ্ঞাদিত হইয়াছে। এই সভার বাবু পঞ্চানন  
বন্দোপাধ্যায়, বাবু পৌরদাস বসাক, বাবু পুলি-  
ন বিহারী সেন বাবুকাচরণ সেন বাবু রামদাস  
সেন বাবু-আপকুক বন্দোপাধ্যায় বাবু অধি-  
কাচরণ বন্দোপাধ্যায় বাবু দীননাথ বন্দোপা-  
ধ্যায় বাবু দীনবন্ধুশাহায়াস বাবু বৈকুণ্ঠনাথ নাথ  
বাবু রামলাল চৌধুরী প্রভৃতি মহোদয় গণ উ-  
পস্থিত ছিলেন। সভার কার্যারম্ভ হইলে মহা-  
প্রেরণ প্রাণীনাথকে আহ্বান করিবার জন্য যে  
অভিনন্দন পত্র প্রেরিত করা হইয়াছিল বাবু পৌ-  
রদাস বসাক তাহা পাঠ করিলেন। তাহার পর  
বাবু পুলিন বিহারী সেন কহিলেন "প্রা-  
ণী নাথের আশ্রয়ের দেশের যেরূপ উপকার ক-  
রিয়াছেন তাহা বর্ণনাতীত, এজন্য আমাদিগের  
সকলের মাধ্যমত কিকিৎ ২ প্রদান করিয়া তা-  
রতর্ঘ্যের সভার পাঠান আবশ্যক। এই বলিয়া তি-  
নি তার ৫ বর্ষের সভা হইতে প্রেরিত প্রাণী নাথ  
বের অর্থার্থ চিহ্ন স্থাপন করিবার আবশ্যকতা  
বিবরিত বিজ্ঞাপনী বাবু দীননাথ বন্দোপাধ্যা-  
য়কে পাঠাথ প্রদান করিলেন। তিনি তাহা পা-  
ঠ করিয়া কহিলেন "আমিরা চাঁদা সন্তুষ্ট করিয়া  
না পাঠাইয়া যদি এখানে একটি "প্রাণী হাম"  
নামক প্রাণী নাথের নিকট হুঁতজতা প্রকাশ্য  
গৃহনির্মাণ করি; তাহা হইলে ইহাতে দুই উত্তম  
কল হইবে। এক প্রাণী নাথের সমীপে হুঁত-  
জতা প্রকাশ করা; দ্বিতীয় এদেশে সাধারণ বি-  
ভার্ক নামা সৎকার্যের আলোচনার জন্য সাধা-  
রণ সভাগৃহ নির্মাণ করা। অতএব আমাদের এই  
রূপ করাই কর্তব্য। বন্দোপাধ্যায় মহাপ্রেরণ এই  
প্রস্তাবে বাবু দীননাথ শাহায়াস ও বাবু অধিকা-  
চরণ বন্দোপাধ্যায় পোষকতা করিলে পর সকল  
সভাই তাঁহার এই প্রস্তাবে ধন্য বাদের সহিত  
অনুমোদন করিলেন। পুনরায় বাবু দীননাথ  
বন্দোপাধ্যায় কহিলেন আমাদের এই বিবরের  
চাঁদার জন্য আশু একটি সভা করা আবশ্যক। তা-  
হাতে বাবু পুলিনবিহারী সেন কহিলেন "সার্ব  
কেনীং বাউচরণও আমাদের দেশের বহুতর  
উপকার সাধন করিয়াছেন। অতএব তাঁহার প্রতি  
সুখি নির্মাণের জন্যও আমাদের চাঁদা প্রেরণ  
কর্তব্য। এই প্রস্তাবে বাবু পঞ্চানন বন্দোপা-  
ধ্যায় বাবু পৌরদাস বসাক এবং বাবু রামলাল  
চৌধুরী প্রভৃতি সভাপন, পোষকতা করিলে  
পর সভাপতি মহাপ্রেরণকে ধন্যবাদ প্রদান করিয়া  
সভার সমাপ্ত হইল। ইহার পর দ্বিতীয় সভায় বাবু

২৪ইশাব্দ। সোম প্রকাশ্য প্রকাশকরিতে ক-  
করিব না নিবেদন উক্তি।

১২৬৯ সাল তার ৯ বৈশাখ বহুদয়পুত্র।

কম্যাটিং হুঁতজতা।

## শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাপ্রেরণ।

সম্পাদক মহাপ্রেরণ। আশ্বিনের দিন শ্রী  
রিক পৌড়িত থাকার। "ইহার শেষ হুঁতজতা প-  
নিবেদন" এই প্রতিজ্ঞা, প্রতিপালন করিতে  
পারি নাই। জেলের মোকদ্দমা শেষ হুঁতজতা  
হইয়াছে, তাহাতে কোনকর্মই আমার সে এ-  
তিজ্ঞা পূরণ করিবার ইচ্ছা ছিল না। কিন্তু ১৭  
শ্রাব্দ সোমপ্রকাশে সেদিনীপুত্র ২২ ২২ ইতি  
শ্রাব্দ পত্রপ্রেরকের প্রেরিত সভাপ্রেরণে জেল  
মকদ্দমার নিষ্পত্তি বিবরে কোনকর্মই হুঁতজতা  
হওয়াতে কিকিৎ না লিখিয়া কাত পাঠিকে পা-  
লাব না। প্রেরণার ৬ সাল দুই শত, এ-  
জনাদারের তিনশাল একশত টাকা করেণ্ড  
রিমানার আদেশ হইয়াছে। এতে তাহদের ক-  
কি? বরের ছেলে বরে এস। জেলে পুত্র  
যেমন আধিপত্য এখনও সেউরগ। কিন্তু হুঁতজ-  
তা অতঃপর বহুর কপালে এই পুত্রকার জা-  
হইল বৌইহার পুত্রের চাঁদাকে কেবল পা-  
কাউনীর সন্ধান করিতে হইত, এখন সাজ-  
ও প্রেরণার নামে বাসিন্দ কবান্তে অর্থ  
বর্ধার কথার উত্তরে মাটি কাটিবার হুঁতজতা  
হাছে। মহাপ্রেরণ! তাহা বর্ণন করিতে গেলে বা-  
কের অর্থকা অজ্ঞানতা পাণ্ডাশ্রমের নিউ  
ব্যক্তিরও অস্বস্তিকর বিদ্যুৎ হয়। সার্ব সার্ব  
বের হুঁতজতা সন্তুষ্ট তাহার নিজের একটি প-  
হুত জাটান হইতেছে। অতঃপরকে এই সার্ব  
কেন্দ্রা হইয়াছে এই পুত্রের হুঁতজতা কর-  
মর। (এখানে প্রস্তাবের প্রস্তাব হুঁতজতা পু-  
পাদি ধর্ম করিতে হইলে অধিকাংশ প্র-  
মিষ্ট হুঁতজতা কাটিতে হয়) অতঃপর বাবু  
কাল হইতে পারিগ্রামীল মহেন, অতঃপর  
কাউনীর চাঁদার লক্ষে অস্ব হইয়া উঠিয়াছে  
তাতে আবার করকর্ম ধর্ম করিতে হইল, এ-  
মান্য করেনী ৩।৪ সের ওজনের গাঁড়ি (স-  
মিষ্ট করকর্ম ধর্মের একপ্রকার সার্ব  
ধর্ম (সে, এবং অতঃপর বহুকে ৮।৯ সের  
ওজনের গাঁড়িতে হুঁতজতা ধর্ম করিতে ৩৩।  
ছে। আর হুঁতজতা বহু করিতে হইল, অ-  
জনে এক এক বারে এক এক তোড়া ধর্ম ২০  
অতঃপরকে এক এক বারে দুইতোড়া ১০।১০  
বহু করিতে হয়। মহাপ্রেরণ! একে প্রচণ্ড  
তাপ, তাতে আবার অস্বাস্থ্য ২।৩ গণ  
দিক পবিপ্রাণ; ইহা অস্বস্ত্যাতীত মোকদ্দমা



শ্রী-পদ্ম-কলিকাতার কলিকাতা পুর্ব দাওলা রেলওয়ে  
স্টেশনের স্টেশনমাস্টার দক্ষিণ দাওলা রেলওয়ে স্টেশন  
দাওলা দাওলা, দাওলা দাওলা, দাওলা দাওলা দাওলা  
দাওলা দাওলা দাওলা দাওলা দাওলা দাওলা দাওলা

“अथर्ववेदः सर्वविघ्नोद्धारः सावित्रः यज्ञवर्धनः अतिवर्धनः शीतलः ।

1955-1956-1957

**問答**

५७. विद्यमानः सर्वोपनिषद्

SECRET

**Abstract**

अथर्ववेदः, अथर्वसंहिता, अथर्वश्रौतसंहिता, अथर्ववेदः

କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କିନ୍ତୁ କେବଳ ଏହି କାରଣ,  
 କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର  
 ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର  
 ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ  
 କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ ।  
 କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର  
 ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର  
 ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ  
 କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ । କାରଣ କାହାର ବିଚାର ନାହିଁ ।

[illegible]

কর কটকট ছিল। আজিও বহুদেশ এই  
পুলিদের খালার অস্তিত্বেই। অত  
মাজিষ্ট্রেটের কৃতিত্ব সংখ্যা এতটুকুই।  
আ হুঁক বহু কৃতিত্ব ছিল না; কিন্তু বিচার  
কর্তার-বে যে কৃতিত্ব থাকি। আবশ্যিক, ভারত  
বর্ষের দুর্ভাগ্যক্রমে উল্লিখিত বিচারক  
গণে তাহার অধিকাংশের অন্ত্যাব ছিল।  
গভর্নমেন্ট এমেন্ডমেন্টের শিফারান  
কর্তব্য অনুকারী ছিলেন না। এমন নয়,  
কিন্তু লোক সংখ্যার সহিত গভর্নমেন্ট বহু  
অর্থের সংখ্যা করিলে সমুদ্রে পান্য অর্থের  
মারি কিবা হুঁকির দুর্ভাগ্যক্রমে মার  
অতি অকিঞ্চিৎকর বলিয়া প্রতীয়মান হইত  
সরকারে নাই। তাহারও অধিকাংশ কর্তা ও  
তদ্ব্যবহারকর্মীদের বেতনে পর্য্যাপ্ত  
হইত।

সম্প্রতি নবগম্যেস্তের উল্লিখিত কয়েক  
কিছুই উল্লিখিত করা চেষ্টা। অন্তিমতঃ।  
পুলিন্দোব নংগোবদ্যে সুতমবিধ পুলি  
ন নংগোবদ্যে হইতেছে, বিচারকর্তার নং  
গোবদ্যে হইতেছে এবং একাধিক  
পুলিন্দোব কিংবা অধিক অর্থ ব্যয় করা  
হইবে, এবং অতিশয় একাধিক  
হইত।

१८७३-७४ के मसूमातेर निम्नकार्य ६० अम  
 टीका नाम करि देल गेल । विद्वान् कृत  
 १८७३-७४ के अर्वाक, १८७३-७४ के अम  
 २० अम, १८७३-७४ के अम, १८७३-७४ के अम  
 करि देल । १८७३-७४ के अम, १८७३-७४ के अम  
 २० अम, १८७३-७४ के अम, १८७३-७४ के अम

[illegible][illegible]



প্রভণ না করেন । বাহা এক্ষণে যে  
সাহায্য দান প্রথা

এই গোবন্দ্য নহে । ইহার বোধ এই  
শোধন অতিশয় আবশ্যিক । যেখানে বি  
দ্যালয় হইবে, তত্ৰত্য লোকেরা ছাত্রদের  
বেতন বাবে বতর্ভোগ দিবেন, গবর্নমেন্টও  
সেই পরিমাণে সাহায্য করিবেন এই  
নিয়মটি শুদ্ধাচার নহে । ইহা অনেক স্থলে  
বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা কার্যের প্রধান অন্তরার  
হইয়াছে । বাহাদিগের আপন আপন  
বিদ্যালয় স্থাপন করিবার আন্তরিক  
প্রয়াস হইলে, তাহাদিগের অনেককে এই  
নিয়মের অধীনে ভরসা হইতে দেখা  
যায় । গবর্নমেন্ট আস্ত এ নিয়ম রহিত  
হইলে, তাহারা পূর্বেও একবার কহিয়াছি  
কি, তাহারা কহিতেছি, যেখানে গবর্নমে  
ন্ট লাভ হইয়া থাকে,  
তাহার দ্বারা শত করা হিসাবে  
তত্ৰত্য বিদ্যালয় স্থাপন করুন । এখানে  
যার একটি কথা উল্লেখ করা আবশ্যিক  
হইতেছে । গবর্নমেন্ট এক্ষণে জম্মাবধান  
কার্যে যে অর্থ ব্যয় করিতেছেন, তাহার  
অর্ধেক করা নিত্য আবশ্যিক । ইনস্পেক  
টর ও ডেপুটি ইনস্পেকটরের সংখ্যা কম  
করিলে বিদ্যালয় অনুমোদন হইবার সত্তা  
হইবে না ।

কাহাড়ের চাকরগণ ও চাকা-  
প্রকাশের সহায়দাতা ।

যিনি কাহাড়ে থাকিয়া এতদিন তত্ৰত্য  
চাকরদিগের ব্যবহার হস্তান্ত চাকাপ্রকাশে  
নিবৃত্তি হইলেন, তিনি সম্প্রতি আমাদি  
গের নিকটে একখানি পত্র প্রেরণ করিয়া  
ছেন । পাঠকগণ পত্রখানি যথা স্থানে দর্শন  
করিলে । পত্র পাঠ করিলে কোম রূপেই  
এই বোধ হয় না যে এদেশে বত্ৰ গবর্ন  
মেন্ট, বত্ৰ রাজস্বসম অথবা বত্ৰ রাজা  
আছেন । অত্ৰ্য ইউরোপীয়দিগকেই গ-  
বর্নমেন্ট, রাজস্বসম ও রাজা বলিয়া বোধ

হয় । চাকাপ্রকাশের উক্ত সহায়দাতা  
কিহিয়াছেন, চাকরগণ তাহার আশ্রয় সং  
হারে উন্নত হইয়াছিল, তাহাকে অন্ত্য  
কাহাড় পরিত্যাগ করিতে হইয়াছে । ব্যক্তি  
অথবা সম্প্রদায় বিশেষ কেহনাই হইলে বা  
তি বিশেষের আশ্রয় সাহসী হইতে পা  
রেন, বত্ৰ গবর্নমেন্ট থাকিলে কি কখন  
একপ সম্ভাবিত হয় ? উক্ত সহায়দাতা যদি  
অপরাধী হইয়া থাকেন, আদালত আছে,  
সেই স্থানে তাঁহার বিচার হইবে এবং আ  
ইন আছে, তদনুসারে তাঁহার দণ্ড হইবে;  
যদ্যে রাজবিধি গ্রহণ করিয়া বত্ৰ প্রভ  
হইয়া কাহারও দণ্ড করিবার অমত্য নাই ।  
ইউরোপীয়দিগের এবিধ গর্ব ও এবিধ  
বেচ্ছাচারিতাই তাহাদিগের প্রতি এদেশের  
লোকের বিদ্বেষের কারণ হইয়াছে । যেখা  
নে একপ ব্যবহার, সেখানে দুর্বলের ধন  
প্রাণ রক্ষার সম্ভাবনা কি ? ইউরোপীয়েরা  
এদেশে আসিয়া বাস করেন তাহা এদে  
শের লোকের যে অতিশ্রুত নহে, তাহা  
রও কারণ এই । অধিকসংখ্য ইউরোপীয়  
বাস করিলেই এদেশে অরাজক কাণ্ড হই  
বে, এই এদেশের লোকের শঙ্কা । এই শঙ্কা  
অস্বলকও নহে । এদেশে এক্ষণে যে সমস্ত  
ইউরোপীয় বাস করিতেছেন, তাহার অধি  
কাংশেরই দুর্ব্যবহার দৃষ্ট হইতেছে ।

উক্ত সহায়দাতা চাকাপ্রকাশসম্পাদ  
কের উপরে কোম প্রকাশ করিয়াছেন ।  
কিন্তু ১২ই বৈশাখের চাকাপ্রকাশে দৃষ্ট  
হইল, তৎসম্পাদক সম্পাদকীর বাক্য  
স্থলে সহায়দাতার পত্রখানির তাৎপর্য  
প্রকাশ করিয়াছেন । অতএব তাঁহার আর  
কোম কি ? তবে তিনি কাহাড়ে অব  
স্থিতির বিষয়ে যে অভিযোগ প্রকাশ  
করিয়াছেন, ব্যস্ত হইলে তাহা সুনির্ভর  
হইবার সম্ভাবনা নাই । সহায় দাতা  
কিঞ্চিৎকাল প্রতীক্ষা করুন । প্রজা  
গণের প্রতি সমপক্ষপাতে সমিচার বিতরণ  
বিষয়ে অত্ৰ্য গবর্নমেন্টের যে সাধুতর

চেষ্টা দৃষ্ট হইতেছে, তাহাতে স্পষ্ট বোধ  
হইতেছে, অত্যাচার কর্তা যিনি হউন না  
কেন, অত্যাচার আর অধিক দিন প্রভু  
করিতে পারে না । জাতি ও ধর্ম ভেদে  
বিচার ভেদের কালও ক্রমশঃ  
হইতেছে । আমরা স্পষ্টাক্ষরে  
করিতে পারি, বত্ৰ দিন সমিচার সম  
স্বক হইবে, ততদিন গবর্নমেন্ট সম্মতি  
হইতে পারিবেন না

ভারতবর্ষের পাবলিক ওয়ার্ক ও জম  
ডিকিগন সাহেব ।

ইতিমাত্র নিকটের সোসাইটি সভার স  
ভাপতি জম ডিকিগন সাহেব ভারতবর্ষের  
পাবলিক ওয়ার্ক এসস করিয়া সম্প্রতি এক  
কুত্র পুস্তক প্রণয়ন করিয়াছেন । ভারত  
বর্ষের সর্ব স্থলে রেলওয়ে হইতেছে ।  
কিন্তু নদীগর্ভ খনন করিয়া প্রসব করিলে  
এবং মৃতদেহ খনন করিলে যে  
লাভ সম্ভাবনা আছে, রেলওয়েতে তাহা  
হইবার সম্ভাবনা নাই, অথচ হাউস অব  
কমন্সের অধিকাংশ সভ্য ও ভারতবর্ষের  
গবর্নমেন্ট সেই রেলওয়েই অনুমোদন  
করিতেছেন; ইহার প্রতিবাদ করা উক্ত  
এই সভার দৃঢ় উদ্দেশ্য । কমন্স হাউ  
সের সভ্যগণকে সতর্ক করিয়া ইহা লি  
খিত হইয়াছে । রেলওয়ের অপেক্ষা খা  
তাদি দ্বারা এদেশের যে অধিকতর উপকার  
লাভ হইতে পারে, আমাদিগের সামান্য  
বুদ্ধিতেও তাহা বিলক্ষণ বোধ হইতেছে ।  
নদী নদ ও খাতাদি দ্বারা কেবল যে জবা  
বির আনয়ন ও প্রেরণাদির সুবিধা হয়  
একপ নহে, তাহারা দেশের উর্বরতাও  
বৃদ্ধি হইয়া সুভিক্ষা বোধ প্রণয়  
নের সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে । যার গণনা  
করিলেও উক্তের বহু বৈলক্ষণ্য লক্ষিত  
হইবে । এক কোম পত্র দ্বারা ধন্য করি  
তে যে ব্যয় হয়, রেলওয়ের সেই এক  
কোম তাহার বহুগুণ অধিক ব্যয় হইয়া



থাকে; কেহ বলিয়া না দিলেও ইহা স্পষ্ট বোধগম্য হইতে পারে।

কলকাতা বাহাতে লাভ ও উপকার অধিক এবং ব্যয় অল্প, তাহা এহার অধিকতর প্রার্থনীয় না হইবে? ডিকিন্সন সাহেব এক স্থানে লিখিয়াছেন “গোদাবরী যুদ্ধে রাজা ও খান প্রভৃতির সুবিধা হও লাভে অল্প উপকার দর্শিয়াছে; পূর্বে বর্ষে বাবে ৫।৬ লক্ষ টাকার প্রায়ের রপ্তানি হইত, পশ্চাৎ প্রায় ৫০ লক্ষ টাকার রপ্তানী আরম্ভ হইয়াছে; তদনুসারে প্রায় গণেরও ধন সমৃদ্ধির হুজি হইয়াছে, এক্ষণে রাজস্ব শতকরা ৪০ টাকা হুজি হইয়াছে মেবিগেনসন কোম্পানির শতকরা ৫৫ টাকা লাভ হইবে, সমুদ্রপথে যে ব্যয় হইয়াছে, ২৫ মাইল রেলওয়ে প্রস্তুত করিতে যে ব্যয় লাগে, ততও নহে।”

আমরা ডিকিন্সনের উক্ত হইতে আর একটি বিষয় জানিতে পারিতেছি। গবর্ণমেন্ট রেলওয়ের প্রতিভূ হইয়াছেন, ইহা ন্যায় সিদ্ধ হয় নাই। রেলওয়ে কোম্পানি অতিশয় হইলে গবর্ণমেন্টকে সের্বকতি পূরণ করিয়া দিতে হইবে। কিন্তু তাঁহারা কাকার টাকা লইয়া সেই অতি পূরণ করিবেন, তাঁহাদিগের টাকা কোথায়? প্রজার টাকাই তাঁহাদিগের টাকা। অতএব একের টাকা লইয়া অপরকে দেওয়া কি বিধেয় হয়? রেলওয়ে কোম্পানির স্বাধীন হইয়া কার্য্য করাই বুদ্ধিসম্মত। ডিকিন্সন লিখিয়াছেন “রেলওয়ে কোম্পানি বিনা প্রজার কেবল যে ৯৯ হাজারের পাঁচ পাইয়াছেন একপ নহে; গবর্ণমেন্ট কেবল যে তাহাদিগকে ভূমি (কেবল এক বোম্বাই দীপে চারি মাইলে ৩০ লক্ষ টাকা ব্যয় লাগিয়াছে) দিয়াছেন একপ নহে; এবং গবর্ণমেন্ট শতকরা ৫ টাকা সুদ (একপ হলে অন্য অন্য গবর্ণমেন্ট যাহা দিয়া থাকেন, তাহা অপেক্ষা চতুর্থাংশ অধিক দেওয়া হইয়াছে) দিবেন অধীকার করিয়া

হেন একপ নহে; এই প্রকার মিথ্য অতীত হইলেই রেলওয়ে গবর্ণমেন্টের বলাপাতি হইবে, কিন্তু উক্ত কোম্পানি যে টাকা ব্যয় করিয়াছেন, গবর্ণমেন্টকে তাহা প্রত্যর্পণ করিতে হইবে।” এইকপ লিখিয়া তিনি পরিশেষে স্পষ্টাক্ষরে কহিয়াছেন, রেলওয়ে প্রতিভূ যে প্রকল্প হইতেছে, ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট তাহার আদি কারণ নহেন, তাহার আদিকারণ কমল হাউস। তাহা হউক, পরিশেষে আমাদিগের বক্তব্য এই; ডিকিন্সনের প্রস্তাবিত গ্রন্থ পাঠ করিলে তাঁহার কিঞ্চিৎ উদ্ভ্রাণ প্রকাশিত হইত হয় বটে; কিন্তু তিনি খাতাদি ধননের অবশ্যকর্তব্যতা বিধরে যে যে যুক্তি প্রদর্শন করিয়াছেন তাহার একটীও অসঙ্গত বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে না। ভারতবর্ষে অধিক পরিমাণে খাতাদি হইলে ইহার যে সর্বাধীন মঙ্গল লাভ হইবে তাহা বিধরে অনুমান সন্দেহ নাই।

—

অস্বস্তির বিমোহ।

ধর্ম্মিষা ও অস্বস্তির পর্বতে যে বিদ্রোহবিহি প্রকলিত হইয়াছে, অদ্যপি তাহার শান্তি হয় নাই। গত ১৪ই এপ্রেল গবর্ণমেন্ট যে ঘোষণা প্রচার করিয়া দিয়াছেন, তাহা বিনা শোণিতপাতে অতিরিক্তমধ্যে তন্নির্ব্বাণে সমর্থ হইবে সন্দেহ নাই। ত্রিগেভিয়ার জেনারেল সার্ভার্সকে কমিসনরের পদে নিয়োজিত করিয়া ধর্ম্মিষা ও অস্বস্তির পর্বতে প্রেরণ করা হইয়াছে। তিনি উদ্ভ্রাণ লোকদিগকে এইকপা স্পষ্ট করিয়া জানাইয়া দিগছেন যে, গবর্ণমেন্টের একপ ইচ্ছা নয় যে প্রজাপক্ষকে কষ্ট দেন, রাজ্যমধ্যে কোন উপদ্রব না থাকে, এবং প্রজাপক্ষ সুখে ও স্বচ্ছন্দে থাকে, ইহাই গবর্ণমেন্টের অভিপ্রেত; অতএব যে সকল ব্যক্তি বিদ্রোহে প্রবৃত্ত হইয়াছে, তাহারা যদি পরণামী হয়, গবর্ণমেন্ট তাহাদিগকে ক্ষমা করিবেন।

বিদ্রোহীদিগকে অস্ত্রব্যবহারে তুলা বিদ্রোহ নিবারণের অল্প উৎকৃষ্ট উপায় নহে। বিশেষতঃ বলা হইয়াছে, বিদ্রোহিগণের যে মনোবেহনা ও ক্ষোভ আছে তাহা গবর্ণমেন্টের গোচর করিলে গবর্ণমেন্ট প্রবণ করিবেন। এক, ক্ষমা; দ্বিতীয়, হুমু প্রদীকার। এ দুটাই বিদ্রোহীদিগের পক্ষে অনুকূল। হুমুপ্রদীকার বিধে গবর্ণমেন্টের বিশেষ রূপে মনোযোগ করা অতিশয় আবশ্যিক। বিনা কারণে লোকের কখন ইচ্ছাপূর্বক বিদ্রোহে অনুরক্ত হয় না। তবে নির্বোধ লোকেরা তিলপ্রমাণ লোকের তালপ্রমাণ জ্ঞান করিতে পারে। যাহা হউক, বিদ্রোহের কারণ অবগত করিয়া তাহার উৎসূলমকতা অবগত কর্তব্য হইয়াছে। যে কারণে বিদ্রোহ ঘটনা হউক, যে গবর্ণমেন্টের অধিকারমধ্যে বিদ্রোহ ঘটে তাঁহাদের কলঙ্ক ভাঙ্গন হইবে সন্দেহ নাই। সুতরাং প্রজার গবর্ণমেন্টের অধিকার মধ্যে পুণ্য পুণ্য বিদ্রোহ ঘটতেছে। যে প্রজার কলঙ্ক নিরূপিত হইয়া যাবতীর ব্যক্তির মনের ওপর অবগত হইয়া সমস্তরূপে কার্য্য নির্বাহ করেন, সে বুঝে কি বিদ্রোহপ্রবৃত্তি প্রবর্তিত হয়?

গবর্ণমেন্ট ঘোষণার তাৎপর্য্য উপলব্ধি হইল; কিন্তু ইংলিসমান সমস্ত লোক স্থানিয়াছেন জেনারেল সার্ভার্স এই কথা প্রচার করিয়া দিয়াছেন যে ব্যক্তি বিদ্রোহের অধিনায়কদিগকে ধরিয়া দিগে পারিবেন তাহাকে হাজার টাকা পুরস্কার দিগেন এবং প্রায়ের প্রধান ব্যক্তি ব্যক্তি দিগে ক্ষমা যে সকল লোকে পরণামত হইবে তাহাদিগকে নিঃসংশয় ক্ষমা করা হইবে, তিনি তাহাদের প্রতিভূ হইবেন। এ যাহা যদি সত্য হয়; জেনারেল সার্ভার্সের গবর্ণমেন্টের ঘোষণা ব্যক্তি বিকল করা হইয়াছে। প্রায়ের প্রধান ব্যক্তিরা অত্যন্ত না পাইলে কি বিনা শোণিতপাতে প্রজার বিদ্রোহ শান্তি সম্ভাবনা আছে? প্রায়ের

### ଅିଉସିଟୀନ ଉପନ୍ୟାସ

ই নিম্নলিখিত পত্রিকাগুলি সংগ্রহ করা হইবে।  
 ১. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ২. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৩. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৪. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৫. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৬. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৭. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৮. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ৯. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা  
 ১০. প্রথম পত্রিকা পুণ্ড্রিকা পুস্তকালয়, কলিকাতা

অদ্বৈতানুগতভাৱে কলিকাতাত ১৭

জ্যেষ্ঠ হইল দে উমওয়ে কোম্পানির অধ্য-  
ক্সেরা অবিলম্বে তারতন্যের মানা স্থানে টা-  
মওয়ে প্রেরিত করণার্থ যথাক্রমিক প্রেরণ  
করিবেন



কক সাহেব অত্যন্ত তরুণে নববয়স্ক  
জান্নাত পক্ষে বিশেষ কষ্টকর হওয়াতে  
এ প্রার্থনা করা হয়

উক্ত পত্রের লগ্ননস্থিত সংবাদমাতা ইং-  
লণ্ডেশ্বরীর দয়াশ্রুতি ও ধর্ম্মিষ্ঠতার এক দৃষ্টান্ত  
প্রদর্শন করিয়াছেন। তাঁহার বাসস্থান অস-  
বরণের নিকটবর্ত্তি এক দরিদ্র জীলোক পীড়ার  
যুতবৎ হওয়াতে এক জন পুরোহিতকে আ-  
নয়ন করিবার জন্য লোক পাঠান হয়। একটি  
জীলোক বহুক্ষণ পর্যন্ত ধর্ম্ম পুস্তক পাঠ ও  
নামোচ্চারণ সম্ভাবকর বাক্য দ্বারা যুগ্ম-  
স্তম্ভ মনোরঞ্জন করিতেছিলেন। পুরোহিত গৃ-  
হমধ্যে প্রবেশ করিয়াই অমনি খানিজেন। ই-  
জীলোকটি বলিলেন মহাশয় "খানিয়া খার  
কষ্টবা কর্ম্ম করুন। পুরোহিত সেখিয়া বিশ্ব-  
কাণ্ড হইলেন, যিনি সাধারণ জীলোকের ন্যায়  
দরিদ্র যুগ্ম-স্তম্ভ মনোরঞ্জন করিতেছিলেন, তিনি মহাবল পরাক্রম ইং



রাজসিংগের সৈন্য। ইংলণ্ডের এই গুণে  
একাদশের আরাধ্য হইয়াছেন।

এক ব্যক্তি আপনাকে লেপটেনেন্ট ডগলাস  
বলিয়া পরিচয় দিয়া উইপার্ট নামক এক জন  
হোটেলরককের নিকট হইতে অনেক বস্ত্র  
লইয়া গভর্ন ইপার্ট কোম্পানির নামে এক  
চেক দেয়। উক্ত কোম্পানি চেকের টাকা দেন  
নাই। উইপার্ট লেপটেনেন্টের নিকট নগর  
টাকা লইতে আসিয়া দেখেন সে প্রতারণা করি-  
য়াছে। উক্ত ব্যক্তি অত্যাচারিত হইয়া নাই।  
ইউরোপীয় খুর্দের সংখ্যা ক্রমশঃ বৃদ্ধি  
হইতেছে।

ইংলিসমান সম্পাদক অবশ্য করিয়াছেন,  
মেডিকাল ইনস্পেক্টর জেনরল ডাক্তর হাফি  
নাথ ডাক্তর করসিথের কক্ষে ও ডেপুটি টেন  
স্পেকটর জেনরল ডাক্তর ডিকন ডাক্তর  
মাকিনগের গদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন।

গত কল্য হোট আদালতে গাম্পার না  
মক এক কিরিজি ও তাহার জীর নামে ৫০ টা-  
কার নালিশ হইয়া ডিক্রি হওয়াতে বিনি গা-  
ম্পার বলিলেন আমার স্বামীর কক্ষ নাই কি  
প্রকারে আমরা এই টাকা দিব? হাজ বুলনয়  
বলিলেন তুমি বাইরা তাহার উপায় দেখ।

অনুত সরে টাকার ১৩ সের মধ্য বিক্রয়  
হইতেছিল দিল্লীগেজেট সম্পাদক বলেন কিয়  
দ্বিবসের মধ্যে টাকার ৩৭ সের হইয়াছে। অ-  
নেক আমদানী ইহার কারণ।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন মহাবাহীর  
প্রধান জ্যোতির্বিদ্য বাব লোপনেন শাস্ত্রী প্রা-  
জিত সংস্কারের বিপরীত প্রণালীর অনুসরণ  
করাতে তাহার আত্মীয়স্বজন তাহাকে  
সমাজচ্যুত করিয়াছেন।

এক ভদ্র কল্যাণী উক্ত পত্রের মিথিয়ারে  
তিসি সপার্টের নিকটে এক কল্যাণ ও লেপে-  
আকর বাহির করিয়াছেন। সপার্টেতে দণ্ড  
কল্যাণ আকর বাবে, উক্ত কল্যাণ পত্রের  
রেলওয়ের রানীগঞ্জ হইবে।

পোস্টোয়াবাহ সেনানিগমে প্রস্তুত পত্র  
হার আত্মা দেওয়া হইয়াছে। আমাদিগের  
গবর্নমেন্টে আবার পারস্য যুদ্ধে নিগত কল-  
বেস না কি?

১৮ই টৈশাখ বুধবার।

লন্ডনে হুতন একটা কোম্পানি হইয়াছেন,

এ কোম্পানির উদ্দেশ্য এই তাহার প্রে-  
সেতে প্রবাদি আনিয়া টেসনে পোড়িয়া  
দিবার নিষিদ্ধ রাস্তা প্রস্তুত করিবেন। শাখা  
রেলওয়ে প্রস্তুত করিবার অন্যও আর এক  
কো পানি হইয়াছেন। এইরূপ কোম্পানি হট-  
লেট দেশের বর্ধা উপকার দর্শিতব্য সম্ভাবন।

কিনিক পত্রে এক জন আবেদন করিয়া-  
ছেন টাকশালের কক্ষ চারিয়া পুরাতন পোকা  
রুগিগকে পরিসা না দিয়া হুতন লোকদিগকে  
ভিতেছেন। গবর্নমেন্টের আজ্ঞার বিরুদ্ধে  
কাজ করা টাকশালের অধ্যক্ষেরা গৌরবের  
বিষয় জ্ঞান করেন।

উক্ত পত্রের ডগলপুরের সংবাদদাতা ল-  
লেন তাঁহার এত বন্ধু নাওতাল দিগকে ধর্মীয়  
ধর্মাবলম্বী ও সভ্য করিতে গিয়া সেঙ্গা নামক  
এক রক্ষ দেখিয়াছেন। তাহার হাল সিন্ধো  
না হকের ম্যাস। পর প্রেরণ অনুমান করেন  
এই গাছে কুটনাইন হইতে পারে। উক্ত ডা-  
ক্তর দ্বারা ইচ্ছা পরীক্ষা করা উচিত।

দিল্লীগেজেটে লিখিত হইয়াছে ৩৪৭  
অবধি দিল্লী গবর্নর যে রাস্তা আ ৯ তম  
ভবানক ১২৩২৪ হইয়াছে। তাহা নির্ভর  
এতদেশীয় ও ইউরোপীয় ইত্যদ্যেরই সম্পত্তি  
হুট করিতেছে। অতঃপর নিম্নর এই পলিস  
কক্ষ চারিয়া এনিয়া আনিয়া জানেন না।

উক্ত পত্রের কাবুলস্থিত সংবাদদাতা ল-  
লেন আবার মোকু মরফদ খাঁ। নবাবেরা  
তাহার অবাধ্য হইয়াছেন। রক্ষা করিবার  
হেতু নিজে সেনাপতিও গ্রহণ করিয়া লক্ষ্য  
হারে বাইতেছেন। মোকু মরফদ বলেন  
“আমি যদি জীবিত থাকি, তিরোদি কক্ষসং-  
সরিব।” এই সময় আকবর না খাটিলে পা-  
রস্য সেনারা কাবুলে প্রবেশ করিতে সমর্থ  
হইত না।

মাসাজ টাইমস সম্পাদক অবশ্য করিয়া  
ছেন মহাশয়ের রাজাকে সর্দার টপকু বাজে  
সংস্কার করা হইবে না। আবার হারিমেন্টে  
এ মরফদ দিল্লীতে প্রবেশ করিতেছেন যেন  
১৮ই টৈশাখ বুধবার।

১৮ই টৈশাখ বুধবার।  
১৮ই টৈশাখ বুধবার।  
১৮ই টৈশাখ বুধবার।

এক জন প্রতি রেবেনিউ বোর্ড উঠাই  
দিবার আত্মা হইয়াছে। বোর্ড কেবল অ-  
নিবিলিয়ানদিগের বিজ্ঞান স্থান।

সংশোধিত গুলকের আটন গভর্ন  
বিধিগত হইয়া নিয় লিখিত পত্র ১৮৬৩  
হইতে বস্ত্র হইয়াছে। অনুপ্রস্তুত খা রো-  
লস্ক, বুলো, বস্ত্র, অথ প্রাপ্তি জীবিত  
মকল, বস্ত্র, কল্যাণ, টেট, পতি, প্রাপ্ত, পস-  
পন, পাঠি জোলা, চর্ম, পুস্তক, কাগজ মা-  
টি, শি কলকার এবং যখন কোন কলি-  
মা টি বস্ত্রার্থী বীজ্য নবেন। লেও স-  
এবধি বেলেন পুরদশিতা প্রকাশ করিয়া  
না।

নিবারণের নিকটস্থ স্থান হুতন লো-  
মাকর বাইব হইয়াছে। মেজর পত্র  
১৮৬৩ এই আত্মিকিয়া হইয়াছে। টেট  
টি টি টি টি টি টি টি টি টি টি টি  
দিশা লোম পারিত্রিক করিয়া প্রস্তুত কা-  
বলিয়াছেন।

লোহোর টাকশাল বিজা গবেষণা জি-  
বাংসবিক পত্র হইয়াছে ১৮৬৩  
২৭ জন জিহ্বা দানী প্রেমি, ৫ পাঠি করিয়া  
ছেন।

গভর্নমেন্ট রাজ্যের দি বিজ্ঞান  
কল বি ও এবং ৫ জন বি, এক উপাধি প্র-  
কৃত্যাজ্ঞ, ১১৫ জন পরীক্ষার্থী ম-  
অন প্রাণীনাথীকার উপাধি টেট  
৫ বিজ্ঞান বর্জ্যেণ অনেক অগ্রসর হইয়াছে।

৫৮ টি ১৮৬৩ বিজ্ঞান ৫৮৩ ৫  
মহাশয় জলে গুলে বজো দিগকে সাজ  
করিয়া লবন করিয়াছেন। রাজ নিম্ন ২৮  
৩তম গুলিন স্থাপন হই বন, তিরিগিজ ডি-  
তারতবর্ষ ১৮৬৩ টেটের নিকটে ৫৮ জন টে-  
লোপীয় পুলিস বস্ত্রার্থী চাউয়াছেন। শাট  
রাজা দেশের অনেক উর্দ্বি সাধন করিয়া  
ছেন। তখন অনেক ৫ পৌর ও সাধারণ  
মিক, জাতীয় গুল, জাতীয় ও নানা প্র-  
শি ক দিগের চক্ষু হইয়াছে। রাজা টেট  
ওয়ে প্রস্তুত করিবার অস্ত্র বস্ত্রবান আছেন  
সভ্যতার প্রাপ্ত আর কোথায় ও বস্ত্র খা-  
না।

নিবাপুরে একদে আর ওলাউটার প্রা-  
ভাব নাই। তদুপাটিনেরা পরবেশের নি-  
টে হুতনতা প্রকাশার্থ তিন দিবস নি-  
বাসী বীণমালায় ভূষিত করিয়াছিল।

চর দেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে এক  
শে বিদ্রোহীদিগের সহিত ইংরাজ ও কন্নড়ী  
সেনাদিগের সর্বসা যুদ্ধ হইতেছে। সপ্ততি  
বিংশ শতাব্দীর মগরের নিকটে ৭৮৮০ বিদ্রো-  
হীকে আক্রমণ করিয়া ১০০ ব্যক্তিকে বধ ও  
৩০১ কে বন্দীকৃত করা হইয়াছে। বিদ্রোহীরা  
তখনক আত্মপচার করিতেছে। আত্মপচার  
বিষয় এই অনেকে তাহারিগকে "সুখীয়া" ও  
এ পার্থিক বলির ছিলেন।

দিল্লির পথে লিখিত হইয়াছে কন্নড়  
ও বে ব্যক্তিকেরা সাহেব বলিয়া বৃত্ত করা  
হয় তাহাকে বোম্বাইতে প্রেরণ করা হইয়া-  
ছে। একপ অভিযোগ প্রকাশ করা হইয়াছে  
তথ্য তাহ ১০ বৃত্ত করা হইবে। তাহার ক-  
ই কতি পূরণ কে করিবে?

কৃতিকরিতে এবার ৮৮০০ টাকার মাত্র  
করা উত্তোলন কর হইয়াছে। ইহারদ্বারা  
এবার কতি প্রাপ্ত হইতে হইবে।

লাহোর জনিকেল পথে বৃষ্ট হইল সপ্ততি  
পোসোদারে এক তদানক ভূমিকম্প হইয়াছে।

২৭এ এপ্রেল রাধপুর বোঝালিয়ার লো-  
কো এক সভা করিয়া প্রাক সাহেবকে এক  
এডেস মিহাইলেন।

আমেরিকার এক ব্যক্তি রসায়ন বিদ্যা  
দ্বারা দুর্ভাগ্যে দুর্গ বেগজিন প্রভৃতি বাকসে  
উভাইয়া দিবার উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন।

সেও আব ইতিবা সম্পাদক লিখিয়াছেন  
"এতদেশীয় ব্যবস্থাপক সিনের প্রতি বিক্রপ  
কর। একপে প্রথা হইয়াছে। কিন্তু বিবেচক  
দশক মাত্রই কুহ ট্রি ও স্বাধীনতা। তাগ  
করিয়া ভারতবর্ষের অধিষ্টি দশন করিতে ই-  
ক্ক হইলে স্বদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার বার  
এসমুখার ঠাকুর ও রূপা প্রকার দ্বায বিশেষতঃ  
ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার রাজা দিনকর  
রাজ ও জেহাদারায়ণ সিংহের ব্যবস্থাপক কা-  
ম্য দর্শন করিয়া অবশ্যই স্বীকার করিবে  
আসিয়ার অন্তঃস্থক জিজ্ঞাসি হইবে। সে-  
র মুখে একথা আরও কাল লাগে।

উক্ত সম্পাদক সমুদায় পূর্ণ বাজালা দেশ  
এক জন প্রবাস করিয়াছেন অধীনে রাধিয়ার  
প্রত্যেক করিয়াছেন। তাহা না করিয়া বহু  
প্রবাসিত, করিয়াছেন বিদায় দেওয়া  
করকা।

২০এ টৈশাখ শুক্রবার।

একপ জনকতি জেহ সাহেব নীচ ইংল-  
ণ্ডে গমন করিবেন। তিনি পুনর্বার মবেসর  
দালে আগমন করিবেন। এদিকে ৩০এ এ  
প্রেসবুখবার ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার  
সেলিগন বহু হইয়াছে। রাজা দিনকর রাজ ও  
সেকানারায়ণ সিংহ প্রভৃতি স্বয়ং গমন ক-  
রিয়াছেন।

গবর্নর জেনারেল আজ্ঞা করিয়াছেন ৩১এ  
মুলাই অধি টেলিগ্রাফে গালি ও বোম্বাই  
হইতে গবর্নরমেটের বহু ইউরোপীয় সমাচার  
আসিবে না। সংবাদপত্রসম্পাদকেরা নিজ  
নিজ ব্যয়ে তাহা করিবেন। জার্ড এলগিন  
কি ইংলিসমানের গালির টেলিগ্রাফে বিরক্ত  
হইয়াছেন?

টাইমস অব ইন্ডিয়া জিজ্ঞাসা করিয়া  
ছেন, ভারতবর্ষের বিশ্ববিদ্যালয়ের বি.এল  
উপাধি খারী করেয়া কি নিমিত্ত হুতন উচ্চ-  
তন বিচারালয়ে ওকালতী করিতে পারিবেন  
না? যদি ব্যবস্থাজ্ঞাত হইয়া কথা হয়, আম-  
রা বিলম্বকরণে বলিতে পারি, সুপ্রিম কো-  
র্টের বারিষ্টরেরা প্রেসিডেন্সি কালেকের  
পরীক্ষা দীর্ঘ ভাষ্যদিগের অপেক্ষা প্রধান হ-  
ইবেন না। কিন্তু উদ্ভাসিককে সহজে উচ্চতন  
বিচারালয়ে বাইতে দিলে ইউরোপীয় ও এত  
দেশীয় বলিয়া প্রভেদ থাকে কি?

চীন দেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে বি-  
দ্রোহীরা সাহেব ত্যাগ করিবার ইচ্ছা প্রকাশ  
না করিতে করানী ও ইংরাজ সেনারা তাহা-  
দিগকে আক্রমণ করিয়া বুরীকৃত করিয়াছে।

গবর্নরমেট বেডিক নাবক জাহাজের সংখ্যার  
করিবার জন্য ২৪, ৩৭৮/১০ টাকা নিয়াছেন,  
ইহার মধ্যে ২১, ৬৩৮/১০ মগর ও ৩, ৩৩২  
টাকার দ্রব্য কেওয়া হইবে।

সপ্ততি হাবতার রেইলওয়ে টেননে আর  
১২০০ বছর কর্মত্যাগ করিয়াছে। তাহার  
বলে লোকোমোটিব (গাড়ি) ডিপার্টমেন্টের  
সুয়েয়া প্রত্যহ ৮ ঘণ্টা কাজ করে। কিন্তু তা-  
হাদিগকে ১০ ঘণ্টা পরিচাল্য করিতে হয়।  
করেক দিবসাবধি কার্য স্থগিত হইয়াছে।  
রেইলওয়ে কোম্পানি বহুরিগের প্রার্থনা  
পরিপূর্ণ করুন, নচেৎ লোক পাইকে

পূর্ণ বাজার প্রেক্ষণে গাড়ি পরিচাল্য  
আর বড় বিলম্ব হই। পূর্ণ বাজার রেইলও  
য়ে টেনন কর্তন করিলে হাবতার টেনকে  
কুটির মাত্র বোধ হয়। ইহা খাতি আর ১০০  
হুত হইবে। জারি করিয়া ইহা উচ্চত, এক  
মিগে আদ্যাদীয়া উচ্চত, জাহাজ দিগে না-  
নিবেন, আর যদি জাহাজ পরিচাল্য হুত  
গৃহক হু হইয়াছে। জাহাজ অপির গাড়ি

গাড়ির দ্বায। যেযে রেইলওয়ে কুটির  
অপির শকটে রৌর ও উচ্চত কর্ত পরিচাল্য  
হয়, ও বসিবার কর্ত, কিন্তু ইহাতে সে সকল  
কর্ত নাই, ইহার কুটির অপির গাড়ি সকল  
কুহ কুহ কামরার বিতস্ত, প্রভৃতি কামরার  
মুই খানি বেত আছে। আর প্রভেদ করিয়া  
জানান ও বহুখতি আছে। যদি পূর্ণ বাজি-  
লার রেইলওয়ে কোম্পানি তাহার অপির  
করেন, তাহা হইলে উদ্ভাসিকের গাড়িকে আর  
রৌহীর সংখ্য। থাকিবে না।

জাহাজমেট সম্পাদক বলেন মহারাজ দি-  
শিবা ও রাজা দিনকর রাজ ও আগরাজ দিগে  
করিয়াছেন।

২১এ টৈশাখ শনিবার।

পূর্ণিমা হইতে একজন কিসিক পাত্র দি-  
খিয়াছেন তথ্য সপ্ততি তদানক বহু হইয়া  
গিয়াছে। এবার সংখ্য। বিশেষ প্রাচুর্য্যক দেখা  
বাইতেছে। করেক দিবস পূর্ণিমা কিসিকার  
এ বহু বহু হইতেছে যে পূর্ণিমা কর্মচারীরা  
গমনার পানীতে আরোহী উচ্চত বিশেষ  
করিয়াছেন।

আমেরিকার গবর্নরমেট পুনর্বার এক কথা  
বুঝে জাহাজ হইয়াছেন। বর্তমানক প্রভৃতি দেশ  
সকল উদ্ভাসিকের অধীনস্থ করিয়াছে। এই  
বার বোধ হয় কতি দানবিকের আদ্য প্রকাশ  
হইল।

আমরা সমাচার পাইতেছি যে, আমেরিকা  
এদেশের প্রবাসিগের আশঙ্কিত কথা প্রকাশ  
করা হইতেছে এবং তাহাদিগের আশঙ্কিত  
ভূমি হইতে বহিষ্কৃত করা হইয়াছে। তাহা-  
রো আমায় কর হুখি করিতেছেন। তাহা-  
কালেকটরেরা একপ্রকার উদ্ভাসিকের সমা-  
তা করিতেছেন। লোকমেট গবর্নর পূর্ণিমা  
হইয়াছে বলিয়া কি বিলম্বকরণ উদ্ভাসিক পাই-  
য়াছেন?

গবর্নরমেট বহুদেশের বিদ্যালয়িক জন  
এবার ১৪ লক টাকা নিয়াছেন। ইহার মধ্যে  
অনেক দিককের বেতন হুখি করা হইতেছে  
দিককজিগের বেতন হুখি করা আশঙ্কিত, কিন্তু  
বহুদায় টাকা বহু ইহাতেই পর্যাপ্তি না হয়

ইংলণ্ডে একটি প্রীলোক এক কালে তিন  
টি পূর্ণ এসব করিয়াছে। ইংলণ্ডের ৩৭  
প্রীলোককে ৩০ টাকা পুরস্কার দিয়াছেন।

গত কল্য সুপ্রিম কোর্টে নর চারলস জা-  
নমের সমুখে জন ইকনাবক ইউরোপীয় বহু  
কারীর বিচার হয়। তাহার প্রাধিকার উপস্থি-  
তা থাকতে আগামি সেসিরনপাত্য তা-  
স্থগিত রহিল। ১ না জন বিচার সে-  
ন আরম্ভ হইল।



শেষ হইয়াছে। যহারাজ শিব্যপণের সহিত যে ব্যবহার করেন সত্যপ্রকাশনামাক তাহা প্রকাশ করিয়া দিয়াছেন। যহারাজের পাচ টাকা অধিক। ও বোকসবার সমুদায় ব্যয় দ্বিগুণ আদায় হইয়াছে।

নিম্নলিখিত দুইটা গবর্ণমেন্টের কাগজ বিক্রয় হইতেছে :

|               |      |     |         |
|---------------|------|-----|---------|
| ৪ টাকার সিকা  | কাগজ | ৮০  | ৮০৬     |
| ৪ " কোম্পানির | এ    | ২০  | ২০      |
| ৫ " এ         | এ    | ১০০ | ১০৫     |
| ৫ ১/২ " এ     | এ    | ১১০ | ১১০ ১/২ |

কাগজের দুইটা পত্র সংগ্রহে অতিশয় ব্যয় হইয়াছিল। গবর্ণমেন্টের চারিটোটা টাকার কাগজ জমা ২০০ হইয়াছে। আবার শুনি লাই যজ্ঞদেবীর ব্যয় কতক কাগজ এই দুই টোলের সময়ে হারিয়া গিয়াছে। এইমাসের শেষে বাজার মরম হইবে মাল মেলা সাধন হইয়া কার্য করিবেন।

### যজ্ঞদেবীর ব্যবস্থাপক সভা :

২৬ এ এপ্রেল শনিবার ।

রাজা এতাদ্রাজ সিংহ ব্যক্তিরকে আর সকল সভা উপস্থিত ছিলেন।

যুগ্ম জেনারেল গবর্ণর বীজম সাহেব সভা পতির আদেশ গ্রহণ করিয়া ব্যবস্থাপকদিগের নিকট এই অভিপ্রায় ব্যক্ত করিলেন উহারিগে-র ব্যবস্থাপিত। যারা তিনি সবিশেষ সাহায্য প্রার্থী হইবেন।

করুণস সাহেব জমিদারি ডাকের বিল বিবেচনা করিবার প্রস্তাব করিলেন। সকল জমিদারিকেই লক্ষ্য রাখা অত্যাশ্রয় এবিষয়ে কি-কি হইতে হইবে।

করুণস সাহেবের প্রস্তাবানুসারে ১৮ ১৯ অক্টোবর ২ আইন সংশোধন বিষয়ক বিল বিধিবদ্ধ করিয়া ইহার মর্ম এই আনানিক চলিল ব্যক্তি-রেকর্ডকারী তুমি ভোগ করেন, তাহা গবর্ণ-রেন্টে যাজ্ঞদেব করিবেন।

করুণস সাহেবের প্রস্তাবানুসারে বাড়ি সা-রোইল ওয়ে প্রস্তুত করিবার বিল প্রথমবার পঠি-ত হইয়া বিশেষ কমিটির হস্তে অর্পিত হইল। তিনি আরও বলিলেন তাপ'মি সভার ৮ মাস-কি কার্যের বিল বিধিবদ্ধ করিবার প্রস্তাব করা হইয়াছে।

—২—

### জয়দেবীর ব্যবস্থাপক সভা ।

৩০ এ এপ্রেল বুধবার ।

জয়দেবীর কোন ব্যবস্থাপক উপস্থিত ছিলেন না। বীজম সাহেব প্রস্তাব করিলেন, কোম্পা-নি আইন সংশোধনবিষয়ক বিলের বিষয়ে বিশেষ কমিটি যে রিপোর্ট করিয়াছেন তাহা পাঠ করিয়া বিল বিধিবদ্ধ করা হয়।

লেন্ড সাহেবের প্রস্তাবানুসারে তাপ'মি সি-লইসকল টাকাসংশোধন বিষয়ক বিল ও লাই-

সেক টাকার উঠাইবার বিল বিধিবদ্ধ করিল। তিনি বলিলেন ইনকম টাকার করাইয়া দেওয়াতে ভারতবর্ষীয় সভা এক অসুখোদয়ম পত্র লিখিয়া-ছেন।

কপুংটন সাহেব রওবিধর কয়েকটি প্রকরণ উঠাইবার বিল বিবেচনা করিবার জন্য প্রস্তাব করিলেন।

বে যেখানে মণ্ডবিধানের আইন প্রচলিত হইয়াছে তাহার ১৮৫২ অক্টোবর ১০ আইন বিল্ড করিবার বিষয়ে যে বিল করা হইয়াছে সেটিকে কমিটি তদ্বিষয়ে রিপোর্ট করিয়াছেন। হারিও টন সাহেব তাহা সভার অর্পণ করিলেন। যাহার অধোদ্যায় গোপনে লবণ প্রস্তুত করে তাহাদিগের মণ্ডবিধানের বিষয়ে যে বিল হইয়াছে। (১৮৪৩ অক্টোবর ১৫ আইন ও ১১-৫৫ অক্টোবর ৩৩ আইন সংশোধন বিষয়ক বিল (সি-লেট কমিটি) যে রিপোর্ট করিয়াছেন তাহা সভার প্রকাশ করিবার প্রস্তাব করিলেন।

সংগতি বলিলেন সভা মণ্ডবিধার বিল বিধিত হইল।

### ৩রা এপ্রেল পর্য্যন্ত ইউরোপীয়

সমাচার ।

সেনাপতি মাজি-পটীকসহ সেনা-মলকে সংশোধন করিয়া লিখিয়াছেন, যুদ্ধের সময় প্রসিদ্ধ। অসংখ্য কী ও চেটা পাঠিত হইতে, তদর্থ সজ্জিত কর্তব্য। ভারতীয় সেনা-মল যান'সাম'সর্বার গমন করিয়াছিল কিন্তু পবি-মধ্যে অত্যন্ত দুষ্টি ও ভয়ঙ্কর রোগ হওয়াতে তাহা-দিগকে আলেস্তক, গুহার কিরিয়া, যাইতে হই-য়াছে। যুদ্ধের সমুদায় প্রণালী পরিবর্ত করা হইয়াছে। বিজ্ঞানীদিগের সেনার সংখ্যা ১,৫০,০০০। গবর্ণমেন্টের সেনারা নিউমার্কভিগ নগর অধিকার করিয়া সেনাপতি যবগর্ত দ্বারা বৃক্ষত মিসিলিগির ১০ গণিত খীল আক্রমণ করিয়াছে। অত্যানকার বিচারসংক্রান্ত কমিটি সভাপতির জীতহান যুক্ত করিবার প্রস্তাব প্রা-কৃত হইয়াছে।

ইংল-ওখরী বিলপ্রকাশনী সভা, পুলিশার জমা কেমি'জর ডিউক, কাটা'বহারি আর্কি-বিশ, জার্ড হাই চান্সেলর, ভারতীয় আরল এবং সার্ভ গ'মহোমকে কমিশনর নিযুক্ত বি-হাছেন।

৩১শ মার্চ বে আর যুদ্ধের হিসাব প্রকাশিত হইয়াছে তাহার জমা কহিতেছে যে লক্ষ্যম ৬০,০০০ টাকা অধিক আদায় হইয়াছে।

কিং পরিবর্তনস্বারা ইটালিয় মন্ত্রিব-মিয়ার করা হইয়াছে। রাষ্ট্রপতি রাজকীয় সভার সভাপতি ও অধেশের কার্য নির্বাহক হইয়া-ছেন।

করাসী সমুদ্র শিল্প এসম্পন্নী সভা মর্শন করিবেন বলিয়া বন্দোবস্ত করা হইতেছে। চর খানি যুক্ত জাহাজ সীরব' হইতে তাহাকে প্র-ভাসমান করিয়া, আনিবে।

ইংলণ্ডের এস'জরুর পঠিত বাণিজ্যবি-বক লিখিত প্রবন্ধ হইয়াছে।

আফগান স্ত্রীক দ্বারা গমনাগমনের পথ ক-দিয়া ভারতবর্ষে আগ্রিমার সুবিধা করিবার উ-পায় নির্ধারণ পা'ল'রামেটে যে কমিটি নিযুক্ত হইয়াছেন তাহারা অল্পকাল সাফীর জবান দ্রুতি লইয়াছেন।

রাজসুমাং আল গাটের অর্থার্থ কণ্ডের জন্য ৪,৩০,০০০ টাকা অধিক চাঁদা হইয়াছে।

—২—

### গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন ।

রাজসুমাং লেপটনন্টে গবর্ণরের

আদেশানুসারী বিজ্ঞাপন ।

১০ই এপ্রেল—হান্টি'ম্যুর অপরিসীম টে-কৌজদারি সংগ্রহ, যে লক্ষ্যম বোকসবার নি-পত্তি করিয়া, হু'জি'জ'প'র, জমা তাহান আ-পৌল জমিদার কর্তৃক লিপ্যন্তর।

২১এ এপ্রেল—জি'জ'ব' ব্যাংক ডেবি মাগু-রের এডিনিধি কলিকাতা হইবেন। যত মি-তি'ন'স্ত'দ'র উপস্থিতি 'মি'জ'ম' তত দিন মেজ-জ' এস, ডেবিন এই কার্য করিবেন।

ডাকাইটি কমিশনরের অধীনস্থ ডেপুটি মা-জিষ্ট্রেট জে, কোথরথ সাহেব বড়ী জেলায় মাজিষ্ট্রেট সম্পূর্ণ কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

সববেগ, জম, ব্রজম সাহেব মন গাধেন এক-কর 'জি'জ' হইবেন।

ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মো-ল'ই আ'ল'স' মজিব জাহানাবাদ বিভাগ-র আর প্রাপ্ত হইয়া হুগলী ও বর্ধমান জেলায় মাজিষ্ট্রেট সম্পূর্ণ কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বা-চৌচরণ সিংহ হুগলীজ 'ব'ভাগের আর প্রাপ্ত হইয়া কৌজদারি আইনের ২২ ধারা ও ১৮৫৫ অক্টোবর ১০ আইনের ১ ধারানুসারে জমা জেলায় প্রথম প্রেমি মজকারি কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

জে, ডন, শিখ সাহেব ১লা সে মাস 'ব'বি-মেজি'কল কালেক্টর ডেলিটি (মজেন চি-তি'ন'স্ত'দ'র বিজ্ঞাপন) অধ্যাপক হইবেন।

২২এ এপ্রেল—এ, আব, টমসন সাহেব তা-কার এডিনিধি সিবিলাও সেসিমন জমা হই-বেন।

এইচ. মি সন্নয়ন সাহেব রাজসুমাংর এ-ডিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

সি, বি, গাবেট সাহেব হুগলীর এডিনি-মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

মি'জ' লিখিত ব্যক্তির অধৈর্ভাবিত মাজি-ষ্ট্রেট হইয়া কৌজদারি আইনের ২২ ধারা ১৮৫৫ অক্টোবর ১০ আইনের ১ ধারানুসারে 'জ'র প্রেমি মজকারি কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

হিউ. স্কোয়ার সাহেব ২৪ পরগণা, জে, টোলে সাহেব মে'মৌগুর। চৌধুরী লি-রামি'ন'স্ত'দ'র কমতা।

বন্দোবস্ত বিধেব কার্য নিযুক্ত কার্যস-হেব ১৮-২৯ অক্টোবর ১ আইন অনুসারে 'ক'মিটি কমিশনরের কমতা পাইবেন, এবং কলি-পু'র'র সাহেব, মলমি'ন, ও সাহেব'র পরগ-ও পরগণায় মলমক শা'লী, 'এ'চ'ম'শ'দী, 'ম'লাদী ও বেলশাধি পরগণায় 'এ'চ' ও কালেক্ট-কমতা প্রাপ্ত হইবেন।



সেই পাঠ্যবাহিরে অপর উচ্চতর প্রাকৃতিক





# সোমপ্রকাশ

অবতারণাঃ প্রকৃতিহিতায় পার্থিবঃ সরস্বতী প্রতিমহতীন ইত্যুতঃ।

১৯৩২

৪ ভাগ।  
২৬ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ৩০ বৈশাখ। ইং ১৮৬২। ১২ মে }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

সমাচার পত্র সম্পাদকদিগের  
প্রতিবক্তব্য।

সমাচারপত্র সম্পাদকদিগের প্রতি আশা  
গের বক্তব্য এই, ডাক্তার। সোমপ্রকাশ-  
এর বিভিন্নরে আশাদিগকে যে সকল সা-  
হা প্রদান করিয়া থাকেন, তাহা সংকট  
কালেদের ধারণাকালের নিকটে পাঠাইয়া দি-  
ন। সমাচার পত্র তির অন্য কোন পত্র  
পরিবার যদি প্রয়োজন হয়, সে সকল পত্র  
এক তরফে প্রেরণ করিবেন।

বিজ্ঞাপন।

ঐযুক্ত কালীপ্রসন্ন সিংহ মহোদয় কর্তৃক  
প্রতিষ্ঠিত মহাত্মারত্ন উল্লেখপত্র প্রস্তুত  
হইয়া বিতরণিত হইতেছে, প্রাক্করণ আসিয়া  
হয় করুন।

রাণসংগ্রহস্থলী জিরাখানাথ বিদ্যারত্ন  
লিখিত বোড়াসাঁকো। প্রধান বিতরণিত।  
কাল। ১৭৮৩। ২৪ বৈশাখ

সোমপ্রকাশ।

৩০ বৈশাখ। সোমবার।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

গত সপ্তাহে অল্পম ২০ খান প্রেরিত  
আশাদিগের হস্ত গত হইয়াছে। ইহা-  
কতকগুলি দীর্ঘকাল, কতকগুলি অসার  
কতকগুলি ভাষণ প্রয়োজনোপযোগী  
যদিও সকল গুলি একটিও হইল না।

---৩২---

নীলপ্রধান প্রদেশে গবর্ণ  
মেন্টের সম্মেলন।

এক জন নীলগা হইতে ৩০এ এপ্রেল  
লের ইন্ডিয়ান নিররে লিখিয়াছেন “কেবল  
একটি কুটির আর হাজার প্রজা ডেপুটি  
কালেক্টরের নিকটে আবেদন করিয়া  
জানাইয়াছে যে তাহারা দুই দিনের মধ্যে  
জাহাঙ্গিরের জমা ত্যাগ করিবে।; নীলক-  
রেরা যে অত্যাচার করিতেছে, ইহাতেও  
কি আর তবিলম্বে সন্দেহ থাকে : লোকে  
বিশেষতঃ বাঙ্গালা দেশের লোকে অস-  
হ্য হইবে কি শৈল্পিক বাস স্থান ও জমা ত্যাগ  
করিতে পার : নীলকরদিগের ইচ্ছাই যদি  
বলবতী হইল, গবর্ণমেন্টে প্রয়োজন কি :  
গবর্ণমেন্ট কি একপ বিশ্বাস করিতেছেন  
যে এই সকল প্রজা কুলোকেব কুপারামর্শে  
নীলকরদিগের তর্য প্রদর্শনার্থ এইরূপ  
আবেদন করিয়াছে। তাহারা যখন বাস্ত-  
বিক জমা ত্যাগ করিবে তখনই গবর্ণমেন্টের  
চৈতন্য হইবে। নীলকরেরা অবলীলা  
জন্ম অসমর্থ রূপে করতলি করিতেছেন ;  
যে কালে একগুণ কর ছিল, সে কালে চারি  
পাঁচ গুণ কর খাওয়া করা হইয়াছে। কর  
হ্রাস করিবার আর ৮০,০০০ বিজ্ঞাপন  
দেওয়া হইয়াছে। ডেপুটি কালেক্টরেরা  
গবর্ণমেন্টের কৃতজ্ঞ নীল প্রদেশে বিস্ময়িত  
হইয়া লাগিয়াছেন : কীভাবে নীলকরেরা  
যে কর হ্রাস করিতেছেন তাহা অব্যাহত  
নহে। তাহারা যে আশঙ্কিত করিতেছে  
তৎপ্রতি কর্তৃপক্ষ কর্তৃক প্রতিকার না।

হাদিগের গো, মহিব, গৃহাঙ্গি বিক্রীত করি-  
য়া অব্যাহত করি আদায় করা হইতেছে  
নীল প্রধান প্রদেশের নীল হইলেই হইয়া  
কর রব উঠিয়াছে। আর দুই বছর  
কাল ক্রমাগত মোকদমা করিয়া করি  
করকেরা অবসন্ন ও মিতাক্ত হইয়া  
পড়িয়াছে। সুবিচার হইলে কর  
গের কোত কিঞ্চিৎ দূর হইত ; কিন্তু  
হাদিগের ভাণ্ডে সেটি খতিয়ান। জমা  
দিগের দুই কুলই বেশ : জমা বটে নিম্ন  
কমিসন্সর আদায় সাহেব কর  
সংখ্য মোকদমার সুবিধারের আদায়  
হইতেছেন ; কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখি-  
নিসংখ্যর প্রতীক্ষায় হইবে, তাহা  
এ আদায় বিক্রয় মাত্র হইবে, জমা  
গের ভাণ্ডে সুবিধা হওয়া হইত : বাস্ত-  
মকদমায় সিবিবিয়ান ও অডিটর ডেপু-  
কালেক্টর প্রকৃতিবে জানেন, তাহা  
অবশ্যই স্বীকার করিবেন উক্ত গবর্ণ-  
মেন্টের আদায় অসমর্থ ; তাহারা এক  
যে আদায় দেন, তাহার আর পরিবর্ত-  
রেন না। ফলতঃ মোকদমা সাহেবের  
জমা আদায়ের আর কিছু করার হইত  
এই মাত্র।

অথবা, আমরা গবর্ণমেন্টকে হুজুং এ  
বলিতেছি। কেন? নীলকরেরা  
যে কর জমা কর পারেন এমন কর না  
গবর্ণমেন্টের এটি হুজুং দূরে থাকুক, তাহা  
আবার নীলকরদিগের সহায়তার জন্য  
এক জনের অপরাধে পল্লীপ্রাথমিক



কর্তার লোকের দণ্ড বিধানের বিধি বিধি  
বদ্ধ করিতে উদ্যত হইয়াছেন। আমাদিগের  
গবর্ণমেন্ট সকল বিষয়েই অস্বস্তি।  
কয়েকটি যুদ্ধ প্রিয় সভা জাতিরা  
হটলে ব্যারন রিকেসলিও  
সভার বসেন, সকল সভা  
নিষেধ অনুষ্ঠিত; গবর্ণমেন্ট তাঁ  
হাদিগের দ্বারা শান্তি তর হইবার ভয় ক  
রেন; কিন্তু সেই শান্তি রক্ষা করা "কি গব  
র্ণমেন্টের কর্তব্য নহে"। তাঁহারা সতর্ক  
হইবেন যেন কেহ অম্যাচারিত্ব করিতে  
না পারে।, এ-দেশের কর্তৃপক্ষ এই নীতিটি  
বিস্মৃত হইয়াছেন। বর্ত্তি বিশেষের অর্থব্য  
সম্প্রদায় বিশেষের অর্জিত সাধন উদ্দেশ্য  
করিয়া কোন বিধি বিধান অতিশয় গর্হিত।  
একের অপরাধে অন্যের দণ্ড বিধান কি  
শান্তি রক্ষার সহুপায়? এতদ্বিধি কি শান্তি  
রক্ষার উৎকৃষ্ট উপায় নাই? নীলকরদি  
গের অত্যাচার নিবারণ হইলে কি সহজে  
শান্তি রক্ষা হয় না? আমাদিগের রাজ  
পুরুষেরা কি নীলকরদিগের দ্বারা মনে  
হইয়া থাকে চিরকাল তাঁহাদিগের যে  
ফাঁদাশিতা ও "প্রতিকারীদিগের,, অত্যা  
চার সহ্য করিবে? যে সম্প্রদায়ের প্রতি  
নিষিদ্ধা বলেন গবর্ণমেন্ট মজুরদিগের বে  
তন হ্রাস করাতে চাকরদিগের কষ্ট হই  
তেছে, সে সম্প্রদায় এ দেশের কেমন  
হইল? গবর্ণমেন্ট বুঝিয়াও বুঝিবেন না।

অধিক কথা কি, আমাদিগের রাজপু  
রুষেরা নীলকরদিগের দ্বারা জালে বদ্ধ হ  
ইয়াছেন। নিরদ্বারিত বৈফল্য সম্পাদনে  
উদ্যত হইয়াছেন। তাঁহারা ১৮৫৯ অব্দে  
শ্রীলঙ্কা করিয়া লিখিয়াছেন

সম্প্রদায়িক গণ্ড বৃদ্ধির প  
ক্ষে প্রচেষ্টা করিয়াছেন দ্বারা লোকের মতাদি  
গের বৈধি হ্রাস হইয়াছে আকস্মিক চাকর  
দিগের উদ্যোগের পাইতেছেন না। এই সকল  
দেশের অপমানিতকে সভা ও ভারতবর্ষের  
বর্ধমান বন্ধন, প্রতিকার দিতে পরাও হু  
বন না।

কেহ পরগণার হারের অধিরিক্ত কর লই  
তে পারিবেন না এবং যে স্থলে কৃষকদি  
গের মধ্যে ভূমির উৎকর্ষ সাধিত হইবে  
তথায় কর হ্রাস করা হইবে না। এই আ  
ইনে কি অসঙ্গতি দেখা হইবে? নীলক  
রেরা নীলগবণ করাইবার উদ্দেশ্যে অসমত  
কর ধার্য্য করিতেছেন, ইহা কি এখনও  
জানিতে বাকী আছে? আব দাবের ত কথাই  
নাট। গবর্ণমেন্ট কি ইহার নিবারণ করিবে  
ন না। গত শতাব্দীতে তাতারেরা রুশিয়া রা  
জ্যত্যাগ করিয়া চীন দেশে গমন করে; তদ্বি  
বন্ধন আত্মাকাশের শাসনকর্তা যাবজ্জীবন  
কারাবদ্ধ ও চিরকালের জন্য যুগান্তজন  
হইয়াছেন। বঙ্গদেশীয় একজনা কি তা  
হাদিগের অবলম্বিত উপায় গ্রহণ করিতে  
উদ্যত হয় নাই? এক্ষণে তাহারা নীলকর  
দিগের অমীয়ারি ত্যাগ করিয়া অন্যত্র বা  
ইতেছে। কিন্তু গবর্ণমেন্টের শাসন এণা  
নীতিতে যদি তাহারা সেখানেও তিষ্ঠিয়া  
থাকিতে না পারে, শেষে কি ভারতবর্ষীয়  
গবর্ণমেন্টের অধিকার পরিত্যাগে উদ্বু  
হইবে না? গবর্ণমেন্ট কি শেষে এইটা দে  
খিতে চান

"আমরা বারবার কহিতেছি গবর্ণমেন্ট  
নীলকরদিগের অসমত কর গ্রহণ করার  
রহিত করুন এবং এতোকের ভূমির মী  
মা বদ্ধ করিয়া বর্ধমান কর ধার্য্য করুন। বি  
শেষ কমিসনরেরা এতোক পল্লীগ্রামে  
গিয়া ভূমি জরিপ করিয়া কর নির্ধারণ  
করিয়া আনুন। কর লইবার জন্য বৎস  
রের কয়েক দিন স্থির করা কষ্টক। নীল  
করেরা করনা লইলে নিকটবর্ত্তি কালেকট  
র ও ডেপুটি কালেকটরের নিকটে তাহারা  
টাকা জমা করিয়া দিবে। এবং আব দাব  
প্রতি এককালে নিশেষ করিতে হইবে।  
এই উপায় অবলম্বন না করিলে কিছুতেই  
নীলকর ও একাদিগের পরস্পরের বিরোধ  
শান্তি হইবে না। তাঁহারা অম্যাপিত ও  
কেন, পুনর্বার নীল জমিবে তাঁহারা কি

ক্রমে পতিত হইয়াছেন। তাঁহারা নিশ  
জানিবেন বঙ্গদেশে নীলের শেষ হইয়াছে  
নীলকরেরা যদি ন্যায্য কর লইয়া সভ  
না হন, তাঁহারা এই সিদ্ধান্ত করিয়া রাখুন  
কিছু দিন পরে তাঁহাদিগকে আপন আপ  
জমিদারী পতিতভূমির দেখিতে হইবে

কাগলের যুদ্ধ

আমরা পূর্বে পাঠকবর্গের গোচর  
করিয়াছি, পাবসীকসেনারা আর্মীর দো  
মহম্মদের রাজ্য আক্রমণ করিয়াছে।  
তারা কোরাসান হইতে করা পর্য্যন্ত আ  
যা তথায় আর্মীর পুত্র মহম্মদ আকব  
রকে পরাজয় করে। পরে তাহারা ক  
বর্গ অধিকার করিয়াছে। আর্মীর ত  
মেলোবাহে ছিলেন। তিনি তৎকালে  
কয়েক জন অধিরমতি অবাধ্য সরদার  
জারগীরদারের সম্মতি বাজেআল ক  
বার কায্য লইয়া ব্যস্ত সমস্ত ছিলেন।  
অশ্রুত সন্বাদ তাঁহার কর্ণগোচর হই  
তিনি উক্ত সরদারদিগের অনেকের জ  
গীর প্রত্যাগ করিলেন এবং তাঁহাদিগকে  
শত্রুর সহিত যুদ্ধ করিতে আত্মা দিলেন  
এদিকে হিরাটের রাজা সুলতান জ  
পারসীক সেনাদিগের সহায়তা করি  
ছেন, তাহারা ক্রমশঃ অগ্রসর হইতেছে  
যেহা মহম্মদের কয়েক জন সরদার  
বিপক্ষ পক্ষে পক্ষপাতী হইয়াছেন।  
হার সমুদায় সেনাপতিও তাঁহার প্রতি  
ধিক অনুরক্ত নহেন। উক্ত আর্মীর হি  
টের রাজার উপরে অধিকতর জাতম  
হইয়াছেন। তিনি স্পষ্টাকরেই কহি  
ছেন "পরমেশ্বরের ইচ্ছায় যদি আমি  
কিছু থাকি, তাহা হইলে হিরাট ভূমি  
করিব।" তিনি ইহা অপেক্ষাও মহাম  
বিপক্ষ হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছেন সভা;  
হার বুঝিয়া ভীততা, রণপাতিয়া ও  
চাঞ্চুর্য্যের বিধরে কেহ সন্দেহ করেন  
কিন্তু তিনি এক্ষণে অতিশয় রক্ত হ

১. তাঁহার বীরত্ব পুত্র আশ্রয়কে  
 আশ্রয়কে আশ্রয় করে। (কলকাত্তা)  
 গত: 'যোদ্ধা আশ্রয়, রক্ষিত' এর  
 গ করিয়াছেন। পারস্যের সেনারাও  
 ক বিঘ্নে অসুখপন্ন হবে, অতএব দোস্ত  
 হুম্মদ নীচ যে তাহাবিগকে সুদীক্ষিত ক  
 রা উচিত পাবেন একপ বোধ হয় না।  
 আমাদিগের গবর্ণমেন্ট এ সময়ে কি  
 রিবেন? এখন এই প্রেরণ মীমাংসা করা  
 আবশ্যক হইতেছে। ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্ট  
 অত্রতা গবর্ণমেন্ট উত্তরেরই এই সংকা  
 আছে, ভারতবর্ষের প্রতি রুশির সমু  
 টর বিলম্বন সত্বক দৃষ্টি আছে। তিনি  
 যোগ পাইলে কোন ক্রমেই তাহা পরি  
 গ করিবেন না। পারস্যাদিপতি উক্ত সমু  
 টর অমুগত; তাঁহার সহায়তার সমুটের  
 ভাষ্যবর্ষে আগমন অসম্ভাবিত মতে। তা  
 ভবর্ষে আসিতে হটলে হিরাট হইয়া আ  
 সিতে হটেবে। এই নিমিত্ত ইহা ভারতব  
 র্ষ 'হার', বলিয়া নির্দেশিত হইয়া থাক  
 ক। এই নিমিত্তই লর্ড আকলাণ্ড ১৮৩৯  
 সনকে আকলানহানে সেনা প্রেরণ করিয়া  
 ৩০,০০০ সৈন্য ও ইংরাজ জাতির গৌরব  
 বিনাশ করিয়াছিলেন। এখন পর্য্যন্তও আ  
 মাদিগকে এই অধিস্বত্বকারিতাবিকৃত্তিত  
 যুক্ত ১৭ কোটি টাকা ধনের সুদ বহন  
 করিতে হইতেছে। ১৮৫৬ সনে যখন পা  
 রস্য সেনারা হিরাট অধিকার করে, সর  
 জেমস্ আউটারাম পারস্য দেশ আক্রমণ  
 করিতে যান। হিরাট পারস্যরাজ্যের হস্ত  
 গত না হয়, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের এই  
 নৈকান্তিক চেহা। তাঁহার দোস্ত মহম্মদ  
 রাঁকে ভারতবর্ষের কলক স্বরূপ জ্ঞান ক  
 রেন। এ সময়ে কি তাঁহার এই বৃদ্ধ অসী  
 মকে শত্রু হস্তে বিজেপ করিয়া নিশ্চি  
 থাকিবেন?

রুশির সমুটের ভারতবর্ষে লক্ষ্য  
 আছে এ কথা অস্বার্থ্য মতে, কিন্তু এক্ষণে  
 রুশিয়ার বেকপ গোলযোগ উপস্থিত।

রাষ্ট্রনির্যাস সন্তান হইয়াছে, তাহাকে  
 ভ্রম্য সমুটি যে এমন সময়ে ভারতবর্ষের  
 দিকে দৃষ্টিপাত করিবে কোন ক্রমেই  
 একপ বোধ হইতেছে না। আর যদিও  
 তিনি ভারতবর্ষ আক্রমণ করিবার ইচ্ছা ক  
 রেন, তাহাও পূর্ণ হইবার সম্ভাবনা অল্প।  
 চারি লক্ষ রুশির সৈন্য সমভিব্যাহারে না  
 লইয়া ভারতবর্ষে প্রবেশ সুসাধ্য নয়। না  
 দীরসাহ প্রকৃতি সহজে ভারতবর্ষ জয় করি  
 য়াছিলেন বটে, কিন্তু সে কাল অতীত হই  
 য়ছে। রুশির সমুটি যদিও চুরাশাশ্রয় হই  
 য়া ভারতবর্ষে আগমন করেন, অনতিবিলম্বে  
 তাঁহাকে পলায়ন করিতে হইবে। ভারত  
 বর্ষে নীল ও ইনকম টাক্স ঘটিত যে কিছু  
 গোলযোগ থাকুক না কেন, এদেশীয়েরা  
 করানি অথবা রুশির বিপ্লবের অধীনতা স্বী  
 কারে উন্মুখ নহেন। যদি সুখ ও স্বাধী  
 নতা আমাদিগের অদৃষ্টে থাকে, ইংলণ্ডের  
 অনুগ্রহেই হইবে। যখন দেশের লোক  
 সোভাগ্য ও গবর্ণমেন্ট সকলেই বিকপ, ত  
 খন রুশির বিপ্লবের প্রবেশে আসিয়া কৃত  
 কার্য হইবার সম্ভাবনা কি? দোস্ত মহম্মদ  
 পুরাতন বন্ধু, তাঁহাকে সাহায্য দান করা  
 উচিত বটে, কিন্তু যেন আমাদিগকে পুন  
 র্জীব ১৭ কোটি টাকা ধনগ্রস্ত হইতে না  
 হয়। আমরা এখন পুরুষদিগের অবি  
 স্বত্বকারিতাদোষে পুনরায় যেন বিপদাপন্ন  
 না হই। আমাদিগের গবর্ণমেন্ট পারস্যাদি  
 পতির সহিত যুদ্ধে লিপ্ত হন, ইহা কোন  
 ক্রমেই আমাদিগের অনিচ্ছিত নহে।  
 আমরা স্পষ্টাঙ্গরে ইহার প্রতিবাদ করি  
 তেছি। সস্ত্রাতি ভারতবর্ষ ভারতবর্ষ অর্থ  
 ক্লান্ত হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছে, এখনও স  
 প্পূর্ণরূপে ইনকম টাক্স ধন গ্রহণ হইতে  
 দৃষ্টিলাভ করিতে পারেন নাই; এ সময়ে  
 যে ব্যক্তি গবর্ণমেন্টকে অধ্যা আসিয়ার  
 সৈন্য প্রেরণে উৎসাহিত করিবেন, তিনি  
 ভারতবর্ষের শত্রু বলিয়া পরিগণিত হই  
 বেন সন্দেহ নাই।

উৎসব ও উৎসবদিগের ব্যক্তিগণ।  
 "এখন আর আশঙ্ক্য নাই, সে কা  
 গিয়াছে, বৃদ্ধদের অনেকে এই আশঙ্ক  
 করিয়া থাকেন। কলকাত্তা আমাদিগের সম  
 জের একটি বিশেষ অঙ্গ। বর্তমান, ইহা  
 অন্যদেশে দৃষ্ট হয় না। অন্য অর্থ যে  
 নব্যত্ব নৃত্য, গীত, বাজ্য প্রকৃতি তাঁর  
 সেন, হুজুরা এ সকলের বিকট হইতে পি  
 দায় গ্রহণ করিয়া থাকেন, কিন্তু বাক্যে  
 হুজুরাই যাত্রা, পঁচালী প্রকৃতি আম  
 এবং কৃতবিদ্য বুঝেরা। তাহাতে নিম্ন  
 হইয়া পুস্তক পাঠ, সত্যের তর্ক বিতর্ক ও স  
 বাব পত্রাদি পত্র সমধিক অনুরক্ত হইত  
 বুঝেরা উল্লিখিত যাত্রাবির আমোদে  
 হুজুরা লম্বুচেতার কণ্ঠ বিবেচনা করেন।  
 যাহারা উল্লিখিত আমোদের বিবেচ  
 বোধ হয়, তাহারা এই কথা কহিলে  
 আজি কালি চাঁদা, সত্য, রাজনীতি সম  
 হ তর্ক বিতর্ক ও বর্নন বিজ্ঞানাদি শিক্ষ  
 কাল উপস্থিত, এ সময়ে কি কোন এক  
 আমোদ করা উচিত? আমাদিগের মী  
 জুরি কি একপ অবস্থা হইয়াছে যে  
 মরা হুজুরের হিতসাধন পরিহার্য্য করি  
 কেবল নিজ সুখের প্রতি দৃষ্টিপাত করি  
 উল্লিখিত কখনও আমোদ আমোদ আস  
 হইব? পক্ষান্তরে উৎসবদিগের ব্যক্তি  
 বলিতে পারেন "আমরা যদি বাগ্‌ইয়  
 পূজা করি, বাই মাচ দেখি, অথবা ব  
 লুনি, তাহা হইলে নব্য সম্ভ্রমারের সা  
 নকেরা ক্রুদ্ধ হইয়া উঠেন; জানি যা  
 গেলে নিন্দা হয়, প্রাণ্ট সাহেবের পর  
 চিত্তে না দিয়া যাত্রার প্যালা দিলে  
 বায় হয়। তবে কি আমরা কেবল পেচ  
 ম্যার গভীর হইয়া বসিয়া থাকিব? পা  
 গণ! আমরা ইহার অন্যতর কোন বা  
 অনুমোদন করিতেছি না। আমোদ নি  
 আবশ্যক, ইহা প্রকৃতির নিয়ম। আমাদি  
 র পরীর বেকপ নিত্যর পর সূতন বন এ  
 হন আমাদিগের পরও চেহানি আমাদিগে



মন সুখ ও আনন্দের হর। কোমল ব্যক্তি স  
মস্ত দিন কেঁর। গিরি, শিকড়, কিছা  
ওকালতী করিতে সমর্থ হন। কিন্তু সকল  
একর আমোদ প্রমোদ সকল সময়ে ও  
সকল অবস্থায় প্রীতিকর হয় না। হুকেরা  
যে যাত্রা পাঁচালী প্রভৃতিতে আমদ সুখ  
অনুভব করেন, নব্য সঙ্গীতকারের তাহা ভাল  
হুগে না কেন, এক্ষণে তাহাদের বিবেচিত  
হইতেছে।

পূর্বকালে যে যে বিষয়ে হিন্দু জাতির  
জীবিত লাভ হইয়াছিল, এই জাতির রাজস্ব  
ও স্বাধীনতা লোপের সঙ্গে সঙ্গে সে সমুদায়  
বিষয়েরই আর জীবন্ত ভয় বায়। অতি  
নরানি বিষয়ে হিন্দু জাতি যে উৎকর্ষ লাভ  
করেন, ক্রমে তাহার বহু বিপর্যাস হয়,  
তবিশ্রিষ্টী রুচিও ক্রমশঃ বিপর্যাস হইয়া  
উঠে। আমরা এক্ষণে যে যাত্রাদি দর্শন  
করি, তাহা সেই রুচি বিপর্যাসকোষের  
ফল। এখন সে রসভূমি নাই, এখন সে  
অনুরূপ ভূমিকা, বিস্তৃত নাট্যাঙ্গি ও বিস্তৃত  
সংগীতাদির রীতিও নাই। এখন সমুদায়  
বিকার প্রাপ্ত হইয়াছে। আলঙ্কারিকেরা  
অলীকলোকসমূহকে নাটকের একটি  
প্রধান দোষ বলিয়া গণনা করিয়াছেন,  
কিন্তু এই দোষটি এককর যাত্রাদির একটি  
প্রধান গুণ বলিয়া ব্যাখ্যাত হইয়া থাকে।  
যথো যে কতগুলি লোক হইয়া গিয়াছে  
এবং এখনও আমরা তাহাদিগকে বুদ্ধ এই  
শব্দ দ্বারা নির্দেশ করিয়া থাকি, তাহাদি  
গের অধিকাংশ লোক এই সকল অলীক  
যাত্রাদির একান্ত ভক্ত। এই মহাপুরুষের। কে  
বল যে আমাদের দেশের নাটক নাট  
ক প্রভৃতির অভিনয়াদিকে হীন দশা পা  
ত্র্যাইয়াছেন একপ নকে, তাহাদিগের  
হইতে আমাদের দেশ নানা প্রকারে  
জ্ঞানশক্তি ও চরিত্র প্রভৃতি হইয়াছে। তাহাদি  
গের বেকপ গুণ, তাহাতে একপ ঘটনা  
হওয়া অসম্ভাবিত মনে। তাহারা না জা  
নেন সংস্কৃত, না জানেন বাঙ্গলা, না জানেন

ন ইংরাজী। তাহাদিগের এমন গুণ, তা  
হাদিগের অসাধ্য কি আশ্চর্য লাভ মেলি  
এদেশের যাবতীর লোককে যে প্রভাব  
বলিয়া গালি দিয়াছেন এবং মন মড়াই  
ওয়েস ম যে আজি ও গালি দিতেছেন, সে  
কেবল এই মহাপুরুষদিগের গুণে। চুলকাটা  
পোঁপছটা আমলা মসই তাহাদিগের প্রধা  
ন। পক্ষান্তরে, নব্য সঙ্গীতকারের নানাবিধ  
ইংরাজী প্রু পাঠ করিয়া রুচিপরিবর্ত হই  
য়াছে, সুতরাং চলিত সম্ভাষণ যাত্রাদিতে তা  
হাদিগের প্রীতি আছে না। এক একটা ক  
রিয়া ধরিয়া দেখ, তাহাতে প্রীতি জন্মবার  
সম্ভাবনাও নাই।

প্রথম, ওস্তাদিকবিতা। সখীসহাদ, বি  
রহ প্রভৃতি কতকগুলি গান অশ্রমসমীপ  
নব, কিন্তু বাদ্যযন্ত্র ও স্বরের যেকপ মিষ্টতা,  
তাহাতে এই কবিতা যত নীচ বিলুপ্ত হয়,  
ততই অজ্ঞানদের বিষয়। জুলে ও কাওরা  
বাদ্যকর, গায়কেরাও আর জাতিতে একপ  
দোহারাদিগের জ্ঞানব চীৎকারধনি ও খেউ  
ফেতে এই কবিতার উৎকর্ষের পরিণাম প  
রিচয় দিয়াছে। দ্বিতীয়, যাত্রা। ইহা বরং  
কতক ভাল। কিন্তু ইহা প্রাচীন কালের  
অভিনয়ের বিকৃত আদর্শ। অভিনয়ের ভিন্ন  
ভিন্ন ব্যক্তির রূপ, বেশ, বাক্য ও ব্যবহা  
রের প্রতি কিছুমাত্র দৃষ্টিপাত করা হয়  
নাই। শূক্ললব্যাঙ্গিও কখন যশোদা  
সাজে, গৌরবর্ণ বালকও কখন কৃষ্ণ হয়,  
এবং কাকি সমুদয় শ্যামবর্ণ বালক ও রাধার  
রূপ ধারণ করে। পরিচ্ছদের বিষয়েও এই  
রূপ। যাত্রার চাকাই শাড়ি পরা বর্ণোদ্ভাও  
কখন কখন দেখিতে পাওয়া যায়। শোক,  
রাগ, মণ্ডা প্রকাশ করিবার সময়ে  
কখনকি একর অভ্যস্ত করিতে হয়,  
তাহা যাত্রার নট নটী প্রভৃতি কেহই  
জানে না। ব্যহারের বিষয়েও নিতান্ত  
অনভিজ্ঞ। হয় ত প্রজ্ঞানচরিত্র হইতেছে  
এমত সময়ে বরংক কন ইংরাজের বেশ  
ধরিয়া আসিয়া উপস্থিত হইল। পাঁচালী,

হাপ আকড়াই প্রভৃতি কখনই নাই।  
ইহার কিকটে ওস্তাদি ও যাত্রা  
সহস্র গুণে অশ্রমসমীপ। অধিক কথা  
কি, মন, গুলি, ও পাঁজার পরিণত না  
হইলে পাঁচালী ও হাপ আকড়াই বসে  
এদেশাধিকার হয় না। যত দিন আমরা  
গের জীলোকেরা সংগীত বিদ্যা না শিখি  
বেন, তত দিন বাই ও পেমটার প্রভৃতি  
দূর চাইবে না। সামান্য বান্দাবনা মইরা  
আমোদ করা কিস্যাতর বিপরীত কাব্য  
মহে?

যাত্রা, পাঁচালী, বাই ও খেমটা প্রভৃতি  
একে একে সকলই বণ্ডিত হইল, তবে কি  
আমাদিগের দেশের লোকেরা এককালে  
জীবন প্রমোদে বঞ্চিত থাকিবেন? ইহার  
উত্তরে আমাদের বক্তব্য এই, আমাদি  
গের পূর্বতন অভিনয়াদি পুনরুজ্জীবিত  
হউক। রত্নাবলী, শকুন্তলা প্রভৃতির অভিনয়  
দর্শন করিয়া আমরা তাবিশ্রাহিলাম  
এই সম্ভা আমোদ ক্রমশঃ পুনরুজ্জীবিত  
হইবে, কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই, আর  
উহার প্রসঙ্গ নাই। জীবুত বাবু রাধামাধব  
হালদার প্রভৃতি কয়েক ব্যক্তি সাধারণ  
রসভূমি করিবার প্রয়াস পাইয়াছিলেন,  
কিন্তু উৎসাহ বিরহে তাহা পরিত্যক্ত  
হইয়াছে। পুনরায় তাহাদি গের এই বিষয়ে  
চেষ্টাবান হওয়া উচিত। স্বভাবের অনু  
করণ দর্শন ব্যতিরেকে কৃতবিদ্যাব্যক্তি  
দিগের নয়ন ও মনের প্রীতি জন্মবার  
সম্ভাবনা নাই।

—••—

সুতর প্রথম।

সঙ্গীতি হইখানি সুতর প্রথম আমরা  
গের হস্তে আসিয়াছে। সীতাহরণ ও প্রকৃ  
তিপ্রেম। ঢাকা বাঙ্গালবাজার জামি ভু  
গের দ্বিতীয় শিক্ষক জীবুত বাবু মোহন  
চাঁদ বসাক সীতাহরণ প্রচার করিয়া ঢাকা  
বাঙ্গলায় প্রস্তুত করিয়াছেন। ইহার  
মূল্য আট আনা। প্রকৃতিপ্রেম কলিকাতা



বিশ্ব বিদ্যালয়ের অধ্যাপক শ্রীযুক্ত  
বাবু হারকনাথ রায় প্রণীত। এ গ্রন্থখানি  
পণ্যময়। ইহা পাঠ করিয়া আমাদিগের  
এই সংস্কার অভিযানে গ্রন্থকারের বিশেষ  
কবিত্ব শক্তি আছে। আমাদিগের এর  
মিত্র এই গ্রন্থের বিষয়ে যে আভিপ্রায় প্র-  
কাশ করিয়াছেন, তাহা এইখানে গৃহীত  
হইল।

সংগ্রহিত গ্রন্থকারনাথ রায় প্রকৃতিপ্রেম  
স্বাক্ষর এক খানি সুতন কাব্য প্রণয়ন করিয়া  
ছেন। রায় মহাশয় অতি সুকবি ও লক্ষ্যপ্রতি-  
ষ্ঠ রাসরসাসুতে তিনি নিজ কবিত্ব শক্তির  
বিশেষ পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। এই সুত-  
ন প্রভেদে তাঁহার এই শক্তির সম্বন্ধে প্রমাণ  
পাওয়া যাউতেছে। আমরা দিন দিন বহুবিধ  
সুতন গ্রন্থ দেখিয়া থাকি, কিন্তু তৎসমুদায়  
এতদূর নাহি। প্রকৃতিপ্রেম অনুবাস মতে  
এই কাব্য খানি কেবল রচনাতেই সুতন এবং  
নহে, ইহা যে শৃঙ্খলাতে প্রণীত হইয়াছে তা-  
হাও সুতন। অ.পাতকঃ শব্দ ও বিজ্ঞান সা-  
জ্ঞার অনুশীলন প্রাপ্তবোধে, সত্যতার  
সমাগমে ও জিরাজাতীর লোকের সহিও  
সম্বাসে অন্বদেশীয়দিগের তাব, মতি, ও  
কচির বহু বিপর্যয় হইয়াছে, সুতরাং প্রাচীন  
প্রণালীর রচনাপাঠ করিয়া তাঁহাদিগের  
উক্তি অগ্নে না, কিন্তু প্রকৃতি-প্রেমের রচনাব-  
নব্য পাঠক মণ্ডলীর মনোরঞ্জন করিবার বি-  
শিষ্ট উপবেগিতা আছে। রায় মহাশয় এই  
কাব্য খানি কোন প্রিয়তম ছাত্রের কবিতাসু-  
প্রতিভার উৎসাহাবি সেন্সন করিবার জন্য  
প্রণয়ন করিয়াছেন। এই হেতু তিনি অ-  
শুদ্ধ কোষল করিয়া প্রসঙ্গসঙ্গতি ক্রমে  
অপেক্ষা মধ্যে কাব্য রচনার অনেক বিধি ও  
ব্যবস্থা প্রদর্শন করিয়াছেন। তৎপাঠে কেবল  
তাঁহার ছাত্রেরই উপকার হইবে এমন নহে  
অন্বদেশীয় কবি ও গ্রন্থকারদিগের বিপুল উ-  
ৎসাহের সম্ভাবনা। অপর, দেশীয় ভাবানিকা  
ও তাঁহার উন্নতি সাধন এবং একমত অব-  
লম্বন ও সত্যতার সমর্থন বিষয়ে তিনি যে যে  
কথা লিখিয়াছেন সে সমুদায় গুলিই যুক্তিসিদ্ধ  
বল্য। এই কাব্য খানির মধ্যে একটা প-  
ত্রের ও অন্বোধিত্ব কথা নাই। ইহার মগর ও

বনগোলা উবা ও । প্রথম প্রকৃতি অতি  
মনোহর ও উৎকর্ষ ও গৌরব। গল্পকিন্যাস একা  
সরল ও প্রসঙ্গ পড়িলে বোধ হয় যেন অব-  
লীলাকর লেখনী হইতে বিনির্গত হইয়াছে।  
আর লক্ষ্যসকল রচনিতার এখনি বশে আ-  
বে সুসঙ্গি ইত্যর ও সঙ্গতিমূলক লক্ষ্য প্রযু-  
ক্ত হয় নাই, এবং অতিক্রম ও অসীমতা প্র-  
কৃতি লোক ও কোন স্থানে সঞ্চিত হইতে  
না। আদ্যোপাত্ত এক হৃদয়ে রচনা করিতে  
কাব্য অতি মীরস তর বলিয়া প্রকৃতিপ্রো-  
নানা রসে রচিত হইয়াছে। নানাবিধ হৃদয়  
কাতে ইহার আরো অধিক মিষ্টতা হইয়াছে  
এই গ্রন্থে বালালা, রত্নবোম্বী ও সঙ্ক-  
তাভাবী নানা প্রকার রস আছে। প্রকৃতিপ্রেমের ২  
পৃষ্ঠার ডোটক হলে নারায়ণের যে সলীল  
রচিত হইয়াছে তাহা অতি মনোহর। সর্বা-  
পেক্ষা চতুর্থ সর্গের শেষে ১০৮ পৃষ্ঠার রস  
ভাবার সলীলত্বানুসারী করক পংক্তি অ-  
তিশয় প্রতীকশীল হইয়াছে। নিম্নে কতি-  
পয় পংক্তি উদ্ধৃত হইল, পাঠ করিলেই পাঠ-  
কগণ রায় মহাশয়ের রচনাশক্তি সম্বন্ধে  
করিতে পারিবেন।

রাজনী অবসান রে।

শিকরুল প্রত্যাহ্বান করে গান রে ॥  
তার প্রাচী দিলীপনী, বুঝি নিদ্রা তল করি,  
প্রাণপতি হস্তাবেশে করেন আশ্বাস রে।  
তালে রক্তমণি হলে, সকলে বালান বলে,  
কার সাধা তার ভীষ করিতে সম্মান রে ॥  
বহু হেরি মহোৎসব, তাবে শুভ্র চল চল,  
মনস্বখে নীরে তানে সহাস্য বরান রে।  
মধুকর মধুদ্রবী, গুন গুন রব করি,  
বুঝি কালগুণ গেয়ে করে যধু পাম রে ॥  
নানা পক্ষী নানা ধরে, কিবা কলকলি করে,  
বুঝি তারা প্রকৃতির করিছে ব্যাখ্যান রে।  
বহু-বহু গজবহ, ধারে ধারে অহবহ,  
প্রত্যাহ্বান সমাচার করে বুঝি দান রে ॥  
নব দুর্জয়লোপারি, নীহার কি শোভা করি,  
যেন নীল নারীশিরে বেদের মহান রে।  
বুঝি বা প্রকৃতি সত্য, তাবৈ জোর হস্ত অতি,  
প্রেম অক্ষপাত করে হয় অহুমান রে ॥  
তারুক গারুকে রাগে অশ্রুধারালিখী রাগে,  
হরিণ গারু কিবা তুলিতে সুভাস রে।  
বাজে কি প্যামের বাঁশী, কিবা একি সুধারানি,

কিবা শিক কাকরী না হয় তেজোমান  
গোপাল গোপন করে, অক্ষিত্ব বগন হয়ে  
সুসলী বাজারে করে গোষ্ঠীরে প্রদান  
এ তার দেখিলে পড়ে, মনে পড়ে নষ্টবরে,  
মনে পড়ে গোষ্ঠীলীলা হয়ে মনোপ্রাণ  
গত চোর শিশাচর, হেরি প্রত্যাহ্বান কর,  
লচকিত হয়ে সবে শরিতে প্রদান রে।  
মহাপাণী হৃদয়কালে, যেন দেখিলে কালে  
তরে বদখর করি হয় কম্পান রে ॥  
জীবের চঞ্চল চিত, থাকে শির প্রকৃতিত,  
করে জীব নানা মত কর্মের বিধান রে  
বুঝি এই কালে মন, অনুল্য বৌদন ঘন,  
পাইয়ে হয় বা নানা গুণের বিধান রে  
আমাদিগের মিত্রের আশ্রয়ার্থী  
বহু যে কথা বলেন, তাহা বহু অর্থার্থ না  
অ.জিও যদি আমরা কবিত্বশক্তি একা  
কুকলীলা বর্ণন ব্যতিরিক্ত বিস্ময়র না প-  
তাহা হইলে আমাদিগের কি উচ্চ  
শক্তি ও সুতন রচনার কসতা হইল  
কুকলীলা বর্ণন করিতে গেলে অবিকার  
হলে তাবেরও সুতন থাকাতার।

সর্বদা ১৫ই মার্চ ১৮৭২।

প্রিয় সম্পাদক! আপনার পাঠ্য  
গুনিয়া আশ্বাসিত হইবেন যে, তাঁহা  
জীবের দ্বারা তারতম্যের সংস্কার ১৫  
র মধ্যে বোঝাই হইতে এখানে উপলব্ধি  
হইয়াছে। অপরকালের মধ্যে আপন  
বদেশে বলিয়া একদিনের পণ্ডিত কি  
লীর সমাচার অবশ্য করিবেন।  
সমাজসংস্কারে সম্প্রদায়-বিষয় সংস্কার  
নিম্ন লিখিত করেকটি বিশেষ সম্বাদ প্র-  
ণীত হইয়াছে। ১৮৭৮ খ্রীস্টাব্দে ১  
জানুয়ারি এখানে সম্প্রদায়-বিষয় বিচার  
স্থাপিত হয়। তদবধি উক্ত বিচারালয়ে  
৩১ শকের ৩০এ জুলাই পর্যন্ত সর্বস্বত্ব  
খানি আবেদন পত্র অর্পিত হয়। ১৮৭৯  
খ্রী ১৮৭১ পর্যন্ত দ্বারীর দ্বীকে ও দ্বীক  
কে পরিচালনা করিয়া বহুতর বাস করিবার  
প্রায়ে ২৪৮ খণ্ড আবেদন পত্র প্রাচীন ও  
নীন বিচারালয়ে সমর্পিত হয়; তদ্বধ্যে বা-  
চ'র জন : ৪, নিউরতা অন্য ১২৪, পা

চাপ করিয়া পলায়ন নিষেধ ১৩। নবীন বি-  
চারালয়ে ১১৮ জন আচার্যি অধিষ্ঠিত ৩০এ জুলাই  
পর্যন্ত ৪১৬টি বিবরণে আশ্রয়বিয়োগ সিদ্ধান্ত  
হইয়াছে, ২০টি মোকদ্দমা অগ্রাহ্য হইয়াছে,  
এবং ৩১৫টি বিবরণে আশ্রয়ী উক্তর দেয়  
নাই। ১৮৬১ অব্দে ৩০এ জুলাই আশ্রয়-  
বিয়োগের নিষিদ্ধ ৭৪খান আবেদন পত্র  
বিচারালয়ে সমর্পিত হয়।

২০এ মার্চ।

অধ্যক্ষার ষ্ট্যান্ডার্ড পত্রে 'ভারতবর্ষ বি-  
ষয়ে সাবধান' এই নামে একপ্রস্তাব প্রকা-  
শিত হইয়াছে, ভারতবর্ষীয়েরা রাজপুরুষের  
র প্রতি অসন্তুষ্টি, ইহা প্রতিপাদন করা উক্ত  
প্রস্তাবের উদ্দেশ্য। নিম্ন লিখিত কয়েকটি বি-  
বরণ সাধারণ অসন্তোষের কারণ বলিয়া নির্দে-  
শিত হইয়াছে। বখা হুতন হুতন টাক, লতন  
এতদ্বাকের উপর শুদ্ধ; আর একটি হুতন  
বাবুয়া, বাহার বাবা ভারতবর্ষের অনেক ক  
বতাবাহ ব্যক্তি রাজকর সংগ্রহের পৈতৃক  
অধিকার হইতে পরিত্যক্ত হইয়াছেন। পত্নী  
প্রাণের স্বকাল ক্রমার্গে নির্যাদির প্রতি  
হস্তার্পণ। প্রাণের মণ্ডল দিগকে পরিত্যক্ত ক-  
রিবার চেষ্টা, প্রাণের ধর্মবিশ্বাসে কোন প্র-  
কার প্রতিবন্ধকতাচরণ; এবং লজ্জাদির দু-  
র্দশ্যতা। লেখক সর্বশেষে এই অতিপ্রার  
করণ করিয়াছেন যে রাজপুরুষেরা নানা  
প্রকার ব্যবস্থা পরিবর্তন করিতে গিয়া বেন  
আর ভারতবর্ষে অগ্নি প্রজ্জ্বলিত করিয়া  
দেখি হুতন

আপনার পাঠকদের মধ্যে অনেক উই  
হোইটের নাম শুনিয়া থাকিবেন, কেহ  
কেহ, বোধ করি তাঁহার ও তাঁহার স্ত্রীর আ-  
শ্রয়ীয় পুস্তক সকল পাঠ করিয়াছেন। উই  
জিয়ার হোইট চল্লিশবর্ষ বয়সে এক কর্তৃত্ব স্ব  
লক্ষণ করিয়াছেন, কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই  
যে তিনি ন্যায় অথবা অন্যথা রূপে হটক,  
মুজাফফরের সহিত বিবাদ না করিয়া থাকিতে  
পারেন না। এইরূপ বিবাদের নিমিত্ত তিনি  
বহুকালাবধি প্রসিদ্ধ আছেন। সংপ্রতি এই  
প্রকার এক বিবাদে প্রবৃত্ত হইয়া পরাজিত হ-  
ইয়াছেন। তিনি হাল ও বট নামক দুজার  
দ্বিতিকে চারিবারের নিমিত্ত এক পুস্তকের

আধিকার বিক্রয় করেন। জ্যাকবেরা এই চারি-  
বারের মধ্যে এক পুস্তক দুইবার করিয়াছিলেন  
যে চারিবার অতীত হইয়াছে তথাপি সমুদায়  
নিষেধিত হইয়াছে, হুতরাং তাঁহার আদ্যপি  
এ পুস্তক বিক্রয় করিতেছেন। হোইট বিচা-  
রালয়ে অভিযোগ করিলে এই সিদ্ধান্ত হইল  
যে এই চারিবারের মধ্যে যতখণ্ড পুস্তক মুদ্রিত  
হইয়াছে, তাহা বিধিবোধিত, অতএব নিষ-  
িদ্ধ সময় অতীত হইলেও সেই পুস্তক সকল  
ন্যায্যরূপে বিক্রীত হইতে পারে। কিন্তু সা-  
ধারণে এবিচারে মোহাবর্ণ করিতেছেন।

সম্রাট নপোলেন জর্জ জিয়ার্স দেশীয়  
ইতিহাস নামক এক পুস্তক দ্বারা প্রচারিত  
করিবেন। মকার নামক কবি সম্রাটের আ-  
দেশে এই পুস্তক হইতে এক নাটক প্রস্তুত  
করিতেছেন। ইংরেজেরা বিক্রয় করিবার  
এক ছল পাইয়াছেন।

করাশী দেশীয় রাজকুমারসম্বন্ধে ঋণ  
হইল যে গত ১৬ই মার্চে তিনি সপ্তম বর্ষে  
প্রবেশ করিয়াছেন। বহু মান্রবের সম্মানের  
নানা বিষয়ে প্রাণসা লাভ করিয়া থাকেন  
কেহই মরিষের অঙ্গসম্মান করেন না। কিন্তু  
সর্ববাদিসম্মত রূপে গুণিতে পাওয়া যায়  
যে জর্জ নপোলেন জর্জ সাধারণ বুদ্ধিমান,  
তিনি সপ্তমবর্ষে কেবল প্রবেশ করিয়াছেন,  
অথচ চারিটি পুস্তক তাহার কথোপকথন করি-  
তে পারেন, মলবিদ্যার বিলম্ব পট্ট হইয়া  
ছেন। তিনি উত্তম অবদার, সচা প্রকৃতি,  
এবং সাধারণের অনুরাগভাজন। বলিতে  
কি, পূর্বদেশীয় যে সকল রাজপুত্রের  
বিবরণে গল্প শুনা যায়, করাশী রাজকুমার ব-  
স্তুতঃ তদ্রূপ।

আমেরিকার ওহিও প্রদেশে মিকাল  
কিলিপ নামক এক 'মিঞা'। অর্থাৎ  
আফ্রিকার রক্তপুরুষ। ১৭৫ বৎসর বয়সে সং-  
প্রতি প্রাপ্ত্যাপ করিয়াছে।

সংপ্রতি পার্লিগরের হুকমকল মুকুণিত  
হইয়াছে; যে কেহ পার্লি অলৌকিক চমৎ-  
কারিত্ব প্রত্যক্ষ করিয়াছেন, তিনিই বুঝিতে  
পারিবেন যে তথাকার হুকমকল মুকুণিত ও  
সুখানিত হইলে তথাকার গণজলোক ওলা  
কেনন প্রণেয় ভয়েতব হয়।

অস্ট্রিয়ার সম্রাট ফ্রাঞ্জিস জোজফ ম-  
র্দম প্রধানদিগকে একত্রিত করিবার চেষ্টা  
করিতেছেন।

গ্রীশের উপমহাদেশ হইবার উপক্রম  
হইতেছে, মহারাজ ওথো এক ঘোষণাপত্র  
প্রচার করিয়াছেন। এবং বিমোহীদিগকে ম-  
ন করিবার নিমিত্ত প্রজাবর্ণকে আহ্বান ক-  
রিয়াছেন।

অবগতি হইল যে এক করাশীশ আমেরি-  
কার চিলীপ্রদেশে বাস করিয়া তথাকার লো-  
কের এমত প্রিয় হয় যে তাহার ঠাহারে  
রাজত্ব প্রদান করে, সংপ্রতি তিনি প্রসি-  
দেশী প্রাণিদের সন্ততি খুঁজে পরাজিত হইয়া,  
সম্মতি হইয়াছেন।

পালিম্বো সম্রাজ্ঞ মন্ত্রীভাবে চলিতেছে।  
গত ১৭ই মার্চ ইংলান্ডে হৌস অফ লর্ডে উ-  
পস্থিত ছিলেন। লর্ড মর্ফান্‌বি ইটালি সম্বন্ধে  
একঘণ্টারও অধিক কাল এক বক্তৃতা করেন;  
তৎকালে অন্যান্য সভ্যের কথা ধরে থাকুক,  
'গদি' শ্রিত স্বয়ং লর্ড চান্সেলর ও বিলম্ব  
অনামনক হইয়া ছিলেন। কেবল লর্ড রসেল  
বিরুদ্ধ বক্তৃতা করিতে হইবে বলিয়া অবধান  
করিয়াছিলেন। মার্ত্তন ব্যক্তির ইহা বিশ্বাস  
কর বোধ হয় যে যে ইংরেজেরা সামান্যত্বের  
মধ্য পাচজন একত্রে বসিয়া একজনকে অম-  
বহিত দেখিলে দুঃখীল বলিয়া থাকেন, তা-  
হার মনোভাব অনবধানতাকে চুবণীয় জ্ঞান  
করেন না।

'এক্সিবিশনের' অট্টালিকা সম্পূর্ণ হইয়া  
আনিতেছে; উহা 'রট্টাল পালেসের' অ-  
পেক্ষা নিরুপিত হইয়াছে, অট্টালিকার  
ইর্টকমর তিতি দেখিলে একাধ তাত্ত্বিকের  
ন্যায় বোধ হয়, একজন করাশীশের লিখিত  
এই বিবরণের এক কোড়ক অনেক পত্র টাইমস  
পত্রে প্রকাশিত হইয়াছে। বালাগাতার  
অঙ্গবাদ করিয়া তাহার তিরতা ও বৌদ্ধ-  
বহতা রক্ষা করা তার।

২১এ মার্চ।

মহারাজী বিক্টোরিয়ার চরিত্র বিবরণে  
বক্তব্য আখ্যায়িকা স্তম্ভ হইল। অল্প দিন-  
পূর্বে ওয়াটট জীপস্ অস্বর্গ মানব রাজ  
নিকতনের প্ররোচিত প্রয়োজনমতঃ রাজ  
বাটীর নিকটস্থিত এক প্রাচীন ও মরিষ্য ব্য-



কর হইতে গরম করেন। তিনি আর উক্ত উক্ত  
রিয়া যেখানকার এক এক খোদাখোদা পরিচিতি  
হইতে ন্যাসদীপে বসিয়া বসিয়া বসিয়া কা-  
নামক দাক্ষিণ্য লক্ষ্য পাঠ করিতেছেন। সু-  
তরাং তিনি প্রস্থান করিতে উদ্যত হইলেন।  
তিনি ইহা দেখিয়া বলিলেন মহাশয়।  
যম করিবেন না। এ অবস্থায় হইতে গকে  
ব্যক্তি উপদেশ সাতিশয় উপকার  
নয়। এই বলিয়া রমণী প্রস্থান করিলেন।  
বশেষে আমা হইল যে কল্যাণী বরং নি-  
রোগপ্রাপ্ত হইতে ধর্মোদেশে প্রস্তুত হইতে  
হলেন।

আমেরিকার রাজসভাপতি সিল্ভান এ-  
ন পোষণাপত্র প্রচার করিয়াছেন যে যুদ্ধে  
অর্থব্যয় হইতেছে। এই অর্থ সংযোগ  
করিয়া দিতে পারিলে জীভ হাস্যদিগের মুক্তি  
পাওয়া হইতে পারে। বোধ হয় আমেরিকা ইহাতে  
সম্মত হইতে পারে। একপ হইলে যুদ্ধেরও  
শেষ হইবে। এবং হাস্যদিগের মুক্তিলাভের  
সংস্কার সিদ্ধ হইবে। ইংলণ্ডের ইন্সপেক্টর  
মহাশয় বর্ণনা দিয়াছেন। এই বলিয়া বনকে  
প্রবোধ দিতে ছিলেন যে নীতপ্রভা করিয়া-  
ক, অন্যপ্রভে উঠিয়া দেখি যে বেমিনী  
বত হুগার বস্ত্রে আবৃত হইয়াছে। এখানে  
কখন গ্রীষ্ম, কখন শীত। এবং কখন বর্ষা  
চাকার দ্বিত্ব নাই।

চট্টশতের অধিক ছুটি অক্ষকাল পূর্বে  
লিকাভা হইতে আমেরিকা ঘোণে প্রেরিত  
হয়। তাহার উদ্দিষ্ট স্থানে উত্তীর্ণ হইয়াছে।

আমেরিকার দক্ষিণপক্ষীরেরা পাতে শত্রু  
পতে পতে এইভাবে অস্বপ্নে বত তুলি ও তা  
সকল সঞ্চিত আছে, সমুদ্রের দক্ষ করিবার  
প্রবাসন করিতেছে।

২৩শে মার্চ।

গত শনিবারের পোষ্টেটর পত্রে ভারত  
বর্ষ উপযুক্ত লোকদিগকে সম্মান জনক পদ  
প্রদান বিষয়ে এক প্রচারা ও অপকল্যাণতু-  
হিত প্রস্তাব প্রকাশিত হইয়াছে। উহা পাঠ  
করিয়া সাতিশর তুষ্ট হইলাম। লেখক অবি-  
শ্বাসিত রূপে প্রতিপাদন করিয়াছেন ভারত-  
বর্ষের লোকদিগকে ইংরেজ নির্জিনেবে শাসন  
কর। রাজপুরুষদের সর্গভোগ্যে কর্তব্য।

ইংরেজ ভারতবর্ষের নিয়ন্ত্রণে গরমের সমস্ত  
কর্মসম্পাদন করিতেছে। ইহা গরম প্রা-  
বীর যে ভারতবর্ষেরেরা কলংকার বর্জন  
করিয়া ইংলণ্ডে কর্মসম্পাদন করেন  
তাঁহা হইলে আমাদের দেশের উন্নতির পথ  
অধিকতর পরিষ্কৃত হইবে। আমি অনতি বি-  
লম্বে লক্ষ্যে ব্রহ্মদেশীয় আত্মনির্ভরতার সুখ-  
লোকন করিবার প্রত্যাশা করিতেছি।

২৪শে মার্চ।

ভারতবর্ষে মানা হইলে অনতিদীর্ঘ  
লৌহ বর্ষ নির্মাণার্থ এক কম্পানি স্থাপিত  
হইবে। মাপালু এদেশে প্রাচীন 'লৌহা'  
খনিজের সহিত নবীন সন্ধানের  
এক বিভাগ হইয়াছে। আমেরিকা অতি  
প্রাচীন এই যে পৃথিবীতে খনি (যথা খনিজ  
খনি, মুসলমানখনি ইত্যাদি) আছে বলিয়া  
মহাশয় কুল রক্ষা পাইতেছে, কিন্তু অপকল্যা-  
ণে বিভ্রান্ত করিয়া দেখিলে বোধ হইবে যে  
পৃথিবীতে এগণ্য বস্তু দুর্গতি ঘটয়াছে,  
তাঁহার অর্ধেক কেবল উক্ত রূপে ধর্মের নি-  
মিত্ত।

২৫শে মার্চ।

আমেরিকার 'ফেডারেল' ক্রমিক জর-  
নাল করিতেছে।

লণ্ডনস্থ আমেরিকাদেশীয় জর্জ লিভিং-  
স্টনের দরিদ্রদের উপকারার্থ পঞ্চদশ লক্ষ  
মুদ্রা দান করিয়াছেন।

লণ্ডনে এক সভাপ্রাণনার্থ পুস্তকোত্তম  
মুদ্রিত প্রস্তাব প্রাপ্ত হইয়াছে।  
ভারতবর্ষ হইতে যদি কতিপয় উপযুক্ত ব্য-  
ক্তি প্রেরিত হন তবেই তাঁহার সহায় অতি-  
প্রাচীন সিদ্ধ হইবার সম্ভাবনা।

লণ্ডন ২৬শে মার্চ ১৮৩২।

ক্রিউনিচীর প্রকাশ।

## বিবিধ সংবাদ।

১৯শে মার্চ সোমবার।

চীন দেশে এক্ষণে ১৩১২ টাকার মানব-  
দেশীয় অধিকারের দাক্ষিণ্য বিক্রীত হইতেছে।  
কিয়দিক দখল ভারতবর্ষ অপেক্ষা অপ-  
মূল্যে অধিক বিক্রীত হয়।

আগামি সোমবার সেও সাহেব ডালহৌ-

সি ইনসিটিউট সভার ভারতবর্ষীয় ভিন্ন ভিন্ন  
ভাতি ও উদ্যোগের ভার, যিহা এক প্রা-  
স্তাব পাঠ করিবেন।

যদিও সন্ধানের অল্পোপ অল্পোপ  
ভারতবর্ষের গর্ভমন্ডে সন্ধান করিয়াছেন  
তুলি ও রেসের কাপড় উত্তরেরই এক প্রকা-  
র গুণক প্রেরণ করিবেন।

কিনিক সন্ধানক 'জিহাদ' করিয়াছেন  
"অতিদীর্ঘ কর্মজারিগের আবেদন" বি-  
হীন? টেট-সেক্রেটারি যাকে কাগজে  
সুস্থিতে আছে।

উক্ত সন্ধানক জরুর করিয়াছেন ইংলণ্ড  
হইতে সুশিক্ষিত দুইটি আমেরিকা-আর্কাউট  
আকিমে নিযুক্ত করা হইবে। এদেশে কি বি-  
লাতী কল কলে না?

ভাগলপুরের জর্জ বাকডোলাজ্জ মানব  
এক জন ইউরোপীয় তুলি ও পাঠ প্রসিদ্ধ  
করিবার এক হুজুর বস্ত্র প্রস্তুত করিয়া গর্ব  
মন্ডের দিকটে এক পাঠকে (কেন্দ্র) জিহাদ  
এই বস্ত্র বিক্রয় করিবেন ভারতবর্ষের  
পত্র) লইয়াছেন।

৩০শে এপ্রিল অরুণি নবলপুর জেলা জর-  
দেশীয় গর্বমন্ডের হস্ত হইতে গর্বমন্ডে  
হস্তে গিয়াছে। ইহা বধ্যভারতবর্ষের কবি  
সনের অধীন হইবে।

বিজী গেজেট সন্ধানক আত্মকপ করিয়া  
ছেন ভারতবর্ষের জেইলওয়ে কোম্পানি অ-  
সাধারণ হইতে, আগ্রার রাজস্ব  
বাল্পীর শকট প্রেরণ করেন না, তাঁহাতে  
ইউরোপীয়দিগের অসুবিধা হয়। সন্ধান  
ব্যক্ত করিয়া বলিয়াছেন, কোম্পানি এতদে-  
শীয় আমেরিকানদিগের দিকটেই আর সমুদ্র  
লাভ হয় বলিয়া ইউরোপীয়দিগের অন্য বি-  
হুই করিতে চাহেন না। কোম্পানি জিহাদ  
কারীদিগের অন্য কতি সহ্য করেন না এ  
অস্তায়।

বোম্বাই গর্বমন্ডে আত্ম করিয়াছেন  
প্রত্য অসৈনিক ব্যবস্থাপকদিগকে পাতে  
প্রভৃতির জন্ত ২০০০ টাকা প্রতি সেসির  
কোরা হইবে। সাধারণের দ্বারা সন্ধান  
২৮০০ টাকা পাইয়াছেন। তবে যেতনের ব্য-  
স্থা করা হইক না কেন?

করাটির এক সংবাদ পত্রে লিখিত হইয়াছে



এই, কলীসিগের সহায়তার পাশ্চাত্য সেনারা  
কয়েকট অধিকার করিয়া কাম্বোজের আক্রমণ  
করিয়াছে। এখন কলীসিগের ক্ষতি  
এমন।

কর্নেল ক্রম কর্ণেল আলকোয়ের পরিবর্তে  
বিশ্রোচিকিনাকতিপট্টসেতের অধ্যক্ষ হইয়াছেন।

চাকারিউল সম্পাদক বলেন সুবারখালির  
হস্তাকারী হিলিকে সত্যিই চাকার হেমা পি-  
জাহিন এবং বোধ হয় সে চাকার বিকটবর্তি  
কোন পক্ষীগ্রামে আছে। সে যে ধরা পড়ে  
না সে কেবল পুলিবকর্ষচারিদিকের গুণ।

কলীসিগের সুবিখ্যাত মন্ত্রী কাউন্সেলে  
রোডের ৮২ বছর বয়সে মৃত্যু হইয়াছে।  
নেসেল রোড এক জন প্রধান সাহিবগিহিক  
বলিয়া বিখ্যাত ছিলেন। নেপোলিয়নের  
বিপত্তির পর বিদ্রোহনগরে যে সভা হয়,  
তিনি তাহার মধ্যে এক জন প্রধান ছিলেন।

গবর্নমেন্টে অরুণিয়ার মিসিয়ারিগের নি-  
কটে ইনকবটাক লইবার আজ্ঞা দিয়াছেন।  
এ দিকে চা-করেরা তাহারিগকে বিনা বেতনে  
বাটাইবার চেষ্টা করিতেছেন। ও দিকে গবর্ন-  
মেন্টে ইনকবটাক লইতে চলিলেন, সোনার  
সোরাগা হইল।

রঙ্গপুরে এলাউটার প্রাক্তর্য হইয়াছে।  
চাকার সম্পাদক বলেন চট্টগ্রামে  
একটি মাথা ভারতবর্ষীয়সভা সংস্থাপিত হই-  
বে। প্রজাতিগের কষ্ট নিবারণ করা তাহারি-  
গের উদ্দেশ্য। সম্পাদক চাকার লোকজিগকে  
এবিধের মনোযোগী হইতে অনুরোধ করি-  
য়াছেন। চাকা কলনগর ও গণেশহরে এপ্র-  
কার সভা হওয়া নিতান্ত আবশ্যিক।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন ওজ্জ্বল্য কো-  
ম বিচারপতি বিচারাসনে বসিয়া প্রত্যেক সপ-  
সকে গালি দেন, মধ্যে মধ্যে মৃগিও আছে। এ  
বিষয় কর্তৃপক্ষের গোচর করিবার জন্য এক  
স্বাক্ষর করিলেন কি ভাল হয় না?

২৪এ বৈশাখ মঙ্গলবার।

সর অর্জুন রায় বোম্বাই নগর ত্যাগ করি-  
য়াছেন। তদন্ত সাটতে রিবিউ সম্পাদক এই  
আক্ষেপ করিয়াছেন সুতপূর্ণ শাসনকর্তা ব্য-  
ভূক্তক সভার অধিকাংশ প্রজাতিগকে

বিবৃত্ত করিয়াছেন, কিন্তু তিনি এমন সময়ে  
কলীসিগের বিকটে এতেন্দ্রপ্রসাদ হন মাই।  
সর অর্জুন রায় দুইবার বোম্বাইবাসিনীগের  
অপমান করেন ১৮৭৩ সালে তিনি প্রথমবার মর-  
বার করেন, তখন তাহার মৃত্যু হইয়া গুণে  
প্রেরণ করাতে শাসনকর্তা আলম হইতে  
গাংজাখান অম্বা টুপি খোলা ইহার কিছুই  
করেন নাই। দ্বিতীয়তঃ কলীসিগের গবর্নমেন্টে  
কলীসিগ প্রকাশ্যে মৃত্যু গীতের সময়ে আহুত  
হইতেন। সর অর্জুন রায় তাহা বন্ধ করিয়া  
দেন। এই গুলিই রোগের কারণ বোধ হয়।

বোম্বাইয়ের ব্যবস্থাপক সভার অন্যতর  
সভ্য সিরার স্টেব (সর বার্টল সিরারের  
ভাতা) একনিয়ম শকটে আয়োজন করিয়া বা-  
ইতেছিলেন এমন সময়ে সর্কারোহী মরু জে-  
মসেট বিজিতিহইয়ের আশাভা ক্রান্তবেগে  
তাহার নিকট দ্রুত গমন করেন, ব্যবস্থাপক  
সাহেব রাগান্বিতভাবে তাঁহাকে খাতিতে  
বলিলেন। উক্ত পারসি বোড়া বামাইলেন।  
তাহার পর উক্তের আত্মত্যাগ হইতে লাগিল।  
ইতিমধ্যে পারসি উক্ত সাহেবকে এক চাবুক  
মারিলেন (বোধ হয় সাহেব কই বলিয়া থাকি-  
লেন) তদ্বিনিত দ্রুত সাহেব পুলিশে নালিশ  
করেন, কিন্তু শেষে উক্তের মৃত্যু করিয়াছেন।

“কৈচো মুক্তিতে মুক্তিতে সাপ বাহির হয়।”  
কালু হইতে সংবাদ আসিয়াছে মোস্তা-  
ফজর খাঁ ১৭ই এপ্রেল কাম্বোজ রাজ্য করি-  
য়াছেন। তাহার সহিত বিস্তর সেনা গিয়াছে,  
কালুসে একটি জনরব উঠিয়াছে এই সুযোগে  
ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টে এই দেশ অধিকার  
করিবেন। এই জনরবটি আবারিগের গবর্নমেন্টের  
সৌজন্যের পক্ষিয়ারক বটে।

পঞ্চাবের লেফটেনেন্ট গবর্নর আজা ক-  
বিয়াছেন এ প্রদেশের যে সকল দরিদ্র কৃষক-  
কে ভূর্তিকের পর ধো মজিব ও মস্যাগিবীজ  
ক্রয় করিতে টাকা দেওয়া হয়, তাহার মতই-  
বৎসরের পর চারি কিঞ্চিৎ টাকা দিবে।  
তদ্বিনিতেরা এইসকল টাকা আদায় করিবার  
ভার প্রাপ্ত হইয়াছেন। গবর্নমেন্টে সর্ভ আজা  
দিয়াছেন কৃষকদিগের বেন কোম কষ্ট না হয়।  
গবর্নমেন্টের এ মত নীলকরদিগের এইপ্রকার  
মতকে অতিক্রম উত্তীর্ণে পারেন না।

হরকরা সম্পাদক মিলাপুর হইতে সংবাদ  
পাইয়াছেন সত্যিই চীনদেশীয় বিদ্রোহীদি-  
গের সহিত ইংলান্ড ও কলীসিগের সেনাদিগের  
যে যুদ্ধ হয় তাহাতে অনেক ইউরোপীয়ের  
মৃত্যু হইয়াছে এবং রণভূমির অত্যন্ত ধ্বংস  
করার গুরুতর ভাবে আহত হইয়াছেন।  
কলীসিগ বেনা হং কং হইতে উক্ত বিদ্রোহীদিগকে  
করিয়াছে। তদন্ত সাট সর্কার পক্ষিয়ার  
সিরা অধ্যয়ন আরম্ভ করিয়াছেন। অপর  
অনধি বিদ্রোহীদিগেরা প্রবেশিকাশ্রম করিয়া  
পিকিন মর্শম করিতে পারিবেন।

আবা দীপের নিকটে বোম্বাইয়া কলীসিগের  
সবিশেষ প্রাক্তর্য হইয়াছে।

উক্ত সম্পাদক প্রকাশ করিয়াছেন রাজ্য-  
র প্রতিনিধি কর্ণেল সাহেব ৮ই মে ইংলান্ড  
গমন করবেন। তিনি এক কালে পদত্যাগ  
করিয়াছেন। পুরাতন লোকের সকলেই ভয়  
করিলেন।

ইংলিস্তান সম্পাদক কাহা হইতে সং-  
বাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন, সত্যিই একজন ষাংক  
হংকু মানক এক খানি প্রায় মৃত করিয়াছে।  
অরুণিয়ার কলীসিগের প্রধান ও অপ্রধান সাধা-  
রণ্যে করা করিবার ঘোষণা করিয়া না দিলে  
সীজ উপগ্রহ আত্মিক সভাবনা নাই।

উক্ত পত্র প্রকাশিত হইয়াছে সত্যিই  
কএকজন নাগা দুইজন সিংহীকে আহত  
ও এক ব্যক্তিকে মৃত করিয়া পলায়ন ক-  
রে। পরে পরস্পর বিবাদ করাতে তাহারিগের  
এক ব্যক্তি গোয়েন্দা হইয়া অপর কএক জন-  
কে ধরাইয়া দিয়াছে।

উক্ত পত্রের পারিসহ সংবাদ দাতা বলেন  
ইংলণ্ডীয় ও কলীসিগের গবর্নমেন্টে চীনদেশীয় ম-  
রাটের সহায়তা করিয়া বিদ্রোহীদিগকে ধম-  
ন করিবেন সক্ষম করিয়াছেন। বিদ্রোহীরা  
একপে যে অত্যাচার করিতেছে তাহাতে ই  
উরোপীয়দিগের বাণিজ্য নষ্ট হইবার সভাবনা  
বলিয়াই পুরোক্ত গবর্নমেন্টেরা এই কার্যে  
প্রবৃত্ত হইতেছেন।

মিসিগেজেট সম্পাদক মিসেটের জেল  
মারোগা ভরেট সাহেবের মৃত্যুর বিষয় লিখি-  
য়া আক্ষেপ করিয়াছেন প্রধানতরপদাতিবি-  
ক্ত লোকেরা বিদ্রোহকালে সাহায্য সাহন

প্রদর্শন করিয়া সম্প্রদায়িক হইয়াছেন কিন্তু উভয়েই অনেক সুকরকার্যে সাহস প্রকাশ করিয়া ও পরিচালনার আশঙ্কায় উভয়েই হইয়াছেন। ইংরাজ জাতির এইত লোক, তাহাদেরই হুঁচকি গিয়া শুভন স্বাধীনতা স্বাধীনতা। ও শুভন পুরস্কার শুভন পুরস্কার এই শব্দ, কিন্তু খন, সহায় ও প্রধানবংশ এই জীবিত সুখি না থাকিলে না শুভ শুভে উৎসর্গ হইলেও কেহ উক্ত পদ লাভ করিতে পারে না।

উক্ত পত্রের জাহাঙ্গীর হুঁচকি সংবাদ দাতা বলেন তত্ত্বতা আবকারী সেয়েজারার বলেন সিন্ধোহকালে বধন রাজা সাহেব বিদুরের শাসন কথা ছিলেন তখন তাঁহার আশঙ্কাসারে বহু জন উত্তরোপীয়া জীলোক ও গুরুবের প্রাণবধ করা হয়। দোষীরা হুঁচকি বিনয়ে আমদিগের কোন আপত্তি নাই কিন্তু বেন ২৭ অধের বিচারপতিগিরের ম্যার যে সে সেকেন সাক্ষ্য প্রাণিহত্যা না করা হয়।

২৫ এ টেলিগ্রাফ হুঁচকি

জাহাঙ্গীর জালকারী বাটকোঁকি কার সীত একবৎসর মিয়ান হইয়াছে। প্রধান বিচারপতি হুঁচকি দিবার সময়ে এই বলিয়া আবেদন করিয়াছেন যে তিনি হুঁচকি লোক হইয়া কিরূপে এই অবস্থা কাব্য করিলেন। প্রধান বিচারপতি করণীর যে হুঁচকি দেখিয়াছেন, সে দুর্ভুঁহি।

কিন্তু একজন পত্রপ্রেরক হুঁচকি চৌকিদারিটাক ও তত্ত্বতা মাজিষ্ট্রেট পাম ব সাহেবের বেফাচারিটার বিবরণ লিখিয়া প্রচার করিয়াছেন। তিনি বলেন তত্ত্বতা পাম তারতবর্ষীয়সতা পাম সাহেবের অন্যান্য ব্যবহারের বিবরণ প্রধানতম কর্তৃপক্ষ গোচর করিবেন। এমিকে পাম সাহেব প্রথমজেনির মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়াছেন

বনিক সম্প্রদায় আপনাদিগের রিপোর্ট প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু উইলিয়াম সাহেব সতাপতির পদ ত্যাগ করাতে বলেন সাহেব তাহাতে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন। আফ্রিকার বিবরণ এই বনিক সম্প্রদায় রিপোর্ট মধ্যে নীলের কোন প্রসঙ্গ করেন নাই।

উক্ত সাগরে আবিষ্কারকারী নয় জন

হুঁচকিদের দ্বী কলিকাতার আশ্রয় করিয়াছেন। নয় জন হুঁচকি উক্ত সাগরে গণ্য ত্যাগ করেন কিন্তু কোথায় তাঁহার হুঁচকি হয় তাহা খির না বহুতাহে হুঁচকি হুঁচকি নিজ হুঁচকি অনেক লোককে তাহার অধিকার প্রেরণ করেন। উক্ত হুঁচকী রমণী একপ্রে ইংরাজদিগের তির তির উপনিবেশ কর্তন করিতেছেন। পতিগরারনা রমণী হুঁচকির অসকার হুঁচকি।

উইলিয়াম সম্প্রদায় জালিগুতি হইতে সংবাদ পাইয়াছেন হুঁচকিরাজের রাজাকে যে হুঁচকি বেনা দিবার কথা হয় তাহাদিগকে অস্যাগিও প্রেরণ করা হয় নাই বোধ হয় হইবেও না।

উক্ত সম্প্রদায় বলেন মালিয়ারে আইকে মাজিষ্ট্রেট মিয়ান বিবরণ বাণিজ্য ব্যাপারে লিও হুঁচকিতে ও উপচৌকিদারি হুঁচকি তাহার বিচার হইবে। পাটনার কমিসনর ও জজ এবং সাহাবাদের কালেক্টর তাঁহার বিচার করবেন। সিবিলায়নে সিবিলায়ের বিচার করিবেন। কারেন না একজন হুঁচকি ও পরীকোত্তীর্ণ সিবিলায়ন

সিটেন কার, হুই জাকসন, (মদীয়ার জজ) ও কেল সাহেব প্রধানতম বিচারালয়ের সিবিলায়ন বিচারপতি হইবেন, এবং বাহু রমা প্রসাদ দ্বার এডমেনীর বিচার পতি হইতেছেন।

বোম্বাই সাইটে রিবিট সম্প্রদায় বলেন খারওয়ার হইতে যে হুঁচকি হুঁচকি প্রেরণ করা হয় তাহা হুঁচকি হুঁচকি বাহির করিয়াছেন।

উক্ত সম্প্রদায় তারতবর্ষের বিবরণ ১৫ পিরোমায়ের একপ্রস্তাবে তারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টকে পুনর্বার পারসদেশীয় রাজার সহিত বন্ধ করিতে অনুরোধ করিয়াছেন। সাইটে রিবিটর বেকপ হুঁচকি তাহাতে তাহাকে বোম্বাইয়ের ইংলিসমান বলিলে বলা যায়। গবর্নমেন্ট বেন এই প্রকার লোকের কথার তারতবর্ষকে পুনর্বার কণপ্রস্ত না করেন

বোম্বাই নগরে বেকর কট'সের এক জন পারসীর সহিত হুঁচকি পুলিশার বিবরণ লইয়া

যে বিবরণ হয়, তদ্বিষয়ে উক্ত বেকর পারসীর নামে পুলিশে মালীফ করেন। কিন্তু তাহার আবেদন অগ্রাহ্য হইয়াছে। বেকর পারসীর নামে পারসীদিগের হুঁচকি নাই হুঁচকি।

তাকা রিউন সম্প্রদায় জাহাঙ্গীর গবর্নমেন্টে বেকর বিচারালয়ের আদীন দিগের কি হুঁচকি করিয়াছেন। লোকে একপ্রে তাবিনেন না যে আদীন এই বর্জিত ঠাক পাইবেন। তাহাদিগের নিষ্ঠুরিত বেকর হুঁচকি হইবে। এ কি গবর্নমেন্টের কোবহুঁচকি হইবে।

উক্ত সম্প্রদায় আরও বলেন তাহার দী-হুঁচকি হুঁচকি হুঁচকি হইয়াছেন তদ্বিষয়ে অনেক নাম হুঁচকি করিতে পারেন না। একপ্রস্তাব ও চতাল ও তদ্বিষয়ে আছে, হুঁচকি তদ্বিষয়ে হুঁচকি হইতে ইচ্ছুক হুঁচকি। তাহা অন্য আইনে বার না, হুঁচকি লোকে কিপ্রকারে হুঁচকি হইবে?

বিবরণমোক্তক পত্রিকা সম্প্রদায় সিটেন জাহাঙ্গীরে লাভ এলগিন হুঁচকিহুঁচকির মবাবের সহিত সাক্ষ্য করেন নাই। লাভ জাল হুঁচকি রাজা ও মবাবদিগের অবমাননা করিয়া তারতবর্ষে অগ্রিম মালিয়ার বিচারালয় কিন্তু কর্ণেল বেকিগির বলেন লোক তাহা হুঁচকি না।

রমপুর বিবরণমোক্তক সিবিলায় হইয়াছে তাহার প্রতিবৎসর অনেক বাসিতে ও কার মেবের পূজাও হুঁচকি হুঁচকি ও তদ্বিষয়ে লোকের হুঁচকি বাস পুজিরা তাহা উপরে হুঁচকি কা, বাটা প্রহুতি রাবিরা তাহার চতুর্দিকে দ্বী পুরুষ একত্রিত হইয়া হুঁচকি ও নাম প্রকার অসীলব্যবহার করে। আদরা সকলে একত্র হইলে কি এই সকল অবস্থা প্রাণ নিধারণ করিতে পারি না?

আদরা বকলোদর নামক একখানি হুঁচকি সাপাহিক পত্র পাইয়াছি। ইহা প্রতি বকলোদর প্রকাশিত হইবে। একপ্রে তাহা যে এ কারে লিখিত হইতেছে তাহাতে তবিত্যে ইহা হইতে বেকের কল্যাণ সভাবনা আছে

প্রজাকরের কালীর সংবাদ দাতা বলেন তত্ত্বতা লোকেরা গবর্নমেন্টের হুঁচকি নে লইতে অনিচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন।



ইংলিসমান সম্পাদক বলেন, ভারতবর্ষে  
১০০০ যুবা অসহায়, অকর্মণ্য  
ইয়া বসিয়া আছেন। তাঁহাদিগকে বহু কোন  
সমান্যে নিযুক্ত করা অসম্ভব। তাঁহাদিগের  
সমা ব্যবসায় মনোনিবেশ করিবার সময় ঘাইবার  
কোন বিবরণ দেওয়া কর্তব্য। জাহান কি তাহা  
ইংগের সিদ্ধান্ত কর্তৃত্ব নিঃসৃত পদের হুজি  
এই।

গবর্ণমেন্টে বহুতর দিগকে যে আর্থিক বেতন  
দান উক্ত সম্পাদক ভবিষ্যে প্রতিবাদ করিয়া  
খিরাছেন তাঁহাদিগের লোকেই চাকর দিগকে  
চাকর করিয়া প্রত্যেক বহুরকে বেতন দি-  
ত হইতেছে। গবর্ণমেন্টের বহু অন্যান্য  
কর্মচারী কারীরা বাধাতে এক টাকা ব্যয়ে  
চাকর করিয়া লইতে পারেন গবর্ণমেন্টের  
চাকরী কর্তব্য। লাও হোলডার সভা  
আয়োজন করিবার ত ভাল কারণ পাইয়াছেন  
যে হুপ করিয়া কেন?

২৬এ বৈখ্যিক হুস্পতিবার।

যাহু চম্পকুমার দে-এম ডি, উপাধি প্রাপ্ত  
ইয়াছেন। কলিকাতার বিশ্ববিদ্যালয় এমেন্সি  
কমিটি প্রথম এই উপাধি প্রদান করিলেন।  
একশ্রেণে গবর্ণমেন্টের ও তির তির ব্যাকের  
সাত কোটি টাকার মোট চলিতেছে।  
এমেন্সি ব্যাকের ৬৯,২৮,৮০৪ বোকাইয়ের  
১,৭৮,৬৮১ ও মাজাজের ব্যাকের ৬,৬৬,৭০০  
কাজ মোট বাহিরে আছে।

ইংলণ্ডে সম্প্রতি এক হিসাব প্রকাশ হই-  
তেছে, তথারা জানা যাইতেছে তাহাবর্ষে  
১৮,৫২,০৮,২৭৭ লোকের বাস  
হইবে, ইহার মধ্যে ১৩৫২৫২,০১১ লোক  
লোকসংখ্যার ও ৫,০৪,২৫,০১ এডমেন্সি  
কর্মচারী প্রভৃতি। সর্বমুখ ১১৪০৫  
বিদ্যালয় আছে। ইহাতে ১৬৬,৭৪২ জন  
প্রত্যক্ষ অধ্যয়ন করে। বিদ্যান জন্য  
টোটে ২৪,৩১৭২০ টাকা ব্যয় হয়। এই বি-  
দ্যে সম্পূর্ণ রূপে আস্থা করা যায় না।

মাজাজ টাকাস সম্পাদক বলেন বালা-  
য়ের তাকবরের এক জন কোরানী পত্র হ-  
তে মোট প্রতীতি লইয়া পত্রগুলি এক কুপ  
করিয়া রাখিত। সে এই প্রকারে প্রায়  
১০০০ অপহরণ করিয়াছেন। উক্ত

গোষ্ঠী অসহায়দের আশ্রয় দিয়াছে।  
তাহার বহুর কর্তব্য কি কোন  
কালে চোরে উৎপাত শান্তি করিতে পারি-  
বে না?

আগামি সেনাদলের যে ব্যয় হইবে,  
কর্নেল বাগকোর কলিকাতা ত্যাগ করিবার  
পূর্বে তাহার এক হিসাব প্রকাশ করিয়াছেন।  
তথারা জানা যাইতেছে : ২,২২,০০, ০০০  
টাকা ব্যয় হইবে স্থির হইয়াছে। এই হিসাবে  
সর্বমুখ ৭৪,০০,০০০ টাকা বাঁচিবে।

সম্প্রতি ইংল্যান্ডের সার্জেন্ট মিকটে  
টানবিহোদী দিগের কর্মকর্তাদিগকে যুদ্ধ জাহাজ  
অধিকার করিয়াছে। বিহোদীরা শাসিত না  
হইলে তথার বাসিন্দা চলা ভার।

সিদ্ধেশ্বরী বিখ্যাত সেনাপতি লি. প্রাণ  
জেকব পদত্যাগ করিয়া ইংলণ্ডে বাইতেছে  
ন। এই সেনাপতি সিদ্ধেশ্বরের অনেক উৎকর্ষ  
সাধন করিয়াছেন। তিনি লেকনাম নগর  
প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। এই নগর তাহার নামে  
বিখ্যাত হইয়াছে।

মাজাজের ১২৭শিত এডমেন্সি সেনা-  
দলের লেপটনান্ট কর্নেল টেম্পলের জী জে,  
এম, লেড, নামক এক জন চিকিৎসকের সহিত  
ব্যক্তিচারদোষবিহিত হওয়াতে কর্নেল তা-  
হাকে ত্যাগ করিবার আবেদন করিয়াছেন।

মহীশূরের রাজা ইংলণ্ডের রাজাকে কয়েকটি  
উৎকর্ষ গুরু উপহার দেওয়াতে রাজার অতি-  
শয় আশ্চর্য প্রকাশ করিয়াছেন।

বীজেন সাহেব ১লা মে অবধি আলিপুরের  
বেলবিহারী বাগীতে প্রবেশ করিয়াছেন।  
তিনি নগর করিয়াছেন প্রতি হুস্পতিবার  
জোজনের সময় দর্শকদিগের সহিত সাক্ষাৎ  
করিবেন। এই সুযোগে অনেকের আগার ঐ-  
বধ ঘুই হইবে। কেলিতে সাহেবেরও হুস্প  
তিবার নিয়ম ছিল।

ব্যবস্থাপকসভার কর্তব্য সাহেবের পদে  
কাহাকে নিযুক্ত করা হইবে না।

কলিকাতার বাবতীর আকিস একই বা-  
টার মধ্যে করিবার কল্পনা হইয়াছে। এই বাটার  
একটি চিত্র করিবার জন্য গবর্ণর জেনারেল এক  
কমিসন নিযুক্ত করিয়াছেন। ভারতবর্ষের গব-  
র্ণমেন্টের পবলিক ওয়ার্কের সেক্রেটারি এই  
কমিসনের সভাপতি।

কোচিমের রাজা তথাকের একই  
উপাধি করিয়াছেন। তিনি একই পদে  
যে একটি আলোক দিবার বাগী দিয়াছেন  
বেন। অন্য অন্য স্থানে উৎকর্ষ নিযুক্ত  
তেছে, কিন্তু আহারিগের ব্যয় পদের  
কর ও পরীগ্রাম উৎসব দিবার  
করিতেছেন।

ইংলিসমান সম্পাদক জগদ্বির।  
সংবাদ পাঠিয়াছেন সেনাপতি সা-উয়া  
খোষণাপত্রসারে একজন সরদার আত্ম  
সমর্পণ ও আর কয়েক জন কমা প্রার্থনা করি-  
য়াছেন। এ সময়ে সেনাপতিরা কমা শব্দের  
অর্থী বেন বিস্তৃত ন. হন।

কলিকাতার আসেনর ওগলটন সাহেবকে  
অকর্মণ্য বলিয়া পদচ্যুত করা হইয়াছে। কু-  
মার হরেন্দ্রকৃষ্ণ তাঁহার কন্ম করিবেন। ওগল  
টনের বেতন হ্রাস হুপারন করা হইয়াছিল  
ন।

গত কল্যা এক্সচেঞ্জবাজারে নিম্ন লিপিত  
টাকার অধিকেন বিক্রীত হইয়াছে :-

| সিদ্ধক  | টাকা      |
|---|-----------|
| বেহারের ১৩০৫  | ১২৬৮,৫০০  |
| কানীর ১৩০৫  | ১৬,৬৫,২৫০ |
| বেহারের অধিকেন প্রতিবাক গড়ে<br>১৫০৮ ১০/১৫ কানীর ১৪৬৭ ৬১৫ বিক্রীত হই-<br>য়াছে। |           |

মাজাজের এক খানি সংবাদ পত্রে লিখি-  
ত হইয়াছে তথ্য এক জন পানির বাগীতে  
চোর আসাতে তিনি তাহার দানীকে একটি  
আলো আনিতে বলেন। দানীর আসিতে  
বিলম্ব হওয়াতে পানির তাহাৎ এক লণ্ড,  
যাত করিতে তাহার মস্তক হইতে রক্ত পতি-  
ত হয় : সে পানির নামে নালিশ করে। কিন্তু  
পুলিষের মাঝিরে ট তাহার আবেদন অগ্রাহ  
( ডিস মিস ) করিয়াছেন। এই প্রকার বিচার  
দেখিয়া কেহ ব্যক্তি না বলিবেন এডমেন্সি  
ও ইউরোপীয়দিগের পক্ষে স্বতন্ত্র আইন  
আছে?

আমরা শুনিতে পাইতেছি, হরিশের  
জুলিদিগের মধ্যে "হঠাৎ প্রবেশ করিয়া-  
ছে। তাহাদিগের ইউরোপীয় প্রধামেরা তা-  
হাদিগকে ভয়ানক প্রহার করে। ভবিষ্যৎ ক-



বলোইহর, মদীরা, করিকপুর ও ২৪  
ডেপুটি কমিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর  
আমজ কোছম মজুমদার পাবনার মদর  
মোহনশাহী, মলকশাহী ও বেঙ্গলগাহি পর  
কবড়া চাঙ্গন করিবেন।

अविनाश विराजमान—महानगर । आनन्द निमित्त  
विजयती । अहं अहं अहं । अहं अहं अहं । अहं अहं अहं ।



# সোমপ্রকাশ

“ অকর্তৃত্বাৎ প্রকৃতিহিতায় পার্শ্বিকঃ সর্বদা সত্যমকর্তী ন হী যতাত্ । ”

৪ ভাগ।  
২৭ সংখ্যা।

{ সন ১২৩২ । ৭ জ্যৈষ্ঠ । ইং ১৮৬২ । ১২ মে }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

প্রোহকগণের প্রতি।

ঐশাখ্যাস অন্তীত হওয়াতে অনেকের  
দত্ত সোমপ্রকাশের মূল্য নিঃশেষিত হইয়া  
তাহাদিগকে বিনয় পূর্বক জানান যাউ-  
ক্কে যে তাঁহারা অল্পগ্রহ পূর্বক স্বয়ং  
আপাধি বর্ষের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আপা-  
ধি সংকত যত্নেই মূল্য পাঠাইবেন।

—•••—

সোমপ্রকাশ।

৭ জ্যৈষ্ঠ সোমবার।

পত্রপ্রেরকের প্রতি।

বীরভূমের অধ্যাপকী কীর্ত্তার গ্রামে  
যুগ্ম বাবু শিবচন্দ্র সরকারের যত্নে বাল  
শিক্ষার পাঠার্থ একটি এবং বালিকাদি  
শিক্ষার একটি এই দুটি বিদ্যালয়  
প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, তৎসংক্রান্ত যে পত্র  
আমাদিগের হস্তগত হইয়াছে, স্থানান্তর  
যুক্ত তাক প্রকটিত হইল না।

লক্ষীপাশা নিবাসী বিপিনবিহারী সর্  
কারের লিখিত নড়াইলের কালীয়া গ্রামে  
ব্রাহ্ম সমাজের প্রতি প্রাচীন সস্ত্রদ্বারে  
বিদ্যেবৃদ্ধান্ত পাঠকগণের তাদৃশ শ্রীতি  
প্রদর্শিত হইবে না বলিয়া প্রকটিত হইল না।  
সময়ন সিংহের দুইখানি এবং করিম  
পুরের এক খানি পত্র নিত্যন্ত অসার বলি  
উপেক্ষিত হইল।

তপসিব অধ্যাপকী বালি গ্রামের ম  
নমোহনসবসংক্রান্ত পত্রে অনেক দিনের  
আম লিখিত হইয়াছে বলিয়া প্রকাশ করা  
গল না।

লেড সাহেবের প্রস্তাব পাঠ।

ভারতবর্ষের বর্তমান রাজস্ব সংক্রান্ত  
প্রধান কার্য নির্বাহক অমরেন্দ্র লেড সা  
হেব গত ১২ই মে সোমবার সন্ধ্যার পর  
ভেলহাউস ইনটিটিউট সভায় এক প্রস্তা  
ব পাঠ করেন। গবর্নর জেনারেল লর্ড  
এলগিন, লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বীডম সাহেব  
প্রকৃতি অনেক প্রধান ব্যক্তি সভাস্থলে  
উপস্থিত ছিলেন। প্রস্তাবটি বহু বিতর্ক  
হইয়াছে। উহা অতিশীঘ্র পুস্তকাকারে  
মুদ্রিত ও প্রচারিত হইবে। লেড সাহেব  
প্রস্তাব মধ্যে নিম্ন লিখিত কয়েকটি মূল  
কথার উল্লেখ করিয়াছেন। প্রথম, ভাষার  
সুতি। দ্বিতীয়, সামবজাতির বৈমনিম  
জীৱি সহকারে এই ভাষার বহুবিধ পরি  
বর্ত্ত। তৃতীয়, তিন্ন তিন্ন ভাষার ব্যাকর  
ণানি গড় সৌসাদৃশ্য দর্শন করিয়া তিন্ন  
তিন্ন জাতির এক মূল হইতে উৎপত্তি নি  
র্ণয়। চতুর্থ, আর্থ্য বংশের তিন্ন তিন্ন দেশ  
গমন ও তথায় বসতি। পঞ্চম, হিন্দু ও  
ইংরাজদিগের এই বংশ হইতে জন্ম।

লেড সাহেব যথোক্ত বিষয়টি লইয়া  
অধিকতর বক্তৃতা করেন। হিন্দু ও ইংরা  
জেরা এক বীজ পুরুষ হইতে উৎপন্ন, ইহা  
রা পরস্পর আত্মভাবাপন্ন; অতএব ইহা  
দিগের পরস্পর বিদ্বেষত্ব পরিভ্রাণ ক  
রিয়া সৌহার্দ সন্ধান হওয়া উচিত, এতৎ  
প্রতিপাদনই লেড সাহেবের  
প্রস্তাব পাঠের মুখ্য উদ্দেশ্য।

আজি কালি এই একটি ধারণা লেখা  
বাইতেছে, যাঁহারা বক্তৃতা দ্বারা আপনাদি  
গের উদার ভাবের পরিচয় দিয়া আশংকা  
লইতে অভিলষী হন, তাঁহারাও উল্লিখিত  
প্রকার বক্তৃতা করেন, আর যাঁহারা  
সম্প্রদায় লোক, হিন্দু ও ইংরাজদিগের  
পরস্পরের প্রতি বিদ্বেষ বৃদ্ধি করিয়া  
রা বাস্তবিক অসুখিত হইতেছেন, তাঁহা  
রাও পরস্পরের ঐশ্বর্য সর্জন দানদান  
উল্লিখিত বক্তৃতা করিয়া থাকেন। লেড  
সাহেব এখান রাজপুরুষ, অমরেন্দ্র হিন্দু  
ইংরাজেরা। পরস্পর কুহুভাবাপন্ন হন  
তাঁহারা যে একপ ইচ্ছা হইবে একথা কল  
বাহুল্য। উক্তর জাতির সৌভাগ্য বঞ্ছন  
তিরেকে ব্রিটিশ আধিপত্য এদেশে ব  
মূল হয়, সম্ভাবিত নহে, ইহা তাঁহারা আ  
শিত নাই। ব্রিটিশ রাজপুরুষেরা এদেশী  
দিগের উদ্বেগ না জন্মাইয়া রাজস্ব করে  
এইটিই তাঁহারা ইচ্ছা, সমাজিকার ইম  
টাক প্রকৃতি রক্ষিত করিবার চেষ্টা দ্বা  
তাহা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইতেছে। কি  
কোতের বিষয় এই, উক্তর জাতির সৌ  
ভাগ্য পথের কষ্টক স্বরূপ হইয়া পক্ষপাতী  
প্রকৃতি যেগুলি প্রতিবন্ধকতাচরণ ক  
তেছে, তৎসমূহন বিধানে কাঁহারও ম  
শেষ বস্তু দূর হইতেছে না। সেই প্রতি  
বন্ধ ওলি দূরীভূত না হইলে উক্তর জ  
তির অকৃত্রিম ঐশ্বর্য হওয়া কোনক্রমে  
সম্ভাবিত নহে। যে দিকে দৃষ্টিপাত ক  
বার, সেই দিকেই পক্ষপাত লক্ষিত হয়  
এক জন ইংরাজ ও এক জন বাঙ্গালি উ



ক কথাবাঁই হইয়া থাকে। এখানে  
বের নিকটে থাকে। এখানে  
অপেক্ষা হীনতায়, তখন এখানে  
কথা বালালিকে উপেক্ষা করিয়া ইংরাজ  
ক কথা দিবেন। এখানে পক্ষপাত দর্শন  
করিয়া বালালির মন কি কখন ইংরাজের  
প্রতি সৌজন্য সম্পন্ন হইতে পারে। এক  
জন বালালি যে যেভাবে যে কথ্য করিতে  
কেন, তাহাতে এক জন ইংরাজ আ  
শ্চর্য হইতে পারে। তাহার বিখ্যাত বক্তন  
হইবে, ইংরাজ? ইহা দেখিয়া কি বালা  
লির মন প্রীতিপ্রসন্ন থাকিতে পারে।  
বালালি অপেক্ষা ইংরাজদিগের ব্যয় অ  
ধিক, এছাড়া নিত্য অতিথিও কর, পদস্থ  
বালালিদিগকে যে কুপোষ্য পোষণ করি  
তে হয়, তাহাতে যে ব্যয় হয়, তাহা অনেক  
পদস্থ ইংরাজের ব্যয়ের অপেক্ষা অধিক।  
বিশেষতঃ একজনকার পদস্থ বালালিদিগের  
ব্যয় কোন ক্রমেই ন্যূন নহে।

এছলে কেবল এক চাকরীই পক্ষপা  
তের উদাহরণ স্বরূপ প্রদর্শিত হইল?  
এইরূপ অনেক বিষয়ে আছে। এদে  
খায়। এই সকল দেখিয়া ক্রমশঃ বীত  
শ্রম হইতেছেন। ইহারা এত দিন এ সক  
বিষয় তত অনুভব করিতেন না। যদ্বা  
রা সেই অনুভবশালিতা আছে, এখন দিন  
দিন সেই কারণ উপস্থিত হইতেছে। পক্ষ  
পাত দর্শন করিয়া লোকের মনে যে বৈ  
রম্বা হয়, ইহা অনৈসর্গিক নহে। বাইব  
লোক্ত কথা পুরুষ কেইন একত্রে প্রাণে  
সংহার করে কেন? বাইবল হতে উদ্ধৃত  
প্রতি যে পক্ষপাত করেন, কেই  
ন। অন্যদৃষ্টান্ত তাহার একটি কারণ  
হইল। কিন্তু ইংল্যান্ডের সহিত ইংরাজ  
দিগের যে ইচ্ছা বিশেষ করা হয় আমরা  
কোন কারণ দেখিতেছি না।  
এই বিষয়ে ইংল্যান্ডের বালালিদিগের  
কথা এই সর্বত্র বর্ণিত হইয়া থাকে। তবে  
ইংল্যান্ডের বিষয়ে ইংল্যান্ডের হীনতাই

কি কারণে  
শাস্ত্রের বাক্যে কথার পরিণত হইল। ইং  
ল্যান্ডের অধিক বল থাকিতে অনেকে  
ইংল্যান্ডের এদেশীয়দিগকে অপমান করেন।  
তাহাও ইংল্যান্ডের বিধি বিচারের  
কারণ হইয়াছে। অনেককে আমরা এ  
অপেক্ষা করিতে শুনিতে পাই। কলতঃ  
উদ্ধৃতি পক্ষপাত নিবন্ধন যে সমস্ত অ  
বৈধ কার্য অনুষ্ঠিত হইতেছে, যত দিন  
তাহা পরিচালিত না হইবে, তত দিন অজ  
তঃ গবর্ণমেন্টের নির্বাহিতা লাভের সম্ভাবনা  
নাই।

বালালি দিমালায় ও গবর্ণমেন্টের  
সাহায্য দান।

গবর্ণমেন্টের সাহায্যদানপ্রণালী গত যে  
দেব আছে, আমরা পূর্বে বিশেষ করিয়া  
তাহার উল্লেখ করিয়াছি। এই সময়ে  
প্রণালী বালালি শিক্ষার গত প্রতিবন্ধকতা  
চরণ করিতেছে, ইংরাজীও তত নহে।  
দুটি কারণে লোকের ইংরাজীশিক্ষায় অ  
ধিকতর যত্ন ও অনুরাগ জন্মিয়াছে। এক,  
ইহা রাজত্ব। যাবতীয় রাজকাৰ্য্য ইহাতে  
নির্বাহ হইতেছে, ইহা জানিলে অর্থোপা  
র্জন্যের পথ সুগম হয়। দ্বিতীয়, এতাবতী  
বালালিতা অপেক্ষা বহুগুণে উৎকৃষ্ট হ  
ইয়াছে। ইহারা কেবল জ্ঞানোপার্জন  
জন্য সহানুভূতি শিক্ষাকার্য্যে নিয়োজিত  
কবেন, তাহাও ইংরাজীর প্রতি পক্ষ  
পাতী হইয়াছেন। ইহাতে অনেক উৎকৃষ্ট  
গ্রন্থ আছে। তদ্ব্যতন জ্ঞানদার সহজে  
উদ্ধৃতি করিয়া দেয়।

বালালি ভাষায় এই উত্তম গুণেবই স  
ম্ভাবনাই। প্রথমতঃ বালালি ভাষা ইংরাজী  
ন্যায় অর্থকরী নহে। ইহার দশাও অদ্বা  
পি উৎকৃষ্ট হয় নাই। এ তাহার উৎকৃষ্ট  
একদর্শন দুর্ভাগ্য। এই দুটি গুণ নাই বলি  
য়া কি এ ভাষা উপেক্ষিত হইবে? উপেক্ষার  
কথা দূরে থাকুক, তাহাতে ইহার সমাজীয়  
উন্নতিলাভ হয়, সেচেষ্টা করা সর্বতোতা

বে বিধেয়। বালালি দেশের উন্নতি ইহা  
উন্নতিযুক্ত শিক্ষা করিয়া রাখিবে। ই  
ব উন্নতি ইংল্যান্ডের বালালি পর  
তিলাভপ্রাপ্তি পিতৃমহা সন্দেহ নাই।  
যখন এদেশীয়দিগের যেকোনুসারে  
লাভাভার অনুশীলন বিষয়ে বিশেষরূপে  
বিচিন্তন হইবার দুটি মহান অন্তরায় দৃষ্ট  
হইতেছে, অথচ ইহার উপেক্ষা কোন ক্রমে  
সুবিধা হইতেছে না, তখন গবর্ণমেন্টের  
নিষেধ সর্বিশেষ মনোনিবেশ করা অবশ  
কর্তব্য। গবর্ণমেন্টে ভিন্ন আমরঃ আর  
হাকে কখন প্রজাপণ দানও স্বীকৃত  
না পায়, তাহাও পিতৃমহা গবর্ণমেন্টে  
সেই হিচনামান কাল লইতে হয়। অসত  
রাজগণের মাংস অ.মাংসের গবর্ণমেন্ট  
কৌশল ও অধিক নহেন। প্রজাপণ দিত  
খন যদি গবর্ণমেন্টের মুখ উল্লেখ হয়, এ  
জার ইংল্যান্ড তাহাও স্বীকৃতি সাধনের তুল  
হিতকর কার্য্য অসম্পন্ন আছে।

বালালিভাষায় উন্নতি লাভ গবর্ণমেন্ট  
সাহায্য দানের উপর নিত্য নির্ভর করি  
তেছে, ইহা যখন হির হইল, তখন সাহ  
য্যদানবিষয়ে ইংরাজীর সহিত ইহা  
কিছু বিশেষ করা অসম্ভব আদর্শ্যক। অ  
মাংসের অতিপ্রসক্ত সে বিশেষ এই, গ  
গবর্ণমেন্ট যাবৎ বর্তমান সাহায্য দান প্রণালী  
পরিবর্তিত না কবেন, তাহাও বালালি বিষয়ে  
এই নিয়ম কল্পন, যে যে স্থানে বহুবিদ্যা  
লয় হইবে, তত্বতা লোকেরা ইহাদের বে  
তন সামন্ত গত টাকার সংযোগ করিয়া দি  
বেন, গবর্ণমেন্ট তত টাকার সাহায্য প্রদান  
করিবেন। এ নিয়ম হইলেও অনেক স্থলে  
বহু বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে। অ  
ধিক সংখ্যা বহু বিদ্যালয় হইলে বহুভাষা  
উৎকৃষ্ট প্রদেয় যে অসম্ভাব আছে, তাহা  
ক্রমশঃ দূরীভূত হইবে। উৎসাহলাভ  
প্রয়োজন উপস্থিত হইলে কোন বিষয়ের  
অসম্পত্তি থাকে না। পরিশেষে এই প্র  
বৃত্ত হইতেছে, আমরা যে প্রস্তাব করি

হি, গবর্ণমেন্ট কি আপন ইচ্ছায় কলকাতা  
কাব্য করিবেন? কখনই না। বাঙালী লি  
কর আবশ্যিকতা আমাদিগের দেশের যে  
কল ব্যক্তির ক্ষমতায় চর্চিত, তাঁহারা  
লিখিত প্রার্থনা করিয়া চতুর্দিক হইতে  
বেদন করুন। গবর্ণমেন্ট তাঁহাদিগের  
গৃহ বৃত্তিতে এবিধে যথোচিত মনোযোগ  
করিবেন সন্দেহ নাই। আজি কালি সবি  
শেষ আমোদমদ ব্যতিরেকে কার্য সিদ্ধি হই  
ব সম্ভাবনা অতি কম।

কি মূল্য বিচার

অজ্ঞ মাজিষ্ট্রেট ও উৎকোচপ্রাপ্তী দা  
গারাই সব মছাটেলেন। ব্যবস্থাপক  
না এত যে আইন করিতেছেন, প্রধান  
কথা সর্বত্র সমদর্শিকপে সৎ ও  
স বিচার প্রবর্তিত করিবার এত যে  
কো করিতেছেন, এই মহাপুরুষদিগের  
সমুদায় বুঝা হইতেছে। বোধ হয়,  
উৎকোচের নাম আমাদিগের পাঠক  
গণ কাহারও অবদিত নাই, সে নিজ  
স্বস্থানের নিষ্ঠুরতা গাম্ভীর্য লোকদি  
গের নিকটে ব্যক্তি করিয়া রাখিয়াছিল।  
এই সেই ব্যক্তি হিত, তাহার অবা  
ত পাইত। সে দম্ম বৃত্তি করিয়া তাহা  
গের সর্বত্র হরণ করিয়া আনিত মা,  
অবা হইলেই অন্যথা হইত। সে যখন  
ব্যক্তি আদার করিতে যাইত, গৃহস্থের  
গন কপে তাহাকে কিছু কিছু লবণ  
করাইতেন। ইহাব তাৎপর্য এই  
নিমক হারা হইয়া তথায় উৎকোচ  
হইত না পারে। রবুও খাচার একবার  
গাখাইত, তাহার গৃহে দম্ম বৃত্তি করি  
ন। কিন্তু আমাদিগের দারোগা বধু  
কিছুতেই পারিবার বা নাই, লব  
ণ খাচার আর শুধাই কর, তাঁহারা সর্ব  
করিতে চাহেন না।

এই অমৃত্যু দারোগা নাহেবে  
যত নিবন্ধন একটি নিয়ম ঘটন হই

রাইছে। বিশ্বমতের পত্রিকা পুণ্ডিয়ার  
সংবাদ দাতা লিখিয়াছেন, কথায় তাঁর  
জন্মকারী একজন জন রামাথৈবকর গ  
মন করিয়াছিল। সকলেই জানেন রামা  
থৈরা নিতান্ত নিম্ন নহে। তাহাদিগের স  
বে একটা হস্তী ও কয়েকটি অশ্ব ছিল।  
তঁহাকার দারোগা তাহাদিগকে দস্তা বলি  
য়া প্রেরণ করেন (বোধ হয় তাহারা দা  
রোগা সাহেবের মনোবাঞ্ছা পূর্ণ করে  
নাই) এবং তত্বে মাজিষ্ট্রেট সাহেবের নি  
কটে পাঠাইয়া দেন। মাজিষ্ট্রেট সাহেব  
তাহাদিগের ভয় মাস কারাবাসের অংশ  
দিয়াছেন এই মহাৎ যদি সত্য হয়, তর  
কর অস্বাভাবিক কাণ্ড সন্দেহ নাই। অধিক  
সংখ্য মাজিষ্ট্রেট ও দারোগাকে আমাদি  
গের যেকোন জান আছে, তাহাতে এস  
ব বড় অবিশ্বাস হইতেছে না। আমা  
দিগের প্রতিবেশী এক গ্রামের এক গৃহ  
স্থের গৃহে একটা ডাকাইতি হয়। দারোগা  
আপনার চালাকী দেখাইবার নিমিত্ত কত  
কগুলি যামুড়িয়াকে ডাকাইতি বন্দী প্রে  
শার করেন। মকদ্দমের মাজিষ্ট্রেটেরা ভু  
রক বেশী কাজীদিগের অপেক্ষা অল্প  
ও কলীর বিচারপতিদিগের ন্যায় স্বেচ্ছা  
চারী। লোককে কারাকর করিবার তা  
হাদিগের যে কুখ্যাতি সে দণ্ড বিভাগে  
র আইন তাহা ভুগ করিবার বিলম্ব  
উপায় হইয়াছে। আমরা বিশ্বাস জানি  
ভারতবর্ষে গবর্ণমেন্টে কখনও একজন যতি  
শ্রোত নহে যে বিনা প্রমাণে কোন ব্য  
ক্তিকে কারাকর করা হয়। কিন্তু মাজি  
ষ্ট্রেটেরা কি জন্য ইচ্ছা বিপরীত কা  
র্য করেন তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি  
না।

যদি হউক, আমরা গবর্ণমেন্টকে অনু  
রোধ করিতেছি তাঁহারা অবিলম্বে পুণ্ডিয়ার  
মাজিষ্ট্রেটের কৈফিয়ৎ চাহিয়া পাঠান।  
যদি কেবল মকদ্দমের উপরে নিভর করিয়া  
রামাথৈবককে কারাকর করা হইয়া থাকে,

তাহা হইলে তাহাদিগকে এই দণ্ডে ভুত  
করিয়া মাজিষ্ট্রেটের বেতন হইতে তাহা  
দিগের ক্ষতি পূরণ করিয়া তাঁহাকে বিশেষ  
রূপে সতর্ক করিয়া দেওয়া কর্তব্য।

চিন্তাধর্মের আসরকাল

যে কোন ধর্ম হউক, তত্ত্বপাসকগণের  
ঐহিক ও পারত্রিক শ্রেয়সাধনই তাহার  
উদ্দেশ্য। কিন্তু উপাসকগণের স্বার্থপরতা  
ও মূর্খতা নিবন্ধন বহু স্থলে সেই উদ্দেশ্য  
ব্যাকত হইয়াছে। এক প্রকার উপাসনা  
হিন্দুদিগের আদি ধর্ম; উপাসকদিগের  
দোষে উহা ক্রমে এমন বিকৃত হইয়া উঠি  
য়াছে যে এখন অনেক সত্য সমাজে  
হিন্দু ধর্মাবলম্বী বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জা  
বোধ করেন। উপাসকদিগের ক্ষুরতা ও  
মূর্খতা দ্বারা মুসলমান ধর্ম নিতান্ত দুবি  
ত হইয়াছে। রোমান ক্যাথলিকেরা খৃষ্ট  
ধর্মকে কি শোচনীয় অবস্থা না পাওয়াই  
গাছে : সম্প্রতি চীন দেশে যাহারা রাজ  
বিপক্ষ হইয়া মহান উপদ্রব উপস্থিত করি  
য়াছে, তাহারা খৃষ্ট ধর্মাবলম্বী বলিয়া পরি  
চয় দেন, ইংল্যান্ডেরা খৃষ্ট ধর্মাবলম্বী বলিয়া  
প্রথমে তাহাদিগের জনপক্ষপাতী হইয়া  
ছিলেন, কিন্তু তাহাদিগের কার্য দর্শন  
করিয়া এখন আবার তাঁহারা বিপক্ষ হই  
য়া উঠিয়াছেন। কলকাতা উপাসকদিগের  
স্বার্থপরতা ও মূর্খতা ধর্মের অধিকতর  
অনিষ্ট করিয়াছে। আমরা যদ্যপ অন্য  
এই বিষয়ের প্রসঙ্গ করিতেছি, তাহা নিম্ন  
লিখিত হইতেছে।

মোহাম্মদগরে সত্যপ্রকাশ নামে এক  
খানি মহাদণ্ড আছে, তৎসম্পাদক  
করণ দাস মুলতী তত্বে অন্যতর ধর্মস  
ম্প্রদায়ের প্রধান পুরোহিতের দোষে  
কথা লিখিয়া ১২৫ অক্টোবর তাং ১২  
৬৬-এ প্রকাশ করেন। প্রধান পুরোহি  
ত মজুমদার কী প্রজন্মের কী আপনাত  
কবতার বলিয়া পরিচয় দেন এবং প্রত্য



—

—

যদি ধর্মোপাসকদিগের শ্রী কন্যাশিলা  
হয়। ৭. ১ করিয়া থাকিলে। সত্যপ্রকাশে  
এই পুরোহিতের (ইহাকে মহারাজ  
হইবে) এইসকল দুর্ব্যবহারের কথা লি  
খিত হওয়াতে মহারাজ তত্ত্ব সুপ্রিয়াকে  
মাসীশ করেন। সন্ততি তাহার বিচার  
ইহা হইয়াছে। মহারাজের ৫ টাকা জরি  
ফা হইয়াছে আর তাঁহাকে মোকদ্দমার  
খরচ দিতে হইবে।

যদি পুরোহিত উপাসকদিগের শ্রী ক  
ন্যাশিলা ব্যবহার করিবেন, ইহা কোন্  
ধর্ম শাস্ত্রে আছে? এত দিন অম্যান্যক  
র সমুদায় সাধন করিয়া রাখিয়াছিল, হু  
জুরিয়ারা ধর্ম নাম কল্পে দ্বারা আবৃত  
ইহা যাহা মনে করিয়াছে, তাহাই হই  
রাছে। প্রতিবাদ করিবার শোক ছিল না।  
এখন সে কাল অতীত হইয়াছে। সাহস  
পুরসের এই সকল দুষ্কৃত্তির বিষয় প্রক  
াশ করিতে পারে এখন একপ অনেক লো  
ক হইয়াছে। এই সকল বিষয় বহু প্রকা  
শিত হইবে, ততই লোকের হিংস্র ধর্মের  
প্রতি অশ্রদ্ধা জন্মিবে।

বোম্বাইয়ের প্রধান বিচারপতি উক্ত  
মোকদ্দমায় আজ্য দিবার সময়ে এই কথা  
বলেন, “যে বিষয় নীতি বিরুদ্ধ তাহা কখন  
ধর্মানুমোদিত হইতে পারে না। যে স  
কল প্রধারিত আইনের মূল পর্যাঙ্ক নষ্ট ক  
রিবার ক্ষমতা আছে, প্রকাশ্যরূপে তাহার  
প্রতিবাদ করা নিতান্ত আবশ্যিক।” যদি  
আমরা অনুধাবন করি। যে বিস্ময় প্রতী  
য়মান হইবে, প্রধান বিচারপতি প্রকারা  
ন্তরে ভারতবর্ষবাসিগকে প্রচলিত কুসংস্কার  
পরিত্যাগে যত্নশীল হইতে অনুরোধ করি  
রাছেন।

ভারতবর্ষের এ অংশে উক্ত আইন প্রচলন  
ন্যায় ধার্মিক নাই এমন নয়। তৈবরী চক্র  
তি এই চক্রের তাত্ত্বিকদিগের দ্বারা পণ্ডিত  
বারাদরী লেবন কি অনুমত নয়? একপ  
জনশ্রুতি কোন কোন তত্ত্ববিশীষ শ্রী

লোকও চক্রের দ্বারা আশঙ্কায় বহু সম  
পন্ন করেন। মেডানোড়ী, কর্তৃত্ব, যা  
উল্লেখ্য এ সমুদায় দর্শন কি কুফিয়ার  
ক্রোম প্রবর্তিত হইয়াছে না? ধর্মপ্রকাশ  
সম্প্রদায়ের এই সমুদায় দর্শনের আদ  
র্শ একপ চর্চা করেন। যখন তামতদগে  
মঙ্গল সাধন সম্প্রদায়ের উদ্দেশ্য হই  
রাছে, তখন প্রোগি বিশেষ অর্থবা এত দি  
শেষের মনোরঞ্জন চেষ্টা পরিত্যাগ করিয়া  
অপকৃপা, চিত্তে যাবতীয় মোহের উচ্ছেদ  
করা বিধি। যে দেশে বিস্তৃত ধর্ম ও বি  
শুদ্ধ প্রথা প্রচলিত না হয়, তাহার যখন  
উন্নতি লাভের সম্ভাবনা নাই।

—

লণ্ডন ৬ই এপ্রেল ১৮৬২।

প্রিয়সম্পাদক! প্রকাশ্যরূপে পরীক্ষা  
দিয়া সকলে রাজকীয় প্রাপ্ত হইবেন এতৎ  
বিষয়ক প্রস্তাব ১লা এপ্রেল জেন্স আফ  
কম্পন সমাজে বিচলিত হয়। জেন্সি  
সংসদ সমাজে এই প্রস্তাব করেন যে  
মিথিল সর্ববিশেষ সংস্কার যাবতীয় পদ  
কেবল পরীক্ষণীয় ব্যক্তি-চিত্তের প্রতি  
অপিত হয়। যদিও এই প্রস্তাব বিচার্য  
প্রাপ্ত হইল তথাপি উক্ত বিচার দ্বারা প্রা  
ক্য পরীক্ষা বিষয়ে কোন কোন ক্ষমতা বা  
জ্যের অধিকার্য জ্ঞান হইয়াছে। জেন্সি  
সংসদ কহিলেন যে পূর্বাংগে একে অনেক  
পদ কেবল অগ্রগ্রহ বা জাতীয়তানিবন্ধন  
প্রাপ্ত হইতেছে অতএব ইহা প্রতিষ্ঠিত না  
হইলে পরীক্ষণীয় ব্যক্তি দ্বারা রাজকীয়  
বিষয় করা উচিত। ম্যাসটাট সাহেব এই  
প্রস্তাবেব পোষকতার কহিলেন যে ভারতব  
র্ষের সিভিল সার্ভিস বিষয়ে প্রকাশ্য পরীক্ষার যে  
তাত্ত্বিক রীতি প্রবর্তিত হইয়াছে তাহা কল  
পতা হয় নাই, পুঙ্খ কৌট নীচকুলজাত ব্যক্তি  
মিথিল ভারতবর্ষের রাজকাণ্ডে নিযুক্ত  
কর, সিভিল সার্ভিসকে নীচকরা দায়। তথাপি  
ডিবি চন্দ্রসেন কথ্য সহজে জেন্সি সাহেবের  
প্রস্তাবত্যাগ করেন। সক্রম সাহেব কহিলেন  
যে বীজান বীজসমূহে কাঁচা পিঁপড়া অতি  
বিকৃত অধ্যয়ন দ্বারা চাহারা সাক্ষ্য ও

পণ্ডিতশাস্ত্রে ব্যাপার হয় ঘটে, কিন্তু রাজকা  
ণ্ডে পারদর্শিতা প্রকাশ করিতে পারে না।  
অতএব প্রকাশ্য পরীক্ষার রীতি যাবতীয়  
ডিপার্টমেন্টে প্রচলিত করা অনিষ্টজনক হই  
বে। পীকক সাহেব এই অভিযোগের পোষ  
কতার কহিলেন যে পরীক্ষাকালে কাঁচা পি  
পড়ের প্রতি যে সকল প্রকার প্রস্তুত হয়, তাহা  
অতি অবশ্যক। তিনি লক্ষ্যান্তে সংসদে একটি  
প্রকার উদ্বেগ করিয়া কহিলেন যে সকল  
অন্যান্য সভ্যের কথা হুবে থাকুক, যখন  
ম্যাসটাট সাহেব উহার উত্তর দিতে সক্ষম  
হইবেন না, তখন রাজকাঁচা পিঁপড়া হইতে উদ্ভূত  
একর উত্তর প্রত্যাশা করা নিতান্ত অবিবে  
চনীয়। তখন ম্যাসটাট কহিলেন  
যে প্রকাশ্য পরীক্ষার প্রতি একটিও গুরুত্ব  
আমরা উপস্থাপিত কর নাই, প্রথমতঃ কথিত  
হইয়াছে যে এই রীতি, প্রকারে কেবল দুঃখ  
ও মানসিক রক্তির বীজ, হন, কিন্তু ধর্ম প্র  
তিষ্ঠা ও ন্যায়বিরিক গুণের অগ্রসংস্থান করা হয়  
না, ইহার উত্তর এই যে কাঁচা পিঁপড়া শারীরিক  
স্বাস্থ্য চিকিৎসকদের দ্বারা পরীক্ষিত হইয়া  
থাকে। চাবর বিষয়ে সক্রম এই যে দেশ  
সম্পত্তিজনপত্রে দুঃখ আদরণীয় পর্যাণ নহে,  
সকলেই জানেন যে জনসাধারণে অতি মনোহর  
নাটকীয় ঘটনা। কিন্তু ভারতবর্ষের সিভিল  
সার্ভিসে একরীতিতে বেকপে চরার পরী  
ক্ষা হইত, একপে সেই কপেই হইতেছে।  
বিশেষতঃ যখন একব্যক্তি পরীক্ষণীয় হয়,  
তখন সে আপনার সমস্ত পবিত্রতায় পরি  
চয় দিয়া থাকে। একটি প্রধান আপত্তি এই  
যে প্রাচীন সিভিল সার্ভিসে সন্তানবো বাজকীয়  
হইতে বঞ্চিত হইতে পারে, ইহার উত্তর এই  
যে প্রাচীন সেসণের যৎপেষ্ট পুরস্কার লাভ  
করিয়া, থাকেন কিন্তু কিজনা উহারের সন্ত  
নবো অন্যান্য ব্যক্তির অপেক্ষা সমস্ত অগ্র  
গ্রহ লাভ করিবে, তাহার কারণ অস্বস্তি হয়  
না। প্রথম বিষয়ে কথ্যিতব্য এই যে এককপ  
প্রকার কিছু সন্তান প্রাপ্ত হয় না, কেবল উপ  
দাস করিবার মিনিষ দুই একটি প্রকার নির্বাচিত  
করা ততি অন্যান্য। এইসকল বিষয় বিবেচনা  
করিয়া জেন্সি সাহেবের প্রস্তাব প্রত্যাখ্য করা  
উচিত বোধ হইতেছে। তখন সক্রম সক্রম  
হয়, সক্রম পণ্ডিত প্রভৃতি সকলের কথ্য

করিলেন। কিন্তু পরিচালনে অসুবিধা করিয়া  
হইল। ইংলণ্ডে প্রকাশিত হইয়া কালের অমরা  
জিরোকাব হয় নাই।

সংগ্রহ টেবুল সাহেব ডিটম্ রাস্কোর সা-  
মীর্ষের আচর্য্য ব্যঙ্গ্য এস্টিমেট অর্পণ  
করিয়াছেন। ব্যয় ৭০,০০০,০০০ পৌণ্ড, আয়,  
২০,০০,০০০ পৌণ্ড।

নীলসন সাহেব ইংরেজী অমরা  
নামে প্রসিদ্ধ হইয়া বিক্রীত

রোমক পত্রনে এমত জনরস উদ্ভিত হইছে যে  
পাপ বেগম সম্রাজ্ঞে দেবীকে প্রতিষ্ঠিত ক-  
রার অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন। বঙ্গ-  
দেশের বৈষ্ণবদের ন্যায় ( বৈষ্ণবেরা একা-  
ধার গোমাকামলিক রাজ্য ) বোম্বাই  
খালিক পুতানের। বৃত্ত ব্যক্তি বিশেষকে  
অধিক সন্মানস্বরূপ নিবেদন করিয়া গোমাকামলিক  
দেবতাকে প্রতিষ্ঠিত করে। বেগম  
সেই রূপ এক দেবী হইবেন। বেগমের  
বিত্ত আপনাত পাঠকদের মধ্যে অনেক  
সম্রাজ্ঞ ধা কতে পারেন। তাঁহার উপপতি  
দেবী সহিত হাক পদীকস করিয়াছিল বলি-  
বেগম ঐ দেবীকে এক কাষ্ঠাসনের নিচে  
বসন্ত প্রোথিত করিয়াছিলেন, অঙ্গ করি-  
বেগম হুজর উপপতির মনোরঞ্জন করি-  
তেন। পরে হুজর উপপতি মরেন। মনে  
নে তাঁহার উল্লাসে বিলক্ষণ বিশ্বাস ছিল,  
পাঠ তাঁহার হস্তে শালগ্রামমির অবমাননা  
হইত না। তথাপি, ইটালি প্রদেশে তাঁহার  
মৃত্যু ঘন নিশ্চিত হইতে দেখে বোম্বাই  
পাঠক দেবীকে প্রতিষ্ঠিত কালে বিখ্যাত  
হইলেন। বোম্বাই খণ্ড উপদ্বীপ হওয়া শুধু  
হইত নাহে, একব্যক্তি আত্মীয় রূপধারিত  
কিয়া। দুই কালে যদি বলেন আমি প্রভু হি-  
তুতে নিখাস রাখিয়া মরিতেছি তবে সে  
মত মনে মনের সহিত মিলিত হইবে। অ-  
মদের স্বদেশীয় ধর্ম যে ইহা কত অসুখ,  
তাহা আপনাত পাঠকেরা বিবেচনা করিবেন।  
সংপ্রতি একজন সম্রাজ্ঞের সম্পাদক  
কামরূপ অন্তর করিয়া প্রেক্ষাগ করি-  
তেন।

পুরী টায়েল। বঙ্গদেশে পবীক  
দীপ হইয়া বঙ্গদেশ, প্রীত্বাদিনকে সেই  
পাঠক মিত্র নিমিত্ত চেষ্টা হইতেছে।

ইংরেজদের একটি বিশেষ কীর্তি এই যে উক্ত  
ব্যক্তি ব্যক্তি। অধমার মিত্রকে উত্তম  
কর্তব্য নিমিত্ত নিরন্তর চেষ্টা করিয়া থাকেন।

একজিবিদ্যন কাণ্ড আনুভ করিবার নিমিত্ত  
কয়েকজন কবিশর নিযুক্ত হইয়াছেন। ইংল-  
ণ্ডেরী তৎকালে লখন হইতে দুই 'খাকি  
বেন। ইহা নিশ্চিত বলিয়া প্রত্ন হইল যে স-  
ম্রাট্ মগোলে এন্ ইংলণ্ডে আগমন করিবেন।

করাণীশ দেশীয় বিখ্যাত কবি ও লেখক  
লামাটি ন আমাদের দেশীয় অনেকের আখ-  
সন করিয়াছেন। কবিতার সাধারণ ভাষায়  
সারে তিনি একত্রে দৈন্য দশা পড়িয়াছেন,  
এক ব্যক্তি তাঁহার পক্ষ হইয়া ব্যবস্থাপক সমা-  
জে তাঁহাকে প্রতি দিবস নিমিত্ত আবেদন পত্র  
প্রদান করত। কিন্তু লামাটিন ইহা অংশ না-  
জ ব্যবস্থাপক সমাজের এক সভ্যকে পত্র লি-  
খিলেন যে ঐ আবেদন পত্র যেন অগ্রাহ্য হয়।  
কাবণ, তিনি বলেন করাণীশ লোকেরা যে ক-  
প রাজশাসন প্রণালী অবলম্বন করত না কেন,  
তাঁহাতে তাঁহার কোন আগতি নাই, কিন্তু পু-  
র্বে তিনি রাজশাসন বিষয়ে পুনঃ পুনঃ যে ম-  
ত প্রচার করিয়াছেন, তাঁহাতে সম্রাটের রা-  
জকোষ হইতে প্রতি গ্রহণ করিতে পারেন  
না। এ ব্যবহার লামাটিনের উপযুক্ত বটে।  
আপনাত পাঠকদের মধ্যে অনেকে জানেন  
যে উক্ত কবি সাধারণত পক্ষ লোক।

১৫ এপ্রেল।

খান্ ডেইয়ের ডুলাব সাং ব্যবসায়ীরা পা-  
লিমেটে অর্পণ করিবার ১৭,৫০ এক আবে-  
দন পত্র প্রেরিত করিয়াছেন। তাঁহাতে উক্ত  
হইয়াছে যে ভারতবর্ষের গবর্নরকে হুজুর উ-  
পদ শতকরা পাঁচ টাকা ও বজের উপর শত-  
করাংশ টাকা যে শুদ্ধ ভাপন করিয়াছেন,  
তাঁহা অতি অন্যায্য। তদ্বারা ভারতবর্ষীয়  
ব্যবসায়ী মিত্রকে কেবল উৎসাহ দেওয়া হই-  
তেছে। ভারতবর্ষীয় ধনীদিগের স্বাভাবিক  
প্রকৃতি কাণ্ডে নিযুক্ত পক্ষ উচিত, যেহেতু  
বঙ্গ ব্যবসায়ের তাঁহাদের হস্তক্ষেপ অনাবিকার-  
চেষ্টা বিশেষ। আবেদন কারীদের প্রার্থনা এই  
যে বঙ্গের ব্যবসায়ীদের প্রতি এক চেষ্টা  
করা না দেওয়াতে গবর্নরকে পক্ষপাতিতা  
করিতেছেন।

আপাত দেশীয় রাজদুতেরা করাণীশ  
দেশে উপস্থিত হইয়াছেন। অন্যকার রাজ  
পত্রে উক্ত হইয়াছে যে তাঁহারা বার্সেলন ও  
লিঅ নগর সম্রাজ্ঞ আনুভ্য ব্যাপার কৌতু-  
লের সহিত অবলোকন করিয়াছেন। কোন  
কোন করাণীশ সম্পাদক বিখ্যাত করিয়া। নিমি-  
য়াছেন যে লিঅ নগরে তাঁহারা কাণ্ডীশ ম-  
কটে আয়োজন করিতে তীক্ষ্ণ। প্রকাশ হ-  
য়েন। কিন্তু লেখকের মত, করা উচিত হি-  
ল যে মিত্র দেশে লৌহ বর্ষ ও বাণীশ পক্ষ  
বর্তমান আছে, এবং রাজ দুতেরা তাঁহারা  
আগমন করিয়াছেন। টাইটম্ নগরে অরিল  
যে বলকিরদের রিকিউ প্রদর্শিত হইবে  
লার্ড টাইজ অধ্যক্ষতা করিবেন।

রাজা রাবমোহন রায়ের বহু সুবিধা আ-  
তম সাহেব ইতিহাস তত্ত্ব বিষয়ে এক অত্যুৎ-  
কষ্ট পুস্তক প্রেরিত করিয়াছেন। তাহা  
হইতেছে, এবং অবশিষ্টবিষয়ে প্রচারিত  
হইবে।

দুই অন্বেষী বালায়ুরের কীর্তিবিদ আপ-  
নার উপযুক্ত টাকা সংগ্রহ হয় নাই, অতএব  
সাধারণ্যে তিন। আনুভ হইয়াছে।

এক হইল যে এক ব্যক্তি ম্যাকিকের বে-  
গারিবাণ্ডির সহিত সাক্ষাৎ করিতে উদ্য-  
করিতেছিল। অল্পসময় করিতে তাঁহার দি-  
কট বাক্য ও গুলিগুণ এক শিল্প হইল  
পক্ষাঘাত পূর্বে 'রাহাখানি' মিত্রের বঙ্গ-  
দেশে যে রূপ অবস্থা ছিল। একত্রে ইটালি  
কোন কোন অংশের অবস্থা সেইরূপ হই-  
য়াছে।

আর্টেল ও ব্রীজ সাহেব ইষ্টইন্ডিয়া কো-  
ম্পানির ডাইরেক্টর রূপে মনোনীত হই-  
লেন। উক্ত কোম্পানি আজিও প্রাণ ত্যা-  
করেন নাই।

সিঙ্গ-য়েল-ওয়ে কোম্পানি প্রত্যেক অং-  
২০ পৌণ্ড হিসাবে ১২৫০০০ অংশ দ্বারা  
৫০০,০০০ পৌণ্ড মূলধন রক্ষি করিবার নি-  
মিত্ত আবেদন করিয়াছেন, তদ্বারা পত্রের তা-  
তে লিখিত পক্ষ লোকের প্রাণ হইবে।  
আমেরিকা হইতে কোন গুরুতর সংব-



উপস্থিত ৩০ জনের মধ্যে ২০ জনের বেশি  
প্রেরিত হইবে।  
লণ্ডন, ৬ জুলাই ১৯৬২।

বিভিন্ন সংবাদ।  
৩০এ ইংল্যান্ড সোমবার।  
হরকরা সম্পাদক নিম্ন লিখিত ইউরোপীয়  
ও আমেরিকার সমাচার প্রাক্তন হইয়াছেন :-  
মেরিকান নামক বিদ্রোহী প্রাক্তন  
মেরিকার পশ্চিমাত্মক লোক বিগের জাত  
গবর্নমেন্টের তিন খানি জাহাজ ধক্কাত ক

দিয়াছে। বিদ্রোহীরা জাহাজের উপকূল  
হইতে পালান সচিয়া যেমিগির শস্যদি  
নষ্ট করিতেছে। ইরক টোনে, দিকটে  
যুদ্ধ হইবার বিলম্ব সভাবনা আছে। কিন্তু  
হীদিগের এক লক্ষ সৈন্য ও পাট শত কাম

গবর্নমেন্টে সন্নিবিষ্ট সীমানা  
নে, সেনা একত্রিত করিয়াছেন।  
একপ জনপ্রতি করাসী যুদ্ধ জাহাজ  
নেপাল, হইতেছে।  
খানি। এক জন বিখ্যাত করাসী  
ক) বিচারে যুক্ত হইয়াছেন।  
১২ই এপ্রেল।

করিবনগরের নিকটে এক তরান  
হইয়া দিয়াছে। গবর্নমেন্টের ২০ সহস্র  
বিদ্রোহী লিগের ৩০ সহস্র লোক হত  
হইয়াছে। সেনাপতি জনর্জন বিদ্রোহী  
বরোপাট (বিদ্রোহী) আহিত হইয়াছেন।  
বিদ্রোহীরা প্রথমতঃ জই হই। কিন্তু গবর্ন-  
মেন্টের সেনারা সাক্ষ্য পাঠিয়া জাহাজকে  
দুরীভূত করিয়াছে।

১০ গণিত খীল গবর্নমেন্টের  
হইয়াছে।  
সেকসিকোর গবর্নমেন্টে অনিচ্ছা  
গের নিকট হইতে ও টাকা কর্ত্ত করিয়াছেন।  
সহযোগী সেনাপতিরা পুনর্বার  
করিবেন বলিয়াছেন।

আবেল, ২০এ এপ্রেল। রাজপক সে  
নারা নামক নাপুলরা দুর্গে প্রবেশ করিয়া  
ছে। পারিস, ২২এ এপ্রেল। হারজ গোবি-  
ন ক একট। তরানক যুদ্ধ হইয়া গিয়াছে।  
খার তরান সেনাভিগের আর্দ্রান করা তার  
হইয়াছে। মর্কিভিগের লোকেরা জাহাজকে  
অবরোধ করিতেছে।

বারু তরানখ থর পুনর্বার মেউলিয়া  
বার অবরোধ করিতে বারু শ্যাচারন  
বিচারালয়ে তাঁহার প্রতিবেদন  
কর্ত্ত: পাই প্রকাশ হইয়াছে তরানখ থর  
মাত, পুত্র ও স্ত্রীর নামে অনেক সম্পত্তি আ-  
সংগঠিত তাঁহাকে সতর্ক হইতে বাল  
নামক পত্রের সম্পাদক করিয়া এই  
কপে মেউলিয়া কর।

খানির জাহাজ সিন্ধু ব্যবহার নিষা-  
রনী সভার প্রতি। তাঁর সাহেবের আ-  
বেদনসারে এক জাহাজের পাড়ানের  
পাট চাকা করিয়া দিয়াছে। ঘটনা  
খানি প্রকৃতি দ্বারা এবং প্রকৃতি  
আহত হইয়া সন্ততি বৈদ্যের কান ক্রমেই  
পাট টানিতে পেরে না। তখানি তাহাখিগ  
হইতে হয়।

খানি হারবার শেজোট প্রকাশ পাঠিয়া  
গত মোমবার তাঁর তরানক যুদ্ধ হইয়াছে।  
খানি পত্রের জাহাজ নাপুল নাপুল  
ম। ক। পত্রের যুদ্ধ হইয়াছে।  
খানি লোকের কান হইয়া বার। আশিহতা  
হইয়াছে। তাঁর জাহাজ বার নাট।

গত মোমবার তরানখ থর পুনর্বার মেউলিয়া

|      |     |
|------|-----|
| টাকা | ১৫০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |
| খানি | ২০০ |

মোট টাকা ১৭৫০০০০  
সর চানস উত্ত ভারতবর্ষের উপরে যে তপ্তি  
আটিয়াছেন তদ্রিক্তনই গত হাস অণেকা  
এবার অণ টাকা জন লখা হইতেছে।  
আমরা খানালী নামক সাপ্তাহিক পত্রের  
ফুই খণ্ড প্রাপ্ত হইয়াছি। এই পত্র খানি  
খণ্ড কপে লিখিত হইতেছে। আমাভিগের  
বলহতি যই হয়, ততই মজল। সেই মজল  
খানালী পত্র দ্বারা সাধিত হইবে আমরা এ  
আপা করিতেছি।

সব আশিহতা মজল বায়ু বহুনাথ খোব  
বিদ্রোহীরা এক জাহাজে সৈন্যসঙ্গে ছিলেন,  
তদ্রিক্তন তাঁহার পুরকার জনা টংলু হই  
তে একটি খণ্ড মেজাল আসিয়াছে। কিন্তু  
তিনি অণপত্তি খানাতে গবর্নমেন্টে তাহা  
রাখিয়া দেখনা করিয়া দিয়াছেন হুই মাসের  
যথো ন লইলে ইহা সর চানস উত্তের নিক  
টে প্রাপ্ত হইবে।

পুলিসে সন্ততি এবং ইউরোপীয়  
পত্র ৩০ ব্যক্তিরা নোট, এই খানি নামক

সে, প্রতিবাদী গোপনে তাহার এক মোকা  
কর করিয়াছে। বাজিটেট গৃহস্থ এই বিষয়  
প্রশ্ন করিলেই সে বলিল, আমি কি অন্য  
কোন কার্য্যই বলিতে পারি না। এতকপ  
মারো সে অনেক মিথ্যা কহিয়াছে। নাজি  
ইট তাহার দুই শত টাকার জামীন লইয়া  
ধাক্কা দিয়া স্থগিত রাখিয়াছেন। দেখা বাড়িক  
বাজিটেট এখানাবাসিতার কি দণ্ড করেন?

৩১এ টেলিগ্রাফ মকলসার।

কিনিক সম্পাদক বলেন, সব আশিষ্টা  
স্বজন ডাক্তার এ, এসময় নিজ পদ ত্যাগ ক  
কর। এব, ডি, উপাধির জন্য ইংলণ্ডে অধ্যয়  
করিতে যান। তিনি এ উপাধি পাউয়াছেন।  
একসঙ্গে তাহাকে পুনরায় কর্ম দিয়াছেন।  
এস আর্স্টকে সরাসরে পদত্যাগ করিলেও  
দি তাহারিগকে পুনরায় কর্ম দিবার নিয়ম  
কর। হয়, উক্ত চিকিৎসক লাভ হুইল হয় না।

এক ব্যক্তি ৩৮ গনিত এডমেন্টের সেমা  
নলের সুবেদার বেজরের প্রাপন্য করিয়াছে।  
এ সেমা হল রাজিকালে বাড়িতে ছিল সুবে  
দার অধিকারী তাহারিগের পদাভ্যন্তে ডি  
লেন, এমত সময়ে এক বস্তুর এক হইল।  
তিনি তৎক্ষণাৎ হুইল হুইল তৎক্ষণাৎ পতিত  
হইলেন। এক জন শীকনায়ককে সকলে চত্যা  
দ্বারা বলিয়া দিবার করিয়াছেন, কারণ সে ব্যক্তি  
পলায়িত হইয়াছে। আশ্চর্য্য বিষয় এই,  
সুবেদারের পাখি বর্তি সেনারা সকলেই বলি  
তেছে তাহার হত্যাকাণ্ডকে দণ্ডন করে নাই।  
সুবেদার বিদ্রোহ কালে গবর্ণর সুবিশেষ  
আশঙ্কিত করিয়াছিলেন, অতএব তাহাকে  
বহু সুরক্ষিত অনেকে বলিয়াছেন ৩৮ গনিত  
সেনাসমূহকে কর্ম হইতে ছাড়িয়া দেওয়া  
উচিত। এ সকল লোকের পর মন স্থানিলেই  
প্রকৃত।

ইংলিসহান সম্পাদক বলেন উপনিবেশ  
লইয়া বাড়িবার জন্য যে পদ মন্ত্র দ্বারা করা  
হয়, তাহারিগের স্বাস্থ্য প্রকৃতি মনোবোণ  
দেওয়া হয় না, তাহাতে অনেকে তাহাকে  
উত্তীর্ণ করিয়া কুলির পাজ দ্বারা প্রাপত্য  
করে। অনেক সময়ে একপদ পটনা হইয়াছে,  
তা বাড়ার হুইল হইয়াছে উপায় হীন  
সিদ্ধিগকে মন্ত্রিসঙ্গে নিক্ষেপ করা হইয়াছে।

সর কারলস উক্ত ভবিষ্যৎ স্পষ্টাকরে এই আ  
শঙ্ক করিয়াছেন যে মন্ত্রদ্বিগের স্বাস্থ্য প্র  
কৃতি বিশেষরূপে মনোবোণ দেওয়া হয়।  
যাহারা প্রাপত্য করিলে উপনিবেশের প্র  
কৃতি তাহারিগের মনোবোণকে হুইল হুই  
পুনঃ প্রেরণ করিবেন, অথবা তাহারিগের  
গণোচিত তত্ত্বপোষণ করিবেন। এটিসাহেব  
মন্ত্রদ্বিগের কষ্ট নিবারণের জন্য ব্যবস্থাপক  
সভায় এক বিল অর্পণ করিবেন প্রস্তাব করি  
য়াছেন, কিন্তু তিনি তাহা কার্য্যকর করিতে  
পারেন নাই। বীভন সাহেব এতদ্বিষয়ে ম  
নোবোণী হইল।

সংবাদ আসিয়াছে গ্রীস দেশের বিদ্রোহ না  
হি হইয়াছে। রাজকীয় সেনারা বিদ্রোহিদিগের  
প্রধান দুগ অধিকার করিয়াছে। যাহা হ  
উক গ্রাসের যাবতীর লোক রাজা এখার  
প্রতি বিরুদ্ধ হইয়াছেন। প্রমা রজন করিয়া  
শাসন কার্য্য নির্বাহ করা অনেক রাজারই  
ঘটে না।

ইংলণ্ডে একটা প্রমা হইয়াছে দ্বী ও  
পূর্ব বিবাহার্থী হইলে বর ও কন্যার নিমিত্ত  
সমস্ত পত্র বিজ্ঞাপন করিয়া দেয়। তাহাতে  
আপন আপন বরস, কপ, সম্পত্তি প্রভৃতির  
বিষয় লেখা হয়। সম্রাতি এক কোতুকাব  
ঘটনা ঘটয়াছে। এক ব্যক্তি একদা এই ভাবে  
এই বিজ্ঞাপন করিয়া দেয় তাহার বরস আপ  
ও বাৎসরিক ৩০০০ টাকা আয় আছে। সে বলি  
একটি ভাল দ্বী পায় বিবাহ করে। এই বিজ্ঞা  
পন লেখিয়া এক দ্বী লোক তাহার নিকটে লি  
খিয়া পাঠাইল যে সে বিবাহ করিবে না দ্বি  
করিয়াছিল, কিন্তু তাহার দ্বি পদ দেখিয়া  
তাহার বিবাহ করিবার মানস হইয়াছে। উক্ত  
যে এই রূপ দুই চারি পত্র লেখা লিখি হইলে  
পর দ্বী লোকটি একখানি প্রাচীর নাম নির্দে  
শ করিয়া লিখিয়া পাঠাইল যদি তিনি সেট  
হুইল যান এ দ্বী লোকের সহিত সাক্ষাৎ হ  
ইবে। পত্র মধ্যে লেখা ছিল, তিনি যখন  
তাহার প্রিয়তমার সহিত সাক্ষাৎ করিতে  
বাইবেন, তখন বেশ ছলবেশে যান। নারক  
এই পত্র পাইয়া মহাখুসী হইলেন। সে  
মহাখুসী হইয়া নির্দিষ্ট স্থানে উপনীত হইলে  
ন। কতক দূর যাইতে, না যাইতে করেক জন

দ্বিগুণি পুনিব প্রহরী আসিয়া তাহাকে  
প্রেরণ করিল। এক দিসের পর প্রহরী পা  
ইল যে দ্বীলোকটি বিজ্ঞাপন করিয়াছেন অন্য  
তাহাকে দহা বলিয়া পুণিবে মনোবোণ দেয়।  
পাঠকগণ। এটি বখাৎ কোতুকাব ঘটনা কি?  
না?

সম্রাটর বিদ্রোহী সম্পাদক কার্লস  
করেন, আকগানি পার্শ্ব করেক জন মন্ত্র  
সরদারের চক্রান্তে অধুনা যুদ্ধ হইয়াছে। পা  
রস্যাধিপতির আজ্ঞা সারে পুণিবা সেমাগণ  
তথায় প্রেরিত হয় নাই, বিদ্রোহী রাজা সু  
মতান আন পারস দেশে সেনা সংগ্রহ করি  
য়া তাহারিগকে রাজকীয় সেনা বলিয়া ঘো  
ষনা করিয়া দি। ফল। যাহা হউক প্রবাসকে  
বেন ভাল রূপে সুসম্মান না করিয়া দি।  
না হয়।

১লা টেলিগ্রাফ মকলসার।

নেটলাও সাহেব বনিক সম্রদারের দ্ব  
কারী সভাপতি হইয়াছেন। এখানে প্রেট  
বাকী থাকেন কেন?

পাঠকগণ অনিরাছেন বিদ্রোহী  
শুদ্ধ উত্তীর্ণা গিয়াছে সম্রাতি বনিক  
জন যনিক ইংলণ্ড হইতে কতকটা  
আমদানি করেন। কষ্টম কারে  
উপায় হুইল হুইল করেন, তাহাও  
বোডে আবেদন করাতে তাহার আত্মা ক  
করিয়াছেন সুস্থিত কাগজ জি আর সম্রদার  
কাগজে শুদ্ধ লেখা হইবে। ইহার অর্থ  
কি?

গত বর্ষে বঙ্গদেশে পবলিক ওয়ার্ক বেহু  
নিম্ন লিখিত টাকা ব্যয় হইয়াছে:—

|                 |           |
|-----------------|-----------|
| হুতন কার্য্য    | ১৭,৮৫,০৫৩ |
| সংস্কার কার্য্য | ১৫,২৫,৮০৮ |
| বেতন ইত্যাদি    | ১১,৩২,৩২৮ |

মোট টাকা ৪৪,৪৩,১৮৯

পবলিক ওয়ার্কের তত্ত্বাবধিগের উন্নয় অ  
বেশন করিলে ইহার তিন অংশ বাহির হইতে  
পারে।

করালীরা আসিয়া খণ্ডে পুনরায় আদি  
পত্য স্থাপন চেষ্টায় আছে। কোচিন চীন তা  
হারিগের হস্তগত হইয়াছে, চীন দেশে তা  
হার প্রদে দ্বিগণন হইয়া উত্তীর্ণ হইতে।





|               |     |         |
|---------------|-----|---------|
| ৪ টাকার নিকা  | কাজ | ৮০। ৮০। |
| ৪ " কোম্পানির | ঐ   | ২২। ২।  |
| ৫ " ঐ         | ঐ   | ১০। ১০। |
| ৫।। " ঐ       | ঐ   | ১১। ১১। |



॥ कति अहं । मः हतेन आत्मना न हृत् ॥







# সোমপ্রকাশ

“এবর্ততাঃ প্রকৃতিহতার পার্শ্বঃ সরস্বতী স্রুতিমহতী ন হীরতাঃ”

৪ ভাগ।  
২৮ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২ । ১৪ জ্যৈষ্ঠ । ইং ১৮৬২ । ২৬ মে }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

অনুগ্রহের প্রতি।

সোমপ্রকাশ অতি উত্তম হওয়াতে অনেকের  
উপকারার্থে মূল্য নিম্নলিখিত হইয়া  
। তাহা দ্বিগুণে বিনয় পূর্বক জানান হই  
তে যে তাহার। অগ্রগ্রহ পূর্বক স্বাধীন  
গাথি বধের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আপা-  
তঃ সাক্ষ্য হইয়াছে মূল্য পাঠাইবেন।

সোমপ্রকাশ।

১২ টাকায় সোমপ্রকাশ।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

মহানন্দ সিংহের ব্রাহ্মসমাজের অন্যত  
সকল। জীবন্ত বাবু রাধাচরণ দেব পুত্রের  
তত্ত্ব ব্রাহ্মধর্মের গীতানুসারে সম্পাদ  
নাহে, তৎসংক্রান্ত যে একটি বক্তৃতা  
আদিগের নিকটে প্রেরিত হইয়াছে তা  
অত্যন্ত বিস্তৃত বলিয়া প্রকটিত হইল না।  
উচিত বক্তৃতা পত্রও দীর্ঘ হইয়াছে  
নয়। প্রকাশ করা গেল না।

হিতার্থের পত্র বড় হিত কথ্য দেখা  
ল না।

নিম্নলিখিত অধ্যায়।

আমাদিগের ব্রাহ্মসমাজ মেদিনী  
পুরের পত্রপ্রেরক নিম্ন লিখিত পত্রখানি  
ঠাইয়া দিয়াছেন

জীবন্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয়ের।

১২ টাকায় সোমপ্রকাশ।

কিছু দিন হটল মেদিনীপুরস্থ কোন পত্র  
প্রেরক আপনার সোমপ্রকাশে অত্রতা জমী-  
দার নজিরুলি খাঁর নীলঘটিত অত্যাচার  
বিষয়ক ক্রমে ক্রমে চুইখানি পত্র লিখিয়া  
ছিলেন। তদ্বোধে শেষ পত্রে এটাব প্রকা-  
শিত হইয়াছিল যে এক্ষণে আর তত অত্যা-  
চার হইতেছে না। বাস্তবিক আপনার পত্র  
প্রেরকের বাক্য বড় মিথ্যা নহে। আমবা এ  
পত্রান্ত রায়নগর, জাগুল, মনিবগঃ প্রভৃতি  
স্থানের প্রজাদিগকে অপেক্ষাকৃত নিরুপ-  
দ্রবে বাস করিতে দেখিয়াছিলাম। কিন্তু সস্ত-  
তি আর তাহাদের সেকণ অবস্থা নাই।  
তাহাদের বিনয় বিপদ উপস্থিত হই  
য়াছে। কয়েকদিন ক্রমাগত রষ্টি হওয়াতে  
পোকা নীলবীজ ছড়াইবার উত্তম সুযোগ  
হইয়াছে। এসময় নীল বুনিয়াদি হটলে দিল্ল  
স্বার্থ নি হয় দেখিয়া নজিরুলি খাঁর অম  
দাসের। প্রজাদিগের অম দারিয়ার তন্য ব্যস  
সমস্ত ও হিতাহিত জ্ঞানশূন্য হইয়াছেন।  
তাহারা এখনে আট ঘণ্টা বাদিয়া। অত্র  
দিগের প্রতি সেকণ অত্যাচার করিতেছেন  
তাহা এখন বা মনন করিলে হৃদয় পরাণুল  
ধরারের সোণিত উক হইয়া উঠে।  
আজি ৪।২ দিন ঐ নীলপ্রভৃতি হস্তিপুটে  
আব্রোহণ বিয়া প্রাঃ ১ খান মাজল  
এবং কতক লারিয়ারল নগদী সঙ্গে করিয়া  
কোত্র পক্ষে ৩২৭ বরিহুছেন। প্রথমদিন  
৩২৭ নীল তন্য নদ স্থানে বাইয়া প্রজাদের  
সমুদায় ১২৩৩ মাজল দিতে ও নীলবীজ  
হুগাইতে আদেশ দিলেন। তৎকরণে তৎক্ষণ  
অগ্রাষ্ট হটল। প্রজারা ইতিপূর্বে যে সকল  
ভূমিতে অন্যান্য অন্য রোপণ করিয়াছেন

হটল। যে সকল প্রজা সাহস মাত্র সহায়  
করিয়। আপন আপন ভূমি রক্ষা করিতে আ-  
নিয়াছিল তাহার। বিলক্ষণ শাস্তি পাইল।  
অনেকে গুরুতর আঘাত প্রাপ্ত হইল।  
“হা কিছু ১ আমি একটি লিখিতে ফুলিয়া  
গিয়াছিলাম। নীল কর্মচারীরা এইরূপ অ-  
ত্যাচার করিবে পূর্বেই প্রজারা তাহা জানি-  
তে পারিয়াছিল এবং অত্রতা অবশ্যে বাজি  
ট্টেটের নিকটস্থ হইয়া ব্রাহ্মসমাজ করিয়াছিল  
যে আমাদের নীলচাষ করিতে কোন ক্রমে  
ইচ্ছা নাই। কিন্তু ক্রমিতেছি নজিরুলি খাঁর  
নীলকর্মচারীরা জোর করিয়া আমাদের  
ভূমিতে নীল বুনিয়াদি করিবেন এবং তৎপ-  
ক্ষে দাঙ্গা হইবারও সম্ভাবনা আছে। অত-  
এব খাহাতে আমাদের ভূমিতে নীল বুনিতে  
না পারে ও দাঙ্গা না হয়, আপনি তাহার  
উপায় বিধান করুন। প্রবৃদ্ধি মাজিষ্ট্রেট  
মাঠেন তাহাতে এইরূপ ভয় ছিলেন যে  
আমি নীলের কিছুই করিতে পারি না, কা-  
হাকে নীল বুনিতে বলিতে ও পারি না এবং  
কাহাকে নিবারণ করিতে ও পারি না। তবে  
দাঙ্গা নিবারণ জন্য পুলিশের লোক পাঠাইয়া  
দিতেছি। তিনি বিবাদস্থলে উপস্থিত থা-  
কিয়া দাঙ্গা নিবারণ করিবার জন্য দারোগা  
পথওয়ার্ড দিলেন। দারোগা স্বয়ং তথায়  
হাইগেন না। অবশ্যে দিতে রহিলেন। দারোগা  
দারোগা (পোলাকে) পাঠাইয়া দিলেন  
দীন প্রজাদিগের সর্বস্ব ও অক্ষপাত দে-  
খিয়া অস্তঃকরণে একটি দমার সঞ্চয়  
বর্তমান পুলিশকর্মচারীদিগের মধ্যে একপ  
লোক আস্তি বিলল। নাবেন দারোগা দে  
সাক্ষার জন বাজার হস্ত কারতে



এইতে লাগিল তাহা দেখিয়াও দেখিলেন না। কিন্তু কাকুত প্রকৃতির ফেরে যখন লাগিল, তখন গেল, প্রজারা অক্ষমুখে আপন আপন ফেরের উপর নয়ন করিয়া পড়িল, অমনি নারের দারোগা আপন অশ্রুচর দ্বারা তাহা দৃষ্টি তাকাত করিয়া দিতে লাগিলেন। তখন নারের দারোগা প্রজাদিগের বিরুদ্ধে দুই একটি মিথ্যা রিপোর্ট করিতে লাগিলেন। ফলতঃ পুলিশ মোতারের থাকিতে প্রজাদিগের অধিকতর সর্জনশ ও নজিরালির পৌরস্বাস হইয়া উঠিল। নীল কর্মচারীরা পর দিন উক্ত প্রকারে জাগ্রত হইয়া প্রজাদিগের সর্জনশ করিয়া আসিয়াছেন। এত কালে এক এক দিন এক এক গ্রামে ঘাইয়া পাকড়াইয়া আসিতেছেন। খামাখরা নারের দারোগা সর্বত্রই সঙ্গে সঙ্গে ঘাইতেছেন। নীল দারোগারা যে কত দিনের পর কত গ্রাম দুর দুর করিয়া আস্ত হইবেন তাহা এখন বলিতে পারি না।

কি চরমকার বাপাস। বিচার স্থানের চুপে চুপে ক্রেশমধমধমাই একজন সামান্য জমিদারের সাক্ষ্যে অকৃতোত্তরে বংশধরোনাতি অত্যাচার করিতেছে। আমি তাহাদের সাহসকে ভগ্ন করিয়া দিলাম। অত্যাচারিতরা ও আমার অঙ্গ সাধবাদের আশ্রয় নহেন। দুই তিন ক্রেশমের ভিতরে যে সকল জরাজীর্ণ কাণ্ড লক্ষিত হইল তাহা নিবারণ করিতে ও যথার্থ অবগত হইতে সমর্থ হইতেছেন না। আর কিম্বদন্তি বা ঐতর্যাস্য প্রায় এক জন নারের দারোগার নিবৃত্ত হইতে লাগিলেন ও যথার্থ সমস্ত প্রাপ্তি বন্দন আসা কব ঘাইতে পারে না। এমন স্থান নানা প্রকারে ভেদপূর্ণ জিজ্ঞাসে টানে প্রদত্ত বলা হইতেছিল। এখন অনেক সময় আস্ত গলে নে পারি গিয়া তাহার কি বলা যায়। আস্ত গলে হার অপেক্ষায় রহিলাম।

শ্রীমত বর্গ বিবেচনা করিয়া দেখুন যে, কাকুত প্রকৃতি সাহেব বেতন কম দিয়াছেন তাহা কেন? যুক্তিযুক্ত হইয়াছে? তিনি কি যুক্তিতে বলিলেন আমি নীলের বিষয়ে কিছুই বলিতে পারি না। অত্যাচার নিবারণ দর, কি

মিগের সর্জনশ? অত্যাচার অপরের ভূমিতে জোর করিয়া সর্জনশ রোপণ করে তাহা কি অত্যাচার নহে? নীল পূর্বক প্রজাদের অমতে কেহ নীল বুলিতে হইবে দারোগাকে এক পয়সাও দান। কেওয়াই? চিত্ত ছিল। তাহা হইলে একপয়সা নীল দারোগা বেতন অত্যাচার করিতেছে নেকপ করিবার বচ পক্ষ গাইত না অথবা সকলই করিতে সক্ষম হইত, এই নারের দারোগার উপরেই এই কার্যের ভার পড়িত।

মেদিনীপুর ১৩ই মে।

আজি কালি কেমন হইয়াছে, “অত্যাচার অত্যাচার” এই শব্দ অবিরত শ্রুতিগোচর হইতেছে। যেখানে এক পক্ষে জম ও অপর পক্ষে মূল্যবান বিনিয়োগ সম্বন্ধ, সেইখানেই অত্যাচার। নীল করের ত অত্যাচারকারী বলিয়া লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ হইয়াছেন। তা করের ও নীলকর দিগের অত্যাচারকারিতাজনিত কীর্তির অংশগ্রাহী হইয়াছেন। হরকরার নিজ পত্রপ্রেরক বেহারের অধিকেনকুবিবাসপুত্র বালিদিগের প্রতি কৃত অত্যাচার হুজুর লইয়া তুলুলকাণ্ড করিয়া তুলিয়াছেন। আমাদিগের মৃতন লেপেন্ট গবর্ণর নীডন সাহেব উহার অনুমোদন ও নিবারণ চেষ্টা দ্বারা মৃতন লক্ষ নিজ পদের গৌরব বর্ধনে উদ্যত হইয়াছেন। আমাদিগের পত্র প্রেরকেরাও নিশ্চিন্ত নহেন। কোন স্থানে কে কি অত্যাচার করিতেছে, সতত তাহার অনুমোদন করিয়া প্রকাশ করিয়া দিতেছেন।

একজন এই প্রকার উপস্থিত হইতেছে এখন বাকপুরুষদিগকে অত্যাচার নিবারণ বিষয়ে সমগ্রিক যত্নশীল দেখা যাইতেছে, প্রজাদের উহার নিবারণ হইবে, তাহা নহে। দিন দিন উহার হুজুর হইতে লাগিল। ইহার কারণ কি? এখনকার শব্দ কি অত্যাচারকারী হইয়াছে? অথবা, প্রজাদিগের অধিক

হইতেছে, তাহাদিগের অনুভবশালিতা শক্তি অধিকতর বর্ধিত হইয়াছে? পূর্বে অত্যাচারকারী ছিল না, এখনকার লোকেরাই অত্যাচারকারী হইয়াছে, এ অতি অকিঞ্চিৎকর বাক্য। কালভেদে অনুভবশালিতার তারতম্য হইয়াছে, এ কথাও প্রোতব্য নহে। তবে যে এখন অন্য কৃত অত্যাচার বাক্য অহরহঃ আমাদিগের শ্রুতি মূলের উত্তেজিত হইতেছে, তাহার একটি বিশিষ্ট কারণ উপস্থিত লক্ষিত হইতেছে। পূর্বে দুর্বলেরা মনে করিত প্রবল দিগের অত্যাচার সহ্য করিবার নিমিত্তই তাহাদিগের জয় লাভ হইয়াছে। সুতরাং তাহারা পূর্বে অত্যাচারকে অত্যাচার বলিয়া জ্ঞান করিত না, যাচার মনে তাহা বুলিতে পারিত, তাহার ও ভয়ে তাহা বাক্য করিতে পারিত না। এখন আর অত্যাচার স্বনামীল ব্যক্তিদিগের সে অবস্থা নাই। এখন অত্যাচারকে অত্যাচার বলিয়া তাহাদিগের জ্ঞান উজ্জ্বল হইয়াছে এবং সেই অত্যাচার বাক্য প্রচার করিয়া দিবার ও আর হাদ্ধন বাধা নাই। তদ্বিবন্ধনই “অত্যাচার অত্যাচার” এই শব্দ আর কখন আমাদিগের শ্রুতি মূলে বিদ্যমান হইতেছে।

যদিও দেখা যাইতেছে, তাহাও কোন কালে ওকপ বেধ হইতেছে না যে অত্যাচারপ্রভৃতি শীঘ্র রুদ্ধ হইবে। যাহা সেই অত্যাচার সমাক্ষেপে নিবৃত্ত হইতেছে, তাহা দুর্বলদিগের জ্ঞান চক্ষু উজ্জীলন সিদ্ধ হইয়াছে সমাক্ষেপ হইবে। দুর্বলদিগের এই অবস্থা সর্জন করিয়া বাকবজা বর্ণিত প্রজাদের অসহ্য আমাদিগের প্রতিপক্ষে অধিকতর হইতেছে। বাকবলে বলে, উহার আদর্শ হইবে, ইহা নামক উদ্যানে প্রাপ্তি দিলেন এবং এতদ্যান অধ্যাহিত কাল সমস্ত অসহ্য রুদ্ধ করিলে করিতে নি

হুকের কল তখনই করিয়াছিলেন, তিনি মহাজুখী ছিলেন, যখন কাল কল নিতে পারিলেন, তখনই বিপাকে পড়িলেন, পোক মোহানি আসিয়া তাঁহাকে আক্রমণ করিল, তিনি বর্গসমূহ ইড়েন উঠতে গেলেন। দুইজন কলকদি এখন স্থানান্তর অবশিষ্ট আছে। ইতি হইলেই সর্বাপুণ হয়।

অতঃপর গবর্ণমেন্টের রাজস্ব  
বটিক অবতার জীবিত

আমাদিগের বর্তমান রাজস্ববিধ কৰ্ম সমন্বয় লেও সাহেব রাজস্ব সংগ্রহ প্রথমতঃ কার্য্য কারকের পক্ষে হইবে। অবাধে না হইবে ছুটে বসেন কার্য্য করিলেন। তাঁহার পুনর্বার মগন সমস্ত উপস্থিত হইল। তিনি প্রথম অধীক হইয়াছেন, তৎপর করিলেন এখন তৎপর গণনা করা আশীষ হইতেছে না। তিনি যে কুতকায্য করিলেন, তাহাও বিস্ময় নাই। বিজ্ঞান পূর্ব অবধি অত্যা গবর্ণমেন্ট আয়ের পাতা ও বাতের আধিক্য নিবন্ধন কষ্ট হইতেছিল। লেও সাহেবের যত্নে সে দুরীভূত হইয়াছে। তিনি আমাদিগের উদ্ভূত অর্থ দেখাইয়াছেন। তিনি ১৮৬৩ অব্দের আয় বাখ হিসাব মধ্যে প্রথম সংক্রান্ত যে আয় অনুমান করিয়াছেন, তাহাও অতিক্রমের অনিষ্ট হইবে না। তাহা আমাদিগের যাত্বে সন্দেহ নাই, তথাপি গবর্ণমেন্টকে পুনর্বার পূর্বের অর্থকক্ষে পূর্ণিত হইতে হইবে না, তাহা সুস্পষ্ট বোধগম্য হইতেছে।

লেও সাহেব অর্থ কল্পে দুই করিবার উপায় অবলম্বন করিয়াছেন। আনন্দকিন সকল বিষয়েই অত্যা গবর্ণমেন্টের নবাবী কাণ্ড দেখিতেছিল। কোম্পানিরই শৃঙ্খলা ছিল না। শৃঙ্খলা না থাকাতে আয় কষ্টক সম্ভব হইবার সম্ভাবনা নাই। লেও সাহেব ক্রমে বাবতী

ডিপার্টমেন্টের বাবতীর কার্য্য শৃঙ্খলাবদ্ধ করিতে উদ্যত হইয়াছেন। অন্য অন্য ডিপার্টমেন্টে অপেক্ষা করাকালানধি কিম্বা নিরাল ডিপার্টমেন্টে অধিকতর বিশৃঙ্খলা ছিল। উহার বিশৃঙ্খলা নিবন্ধন অধিকতর অনিষ্টও ঘটতেছিল। লেও সাহেব উহার সংশোধন বিষয়ে মনোনিবেশ করিয়াছেন। ১৩ই মের গবর্ণমেন্টের এডিক্সা এডবিষয়ে সাক্ষাৎ করিতেছে।

এতদিন মিডল সার্জেন্টরাই এই ডিপার্টমেন্টী গ্রাস করিয়া রাখিয়াছিলেন। তাহাদিগের একচেটিয়া ছিল বলিয়া ইহার কাজও সুন্দররূপে সম্পন্ন হইতেছিল না। লেও সাহেব এই মোহের সংশোধনার্থ এই ডিপার্টমেন্টের কর্মচারিদিগের জেনি বিভাগ করিয়াছেন। উক্ত জেনি সহকারি কর্মচারিদিগের ১৫০০ অবধি ২০০০ এবং নীচ জেনিদিগের ৪০০ অবধি ৭০০ টাকা পর্য্যন্ত বেতন হইবে। লেও সাহেব আর একটি মহৎপকারক কার্য্য করিয়াছেন। এই ডিপার্টমেন্টের নিমিত্ত কতকগুলি কর্মচারি প্রকৃত জরিবার উপায় করা হইয়াছে। শিক্ষার্থিদিগের ২৫০ টাকা পর্য্যন্ত বেতন হইবে। প্রস্তাবিত ডিপার্টমেন্টে কর্মচারি নিয়োগ কালে চিত্রিত ও অচিত্রিত এবং জাতি, ধর্ম ও লিংগ ভেদ বিচার থাকিবে না। যাহা কার্য্যকর বাস্তবিক হইবার অনুসরণ করা হইবে। এটি একটি অননুপ উপকারক। এদেশীয়দিগকে যাহা সুনিশ্চিত করিয়া লওয়া হইবে গবর্ণমেন্ট প্রদানের কার্য্য সাধন হইবে। হইবেন। এদেশীয়রা ৭ টি মাস ১২ হইবে। আপ আমাদিগের বুদ্ধিবৃত্তির ও ক্রমতঃ পরিচয় দানে বাধ্য হইবেন। এদেশীয়দিগকে সুনিশ্চিত করিয়া কর্ম দিবার অর্থাৎ যাহা বাবতীর ডিপার্টমেন্টে প্রবর্তিত হয় কেবল যে বাব সংশোধন হইয়া অর্থের সম্ভল হইবে একপ মতে, গবর্ণমেন্ট ও এদেশীয়দিগের হৃদয় অনুপ্রাণিত হইবেন।

বিজ্ঞানের পর বহুতমসর বা... রকড। বিধান প্রচার হইয়াছে। প্রকৃত কর্মসামান্য হইবে, তৎকালে লার্ড ক্যানিং এই উপায় অবলম্বন করিবারই অনুরোধ করিয়াছিলেন। মর চারলস ট্রিবিয়াল মেরও ইহা প্রচার অনুমোদিত। উইলসন সাহেব ইহা প্রচার না হইয়া যদি এই উপায় অবলম্বন করিতেন, ইমকম ঠান্ডা প্রবর্তিত করিয়া লোককে অনুবৃত্ত করিবার প্রয়োজন হইত না।

১৮৬৩ অব্দের ১০ আইন

তৎপর্ব্বীয় সভা উক্ত আইনের সংশোধন প্রসঙ্গ লইয়া আপনাদিগের অতি প্রেত সংশোধন প্রচার করিয়া বন্দোবস্তি ববস্থাপক সভায় যে আবেদন পত্র প্রদান করেন, কয়েক সপ্তাহ হইল, তাহাও এক্ষণে আমাদিগের সম্মুখে পুঙ্খিত্তি হইয়াছে। আমাদিগেরও এই বিষয়ে কিছু বলিবার ইচ্ছা ও এডিক্সা আছে। লেও সাহেব উক্ত আইনের সংশোধন প্রচার করেন, তাঁহার এ সেন্সনে সন্তোষ করিবার কাজ করিয়া বিজ্ঞান করিতেছেন। তাঁহাদিগের কৃত পরিবর্তন এবং তারতবর্ষীয় সভায় পরিবর্তন প্রচার বিজ্ঞান ও যুক্তি সমস্ত হইয়াছে কি না, তাহা বিবেচিত হইতেছে।

১৮৫৯ অব্দের ১০ আইন বিধিবদ্ধ হইবার পূর্বে যাহারা এজার এডি জমীদারিদিগের ইহার বাবতার দর্শন করিয়াছিলেন এবং এই আইন বিধিবদ্ধ হইলে পর জমীদার ও এজা উভয়ের সমস্ত দর্শন করিয়াছেন, তাহাদিগের চিত্ত উহার পরিবর্তন সম্বন্ধে প্রবণ করিয়া চমকিত হইয়া উঠিবে সন্দেহ নাই। উহা দ্বারা কেবল এজাদিগের স্বত্ব ও অধিকার বিনষ্ট হইয়াছে। একপ মতে, জমীদারদিগের অধিকার দুবিধ। ও উন্নতি নিবন্ধন হইবে। পূর্বে নিম্ন পক্ষ ও সপ্তমের প্রেত ও



আমরা এই শব্দের একখানি সুত  
 তক গ্রন্থ ইহারি : ইহা আমাদি  
 হারের প্রকৃত কৌতুহল জন্মাইয়া দিতে  
 ইহাতে সাপের ভুট্টের ও ভাইনের  
 গোল্ডি অনেক গুলি বস্তু আছে।  
 গুলির যেমন ছন্দ, তেমনি রচনা, কে  
 তাই ও তেমনি - কোন অংশ

মোহন দত্ত: কোকসডি, বাতাসি স্পষ্ট



ল ৩৭২ তি অষ্টম। গালটে কোর্সে বার বিখ্যাত  
কর্তব্যে কেম কোম বিদ্যাকর্মসং, চিত্তাভি  
বল ১৫ই, ইজল উৎকৃষ্ট, মোড়াচিহ্নি সং  
১৫১৫ সোনাটিতি, কালচিহ্নি কুখরিহ্নি, কম  
কোন কোন সাপ খাইলে বিদ্য চুম্বোবে খো-  
১৫ কাডম, উচ্চ বিদ্যায় পিতা, বার বিদ্য  
তেষে টিক বিদ্য তোমর দিগেইবে বা কুধে  
নাহু।—

এই প্রত্যাদ লিখন সাপ হইলে পর এ  
লখে ডাইন প্রভৃতি আছে বলিয়া বিশ্বাস  
কাজে কত অনিষ্ট ঘটতেছে, হাতে হা  
তাই আমরা তাহার এক উদাহরণ পাইলা  
। ডাইন বলিয়া কপী নামে একটি জীলো  
কর প্রাণ বধ করা হইয়াছে। সমর রি  
পোর্ট দ্বারা জানা গেল, কপীর প্রতিবেশী  
এক ব্যক্তির পীড়া হইলে কোন কাপে তা  
হার পীড়া শাস্তি না হওরূতে সকলে ক  
ইল কপী ডাইন তাহাকে খাইয়াছে, তন্নি  
মন্তই তাহার পীড়া ভাল হইতেছে না।  
এ কথা সুনির্দিষ্টতার দ্বারা তাহাকে এস  
নির্ধারণ প্রহার করে যে সে তাহাতেই  
গাণ্ডা করিয়াছে।

—

লোপেনটে গবর্নর এন্টি সাংকন ও

নীলকর মাক অপর।

লক্ষীপাড়া নীলকুঠীর সহকারী কাষা  
লক্ষ্যক জন মাক অর্থর সাহেব অথবা  
নীলকর সভা গত লেপ্টেনেন্ট গবর্নর জন  
পট্টর এন্টি সাহেবের নামে সুপ্রিম কো  
র্ট যে অভিযোগ করেন, তাহাতে প্রধান  
বিচারপতি সর বার্নেস পিকের সাহেব  
এন্টি সাহেবের এক টাকা দণ্ড করিয়া  
ছেন। গত বারে এ সমাচার পত্রিকার  
প্রচার করা হইয়াছে।

সবু মর্ডাটে ওয়েলস সাহেব লর সা  
হেবের মকদ্দমায় যে মঞ্জুরা দেন, তাহা  
জব্বের স্বাধীনতার আঘাত করে, এ  
বারে সর বার্নেস পিকের অজ্ঞা রাক  
কর্মচারিদিগের আধানবানিতার বাঘাত  
করিয়াছে। পাঠকগণ আগে অভিযোগ  
প্রণীত প্রবণ করুন। উল্লিখিত কর্মীর

অধীন প্রজাদিগের সহিত একত্র কুঠীর  
কর্মচারিদিগের বিবাহ হয়। প্রজাগণের  
সহিত বিরোধকালে কুঠীর কর্মচারীরা  
যত ন্যায়ানুগত ও বৈধ ব্যবহার করি  
থাকেন, তাহা আমাদিগের পাঠকগণের  
অবিদিত নাই। বিবাহের পর মদীয়ার  
কমিসনর লসিঙটন সাহেব এই রিপোর্ট  
করেন, তাঁহার এইরূপ বিশ্বাস জন্মিয়াছে  
যে উপস্থিত বিবাহে কুঠীর সহকারী কর্ম  
চারী মাক অর্থর সাহেবের সহকারিতা  
আছে। পক্ষীয় এককদমঃ সমর আদা  
লতে গার। অভিচার কারী বলিয়া যে যে  
ব্যক্তির নামে অভিযোগ হয়, সমরের জ  
জেরা সাক্ষিবাক্যে অনেক দর্শন করিয়া  
তাহা দিগকে মুক্ত করিয়া দেন। এন্টি সা  
হেবের অপরাধ এই, বাচাল গবর্নমেন্টের  
যে সকল কাগজ পত্র একত্র সংগৃহীত হই  
য়া পুস্তকাকারে মুদ্রিত হয়, লসিঙটন সা  
হেবের উল্লিখিত রিপোর্ট তন্মধ্যে প্রচারিত  
হইয়াছে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর পুস্তক মুদ্রণ  
কালে তাহা পরিত্যাগ করেন নাই।

সুপ্রীম কোর্টের প্রধান বিচার পতি যে  
যুক্তি অবলম্বন করিয়া মঞ্জুরা প্রধান  
করেন, তাহাও পাঠকগণের অগোচর রাখা  
বিধেয় হইতেছে ন। তাঁহার অভিপ্রেত  
যুক্তি এই, রাজকর্ম চারিদিগের আপন  
এসাহার মতব্য যে সকল ঘটনা হয়, তাহা  
উপরি পদস্থ ব্যক্তিদিগের গোচর করি  
বার বিষয়ে তাঁহাদিগের অধিকার আছে।  
কিন্তু যাহাতে ব্যক্তিবিদ্বেষের নিন্দা হয়,  
রাজকর্মচারিদিগের বিজ্ঞাপিত তেমন বি  
বধ প্রকাশ করা বিধেয় নহে। তাহাশ বিষয়  
হাউস অব কমন্সের আজ্ঞানুসারে প্রকাশিত  
হইলেও প্রচারকারিকে মঞ্জুরা হইতে  
হবে। উপস্থিত বিষয়ে মাক অর্থরের  
নিন্দা মুদ্রক বাক্য প্রকাশ করা হইয়াছে।  
সমবেদ্য কর্মদিগের মতে তাহা সম্প্রমাণ  
হয় নহে।

লওসাং বের নামে অভিযোগ আর  
উপস্থিত অভিযোগ এতটাই নিতান্ত অপ্রা

হ্য। কিন্তু সুপ্রিম কোর্টের জজেরা হই  
আব্য করিয়া কেবল আপনাদিগের চি  
মোর্বল্যের পরিচর দিয়াছেন এবং ন  
সুপ্রীম কোর্টের বিচার যে সময়ে সম  
বিভবনা মাত্র হয়, তাহারও পরিচর বেও  
হইয়াছে। যদি যুক্তি করিয়া বিবেচনা ক  
বার যে ব্যক্তি বাস্তবিক নির্দোষ, যদি কে  
বিদ্বেষ বশতঃ তাহার অনিষ্ট করিবার  
দেখে মিথ্যা অপবাদ প্রচার করে  
অপবাদকারী মঞ্জুরা হয় সন্দেহ নাই  
আম যাহার বাস্তবিক দোষ আছে, যদি  
কেও তাহার অপবাদ করে, তাহার দো  
পূরণ হইবে না হউক অপবাদকারী ম  
নোষ হইতে পারে না। কিন্তু আইনে ই  
র বিপরীত বলে, বাস্তবিক দোষীর অ  
বাদকারীও দোষ প্রমাণ করিয়া দিতে ন  
পারিলে মঞ্জুরা হয়। অন্য অকারণে  
কের অপবাদ দেব বলিয়াই এই আই  
দোষ জন্মিয়াছে। কিন্তু রাজকর্মচারি  
গের বিষয়ে ঠিক এইরূপ হয় না। তাঁ  
রা দোষী ব্যক্তির দোষের প্রমাণগত বৈ  
ল্য দর্শন করিলেও মকদ্দমার আনুপূর্বি  
যাবতীর হুজুখ আলোচনা করিয়া তাঁ  
দিগের যেকোন সন্দেহ কমে, তাঁহার  
তাহা প্রচার করিতে পারেন। তাঁহার  
গের এ অধিকার না থাকিলে আপী  
বিদি বিকল হইয়া যায়। জজেরা আপ  
নের মকদ্দমায় যদি নিম্ন পদস্থ ডেপু  
মার্জিস্ট্রেট প্রচার সংস্কারের কথা  
চার করেন, তাঁহাও কি মঞ্জুরা হইবেন  
উপস্থিত স্থলে তাহাই ঘটিয়াছে। লেপ  
নট গবর্নর অনোর সংস্কার বিষয়ে প্রচা  
করিয়া দিয়াছেন। বিশেষতঃ আইনে কে  
হইলেও যখন বিচারপতি মুক্তিতে পারে  
অপবাদকারীর অতিসঙ্কট হইবে, তখন  
দণ্ড করা হি ন্যায়ানুগত হয়। সমর আ  
নের অফরার্থের অনুসরণ করা সুপ্র  
বিচারকর্তব্য কর্তব্য নহে। সমর  
দোষীর দোষ কি প্রমাণ হয়, বা  
বিক মাক অর্থর উল্লিখিত দোষে নি





অন্য সকলেই বহুবান হওয়া উচিত । সকলে আগে মুসলমানদিগকে আলবোলা ছাড়াই-বার চেষ্টা করুন, পক্ষাৎ লেখা পড়া লিখাই-বেন ।

দ্বিতীয় গেজেট সম্পাদক বলেন কিলমে ই বে অপরাধ ৫৪০ খণ্ডিকার সময় কুখিলাপ হইয়া গিয়াছে ।

হিন্দুগেট্টোর সম্পাদক অনিরাহেন, কানিং কণ্ডে ৪৩৭০ টাকা আদায় হইয়াছে ।

জনা পেল শোণ মন্ডের সেতু নির্মাণ সম্পন্ন হইয়াছে ।

অন্যতর ইউরোপীয় সমাচার পত্রে দৃষ্ট হইল পূর্বেকিন্তু নামে এক স্থানের এক কারখানার একটি চোং কাটিয়া আর ২০ জন লোক দ্বারা গিয়াছে ।

বীরভূমের অন্তঃপাতী কুওলা হটতে এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, তথায় এক জন তরু সস্তান ৩০ টাকা পণ লইয়া পাচ মাসের একটী কন্যার বিয়া দিয়াছেন । কন্যা ক্রম বিক্রয় প্রথা ও বাল্য বিবাহ উভয়ই ন, তখন একপ ঘটনা বিস্ময়

#### ৮ ই জ্যৈষ্ঠ মঙ্গলবার ।

আলেক জগদার মোড়ার নামে এক ব্যক্তি কিলিক পত্রে লিখিয়াছেন যে তিনি পূর্বে সব আসিষ্টাণ্ট সর্জন ছিলেন কিন্তু উপাধি লাভের নিমিত্ত বিলাতে পরীক্ষা দিতে গমন করেন, পক্ষীকোত্তীর্ণ হইয়া প্রত্যগমন করিয়াছেন, একপে ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে তাঁহাকে সেই কর্ম আবার দিতে চাহিয়া ছিলেন কিন্তু তিনি তাঙ্গ প্রত্যাখ্য করেন নাই ।

টাইবুস এক ইণ্ডিয়া সম্পাদক সমাচার পাইয়াছেন যে লাভ কানিং আলেক জগদার হইতে ২২এ এপ্রেল মারসেলিক নগরে বাক্স করিয়াছেন । এই স্থানে আউটবাম লাইব্রেরি সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইয়াছিল ।

হাজার হইতে বেপুয় পঞ্চম বাল্যগণকট চলিতে আরম্ভ হইয়াছে ।

কিলিক পত্রে নামে এক জন আকিসর খণ্ডিকার লিখিয়া দ্বারা মাল্লব মরে কি না এই প্রশ্নের উত্তর দিয়া দ্বিতীয় নং নামে এক

ভূত্যের গায়ে লোপ দিয়া গুলি করেন । প্রথম গুলিতে কিছু হয় নাই কিন্তু দ্বিতীয়বার এই রূপ গুলি করিতে তাহার পায়ের আশিষ্য আঘাত লাগে গুলিকে প কর্তার অপরাধের বিচার হইয়া ৩ মাসের কারাবাসের আজ্ঞা হইয়াছে । কিন্তু বিচার পত্রে প্রাণ সেন পতি কমা করেন এই অভিযোগ করিয়াছিলেন । সেনাপতি কমা না করিয়া কহিয়াছেন বখোঁচিৎ মণ্ড হয় নাই । পতীকার জন্য ৫ তারুণ গর্ভিত কর্তৃক করা সত্যি অসত্যি হইয়াছে । গুলি পায়ের না লাগিয়া ঢকে দিগ রূপে লাগিলে প্রাণ মালের প্রাণবন ছিল । আকিসরদিগের অনেকেই প্রায় এই রূপে বুদ্ধি হন ।

#### ৯ ই জ্যৈষ্ঠ বুধবার ।

হরকরা সম্পাদক ম্যাকে সাহেবের নামে অপবাদ লিখিয়া ছিলেন বলিয়া ম্যাকে সাহেব তাঁহাকে উকীল দ্বারা লিখিয়া পাঠাইয়াছেন যে তিনি নিজ অপবাদ কালন না করেন, তাঁহার নামে অবিলম্বে সুপ্রিম কোর্টে অভিযোগ হইবে । এইবারে হরকরার সাহসিকতা ও সত্যবাদ সৎগ্রহ করিবার পরচয় হইবে ।

কিলিক সম্পাদক কছেন, গবর্ণমেন্টের রাজস্ব ও বিচার সৎপ্রাণ অচিরিত কর্মচারিরা এই বলিয়া গবর্ণমেন্টে আবেদন করিবেন যে তাঁহাদিগের ৭০০ টাকার অধিক বেতন নাই, কিন্তু ইউরোপীয়দিগের তুল্য কর্ম করিয়া থাকেন, তবে ইউরোপীয়দিগের অধিক এবং তাঁহাদিগের কম কেন ? গবর্ণমেন্টে বিদ্যালয়ের নিককেরাও কেন এই সঙ্গে যোগ দিল না । বোম্বাই নগরে সর বাটল দ্বিয়ার নিয়ম করিয়াছেন, বঁহাদের পায়ে বোম্বা আছে তাঁহারা লম্বা পায়ুকা লইয়া গবর্ণমেন্টে বাটীতে আসিতে পারিছেন, কিন্তু বঁহারা বোম্বা ব্যবহার না করেন, তাঁহাদিগকে জুতা খুলিয়া আসিতে হইবে । এ কথা বড় মন্দ হয় নাই । মন এক বঁহা পত্রিকার হয় না ।

স্টারভে রিভিউ সম্পাদক কছেন, পাশ্চাত্য চক্ষে নিশ্চিত সমাচার পাওয়া গিয়াছে । মাক্সিম জা নামে ইলাটে একজন রাজা আছেন । তিনি সমুদায় আকর্ষণ স্থান তরু করিবার নিমিত্ত একান্ত অভিলানী হইয়াছেন ।

এ ব্যক্তি আপন টসনা লইয়া করানগর অধিকার করিয়াছেন । তিনি পারস্য রাজ্য হটতে অনেক সাক্ষ্য পাইয়াছেন ।

ইংলিসমান সম্পাদক কছেন নেপাল দ্বারা হটতে গণ্ডার করিমপুরকে এই পলি লেখা হইয়াছিল যে এক জন গুরুপা নেপাল হটেতে পলায়ন করিয়া ব্রিটিশরাজ্যে আসিব চেষ্টা করিতে তাহাকে ধৃত করিয়া প্রেরণ করা হয় । করিমপুর সাহেব কোন উদ্দেশ্যে ন করিয়া তাহাকে টানা পাঠাইয়া দিয়াছেন বলিয়া গবর্ণমেন্ট প্রতি আশিষ্য সন্তোষ প্রকাশ করে ।

১৪ নং খা হাইদা, মন মের মনে কে এদেশে বিদ্রোহ কালে গণত্যাগ করেন তাহাদিগের স্মরণার্থ কটল এক কীর্তি স্তম্ভ নির্মিত হইতেছে ।

কর্ম এগজামিনার সম্পাদক কছেন, লাতিন মিস র্যাটরিক নামে একটি জীলোক রাষ্ট্রে অবদান করিতেছিলেন এমন সময় মসাদিগে এখি লাগিয়া সকল কর্ম হইয়া গিয়াছে । তিনি ও ভালগ্রানে পতিত হইয়াছেন । তিনি যেমন রূপবতী তেমনই গুণবতী ছিলেন, তাত্ত্ব চুৎবেদ মদান ।

হরকরার লগনের সৎবাদবাতা কছেন নীলদগুণ পুনর্বার মুদ্রিত হইয়াছে । এবার কি লসোঁহেবকে জেলে বাইতে হইবে ?

হরকরা সম্পাদক কছেন হংলওধরী মেধ করিয়া দিয়াছেন এ বৎসর তাঁহার জাতি উপলক্ষে সোমারোহ না হয় । উচিত আজ্ঞা হইয়াছে ।

#### ১০ ই জ্যৈষ্ঠ রহস্যতিথার ।

কিলিক সম্পাদক অনিরাহেন, লেং মেব পীড়ার জন্য হর মাসের বিচার পাইয়াছেন । তবে তাঁহার বিলাত বাটবান বিলম্ব নাই ।

উক্ত সম্পাদক বলেন লেং সাহেব প্রত্য বর্ষন কালে বিলাতের বিশ্ববিদ্যালয় হটতে কর্মচারী সকলকে সঙ্গে লইয়া আনিবেন । যদি সত্য হয়, তাঁহার এখানে লোক প্রেরণ করিবার চেষ্টার সহিত এ ব্যবহারের বিবেচনা হইতেছে ।

লাহার, মুখিয়ার বেরিলি ও আসা

বাসে অতিশয় ব্যস্ত হইয়া অত্যন্ত কষ্ট হই  
যায়। যত্নের ছাতি পরিত্যক্ত হইয়া গিয়াছে।

নিম্নোক্তকর্তৃক লাহোরের সংবাদদাতা  
কছেন রাজ্যে যথেষ্ট কষ্টপূর্ণ প্রেরণ করা  
হইতেছে।

ইংলিসমান সম্পাদক কছেন ২৫ মূল্য  
পত্রিকার টাকার অনেক ওলাউঠার আশ  
ভাগ করিতেছে। এবার অনেক স্থানে বড়

ওলাউঠার প্রভুত্ব বর্জ্য শুনা হইতে  
ছে। এক ব্যক্তি আমানতের নিকট কলি  
চাকার অন্তঃপাতি মানিকগঞ্জ অতিশয় ও  
লাইঠা হইয়াছে।

৭তম দিন বুলনর সাহেব আরোহণ সাক্ষ  
র্য করেন তত দিন বেককরন সাহেব কলি  
কতা ছোট আমানতের প্রথম প্রেরণ কর  
করিবেন।

সিউনকার সাহেব নিজামতে অতিরিক্ত  
জরত হইয়াছেন। মীলকরেরা যে চূপ করিয়া  
আছেন।

একজন রাজকীয়ান দুই কতাব বোটক  
পকটে বোজিত করিয়া চালাইতেছিল, পুলি  
সে তাহার ও টাকার জরিমানা হইয়াছে। প  
স্তুর প্রতি নির্ভর ব্যবহার নিবারণী সভা তখন  
কর্ম করিতেছেন।

৫ ও ৬ অক্টোবর সম্পাদক কছেন বুলিসে  
২০০০ লোক ওলাউঠার দ্বারা পড়িয়াছে।  
সম্মানকারী লোক সংখ্যা বিবেচনা করিলে সে  
খানে লোক নাই বলিলে হয়।

উক্ত সম্পাদক আরো কছেন বিজয় প  
স্তুর রাজ্য এক পথ নির্ভর্য তম্য ৫০,০০  
টাকা দিয়াছেন। এই শুদ্ধ বার।

উক্ত সম্পাদক অনিয়াছেন লাউ কানিং  
গরন কালে যে জাহাজে বান, তাহা পথে  
হয় হইয়াছে অন্য এক জাহাজ দ্বারা গমন  
করিতে হইয়াছে।

১১ই ইয়াত শুক্রবার।

সমর মেন সাহেব সূত রিটি সাহেবের ক  
র্ম নিবৃত্ত হইয়াছেন।

সত মেলযোগে সমাচার আসিয়াছে যে  
সুতন প্রধানতম আমানত সেন্টের সাহে  
অতিষ্ঠ হইবে। সমর বারেন পিক সাহেব  
নিরম প্রভুত করিবার অন্তিমতি পাইয়াছেন।

নিম্নোক্তকর্তৃক সম্পাদক কছেন অল্পপূর্বে

অত্যন্ত ব্যস্ত হইয়াছে। অটোমিকা সকল ভর  
হইয়া গিয়াছে এবং এতদ্বারা ও এত শিল্প  
ভিন্নায়ে যে ভেতন কোর কখন দেখেন নাই ও  
শ্রমেন নাই।

২২ই বেককরন সাহেব কলিকাতার  
হুতা সংখ্যা করিয়া পুস্তকাকারে প্রচার  
করিয়াছেন। তাহাতে ২০ বৎসরের হিসাব  
লিখিত হইয়াছে। তিনি কছেন প্রতিবৎসর  
কিন্তু ও বুলনমান মতে ১৭০০০ মরে। ওলাউঠা  
দ্বারা অধিক সংখ্যা লোকের মৃত্যু হয়। এনে  
শীরের অপেক্ষা ইউরোপীয় কম মরে। বৎস  
রের মধ্যে আয়েল মার্ট ডিলেবর ও মবেবরেই  
অধিক পীড়া হয়, মূল্যই ও মূল্যই মর্জাপে  
কা তাল যায়। কেককরা বিমার্ট এয়েল ও মে  
বালে ওলাউঠার অতিশয় প্রভুত্ব হয়।  
মূল্য চাইল ব্যবহারই এই পীড়ার কারণ  
হিস্ত ও বুলনমান যে অধিক মরে সহরের  
মিউনি সিপাল বন্দোবস্ত তাকার এক কারণ।

কিমিক সম্পাদক কছেন কলিকাতার নিক  
টবর্তি ২৪ পরগণার এলাকার মধ্যে পূর্বে মা  
লক দ্বারা বিক্রয়ের জন্য মোকাম করিতে হই  
লে লাইসেন্স লইলেই হইত কিন্তু এক্ষণে কলি  
কাতার অধীন হওয়াতে কলিকাতার মত  
ব্যতিরেকে বিক্রয়ের যোগ্য নাই। মালক দ্বারা  
বিক্রয়ের মত প্রতিবন্ধক হয় ততই ভাল।

কিমিকের কলিকাতার সংখ্যক রাজ্য  
কছেন যে তথ্য এক মল মৃত্যু গবর্নমেন্টের  
ডাক ঘুট করিয়া লইয়াছিল, কিন্তু তাহার  
খরচ পড়িয়াছে।

ইউইজিড্যান রেলওয়ের অডিট ডিপার্ট  
মেন্টের অধ্যক্ষের সৌহ মিক্রু হইতে গত  
মনিবার ২১ টাকা চুরি যায়। সাহেব বাজালি  
কোম্পানির নিকট করিয়া সকলের ত্রেকা  
খুলিয়া সার্জন দ্বারা অন্বেষণ করেন কিন্তু  
টাকা প্রাপ্ত হয় নাই। কোম্পানি একবার  
হইয়া আকিস হইতে চলিয়া আসেন। সোম  
বার আকিসের নিকট উপস্থিত হইয়া ছিলেন  
কিন্তু কেহই ডিডরে যান নাই। সাহেব বি  
মতি পূর্বক কহিলেন যে কোম্পানিরকে অপ  
মান করিবার অত্যাচার করি করা হয়  
নাই। কেবল কোম্পানির নির্দোষিতা সপ্রমাণ  
করিবার জন্য অন্বেষণ করা হইয়াছে। সাহে  
বের দুইটি দ্বারা কি কবচা? ইংল্যান্ড

কোম্পানির ত্রেকা অন্বেষণ করা হইয়া না  
কেন।

১০ই ইয়াত 'রিবিউ' সম্পাদক ক  
ছেন, বোম্বাইবিখবিক্যালয়ের হাজিরিকে  
উপাধি প্রদান করা হইয়াছে। ৪টি বাক্য বি,  
এ, এবং ৪ টি এল, এই উপাধি পাইয়াছেন।  
সমর বারেন ক্রির সভায় অধ্যক্ষতা করিয়া  
ছিলেন তিনি এ দেশীয় বাসকবিশের মুখি  
হস্তির পরিচয় প্রকাশ করিয়া এই আ  
ক্ষেপ করিয়াছেন যে এদেশীয়েরা বেশ ভ্রমণ  
বিষয়ে অত্যন্ত বিবেক করিয়া থাকেন। আর  
ইহারা কোন হুতন বিবরণে আকিষ্টা ক  
রিতে সক্ষম নহেন। বোধ হয় অনেক দিন  
অবধি মিলেমীর রাজার অধীনে থাকিয়া ব  
নের উৎসাহ গিয়াছে। তথাপিও অনেকের  
এই ইচ্ছা যে ইহারা দাসের মত থাকেন।

১২ই ইয়াত মনিবার।

এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, ব  
জীলপুত্রে কিনিং মনিং দুটিমোদা নিবাসী  
একজন পরমা ব্যবসায়ী বণিক, গত ৩রা  
ইয়াত শুক্রবার রাত্রি অল্পমান ৩ বজের সম  
য় এক ঘোড়া গরু লইয়া বিক্রয়ের গন্ত হইতে  
বাটী হইতেছিল, অল্পদূরত্বের সময় রাস্তাতে  
বাছারে ঘোড়ার গরুর পূর্ব পাতে হুক  
মোহন বিক্রয়ের রথের নিকটে হঠাৎ একজন  
মৃত্যু আসিয়া এই ঘনিকের হাতের এক লাঠির  
আঘাত করে। সে মিল বিক্রয়ের গরুর হাট  
বার, রাস্তার দুই একজন ঘোড়া লোক চলি  
তেছিল, এবং তাহার নিকটেও লোক  
সম্মতি আছে, বণিক চীৎকার করা  
পলায়ন করিল এবং দুই ও  
আসিয়া পড়িল, তখন গেল পরমার ৭  
বা হাইতে পড়ে নাই। অল্পদূরত্বের মধ্যে  
কতলি অত লোকের সম্মতি মেসোখোর হই  
ছে। বোধ হয় তাহাদের মধ্যেই কোন মহাপা  
ত্রের এই কর্ম। এমতেনে কখন মৃত্যু ভয় ছিল  
না, উক্ত ভয়ের এই হুতন অবতারণ। বাছা  
হটক, কান্দবার বিষয় এই, একজনকার মৃত্যু  
র থানা হইতে এই স্থান আট মিনিট অধিক  
দূরত্ব। তথ্য চীৎকার করিলে সবাই  
থানা হইতে অনায়াসে গমন যায়। তাহাতে  
আবার রাজকীয়ের মত, তথাপি থানার  
কর্মচারীরা যে এই ঘনিকের চীৎকার অতি ও



হাতে পান নাই ও তাহার খবর রাখেন না, ই.  
হাতে সকলে ঘুরিতে পারিবেন খামার কর্ত্ত  
ব্রীক্ষাপ্রকৃষের। সরকারের কর্ত্ত কিছপ ক  
হয় থাকেন ।

চট্টগ্রামের এক ব্যক্তি তত্ত্বাত্ত্বিকগণের  
কর্ত্তব্য ইচ্ছার পূর্ণ পণ্ডিত জীবনগত  
তত্ত্বাত্ত্বিকের প্রশংসা করিয়া পরিচয়  
হাজি মিসের প্রশংসা স্থলে লিপিবদ্ধ  
৬ জন খালক হাজি হাজি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হ-  
ইয়া ১০ টাকা করিয়া হাজি হাজি প্রাপ্ত হইয়া  
হেন এবং ১০ জন বাকি এনটোলার পরীক্ষায়  
উত্তীর্ণ হইয়াছেন এবং ১০ জন বাকি উক্ত  
বিদ্যালয়ের ছাত্রগণ মিলিত হইয়া প্রশংসা-  
মাজারপূর্বক এক কালীপূজা করিয়াছেন ।  
শেষ প্রশংসারী সামাজিক প্রশংসা ।

১লা মে টেনসাবাদের অন্তর্গত বাটবন্দর  
গ্রামে বাবু প্রেমলাল চৌধুরীর বৈঠক খানার  
বহরমপুর কালেক্টর কর্ত্তপন হাজি একত্র হ-  
ইয়া জানকুমারচন্দ্রিকা নামে একটি সভা স্থা-  
পন করিয়াছেন । সভাস্থলে বহুসংখ্য সভ্য  
ও তহলোক উপস্থিত ছিলেন । বৃহৎ সঙ্গীত-  
র । কেবল সভার আড়ম্বর করিয়া সিদ্ধি  
হইতেছে কেন ? কাজ কর ।

২৬ এপ্রেল পবাত্তের ইউরোপীয়  
সমাচার ।

পিইনবার্গ এক ঘোরতর সংগ্রাম হইয়া পি-  
নবার্গে । উত্তর দলের বিজয় লোক হইয়াছে ।  
২৬ ইংল্যান্ড (আমেরিকার দক্ষিণাংশের  
সামাজিক আঘাত পাটরাডেন  
হইয়াছেন । উত্তরাংশের নে-  
ত হইয়াছেন । মিসিসিপি দ্বীপ  
হইয়াছে ।

২৭ ইংল্যান্ডের সেনার। মন্ট্রো-রূপে অব-  
স্থিত হইতেছে এবং সেনাপতি ডেবিস ভাণ্ডা-  
র ইংল্যান্ডের সৈন্য গিয়াছেন ।

উত্তরাংশের সভা আজি করিয়াছেন যে ইউ-  
রোপীয় কৌশল লোক ভিন্ন অন্য সকল জাতি  
দক্ষিণাংশের বন্দর সকলে বাইতে পারিবেন ।

ইংল্যান্ডের বাণিজ্য প্রাচ্যের কর্ত্তালয়ের  
স্বাক্ষর আভির্ভূত কৌশল প্রত্যাশা ।

কর্ত্তব্যভির্ভূত কর্ত্তব্য আরম্ভ করিবার আজি  
হইয়াছে; রাজসংসদ কর্ত্তপন ব্যক্তি সভা স্থলে  
হইতেছে ।

বেমারি সময় সেন সাহেব কলিকাতার সা-  
ধান ব্যবস্থাপক সভার রাজবিধি সভার পদ  
পাটরাডেন ।

আপানের হুতপন ২৮৬ এপ্রেল পারিস হই-  
তে ইংল্যান্ডে গমন করিবেন ।

ইংল্যান্ডের সেনা দলের অর্ধেক শ্রেণী  
লইয়া কর্ত্তব্য পরিচাল্য করিবার যে নিয়ম ছিল,  
তাহা সংশোধিত হইয়াছে ।

ইংল্যান্ড ও আমেরিকা উত্তর রাজ্যে দূত বা  
বসার সংজ্ঞা যে যুগল সন্ধি হয়, তাহ ৬০-  
এক সভার বিচারার্থ সমপিত হইয়াছে ।

বিক্রম ইমপেরিয়েলের বাবু সাংসদ সভা  
বসায়, তাবৎ কর্ত্তব্যসমুদয় জাহাজ মেলানস বাই-  
বার আজি পাইয়াছে ।

প্রিন্স আলবার্টের হুত উপলক্ষে জাতি সা-  
ধারণ স্বরণ চিত্র স্থাপন প্রস্তাব পদিত্যক্ত হইয়া  
অন্য অন্য প্রস্তাব হইতেছে ।

টাইমস পত্রের আমেরিকার সংবাদ দ্বারা  
সেনার সম্বন্ধে পটোমাকে বাইতে নিষিদ্ধ হই-  
য়া ইংল্যান্ডে প্রত্যাপন করিয়াছেন ।

এমিলি, সেন্ট, পিয়র নামে একখানি জা-  
হাজ কলিকাতা হইতে বাহা কালে আমেরি-  
কার উত্তরাংশের লোকসংখ্য হস্তগত হইয়া  
ছিল কিন্তু যুদ্ধ হইয়া লিবরপুলে উপস্থিত হই-  
য়াছে ।

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাল্লাদেশীয় লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের  
আদেশানুসারী নিয়োগ ।

২ই মে—ডাক্তার এস বি পার্ভট্রিজ গবর্ণ-  
মেন্টের পক্ষে উপনিবেশকর্ম্মের মেডিকাল  
ইমপ্লেন্টের হইবেন ।

জে. এ. কুটেল সাহেব কলিকাতার সচ-  
কারী কটম কালেক্টর হইবেন

১০ই মে—হুগলির প্রতিনিধি ৯ জন জে. টে,  
এস, মিল সাহেব ১৮৫২ অক্টর ১৫ই এপ্রেল  
সের গেজেটে প্রকাশিত আজ্ঞানুসারে ৬  
অক্টর ১ আইন অনুসারে বিশেষ কমিসনরের  
কমতা প্রাপ্ত হইবেন ।

ট. জে. সি গ্রান্ট সাহেব কিছুদিনের জন্য  
মোদলীর প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর  
হইবেন ।

বাবু হুগলি হুগলি পদার্থ দীর্ঘকালের সাধা-  
রণ বিশালিকার কার্যের কমিটির সভা হইবেন ।

বেবেগিউ বোর্ডের প্রতিনিধি সভা এচ.  
ডি, এচ, ফরগুসন সাহেব সম্পূর্ণ সভা হইবেন ।  
পাটনার প্রতিনিধি কমিসনর সি, এচ

কোমর সাহেব তত্ত্বাত্ত্বিক সম্পূর্ণ কমিসনর হই-  
বেন ।

১৩ই মে, এস, কুট সাহেব জিনি একগণে বি-  
দ্য লইয়া আসছেন, কটকট কমিসনর হইবেন ।

নদীর প্রতিনিধি কমিসনর সি, এচ, সচ  
সাহেব ৩৩ বিভাগের সম্পূর্ণ কমিসনর হই-  
বেন ।

এগুন সিংহের প্রতিনিধি জম জে, সি,  
ডকসন ৩৩ জেলার সম্পূর্ণ জজ হইবেন ।

১১ই মে চট্টগ্রামের অতিরিক্ত জজ এফ.  
এ. এনকিনটে, এ ও ডাম্পল সাহেব ডক-  
জেন জজের প্রতিনিধি জজ হইবেন ।

ই. এ. সাহেব প্রথম প্রেমি মাজিষ্ট্রেট  
ও কালেক্টর হইবেন, কিন্তু যত দিন অন্য আ-  
জ্ঞা না হয় বিশেষ কার্যে নিযুক্ত হই-  
বেন

জে. প. এ. ওয়াড সাহেব দ্বিতীয় প্রেমি  
দ্বিতীয় প্রেমি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হই-  
বেন, কিন্তু যত দিন অন্য আ-  
জ্ঞা না হয় বিশেষ কার্যে নিযুক্ত হই-  
বেন

৩৬ই মে—ডাক্তার এস বি পার্ভট্রিজ গবর্ণ-  
মেন্টের পক্ষে উপনিবেশকর্ম্মের মেডিকাল  
ইমপ্লেন্টের হইবেন ।

জে. এ. কুটেল সাহেব কলিকাতার সচ-  
কারী কটম কালেক্টর হইবেন

১০ই মে—হুগলির প্রতিনিধি ৯ জন জে. টে,  
এস, মিল সাহেব ১৮৫২ অক্টর ১৫ই এপ্রেল  
সের গেজেটে প্রকাশিত আজ্ঞানুসারে ৬  
অক্টর ১ আইন অনুসারে বিশেষ কমিসনরের  
কমতা প্রাপ্ত হইবেন ।

ট. জে. সি গ্রান্ট সাহেব কিছুদিনের জন্য  
মোদলীর প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর  
হইবেন ।

বাবু হুগলি হুগলি পদার্থ দীর্ঘকালের সাধা-  
রণ বিশালিকার কার্যের কমিটির সভা হইবেন ।

বেবেগিউ বোর্ডের প্রতিনিধি সভা এচ.  
ডি, এচ, ফরগুসন সাহেব সম্পূর্ণ সভা হইবেন ।  
পাটনার প্রতিনিধি কমিসনর সি, এচ

কোমর সাহেব তত্ত্বাত্ত্বিক সম্পূর্ণ কমিসনর হই-  
বেন ।

১৩ই মে, এস, কুট সাহেব জিনি একগণে বি-  
দ্য লইয়া আসছেন, কটকট কমিসনর হইবেন ।

নদীর প্রতিনিধি কমিসনর সি, এচ, সচ  
সাহেব ৩৩ বিভাগের সম্পূর্ণ কমিসনর হই-  
বেন ।

এগুন সিংহের প্রতিনিধি জম জে, সি,  
ডকসন ৩৩ জেলার সম্পূর্ণ জজ হইবেন ।

১১ই মে চট্টগ্রামের অতিরিক্ত জজ এফ.  
এ. এনকিনটে, এ ও ডাম্পল সাহেব ডক-  
জেন জজের প্রতিনিধি জজ হইবেন ।

ই. এ. সাহেব প্রথম প্রেমি মাজিষ্ট্রেট  
ও কালেক্টর হইবেন, কিন্তু যত দিন অন্য আ-  
জ্ঞা না হয় বিশেষ কার্যে নিযুক্ত হই-  
বেন

জে. প. এ. ওয়াড সাহেব দ্বিতীয় প্রেমি  
দ্বিতীয় প্রেমি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হই-  
বেন, কিন্তু যত দিন অন্য আ-  
জ্ঞা না হয় বিশেষ কার্যে নিযুক্ত হই-  
বেন

হইবেন এবং কোম্পানি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা ও ১৮৫৪ সালের ১০ আইনের ১ ধারা নুতে রাজস্ববিধিতে প্রথম প্রোগ্রামের অধীন মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

বঙ্গুয়ার নিমক চৌকীর প্রতিনিধি অধ্যক্ষ বাবু সুর্যকান্ত মুখোপাধ্যায় এই প্রবেশে নিমক চৌকীর অধ্যক্ষ হইবেন।

বালেশ্বরের নিমক এজেন্টের দ্বিতীয় সভার সভাপতি মিঃ মেক সাহেব অষ্টম প্রোগ্রাম ছিলেন সপ্তম প্রোগ্রামে অধিষ্ঠিত হইবেন।

আর. শিবকুমার সাহেব কলিকতায় নিমক চৌকীর অষ্টম প্রোগ্রামের সভাপতি অধ্যক্ষ হইবেন।

কলিকাতার প্রতিনিধি ডেপুটি কালেক্টর ও ম্যাজিস্ট্রেট অধ্যক্ষ ডে. মেকেন্স সাহেব ১৮৬০ সালের ৩০ আইন অনুসারে এই স্থানের কমিসনর সভার সম্পাদক হইবেন।

১০ই মে—সদর মেওয়ানি নিজামত আলি-উল-মিল্লাত ও অত্রিক্ত অজ নিযুক্ত হইবেন।

এক বি. কেম. সাহেব ডবলিউ. এস. সিটন-কার সাহেব, এল. এস. কাকসন সাহেব।

ডবলিউ. এফ. ১, ১৬ গু'রসন সাহেব বাধর প্রোগ্রাম ও মেসিয়ান কলেজ প্রতিনিধি হইবেন।

ডে. এক. আলেকজান্ডার সাহেব মুম্বইর মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

ডে. টুই'ড সাহেব মুম্বইর কার্যভার গ্রহণ হইবেন এবং কোম্পানি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা নুতে ও ১৮৫৪ সালের ১০ আইনের ১ ধারা নুতে প্রথম প্রোগ্রামের সভাপতি মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন এবং ১৮৫৪ সালের ১০ আইন নুতে মজিস্ট্রেট ডেপুটি কালেক্টরের ক্ষমতা পাইবেন।

ডে. বিম্ব সাহেব পুণ্যের মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

ডবলিউ. এল. কিলি সাহেব মদ্রাস সিংহেজ মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

ডে. বি. গুণাবগান সাহেব দিনাজপুরে মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

বাবু অভয়চরণ মলিক বারানসি বিভাগের সভাপতি হইবেন এবং ২৪ পরগনার মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

এই প্রোগ্রামি নাটক মুম্বইর মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টরের সভাপতি হইবেন এবং এই প্রোগ্রামে দ্বিতীয় প্রোগ্রাম অধীন মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার কার্য সম্পাদক এল. মেককারসন সাহেব অষ্টম প্রোগ্রামের সভাপতি হইবেন।

নিম্নলিখিত ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

চট্টগ্রামে মৌলবি ডাক্তার আলি ও বাবু ডাক্তার চন্দ্র বসু। মেদিনীপুরে মৌলবি মোহাম্মদ আলি।

নিম্নলিখিত কমচারিরা কোম্পানি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা নুতে প্রথম প্রোগ্রাম অধীন মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা ১৮৫৪ সালের ১০ আইন নুতে ডেপুটি কালেক্টরের ক্ষমতা পাইবেন।

বঙ্গদেশে জে. টুই'ড।  
কটকে আব. ডি. হুইন।  
পাটনায় এ. সি. বি. সি. বোমান।  
মুর্শিদাবাদে ডবলিউ. আবদুল লাসমানি।  
চৈরুমে এইচ. এল. হারিসন সাহেব।

নিম্নলিখিত কমচারিরা কোম্পানি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা অনুসারে প্রথম প্রোগ্রাম অধীন মাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

এই প্রোগ্রামে বার কালেক্টরস ব্রি. বি. এল. বি. এল।

চট্টগ্রামে বাবু রামাকান্ত টোপাধা'র  
সিও. এল. গদে'ল।  
ব্রহ্মপুত্র, এক. পু'রসা.  
বর্ধমান, এইচ. এল. এল.  
চাকরাতি ডবলিউ. বি. টি।

চট্টগ্রামে এইচ. ডবলিউ. এল. বি. এল. বি. এল।

চট্টগ্রামে বাবু হুইন সাহেব।  
মুর্শিদাবাদে বাবু হুইন সাহেব।  
বাংলা গজে মৌলবি ড. এল. সাহেব।

প্রেরিত।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক।  
মহোদয়ের।  
সম্পাদননিবেদন।  
১৪ জ্যৈষ্ঠ ১২৬২।

বাংলায় প্রকাশিত আগমন করিয়া অত্র আইন প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

পত ২৪। ২৫এ বৈশাখ এপ্রিলে প্রকাশিত হইয়াছে। ২৫এ পম প্রকাশিত হইয়াছে।

এপ্রিলে প্রকাশিত হইয়াছে। ২৫এ পম প্রকাশিত হইয়াছে।

এপ্রিলে প্রকাশিত হইয়াছে। ২৫এ পম প্রকাশিত হইয়াছে।

২৫এ বৈশাখ।  
২৫এ বৈশাখ।  
২৫এ বৈশাখ।

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক।  
মহোদয়ের সমীপে।

প্রথম প্রকাশিত হইয়াছে।  
প্রথম প্রকাশিত হইয়াছে।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

অত্র প্রোগ্রামে যোগ দিয়াছেন।

১১ই মে ১৮৭১।  
২৫ বৈশাখ ১২৬২।



এই পত্র কনিষাভার নক্ষত্র লুপ্ত হইল; তেল ও  
সোনারূর ইত্যাদির নক্ষত্র ১২ ভাগে। এখানে  
যাঁহকরণ বিজ্ঞানবিশেষ হইতে প্রতি সোম  
কালই পত্র লিখিত হয়।

# সোমপ্রকাশ

“এবং তাৎ প্রতিক্রিয়ার পার্শ্বঃ সরস্বতী প্রতীমন্তী ন চীপ্তাঃ”

৩ ভাগ } সন ১২৬২ । ২১ জ্যৈষ্ঠ । উঃ ১৮৬২ । ২ জুন { মাসিক মূল্য ১ টাকা  
১২ সপ্তাহ } বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন ।

এ হকগণের প্রতি ।

দৈনন্দিন অতীত জগতের স্নেহের  
সকল সোমপ্রকাশের মূল্য নিঃশেষিত হইয়া  
। তাঁহা দ্বিগুণে বিনয় পূর্বক জামান যাই  
হইতে যে তাঁহাও অগ্রগত পূর্বক জরার  
গাছি বণের মূল্য পাঠাইয়া দে- । অগা-  
তঃ সংকত খণ্ডেই মূল্য পাঠাইবেন

বিজ্ঞাপন ।

বিষয়বিনোদ নাটক ।

ঐশ্বর্যমাণ মিত্র প্রণীত উক্ত নাটক ম-ক  
যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া বিক্রয় প্রস্তুত হইতে  
। হকগণ নিম্ন লিখিত ঠিকানায় তত্ত্ব করিলে  
টিতে পারিবেন । মূল্য ১০/ আন মাত্র  
কলিকাতা

ঠানঠানিক , ১১৬ নং ভবনসংস্থ পুস্ত  
লগ্নে পটসজ্জা ৮৩ নং ভবন গুলে ভবন  
গ্নে পুস্তকালয় লালগজার, ডি রোজারিও  
ও কোম্পানির লাইব্রেরি

বঙ্গবাস ।

বাধানগর এডমন্টার উপাচার্য

উক্ত দুর্গামঙ্গল কবিরাজ মহাশয়ের নিকট ।

সোমপ্রকাশ !

১১৬ নং ভবনসংস্থ

অন্যনিবারণী সভায়

আবশ্যকতা ।

মুসলমানদিগের অধিকারের কথা শুক  
, ইংরাজদিগেরই আধমিক অধিকার  
লে শূনিবাহি ডাকাইতেব, প্রকাশ  
পে পত্র লিখিয়া ডাকাইতি করিতে

যাইত ; দুর্ভাগ্য জনবান অথবা জমীদারেরা  
প্রকাশ্যে রাষ্ট্রপথ হইতে সুন্দরী জীলেক  
দগকে বধুহে ধরিয়া লইয়া যাইত ; চৌ  
রের উপক্রমে নিশ্চিন্তমনে নিদ্রানুখ অনু  
তব কর। তার ছিল ; অবলের আঙ্গালজন  
চুর্বলের সর্বত্র আগ্নাশের বা হউক আগ  
নাশ সদৃশ বহুনা ভোগের হেতু হইত ।  
এখন সর্বপ্রদেশে ( নীল প্রধান-প্রদেশে  
ইহার অনেক উপক্রম আজিও জাগরক  
আছে ) না হউক, অনেককালে উল্লিখিত  
দৌরাত্ম্য আর নিঃশেষিত হইয়াছে । শাসন  
প্রণালীর দৈনন্দিন জীবিত নবনগোচর  
হইতেছে । কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখি  
লে চুর্বলের প্রতি অবলের সম্যক অত্যা  
চার নিবারণের আজিও বক্তবিলয় আছে ।  
একগণে সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, যে  
অত্যাচার করিলে তদ্বিষয় সহস্র বাক্য  
গোচর ও সম্মান হইয়া গুরুদণ্ড হইবার  
সম্ভাবনা আছে, চুর্বলের অত্যাচার  
আর পরিচাল্যকবিলাছে । চুর্বলের পক্ষে  
আদালতে যে অত্যাচার প্রমাণ করা নি  
গত হইল, একগণে সদৃশ অত্যাচার স্রোত  
প্রবাহিত দৃষ্ট হইতেছে । আদালত হইতে  
সে সকলের প্রতিকার সহজ নয় । দুর্ভাগ্য  
স্বরূপ একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতেছে ।

বোধ কর অবল ও চুর্বল উভয়ের  
ভূমি পাশ্বে সংলগ্ন । অবল নীমা অতিক্রম  
করিয়া চুর্বলের পাঁচ হাত ভূমি হরণ করি  
ল । যেকপ আদালতের গতি, পাঁচহাত  
ভূমির উদ্ধার অল্পতঃ ৫০ টাকার মূল্য স

ম্পন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই । বাস্তব  
আদালতে যকদমা করিয়াছেন, তাঁহার  
কখন ৫ হাত ভূমির জন্য ৫০ টাকা ব্যয়  
করা শুনিয়া বিস্ময়বাপন হইবেন না । কিন্তু  
রা একপ একটি নীমাভিক্রমের যকদমা  
রুস্তান্ত জানি । এককাঠা ভূমি লইয়া সেই  
বিবাদ হয়। তাহাতে ১২৫ টাকা ব্যয় হইয়া  
যায় । কোন্ বিষয়ে কি ব্যয় হইয়াছিল  
তাহার সমুদায় ঠিক করিয়া বলিতে পারি  
তেছি না । কিন্তু যে প্রক্রিয়াতে যকদমা  
হইয়াছিল, তাহা অবগ করিয়া পাঠকগণ  
বেচনা করিয়া দেখুন আমরা যে ব্যয়ের কথা  
কহিতেছি, তাহা হইতে পারে কি না ?

প্রথম আবেদন ও উকীলের ব্যয়  
এক কাঠা ভূমির যকদমায় আইনে ও  
উকীলের ব্যয় নিরূপিত আছে, তাহা অ  
বাসমান্য । তাহাতে উকীলেরা যকদমা  
প্রদণ করিতে সম্মত হন না, সুতরাং অধি  
দিতে হইল । তাহার পর পদাভিক্রম  
রাদ দিয়া নালীশ হইয়াছে, প্রতিবাদি  
জানাইতে হইল । প্রতিবাদী তাহার ফে  
উত্তর দিল না, পুনরায় সমন জারী ক  
তে হইল । সুতরাং পুনরায় পদাভিক্রম  
মিরাদ দিতে হইল । তাহার পর সাক্ষী  
এদেশের সাক্ষীর এমনি দুর্ভাগ্য যে যাই

প্রদণ না করেন তাহাশ ক্ষতলোকে  
সাক্ষ্যানে একান্ত পরাধুখ ; তাঁহার  
ক্রমে পদাভিক্রম আদালতে ঘাইতে চা  
না । অতঃ সাক্ষী লইয়া যাইতে হইল  
অতঃ সাক্ষিদিগের এইরীতি, তাহার



হুক, অথবা মিথ্যা হলুক, টাকা না পাইলে  
আদালতে পদাঙ্গণ করে না। টাকা পাই  
লেই যে তাহাদিগের মন এসময় হইল,  
কিছুকাল এই বিবেচনা করিবেন না।  
কিন্তু তাহাদের লক্ষ্যই জানাতা হইলে তত  
কাল করিতে হইবে না, এত আদর ক  
রিয়া এই সকল সাক্ষীকে গাড়িতে (অথবা  
সঙ্গে তাহাদিগের এই বা গাড়িচড় হয়)  
লইয়া যাইতে হয় এবং রাস্তাভাগে আহার  
করাইতে হয়। সাক্ষী লইয়া যাইবার দিন  
আপনার প্রিয়তমের অঙ্গ হইতে উত্তোচন  
করিয়া অলঙ্কার বন্ধক দিতে হউক অথবা  
বসতিবাটী বিক্রয় করিতে হউক, বাকী  
অথবা প্রতিবাদী কিছুতেই কাতর নহেন  
(হাদিখাতঃ লোকের যে অসাধুতা ও নির্ভূ  
জিতাবলতা এই বিড়ম্বনা হইতেছে, তাহা  
কবে অন্তর্হিত হইবে) এইরূপে সাক্ষি  
গণকে আদালতে লইয়া গিয়া সাক্ষির  
জবানবন্দী করান হইল। এসময়ে আ  
মাদিগের কিছু আপা আছে। তাঁহা  
বা ব্যক্তি বিবেচনা করিয়া প্রতি সাক্ষিতে  
একটাকা অথবা আটআনা লইয়া থাকেন  
(যাঁহারা কিঞ্চিৎ অধিক দেন, তাহাদিগের  
পক্ষে সাক্ষ্য অনুকূল হয়) তাহা দিতে  
হইল।

উত্তর পক্ষের এইরূপে সাক্ষ্য দেওয়া  
হইলে বিচারকর্তা সাক্ষ্যই না মকদ্দমে  
আমীন পাঠাইয়া দিলেন। আমীন সব উদ্ভর  
হইল, যাঁহারা মায়াপক্ষ তিনি ছাড়া পূর্ণ ক  
রিতে পারিলেন না, সুতরাং আমীন বিপ  
রীত রোরহা দিলেন। প্রস্তাবিত মকদ্দ  
মা করেকজন তত্ত্বলোক সাক্ষী ছিলেন।  
কিন্তু ১৯ আইন জারী করিয়া তাহাদি  
গকে আদালতে লইয়া যাওয়া হইল।  
তাঁহাদের অঙ্গ ব্যয় হইল না। কিছুতেই  
বিচারকর্তার সংশয়ক্ষণ না হওয়াতে  
তিনি স্বয়ং মকদ্দমে খেলেন। তাঁহার  
বাহনেরও (আমলারা) তাঁহার সমস্ত  
সাহায্যে গমন করিলেন। আমলারা কখন

বিনা লাভে একপদ গমন করেন না। তাহা  
তোড় কিছু গেল। শেষে সুবুদ্ধি বিচারপতি  
অধিকে হারা ইয়া দিলেন। আপীল হইল,  
তাহাও বিনা অর্থব্যয় সম্পন্ন হইল না।  
এখন পাঠকগণ কি বিবেচনা করিতেছেন  
একটা ভূমির উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা দা  
ওয়া, অসম্ভাবিক : দরিদ্রব্যক্তি এ টাকা  
কোথায় পায়।

পটীগ্রামে এক কঠোড়মির মূল্য পা  
চাচর পাঁচ টাকার নড় অধিক হয় না।  
এই পাঁচটার উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা ব্যয়  
করিতে সকলের প্রবৃত্তি ক্ষম্যাবে কেন  
মকদ্দমা করা কেবল অর্থব্যয় হইলেও হয়  
না, লোকবল চাই। তাহার লোকবল নাই,  
অন্য বিষয় কাড়িয়া লইতেছে দেখিয়াও  
তাঁহাকে অগত্যা মনে হইত মনে মনে মীল  
করিতে হয়

আমরা দিগ্গদর্শনার্থ একটি উদ্ভার  
এ প্রদর্শন করিলাম, মকদ্দমে দিনও এক  
কপ মকদ্দমঃ অন্যায় কার্য্য অনুষ্ঠিত হই  
তেছে। তাহার নিবারণের উপায় কি  
আদালতের দোষ সংশোধিত হইলে আদা  
লতই তদ্বিবারণে প্রস্তুত হইত বন, এ আশা সু  
দূর পরাহত। আমাদের ভ্রাতৃ ও বার্ষিক লে  
কাদিগেরই এতদ্বিবারণের উপায় অনু  
সন্ধান করা কর্তব্য। তাহানো অন্যায় নিব  
রণী সভাস্থাপন তদ্বিবারণের উৎকৃষ্ট  
উপায়।

কৃতবিদ্যা ব্যক্তিদিগকে এই সভাস্থা  
পনে কুতোদ্দযোগ হইতে হইবে। সে সে  
ব্যক্তিকে সভ্য করিয়া ইহা সিদ্ধি হইবার  
সম্ভাবনা নাই। যাঁহাদিগের ধর্ম্মভয় আছে,  
যাঁহারা অন্যের হিত সাধনকে প্রধান  
কার্য্য বলিয়া জ্ঞান করেন এবং অর্থে অথ  
বা চাটুযচনে যাঁহাদিগের চিত্তকে বিচলি  
ত করিতে না পারে, তাঁহারা এই সভার  
সংস্থাপন লাভের যোগ্য পাত্র। এই সভা  
কে সে রীতিতে যে যে কার্য্য করিতে হই  
বে, তাহারও উল্লেখ করা যাইতেছে। এই

সভা ধর্ম্ম অথবা সামাজিক বিষয়ে হস্তক্ষেপ  
করিতে না, অন্যত্র প্রকার অন্যায়নিব  
ারণে চেষ্টা করিবেন। কেহ কাহার প্র  
তি অন্যায়চরণ করেন, কোনরূপে তা  
সম্ভাব গোচর হইলে সভা প্রযো  
জ্যে তাহা অনুসন্ধান করিবেন। অন্য  
দিক্কার আচরণটা সভার হস্তবশম হইলে  
সভা অত্র অন্যায়কারিকে তদ্বিষয় হইলে  
নিষিদ্ধ হইবার অনুরোধ করিবেন।  
কিন্তু যদি অনুরোধ রক্ষা করেন,  
তাহা অন্যায় সভা অন্যায়সহিষ্ণু প্রা  
নিত হইল, এ বিষয়টি মিকটস্ বিচ  
পতিব গোচর কাঁববেন, বিচারকর্তা কেব  
ল তার বাতলার উপরে দিখাস করিয়া  
যা করিতে না চাহেন অনুসন্ধান করি  
নায়া নায়া নির্ণয় করিবেন।

এইরূপে এই সভা হইতে পারে,  
চাবকর্তারা সভার কথা শুনিয়া কার্য্য  
করবেন কেন অর্থ প্রত্যর্থিত আবেদন  
আনয়ন করিয়া কার্য্য করিবারই নিয়ম ও  
তি আছে। ইহার উদ্ভব এষ্ট, যদি সভা  
ত সভা সর্বত্র প্রতিষ্ঠিত হয় এবং সকল  
ব্যবস্থায় সভা, সভার কথা শুনিয়া কার্য্য  
করিয়া আইন ও তত্ত্ব ও তখন দুই হই  
ল। অন্যায় নিবারণ করা গবর্ণমেন্টের  
উদ্দেশ্য। সেই অন্যায় নিবারণ যখন  
সেই উদ্দেশ্য হইতেছে, তখন গবর্ণমেন্ট  
তাহার অনুমোদন না করিবেন কেন  
এইরূপে বিশেষ করিয়া আমাদিগের এক  
বক্তব্য এই, অন্যায় নিবারণার্থই সভা  
সৃষ্টি হইতেছে, কিন্তু সভা যেন এক পদ  
পদপাতিয়া হইয়া স্বয়ং অন্যায় কা  
প্রবৃত্ত না হন। সভা ম্যায়োপেক্ষ কা  
করিলে গবর্ণমেন্ট হইতে চিত্তে অ  
স্বাস্থ্য করিবেন সন্দেহ নাই। এইরূপ  
সর্বত্র সভা হইলে গবর্ণমেন্টের অর্থব্যয়  
পরিজ্ঞানেরও প্রায়শ্চন্দ্র লাঘব হইবে। এই  
সভার কার্য্য নির্বাহার্থ কিছু কিছু অর্থ  
প্রয়োজন হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু সে

অর্থ চাঁদা দ্বারা আমদানি লোকসিগের নিকট হইতে সংগ্রহ করিতে হইবে।

কেহ মনে করিতে পারেন, আমরা ভারতবর্ষের সত্য শাসন অথবা আটম পঞ্চায়েত স্থাপন প্রসঙ্গ করিতেছি। ভারতবর্ষীয় সত্য ও পঞ্চায়েতের ব্যাপক বিষয়, কিন্তু ইহার বিষয় ব্যাপ্য। ভারতবর্ষীয় সত্য পঞ্চায়েতের কৃত আইনাদির দোষ সংশোধনই সমধিক বয়োবৃদ্ধি, এ সত্য সে উদ্দেশ্য নহে, এ সত্য প্রজাগণের পরম্পর প্রতি পরম্পরের অত্যাচার নিবারণেরই চেষ্টা করিবেন। পঞ্চায়েত ধর্মাদি যাকী য বিষয়ে হস্তক্ষেপ করেন, ইহার সে সকল বিষয়ে হস্তক্ষেপ উদ্দেশ্য নহে।

আমেরিকার সংসদ।

২৬এ এপ্রেল পর্য্যন্তের যে আমেরিকার সংবাদ পাইয়াছেন, তাহা স্পষ্টাকরে কহিয়া দিতেছি, আমেরিকার দক্ষিণাংশের সহিত উত্তরাংশের যে বিবাদ হইতেছে, ইংলণ্ড ও কুজ উত্তর রাজ্য তাকার নিষ্পত্তি করিয়া দিবে না, সহজে যদি মীমাংসা না হয়, এই উত্তর গবর্নমেন্ট বল প্রকাশেও পরাজয় হইবে না।

টেলিগ্রাফ যোগে যে সমস্ত সমাচার আইসে, কণ্ঠচারিগণের দোষে বহু সময় তাহার বহু ব্যতিক্রম ঘটে। উল্লিখিত বিষয়ে যদি সেইরূপ ব্যতিক্রম ঘটিয়া থাকে, কখনো মাই, যদি তাহা না হইয়া সত্যটি সত্য হয়, আমাদিগের অস্বপ্নের বিষয় দ্বারা একান্ত অভিভূত হইতেছে। উত্তর প্রদেশের দ্বারা হটক, আর মৈত্রী দ্বারা হটক, আমেরিকার বিবাদ শান্তি হটলে ভগতের বহুতর ইষ্ট লাভ হয় সন্দেহ নাই। এই কলটি বিবেচনা করিলে উত্তর উত্তর গবর্নমেন্টের উল্লিখিত কাণ্ডে অনুমোদন করিতে কোন ক্রমেই আমাদিগের অনিচ্ছা আছে, কিন্তু আমাদিগের বিস

য়ের কারণ এই, আমাদিগের যুক্তি অবলম্বন করিয়া এবিধ কার্য্য প্রকৃতি বিধান করিতেছেন। আমেরিকার স্বাধীন রাজ্য, তাহার উপরে ইংলণ্ড অথবা কুজের প্রভাব নাই। কিন্তু এই উত্তর রাজ্য প্রত্যন্ত ন্যায় কার্য্য করিতে প্রস্তুত হইয়াছেন উত্তর আমেরিকার লোকেরা ভীত হইয়া যদি যুদ্ধাঙ্গান পরিভাগ করেন, সর্ব্বাধীন মঙ্গল হয় সন্দেহ নাই। ইংলণ্ড ও কুজ হস্তক্ষেপ করিলে উত্তরাংশের লোকসিগের অস্ত্র পরিভাগ করিবার সমধিক সম্ভাবনাও আছে। একে উত্তর উত্তর গবর্নমেন্টে প্রবল, শক্ততা জন্মিলে প্রবলের সচিব প্রতিযোগিতা করিতে হইবে। দ্বিতীয়তঃ উত্তরাংশের গবর্নমেন্টের অর্থের সম্ভল নাই।

কিন্তু উত্তরাংশের লোকসিগের যদি অপমান জ্ঞান প্রবল হইয়া উঠে, এসকল চিন্তা ভিরোহিত হইয়া যায়, তাহা হইলে সেই বিষয় অনর্থ। ইংলণ্ড ও কুজ উত্তর গবর্নমেন্ট যে বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন, তাহাও দক্ষিণাংশের আনুকূল্য করা হইতেছে। কিন্তু সেই সাহায্য দান বিধিগোষ্ঠিত হইতেছে না। অনুধাবন করিয়া দেখিলে দক্ষিণাংশের লোকেরা এক প্রকার রাষ্ট্রবিসংহারী। দক্ষিণ ও উত্তর উত্তর প্রদেশের লোক এক গবর্নমেন্টের অধীনে থাকতেই আমেরিকার যত গৌরব। একদে দক্ষিণাংশ যতদূর হইবার চেষ্টা করুক সেই গৌরব হ্রাস হইতেছে। ইংলণ্ড যে আমেরিকার নিকটে পরাজিত হয় উত্তর অংশের একাধীন অবস্থান কি তাহার কারণ নয়? সত্যতঃ দক্ষিণাংশের লোকেরা স্বতন্ত্র হইবার চেষ্টা করিতে আমেরিকার গবর্নমেন্টের অনিচ্ছা ঘটিয়াছে। যে সকল ব্যক্তি নিজ গবর্নমেন্টের অনিচ্ছাকারী, তাহাদিগের সহায়তা করা কি কখনো ইচ্ছা হয়।

ইংলণ্ড ও কুজ রাজ্য আমেরিকা

রিকার বিবাহে হস্তক্ষেপ করিতে, আমাদিগের আর একটি অনিচ্ছার প্রকাশ হইতেছে। উত্তরাংশের লোকসিগের দাব্যের প্রতি বিভীষিকা বিবেচনা করা হইবে। অতএব উত্তরাংশের এই দাব্যের বিলুপ্ত হইবে, কতক সন্দেহ করিতেছে না। গাংশ যদি স্বাধীনতা লাভ করতঃ বাবসার বিলোপের বহু সন্দেহ নাই।

১৮৬৩ অব্দের ১০ আইন

সংশোধন প্রস্তাব।

উপরি উক্ত আইনসংসদে ভারতবর্ষীয়সভার আবেদন প্রসঙ্গকরা আইনসংসদে গঠনকার্য্যের প্রতিষ্ঠাতা বিষয়। আইন সংশোধিত হইয়া যে আইন প্রস্তাবিত হয়, তাহার ২। ৩ ধারায় লিখিত হইয়াছে, অর্থ অথবা এক বর্ষের অর্থের দণ্ডদান অথবা মঙ্গলময় স্থান বিষয় অনুমতি হইবে, তাহা যুদ্ধ সম্বন্ধে হইবে। ভারতবর্ষীয় সভা তাহার প্রতিবাদ করিতেছেন। এই প্রতিবাদ মারাত্মক হইয়াছে সন্দেহ নাই।

অপর, সংশোধিত আইনের দ্বিতীয় ধারায় এই প্রস্তাব হয়, যদি কোন প্রস্তাবনা না দেয়, মণীশ হইলে তাহাতে আপনাদের দের প্রস্তাবনা ও দণ্ড উত্তর দিতে হইবে। ভারতবর্ষীয়সভা একে পরিবর্তন প্রসঙ্গ করিয়া এই প্রস্তাব করেন, প্রজাবৈ সমস্ত দিবার নিষেধ কিস্তি ক্রমে প্রজাবৈ দিবার নিষেধ করিয়া দেওয়া আবশ্যক। যে প্রজা তিন কিস্তি আপনাদের দের প্রজাবৈ না দিবে, শেষ ডিক্রি ১৫ দিনের পর তাহার জমা বাজেয়াপ্ত হইবে। এ প্রস্তাবটি সুসঙ্গত বলিয়া প্রতীক্ষিত হইতেছে না। প্রজাগণকে পৈতৃক ভরসা দেও বহিষ্কৃত করা কোন ক্রমেই পরোক্ষ নহে। তাহা



১৮৫৯, ন্যায় খাজনা দিতে অসমর্থন এমন প্রজা অতিবিরল । তাহা সত্ত্বেও জমা বাজেআপ হইবার অনুমতি দান নাই । এদেশীয় প্রজারা নিজ গৃহার্গের ন্যায় আপন আপন অধিকতর দেখ করে । ভূমি আর ভর না থাকিলে তাহারা হার জিজ্ঞাসি সাধন করিয়া থাকে । সেটাবুঝিতে পারেন না । হইয়া উত্তম শস্যাদি অধি সফল হয় । প্রজার সফল জমিদারদিগের স্বচ্ছন্দ, তাহাও জমিদারদিগের অনেকে বুঝিয়া উঠিতে পারেন না । তবে বাহারা দুর্ভেদ, জমা বাজেআপ করিবার নিয়ম করিয়া তাহাদিগকে কষ্ট করিবার চেষ্টা না পাইয়া যদি দণ্ডের নিয়ম করা হয়, তাহা হইলে কি অতীত সম্ভাবনা নাই ? কেবল এক দণ্ডের জরিমানা তহরার নিয়ম হইয়াছে, আর বাহারা দুর্ভেদ করিয়া খাজনা না দেয়, দণ্ড দ্বারা তাহাদিগের কি শাসন হইতে সম্ভাবিত নয় ?

সংশোধিত আইন সম্বন্ধে ভারতবর্ষীয় প্রজার যে দুটি প্রধান আপত্তি, তাহাও উল্লিখিত হইল । তদ্বিষয় সত্য অসংশোধিত আইনের যে যে অংশের সংশোধন করা করিয়াছেন, তাহাও উল্লিখিত হইতেছে । ১৮৫৯ অক্টোবর ১০ আর্টনের ৩১৪। ৩৬ ধারার তাৎপৰ্য্য এই, যে প্রজা অধিক দীর্ঘকাল ( ৪ ধারায় ২০ বৎসরের এবং ৬ ধারায় ১২ বৎসরের কথা আছে ) কৃষি একবিধ খাজনা দিয়া ভোগ করিয়া আসিয়াছে, জমিদার তাহাকে তাহার খাজনা হুজি করিতে পারিবেন না । এখারা প্রজা দশশালার বন্দোবস্তের প্রতিজ্ঞা বিস্তার বলিয়া ভারতবর্ষীয় সভা ইহার পরিবর্তন প্রস্তাব করিয়াছেন । কিন্তু এতৎ পরিবর্তন সম্বন্ধে অনুমোদিত নহে । যে

ব্যক্তি ২০ বৎসর পর্য্যন্ত একবিধকরে খাজনা দিয়া আইনে, তাহার তাদৃশ করে খাজনা দিবার বিশিষ্ট কারণ থাকিবার সম্ভাবনা আছে । সেই কারণ জানা অথবা প্রমাণ হইল না বলিয়া তাহার ভোগ ব্যক্তিভিন্ন হওয়া কোন ক্রমেই ন্যায্যনুগত হইতেছে না । এহলে জমিদারদিগের ইচ্ছাও বিবেচনা করা আবশ্যিক, চিরস্থায়ি বন্দোবস্ত হওয়াতে তাহারা যেমন লাভবান হইয়াছেন এবং বঙ্গালা দেশের সৌভাগ্য বৃদ্ধি হইয়াছে, তেমনি প্রজাদিগের সহিত যদি তাহাদিগের চিরস্থায়ি বন্দোবস্ত হয়, কেবল প্রজার নয় তাহাদিগেরও স্বচ্ছন্দ লাভ হইবে এবং বঙ্গালা দেশেরও সর্বিশেষ জিজ্ঞাসি হইবে ।

১৬ ও ১৭ ধারার বিষয়ে ভারতবর্ষীয় সভা যে আপত্তি করিয়াছেন, তাহাতে কিছু বিশেষ সূতন কথা নাই । ৩।৪।২ ও ৬ ধারাতে যে যুক্তি প্রদর্শিত হইয়াছে এবং যে যুক্তিতে সেই সেই আপত্তি বহন করা হইয়াছে ১৬ ও ১৭ ধারাও সেই যুক্তিতে খণ্ডনীয় হইতেছে । দশশালার বন্দোবস্তের প্রতিজ্ঞা তাহাই সেই যুক্তি অথবা প্রস্তাবত্রাঘিম ভয়ে অন্য ২ আপত্তি বিবরণ উল্লিখিত হইল না ।

১৮৫৯ অক্টোবর ১০

উপস্থিত আশপানের যুক্তি কণিতাঘাত ভাষা কলিকাতা ন্যায় নিম্নস্থ চার্টার হইয়াছে । প্রথমে আমরা শুনিলাম, পার্শ্বী কেরা আশপান হইলে প্রত্যেকেরে অবতীর্ণ হইয়াছেন, দোস্ত মহম্মদ সমস্ত সজ্জা করিয়াছেন, ইংরাজেরা সৈন্য প্রেরণ করিয়া দোস্তের সাহায্য করিবেন কি না, এই বিষয় লইয়া আন্দোলন হইতেছে । কিন্তু এক্ষণে শুনা যাইতেছে পার্শ্বীকদিগের সংগ্রাম আরও দার্দ্র্য অলীক । হিরোটের সুলতান জানের সন্ততি দোস্ত মহম্মদের বিবাহ দিল । সুলতান জান বিপদকে ভয় সঙ্কচিত

করিয়া দাতীক সাধন করিবার উদ্দেশ্যে পার্শ্বীকদিগের সমস্ত সজ্জা প্রচার করিয়া দেন । দোস্ত মহম্মদও দার্দ্র্য সিদ্ধির উদ্দেশ্যে এই অলীক সম্বাদে বাতাস দেন, তাহার ব.ত.স দিবার কারণ এই, তিনি এই উপায় যে যদি ব্রিটিশ গবর্ণমেন্টের সাহায্য পান তাহা অনায়াস লাভ হইবে । কিন্তু হল অসমর্থন করিয়া এ পথান্ত কেহ কৃতকাব্য হইতে পারেন নাই ।

মধ্যে আবাব হুদা গেল, সুলতান জানের সন্ততি দোস্ত মহম্মদের সজ্জা হইয়াছে, কিন্তু এখন শুনা যাইতেছে, তাহাও অলীক । একপ কথা উঠিবার একটি কারণ আছে । সুলতান জান দোস্ত মহম্মদের জামাতা । অতএব শৌত্র সজ্জা হওয়া অসম্ভাবিত নহে । যাহা হউক, এক্ষণে শুনা যাইতেছে দোস্ত মহম্মদ সৈন্য অগ্রসর হইতেছেন । ইংরাজেরা দোস্ত মহম্মদের সাহায্য করিবেন কি না এখনও স্থির হয় নাই ।

—

নীলপ্রধান প্রদেশ চাইতে প্রাপ্ত ।

দুর্ভাগ্য সম্প্রদায়ক ঘটনায় । নীলকুঠিয়ায় সাহেবেরা কর হাজির নালিশকেই প্রজাদিগকে ৩০ দিনের মধ্যে উপায় দিবার করিয়াছেন । গত ১৫ই ৬পুজী কালেক্টরেরা অনেকে তাঁহাদের সাহায্য করিতেছেন । এটি জিলায় ততদূর প্রচলিত হইয়াছে । জ্যাকসন নামে ব্রিটিশ সাহেবদিগের দরজিলায় পূর্ণ হইয়া গেতিবন্ধ হইয়াছিলেন । এক্ষণে চলিতনৈমিত্তিক সাহেব নীলকুঠিয়া প্রজাদিগের সংগ্রাম জিলায় পতিত মোকদ্দমার বিচার নিষ্পত্তি প্রাপ্ত করিবার নিমিত্ত হইয়া এখানে আসিয়াছেন । শুনিলাম এদিকে কুঠিয়া সাহেবেরা প্রচার করিয়া দিচ্ছিলেন যে দুই জ্যাকসন অধিকার করিতে আমরা গবর্ণমেন্টের সাহায্য করিয়া আসাদিগের বন্দোবস্ত বিস্তারিত করিয়া আসিয়াছি । প্রজারা প্রথমে কথায় বিশ্বাস করে নাই । কিন্তু যে সকল প্রজা ভূমি দখল করিবার স্বত্ব নাই তাহাদিগকে প্রতি প্রতিবাদ সাহেব হেজাজদার যে নিষ্পত্তি

একলিঙ্গ প্রথা, ব্যবহার অথবা সংস্কারের  
বিরোধী হইয়া কোন কথা বলিতে গেলে অ-  
গ্রহেই 'মুখ চুসাকস, নির্লজ্জ প্রকৃতি উগা  
খিলইতে শব্দত হইতে হয়। যিনি কোন বি-  
বরের উৎকর্ষ সাধন করিতেছেন, তাঁহারই  
এই ভাগ্য হইয়াছে গালিলিগ, লুচর নক্ষ-  
ত্রামসোহন রাঘ প্রকৃতি উচার দৃষ্টান্ত স্বল  
আমার অবলম্বন। ১৩ বৈশাখের সে মত  
শে আমি বা। কলকাতা নজুমাবাদ প্রাণীত  
নক্ষত্রমসেব কোন কোন বিজ্ঞান প্রকৃতি  
উৎকর্ষ ও বিবরণের কার্যের বিষয়ে



ভিত্তিক বাক্য করি, তাহাতে প্রত্যেকের এক  
‘আমি’ প্রত্যেকের ‘আমি’ উপর আভিমান বিরক্ত  
‘ইহা’ ‘আমি’কে ‘প্রবোধ প্রত্যাকর’ হিত  
প্রত্যাকর ‘প্রবোধ প্রত্যাকর’ পুরাতন কাইল  
পাঠ করিতে করিয়াছেন। তর্ক বিনা কোন  
বিষয়ের সিদ্ধান্ত হয়না, অতএব ‘আমি’ প্র  
ত্যাকর যে সর্বসাধারণের এক ব্যক্তিরও নিকটে  
খণ্ডনীয় বোধ হইয়াছে ইহা ‘আমি’, ‘আমি’-  
দের বি র বলিতে হইবে।

এই প্রবোধ প্রবোধ: লিখিয়াছেন আমি  
‘আমি’র বাবুর লিখিত উৎকর্ষ কবিতাদি পাঠ  
মাই। ৫ ইখর গুণের বিরচিত কবিতার  
ই, মূল, তাৎপর্য, উপদেশ, ও স্বভাবের ল  
বর্ণন যে প্রকার প্রললিত অখচ সরল ভা-  
ষা প্রকাশ হইয়াছে, তাহার কবিতা শক্তি ত-  
রূপে প্রকাশ করিয়া উৎকর্ষমানে যে প্র-  
বোধ সমর্থ হইয়াছে, তিনি কবিতা কুশলে যে  
প্রকার নব সৌন্দর্য ও প্রেমবাৎসল্য প্রভৃতি  
কবিতার উপযোগী অতি উপদেশ নব নব  
প্রকাশ করিয়াছেন, আমি স হস পুঙ্ক  
লিখিতে পারি গুণাকর তারতম্য হারের লি-  
খিত বিদ্যানুশ্রবণে সেই রূপ গরম রমনীয় র-  
স বর্ণিত হয় নাই। ইখর গুণের সন্মত র-  
সিকতা আমি পাঠ করিনাই সত্য, কিন্তু যে হি-  
সে প্রত্যাকর ও প্রবোধ প্রত্যাকর আমানিগের  
প্রবোধ প্রবোধ মধ্যে সর্বোৎকর্ষ, এবং যাঁহা  
এই প্রবোধের আসল রস বিনিতা সকলেই আ-  
মর পূর্বক পাঠ করিয়াছেন তাঁহা আমি আ-  
লোচন পাঠ করিবাছি। এত পুস্তক দুই পা-  
নিতে ইখর গুণের স্ফূর্তি নষ্টের কিছু মাত্র  
পরিচয় পাও। যাইতেছে না। তিনি অনেক  
ভাষা চুরি করিয়া কুশলি- রূপ বানান  
রাছেন এই মাত্র। সত্য কথা বলিতে ‘আমি’  
পুস্তক দুই খানি মুদ্রিত না করাট ভাল ছিল  
পত্র প্রেরক ইখর গুণের ভাষা রস স্বভাব  
বর্ণনার প্রকাশ করিয়াছেন। পাঠক-কে দেখুন  
কি লিখিত কয়েক পঙ্ক্তিতে বস ‘আমি’ রস  
প্রকাশ বর্ণনা, আছে:-

গোপীগণে বাস করে, গোপীনাথ নাম ধরে  
গগনগবা গোপ এক জন

কারো সহ নাচি বস, নাহি জানে ভাল মন্দ  
সমানম পূর্ণ ভাল মন্দ ।।

খিচারিণী ভরা তার, কাণা কাণি সমাচর,  
ঠের ঠোরে শোনে করে করে ।

চোখে নাচি দুই হয়, গুণের গুণের রস,  
ত তে নোতে ধরিতে না পারে ।। ৩

পরে কবি বানি করিয়াছেন গোপ কুটম্বের  
বাঁধি ঘাইবার চল করিয়া আগনার খাটের  
নীচে ঢকাইত থাকে। (বিরহ গোপের খট্টা)।  
রাত্রি বোধে ত হার জী উপপতি সহ মন  
করে, সে তাহা প্রত্যাকর করে, তথাপি উক্ত  
জীমোক্ত হঠাৎ বানীকে দেখিতে পাটয়া তা  
হার কাম্পনিক প্রকাশ্য করাতে গোপ তাহা  
তে ভুলিয়া গিয়া তাহাকে সতী স্থির করিল।  
ইহাতে যেমন স্বভাব বর্ণনা তেমনি কবি ও  
তেমনি উপদেশ যে ব্যক্তি ‘গগনগবা’ র  
ইল তাহার ক্ষিপ্রে দুর্গতা সজ্ঞাচিত হয়  
গর্ভ ব্যক্তির নিজ জীকে উপপতি সহ মর্দন  
করিয়া সেই অসজীর বাক্য বিমোহিত হও  
মাই বা কিরূপে সম্মত হয়।

### গুণ উপস্থাপন।

#### গুণ উপস্থাপনের প্রতি।

আর কেন মর হোলে মরণভী তেরে  
মর মর ভক্ত গা করে দুই করে ।।  
সবলেতে এখনিট যাবি কেহে দেবে  
দেব দেব দেব ভোসে একে করে সেবে ।।  
মরণ নিকটে তোর রহিয়াছে বেগে  
পড়িবি কালের হাতে পালাতে না পেরে ।।  
পায়ে ধোরে এই নারী আমারেই বেগে  
বিষয় বিতর যত দুই গিরে মেগে ।।  
কেন বস কথা কোস জাঁখি তেরে তেরে  
পাঠাটন বমালয় এক মত মেগে ।।  
কোন মখে কুলালার নিতে চাস এগে  
মত মত মত ভাগা বেগে দুই করে ।।  
উপস্থাপন মৃতবেতে যথ দেখ কালানুখে কাল  
বচন রসিক কেন দিছে কাল পাণ ।।  
‘আমি’ কলেন, ‘আমি’ কলি মালা ।  
দুই আঁখি পতি হ’ব এতে পেরি মালা ।।  
আমি চান প্রাণ নিতে মালা, পালা পালা ।  
এত মত মত চিত্তে কলি মালা কাল ।

দুই নিবি প্রিয়তমা, একপলী বানী ।।  
মেতবে কেমনে নিবি আর দেখি মালা ।

গুণ উপস্থাপনের যুগ ও যুগ বিচ্ছেদ হস্তা-  
ত বীররস প্রাণন কাব্যেরই বর্ণনীয়। বীরর-  
সে কি ইচ্ছা ভাষা ও ভাষা ভাল লাগে? বা-  
চা, প্রকাশ্য অর্থ করিয়া ছিল, তাহার কথ-  
ন এত মূর্খ হইতে পারে না যে সত্যকে  
‘মালা’ বলে। (১) কোন ব্যক্তি ইহা পাঠ  
করিয়া বলিবেন, ইখর গুণের তাৎসৌষ্টব  
ও মর্পের উদাহরণবোধ ছিল, পত্র প্রেরক যে  
‘নব নব রসের কথ’ বলিয়াছেন, তাহা আমি  
নিগের জানিতে বাকী রহিল

গগন গগনগবা বানি বিবরে ইখর গুণের  
কবিতা শক্তি অপ্রতিহত ছিল না। উপস্থাপন  
রসিকতা ও আভিমানপ্রসঙ্গে তাহাও সবি-  
শেষ ফলপ্রসূ ছিল। সামান্য সাক্ষ্যের প্রতি  
বিজ্ঞপ করিয়া তিনি যে প্রকাশ রচনা করিয়া  
ছিলেন, আমি অন্যতমার তাৎস রচনা মর্দন  
ন করিনাই। কেবল উপস্থাপন রসিকতা প্রকাশ  
করিতে পারিলেই কিছু কেহ মতাকবি বলিয়া  
পরিগণিত হইতে পারেন না। যাহার বর্ণনা  
ভাষা অস্তঃকরণের মত প্রকার ভাষা উচ্চলিত  
ও প্রকাশ্য উচ্চলিত হয়, তিনিই মতাকবি বলি-  
বা পরিগণিত হন। কবি যে যুগে লোক বর্ণনা  
একি কতেন তাহাও পাঠকের অস্তঃকরণে মো-  
লভাব ও মনন যুগল অস্তঃকরণে পূর্ণ হই  
বে যুগের সময়ে চিত্ত উৎসাহে পরিপূরিত  
হইবে, স্বদেশের গৌরব ও দুর্গতি সম্বন্ধে  
নিদ্রা মত আকর্ষণিত ও জাগ্রিত হইবে।  
অতঃ পরে কনি পাঠকে মনকে আলোকিত  
পদ পাঠকের নাস্ত্র খেচামসারে ইচ্ছাতঃ  
মত হইতে পারেন, তিনি যথার্থ কবি  
গণিতে শোক মতাকবি উদ্দীপন হয় ইখর  
গুণ যেমত কি লিখিয়াছেন? আর ২৫৬৪

(১) বাস্তবিক বাস্তবিক যে সকল ব্যক্তির চরিত্র  
বর্ণন করিয়াছেন তাহার লক্ষণ অতি মূর্খ।  
গুণের কবিতা দ্বারা প্রকাশ্য কবিতা মাই। গো-  
পী কবিতা। ইতর মত শাস্ত্রকেও প্রকাশ্য মত  
কবিতা। ইতর মত শাস্ত্রকেও প্রকাশ্য মত  
‘আমি’ মত মত মত করিয়াছেন।

ল ব্যাপিরা, ত্রিবিদ্যাদি প্রকারে লোকের বিবিধ  
কাজে উদ্ভাবিত হইয়াছে। কোন কার্যকারি  
কাজের বন বখার্য্যে ক্রমে আকর্ষণ করিতে গিয়া  
করাণী প্রকৃতি কালে কালে ক্রমশঃ ন,  
যে মানব গীতের দ্বারা তিনি কি কোন  
ব্যবস্থা করিয়াছেন? পরে প্রেরক বলেন  
নি বীতলের বিষয়ে গীত রচনা করিয়া গিয়া-  
ন, যদি তিনি বখার্য্য করি হইতেন, তাহা হ-  
লে সেই গীতে ক্রমশঃ নিঃসন্দেহ উৎসা-  
হ হইত। আমি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পার-  
তাঁহার গীত ক্রমশঃ গানের পত তাগের  
তম ভাগ গুলে নাই।

পত্র প্রেরক ঈশ্বর গুণের মহাব্যবস্থার  
নার তুরিতর প্রকাশ করিয়াছেন। তদ্বি-  
আমার পুনরায় যত্নসহ এই, হয় তিনি বি-  
জ্ঞানে পতিত হইয়াছেন, নতুবা তিনি সা-  
ধারণের চক্ষে ধূলি নিক্ষেপ চেষ্টায় আছেন  
যাকি তৎপ্রবোধিনীর মধ্যস্থিত হোয়া পাঠ  
করিয়াছেন তাঁহার কি "হেন ধ! তুমি ঈশ্বর  
ও আমিও ঈশ্বর ও ও" প্রভৃতি প্রলাপ হু-  
কাব্য পাঠ করিয়া বিরক্তি অশ্রমে নাই

## বিবিধ সংবাদ।

১৪ই ফেব্রুয়ারি সোমবার।

কিনিক সম্পাদক অনুরোধ করেন কর্তৃক ক্রম  
হেথ রাজকার্য্য বিশেষের উপলক্ষে পীরস্য  
শে গমন অন্য যাত্রা করিয়াছেন।

উক্ত সম্পাদক বলেন সখলপুরে রাজ্য  
ধাণের উদ্যোগ হইতেছে। ইহাতে গবর্ণ-  
র অনেক ব্যয় হইবে। কটকের সর্বস্থানে  
হয় পথ নাই বলিয়া বড় কষ্ট হইয়া থাকে, সে  
এইবার দূর হইবে। এইরূপ অন্য অন্য  
নেরও কষ্ট দূর করিলে ভাল হয় না।

গোয়ালপুরের মহারাজ আগরার গমন  
রয়া মহালমারোহপূর্বক সেইস্থানের লোক-  
গণকে এক ডোল গিয়াছেন। তদ্ব্যতী কোন  
কালবে এই টাকা দিলে অধিক উপকার  
হইত।

আলাহাবাদে উত্তরপশ্চিমাকলের রাজ-  
নী হইবে বলিয়া বোঝান হইয়াছে, তাহা  
হয় সত্য বলিয়া বোধ হইতেছে।

ভিয়ারকিন্ড সম্পাদক বলেন সর মর্ডা-

ই প্রেরক সম্পাদক সীত পুত্র হইয়া রাজ্যকে  
গমন করিয়াছেন। তিনি সীত হইয়া আ-  
হয়। বাজালিগণকে গালি দিয়া লোক কই?

আলাহাবাদগেজেট সম্পাদক বলেন, গত  
সপ্তাহে এত রকম হইয়াছে যে পলাও বন্যার  
জল দুইহাত রুজি হইয়াছিল।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন আলাহাবাদে  
একজন বনিক ধনাত্মক বলিয়া পরিচয় দিয়া  
১০০০ টাকা ধন করিয়া পলায়ন করিয়া-  
ছে। নগরে মধ্যে মধ্যে এইরূপ অনেক ধনী  
দেখা দিয়া থাকে, তথাপি লোকের চৈতন্য  
হয় না।

আমিও গেজেট সম্পাদক বলেন তথ্য  
সোমবার রজনীযোগে অগ্নি লাগিয়া গোমতী  
মন্দিরীর সমস্ত বস্তু ধ্বংস হইয়াছে।

উক্ত পত্রের আলমোড়ার সংবাদমতে। ক  
হেন তথ্য প্রত্যয় বড় ও বড় হইতেছে, তা  
হাতে শস্যের কতি হইবার বিলম্ব সভ্যনা।  
কোনস্থানে হেঁচকি কোনস্থানে কিছুই নাই।

উক্ত সম্পাদক বলেন সীত পুত্র তদানক  
কত রকম হইয়া গিয়াছে। তদ্ব্যতী ব্যাপার কেহ  
কখন দেখেন নাই, আর ৩ কিম্বা ৪ সের  
ওজনে মিল পড়িয়াছে এবং তদ্বারা বহু  
সংখ্য জীবহত্যা হইয়াছে। এতবড় মিল-  
ভাক্তর দুইই মাসেই কহিয়াছিলেন রাজ্যকে  
একবার রক্তির সময় মংসা পতিয়াছিল।

১৪ই ফেব্রুয়ারি মঙ্গলবার

বারাসত এত দিন এক ক্রম জেলা ছিল।  
সেখানে এক মাজিষ্ট্রেট ও ১ জন ডেপুটি  
মাজিষ্ট্রেট থাকিতেন, তদ্বি দুগোলের কাছা-  
রি আছে এবং বন্দীগণের থাকিবার এক ডে-  
লখানা আছে। এক্ষণে সে সকল গিয়া সামা-  
ন্য এক বিভাগ হইল। একটি ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট  
মাত্র থাকিবেন। বাদু অতঃপর বন্দী সেই  
কক্ষে নিযুক্ত হইয়াছেন। বারাসতের, ডেপুটি  
মাজিষ্ট্রেটের অধীনে থাকা এই প্রথম হইল।

কিনিক সম্পাদক বলেন এক জন সম্পা-  
দক লিখিয়াছেন, বিদ্যা শিক্ষা নিষিদ্ধ এখানে  
গবর্ণমেন্টে বিদ্যালয়ে সাহায্য দান ও দেশীয়  
শিক্ষকের বেতন হ্রাস না করিয়া যদি পুস্ত-  
কালয় ও ইন্সপেক্টরের সংস্থা স্থিতি করেন,

তাহা হইলে উত্তম হয়।

যদি যদি পরিচয় না করিয়া প্রত্যেককে  
বলি সকল বিদ্যালয় উঠাইয়া দিয়া, কল্যাণ  
কের কিছু রক্তির নির্য্য করিয়া দিলে পলা-  
তাল হয়।

উক্ত সম্পাদক বলেন সপ্তাহে ইংলণ্ডে যে  
এগজিভিশন (যেলা) হইয়া গিয়াছে তা-  
হাতে কেবল দুইতনের ও এসিয়ারিয়া  
পুস্তকের আশিরাহিলেন, অন্য রাজ পুস্তকের  
আইসেন নাই। বিশেষতঃ করাণির সম্রাটের  
আশিবার কথা অবধারণ ছিল, তিনিও আ-  
ইসেন নাই। কিনিক সম্পাদক আহ্বান করে-  
ন, যোগে যে করাণি এসন্য আছে তাহা বি-  
গকে উঠিয়া আসা হয় নাই। এই কার্য্যে করা-  
ণি সম্রাট দুই নেপোলিয়নের বিরুদ্ধে কর্তৃ  
হইতেছে, লর্ড পার্সলিও এইরূপ যত্ন  
করাতেই করাণি সম্রাট বিরক্ত হইয়া আই-  
সেন নাই।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন লেং মার্কেট  
সহিত সরু চারলস উত্তর সভ্য নাই। লেং সা-  
হেব যত্ন তাকালে কহিয়াছিলেন এ দেশে হইতে  
ইংলণ্ডে এসন্যের যে ব্যয় দেওয়া বাইতেছে,  
তাহা অন্যায়। ডেট সেক্রেটারির এই কথা  
মনোমত হয় নাই। বোধ হয় লেং মার্কেটকে  
এখানে পুনরায় আশিবে দিবেন না। যদি  
সত্য হয় এ অংশে লেং মার্কেটের মৌ-  
ন্য নাই, ডেট সেক্রেটারিরই অন্যায়।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন শিবদেওয়ান  
দোহে নামে এক ব্যক্তি কোচবেহারের রাজার  
নিকট গিয়া নানা সাহেবের কনিষ্ঠ জাতা ব-  
লিয়া পরিচয় দেয়। রাজা তাহাকে দ্রুত করি-  
য়া ত্রিটিস কর্মচারির হস্তে নিক্ষেপ করেন,  
কিন্তু সে ব্যক্তি তাহা স্বীকার করে নাই, সে  
কহে যে রাজা রোষ পরকাশ হইয়া এতদূর  
কর্ম করিয়াছেন। কর্মচারিরা তাহাকে পুন-  
রায় রাজার নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। তবে  
কি রাজা গবর্ণমেন্টের প্রস্তাবসালাতের জন্য এই  
কণ করিয়াছেন?

দিল্লীগেজেট সম্পাদক বলেন জোয়ান  
পুরে সবসেবনিং নামে এক ব্যক্তি বিশ্রাম  
কাল অবধি এক অনুরণ্য বাস করে, তাহার  
অধীনে অনেক লোক আছে বলিয়া তাহাকে



হৃত করিতে পারে নাই । সম্পাদকগণ  
গ্রেটব্রিট ১৫ জন পুলিশ টেনেন্ট লইয়া হৃত  
করিতে গিয়া তদারক আঘাত পাঠিয়াছেন ।  
হার জীবন সংগ্রাম । সুসাহস সঙ্গ সঙ্গ  
লোপকারক হয় না ।

১৬ ইয়াং বুধবার ।

কিনিক সম্পাদক কছেন রসরাজ সম্পা-  
দক আপন পত্রে এক ব্যক্তির লিখিত  
ছিলেন বলিয়া হৃতন কোজনারি আইন হতে  
হৃত হইয়া গেলে অবস্থিতি কবিতেন, আ-  
গামি সেসেরে উহার বিচার হইবে । সম্পাদ-  
ককে আবরা পুর্বেই সাবধান করিয়াছিলাম,  
উহার চুর্নুখি ।

বোম্বাই সাইটে রিবিউ সম্পাদক বলেন  
জেনারেলের গবর্নমেন্টের প্রতিনিধি দাম-  
বাবসারের প্রতিবন্ধকতাচরণ করিয়াছেন ব-  
লিয়া আরবেরা উহার জীবন নাশের চেষ্টা  
কবিতেন, কিন্তু গবর্নমেন্টে তুলতানকে ক-  
হিয়া পাঠাইয়াছেন যদি কোন অত্যাচার হয়,  
উহাকে অবিলম্বে রাজ্য পরিত্যাগ করিতে  
হইবে । তুলতান ! মনুষ্য ব্যবসার করিয়া লাভ  
করিবার কাল আর নাই ।

কিনিকের অঙ্গার সঁবাদদাতা কছেন ত-  
থাক ওলাট্টাব অতিশয় প্রাচুর্য হইয়াছে ।  
সম্প্রতি একটা বড় হটকা গিয়াছে । ২ টাক  
অঙ্গনে বিল এক পড়িয়া চিন যে কুসি দেখা  
বাব নাই ।

উক্ত সম্পাদক হুনিয়াছেন অম্বালায়  
অগ্নি লাগিয়া ৫-৬ বারী ভস্ম হইয়াছে ।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন এক ব্যক্তি  
এক জনের মস্তক ছেদন করিয়া বাগীতে অ-  
র্পণ করিয়া ছিল, সে হৃত হইয়াছে, কিংবা  
আলি জুরিয়া তাহাকে নিজেদে বলিয়া দুকি  
দিয়াছেন, একি সত্য ?

ডেকান হেরাল্ড সম্পাদক কছেন, চিও  
নামে এক গ্রামে অগ্নি লাগিয়া ৭০০ বারী বড়  
হইয়া গিয়াছে ।

মাস্ত্রাথ এডিনিব্র সম্পাদক কছেন মকী-  
মুসল্লার রাজার অতিশয় পীড়া হইয়াছে, তা-

হার পুর নাই, ব'হ উত্তরাধিকারি নিযুক্ত না  
করেন, উহার রাজ্য গবর্নমেন্টের হস্তে পতি-  
ত হইবে । সে সিদ্ধান্ত স্থির আছে ।

বোম্বাই সাইটে রিবিউ সম্পাদক বলেন  
এদেশের লোকেরা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যয়ন  
শেষ করিয়া গবর্নমেন্টের অধীনে কর্মের চেষ্টা  
না করিয়া আপন আপন চেষ্টায় অর্থ উপা-  
র্জন করেন । বালিকা ও অন্যান্য অনেক  
উপায় আছে । সংপরাশর্ম সন্দেহ নাই ।

হরকরা সম্পাদক অবগত হইয়াছেন জুন  
মাসের শেষে রেটেল-ওয়ে আলিগড় পর্যন্ত চ-  
লিবে এবং ডিসেম্বরে দিল্লী পর্যন্ত যাইবে ।

বালিকা পত্র সম্পাদক কছেন বারুয়া  
প্রমাদ রায় উক্ততর আদালতের এক জন  
জজ হইবেন এবং বারু শত্ননাথ পণ্ডিত তা-  
হার কর্ম প্রাপ্ত হইবেন ।

হরকরা সম্পাদক বলেন সাগুনান সাহেব  
মাসিক ৪০০ টাকা বেতনে অডিটর জেনারেল  
জের কর্ম প্রাপ্ত হইয়াছেন ।

বালিকা পত্র সম্পাদক হুনিয়াছেন সদ-  
রের জজেরা মূল্যকদের বেতন বৃদ্ধির জন্য  
গবর্নমেন্টে লিখিয়াছেন ; অতি উচিত কর্ম  
হইয়াছে ।

বারু রমাপাদ রায়ের অতিশয় শক্ত  
পীড়া হইয়াছে । আজিও তদু হটেতে পা-  
রেন নাই ।

অঙ্গমি হইল কুদীগোদানিবালী ক্রিয়ুত  
অগবজু কটাচার্যের অর্ডারগবর্নমেন্টের এক  
টি পুত্র হুর্বাপুরের পুত্র নবগ্রামে শিখ্যায়  
গমন করিয়াছিল । এই বালক সহরণ জানিত  
না, শ্রান করিতে গিয়া পুত্রব্রীতে অলম  
হইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে ।

১৭ই ইয়াং রহমতিবার ।

ইন্ডিস্তান সম্পাদক হুনিয়াছেন, বাবা-  
কপুরের সেনা দলের প্রতি সসজ্জ থাকিবার  
আজ্ঞা হইয়াছে । আকগানের যুদ্ধে বাউবার  
জন্য ৩০০০

দিল্লী গোজট সম্পাদক কছেন আমায়ের  
মস্তক পাকা আবশ্যক বিশ্বাস করিয়া এ দেশী-  
রভিগের হস্তে মনোহার ও অস্ত্র পত্র প্রভৃতি  
রাখা উচিত নহে, ১৮৫৭-৫৮ অঙ্গের কথা

এখন কেহ বিশ্বাস কর নাই, অস্ত্র না লইয়া  
একাকী গমন করা যুক্তিসিদ্ধ নহে এবং মে-  
শীর সচাচার পক্ষেই প্রতি দৃষ্টি রাখা কষ্টব-  
এই সকল মহাপুরুষেরাই বিজ্ঞান ঘটাইয়া  
কাম ।

আউত গেজেট সম্পাদক কছেন তথ্য  
১৪ দিনের মধ্যে ১৪টি ব্যাঙ্গ দ্বারা হইয়াছে

জালা বিউসেব এক জন পত্র প্রেরক কছেন  
ন, তথ্য এক জন আসনের এই বলিয়া নি-  
গোটি বড়িগেটের অঙ্গ সময় বলিয়া এই ব-  
টাক অঙ্গের হটল নচেৎ অধিক হটেত অ-  
সেমবটির হাটের বিলকণ অধিকার আছে

বালিকা পত্র সম্পাদক কছেন বিদ্যায় যত উ-  
তি হটেতে ৩৫টি মনুষ্য ততবার হৃতন হ-  
তন উপায় উদ্ভাবিত হইতেছে । কেহবা ব-  
কের গুলি অধিক দূর বাইবার উপায় ক-  
হেছেন, কেহ কামান দ্বারা বহু সংখ্য লো-  
হারিয়ার চেষ্টা কবিতেন, কেহ বাকুল দ্বা-  
একবারে সত্তর নো মল লাস করিয়া  
চেষ্টা পাঠে ছেন, যে উপাসে হটল, ম-  
নাশ হটেলেই হেস, অর্থ ধাংস হইলে পুনরা-  
গ ওয়া যায় । কিন্তু মনুষ্যের জীবন সে-  
নহে । উক্ত শোণিত অবস্থায় প্রাণিবন স-  
তার বিলক নহে ।

১৮ই ইয়াং শুক্রবার ।

সমাচার চিন্তাকামী সম্পাদক করাচি এ  
পত্রে মগন করিয়াছেন যে এক জন সিপা-  
আপন সহধর্মিণী ও এই জীবন সলোদ্বারকে হৃত  
করিয়াছে । তাহাকে হৃত করা হইয়াছিল, ব-  
তরবার দ্বারা সে আপন জীবন শেষ করি-  
দণ্ডে হৃত হটেতে দৃষ্ট হইয়াছে ।

সমাচার পত্রে ছোট আদালতের মো-  
জমের রহস্য লিপিত হয় বলিয়া অনেক  
অসংবাদ প্রকাশ করিতেছেন । জী লো-  
নামেব ২৫ বছর বয়স্ক লিপিত হটেতে  
দিগকে অধীনে রাখা তার হটে ৩ টাটে  
কিনিক সম্পাদক আপন রিপোর্টারে  
আদালতে ব'ইতে নিবেদন করিয়াছেন । বা-  
কেরা কুশ্ম করিয়া ধরা পড়িবার সুর যে  
হে ৩ মিত করিয়া থাকে, এ উপায়টি  
কপ হইবে ।

হরকরা সম্প্রদায়কে, সরাসরি ১৩ই মে জাভা হইতে লিখে যাত্রা করিয়াছেন। কেবল এ দেশের এক বসতি নহ, এ দেশের জন বাস্তুও তাঁর সহ হইল না।

ইংলিস্থান সম্প্রদায় গিরি হইতে সংগ্রহ পাইয়াছেন, ইংলণ্ডের ল্যেট পুত্র কঠোর জীবন রক্ষা করিয়াছেন। তিনি কল আনন্দের হস্তে পতিত হইয়াছিলেন, অধিক লোক ছিল না। আরও তাহার গের দ্বারা মাঝে মাঝে করিবার উপক্রম হইলে এক ব্যক্তি করিয়া ইংলণ্ডের ল্যেট হইত। তাহার সব অভিযানে আছেন, ইহা করিয়া আরও পলায়ন করিল।

বঙ্গদেশের লেপ্টেনেন্ট গবর্নর অধ্যক্ষ রেলওয়ের শিফালির পুলে দেখিতে পিতা-লেন। আরো অনেক তরল লোক তাহার হস্তে ছিলেন।

ইরানপুরে একটি মৃত্যু হইয়াছে। ব্যক্তি গমতার কর্তৃক হত্যা, প্রত্যহ টাকা হইত। কিন্তু মৃত্যুর দিন তাহার নিকট টাকা ছিল না। দুই সাত টাকা আছে। করিয়াই তাহাকে বধ করিয়াছে। এখন পুসি আছে, কেহ কাহাকে হত্যা করে মনে করিলে হত্যাকালে তাহার নিরাপত্তা নাই।

১৯এ ট্যাক্স শনিবার।

হরকরা সম্প্রদায় ২৬এ এপ্রেল পণ্ডিতের লিখিত আবেদনের সম্মত পাইয়াছেন। ইংলণ্ডে একটি যুদ্ধ হইয়াছে। সত্যবাদী হইয়াছে। করানি দেশীয় যে কার্যকার কঠোর হইতে পারেন। তাহার রাষ্ট্রীয় ব্যাপার হইতে কোন উদ্বেগ আছে, তাহা দ্বারা মাঝে মাঝে একরকম অপ্রদান করিতেছেন। সেপতি বরগার্ডের আল চিঠি দ্বারা পক্ষিয়া। সাতের মত প্রকৃত আর ব্যয় হিসাব হইতে পারিলে সত্য অপ্রদান হইতে পারে। ২৬ই মে পার্লিমেণ্টের সভায় এই আবেদনকে বিবাদ উপস্থিত হইয়াছে, যাক ইংলণ্ড উচ্চতর বাধ্য বল পূর্বক তাহার বিবরণ দিচ্ছে এবং ইংলণ্ডের খা-

লিখে কর্তৃক কঠোর বসতি। যে-কর্তৃক হর, তাহাতে সকলে প্রত্যহ করিতেছে। সত্য পার্লিমেণ্টে সভায় এই প্রকার অভিযোগ প্রকাশ করিয়াছেন।

চীনদেশ হইতে সমগ্র আশিয়াতে, ইংল্যান্ড করানি সেবার। সত্যের সেনার সহিত লিখিত হইয়াছে। বিব্রাহীদিগের হস্ত হইতে একটি নগর ও ১৩০০০০ তরল মূল্যের দ্রব্য সামগ্রী হস্তগত করিয়াছেন।

### ৩রা মে পর্য্যন্ত ইউরোপীয়

সমগ্র।

১লা মে ইংলণ্ডে একজন মৃত্যু (মেরা) আনত হইয়াছে।

ইউরোপের ও কলিফোর্নিয়ায় রাকারার আশিয়া সাহায্য করিতেছেন, আর ৩৫০০০ লোক তাহার উপস্থিত হইয়াছিলেন।

সেনাপতি সের্গেই সেনার ইরকসহ-রেব নিকটে আছে।

গবর্নমেন্টের যুদ্ধ জাহাজ ইরকসহরে অনেক ভৌগ করিয়াছিল, কিন্তু কোন অপকার করিতে পারে নাই।

পলাতক গবর্নমেন্ট সেনার হস্তগত হইয়াছে।

পশ্চিম খণ্ডে সেনাপতি বরগার্ড এখন পর্য্যন্ত করিয়া অধিকার করিয়া আছেন।

গবর্নমেন্ট সেনার নিউ অব লিঙ্গ আক্রমণকারিদিগকে আক্রমণ করিতেছে।

করানিয়ার ওয়াশিংটনের হস্ত বিশেষ কার্যক্রমে রিচমন্ডে গমন করিয়াছেন।

সেনাপতি লিঙ্গের কলিফোর্নিয়ায় দাঁড়িয়ে যুদ্ধ করিবার পক্ষে আকর করিয়াছেন।

সেনাপতি গরুণ রোম পরিত্যাগ করিয়া অধিকার করানি দেশে প্রত্যাপন করিবেন হিব হইয়াছে।

বিক্রম ইমারতকে অতি সমারোহে সেপ-লুনে আশ্রয় করা হইয়াছে।

লার্ড কার্ল, ডিউক অব সাসক্স, আরল রসেল, লার্ড সাসক্সবরি ও লার্ড কিউজ উইলিয়ামকে গারটার সত্য প্রদান হইবে।

লার্ড কার্ল ১৬ই এপ্রেল ফোডারে উপস্থিত হইয়াছেন। জাপানের যুদ্ধের ৩০এ এপ্রেল

ফোডারে আশিয়াতে এক একজন মৃত্যু হইত ছিলেন, আরল রসেলের লিখিত ইংল্যান্ডে মার্ক ৫ হইয়াছে।

লাফায়াব্রের দুইবিধকে লাবায়াব্রের দ্বারা জন্ম টান হইতেছে। যেখানে কিছুকালের ২ নং ইউরোপীয় সৈন্যদল টান হইতেছে এক ওয়ার্ড থাকার সাহেবেরা বিকট-বিদ্য হুন পাইবেন।

যে কারণে ইউরোপীয় ও এশীয় সেনা একত্র করা হইয়াছে, সরাসরি উভয় সেনা কর্তৃক হাইসেরাচার করিয়াছেন।

কলিফোর্নিয়ায় গবর্নমেন্ট যুদ্ধের ও প্রদানের যে চেষ্টা করেন, তাহা লিঙ্গ হইয়াছে।

যে-কর্তৃক গবর্নমেন্ট করানিদিগের উপরে আশ্রয় অত্যাচার করিয়াছেন, তাহা হইতে বেক্রিয় হইয়াছে। ও যুদ্ধোপযোগী সামগ্রী প্রেরিত হইবে।

### গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালিয়ার লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের

আদেশানুসারী নিয়োগ।

১৯এ মে—যাহু পূর্ণিমা দ্বারা ১৮-৩০ সালে ৩২ আইন অনুসারে কিছুকালের জন্য পাবনা ও ময়মনসিংহ আসেন ও তেপুটি কালেক্টর হইবেন।

সদীপের হুনমেক বাহু বহুশক্ত দ্বারা মর্দ-রাখালিতে দ্বিতীয় জেনিট, অধীন দাঁড়িয়ে-টের কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

২১এ মে—সদীপের আসেন ও তেপুটি কালেক্টর বাহু আরকানাম দে পক্ষ জেনিট ছিলেন, চতুর্থ জেনিট হইয়াছেন।

নিম্ন লিখিত এডমিট তেপুটি দাঁড়িয়ে ও তেপুটি কালেক্টরের। তেপুটি দাঁড়িয়ে ও তেপুটি কালেক্টর হইবেন।

পূর্ণিমা বাহু উচ্চতর বন্দোপাধ্যায়। কলিফোর্নিয়ায় লীনবদ্য মৌলিক। ময়মনসিংহ, টেজর সাহেব।

২১এ—যে লেপ্টেনেন্ট, আর, লিঙ্গ সাহেব হইতে ময়মনসিংহে সত্যকারী কমিন্দর হইবেন।

২২এ—যে মেট্রিক ডাক্তার সেখ ময়মনসিংহ-পুরের দাতব্য ঔষধালয়ের ভার প্রাপ্ত হইবেন।

২৩এ—যে কটকের এডমিট লিঙ্গ ও



সিনিয়ান জজ ও উক্ত সাহেব এই প্রবেশের  
বিষয় ও সিনিয়ান জজ, হইবেন।

আর এম, সোর সাহেব পুর্নিয়ার সিবিলা  
ও সিনিয়ান জজ হইবেন। কিন্তু বক্তা দিন অন্য  
আজ্ঞা না হয় কইকের কনিষ্ঠদের প্রতিনিধি  
থাকিবেন।

বর্জমানের মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর এস, এ-  
ম, হন সাহেব এখন প্রেনির মাজিস্ট্রেট ও ক-  
লেক্টর হইবেন।

বিনাকপুরের প্রতিনিধি মাজিস্ট্রেট ও ক-  
লেক্টর এইচ, বি, সিমসন সাহেব দ্বিতীয় প্রে-  
নির মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

জে, পি, এইচ ওয়ার্ড সাহেব বালেশ্বরে মা-  
জিস্ট্রেট, কালেক্টর ও সগণের এজেন্ট হইবেন  
কিন্তু বক্তা দিন অন্য আজ্ঞা না হয় ২৪ পরগণার  
মাজিস্ট্রেটের প্রতিনিধি থাকিবেন।

জে, বিলস সাহেব বিনাকপুরে কাইট  
মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন কিন্তু  
বক্তা দিন অন্য আজ্ঞা না হয় পুর্নিয়ার মা-  
জিস্ট্রেট ও কালেক্টরের প্রতিনিধি থাকিবেন।

এইচ, এল, অলিকার্ট সাহেব দ্বিতীয় প্রেণি  
র জজিট মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর  
হইবেন।

২৭৬—মে তারিখের কলিকাতা গেজেটে  
৭ই জানুয়ারির বিজ্ঞপ্তি ভিন্ন সাধারণতঃ জ্ঞাত  
করা হইতেছে যে কোর্টদারি আইনের ৩২২  
ধারা মতে উক্ত আইনের ১৮ অধ্যায়ের সেনি-  
য়নে সমর্পণ যোগ্য সকল ২৪ পরগণা  
ইঙ্গলি, বর্জমান মুরসিদাবাদ, নদীয়া, পাটনা  
ও চাকাত্তে করিব খাবা বিচার হইবে।

## প্রেরিত।

### শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসঙ্গীত

মহোদয়ের।

সবিস্ময় নিবেদন। মহাপদ। আমি প্রীতি  
পূর্ণ প্রবন্ধ অবিকল্পিতরূপে জমণ করিতে পা-  
রিতেছি না। অতএব মানন করিয়াছি যে মান  
জ্ঞানে সমর্থকরাতে যে সকল বিষয় আমার বস  
কেন্দ্রের হিতকর বোধ হইয়াছে, তাহা লিখিয়া  
ছাত্র প্রীতিস্বরূপ অতি বাহিত করিব। আশা  
প্রবন্ধ প্রথমতঃ এডুকেশন ডিপার্টমেন্টের বি-  
ষয় লিখিত হইল।

সকল কালেক্টর পাখা বিজ্ঞান আ ই,  
কিন্তু সংস্কৃত কালেক্টরের কিছুই নাই। বর্তমান  
অবস্থায় সংস্কৃত কালেক্টর দ্বারা যে বঙ্গদেশের  
কি পর্যন্ত উপকার হইতেছে, তাহা প্রায় সক  
লে অবগত আছেন, সুতরাং বিশেষ বহিঃ,  
লিখিবার প্রয়োজন নাই, বিশেষতঃ মফস্বলের  
লোকের সংস্কৃতের প্রতি ঐকান্তিক  
আস্থা। অতএব যদি সংস্কৃত ও ইংলিশ উভয়  
ভাষা শিক্ষা দেওয়া হয় তাহা হইলেই অতি  
ভাবকবর্ণ অধিক বড় করিবে। বালকদিগকে  
শিক্ষাবার চেষ্টা পায়। বঙ্গদেশে চাবিটি মাত্র  
সংস্কৃত ইংলিশ বিদ্যালয় আছে। হুতীগায়ে  
গবর্ণমেন্ট একটীতেও সাহায্য প্রদান করেন না।  
দ্বিতীয়তঃ এডুকেশন ডিপার্টমেন্টের ডাইরেক্টর  
সাহেবের একটা কাউন্সেল থাকি বিধেয়। এক  
ব্যক্তির উদ্ভাবনী শক্তির উপর স্বাধীন বঙ্গদে-  
শের শিক্ষা কার্যের ভার অর্পিত থাকা উচিত  
নয়। তৃতীয়তঃ মফস্বলে বাহা বাজালা পাঠ  
শালার তত্ত্বাবধান ও ডেপুটি ইন্সপেক্টর আছেন  
তাঁহাদিগের মধ্যে অনেকই বাজালা কিছুই  
জানেন না। অতএব বাজালা পাঠশালাগুলি  
দেখা করিবে। সংস্কৃত কালেক্টরের হারনি-  
গকে তত্ত্বাবধান কার্যে নিযুক্ত করা বিধেয়।  
চতুর্থতঃ যে সকল ছাত্র মফস্বলের বাজালা  
পাঠশালা হইতে ছাত্র হইয়া পাইয়া কালেক্টর  
আইসে, এক্ষণে তাঁহাদিগের চারি বৎসর মাত্র  
ছাত্র হুতি পাইবার নিয়ম আছে, কিন্তু তাহাদি-  
গের অন্ততঃ ছয় বৎসর ছাত্র হুতি পাওয়া বি-  
ধেয়। কারণ চারি বৎসরের মধ্যে তাহারা প্রবে  
শিকা পরীক্ষা দিয়া উঠিতে পারেন না। ছাত্র হুতি  
শেষ হইয়া গেলে আর বিদ্যে থাকিবে। পড়ি-  
তেও পারে না। তাহারাই নব যৌন কলহে হইয়া  
থাকে অর্থাৎ কৃতবিদ্যা না হইয়া পড়া ছাড়িয়া  
মিতে পারেন না। পড়িতেও পারেন না, বাহালা ভয়ে  
আর লিখিতে পারিলেন না।

জমণকারিণঃ

### মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসঙ্গীত দক মহাপদ সমীপে।

সবিস্ময় নিবেদন।

কএক মাস অভ্যস্ত হইল, বালিনহর প্রকৃতি  
জ্ঞান চাকারিটোয় সংগৃহীত হইতেছে, ইহা  
নির্ভাবিত হইবার সময় মাজিস্ট্রেট সাহেব উক্ত  
প্রামাণ্য সঙ্গ কালেক্টর উক্ত টোয় নির্ভাবিত  
আব দেন। তাহাতে নির্ভাবিতগণ অর্থাৎ (পেচা-  
ইতগণ) একপ করিয়া টোয় নির্ভাবিত করিয়া-

হেন যে তাহা সম্পূর্ণ অমায়। তাঁহাদের অনেক-  
ক আশীর্বাদ ব্যক্তি ও আশীর্বাদ দাব। অল্পপ্রতিভ  
ব্যক্তি (যদিও তাহা তাই নাই) ধর্মবান্ হ-  
ইলেও তাহা দর টোয় এত অল্প পরিমাণে নি-  
র্ভাবিত করিয়াছেন যে তাহা বলা যায় না এমন  
কি /০ এক আনা মাসিক টোয় অনেকের নির্ভা-  
বিত হইয়াছে। আর বাজালা জম, প ও অনাভিত  
(তাঁহারা যদি পকাইতগণের আশীর্বাদ দাব)  
তাঁহাদিগকে পকাইতদের ধনী আশীর্বাদ অপেক্ষা  
দ্বিগুণ ও চতুর্ভুগ টোয় দিতে হইতেছে। সা-  
ধারণ বিদ্যালয় ও দেবদানির প্রকৃতি স্থানে যে  
স্থানে উপাসনা হয় সে স্থানের টোয় লইবার  
নিয়ম নাই কিন্তু আমাদের দেশের টোয় নির্ভা-  
বিতগণ তাহা অল্পপ্রতিভ করিয়া করেন না। মফস-  
পান করিয়া স্থানের টোয় করেন নাই। কত  
তাহার রহস্য বিচার করিবার স্থানের টোয়  
করেন নাই কিন্তু যেখানে কেবল উপাসনা হয়  
যেখানে সেই নিয়ম মফস্বলে প্রতি পাঠ  
হয়, "পকাইতগণ" ছেদবশতঃ সেই পবি  
ব্রাহ্মসমাজের টোয় অধিক পবিমাণে নির্ভা-  
বিত করিয়াছেন। কি পবিভাগ দলদলি খো-  
টেব ও ছেদবশতঃ এখনও বিলম্ব প্রাকৃত  
আছে। সম্পাদক মহাপদ এইরূপ নার পবি-  
ব্যক্তির সংখ্যা হুতি হইলে দেশের যথেষ্ট  
পকারের সম্ভাবন।

১৫ জ্যৈষ্ঠ ১২৬৩ কলিকাতা চাকাত্তে করিব খাবা

### মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসঙ্গীত দক মহাপদ সমীপে।

মহাপদ। অমায়িকের দেশবাসিন্দা জে  
মিগের মধ্যে কে কেমন মফস্বলে কেমন দেশ  
টৈবী তাহা তাঁহাদিগের কার্যের দ্বারা প্রমা-  
পাইয়া থাকে। তাহাদিগের দ্বারা শ্রীযুক্ত বাবু বদে-  
শব সিংহের কএকটি মহৎ কার্যে আমরা চমক  
কৃত হইয়াছি। বিদ্যালয়ের অধন পুস্তকালয়ে  
জমা করণ ২ কোটি টাকা দিয়া থাকেন কিন্তু তা-  
হাচক হইয়া কখন কাহাকে কিছু দিতে দেখা  
হইয়া গেল বৎসর বৎসর বাবু উপাচার্য হই-  
চন্দননগর বিদ্যালয়ের দান ৭৫ টাকা পাঠাইয়া  
দেন। তাহাতে আমরা অতিশয় বাহিত হইয়া  
তার নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিতে একান্ত  
লাবী ছিলাম। সংগ্রহ প্রীতিস্বরূপ অধিকাল থাক  
হুই বক্তৃতে একত্র হইয়া উক্ত বাবুর সমি-  
সাফল্য করিতে মিয়াছিলাম। বইটিব টো-  
হইতে মামিয়া জমলাস যে তথা হইতে  
জাতি পর্যন্ত ও কোশ প্রকাশ্য পথ উক্ত  
দিগের ব্যয়ে নির্ভাবিত হইয়াছে। পথে

কিছু দিন হইল কোন এক কৌজলারি মোক  
দমার সাক্ষাৎ দিবার জন্য তাঁতিবন্ধ নিবাস  
ঐহিক বাহু বিজয়গোবিন্দ চৌধুরী মহাশয়  
এই পাবনার চেপ্তারি মাজিষ্ট্রেট ঐহিক বাহু প  
চল্ল হুগোপাখ্যার মহাশয়ের কাছারিতে গু  
দিত হইলে তিনি বিশালবাধে চৌধুরী মহা  
শয়কে গালি দেন। মঙ্গলক মহাশয়! নাম ক  
ধন, তাহার কিছুকাল পরেই চৌধুরী মহাশ  
তৎস্বত্ব বিশেষ করিয়া সন্মুখে জানাইয়া  
এখানকার মাজিষ্ট্রেটের প্রতি তাহার  
ভয়ানক জানিবার আশ্রয় হইরাছে। তাঁ  
সাম বোয়ালিয়ার কমিসন্সর সাহেবের মা  
তদন্ত করিয়া এই বিষয়ের সত্য বিচার করিবেন  
কাকে বেদন দেখি তাহা আপনাকে জানাই



সংসার। সম্পাদক মহাশয়। রাজালির আর  
পার নাই, সহরেও গালি, মকসলেও গালি,  
বেচনা ছিল অদেশীয় বিচারক হইলে সুস্থি  
গালি খাওয়া বাটা হইবে। কিন্তু তা কোথা,  
এখন দেখিতেছি, যেমন ম, তেমন কি, তার  
দাঁড়। তার মাজিরীটি।

অন্তঃস্রব্দিত পত্র হইল ডেপুটি ইনস্পেক-  
টর জৌহাশি সাহেব খুনজানাকুলে উপস্থিত  
হইয়া তত্ত্বাধীনে প্রথম প্রণীত কবিতার হাতকে  
পৌরুষ ভরণ দ্বারা বিলম্ব গম্বান করিয়া পি-  
তাইলেন। এইত চাই কিরিলীর খাটা কি না।  
তসিলাস এই কুলে একটা অংশের দ্বারা আ-  
ছে, তাহার না কি একরূপ অর্থ কবিলে  
পাঁচ একাধে তাহার উত্তর দিয়া প্রথমতাকে  
অধিক করে।

সম্পাদক মহাশয়। এ প্রদেশের নীলতর জীম-  
মেরা একপে বস জাগ করিয়া ছলে প্রমোদের  
সর্বনাশ করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। তাব  
মধ্যে আবার আনন্দে হজামাতেও অনেককে  
কষ্ট ভোগ করিতে হইতেছে। তখনক প্রজা এই  
সকল ক্ষেপে ক্ষেপিত হইয়া যে একটি গীত পদ্য  
করিয়াছে, তাহা শুধুন।

হয়।

আমি আহিগো তারিণী কণী তব পার।



রৈলে কোথা গো কুটন প্রকার জীবন,  
সহে সহ, তার জীবন,  
মাগো বারেক আসি ভারতে,  
মেখে বা গো দুচকেতে,

কি ভুগেতে আছে তোর প্রকাগণ।  
যা ছিল নীলেতে সব মিটেছে,  
কেবল পরাণ মাত্র অবশেষ রয়েছে,  
অন বিনে নীর দেহ রয়েছে,  
শোকানলে সরা বপু হইছে,  
মাগো কোথা বাব বল আবি,  
কিনে পাইব নিস্তার,  
উপায় না দেখে কান্দু ছনয়ন।  
নিভিতে নিভিতে বিতোহ অংশ,  
দিয়ে কত তার পরে কবিতা তুফান তল,  
বল কিশে বল পাব জননি,  
খাস রক্ত হৈছে তার পদাণী  
ও মা করাবে আবেগ্য গান,  
করালে যে বিব পান,  
সাকি জাগ হারালেম জাগ ধন।  
কিছু দিন-বার দিখে ঘোষণ,  
যেলেছিলে আমাদেব দুচাইবে বাতন।  
এখন বারেক কবে সুখাও না,  
তাকি খনং কেন চাও না,  
দিয়ে অশ্রু মৈদান জলে,  
তাখালে কুমারকুলে,  
এখন অকুলে টে গো সগন।

বিদেশী বলিয়ে কি গো এত ভাব,  
এ দেখু যথিহ হয়ে কব না কি সবিভাব,  
এ কোল আচার বুঝা টেলো ভাব,  
এই কি উচিত ভাবে, যা তোমার,  
মাগো বিদেশী ম, বলে বচি,  
তাই কি বর্জন বিধি,  
কেন বিধি লিখেছে এ লিখন।  
তানিখ ২৬এ বৈশাখ ১২৬৩ ম ম

### জীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়ের।

বিমরপূরক নিবেদনমিত।

গত ২৬ বৈশাখের সোমপ্রকাশে "আমি

সতে সকল মকসমার সন্ধিতাক কেন হয় না?"  
এই প্রশ্নটি দেখিয়া কিছু লিখিতেছি, অল্পপ্রহ  
পূরক পত্রখানি সংশোধন করিয়া, সোমপ্রকাশে  
স্থান স্থান করিলে দাখিল হইবে।

হাস্যকর ভুলের দ্বারা পত্রটি জীযুক্ত বাবু  
নীলমণি মিত্র মহাশয়ের সমস্যাধি ভাষণ সুক্তি  
ধারণ করিয়াছে। তিনি নিজে বড় মানুষ, বোধ  
হয় কেবল অল্পবয়স্কদের হিতাধি তাঁহার  
ব্যাক্তী কবা। তাঁহার সময়ে সেরেজামার সীতা-  
নাথ বন্দু একাধিপত্য ছিল।

অনন্তর অল্পদিনের ভয়া জীযুক্ত বাবু নরো-  
ত্তম বল্লভ মহাশয় তৎপরে প্রতিনিধি থাকিব,  
সন্ধিতার দ্বারা যথ বিস্তার করিয়া ছিলেন।

একপে জীযুক্ত বাবু হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়  
মহাশয় কুজেরী অসন অধিকার করিয়াছেন।  
ইনি উচ্চউপাধি প্রাপ্ত সুশিক্ষিত লোক, ইঁদার  
দ্বারা সন্ধিতার লাভের প্রত্যাশা করিয়াছিলেন  
কিন্তু দুর্ভাগ্য বশত ইঁদার কএকটি কার্যে নি-  
স্তান্ত হুগিত হইয়াছি।

আমাদেবের উপবিলান্তেব কথা। আশনকা-  
র পাঠকবর্গের অবিসিত নাই, কিন্তু এ আদাল-  
তে অতিশয় বাড়াবাড়ী হইয়া উঠিয়াছে।

প্রত্যেক আদালী দাখিলে ১০ আনা প্রত্যেক  
এজোহারে ১০ আনা প্রত্যেক সাকীর ১ ডিগ্রী লে  
খাইতে ৮ আনা প্রত্যেক সমনকারী কবাইতে  
১০ আনা এবং প্রত্যেক সাকীর জোহানবন্দীতে  
১০ আনা চিনাবে, আমলা বাবুরা উভয় পক্ষে  
২৫ মিকট হইতে লইয়া থাকেন। এমন কি টবা  
তাগাদেবের মারা পাওনা চইরা পড়িয়াছে। ই-  
হার উপর যে পক্ষ যত অধিক দের তাহার কাজ  
ব্রহ্মণ করিয়া থাকেন।

মহাশয়। ১০ টাকার একটি মকসমার আদ  
লাকে ১৫ টাকা খুল দিতে হয় একবছর তর লো।  
সেব কি আদালতে আদ। উচিত ২ বিচার পতি-

দেব অযোগ্যতা নিশ্চেষ্ট আদালত এসক ভই-  
বার প্রদান কারণ।

একপকার আদালত কেবল কসরুলি পাত-  
লাত সাকী এবং অধিকৃত ও অসম্পূর্ণ অংশ  
লাব অংশ হইয়াছে। গবর্ণমেন্ট আর কতদিন  
এসকর উদ্দেশীম থাকিবেন? আদালতের ভয়  
না হইয়া আর কতদিন থাকিবেন? বিদেশী-  
মার আর কত কালট বা বসাদার জ্ঞান করিতে  
হইবে।

বিমরপূরক জ্ঞানাইতেছি গবর্ণমেন্ট নিম্ন  
লিখিত চুটি বিষয়ে গবিশেষ সমোযোগ ক  
লেন।

১ম। বিচারপতিদিগের যেমন আইমের  
পত্রিকা প্রণয় হয়, তেমন ঘোষাত র ও চাঁচ  
হের পত্রিকা প্রণয় রীতিপ্রবর্তিত করা উচিত।  
যে প্রণয় দিন বিশেষ প্রার্থিত লাভ না। আরও  
পারিবেন, ন কনাপি বিচারপতি পক্ষে ব.চ।  
না। ২য়। অধিক লেখাপড়া জানিয়াও যে অনেক  
কের চবিত্র নং পাঠে, ইহার কুর দৃষ্টান্ত মে  
খাইতে পারা যায়।

২য়। আদালতের প্রমোদগেব পত্রী-  
কা লইবার রীতি প্রচলিত হইয়া। সুশিক্ষিত ও  
সম্পূর্ণ লোককে অধিক বোঝানে নিবৃত্ত করা  
হয়। ইহাতে গবর্ণমেন্টের যে খতি হইবে তাহ  
পুরণেব উপায় বলিতেছি।

একপে এদালতে ইটাল প্রকৃতি যেক  
অবধারিত আছে, তাহা বিবেচনামত খাড়াইয়া  
দিলেই যথেষ্ট দ্বার চটবে। ইহাতে সাধারণে-  
রও ক্ষতি হইবে না।

একপে বিচারপতি মহাশয়দিগকে অল্প-  
বোধ কবিতোহ তাঁহার বিবেচন। ক'রা। এমুন  
যে কাকিমদিক বিংশতিবধ পূর্বে এদেশীয়ের  
নিরূপ চবিত্রগ্রস্ত ছিলেন, এমুন যে পত্র  
সর্বদার এসোমিড দেখা খাইতেছে, সে কেবল  
১০ মায়ুপদত। শুণেই চইয়াছে সন্দেহ ন টা  
সকল বিচারপতি যদি জীযুক্ত বাবু হেমচন্দ্র  
ঘোষ ও জীযুক্ত বাবু কাশীধর মিত্র প্রকৃতি ন্যায়  
গদ্যগণ বিচারপতিগণের গুণের অভিকরণে  
নীল চন, বিচার কর্তার দোষে যে অনিষ্ট ঘটি-  
ছে, তাহা নিবারণ হইবে।

সংগ্রাহী

এই পত্র কলিকাতার কলিক পুস্তক মাল্য; বলাও  
সোমপ্রকাশ জেনারেল বন্ধিন চাঁকিপোতা প্রম জীযুক্ত  
বারকার বিলাতুগণের বাসিতে প্রতি সোম  
প্রাতে প্রকাশিত হয়।

# সোমপ্রকাশ

“এবর্ত্ততাৎ প্রকৃতিহিতায় পার্শ্বিকঃ সার্বভৌমঃ সত্যমহী ন হীমতাৎ

৪ ভাঃ।

৩০ সংখ্যা।

সন ১২৬৩ । ২৮ টৈজ্যষ্ঠ । ইং ১৮৬২ । ৯ জুন

মাসিক দ্বিতীয় ১ টাকা

বার্ষিক আদায় ১২ টাকা

বিজ্ঞাপন।

প্রসঙ্গগণের প্রতি।

ইশাখানস অতীত হওয়াতে অনেকের প্রসঙ্গ লোকপ্রকাশের মূল্য নির্দেশিত হইয়াছে। তাহাদিগকে বিনয় পূর্বক জানান যাইতেছে যে তাহারা অনুগ্রহ পূর্বক দ্বার আগামি বর্ষের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আপাততঃ সংস্কৃত বস্ত্রেই মূল্য পাঠাইবেন।

বিজ্ঞাপন।

বিবাহবিনোদ মাটক।

ঐশ্বন্য বিব্র এণ্ড উক্ত মাটক সংস্কৃত যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া বিক্রয় প্রস্তুত আছে। প্রসঙ্গগণ নিম্ন লিখিত ঠিকানায় তত্ত্ব করিলে পাউতে পারিবেন। মূল্য ১০/ আন. মাত্র কলিকাতা।

কলিকাতা।

ঠেনঠেনিয়া, ১৭ ১৮ নং ভবনে সংস্কৃত পুস্তকালয়ে পটলভাড়া ৮৬ নং ভবনে গুল্ল ব্রাদার্স প্রিন্টিং পুস্তকালয়, লালবাজার ডি বোয়ার্ডিং এণ্ড কোম্পানির সাইরেরি।

বর্ধমান।

রাধানগর ব্রহ্মসভার উপাচার্য

ঐযুক্ত দুর্গানন্দ কবিরাজ মহাশয়ের নিকট

সোমপ্রকাশ।

১৮ এ ইজ্যে সোমবার।

আসামের চা করণ ও মেজর

হলকিন্সন।

অত্যাচারকারিদিগের পক্ষে কি বল কণে কালই পড়িয়াছে। তাহাদিগের অত্যাচারকারিতা ও স্বার্থপরতা আর গোপন রহিতেছে না। মীলকর ও চা-করেরা

আপনাদিগকে এ দেশের “ঐরিকারী বলিয়া পরিচয় দিয়া থাকেন। তাহারা বলেন, “আমরা ঐর পরিপূর্ণ ভূমি পরিষ্কৃত করিয়া তদ্ব্যতীত মীল, চা, প্রকৃতি বপন করিতেছি, আমাদিগের চেতায় অনেক জ্বা উৎপন্ন হইতেছে, এবং আমরা যে সকল জ্বা বিদেশে রপ্তানি করিতেছি, তাহাতে শুদ্ধ স্বল্প সরকারের অনেক টাকা লাভ হইতেছে।” কিন্তু আমরা ভারতবর্ষের, বিশেষতঃ কৃষক ও অমীল ব্যক্তিদিগের অনিষ্ট বিনা ইষ্টলাভ দেখিতেছি না। ঐরিকারিদিগের হস্তে পতিত হওয়াতে তাহাদিগকে চিরকাল কর্ম ভোগ করিতে হইতেছে। তাহাদিগের যে কেবল স্বাধীনতা বিস্মৃত হইয়াছে একপক্ষে, তাহারা শরীর সমর্পণ করিয়াও উদর পূরণপর্মাণ অর্থ লাভে সমর্থ হইতেছে না। মীলপ্রধান প্রদেশের প্রসঙ্গগণের দুর্ভাগ্য বিবরণ এতদূর অবস্থায় নাই। চা-প্রধান প্রদেশেও ইহা ক্রমশঃ সমাধান হইতেছে।

আমাদের চা-করেরা পূর্বে প্রত্যেক মজুরকে প্রতি মাসে ২১০ টাকা করিয়া বেতন দিতেন; ক্রমশঃ বেতন বৃদ্ধি হইয়া ৪১০ হয়। এক্ষণে পরিভ্রমের যে একান্ত মূল্য ও গৌরব বৃদ্ধি হইয়াছে, তাহাতে ৪১০ টাকা মাসিক বেতন অধিক নয়। এ বেতনে এখন মজুর পাওয়া যায় না। অল্প দিন হইল, আমাদেয় অন্তর্গত দেবদাসদের একজিকিউটিব ইঞ্জিনিয়ার প্রত্যেক

মজুরকে প্রত্যাহ চারি আনা করিয়া মজুরী দিতে আরম্ভ করিয়াছেন। সুতরাং তদ্ব্যতীত চা-করেরা আর অল্প কালের মধ্যে পাইতেছেন না, তাহাতে তাহারা সম্ভাবিত হইয়া লক্ষীপুরের মহাকর্ষী কমিসনার মেজর বিবারের নিকট এই বলিয়া আবেদন করেন যে একজিকিউটিব ইঞ্জিনিয়ারের প্রতি এই আবেদন দেখঃ। হয় যে চা-করেরা মজুরদিগকে যে হিসাবে বেতন দিয়া থাকেন, তিনিও সেই হিসাবে বেতন দেন। পাঠকবর্গের অর্থ প্রদর্শিত হইলে, এই মেজর বিবার চা-করদিগের অনুরোধে পড়িয়া একবার এই অভিযোগে গবর্ণমেন্টে লিখিয়াছিলেন, আমাদেয় লোকেরা মজুরী করেন, চা-করেরা মজুর পাইতেছেন না, অতএব আমাদেয় লোকের প্রতি অধিক দর দানের অনুমতি হইলে তাহাদিগকে অগত্যা মজুরী করিতে হইবে। গবর্ণমেন্ট এই কথা শুনিয়া তাহাকে তর্ক সমা করিয়াছিলেন।

মেজর বিবার চা-করদিগের অনুরোধে এবার স্পষ্টাকারে লিখিয়াছেন, মজুরদিগের বেতন না কমাইলে ‘সত্যতার পথ’ প্রদর্শকদিগকে (চা-করদিগকে) কুৎসিত করিতে হয়। আমাদেয় কমিসনার মেজর হলকিন্সন এই পত্র পাইয়া বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্টকে মেজর বিবারের কথা অবগত করিবার অনুরোধ করেন। কমিসনার স্পষ্ট কণে সম্মত করিয়াছেন। আমাদেয় চা-করেরা এখন মজুরদিগের



কাজকর্ম না থাকিলে মানুষের মন  
পরানির্ভরচিত্তায় ও কুকাণ্ডে ধাবমান হয়।  
এই যে একটি ঐতিহাসিক কথা আছে, ইহা  
অস্বার্থ্য নহে। সাধুগণ ইহার লক্ষ্য  
হল না হউন, কিন্তু ইহার যথার্থ্য বহু  
পরীক্ষিত হইয়াছে। ইহার প্রতিপোষ  
আর একটি ঐতিহাসিক বাক্য আছে। সে  
এই “বসে বসে করি কি, খুড়ার” নামের  
পেয়সা দি।” কর্ম না থাকিলে পিতৃব্যের  
অনির্ভরচিত্তাও গরিব বালিয়া বোধ হয় ন।  
অত্রত্য কতিপয় ইংরাজ সমাচারপত্র সম-  
সংকল্পে এই গতি দেখা যাইতেছে। বঙ্গ  
ভাষাভাষীগণ লিখিবার কোন বিষয়  
থাকে, সেই সময়েই তাঁহারা এদেশীয়  
মের অনির্ভরচিত্তায় প্রবৃত্ত হন। আজি

ন। অল্পক সম্পাদক বলিলেন, এদেশীয়েরা অতিশয় অকথ্য ও অলস; ইহাদিগকে কোন গুরুতর রাজকর্ম দেওয়া উচিত নয়। অল্পক কহিলেন, এদেশের লোক অত্যন্ত প্রকারক, ইহাদিগের হস্তে বিশ্বাসযোগ্য কাজ দেওয়া বিধেয় হয় না। আর এক জন আর এক দিক হইতে তারবারে বলি যা। উঠিলেন, এদেশীয়দিগকে অল্প শত্রু ব্যবহার করিতে মিলে নিঃশঙ্কিত বিস্তারিত হইবে। অন্য সম্পাদক মনে করিলেন, সকল সম্পাদকই আপন আপন স্বকর্ম পুঙ্খ পরিচয় দিতেছেন, আমরা যেনী দ্বারা উচিত হইতেছে না। এই তাবিয়া তিনিও এই বলিয়া আপনায় হুঁকি তাগারের দাব উদ্যত করিয়া দিলেন যে এদেশের লোককে অধিক লেখাপড়া শিক্ষান উচিত নয়, তাহা হইলে পরিণামে ভারতবর্ষ ইংরাজ জাতির হস্ত পরিদ্রষ্ট হইয়া যাইবে। আর এক জন তা এই বলি যা আপনায় বাগছুরী প্রকাশ করিলেন, ইংরাজ জাতি এদেশের বিদ্যেতা, এ দেশী যেরা বিজিত; অতএব উন্নত জাতির সংস্পর্শে একবিধ ব্যবস্থা প্রণয়ন করিয়া বিজিতের প্রকার বুদ্ধিকর, ক্রমান্বয়েই বিবেচনামত।

এবস্থিৎ অসংস্কৃত দুবিধ বচনোপন্যাস ইংরাজ সম্পাদক বিগের অল্প দর্শিতার ফল সন্দেহ নাই। তাহারা মনে করেন, গবর্নমেন্টের বড় চিত্ত করিতেছেন। কিন্তু জ্ঞানি, কথক: তাহারা সুবিধে পাবেন ২। সে তাহাদিগের ভুল্য অধিকারী আর নাই। প্রকার অনুরাগ ও বিরাগের উপরে রাজপ্রিয় স্থাপিত, ও অস্থাবিতা নির্ভর করিতেছে। উক্ত সম্পাদকেরা যে পরামর্শ দিতেছেন, আমাদিগের গবর্নমেন্ট যদিও অনুসরণ করেন, গবর্নমেন্টের প্রকার অনুবাহ তাহা হইবার কি সম্ভাবনা আছে।

পরামর্শের অনুসরণ ঘুরে থাকুক, সম্পাদকেরা যে উক্তপ্রকার বাক্য ব্যয় করিতে

হেঁদ, তাহাতেও ইংরাজ জাতির উপরে এ দেশীয়দিগের বিরোধ বৃদ্ধি অধিগতে। যে জাতি প্রকার বিবেক তাহান হয়, তাহার রাজপ্রিয় কখন স্থানিনী হয় না। সম্পাদক গণ। তোমরা কি প্রকার অনুরাগ লাভ চেঁচাতে অকিঞ্চিৎ কর জ্ঞান করিতেছ। অত্রবল দ্বারা ভারতবর্ষকে চির কাল বশে রাখিবে, তোমরা কি এই মনোবধ করিতে ছাঃ এতোমাদিগের দুঃখনোরণ সন্দেহ নাই। ইতিহাস ইহার বিপরীত কথা কহিতেছে। কোন রাক্ষস কখন এবস্থিৎ উপায় অবলম্বন করিয়া রাজ্যপত্ত্ব দীর্ঘকাল স্থাপ্ত রাখিতে সমর্থ হন নাই।

আমরা তোমাদিগকে অনুবোধ করি হেঁদ, তোমরা ত্রিবিধ চিন্তে এগুটি বিবেচনা কর। তুমরা যে ভারতবর্ষকে বশে রাখিবার উদ্দেশে এত স্বার্থপরতা ও নীচাশয়তা প্রকাশ করিতেছ, সে ভারতবর্ষ কোন্ জাতির পৈতৃক বাসভূমি। সেই জাতি যদি তোমাদিগের হস্ত হইতে ভারতবর্ষকে লইয়া স্বয়ং পালন করিতে পায়, তাহাতেই বা ক্ষতি কি? তোমাদিগের অপেক্ষা সেই জাতিই ইচ্ছাতে সমর্থক স্বয়ং আছে। তোমরা আমাদিগকে মুক্ত রাখিয়া এদেশীয় সমাজ্য পাত্রের লাব দর্শনার্থ লোক নিয়োগ প্রস্তুত কর। সত্য হইয়াছে, কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া দেখ তোমাদিগেরই কার্য দর্শনার্থ অগ্রে লোক নিয়োগ আবশ্যক। তোমরা যে সমস্ত বাক্য প্রয়োগ কর, তাহা দ্বিতীয় প্রাশ্লিতকরিতা দেয়, কিন্তু এদেশীয় সম্পাদকদিগের বচনাবলী বিস্তারিত দীপনী নহে। এদেশীয় লোক পাত্র এদেশীয়দিগের যে যে অভিপ্রায় প্রকটিত হয়, গবর্নমেন্ট যদি সেই গুলি বিবেচনা করিয়া কার্য করেন, বিস্তারিত সম্ভাবনা থাকে না। একজনের বাক্য বিস্তারিত উদ্দীপন করিতেছে, আর এক জনের বাক্য তাহা নির্বাণ করিতেছে, এ উভয়ের মধ্যে গবর্নমেন্টের একান্ত হিতকারী কে?

জমিদারদিগের সুশিক্ষা বিস্তারিত  
এদেশের লোক উন্নতি  
হইতেছে না।

এখন উন্নতির কাল। সমুদায় দেশের সমুদায় বিষয়ই প্রায় এখন উন্নতির দিকে ধাবমান হইয়াছে। আমাদিগের দেশও এ নিয়মবদ্ধিত হইবে। কিন্তু এদেশের লোক উন্নতি হইতেছে না। অন্য অন্য দেশের আগে না। এদেশের সবিশেষ জিরুজি হইবার বিশেষ কারণ আছে। ব্রিটিশ গবর্নমেন্টের অধিকারে আমাদিগের বাস। এ গবর্নমেন্টের অসংস্কৃত ইচ্ছা এই যে আমাদিগের যে যে অংশে অনুন্নতি আছে, তাহা দূরীভূত হইয়া সর্বাত্মক উন্নতিলাভ হয়। চিরন্তন কুসংস্কার প্রভৃতি উন্নতির যে সমস্ত দুরতিক্রম প্রতিবন্ধক আছে, তাহা অপসারিত করিবার নিমিত্ত বাহুল্য রূপে বিদ্যার আলোক বিস্তার করিবার যথোচিত চেষ্টা হইতেছে। তথাপি আমরা বাস্তবিকভাবে বঞ্চিত হইতেছি, তাহার কারণ কি?

এই কারণের অনুসন্ধান প্রস্তুত হইবে। অনেক অনেকবিধ কারণের নির্দেশ করিবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু আমাদিগের মতে জমিদারদিগের সুশিক্ষা বিস্তারিত প্রকৃত কারণ। এদেশের লোকেরা প্রাচীন প্রাচীর ব্যবহারানির মিতান্ত অনুরক্ত; এ সকলের সন্দোষতা নিবন্ধন ইহারা যার পর নাই কষ্ট পাইতেছেন, তথাপি উহার দোষকে দোষজ্ঞান করেন না, একথা আমরা অস্বীকার করি না। কিন্তু জমিদারেরা যদি সুশিক্ষিত হইতেন এতদিন এ সকল বিষয়ের কাজিকত পরিবর্তন হইয়া দেশের সবিশেষ জিরুজি হইত সন্দেহ নাই। এক্ষণে জমিদারদিগের সর্বতোমুখী প্রভৃতি আছে; নতুন লোকেই তাহাদিগের বাধা; তাহারা জাত্যংশে কোঁঠ, তাঁহাদিগকেও জমিদারেরা বিকটে গুরুভারিত হইয়া থাকিতে চান, জমিদারদিগের বাক্য



অনেকরা আত্যাত্তিক সাহসের সহিত কলকাতা  
হারা যদি কোন বিষয়ের পরিবর্তে কৃত  
প ও অধ্যবসায়বান হন, তাঁহাদিগের  
মতো কখন বিফল হয় না। আমাদিগের  
দেশের আচার ব্যবহারাদির, কখন কোন  
পরিবর্ত হয় নাই একথা সত্য। পূর্বে সমুদ্র  
বন্দার প্রতিবেদ ছিল না, অবলম্বিত  
কথাকথি হইয়া তাঁহার নিবেদন করিয়াছেন।  
পাটন কালের ত্রাণাদি বর্ণের যে আ  
চার ব্যবহার ছিল, এখন তাহার বহু পরি  
বর্ত হইয়াছে। ইদানীন্তন ত্রাণ ও ই  
দানীন্তন ত্রাণ উভয়ে একত্র করিবার  
যদি কোন উপায় থাকিত, তাহা হইলে উ  
ভয়ে এক বর্ণ বলিয়া কোন ক্রমেই চিনা  
হইত না। তখনকার ত্রাণের দীর্ঘকেশ  
শ্রদ্ধা মধ্যমি ধারণ করিতেন, এখনকার  
ত্রাণের সুক্লিতকেশ ও ওঠের উপ  
র তপে শ্রদ্ধাধারী দৃষ্ট হন। তদানীন্তন  
ত্রাণের সারং প্রাতঃ ও মধ্যাহ্ন এই  
দুইকালে ত্রিগুণ্য, নিত্য হোম ও বেদা  
না করিতেন, ইদানীন্তন ত্রাণদিগের  
হোমাদি বিষয়ে জলাঞ্জলি দান ও রাজারা  
না গার হইয়াছে। পুত্রেরাই তদানীন্তন  
ত্রাণদিগের শুশ্রূষা করিতেন, ইদানীন্তন  
ত্রাণেরা পুত্রশুশ্রূষা হইয়াছেন। তদা  
নীন্তন ত্রাণেরা বিনা বেদাধ্যয়ন জল গ্রহ  
ণ করিতেন না, ইদানীন্তন ত্রাণদিগের  
অনেকে বেদ কয়টি তালাও অবগত নহে  
ন। তদানীন্তন ত্রাণেরা প্রাণপণে সত্য  
শৌচ, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য প্রভৃ  
তি দশবিধ ধর্ম প্রতিপালন করিতেন। ই  
দানীন্তন ত্রাণদিগের অনেকে এই সক  
লে জলাঞ্জলি দিয়া স্বদেশের দুর্নামের হে  
তু ধৃত কথ্য সামান্যতর শোচ্যপ্রত্ন নিগ্রহ  
বীর্কিয়। সত্য অক্রোধে মনঃকং ধর্মলক্ষণং।

মহাঃ

সম্ভাব্য, কমা, চিত্তব্রতিকা ন হওর, অ  
মায় করিয়া পরধন গ্রহণ না করা, মুজলদ্বারা  
দেহ, শুদ্ধ, দ্বিধা হইতে চক্ষুবাণিব বারণ,  
পাত্তক্য, অসৎসঙ্গ, সত্য ও কোথের অমুদয়।

ভুভুত হইয়াছেন। এইরূপ অন্য অন্য ব  
র্ণেরও আচার ব্যতিক্রম ঘটিয়াছে।

যখন আমাদিগের দেশের আচার বা  
ব্যহারাদি অপরিবর্তনীয় হইতেছে না,  
এবং প্রবল ব্যক্তির চেষ্টা পাইলে তাহ  
পরিবর্ত হয় সম্ভব হইতেছে, তখন  
দেশের জমীদারেরা মনে করিলে অন্য  
রাসে বিধবাবিবাহ প্রচলিত করিতে এবং  
বাল্য ও বহুবিবাহ প্রভৃতি উঠাইয়া দিতে  
পারেন, তদ্বিষয়ে অণুমাত্র সন্দেহ নাই।  
তাঁহাদিগের এক এক ব্যক্তির যে ক্ষমতা  
আছে, সহস্রাধিক, মধ্যবিধ ব্যক্তির সম  
ক্ষমতা নাই। তবে যে তাঁহারা পরিবর্ত  
চেষ্টা করিতেছেন না, তাঁহাদিগের সুশিক্ষা  
বিবর্তই তাহার কারণ। বিধবা বিবাহ প্রচ  
লিত না থাকিতে এবং বাল্য ও বহু বিবাহ  
প্রচলিত থাকিতে দেশের যে অনিষ্ট  
ঘটিতেছে, তাহা যদি তাঁহাদিগের হৃদয়  
সম হইত, তাঁহারা কি ইহার উপায় না  
করিয়া নিশ্চিন্ত থাকিতে পারিতেন? সুশি  
ক্ষা নাই বলিয়া তাঁহাদিগের এই দোষ  
গুলি হৃদয়সম ও তৎসংশোধন অবশ্য  
কর্তব্য বলিয়া বোধ হইতেছে না। যে  
বিষয় অবশ্য কর্তব্য বলিয়া বোধ হয়, সুশি  
ক্ষা কি তাহ সম্পাদনে পরাধীন হইতে  
দেয়? আত্যাত্তিক ক্ষতি হইবার সম্ভাবনা  
সম্ভাবনা থাকিলে তথাপি এক দিন কথা  
থাকে। জমীদারদিগের সে শঙ্কা নাই।  
কোন জমীদার যদি আপন গৃহে বিধবা  
বিবাহ প্রচলিত করেন, তাঁহাকে জাত্যভ্যু  
করিত কি কেহ সাহসী হয়? তাঁহারা  
ইচ্ছা করিলে অন্যকে অন্যায়সে জাত্যভ্যু  
করিতে পারেন, অন্যের এমন কি সাহস  
আছে যে তাঁহাদিগকে জাত্যভ্যু করি  
বার কথাও একবার মনে করিতে পারেন।  
আমাদিগের কোতের বিষয় এই, বিধবা  
বিবাহ, প্রচলিত করিবার চেষ্টা করা  
দূরে থাকুক, তাঁহারা উদ্যোগী হইয়া বিধবা  
বিবাহকারীকে অজ্ঞেয় ও অপাণ্ডিত্য

করিয়া রাখিবার যথোচিত চেষ্টা পাইয়া  
থাকেন।

এই প্রসঙ্গে কয়েক সহস্র প্রধান লো  
কের শিক্ষাদান অথবা সাধারণের শিক্ষা  
দান এই উত্তরবিধ শিক্ষাদান প্রণালীর  
কোনটী যুক্তি অনুসারে অবলম্বন করা বি  
ধেয়, তাহ প্রসঙ্গ উপস্থিত হইতেছে। লর্ড  
কানিং বাহাদুর উপরি প্রেরিত কয়েক  
সহস্রের শিক্ষাদান প্রণালীর গুরুপাঠী  
ছিলেন। রাজমহলে যে দিন রেলওয়ে গা  
ড়ি ধোলা হব, সেদিন তিনি বক্তৃতা কা  
লে স্পষ্টাক্ষরে এই অভিপ্রায় প্রকাশ করি  
য়াছিলেন। লর্ড অকলণ্ডেরও একথা সত্য  
ছিল। এইরূপ উৎকৃষ্ট যুক্তির অনুসারী  
সন্দেহ নাই। অসংখ্য লোককে সুশি  
ক্ষিত করিয়া তুলিতে পারিলে বহুসংখ্য  
উপকার লাভ হয় সন্দেহ কি? আমরাও  
উপরে সেই সেই উপকার লাভ গণনা ক  
রিলাম। জমীদার প্রভৃতি প্রধান ব্যক্তি  
দিগের অর্থবল ও শোকবল আছে তাহ  
র সহিত সুশিক্ষার যোগ হইলে যে মহা  
ল লাভ হইবে তাহা অধিক বক্তব্য না  
হই। কিন্তু এই সকল ব্যক্তির সম্মানগণ্য  
সুশিক্ষিত করিয়া তুলি। সহস্র ও সাধারণ  
কি না, তাহা বিবেচনা করা আবশ্যিক।

জমীদার প্রভৃতির সম্মানগণ্যে সুশি  
ক্ষা হইবার অনেক গুলি প্রতিবন্ধক অ  
ছে। প্রথম, জ্ঞানোপার্জনই যে বিদ্যা  
কান যুখ্য উদ্দেশ্য, আদি ও অমায়  
গের দেশের অনেকেই সে সংকল্প  
নাই। জমীদারেরা সেই দলের প্রধান  
জমীদারী হিসাব রাখিবার উপযোগী  
লেখা পড়া শিক্ষাকেই তাঁহারা পর্যাপ  
ক্ষ্য করেন। দ্বিতীয়, জমীদারেরা  
সম্মানের অতিশয় অলসবৃত্তাব। আম  
পাইয়া তাঁহাদিগের এমন কদত্যাগ হই  
উঠে যে উত্তরোত্তর তাঁহাদিগের শরীর  
পটু হইয়া পড়ে, অণুমাত্র ক্রেশসহিষ্  
ক্ষা থাকে না, চিত্ত চিন্তাশক্তি বিরহি

যে সকল ব্যক্তির জীবন-কীর্তি  
দ্বিগুণ কি শুলিকা হইবার সম্ভাবনা  
হইবে? বিলাতী ও বিলাতিনী বর্ষন বি  
লাতিনী শিক্ষা সম্পন্ন হওয়া কোন ক্রমেই  
সম্ভবিত নহে। তৃতীয়, জমীদার সভা  
র অংশই ভোগপরায়ণ ও বিলাতী হ  
য়া উঠে। বিলাতপরতা বিদ্যালয়িকার  
কটী প্রধান প্রতিবন্ধক। চতুর্থ, অসৎ  
সংসর্গ। এমনে বাল্য ও বহুবিবাহাদি  
চলিত থাকিতে জমীদারদিগের অংশ  
রসে বিবাহ ও অংশ বরসে সম্ভান জন্মে।  
এক অংশ বীভে জন্ম, তাহার পরও নিয়  
মিত কতিপয়, সুতরাং অংশ বরসেই শরী  
ফর বল বীর্ষা ক্ষয় হইয়া যায়। অতঃপর  
জমীদার বলে অকাল মৃত্যু বর্ষন অসম্ভ  
বিত নহে। এই সকল কারণে অধিকাংশ  
জমীদার সম্ভান অংশ বরসে পিতৃীন হ  
য়। উপযুক্ত অভিভাবক না থাকিতে অস  
মিত ও চাটুকায় দিগের প্রভুত্ব বিস্তার  
হুনি বার হইয়া উঠে। অসৎ সংসর্গ হ  
লে কুকর্মমতি ওয়া অনৈসর্গিক নহে।  
এই কারণে অধিকাংশ জমীদার সম্ভানকে  
সামান্যতম দেখিতে পাওয়া যায়। বসনা  
জ্ঞান বিদ্যালয়িকার একটি মর্দক অংশ  
হয়।

উপরে বর্ণিত প্রবর্তিত হইলে, হুদা  
সম্পদ প্রতীক্ষা হইতেছে, তাহার  
করে, জমীদারদিগকে সুশিক্ষিত  
করিয়া তাঁহাদিগের দ্বারা অংশায়সে  
দ্বিতীয় ও তৃতীয় শ্রেণীর লোকদিগকে  
সুশিক্ষিত করিয়া তুলিবেন, তাঁহাদিগের  
সম্ভ্রামাত্র। দ্বিতীয় ও তৃতীয় শ্রেণী  
হইতেই কার্য অব্যাহত করিত হইবে  
এই দুই শ্রেণীর লোকেরা সুশিক্ষিত হই  
লে জমীদারেরা যদি লজ্জা পড়িয়া আপ  
নাদিগের সম্ভানগণকে সুশিক্ষিত করেন,  
এই এক সম্ভাবনা আছে।

আগাম চা কোম্পানির মাকে  
ও কার্টার সাহেব।

উক্ত কোম্পানির অমাত্য অধ্যক্ষ মাকে  
ও কার্টার সাহেব এই কোম্পানির টাকা  
ও চার বীজ লইয়া আপন২ কায্য সাধন  
করিয়াছেন বলিয়া যে জনরব হয়, তাহা  
ক্রমে সম্ভা হইয়া উঠিতেছে। এই দুই বা  
ক্তির কায্যের অনুসন্ধানার্থ যে কমিটি নি  
য়োজিত হয়, তাঁহারা যাহা স্থির করিয়া  
ছেন, তাহা এখানে প্রকাশ করেন নাই।  
এই কোম্পানির ইংলণ্ড অধ্যক্ষসভার  
নিকটে প্রেরণ করিয়াছেন। আমরা পর  
স্পরা শুনিলাম, এই দুই ব্যক্তির দোষ সম  
ান হইয়াছে। কমিটির কায্যদ্বারাও এক  
প্রকার সন্দেহ নিরাস হইতেছে। মাকে ও  
কার্টার যদি দোষী না হইবেন, কমিটি  
তাঁহাদিগের বিষয় সর্বসাধারণের গোচর ক  
রিলেন না কেন? এই মাকে সাহেব লাও  
ফোলডস সভার সভাপতি ছিলেন। তাঁহার  
যাঙ্গুই এই সভা প্রতিষ্ঠিত হয়। অতঃপর  
হার সভাপতিত্ব পদ পরিত্যাগ হইলে কেন  
সিংড়মে যে তাজখনি আছে, তাহার কা  
নির্মাণার্থ এক কোম্পানি হয়। এই মাকে  
সাহেবের তথায় আধান্য ছিল। কিন্তু এ  
কোম্পানি কৃতকায্য হইতে পারেন নাই।  
ইহাও মাকে সাহেবের কায্য সম্বন্ধে ১৩  
রিজের বিষয়ে সংশয় জন্মাইয়া দিতেছে।

যাহা হউক মাকে সাহেবের

কৃত কায্যের বিষয় উল্লেখ করা অতি  
শব্দ আবশ্যক হইতেছে। আগাম চা কো  
ম্পানি প্রতিষ্ঠা হইয়া মাকে সাহেবের  
বিষয় কৃতকায্য পক্ষে প্রবর্তিত হয়।  
মাকে সাহেব ৭ টীকে প্রত্যাগমন বলি।  
হরকর সম্ভানকে ৩০০০০ টাকার  
কতি পূরণ প্রার্থনা করি। প্রত্নিম কোর্টে  
মালিস করিয়াছেন। যত দিন মাকে সাহে  
বের চণ্ডি সংশয়াম্বদ রহিয়াছে, তত  
দিন তাহার কৃত মোকদ্দমাত্তত্ত্ব অনে

কর মনে অনেক প্রকার তর্ক উপস্থিত  
করিয়া দিবে সন্দেহ নাই।

মাকে সাহেবের চরিত্রের অনুসন্ধান  
করি কমিটি তাহার বিষয় সম্ভান প্রকা  
শ না করি। ইংলণ্ড অধ্যক্ষ সভার সভ  
প্রতীক্ষা করিয়াছেন। তন্নিমিত্ত আমরা  
তাঁহাদিগকে সুবিত্ত করি না, কিন্তু তাঁহারা  
যদি মাকে সাহেবের দোষ গোপন রাখি  
বার ও তাঁহার প্রতি অসৎ প্রদর্শন করিবার  
অনুরোধ করিয়া থাকেন, তাঁহারা সর্বভে  
তানে সুবিত্ত হইবেন সন্দেহ নাই। মাকে সা  
হেব যদি বাস্তবিক চা কোম্পানির টাকা  
ও চার বীজ লইয়া আপন২ কায্যে উহার  
করিয়া থাকেন, তিনি কোন ক্রমেই ক্ষমতা  
যোগ্য নহেন। তিনি কেবল যে ন্যায়  
বিকৃত কায্য করিয়াছেন এমন নহে,  
তাঁহা চইতে একটি বিষয় অনর্থকর অসৎ  
প্রবর্তিত হইয়াছে। যদি অন্য কো  
ম্পানির অধ্যক্ষ, তাঁহার দুর্বৃত্ত  
অনুসরণ করেন, সত্বে সমুখান অসৎ  
কইয়া জনগণকে প্রভ্রষ্ট করিবে সন্দেহ  
নাই।

পুস্তক প্রাপ্তি।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে বীকার  
বিত্তি, বুধেলারহস্য নাটকের এ  
বৎ এবং সাল্ট ডিপার্টমেন্টের ১৮ ৬০  
১১ অঙ্কের একক ও রিপোর্ট প্রাপ্ত হই  
তি। বুধেলারহস্য জিজগদীশ তত্ত্বালকা  
প্রণীত। ইনি যখন চট্টগ্রামের গবর্ণমে  
বিদ্যালয়ের প্রধান পণ্ডিতের কার্যে নিয়ো  
জিত ছিলেন, তৎকালে জিলা রসপুরে  
অন্ত পাতি কাকিনীয়ার জিজু বারুশ  
চক্র রায় চৌধুরীর উৎসাহদানে এক  
প্রদর্শন করেন। প্রত্নকার নৈপুণ্য সহ  
রে ইহাতে এদেশের আচার ব্যবহার  
র বিষয় অনেক বর্ণন করিয়াছেন এ  
প্রত্নের অধিকাংশ স্থলে কৌতুকপ্রিয়  
প্রদর্শন করিয়াছেন।



১৮৬০। ৬১ অক্টোবর সাল্টেডিপার্টমেন্ট  
রিপোর্টদ্বারা জানা যাইতেছে, পূর্ব  
অপেক্ষা এবসংগ্রে অধিক লবণ প্র  
ত অথবা বিক্রয় হয় নাই। ১৮৬১। ৬০  
৪৩৩৭০০৭ মণ বিক্রয় ও ১৬৫২০৭৭৫  
লাফ্ট হয় এবং ১৮৬০। ৬১ অক্টো  
৩০০২৫৭ মণ বিক্রয় ৬২২১৬০৪ টকা  
পাও হয়।

বিবিধ সংবাদ।

২১এ টেক্সট সোমবার।

অদ্য হান্সলটন কোম্পানির বাগীতে ক  
ই ও বাগার মুঠপ্রাপ্ত হীরক ও অলঙ্কার  
এক অংশ বিক্রীত হইয়াছে। টারর  
অনেক বহুল্য দ্রব্য আছে। অদ্য নানা  
হিহেবের ও বিজ্ঞানসৌর্য ভূতপুত্র  
মহম্মদ আলী খাঁর অলঙ্কার ৩ বিক্রী  
হইয়াছে।

অদ্য পুলিশ আফিসে অটোমটিক মাস্তি  
ইউনিটের এক সভা হয়। তাঁহারা  
মে হরিণ বাণীর তত্ত্বাবধান করিবেন স্থির  
করিয়াছেন।

কোম্বাই নগরে মাদবদেশীয় অস্ত্রফল  
টাকায় বিক্রয় হইতেছে।

অনেক মিলেটারি মাসিন যন্ত্রমতি না  
ইয়া নেপাল রাজ্যে যুগল্য করিতে গিয়া পা  
ফল। তদ্রূপে গবর্নমেন্ট এই বিষয় তদন্ত  
ীয় গবর্নমেন্টের পোর্টর কবাসত গবর্নর  
জিলা আফ্রা দিয়াছেন নগরবাস  
রা বাজার অপ্রমতি না লইয়া কত  
পাইতে পারিবেন না।

কিনিক সম্পাদক গোমরি  
খরিদার প্রতিবাদ করিয়াছেন।  
অনেক আঁকে সাহেব বেগার  
ইতি কবিবার জন্য ব্যবস্থাপক সভায়  
অর্পণ করেন। কিন্তু অবিলম্বে বিক্রীত  
হওয়াতে এই বিল আর দ্বিতীয় বাধ  
নাই। সম্প্রতি সচিবসৌর্য ব্যবস্থাপক  
ইতি উপাশিত হইয়াছে। বেগার

খরিলে গাড়েয়ানেরা তাড়া প্রায় পায় না  
এই নিমিত্ত অনেক আপন আপন শকট  
গ করিয়া পলায়ন করিয়া থাকে।

২২ক৭ সম্পাদক সংবাদ পাঠ্য  
পাই ইটম ৮৫ ট হাইসের উপাশিত  
৩ টি হার সহকারী এক নৌক য়  
গাড়েয়ান গবর্নমেন্টে প্রতিবাদ  
কানি লাল্লীয়া জাহাজ প্রেরণ  
হইল।

দিল্লী প্রভেট ১৮৬৩ নব  
কয়েক জন ভূতপুত্র বিক্রোহী  
ভারতবর্ষে আপনাদিগের  
বিব্রাহত কয়েক খানি পত্র  
প্রতি কল্যাণে সেই সকল  
করিয়াছে।

ইউ সম্পাদক বন্দন  
পলায়ন করিয়া একে  
বিব্রাহত করিতেছেন।  
আজ হইতে বক্রিত হইল।

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে গোমরি  
অনেক বাড়ি ও  
নিবির ভাড়া  
করণে আস্ত হইয়াছে।

২২ক৭ সম্পাদক  
সহচর ও  
সিগার মত  
তাহার  
এই সকল  
অনেক  
ই আপন  
অযোগ্য  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

আলাহাবাদ গেটে  
রান পুরের পুলিশ  
নকর  
স্বাক্ষর  
কর  
রর  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে  
২২ক৭ সম্পাদক  
২২এ নে

লগনের শিক্ষাদি প্রদর্শনী সভায় ভারত-  
সর যে সমস্ত প্রকৃতি মীত হইয়াছে, তাহা  
প্রত্যয় লোকের অধিকতর প্রীতিকর হইয়াছে।  
সর যেমনকি তরিসিদ্ধ কলিকাতায় প্রকৃতি  
সংগ্রহকারিণী সভাকে খনা বাস প্রদান  
কিয়াছেন। উক্ত শিক্ষাদি প্রদর্শনী সভায়  
প্রদর্শিত কয়েক ব্যক্তিকে প্রেরণ করা উ-  
চিত ছিল। কিন্তু কলীমঙ্গলপতি পিটবের  
জি ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের গটে থাকি অ-  
সম্মত।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন উক্ত পশ্চি-  
মলয় দেশীয় সংবাদ পত্রের এক জন ক-  
র্মচারক হইয়াছেন। তিনি যত অধীল পু-  
কার্ম প্রচার করিয়াছেন, রসরাজ মত  
এইটুকুই বঙ্গদেশের দুর্ভাগ্য।

সম্প্রতি বীডন সাহেব আলিপুরের বিল  
মত জানি যে মৃত্যুনি উৎসব করেন, তাহা-  
কি এতদেশীয় ও চট্টোপাধ্যায়ের আত্ম-  
ত্যাগ প্রসঙ্গ বলিয়া উক্ত সম্পাদক সেপটি  
গবর্নমেন্টের এম্পসা করিয়া বলিয়াছেন  
যদিও, এলাউ-স্টোন ও খেটকাং প্রভৃতি  
উপায় অবলম্বন করিয়াছিলেন ইহাও সেট  
পাশ্চাত্য এত দূর। এই উৎসব কম লাভ হই-  
বে, এতদেশীয় ও ইষ্টবোমপীসিগের পরস্পর  
বন্ধন সম্বন্ধিত হইবে। একথা সুনিশ্চয়  
কথা হইল। ৬ উৎসবসভায় এদেশীয়  
সরকারে জুতা খুলিয়া যাঁতে ৫০ নাই। এট  
কলী বিশেষ লাভ।

ইংলিসমান সম্পাদক অবশ্য করিয়াছেন  
যে, জোটনাগপুরের রাজা যে মৃত্যুভাগা  
প্রদানে গান সাহেব বলিয়া বস করিয়া  
প্রয়ণ করেন, তাহাকে সেপটনট গবর্নর মুক্ত  
করবার আদেশ দিয়াছেন। অন্য সাহেবের  
কর্তব্য লোককে "কান লয়ে গেল কাকে  
কাকের সঙ্গে য ৩ হইতে হইবে।

কললোমর সর উটলিয়ম ডেনিসন ও মা-  
নিক ২২ ব্যবস্থাপক সভাকে ভারতবর্ষের জি-  
রকার কারণ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এইট  
সরকারী জিহা দেখা বাইতেছে, তাহারা "বা-  
শাষ্ট্র কুতে ৩ ছিলেন। অতএব তাহাঙ্গিগের  
হইতে একক অপরাধে প্রাণের সমুদায় লো-  
কর জরিমানা অথবা কলেক্ট বিলম্ব কর  
কেন না।

আলাহাবাদ গেজেট সম্পাদক বলেন, এ-  
কজন পুলিশ ইন্সপেক্টর এক ব্যক্তির নিকটে আ-  
সর করিতে গিয়া অধিক আত্মচাহিবাতে  
সে তাহাতে অসম্মত হইল। উক্ত "মহাবী-  
র ৩ তারি ১৩ সাক্ষি দেখাটোতে বিক্রমতা  
করে তাহাকে তাহার খেজারত আত্ম দিল,  
সম্পদক তরিসিদ্ধ মহাজোদে লিখিয়াছেন  
"যাহারা শাস্তি রক্ষা করিলে তাহারা একাধা  
করিলে কি বোধ হয় ১৩ হয় আয কি ২ জান না।  
এ কুণ্ডে বরগির বজ্র ঠোকর ৩।

সাক্ষী সম্পাদক বলেন, সংবাদ পত্রে  
গবর্নমেন্টে কর্মচারিগণের বিষয় আন্দোলন  
করা অনায়াস। তিনি কহেন যে ৫০ ব্যক্তি রাজ  
দার্ম নিযুক্ত হইল না কেন নিগমিত সময়ে  
আফিস খুলিয়া নিম্নমিত কার্য করিলে ৫ নি-  
ম্নমিত কাগজ লিখিলে সম্পাদক দিগের কিছু  
বলিতা কি বাবৎ থাকে ২ যদি বরকারার তৃত  
পূর্ব সম্পাদক কর্মস এক জন মীল কবিসনর  
হন বাজালী সম্পাদক কি নীচব থাকিলেন ২

২ ১৫ টাকার বৃদ্ধার।

ভারতবর্ষীয় সুবিখ্যাত বিজ্ঞানবিৎ  
হেনরি, জন, কার্টার সাহেবের মৃত্যু হইয়াছে।  
ইংলণ্ডীয় পণ্ডিতেরা এদেশে প্রায় আসিতে  
অসম্মত, কিন্তু কার্টার বিজ্ঞানের উন্নতির  
উদ্দেশ্য করিয়া এদেশে বহুকাল অবস্থিতি ক-  
রিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে অনেকে দুঃখি-  
ত হইবেন সন্দেহ নাই।

সিবিলা ও মিলেটারি কিংডম কমিশন  
এখন কোরাণীসিগকে ছাড়াইয়া দেন, তখনই  
"আমবা কলিয়াছিলাম, ১ এ চেঁচা নিফল  
হইবে। সম্প্রতি অনেক কালিও হুতন  
কোরাণী নিযুক্ত করা হইতেছে, মিলেটারি  
কর্পে ১২৫০র আফিসে প্রতিবাসে চয় এত  
টাকা অধিক ব্যয় করিবার সম্ভা হইয়াছে।  
খুশিতে কখন কি চাপু ভেঙ্গে।

গবর্নমেন্টে কিনাশিফাল ডিপার্টমেন্টে অ-  
নন পরিষ্ট করিতেছেন। দ্বির হইয়াছে  
ইংল ৩ হইতে উপযুক্ত বৃদ্ধি আনয়ন করা  
হইবে এবং এই ডিপার্টমেন্টের বর্তমান কর্ম-  
চারিরা যদি বখাবল্যক প্রণবতা ও অধীল,  
তাহা পরিচর প্রদান করিতে পারেন, কমন্স  
উচ্চতর পদ প্রাপ্ত হইবেন। ইংল ৩ হইতে

বৃদ্ধি আনয়ন করা অপব্যয় সন্দেহ নাই  
ব্যক্ত প্রকৃতি স্থানে এতদেশীয় বৃদ্ধিরিদি  
সকল কার্য পরিচা থাকেন।

উক্ত পত্রের মালিকহস্তিত সংবাদ দাতা  
বলেন সম্প্রতি তথার অগ্নি লাগিয়া যে সকল  
মদ্রিস লোককে এক কালে নিরাশ্রয় করিয়াছে  
তাহাঙ্গিগের সহায়তার জন্য তত্ত্বতা মাতি-  
টেটে ৪ বরে এক সভা হইয়া ৫০০ টাকা সং-  
গৃহীত হইয়াছে। মাকোটরের মজুরদিগের কর্ত-  
তওলাতে ইংলণ্ডের সর্ব স্থানে চাঁদা হইয়াছে।  
সুখের বিষয় এই এতদেশীয়েরা ৩ এই সকল  
সংকাষের অনুষ্ঠান করিয়াছেন।

উক্ত পত্রের সম্পাদক বলেন গবর্নমেন্টের  
জির জির কর্মচারিগণের নামে সরকারী পত্র  
সহর বখাবল্য স্থানে প্রেরণ করিবার জন্য  
পোর্ট আফিসে একটি খতর বর থাকিবে।  
এঘরে সমুদায় সরকারী কাগজ পত্র রাখা  
হইবে। গবর্নমেন্টের বাবতীর আফিস এক  
সাক্ষিতে হইবার কল্পনা হইতেছে। তাহা  
হইলে একজন বরকারার দ্বারাই কাজ হ-  
ইবে। এতদ্বারা সমর ও অর্থ উভয়বিধ লাভ  
হইবে।

ইংলিসমান সম্পাদক অবশ্য করিয়াছেন  
সর চার্লস উড ভারতবর্ষীয় সিবিলা কর্মচারি-  
গণের একবিধ বজ্র পরিধান নিষেধ করিয়া  
দিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন। মিলেটারিগণের  
ন্যায় ইহাঙ্গিগেরও এক প্রকার খতর বর  
হইবে। তাহা কার্য স্থলে প্রকাশ্য সভা ৩  
সর প্রকৃতির সময়ে পরিধান করিতে হইবে  
সুশিক্ষিত দলের যেসকল ব্যক্তি যজোপবীত  
পরিভ্যাগের চেঁচা করিতেছেন, তাহারা অ-  
র ব্যস্ত হইতেছেন কেন ২

আলাহাবাদ গেজেট সম্পাদক বলেন, স-  
ম্প্রতি উক্ত নগরে গবর্নমেন্টের টাকা আশি-  
তেছিল। ইতিমধ্যে কয়েক জন দস্যু তা-  
হুট করিবার চেঁচা পায়। কয়েক জন পুলি-  
"সেনা ৩ দস্যুদিগের উপরে বন্দুক মাতি  
কিন্তু কাহারও কিছুই হইল না। দস্যুরা চা-  
রা গেল, কিন্তু কেহই তাহাঙ্গিগকে ধৃত ক-  
রাইল। চেঁচা করে নাই। পুলিস সেনাঙ্গিগের এ-  
গুন, তথাপি গবর্নমেন্ট তাহাঙ্গিকে পুরস্কা  
দেন না।



উক্ত গল্পে লিখিত হইয়াছে, মনু লক্ষ  
রাম সিংহকে দৃত করিবার জন্য ফুলপুরের  
মতিমুখে কয়েক জন সৈন্য প্রেরিত হইয়া-  
ছে। শঙ্কর রাম পূর্বে চালাই গ্রামের অধীশ্বর  
হন। এই সকল বৃত্তান্তে কথ্য করিবার বোঝা  
দুরিরা দিলে বোধ হয় তাহার অস্তিত্ব  
প্রতিপত্তি পাবে।

মুন্সি, হেমন্তি উইলসন নামক একজন টেকি  
দ্বারা এক খ্রী বর্জমান থাকিতে পুনরায় বি-  
বাহ করাতে তাহার প্রথম খ্রী তাহার নামে  
নামকরণ করিয়াছেন। উক্ত খ্রী তাহাকে দৃত ক-  
রিবার পরওয়ান হইয়াছে। উক্ত খ্রী  
সিউইজি লোডেই লংখা।

সেই খ্রী পাইন্ট পবাক গেইল  
কর্তৃক লিখিত হইয়াছে। কানী পর্বত যুক্তিবে  
হইয়াছে।

চীনদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে বিদ্রো-  
হীদিগের সহিত ইংরাজ ও ক্রাসিমিগের  
যুদ্ধের একটি খবর হইয়াছে। এবার বিদ্রোহীরা  
লোকসাহস সাহস সহকারে যুদ্ধ করিয়াছে।  
লর্ড নামক একজন ইংরাজ চীনদেশীয়  
সেনাপতির সেনাপতি হইয়াছেন।

২৪ জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার।

লর্ড কানিংকে লইয়া বাইবার অন্য নয়  
চার্লস উড ও লর্ড সিডনি পারিসে আগমন  
হইয়া আসিয়াছেন। হংকংয়ের তাহাকে  
অতিশয় সমাদর পূর্বক গ্রহণ করিয়াছেন।

কমরিশ অন্তরীপের নিকটবর্তি এক গ্রামে  
এক ব্যক্তি আপনাকে ঈশ্বরের অবতার বলি-  
য়া পল্লিত করিয়া অনেক শিষ্য সংগ্রহ করিয়া-  
ছে। এই গ্রামের লোকেরা খ্রীষ্টান। সে  
খ্রীষ্ট ধর্ম মানিয়া থাকে, এবং মহম্মদের  
ন্যায় অবতার হইতে অনেক তাহার  
কথায় প্রভাব করিতেছে। প্রতিবাসী বহু  
আজি যুক্তমানই বল সকল খ্রীষ্টান পের্নসি  
নাম।

লর্ড উইলসন সম্প্রদায় বলেন কিছু  
কিছু হইল; বিশিষ্ট হইয়া গগনে ওয়ালিস নামে  
এক জন পাদরি আত্মহত্যা করিবার চেষ্টা  
করেন। তিনি প্রথমতঃ গুলি খাইবার চেষ্টা ক-  
রিয়াছিলেন। পক্ষাৎ সকলে সতর্ক হওয়াতে  
তিনি এক দিন অসক্ত রূপে এক উক

প্রাচীর হইতে খুঁটিতে পড়িত হন। কিন্তু  
তাঁহার প্রাণ বিয়োগ হইল। ওয়াশিং-  
টনের একজন পাদরি, বিশেষতঃ 'সিউইজি' ও  
খাপি তিনি ধর্ম বিকল্প কার্যে কতিপয় গুরু  
হইয়াছেন। বোধ হয়, পীড়া অথবা অসা কী  
বন বনত তাঁহার বুদ্ধি অংশ হইয়াছে।

৩৪ মে নাস্তার হইতে 'পুত্র' পর্যন্ত  
রেইলগে যুক্তিবাছে।

টালার নীলামের প্রদান কন্যাগী লর্ড  
(এক জন ক্রিস্টি) তত্ত্বাবধানে যাত্রা  
সিংহ বস্ত্রকে 'বাস্কেল' বলাতে বাব নি-  
জস্ব উভয় মধ্যম সিঁচাছেন। উক্ত সিঁচি  
কি সিঁচের সহিত তত্ত্বাবধানে 'সিঁচি' হই-  
লিগের বিবাদ হইতেছে। 'সিঁচি' বলে আমি  
বাই, কই বলে আমি বাই বলসে বলে 'সিঁচি' ও  
গাই ও ক্রিস্টি সিঁচের এই দোষ ঘটাইছে।  
তাঁহাতেই বড় অনর্থ।

সিংহল দীপে এ বৎসর ব্যতীতে মনু  
লক্ষ টকা অধিরাছে। গভর্নস অগেঞ্চী এবার  
তথ্য ১৬৬,১৪০ টাকা অধিক প্রাপ্ত হইয়াছে।  
সিংহল দীপ ভারতবর্ষীয় গভর্নমে-  
ন্টের অধীনস্থ হইলে এত উচ্চ টাক প্রাপ্ত  
করিতে পারে কি না সন্দেহ।

ব্রহ্মদেশীয় বাপ্পীর জাহাজের কোম্পানি  
র করিলা জাহাজের অধ্যক্ষ তাহার টাঙ্গন  
রায় গালাগাতক বলা আশ্রয় প্রাপ্ত হইয়া  
করাতে তাহার ১০০০ টাকা অধিমান হইয়া-  
ছে। ইঞ্জিনিয়ার কল চালাইবার জন্য অধিক  
লোক চাহিয়াছে কাগেন তাঁহার এটি এই  
ব্যবহার করেন। সেরা বাগে পিকন জাহাজ  
দিবার সময়ে কাগেনকে বিশেষ রূপে ভৎসনা  
করিয়াছেন। উক্ত খল ব্যবহারের যত উদ্য-  
ম পাওয়া যায়, সংব্যবহারের তত প-  
ওয়া যায় না।

লক্ষিণ কোস্ট সম্প্রদায় বলেন কাম-  
প্রদায়ের ন্যায়ের প্রদান মাত্রি সাধারণ লোকের  
অন্যতঃ তাহা করিবার চেষ্টা করিতে তাঁহার  
মরীর রক্ষা হেতু ৫০০ অশ্বারোহী সেনা নিযু-  
ক্ত হইয়াছে। তাহার ইংলণ্ডের দীপ-  
দারোহী সশস্ত্র বর্ষকের পত্রিকায় পরিধান  
করিবে লোকসম্মুখীন হইয়া পুনঃ স্থাপন করা  
নিষিদ্ধ আবশ্যক হইয়াছে।

মধ্য ভারতবর্ষে বিদ্যালয় স্থাপিত হইয়াছে।  
ল. সি. এ. আর. ব্রাউনিং সাহেব বিদ্যালয়  
সহস্রাব ইনস্পেক্টর হইয়াছেন। বর্তমান  
বিদ্যালয়বিদ্যালয়ে আশ্রয় প্রদান ক-  
রিতেছে।

আমরা শুনিলাম উত্তর সাহেব বিদ-  
ল। উত্তর গভর্ন কর্তৃক জিহ্মলজিহ্ম  
নর। উত্তর সাহেব তাঁহার কম্পেন্সি-  
ন হইবেন। লিফটম্যান ডিপার্টমেন্টে  
লিফটম্যান কি বিশেষ গুণ আছে, আম-  
জানিতে পারিতেছি না।

চন্দ্রনন্দন নামক এক বোধে  
স্বা. এক নৌকা ডাকাইতি করিয়াছে। সি-  
সাহেবের নদীস্রব হওয়া অবধি চৌধ-  
দ্রারি দ্রুত হইয়াছে। আমরা প্রায় স-  
ল স্থান হইতে চৌধ স.বাদ প্রসিদ্ধি।

১৪ জ্যৈষ্ঠে 'ভয়ানক' হইয়াছে। সি-  
য়াছে। এদেশেই বা কবে বড় অভাগমন  
দেন।

দিল্লীগেজেটের কাবুলস্থিত স.বাদ  
বলেন আনন্দ বোম্বাই বহুমান তা খেলাতি  
লজি নগর সৈয়দা উপনীত হইয়াছেন  
সুলতান জাম খানসর মদীর জ.দ. ডী-  
অবস্থিতি করিতেছেন। পারস্য দেশীয় গ-  
নট প্রকাশ্যরূপে সুলতান জামের সঙ্গায়  
করিতেছেন। উক্ত এক প্রকার দ্বির হইয়া

সুলতান জামের সহিত আনন্দ বোম্বাই  
হইবার সম্ভাবনা আছে।

মাস্তাজ উইলসন সম্প্রদায় বলেন, ম-  
পুরের রাজ 'নাম' রাণোর ভার সন্তুষ্ট  
বার প্রার্থনা সংবেদন করেন। তাহা স-  
তাহা অগ্রাণ্য করিয়া রাজ্যে এক কলম প-  
লিখিয়াছিলেন। অর্থ্য মধ্যে যে এইরূপ  
এক কাজ করা হয়, তাহাতে যে সমস্ত  
অর্থ, তাঁর পত্নি নাম প্রকার সম্মান  
দিয়াও তাহা হয় না।

লিফটম্যান সাহেব, সঙ্গর আদালতে  
এক জন অতিরিক্ত প্রেরণ হওয়াতে তাঁহ-  
ব্রহ্মদেশী বাবদায়ক সঙ্গর সত্য পদ প-  
ত্যাগ হইয়াছে।

সাহসিক প্রেসিডেন্সিতে নিম্ন লিখিত  
মিষ্টে কাকি হইতেছে—

| বিধা          | কথিত বিধা |
|---------------|-----------|
| মামুরা        | ৩৭১।      |
| ডেমেরিলি      | ১১২২৩৫।   |
| ইকাকুর        | ১৮২৪৪৫।   |
| সালেন         | ১৪, ৩০০   |
| উত্তর কানাকা  | -         |
| দক্ষিণ কানাকা | ১৮৪।      |
| মালবার        | ৮২৫৭২৫।   |

এই সকল স্থানিতে সর্ব স্তম্ভ ৫৫০০ মণ  
কাকি হইতেছে। ৪১০টি কোষ আছে।

এই অংশে ইতিহাস সম্পাদক জায়দয়াবাদের ন  
বিশেষ প্রতি বিশেষ অংশে দৃষ্টি রাখিতে কতি  
ছেন। তিনি বলেন নবাব ইংলণ্ডের বন্ধু  
হন, এবং সময়ে সময়ে ইংল্যান্ড দিগকে  
সম্মান করিয়া থাকেন। ইংলণ্ডের  
পত্র মা হইলে জায়দয়াবাদ এতদিন অ  
পাথ্য পথে বাইত।

উক্ত সম্পাদক উত্তর পাকিস্তানের স  
পত্রের তত্ত্বাবধায়ক মন্তব্যের নিম্নে  
লিখিয়াছেন “ যদিও এতদেশীয় পত্রে নি  
বাহ হুচক প্রস্তাব লিখিত হয়, তথাপি সে  
সুভাগের স্বাধীনতা হুমকী উচিত নহে। ”  
এতদেশীয় সর্বান পত্রে বিক্রোহ হুচক প্রস্তাব  
লিখনের বিষয় যিনি বা যখন, এতদেশীয় স  
পত্র পত্রের স্বাধীনতা হুত হইলে গবর্নমে  
ন্টে অকের ন্যায় চলিতে হইবে।

অযোধ্য গেজেট সম্পাদক বলেন, আ  
রায় সঙ্গতি করেক জন প্রুচেষ্টিত ব্যক্তি  
নুলাব ইটরোপীয় সেনাকে নিগণান করাইয়া  
করিবার চেষ্টার আছে। উত্তর পাকিস্তা  
নের প্রায় বেল সম্পাদ পত্রই বিক্রোহ প্রস্তাব  
লিখিতেছেন।

সাঁতার হুট প্রাপ্ত প্রত্য সকল বিক্রোহ হই  
তে। অনেক প্রত্য, বিশেষতঃ আকবরী মো  
র অতিবিক্রম দুল্যে বিক্রোহ হইয়াছে।

হুগলীতে সঙ্গতি একটি ডাকাইতি হইক  
লিখিয়াছে। মামুরা খানার নিকট বর্তি এক  
কাকান হইতে ১০০০ টাকার প্রত্য লইয়া গি  
য়াছে। এখন আবার ডাকাইতিদিগের অধি  
ক হইল কি ?

উক্ত খানার বিচারালয়ে এক অসুস্থ মোক  
দমা হইয়াছে। এক জন কিরিজি কম্পাউটার  
চিকিৎসালয়ের এক দাসীর প্রতি আশঙ্ক হই  
য়া রাজিবোনে প্রহার গুণে প্রবেশ করে।  
দাসী তাহার প্রেমের পুরস্কার করেক লাঠী  
দিয়াছিল। তদন্ত্য কাঠিন্যেই যাজিষ্টে ট  
উক্ত মোকদমা কোজদারিতে প্রদর্শন করাতে  
দাসীর জরিমানা হইয়াছে, কিরিজি বেকশুর  
খালাস হইয়াছে। বিচারী দী হুশ বটে।

এক জন ইটরোপীয় খালানী এক ব্যক্তি  
কে প্রহার করিয়াছিল। সে পুলিশে আনীত  
ও গৃহ হইয়া বলিল “ আমি যে সে কাল  
নিগারকে হারিব তাহা ভবের ক্রমে জিরাহ  
হল এই। ”

২৫এ টেক্সট ২০জুলাই।

শুনা গেল, মর মর্তাকে ওয়েলস আভি ও  
হুশ হুটেতে পারেন নাই, সিংহ দীপে অব  
স্থিতি করিতেছেন।

এক জন মিসনরিকে মাজাজের প্রেসিডে  
ন্সি কালেকের অধ্যক্ষ করাতে তদন্ত্য কোন্  
রা অতিশয় অসন্তুষ্ট হইয়াছেন। মিসনরির  
নাম শুনিয়াই অসন্তুষ্ট কেন? যথোপদেশ  
দিবার বন্দ আদম নাই, তখন নক্স কি?  
উহাদিগের দ্বারা ধর্ম নীতির উন্নতি হইবার  
সবিশেষ সম্ভাবনা আছে।

জর্জ ইষ্টন নামক এক জন ইটরোপীয়  
এক জন উর্দীরা বেহারাকে প্রহার ও তাহার  
পালকী ভগ্ন করিয়া তাহাকে কোন স্থানে বা  
ইতে করে। বেহারা আপন সন্তান দিগকে  
আজ্ঞান করিয়া সাহেবকে পালকীতে লইয়া চ  
লিল। কিন্তু তাহার নির্দিষ্ট স্থানে না যাটরা  
এক কালে পুলিশে লইয়া গেল। ইষ্টনের পাচ  
টানা জরিমানা হইয়াছে। তৎ নাকি উভে  
দিগের বুদ্ধি নাই।

নিম্ন লিখিত অতিবিক্রমিক মাজিষ্ট্রেটের  
পরামর্শ ক্রমে হস্তি বংশী প্রদর্শন করিবেন :-

ফিটজ জেটিনাম, গুই বালফোর, জে,  
এচ কলকম্বন সাংকো, রাজা কালীচন্দ্র বা  
হাদুর, বাবু রাঘোগোপাল ঘোষ, এবং বাবু  
যাজিক সি প্রুচেষ্ট জি।

অযোধ্যা কবিসমর, রাজা সিংহজি সিংহ  
প্রুচেষ্ট তথার সর্ব প্রুচেষ্ট ৩৭ টি ব্যক্তি বখ  
করিয়াছেন।

যাজি সিংহের প্রতিজ্ঞাই প্রমাণ হইয়াছে  
বহিঃ সঙ্গদারের অসুস্থ প্রমে প্রবর্ত  
বৈষ্ণব আশ্রমের পূর্ব আশ্রম স্থিতি করি  
য়া যাজি সিংহকে সকল সময়ে আরি রাখি  
অসুস্থ দিয়াছেন। তাহাদিগকে কেবল উ  
ত্তম উমান রাখিতে হইবে। গবর্নমেই সী  
কবদিগের প্রতি একপ কটাক না করে  
কেন?

মিনিক সম্পাদক বলেন, এতদেশীয় স  
বাদ পত্রের স্বাধীনতার প্রতি হস্তান্তর কর  
গবর্নমেই ইষ্ট নহে। এতদেশীয় সম্পাদক  
দিগের অতিপ্রায় অবগত হওয়াই তাহারি  
গের সতিপ্রোত, সেই হেতু উত্তর পাকিস্তানে  
এক জন তত্ত্বাবধায়ক হইয়াছেন। আমর  
এবং এই অসুস্থ করিয়া আনিতেছি।

উক্ত সম্পাদক মিরাটের পে আকিস  
এক জন কর্মচারির খুঁড়তার বিষয় লিখিয়া  
ছেন। মঙ্গলাল নামক এক জন কেরানী নাম  
লোকের নামে হুতি করিয়া তাহা পেয়ার্টের  
দ্বারা স্বাক্ষরিত করিয়া টাকা লইত  
একরা সে বিবি মাকডোনাল্ড নামে এক ই  
রোপীয় জীলোকের নামে ৪০০ টাকার হু  
কটিয়া তাহাকে তাহার টাকা লইতে বলে  
সে তদন্ত্যে কার্য করিল, কিন্তু মঙ্গলাল  
তাহার অধিকাংশ টাকা সর। পরে আর এ  
বার ঐ প্রকার করিবার চেষ্টা পাওয়াতে  
গৃহ হইয়াছে। এক জন বহিঃ তাহার ন  
কর হইয়াছে। উক্ত জীলোককে ছাড়িয়া যে  
ওয়া হইয়াছে কেন?

হরকরার মহলপুরস্থিত মংলালদাতা  
লেন তদন্ত্য বিখ্যাত বিরোধী প্রুচেষ্ট সি  
আর সঙ্গতি করিয়াছেন। আর করেক  
খোজ আত্মসমর্পণ করিবেন। দ্বার এ  
কল।

প্রিন্স অব ওয়েলস পুনর্বার এক জন  
হুইন আরবের হুতে পতিত হইয়াছিলেন  
কিন্তু তাহার তাহার নাম অবশ্য চলিয়া গি  
য়াছে। এসত দেশে অঙ্গন করা উচিত নহে

ইংলণ্ডে সঙ্গতি একটি মোকাবল হই  
হইয়াছে। ওয়েল নামক এক ব্যক্তি একটি  
গুরুত্বপূর্ণ বাসিন্দাকে বিবাহ করিয়া  
আশা করে। ঐ ব্যক্তির পূর্বে বিবাহ হয়  
নে জী বর্তমান। ঐ বাসিন্দা তাহার প্রুচেষ্ট



কিম্বদন্তি অনুযায়ী বলা হয়, বঙ্গদেশীয় গণ-  
মতের স্বেচ্ছাকৃত ভাষাভাষী লোকেরা সাহেব ছাড়া  
কোন বিলাস নাইবা গমন করিতে ইচ্ছা নাহে

সংলগ্ন নথি, নথি একটি বাণিক ডায়েরি

লগ্নমন্দির প্রদান কর চাঁদা করিয়া অনেক টান  
প্রোতগ করিয়াছেন, বাজেই;রর যে লক্ষ্য লক্ষ  
কেন্দ্র নাই তাহা বা বলিয়াছে যে তাহা বা  
পালীগ্রামস্থ বাতধাঙ্গয়ে, আশ্রয় গ্রহণ করিতে  
না।

সিংহাসন দ্বীপ ভাষ্যবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের অধীনে  
নয় করিবার প্রস্তাব নাই। হাউস অব কমন্স  
অনুমোদন হইয়াছে। কিন্তু সিনেটরা এই দ্বীপ  
হস্তান্তর করিতে বড় সন্মত নহেন।

করাণী সেনারা বেলজিকা মণ্ডলাভিমুখে  
যাত্রা করিয়াছে। ইরাক ও স্পেনীয় সেনাদি-  
গকে কিতাইয়া আনা হইবে।

জাপানের হুতপন শিল্পাদি প্রদর্শন ঘৃহ ও  
অন্য অন্য সাধারণ স্থান দর্শন করিতেছেন।  
সুইটজারল্যান্ডের জাতি সাধারণ সভা জীর্ঘদিন-  
ক উক্ত দেশ দর্শনার্থ আকৃষ্ট করিয়াছেন।

আমেরিকার মহাসভা ইংলণ্ডের সহিত  
সন্ধি করিয়া দান ব্যবসার রীতি করিবার প্রস্তা-  
বে সন্মত হইয়াছেন। জীহার ইরোজী আশা-  
ভের অধ্যক্ষদিগকে যাবতীয় জাহাজ অধিবেশ  
করিবার অজুমতি দিয়াছেন।

অষ্ট্রীয় গবর্ণমেন্ট এই অভিপ্রায় একাল  
করিয়াছেন যে জীহার অন্য দেশীয় কোন বিষয়ে  
কর্ত্তার্পণ করিবেন না। এবং ইটালির বিষয়ে  
কেন্দ্র অস্ত্রবল করিবার উপায় অবলম্বন করি-  
বেন।

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বাল্লালেন্দীয় লেপ্টনেন্ট গবর্ণরের

আদেশানুসারী নিয়োগ।

২৬এ মে—সুইটের জজ এম এ জি সা সা-  
হেব ১৮৬২ অক্টোবর ২১ এপ্রেলের গেজেটে  
প্রকাশিত ১৮২৮ অক্টোবর ৩ আইন অনুসারে  
উক্ত জেলার বিশেষ কমিসনরের কমতা পাই-  
বেন।

নর্দোয়ানের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি  
কালেক্টর সৌলবী দীপসম্বন্ধ ১৮৫৫ অক্টোবর  
২ আইনের ৩ ধারা ও ১৮১৯ অক্টোবর ২০ আই-  
ন ও ১৮৩৮ অক্টোবর ২৯ আইন অনুসারে তথ্য  
নিমক চৌকির সুপারভেন্টেণ্ট হইবেন।

জি ডবলিউ, এস ডিকসন সাহেব ১০ই মে  
অবধি মুক্তিরের প্রতিনিধি সব ডেপুটি অ বিকে-  
ন একেই হইবেন।

২৮এ মে ডাক্তার আব বান্দারি যন্ত্রন  
সিংহের ফেরিও কমিটির একজন সভ্য হই-  
বেন।

শিলাঙ্গনের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি  
কালেক্টর বারু কাতিজ্ঞ চট্টোপাধ্যায় কটক বি-  
ভাগে বসলী হইয়া তথ্য কৌজদারি আইনের  
২২ ধারানুসারে এখন জেণির অধীন মাজিস্ট্রে-  
টের কমতা পাইবেন।

পুর্নিয়ার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কাল-  
েক্টর ডবলিউ মার্স সাহেব সাহরনে বসলী হইয়া  
তথ্য কৌজদারি আইনের ২২ ধারানুসারে এ-  
খন জেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের কমতা পাই-  
বেন।

সাহরনের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কা-  
লেক্টর বারু খোজলজ্ঞ চৌধুরি পুর্নিয়ার বসলী  
হইয়া তথ্য কৌজদারি আইনের ২২ ধারানু-  
সারে দ্বিতীয় জেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের ক-  
মতা পাইবেন।

৩০এ মে—নিম্নলিখিত কথচারিরা আগানে  
সহকারী হইবেন :-

লেপ্টনেন্ট এ এস কায়েল, লেপ্টনেন্ট  
এ এস কিলিপ্স, লেপ্টনেন্ট সি জেলার। বতমি-  
ন অন্য কোন আজা না হয় লেপ্টনেন্ট ই এ  
কিলিপ্স হাজারি বাগের অতিরিক্ত সহকারী  
কমিসনর হইবেন।

৫ই মে—৪র্থ অথবা পশ্চিম বিভাগের রেভিনিউ  
সহকারী নিম্ন লিখিত ডেপুটি কালেক্টরেরা  
১৮২২ অক্টোবর ৭ আইন ও ১৮২৫ অক্টোবর ৯ আ-  
ইন অনুসারে কালেক্টরের সম্পূর্ণ কমতা পাই-  
বেন।

বারু মহেন্দ্রনাথ বসু যশোবর, করিমপুর ও  
বাকরগঞ্জে।

বারু হুর্দাশীল ঘোষ বাকরগঞ্জে।

১৫ই মে—১৮৫৬ অক্টোবর ২০ আইনের ৩৬  
ধারানুসারে কার্য করিবার জন্য বালেনবরে বে-  
সতা ঘর নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা জাহাজ সভ্য হই-  
বেন।

বারু মিডাইডরণ দাস।

পদ্মলোচ মণ্ডল।

নিম্বিসনরজন।

ডেপুটি মাজিস্ট্রেট সৌলবী আবদুল্লা এক  
জিকিউটিব ইঞ্জিনিয়ার।

২২ এ মে—মোটোর ডেপুটি মাজিস্ট্রেট  
এক প্রান্তসাহেব।

প্রসন্ননাথ কণ্ডকমিটির এক জন সভ্য হইবেন

২৯এ মে—লেপ্টনেন্ট জি এস গিল্প কলি  
কাতার নিম্বিস ইঞ্জিনিয়ারিং কালেক্টর অন্য-  
তর অধ্যাপক হইবেন।

নিম্নলিখিত তত্ত্বাবধিরা বরদল সিংহেব  
সাতবা চিকিৎসালয়ের কার্যনির্বাহ কারিণী  
সভার সভ্য হইবেন।

জেলি হাউস সাহেব।

টি আশ্র ক'র সাহেব।

বারু কালীকিশোর দাস চৌধুরী।

ডবলিউ কোজ বি, এ, সাহেব বিবসার-  
রের সাধারণ বিদ্যালিকা কমিটির প্রেসিডেন্ট  
হইবেন।

৩০এ মে—ই, ই, ওড সাহেব হুগলি কল-  
জের এডিনিথি মাজিস্ট্রেট হইবেন।

বারু কুককমল চট্টোপাধ্যায় বি, এ, চট্টোপা-  
দি কলেজের সহকারী বক্তাবাধ্যাপক হই-  
বেন।

৩১এ মে—হুগলি বারু সাতকটি দেব মা-  
টোরের বসলী বক্তাবেজের প্রেসিডেন্ট হই-  
বেন।

২রা জুন—সি জম নম সাহেব হাবদার এডি-  
মিথি নিম্বিস নরজন হইবেন।

৩রা জুন—এফ, বি, গিল্প সাহেব বাসবরের  
এডিনিথি মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

এ, এম, মাকিগ্রন সাহেব মেসিগীপুরের  
এডিনিথি আইন্ট মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্ট-  
র হইবেন।

ডবলিউ, কেবলসাহেব সাহরনের সহকারী  
মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়া কৌজদারি আই-  
নের ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় জেণির অধীন মা-  
জিস্ট্রেটের কমতা পাইবেন।

গড়বেতার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কা-  
লেক্টর বারু কদলাকান্ত বসাব মেসিগীপুর ও জী-  
হুতার মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ কমতা পাইবেন।

মাসাবর জিহুত সোমপ্রকাশসভা  
বক মহাশয় মজীপেথু।

মহাশয়! নিম্নলিখিত সমাজের কর্মকর্তা  
যদি প্রকাশিত হইবার বোধ্য হয়, তবে অজ্ঞ-  
হ করিয়া প্রকাশ করিবেন।

১। পূর্বপক্ষে উক্ত হইয়াছে যে ঘাটে সৌক।  
লাগিলেই আট আনা পরমা বর্জকানের রাজা-  
কে দিতে হয়। প্রায় তিন মাস হইল দুইজন  
মাজি এই তত্ত্ব দিতে অস্বীকার করিতে তত্ত্ব  
আদারীদের সহিত খোরতর বিবাদ হয়। অবশ-  
র মাজিরা রাজদ্বারে অভিযোগ করে, মাজিদের  
হুত্ব হওতাতে গবর্ণমেন্ট করিয়ারী হইয়া বর্জ-  
মামের রাজার দিকট হইতে টেকিরং চাহিয়া  
ছিলেন। রাজা উত্তর দিলেন যে আমি এখিন-  
রের কিছুই জানি না। ইহারদ্বারা জিহুত অখোর  
মাথ তদ্বিন্থিকে এখিবরের কথা জিজ্ঞাসা কর।  
পরে অখোর বারুকে বর্জাধিকরণে উপস্থিত হ-  
ইবার জন্য আক্ৰান্ত হয়। অখোর বারু উপস্থিত  
না হওতাতে এখানকার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট জি-  
হুত্ব এতাপক্ষে চট্টোপাধ্যায় গত পরবর্ত্ত জ



এই পত্র কলিকাতার বহু পূর্ব যাতনা বেলতে  
 লোহাপুর বেলতের বহু পূর্ব যাতনা বেলতে  
 যাত্রাবাদে বিহারীচরণের বাসিতে একটি লোক  
 আসে একান্তই হু।

আর কত কাল আলা-  
হরিদ্রাচেন, ইহা বলবার নহে ।

ইউরোপীয় সেনাদলের বিরুদ্ধে সরাসরি  
অভ্যুত্থানে গবর্ণমেন্টে শল ব্যস্ত হইয়াছি-  
লেন । সম্রাট শুনা যাইতেছে ১২ ৮০০ পিণা  
বিরুদ্ধে আসিয়াছে ।

গোবাই সেনাদলের এক জন এডমিরাল  
সাগির দুই বৎসরের বিদায় লইয়া ইংলণ্ডে  
গাইবার প্রার্থনা করিয়াছেন । প্রশান সেনা-  
দলেই কলিকতায় ইউরোপীয় চিহ্নিত  
জাহাজসমূহের ন্যায় ইংলিশের দুটির মত  
নিগম করা উচিত কিনা বাজপুকুরেরা অন্য  
কোন যে কণা পক্ষপাত করেন, ইংলণ্ডে গমন  
করিতে পক্ষপাত করিয়া লোককে ভয়োৎসাহ  
দেওয়া চেষ্টা বিবেচ্য নহে ।

উত্তরায়ন এম. প্যারারে লিখিত হইয়াছে,  
১৮৮৫ সালে সাতের বলিয়া দুই হইয়া আসিয়া  
৩ হইয়াছে, গবর্ণমেন্ট তাহাকে মুক্ত করিবার  
প্রস্তাব দিয়াছেন । এই ব্যক্তিকে পাশ্বে ও কতি  
কিছু দিগা স্বদেশে প্রেরণ করা হইবে ।

১৮৮৫ সালের এক খানি পত্রে লিখিত হইয়া-  
ছে এক্ষণে পৃথিবীতে সর্বমুখ একমুখ কোটি  
লোক আছে । ইহাদিগের মধ্যে ৩০৫৫ টি  
এক ও ১১৫০ প্রকার ধর্ম প্রচলিত আছে ।  
১৮৮৫ প্রতি মৃত্যু ৩০০০০০ চা-বিসেস জীবিত  
পারে । দীর্ঘকাল ধর্ম্মাধিকার লোক আপ-  
ন, দীর্ঘ জীবন ৫০ বৎসর পর্যন্ত জীবিতেরা  
মৃত্যু অপেক্ষা লবল থাকে । জীবস আপে  
১৮৮৫ কালে অধিক জন্ম ও মৃত্যু হয় ।  
১৮৮৫ ৫৩ মৃত্যু ও বিবাহ হয় তত বল-  
ন ৭ হইয়া থাকে ।

১৮৮৫ সালের বিরুদ্ধে পুলিশ অ-  
ভ্যুত্থান নাটকের দ্বিতীয় প্রকাশ করিয়াছে-  
ন । যে দুই জন ধানাদার, একটি প্রীলোককে  
প্রকাশ করা হইয়া তাহার চরিত্র করে, তাহার  
মাজেটকে বলে, হরিদ্রাচাল নামক এক জন  
১৮৮৫ সালের উদ্দেশ্যে ছিলেন । কিন্তু এই প্রী  
১৮৮৫ পটভূমিতে বলিল হরিদ্রাচাল কিছুই  
জানিতেন না । তথাপি মাজেটের তাহাকে  
সেসিয়নে সমর্পণ করেন । হরিদ্রাচাল মুক্ত হই-  
য়াছেন, কিন্তু তাহার কর্ম্ম নিম্নাছে । একপ

ইমার্চ হুস্পতিবার ।  
টাইমস অব ইণ্ডিয়া এক ৩০ পত্র প্রে-  
রক বলেন সারবন্দোয় জেনারেলের বন্ধী-  
মানসিগের বাস করা আর হইয়াছে । মুসল  
মানসিগের একই সংস্কার করিবারে, মুল্যের  
খুশীমানের শীত লোপ হইবে ।

হরকরার যে পত্র প্রেরক বেহারের অধি-  
কেন ঘটিত অসুখতারের বিষয় লিখেন, কার্ণা  
সহায় নামক এক জন কর্ম্মচারী অসুস্থ হইয়া  
তাহার নামে নালীস করিয়াছেন । তদন্ত মা-  
জিষ্ট্রেট পত্র প্রেরকের জামীন লইয়া তাহাকে  
মুক্ত করিয়াছেন । লঙ্কাহেবের বন্দাবাস  
অবধি সকলকে মুদ্রাবস্তুর স্বাধীনতা বিনাম  
সহজ জ্ঞান করিতেছেন ।

গত বৎসর আসানের চা কোম্পানি ১১-  
৬৭০০০ মণ চা বিক্রয় করিয়াছেন । যত বৎসর  
জাহাজিগের ১,১২,০০০ টাকা লাভ হইয়াছে ।  
অংশীদার শত্বে ১০ টাকা লাভ পাইবেন ।  
এই কোম্পানির অংশিদারের মধ্যে তিনতা-  
গের এক ভাগ এডমিরাল লোক ।

পানিক সাগরের মাফিয়াস দীপে আ-  
গের পার্কেতের উপরদে সমুদ্রায় লোকের গ্রাম  
বিনষ্ট হইয়াছে ।

মিল্লীগোজট সম্পাদন বলেন, সিদ্ধু নদের  
নিবন্ধ মুক্ত অতি সহজ প্রাপ্ত হইতেছে ।  
১৮৮৫ ফিটের মধ্যে ১০২৮ ফিট মুক্ত হইয়া-  
ছে । এক বৎসরের মধ্যে শেষ হইবার সম্ভা-  
বনা আছে ।

বঙ্গদেশীয় ব্যবসায় পক সভার ৩৭ বিল  
অর্পণ করা হইবে । প্রথম কলিকাতার ধর্ম  
বন্ধ কবিবার বিল । অনেকে অসাবধান হ  
ব্রহ্মনাতি করেন, তাহার পুত্রের দ্বারা চতুর্পার্শ্ব  
দ্বিত লোকের মত হয় । দ্বিতীয়, বেগাব ধরা  
নিষেধ করিবার বিল । এই বিলে প্রস্তাব করা  
হইয়াছে যুদ্ধ প্রকৃতির সময় ব্যতিরেকে কা-  
হাকেও বেগাব ধরা হইবে না । বেগাব ধরিলে  
তাহাকে তৎপরস্থিত জেলার জাহাজিগে দিতে  
হইবে । কাহাকেও ৫০ কোসের অধিক দূর  
লইয়া যাওয়া হইবে না । তাহা করিলে জাহাজিগ  
দিগের সম্মতি লইতে হইবে, এবং এবং

হলে তাহারিগকে বিত্তন ভাড়া দিতে হইবে ।  
এক জন মিলিল কর্ম্মচারী উপস্থিত থাকিয়া  
জাহাজিগের ভাড়া দিবে । এই আইন  
নিষাধ আনয়ক, কিন্তু ইহার দ্বারা কাজ হু  
একপ বোধ হয় না ।

করুণি ডিগাটমেন্ট হইতে নিম্ন লিখিত  
নোট প্রকৃতি প্রচলিত হইয়াছে এবং এই ডি-  
গাটমেন্টের হস্তে নিম্ন লিখিত টাকা আছে :—

| ১৮৮৫ সালের ১২ মার্চ | ১৮৮৫ সালের ১২ মার্চ | ১৮৮৫ সালের ১২ মার্চ | ১৮৮৫ সালের ১২ মার্চ |
|---------------------|---------------------|---------------------|---------------------|
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |
| ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            | ১,০০,০০০            |

লেপ্টনকে গবর্ণর ২৩৫ জন প্রকৃতি  
ইবেন, তিনি ৮ই সেপ্টেম্বর পর্যন্ত কলিকাতার  
প্রত্যাগমন করিবেন ।

সম্রাটর দ্বিতীয় পত্রে লগুন দ্বিত এ  
ক জন দ্বিত লিখিয়াছেন কর্ণাটের নবাবের  
তদীয় সিংহাসনে পুনঃ স্থাপিত করিবার জন  
বাকের প্রকৃতি ১০টি নগরের লোকে  
চারলস উড ও মহালতার দিকে আবেদন  
করিয়াছেন । অন্য অনেক নগরের লোকে  
প্রকার করিবেন । নবাব আগুনার দুঃখ  
এক পুত্রকে লিখিয়া চতুর্দিকে প্রেরণ কর  
তে ইংলণ্ডীয় লোকেরা তাহার সহায়তা  
দিতেছেন । এদেশের লোকেরা অন্যান্ত  
জাহাজিগের কর্ণাটের গোচর করেন না বলি  
যত কষ্ট পান ।

আমরা এক অভাবনীর স্থানে মুক্তি  
যত চর্চন করিলাম । কেও অব ইণ্ডিয়া লি





সম্ভব। তাহা অবলীলাক্রমে সম্পন্ন করিয়া, প  
কৈন। যদি সুসংকল্পে পাশ ছেদন করিয়া, এ  
পীড় ব্যক্তিব। বিশুদ্ধ ধর্মের আশ্রয় গ্রহণ করেন  
তবে পৃথিবীতে তাঁহারা অনতিদীর্ঘকাল যথেষ্ট  
সম্ভ্রান্ত জাতিবধো পূর্বসংকল্প হইতে পারেন  
কৃতদিন তাঁহারা, আপনাদিগের সমস্ত জাতি  
উপদেশ অবহেলা করিয়া, অশেষ অনিষ্টক  
পৌত্তলিকতার শাসনে শাসিত হইবেন ততদিন  
উঁহাদের উন্নতি ও সম্ভাবনা নাই। তাঁহারা আ  
নাদিগের প্রতি আর কত কাল একপ জরাম  
নিঃস্ব ব্যবহার করিবেন? পৌত্তলিকতা যে তাঁ  
হাদের সকল উন্নতি স্বপ্ন রূপে করিয়া দাখিল  
হে! হাব উদ্ধৃক ন। থাকিতে গৃহের অভাব  
সায় যে এক কালে কলুণ্ডিত হইয়া গেল, তাঁ  
কি তাহা দেখিয়াও দেখিবেন না? হাব ক  
করিয়া, আর কিছু কাল অচেতনে নিদ্রা হই  
তাঁহাদের জীবন। এক ধারে বিসর্জন দি  
তবে। সাধারণ লোকে জামালোক প্রাপ্ত  
নাই, সুতরাং তাঁহাদিগের সুসংস্কারের  
অসম্ভব নহে, কিন্তু অভ্যস্ত আক্ষেপের  
এই যে এখনও কৃতবিদ্যা ব্যক্তিদিগের মধ্যে  
নেক পৌত্তলিকতার অসারতা স্বয়ংক্রিয় করি  
রাও তাঁহাদের অধিকার রক্ষা করিতে ব্রহ্মসী  
উত্তোষন তাঁহারা হস্ত বনে করেন যে বখ  
বিদ্যোপার্জন করিতে তাঁহারা শক্ত হইয়াছে  
তখন তাঁহাদের সকল ব্রহ্ম লাভ হইয়াছে। তাঁ  
হাদিগের এ বিষয় আশ্চর্য্য কত দিনে অতর্কিত  
ইবে। তাঁহারা সরল হইয়া, একবার আপন  
পন হৃদয়কে জিজ্ঞাসা করুন দেখি, তাঁহারা  
কল অভাব ছর হইয়াছে কিনা - সেই আত্ম  
বার্থ আপনাদিগের পবন পদ স্মৃতি করিয়াছে কি না  
নিঃসন্দেহ বল। হাইতে পারে তাঁহাদিগের আ  
হা কখনই ইচ্ছাতে হ'। বলিয়া সায় দিবেন না  
তাঁহারা যত দিন ধর্মচ্যুত হইয়া থাকিবেন তত  
দিন তাঁহাদের নিজেদের স্বপ্ন নাই, ততদিন  
তাঁহাদিগের হাদ। এদেশেরও মঙ্গল সাধন হ  
বে।। যদি আপনাদিগের ও বদেশের উন্ন  
দর্শনে অতিলাব থাকে তবে তাঁহারা অনেক  
টিল ভাব সমস্ত ছর করিয়া দিউন। লোকতর  
সম্মান দিয়া ধর্মের আশ্রয় গ্রহণ করুন, এবং  
যেহ ধর্মের সহায়ে দেশের সমস্ত বিধানে অ  
সর হইয়াছেন তাঁহাদিগের পথে বিঘ্নরাপি  
মুপাশিত না করিয়া তাঁহাদিগকে উৎসাহ ও  
বান প্রদানে তৎপর হউন। তাহা হইলে তাঁ  
রা দেশের আদর্শগীর্ষ হইবেন, ধার্মিক জা  
নিকাট আশীর্বাদ লাভ করিবেন এবং

अहमदाबाद :

[illegible]

শিখাবোল্লাল নামক এক জন মিসনারি এ  
দিনে আসিয়া কএকটি বিদ্যালয় সংস্থাপন  
করিয়াছেন। মিসনারিরা এতদেশের যথার্থ  
উপকারী। এতে উত্তীর্ণা বহুদেশে দুর্ভিক্ষ  
লোকের সংখ্যা ক্রাস হইয়া যথার্থ লোক  
উত্তীর্ণ মিসনারির সংখ্যা দিন দিন হ্রাস



হাদিগেব অস্ত্রের আশ্রয়লাভ প্রেরণ করিয়া  
হাদিগকে খীর কোড়ে নিরস্ত রাখা করিবেন-  
। হায়! এমন অবস্থা প্রাপ্ত হইতে কেনই তাঁ-  
। অগ্রসর না করেন ।

এ দেশ যেমন চতুর্দিকে দুটিপাত কবিতা  
খণ্ডে মলিন করেন, তেমনি বধন ধর্মাত্মর  
পের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র সমবাহমান ত্রাক সত্য  
কলের প্রতি তাঁহার দৃষ্টি নিপতিত হয় তখন  
নি আশার সকার পাইয় যে মহাহর্বক্ষত হ-  
তাতে আর সন্দেহ নাই । ত্রাকের। যে এণ-  
আর্ষণেরতা লোকের গুরুতি পরিত্যাগ করি-  
কর্তব্য সাধনে উদ্যুঃ ইং. চন. ইচ্ তাঁহার  
সম সৌভাগ্য বলিতে হইবেক । বধন প্রণক-  
বার পৌত্তলিকতার মাদেশ অববেলন পরি-  
ত্রাকের। বিস্তৃত ত্রাক ধর্মের আচ্ছাদনে  
ধর্ম করিতেছেন, তখন এমন কোন দেশ বি-  
কাকী পুরুষ আছেন বাঁচার সন আনন্দে  
রিপূর্ণ না হয় । মহাশয় আপনি যদি স্ববল-  
নাচর করেন গন্ত ১২ ই জ্যৈষ্ঠ কোনমগতের  
কটকটী মোড় পুঙ্কর এামের জীবন্ত বারু এ  
কুমার ঘোষের নব কুমারের নামকরণকিয়া  
কর্মধর্মতাধ্বারী নিম্পন্ন হইয় গিয়াছে.  
বে আপনার মন কি পরম আচ্ছাদ্য কান ক-  
মা ২ মহাশয় এই নামকরণ উললকে ৪০  
নের আধক ত্রাক একত্রিত হইয়াছিলেন । বে  
ধর্মপ্রাণ কথাকালে বিশেষ কোন বিষুই  
পরিভূত হয় নাই । এই রূপ অজ্ঞান বধন এ-  
লনী. প্রতিমের দুই লক্ষিত হইবে তখন এ  
লক্ষি অপূর্ণ শোনা ধারণ করিবেন না? চে  
কগণ যদি কেবল আপনাদের যথার্থ একতা ৬-  
৮, যদি আপনাবা মদল চক্রে প্রাণপণ সত্য  
পালন করিতে অগ্রসর হন, তবে স্বদেশের  
ভেদ সাধনে একান্ত অসমর্থী হন, তবে সমস্ত  
চাম না করিয়া কান্ড থাকিতে না পারেন, তবে  
আপনাবা নিশ্চয় জানিবেন, কোন বাপটে আ-  
লাদিগের গণে দণ্ডায় মান হইতে পারিবেন না.  
কিন্তু অবস্থাই আপনাদিগের অক্ষয় হই  
বৎ কর্তব্য পালন জন্য মহামানব স'ম'গে স'স'  
হই সক্ষম হইবেন । লোকে যে আপনাদিগকে  
প্রদর্শন করিতেছেন তাহা শু শিষ্টক  
প্রদর্শনী হইবেন না । আপনাদিগের ৩ কু ৬  
কিন্তু কুমারি স্পটরূপে হ্রস্বকম করিতে ৩ ৫  
নাই বসিয়াই তাহারা এখনও পার্থক্য আপ  
দ্বয়ের উপর বিপাকতাচরণ করিতেছেন । তাহা  
বিলম্ব আশ । নতুন যে আপনাবা সত্যক  
প্রদর্শন আ ৬২, এবং খেনন আপনাদিগকে  
প্রদর্শন

তাহাদেরও মফলের জন্য যে আপনাবা বাবুল  
হইয়াছেন ইচ্ একবার জামিতে পারিলে অ-  
নাই তাহারা আপনাদিগকে জ্ঞাত। স্বরূপ জ্ঞান  
কবিতা আপনাদিগের দৃষ্টান্তের অক্ষয় হই  
বেন ।

**সানাবর জীবুত সোমপ্রকাশসম্পাদক মহাশয় সসীপেয় ।**

সম্পাদক মহাশয়! সাতশয় দুর্ভাগ্যে কল্য  
একাশ কবিতেনি ১২ মে শুক্রবার দুই প্রহর  
চারি ঘটিকার সময় অজ্ঞাত কালটের ও ম'জি-  
কোট এইচ, এইচ, বিকান সাহেব অতিশয়  
নোদ্র আক্রান্ত হইয়া পরলোক গমন করিয়া-  
ছেন । পীড়ার বীধাবিধ চিকিৎসা হয় নাই ।  
ইনি প্রতি দ্রুতলোক ছিলেন । ইহঁর মদুপ ই-  
হাজ এখানে অতি অল্প আনিসাছেন । ইহঁর  
দুত্বাতে আমল মোক্তার ও অপর সাধারণ  
অনেকেই অল্প মোচম করিয়াছেন । ইনি এখানে  
দুইমাস কালমাত্র অবস্থান করিয়া । এখানে আ-  
সিয়া অবধি অতটা অজবাবু ইহঁর পক্ষে এস-  
নই সম্ভব হইয়াছিল যে শেষে ইহঁকে দুত্বাত্তে  
প্রবেশ করিতে হইল । বিশেষ দুর্ভাগ্যে বয়স  
গই যে ইহঁর জাতি পীড়ার সংবাদ পাটুর সা-  
কায় বসিতে আদিলেন, কিন্তু সাক্ষ্য কবিত্তে  
পারেন নাট ।

৩৬ ১০ই মে শুভ পরিবার ব'বু প্রেসটার মে  
না ১২ নং বোটা এবং জমাদার সাক্ষর উত্তরেট  
আজীল খালস পাটয়াছেন । ইহা মহাশয়  
জীবুত সোমপ্রকাশ সাক্ষর একটা প্রাণসার  
বিশয় বলিতে হইবে । সম্রাতি কোন অস্বাভে  
অভয়চর ও জীবন্ত লাল পাড়া বাঁতাকের ত্রিণ  
ত্রিণ বেত সাক্ষা দেওয়া হইয়াছে । এখনও ২০  
বেত মানা হইলে অতর আপনাকে নির্দোষী  
বলিয়া নিঃশেষ করিলে অতিরিক্ত ৫ বেত এক-  
নে ৩০ বেত ম'ব' হয় ।

গন্ত ২০ এ যে ৬ ঘটিকার সময়ে পগন-  
মদল মেঘে আচ্ছন্ন হইয়া মূলধারে দুটি সচ  
তিনটি বহু পতিত হয় । একটি অভয়গণের পুর্ক  
প্রাক্তিভিকৃতি নামক স্থানে একটি বড়বাজারের  
শীতলা মন্দিরের অতি নিকট পশ্চিমোক্তে এক  
বেলালয়ে, অন্যটি শুজাগে ৩০ গণপদেবের  
মন্দিরের পূর্কপ্রান্তে এক গুরুত্বের গৃহে পতিত  
হয় । ইহার মধ্যে কোন স্থানে একটি প্রাণীরও  
প্রাণহানি হয় নাই । কেনন এ দ্বিভাজর উপর  
দ্বি. সব আপন ধিয়াছে । তাহা এক মাত্র গৃহ  
চিহ্ন, তাহা তন্ময়বশে হইয়াছে । ৩০ কালে  
তরুণাচর তখন তরুণদ্বারের, কোন প্রতি  
বেলীর বাসিতে ছিল । আর বশার আলয় ই  
টকময় বলিয়া অন্য কোন ভানি না হইয়  
কাল গুরুত্ব শানক চণকাস ধসিয়া গিয়াছে ।  
এনে চুর্ক ঘটিকার সময় মোতাগা-  
ল ১২৩০ আ' লাগিয়া ২০.৩০ খানি গৃহ  
সাক্ষ হইয় গিয়া ছ

সম্রাতি সাক্ষ প্রাণের ১১.৬৩০০ পাড  
খিন ৬  
১১ ৫ই জু  
সিবেদন নির্মিত ।  
সেনিসীপুত্র ।

**জীবুত সোমপ্রকাশসম্পাদক মহাশয়ের ।**

নিজ আশত। এামে পুজিস থান। আছে, ত  
খানি যে রূপ চোবুর সাক্ষ্য হইয়াছে, তা  
তা বর্ণনাভীত । সাক্ষ্য হইয়াছে তাহা  
নাই, কাপড়ের বক। পর্য্যন্ত তাঁম ধরিয়াছে । শ  
বিভাগ আর কত দিন সক্ষ কবিত্তে হইবেক  
ছাড়িতে ছাড়িত ছাড়িতেছে না । এদেশে রাশ  
নাই । রাতি বিহবে এদেশে বেকল দুর্ভাগ্য হই  
যাচ্ছে তাহা বলা যায় না । রাজাপু'বন বাসা  
নাশার সহিত আমতা হইতে এক রাশা নাশ  
করিমান কাহন দুই বৎসর কাল হামে দ্বা  
ফেল। হইতেছে, কিন্তু আর ৩ বৎসর  
তাহা বাসহারোপযোগী হইবেক বল যায় না  
প্রক বহাৎ অনেক করিয়া দিয়াছে, আগামী ব  
ধায়ও একটা হইবেক সন্দেহ নাই ।

জুবান মুজেকি চোখিতে এক জন প্রাচীন  
মোলা ৮০ কিম আনিসাছেন । তিনি বাসাল  
তাম জানেন না । পারস/ তাহাতে মোকদ্দমান  
রায় লিখিয়া থাকেন । তাহার বাজালা ৮০ হইবে  
বা ১০ প্রতিধারীর যথেষ্ট কষ্ট হয় । বাজাল  
দেশে বাজাল, তাহার অনতিজ চাকিম দেতর  
বিজয়না বলিতে হইবেক । এক জন কুতবিদ  
ছাকিম এখানে আদিলেন সকলের প্রার্থনায়  
অনেক স্থানের মুজেকের প্রতি ডেপুটি মাজি  
কোট ও ডেপুটি কালেক্টরের কনডা । এখন  
হইতেছে । মোলা সাহেব তরুণ লোণ পা  
হইলে এখানে প্রকাদিগের স্থানান্তরে বিভা  
জন. বাইতে হইত না । এখানে ১০ জন ডেপু  
ন ক্রিটেট ও ডেপুটি কালেক্টরের কম  
প্রাপ্তগতির আশাক ।

সামত.  
১২ ৪, জ্যৈষ্ঠ ।

**মল্যপ্রাপ্তি ।**

- জীবুত বারু লক্ষীনারায়ণ সেন গাজীপুর
- ১২ ৬২ টোকা হইতে কার্তিক পর্য্যন্ত ৫ টোকা
- " জামাবান বিদ্যালয়কার মণ্ডলাই জুলা
- ১২ ৪২ টোকা হইতে কার্তিক পর্য্যন্ত
- বেলীমাধব চক্রবর্তী বানপুর্বাণ
- ১২ ৬২ টোকা হইতে ৭ বৈশাখ পর্য্যন্ত
- গজাধর দায় গাজাপুর
- ১২ ৬২ টোকা হইতে কার্তিক পর্য্যন্ত
- " তাবক নাথ কল্যাণদাস মুন্সে
- ১২ ৬২ আষাঢ় হইতে অগ্রহায়ণ পর্য্যন্ত
- " বিগিনবিহারী ভাড়াড়ী হাবড়া গর্ভমেট
- জুলা ১২ ৬২ টোকা হইতে কার্তিক পর্য্যন্ত
- " " জীব্রাম পালিত বাটা
- ১২ ৬২ ১১০ হইতে তাত্র পর্য্যন্ত

এই প্রকার কার্তিক মন্দির পূর্ক মাওল রেল  
সোমাপুর টেমের মন্দির চা'ডিগোতা গ্রামে জীবু  
কাকানায় বিদ্যাক্ষয়ের মন্দিরে ৫০ সোম  
আওত একাশিত হয় ।

# সোমপ্রকাশ

“একত্বাৎ প্রকৃতিহিতায় পার্থিবঃ সবলতী তিমহতী ন ভীষতঃ।”

৪ ভাগ,  
৩২ সংখ্যা।

সন ১২৬২। ১০

শ্রী ১৮৬২। ২৩ জুন

বার্ষিক ভূমি ১-টাকা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

## সোমপ্রকাশ।

১১ ই আশ্বিন সোমবার।

সাহাবাদের অফিসে সন্ধ্যা ৭টা।

চারের প্রসঙ্গদান ও তালিকা।

আমাদিগের দুইজন লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বীডন সাহেবের অধিকারদাল একটি শুভ কাণ্ড দিয়া আবদ্ধ হইল। ইহার পূর্বগত লেপ্টেনেন্ট গবর্নর গ্রান্ট সাহেবের চেঁচায় মীলকরদিগের অত্যাচাররূপে ভগ্ন বিদিত হইয়াছে। যখন অত্যাচার প্রকাশ হইয়াছে, তখন আজি হইল কালি শুভক দিন পরেই হইল অবশেষে তাহা প্রতীকার হইল। বীডন সাহেবের যত্নেও গবর্নমেন্টের অবিস্ত পূর্ব (অন্যে অবিস্ত নহে) একটি অত্যাচার প্রকাশ হইয়াছে সেই অত্যাচার সাহাবাদের অফিসে ঘটিত।

পাঠকবর্গ পূর্বেই শুনিয়াছেন সরকার সন্ধ্যা দাতা প্রথমতঃ এই অত্যাচারের বিষয় সাধারণের গোচর করেন, বীডন সাহেব তাহা দেখিয়াই ইহার অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হন। অনুসন্ধানে দ্বারা স্থির হইল যে, সরকার পত্রেরক বেকপ লিখিয়াছেন, তাহা অত্যন্ত বটে কিন্তু অফিসে যে কৃষকদিগের নিকট হইতে আমলারা নির্যাতন পূর্বক যে অর্থ গ্রহণ করেন, তাহা মিথ্যা নহে। তিনি বলেন বহুসংখ্যে কোটি টাকার অফিসে জর করা হয়, কৃষকেরা ও তাহা যে মূল্য পায় তাহা হইতে বহুসংখ্যক লক্ষ টাকা আমলা প্রকৃতি ঠকাইয়া লইয়া থাকে। এই টাকা যদি এইরূপে

কৃষকদিগকে না দিতে হয়, তাহা হইলে গবর্নমেন্ট একদে যে মূল্য অফিসে জর করিতেছেন, তাহা অপেক্ষা অল্প মূল্যে পাইতে পাবেন। একদে প্রতি সের পাঁচ টাকার সওয়া হইতেছে, প্রবন্ধনা বদ্ধ হইলে প্রতি সের চারি টাকা আট আনার পাওরা যাইতে পারে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বলেন সরকার পত্র প্রেরক লিখিয়াছেন, কৃষকদিগের দ্বারা বৎসপূর্বক অফিসে কৃষিকার্য করা ইয়া লওয়া হয়, কিন্তু তাহা বাস্তবিক নহে। এহলে আমাদিগের বক্তব্য এই, গবর্নমেন্ট স্বয়ং মীলকরদিগের দ্বারা বৎসপূর্বক অফিসে কৃষি কার্য করাইয়া লন না বটে, কিন্তু আমলা প্রকৃতির যখন তত প্রভুত্ব ও অর্থ লোভ রূচিয়াছে এবং অধ্যক্ষদিগের তদৃশ তত্ত্বাবধান ও অন্যায় অর্থ গ্রহণপ্রয়াস নিবারণ চেষ্টা নাই, তখন কৃষকদিগের প্রতি বৎসপূর্বক হওয়া অসম্ভবিত নহে। তবে সে বস প্রয়োগ প্রকাশ হইল আর না হইল সে স্বতন্ত্র কথা।

লেপ্টেনেন্ট গবর্নর এই অত্যাচারের যে স্বাধীন ও প্রতীকারের উপায় নির্ণয় করিয়াছেন, এহলে তাহারও উল্লেখ করা আবশ্যিক। আমলা প্রকৃতির বেতনের অল্প তাই উল্লিখিত অমায় অর্থ গ্রহণের কারণ। আমলা চারি টাকা করিয়া বেতন পায়, কিন্তু এখন সচরাচর সামান্য সজুর বেতন মাসিক হয় টাকা। এই কারণটি অনুমোদিত থাকিতে লেপ্টেনেন্ট গবর্নর প্রতি

কারের যে উপায় স্থির করিতেছেন, তাহা কোন ক্রমেই কলোপমায়ী হইবে না। তিনি বলেন আমলা বাহাতে কৃষকদিগের নিকট হইতে অমায় অর্থ গ্রহণ করিতে না পারে, অধ্যক্ষেরা সর্বিশেষ সতর্কতা সহকারে তদ্বিষয়ে সন্ধ্যা দৃষ্টি রাখেন এবং কৃষকেরা আমলা প্রকৃতিতে দ্বার বন্ধ না করিয়া বাহাতে সাক্ষ্য সহজে অধ্যক্ষদিগের নিকট হইতে সাক্ষ্য গ্রহণ করে এই কপ চেষ্টা করা আবশ্যিক তাহা হইলে প্রবন্ধনার অস্পত্তা হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু অল্প বেতনতুক আমলাদিগের আধিপত্য থাকিতে এক কালে যে প্রবন্ধনা বদ্ধ হইবে ইহা কোনক্রমেই সম্ভাবিত নহে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর আমলাদিগের বিষয়ে লিখিয়াছেন, অল্প বেতনে অধিক আমলা রাখা রাখিয়া অধিক বেতনে অল্প আমলা রাখা বিধেয়। এহলে আমাদিগের এই একটি নিজস্ব হইতেছে, লেপ্টেনেন্ট গবর্নর অধিক বেতন দিয়া যে আমলা রাখিবার প্রস্তাব করিতেছেন তাহারা বিকল্প আমলা একদকার অনিচ্ছিত আমলাদিগকে কি অধিক বেতন দিয়া রাখা হইবে? গবর্নমেন্টের যদি আমলার অত্যাচার নিবারণের বাস্তবিক চেষ্টা জমি বাধক, সুশিক্ষিত লোকের অন্বেষণ করুন। তাহাদিগের বেতনে যেমন কিঞ্চিৎ অধিক বাইবে তেমনি অন্যদিকে লাভ হইবেক।

এই প্রসঙ্গে আমাদিগের অধিশর সবিম্বন্ধ কৌতুক জন্মিতেছে। যে কোন কপে



ক'র। আমলায় সম্পর্কে যায় তাহা  
গের উপরেই অত্যাচার হয়, গবর্ণমেন্ট  
ত দিনের পর এইটা যুতন জানিতে পা  
রেন !! অথচ একে এত দিন যুখে গো  
দরা ছিলেন !! তাহাও সম্বাদপত্র ছিল !!  
এত উপকারকারী সম্বাদপত্রেরও মধ্যে  
যে স্বাধীনতা হরণের চেষ্টা হইয়া থাকে

হরকরা পত্র হইতে এই উপকার লা  
ভ হইয়াছে বলিয়া লেণ্টনট গবর্ণর তৎ  
সম্পাদকের নিকটে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ ক  
রিয়ান্নে। অপর, হরকরার পত্রের কালী  
সাহীর যে চূর্ণাঙ্ক করেন, লেণ্টনট  
গবর্ণর তাহা যথার্থ বলিয়া বিশ্বাস করেন  
না। এই কালীসাহী হরকরার পত্র প্রেরকের  
নামে মিথ্যা প্রকাশকারী বলিয়া অভিযো  
গ করিয়াছেন। তত্বতা অন্যতর অধ্য

কিন্তু সাহেবের সহিত কালীসাহীর  
সবিশেষ প্রণয় ছিল এবং কিন্ড সাহেব  
যথাবিধি স্বকর্তব্য কর্তব্য সম্পন্ন করিতে  
না বলিয়া তাঁহাকে স্থানান্তরিত করা হই  
তেছে। যদি একপ হইল, তবে কেন আর  
হরকরার পত্র প্রেরকের নামে মোকদ্দমা  
চলে? তাহার দ্বারা গবর্ণমেন্ট উল্লিখিত  
অত্যাচারের বিষয় জানিতে পারিয়াছেন।  
যখন অন্য অন্য আমলায় অত্যাচার বি  
ষয়ে সন্দেহ রহিতেছে না এবং কালী সা  
হীর সহিত কীলড সাহেবের ঘনিষ্ঠতার  
বিষয় সন্মান হইয়াছে, বিশেষতঃ কীল  
ডকে স্থানান্তরিত করা হইতেছে, তখন  
যে কীলড ও কালীসাহী সংক্রান্ত হরক  
রার পত্র প্রেরকের বাক্য সম্পূর্ণ অলীক,  
তাহা কিরূপে প্রমাণ হইতে পারে?  
বেখানে এক সন্দেহ, সেখানে দণ্ড বিধান  
কোন ক্রমেই যুক্তি সিদ্ধ হয় না। একপ  
স্থলে দণ্ড বিধান হইলে আর কেহ অন্য  
র অত্যাচারের বিষয় রাজপুরুষদিগের গো  
চর করিতে সাহসী হইবে না। অন্যের  
অত্যাচারের বিষয় অপ্রকাশিত থাকুক, গ  
বর্ণমেন্টের কর্তব্য একপ অভিপ্রায় নহে।

পূর্বাগর পয়ালোচনা করিয়া কোন ক  
মেই আমাদিগের একপ বোধ হইতেছে  
যা যে কালীসাহী ও কীলডের বিষয়ে হব  
কর'র পত্র প্রেরক যে কিছু লিখিয়াছেন,  
সে অনুসরণ বিবেচ্য মূলক।

— — —

ইংলণ্ডীয় সচিব বাগ'সাহার।

পাঠকবর্গের স্মরণ থাকিতে পারে  
পূর্বে উল্লেখ করা গিয়াছে ইংলণ্ডীয় সচ  
সভা ভারতবর্ষের রাজস্ব হইতে লোভিত  
সমুদ্রের টেলিগ্রাফ কোম্পানিকে দ্ব্যয় দি  
বার আজ্ঞা করিয়াছেন। বিশেষ করিয়া  
বলিয়া না দিলেও বিচক্ষণ ব্যক্তি নাহেই  
বুঝিতে পারিবেন লোভিত সমুদ্রের টেলি  
গ্রাফ ইংলণ্ডেরই সবিশেষ উপকারের জন্য  
হইয়াছে। মহাসভা কি হেতুবাদে এদে  
শীয় রাজস্বের উপরে হস্তার্পণ করেন  
তাঁহারা কি আমাদিগের অর্থসম্বন্ধ ও  
অসম্বন্ধিত দায়ী? ইংলণ্ডের রাজস্বের  
র কণের দায়ী হইলেন না। মহাসভা  
দায়ী নহেন, তবে কি যুক্তিতে তাঁহারা  
আমাদিগের বয়ের উপর হস্তার্পণ করেন?  
তাঁহারা আমাদিগের অসম্বন্ধিত ১৪০০০ সেন  
নার বেতন লইতেছেন, তাঁহাদিগের অনেক  
কর্মচারিও আমাদিগের নিকট হইতে  
বেতন পাইতেছেন, তাহাও যথেষ্ট হইল  
না! মহাসভা ও ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট এক  
নে যথেষ্টতা পূর্বক আমাদিগের টাকা ব্যয়  
করিতে লাগিলেন।

আমরা এদেশের প্রতিনিধিস্বরূপ হ  
ইয়া স্পষ্টাতিধানে ইহার প্রতিবাদ কবি  
তেছি। সভা বটে ভারতবর্ষ ইংলণ্ডের অ  
ধীনস্থ; একপ কানাডা ও অস্ট্রেলিয়াও  
ইংলণ্ডের প্রভুত্ব স্বীকার করে। কিন্তু  
মহাসভা অথবা ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কখন  
কি তৎসং গবর্ণমেন্টের অসম্বন্ধিত তত্ত্ব  
রাজস্ব ব্যয় করিতে পারেন? কত রেজি  
ন্ট ইংলণ্ডে থাকিয়া কানাডা বা অস্ট্রেলিয়া  
অথবা রেপ'কলনি হইতে বেতন পাইতে

ছে, যদি তাহা না হয় তবে ভারতবর্ষ কি  
অন্য অন্যায় সহ্য করিবেন?

আমরা একদেশীয় ও ইউরোপীয়  
একলকে অনুরোধ করিতেছি, তাঁহারা সর  
চারলস উডের অনুমত মহীমুরের টাকার  
নাম এই নামের প্রতিবাদ করুন। তাঁহারা  
এর প্রমাণ করিতেছেন, এবিষয়ে মনোযোগ  
দাও হইলে তাঁহাদিগের দশবৎসর অন্তর  
যুতন প্রমাণ করতঃ বহন করিতে হইবে  
সন্দেহ নাই। তাঁহারা একত্রিত হইয়া কত  
ক বক্তৃতা ইংলণ্ডীয় মহাসভার প্রতি  
নিধি করিবার চেষ্টা করুন। যখন ইংলণ্ডীয়  
গবর্ণমেন্ট ও মহাসভা এদেশের রাজস্বের  
র ও রাজস্বের উপরে হস্তার্পণ করিতেছেন,  
তখন প্রথম আমাদিগের কয়েক জন প্রতি  
নিধি থাক 'নতঃ' আবশ্যক। আজ যেন  
অল্প টাকা দেওয়া হইতেছে, কিন্তু কোন  
ব্যক্তি বলিতে পারেন যে পাবন্যাধিপতি  
র সহিত যুদ্ধ উপস্থিত হইলে মহাসভা  
তাহার সমুদয় বাব আমাদিগকে দিতে  
বলিবেন না। এই সময়ে সতর্কতা হইলে  
শেষে পরিতাপ করিতে হইবে।

ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট আমাদিগের এ  
প্রার্থনা অগ্রাহ্য করিতে পারিবেন না।  
আমেরিকার এইরূপ প্রার্থনা গ্রাহ্য না  
করিয়া তদধিকার হইতে বঞ্চিত হইয়া  
ছেন।

বিদ্যালয়

তিন প্রেসিডেন্সিতে তিনটি বিশ্ববি  
দ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। তন্মধ্যে কলি  
কাতা বিশ্ববিদ্যালয়ই সর্ব প্রাধান্য লাভ করি  
য়াছে। এতি বৎসর উপাধিধারিদিগের  
সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে। ইহা দ্বারা দেশে  
র যে মহোপকার লভ হইবে তাহা  
বিলক্ষণ বোধ হইতেছে। কিন্তু এ বিশ্ব  
বিদ্যালয়টিরও সর্বব্যয় পূর্ণত প্রাপ্ত হয়  
নাই। কয়েকটা বিষয়ের অসম্ভাব আছে।  
সেই অসম্ভাবগুলি পরিপূর্ণিত না হইলে

ইউরোপীয় বিশ্ববিদ্যালয়ের ন্যায় ইহা কলোপখারী ও লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ হইবে না। বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রথমতঃ স্বতন্ত্র বাটী নাই। ইহার মহাসভা কেবল উপাধিষ্ট প্রদান করেন, কিন্তু ছাত্রাদিগের শিক্ষা বিষয়ে সমর্থিক সহায়তা করিতে পারেন না। ইউরোপ ও আমেরিকার বিশ্ববিদ্যালয়ের ন্যায় ইহার স্বতন্ত্র নিয়োজিত অধ্যাপক নাই। কলতঃ আমাদিগের এই বিশ্ববিদ্যালয় স্বার্থ বিদ্যালয় বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে না। এই অভাব গুলি দূর করিবার অভিপ্রায়ে সম্প্রতি ছুইবার মহা সভার অধিবেশন হয়। সভাপতি গণ্ডেশ্বরী বাবু আপনাদিগের মত ভারতবর্ষীয় গবর্ণর জেনারেলের গোচর করিয়াছেন। অতিসম্মিত স্তম্ভাবতীর বর প্রার্থনা করা হয় নাই বটে কিন্তু ক্রমে অতিসম্মিত বিষয় গুলি সুসিক্ত হইবে তাহার সম্ভাবনা আছে।

সভা প্রথমতঃ বিশ্ববিদ্যালয়ের নিমিত্ত একটি স্বতন্ত্র বাটী প্রস্তুত করিবার অনুমোদন করিয়াছেন। ইহা বাঙ্গালি পণ্ডিতে সংস্থাপিত হইবে। ইহার নিমিত্ত প্রায় তিন বিঘা ভূমি লওয়া হইবে। এক ভূমি লইবার ভাষণে এই প্রয়োজন হইলে বাটী বৃদ্ধি করা যাইতে পারে। এই বাটীতে সভার অধিবেশন, উপদেশ দান, পরীক্ষা প্রভৃতি হইবে। কিন্তু বিশ্ববিদ্যালয়ের সাধারণ পরীক্ষা এই বাটীতে হইবে না। দ্বিতীয়তঃ প্রতি বৎসর মিনি বি. এ. জে. গির মধ্যে প্রথম হইবেন তাঁহাকে ৪০ টাকা মাসিক ছাত্রবৃত্তি দেওয়া হইবে। এম. এ. উপাধি পাইলে ৫০০ টাকা দেওয়া হইবে। ডাক্তার ডক, স্নাতক বিশপ প্রভৃতি কয়েক জন বিশ্ববিদ্যালয়ে অধ্যাপক নিয়োগের প্রস্তাব করেন। কিন্তু বীড়ন সাহেব, আরজিন সাহেব প্রভৃতি কয়েক জন ইহার বিরোধী হওয়াতে শেষে স্থির হইয়াছে, যদি একজনীয় কোন ধনবান ব্যক্তি অথবা

অধ্যাপক নিয়োগের ব্যয় করেন, গবর্ণরজেনারেল তাহাতে অতিবন্ধকতাচরণ করিবে না। এই সমস্ত অধ্যাপক অন্য কোন বিদ্যালয়ে অধ্যাপনা করিতে পারিবেন না। বিশ্ববিদ্যালয়ের শাখা কালেজ ও অন্যান্য বিদ্যালয়ের ছাত্রগণ নিম্নমিত-বেতন দিয়া উচ্চ শিক্ষার উপদেশ গ্রহণ করিবেন। আপাততঃ গবর্ণর জেনারেল শিক্ষা দিবার নিমিত্ত এক জন অধ্যাপক নিয়োগের প্রস্তাব করা

সভা যে যে প্রার্থনা করিয়াছেন সে সমুদায় গুলি সম্ভব। কিন্তু আমবা স্থপিত হইতেছি অধ্যাপক নিয়োগের বিষয়ে তাঁহাদিগের মত ভেদ হইয়াছে। স্বতন্ত্র অধ্যাপক নিয়োজিত না হইলে বিশ্ববিদ্যালয়ের যথোচিত পৌরব থাকে সম্ভাবিত নহে। অতঃপর কোন বিদ্যালয়েই ধর্ম্মনীতির যথাপদ্ধতি শিক্ষা দেওয়া হয় না। আপাততঃ অতঃপর ধর্ম্মনীতির এক জন উপদেশক নিয়োজিত করা অতিশয় আবশ্যক। বিদ্যার্হিগণ যাচাতে কেবল বুদ্ধি বৃত্তির চালনা হয় একপু শিক্ষাই পাইতেছেন। অনেক একপু শ্রদ্ধা করিতেছেন ধর্ম্মনীতির অধ্যাপক নিয়োগ দ্বিগীকৃত হইলে মিসনরি সম্প্রদায়ের অনাথ বক্তৃতি নিঃসন্দেহ ভাষণে প্রতিষ্ঠিত হইবেন। ইহাতে একজনীয়ের বিরুদ্ধ হইতে পারেন। মিসনরি অথবা বাইবেলের নামে শত্রু হওয়া বিধেয় নহে। বৃহৎ ধর্ম্মাবলম্বী করিবার উদ্দেশ্যে বাইবেলের অধ্যাপনা অনায়াস বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। কিন্তু ধর্ম্মনীতি সংক্রান্ত শিক্ষা দিবার অভিপ্রায়ে বাইবেল হইতে কিছু গ্রহণ করিলে বোধ হইতে পারে না।

একজন একজনীয় ধর্ম্মী ব্যক্তিদ্বিগের নিকটে, আমাদিগের অনুরোধ এই অনেক গদায় ঘাট ও কানীতে মন্দির প্রভৃতিতে বিত্তর অর্থ্যব্যয় করেন, কিন্তু একপু এক অধিবাসন মন্দির স্থাপন করিবার উপায়

হইয়াছে। এই সময়ে করিয়া অধিবাসন ইউরোপের অনেক বিদ্যালয়ে বিষয় বিশেষে র যাবতীয় ব্যয় প্রদান দিন এই সোমপ্রকাশে কি কের ১৫ লক্ষ টাকা দানে ত হইয়াছে। এতদ্বিনীত কি এ বিষয়ে যত্নবান হইবে

শ্রুতি  
মন্দির  
বিশ্ববি  
প্রাণে  
এ  
স্থি  
কানি  
কেরা

৬২

স্থপিত দলে হিন্দুধর্ম্ম  
কত দূর প্রভু?

এক জন ব্রাহ্ম আপনায় মনে ঠাত প্রকাশ করিয়া আমাদিগের নিক এক ধানি পত্র প্রেরণ করিয়াছেন। যখন স্থানে একটি দৃষ্ট হইবে। পত্র পাঠ করিলে কেবল যে সাধুশীল গুলি কিন্তু দলের মনের ভাব অবগত হওয়া যায় একপ নহে, একপে স্থপিত দ হিন্দুধর্ম্মের কত দূর প্রভু আছে। তাহ বিশেষরূপে জানিতে পারা যায়।

একপে অনেক লৌকিক ব্রহ্মচারী বাত্র। লৌকিক ব্রহ্মা করিতে গিয়া না পরতা বিসর্জন করিতে হইক, আপাদিগের বেকপ সংস্কার ও বিশ্বাস, তাহা বিপরীত আচরণ করিতে হইক এবং তাহা হিত জ্ঞানে জলাঞ্জলি দিতে হইক তাঁহারা কিছুতেই পরাঙ্মুখ নহেন। বহু হারা এই সকলে জলাঞ্জলি দিয়া নটের ন্যায় ব্যবহার করিতে না পারেন, তাঁহাদিগেরই জিন বিপদ; তাহাদিগের কটোর পরিসীমা থাকে না। আমাদিগের সাধু শীল অকপটচিত্ত পত্রপ্রেরক এই ১৭৭ দে পাড়িয়াছেন।

বৈব্যাধনন ব্যক্তিরকে আপাততঃ এই বিপদ হইতে উদ্ধার হইবার উপায় কর নাই। যে কারণে একপ ঘটনা হইতেছে, তাহা দিচ্চা করিয়া বৈব্যাধনন ২ দিচ্চা হইবে। পত্রপ্রেরক স্বয়ংই কহি-



হেন, তাঁহার অসুখের  
 কারণ ধার্মিক কহিতেছি,  
 ইংরাজী শিক্ষার কারণ। এ দেশে  
 ধর্ম ও আচার ব্যবহার  
 নাসিরাছে, ইংরাজী শি-  
 ক্রাই সম্পূর্ণ বিরোধিতা।  
 শিক্ষা করেন, তাহাদি-  
 গের সর্বস্বার্থে অজ্ঞানতা ও অ-  
 ন্য প্রভৃতি উপেক্ষা করে।  
 দুটি বিরুদ্ধ বিষয়ের একত্র  
 আছে, তখন সেই বিরুদ্ধ বিষয়  
 য পক্ষেই অসুখিত হইবার  
 সম্ভাবনা। যে পক্ষ হীনবল, তাহার  
 ক্ষতি হইবে। ইংরাজী এ পর্যন্ত এ দেশে  
 ইংরাজী শিক্ষা করিয়াছেন ও কহিতে  
 হইয়াছে। তাহার দ্বারা দুটি কারণে অপর পক্ষের  
 ক্ষতি হইয়াছে। এক, ইংরাজীতে সুশি-  
 ক্ত ও অশিক্ষিত এ উভয়ের গণনা কবি-  
 ত্বের অশিক্ষিতের সংখ্যাই অধিক হইবে।  
 দ্বিতীয়, যাহাতে বিদ্যুৎস্বার্থে দৃঢ়তর বিশ্বাস  
 ধর্মনীতিতে সর্বশেষ অনুরাগ ও সৎ-  
 কাম সাহসাদি আছে, তাহাশিক্ষা হই-  
 তে না। তাহাশিক্ষা হইলে এই অসুখ  
 সংখ্যা সুশিক্ষিত দলই অশিক্ষিত দল দম-  
 ন সমর্থ হইতেন।

কলকাতা উপরিগণিত দুটি কারণ বশতঃ  
 সুশিক্ষিত দল হীনবল হইয়াছেন। চীন  
 দেশের সচরাচর যে গতি হইয়া থাকে, তা-  
 হাই হইয়াছে। সুশিক্ষিতেরা অশিক্ষিত  
 দেশের অনুগত হইয়া আছেন। কাজে কা-  
 র্য হই সুশিক্ষিতদিগকে অশিক্ষিতের ন্যায়  
 ব্যবহার করিতে হইতেছে। যত দিন সুশি-  
 ক্তদের সংখ্যা হ্রাসি অথবা উৎখিত প্র-  
 কারে সুশিক্ষা না হইবে, তত দিন সুশি-  
 ক্তদের লৌকিক কল পরিত্যাগের সম-  
 ভাবনা কি।

এ দেশীয় নব্য সম্প্রদায়ের যে রূপ  
 আছে, তাহার বিপরীত কার্যের সহিত  
 সংঘর্ষ হইতেছে বলিয়া কেবল ধর্ম ও

আচার ব্যবহারাদি বিষয়ে কেন, রাজনীতি  
 সম্বন্ধেও বিলক্ষণ বিরুদ্ধতাব লক্ষিত  
 হইতেছে। ইংরাজী শিক্ষা কহিয়া দিতে  
 হে, বাজার নিকটে সকলেই সমান, গুণই  
 বিশেষকারী, বর্ণ অথবা জাতি ভেদ বিশেষ-  
 কারী নহে। কিন্তু আমাদিগের রাজপুরুষ  
 দিগের নিম্নতমকাল এতদ্বিধ উদ্যোগ ব্যবহার  
 নয়নগোচর হয় না, কার্য কালে অনেকের  
 নিকটে গুণভেদ উপস্থিত হইয়া বর্ণ  
 ভেদ আদৃত হয় আমরা দেখিতে পাই,  
 এতদর্শন অনেকেরই নিত্য অঙ্গ হই-  
 য়া থাকে। উপসংহার স্থলে আমাদিগের  
 বক্তব্য এই, যত দিন উল্লিখিত বিষয়গুলির  
 দোষ সম্পূর্ণরূপে সংশোধিত হইয়া নব্য  
 সম্প্রদায়ের যাবতীয় বিষয়ে শিক্ষানুরূপ স-  
 ম্পর্ক না হইবে, তত দিন নব্য সম্প্রদায়ের  
 সম্পূর্ণরূপে সুখিত হইবার সম্ভাবনা নাই।  
 ততদিন নব্য সম্প্রদায়কে বিরক্ত না হইয়া  
 কাল প্রতীক্ষা করি। যাহাতে এই গুলি  
 সম্পন্ন হয় দৃঢ়প্রতিজ্ঞতা সহকারে সেই  
 চেষ্টা করিতে হইবে। ইংরাজীশিক্ষা  
 আপাততঃ বিড়ম্বনা বোধ হইতেছে বটে,  
 কিন্তু পরিণামে অসুখময় কল এসবকারি-  
 নী হইবে সন্দেহ নাই।

## বিবিধ সংবাদ ।

১০রা আষাঢ় সোমবার ।

লর্ড ক্যানিংয়ের অরণ্য প্রস্তর স্তম্ভের  
 নিমিত্ত চাঁদায় ৪২ ২০ টাকা সংগৃহীত হইয়া  
 গেছে। এ সম্বন্ধেই কি কেবল প্রস্তরময় প্রতি-  
 মূর্তিতে পর্যাবসিত হইবে?

ঢাকা প্রকাশে পুন্ডার এক ব্যক্তি কাছা-  
 দের চাঁদারদের অত্যাচার হুজুগ লিখি-  
 য়াছেন। অনন্ত বাস্তবিক ও বলপূর্বক কাজ  
 করিয়া লইবার প্রথা “জীবন্তি কারীরা”  
 বহু পরিত্যাগ করিবেন।

আমরা গত বারে লিখিয়াছিলাম ইউ-  
 রোপীয় মহলে যেটা হইতেছে, মেস পালকের  
 প্রাণ হস্তা রত্নের অসুখত প্রাণ ক্ষণ না হয়।  
 এবারে বিনিকল প্রদর্শন হইল, ইংরাজী

এই আবেদন কলিতেছেন, যে রত্নের  
 প্রাণ দণ্ড না হইয়া হয় স্বীপান্তর বাসের নতুন  
 ব্যবস্থাবন কারাবাসের আদেশ হয়। উক্ত  
 পত্রের সম্পাদক রত্নের দোষ নথ্য ক'ববার নি-  
 মিত্ত বলেন, বড় টেনসিক পুঙ্ক, মেস পালকে-  
 রা তর প্রদর্শন করাতেই রত্ন ক্রোধে অসুখ  
 হইয়া উদ্ভিগের এক ব্যক্তির প্রাণ সং-  
 রক্ষিত। অন্ত লোক কি ক্রোধেই রিপূ-  
 কন্য হইত না, ইটগা সুস্থিতিতে প্রাণি হস্তা  
 নহে।

সংবাদ। মোকদ্দেমার এক জন পত্রপ্রেরক  
 নানা সাহেব ও তাহার জাতার বিষয়ে এক  
 রূপ লিখিয়াছেন — “বাখি (পত্রপ্রেরক)  
 ১১৫৬ নংক যখন বাজারকো (নানা সাহেব  
 কে) দেখি, তখন তাহার বয়স প্রায় ২১ ব-  
 সস, প্রায় ৫ ফীট ১১ ইঞ্চি লম্বা, গোরু  
 বলাহু, খোঁরাল চোখ, গাল ও চোখ চ-  
 এবং তাহার বর্ণ বিস্ময়জনক। নানা সাহেব  
 র মূর্তি তখন যে দৃশ্যকে যত্নে বহুসংখ্য  
 ত্রি নানা সাহেবের বহু প্রাণি হয় তথাপি  
 তাহাকে ক্ষমাতে চিনিয়া লওয়া যায়। ১১  
 হাব আতাও এক জন প্রসিদ্ধ লোক। আমি  
 তাহার সহিত সর্বদাই বাস করিতাম, তাহার  
 সহিত কথোপকথন কালে তিনি প্রায়ই এই  
 কথা কলিতেন যে গবর্ণমেন্ট তাহার জাতার  
 প্রতি অন্যায় ব্যবহার করিয়াছেন এবং  
 ব্যক্তিকে পালিশামেন্টে আবেদন করিতে পা-  
 টাইয়া দেওয়া হয়, সে ঠকাইয়াছে। ১২ ডেলভ  
 উইল মর্দাঙ্গিক করাতেই নানা সাহেব বিব-  
 তে প্রবৃত্ত হন।

নবীয়ার প্রসিদ্ধ হসেন সাহেব রেজি-  
 বোটে নিয়োজিত হওয়াতে হিন্দু পোট্র  
 সম্পাদক এই অবসবে নবীয়ার প্রজ্ঞা-  
 তাহার নিকটে হস্তান্তর ও প্রদানের অ-  
 রোধ করিয়াছেন। আশ্রয় এই অন্তর্যে  
 অন্তর্যোজন করিতেছি।

এক ব্যক্তি রাধপুর শোয়ালি হইতে  
 আমাদিগের নিকটে লিখিয়া পা টিয়াছে  
 “আজি কালি এখানে আত্ম বিবেচনার উপ-  
 পুন্ডিস বাটেলিয়ানদিগের দোষা, দেখিতে  
 ছি, উহার আত্ম লইয়া দুলা হয় না, মু-  
 চাছিলে পক্ষ করিতে যায়। ওয়াট  
 পুন্ডিস

উল্লিখিত হইয়া উল্লিখিত হইয়াছে। \* পুথিসের লোক  
না হইলে অন্তের উপরে আর কে দৌরাগত  
করিবে।

উক্ত পত্রপ্রেরক আশ্রয় বলেন এ একাধিকার  
( রামপুর-বোয়ালিয়ার ) হুতন কালেই  
ঐযুত সমরলাল সাহেব পুর্নকার অনেক নি  
য়ে পরিবর্তন করিতেছেন। তিনি বিলিয়ার্ড  
করে কালচালন করেন না এবং বৃকক্ষার যু-  
গে আর পেয়ারের দ্বারা লিখান না। কয়েক  
জন বৃকক্ষি বিলায় লওয়াও তাহাদিগের  
কর্মে পেয়ারের পরিচিত লোক না রাখিয়া  
কুলের ছাত্রের অধেষণ করেন। ৩. ঐযুত  
করিমদিগের ৫৫০ টনি কেনন?

হিন্দু পেট্রিয়ারের এক জন পত্রপ্রেরক  
আসামের চা কর্তার এক অত্যাচারের বিষয়  
লিখিয়াছেন তাহা অতন করিলে শরীর লোকা-  
কৃত হয় এবং রাজপুত্রদের বিচারের উপর  
অভিমান করে।

কাছারিপুকুরে কুটির অধ্যক্ষ সাহেব দ্বা-  
রাসাধে নামে এক জন দুহরিকে একদিন  
কথা কহিয়াছিলেন, পুনঃ পুনঃ এইরূপ ক  
হাতে সে কহিল এপ্রকার করা অন্যায়, যদি  
বান অপরাধ হইয়া থাকে চাং অধ্যক্ষকে জা  
ত করুন। সাহেব এপ্রকার কথা আরো কহু ক  
লেন। দুহারি মন্য করিতে না পারিয়া অধ্য  
ক্ষকে জাত করিতে যাওয়া তাহা হলেন, সাহেব তে  
করা দুপিত হইয়া থাবরা আনাটর, ঘটি দ্বারা  
ধাক্কন করেন এবং আপন হুতনের দ্বারা হুত  
কারিয়া থাবরা অধ্যক্ষের নিগটে লটকা যান সে  
হানে ঘাই। বান কামে অধ্যক্ষকে কিকহিয়া  
নরায় প্রত্যাগমন করিয়া সমস্ত রক্তনী শুদা  
কছু করিয়া রাখেন। পর দিন প্রাতঃকালে  
ঠার সকল লোকের সম্মুখে আনিয়া হুতলে  
রক্ষণ করিয়া বেত্র দান। পুটে প্রহার করি-  
ত করিতে বেত্র ভগ্ন হইল। পরে এক চাকর  
আনিয়া তাহাও এতাদৃশ প্রহার করিলেন  
পুটে তাহার স্থান রহিল না এবং বরং  
হইলেন। দুহারি এক বারে জানকুন্ত হই-  
সাহেব দুহারির মৃত্যু হইয়াছে আনিয়া কুখি-  
করিতে আজ্ঞা দিলেন, কিন্তু তাহার প্রাণ  
খন বাতির হইয়া নাট, বরকলায়েরা জনসে  
ও বাতাস করিতে করিতে অনেককণের

পর চক্ষু উদ্বীণন করিল। সাহেব বিচারের  
হস্ত হইতে মুক্ত হইবার জন্য ১৫ জন চুর এক  
স্থানে তাহাকে প্রেরণ করিলেন এবং তাহার  
কৃত্য করিলেন স বগী সকল ইতস্ততঃ নি-  
বেগ করিয়া তাঁহার পরিবারগণকে বহিষ্কৃত  
করিয়া দিলেন।

শিব সাগরের ডেপুটি কমিসনর ইহা অব-  
গ করিয়া তাহাকে মুক্ত করিতে আজ্ঞা দিয়া  
আপন সংকারি ফোক সাহেবকে এবিষয়  
অনুসন্ধান করিতে কহিলেন। ফোক সাহেব  
তথায় উপস্থিত হইয়া আসাম কোম্পানির  
অধ্যক্ষকে জিজ্ঞাসা করিলেন (তিনি একজন  
অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট) তিনি কহিলেন একি  
ছুই নয়, দুহারি অজ্ঞাত। প্রকাশ করিয়াছি-  
লেন বলিয়া অল্প শাস্তি প্রদত্ত হইয়াছে এবং  
উহার বাকি আসামে একারণ তথায় প্রেরিত  
হইয়াছে। ইহাও বখাৰ্ব নিবেচনা করিয়া আর  
কোন অনুসন্ধান হইল না। পুলিশ দ্বারা যুক্তি  
প্রাপ্ত হইয়া দুহারি ডেপুটি কমিসনরকে আ-  
পন পিঠ দেখাইয়া সাহেবের নামে নালিশ ক-  
রিল। তাহার পিঠে এক বিস্তৃত চন্দ্র ছিল না।  
সাহেব কোন খীকার করিয়া কহিলেন দুহারি  
প্রথমে আমাকে প্রহার করে এবং আমি তা  
র রক্ষার উহাকে প্রহার করিয়াছি। পাঠকগণ  
সাহেবের কি শাস্তি হইবে বিবেচনা করেন?  
এতাদৃশ গুরুতর দোষে গুরুতর শাস্তি  
সন্দেহ কি? বিচারপতি অনেক রূপ ভাবিয়া  
কির করিলেন এদেশীয়দের পিঠেই চ-  
ন্দ্রের কতট মূল হইবে তদ্ব্যন্থ সংশয়ঃ  
উক্ত জরিমানা করিলেন।

৪ঠা আশ্বিন: বঙ্গবদর।

ভারত বঙ্গীয় গবর্নমেন্টে দ নায়ক রত ব  
ধের আশ্রয় বাণ ও লোক সংখ্যা নিয়ন্ত্রিত  
জন্য এক সভা সংস্থাপন করিয়াছেন। গবর্ন  
জেনারেলের ইচ্ছা এই যে কোন কোন স্থাধীন  
সভা বিষয় বিশেষতঃ তার গ্রহণ করেন। এ  
সিদ্ধান্তিক সোসাইটি, বলিক সভা প্রভৃতি এ-  
বিষয়ে বিশেষ সহায়তা কবিত্তে পাবেন।

গবর্নমেন্টে আশ্রয় করিয়াছেন ক'বতবর্ষের  
ও বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার দাবতীয় সভা  
অনুরোধ (দান্যবর) উপাধি পাঠ্যেন।

সকলকে তাহাদিগকে এই উপাধি দ্বারা প  
দি লিখিতে কইবে।

আরাক.৫৭ যেইলের বাঙ্গালী আহার  
ঘটিকা নান্য থাকিত। তদ্বিধিত তদ্ব্যন্থ বনি  
দিগের কষ্ট হওয়াতে ভারতবর্ষীয় গবর্নমে  
বঙ্গদেশের প্রধান কবিসনরের অত্যাচারে  
হাজ নর ঘটক, দ্বাধিবার আজ্ঞা করিয়াছেন

হরকরা সম্প্রদায় বলেন গবর্নমেন্টে আ  
লীয়া আর কয়েক ব্যক্তিকে নবীর তদ্ব্যন্থ  
গমে নিযুক্ত করিবে। ইহা দ্বারা আরোই  
দিগের সবিশেষ উপকার করিবে। ১২

ইংলিসমান সম্প্রদায় বলেন রাজসার  
ইলওরের কার্য শীঘ্র সম্পূর্ণ হইবে। তদ্বিধি  
তদ্ব্যন্থ নদীতে একখানি আলোর আহার  
কয়েকজন আত্মকাতিকে প্রেরণ করা কইবে  
কিন্তু আমরা শুনিতেছি গিরাল্ডি পুল  
গিয়াছে।

পূজার পূর্বে পূর্ন বাঙ্গালার রেটল  
বাঙ্গালী শকট চলিতে পারে। আমরা ২  
জুলাই মাসের আরম্ভে একখানি প  
শকট বাইবে।

আবা বীপের নিকটে বোম্বেটিয়া  
কীর অত্যাচার করিতেছে, কয়েকখানি ওল  
দ্বাজ ও ইংরাজী আহার তাহাদিগের দ  
নার্ণ গমন করিয়াছে।

কিনিক সম্প্রদায় বলেন প্রধানতম  
লত শীঘ্র স্থাপিত হইবে, ১৩। জুলাই অ  
কাণ আরম্ভ হইবার সম্ভবনা আছে।

উক্ত সম্প্রদায় মসিরাবাদ হইতে সংবা  
প্রাপ্ত হইয়াছেন, সম্রাতি মিসরের নিকটে  
কয়েকজন দস্যু ডাক মুঠে ও একজন প্রহরী  
আহত করিয়া পলায়ন করিয়াছে।

ইংলন্ডের সুবিখ্যাত ডাক্তার উল্কে  
হইয়াছে। ইনি পূর্বে এক জন টহ  
ছিলেন কিন্তু খ্রীষ্টীয় ধর্ম অবলম্বন করিয়া  
পৃথিবীর সকল স্থানে উক্ত ধর্ম ঘোষণা ক  
রেন। এজন্য তাহাকে অনেক কষ্ট পাঠি  
হইয়াছিল। পৃথিবী খ্রীষ্টীয়ান মিসনবিদিগে  
নিকটে অনেক বিষয়ে আগ্রহ।

বাঙ্গালী সম্প্রদায় বলেন বীরভূমের এ  
জন ঐহিককারী মসন, ডেপুটি মাজিষ্ট্রে  
তদ্ব্যন্থ এক জন উদ্বীণকে ও এতদেশীয় স



কিনিকের বরিসাফের সংবাদ দাতা  
হেন, তথায় এক গ্রীষ্মত্যা হইয়া গিয়াছে ।  
জচ্ছ রাঘ নামে এক জমিদারসংখান এক  
গিরিহিলেন । ত্রাহে তাহাকে আপন  
ইয়া বাপেণ । সে রক্ষন করিয়া দিত,  
বাহার করিতেন । পরে বাটীর লোকে  
লোযোগ করাতে তাহাকে স্থান শুরে  
। ঐ বেশ্যার এক চাবারের সহিত  
হয় । বাবু তাহা আনিতে পারিয়া  
শ্যাকে বহুতঃ হত্যা করিয়াছেন । বাবু  
তঃ তাহা আপন দোষ স্বীকার করিয়াছেন ।  
এক বাল গুণপুত্র হইতেই মকবলের গ্রীষ্ম  
০ই-১৮৮০ ।

গজা এ বৎসর হাওর ও কুড়ীরের রকি  
হইয়াছে । কয়েক দিবস পূর্বে এক জনকে  
এই বৎসর হাওর ও কুড়ীরের রকি  
এক কল্য একটা হাওর  
এক জনকে হত্যা করিয়াছে ।

গত সোমবার রাতে এলস কুমার ঠাকুরের  
ট একটি বালক কলমগ হইয়া প্রাণত্যাগ  
রাছে ।

এই আবার বুধবার ।

কিনিকের বরিসাফের সংবাদ দাতা  
হেন, তথায় এক গ্রীষ্মত্যা হইয়া গিয়াছে ।  
জচ্ছ রাঘ নামে এক জমিদারসংখান এক  
গিরিহিলেন । ত্রাহে তাহাকে আপন  
ইয়া বাপেণ । সে রক্ষন করিয়া দিত,  
বাহার করিতেন । পরে বাটীর লোকে  
লোযোগ করাতে তাহাকে স্থান শুরে  
। ঐ বেশ্যার এক চাবারের সহিত  
হয় । বাবু তাহা আনিতে পারিয়া  
শ্যাকে বহুতঃ হত্যা করিয়াছেন । বাবু  
তঃ তাহা আপন দোষ স্বীকার করিয়াছেন ।  
এক বাল গুণপুত্র হইতেই মকবলের গ্রীষ্ম  
০ই-১৮৮০ ।

ইংলিসমানের বটকের সংবাদদাতা  
সুন্দর সা নামে বিখ্যাত বিহোদী  
গবর্মেন্টের হস্তে প্রাণ সমর্পণ করিয়াছে ।  
ঐ ব্যক্তি প্রথম হাজারিগানের লে ছিল,  
।রে তাহা ভাঙ্গ করিয়া অনেক সহচর নর্মি  
গাছারে পলায়ন করে পলায়ন করিয়া  
ইয়া পুনরায় বিহোদী গবর্মেন্টের  
বিসমর সাহেবের অগ্রদূতের হস্তে  
১০০ টাকা বারিক ছিলেন ৩০ দিন  
৬৬ । তাহার প্রাত্যহিক সেট ১৭০ টাকা  
এরা হইবে ।

একপে আবার শ্রমী বাইতে ১২ ম  
সাদে মেজর বিহার চুরাফা দি জান ১৮৮০  
খিলাছেন । দিলি আগম নাম পাবিত্ত করিয়া  
বট নামে এক সাহেবের বাড়িতে ছিল ।  
হাকে কলিকাতার আনয়ন করা হইয়াছে  
১৯ সিস্ট সাহেব তাহাকে শ্রমী দাতা  
খিলাছেন বলিয়া হুত হইয়াছেন । তিনি

কহেন এবিষয় কিছুই জানেন না । একপে  
আমিন দিয়া হুত হইয়াছেন কিন্তু তাঁ- ১০  
বিচার হইবে । মকদমা আতি শীঘ্র আরম্ভ  
হইবে ।

হরকরা সম্পাদক কহেন কাছাড়ের অধ্য  
ক গবর্মেন্টে লিখিয়াছেন এবার ও প্রদেশ  
হইতে দশ লক্ষ টাকার চা রপ্তানি হইবে এবং  
আর বৎসর উহার বিত্ত হইবার সম্ভাবনা  
মন্তুরের জন্য কঠ হইতেছে, অমেকে পলায়  
ন করিয়াছে । কিন্তু কেহ কাছাকে ধরিয়া আ-  
নিলে ৫ টাকা পুরস্কার পাইবে এই প্রচার ক-  
রিয়া দেওয়াতে একপে অনেকে হুত হইয়া  
আসিতেছে । আমেরিকার দক্ষিণ বিভাগের  
তুল উৎপাদনকারিদিগের প্রথা অলঙ্ঘন  
করিলে অধিক চা অধিতে পারে ॥ ।

ইকু সম্পাদক আরো কহেন ভারত-  
বর্ষীয় গবর্মেন্টে নিয়মিত তিনটি বাট  
নির্মাণ জন্য ৫০ লক্ষ টাকা মন্তুর করিয়াছেন ।  
রাইটার্সজিডিং ( কোম্পানির বারিক ) পুন  
নির্মাণ

পোর্ট আকিস নির্মাণ জন্য ৮০০০০  
প্রেসিডেন্সি কালেক নির্মাণ জন্য ৬৫০০০

একুনে ১০,০০০০০  
লাহোর জেনিকেল সম্পাদক কহেন তথায়  
ভয়ানক বড় রুটি হইয়া গিয়াছে । আর গ্রীষ্ম  
নিবন্ধন কোন কঠ নাই ।

গত সোমবার লেপ্টেনেন্ট গবর্নর মা  
আসা কালেক দর্শন করিতে গিয়াছিলেন ।  
বিদ্যাবিষয়ে মুসলমান দিগের উৎসাহ দিতি  
জন্য তিনি অপ্রিয় গল্পবান আছেন, তাহা  
যদি ব্যক্ত করিয়াছেন । যাঁহা জনন মুসল  
মনিগের বিদ্যাত্যাসে মনোযোগ হওয়া বড়  
সম্ভব কথা নহে । বীভন সাহেবের আগমন  
জন্য মাদ্রাসা কালেক ও কলিকাতা উকুল ১ দিন  
সম্মত হইয়াছিল । বীভন সাহেবের অন্যান্য নি  
সংবাদেও গবর্ন করা কর্তব্য ।

৩ই আশাঢ় হুত্পতিবার ।

এক ভাগা ব্যক্তি কলিকাতা নান সা-  
বলিগ বড় হয়, সে গত কল্য কিবর  
কলিকাতা পলায়ন করিয়াছে । গবর্মেন্টে-  
সেস সাহেবের করণার তাহা মন্তুর  
কলিকাতা করিয়াছেন সকলসাধারণে পাছে  
কলিকাতা তাহাকে দিগ পলায়ন করিয়াছেন ।

হইয়াছে, ত্রিমিত এই পলায়ন হইতেছে চা-  
রতবর্ষীয় গবর্মেন্টকে কেই এত নীচ দাবেন  
না । সে ব্যক্তির কারাগারে রাখা কঠ ভোগ  
দেওয়াতেই প্রাণ বিয়োগ হইয়াছে একথা স-  
কলসাধারণকে ও ভারতবর্ষীয় গবর্মেন্টকে স্বী-  
কার করিতে হইবে ।

ইংলণ্ড হইতে এক একটা সৈন্য আনয়ন  
করিতে বিত্তর ব্যয় হয় । গবর্মেন্টে ত্রিমিত  
মনস্ত করিয়াছেন যে সৈন্য সেনার কার্যের স-  
ময় উত্তীর্ণ হইবে তাহার যদি পুনর্বার সেনা  
দলে প্রবেশ করিতে চায় নিম্ন লিখিত টাকা  
পুরস্কার স্বরূপ দিয়া নিয়োজিত করা হইবে ।

|                        |        |
|------------------------|--------|
| হা আর্টিলেরি . . . . . | ১৩৬৮/৫ |
| রয়াল ই . . . . .      | ১২৫৮   |
| ইঞ্জিনিয়ার . . . . .  | ১৪৫৮   |
| অধারোদী . . . . .      | ১৫৫৮/৫ |
| পদাতিক . . . . .       | ১১২৫১৫ |

ইহা দারা অনেক ব্যয় সংক্ষেপ হইবে ও উ  
ত্তম সৈন্য পাওয়া যাইবে ।

হারবি সাহেব এতিনিধি আর্কাউন্টান্তে  
জেনরল হইতেছেন ; তিনি একপে ৩০০০  
টাকা পাইতেছেন তদতিরিক্ত আর ৫০০  
টাকা পাইবেন । বেংগলের পোর্ট নাইট  
জেনরল ১৫৮০ সৈন্য পাইতেন ভারতবর্ষীয়  
গবর্মেন্টে একপে তাহাকে ২০০০ টাকা  
দিবেন । সিভিল ইন্সপেক্টর কমিসন ব্যয় সংক্ষেপ  
করিয়াছিলেন একপে আবার সর্ক স্থলে  
হইতে পলি ।

হরকরা সম্পাদক কহেন এতদেশীয় প্রায়  
এক সহস্র লোক মেড পালেকের হত্যাকারী র  
য়ের ক্ষমায় শুদ্ধ ইউরোপীয় গণের সহিত  
আবেদন করিয়াছেন । আবেদন প্রথমতঃ বী  
ভেন সাহেবের নিকটে প্রেরণ করা হয়, কিন্তু  
হত্যা তাহার সীমার মধ্যে হয় নাই বলিয়া  
তাহা গবর্মেন্ট জেনরলের নিকটে প্রেরণ করা  
হইয়াছে । সম্পাদক বলেন এতদেশীয়েরা এই  
আবেদনে স্বাক্ষর করিতে চেষ্টা করিলে স  
হিত এতদেশীয়দিগের বিশেষ সম্ভাব জন্মিলে ।  
ইউরোপীয়েরা যা চাচ্চা তাই করিলেও এদে-  
শীয়েরা যদি কিছু না বলিয়া চল করিয়া থাকেন  
তাহা হইলেই সম্ভাব্য এই সম্ভাব সর্কর হ  
না বলিয়াই মধ্যে মধ্যে বিবাদ বাধে এতদেশীয়  
হে এক সহস্র লোক স্বাক্ষর করিয়াছেন ।

ইউরোপীয়দিগের আকিসের কোম্পানী  
ত ?

সিহুলা হইতে একজন হরকরা গল্পে  
রাছেন তদ্রূপ বলকিরের সেনারা নগরের  
তরে যত্নক চুড়িয়া থাকেন। কারণ

তদ্রূপ লোকেরা বেন বুঝিতে পারে যে  
হাটী হইলে বলকিরেররা উ হাটিককে  
কথাং দণ্ড দিতে পারিবেন। এই সকল  
কোম্পানীবিদ্রোহকে নিমন্ত্রণ করিয়া আনে।

দিল্লীগেজেট সম্পাদক বলেন লাল। জ্যা.  
এসাদ প্রধান সেনাপতির আহ্বোদে তাঁ  
সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছেন। তাঁ  
কে পুনর্বার কমিসরিএটের ভার দেওয়া হ-  
ব। জ্যাতি। এসাদ এ কার্যের বিশেষ উ-  
যুক্ত।

অবোধা গেজেট সম্পাদক বলেন সন্ত-  
এক ব্যক্তি দুর্ভাগ্যবাদ গ্রাম দখল করিতে  
উত্তেজিত এমনত সময়ে সে মৃত হইয়াছে।  
সম্পাদক অগ্রহান করেন সে বিদ্রোহের এক  
ম উদ্যোগী। ইহারাই দিনে যত্ন কর্তন ক-

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন পাটনার  
তপূর্ক কমিসনর টেলর সাহেব (যিনি একপে  
কলের কার্য করিতেছেন) তদ্রূপ প্রধান  
ব 'আমিনের তুচ্ছবিত্ততার বিষয়' গবর্নমেন-  
র গোচর করিয়াছেন।

আগেইয়ের তদ্রূপদিগের সহায়তার  
এ.বাসনগরে ৩৩, ২১৮ টাকা চাঁদা হ  
আছে। এখানেও চাঁদা করা কর্তব্য।

এবংসর ১৯ জন সিভিলিয়ান হইবার  
পরীক্ষা দিবে। ৮ জন ছুডন সিভিলিয়ান  
হইবেন। পরীক্ষার্থিদিগের অধিকাংশ  
ক ৩ ৭মায় পরীক্ষা দিতেছেন। সংস্কৃত  
৭৫ জনে ভারতবর্ষ ত্যাগ করিয়া ইউরোপে  
গিয়ে।

টাইমস এবং ইণ্ডিয়া গুজর টি ও সহারা-  
র তাহার সংবাদ পত্রের প্রস্তাব সকল অ-  
দ করিয়া প্রতিলিপি করিতেছেন। কলিকা-  
র টৈনিক সম্পাদকেরা একত্র না করেন  
ন?

কাল হইতে সংবাদ আসিয়াছে আধীর  
ত নহয় না। হিরাই আক্রমণ না করিয়া

হইবেন না। বোখারার রাজা তাঁহাকে  
সুলতান জায়েগে সহিত সন্ধি করিতে অস-  
ম্মদ করেন, কিন্তু হুজ আধীর তাহাতে অস-  
ম্মদ হইয়াছেন।

চরভদ্রনগরে অত্যাশিও ওলাউঠার খা-  
তি হয় নাই। বিস্তর লোক গ্রাম ত্যাগ করি-  
য়েছে; আনানিগের বাবতীর নগরের মিউ-  
নিসিপাল বন্দোবস্ত ভাল না হইলে এই  
সকল অনিষ্ট সর্বদা ঘটবে।

সম্প্রতি বঙ্গ হইতে মুসলমানদিগের মি-  
কটে যে পত্র আসিয়াছে তাহাতে তদ্রূপ ই-  
মান বলেন গেব্রিএল দুড পৃথিবীতে চারিবার  
আগমন করিবেন। প্রথম আসিবার রাজা  
ও শাসন কর্তার। নিজ নিজ কর্মতা হইতে  
বঞ্চিত হইবেন। এবং সূর্য স্থানে অরাজক ও  
বিশৃঙ্খলা হইবে। দ্বিতীয় বারে মধ্যযুগের  
খাদ্য তিক্ত বোধ হইবে। তৃতীয়বারে সতীত্ব  
ধর্ম পৃথিবী হইতে অন্তর্ভুক্ত হইবে, সকলে  
যথেষ্টাচারী হইবে এবং চতুর্থ বারে পৃথিবী  
উৎসন্ন হইবে। মুসলমানদিগের শুধরিবার  
অনেক বিলম্ব আছে

৭ই আশাঢ় শুক্রবার।

নানাসাহেবের কোমর বন্ধ ৪৭০০০ টাকায়  
বিক্রীত হইয়াছে। সম্ভাব্য দ্রব্য বিক্রয় হটলে  
বিস্তর টাকা লভ্য হইবার সম্ভাবনা আছে।  
চুক্তি দিতা হেতু এই সম্ভাব্য ঐখ্য গেল।

বনিক সম্প্রদায় মাকেটবের অকর্মণ্য  
ছুর্তিকপীড়িত মজুরদিগের সহায়তার জন্য  
চাঁদা গ্রহণ করিবার বিজ্ঞাপন করিয়াছেন।  
এদেশীয় সকলের একিগয়ে সহায়তা করা  
কর্তব্য।

জামালপুর পরগণা রেলওয়ে স্থলিয়াছে।  
তথায় পরীক্ষার জন্য আপাততঃ চর মাসের  
নিমিত্ত একটি ডাকঘর হইয়াছে।

কিনিকের সম্মেলনের সংবাদমাতা ব-  
লেন তদ্রূপ ডেপুটি কমিসনরের যত্নে বাবতীর  
বিদ্রোহীসর্দার আত্ম সমর্পণ করিয়াছেন, এক  
ব্যক্তিমাত্র অনাপিও ইংলণ্ডের অধী-  
নতা স্বীকার করেন নাই। গবর্নমেন্ট ডেপুটি  
কমিসনরকে পুরস্কার দিবে। কথাপ্রসঙ্গ  
ইহার কারণ।

সম্রাটর হিন্দুস্থানী সম্পাদক পুনর্বার ক-  
হিয়াছেন সম্প্রতি বিদ্রোহের যে আশঙ্কা

হইয়াছে তাহার কোন মূল নাই। কলকাতা হিট  
প্রত্নতি তদ্রূপ সম্পাদকেরাও একপে সাক্ষ  
হইয়াছেন।

ইণ্ডিয়ান রিকর্ডার সম্পাদক জন. রডেন  
কমার প্রতিবাদ করিয়াছেন। আকরা সে কথা  
কহিয়াছিলেন তিনি তাহার পোষকতা করিয়া  
বলেন রডেনর কানী হইলে ভারতবর্ষ হিট  
কর্তৃ ইংরেজের। এডমেন্ডসনদিগের গ্রাম বধ  
করিত সাহসী হইবে না।

৮ই আশাঢ় শনিবার।

ইংলণ্ডের রাজ্যান্তিমের দিন বলি-  
রা গত কল্য করেকটি ভোপ হইয়াছে।

সেনাপতি সাউয়ার্স পুনর্বার অস্ত্রধারা  
পর্জতে গমন করিয়াছেন।

গবর্নর জেনেরল জন রডকে কথা কু-  
লেন না। তিনি বিবেচনা করিয়া স্থির করি-  
য়াছেন সে কথার খোঁজ পাওয়া নহে। বোধ  
হয় এইবার 'হঠাৎ হুজুর, সংখ্যা অল্প হই-  
বে। সোমবার তাহার কানী হইবে।

হরকরা সম্পাদক বলেন চুরাখা হিলিট  
দেবরুগড়ে মৃত করিবার সংবাদ গবর্নমেন্টের  
মিকটে আসিবে নাই, কিন্তু তিনি যে ব্যক্তির  
মিকটে সংবাদ পাইয়াছেন তাহা অসত্য হই-  
বার সম্ভাবনা নাই।

হাওড়া হইতে এক জন ইউরোপীয়  
মিক পত্রে লিখিয়াছেন ১৭ই জুন রাষ্ট্র  
এক ব্যক্তি তাহার মালিকে এক ছুরিকা খার  
বধ করিয়াছে। থানা হইতে তাহার খাতি  
অল্প দূর খাজ, তথাপি হত্যাকারী বৃত্ত হ-  
নাই। কি আকেশের বিষয়! প্রথমঃ সকলে  
হই জীবন ও সম্পত্তি বিপুলে পতিত হইবে  
খাকিল। মালির "হঠাৎ ছুরিকাখাত" মনুত

যে যে থানে বঙ্গদেশীয় ব্যাকের শাস  
হইয়াছে, তথায় গবর্নমেন্টের আর বত  
হেজুরি থাকিবে না।

ইংলিস্তান সম্পাদক বলেন গবর্নরজেন  
রল প্রধান সেনাপতিকে কলিকাতার আসি  
স্বাক্ষা করির ছেন। কারণ :

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্নমেন্টের কাগ  
বিক্রীত হইতেছে :—

|                   |          |
|-------------------|----------|
| ৪ টাকার সিফা      | ২০৫৫, ২  |
| ৪ টাকার কোম্পানির | ২৩, ০ ১০ |
| ৫ টাকার এ         | ১০৪ ১১   |
| ৫ টাকার এ         | ১১২ ১১২  |



- ১। দেহদ্রব্য।
- ২। এইটি হিঁড় জায়েল জায়েল-একটি কয়।
- ৩। এই হিঁড় জায়েল জায়েল-একটি কয়।

প্রথম ১৭শি ইউনাইটেড এন্ডেটস্‌ ফর কন্ট্রোল  
যে দেশে দাসত্ব থায। প্রচলিত ছিল, কন্ট্রোল  
প্রচলিত ছিল না। দাসত্ব প্রথা যে প্রতি নিষ্ঠুর  
থ। সোমপ্রকাশ প্রথম, নব সৃষ্টিকে চূর্তের দা-  
শ শৃঙ্খলে বদ্ধ রাখিয়া। ইতর পশুর ন্যায় তা-  
দগকে যদৃচ্ছাক্রমে কল্যাণ ও পণ্য প্রব্যব-  
হার করা যে নিত্যক ভবনীয়—ইহা তৎকা-  
ল জ্ঞানীলোকের পক্ষ বাস্তবিক বৃত্তিতে প-  
্রদর্শন নাই। কি আশ্চর্য্য যে ইউনাইটেড এন্ডেটস্‌  
বালীদা ১৭৭৬ খৃঃ অব্দে পদাধীনতা। নিগড়  
১২ নিক্ষেপ করিয়া স্বাধীনতা। - দেবীর প্রায়  
১২ ইয়াছেন তাঁহানাই আবার লক্ষ্য কাঙ্ক্ষি-  
ত স্বাধীনতা দাসত্ব শৃঙ্খলে বদ্ধ করিয়া রাখিয়া-  
ছেন। সে যাহা, ওয়াশিংটনের নাম দ্বারা ক-  
লে অস্ত্রবাক্য। পলিটিক্স জাত পুরন, যিনি  
দীনতার জন্য প্রাণ পর্যন্ত দান করিয়াছিলে-  
ন, তিনিও স্বীয় জীভ দাসত্বগকে মুক্তি প্রদা-  
ন করিয়াছেন নাই। কিন্তু পরামর্শদাতার উ-  
ক্ত্যক্রমে লোকের জ্ঞানচক্ষু উদ্বীলিত হই-  
তেছে। এবং অতিবকাল মধ্যে যে, আমেরিকা  
দেশের দাসত্ব প্রথা প্রচলন কল মহাকলক অ-  
পনীত হইবে তাহারও সম্ভাবনা হইয়া আসি-  
তেছে।

অতি প্রাচীন কাল অবধি সংসার মধ্যে দা-  
সত্বের এখ প্রচলিত আছে। ভারতবর্ষ, গ্রীস,  
রোম এই সমস্ত প্রধান প্রধান দেশেও এই প্র-  
থা প্রচলিত ছিল। যুদ্ধে যে ব্যক্তি পরাজিত হ-  
ইত সেই ব্যক্তিকেই পুরুষাত্মকে দাসত্ব স্বী-  
কার করিতে হইত। কখনও যে অধমর্ণ কণ প-  
রিণোদিত করিতে অসমর্থ হইত তাহাকেও দেয়  
পরিণোদিত স্বরূপ দাসত্ব স্বীকার করিতে হইত।  
কখন বা অর্থের প্রয়োজন বশতঃ কেহও পুত্র  
প্রভৃতি বিক্রয় করিত এবং এই বিক্রীত ব্য-  
ক্তির ক্ষেত্রে নিকট চিরকাল পুত্রপৌত্রাদি  
কাল। সমস্ত শৃঙ্খলে বদ্ধ হইত। এক্ষু মনে করি-  
লে দাসত্বগকে বিক্রয় করিতে পারিতেন। এমন  
কি দাসকে হত্যা করিলেও গাভুর বিশেষ দণ্ড  
হইত না। কলতঃ আমরা গো, অশ্ব, মেঘ প্রভৃ-  
তি পশুপক্ষের প্রতি বেক্ষা ব্যবহার করিয়া  
থাকি, পূর্জতন জাতিদের মধ্যে দাসের  
উপেক্ষাও নিকটপক্ষে ব্যবহৃত হইত। এই সমস্ত  
জাতির কি স্ব স্ব নীতি, কি বিদেশীয়, সকলকেই  
এক করিতে পারিতেন, কিন্তু আমেরিকার প্রচ-  
লিত দাসত্ব সে একান্ত নহে। এখানে আমেরিকীয়  
লোক কখন দাসত্বের দাস। অজানা আফ্রিকা  
বাসিন। ইহাদের দাসত্ব কার্য করিয়া থাকে  
১১ - নিম্নোক্তদ্বারা আমেরিকানরা দাস ব্যব-

হার করিতে পারেন না, অর্থাৎ উহার দাসত্ব  
আফ্রিকা হইতে দাস আনয়ন করিতে পারেন  
না। কিন্তু সুকারিত ভাবে আফ্রিকা ও অন্যান্য  
দেশ হইতে দাস আনয়ন করিয়া থাকেন। বৎ-  
সত বৎসর প্রায় ১৫ কি ১৬ হাজার দাস সুকা-  
রিতভাবে ইউনাইটেড এন্ডেটস্‌ মধ্যে আনীত  
হয় কিন্তু তাহাতেও আমেরিকা নাসীদিশের কর্ম  
সম্পন্ন হইয়া উঠে না। সুতরাং বাহ্যতে দাসদি-  
গের বংশ হ্রাস হয়, তদ্বিষয়ে তাঁহারা অত্যন্ত  
ব্যস্ত থাকেন। তাজিনিয়া প্রভৃতি নরেকট  
প্রদেশের লোক নিয়তই দাসবংশ হ্রাস করাই  
বার নিমিত্ত নিযুক্ত আছেন। এই মহাপুরুষদের  
দাসবংশ হ্রাস করানই বাবদ্য। তাঁহারা বস-  
পূর্জক স্ত্রী পুরুষের মিলন করিয়া দিয়া থাকেন  
এবং অল্পকাল মধ্যে, যদি কোন দম্পতীর বংশ  
হ্রাস সম্ভাবনা না দেখেন, তবে তাহাদিগকে  
পৃথক করিয়া নৃতন স্ত্রী ও পুরুষের সহিত উচ্চ  
দেব মিলন করাইয়া দেন।

ইহাব বেশ আশ্চর্য্য বাদে হইবে

### ১৯ এ মে পর্যন্তের ইউরোপীয় সমাচার।

আমেরিকার দক্ষিণ বিভাগের লোকেরা  
নিউ অবলিয়াক ও ইয়কটাইন বিভাগে কার-  
রাতে, উচ্চ একগুণে গবর্ণমেন্টের হস্তগত হইয়াছে  
বিজোহীরা। পলায়ন করিলে গবর্ণমেন্টের সে-  
নারা তাহাদিগের পশ্চাৎ ধাবমান হইয়াছিল।  
যুদ্ধ জাহাজ সকল বিচরণের ১৫ জোখ দ্বারা র-  
হিয়াছে। উত্তর পক্ষে অনেক সেনা আছে এবং  
এক তুফান যুদ্ধ হইবার বিলম্ব সম্ভাবনা। সেনা  
পতি বরগার্ড কবিত্ব হইতে গেমস্‌কিমে প্রস্থান ক-  
রিয়াছেন, তথায় দ্বন্দ্ব যুদ্ধ হইবে বোধ হই-  
তেছে। মেকন দুর্গ গবর্ণমেন্টের হস্তগত হইয়া-  
ছে। সেনাপতি লিঙ্কলন নিউ অবলিয়াক সাবেন  
নিউবর্গ বকোঁট ও কারনান্ডক অবরোধ মুক্ত  
করিবার প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন। করানীল রেনী  
কার্য ব্যতীত ইয়কটাইনে বাক্য করিয়াছেন।

বোরাই, মাজাজ ও বন্দোদীয় চিহ্নিত লিবি-  
স কর্তৃক বিবিধের আবেদন পত্র কলকাতা হাউসে  
অর্পিত হইয়াছে।

মেজিকোব রাজপ্রতিনিধিদের সহিত সন্ধি  
কর নাই। সেনাপতি প্রায় ক্রিটবার্ডে প্রেরিত  
হইয়াছেন।

করাশিদেরা নীচ যুদ্ধ আরম্ভ করিবে প্রত্ন  
সম্ভাবনা ছিল। জোয়ারিজ গবর্ণমেন্ট ইংরাজ  
ও স্পেনদেশীয়দের সহিত সন্ধি করিতে ইচ্ছা  
ও করাশিদেরা অতিবিক্রম করিয়াছে।

বেলজিয়মের রাজার একগুণে আর বিপত্তি  
নাই।

খ্রিস্ট নেপোলিয়ান সেন্সনে উপস্থিত হই-  
য়াছেন। মনিটর সম্পাদক করেন তিনি কো  
বাজকার্যের অগ্রদূত তথায় দাস নাই।

হোচাইট সাহেব বর্জমান চীন দেশের আ-  
হার বিষয়ে এক বক্তৃতা করিবেন, বিজ্ঞাপন  
করিয়াছেন।

হর্ষগার্ড, ক্যাপ্টেন রবটসনের বিষয় বিচার-  
করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন বেকর্লে বেনজি  
সাহেব আগন কর্ম বিক্রয় কিং অর্ডেক বেডনে  
পরিভ্রমণ করিতে পারিবেন।

সিলিলির মোকদ্দম অতিশয় আনন্দ প্রদর্শন  
পূর্জক ইটালির রাজাকে সম্মানে গ্রহণ করি-  
য়াছে।

নেপোলসহিত ইংরাজদের কার্যকারক স-  
জে হতসম সাহেবের কার্যতমাল আন্টো  
লির সহিত সাক্ষাৎ হইয়াছে।

তুর্ক সেনারা হারজি গোতিমার যুদ্ধে  
হইয়াছে। এতদূর জনস্ব হইয়াছে।  
গের অল্পকালে যে সম্ভাব্য হইয়াছিল  
লিটরল বর্গে প্রকাশ হইয়াছিল।  
উপস্থিত হইয়াছে। সেনারা প্রাণ  
গোল। নিক্ষেপ করিয়াছে।

### ২৬এ মে পর্যন্তের ইউরোপীয় সমাচার।

সেনাপতি বাকিননের অধীনস্থ আদে  
র গবর্ণমেন্টের সেনারা উইলিয়াম বর্গ  
অধিকার করিয়াছে। বিজোহীরা নিকট  
বাত পারে, পলায়ন করিয়াছে। অল্পমান  
নিরাশ্রিত তাহারা অগ্রসর হইয়া রিচমন্ড  
সমুদ্রে থাকিবে। সেনাপতি জাকবিন উইলিয়াম  
মস্বর্গে বাকিননের সহিত একত্রিত হইয়াছেন  
বিজোহীরা নরকোক নগর ত্যাগ করিয়াছে। ই  
করিবার পূর্বে তাহারা মেরিকাজ জাহাজ ও ড  
তা অশ্ব অশ্ব ডক ওসদ্ব্যাপ জাহাজ নষ্ট করি-  
য়াছে। নিউঅলিয়াক অবধি বেকিন পর্বত  
মিসিলিপি নদী বিজোহী শূন্য হইয়াছে। সেনা  
পতি বরোগার্ড করিতে আসছেন।

ওয়াশিংটন নগরস্থিত প্রতিনিধি সভার ই-  
নাইটেডেটসের সীনার মধ্যে জীভ দাস  
বিষয় এবং উচ্চাইবার এক বিল বিধি  
হইয়াছে।

লণ্ডনস্থিত আমেরিকার দূত এমিলিও  
লিয়ার জাহাজ কিরিয়া। পাইবার প্রার্থনা ক  
ন। কিন্তু তালা অগ্রাহ্য হইয়াছে।

মেকসিকোস্থিত করাশী সেনারা উত্তর  
অধীনস্থ সৈন্য আরজিবানগর অধিক  
করিয়াছে। স্পেনীয় গবর্ণমেন্ট সেনাপতি প্রা  
কার্যের অগ্রদূত করিয়াছেন। করাশী  
সম্ভাব্য এই যুদ্ধ সম্পূর্ণ মারসিড হ  
ছেন



হেন্সিকাসেলের ইন্সপেক্টর অফিসার ও এন্সিয়ার  
বর্ণমোহের অল্পরোধে খীর রাজ্যে ১৬ ও ১৭ অ-  
ক্টোবর খ্রীঃাব্দে গণপী পুত্র স্থাপন করিতে সক্ষম  
হইয়াছেন । ইন্সপেক্টর জর্জের কুণ্ডের প্রতি অনাদর  
দর্শন কবাবে এন্সিয়ার ও জর্জের গবর্ণমেন্ট  
বন্দবস্তের রাজধানী হইতে নিজ নিজ দূতপণকে  
জাগরণ করিতে আদেশ দিয়াছেন  
৬। বর্তমানের পণ্ডিত কুণ্ড বিক্রয় লইয়া হাউ-  
সব কমল অনেক তর্ক বিতর্ক হইয়াছে ।

মাজাজের মোকেরা কর্ণাটের নবাবের প-  
ত্র, যে আবেদন করিয়াছেন ২৭এ মে বেলি না-  
হে হাউস অবকমন্স - ১৮। সম্মত করিবেন ।  
জারতনর্ টানেশ ও ক'পানের ব্যাঙ্কের  
জাপন পত্র একাধিত ৬ টিয়াছে । মূলধন  
২ কোটি টাকা ।

২৬এ মে পর্য্যন্তের ইউরোপীয়  
সমাচার ।

১। ব্যাঙ্কিং বঁটা শতকরা তিন টাকা  
হে ।  
২। কারি বিজোহীরা জতি জুজুলাবহার  
দ্বিগে পশ্চাদ্গমন কবিতেছে । মাকি-  
গিগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন কবিত্তে  
গবর্ণমেন্টের সেবারা করিছেব নিকটে  
ত হইয়াছে । বরোপাত অদ্যাপিও উক্ত  
প্রাচীরপ্রতি করিতেছেন । বিজোহীরা মেবি  
নাগি জাহাজ ও সহুদার তক নষ্ট করিয়া  
কাক জাধ করিয়াছে । জাকস ও কিলিপ  
বর্ণমোহের সেবাগণের অধিকৃত হইয়া-  
হে । বিজোহীরা মেবিকস ও মিসিসিপি নদী  
উক্ত সকল স্থানে ভুল নষ্ট করিয়াছে ।  
যে সকল জাহাজ আমেরিকার কনসলদিগে-  
র অজ্ঞপতি পত্র লইবে যে সহুদার জল রক্ত ও  
বোঝাই নগরে বাণিজ্য করিতে পারিবে । জীত  
হাস রাখিবার এবং উঠিঃ গিঃছে । প্রতিমিধি  
মতা এই নিয়ম বিধি বক্ত কবিয়াছেন । নিউগ্রা  
ল'গজ নগরে কঠিন সামরিক আইন প্রচলিত  
হইয়াছে ।

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাকালানেশীয় লেপটনন্ট গবর্ণর  
আদেশান্তসারী নিয়োগ ।  
কুজিয়ার ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ডে, আর,  
জাজার্ন সাহেব কোজদারি আইনের ৩৮ ধা-  
রারূপারে সেলিয়নে অথবা অগ্রিম কোর্টে সমপ-  
ণ করিবার মোকদমার প্রথম বিচার করিবেন ;  
এবং তৎসংক্রান্ত সহুদার কমতা পাঠিবেন ।

ফল্ পাউন্টের লাইট হাউসের সুপরি-  
টেণ্টেণ্ট ডেবিসন সাহেব আপনাব কর্তব্য বা-  
তিবিলে কটকের কটক কালেক্টরের সহকারি  
কাব্য করিবেন ।

নব জালিটান্ট সরজন বাবু উদয়ান্দ পতের  
অজ্ঞপতি কাল পর্যাঙ্ক অববা নতদিন অ-  
কোন আজ্ঞা না হয় নব জালিটান্ট সরজন শঙ্কু-  
চক্র চটোপাধ্যায় ওমলুকের চিকিৎসার ভার  
পাঠিবেন ।

নব জালিটান্ট সরজন নমলাল জোল পুর্বিয়ার  
মাতব্যতিকিৎসালয়ে ৯ বর্ষ জাব পাঠিবেন ।

নিম্ন লিখিত মুনসেফেরা ১৮ ৫৯ অক্টোব ১০  
আইনের ১৫০ ধারারূপারে ডেপুটি কালেকটরে-  
র কমতা পাঠিবেন নাটোরের বাবু নাওকড়ি  
মেব ও সেরাজগঞ্জের বাবু জিনোহন মটক । বা-  
জসাতী । বাবু অমৃতলাল চটোপাধ্যায় বি.এ.  
বি.এল, চিত্রকোনা ময়মনসিংহ ব দু উপেন্দ্রচক্র  
বহু বি.এল, উকডা, বীরজুদি । বাবু বৈক্যচক্র  
দাস বৌকুল বাকবগজ ।

১৮। পূর্ণচক্র বার ১৮ ৬০ অক্টোব ৩২ আইন  
অনুসারে গণেশচন্দ্রের আবেদন ও ডেপুটি কালেক-  
টর ৩ টিবেন । ১৯ এ জুন জাঁগার পাইনা ও ময়-  
মনসিংহ নিয়োগের যে আজ্ঞা হয় তাহাউচ  
স্থায়ী বহিত হইল ।

৩৮। জন। কুমারখালি ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট  
ও ডেপুটি কালেক্টর এচ. এম. বিলি সাহেব  
করিমপুরে বদলী হইয়া তখায় মাজিষ্ট্রেটের  
কমতা কমতা প্রাপ্ত হইবেন ।

ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাবু  
পূর্ণচক্র সুপোপাধ্যায় কুমারখালি বিভাগের  
ভার পাঠিবেন ।

৫ই জুন— জনবেল এ, ইডেন বজদেশীয়  
গবর্ণমেন্টের প্রতিনিধি সেক্রেটারি হইবেন ।  
ডবলিউ, জে, হর্বেল সাহেব বেবেনিউঃবা  
ডের প্রতিনিধি জুনিয়র সেক্রেটারি হইবেন ।

ই, জে সাহেব মদীরার প্রতিনিধি মাজি-  
ষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন ।

হাবড়ার ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর  
সেক্টর ই. বি. প্রাণ্ট সাহেব হিমালয়পুরে  
বদলী হইয়া কোজদারি আইনের ২২ ধারারূপারে  
৩৬ ধারার প্রথম অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা  
পাঠিবেন ।

দিনাজপুরের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপু-  
টি কালেক্টর জে. বি. প্রাণ্ট সাহেব হাবড়ায়  
বদলী হইয়া কোজদারি আইনের ২২ ধারারূ-  
পারে প্রথমপ্রথম অধীন মাজিষ্ট্রেটের  
কমতা পাঠিবেন ।

কাছাড়ের মুনসেফ বাবু বামগোবিন্দ দেব  
মাজিষ্ট্রেটের কমতা কমতা পাঠিবেন ।

লেপটনন্ট এম, জুই আগামের এক জন  
সহকারী কমিসনর হইবেন ।

নিম্নলিখিত কর্তৃপক্ষেরা লেপটনন্ট গবর্ণ-  
রের কোজিলের ১৮ ৬২ অক্টোব ৩ আইনের  
১৯ ধারারূপারে ১৮৫৯ অক্টোব ১০ আইনের  
৬১ ধারারূপারে মালী প্রথম কমিতে পাঠি-  
বেন ।

মদীরার অতিবিক্র কবিসনরের সহকারী  
এচ, বেবিনবক সাহেব ।

কুজিয়ার ছোট আদালতের জজ ও, টেম্প-  
ল সাহেব, মাজিষ্ট্রেটের ছোট আদালতের জজ  
জজ বাবু সুপাধ্যায় সাহেব ।

কোটচাঁদপুরের ছোট আদালতের জজ  
বাবু হানসনাথ বাবু ।

পূর্ণিয়ার অধর্গত বাণেশ্বর মুনসেফ বাবু  
কবিরামলাল ।

পূর্ণিয়ার অধর্গত মডবিয়ার মুনসেফ বাবু  
গৌসুল টান ।

পূর্ণিয়ার অধর্গত কুপগঞ্জের মুনসেফ  
বাবু রাইজুনা চক্রবর্তী কুপগঞ্জের অতিবিক্র  
মুনসেফ মালদা সামান্দ চে সেন

৫ই জুন । মুনসেফ ও মডলোকেব মুজিরে  
ব সাধবণ বিজাপিনা কমটির সভা হইবেন ।

জি, ডবলিউ এস ডিকসন সাহেব অবলিউ  
কিনট পোষ্ট্র সাহেব ।

৬ই জুন । চটগ্রামের প্রতিনিধি ডেপুটি  
মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর এচ, ডবলিউ  
বারবার সাহেব মওরাখালিতে বদলী হই  
কোজদারি আইনের ২০ ধারারূপারে প্রথম  
প্রথম অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাঠিবেন

প্রথম গণিত পুলিশ সেনাদলের লেপটন-  
টি, ওয়েল্ডন উক্ত দলের প্রতিনিধি অধ্য-  
হইবেন ।

প্রথম গণিত পুলিশ সেনাদলের সহকারী  
লেপটনন্ট হারজত আলী উক্ত দলের প্রতিনি-  
ধি আডজুটান্ট হইবেন ।

জি.কে. নিয়ার সাহেব সাংসদাল পদগন  
কমতন সহকারী কমিসনর হইয়া কোজদা-  
র আইনের ২২ ধারারূপারে দ্বিতীয় প্রথম অধীন  
মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাঠিবেন ।

বক্ত দিন মুনসেফ সাহেব বিহার লটয়া অ-  
পস্থিত থাকিবেন অথবা অন্য কোন আজ্ঞা  
হয়, জি, এস, কেশান সাহেব আপনাব  
ব্যক্তি ছোট আদালতের প্রতিনিধি প্রথম  
হইবেন ।







“प्रवर्त्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती नृतिनहती न संयतां

मासिक शुल्क १ टाका  
वार्षिक आय १२ टाका

12-

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

विष्णुदत्तनाथ नाटिक ।

কলিকাতা ঠান্ডেনিয়া, ১২৬ নং ভবনে  
সংকৃত গুপ্তকালরে পটনডাঙ্গা ৮৮ নং  
ভবনে ও প্রবাসভিগেত গুপ্তকালরে লাল  
বাঙ্গার ডি রোজারিও ৬৬ কোম্পানির লাই  
রেডি।

ବର୍ତ୍ତମାନ ଗ୍ରାଧାନପୁର ଡ-ଶବ୍ଦର ଉଚ୍ଚାଟନ  
ଶ୍ରୀପଦ୍ମ କୁମାରୀଙ୍କ କବିତା ଓ ବ୍ୟାଂଶରେ ମିଳିତ

१५ई अर्याः । मे. ४ नोम ।

शुद्धिः ।

সম সাহেব বিচারপতি পদে সম্মান  
হইয়াছেন। বাবু রমা প্রমাদ রায় আরো  
লাভ করিলেন এতদ্ব্যতীত বিচারপতির  
সম গ্রহণ করিবেন। সত্যাবিক বৎসর  
ল, এ দেশে ইংরাজদিগের রাজত্ব  
হইতে, এ পর্যন্ত অনেক বিষয়েই  
যতঃ বেতনের বিষয় ইংরাজী ও এ  
শীর বলিয়া ভেদ করা হইতেছে। কল  
উত্তরে ফুল, পদ্ম, ফুল্য কমতালী,  
ফুল্য জাম্বীল হইলেও এ দেশীয়  
বেতনগত বহু বৈলক্ষ্য হইবে। আসিয়া  
কিন্তু সম্প্রতি ইংলণ্ডের অর্থনীতি  
পক্ষপাতমূলক এই অবস্থার  
উল্লিখিত প্রধানতম আদালত হইতে  
রিভ করিয়াছেন। সত্য প্রমাণের  
কাল পক্ষপাতমূলক ব্যবহার করিয়া  
সত্য সমাজে নিষ্কিন্ত ও উপহাসিত  
তে পারেন। আমরা উপরে যে অল্প  
বিষয় উল্লেখ করিলাম, তাহা কেবল  
দেশে উচ্চতম আদালত স্থাপনের সমস  
য়, আমরা ইহাকে এই অবধি এ দেশে  
ইংরাজ আতির অগৌরবকর সপক্ষপাত  
ব্যবহারের উদ্ধৃতিকারী সনদ বলিয়া  
গণ্য করিব। এই আদালত সংস্থাপিত  
হইল, এক্ষণে এ দেশে বিচার ও আইন  
অভ্যুত্তীর্ণত যে সমস্ত পক্ষপাত দোষ  
হে, তাহা ক্রমে উদ্ধৃত হইবে সন্দেহ  
নাই। যাহা হউক, প্রকৃত বিষয়ে বক্তব্য  
ইংরাজী ও এ দেশীয় উত্তরবিধ



রপতিই জুলা বেতন পা  
র প্রত্যেকে বৎসর বৎসর  
করিয়া পাইবেন। আপাততঃ  
ই নিশ্চয় হইবে, এক্ষণে যাহারা সু  
। কোর্টের বিচারপতি পদে আছেন  
রা সে বেতন পাইতেছেন, তাহাই পা  
ন। কিন্তু তাহাঙ্গিরের উত্তরাধিকারীদি  
। এই ক্ষুদ্র নিয়মের পরাধীন হইতে  
বৎসর নিয়ম ছিৎ সুপ্রিম কো  
। বিচারপতিদিগকে শাইট (সর) টে  
বি দেওয়া হইত, অতঃপর তাহা রহিত  
বে। এই উপাধি দেওয়া না দেওয়া  
লগ্নেখরীর ইচ্ছা।

সর চার্লস উড আর এক বিষয়ে বি  
ন পুরস্কার প্রদর্শন করিয়াছেন। আ  
রা তাহা বিলাসিলাস প্রধানতম বিচারালয়ে  
রিভির ব্যক্তিগত অন্য কেহ ওকালতী  
করিতে পারিবেন না। কিন্তু আমাদিগের  
ন সূক্ষ্মরূপে হইয়াছে। সর আদাম  
চরম্বার উকীলেরা ও সুপ্রিম কোর্টের  
রিভিরেরা উভয়েই এই বিচারালয়ে ওকাল  
তী করিতে পারিবেন। আর, যাহারা পে  
সেডলি কালজে বি, এল উপাধি প্রাপ্ত হই  
ইবেন তাহারা এবং উক্ত বিচারালয়ের যে  
সকল আটর্নী এতিনিধি (কোর্টের  
কর্মসম্পাদক করিয়া দেওয়া) পরিভাগ  
করেন, তাহারাও ওকালতী করিতে পা  
রিবেন।

উল্লিখিত প্রধানতম বিচারালয় যেহী  
কিছু সংস্থাপিত হইতেছে, তাহাতে কা  
করা অসন্তোষ জন্মিবর সম্ভাবনা দেখা  
বাইতেছে না। সকল জেণির লোকই  
ইহার আশ্চর্যবশিত হইয়াছেন। সর  
চার্লস পিকক, সর চার্লস জাকসন  
ও সর মর্ডান ওয়েলস ও দুই জন বারি  
স্টার রাজপুরুষের ইউরোপীয়দিগের প্র  
তিনিধি স্বরূপ আছেন। কম্প্রিভির প্র  
তিমি বিল কর্তৃক হইতে আসিতেছেন,  
এই প্রকারে আর আমাদিগের এতিনিধি

হইতে চন। ইহাদিগের কেহই অনুপ  
যুক্ত নহেন।  
বিচারপতিরা মধ্যে মধ্যে মফসসনে  
যাইবেন। পূর্বে ইউরোপীয় অপরাধি  
গের ক্ষেত্রে বিচার হইত না। তাহা  
এক নানা স্থান হইতে কলিকাতায় আনা  
হইত। তাহাতে গবর্নমেন্টের বিস্তর কষ্ট  
হইত, এবং যাহাঙ্গির ক নানা স্থান হইতে  
নাগর্য নিত্য আসিতে হইত, তাহাদি  
ক্ষতি ও কার্টের পরিশীনা ছিল।  
এইমাত্র এক এক জন বিচারপতি  
স্থানে গিয়া ইংলণ্ডীয় আসাইডে  
রকর্ডদিগের ন্যায় ইউরোপীয়দিগের  
বিচার করিবেন। এতদ্বিষয়ে কেহ  
যে গবর্নমেন্টের ব্যয় সংক্ষম হইবে  
একপ নহে, দুই পক্ষের মত লোকদি  
গের সুপ্রিম কোর্ট আসিয়া সাক্ষা দিবার  
বহুবিধ ধাক্কাতে সম্মত মধ্য যে বিচার  
হইত, তাহার নিষারণ হইবে। এক্ষণে  
বিচারপতিদিগের যথাবিধি নিজ নিজ ক  
র্তব্য সম্পন্ন করাই আমাদিগের প্রতীক্ষণীয়  
হইয়াছে। অপর, মফসসলের বিচারালয়  
সকল বহু দোষে দুর্বিত দুর্ভে হইতেছে।  
এ সকলির উৎকর্ষ সাধন করা যেন তাহাদি  
গের একটা প্রধান কর্তব্য কর্ম হয়। বিচা  
রালয়ের উৎকর্ষ সাধিত হইলে ইউরোপী  
য় ও এ দেশীয় কলিয়া যতদূর যতদূর আইন  
করিবার আর প্রয়োজন হইবে না। মত  
দিন এইরূপ না হইবে, তত দিন গবর্নমেন্ট  
আমাদিগের যত দিহকর চেষ্টা করুন,  
কিন্তু তাহা হইতে পারিবেন না।

অগ্রহণ্য কারাগার ও বন্দী গণ।  
আমরা নীলপ্রধান প্রদেশের কৃষক  
ও চাকোম্পানির মজুরগণের প্রতি অত্যা  
চার অত্যাচার বিবরণ লইয়াই বাস্তব আছি।  
বহু নতুন অন্য অন্য জেণির কষ্টের বিব  
রণ অন্যত্র বিবৃত হইয়া যাই। আমাদিগের  
সমাজগত দোষ আমাদিগের সম্মুখে বি

কটকটে মুখ বিকার করিতেছে, কিন্তু সে  
বিষয়েও আমাদিগের যথোচিত মনোনি  
বশ হইতেছে না। আইন ও রাজস্ব প্রভৃতি  
বিষয় আমাদিগের প্রধানতম আন্দোলনের  
বিষয় হইয়াছে। একদিক দিয়া এক জেণির  
কার্যের বিষয়ে আমরা নিত্যন্ত উপেক্ষা ক  
রিয়াছি। এই জেণির কতকালা ও দুর্বচার  
বলিয়া অনেকে ইহাদিগের বিষয় একবারও  
চিন্তা করেন না। এই কারণে ইহারা নি  
ত্যন্ত উপেক্ষিত হইয়া যার পর মাঠ কট  
পাইতেছে এবং ইহাদিগের চরিত্র সং  
ধন ও কোম উপায় হইতেছে না। পা  
ঠকগণ! আমরা এ প্রস্তাবে বন্দীগণের বি  
ষয় উল্লেখ করিতেছি।

এক জন বিখ্যাত অগ্নি হিটেরী কহি  
য়াছেন, যত পাপনিবারণের উৎকর্ষ নি  
য়ম নহে, সমাজের কর্তব্য করিয়া বর্ষ  
নীতির শিক্ষা ন দিলে পাপপ্রবৃত্তি কিছু  
তেই দূরীভূত হয় না। অন্যায় তর্ক, অপ  
রিসীম মত্ততা ও গুরুতর মত্ত দান করিলে  
কোনো ব্যক্তি পাপকাযো অধিকতর দূর  
প্রতিক্রিয়া হইয়া উঠে। সে মগকে ঐদব নি  
যাতন ভগ্ন করে, বিচার পতি তাহার  
নিকটে বহু বিন্দু প্রতীক্ষমান হন এবং সে  
রাজাকে দণ্ড ও কারাগারে বসাইতে  
লোকান বোধ করে। তাহা প্রেয়সংবন কর  
যে আইন গবর্নমেন্ট ও বিচার পতির উদ্দেশ্য  
শ্য, সে তাহা বুঝে না। সে কি কারণে বুঝে  
না; অতঃপর কি তাহার কাব্য না, প্র  
লী গোবাই তাহার কারণ! যত দিন এ  
প্রণালী দোষ সংশোধিত না হইবে, তা  
দিন কারাগার গণের দোষ সংশোধনের স্থান  
হইবে। পাপিষ্ঠের পাপিষ্ঠ্যায় দুর্ভাগ্য  
করিয়া দণ্ড হইয়া থাকিবে, হস ও  
মেরিকা প্রভৃতি দেশে করেদিনিগকে  
বল খাটাইয়া লওয়া হয় না, তাহার তা  
দিগের মনোহুতির উদ্ধাত সাধনের প্র  
দৃষ্টি রাখা হইয়া থাকে। এখানে সে  
কিছু করা হয় না। কেবল বন্দীগণকে

ইহা লওয়া হয়। যে অধিক খাতিতে না পারে তাহাকে আমেরিকার ক্রীতদাস অবস্থা চা-  
কোম্পানির মজুরদিগের ন্যায় নিদারুণ  
প্রহার বহন করিতে হয়। ইহাতেই  
কর্তার শেষ হইল না, ইহার উপরে আবার  
আহারের কট। পাঠকগণ সুনিয়া বি-  
শ্বাস করাইবেন, তাহা না প্রত্যক্ষ তিন পরমা-  
ণোরাকী পাইয়া থাকে। একে এই দুর্ভাগ্যের  
সময়, ইহারও সমুদায় তাহাদিগের ভোগ  
যত হয় না। যে ব্যক্তি রক্ষণ করে, সে  
কিছু নয়, চাপরানী ও দারোগারাও অনেক  
কালে পূজা পাইয়া থাকেন। আমরা  
স্বাধীন করে কহিতে পারি যে সকল কয়েদী  
গৃহ হইতে টাকা আনাইতে না পারে, তা-  
হাদিগের এক বেলা অর্ধ ভোজন মাত্র  
। তাহাদিগের মত, শয্যা প্রভৃতির ত-  
থাই নাই। তন্নিম্ন, নিম্নতম প্রায় এক গৃহ  
মধ্যে বহুসংখ্য লোকের অসহনীয় ভা-  
গের এত কষ্ট, তাহাদিগের কি সুখি দোষ  
কি হইত। পাপ, পাপিষ্ঠা প্রভৃতি অধিকতর বল  
হইত। সম্ভাবনা নয়, দুর্ভাগ্যই হউক  
অথবা দুর্ভাগ্যই হউক তাহাকে অনাহারে  
মারিয়া দণ্ড করা কোন ক্রমেই যুক্তি সিদ্ধ  
নয় না।

এবিষয়ে গবর্নমেন্টের মনোযোগী হও-  
য়া অবশ্য কর্তব্য। এদেশে যে প্রণালীতে  
দারোগাদের কাছা নির্বাহ হইয়া থাকে  
তাহা, অতি অসম্মত ও লজ্জাকর। যে গুল  
দারোগা, কয়েদীদিগকে নানা প্রকার শিষ্ট  
দায়, শিখাইবার প্রণালী উদ্ভাবন করেন  
তাহাকে বন্দী, দণ্ড আদাদিগের গবর্নমেন্ট  
কয়েদীদিগকে শিষ্টাঙ্গি শিক্ষা দিবার  
প্রণালী অবলম্বন করিয়াছেন বটে কিন্তু  
তাহারা স্পষ্ট বোধ হয় কয়েদীদিগকে  
টাইয়া লওয়া যেওন উদ্দেশ্য শিক্ষা  
দওয়া সেক্ষণ মতে। যাহা হউক আ-  
মরা নিম্ন লিখিত কয়েকটি প্রস্তাব করিতে  
। তদনুসরণ কর্তব্য।

১। কয়েদীকে এক স্থানে রাখা

না হয়। ইহা দ্বারা দুই অনিষ্ট ঘটতেছে  
এক, ভয় অত্যাচার, ধার্মিক অধর্মিক, ভয়  
ও দণ্ড একত্র, থাকতে পরস্পর সংসর্গে  
পরস্পরের স্বভাব দুর্বিত হইয়া যায়।  
দ্বিতীয়, বলবান দুর্বল, দীর্ঘ ও কুৎসিত  
রোগ প্রভৃতি ব্যক্তিদিগের পরস্পর সংসর্গে  
অনেকের চিরকালের মত স্বাস্থ্য ব্যাহত  
হইয়া যায়। অতএব ইহার সতৃপায়  
করা আবশ্যিক।

২। যাহাতে কয়েদীদিগের চরি-  
ত দোষ সংশোধিত হয়। তন্নিম্ন  
দৃষ্টি রাখা উচিত। তাহা না করিলে  
সহস্র দণ্ডবিধানের আইন পাপ নিবারণ  
করিতে সমর্থ হইবে না। পাপীরা কিঞ্চিৎ  
সতর্কতা ও অধিকতর খুঁড়তা শিখিবে  
এই মাত্র।

৩। যাহার যে ব্যবসায় তাহাকে  
তাহাতে নিযুক্ত করা কর্তব্য। আমরা  
অনেক স্থানে দেখিয়াছি এক জন কুত-  
বিশ্বাস তত্ত্বলোককে হুঁকা ধমন করান  
হইতেছে। ই-। অতিশয় অন্যায় ও অনি-  
ষ্টকর।

৪। কয়েদীদিগকে পর্যাপ্ত খাদ্য  
মধ্যবিধ বস্ত্র ও শয্যা দেওয়া কর্তব্য। তা-  
হাদিগকে নগদ পাসানা দিয়া চাউন  
ডাউন প্রভৃতি দেওয়া উচিত।

৫। এক্ষণে যথার্থ ভাষা ও ক্রতবিদ্যা  
লোকেরা দারোগা প্রভৃতি পদ লইতে  
চাহেন না। তাহারা যাহাতে এত কষ্ট  
কর কবেন তন্নিম্ন উৎসাহ দেওয়া কর্ত-  
ব্য। পর্যাপ্ত বেতন ও তাবি উন্নত পদের  
অংশ দিলে অনেকেরই অজ্ঞান পূর্বক  
এই সকল পদ গ্ৰহণ করিবেন।

৬। উপযুক্ত দেখিয়া কয়েক জন সহ-  
কারী জেল ইন্সপেক্টর নিযুক্ত করা কর্ত-  
ব্য। ইহারা কয়েদীদিগের তত্ত্বাবধান ক-  
রিবেন।

এই গুলি করা নিতান্ত আবশ্যিক।  
ই। ন্যায় সাধ্য সন্দেহ নাই; কিন্তু লোক

দিগের চরিত্র সংশোধন ও পরস্পর  
মিলন লইয়া যখন কথা হইতেছে তখন  
ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টের এই কার্য দ্বা-  
কৃত হওয়া বিধেয় নহে।

নীল প্রধান এদেশের কল  
লইয়া বিবাদ।

নীল প্রধান এদেশের গোলযোগ বিবরণ  
হইবার আকার ত দেখা গাইতেছে।  
গবর্নমেন্ট যে উপায় অবলম্বন করিতে  
এবং যে সমস্ত কষাচারিতক প্রেরণ করি-  
ছেন, তাহারা এই বিবাদের শান্তি হয়,  
প সম্ভাবনা নাই। আমরা তাহা বিবাহিল  
জাকসন ও কায়েল সাহেব নীলকর ও এ-  
তাদিগের পরস্পর আন্তরিক না হউক বাহ্য-  
সম্বাদ করিয়া দিবে। কিন্তু তাহাদিগের  
উভয়কেই অকৃতকাব্য দেখিতেছি। তা-  
হারা যে উপায় অবলম্বন করিয়াছেন,  
তাহাতে নীলকর ও প্রমা উভয় পক্ষেরই  
অসন্তোষ জন্মিয়াছে। নীলকরেরা যে  
সাধে কর লইতে চাহিয়াছিলেন জাকসন  
সাহেব তাহা অগ্রাহ্য করিয়াছেন, আবার  
প্রজারা পরস্পর হারে যে কর দিতে  
ত ছিল তাহাও অগ্রাহ্য করা হয় নাই। তিনি  
মধ্যে প্রভৃতি গড়ে ১১০ আনা, ৮০ আনা  
ও ১১০ কর দাখ্য করিয়াছেন। তিনি যখন  
একদণ্ড যাবতীর দ্বারা মহাশয় হওয়াতে প্রজার  
বিলক্ষণ লাভবান হইয়াছে, অতএব তাহারা  
কিঞ্চিৎ অধিক কর দাখ্য দিবে কেন? এ স্থলে  
আমরা তাহাকে জিজ্ঞাসা করিতে পারি, ত্রি-  
ভয়ের যেসকল মূল্য হুজি হইয়াছে, সেই প্র-  
কার কি পরিভ্রমের মূল্য হুজি হয় নাই?  
কুবকেরা কিছু একাকী সমুদায় সুনির কবি  
কার্য নির্বাহ করিতে পারে না; তাহাদিগ  
কে মজুর খাটাইতে হয়, লাবলের ব্যয় আ-  
ছে, গোমহিষাদির আহার আছে, এসকলে  
র জন্য তাহাদিগকে কি পূর্বাগে অধিক  
ব্যয় দিতে হইতেছে না? আর এই সকল  
ব্যয় তাহাদের মতি জাহাজিয়ার অর্জিত হয়।



লাভ থাকে, ভূম্যধি হারীরাইবা তাহাতে  
 তাঁহাদিগের যত্নে কি ভূমির উর্বরতা গুণ  
 বৃদ্ধি পাইত হয়? তাঁহারা কি প্রজাদিগকে  
 একাধারে উন্নতি সাধনের উপায় সকল  
 প্রকাশ করেন? প্রজারা আপনাদিগের যত্নে  
 অত্যন্ত বলে ভূমির যে কিছু উৎকর্ষ  
 ধন করিতে পারে, সেই মাত্র। যদি  
 ভূমির উর্বরতা গুণ বর্ধন বিষয়ে জমীদারের  
 জাভায়া না রহিত, তবে জমীদার ও  
 প্রগণ কি যুক্তির অনুসারে অধিকতর  
 প্রার্থী হইতে পারেন? বিশেষতঃ ভূমি  
 ধন শস্যশালিনী হইলেই অধিকতর ক  
 ণ্ডয়া হইবে একপনিয়ন করা অতিশয়  
 প্রয়োজনীয় ও অনিষ্টকর। সে দিবস রাজা না  
 নসিঃ কি বলিয়াছিলেন? তাঁহাকে ভূমি  
 প্রভৃতিব কৃষিকার্য্যে মনোনিবেশ করিতে ব  
 লাতে তিনি বলেন, পতিত ভূমিকে শস্যশা  
 লিনী করা বড় চুঃসংসাধ্য নহে, কিন্তু তাহা  
 করিলে কি হইবে? আমাদিগের জমীদারির  
 কবরুজি হইবে এই মাত্র। এই কারণে লাভ  
 কানিও অযোগ্য প্রভৃতি প্রদেশে চিরস্থায়ী  
 বন্দোবস্ত বরিবার সংকল্প করিয়াছি  
 মন। প্রজাদিগকেও কি সেই চিরস্থায়ী  
 বন্দোবস্তের অংশগ্রহীতী করা বিধেয় নয়?  
 গহা করিলে কি ভূমির উর্বরতা গুণের  
 অধিক বৃদ্ধি হইবে?

যখন জমীদারের চিরস্থায়ী একবিধ  
 কর দিয়া যুক্ত হইতেছেন, তখন প্রজার  
 কি? তাহারা অনেক পবিত্র  
 করে, এইকি তাহাদিগের অসংখ্য - তা  
 হারা ব্যাভ্র ত দুঃখাদির আবাসস্থান পতিত  
 ভূমি সকলে কৃষিকার্য্য করিয়া ও তাহাতে  
 পণ্যাদি শস্য উৎপাদন করিতে বসিত  
 কি তাহাদিগের অর্থদণ্ড বহিতে হইত?  
 এইবিধ নিয়ম পূর্বতন নবাবদিগের প্রদত্ত  
 আম তুরক ও পারস্য গবর্ণমেন্টের উপায়  
 অনুসরণ করিয়া গবর্ণমেন্টের নিকটে এত প্রার্থনা  
 করিতেছি, তাঁহারা জাকসন সাহেবের আ  
 জ্ঞায় রহিত করিয়া অর্থাৎ পরগণার হিসাবে

কর ধাওয়া করিতে বলুন। আমরা বরাবর  
 কহিয়া আসিতেছি সমুদায় বন্দোবস্ত এক  
 বার জরিপ করিয়া ভূমির সীমা বন্ধ করা  
 নিতান্ত আবশ্যিক। নেপোলিয়ন এই বলিয়া  
 গৌরব করেন, তাঁহার কাডারীর অর্থাৎ  
 ভূমির বর্ধন হিসাব থাকাতোই স্ফাজে মক  
 দ্দমার অনেক হ্রাস হইয়াছে। এদেশে সেই  
 প্রকার করান। কর কেন? বাঙালীদিগকে  
 মোকদ্দম প্রিয় বলিয়া গালি দেওয়া হই  
 ত। থাকে: কিন্তু যখন ভূমির এই প্রকার  
 হ্রাস হইয়া গেল, তখন মকদ্দমা বাতিরেকে  
 কিরূপে ভূমির বর্ধন অব্যাহত থাকিবে  
 পারে?

পরিশেষে আমাদিগের বক্তব্য এই,  
 এত বিবাদের মধ্যর মীমাংসানা হওয়াতে  
 প্রজারা ক্রমশঃ উৎসন্ন হইতেছে। বহু  
 দিন অবধি নীল সম্বন্ধ লইয়া নীলকরদি  
 গের সহিত তাহাদিগের বিবাদ চলিতে  
 ছে, মকদ্দমায় মকদ্দমায় তাহারা অল্প বস্ত্র  
 ছ'ড়া হইয়াছে, সকল স্থানে সুন্দরকপ  
 শস্যও উৎপন্ন হয় নাই। ইহার উপরে  
 আবার কর লইয়া বিবাদ অবিজ্ঞানে  
 যত্ননা দিতেছে। এত উপদ্রবে ক্ষুধ  
 প্রাণী প্রজারা কতক্ষণ তিষ্ঠিতে পারে?  
 এই বিরোধের মীমাংসানা হওয়াতে পূর্  
 তন নীলসংক্রান্ত অত্যাচার পুনরাবৃত্ত  
 হইতেছে। শুনিতে পাওয়া হইতেছে,  
 অনেক স্থানের প্রজা নিতান্ত নিকপ য হ  
 ইয়া সেই অনর্থমূল প্রাচীন নিয়মে দান  
 ন গ্রহণ করিতেছে। যে প্রাণীর উদ্ধার  
 র্ধ এত কাণ্ড হইয়া গেল, এত অর্থ ব্যয়  
 হইল, বাঙাল গবর্ণমেন্ট মিসনবিদিগের  
 সহিত ঐক্যিকারিদিগের কোণ পতিত  
 হইলেন লজ সাহেবের করাবাস হইল,  
 সিন্ধুজার সাহেব তিরস্কৃত হইলেন, সেই  
 পক্ষী পুনরাবৃত্ত হইতে চলিল। উহা পু  
 নরাবৃত্ত হইলে বঙ্গদেশের কৃষকরা দক্ষি  
 ণ বাঙালন'র ক্রীতদাসদিগের অপেক্ষা  
 অধিক সোভাগ্যশালী হইবে না।

এডুকেশন কোমিশনের পুনঃ স্থাপন  
 প্রসঙ্গ।

এডুকেশন কোমিশন সভা উঠিয়া গি  
 য়াছে। সভা যে সমস্ত কার্য্য করিতে  
 সে সমুদায় এক ব্যক্তির হস্তে ন্যস্ত হই  
 য়াছে। কাদে যেকপ দেখা যাইতেছে,  
 তাহাতে এটা শিক্ষাসমক্ষে এ দেশের  
 মোতগোব বিষয় না হইয়া ছুতাগোর বি  
 য় হইয়া উঠিয়াছে। এক্ষণে বিদ্যা শি  
 কার জন্য পূর্বাপেক্ষা অধিক টাকা দেও  
 যা হইতেছে, প্রধান প্রধান লোকেরা বি  
 দ্যার উন্নতির জন্য যত্নবান হইয়াছেন,  
 অনেক বি. এ. বি. এল প্রভৃতি বাহির হ  
 য়াছেন, কিন্তু এডুকেশন ডিপার্টমেন্ট  
 এর অসুসারশূন্য হইয়াছে। পূর্বে কো  
 মিশন সভার তত্ত্বাধীনে একত্র বসিয়া বিবে  
 চনা পূর্বক নানা প্রকার প্রণালীর উদ্ভা  
 বন করিতেন, কোন বিষয় উপস্থিত হইলে  
 তৎক্ষণাতঃ তাহা বিচারে প্রেরণ করিয়া  
 হইত, সুতরাং যে বিষয় বক্তব্য বলিয়া  
 গিয়া হইত, তাহাতে সর্বশেষ দাব সম্পূর্ণ  
 হইবার তাদৃশ সম্ভাবনা ছিল না। বিশেষ  
 যতঃ পূর্বে কোমিশন সভা উপযুক্ত শিক্ষক  
 দিগের অনানুকূল পূর্বকর দিতেন, নি  
 কটবৎ উৎসাহ ও আত্মদ সহকারে  
 আপন আপন কর্ম সুন্দর রূপে সম্পন্ন  
 করিতেন। তৎকালে এই একটি বিশেষ  
 ছিল, কেহ ইচ্ছা করিলেই অন্যায়সে শি  
 ক্ষকদিগের উপরে আপনার নীচ অরুচি  
 চরিতার্থতা সম্পাদনে সমর্থ হইতেন না।  
 এক্ষণে এই দায় হইয়াছে, কোন শিক্ষক  
 প্রধানতম কথচারিব অগ্রিয় হইলে তাহা  
 যত কেন ক, থাকুক না তাহার নিন্দা  
 থাকে না। তাহাদিগের অন্য দিগে উপা  
 না হয়, তাহাদিগের পক্ষেই পতিত পাব  
 এডুকেশন ডিপার্টমেন্ট আছেন। সভা  
 কেহ এ ডিপার্টমেন্টে আসিতে চান না  
 এই সকল দোষের প্রতীকারের উপা  
 কি? আমরা শুনিয়াছি বীতন সাহে  
 বা কি পুনরায় এডুকেশন কোমিশন স্থাপ

বিবর্তন প্রভাব' করিয়াছেন। ইহাই এই  
কল দোষের অতীতের একমাত্র উপা  
। ডিরেক্টর এই কৌশলের সেক্রেটারি  
উন, ইনস্পেক্টরদিগকে ক্রমশঃ বিহার  
ওরা হউক, (তাহাদিগের দ্বারা এ পর্যন্ত  
শেষ কাহা ত দেখা যায় নাই) কয়েক  
ন। ওহকারী ইনস্পেক্টর থাকিলেই প  
প্রাথমিক বিদ্যালয়ের উন্নতি সাধন হইতে  
পরিবে। পরিশেষে বক্তব্য এই, এক বা  
কর হস্তে শিক্ষা সংক্রান্ত গুরুত্বার সম  
ন করিয়া নিশ্চিত থাকি কোন ক্রমেই  
তাহাদিগের অনুমোদিত নহে। কখন  
খন একপ দেখা যায় বাটে, এক ব্যক্তির  
সম্পূর্ণ কাহাতার থাকিলে কাহা যে  
প সুন্দররূপে সম্পন্ন হয়, পাঁচ জনের  
শেষ থাকিলে সেরূপ হয় না। সেই সেই  
নে পাঁচ ব্যক্তি প্রধান কর্তার কাহা  
সম্পন্ন পথের অন্তরায় বলিয়া পরিগণিত  
ই। ৭'কেন। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখ  
লে দেখিতে পাওয়া যায়, উল্লিখিত  
এ ও ক্ষমতাধার ব্যক্তির কাহাকর্মে পদে  
অধিকান সুস্থিত নহে। আমরা ক্রমে ক্রমে  
এক সংক্রান্ত কাহ্যের দুই জন ডিরেক্ট  
কে দেখিলাম। ইহুও সাহেবেব কাহ্যদ  
তঃ পরিচয় দি, পাঠকগণ গ্রহণ করুন।  
জুজেন ডিপার্টমেন্টের প্রধান অধ্য  
কর কর্তৃক দৈনিক প্রমুখীবাঃ চেয়ারম্যান  
থকা কম্পোজিটরের কর্তৃক নহে। কত  
করণ আদেশ করিবেম, তাহাও তাহা  
রিবে। শিক্ষা সংক্রান্ত প্রধান অধ্যক্ষ  
একবিধ নতুন নতুন প্রণালীর উদ্ভাবন  
বিভিন্ন জন তাহা অনেকবিধ চিন্তা ও সম  
সাধ্য। তন্মধ্যে কোন বিদ্যালয়ে শিক্ষণ  
য হইতেছে তাহার তত্ত্বাবধান করিতে  
ন। তদনুসারে এই পত্র, কাহা  
রিতে হইলে অনেক সময় অনশ্বাস  
ও সন্দেহ নাই। কিন্তু কুতপূর্ব নিরন্তর  
এ সাহেব উপস্থিত কর্তৃপক্ষের একচে  
থিরাহিলেন, এককোশল ডিপার্টমেন্ট

র কাহা শেষ করিয়া তাঁহার অনেক সম  
কর্মাৎকে। ২। দেখিবা না শুনিয়া কেবল  
সরকারী কাগজে স্বাক্ষর করাই কি প্রধান  
অধ্যক্ষের কর্তব্য? প্রধান অধ্যক্ষ অসহ্য  
হইয়া যদি সুন্দররূপে কাহা নির্বাহ করি  
তে পারিতেন, তাহা হইলে মজিসহ ও  
ব্যবস্থাপক সভা প্রভৃতি রাশিয়া রাজ্য  
অকারণ ব্যয় প্রভৃ হইতেন না। রোমের  
প্রাচীন কালের র কাহিগের যে যে ব্যক্তি  
সেনেট সভাকে উপেক্ষা করিয়া কাহা  
করিয়াছিলেন, তাঁহারা এই প্রকারে অগ্রিয়  
হইয়াছিলেন।

মুদ্রন প্রস্তুত ও পত্রিকা  
প্রতি

আমরা কুতপূর্ব সহকারে প্রকাশ  
করিতেছি, নিম্নলিখিত মুদ্রন পুস্তক ও  
পত্রিকা প্রাপ্ত হইয়াছে।  
১। উদ্ভবরামচন্দ্রিত সংকৃত, মহা  
কবি ভক্তভক্তি প্রবীণ, কালিকাতা, সংস্কৃত  
কালেজের অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত বিজয়চন্দ্র  
মহোদয় নিজ বাবে মুদ্রিত প্রচ  
রিত করিয়াছেন। এই কাহা দ্বারা জনসা  
ধারণের অধ্যাপক শ্রীযুক্ত প্রমোদ চন্দ্র  
মহারীশ মহাশয় ইহার নামে প্রায়শ্চিত্ত  
ও তুষ্টি প্রভৃতির অর্থ করিয়া দিয়াছেন।  
পূর্বের মুদ্রিত পত্রের চরিত্রেব অগ্রব  
স্থানের অর্থ বিশদরূপে উল্লেখ করা  
হইয়াছে। তৎকালীন মহাশয়ের যত্ন ও পরিচ  
য়ে নতুন মুদ্রিত প্রকাশন সে দোষ পরি  
হার হইয়াছে। প্রস্তাব ফেব্রু ১৯০৩  
উৎসব নয়, মুদ্রন ১৯০৩ উৎসব হইয়া  
ছে। ইহার মূল্য ০.২০ মাত্র নিম্নলিখিত  
হইয়াছে।  
২। প্রাচীনত্বসূত্র, শ্রীযুক্ত বাবু  
চণ্ডীচরণ দে ইহার প্রণয়ন কর্তা। ইহা প্র  
স্তাবের প্রতীতিতে লিখিত হইয়াছে। ইহার  
বচনা প্রণালী অতিসহজ। এতদ্বারা সহজে  
অনেক প্রাণির বিষয় জানিতে পারা যায়।

৩। চাকাবার্তা একশ্লীকা। ইহ  
র প্রকাশ হইতে আরম্ভ হই  
শ্রীযুক্ত বাবু রামচন্দ্র ভৌমিক  
সম্পাদন কার্যে ত্রুতী হইয়াছেন।  
৪। ভারতবর্ষীয় মজার টীকা। ইহা  
বিবেশনের বিষয়।

— — —  
মানপ্রাপ্ত।  
আমরা কুতপূর্ব সহকারে প্রকাশ  
করিতেছি, শ্রীমতী রাণী স্বর্নময়ী আমানি  
র ঐতিহাসিক বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ ১০  
টাকা দান করিয়াছেন

বিবিধ সংবাদ।  
১০ই আষাঢ় সোমবার।

আমরা বরাবর বলিয়া আসিতেছি উদ্ভ  
পক্ষিমে বিদ্রোহ হইবে বলিয়া যে ভয় কর  
হইয়াছে তাহা অমূলক। আগরার সেনাপতি  
বিপ্লবভিয়ার ট্রোপ সেনাদিগকে সর্বদা অ  
গরী রাশিয়াছিলেন, এবং গিরজায় অস্ত্রপার  
সেনা লইয়া গিয়াছিলেন বলিয়া গবর্ণমেন্ট  
তাহার নিকট টেকনিক্যাল চাকিয়াছেন।  
কলকাতা সম্মানন লিখিয়াছেন "জন  
উদ্ভবরামচন্দ্র ইহারে লাভ এলগিন ডা  
ফর্ম করিলেন নত হই। এতদিন এতদেশী  
ন গুরুতর অপরাধ করিয়া সুপ্রিমকোর্ট  
তে যুক্ত হইয়াছে।  
কিনিলেক্টর চাকাবর্তিত সংবাদ দাতা  
লিখিত রূপে ভক্তভক্তি প্রবীণ কর্তারি  
ত্বণ বর্ণনা করিয়াছেন। তাহার অঙ্গ ও  
সংস্কৃত রূপে মূর্ত্য, মাজিষ্ট্রেট ডাঃ  
ও আমলাদিগকে সর্বদা গালি দি। ৭।  
এবং সদর অলা এ গো বেজারা ৩ কেতা  
কে মধ্যস্থিতে পাতেন না। আবার এ  
ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট আছেন, তিনি  
হইয়া বলিয়াছেন, এতদেশীয় কোন না  
দুইপ্রহর বেলা বিনোদী বাক্য দিলে তাহা  
প্রহর রায়ে বুঝিয়া লইতে হইবে। ৮।  
তবে এক জন কম নন। বাজার টক হইয়া  
এতদেশীয় সংবাদগরে ১৩৩৩  
আনন্দকর্তার বিষয়ে কাহা লিখিত হইয়াছে



টাইলস অথ ইন্ডিয়া. এম্পায়ার বেলুন, সুপার  
 ভেব ডক ম্যানিকজী কাউথানজীকে জু  
 পুলিস বস্টেন্স কথ। দিহা। যে অফিস, ম  
 রেন : ডা। ডিনি বোখাই অথ। মেসেজ : গ.  
 নরিয়াডেন : দলি উল্ল গবদেলে ডালা

কিছু না বলেন, জায়া হইলে পারসীরা কিয়ৎ  
করিয়া এখনি ইংলণ্ডীয় সভ্যতার প্রচার  
করিবেন। পারসীরা অল্পসংখ্যক  
বর্ষের সভ্যতা, অস্বাভাবিক শাসন ও রাজ্য-  
শাসনের সমাজের সহিত এক বাক্য হইয়া কাণ্ড  
করেন।

হরজী ব্রহ্মচারী নামক যে হতভাগ্যকে  
নানা সাহেব বলিয়া খুত করা হয় তাহার মৃত্যু  
র কারণ করনার দ্বারা গির হইয়াছে। তাঁহার  
প্রজ্ঞাবের দ্বারে পীড়া হইয়াছিল। তিনি এত  
পীড়া বহনবিসবধি ভোগ করিতেছিলেন।  
এখানে ইহার উল্লেখ করা আবশ্যিক, যে পুলি-  
স কমিসনর ও উদযুক্ত কর্মচারিগণ উক্ত পু-  
রোহিত ও তাহার আত্মার প্রতি বিশেষ রূপে  
যত্ন করিয়াছিলেন। তাঁহার আত্মাকে পাথের  
দিয়া করাটিতে পুনর্বার প্রেরণ করা হই-  
তেছে।

আমেরিকার গবর্ণমেন্টে ক্রমশঃ জয় লাভ  
করিতেছেন। ক্রীতদাস রাখিবার নিয়ম  
উঠিয়া গিয়াছে। বহুসংখ্য দাস সেনাদলে  
এবেল করিতেছে। নিম্নোক্ত দিগের অধিক  
সংখ্য জাহাজ ও বিস্তর অস্ত্র প্রভৃতি  
গবর্ণমেন্টের হস্তগত হইয়াছে। তাহা-  
রা সকলে জীত হইয়াছে। রিচমণ্ড নগরে-  
ব নিকটে যে যুদ্ধ হইবার সভাবনা আছে  
তাহাতে যদি জয় হয়, তাহা হইলেই বিমো-  
হ ক্রীতদাস রাখিবার প্রথার সম্বন্ধ নির্মাণ  
হইবে সন্দেহ নাই। আমাদিগের এই  
প্রার্থনা।

বেডলিকট সাহেব উদ্ভূত। সাং বেব প্রতি  
নিধি হইবেন। বাব ক্রমের মুখাপাশ্যর তা-  
হার সহকারী হইবেন।

হুগলী জিলার ব্রাহ্মণ বংশীয়া একটি যু-  
তি বিধবা আপনায় তিন সর্বার একটি পুত্রকে  
ভ্যাগ করিয়া এক ব্যক্তির সহিত পলায়ন ক-  
রিয়া বেশ্যা হয়, সে গৃহ হইতে অনেক দূর  
আনিয়াছিল, তাহার নামে মালোখ ও বিচার  
হইয়া তাহার দুই মাস মিয়াদ হইয়াছে। এই  
সকল দেখিয়া জমিদার ও আমাদিগের দেশে  
র লোকেরা বিধবা বিবাহের বিপক্ষতাচরণ  
করেন কি আশ্চর্য।

১২ই আশাচ বুধবার।

টাইমস অব ইন্ডিয়া সাহস্রাব্দী সংবাদ।

পত্রের প্রচার ও নিম্নোক্ত করিতেছেন।  
প্রচার প্রচার অনেকগুলি সাপ্তাহিক পত্র আ-  
ছে, এক খানিও প্রাত্যহিক পত্র নাই। সম্পাদ-  
ক বলেন, এই সকল পত্র বোম্বাইয়ের অনেক  
ইংরাজী পত্র অপেক্ষা উৎকৃষ্ট কিন্তু তত্ত্ব  
হুতবিন্যাসে বেশীপত্রের যথোচিত উৎসাহ  
দান করেন না। বরমেশে এই দোষটি ক্রমশঃ  
তিরোহিত হইতেছে।

কিনিক সম্পাদক প্রস্তাব করিয়াছেন, লণ্ড-  
নস্থিত টেম্পল বারের ন্যায় এখানেও একটি  
ব্যবস্থা বিদ্যালয় স্থাপন করা কর্তব্য। উক্ত  
প্রস্তাব। ইহা সুনিশ্চয় করিয়া তুলিবার নিমিত্ত  
সকলের যত্নবান হওয়া উচিত।

উক্ত সম্পাদক কলিকাতার পেটিমুরির  
দোষ উল্লেখ করিয়া অলোকদিগকে জুরি-  
পদে নিযুক্ত করিতে কহিয়াছেন। ভয় লোক  
হইলে আকস্মিক প্রভৃতি জিরজিকারীদিগের  
উপায় কি হইবে?

বঙ্গদেশীয় প্রিন্টিং কোম্পানি অংশীদার-  
কে ইনকন টাকার দ্বারা লভকর। ৭ টাকা লাভ  
দিয়াছেন। গত সাপ্তাহিক রিপোর্টে প্রকাশি-  
ত হইয়াছে ইহা মাসের মধ্যে ৭৫-১৩৫/৫ টা-  
কার লভ্য হইয়াছে। মুদ্রিত টাকার মূল খনে  
এইলাভ সামান্য নহে।

আপারমের দৃষ্টান্তের ইংলণ্ড ও ফ্রান্স  
গমন হস্তান্তর পূর্বে পাঠকগণের গোচর করা হ-  
ইয়াছে, তাহার। লণ্ডনস্থিত দ্বিতীয় অল্পত  
পদার্থ, শিশু প্রশংসনী সভা, জাহাজ নির্মাণের  
ডক, চিকিৎসালয় প্রভৃতি দর্শন ও উত্তমরূপে  
পরীক্ষা করিয়াছেন। দৃষ্টান্তের সহিত করে-  
ক জন কর্মদাতা আছেন। তাহারা যে যে বি-  
ষয় দেখিয়াছেন তাহার চিত্র ও বিবরণ লিখি-  
য়া লইয়াছেন। অনেক বিগড়ে দৃষ্টান্ত বিশেষ  
পারদর্শিতা প্রকাশ করিয়াছেন। তাহাদিগের  
সহিত যে একজন চিকিৎসক গিয়াছেন তিনি  
ব্যবস্থার বিশেষ প্রভৃতি বিষয়ক যে দৃষ্ট প্রকাশ  
করিয়াছেন তাহাতে অনেক ইংরাজ চিকিৎসক  
নিম্নরূপে জানে পরিচাছেন। দৃষ্টান্ত ক্রীল অতি-  
শয় সমাদরে গৃহীত হন। সম্রাট তাহাদিগকে  
অনেক প্রতীকসম্পন্ন একখানি সোণের জাহা-  
জ প্রদান করিয়াছেন। পাঠকবর্গ বোধ হয়  
তুমি কৌতুকাবিষ্ট হইবেন, প্রধান দৃষ্ট মধ্য-

নের চিত্র যতন হইবারে হইবারে জাহাজ  
খাখিরাছিলেন।

তাহার সম্পাদক বলেন, আলিপুরে  
কমুদি, গোদার প্রভৃতি জুরি হইয়াছে। ই-  
দিগের কেহ কেহ নামও খাখর করিতে পা-  
না এবং অধিক সংখ্য লোকের দ্বারা  
নাই। আমাদিগের বেদন বিচারপতি ফল  
রূপ জুরি হইয়াছে।

সম্রাট হারিশম্বরগীর সভা ভারতবর্ষ  
সভায় হইতেছে। লভ্যেরা মুকিয়ান  
বাবু কালীপ্রসন্ন সিংহের প্রদত্ত ভূমিতে  
রিপ সমাজ ৯ নামক একটি বাগী করিবেন  
ইহাতে একটি পুস্তকালয় হইবে। এই বা-  
তে লর্ড কানিংহাম প্রস্তাবদ্বারা প্রতিদ্বন্দ্বি  
ও প্রাণ সাহেবের চিত্রপট থাকিবে। ল-  
কানিংহামের অর্থার্থ অনেক টাকা অধিরা-  
সেই টাকা হইতে প্রাণ সাহেবের এবং  
প্রস্তাবদ্বারা প্রতিদ্বন্দ্বি না হয় কেন?

গবর্ণমেন্ট সাধারণ আকিস নির্ধা-  
জন্য ৩৫,৫০০০ টাকা দিয়াছেন। ই-  
পোর্ট আকিসের জন্য ৮ লক্ষ ও প্রেসিডেন্সি  
ও অন্য অন্য কালেক্টর জন্য ৬,৫০,০০০ ল-  
টাকা দেওয়া হইয়াছে। রাইটসবিহীন  
বখাখি জয় করা হইয়াছে।

ভারতবর্ষের রেইলওয়ে কোম্পানি ভুক্ত  
জেনির শকট পূর্বাণেকা উত্তর করিয়া  
তুর্প জেনির শকট করিবারও উদ্ভোধনা  
করিতেছেন। এই সঙ্গে দ্বিতীয় জেনির শকট  
র তাড়া কীয়াইরা দেওয়া কর্তব্য।

মকমলাইট সম্পাদক বলেন, লাল জ্যোতি  
প্রদান বলিয়াছেন তাহার। বিজ্ঞানের আ-  
তা করিতেছেন তাহাদিগের শকা অমূল্য  
তিনি বলিয়াছেন “এই সকল ঘটনার  
যনা হইলে আমি পূর্বে জানিতে পারিন  
মূলভাসের যুদ্ধ ও বিজ্ঞানের পূর্বে ল-  
গবর্ণমেন্টকে সতর্ক করিয়া দিয়াছিলেন।

১৩ই আশাচ বৃহস্পতিবার।

সম্রাট ইংলণ্ড হইতে ১০০০ ব্যক্তি নি-  
জিলাও বীপে উপনিবেশ করিবার নি-  
প্রেরিত হইয়াছে। আর কয়েক সহস্র  
হাইবে। উক্ত বীপ শীঘ্র হুতন অবশ্য  
হইবে। উপনিবেশ : ইহা বিদ্যমান ই-



বিধিভীষ। কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই, উপ-  
বক্ষণকাহিনীদিগের আগমনে আধিদ্বিগের  
উ আরও হয়, পরিশেষে কোম কোম  
লে তাহারিগের 'সমূলে' উল্লম্ব হইয়া  
পাকে।

কাশীর নিবাসী জাকর নামক এক ব্যক্তি  
উত্তর রেসম প্রস্তুত করিতেছে। তাঁহার কে-  
বল বিস্তর উষ্ণিপোকা ও তুতগাছ আছে।  
রেসম চীন দেশীয় রেসম অপেক্ষা উৎকৃষ্ট।  
বিবিদ্যার উন্নতিকাবিনী সত্য তাহাকে  
এক রৌপ্যের বেতাল দিয়াছেন। চেষ্টা করি-  
ল এদেশেও রেসম উত্তম রূপে জন্মিতে  
পারে, কিন্তু চুংখের বিষয় এই আবাদিগের  
দীদারেরা কেবল "কর ৩ লটরাই বাস্তু,  
বিবিদ্যার উন্নতি তাহারিগের পক্ষে" পা-  
তাতের কাঠি বহা হইয়াছে।

বৌদ্ধাই গেজেট তত্ত্ব্য বানিজ্যের জীব-  
ন প্রমাণ স্বরূপ কহিয়াছেন বনিকদিগের  
দীর সংখ্যার অনেক হ্রাস হইয়াছে বখ :—  
পূর্বাভান বর্তমান  
দীর ..... ২ ..... ১৮  
মুসলিম নের ..... ৩ ..... ২৪  
হিন্দুর ... ১৫ ... ১২  
পারসীর ..... ২৬ ..... ৩০  
গজাল দেশীয় হিন্দুরা বৌদ্ধাইয়ের হিন্দু-  
দিগের অন্তর্ভুক্ত না করেন কেন?

পঞ্জাবের রেইলওয়েতে এডোয় (সি-  
য়ের) অগ্র ১ল হওয়াতে গবর্ণমেন্ট মোটের  
এডো দিয়াছেন। উক্ত রেইলওয়ে : ৮১০  
অন্দের অক্টোবর মাসের মধ্যে সম্পূর্ণ হইবে।  
এদেশে কাঠের এডো আশ্রিত মাত্র থাকে।  
অন্তএব মোটের এডো গৃহস্থের করা মঙ্গল হয়  
নাই।

ইংলণ্ডীয় এক পানি নিবিশাং সংগঠে  
লিখিত হইয়াছে, পূর্বে এদেশে বাঙ্গালি নিবিশাং  
বিজ্ঞান নবিশেষ অনুশীলন ছিল। তৎকালে  
অন্য বিষয় অঙ্গ হইয়া আশ্রিত পূর্বে  
সম্পূর্ণ ছিল না। রাজ, নাপদার, হুজুর  
সকলের কাজ পৃথক পৃথক ছিল। তৎ  
কালের পূর্বাভান অবস্থায় অনুশীলন করিলে  
অনেক বিষয়েই উৎকর্ষ লাভ হইত।  
চিরপরাধীনতাই ক্রমে সকল গ্রাম করি-  
য়াছে।

বিচারপতিগণে বারিষ্টার মিথোপের  
রোগ প্রবল হইয়া উঠিয়াছে। ইংলিসমানের  
একজন পত্রপ্রেরক বলেন, তৎকালে একদে  
বে হুতন রেকর্ড আদালত হইত। বারিষ্টার  
ব্যতিরিক্ত অন্য ব্যক্তি তত্ত্ব্য জজ, উকীল  
প্রভৃতি হইতে পারিতেন না। গবর্ণমেন্টে যদি  
একদা প্রতিজ্ঞা করিয়া থাকেন, তবে কি  
অন্য এদেশে একটি ব্যবস্থা। বিদ্যালয় স্থাপিত  
না হয়? প্রতিযোগিতা থাকিলে এদেশীয়দি-  
গকে কোন বিষয়েই বঞ্চিত থাকিতে হইবে  
না।

মুসলিম নগর জমখা একটি বহু বন্দর হ-  
ইতেছে। রেবুন টাইমস্ পত্র তত্ত্ব্য বানি-  
জ্যের নিম্ন লিখিত হিসাব প্রকাশিত হইয়া-  
ছে:—

আমদানী ..... ৮২,৩৬,০০০  
রপ্তানী ..... ৭৮,১২,০০০

মোট ..... ১,৬০,৪২,০০০  
ইহার মধ্যে কাঠ ও শস্যের রপ্তানী অধি-  
ক হইতেছে।

ঠাকুর শিববল সিংহ কিয়দ্বিগ পূর্বে অ-  
বোধ্য একজন অবৈতনিক সহকারী কমিস-  
নার হইয়াছিলেন। সম্প্রতি ভারতবর্ষীয় গব-  
র্ণমেন্টে তাহাকে অগ্রপুরুষ বোধ করিয়া পদ  
চ্যুত করিয়াছেন।

ডাক্তর টমসন নামক একজন ফিরিজি ও  
আমদান নামক একজন হিন্দু চিকিত্সা চিকিৎস-  
কের পদপ্রার্থী হইয়া নাজাজ হইতে টোল  
শে গিয়াছিলেন, কিন্তু গবর্ণমেন্টে বিপরীত  
অন্যায় আঁজা দেওয়াতে তাঁহারা ভারতবর্ষে  
প্রত্যাগমন করেন। নাজাজের গবর্ণমেন্টে তাঁ-  
হাদিগকে বিনা পরীক্ষার সব আনিটোকে পর-  
জন করিয়াছেন। ইহা অনুগ্রহ নহে।

করাচির জেল দারোগা কিনারলি ৫০০  
টাকা তহনপ করাতে তাহার বিচার হইয়া  
দোর মপ্রমাণ হয়। জরিয়া এই বলিয়া তাহা-  
র প্রতি ক্রমার অনুপ্রোথ করেন যে তাহার  
প্রশ্নভর কর্মচারীরা পায় হিসাব পাত্র হুটি  
কসিতেন না বলিয়া তিনি মোক্ত সপরাণ কবি-  
তে পারেন নাই। তিনিই তাহার এক বৎসর  
কঠিন পরিচর্য সহ কারাগারের আদেশ হই-  
য়াছে। তবে চোরের ও সলিতে পারে আ

বাদিগের মোক কি? হুজুর অনাবধান ছিল  
আমরা মোক্ত সপরাণ করিতে পারি নাই  
হিন্দুজরিগণ একথা বলিলে জীহ্বিক-রীতি  
দল লাকাইয়া উঠিতেন।

হায়দরাবাদের নবাবের মন্ত্রী সালারজ-  
উল্ল নগরের পুলিশ, দেওয়ানী ও কোজদারী  
আদালতের সংশোধন করিয়াছেন। তিনি  
বিদ্যা শিক্ষার জন্য এক সভা নিযুক্ত, একটি  
চিকিৎসালয় ও একটি চিকিৎস; বিদ্যালয় স্থা-  
পন করিয়াছেন। সালারজ ও দিনকর রাও  
কোন ইউরোপীয় রাজার মন্ত্রী হইলে টালি  
রাও ও পামবর্ডনের ম্যাক বিখ্যাত হইতে  
পারিতেন।

মাতলায় মিউনিসিপাল আইন প্রচলিত  
হইয়াছে। ২৪ পরগণার মাজিষ্ট্রেট লিওনার্ড  
কিলবরণ, সিলার ও কম্পারো সাজেবের  
ও বাবু রামগোপাল ঘোষ এক সভা স্বরূপ  
নিয়োজিত হইয়াছেন।

আমরা ভাবিয়াছিলাম, লার্ড কানিং প্র-  
টেস্টামেন্টের প্রদত্ত নীলপ্রদান প্রদেশের ক-  
সংগ্রহ বিষয়ক প্রস্তাবের পাইয়া ক্ষান্ত হইতেন  
ন। সম্প্রতি প্রকাশিত হইয়াছে তুতপূর্ণ ন-  
বর জেনরল প্রটেস্টামেন্টের নিকট 'অগাধ্য'  
তার 'এক বৈকি' চাফেন প্রটেস্টামেন্ট  
তত্ত্ব্যের লিপিকাফে। তিনি ভারতবর্ষীয় গব-  
র্ণমেন্টে প্রতি অগ্রস্ত; প্রকাশ করিয়া কোম  
পত্র 'জন্ম' নাই। উক্ত গবর্ণমেন্টে তাহা  
যাহা বলিয়াছেন তিনি তাহা 'ক' করিয়াছেন  
নিশেনতঃ 'ন' স্তলে উক্ত গবর্ণমেন্টের নতুন  
'অন্য' হইয়াছে তথায় তিনি ভারতবর্ষীয়  
গবর্ণমেন্টের আজাই সাংখ্যানে প্রতিপাদন  
করিয়াছেন। তথাপি বক্তব্যবাসীরা লার্ড  
কানিংকে এক প্রস্তাবময়ী প্রতিমূর্তি ও রন-  
দিগের উদ্ধার করাকে এত চিত্র পট দিলেন।

কড়াইয়ের লুটের জন্য শিক্রীত হইয়া  
৫০০০ টাকা লুট হইয়াছে, এক একটি আ-  
বদী মোক্ত ৫ টাকায় বিক্রীত হইয়াছে।  
পাতিদালার রাজা ও কাশীর এক জন মন্ত্রী  
'অধিকাংশ প্রব' জগ কহিয়াছেন।

লেপ্টনেন্ট গবর্ণর অন্য তত্ত্ব্যপূরে গ-  
করিয়াছেন।

মাজাজ টাইমস সম্পাদক বলেন হায়দ-  
রাবাদের নবাবের বাগীতে প্রতিমাসে দুই

হয় টাকার বরক খায় হয়। তথাপি ন্যায়ের শরীর শীতল থাকে না কেন?

কেন? অব ইতিহাস বলেন, জন রক্তের বর্ণ-নী হওয়া অন্যায় হয় নাই। এতদেশীয় সং-বাদ পত্র সকলে উক্ত ব্যক্তির বিষয়ে বাহা লিখিত হয় তাহাতে উক্ত সম্পাদক লিখিয়া-ছেন = তাঁহার (এতদেশীয় সম্পাদকের) যথার্থ পৌত্তলিকের ন্যায় কার্য্য করিয়াছেন। এতদেশীয়দিগকে কথার কথায় হত্যার কথা খতিয়ানের কথা। সেই হত্যাকারীকে বাঁচাইবার চেষ্টা করাও খতিয়ানের অলঙ্কার। পু-স্তক খণ্ডের যদি এই ব্যাখ্যা হয়, তবে পৌ-ত্তলিক ধর্ম্মই ভারতবর্ষে থাকুক।

১৪ই আষাঢ় শুক্রবার।

গবর্ণমেণ্টে উত্তর পশ্চিমাতলে চল লক্ষ টাকার পটনা প্রেরণ করিয়াছেন।

আমরা শুনিলাম জুলাই মাসের আরম্ভে বর্জমানের একটি ওকালতী পরীক্ষা হইবে।

শুনা গেল হারদরাষাতের নবাতকে হুতন রৌন দিবার সময়ে তদ্রূপ রেন্ডিঙে কণেল ডেবিডসন ও ৪ জন আফিসর জুতা ত্যাগ করিয়া সত্য বাওরাতে গবর্ণমেণ্টে কর্ণেলকে ভৎসনা করিয়াছেন। কের জুতা পড়ে দিয়া না গেলে তরকার খায়। জুতা পায় দিয়া গেলে লিষ্ট হইতে কাহার বা নম কাটা হয়। ক পক্ষপাত।

মাস্ত্রাজ টাইমস সম্পাদক করানী উপনি-বেশে কুলি লইয়া যাইবার পুনর্বার প্রতিবাদ করিয়াছেন। এ বিষয়ের অগ্রসর না হয় কেন?

কোচিন কুবিয়ার পত্রে লিখিত হইয়াছে, টাইমসের রাজা খীর রাজ্যে গবর্ণমেণ্টের হুতন নোট এচলনের আত্মা দিরাছেন।

উত্তরান বিকল্পার বখাৰ্হ বলিয়াছেন নি-শ্বাস বহিষ্কৃত প্রাণ। (মন রোগসেন) অতিজ-দন। কন্মচারিগণ ভাল হইলে কতক সুখ হয়, নচেৎ এই প্রাণালী দ্বারা লোকের কেবল ক্ষতি। আমরা কয়েক মাস পূর্বে ইহার প্রতি-বাদ করিয়াছিলাম।

উক্তপত্রের একজন পত্রপ্রেরক চাকার বি-বা বিস্ময়ের উদ্যোগী ও প্রতিজ্ঞাপত্র বা-পরকারীদিগের কার্য্য বিবরণ আনিতে ইচ্ছা

হইয়া লিখিল। করিয়াছেন, ইহার এত আ-ত্মবর করিয়া শেষে কি করিলেন? এদেশের লোকেরা এককল বিষয়ে বা করিয়া থাকেন। কলার বদল হইবার ভয় বড়।

১৫ই আষাঢ় শনিবার।

আমরা শুনিয়া অতিশয় দুঃখিত হইলাম অন্য বেলা মশটার সময় মাতলা রেইলওয়ের পিরামির পুলের কিয়দংশ ভগ্ন হইয়া কতক গুলি হত ও আহত হইয়াছে। শুনা বাইতেছে হত্যের সংখ্যা দশ ও আহতের সংখ্যা দুই। পিরামির পুল মাতলা রেইলওয়ে কোম্পানি-কে বাতিবাস্ত করিয়া কুলিয়াছে।

পাঠকবর্গ ইউরোপীয় সভাচারে দেখিবেন কারুলের যুদ্ধে হস্তার্পণ করা লার্ড পামরটনের আওপ্রস্ত নাই।

বোম্বাইয়ের অতিশয় বড় হইয়াছে।

কিনিসের আলোহাবাদের সংবাদদাতা বলেন তথায় কয়েক ব্যক্তি অলঙ্কারের লোভে একটি বাসকের প্রাণ বধ করিয়াছে। এই অ-নিষ্ট প্রায়ই ঘটয়া থাকে, তথাপি এ দেশেরে-র। সন্তানকে অলঙ্কার পরাইতে ছাড়েন না।

উক্ত সংবাদদাতা বলেন তদ্রূপ গবর্ণ-মেণ্টের ছাপাখানার ব্যয় সংক্ষেপ করা হই-তেছে। যে সকল লিখ প্রাক্কর প্রভৃতিকে গব-র্ণমেণ্টে কলিকাতা হইতে লইয়া যান, তাহাদি-গের কি উপায় হইবে?

টাইমস অব ইতিহাস পারিসহ সংবাদদা-তা বলেন, গিরাত নামক এক জন ইকিনিয়া-র কেবল জল। রা রেইলওয়ে শবট চালাইতে-ছেন। করানীসরাট ইহা চর্চন করিয়া অতিশয় আলাপিত হইয়াছেন। এতদ্ব্যতীত সামান্য পল-রেইলওয়ের নাম গাতি চালাইতে পারিলে চর্চন লাভের সবিশেষ প্রতিমা প্রকাশ পায়।

উক্তপত্রের লণ্ডনস্থিত সংবাদদাতা বলে-ন ইংলণ্ডে ক্রমে সপ্তম ১১০০০০ বলাচি-র টেমিক হইয়াছে। ভারতবর্ষের বলাচিরেরে-রা কেবল সাধারণ মস্তাগার মন্য করিলেন।

অন্য পূর্ববঙ্গালার রেইলওয়েতে পরী-কণ্ড বাম্পীর শবট রাখাঘাট পধাতু বাইবে। বাম্পীর শবট হইখানি, প্রথম জেনির গাড়ি ও এক খানি দ্রব্যের গাড়ি গিয়াছে। কয়েক জন ইকিনি-র আরোহী হইয়া গিয়াছেন।

পুন্ডার পূর্বেই সাধারণ বাইকে পারিলেন।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেণ্টের কাগজ বিক্রীত হইতেছে:—

|                  |            |
|------------------|------------|
| ৪টাকার সিকা      | ৩১ ১ ৩১১০  |
| ৪টাকার কোম্পানির | ৩০ ১ ৩১১০  |
| ৫টাকার ঐ         | ১১২ ১ ১১২৫ |
| ৫। টাকার ঐ       | ১১৩ ১ ১১৩৫ |

শুভকরী পত্রিকা হইতে উদ্ধৃত।

গত বারের শেষ।

ইউনাইটেড এন্ট্রি-সু—কালি—সু।

কলিকাতার সিং প্রদেশের একজন সভাতে কোন সময়ে এই প্রস্তাব হইয়া ছিল যে, কান-নকে উত্তম রূপে আচারাদি প্রদান করিয়া অল্প পরিমাণে কর্তৃক রাখিলে অধিক লাভ হয় না; অত্যা অচার দিয়া দিয়া রান খাটাইয়া সাতু আট বৎসরের মধ্যে উহারের আত্মশেখা করিয়া দিলে অধিক লাভ হয়। সত্য মহাপরোয়া নান প্রকার তর্ক বিতর্ক করিয়া পরিশেষে এই স্থির করিলেন যে, শেখরই অপেক্ষাকৃত লাভজনক সুতরাং ঐ করাই পরিগ্রহীত হইয়াছে।

যে সময় এদেশে চিনি ও তুলা সম্ভার, সে-খানকার দাসেরা প্রায় এতাহ ১৫। ১৬ বর্গী কর্তৃক করিয়া থাকে। এবং সময়বিশেষে তাহা-দিগকে সমস্ত দিন ও সমস্ত রাত্রি কর্তৃক করিতে হয়। কলতা সুনিয়ামা তিন অন্য কোন এদে-শেই সময়ের নিয়ম নাই। অন্যায় এদেশের এতুর। ইহা করিলে যতদূর দান বৃত্ত হইয়া ভূমিতে পতিত না হয়, ততদূর পর্য্যন্ত কর্তৃক করিতে পারেন। সময় সুনিয়ামার নিয়ম এই যে, দিবা রাত্রির মধ্যে দাসকে ২৪ বর্গী বিপ্রান করিতে দিতে হইবে।

যদি দাসের কোন প্রকার জটি হইল তবে তাহাকে তদানন্তর বড় ভোগ করিতে হয়। কখন বা হস্তে রক্ত বাজিয়া কুলাইয়া রাখা হয়; কখন বা নগ্ন করিয়া কশাঘাত করা হয়, কখন বা উপুড় করিয়া কেলিয়া হস্ত পদ নোঁজে বাজিয়া ঘোষী ব্যক্তির পুত্র কি জাতীয় কর্তৃক আহত করা-ন হয়; কখন বা ছুরিকা দ্বারা অঙ্গ চিরিয়া দে-ওয়া, কখন বা পিষ্টন দ্বারা গুলি মারা কখন বা ক্ষোখাচিত বিড়াল দ্বারা গাভ কত বিকৃত করা, কখন উত্তম সৌহ দ্বারা গাভে দাগ দেও-রা, ইত্যাদি অভাবনীয় তদানন্তর লাভি দাসদিগ-কে ভোগ করিতে হয়। অল্প প্রত্যক্ষ ভগ্ন দত্ত উৎ-পাতিত, কর্তৃক হিগ, ইত্যাদি ব্যাপার ত সর্বদাই



জা থাকে। গত বর্ষা জীলোকেরও এরূপ শাস্তি  
হইতে তাণ পাইবার বিবরণ নাই। ভক্ততা সংবাদ  
এই মতো মতো বেরূপ বিজ্ঞাপন একাধিত  
হইয়া থাকে, তাহার দুই একটি উদ্ধৃত করা বা-  
তেছে। পাঠকবর্গ তদ্বারা দাসবিবরণের দুর্বস্থা-  
বিবরণ সহজেই অবগত হইতে পারিবেন।

“আমার দাসী নাম—পলায়ন কবিয়াছে।  
তার কর্ণ ও থলদেশে কশাখাতের, বিলক্ষণ  
হইয়াছে।”

“আমার দ্বিতীয় কন্যার নাম পলায়ন করিয়াছে,  
ক জনের পৃষ্ঠদেশে কশাখাতের বিলক্ষণ চিহ্ন  
হইয়াছে, ও ও চিবুক বিলক্ষণ কত।”

“আমার ত্রিভুজ নাম পলায়ন করিয়াছে।  
ক জনের কর্ণ নাই, এক জনের একটি চক্ষু  
হইতে ও এক জনের হস্ত ওগ।”

উক্ত কারোলিনার একটি নিয়ম এই যে,  
দাসকে লেখা পড়া বিধাইলে কি কোন পুস্তক  
পড়িতে দিলে ওই ব্যক্তির দুই শত ডালর অ-  
রিমানা ও কাকির কারাবাস হইয়া থাকে।

দাসবিবরণ অবস্থার বিবরণ্য আর অধিক লি-  
খিবার স্থান নাই; অতএব এখানে একটি অত্যন্ত  
শোচনীয় বিবরণের বর্ণনা করিয়া কাঁড় হই।

—এক ব্যক্তি লুসিয়ারা প্রদেশে গিয়া সচা-  
বায়ের লোকে বেরূপ করিয়া থাকে, অনেক কণ  
করিয়া চান কর্ণে প্রহৃত হইলেন, বৎসর ২ বে-  
রূপ উপার্জন হইত, তৎকালীন উত্তমবর্গের ঘর  
পরিপোষ করিতেন। তিনি তদন্ত আর একটি  
সাধারণ গ্রামে অবলম্বন করিলেন—একটি কাকি  
বংশোদ্ভব জীলোকের সহিত প্রণয় করিলেন।  
দেশীয় নিয়মামুসারে গুত্র কার ব্যক্তির সহিত  
কাকিগ্রন্থ জাত কন্যার বিবাহ হইতে পারে না,  
অতরাং আইন অনুসারে সেই কামিনী তাঁহার  
বিবাহিত পত্নী স্বরূপ হইলেন। কিন্তু নার ও  
যুক্তি মার্গ দুদ্বারা তিনি তাঁহার সহস্বর্গিনী হি-  
লেন। ঐ জীলোকটি বুদ্ধিমতী, প্রসঙ্গী, জ্ঞান  
সম্পন্ন ও ধার্মিক ছিলেন। তাঁহার দুই জনে  
পনম সুখে বিবাহিত বৎসর কাল তত্ত্বাবধিত  
করিলেন। ঐ জীলোকটির বর্ণে কৃত্যব্দের বেশ  
দায়ক ছিল কি না, সন্দেহ, কিন্তু তাহার কাকি  
গ্রন্থ হইতে উক্ত, অতরাং তাঁহার সন্তান সন্ত  
কিরা দাসত্ব-স্বত্ব নাই, ও যুক্তি পাইতে পারে  
না, এই শব্দ করিয়া জীলোকটি আধীনতা প্রা-  
প্তির জন্য আদীকে সর্বত্র অগ্ররোধ করিতেন।  
আদী আজি কাল করিয়া উদাস, করিতেন।  
অবশেষে তিনি কন্যা রাখিয়া দুই জনেই  
হৃত্য হইল। কন্যা তিনটি পুত্র সুন্দরী ছিল;

একটির বয়স ১৫, একটির ১৭ ও একটির ১৮ বৎ-  
সর। মৃত ব্যক্তির আত্ম উদ্ধারের ঐলত্বক বিব-  
রণের বন্দোবস্ত করিতে আইসেন। তিনি জাত-  
কন্যাদের বিদ্যা বুদ্ধি দেখিয়া অত্যন্ত সন্তো-  
ষিত হইলেন এবং অতির কাল মধ্যে তাহাদিগকে  
যথোপযুক্ত সমায়ে লইয়া বাইবেন, এমন আশা  
হিলেন। মৃত ব্যক্তির অত্যাচার বর্ণ ছিল। উত্তম  
দ্বিগের নিকট মৃত অধমর্গের গাভীর বিষয়ের  
কর্ক দিবার কীতি ছিল; অতরাং তিনি তাহাই  
করিলেন। কোন, উত্তম আনিয়া কহিল যে,  
তিনি সমুদায় বিবরণ উল্লেখ করেন না—তি-  
নি দাসের প্রকৃত সংখ্যা প্রদান করেন নাই,  
তাঁহার জাতকন্যাদের বান দিয়াছেন। এই কথা  
শুনিয়া তিনি বস্ত্রাহতের নায় শুক হইয়া রচি-  
লেন। অনন্তর তিনি সমুদায় উত্তমর্গের বাবের  
গিয়া বিনীত ভাবে করুণা উদ্বেগ করিবার চেষ্টা  
করিতে লাগিলেন, কিন্তু সেই পাদাণ হৃদয় ব্য-  
ক্তিরা কহিল “আমরা এমন বহু সুখ্য জন্ম  
হাড়িয়া দিতে পারি না।” তখন তিনি জাত-  
কন্যা ওলির পরিবর্তে তাঁহার প্নিজের সমুদায়  
সম্পত্তি দিতে চাহিলেন এবং বলিলেন “হা-  
বিন ক দাসী কবিবার জন্য লোকে যত সুখ্য  
দিতে চাহিবে, আমি তদপেক্ষা অধিক দিতে-  
ছি আপনারা ঐ ওলিকে পরিভাগ করুন।”  
তাঁহারা উত্তর কবিল, “উহারা দাসত্ব তিন  
অন্য কর্তৃক বিশেষের উপযুক্ত, তাহাতে নিয়ো-  
জিত করিলে বহুতর লাভ হইবে।” তখন  
তিনি হত্যা হইয়া মনে মনে বিবেচনা করি-  
লেন যে তাহা অস্বাভাবিক করা অপেক্ষা উহা-  
দিগকে বিনাশ করাই ভাল। অবশেষে জাতক-  
ন্যাদের অধীনে কি আছে তাহা তিনি হঠাৎ  
তাঁহাদের সমক্ষে ব্যক্ত করিলেন। শুনিবারাত্র  
তাঁহাদের যে কি হইল তাহা জান কি বলিব।  
তিনি বলিয়াছেন যে কানাকে শোক বজ্র, কা-  
তাকে আর্ন্তমাদ বলে উতি পূর্বে তিনি তাহা  
অবগতই ছিলেন না। তাঁহারা সেই অবধি আ-  
হার নিজে পরিভাগ করিল এবং বিক্রয়ের  
সময় পর্যন্ত এক-বহু ও পরস্পর চক্ষু অন্তরা-  
ল হইল না। অবশেষে মিউ অর্লিয়ন্স বিপ-  
ণিতে তাঁহারা অত্যন্ত সুখে অবস্থায় উদ্দেশ্য  
গাধনাথে জীত হইয়াছে, এখন তাঁহারা কো-  
থায় কেহই জানে না, কিন্তু এক দিন অবশ্যই  
তাঁহারা পরস্পর সমীপে উপস্থিত হইয়া এই  
পদ্যের আশায়ের সাক্ষ্য দিবে।”

যে যে প্রদেশে দাসব্যবসার প্রচলিত  
আছে ও যে যে প্রদেশে প্রচলিত নাই তাহা

পূর্বেই উক্ত হইয়াছে। এক্ষণে সংক্ষেপে এই  
বলা বাইতেছে যে উক্তর মধ্যে দাসব্যবসার চ-  
লিত নাই; দক্ষিণ প্রদেশে আছে। আধীন প্রদেশ-  
শে (উত্তর প্রদেশ) বসতি প্রায় ১২ ০৩৬১৭৩, দাস  
প্রদেশের বসতি আধীন ৮ ০৬২ ৪৭০, দাস ৩,৯৯  
৯,৩৫৪ জুলায়ে ১২,০৬২,৩২৬, উত্তর প্রদেশ  
পরিমাণকল ৩১২,৫২৭ বর্গ মাইল অর্থাৎ ইংল-  
ও ও ক্রীস একত্রিত হইলে মত হয় তাহার বি-  
ও। এই ক.ণ এই দুই প্রদেশ পৃথক হইয়া পরস্পর  
যুক্ত করিতেছে, উত্তর প্রদেশ প্রেসিডেন্ট লিন্কে-  
লন, দক্ষিণ প্রদেশ প্রেসিডেন্ট ডেভিস। যুক্তের  
কাণ নিম্নে প্রদর্শিত হইতেছে।

যদি এক দেশের মধ্যে পরস্পর তিন গতাগলদ্বী  
দুই প্রদেশ থাকে তাহা হইলে সে রাজ্য  
কখনই স্বশাসন থাকে না। দক্ষিণ দেশের লোক  
এরূপ দাসব্যবসার অনুবর্ত্ত যে ঐ এখার বিপ-  
রীত কথা শুনাবার অর্থন খুদুগহুত হইয়া  
উঠে। যদি এই প্রদেশটি ইংল্যান্ডের লেখ-  
ত হইত আর যদ ঘটনাক্রমে প্রস্তাবলৈখক  
দক্ষিণ প্রদেশ উপস্থিত হইতেন তবে তাঁহার ঐ  
সংগত হইত সন্দেহ নাই। দাস ব্যবসায়ের বি-  
ক্রম এক খানি গ্রন্থ প্রকাশ করাতে চেঞ্জের  
যে দুর্গতি হইয়াছিল এরূপে দাঁড়া শ্রবণ করা  
কর্য। চেঞ্জের একজন দাঁ কথাতা লেখ, তিনি  
অনেক বিবেচনা করিয়া দিব করিয়া হলেন যে  
দাসব্যবসার প্রচলিত থাকিতে দক্ষিণ প্রদেশ  
কখনও অধীনতা চাইতেছে। তিনি উক্তরূপে প্র-  
ণয় দর্শাইব। ছিলেন যেখানে দক্ষিণ প্রদেশ  
পক্ষ, কৃত উত্তর প্রদেশের অবস্থিত ছিল, কিন্তু  
দাসব্যবসার উত্তর প্রদেশে জীলোক হইয়াছে  
আর দাস ব্যবসার প্রচলিত থাকিতে দক্ষিণ প্রদেশ  
কখনও জীলোক হইতেছে। দাস ব্যবসার বিরুদ্ধ  
গ্রন্থ প্রচার করাতে দক্ষিণ প্রদেশ লোকেরা ঘে-  
ররকে মহানতাব মধ্যেই অপমান করিয়া চ-  
লেন। যদি এক দাসদেব বিক্রম কোন কথা ক-  
হে তবে তাহাকে এই বলা হয় কুমি একব  
দক্ষিণে গমন করিলে আর মাথা বাঁচাইয়া  
রিয়া আনিতে পারিবে না। এদিকে উত্তর প্রদেশ  
র লোকদিগের দাসব্যবসায়ের প্রতি আধীন  
যেন বিবেচন। যখন একটি মৃত্যু প্রদেশে  
মৃত হয় তখন সেট নবজন্ম প্রদেশে দাসব্যবসায়  
প্রচলিত হইলে কি না ইহা লইয়া বিবরণ  
যথোপযুক্ত হইয়া উঠে। মিত্র  
যুক্ত করিবার সময় বিবাদের ক্ষুদ্রপাত  
সেই অবধি দুই পক্ষে ঘোরতর বিবাদ হইতে  
ছিল। কখন বা এক পক্ষের জয় কখন বা

সহকারী অধ্যাপক হইবেন ।  
কালিদাসপুরের মুনসেফ হানু গোপীনাথ  
১৯৫২ অব্দের ১০ জাইনের ১৫০ ধারায়





# সাম্প্রকাশ

“স্বর্গলা মজনিহিনাষ পার্থিবঃ ধরন্তী যুতিমহতী ন দ্যায়না।

ন. ক. গ.।  
১৩ নং বা।

সন ১২৬২। ২৪ আষাঢ়। ইং ১৮৬২। ৭ জুন।

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

সাম্প্রকাশ পুস্তকের মিনিংবুক (অর্থসহ) প্রস্তুত  
করিয়া প্রস্তুত করিয়াছি। মূল্য ১০০ আনা।  
প্রত্যেক প্রয়োজন হইলে, তিনি আমার নিকট  
সমস্ত কলিকাতা প্রেসিডেন্সি এলাকা  
সিটিজেন পাউন্সন  
বটবসপুর কলেজ।  
১৩ আ. ১৩ নং ১৩৬২।

ক্রীতদ্রব্যে কল্যাণ দে

## সোমপ্রকাশ।

১০০ আনা সোমবার।

৫ গুলীর জুরি ও নরবলি।

কয়েক সপ্তাহ অবধি জগলীর নর  
বলি প্রসঙ্গ লইয়া তুলুল আন্দোলন হই  
তেছে। ইংরাজী সম্পাদকদিগের অনে  
কে বাস্তবিক বোধ করিয়া ইহাতে প্রত্যয়  
করিতাছেন। তৎসংক্রান্ত মকদ্দমায বাঁধা  
জুরি হইয়াছিলেন, তাহাদিগের প্রতিশোধ  
রোপ করা হইয়াছে। কিন্তু বাস্তবিক এ  
ঘটনা হইবার এবং জুরির বিচারে দোষ  
থাকবার সম্ভাবনা আছে কিনা, তাহার বি  
বেচনা করিয়া লোকের মনে যে অযথা ভুল  
সংস্কার জন্মিয়াছে, তাহার দূরীকরণ মিডা  
স্ত আবশ্যিক। জগলী কলিকাতার অধিক  
তর দূরবর্তী নহে। উহা নবমণ্ডলের চন্দ্র  
উপরে রহিয়াছে বলিলে হয়। বিশেষতঃ  
ঠগী মাজিষ্ট্রেট ও ডাকঘর কমিসনার  
জগলী ও বর্ধমান প্রভৃতিতে যে প্রত্যাপ প্র

কাশ করিয়াছেন, তাহা তথ্য লোকের  
আজিও বিশ্বস্ত হয় নাই, বিশ্বস্ত হইবার  
সম্ভাবনাও নাই। একপাশে আজি  
কালি নরবলি দিবার ইচ্ছা। অন্যপাশেও  
কি কাহার মনের মধ্যে উদ্ভিত হওয়া  
সম্ভাবিত হয়। যাহা হউক, একপাশে উহার  
আনুপূর্বিক বৃত্তান্ত পাঠকগণের গোচর  
করা হইতেছে পাঠকগণ! উহার তথ্য  
তথ্য নির্ণয় করিবেন।

জাহানবানে রামেশ্বররায় নামে এক  
জন মক্কাপ বাস করে। উহার কিঞ্চিৎ ভূ  
সম্পত্তি আছে। তালুক (যেমন আমা  
দিগের কুমিলার ও তালুকদারগণের ম  
চরাচর হইয়া থাকে) প্রতিবাসিগণের  
সহিত তাহার সর্বদা বিবাদ বিসম্বাদ হইয়া  
থাকে। সে নিজেও ভাল মানুষ নহে।  
কয়েকবার তাহার নামে নালীশ হইয়াছিল,  
তাহার দ্বারা গুরুতর পাপ জিয়ার অনুষ্ঠান  
অসম্ভাবিত নয়। কিছু দিন হইল, কয়েক  
ব্যক্তি একপদ্রামর্শী হইয়া বৈরসাধন ক  
রিবার উদ্দেশে জগলীর ডাকঘর কমি  
সনার নিকটে এই বলিয়া নালীশ করে যে  
রামেশ্বর একটি বিশ্ণুভক্তিযুগলকে  
আপনার প্রতিষ্ঠিত কালীর নিকটে নরবলি  
দিয়া তাহার দেহ অর্ঘ্য বধ করিয়া মিক্কে  
প করিয়াছে। কমিসনার তৎক্ষণাৎ তাহা  
র বাটীতে যাইয়া তাহাকে ধৃত করিয়া  
সেনিয়রে সমর্পণ করেন। এখানে ইহার  
উল্লেখ করা আবশ্যিক যে তাহার কালীর

নিকটে যুবকের ছিন্ন মস্তক পুঁজি হয়। রামে  
শ্বরকে চন্দ্রবিজয় বলিয়া পূর্বে জনের সংস্কা  
র জন্মিয়াছিল; একপাশে এই অপবাদ অবধি  
ও তাহার দেবী পুঁজে ছিন্ন মস্তক বর্ধন করিয়া  
তাহাকে অপরাধী বলিয়া প্রমাণ করিল,  
এবং জুরির নিকটে প্রমাণের অনুবর্তন  
মকদ্দমার অবস্থা বর্ণন করিলেন।

রামেশ্বরের বিপক্ষে যাকার সাফা  
দিত আইনে, তন্মধ্যে যে ব্যক্তি প্রধান,  
সে বলিল, এই টেক্সট অমাবস্যা আর  
বাতি ৮:০ ঘটিকার সময়ে রামেশ্বর বি  
শ্ণুভক্তিযুগল একটি যুবককে নরবলি দিয়াছে।  
জুরিরা জিজ্ঞাসা করিলেন “কুমিলার  
রেজামিনে ১০ সাকী বলিল” অর্থাৎ ঘটনা  
বর্ণন করিয়াছি? সে আরও বলিল, যে  
আমি দেখিয়াছি (১২০ হাত) দূরে কুমিলার  
হিলাস, যেখান হইতে রামেশ্বর এক হস্তে যুব  
ককে ধরিয়া অন্য হস্তে তাহার শিরশ্চ্যবন  
করিতাছে। ১০ কিন্তু জুরিরা পত্রিকা আম  
ইয়া দেখিলেন এই টেক্সট অমাবস্যা নহে  
অপর, অমাবস্যার রাত্রি, যোরতর অ  
কার, ১২০ হাত দূর হইতে সহস্রার নি  
ক্ষণ করা কি সম্ভাবিত হয়। সাকী বলে  
রামেশ্বরের নিকটে প্রদীপ ছিল না  
বিশেষতঃ বিশ্ণুভক্তিযুগল যুবককে রামেশ্বর  
এক হস্তে ধরিয়া অন্য হস্তে বলি দিল! ১০  
গোলমোহ অবধি আশ্চর্য্যের চেষ্টা করি  
না। ইহা কখন সম্ভাবিত হয় না। অপর, বল  
কৃত ব্যক্তির মস্তক গোলাকারে ও কলু



বার দিন দুই হইল। এক হাফে ধরিয়া অপর হাফে ক্ষেদন করিলেন সেধপ-বইয়ার সম্মুখীন নাই। পক্ষান্তরে রামেশ্বরের পক্ষীয় সাক্ষীগণ বালু ভূমিতে সজ্জার সম্মুখীন হইল। এই প্রসব হইল; সে খাদী আনাইয়া অপনার অপর একটি সন্তান লইল। নিজ গুরু বসিয়া ছিল। তিন জন সাক্ষী এই কর্তব্য করিয়াছে। তাহাদিগের ভাবানবদ্বির কোন বৈলক্ষণ্য হয় নাই।

একপ স্থলে কোন্ জুরি এই ব্যক্তিকে অপরাধী বলিতে পারেন? জুরি কর্তব্য কর্তব্য কি? ইউরোপীয় প্রধান প্রধান ব্যবস্থা পক্ষে বলিবাচ্ছেন "জুরি সাক্ষীগণের ভাবানবদ্বির অনুসারে আশ্রয় প্রকাশ করিবে"। অপরাধী ব্যক্তি অপরাধ হইল প্রকারে সম্মান হইতে পারে, এক, ধর্মীয় ভিত্তি অনুসারে; দ্বিতীয়, আইনের অনুসারে। আইনের অনুসারে যে ব্যক্তির অপরাধ সম্মান না হয়, বিচারপতি কখন তাহার আশ্রয় দিতে পারেন না! যদি এই নিয়ম চলে, তাহা হইলে জুরিদের জুরিদিগের কি দোষ আছে? তাহারা কি এক ব্যক্তির পূর্বকার চরিত্রের কথা শুনিয়া সম্মানবোধের সহিত ব্যক্তিকে তাহার আশ্রয় দিগের বিপরীত দিতে পারেন? অর্থাৎ তাহাদিগের নিকটে রামেশ্বরের দোষ সম্মান করিতে সমর্থ হইয়াছে বলা হইয়াছে রামেশ্বরের কালীন নিম্নে তিন মন্তক পাওয়া যায়। তাহাও প্রমাণিত হইল। তাহার ক্ষমতা ক্ষমতা লভিয়া তাহার ব্যক্তি নিকটে রাখিতে পারে না। সে সেদিন বালু ছিল। এক স্থলে ইহাও বিবেচনা করা আবশ্যিক। রামেশ্বরের যখন গোপনে নরবলি দিয়াছে বলিয়া কথা হইতেছে, তখন তাহা প্রমাণ হইলে বঙ্গদেশ হইতে হইবে তাহা। সে শাস্তি ছিল সম্মান নাই। তাহার একপ পক্ষীয় ছিল সে যে নরবলি দিয়া সেই দ্বিগুণ মন্তক ক্ষমতায় নিম্নে রাখিয়া দিল, অমো আশ্রয় অনুসারে সেখান গেল, ইহা কোন ক্রমেই

সম্ভাবিত নহে। এতদ্বারা স্পষ্ট প্রমাণ হইতেছে, তাহার বিপরীত হইতে তাহার অজ্ঞাতসারে একটা ঘটনা হইতে মনে হয়। যে ব্যক্তি গোপনে মনুষ্য ইত্যাদি রক্ত কাণ্ড করিতে পারিল, সে কি একটি মন্তক গোপন করিতে পারিত না বরিসালে একবার এই কাণ্ড এক ব্যক্তির প্রাণে হয়। সে কর্মীদ্বয়কে দণ্ড করিবার জন্য খাঁচা কান্ডার শিরশ্ছেদন করিয়া ইত্যাদি বলাই। ভূমিকারীর নামে অপরাধ হয়। আমরা শুনিয়াছি যুবকের স্বাভাবিক পীড়ার মত হয়, তৎপরে রামেশ্বরের বিপরীত হইয়া মন্তক ক্ষেদন করিয়া উল্লিখিত খাদী মন্দিরে লইয়া যাইল। পীড়ার মত ব্যক্তির শব্দ শইয়া বিপরীত দণ্ড করিবার কথা পূর্বে অনেক শুনিয়া গিয়াছে। আর দিন বৎসর হইল চলিয়া পরগণার মধ্যে এই কাণ্ড একটি ঘটনা হয়। তাহারা জুরি হন ও অপরাধীদের কর্তব্য কর্তব্য বুঝেন, তাহারা ইহা জানিতে পারেন জুরির কার্য কেমন গুরুতর। বিচারপতি বলিতেছেন বলিবাচ্ছে যে তাহারা এক ব্যক্তির প্রাণ দিগের আশ্রয় দিবে, একথা বলিবেন। পরমেশ্বরের নিকটে কোন ব্যক্তি তাহাদিগের জন্য দায়ী হইবে? পরিশেষে আমরা দিগের বক্তব্য এই যে একপ স্থলে জুরি দিগের জুরির বক্তব্য কথা অন্য সন্দেহ নাই। জুরিদিগেরও কর্তব্য তাহা। এখানের প্রতিবাদ করেন।

#### প্রধানতম বিচারালয়।

গত সোমবার অবধি সুপ্রীম ও সদর আদালতের একতা হইয়াছে। এই দিবসে বক্তব্যের গোপনে দ্বারা এই প্রধানতম বিচারালয় স্থাপন বাকী। সর্বত্র প্রচারিত হইতেছে। মঙ্গলবার ১৪ জন বিচারপতি গণনা হইতে দিগে যথাবিধি পথকনিয়াছেন। বাবুরমাওসাম রায় পীড়া বশতঃ প্রধানতম এই বিচারালয়ে প্রবেশ করি

তে পারিলেন না। আমরা প্রমাণিক লোকের নিকটে প্রবেশ করিয়াছি, ইংলণ্ডেরী এতদেশীয় বিচারপতি নিরোধেব তার গণনা জেনারেল হস্তে দিয়াছেন। সর্বশেষ ১৫ জন বিচারপতি নিযুক্ত হইবেন। ইংলণ্ডেরীর যত দিন ইচ্ছা, বিচারপতিরা নিজ নিজ পদে প্রতিষ্ঠিত থাকিবেন।

যে নিয়মে বিচারালয় স্থাপিত হইবে এবং যে সকল ব্যক্তি উচিত ওকালতি করিতে পারিবেন, তাহা আমরা পূর্বে লিখিয়াছি। আপাততঃ সদর ও সুপ্রীমকোর্টে যে দুই বাটা আদালত, সেই উভয় স্থানেই বিচারপতিরা বিচারকার্য নির্বাহ করিবেন। কলিকাতার ও মকদ্দমার ইউরোপীয় দিগের বিচার পূর্বের ন্যায় এখনও সুপ্রীমকোর্টে হইবে। যে সকল কাজ বাকী পাড়া হইবে সদর আদালত আপাততঃ তাহার নিষ্পত্তি ও আপীল প্রদান করিবেন। যত দিন একটি প্রথম বাটা প্রস্তুত না হয়, তত দিন এই কাণ্ড কার্য চলিবে। ইউরোপীয় ও এতদেশীয় উভয় জাতিতে এই আদালত একবিধ দেওয়ানী ও কোজদারী আদালত অধীন হইবে হইবে। এই সপ্ত উভয় জাতিতে এক বিচারালয়ের অধীনতা করা হইলেই ভাল হইত। এই বিষয়ের সুনির্দিষ্ট হেতু আমাদের কাছে কাল প্রতীক্ষা করিতে হইবে সন্দেহ নাই। প্রধানতম বিচারালয় ইংলণ্ডের আদালত অনুসারে দুই ধর্মাবলম্বিদিগের বিবাহ ও দাম্পত্যের পরস্পরকে পরিত্যাগ প্রভৃতি বিষয়ের বিচারাদি করিবেন। যে সকল কোজদারী মকদ্দমা প্রথমাবধি এই বিচারালয়ে হইবে, তাহার আর আপীল হইবে না। অধিক বিচারালয়ে দণ্ড হইলেও যে মকদ্দমা প্রধানতম বিচারালয়ের আদালত হইবে, ইংলণ্ডেরীর প্রিবি কৌন্সিলে তাহার আপীল চলিবে। দেওয়ানী বিষয়ে যে স্থলে ১০,০০০ মন হাজারের অধিক টাকার মকদ্দমা হইবে, সে স্থলে আপীল চলিবে।

ইহার অংশ টাকার মকদ্দমায় ও যদি কোর্ট  
ন বিচারে আইনের ব্যতিক্রম ঘটে অথবা  
আইনবোকেট জেনারেল ডাক্তার।

ডাক্তার হইলে ডাক্তার আপীল হইবে, আ  
পীল হইলে নথির সমুদায় মকল প্রেরণ  
করিতে হইবে। আর আর নিয়ম সকল  
সমান রহিল।

বিচারালয়ের কার্যের নিয়মাবলি এ  
স্বত্ব হইতেছে, তাহা প্রকাশ হইলে আমরা  
পৃষ্ঠবর্গের গোচর কবিত্তে ক্রটি করিব  
না। আদালতের দেশের আনন্দে শ্রদ্ধা ক  
রিয়াছিলেন, প্রধানতম বিচারালয়ে মক  
দ্দমা করিতে হইলে সুপ্রিমকোর্টের ন্যায়  
অধিক ব্যয় লাগিবে। কিন্তু আমরা স্মার্ট  
করে কহিতেছি যে কেবল স্ট্যান্ডিংয়ের  
শ্রদ্ধা মাত্র। এতদ্দেশীয় অনেক উকীল ও  
অধ্যাপক প্রবেশ করিতেছেন; প্রতিবৎসর  
অনেক বি, এল উকীল হইবেন। এমন  
কি অধিক ব্যয় হওয়া সম্ভবিত নহে।

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দ

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দে ইমামবাড়ী ও বদ।

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দে এক লজ্জাকর বা  
পার ঘটনা ঘটিয়া গিয়াছে। এক তত্ত্বলোক সমা  
রোধ করিয়া তখন। এমাম বাড়ীর নিম্নে  
নিম্নাধিকার করিতে গাইতেছিলেন। তখন  
শ্রদ্ধাশ্রী (এমামবাড়ীর কণ্ঠ) উচ্চ বা  
টীর সমুদয়ে বরষাভিগগকে বাদ্য করিতে  
নিষেধ করিলেন। তাঁহার। সে কথা প্রহা  
না বসাতে করেত জন মুসলমান আসির  
বদামারি করিল। বদ পাত্র পলাইয়া এক  
মিহের ঘুমে আজর প্রবেশ করিল। পরে  
ডাক্তার। এক শব্দেট করিয়া বাটীতে প্রত্যা  
গমন করিলেন। তখন মাঝিট্টের নি  
কটে এই বিষয়ে বালীশ হইয়াছে। ইহা  
কি কল হইয়াছে আমরা ডাক্তার নিম্ন  
দখল পাই নাই, কিন্তু আমরা এক প্রমা  
ণিক লোক মুখে জানিলাম, তখন মাঝি  
কোট পামর সরহর (যিনি জগলীর লোক  
নিগদক বল পূর্বক রাজপথে জল দেওয়া

ইয়াছিলেন) আত্মা করিয়াছেন, এমাম বা  
ড়ীর নিকটে কোন কিছু বাধ্য করিতে পা  
রিলেন না। কোন্ আইন অনুসারে এই  
আজ্ঞা দেওয়া হইয়াছে, আমরা বুঝিতে  
পারিতেছি না।

বদ বাধ্য করিয়া বিবাহ করিতে যত  
তেষ্টিস, ইমামবাড়ীর অর্থ এই অপরাধে  
ডাক্তারগকে প্রহার করিলেন, ইহা স্মরণ  
পাঠকগণ বিশ্বাসপন হইবেন সন্দেহ নাই।  
কিন্তু ইমামবাড়ীর অধ্যক্ষ একপ লোক,  
ডাক্তার গুণের কথা স্মরণে রাখিয়া জমিবা  
সম্ভাবনা নাই। এই ব্যক্তি এক জন অফ  
গাম, যে সময়ে ইংরাজদিগের সন্তান ক বু  
জের যুক্ত হয়, সেই সময়ে সে স্ট্যান্ডিংগের  
পক্ষ হইয়া চাবর বদা করিয়াছিল। সে  
কায়ের পুত্রের স্বরূপ গণ্য হইতে চাহে  
ইমামবাড়ীর অধ্যক্ষ, পদ প্রদান করেন।  
এ ব্যক্তি অতিশয় ধর্ম ও ইঞ্জিনিয়ারিং  
সে যখন বদামের বিপক্ষে হইয়া চাবর  
কায়ে করিয়াছে তখন তখন বদামের হিত  
বিত্ত ও স্বদেশানুগতির পরিচয় পরিচয়  
হইয়াছে। ডাক্তার অধ্যক্ষ কোন কর্ম জাহ  
আমাদিগের একপ বোধ হয় না।

মাত, হুদা, ফজলি, মদা, হুদা  
একপ কায়ে করা অপ সমসব বদ  
মাই। এ স্ট্যান্ডিং বা স্ট্যান্ডিং ড, এত  
নে হইবে কেহ কিছু করিতে পারেন না,  
আমরা অনুমান করিতেছি এই রকম ই  
ঞ্জিনিয়ারিং ব্যক্তিগ ও ডাক্তার জগলিত  
নহতদিগের সমুচিত ১০-১৫। মাঝিট্ট  
টের আত্মার বিষয় আমাদিগের সমুদয়  
এই হুগলীর শাসনভারতবর্ষের মতা ও  
৩০০ লোক এই বিষয় গবর্নমেন্টের  
গাচর করুন।

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দে মারীতম।

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দে মারীতমের মারীতম  
পা আত্মিক হুজি পাইতেছে। প্রতিদিন  
বদামের লোকে প্রণত্যাগ করিতেছেন।

যাঁহার। দীর্ঘত আছেন, তাঁহারিগকে জী  
মৃত বলিলেই হয়। এক বৎসরের অধি  
হইল, তাঁহার। বদ, মীরা, যুক্ত প্রভৃ  
মানা রোগ তেজ করিতেছেন। অনেক  
এই সময়ে মত ৪০। ৫০ বার পীড়া  
হইল। সবল বাটীতেই পীড়া, মক  
হানেই জন্ম দানি, সকল পুষ্করিণী  
তীরেই মৃত নহে দুই হয়। শব্দাহ করে  
ন, একপ লোক সকলের মাই। যাঁহাদি  
গের মত আছে, তাঁহার। নিয়মিত ওষধ  
সেবন করিয়া আশে বাঁচিয়া আছেন।  
কিন্তু বাঁচিয়া আছেন এই মাত্র। সকলেই  
প্রায় ক্ষীণ, চর্ষা ও অস্থিচাবশিষ্ট।  
সরিঙ্গলোকের তরানক কষ্ট হইয়াছে।  
যাঁহদিগের কৃষিকার্যের উপরে নির্ভর  
ডাক্তারিগের করে পরিমো নাই। বোগে  
রোগ জীর্ণ হইয়া ডাক্তার। কার্যক্রম হই  
বা পড়িয়া আছে, সুতরাং পীড়া ও দারিদ্র্য।  
তত্ত্ব গৃহ জীবন মুক্তি ধারণ কবিয়াছে।  
অনেক গৃহ লোক শূন্য হইয়াছে। অনেক  
বালক ও বালিকা মাতা পিতা প্রভৃতি আ  
ত্ম দীন হইয়া তির্যকীর্ষী অথবা কুটুম  
গণের গণ্য হইয়াছে। কি বলদান, কি  
ক্ষীণ, কি বৃদ্ধ, কি যুবক, কেহই মনের মত  
হইতে মুক্ত নহেন। অন্য দেশ হইলে এত  
দিন উক্ত প্রতিকার হইত সন্দেহ নাই।

১৮৮৫ খ্রিস্টাব্দে মারীতমের মারীতম  
বদামের মারীতম। নিবারণের চেষ্ঠায় আ  
ছেন। ডাক্তার। যত দূর হইতে পারে  
হারা তাহা করিয়াছেন। কিন্তু ইহার বেণ  
নিবারণে সমর্থ হন নাই। তাঁহার। এক  
প্রকার হতাশ হইয়া গবর্নমেন্টের নিকটে  
আবেদন করিয়াছেন। লেপ্টনেন্ট গবর্নর  
আবেদন পাইয়া এ বিষয়ে কমিসনরের রি  
পোর্ট চাফিয়াছেন। গবর্নমেন্ট যে আশ্রয়  
দিবেন, তাহা মনে সন্দেহ নাই; কিন্তু যত  
দূর হইতেছে, ততই লোকের বদ অসহ  
হইতেছে। একদে কমিসনর নিজে যত  
সম্ভব দ্রুত যাত্রা করিয়া এ বিষয়ে



সম্পন্ন হইবে। ২. অসমর্থ্য বাহু। সর্ব্বক্ষণ কর্ষ  
কেন্দ্রে উপস্থিত থাকিয়া হুহে থাকুক, সস্ত্রাহে তাঁ-  
হাদ এক বাহু লেখ। পাওতা দুর্জল হইল। যদি উ-  
ষা আশ্রয়কমে উপস্থিত হইয়া, কার্যের শৃঙ্খলা বা  
কুলীনের আপত্তি তত্ত্বনা দি আশ্রয়ক কর্ষ সকল  
না করিয়া কেবল চৌকীলে। শাবী বিনিত এখানে

१। शर माधन करिषु, यदि वा कर्तव्यमात्र  
 वेदना, कार्योत्थाने, अकार्यभयं दृष्ट्वा न कर्त-  
 व्या मर्त्यमान उक्तं भवति, तदा हि यः  
 - धर्म इत्येतन्मतेन विचार्य नित्यं लोकोत्तर

অসম চৰিত্ৰ  
অসম চৰিত্ৰ

বিদ্যালয়গুলিতে প্রকৃত শিক্ষা প্রদান করিয়া  
সেখানে শান্তি স্থাপন করিতে হইবে। তাহা হইলে



[illegible]

निम्नलिखित कथा आनन्दसिंह  
मकट एक आकाश विद्वान् केव। इति। एक

স্বপ্নের আর ব্যস্ততার কথা ভাবেন না। বস  
বৎসর মাসে মাসে ১০০ টকা করে টাকা  
বিদ্যা মিত্র ব্যাংকে জমা রাখছেন। এ  
কিছুই বৈমম্বিক ব্যয়ও আছে। টেম্পোরি ব্যাংকের  
পরিমাণ গড়ে মাসে ১০০০ টাকার মত হবে।  
এই এক সাত চল্লিশ টাকার মধ্যে একপনে নি-  
ম্নোক্ত প্রকারের আর দুইভাগ টাকা আদায় হয়।  
হুবহুগের সাহিন।

|   |       |    |
|---|-------|----|
| শ্রীযুক্ত বাবু স্বৰ্ণাংশু বসু           | মাসিক | ১০ |
| শ্রীযুক্ত বাবু কাজী হুমায়ুন            |       | ১  |
| শ্রীযুক্ত বাবু কিলোদিমোহন চট্টোপাধ্যায় |       | ১  |
| শ্রীযুক্ত বাবু জগন্নাথ বন্দ্যোপাধ্যায়  |       | ১  |
| শ্রীযুক্ত বাবু নারায়ণ কল্লিকাত্ত       |       | ১  |
| শ্রীযুক্ত বাবু অক্ষয়কুমার গাঙ্গুলি     |       | ১  |
| শ্রীযুক্ত বাবু নন্দীনাথ ঘোষাল           |       |    |

२५३

२५-११-२०२२/४

श्रीगुरुदेवार्जुनमौलिकमलदासदास, धाराश

از جمله

শ্রীযুক্ত। ন রাধিকাল হালদার  
শ্রীযুক্তবাবু রানাক্ষর চট্টোপাধ্যায় ১২-১  
শ্রীযুক্ত ব। ঞমকুমার হালদার  
খামলিট ০। শ্রীযুক্তটি। ৩৬ ছোট টি টাকার মা  
সক অগ্রস্থল আছে। ১০১কাঠে কুমারি জা  
এক কাস বাড়িয়ে এবং মাসিক খাতের ২৫ পঁচিশ  
টাকা দ্বিতীয় চাইবেল। বাংলাকমিগেন মাঝিনা চই  
তে ৮।২ টাকা; মুত্তন আলায় চইতে পায়ে  
৭। চইলেটে আবঃ ১৪। ১৫টা কার মুত্তন অপত্য  
-ইনে। সন্ধ্যা ৩ শ্রীযুক্তবাবু নিলামনি কে, ৯  
বা স্বক ১০ টি ০। দানেব এবং রাধানগর নিদর্শ  
শ্রীযুক্ত বা। গোলন্দাজ ইদ্র মাসিক ১ কম  
টাকা দানের অর্থাল্লুর কবিরাছেন ।

৩৯ বাথের কথা যখন নির্দেশ করিবে তখন  
তখন আম' কৃতজ্ঞতার সহিত ইচ্ছা নিবেদন  
করা কর্তব্য যে শাবিতোষিক মাসের নির্দিষ্ট  
প্রাপ্তক'ম করাতে যে ২০০ টাকা লাগিয়াছে  
১০ টাক মতো গ্রীষ্মক ইন্দ্রবজ্র বিদ্যাসাগর ২৫০  
টাকা এবং গ্রীষ্মক জীবন সাগ ১০ টাকা মিস্ত্রী-  
ফেন, আত গ্রীষ্মকবানু রমাএলাদ রায় ০৫  
আগত ০.২ কেমারনাথ মিত্র ০৬  
গ্রীষ্মকবানু কালীনাথ মিত্র ০৫  
মাসের তালীকাব কবিরাহেন অবশিষ্ট ১০০  
টাকা তুম। এই সঙ্গে আমার ইচ্ছা অ-  
পাতিগতে অবগত করা কর্তব্য যে গ্রীষ্মক ০.৫  
কামিক, দাং মত এক কালীন ১০ মশ টাকা দা  
নের তালীকাব কবিরাহেন এবং গ্রীষ্মকবানু কৃষ্ণ  
কনজ হট্টাচার্যী খীর মৃত মহোদয় কৃত বেকন

[illegible]

আপনার অসুস্থতা হইলে এখন বাঁসক-  
 দিগেব পাঠেই বিবরণ নিবেদন করিব । এখন  
 প্রেমীর ছাজেরা গড় বৎসর সংস্কৃত লক্ষ্যনা,  
 বীরচরিত এবং বিক্রমোর্কশী পাঠ করিয়াছেন ।  
 বাঙ্গালী বেকন এবং ইংরাজীতে দ্বিভাষিগণ-  
 কে প্রাণেণ পরীক্ষার পুস্তক মঙ্গল অধ্যয়ন ক-  
 রিতেছেন । সমুদয়ে তাঁহাদের এখন চারি  
 বৎসর অধ্যয়ন হইতেছে । এই সময়ের মধ্যে  
 তাঁহাদের কল্যাণে ওজন, রক্ষণ, সুখের সহ  
 ব কিরাডাঙ্গুনী, শিশুপালবধ, দেহুত, ল-  
 ক্ষ্যনা, বীরচরিত, বিক্রমোর্কশী ও মজাদ'ক  
 অধ্যয়ন হইয়াছে । কাহারও কাহারও সমুদ-  
 য়ে তাব সমুদ্র অধ্যয়নও অধ্যয়ন হইয়াছে । এ-  
 তদ্ব্যতীত ব্যাকরণ পাঠ ও পুনঃ পুনঃ অ-  
 নিবেদন । বাঙ্গালী ও ভূগোল, পাঠীগ-ও বী-  
 জগণিত কতক ছুর অধ্যয়ন হইয়াছে । এখন  
 মধ্যে মধ্যে কোন কোন বাঙ্গালী কল্যাণ অধীত  
 হইয়াছে । দ্বিতীয়, তৃতীয় ও চতুর্থ প্রেমীর ছা-  
 জেরা কল্যাণে দিন, দুই ও এক বৎসর অ-  
 ভি-  
 তেছেন এবং কল্যাণ অধ্যয়ন করিয়াছে

[illegible]

ଅର୍ଥମ୍ଭାଷ୍ୟେ ।

नेवकुलनाथ गोःशामी

अथवा, गान्धारी

ସହନ, ଓ ନୂତନୋପାଧାନ ।

শ্রিচর্যাপ বসু  
 \* কলকাতা চন্দ্রশক্তি  
 আশুতোষ মুখোপাধ্যায়  
 হেরবচন পণ্ডিত  
 দ্বিতীয় প্রণয়ী

হরিমাথ বন্ধ  
 মেহারিমাথ থাই  
 রামমাথ ঘোষ  
 বালাগির বন্দোপাধ্যায়  
 গ্যারোমাথ রাই  
 রমেশচন্দ্র বন্দোপাধ্যায়  
 শ্রীনিবাস বন্ধ  
 ভূপতি সর্কাদিকারী  
 নরেন্দ্রকুমার সর্কাদিকারী  
 অমলকুমার সর্কাদিকারী  
 কৃত্তীয় জেনারেল

ସୋମେଶଚନ୍ଦ୍ର ମିତ୍ର  
 ଶ୍ରୀରାମ ବଟିବାଳ  
 ଡେପୁଟିମାଗିଷ୍ଟ୍ରେଟ୍  
 ଏସବୁମାଗିଷ୍ଟ୍ରେଟ୍ ପାଠ୍ୟାଳୟ  
 ସୋମେଶଚନ୍ଦ୍ର ମିତ୍ର  
 ବହୁମାଗିଷ୍ଟ୍ରେଟ୍ ପାଠ୍ୟାଳୟ  
 ଡେପୁଟିମାଗିଷ୍ଟ୍ରେଟ୍ ମହାବିହାରୀ  
 ଶ୍ରୀରାମ ବଟିବାଳ  
 ଡେପୁଟିମାଗିଷ୍ଟ୍ରେଟ୍ ମିତ୍ର  
 ଶ୍ରୀରାମ ବଟିବାଳ

કાકુલ એમી

মতিলাল দত্ত  
 লাউলেন ঘোষ  
 হৰিশ্চন্দ্র বাহু  
 কামলকুমার হুতু  
 দীননাথ বাজিলাল  
 দ্বারকানন্দ চট্টোপাধ্যায়  
 এম্বালাল বন্দ্যোপাধ্যায়  
 কামলকুমার সোমসানী  
 দেহারিলাল বন্দ্যোপাধ্যায়  
 কামলনাথ রায়  
 দেহারিলাল সিংহ

আপনার মরণ থাকিতে পারে যে  
বৎসর ঠিকানা অবধি আপনার এখানে  
বিক্রয় হইয়া থাকিবে। ইতি  
হইয়া গিয়াছে। ইতি  
মানে মানে চারি টাকা করিয়া  
দিতে ছিলেন। ইতি  
বৎসর ১৯৩৩ খ্রিঃ



চারি বৎসরের নিমিত্ত এবং জিহ্মাখ-খোখানী ও দেশানচক চক্রবর্তী ইহারে দুই জনের হুতি এক বৎসরের নিমিত্ত সিদ্ধিপ্রাপ্ত হইল। তদনুসারে গত ১১ বৈশাখ অবধি কেবল বহুলাদ্বয় ইতোপাখ্যায় ও বৈকুণ্ঠমাখ খোখানী ইহারাই হুতি হুতি পাইবেন।

দক্ষিণ পশ্চিম বিভাগের বিদ্যালয় সমূহের তত্ত্বাবধায়ক শ্রীযুক্ত যেন্নি উদ্ভোদিত মজুমদার আই বিদ্যালয়ের ছাত্রদের উৎসাহ বর্ধনার্থ এই বিদ্যালয়ের অন্যতম ছাত্র শ্রীপতি সর্বাধিকারীকে মেডিকেল কলেজের বাহাদুরী স্নানে সানিক ৫ পঁচ টাকা করিয়া ছাত্র হুতি বিবার অঙ্গবত্তি করিয়াছেন।

আপনারে মিকট বিদ্যালয় সংক্রান্ত আর সমস্ত কথা নিবেদন করিয়াছি, আর একটি নিবেদন করিলেই হয়। আপনার অনেকের মরণ থাকিতে পারে যে বালা বিবাহকে এতি অনিষ্টকর প্রথা বিবেচনা করিয়া এখানকার ইংরাজি সংস্কৃত বিদ্যালয়ে এই এক নিয়ম প্রচলিত কর' যায় যে এখানে অধ্যয়ন করিতে করিতে বাহার বিবাহ হইবে, ততঃর মাহ কর্তন কর। বাইবেক। সেই রূপে বাহার নাম কাটা বাইবেক, মন টাকা করিমানা না। দিলে তাহাকে আর পুনর্বার ভর্তি করা বাইবেক না। প্র'থ-তেছি অনেকে এই নিয়ম বশতঃ স্বীয় পুত্রের বিবাহ দেন নাই। ইহা অত্যন্ত আশ্চর্যের বিষয়। কিছু চাৰিটি বৎসে ইহার ব্যতিক্রম ঘট-যাচ্ছে। সেজন্য হওয়াতে স্থগিত হইয়াছি। এক্ষত রূপে পুত্রের কিলে মঙ্গল হয় আমরা কি তাহা এখন পদাঙ্ক করিব না? আমরা কি একবারও তজ্জু উদ্বীলন করিব না? তাহা বিবাহ হইতে বাজনা দেশের কত মত অনিষ্ট হইতেছে। আমরা কি ঐতি মেনীশ লোকদিগের মিকট চিরকাল এই জন্য অন্য অন্য কারণের সহিত উল্লাসাস্পদ থাকি? না, তাহা ক'ব অনতিবি-ম্বরে সকলেই বালা বিবাহের উপর কোন দৃষ্টি-তে দর্শন করিয়া এই সমস্যাটুকু ততঃ জুঁম হইতে এক বাবে তিরোচিত করিবেন। চারি জন ছাত্রের বিবাহ হওয়াতে যেমন চাপ্ত হইয়াছিল, আশ্চর্য্যাত্মক প্রকৃত বিদ্যা শিক্ষার পূর্ণতা কারি পুনর্বার বিদ্যালয়ে নিষিদ্ধ হইতে হইবে, তেমনি না হইক, কতক পরিমাণে নিষিদ্ধ হইয়াছি।

ছাত্রদের তোমাদের মিকট আমায় ৩৩। কিছুই বক্তব্য নাই। তোমরা যেমন পড়িবে, অশীলতা সহকারে বিদ্যাত্যাস করিও, সে-রূপে প্রভুত্ব থাক এবং সুসমবিধাৎ সারিগণ বঞ্চে-

পাখ্যায় ও রাকসোহরারের কলকুনি খানাকুল কুকমলর সন্মোহের সুখ পুনর্বার উজ্জল কর এবং আপনাদিগকে বহুলা মধ্য গণীয় কর। বিদ্যাবিস্তারের প্রথম যোগ্যে এই -প্রাথমিক এ-খনও উজ্জল প্রবেশে আরোহণ করিয়া কৃত-র্ঘ হইবার অনেক দিল্লি আছে যেন সর্জন। এই কথারী তোমাদের মনে আগ্রহক থাকে। ভাল শিখিতেছ বলিয়া। এককল মহাপ্রেরণা ও অন্যান্য ব্যক্তির প্রশংসা করিলে যেন শিখিলপ্রবৃত্ত হই যা আপনায় প্রকৃত স্বার্থ বিলুপ্ত হইও না। তোমাদের ইহা। অল্প প্রশংসার বিষয় নহে যে তিনি বিনি তোমাদের অধ্যাপন। কার্য নির্বাহ করিয়াছেন তিনিই তোমাদের আবেশ গুণের জুরনী প্রশংসা করিয়াছেন এবং তোমাদের সন্ত-রিত্তে সন্তুষ্ট হইয়াছেন। তোমাদের ইহা। অল্প সৌভাগ্যের বিষয় নহে যে এপর্যন্ত তোমাদের বিনি বিনি শিক্ষক হইয়াছেন তিনি অতি উপযুক্ত সাধুশীল ও সচর।

প্রথম প্রবীর ছাত্রগণ তোমাদের মিকট আমায় এখন এই মাত্র সন্তব্য, দেখিও যেন আপনাদিগে প্রেরণা মানে বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীক্ষার অপ্রতিত হইও না এবং আমায় সমু-দয় আশাংক তম রাখি হার। ছাত্রিত করিও না। অন্যত্র তোমাদিগকে অধেষণ করিতে হই যে না। তোমাদের প্রধান শিক্ষক সমুদ্বিত কুকমল ব ককে আশ্রয় করিয়া সমীচ বিদ্যা জুসির প্রবেশ পদ সাধুগৃহ্য পথিক মও। জান বান হইলেই সন্তঃস-মণের আদ্রীযর্গের এবং অন্য সকলের মঙ্গলাকাকী হইবে।

সভাপতি মহাশয় ও সমস্ত সভাপ্রগণ। আপনারে মিকট এই প্রার্থনা যে আপনাব। এই প্রাথমিক উপর রেহ রাখিবেন, তাহা। ইংসই ইহা পরম কারুণিক সর্গশক্তিমানের প্র-সাধে জীমতী হইতে থাকিবে।

রিপোর্ট পাঠ সমাপ্ত হইলে পর বিদ্যালয় সমূহের প্রথম শিক্ষক শ্রীযুক্ত কুকমল ভট্টাচার্য্য বি, এ, সভাপতি প্রকৃতির অন্তা-র্ঘমানুসারে পরীক্ষার সময় ৫ সকল প্রকৃত প্রস্তুত হইয়াছিল তদ্বধ্যে একসংগুলি কয়েক জন ছাত্রকে জিজ্ঞাসা করিলেন ও তাহারা কতক লিখিত উত্তর পত্রিকা হইতে পাঠ করিল। পরিশেষে কুকমল বাবু ছাত্রদিগকে কতকগুলি সমুপদেশ দিলেন, সভাপতি মহাশয় এবং অন্য অন্য বুদ্ধেরা প্রসন্নবাসুদে আশীর্বাদ করিতে লাগিলেন।

ছাত্রেরা পারিতোষিক পুস্তক প্রাপ্ত হইল। পরে সভা ভঙ্গ হইল।

## বিবিধ সংবাদ ।

১১ই আষাঢ় সোমবার ।

বনীত মামক আর এক ব্যক্তি চ—কোম্পানির সাধারণ সম্পত্তি উদ্ধরণ করিতে এই কোম্পানি তাহাকে কর্ত্ত হইতে বহিষ্কৃত করিয়াছেন। রাজ্যের যত চোর ও অসৎ লোক গিয়া কি চা কোম্পানির মনে প্রবর্ত্ত হইয়াছে। গত বৎসর বঙ্গদেশে সর্বপ্রথম ৪৬১২ জনের গো বীজেনীকা বেওর হয়, ইহার মধ্যে ৩৪৭১ জনের টিকার কল দখিরাছে। একে ১২ জন লোকদার আছেন।

আমরা শুনিয়া সবিশেষ দুঃখিত হইলাম। রত্নপ্রসাদবাবুর পীড়ার উপশম না হইয়া আরো বৃদ্ধি হইয়াছে তিনি একপে চোরদিগেতে অবস্থিত করিতেছেন। তাহার প্রধান তন বিদ্যালয়ে মিত্রোপের সনন্দ আসিয়াছে। তবে বিবাহ সন্দেহ নাই।

কিরিষ্টিান পূর্বে প্রধান সেমাপতি অ-জা করিয়াছিলেন, ওলাউঠা হইলে সে স্থান হইতে সেনাদিগকে অন্যস্থানে প্রেরণ করা হইবে। কিন্তু সম্প্রতি আদেশ হইয়াছে দুর্গ প্রাণাণ প্রকৃতি রক্ষক টেমিকমিগের উপরে আস্থা বর্ত্তিবে না।

উ মিসমাম সম্পাদক বলেন, বাতাল কয়েক ব্যক্তি একত্রিত হইয় কতরা উৎপা-করিবার সন্তপ করিয়াছেন। তদ্বিগিত বেদ-পিউ বোডে মিকটে একসি চর প্রাণনা ক-হয়, কিন্তু সে প্রাণনা এপর্যন্ত গ্রাহ হই মাই। মাতলার একটি ব্যাক হইতেছে।

অবোধ্য। গেজেট সম্পাদক বলেন, তন হসার (অগারোহী) সেনাদলের আর ১২ টেম্য এক বৎসরের মধ্যে মন ত্যাগ করি-পলায়ন করিয়াছে। সম্প্রতি এক জন টেমি পুরুষ কানপুরের দিগে পলায়ন করিতে। এমত সময়ে এক জন স. গী তাহাকে ধৃত-রে। সে একটি বোচকা খুলিবার অঙ্গমতি-ইয়া। চঠাৎ এক পিস্তল বাহির করিয়া প্র-কে বধ করিয়া পলাইবার চেষ্টা পাঠ, কিন্তু ক জন আফিসর তাহাকে ধৃত করেন। সে মনে কি জন্ম এত বিশৃঙ্খলা ঘটতেছে

লাভের ক্ষমতা সম্পাদক বলেন আ-  
মীর দোস্ত মহম্মদ পাঁচ জনের মধ্যে  
পাঠিত হইয়াছেন। খিরাটের সেনারা কয়েকটি  
দুর্গ পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করিয়াছে। সু-  
লতান স্থান এক্ষণে নিজ রাজ্য স্বার্থ ব্যত  
হইয়াছেন। দোস্ত মহম্মদের ৮৪ বৎসর বয়স  
এখন হইয়াছে, তথাপি তাহার বল ও উৎসা-  
হের হ্রাস হয় নাই। এক্ষণে এই প্রায় উষ্মিত  
হইতে পারে হিবাট পারস্যাদিকারিত করণ-  
এবং প্রদেশ। দোস্ত মহম্মদ তাহা আক্রমণ  
করিলে নসিরুদ্দিন তাহার সহিত যুদ্ধ করি-  
বেন কিনা?

পঞ্চান গবর্ণমেন্টে বাবজীরা কাকিন্দে  
শিখিত। মাজিষ্ট্রেটকে এতদ্বারা মানসর মধ্যে  
ফৌজদারি দেওয়ানী ও আবকারী আটন স-  
মুদ্রণ পত্রিকা দিতে করিয়াছেন। এপার্যন্ত তা-  
হা পত্রের মাধ্যমে কাটিয়া কুরসখ শিখিতে  
কেন?

৩০মত খাঁ নামক এক জন ভূতপূর্ব বি-  
দ্বান ও হত্যাকাণ্ডীর দুই ছাত্র হইয়াছে। কাশ্মী-  
র রাজ্যের উকীল তাহাকে ধরিয়া দিবে  
করেন কিন্তু পুত্র পরিবার সবসঙ্গে  
এমন সাহস পূর্বক যুদ্ধ করে যে বধ ভিন্ন তাহা-  
কে বন্দী করিবার উপায় স্তর ছিল না।

দিল্লীতে জেট সম্পাদক বলেন, খারের সু-  
ট এ. প্র. এ. বা সৈন্যদিগকে অংশ করিয়া দে-  
ওয়া হইবে। এই মুঠে সমগ্র ১০ লক্ষ টাকা  
পাওয়া হয়। আশ্চর্যের বিষয় এই, এই প্রবোধ  
মধ্যে কয়েক ডোকা করাসী টাকা ছিল।

টাইমস পত্র চিত্রা খাম্বেসের সৈনিক  
উপনিবেশের এক রিপোর্ট প্রকাশ করিয়াছে  
ন। কয়েক জন সিপাহী তথায় বাস করিতে-  
ছে, ১৪ বর্ষের তাহাদিগকে অগ্রিম টাকা দিয়া  
সৈন্যদলে প্রবেশিত করিয়াছেন। এই উপনি-  
বেশের নামঃ শ্রীহরি হইতেছে। জয়সিংহ  
চাণ্ডী, সাঁওতাল ও সবলপুরের বন্যদিগকে  
এই উৎসাহ না দেওয়া হয় কেন?

যে চারিজন ইউরোপীয় সৈন্য দল ত্যাগ  
করিয়া বায়ুলে পলায়ন করিতেছিল, তাহা-  
দের এতদ্বারা কঠিন পরিশ্রম সহ চারি বৎ-  
সর কারাবাসের আদেশ হইয়াছে।

আগামে যে কয়েক ব্যক্তি জেলখানায় সি-

দ্ধাকে দণ্ড করে, তাহাদিগের বাবজীরা কা-  
রাবাসের আদেশ হইয়াছে।

কিম্বদন্ত সম্পাদক নিম্ন লিখিত ইউরোপী-  
য় সমাচার প্রাপ্ত হইয়াছেন।

২৩এ মে, নিউ ইয়র্ক। আমেরিকার গবর্ণ-  
মেন্টের সেনারা পোটসডামে পরাজিত হই-  
য়াছে। জনরব এইরূপ বিমোহিত। উক্ত নগর  
অধিকার করিয়াছে। একটি মহাবুদ্ধ হইবার  
সত্যবনা আছে।

২৩এ মে সেনাপতি ব্যাক্স পরাজিত হ-  
ইয়াছেন। অনেক লোক হত হইয়াছে। তিনি  
বঙ্গালীয়া ও মেরিলাণ্ডে পলায়ন করিয়াছেন।  
বিমোহিত। পাকিস্তান হইয়াছে। ওয়াশিং-  
টনের লোকেরা ভীত হওয়াতে তথায় সেনা  
প্রেরণ করা হইয়াছে। বালটিমোরের লোকে-  
রা বিমোহিত। গবর্ণমেন্টের সুবিধাচারণ করিতে-  
ছেন। গবর্ণমেন্টের সেনারা মাকের্টরের নিক-  
টে পরাজিত হইয়াছে। পটসডাম পুনরায়  
অবরোধ করা হইয়াছে। কবি ও রিচমন্ডে-  
র নিকটে যুদ্ধ হইবে বোধ হইতেছে।

১ই জুন লণ্ডন। ভারতবর্ষীয় রণচরিত্র  
কমাই-১ দেওয়া হইবে। সেনাপতি জনর্ডন  
আমেরিকায় গবর্ণমেন্টের সেনাদিগকে পরা-  
জিত করিয়া মেকেরা উপত্যকায় উপস্থিত  
হইয়াছেন। গবর্ণমেন্টের যুদ্ধতরিসমূহ নাচেন  
নগর অধিকার করিয়াছে। এই দিবস দুই প্র-  
হরের মধ্যে পুনরায় টেলিগ্রাফে নিম্নলি-  
খিত সুবাদ আসিয়াছে: বিমোহিত। হঠাৎ  
ওয়াশিংটন নগরের সম্মুখে আসিয়াছে। তত্র-  
তা সকলে ভাবিত হইয়াছেন।

কিম্বদন্ত সম্পাদক বলেন, তাহা ব-  
ল্লে, তাহা একজন ইউরোপীয় রেলওয়ে  
কর্মচারী আত্মহত্যা করিয়াছে।

জিম্ম পোট্ট ১ টি ৫০০ অনিষ্টের প্রতিশোধ  
করিয়াছেন। অনেক ইউরোপীয় জীলোক  
টাকা কর্তব্য করিয়া মে ১৫ আপনাকে বিবাহিত  
স্ত্রী বলিয়া পরিচয় দিয়া মাতালভে অব্যাহ-  
তি পাইয়া থাকে। অতুল্যমান করিলে অনে-  
কজন কখনো মৃত্যু আছে।

১৮ই আবার মঙ্গলবার।

গত বধ্য প্রদানতর বিচারালয়ের বিচার-  
পতিগণের সনক লাভের বিষয় অতিরিক্ত

গোয়েটে প্রকাশিত হইয়াছে। অন্য বিচার-  
তিরা গবর্ণমেন্টের দীর্ঘতম করিয়াছেন।

এবং কয়েক স্থানে একজনকে গুলি করা  
হইবার কথা ছিল, কিন্তু সেখানে গুলি  
নকপ করিয়াছেন, আপাদি আত্মীয় সান্নি-  
পরিবার হতম প্রাণী করিবেন, ভয়ঙ্কর  
পরীক্ষা হইবে, অতএব এবৎসর পরীক্ষা র-  
হিত হইল। একটি দুর্ভাগ্য প্রাণী হওয়া ক-  
তিমর আশঙ্ক। বকবলের উকীলেরা কেবল  
আইন মান আনেন, ব্যবস্থা পদ্ধতির মূলমন্ত্র  
যুক্তি ও ইতিহাসের বিষয়ে তাহারা বিভ্রান্ত  
অনভিজ্ঞ।

শুনা গেল রেলওয়ের কর্মচারিগণের  
পোলন পাইবার নিয়ম হইয়াছে। এই ভিগা-  
টমেন্টে যে বোম্ব লোক আসিবেন, এই তা-  
হার একটি উপায় হইল।

সমাচার হিন্দুস্থানীর এক খানি অতিরিক্ত  
পত্র প্রকাশিত হইয়াছে, সেখানকার এক  
চামার আপনাকে গবর্ণমেন্টের চর বলিয়া প-  
রিচয় দিয়া স্থানে স্থানে গ্রাম দখল করিতেছি-  
ল। উক্ত পত্রিকাতে জনরব উঠিয়াছে এ-  
কটি মহাবুদ্ধ জীলোক একজন ইউরোপীয়  
ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটকে মৃত্যু কালে এই কথা  
বলে যে গবর্ণমেন্টে বাবজীর গ্রাম দখল না করি-  
লে ইংল্যান্ডের রাজ্য থাকিবে না। সেখান  
এই প্রবোধ পাইয়া চারিদিনে অসংখ্য  
মাইবার অতিথ্যে এই কার্য করিতেছিল।  
তাহার সাত বৎসর খাঁসার বাসের আশ্রয়  
হইয়াছে। এই প্রত্যাহার আরো গুরুত্ব হওয়া  
উচিত ছিল।

অন্য টেলিগ্রাফবোলে নিম্ন লিখিত সমা-  
চার আসিয়াছে।—

লণ্ডন ১৪ই জুন। ওয়াশিংটন নগর  
সকল সড়ক উপর হইয়াছে। বিমোহিত  
ইবার নিকটে উপস্থিত হইয়াছে।

১৪ই জুন। মার্ট পাবলিশার টানসকিন্ড  
মাকেরের প্রত্যাহার যে সংশোধন করেন,  
তাহা মহানত্যা প্রাপ্ত করিয়াছেন।

পারিস ১৭ই জুন। সরসিয়ার গবর্ণমেন্টে  
বাবজীর ইউরোপীয় গবর্ণমেন্টের নিকটে সে-  
লক্ষ্যে দ্রুত পুঙ্খ সেনাদিগের সূর্য্যবহারের  
প্রতিবাদ করিয়া এক পত্র লিখিয়াছেন।



আকাশিত হইয়াছে। কলিকাতা ও কলীয়া  
এ বিবরণে হস্তাক্ষর করিয়াছেন।

চাকারকারী সম্প্রদায়ের মধ্যে কলিকাতা  
কারীদিগের আন্দোলনের বিষয় প্রচার ক-  
রিয়া বহুজন আন্দোলনের সোপান মধ্যে থাক-  
ণ্ডে আন্দোলন আন্দোলনের বসতি। যেখান-  
কার কলীয়ায়কারী, তাহাই উহাদিগের  
অগ্রদূতেরা আঁঠি কি হইবে?

একদিকে যে দুই দুই মিছিলদান গানের  
গীতিকাও হইয়া ইংলণ্ডে গমন করিয়াছেন,  
উহাদিগের এক পত্র ইতিহাস দিয়ারে প্রকা-  
শিত হইয়াছে। যাহা জানেনপ্রমাণ ঠাকুর ও  
উহার প্রীতি উহাদিগের প্রতি নবিশের বস  
করিতেছেন। আন্দোলনের পরম যত্ন সহ এত  
এরাত্ৰ রায়ন ও এটি সাহেব নষ্ট হওয়ার ক-  
রিয়া। তাহাদিগের অবস্থান করিতেছেন।  
উহার সিদ্ধিহাছেন, ভারতবর্ষে ইংরাজ-  
দিগের সহিত ইংলণ্ডে ইংরাজদিগের  
সৌহার্দ্য নাই। তখন কলমেই উহাদিগের  
সহিত্যে সম্মান করিয়া থাকেন এবং সক-  
লেই ভারতবর্ষেরদিগের জন্য ভারতবর্ষ শা-  
সন করা জেন্স করেন। উহার আঁঠি কি  
খিরাছেন একদিকেরেরা বহি বখার্মিদেরের  
বহন চাহেন তাহা হইলে ইংলণ্ডে গমন কর-  
ন। আমরাও এই কথা সর্বদা বলিয়া থাকি।

আমরা পরিকল্পকে একটি বিজ্ঞাপন দে-  
খিয়া আকাশিত হইয়া, যেডিকালকলে-  
জের চিকিৎসালয়ের এডমেন্সের রোগীদিগকে  
কলিকাতা দেওয়া হয় না, তদ্বিষিত উহাদিগের  
অভিমান কষ্ট হয়। কয়েক জন মেম্বারিউরী  
তদ্বিষিত চীৎকার করিতেছেন। উহার ২৫০  
টাকা বাজ চাহেন। ইহার নিষিদ্ধ সকলেরই  
দেওয়া কর্তব্য।

১৯-এ আবার বুধবার।

লোকসভার কৰ্মস্থান বহুরিগের স-  
হিত্যে কলিকাতা গড় কল্য কলিকাতা হইতে  
১০,০০০ টাকা প্রেরণ করা হইয়াছে। বো-  
ম্বাইয়ের লোকেরা ৫০,০০০ টাকা পাঠাইয়া  
হইয়াছে।

কলিকাতা, সর চার্লস উড আঁঠি দিয়া-  
কলিকাতা চিকিৎসক ঠিক ডিপার্টমেন্টে  
কলিকাতা, উহার সাধারণের চিকিৎসা ক-

রিতে পারিলেন না। বর্তমান চিকিৎসকের  
হুনি কেবল উপস্থিত করিয়া বোম্বাইতে ন?

চীনদেশে আন্দোলন বিদ্রোহী দলের স-  
হিত করানী ও ইংরাজদিগের যুদ্ধ হইতেছে।

বোম্বাইয়ে একজন জনকতি হইয়াছে।  
ভারতবর্ষ হইতে চীনদেশে সৈন্য প্রেরিত  
হইবে। চীনদেশে সৈন্য ভারতবর্ষের নাই।  
ইংরাজ অথবা কলীয়াদিগের হস্তগত হইবে  
সম্প্রদায় নাই।

লোক সাহেব যে দিকেরে বঙ্গদেশীয় ব্যা-  
কের হস্তে সাধারণ রাজস্ব ও মোট প্র-  
করিয়াছেন, তাহাতে সর চার্লস উড বিবক্ত  
হইয়া এক পত্র লিখিয়াছেন। হেঁট নেজেরি  
বলেন, ব্যাককে অনেক লাভ দেওয়া হইয়া-  
ছে, উহার লাভের অংশ লইবেন, কিন্তু  
কতি হইলে সরকারের হইবে। আমরা পূর্বে  
ইহার প্রতিবাদ করিয়াছিলাম।

কলীয়া হইতেছে, পূর্বাঙ্গালার রেইল  
ওয়েতে আগামি সপ্তাহ অবধি দাবাকপুর  
পর্যন্ত বাম্পীর শকট চলিবে।

ইংলিসমান সম্প্রদায় বলেন, লেপ্টনট  
গবর্নর শিখ বিদ্যালয়ে ১০০০ টাকা দান  
করিয়াছেন।

ইংলণ্ডে জনরব হইয়াছে লর্ডকানিং সর  
চার্লস উডের পরিবর্তে ভারতবর্ষের নেজেরি  
টানি হইবেন। কিছু দিন পরে হইলে ভাল-  
হইবে।

পাঠকবর্গ সর জেন্স ক্রকের নান শুনিয়া  
থাকিবেন, এই ব্যক্তি বোর্ডিং স্কুলের সারাও-  
রাক রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছেন। ইংলণ্ডের বী  
হাকে স্বাধীন রাজ্যবাসিনা স্বীকার করিয়াছে-  
ন। সর জেন্স ক্রক নিজ প্রজাদিগকে কলি-  
কাতা ন্যস্ত করিতেছেন। সম্রাতি তিনি একজন  
বোম্বাইয়াকে ন্যস্ত করিয়াছেন।

বাল্যী সম্প্রদায় চাকার ফিরিজি রেজি-  
স্ট্রের অফিসার নিবারণের অনুরোধ করি-  
য়াছেন। চাকার প্রকাশে কয়েক বার এই চাকার  
দিগের অফিসারের বিবরণ লিখিত হইবে। গব-  
র্নমেন্ট কি নিষিদ্ধ এই "ডেপুটি বাগদি" সে  
না দল রাখিয়াছেন?

২-এ আনন্ড ব্রহ্মসভাবার।

সম্রাতি গোয়াল পাঁকার গো হস্ত উপ-

লকে হিন্দু ও মুসলমানের ভিত্তির দান। হইয়া  
গিয়াছে। এক ব্যক্তি হস্ত হইয়াছে।

বহুপুত্রের হস্ত কলিকাতার বাউরিজ সা-  
হেব নিজ কর্তব্য কৰ্ম সম্পাদন করিয়া সক-  
লের অধিপাত্ত হইয়াছেন। উহার নিয়ো-  
গের সময়ে অনেক অনেক প্রকার বিক্রয়  
করিয়াছিলেন।

পিনাও গড় বৎসর ১,৬৮,১৭৪০৪ টাকা।  
র হব্য আমদানী ২,০৩,১৩,৬৫৭ রপ্তানী  
হইয়াছে। চীনদেশীয় অনেক বণিক থাকিতে  
এই বৎসরটির প্রথম উন্নতি হইতেছে।

পাঠকবর্গের অরণ থাকিতে পারে, গত  
৫২৪৬ মিসনরিরা বঙ্গদেশের কলিকাতার অ-  
বস্থায় অন্তঃস্থান করিবার জন্য এক কমিশন  
নিয়োগের প্রস্তান ও প্রার্থনা করেন। বহি-  
রান অবস্থারবরে লিখিত হইয়াছে, গ্রাউ সা-  
হেব কর্তৃক বেরাড শিখকে এই কার্যে নি-  
য়োজিত করিবার সঙ্কল্প করেন। কিন্তু উক্ত  
কর্তৃকের মৃত্যু হওয়াতে তিনি উপযুক্ত লোক  
নিরূপে মিসনরিদিগের প্রার্থনা গ্রাহ্য করিতে  
সমর্থ হন। এই ঘটনা সাহেব এবিসন কি কি  
স্বত্ব হইবেন? মিসনরিদিগের পুনর্বার আ-  
বেদন করা কষ্টবা।

চীনদেশীয় বিদ্রোহিদিগের সহিত উৎসাহ  
জড়িত পুনর্বার যুদ্ধ হইয়াছে। এক জ-  
রগতির অংশ ও আর এক জন লেপ্টন  
হস্ত হইয়াছেন। দুই ঘটিকা যুদ্ধের পর বি-  
দ্রোহীরা পলায়ন করে।

দিল্লী গেজেটে প্রকাশিত হইয়াছে, প্র-  
তান আহমদ তান রহ আদীরকে বিদ্রোহ  
কালাহার ত্যাগ করাইতে না পারিয়া ৮০০  
অতিরিক্ত সৈন্য লইয়া রণক্ষেত্রে উপস্থিত  
হইয়াছেন। অবিশেষে একটি যুদ্ধ হইবার বি-  
শ্বাস সত্যবনা আছে।

লক্ষী নগরে পুনর্বার ৪১৫০০ নগর টাক  
ও অলকার পাওরা হইয়াছে। অনেকে এত  
এ যুদ্ধ গমন করিতেছেন। বন্ধ নয়।

এখান লোকপুঞ্জ বিবাহিত ইউরোপী  
লেনাদিগের সংখ্যার এক হিসাব চাহিয়াছেন  
প্রতি বৎসর, ১লা যে এই হিসাব দিতে  
উক্ত। ইংল্যান্ডের বিবাহ হয়, অনেকে  
অনুরোধ করিতেছেন, কিন্তু আন্দোলনের  
এই একদিক উহাদিগের প্রীতি দোষ তা





এই পত্র কলিকাতার মকিব পুর্জা মাওলা রেনডে  
মৌলানার টেননের মকিব চাংকিলোতা গ্রামে জু  
হাফতানা বিদ্যাহুশনের বাগিতে প্রতি সোমব  
আবে প্রকাশিত হয় ।

# সোমপ্রকাশ

“সকলনাং সজনিহিণাম পার্থিবঃ চরন্তী শ্রুতিমন্তী ন হীমবাং

৪ ভাগ।  
৩৫ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ৩১ আষাঢ়। ইং ১৮৬২। ১৪ জুলাই }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

আমি = চেম্বার্স ডিক্শনারি অফ ইংলিশ  
এক পুস্তকের মিনিংস (অর্থবোধ) প্রস্তুত  
করা যুক্ত করিয়াছি। মূল্য ১০/০ আনা।  
হার প্রয়োজন হয়, তিনি আমার নিকট  
থকা কলিকাতা প্রেসিডেন্সি স্ট্রাস্টে মূল্য  
টাইলে পাঠবেন।  
হরমপুর কালেক্ট।

ই. আন চ সন ১২৬২।

ক্রীতদাস কামাধ দে

বিজ্ঞাপন।

বচসিন হইল বঙ্গদেশীয় কবিবর ভারতচন্দ্র  
স প্রণীত বঙ্গদেশী নামে যে এক মনোহর  
ময় এক প্রচারিত হইয়াছিল তাহা এইকণে  
সুখাপ্য হওয়াতে আমি উহা পুনঃপ্রতিষ্ঠিত  
করিয়া সাধারণ জনগণের গোচরার্থে প্রকাশ  
কিতেছি। বঙ্গদেশী কবিতা সম্বন্ধে, ইহার  
মন, শুনিতে অথবা পাঠ করিলে সান্ত্বন্য  
প্রাপ্ত হইতে হয়। বঙ্গদেশী কবিতা অনেক  
প্রকারে পরিভাষিত ও পরিবর্তিত হইয়াছে যে  
কল কাল অসংলগ্ন ও অপরিচিত ছিল, ঐ  
কল কাল, নংলগ্ন ও সংশোধিত করিয়া  
হাতে সাধ্যমত প্রকাশ পাওয়াই। এই পুস্তক  
আনাদিক তিন শত পৃষ্ঠা হইবেক। ইহার মূল্য  
১০/০ আনা, স্বাক্ষরকারি অতি ১০। গ্রহণের  
জন্যে দয়া পিতল পেমেন্টের আফিসে আদায়  
করিতে অনুরোধ করিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ক্রীতদাস কামাধ দে।

সোমপ্রকাশ।

৩১ আষাঢ় সোমবার।

লাড কানিও হইল মৃত্যু

পাঠকগণ! আজি সোমপ্রকাশ আপ  
আমাদের একটি দারুণ শোক সহ্য হইবে।

ন করিতেছে। আমাদের গের, ভক্তি  
ও কৃতজ্ঞতার আশ্রয় পরম দয়াবান সেই  
মহানুভব লাড কানিও আর ভুলে  
নাই। যিনি অসামান্য দয়া, দাক্ষিণ্য, দ্যা  
যপরতা ও সমপক্ষপাতিতাদি সকল  
আধার ছিলেন; যিনি বিজ্ঞান কালে  
বিপক্ষগণের কটু বচন বাতাহত হইয়াও  
অচলের মায় থাকিয়া অবিচলিত চিত্তে  
স্বকর্তব্য সাধন করিয়াছিলেন, যাহার জ্ঞান  
র মন্দিরে ভারতবর্ষে উন্নতি সাধন চেষ্টা  
নিরন্তর জাগরুক ছিল, যাহার যত্নে সেই  
উন্নতি বিধায়ক, বিধি ও উপায় সকলও  
প্রস্তুত হইয়াছিল, ইংলণ্ড হইলেও যা  
হা হইতে আমাদের তাবি স্তম্ভ লাভের  
আশা ছিল, তিনি এক্ষণে আর নাই। তি  
নি ১১ই জুন লণ্ডনে প্রাণত্যাগ করিয়া  
ছেন। তাঁহার যত্নে শীত হইয়াছিল।  
ভারতবর্ষে পরিভ্রমণ করিবার পূর্বে তাঁহার  
স্বাস্থ্য বিকৃত হইয়া যায়। পথে পীড়া বৃদ্ধি  
হয়। তিনি লণ্ডনে উপনীত হইয়া সুস্থ  
চিত্তে আত্মীয় স্বজনদের সাক্ষাৎকার লাভ  
সুখ অনুভব করিতে পারেন নাই। সাধা  
রণে তাঁকে লইয়া আনন্দ মহোৎসব  
করিতেও পারে নাই।

হায়! মানুষের জীবন কি অগত্যা!

মানুষের আশা কি অগত্যা! এই আনন্দ  
আশা করিতেছিলাম, লাড কানিও তার  
তবধে থাকিয়া আমাদের অনেক জ্ঞান  
সাধন করিয়াছেন, কিন্তু বিপক্ষগণের বিপ  
ক্ষতার যে যে বিষয়ে কৃতকায়ে হইতে পা

রেন নাই, ইংলণ্ডে গিয়া তৎসম্পাদ  
করেন। সর চার্লস উডের পক্ষে তাঁ  
প্রতিষ্ঠা? হইবে এই জমরব শ্রুতিয়া  
নিগের জ্ঞানে সেই আশা অক্ষুণ্ণ  
হইয়াছিল, কিন্তু মিথ্যে মথো সমু  
শেষ হইয়া গেল!

আত্মাত্মিক পরিচয়, চিন্তা ও উদ্যে  
তাঁহার অকাল মৃত্যুর কারণ হইয়া  
ভারতবর্ষে পরিভ্রমণ করিয়া আশা  
এক দিন সকলে যাপন করিতে পা  
নাই। পরিশেষে স্বদেশে প্রতিগমন  
যার সময়ে নিজ গুণবতী ভাষা বিরা  
হন।

লাড কানিও ১৮১১ খৃঃ অব্দে  
প্রহণ করেন। সুবিখ্যাত অর্জ কা  
তাঁহার পিতা। তাঁহার সন্তানদি কি  
নাই। তাঁহার সম্পত্তি ও কুল সম্বান  
কের অধিকারী হন একপ কোন নি  
আত্মীয় নাই। অতঃপর তাঁহার নাম লো  
হইতে চলিল। কুলদর্শন হইতে তা  
নাম লুপ্ত হইতে পারে বটে, কিন্তু ই  
গের সজ্ঞানগণ ও ভারতবর্ষবাসিগণ  
জ্ঞান হইতে তাঁহার নাম কখন বি  
হইবে না।

ভারতবর্ষে বসে উৎকৃষ্ট জ্ঞানসম্প  
গবর্নর জেনারেল আসিয়াছেন, লাড  
ও তাঁহার গের মধ্যে এক জন প্র  
তাঁহার ও লাড বেক্টকের নাম তাঁ  
দ্বীপনিগের জ্ঞানে পাবাণ রেগার  
দীর্ঘকাল জাগরুক থাকিবে সন্দেহ



વ્યવહાર અંજલિ ।

একদিন ইংরাজেরা এদেশী গন্যবান ও  
 ধর্মণের দরবার স্থলে জুতা খুলিয়া অ  
 বদলে গিয়াছেন, কোন রূপা চিহ্ন না  
 ম আর এটি কোনক্রমেই সহ্য হইতে  
 না। হাইদরাবাদে রেনিডেণ্ট কর্ণেল  
 বিত্তসন, তৎকর্তা নিজামকে তাঁর নামক  
 ন চিঠি প্রদান করিবার সময়ে নিজা  
 দরবারে জুতা খুলিয়া গিয়াছিলেন

উপানং পরিচ্যাগ করিয়া কর্ণেল ডে  
বিভসনের নিজামের দরবারে গমন প্রসঙ্গ  
লইয়া যখন আন্দোলন উপস্থিত হইয়াছে,  
তখন এ বিষয়ের মীমাংসা গবর্ণমেন্টের উ  
পরেই নির্ভর করিতেছে। কিন্তু গবর্ণমেন্ট  
র পক্ষে এ মীমাংসা সহজ নহে। এদেশী  
য়দিগের চিরন্তন আচার ব্যবহার বিপ্লব  
স্থূলন অথবা বিরুদ্ধ আচরণ করিয়া সক  
লের বিবেক ক্ষয় হইয়া গবর্ণমেন্টের  
অভিপ্রায় নব। লাভ ডেলকোভি এদেশ  
ীয়দিগের দত্তকাদি গ্রহণরীতির নিষেধ  
করিয়া ভারতবর্ষে বিজ্ঞোহ বহি প্রচলিত  
করিয়া যান। লাভকানিঙ সেই প্রাচীন  
রীতি পুনঃ প্রতিষ্ঠিত করিয়া সকলের চি  
ন্তের আশ্বাসন করিয়াছেন। একপ স্থলে  
গবর্ণমেন্ট বেচ্ছানুসারে জুতা পরিচ্যাগ ক  
রিয়া দরবার গমন রীতি রহিত করিতে  
পারেন না। তাহা করিলে এদেশীয়দিগের  
চিন্তাবিরাগ জাতিবার সম্পূর্ণ সন্তোষনা আছে।  
ইহা বিবেচনা করাও আবশ্যিক যে,  
নবাব ও রাজগণ আপনাদিগের সত্য অ  
পনারা রিক্তপদে উপবিষ্ট থাকিবেন  
আর ইংরাজেরা সোপানংক হইয়া তথায়  
গমন করিবেন। ইহা দেখিলে অমুসার স  
ন্দেহ নাই। কেবল দেখিলে অমুসার এই  
লাভ মোল নয়, সন্তোষই। চন্দ্রশেখর আ  
পনাদিগকে অপমানিত করিতে পা  
বেন। বিশেষতঃ এদেশীরা নবাব ও রাজ  
গণ যখন সজ্জিত পান, ইংরাজ গবর্ণমে  
ন্টের কৃত সত্য তঁহাদিগকে জুতা খুলিয়া  
দাউতে হয়, অথচ ইংরাজেরা সত্যস্থলে জু  
তা পরিচ্যাগিত। আপনাদিগের জাতীয় ধর্ম

হাইদরাবাদের প্রসঙ্গে আর এক  
যে কথা উঠিয়াছে. নিজাম তাঁরচিহ্ন ল  
তে চাহেন নাই, রেসিডেন্টে তাঁহাকে  
নেক লগুয়াইয়া গ্রহণ করাইয়াছেন, নি  
জাম অনিচ্ছাপূর্বক গ্রহণ করিয়াছেন,  
মিবদ্বান তিনি চিহ্নগ্রহণ কালে যথোচিত  
তত্ত্বপ্রদর্শন করেন নাই। এবিষয়ে আ  
দিগের বক্তব্য এই. এখানে দাতা ও  
হীকা উভয়েরই নির্বুদ্ধিতা প্রকাশ  
হে। দাতার নির্বুদ্ধিতা এই, দাতা য  
মিজামের সহিত আপনার মিতানু অধী  
প্রজার ন্যায় ব্যবহার না করিয়া মিজ  
জার ন্যায় ব্যবহার করেন, তখন তিনি

যে চিত্র আপনার অধীন প্রত্যেক প্রদেশে  
করিয়া তাহার স্বত্বান বর্ধন করিয়াছেন,  
তখন সেই চিত্র প্রদান করিয়া মিত্র রাজার  
সম্মান বর্ধন চেষ্টা করা বিধেয় হইয়া নাই।  
মিত্রদের নির্বুদ্ধিতা এই, তিনি আপনার  
কমতা বুঝিত না পারিয়া বৃথা অভিমান  
প্রযুক্ত আপনাকে স্বাধীন রাজার ম্যার  
জ্ঞান করিয়া থাকেন।

যে সকল ব্যক্তি এই আন্দোলন উপ-  
স্থিত করিয়া কালকূট গরলের ম্যার অন-  
র্গল কটু বাক্য প্ররোণ করিতেছেন, কেও  
নব ইণ্ডিয়া তাঁহাদিগের সেনানী। তাঁহাদি-  
গের এইটা করা নিতান্ত বরকার হইয়াছে যে  
এ দেশে আর কাহার কোন বিষয়ে অণু-  
মাত্র স্বাধীনতা অথবা প্রাধান্য না থাকে,  
সমুদায় ভারতবর্ষ মধ্যে তাঁহাদিগেরই কে-  
বল এক মাত্র স্বাধীনতা ও প্রাধান্য হয়।  
এবং গবর্ণমেন্ট যে যে নবাব ও রাজগণের  
সহিত অর্থ ও অন্য সম্বন্ধে যে বন্দোবস্ত  
করিয়াছেন তাহা তব করিয়া কাহাকে কিছু  
না দেন। এই সকল নবাব ও রাজারা সামা-  
ন্য লোকের ম্যার গবর্ণমেন্ট আকিসে রবি-  
সন অথবা ডিক্কেসের সোপানরূপ চরণ-  
প্রহার সহ করিয়া চাকরী করিয়া জীবিকা-  
নির্বাহ করেন, ইহা তাঁহাদিগের (কেও  
নব ইণ্ডিয়া প্রভৃতির) আন্তরিক ইচ্ছা।  
কিন্তু তাহারা গর্বাক্রান্ত প্রযুক্ত বুঝিয়া  
গঠিত পারিতেছেন না যে গবর্ণমেন্ট অর্থ  
যে রাজনীতির অনুসরণ করিতেছেন,  
মূলকই তাঁহাদিগের উত্তরোত্তর প্রাক-  
স্মিত্য হইতেছে। ইহার বিপরীত করি-  
ল বিপরীত হইবে সন্দেহ নাই। আর্টিন  
রামের জীবিত সমর কখন? যখন চতু-  
র্দিকে তিম্র তিম্র স্বাধীন রাজ্য ছিল, সেই  
সময়ে কি জীবিত সমর নয়? রোম যখন  
ক্রমে ক্রমে সকলকে নিজ অধীন প্রমা-  
ন্য করিয়া তুলেন, সেই সময়েই কি  
হার জয় হইতে আরম্ভ হয় না? এ-  
জের অভিযোগিতা কি ইংলণ্ডের উন্নতি

নিমিত্ত নহে? যদি এমন দিন উপ-  
হয়, পৃথিবীর মধ্যে ইংলণ্ড তিম্র  
স্বতন্ত্র রাজ্য না থাকে, তখন কি ইংলণ্ড  
ক্লোভ:স্থল্য স্থিরপাদীর ন্যূনতম ম্যার  
ক্রমে বিকৃত হইয়া যাইবে না? আমরা  
ক্রেও অব ইণ্ডিয়ার বিষয়ে যে কথা কহি-  
লাম, মুরশিদাবাদ ও হাইদরাবাদের নবাব  
ও টিপুসুলতানের বংশোদ্ভূতদিগের প্রতি  
তাঁহার আক্রোশ বাক্যই তাহা প্রমাণ করি-  
য়া দিবে।

#### বন্দোবস্ত ব্যাপ্ত

বন্দোবস্ত ব্যাপ্তের অধ্যক্ষগণ তাঁহা-  
দিগের বাণ্যাসিক রিপোর্ট প্রকাশ করি-  
য়াছেন। ব্যাপ্ত এক্ষণে সাধারণ ধনাগার  
হওয়াতে তথায় সমুদায় ভারতবর্ষের টা-  
কা জমা ও তথা হইতে সমুদায় ব্যয় হই-  
তেছে। তাঁহাদিগের যেমন কাজ বাড়িয়া  
ছে, তেমন তাঁহারা অমের অতিরিক্ত  
লাভ পাইতেছেন। এবার অংশীরা ইন-  
কম টাকার বাদে ১৪ টাকার লাভ  
পাইয়াছেন। প্রত্যেক অংশ ৪০০০ অবধি  
৮২০০ টাকার বিক্রীত হইতেছে।

আমরা পূর্বেই প্রতিবাদ করিয়াছি-  
লাম, ব্যাপ্তকে অধিকতর কমতা ও  
লাভ দেওয়া হইতেছে। অধ্যক্ষেরা  
এক প্রকার স্বীকার করিয়াছেন। ক্রেও  
রিভে যে ৪৩,৬০৬ টাকা আকিসের ব্যয়  
হইত, তাহা ব্যাপ্তকে দেওয়া হইয়াছে।  
তাঁহারা প্রত্যাহ সত মোট প্রচলিত করি-  
তে পারিবেন, তাহাতে শতকরা ব্যয় আ-  
মা লাভ পাইবেন। গবর্ণমেন্টের তহবিলে  
যে মগন টাকা থাকিবে, তাহা তাঁহারা  
যেহা পূর্বক গবর্ণমেন্টের কাগজ, রেইলও-  
য়ের অংশ প্রভৃতিতে খাটাইয়া লাভ করি-  
তে পারিবেন। গবর্ণমেন্ট সেই লাভের  
অংশী নহেন। কিন্তু যদি গবর্ণমেন্টের কাগ-  
জ কতি হয়, তাহা গবর্ণমেন্টেরই হইবে।  
মোটের নিমিত্ত যে ৭০ লক্ষ টাকা প্রতিকূ-

বরপ আছে তাহা তাঁহারা আশ্রয়াদিগে-  
র বিবেচনানুসারে খাটাইতে পারিবেন।  
মোট জাল ও চুরি প্রভৃতি হইয়া  
কতি হইবে, তাহা ব্যাপ্তেরই হইবে। গ-  
বর্ণমেন্টের পক্ষ হইলে জন অধ্যক্ষ থাকিবে  
এক জন ইন্সপেক্টর মধ্যে মধ্যে তদা-  
ধান করিবেন।

ব্যাপ্তকে অমের কমতা দেওয়া হই-  
য়াছে। বিশেষতঃ অমের বিষয়ে তাঁহাদি-  
গের বিবেচনার উপরেই নির্ভর করা হই-  
য়াছে। কোন ব্যক্তি বলিতে পারেন যে  
তাঁহারা এই কমতার অবধোচিত বিমিত্রতা  
করিবেন না। সাধারণের অর্থ এই প্রকারে  
কয়েক জন সামান্য বণিকের হস্তে দিয়া  
তাঁহাদিগের কমতার লীলা বন্ধ করিয়া ম-  
দেওয়া অত্যন্ত অন্যায় হইয়াছে। মোটের  
সকল শতকরা ব্যয় আনা ব্যাপ্তকে দিবার  
যে কথা হইয়াছে, তাহাতে আমরা এত  
বাকী নহি। উইলসন সাহেবের সমুদায়  
বিভাগ ও কমিসনর নিরোধ হইলে ই-  
হার চতুর্গুণ ব্যয় হইত। কিন্তু মোটের  
প্রতিকূলরূপ টাকা ও সাধারণের জমা  
টাকার উপর তাঁহাদিগকে অধীন কমতা  
দেওয়া বিধেয় হইতেছে না। ব্যাপ্তের ম-  
করা বলেন, গবর্ণমেন্টের জমা টাকা ব্যা-  
প্ত হইলে তাঁহারা ব্যাপ্তের টাকা লইতে পারি-  
বেন। সত্য, কিন্তু আপাততঃ সাধারণ টা-  
কা খাটাইয়া ব্যাপ্ত অপরিমিত লাভ করি-  
তে চলিলেন; লাভ তাঁহাদিগের, ক্ষতি  
সর্বসাধারণের। এই বন্দোবস্ত দ্বারা ভারত-  
বর্ষীয় গবর্ণমেন্টের দুর্ভিক্ষতা প্রকাশ হয়  
নাই। সর চার্লস উড তাঁহাদিগকে যে  
তির্যকার করিয়াছেন এই নিমিত্ত তাহা অ-  
ন্যায় হয় নাই। তিনি এক জন কিনাজি-  
য়ার, তাঁহার মত লইয়া উক্ত নিগম  
করা উচিত ছিল। পাঁচ বৎসর পর্যন্ত ব্যা-  
প্তের সহিত এই বন্দোবস্ত থাকিবে।  
কয়েক জন বণিকের সুবিধার নিমিত্ত এত  
দিন সর্ব সাধারণের ক্ষতি হওয়া না, ধু-  
২০



হেঁতাহে না, সর চার্লস উভয়ের মতের  
নুসরণ করাই কর্তব্য ।

ইংলণ্ডীয় মহাসভার ভারতবর্ষীয়  
প্রতিনিধি নির্বাচনের  
আবশ্যকতা ।

বর্তমান সভ্যতায় সমস্তের রাজনীতি  
গণের মত এই ( এই মতই বিস্তৃত ) যথ  
যে দেশে ক্ষুদ্রতর কর নির্ধারণ করিতে  
হইবে, তাহেঁশবাসিদিগের মতগ্রহণ না  
করিয়া তাহা করা বিধের নহে এবং  
সেই কর ব্যয় করিতে হইলে তাহা  
গণের অথবা তাঁহাদিগের প্রতিনিধি  
গণের মত গ্রহণ নিত্যক আবশ্যক । যে অব  
স্থায় প্রতিনিধি দ্বারা শাসন প্রণালী সংস্থা  
পনের রীতি প্রবর্তিত হইয়াছে, সেই অব  
স্থায় এই নিয়ম হইয়া আসিতেছে । ইংল  
ণ্ডে এই নিয়ম আছে ; ইটালি তাহার অনু  
সরণ করিয়াছেন ; ফরাসী সম্রাট অসীম  
কমতাশালী হইয়াও এ বিষয়ে বতর ও  
প্রজাদিগের মতনিরপেক্ষ হইয়া কায্য  
কারী নহেন ; সম্রাট আলেকজান্ডার রুশী  
রায় এই প্রথা প্রবর্তিত করিতে উদ্যত  
হইয়াছেন । আমেরিকার স্বাধীনতা লা  
ভের ক্ষুদ্র কি ? ইংলণ্ডীয় মহাসভা প্রজাতা  
লোকদিগের অসম্মতিতে কর স্থাপনের  
চেষ্টা করাতেই তদুশ মহাসম্রাজ্ঞা হই  
তে বঞ্চিত হইয়াছেন । আপনারা আপনা  
দিগের অর্থের ব্যয় তাব প্রাপ্ত হইলে কর  
দাতার কেবল যে সুখ স্বচ্ছন্দ হয় একপ  
মহে, গবর্ণমেন্টেরও সবিশেষ কল্যাণ লাভ  
হইয়া থাকে । যে দেশে এই নিয়ম আছে, তা  
হার শাসন কর্তা ও শাসিত উভয়েই পরস্পর  
সন্তোষ সন্তান ও সৌভাগ্যশালী দৃষ্ট হইয়া  
থাকেন । যে সমস্ত চিহ্ন দ্বারা সভ্য ও  
অসভ্য কালের ভেদ করা হয় এই নি  
য়মটি ভদ্রবোধ্য একটি প্রধান । অসভ্য রাজ  
ত্ব কর নির্ধারণাদি কালে প্রজার সুখ দ  
ক্ষ, মনের ভাব ও ইচ্ছা প্রভৃতি কোন

বিষয়েরই অনুসন্ধান করেন না, তাঁহারা  
আপনাদিগের স্বার্থ ও ইচ্ছার অনুসরণ  
করিয়াই এই সকল কায্য করিয়া থাকেন ।  
পক্ষান্তরে, সভ্যরাজগণ সেকপ করে  
ন না ।

আমরা উপরে সভ্য ও অসভ্য রাজ  
গণের যে ব্যবহার ভেদের বিষয় উল্লেখ  
করিলাম, ভারতবর্ষে কি উহাব অনুসারী  
কায্যানুষ্ঠান হইয়া থাকে : আমরা যে বর  
দিয়া থাকি, তাহার বিষয়ে কি কিছু বলি  
তে পারি ? বাংলার বিষয়ে কি আমাদিগের  
হাত আছে ? আমরা ভারতবাসী, ভারত  
বর্ষীয় গবর্ণমেন্টই যে কেবল যেহাফ্রমে  
ক্ষুদ্রবিধ কর স্থাপন ও তাহার ব্যয় সমা  
ধান কবেন একপ মহে ; আমাদিগকে  
অন্য এক গবর্ণমেন্টের ইচ্ছাপরাধীন হই  
য়া চলিতে হয় । সে গবর্ণমেন্ট ইংলণ্ডই ।  
যত দিন আমরা ইহার প্রতিকার ক  
রিতে না পারিব, তত দিন আমাদিগকে  
কষ্ট সহ করিতে হইবে সন্দেহ নাই ।  
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে  
ন্টকে লোহিত সমুদ্রের টেলিগ্রাফ সম্বন্ধে  
অর্থ দানের বে অনুমতি করেন, আমরা  
পূর্বে তাহার প্রতিবাদ করিয়াছি, তাবি  
ষাতে যাহাতে ভারতবর্ষের রাজস্ব ইংল  
ণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের বেছানুসারে ব্যয়িত  
না হয়, সে চেষ্টা করা আমাদিগের প্রথা  
ন কর্তব্য কর্তব্য । কিন্তু তাহার প্রকৃত উপায়  
কি ? ভারতবর্ষের কয়েক জন প্রতিনিধি  
ইংলণ্ডীয় মহাসভার প্রবেশ করিতে না  
পারিলে সে উপায় হইবার সম্ভাবনা নাই ।  
আমাদিগের দেশের যাবতীয় গুরুতর ক  
র্তব্যাকর্তব্য ইংলণ্ডে স্থির হয় । কয়েক  
জন অজ্ঞ ব্যক্তি যে কথা বলেন,  
মহাসভা তাহাতে ' হাঁ ' দিয়া যান ।  
কিন্তু আমাদিগের যথার্থ প্রাধীন, যথার্থ  
বল, অসহ অত্যাচার, সামাজিক দুর্বস্থা  
ও দেশীয় লোকের মনের ভাব প্রভৃতি বি  
ষয়ের আর কিছু জানিতে পারেন না । ইহা অ

ককারে লোর্ড মিঞ্চপের জুলা হইতেছে ।  
মহাসভার ভারতবর্ষের কয়েক জন প্রতিনি  
ধি থাকিলে অজ্ঞতা মুক্ত এই সকল  
অনিষ্ট হইতে পারিবে না । প্রতিনিধি থা  
কিলে ইংলণ্ডীয় মহাসভা ও গবর্ণমেন্ট  
অনেক অন্যায় অপবাদ হইতে মুক্ত হই  
তে পারিবে । ভারতবর্ষের মঙ্গলের ক  
থাই নাই । যাবতীয় বিষয়ের যথার্থ অব  
স্থা ইংলণ্ডে বর্ণিত হইলে এ দেশে আপে  
ক্ষাকৃত অসুখ বিশৃঙ্খলা ঘটিবে সন্দেহ নাই ।  
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট ও মহাসভা ভারতব  
র্ষের প্রতি অন্যায় ব্যবহার করিতে অনু  
রক্ত, এ কথা বলা আমাদিগের প্রতি  
শ্রেয় নহে । তাঁহাদিগের সুবিচার জনহি  
ত । আমরা তাহার প্রতিবাদী নহি ।  
তাঁহারা ভারতবর্ষের বিষয় ভালরূপ জানে  
ন না বলিয়াই তাঁহাদিগের সদৃশিতার স  
কল সমাক কলোপধারী হয় না । প্রতি  
নিধি থাকিলে কেবল যে ভারতবর্ষের উ  
ন্নতিপথ পরিষ্কৃত হইবে একপ মহে,  
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের অজ্ঞতা নিবন্ধন  
যে সমস্ত অনিষ্ট ঘটিতেছে, তাহারও স  
মাক নিবারণ হইবে । পরিশেষে আমরা  
পুনর্বার দেশীয়দিগকে এ বিষয়ে যত  
বান হইতে অনুরোধ করিতেছি । কার্য  
নোবাক্যে যত্ন করুন অবশ্যই অতীত ল  
ভে সমর্থ হইবেন ।

—৩৩—

সপ্তম ২৫এ মে, ১৮৭২ ।—

প্রি। সম্পাদক । পূর্ব পত্রের লেখকের শি  
বিন্যাস মিকেতনসুধে ১লা মুর ব্যাপ  
বৎসাবান্যরূপে লিপিবদ্ধ করিয়াছি, অতঃ  
উক্ত অট্টালিকার যাবতীয় অসংখ্য এ  
অন্তত পদার্থ সংগৃহীত হইয়াছে, তন্ম  
কতিপয় বস্তুর সংকেপ বর্ণন করিতেছি ।  
টালিকাভিত্ত সমুদায় পদার্থের যথা বি  
বর্ণন করিতে গেলে বহুসংখ্য প্রকাণ্ড পু  
লভিতে হয়, অতএব আমি কেবল কয়েক  
সামগ্রীর নামোল্লেখ মাত্র করিয়া সহর্ষে  
ইব ।

অট্টালিকার সিন্যাসিদ্ধি ইংরেজ ও অন্যান্য  
জাতির মধ্যে সমান ক্রমে বিতরণ, এবং  
ইংরেজদের অধীনতা প্রতিপন্নকর ইংরেজদের  
মধ্যেই ফুট হইয়াছে। শিল্প দুই প্রকার :  
মহাশিল্প, ও সুশিল্প। অম সাধ্য শিল্প  
জাত বস্তু ত্রিবিধ, (১) অসম্পন্ন সামগ্রী,  
খা. খাত্ত্রব্য, ফলা, পট, উর্বা ইত্যাদি।  
(২) বস্ত্র অর্থাৎ যে সকল কৌশলের দ্বারা  
সম্পন্ন সামগ্রী সকল মানুষের ব্যবহারে আ-  
বৃত্ত করা যায়। এবং (৩) সম্পন্ন সামগ্রী,  
খা. গলফান, বস্ত্র ইত্যাদি। চিত্র, প্রস্তরাদি  
নির্মিত প্রতিমূর্তি প্রভৃতি পদার্থকে সুশিল্প  
জাত বলা যায়। বস্তুটনের নিকটতম উত্তম  
প্রকার শিল্প জাত বস্তু সংগৃহীত হইয়াছে।  
অম সাধ্য শিল্প ৩৬ প্রকারে বিভক্ত, ১৬০০০  
বিশেষীকৃত, ৫০০০ ইংরেজ, এবং ২০০০ ইং  
রেজদের অধীন জাতীয়, সর্ব গুণ ২৩০০০  
শিল্পকর আপনাদের বৈশিষ্ট্য প্রদর্শন করিয়া-  
ছে। সুশিল্প জাত বস্তুর মধ্যে ইংরেজেরা  
একান্ত বস্তুর তত্ত্বগত ২০০০ পদার্থ প্রদর্শন  
করিয়াছেন অবশিষ্ট যে সকল পদার্থ সংগৃ-  
হীত হইয়াছে, তাহা বিশেষীকৃত।

অম সাধ্য শিল্পের .ম প্রেমি খাত্ত্র ও  
জাকরীকৃত্য। জাকর হইতে কল্লা প্রভৃতি  
প্রত্যয় সে ক্রমে সংগৃহীত হয়, তাহার কতিপয়  
প্রতিম, প প্রাচীনত হইয়াছে।

এম প্রেমিতে রসায়নোপযোগী প্রভৃতি  
বিবিধ প্রাচীন, চিকিৎসা বিদ্যার খাত্ত্রীয় বস্তু  
উপযোগীও প্রচলিত, এখানে ভাস্কর্য্য  
প্রদর্শিত।

এম প্রেমি খাত্ত্র সামগ্রী, সংরক্ষিত করা  
দি, পানীয়, ডায়াকুট প্রভৃতি।

৪র্থ প্রেমি শিল্প, কার্গো ব্যবহার্য্য প্রাচীন ও  
উত্তম জাত বস্তু, মজা, রতন প্রভৃতি।

এম, ৭ম, ৮ম, এবং ১০ম প্রেমিতে বিবিধ  
বাল্পীয় বস্ত্রাদি। বস্ত্র বস্ত্র চিত্র, এসং কতক  
গুলি চলিত। রাম্‌গুণ্ডি নামক শিল্পের  
একত কৌশল প্রকাশ করিয়াছেন যে হেলও  
য়েতে এম্‌স্‌স টেনে মল লটবাত্ত্র জ্ঞান  
প্রদর্শিত হইতে না, আরবদেশে উর্বা যেমন  
খীয় উন্নত হইতে জল আকর্ষণ করিয়া তৃষ্ণা  
শান্ত করে, উক্ত বস্ত্রও সেই রূপ করিবে  
এতদ্ব্যতীত পূজারী বাল্পীয় বস্ত্র প্রদর্শিত

হইয়াছে। তাহা চমিবার সময় পুত্র নির্গত  
হইবে না। করালীশেরা দুইটি বস্ত্র প্রদর্শন ক-  
রিয়াছেন, তাহাদের প্রত্যেকের বস ৬০ খো-  
টকের তুল্য। হুচী নির্মাণ, অকর নির্মাণ  
বস্ত্র বস্ত্র, ফুলান চক্র প্রভৃতি অশেষ বিধ প্র-  
দর্শনীয় বস্ত্রের সংখ্যা করা দুকর। কৃষি  
বিদ্যা সংক্রান্ত কতক গুলি বস্ত্র সাতিশ্বর উ-  
পকারী। কয়েক বস্ত্রাবধি কৃষি কার্যে বাল্পীয়  
বস্ত্র নিয়োজিত হইয়াছে। বুদ্ধ বিদ্যার উপ-  
যোগী অস্ত্র পত্র বিবিধ প্রকার। কয়েকটি প্র-  
কাণ্ড তোপ প্রদর্শিত হইয়াছে।

১১ম, ৩ম, ২৫ম, এবং ২৬ম প্রেমিতে নানা  
বিধ বিদ্যা বিষয়ক বস্ত্র, চুরনীকণ, অম্বীকণ,  
এক প্রকার চমৎকার বাঁটা বাহক বস্ত্র প্রভৃতি  
নানা বস্ত্র প্রদর্শিত হয়।

১৪ম প্রেমিতে কটগ্রাফ সম্পর্কিত বিবিধ  
বস্ত্র, মানুষের আকৃতি সমান আলোকচিত্র  
সকল প্রদর্শিত হইয়াছে।

১৫ম, ও ২৮ম প্রেমিতে নানাবিধ ঘটক,  
বস্ত্র একবস্ত্রের ক্রিয়াহইতে হইবে না। এমনত ঘ-  
টিকা প্রদর্শিত হইয়াছে, কোন ঘটকায় পৃ-  
থিবীর সমস্ত স্থানের সমস্ত নিরূপিত রহ-  
স্যাঙ্ক।

তুণ নির্মিত কাপড়াদিতে পৃথিবীর উপ-  
কার হইবে সম্ভব নাই, উক্ত নানা প্রকার  
কাপড় একত্রিত হইয়াছে।

উল্লিখিত ব্যক্তি এমনত 'এম' 'নেট' প্রদর্শন  
করিয়াছেন, সে কেবল তাহা রত্নিম কল্পিত  
পারিবে না।

১৬ম প্রেমিতে নানা পূজার বস্তু,  
এবং ১৭ম প্রেমিতে বস্ত্র চিকিৎসা সংক্রান্ত  
নানা বস্ত্র।

১৮ম জাতি ২৮ম এবং ২৭ম প্রেমিতে,  
ফুল শণ, পট, উর্বা, জাত ও বিশিষ্ট বস্ত্র, স-  
কল এবং উপানয় প্রভৃতি চমৎকার তুল্য।

২৯ম প্রেমিতে লিঙ্গা সংক্রান্ত বস্ত্র সক-  
ল, পুস্তক গুণ্ডক অক্ষরাদিকে লিঙ্গা দ্বারা  
উপস্থাপিত হইয়াছে।

অন্যান্য প্রেমিতে লৌহ বস্ত্র সকল প্রদ-  
র্শিত হইয়াছে। তাহাদের সংখ্যা করিয়া উঠি-  
এমত অসম্ভব নাই।

ইংরেজদের অর্ধ নানা দেশ হইতে  
নানা। আগত হইয়াছে চীনদেশ হইতে

পটফল, বস্ত্র, মুদ্রিকার খামর প্রভৃতি।  
সিংহল বীণ হইতে কাকি, দারুচিনি, বুদ্ধা-  
দি বস্ত্রীক উপাণ হইতে উৎকর্ষ শর্করা, ক-  
ফলাদি। অর্থে লিঙ্গা হইতে জাতিকল, উর্বা  
বস্ত্র, গোপূর প্রভৃতি এবং ১৮৫১ খাল অব-  
ধি বস্ত্রাবান সময় পর্যন্ত ২১৭৬৫ মণ পরিমিত  
অর্থাৎ ১০০০,০০০,০০০ টাকা মূল্যের বোঝা  
আকর হইতে সংগৃহীত হইয়াছে, তাহার এক  
বর্গ মণ্ডিত প্রতি রূপ শুভ আগত হইয়াছে।  
নিউ জর্জ হইতে ত্রিবিধ মৎস্য ধরিবার নৌকা  
প্রভৃতি : আফ্রিকা ও আমেরিকার ইংরেজা-  
বীন অংশ হইতে তাহা উৎকর্ষ প্রবাদি প্রে-  
রিত হয় নাই।

ভারতবর্ষ এখানে কি ভাব ধারণ করিয়া-  
ছেন, তাহা জানিবার নিমিত্ত আমাদের সা-  
তিশ্য উৎকর্ষ অধিতে পারে। অট্টালিকার  
নিজল ঘরের মধ্যে ১০০০০ চকুরক্ষ ফাঁট আ-  
মাদের দেশের শিল্প, নিয়োজিত হইয়াছে।  
প্রথমেই বঙ্গদেশ জাত বস্ত্র প্রদর্শিত হয়।  
তিল ও মধুপ বীজ, টেল, প্রকৃতিগত, তেজস-  
বস্ত্র, ও কাষ্ঠাদি নানা দ্রব্য একত্রিত হইয়াছে।  
আসাম কাছাক গ্রীহট, দারুচিনি, তেরাকুল  
গড়ওয়ান প্রভৃতি স্থানের চা অতিশয় প্রয়ো-  
জনীয় বলিয়া প্রদর্শিত হইয়াছে। সমুদ্রা-  
প্রায় ৫০০০ প্রকার বস্ত্র আমাদের দেশের  
প্রদর্শন করিতেছে। দিল্লী হইতে হস্তিনতে  
উপর চিত্র সকল আগত হইয়াছে, তন্মধ্যে  
এক মন্দিরের অভ্যন্তর বিধরক চিত্র অনেক  
মন আকর্ষণ করিতেছে। লক্ষ্মীনগরে যে সকল  
কটগ্রাফ গৃহীত হয়, তাহার কতিপয় বিটি  
প্রতিরূপ প্রদর্শিত হইয়াছে। কলিকাতা  
চিকিৎসা কক্ষ, ত্রিবিধের চুড়ান্ত বৈশিষ্ট্য প্রকা-  
করিতেছে। কাশ্মীরের বস্ত্রাভের উপর পট-  
শ্রী, ও দিল্লীর জাল অতি উৎকর্ষ। নানা প্র-  
কার গালিচা ও ফুলিচা, ও জীনগরের ও  
মুতসরের শাল লাতিশ্বর মনোরম। গুজর-  
ও পঞ্জাবের ককংগোরি অর্থাৎ বর্গ নিমি-  
লৌহ কর্ম সকল প্রদর্শন যোগ্য। পটফল  
বিবিধ প্রকার এবং উৎকর্ষ, বারানসীত পি-  
খাবের তুলনা নাই, তাহাদের মূল্যও ম-  
ত। পঞ্জাব, মীরট, ও বরাহনগর (আলি-  
র?) দ্বিত কাবাগারের বাল্পীশ্রের প্রভ-  
নানাবিধ বস্ত্র প্রদর্শিত হইয়াছে। নানা প্র



গভীর মনুনা, যুদ্ধের মতের কর্ম, যেহেতু  
রত্ন নির্মিত কর্ম, লাহোরের পাকপতন  
র, এবং ককনগরের মানব প্রতি প্রতি কো-  
ল জনক। ক.উ, হস্তিনা, প্রভৃতি প্রভৃতির  
গর খোদিত কর্মের বহু প্রকার মনুনা, কিন্তু  
পূরের হস্তিনা খোদিত কর্মের কল্যাণ অত্যন্ত  
হু নহে। মিনি কল্যাণ কটকট বোণ্য কর্ম  
খিরাছেন, তিনি তাহার নির্দিষ্ট প্র-  
সা বিদ্যে কোন ক্রমেই সন্নিহান হইবেন  
অসত্য উক্তিদিগে এই একটি মাত্র  
। চাকর বস্ত্রের নামোলেখ মাত্র যথেষ্ট।  
যাই প্রদেশ হইতে নানা অসম্পন্ন সামগ্রী  
উক্ত বিবিধ পদার্থের উপর খোদিত কর্ম,  
ব.যজ্ঞোপবাসী যজ্ঞাদির প্রতিরূপ  
তত্ত্ব প্রেরিত হইয়াছে। যাজ্ঞাজের ভাগ  
তৃপ্ত বটে, কিন্তু শাল, এবং চিরণ কর্মের  
র, ও অন্যান্য কতক গুলি প্রব্য সমাগত  
হইয়াছে। ব্রহ্মদেশ, যব, অস্ত্রাদি পূর্ণ  
কলীর দেশ হইতে ধাতু প্রব্য, হস্তিনা, ২-  
ল্য প্রভৃতি, ও স্বর্ণকণা প্রভৃতি পদার্থ প্রে-  
ত হইয়াছে। ব্রহ্মদেশীয় কতিপয় কোড়ক  
ক চিত্র লোকের হাস্যোৎপাদন করি-  
তেছে।

করাশীল জাতির প্রমের নির্দর্শন অকল্য  
তি উৎকৃষ্ট, তাহার অশেষবিধ বস্ত্র প্রস-  
ন করিয়াছেন, তাঁহাদের বাণীয়া যন্ত্র সকল  
ক্ষম বলিলে হয়।

আট্টা হইতে ন নানিধ অসম্পন্ন সাম-  
গ্রী, বীটুল জাত শরবা প্রস্তুত হইয়া-  
ছে, উক্ত দেশে প্রতি বর্ষে ১,৩৭২,০০০ মণ  
নির্মিত বীট শরবা উপর হইয়া থাকে।

এসিয়ার সমগ্র নিম্নোক্ত ২৪ জন রাজনী  
। রূপ লোকেরা যত্নসহকারে প্রত্যেক  
কল প্রেরণ করিয়াছেন।

মূল্যবান জাত নগর এক, এবং প্রত্যেক  
গড়ে বলিলে হয়, কারণ যে নগর প্রত্যেক  
চিত্রাদি ছিল, তাহার অধিন ১০০০  
হইয়াছে। দেশের সর্বোৎকৃষ্ট উৎপাদিত  
করা বহু মূল্যবান স্বর্ণ সর্বত্র প্রেরণ  
হইতেছে।

এই মহৎ ব্যাপার সময়ে বহুতর্য এই যে  
করাশীলেরা মাত্র মধ্যম পাত্র মান্য প্রকার  
কাজুক জনক চিত্র প্রকাশ করিতেছেন। এক

টি চিত্রের তাৎপর্য এই যে কয়েক দিন এক  
জীবিলনে প্রবেশের দক্ষিণা ১০ টাকা ছিল,  
তদ্ব্যতীত এক দিন এক জন কাশ ব্যক্তি ৭ টাকা  
দিয়া প্রবেশের চেষ্টা করিতেছে। আর এক  
টির তাৎপর্য এই ব্রহ্মাসিকাবৃত্ত নাম। স.তবে  
ভারতবর্ষীয় একি বিশম প্রশংসন করিয়াছে।

অট্টালিকার প্রবেশের দ্বার, যেকপ টাকা  
সংগৃহীত হইতেছে, তাহা অত্যন্ত পূর্ণ।

জামেবিকা হইতে যুদ্ধের সমাচার আগত  
হইয়াছে। নিউ জর্জিয়া ও টরন নগর ফে-  
ডেরাঙ্গের হস্ত গত হইয়াছে, তাহাদের  
সম্মুখে কনফেডারেটরা দ্বিবি হইতে পারিতে  
ছেন, ইহাতে এমত চিত্র ভরসা হইতেছে  
যে এই যুদ্ধে দক্ষিণ জয় লাভ করিলে।

ইণ্ডিয়ান ফীল্ড পত্র সম্পাদক জম পূর্ণক  
লিখিয়াছেন যে বর্তমান ইংলিজবিশনের অট্টা-  
লিকা হাইড্রোপাথে নির্মিত হইয়াছে, বহুতর্য  
উহা উক্ত স্থান হইতে বিরুদ্ধে টাউন না-  
মক উপনগরে স্থাপিত হইয়াছে।

করাশীল দেশে যে গোলযোগ হইবার  
সম্ভাবনা হইয়াছিল, তাহা নিবৃত্ত হইয়াছে।

লর্ড ক্যানিং স্বদেশে উদীয় হইয়াছেন।

উনিচাঁদ শুভসা

## বিবিধ সংবাদ।

৩১শে আশ্বিন সোমবার।

আমরা অত্যন্ত দুঃখিত হইয়া নিম্ন নি-  
খিল টেলিগ্রামের সংবাদ প্রকাশ করিতেছি  
। লণ্ডন, ১২শে জুন গতকল্য হারল কানি  
কের মৃত্যু হইয়াছে। মিসিসিপি নদীতে একটা  
জলযাত্রা হইয়া গিয়াছে। সিন্ডিকিদিগের ২০  
তারি সমগ্র এক কালে বিনষ্ট হইয়াছে। মেক্সি-  
ক নগরীয়েবা অ'বাসমর্পণ করিতেছে। ১২শে  
ফীরা রাইটজুর্গ ভাগ করিয়াছে। গবর্নমেন্টের  
সেনারা মেক্সিকো নগরের সম্মুখে উপস্থিত হই-  
য়াছে। চারলস টেনেব সভ্য করস জাফ  
নিক গ্রাহ করিয়াছেন। ২০ গত সপ্তাহের ওয়া-  
শিটন নগরের বিপদের সংবাদ শুভ নহে।

লোন্ডাউ নগরে নাসব দেশীয় অ'হিকেনের  
এক ১০০ টাকার বিক্রীত হইতেছে। গীন  
১০০০ হস্তিনার মূল্য বৃদ্ধি হইয়াছে।

যকীপুরের কমিসনর বাউবিঙ সাহেব ত  
প্রত্য বাকির টাক উঠাইয়া দিয়াছেন। অনে-

কে ইহা সুবিধা জ্ঞান করিলে, কিন্তু বহুতর্য  
তাহা নহে।

আমরা নিম্নের রূপে অবগত করিয়াছি তা-  
রতবর্ষীয় গবর্নমেন্ট কারুলের যুদ্ধে হস্তার্পণ  
করিবেন না। লর্ড পামরন মনসভার ব-  
লিয়াছেন পারস্য দেশীয় রাজা এম্বের বিদ-  
য়ে হস্তার্পণ করেন নাই। ইহা তুলতাবে  
ও দোস্ত মহম্মদ খাঁর গৃহবিবাদ মাত্র।

দক্ষিণ ফেরালড সম্পাদক সর বাটম সিদ্দা-  
রেব পুনর দরবারের বিষয় প্রকাশ করিয়াছে-  
ন। উক্ত দরবারে এডমেরল ও ইউরোপীয়  
উক্তবিধ লোক উপস্থিত ছিলেন এবং সক-  
লেই শাসন কর্তার বিনয় ও তদ্রূপ সন্তোষ  
লাভ করিয়াছেন।

উক্ত পত্রে ড্রাগুন রেজিমেন্টের কর্নেল  
এলি আকরফা হেড হুইখানি পত্র প্রকাশিত  
করিয়াছেন। তাহার নামে নামকিত চিঠি ল-  
য়ে অনেক অপবাদ দেওয়া হয়। কয়েক জন  
অ'কিসর তাহা সত্য বলিয়া শপথ করেন।  
কিন্তু উ'সারিগের কথা মিথ্যা সম্ভাষ হইয়া-  
ছে। অবশ্যই ফীকার করিতে হইবে কৃতপ্রস  
কোম্পানির আফিসের রাইকীর আফিসর  
দিগের অপেক্ষা উন্নতলোক ছিলেন।

সি-গেজেট সম্পাদক বলেন, কয়েক দি-  
ন অ'পি কয়েক ব্যক্তি আগতার কাটো-  
নমেন্টে দক্ষিণে টের কাটিতে স'প্রিয়োগে ছিল  
কেনিতেছে। সম্পাদক নিজে কয়েক খানি  
ইউ পাড়িতে দেখিয়াছেন। ১০ ডিগ্রি টের কাটি  
তে উই পড়া যত্ন নয়।

ইংলিসমান সম্পাদক লিখিয়াছেন সন্ধ্যা  
তি খানি ২০ ৮ জন বিপাতীকে ব' করি  
যাছে তাহা শেফোল্ড ব্যক্তিগণের দে.মেই  
খটিয়াছে। তাহার সেনাদের কতক রসদ  
হইয়া হাইতেছিল। একটা নিরস্তর নিকটে  
অস্ত্র একত্রিত করিয়া রাখিয়া তাহার সান  
করিতে গমন কবে, এমন সময়ে অন্য জাতী  
য়েক আসিয়া তাহাদিগের প্রাণ সংহার করি-  
য়াছে। গায়োজার্ডীয় এড মল সন্তোষিত জি-  
রার রাজার অধিনে প্রবেশ করিয়া কয়েক  
খানি গ্রাম লুণ্ঠ করিয়াছে। এই বন্যদিগের  
পার্বত হইতে বহুতর্য বহুতর্য দেশের মধ্যস্থ  
লে অথবা কোন দীপে বাস করিতে দেওয়া  
বহুতর্য।

গত শনিবারের মেজেটে প্রকাশিত হই-  
রাতে ১২টি ছফল হইল। আশাশুভ হইরাছে।  
সমস্ত সন্থর আলা ও দুই জন বারিষ্টার ইহার  
বিচারপতি পদে নিযুক্ত হইরাছেন। কয়েক  
জন উপযুক্ত সদস্যআলাকে প্রথম প্রেরিত করা  
হইরাছে। গবর্নমেণ্ট সদস্যআলাসিগকে বারি-  
ষ্টার অপেক্ষা বিচক্ষণ বিচারপতি জ্ঞান করেন  
ইহা বিশেষ আশ্বাসের বিষয়।

জোসেফ কারবেরি ও তাঁহার ভগিনী  
মেউলিয়া, হটবার আশয়ে আশালতে উপস্থি-  
ত হইরাছেন। তাঁহাদিগের হাতা কয়েক মৎ-  
সর পক্ষে মেউলিয়া হওরাতে তাঁহারা বক্তা  
বিক্রয়ের কাব্য আশ্রয় করেন। এই সকল  
মেউলিয়াসিগের অধিকাংশ বিশেষ রূপে অবগ-  
ত হওরা উচিত।

পূর্ববক্তার রেইলওয়ে এজেন্ট আ-  
সিসব এক জন পাণ্ডাওয়াল। ১১ ৥ ১০ চুরি  
সহাতে তাঁহাকে সেসিয়ার সমর্পণ করা হ-  
ইরাছে।

বিশ্বমনোরঞ্জন পত্রিকার এক জন পত্রপ্র-  
দাতা বলেন মাসদেহের বীরবংশীয় একটি জী-  
লোক তিন বৎসর গর্ভধারণ করিয়া সন্ততি  
সংশোধিত মাত্র দুইটি সন্তান প্রসব করিয়া  
প্রসূত্যাগ করিয়াছে। চিকিৎসা শাস্ত্রের অনু-  
সন্ধানের উপযুক্ত বিষয় সন্দেহ নাই।

২৫এ আবার মঙ্গলবার :  
মহিনীপুরের অস্ত্রপাটী দেহুলা হই-  
তে প্রযুক্ত কৈলাসচন্দ্র রাধ মহাশয় ব্রজসমা-  
জোদেয়া মিথিও আশাসিগের নিকট পাচ  
৮ ক. ৩ নিম্ন লিখিত পত্র পাঠাইরাছেন।

"সম্পাদক মহাশয় : শীত্র আমার কন্যার  
অগ্রাশন জিয়া সম্পন্ন হইবেক। ওদুলপক্ষে  
বহু ব্যয় করিতে হইবেক। কিন্তু স্বীয় আশ্র  
তত নব্য। এদেবে সর্বাঙ্গে বকশানিধান  
জগদীশ্বরের নিকট শুভ প্রার্থনা করা, এবং  
পুত্রত এই বিষয়ে স্থান করা অবশ্য কষ্টব্য  
নিবেচনায় এই পত্রের ভিতরে ৫ পাচ টাকার  
পোষ্টট্রাম্প মহাশয়ের নিকট পাঠাইলাম।  
মহাশয় অগ্রগ্রহ প্রকাশ পূর্বক উক্ত টাকা  
এইমাত্র প্রদানসময়ে পাঠাইয়া দিবেন।  
সংগ্রহের পক্ষে এই টাকা ব্যয়িত হইলেও

১। বনোবুধ ৩২৫ নিবেচন উচিত  
২৬৩ মান  
৩৮৩ আবার।

সাবরণ পুরের এল তেড - ১১৫ এক ১২ ম  
মারোগা ১০,০০০ টাকা তহবিল তহবিল করাতে  
তাঁহাকে হাজতে দিয়া ১০,০০০, টাকার বাহি  
ন চাহা হয়। সে তাহা দিতে অক্ষম - ১১৫  
তাঁহাকে তত্ত্ব্য নাজিটে টাকারাগা ৮,৫০০  
৭ করেন। তখন সে পাগল হইল।  
তি তাহার জী গবর্নমেণ্টের নিকটে

রা আবেদন করিয়াছে যে কারাগারে  
তাঁহার প্রাণত্যাগ হইরাছে। তত্ত্ব্য সিংল  
সদস্যর পাশ্চ বলেন এ মিথ্যা কথা। যদি ক-  
উক, আশাসিগের এই আশ্রয় বোধ হইতে-  
ছে, এক জন জীরাধিকারী ১০০০০ টাকা বই  
তাঁহাকে নাই, তদ্বিমিত্ত তাঁহার মিয়াক হইল।

একদে এতদেকশীর রাজগণের অগবাহ  
লোণা একটি প্রথা হইল। উঠিয়াছে অযোধ্যা  
গেজেটে এক জন লিপিরাজেন, অজব বাহুর  
তারতবীর গবর্নমেণ্টের প্রতি আশ্রয় প্রকাশ  
করিয়া বলিয়াছেন যে তিনি শীত্র অযোধ্যা  
আক্রমণ করিবেন। অজ বাহুর ইউরোপীয়  
লিগকে নেপালের বনে শীত্র করিতে নিষে-  
ধ করিয়াছিলেন, ইহাই কি একপ লিখিবার  
কারণ?

নিচী গেজেটের সংবাদদাতা বলেন, ম  
তারাজ রণবীর সিংহ প্রজাসিগের উপর অ-  
ত্যাচার করিতেছেন। তিনি নিজ  
ক, স্বীরের প্রায় সমস্তর বানিজ্য একচেটিয়া  
করিতেছেন। শালের তাকিরা তাঁহার জীত  
লাভের ন্যায়। রাজা সকল প্রবোধ উপর অ-  
পরিমিত বহু লইয়া করেন। তাঁহার রাজত্বের  
শেষ দশা উপস্থিত।

২৬এ আবার বুধবার  
টাইমস অব ইন্ডিয়া সম্পাদক কহুল হই-  
তে সংবাদ প্রাপ্ত হইরাছেন, সন্ততি মোস্ত  
মহম্মদের মকিত সুলতান আনের এক তত্ত্ব্যর  
যুগ হইয়া গিয়াছে। উহা'ব কল'কস জানা  
হাস নাই।

মাস্ত্রাজে যে সকল নোট প্রেরিত হইয়া-  
ছে তত্ত্ব্যে তাহিল তাঁহার নথর না থাকাতে  
তত্ত্ব্য লোকেরা তাহা লইতে অসম্মত হই-  
রাছেন। তাহা'ব নোটের পরিমাণ ৮ টাকা  
২১০ ২২।

১ম ডোমগন ১৮৭১ তট  
২ম ডোমগন ১৮৭১ তট  
৩ম ডোমগন ১৮৭১ তট

ব্যয়ের জন্য এক একক প্রদান  
শাপন করিতেছেন। বিচারসিগের  
করিবার এ একটি প্রধান কারণ হইতেছে।

কিমিকের হগলীশিত স'খা'জা  
ন, তত্ত্ব্য ইউরোপীয় টেননিক জীরাধিকার  
নেপে প্রেরণ করা হইতেছে। বক্তা

২১এ আবার বৃহস্পতিবার।  
গত কল্য একস'চেফ'হে সিং বিচার  
টাক হু অহিকেন বিক্রীত হইরাছে।

| বাল          | মোট       |
|--------------|-----------|
| বেহারের ১৩০৫ | ১৮,৫৮,৩৫০ |
| কাশী ১৩৫৫    | ১৫,৩৩,৩০০ |

১০১ নগরে সন্ততি সুলতান মহাশয়  
গের সহিত সুলতান সুলতানদের একটি বাহি  
হইরা গিয়াছে। হানালিরা একজা'র সুলত  
নির্ভারিত ক'হিলেন, কিন্তু মহাশয়ের  
হাতে অসম ১০ ওরা'কে অনেক লালন পদ  
রন করিয়াছেন। একদে হু'বকো'পূর্বসিগের  
তত্ত্ব্য ১০ ১০০ করাতে উক্ত কল'ক  
চানক ১০ ১০০ ১ এখানকার বিচার  
ও বোধ্য হইল। তাহেই এখানকার  
হরণ বিধরে

ইন্ডিয়ান এম্পারে লিখিত হইরাছে  
করাশীরা লোহিত সমুদ্রে এক হাটীয়া করিয়া  
ছে। ওমাজার নিকটবর্তি একটি বীণ করিয়া  
গের হস্তগত হইরাছে। সম্রাট নেপোলিয়ন  
বিখ্যাত কলবাটের প্রাণালিতে করাশী উদ্য  
বেশ করিতেছেন।

অযোধ্যা গেজেট সম্পাদক বলেন, তত্ত্ব-  
ত্ব্য ১২ গণিত অধারোহী সেনাদলের মেজর  
গক গুলিবারা আত্মহত্যা করিবার চেষ্টা ক-  
রেন। গুলি তাঁহার বাহ কক দিয়া গমন বি-  
রাছে। তাঁহার জীবন সংসার। ইউরোপীয়  
সেনাদলে অগ্রসরান করিলে আত্মহত্যার  
ন গোপনীয় কারণ বাহির হইতে পারে।

টাইমস অব ইন্ডিয়া রাজাঅধিত সং-  
ক হাতা বলেন, সর উইলিয়ম ডেনিসন নিজ-  
পদ ত্যাগ করিতে ইচ্ছুক নছেন। তাঁহার অ-  
নেক পরিবার এবং অল্প মাত্র সম্পত্তি এম'ড  
স্বা'ল পক্ষ হই ১৮৭৮ টাক  
১৮৭৮ হইবে। ১৮৭৮ ১৮ গবর্নমেণ্ট  
ই জিন'রো'র অ'ক ব'গ অনেক বার উ'। ১৮ ৭  
ডেনিসনকে তিরস্কৃত করিয়াছেন। তাহ'র ১৮



অন্য কোন মোবনাই। তিনি কেবল  
ই অঙ্গী। এত রোগ।

চরিতে আর্কট হইতে বৈশ্য প্রেরি-  
তাহার শুদ্ধ লেখাতে কলীশাসন  
সর্বসর উইলিয়ম ভেনিসের নিকটে তাহা-  
প্রতিবাদ করেন। তিনি শুদ্ধতরে আক্ষেপ  
প্রকাশ ও কথা প্রার্থনা করিয়া শুদ্ধ প্রত্যর্প  
করিতে সম্মত হইয়াছেন। এইসকলের নি-  
মিত্তই কি ভেনিসের বিরুদ্ধাচার খান।

নিম্নলিখিত হস্তন মোট এবং তাহার  
প্রতিবন্ধকন মগর টাকা ও রোপ্য প্রকৃতি  
দাখিল।

| কলিকাতা।    | বোম্বাই     | মাদ্রাস   | মোট         |
|-------------|-------------|-----------|-------------|
| ২,৪৩,০০,০০০ | ১,৫০,০০,০০০ | ১৫,০০,০০০ | ৪,০৮,০০,০০০ |
| ১,৩৩,৫১,১০০ | ৫০,০০,০০০   | ১০,০০,০০০ | ১,৯৩,৫১,১০০ |
| ২২,০০,০০০   |             |           | ২২,০০,০০০   |
| ১৫,০০,০০০   |             |           | ১৫,০০,০০০   |

মাদ্রাজে মোট ও প্রতিবন্ধকন টাকা  
উক্তর সমান। এত চম্পকাতে চম্পা চারি  
শোটির অধিক মোট প্রচলিত করা সম্ভব  
হইয়াছে।

কলার নিকটে অফিসের সেন্যের সহিত  
স্বলভান জানের একটি যুদ্ধ হইয়াছে। এ  
তে মোস্তাফিজ মল্লিক পরাজিত হইয়াছেন।  
স্বলভানজানের সঙ্গি কলিঙ্গের অফিসের  
সহিত।

কলিঙ্গের সেন্যের সহিত  
সময়ে গিলগিট গিলগিটের সেন্যের  
চেহেল বাই তারতবর্গের সেন্যের সহিত

র হে। তারতবর্গের সেন্যের সহিত  
দুই এক জন লোক চাই।

মাদ্রাজ অফিসের সেন্যের নিকটে দুই  
মাইলের দূরত্ব রোপন করিতেছেন। সীওতাল  
পরগণার হস্তন সিদ্ধান্ত। হস্তন কি হইল।  
এক জন অতি করে কলিঙ্গের সেন্যের  
ন্য পুনর্বার চীন দেশে প্রেরিত হইবে। বিদ্রো-  
হিগিগকে সমন করা ইহার উদ্দেশ্য। শেনে  
উপনাম লিখিত বান্দ, দ্বারা বিদ্রোহের  
মকদ্দমার নিষ্পত্তির ন্যায় উল্লিখিত বিবাদের  
নিষ্পত্তি না হয়।

কিনিক সম্প্রদায় বলেন তারতবর্গের গবন  
মোটের প্রকৃত বাস্তবিক হেঁট সেজেটারি  
আজ্ঞা দিচ্ছিলেন, এ সকল সৈন্য সমন পূর্ণ  
হইলে ইংলণ্ডে যাইতে চাহিলে তাহাদিগকে  
অনিক টাকা দিয়া এদেশীয় সেনাদলে রাখা  
হইবে। হস্তন সৈন্য আনিতে বিস্তর ব্যয়  
হয়। প্রত্যেক ব্যক্তির প্রতি ২০ টাকা প-  
ড়ে কিন্তু পুরাতন সৈনিকদিগকে রাখা হইলে  
ত্রিবিধ উপকার হইবে। প্রথমতঃ পুরাতন  
শিক্ষিত সৈন্য পড়াশোনা যাইবে, দ্বিতীয়তঃ হু-  
তন সেনা আনিবার ব্যয় সংক্ষেপ হইবে, ত-  
তীয়তঃ তারতবর্গের নামে যে ১৪০০০ সৈন্য  
ইংলণ্ডে আছে, তাহাদিগকে রাখিবার ব্যয়  
প্রয়োজন করিবে না। শেষোক্তটি আশাতি-  
গের আশাশ্রয়।

উক্ত সম্প্রদায় বলেন বর্তমান খাতে  
অনেক ইউরোপীয় খালসী বিলক হইয়া  
সৈন্যে যোগ দেন। পুলিশ কর্মচারিদিগের  
এতদ্বিবার্ষিক অবস্থা কর্তব্য। খালসীরা এক  
প্রকার অস্বাভাবিক, তাহাদিগকে চম্পনে  
রাখিলে তাহার ঠিক পথে চলিবে কেন।

অস্বাভাবিকতার একজন সংবাদ  
তা বলেন, রাওসাহেবের ভৃত্যকালিতা প্র-  
মাণ হইতে না। হেরাল্ড পত্রে রাওসাহেবের  
যে প্রকার সাহস ও অধ্যবসায়ের বিষয় লি-  
খিত হইয়াছে তাহাতে তিনি যে যুদ্ধের কথা

ম লক্ষ্য করিয়াছেন তাহা মোস্তাফিজ  
মল্লিকের সহিত।  
এক ভিত্তি হইয়াছে।  
এই প্রকৃতি হইতে আশা করা যে

পুলিশ কর্মচারিরা তাহাকে যুদ্ধ করিবার  
ন্য চেষ্টা করাতে সে উৎসাহের আনিতে পা-  
রে। একজন দুইজন চরের সহিত তাহার সা-  
ফা হইলে সে বলিল আমি আমি তোমার  
আমাকে ধরিবার চেষ্টার আভা। অতএব তো-  
মাদিগের প্রধানের নিকটে এই চিহ্ন লইয়া  
যাও, এই কথা বলিয়া তাহাদিগকে তল-  
বারের আঘাত দিল। সম্প্রতি একজন  
কালেক্টরের বানীতে বাইরা তাহার সহিত  
রাজস্ব ও বিচার প্রকৃতি বিষয়ে অনেক কল  
কথোপকথন করে, কালেক্টর কতককল পসে  
তাহার মান জিজ্ঞাসা করাতে সে বলিল আ-  
মি শিখ্যাত ডাকাইত শকররাম সিংহ কালে  
ইংলণ্ডে পলাতক হইয়া এক বিবল  
বার পিস্তল লষ্টবার চেষ্টা করাতে শকররাম  
বলিল সাহেব তোমার পিস্তল ইংলণ্ডে  
পার আছে, সাহেব তাহার যাইতে চাইতে  
শকররাম অস্ত্র প্রকাশ পক্ষ বাহিন হই-  
য়া গেল। আশ্রয় ইংলণ্ডীয় সিনিয়রদের  
পক্ষ অবলম্বন করিবার। কিন্তু তারতবর্গের শকর-  
রাম রবিন ডেভের নিহত নহে।

গবনকে আজ্ঞা করিয়াছেন গবন  
ওয়ার্ডের ব্যতীত অন্য যে টাকা আনখ্যক  
তাহার অতিরিক্ত টাকা ১০ গুণ হইবে না।  
এক মাসের চেকের টাকা অন্য বাসে নেওয়া  
হইবে না। পারসিক ওয়াশেব ওপকল দিয়া  
স্বপ্ন নিমিত্ত কি এই চেষ্টা হইতেছে।

প্রত্যেকের নেপালের স বাদ নাতা ব-  
লেন, তিনকট দেশে কলম্বন লাখ নেপালী  
র একজন কলম্বন বদ করাতে উক্তর রাজ্যে যুদ্ধ  
হইবার সম্ভাবনা হয়। কিন্তু তিনকটের  
মোট ভৃত্যকালিগিগনে নেপালে প্রবেশ  
করিতে সেট অন্ত্যাব গিয়াছে।

উক্ত সংবাদদাতা আরও বলেন মদর  
জলদাতার আগনার দুই প্রকৃতি ইংলণ্ডীয়  
সামরিক বিদ্যালয়ে শিক্ষা দিবার আশ্রয়  
করিয়া গবনব এমরলের নিকটে আশ্রয়  
করেন। কিন্তু গবনব জেনারেল এই বলিয়া তাহার  
আবেদন প্রত্যাখ্যান করেন নাই যে বাহাদুর কেবল  
ই লক্ষ্যবর্তী সেনাদলে প্রবেশ করিবেন  
তাহার দুই কলিঙ্গের সেন্যের সহিত  
সেই নেপাল সেন্যের সহিত  
তর আনাগর প্রকৃতিগকে কলম্বন সন্ন্যাস

কটে প্রেরণ করুন করানীসমূহ আক্রান্ত  
ইয়া উদ্ভিদগণকে নিজ সাময়িক বিদ্যালয়ে  
প্রবেশ করিতে দিবে। এ উদ্ভয়ে সকল শিক  
কা হইয়াছে।

২৮ এ আশাট শুভবার।

আল্য লার্ভ ক নিওর 'হু' 'হু' ২১টি  
ভাগ হইয়াছে। বাবড়ী টেননে এই একা-  
র হইবে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া এডমেনশী টি'ল্ড টি  
কিংসকে কার্যের প্রাধিকারকে ইংলণ্ডের  
গবর্নমেন্টের নামে উদ্ভূত প্রথম বিচারালয়ে  
নালীশ করিতে কহিয়াছেন, মহাসভা যে আটম  
করেন, সে আটমের বহির্ভূত কাব্য করিলে  
বিচারপতিরা তাহা রহিত করিতে পারেন।  
হর্নগাভের অধ্যক্ষেরা উদ্ভিধিত বিবে  
মহাসভার রূপে মিয়মের বিকল্প কার্য করিয়া  
ছেন। যাহা হটক বিচারালয়ে ইহার প্রতিকার  
হইবে না। সংস্কার মোব অভ্যন্তর প্রবল।

হরকরা সম্পাদক দুর্গ দু হিলির কয়েক  
খানি প্রবন্ধনা পত্র প্রকাশ করিয়াছেন। সে  
চীন দেশীয় যুদ্ধে সহিশেষ লাহন প্রকাশ  
বরাতে সর রবট মেনিয়ার তাহাকে এক জন  
সেনাপতি করিবার অনুরোধ করেন। সম্পা-  
দক কি উক্ত প্রতিকারের জীবন রক্ষার  
চেষ্টা পাইতেছেন?

এক মালী বাবু জনকজ যুথোপাধ্যায়ের  
বাগী হইতে প্রায় ২০০০ টাকার অসভ্য অ-  
শ্রম করিয়া তাহার উপপাতিকে দেয়। তা-  
হাদিগকে সেনিয়রে সমর্পণ করা হইয়াছে।

উত্তিয়ান শিকার নিবেচনা করেন এড-  
মেনশীদিগকে আনিষ্ঠীতে সরজনের পদ  
হইতে বহির্ভূত করা অন্যায় হয় নাই। ইউ-  
রোপীয় ও ধর্মীয়দের এডমেনশী হিন্দু টি  
কিংসকে বহি আশ্রয়গির পরিবারের  
টিকিৎসা করিতে না দেন, তদর্থে তাহাদিগের  
সেবা দেওয়া যাহু ন। ষ্ট্রবর্ন পুত পরিবারে  
অপকিত লোক গমন করিলে যদি সেই পবি-  
র পরিবারের অপকিততা হয়, তাহা হইলে  
ধর্মবল কি?

২৯ এ আশাট শুনিবার।

উত্তিয়ান ক্রম যুদ্ধের শেষ হইয়াছে।  
শব্দপ্রভৃতি বন্যজাতীরা যে উপপাত আর

করিয়াছিল, সম্পূর্ণ রূপে তাহার শান্তি হ-  
ইয়াছে। অরুণ্ডার গোলমোখ কবে হাইবে?

হরকরা সম্পাদক বলেন মুরনিদাবাদের  
জাকিসের নামে মোকিটাকা প্রভূত করিবার যে  
অপরাধ দেওয়া হয় তিনি তাহা হইতে মুক্ত  
হইয়াছেন। এই সুযোগ পাইয়া কেও অব  
ইণ্ডিয়ানবাবের চারিগে মোব মিথ্যাহিন্দে মা-  
চীনদেশে সেনা প্রেরণ সংস্কার অসভ্য  
নয়।

সম্পাদক হিন্দুস্থানী সম্পাদক বলেন কে-  
ও অব ইণ্ডিয়ার হাঙ্গরদাবাদের সমাধের  
বিপক্ষে প্রভাব সকল জন মুক্ত বোধ হয়,  
সমাবেশ অবমাননা করা ও কর্বেল ভেবিডম  
কে চুরীভূত করিয়া এ কেওর ন কোন মিলে  
টাই বন্ধুকে তাহার প্রেরণ করা এই সংল প্র-  
স্তাব লিখিবার উদ্দেশ্য।

আমেরিকার যুদ্ধের ক্রমশঃ শেষ হইয়া  
আসিতেছে। গবর্নমেন্টের সেনারা বিজোহী  
দিগের রাবড়ী প্রথম নগর অধিকার করি-  
য়াছে। যুদ্ধ শীঘ্র শেষ হইলেই ভাল।

মিরলিখিত মূল্যে গবর্নমেন্টের কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে।

|                   |           |
|-------------------|-----------|
| ১ টাকার সিকা      | ১১১ — ১১১ |
| ২ টাকার কোম্পানির | ১০১ — ১০১ |
| ৩ টাকার ঐ         | ১০১ — ১০১ |
| ৪ টাকার ঐ         | ১১২ — ১১২ |

### ১০ ই জুন পর্য্যন্তের ইকুয়েপীর সম্পাদক।

পোর্ট ব্রাসলিহিত বিজোহী সেনান, সেনা-  
পতি ব্যাকসকে উইকেটের নগরে আক্রমণ ক-  
রিয়া পটমাক নদী পার্বে বেলিগাও হরীতকৃত  
করিয়াছে। ওয়ানিটমের লোকেরা অভিযার  
ভীত হইয়াছিলেন। সতাপতি (লিডলম) যুদ্ধ  
সম্পর্কে রেইলওয়ে আপনার অধীনস্থ করেন;  
সেনা সংগৃহীত হওয়াতে সেনাপতি ব্যাকসে নব  
নাহাওয়ার জন্য সেনা প্রেরিত হয়। বিজোহীরা  
উইকেটেরে প্রত্যাগমন করিয়াছে।

সেনাপতি মাকডুগাল ক্রেডারিকস্বর্গ হইতে  
রিচমন্ডে ন কিং অগ্রসর হইয়াছেন। সেনাপতি  
মাকিলান মালবার কোর্ট হাউস লইয়াছেন  
এবং এক্ষণে তিনি মরুমর সৈন্যের সহিত উদ্ভা  
ন আধারী পীচকোশ হুবে অবস্থিতি করিতে  
ছেন

মিরলিখিত মূল্যে মরুমর ক্রমশঃ  
হস্তগত হইয়াছে।

টাইমসের সাহেব যার সুবিধা  
প্রভাব করেন তাহা অগ্রাহ হইয়াছে।  
তাঁহার পক্ষ ও ৩৬৭ জন তাঁহার বিচার  
কাল করিয়াছেন। হরালপোজ বাহেব  
বে সংশোধন প্রভাব করিবার সকল  
তাহা পরিচালন করিয়াছেন।

ইটালীর মহাসভা এই অভিযার একাশ  
রিয়াছেন মন্ত্রিসভার প্রাতি তাঁহারিগের  
বিধান নাই। ইটালি রাজ্যে আর অপেক্ষা  
অধিক হইতেছে, কিন্তু আর হইবার আর  
উক্ত উপার আর; এবং পটমাক সোকে আ-  
বার চিনাথে সত্বে একাশ করিয়াছেন।

করাণী সেনারা মেরিকো নগরের কবে  
কোশ নুবে অবস্থিতি করিতেছে। একজন  
তি উদ্ভা সেনাদলকে পরাজিত করা হইয়া  
কাজ হইতে আরো অধিক সেনা প্রেরি  
হইবে।

টাইরলে অনেক অষ্ট্রীয় সেনা সমবে  
হইতেছে। অষ্ট্রীয় সেনাদলে আরো অধিক  
ত্রিগেত (১৮,০০০) সেনা প্রেরিত হই  
১১ জুলাই অনবরণে রাজকুমারী জা-  
সের সহিত তেলি রাজকুমার সুইস বি-  
হইবে।

বিলর দেশীয় রাজপ্রতিনিধি পার্লি হই  
সওমে উপনীত হইয়াছেন।

১১ই জুন আপাম দেশীয় হস্তগত হই  
ভাগ করিয়াছেন।

মোহিত মরুম ও ভারতবর্ষের টেমি  
কোম্পানির বিল হাউস অব জাউনে বি-  
বার পঠিত হইয়াছে।

১৭ই জুন লার্ভ কামিটের হুত্ব হইয়াছে  
রিচমন্ডে বিজোহীরা গবর্নমেন্ট  
এক অংশকে আক্রমণ করিয়া অনেক কাব্য  
হস্তগত করে। পর বিল পুর্নগীর  
আরত হস্তগতে বিজোহীরা পলাইয়া আ-  
দিগের পিছির মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়াছে। প-  
কৌর ৭০০০ সৈন্য হস্ত হইয়াছে।

বিজোহীরা ক্রিহ ভাগ করিয়াছে। টি  
পিডে তাহারিগের রণতরি পরাজিত হই  
গবর্নমেন্ট মেকিস নগর অধিকৃত করা  
সেনাপতি ব্যাকস মালগত সেনাগণে  
পুর্নগীর পটমাক নদী পার হইয়াছেন।  
গবর্নমেন্টের সেনাপতি বটলর মিউ  
সের প্রীলোকদিগের নিদাহতক এক



পত্র প্রকাশ করিতে ইচ্ছাশ্রমের সন্ধান লোকে  
উচ্চারণ উপর প্রিয়তম হইয়াছেন।

করাই নৈমিত্তিক বহুপুত্রি বৈকল্পিক সেনা-  
বিশেষ বিক্রেত পুত্রাঙ্কিত হইয়াছে। পুত্র হইতে  
কুতন সেনা প্রেরিত হইতেছে।

কর প্রদত্ত হইয়াছিল দ্বারা ও ইলও আ-  
বেরিয়ার হইতে প্রেরিত হইবেন, কিন্তু আদল  
হেনস, পুত্রাঙ্কিত করিয়াছেন আপাততঃ এ  
ইচ্ছা করি।

পোপ রোম নবমীয় পুত্রাঙ্কিত হইলেও তাঁহার  
হাস্য করিয়াছেন। করিবার অসুযোগ করি-  
য়াছেন। পুত্রাঙ্কিতের তাহাতে সন্তত হইয়া এক  
মোহনা পত্র প্রচার করিয়াছেন।

উত্তরবঙ্গের মহানগরী কাকাকে এক এড্বেস দিয়া  
আছেন। ইটালীর দিগেব রোমে উপস্থিত  
অধিবাসী আছে।

কিন্তু জন প্রতিনিধি করিবার পদক্ষেপেই বলিয়া-  
ছেন। পোলগের যে সকল লোক ইটালিতে  
পলায়ন করিয়াছে, যদি তাহাদিগকে সেনাদল  
কুতন করা হয় তাহা হইলে তাঁহার। বিক্রেত  
ইচ্ছাশ্রমকে ইটালির রাজ্য বলিয়া স্বীকার  
করবেন।

সার্বভৌমত্বের মহানগরী সেনাপতি বটল-  
বের ঘোষণার প্রতি দোষারোপ করিয়াছেন।

একজন জন প্রতিনিধি পোল করাসী পদক্ষেপকে  
ইচ্ছাশ্রম তিনি ইটালির রাজ্য সহিত সন্ধি  
করবেন না।

কুতনের সহিত সন্ধিবিহার লোকদিগের  
বরাহ গোলাযোগ উপস্থিত হইয়াছে।

### গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাকাল। দেশীয় লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের

আদেশানুসারী নিয়োগ।

১ম জুলাই—সাহাবাদের প্রথম বিভাগের জায়ে-  
৩ ডেপুটি কালেক্টর এল. ডি. আনন্দের সাহেব  
১ সার্ক, অধি নিয়ন্ত্রণ ব্যক্তিগত বকসার  
৩০০ আনন্দের কার্যেব আন পাইচা-

১ এ জুলাই—এসিডেন্সি কালেক্টর গণি.  
সহকারী অধ্যাপক জে. এল. রিক সাহেব  
কর্ম করিয়া ক্রিয়বিলের কমা উক্ত  
কর প্রোভিড ও কুতনবিহার প্রতিনিধি  
কে প্রকৃতি নির্বাচ করিবেন।

কোমাইলাল রে ক্রিয়বিলের কমা প্রে-  
ব কালেক্টর ব্যক্তি পাশ্চাত্য প্রতিনিধি  
হইবেন।

নিয়মিত কর্মচারীরা ৩০ মে ও ৫ ই জুন  
সহকারী কমিশনরের পক্ষে নিযুক্ত হইয়া পশ্চা  
নিযুক্ত হইতে পারিবেন।

লেপ্টেনেন্ট এ. ই. কাহেল, মওলি।

“এ. এল. ক্রিয়বিল গোলাপাড়া।

“এল. লুই, সন্দীপুর।

এ. ডি. জোশ সাহেব ইটা প ও টেনসবিব  
প্রতিনিধি জুপারিটেন্ট হইবেন।

এচ. বেল সাহেব বশোহরের ছোট আদালত  
তৈর প্রতিনিধি জন্ম হইবেন। অপব, তিনি  
বাগের। লনিয়া, কোটচাঁদপুর ও নতাকন ছোট  
আদালতের প্রতিনিধি হইবেন

জে. জোশ সাহেব বজ্রেশ্বরী পদক্ষেপেই  
প্রতিনিধি অণব সেক্রেটারি হইবেন।

এচ. এল. ডাল্লিমর সাহেব তাঁহার বর্তমান  
কর্ম ভিন্ন নদীয়া বিভাগের প্রতিনিধি কমিশন  
রেব কর্ম করিবেন।

১ম জুলাই—গবর্ণর জেনারেলের অসুস্থতি  
কমে লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর ১৮-৬০ অক্টোবর ৪২ আইন  
অনুসারে নিম্ন লিখিত স্থানে ছোট আদালত  
সংস্থাপিত করিবেন।

|                    |              |
|--------------------|--------------|
| ১ মুন্সেব          | ৭ নটোর       |
| ২ ভগলপুর           | ৮ পাবনা      |
| ৩ সেরাজগঞ্জ        | ৯ হুগলী      |
| ৪ কুমারখালী        | ১০ চট্টগ্রাম |
| ৫ কবিদপুর          | মেদনোপুর     |
| ৬ বামপুরবোয়ালিয়া | ১২ কটক       |

উক্ত আইনের ২ ধারানুসারে উক্ত আদা-  
লতের কনডাক্ট বিবরণ নিম্নে লিখিত হইল।

মুন্সেব—ইহা সদর মুনসেফের দোয়া।

|                  |   |
|------------------|---|
| ভগলপুর           | এ |
| সেরাজগঞ্জ        | এ |
| কুমারখালী        | এ |
| কবিদপুর          | এ |
| বামপুরবোয়ালিয়া | এ |
| নটোর             | এ |
| পাবনা            | এ |
| হুগলী            | এ |
| কটক              | এ |
| মেদনোপুর         | এ |

১ম জুলাই—মৌলবী মহম্মদ বাকি মুন্সে-  
বের ছোট আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায়  
প্রধান সদর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

বাহু পাণ্ডুরোহন বন্দোপাধ্যায় সেরাজ-  
গঞ্জের ছোট আদালতের জন্ম হইয়া পাবনা  
জেলায় প্রধান সদর আমিনের কনডাক্ট পাও-  
বেন।

বাহু খিলাস বিদ্যাস কুমারখালির ছোট-  
আদালতের জন্ম হইয়া পাবনা জেলায় প্রধান  
সদর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

বাহু উপেন্দ্রচন্দ্র সারস্বত কবিদপুরের ছোট-  
আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান  
সদর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

বাহু আনন্দচন্দ্র বন্দোপাধ্যায় বাজপাতির  
ছোট আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধা-  
ন সদর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

ডবলিউ. ডবলিউ লিটল সাহেব নাটোরের  
ছোট আদালতের জন্ম হইবেন।

ডবলিউ. রাইট সাহেব পাবনার ছোট আদা-  
লতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান সদর  
আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

বাহু গকানন বন্দোপাধ্যায় হুগলির ছোট  
আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান স-  
দর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

মৌলবী মসিউদ্দীন মন্ডল কটকের ছোট  
আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান  
সদর আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

বাহু কালীকান্ত বাই চট্টগ্রামের ছোট  
আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান সদর  
আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

সি. ডি. লিটল সাহেব মোহনাতলাব ছোট  
আদালতের জন্ম হইবেন।

বাহু কালীকান্ত বিদ্যাস কুমারখালির ছোট  
আদালতের জন্ম হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান সদর  
আমিনের কনডাক্ট পাইবেন।

২৭এ জুন—জানসির অধিবাসিক মাজিষ্ট্রেট  
ক্রি. সিং সাহেব কৌজবাড়ি আইন ২২ ধ-  
ব অনুসারে উক্ত জেলায় প্রথম প্রেরিত অধীন  
মাজিষ্ট্রেটের কনডাক্ট পাইবেন।

উক্ত বিভাগের সহকারী বেগমিউ সদর  
য়ার ১ম জুলাই অবধি সম্পূর্ণ সববেগাব  
হইবেন।

৩০এ জুন—বজ্রেশ্বরীর অসুস্থতি বন্ধ হা-  
লিব প্রতিনিধি মুনসেফ বাহু মহানন্দ রায়  
১৮-৫৯ অক্টোবর ১৯০ ধার অনুসারে উক্ত জেলায়  
ডেপুটি কালেক্টরের কনডাক্ট পাইবেন।

১ম জুলাই—বাহু গোবিন্দ কুমার  
পূর্ববঙ্গীয় প্রধান সদর আমিনের কনডাক্ট  
৫ই জুলাই—জে. কলকাতা পুত্রাঙ্কিত

কেন্দ্রিক কর্মচারী একজন সত্য হইবেন।

লেপ্টেনেন্ট ডবলিউ হাউই আসাবে প্রথম  
প্রেরিত সহকারী পুলিশ জুপারিটেন্ট হইবেন।

৭ই জুলাই—এক. এচ. শিল্প সাহেব বরিশা-  
লেন সাধারণ বিদ্যা শিক্ষাকার্যের কমিটির এক  
জন সদস্য হইবেন।

তুমিতে পাই আশানের জন আশালতার  
অনুভবক মহাপর নাকি উৎকোচ গ্রহণ করেন,  
যদি এ জনরবটি সত্য হয় তবে তিনি, সুশিক্ষিত  
সমাজকে অপবিত্র করিতেছেন। স্বরায় লোক  
সহরণ করুন। আশরা খ্রীষ্ট মহাপর। জন সা-  
হেবের অনুগ্রহে এক জন এচওপ্রভাপ জেন্ট  
মালিষ্ট্রুট পাইয়াছি। তিনি এক জন অপরূপ  
বিচারক। তাঁহার বিচার কার্য তুমিলে কে ক-  
হেবৃত হইতেন। তিনি এমনি সুবিচারক যে  
আজি যাব্যন্তি সময়, কালি তার প্রতি নিমন্ত,  
যাহাকে আজি কোন কণ্ঠে নিষ্পত্ত করিয়া অধ-  
শাসনবোধ করিতেছেন, কালি আশার বিদ্যা  
অপন্যে সেই ব্যক্তি জাহারি দ্বারা সুধার্মবে  
মগ্ন হইতেছে। -বিচারালয়ে, যোকজন্য নিপ-  
বাদী, এমিনাদী তিন্ন অন্য ব্যক্তির প্রবেশকরি-  
বার সাধ্য কি? দ্বারে দ্বারে বহুত অল্প এ-  
হরী, এক জন সন্তান হুলসমান, কোন কার্যোপ-  
লক্ষে তাঁহার আকিলে গিয়াছিলেন, তখন  
নাহের মহাপর তাঁহার এক টাকা জবানবানি ক-  
রিয়াছেন। তিনি যে সকল আবেদন পর গ্রহণ  
করেন, তখনও যে সকল দ্বন্দ্বীতে, তাঁহার নি-  
জে হুতুম দিবার ক্ষমতা নাই তাহাতেও তিনি  
ইচ্ছায়গণ হুতুম প্রদান করেন, আর সেই দ্ব-  
ন্দ্বীতে মালিষ্ট্রুট নাহেবের টেবিলে লিখিয়া  
তাঁহার দস্তখত করান ( সাহেন কিনা তবে  
আর এতে দোষ কি ) আশানের মালিষ্ট্রুট  
নাহেবও দ্বন্দ্বীতে তুমিবার প্রবেশ ক-  
রিয়াছেন। তাহা এতৎ প্রসঙ্গে সত্যতার দ্বন্দ্বী





# সোমপ্রকাশ

৫৩

“এবর্ততাঃ প্রকৃতিহিত্যৈ পার্থিবঃ সরস্বতী প্রতীমহতী ন হীবতাঃ

৪ ভাগ।  
১১ সংখ্যা।

সন ১২৬৯ । ৩ আষাঢ় । ইং ১৮৬২ । ১৬ জুন

১১ টাকা  
১০ দিন অগ্রিম ১০ টাকা

## সোমপ্রকাশ।

৪৯ আশাঢ় সোমবার।  
মাফেটের মজুরদিগের  
সাহায্য দান।

যে পরিমাণে যে দেশের সম্ভ্রাতা হইয়াছে, সেই পরিমাণে পৃথিবীর অন্য অন্য ভাগের সহিত তাহার সম্পর্ক হইয়া পরস্পর সর্বশেষ উপকার লাভ হইয়া থাকে। ইহা যেসকল দেশ সংসর্গে যে পরিমাণে অন্য অন্য দেশের উপকার লাভ হয়, সেই সমস্ত দেশের বিপৎপাত হইলে অন্য অন্য দেশের সেই পরিমাণে অনিষ্ট ঘটিয়া উঠে। ইংলণ্ড ও আমেরিকার বিষয়ে অবিকল এই ঘটনা হইয়াছে। ইংলণ্ড ও আমেরিকা উভয় সমস্ত দেশ পরস্পর সম্পর্কে এতদিন পরস্পর লিপ্ত লাভবান হইতেছিল, সম্প্রতি আমেরিকার গৃহবিচ্ছেদ হওয়াতে এই উভয় দেশই সম্বন্ধে পড়িয়াছে।

ইংলণ্ডের সম্বন্ধে আপাততঃ মাফেটের মজুরেতেই স্পষ্ট লক্ষিত হইয়াছে। আমেরিকা হইতে তুল আনয়ন বন্ধ হওয়াতে মাফেটের মজুরদিগের চরিত্র নানি বন্ধ হইয়া গিয়াছে। তাহারা অল্প বিনা বিপদ্যমান হইবার উপক্রম হইয়াছে। তাহাদিগের সাহায্যার্থ টাকা হইতেছে। টাইমস অফ ইণ্ডিয়া সম্পাদক এতদ্বিষয়ে সাহায্য দানার্থ এদেশীয়দিগকে আকৃষ্ট করিয়াছেন। হিন্দুপেট্রিট ও ইণ্ডিয়ান কিল্ড সম্পাদকেরাও তাহার

অনুমোদন করিয়াছেন। আনন্ড ও সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র করণে এবিষয়ে এদেশীয়দিগের দান শক্তি বিনিয়োগের অনুরোধ করিতেছি। আমরা যে দেশে থাকি না কেন, বিপদ পর ব্যক্তিদেগের বিপদভ্জার চেষ্ঠা সর্বতোভাবে বিধেয়। বিশেষতঃ ইংলণ্ডের সহিত এদেশের পরস্পর উপকার ও উপকারক ভাব সম্বন্ধ হইয়াছে। সেদিন ইংলণ্ডের উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের চুক্তিকে দামশৌণ্ড তা প্রদর্শন করিয়াছেন। এদেশীয়েরাও আনন্ডের চুক্তিকালে সাহায্য দানে বিমুখ হইয়াছেন। কিন্তু আমরা কিনিক সম্পাদকের একটি আশ্চর্য ব্যবহার দেখিলাম, তিনি বলেন “যতদিন একপ জাতি না যাইবে যে ইংলণ্ড হইতে মাফেটের মজুরদিগের প্রাথমিক সহায়তা চাইবে না, ততদিন তার তবর্ষীয়দিগের নিকটে সাহায্য গ্রহণ উচিত নহে। ইহা অত্যন্ত পর গর্ব করি বেন যে ইহারা অস্বাভাবিক প্রিয়মাণ ইংলণ্ড বাসীদিগের সহায়তা করিয়াছেন।”

ইংলিসমান সম্প্রদায় প্রকৃতি একপ কহিলে আমরা বিশ্বাসপন্ন হইতাম না। তাহাদিগের মন অনুসর্য তাহা পরিপূর্ণ, কিন্তু কিনিক পত্রকে এবিধ অন্যো দার্থ্য দেখে দুঃখিত বলিয়া আমাদিগের সংকার ছিল না। ইংলণ্ড ও তারতবর্ষ উভয়ই এক রাজার রাজ্য। এই উভয় রাজ্যের প্রজাদের পরস্পর বধ্য বাধ কতা হইয়াছে। ইহা নৌদ্বার্দ হয়, ইহা কি

প্রাণবীর নহে, পরস্পর উপকার করা কি সৌন্দর্য বন্ধনের প্রধানতম উপায় নয়। এক জন প্রাচীন সংস্কৃত কবি কহিয়া গিয়াছেন, সহজ ও প্রাকৃত মিত্রতা ও শত্রুতা অপেক্ষা উপকার ও অপকার নিবন্ধন। যে মিত্রতা ও শত্রুতা জন্মে, তাহাই পরীক্ষণী। \*

জুরি।  
“জুরি দ্বারা বিচারের প্রথা ইংল্যান্ডের প্রধান উপায়।”  
১৮৩১ খৃঃ অব্দে ক্রাউন ও জর্জিয়ার কয়েক জন প্রধান ব্যাবসায়িক এই অভিপ্রায় প্রকাশ করেন যে জুরি দ্বারা বিচার প্রথা উঠে সাধনী নহে। তন্নিবন্ধন এই উভয়দেশে এই বিচারের তদ্বানুসঙ্গানার্থ এক এক সভা হইয়া উভয় সভাই ভিন্ন ভিন্ন প্রকার সিদ্ধান্ত করেন। করানী সভায় হির হইল, জুরি প্রথা অনিষ্টকারিনী নয়। পক্ষান্তরে \* সভা গবীরান শ্রমকৃৎ জমদৌরি কাহাও না। জামিনৌ মিহেচ গবজ প্রাকৃতাবপ।

কৃত্রিম (কাবণ বলতঃ জাত) শত্রু ও মি গবীরান্ যে দেতু উহার উপকার ও অপকার কার্য বলতঃ শত্রু ও মিত্র হয়। সহজ (স জাত অর্থাৎ এক পরীরাবতব জাত) শত্রু ও মিত্র এবং প্রাকৃত (প্রকৃতিস্থ) শত্রু ও মিত্র। ইংলণ্ড ও উপকারপন্থার নিবন্ধন মিত্র ও শত্রু হইয় থাকে। সহজ মিত্র নাক্ষত্র্যাদি পিতৃদুঃসেয়াদি ও সহজ শত্রু পিতৃদুঃসেয়াদি, আপনাব বিষয়ে পর দ্বন্দ্বের বিধাৎ, সেই প্রাকৃত শত্রু ও তাহার পাতন দিবার সেই প্রাকৃত মিত্র।



জজগণের দ্বারা স্থির করিলেন। এই প্রকার  
অন্যকে স্থির ইচ্ছা হয় না। জজগণ, জজ  
গণের কোন কোন স্থানে এই প্রথা উঠিয়া  
গেল। কিন্তু প্রাচীন সম্রাট লুই ফিলিপ  
কাজ হইতে উঠা উঠাইয়া দিতে সাহসী  
হইলেন না।

যদি স্থির চিন্তে জুরি প্রকার দোষ  
গুণ বিবেচনা করা যায়, ইহা কোন ক্রমেই  
অনিষ্টকারণী বলিয়া প্রতীয়মান হয় না।  
যে বিষয় একাধিক ব্যক্তির বুদ্ধি দ্বারা বি  
বেচিত হয়, তত্ত্ব তত্ত্ব করিয়া তাহার যেকোন  
মুখ্য বিচার হইয়া থাকে, একের বুদ্ধি  
দ্বারা সেকোন হইবার সম্ভাবনা নাই। একের  
বুদ্ধি সকল সময়ে সকল বিষয়ের অবস্থা  
ভেদ বেঁধে সমর্থ হয় না। তবে যে জুরির  
বিচারে দোষ বেঁধিতে পাওয়া যায়, সে  
কেবল বিচারকর্তার ও জুরি মনোনীত  
করিবার দোষে হয়। জুরি ও বিচারকর্তা  
উভয়ের ভাল হইলে বিচার ভাল হয় সন্দেহ  
নাই। জুরি দ্বারা বিচার এমন প্রমাণস  
ম্পাদন ও ইচ্ছা দ্বারা পরিচার হইবার এত  
সম্ভাবনা আছে যে ইংলণ্ডীয় বারপেণ্ডা  
(অর্থাৎ জমিদারেরা) আগনা চাউন না  
করা স্বাধীনতার মহাসম্মেলন গ্রহণ সময়ে প্র  
কাশ্যরূপে রাজার দ্বারা এই কথা লিখা  
হইয়া লইয়াছিলেন যে “প্রত্যেক ব্যক্তি  
জজের সমকক্ষ ব্যক্তি দ্বারা বিচারিত হই  
বেন।”

এই উৎকৃষ্ট বিচার প্রথ এদেশে প্র  
চলিত হওয়াতে আমরা এর বাণেশ পিক  
কের নিকটে কণী আছি। ইংল্যান্ডে  
তেই এই বিষয় এদেশে প্রবর্তিত হয়।  
কিন্তু বিচারপতির ও জুরি মনোনীত ক  
রিবার ক্ষেত্রে বাঁড়ের গোময়ের ন্যায় ইচ্ছা  
এক প্রকার অব্যবহার্য হইয়া উঠিয়াছে।

বিচার পতির দোঁষে জুরির বিচার যে  
সমর্থ হয়, আমরা তাহার অনেক উদাহরণ  
পাইরাছি। জুরিরা এক প্রকার মত প্রকাশ  
করিলে যদি তাহা জজের অনতিমত

হয়, জজ দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার তাঁহাদিগকে  
পুনর্বিচার করিতে বলেন, কলতঃ যত  
কণ বিচারপতির অন্তিমত মত দেওয়া  
না হয়, ততকণ তাঁহাদিগের নিষ্কৃতি পা  
কে না। অনেক স্থলে জুরিদিগকে অপমান  
সহ্য করিতে হয়। জজের বিচারালয়ে ব  
সিয়াই তাঁহাদিগকে পক্ষপাতী ও অনতিমত  
বলিয়া থাকেন। সে দিন হুগলির অতিবি  
স্ত্র জজ বর্চ সাহেব এত মিথ্যা খুণী মকদ্দ  
মায় প্রধান জুরি ব.বু দ্বারকানাথ চক্রবর্তি  
কে “মুর্থ” প্রভৃতি শব্দ প্রয়োগ করিয়া  
গালি দিয়াছেন। জুরি জজের মতে মত  
দিয়া এক জন নিরপরাধ ব্যক্তির কাঁশীর  
পরামর্শ দিলেন না। বলিয়া বর্চ সাহেবের  
ক্রোধের পরিসীমা ছিল না। লণ্ড সাহে  
বের মকদ্দমায় সর মডাণ্টওয়েলস যেকোন  
জুরিদিগের অগ্রণে মকদ্দমার অবস্থা বর্ণন  
করেন, তাহা কাহারও অবিদিত নাই।

বিচারপতির দোষের ত এই কথা  
গেল। জুরি মনোনীত করিবার দোষ এই,  
অনেক স্থলে অতি অসার ও অপদার্থ  
ব্যক্তিরাও জুরির পক্ষে প্রতিষ্ঠিত হইতে  
ছেন। তাদৃশ ব্যক্তির দ্বারা যত সং  
মুখ্য বিচার হইবার সম্ভাবনা আছে, তাহা  
যত অধিক বাক্যব্যয় করা বিকল।  
আমরা গবর্নমেন্টকে জুরিদিগের  
বিষয়ে মনোযোগী হইতে অনুরোধ  
করিতেছি। বিচারকর্তারা জুরিদিগের  
অপমান করিলে কোন কৃতবিদ্যা তত্ত্ব লোঁ  
কে জুরি হইতে চাঙ্কিবেন না। মুর্থ লোক  
দিগকে জুরি করা বিচারের অবমাননা মাত্র।  
জজেরা মকদ্দমার অবস্থা বর্ণন করিবার  
সময়ে আপনার মত প্রকাশ করিতে পা  
বেন সন্দেহ নাই। কিন্তু ইংলণ্ডীয় টিণ্ডাল  
ও লাড টেণ্টার্ডেন প্রভৃতি বিচারপতি  
রা নিয়তকাল এই দ্বন্দ্বের অনুসরণ করিয়া  
কাব্য কবিতেন না। মত প্রকাশ করিবার  
অধিকার আছে বলিয়া বিচারপতি কখন  
জুরিকে একথা বলিতে পারেন না যে

“আপনারা এই প্রকার মত দিবেন।  
এদেশের বিচারপতিরা এই প্রকারই  
চিন্তা থাকেন। সুবিখ্যাত আইনজ্ঞ ল্যাড  
কোক বলিয়াছেন “জুরি সাক্ষীদিগের  
বাক্য অনুসারে আপনারা মত প্রকাশ  
করবেন।” এদেশে কি তাহা করিতে  
দেওয়া হইতেছে।

গবর্নমেন্টের নিকটে আমাদের আ  
বেদন। একটা অনুরোধ আছে। মকদ্দমে এই  
বিষয় আছে হত্যা প্রভৃতি হইলে এক জন  
চিকিৎসক হৃত ব্যক্তির দেহ ভেদ কবিয়া  
যে কথা বলেন, তাহাই প্রমাণ হয়।  
বর্তীয়া চিকিৎসক দুচারকপে নিজ নিজ  
কর্তব্যকর্ম সম্পাদন করিবেন, একজন আ  
জ্ঞা দিওকেন মাত্র। এই নিয়মের দোষ  
অনেকস্থলে অসমর্থ বিচার হইয়া থাকে।  
অতএব মকদ্দমার করনারের জুরি  
নিয়মকরা হওয়া। কোন স্থলে হত্যা হ  
লে যদি কেবল জন তত্ত্বলোক জুরি হই  
তবিষয়ের প্রধান বিচার করেন, হত্যা  
পূরণ করা সহজ হইবে না।

পরিণেবে আমাদের বিচার বহুদূর  
ব্যবস্থাপকসভার এদেশীয়দিগের প্রবেশ  
ধিকার দান, উচ্চতম আদালতের বিচার  
কর্তৃপক্ষে এদেশীয়দিগের নিয়োগ প্র  
তির ন্যায় জুরি দ্বারা বিচারপ্রথাও এ  
দেশের সমধিক উন্নতিকারিণী সন্দেহ নাই।  
কিন্তু ব্যক্তি বিশেষের দোষে যদি তাহা  
প্রতিবন্ধ হয়, তাহার পর কোন আ  
নাই।

অন্ত্য ইউরোপীয় ও সুপ্রি.

মকোর্ট।

সুপ্রিমকোর্ট স্বার্থই জেনি বিশেষ  
জর পরাজয়ের স্থান হইয়াছে। যখন এ  
দেশীয় কোন ব্যক্তি অপরাধ করেন, তখন  
সুপ্রিমকোর্টে তাহার গুরুতর দণ্ড সিদ্ধান্ত  
রাই হয়। কিন্তু ইউরোপীয় দোষী হইলে  
প্রথমতঃ তাহাকে মুক্ত করিবার উপায়

অবগত হইয়াছিল। তাহার উপর দৃষ্টি  
পাত করিয়া তাহাকে মুক্ত করা হইয়া  
ছিল। আমরা অনেক বার ভাবিয়াছি যে  
অপরাধে এক জন এদেশীয় বীণাভরিত  
হইল, সেই অপরাধেই এক জন ইউরো  
পীয় বড় অধিক ছরমাস কারাবাসেরছিল।

পাঠকবর্গ হিলি নামক ছুরাকার বিষয়  
অবগত হইয়াছেন। মার্চমাসের আরম্ভে  
কলিকাতায় সংবাদ আসিল, সেই ছুরাকার  
আকলাও নামক রানীগঞ্জস্থিত এক ইউ  
রোপীয়ের বাটতে আছে। অনুসারে  
তিনি জন পুলিশকর্মচারী ও রানীগঞ্জে  
র সহকারী মাজিস্ট্রেট টুইটি সাহেব  
আকলাওর বাটী অনুসন্ধান করিতে গমন  
করিলেন। আকলাও মাজিস্ট্রেটের অতিপ্রা  
ন্য অবগত হইয়া তাঁহাকে গালি দিয়া বাটী  
হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দিবার চেষ্টা পা  
ইল। সন্নিহিত পাই সে তাঁহার গায়ে হাতও  
তুলিয়াছিল। মাজিস্ট্রেট তথাপি জিন্  
করাতে আকলাও বলিল “তোরা পাজি  
থেকে সাহসে গা.এমেন্টের চাকর।” এই ক  
প অনেক গালি দেওয়াতে মাজিস্ট্রেট তা  
হাকে সেন্সরনে সমর্পণ করেন। সপ্ত বিধা  
নের আইন অনুসারে এটি গুরুতর অপরাধ  
সম্মত হইল। কিন্তু সুপ্রিমকোর্টে গত বুধবার  
এবিষয়ে বিচার হইয়া আকলাও মুক্তিলা  
ভ করিয়াছে। সাক্ষিবাক্য দ্বারা তাহার  
দোষ সপ্রমাণ হয়, প্রধান বিচার পতিও  
তাহাকে দোষী স্থির করেন, কিন্তু জুরি  
মহোদয়েরা তাহাকে মুক্ত করিয়াছেন।  
জুরি মহোদয়েরা বিচার তার পাইয়াছেন,  
যা মনে করেন, তাই করিতে পারেন, ধর্ম  
ধর্ম ও পরের কথা, আপাততঃ ভারতবর্ষে  
র ক্রিকেট শান্তি রক্ষা হইবে, তাহার কি  
স্থির করিলেন।

আমরা আবার সুমিলান জনরাজকর অপ  
রাধ মার্জনা জন্য ইউরোপীয়েরা আবেদন  
করিবেন। সে ব্যক্তি যেহা পূর্বক মনুষ্য  
বধ করিয়াছে, ইহা স্পষ্ট প্রমাণ হইয়াছে,

তথাপি তাহার জীবন রক্ষার চেষ্টা করা  
হইতেছে। যদি এদেশীয়দিগকে হত্যা  
করিয়া সকল ইউরোপীয় এইরূপে মুক্ত  
হয়, এদেশের মঙ্গল কোথায়? বর্ধ শুভ  
হইলেই কি যে সে ছুরাকার বন্ধনে আমা  
দিগের জীবন বধ করিতে পারিবে?

আমরা বৈরনির্বাতনার্থী নহি, মনুষ্যে  
র প্রাণদণ্ড দর্শনে আমাদিগের উৎসাহ  
ও অনুরাগ নাই, তবে যে আমরা এবিধ  
বিচারের প্রতিবাদ করিতেছি, তাহার কা  
রণ কেবল ভারতবর্ষ রক্ষার উদ্দেশ্য। অস  
ত্য ইউরোপীয়েরা যদি মনুষ্য হত্যা করিয়া  
বন্ধনে অব্যাহতি পায়, তাহাহইলে তার  
তবর্ষে বাস আর সমর্পণ গৃহে বাস উভয়ই  
তুল্যরূপে পরিগণিত হইবে সন্দেহ নাই।

এদেশীয় দিগের ইংলণ্ড

গমন

এদেশীয়েরা ক্রমে ইংলণ্ডে পথ পা  
ড়িলেন। ১৮৩১ খৃঃ আবে রামমোহন রায়  
বিলাত গমন করেন, তাহার পূর্বে ঐ পথ  
এদেশীয়দিগের সম্বন্ধে অজ্ঞ ছিল। ঐ  
মহানুভব কেবল এদেশের ধর্ম ও আচার  
ব্যবহারাদির সংশোধনকারী ছিলেন না,  
অনেকবিধ শুভ পথ প্রদর্শন করিয়া যান।  
তদবধি অনেক গুলিকে ক্রমে ক্রমে ইন্ট  
রোপে গমন করিতে দেখা গেল। এক্ষণে  
যাঁহারা যাইতেছেন, তাঁহা দিগের দৃষ্টান্ত  
সমধিক কলোপধারী হইতেছে। সে দিন  
আমরা বাবু দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর ও রায়  
রামলোচন ঘোষের পুত্রের ইংলণ্ড গমন  
সমাচার পাঠকগণের গেষ্টর কবিতা হি  
লাম, আদি এক জন লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ বিদ্বান  
ব্যক্তির বিলাত গমন সম্বন্ধ প্রকাশ করা  
যাইতেছে। সেই ব্যক্তি মাইকেল মধু  
সূদন দত্ত। প্রথমোক্ত দুই ব্যক্তি সিভিল  
সর্বিস পরীক্ষার্থী হইয়া গমন করিয়াছেন,  
শেষোক্ত ব্যক্তি বারিকটর হইবার বাসনায়  
গিয়াছেন।

মাইকেল মধুসূদন এক জন উপযুক্ত  
লোক। ইনি সংস্কৃত, বাঙ্গলা, ইংরাজী,  
লাটিন প্রভৃতি কয়েকটি ভাষা জানেন।  
তিনি যে উদ্দেশ্যে যাইতেছেন, তাহাতে  
শীঘ্র কৃতকার্য হইতে পারিবেম সন্দেহ  
নাই। তাঁহার ঐ সকল ভাষা কার্যকালে  
সবিশেষ সহায়তা করিবে। এবিধ পণ্ডি  
ত ব্যক্তির যদি ইংলণ্ডে যান, রামপুর  
ঘেরা আমাদিগের সম্বন্ধে যে সকল বিষ  
য়ের ঘর রক্ত করিয়া রাখিয়াছেন তা  
অচিরকাল মধ্যেই উল্লিখিত হয়।

পূর্বে লেখাপড়ার তাদৃশ চর্চা ছিল না।  
কুসংস্কার ইংলণ্ড গমনের একটি প্রধান প্র  
তিবন্ধক ছিল। এখন অপেক্ষাকৃত অনেক  
কর জ্বদরে বিদ্যার আলোক সঞ্চার হই  
য়াছে, কুসংস্কার অনেকের জ্বদর হইতে প্র  
স্থান করিয়াছে। তথাপি আমরা অধিক  
সংখ্যা লোককে ইংলণ্ড গমনে উৎসাহ দিখি  
তেছি না। ইহার তিনটি কারণ প্রধান রূপে  
আমাদিগের বোধগম্য হইতেছে। প্রথম,  
অলীকলোকতর কুসংস্কারের স্থানপ্রার্থী হই  
য়া কতকগুলি লোকের জ্বদ্রে আধিপত্য  
প্রাপ্ত করিয়াছে। দ্বিতীয়, কতকগুলির ই  
ংলণ্ড গমনে বিলম্ব অমুরাগ আছে, তাঁহ  
রা বৃথা লোকতরও করেন না, কিন্তু অর্থ  
শক্তি বিরহে কৃতকার্য হইতে পারিতেছেন  
না। তৃতীয়, কতকগুলি স্বদেশ পরিত্যাগ  
করিয়া পাতৈক গমনেও উৎসাহী নহেন  
যে কারণ হউক, যত দিন এদেশীয় অধি  
সংখ্যা লোক বিলাত গমন না করিবেন  
ততদিন রাজ্যসম্বন্ধে এদেশীয় দিগের সম  
ক উন্নতিলাভ সম্ভাবনা নাই। ততদিন  
৩১ ও ৩২ উভয়ের তির্যকতাও দুরীভূ  
হইবে না। “ক্রিষ্টি ক্যারীরা” যে এদেশে  
এত প্রভাব করিতেছেন, তাহার কারণ বি  
আমাদিগের বিনেশগমনবিমুখতা ইহা  
অন্যতর কারণ। “ক্রিষ্টি ক্যারীরা” স্বদেশ  
ইংলণ্ডে আমাদিগের দোষ প্রতিপন্ন  
রা ইষ্টসাধন করিতেছেন, কিন্তু অ.



তাহার প্রতিবাদ করিয়া আত্মপ্রতিষ্ঠা সমর্থন করিতে পারিতেছি না। অন্য কথা কি, আমাদিগের লগুনস্থ সন্ন্যাসী ভাড়াও (ইনি বঙ্গদেশের লোক) নীলকর বিপের বাক্যে বিমোহিত হইয়াছেন। ইংলণ্ডে এক্ষণে শিপ বিজ্ঞানাদি যাবতীর বিবরণ উৎকর্ষের পরা কাটা হইয়াছে। এই সকল বিষয়ে আমাদিগের সবিশেষ মৈথুণ্য লভের ইচ্ছা জন্মিলে এখন ইউরোপ গমন ব্যতিরেকে মনোরথ সম্পন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই। যতদিন এদেশে এই সকল বিষয়ের সবিশেষ যথার্থ না হইবে, ততদিন ইউরোপ গমন নই আমাদিগের তত্ত্ব বিষয়ে প্রগাঢ় বুৎপত্তি লাভের একমাত্র উপায়।

মাইকেল মধুসূদন দত্ত ইংলণ্ড যাত্রা কালে বঙ্গভূমিকে সম্বোধন করিয়া যে কয়েকটি কবিতা লিখিয়াছেন, তাহা এখানে প্রকাশিত হইল।

### বঙ্গভূমির প্রতি।

দেখে, মা, দাসেবে মনে, এ মিলতি কবি গদে।  
নাথিতে মনের দান,  
যটে যদি পবনাম,  
মুখীন কবে মা গো তব মনঃ কোকনদে!  
এবাসে, দৈবের বশে,  
জীব তাবা যদি খসে  
এ দেশে আবাস চলে, — নাহি খেদ তাতে।  
চলিলে যদি হইবে,  
অন্য কে কোথা কবে, —  
চিন্তিব কবে নীর, হায় বে, জীবন বদে?  
কিছু যদি বাগ মনে,  
নাহি, মা, তব শমন  
মজিকাত গলে না গো, পড়িলে তা  
গেট খনা নবললে,  
লোকের মনে — চিত্ত ভুলে,  
মনের মন্দিরে মিতা দেবে সর্বজন  
কিছু কান তব আছে,  
বাচিব যে তব কণে,  
হেন সমরতা আমি, কহ, হে শমন, কখন  
তবে যদি মরা কব,  
তুল মোহ, তব ধর,  
অমর করিয়া বর দেহ দ্বার, সুবদে! —  
কুটি বেন পুতি বনে

মানসে, মা, মখা কলে  
মধুসূদন তাহর কি বলত, কি শরনে!  
খিদিরপুর ১২৬৯।

১৬ই এপ্রেল ১৮২২।

প্রিয় সম্পাদক, আমেরিকা হইতে এনত সংবাদ আগত হইয়াছে যে ডেনেরেল সর্ব-সাইড অধিরোধে বোর্কোর্ট দুগ অধিকার করিয়াছেন। মেকন্ নামক দুর্গে অত্যাগি ৫০০ কনফেডারেট সৈন্য রহিয়াছে, কিন্তু তাহাদের 'রসদ' পাঠবার সম্ভাবনা নাই। ৭০০ কনফেডারেট সৈন্য করিষ্ট নামক স্থানে একত্রিত হইয়াছে, এবং স্থানান্তরে ২০০০০ একত্রিত থলিয়া শুনা যায়। 'অবি' লবে উভয় পক্ষের এক ঘোরতর যুদ্ধ হইবার সম্ভাবনা আছে। সেক্রেটারি সম্মত রাখনতা মধ্যে এক চৌষ বক্তৃতা করিয়াছেন এবং তাহাতে মূল্য দিয়া কলিফোর্নিয়া দাসদিগকে মুক্ত করা উচিত ইহা প্রতিপাদন করিয়াছেন। কনফেডারেটদের রাজসভার সোএন নামক সভ্য এমত প্রস্তাব করিয়াছেন যে টং লও হইতে দূতদিগকে প্রত্যাখ্যান করা, এবং উক্তদেশ হইতে কনফেডারেটদের স্বাধীনতার অস্বীকারপ্রত্যাশা পরিভ্রাণ করা উচিত। পূর্বে টংয়েরেরা কনফেডারেটদের পক্ষ চইয়াছিলেন, কিন্তু এফগে'তাব পরিবর্তন করিতে চেন।

গত ১৩ ই আগানদেশীয় প্রাচীন রাজপুত্র জীবন্ত টাকেনো উচি-সিম্বুসু কি নো-কামী পারিসের রাজনিকেন্তনে সন্ন্যাসী কর্তৃক সমাদরে গৃহীত হন। রাজপুত্র সন্ন্যাসীকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন 'মহাশয়! মরিয়া নব টেকনের অজ্ঞানসারে আমরা অসং-সংসার সমক্ষে উপস্থিত হইলাম। আপনাদের সতি করাশীলদেশের যে সন্ধি স্থাপিত হইয়াছে, তাহারা উভয় জাতির পরস্পর মিত্রতা ও মনঃ প্রগাঢ়ত্ব হইবে, এই হেতু আমাদের রচনা ও স্বাক্ষর হস্তলিখিত এই লিপিমহা-বাক্যে 'অপন করিব' তাব আমাদের প্রতি-সম্মত করেন। এবং এমত অতিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন যে এক্ষণে অখণ্ডনীয় করিয়া রাখা উচিত এতদ্ব্যতীত মানস। আমাদের মহারাজের সন্তোষসাধনসারে আমরা এত অনুরোধ প্রার্থনা

করিতেছি যে ফরাসীশ দেশীয় এক যুদ্ধ-পে-ত দ্বারা আমরা স্বদেশে প্রতি প্রেরিত হই আমাদেয় প্রত্যাশিত প্রার্থনা এই যে মহারাজ সপরিবারে সুখভোগ কবিতে থাকুন এবং ফরাসীশ জাতির মঙ্গল হইক ও সন্ন্যাসী এই ওর দিনেন "আমি আকাশ পূর্বক আপা সন্যাসের প্রতিশ্রুতিগকে সংকল্প করিতেছি এবং একপ আশা করিতেছি যে সন্ধি স্থাপ-দ্বারা মঙ্গলোৎপাদন হইবে। আপনারা যখন শীঘ্রদেশে আসিয়াছেন, আমাদের রাজের র মঙ্গল বর্ষার্থ রূপে প্রতীত হইবেন। আপনারা এদেশে যে রূপে গৃহীত হইবেন এবং যে রূপ স্বাধীনতা ভোগ করিবেন, তাহারা অ-কল্যাণ জানিবেন যে অতিখিসংকার সম্ভাব-তির এক প্রধান ধর্ম। আমি আকাশিত হইয়া অনুরোধ দিব যে আপনারা এক দৃঢ়পো-ধারা ভ্রমণে প্রেরিত হন। আপনারা যখন প্রত্যাগমন করিবেন, তখন ইউরোপ দেশে স্থাপনতবেদ সন্ধিত এই বোধ করিয়া যাইবেন যে আপান সাক্ষ্যের সহিত সন্মত প্র-কর। আমরা সর্বতোভাবে সাহসী।

পৃথিবীতে যে বস্ত্র দ্বারা মনোপাত পা-ন হয়, তাহা যদি অপব্যবহৃত হয় মনঃ অন-উৎপাদন করে। সত্যতা ও শিপবিলাস য-উন্নতি হইতেছে ও উই মনুষ্যের মঙ্গল ও-মঙ্গল উভয় পক্ষ পরিত্যক্ত হইতেছে। যে ব-ল্লীহরবোধে এক ব্যক্তি অতি দূরদেশে জা-তে গিয়া যুগ্ম পিতার সহিত সাক্ষাৎ করি-চরিতাৎ ও, তৎপদে মনুষ্যের এক ভনে সর্বস্বার্থপর করিষ্ট, নিম্নে মধ্যে প্রাচীন-রে 'লৌকিক প্রার্থের দ্বারা পৃথিবীর কত-জন। কিন্তু তাহা এক্ষণে মনুষ্য নামের ভয়-উপায় হইয়াছে। আমেরিকা ফরাসীশ ও ট-লও এই তিন দেশে এক প্রকার অসুতপ-ও প্রকার লৌকিক বস্ত্র প্রস্তুত হইতেছে, উ-পোত বিশেষ। উহাতে অতি অসুতপ-কৌশলের আশ্রয়, কিন্তু উহা পৃথিবী-হিরতির কথিব্যবহারের উপায়।

প্রতিবাদের ১লা মাচ ও রতবর্ষ ও ট-অকলে ইংলণ্ডের যত নাবিকসৈন্য আ-তাহার বিবরণ পার্লিমেণ্টে অর্পিত হয়, ১-১লা মাচের বিবরণ এই পোতসংখ্যা ৩৮০

৩৩৮২ : বেতন ১০৭,০০০ টাকা ; মাসিক  
১৩১,০০০ টাকা ; বাকি ১,১১,০০০  
টাকা ; করসা ৩৩৬,০০০ টাকা ; মোট ১  
০,০০০ টাকা ; সর্বমোট বার্ষিক ব্যয় ৪,৫৬০,০০০  
টাকা ।

আপনার পাঠকেরা অবগত থাকিবেন যে  
কলকাত্তাঙ্গের দুইজন ছাত্র সন্ধান এক একা-  
র ইংলণ্ডের অধীন : তৎকালীন অধিবাসীরা  
যা প্রকারে নিষেধিত হইয়া শাসনকারী  
নিকট এক আবেদন পত্র অর্পণ করেন : কিন্তু  
একপ আবেদনে যে রূপ উত্তর সাধারণতঃ  
প্রদত্ত হইয়া থাকে, তাহারা সেই রূপ উত্তরই  
প্রাপ্ত হইরাছেন ।

উক্ত পত্রের এক জন সংবাদদাতা  
লিখিয়াছেন : যে আফিকার দাস ব্যবসার পূর্বা-  
বৎ চলিতেছে : এবং যদি ইংলণ্ড আমেরি-  
কার দাসদের প্রদত্ত তুল্য প্রকৃতি অন্য গ্রহণ  
না করিতেন, তবে উহা দ্বন্দ্বিত হইত ।  
ইংলণ্ড আমেরিকার যুদ্ধের পূর্বে তুল্য নি-  
ষিদ্ধ বার্ষিক ৩০০,০০০,০০০ টাকা দিতে হি-  
সেব : অথচ আমেরিকার ৪,০০০,০০০ দাস  
হইতে ধন হ্রাস বিধানে এক পরসীও লাভ ক-  
রেন নাই ।

পারিসের সুব্র রাজবাসীর মিস্টার  
চিহ্নালিকার মিসর দেশীয় কতকগুলি প্রাচী-  
ন ও বৃহৎ শিল্পকলা বস্তু আনীত হই-  
রাছে ।

বিখ্যাত ব্রহ্ম লর্ড ব্রাহ্ম কিস্তিকাল পীড়ি-  
ত হইয়াছিলেন, একপে বিলম্ব আবেগ্য  
লাভ করিয়াছেন ।

এমত জনরব যে সন্ধ্যা নপোলেঅন্ সপ-  
রিবারে আসিয়া কল মিন বাবৎ বকিংহাম না-  
মক রাজাভালিকায় অবস্থিতি করিবেন ।

মিস রাই টাইন্স পত্রে একত অতিপ্রায়  
প্রকাশ করেন যে এদেশে অনেক অবিকাহিতা  
স্ত্রী সাতিশয় কষ্ট পাইতেছে : তাহাদিগকে  
পুরুষোপযুক্ত অমঙ্গলক কর্মে নিযুক্ত করা  
অন্যায় : তাহাদের দুঃখ অপনয়নের এক উ-  
পায় এই যে তাহারা বিদেশে উপমিবেশিক-  
দের মধ্যে প্রেরিত হয় : কাব্যকার কিলেলি  
এই অতিপ্রায়ের পোষকতা করিয়াছেন, এবং  
কহিয়াছেন যে স্ত্রীরা পত্নী ও প্রভৃতি হইবার  
নিষিদ্ধ হইয়াছে । প্রতীত হইল যে এদে-

শে ১৮০০০ অতিপ্রায় স্ত্রী আছে : তৎকালে  
কিছুকাল বিদেশে আইবার সুস্থপযুক্ত, কতি-  
কেন্দ্র বর্ষেই অর্ধলংহান আছে, এবং কতি-  
পার স্বজনবহুনে নিবহ । মিস রাইন্সের প্র-  
স্তাব এই যে অতিপ্রায় স্ত্রীদিগের ভারতবর্ষে  
স্থানে প্রেরণ করিবার নিষিদ্ধ অর্থ সাহায্য  
দেওয়া উচিত । অনেকদেশে প্রত্যেক স্ত্রী  
সহিত স্থলনার দুই বা ততোধিক পুরুষ  
( ১০০ ) বর্তমান আছে ।

এগুলিবিধন প্রারম্ভনসময়ে এক জন  
রুব উত্তরাহিল যে প্রারম্ভিকেরা এক বিশেষ  
বেশে উক্ত কাণ্ড সম্পাদন করিবেন : কিন্তু  
কমিসনরেরা সে অতিপ্রায় পরিত্যাগ করি-  
রাছেন । বিদেশীয় আগন্তুক শিল্পকরদের  
বাহাতে কষ্ট না হয়, এমত উপায় করিবার  
সুচক নিয়ম অবলম্বিত হইতেছে : তাহারা  
অতি অপব্যয়ে লগনে অবস্থিতি করিবে :  
তাহাদের সুবিধার নিমিত্ত এক জন দ্বিতীয়  
নিযুক্ত হইবে : পীড়িত হইলে অত্যন্ত ব্যয়ে  
চিকিৎসা প্রাপ্ত হইবে । এবং অন্যায়সে লগ-  
নের মানা বিচিত্র স্থানে ভ্রমণ করিতে পা-  
ইবে ।

ভারতবর্ষজারা যে কণে লর্ড কেনিংকে  
প্রতিষ্ঠা পত্র দিয়াছেন : তাহাতে এখানকার  
লোকের সাতিশয় সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন,  
মান্যবর জিহুস্ত বাবু হমা প্রসাদ রায় ও রাজা  
দিনকর রাও ইহাদের বক্তৃতা বিশেষ রূপে  
উল্লিখিত হইয়াছে ।

টাইন্স সম্পাদক বঙ্গদেশের রাষ্ট্রতত্ত্ব  
গের 'অভ্যাস' বিষয়ে এক প্রস্তাব প্রকাশ  
করিয়াছেন : ইহা নিতান্ত তুর্ভাগ্যের বিষয়  
বলিতে হইবে যে মীলকরেরা রাষ্ট্রতত্ত্বের  
মোম সপ্রমাণ করিয়া সঙ্গ হইতেছে । এ  
আজ্ঞা নতিস্তাৎ সুবিচার চায়, তবে আপনারা  
অগ্রে যত্ন ন্যায় পথ অবলম্বন করুক । মন্তব্য  
তাহাদের অবস্থা অবশ্যই 'নেকড়ে' নেক-  
ড়ে 'বাদী' মেমরককেব ন্যায় হইবে ।

গত রাতে এখন লজিকল সুসাইটি নামক  
সমাজে বাবু জ্ঞানেন্দ্রমোহন ঠাকুর বৌদ্ধধর্ম  
বিষয়ে এক প্রস্তাব পাঠ করেন ।

এগুলিবিধন উপলক্ষে মানা দেশ হইতে  
লগনে কতকগুলি সুদক্ষ চোরের সমাগম হই-  
য়াছে : তাহাদের দৌরাত্ম্য বিবার্থ্য কলানী-

শাসিনেশের পুদীস সংক্রান্ত কতিপয় লোক  
এখানে নিযুক্ত হইবে ।

কয়েক দিবসাবধি আকাশ অসহনীয় গুহুত  
নির্মল হইরাছে, সুগা প্রকাশিত  
বঙ্গদেশের বাবদাসের ন্যায় অসহনীয়  
এই যে দীপ্তকালের মধ্যে অনেক বর্ষের এক  
দীপ্ত অগ্রভূত হয় নাই ।

উত্তরীয় গুহুত ।

লগন, ১০ই মে ১৮৬২ ।

প্রিয় সম্পাদক ! শিল্প বিন্যাস-নির্দেশনের  
চারোশাটন এখানকার সর্ব প্রধান সংবাদ ।  
আমার অন্তঃপালকীয়ারা "ওপিনিয়ন অফ দি  
ইন্ডিয়ান" একগুলিবিধন ৭ প্রতিপাদিত  
হইতেছে, ইহা আপনার পাঠকেরা সুবিধা  
নইবেন । এখানকার মানা সংবাদ পত্রে এই  
মহৎ ব্যাপার, মানারূপে বর্ণিত হইরাছে :  
কেহ কেহ ইহাকে সামান্য ও ৫১ শালের  
ব্যাপারের অপেক্ষা মিহ্রতর মনে বর্ণন  
করিয়াছেন, কেহ বা ইহাকে অসুতপূর্ণ  
বলিয়াছেন, পরন্তু আমার হস্ত হইতে  
এবিধরে এক জন বাসালির মত কি, ইহাই  
আপনার জামিবার ইচ্ছা করিতে পারেন ।

১লা মে বহুস্পতিবারের দুই দিন  
পূর্বাধি সুখ্য সম্যক প্রকাশিত হইয়া প্রকা-  
শিত হইতেছিল, দিবসের তাপ কোন অং-  
শেই বঙ্গদেশের কাহন্যবাসের অসহন হি-  
ন, কিন্তু উক্ত বহুস্পতিবারের প্রাতে আকা-  
শ মেঘাক্রম হইয়া অল বর্ষ হওয়াতে সকলে  
রট মনে পলায়ন উপস্থিত হয়, বাহা হটক  
বেলা মধ্যাহ্ন সময় হই অগত হইল । নগ-  
রের চতুর্দিক হইতে লোক সকল মানা সমাজ  
সম্মিলিত হইয়া ব্রহ্মটন অতিযুখে গমন করি-  
তে লাগিল, বেলা দশটার পূর্বে সমস্ত বর্ষ  
শকটাদি ঘায়া পূর্ণ হইল, শকট সকলের গতি  
যথার্থরূপে শ্রুত গতির সহিত উপস্থিত হই-  
রাছে : পথের দুই পাশে 'অট্টালিকা' ঘেঁ-  
হইতে মানা বর্ষের পতাকা উত্তীর্ণমানা এবং  
ব্রহ্মটন রোডের মধ্য ভেদে এক বৃহতী পতাকা  
"স্বাগত সমস্ত জাতি ! ৭ বলিয়া লোকদিগে  
অত্যর্থনা করিতেছিল । যে কোন পথে য  
পুর দৃষ্টিগোচর হইয়া ছিল, তাহাতে শ্র-  
মেণী ও বহুস্পতি আর কিছুই দেখা য



উমিটান শুভ্র ।

যাহারো গম্ভ উদ্ভিগাহে লাভ এলগিন  
শীত কৰ্মচাৰিগণের বেতন কৰাইল। যিবেন  
এবং চাউল প্রতি মণে ৮০ আনা ও টেডল  
টাকার দর সেই বিজ্ঞানের নিয়ম করিয়া দিবে-  
ন। একগ করিবার তাৎপর্য এই, যাহাশিগের  
বেতন কৰিয়া বাইবে, তাহাশিগের কষ্ট হই-  
বে না। এপ্রকার বিখ্যা জনস্বৰ্গ ফুলিবার লোক  
আজিও জলিলালোম আশা-হ।



আমরা অনিবার্য ব্যাপকপুর্বে একটি স্থগিত  
নর্শিত হইবে । সর হিউ রোজের আবার কি  
মত করিল ? ইচ্ছা নিরক্ষর ।

হিন্দুপেট্রি রট সম্পাদক বলেন গবর্ণমেন্ট  
বিদ্যালয়িকার অন্য যে চারি লক্ষ টাকা বঙ্গপে  
শে অধিক দিয়াছেন, তাহা হইতে এনিয়টিক  
সোসাইটিতে প্রতি বাসে আর চাই শত টাকা  
দেওয়া হইবে । এতদেশীয় সংবাদপত্র ও  
পুস্তকাদির মধ্য অবগত হইবার জন্য এক জন  
তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত হইবেন । গবর্ণমেন্টে আ-  
রও নিজ ব্যয়ে এক বাঙ্গালী সংবাদ পত্র প্র-  
কাশ করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন । পেন্সনট  
অপব্যয় হইবে ।

২০ এ জ্যৈষ্ঠ শ্রুতলবার ।

গত কল্য একচেত্র বাগীতে নিম্নলিখিত  
অধিকেন বিক্রীত হইয়াছে:-

| সিন্দুক                              | মূল্য     |
|--------------------------------------|-----------|
| বেহারের ১৩৪৫                         | ২,৫৩,৩৩০  |
| কাশীর ১১৩৫                           | ১৬,৭৬,৮৭২ |
| গড়ে প্রতি সিন্দুক ১৪৭৫ টাকার বিক্রী |           |

ত হইয়াছে  
বাংলাদেশের মজুরদিগের সহায়তার জন্য  
গবর্ণমেন্টহোসে একটি মৃত্যুগীতময় উৎসব  
হইবে, ইহাতে যে টাকা আর হইবে তাহা  
বাংলাদেশে পাঠান হইবে ।

সর হিউ রোজ লম্বো নগরে সেনাগণকে  
সভা করিতে নিবেদন করিয়াছেন । সেনাদিগকে  
শান্ত করিতে হইলে তাহাদিগকে বিবাহ করি-  
তে না দেওয়া কর্তব্য, নচেৎ পুস্তকালয়ট কর  
আর সভাই কর, সকলই বুঝা হইবে ।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের মিলিটারি সেক্রে-  
টারি কর্ণেল মর্ফান আপনায় ছবীন ৬ খটি-  
হিত কর্মচারিদিগের উপহার'র নিজ ব্যয়ে  
আকিসে এক পুস্তকালয় স্থাপন করিয়াছেন ।  
কোম্পানী আকিসে বসিবার স্থানে ২ পথে শু-  
খার পার্ট করিতে পারিবেন । যেসে যেন আ-  
কিস বিদ্যালয় হইয়া উঠেন ।

ভারতবর্ষীয় রেইলওয়ে কোম্পানি এর  
নির দরে অর্থ কুর প্রভৃতি অন্তর্ভুক্ত নাই ব-  
বাইতে অসম্মত হইয়াছেন । বাঁহারা এই সকল  
প্রেরণ করিবেন তাহাদিগকে বিত্তন তা-  
১০০

নাম সাহেবের আকৃষ্ট লোক একে  
কানপুরে প্রেরণ করিবার আজ্ঞা করিয়াছেন ।

আমরা পূর্বে বলিয়াছিলাম, হাবস'র যে  
হস্তভাগা পুরোহিতকে করাচিতে না, দায়ে  
দিলি, ধৃত করা হয় তাহাকে মুক্ত করা হই-  
য়াছে । এক্ষণে জানা গেল তাহা যে, পলাই  
হইতে কলিকাতার আনা হইয়াছে । সে এক-  
শে পুনিয়ে বন্ধ আছে । বাঁহারা নাম, ১৮৩  
বকে চর্চন করিয়াছেন, তাহানিগের অনেক  
বলিয়াছেন বিদোহী মবাদারের সহিত পুর্বো-  
হিতের অল সৌম্যদৃশ্য নাই তবে যি জনো  
তাহাকে রুদ্ধ করিয়া রাখা হইয়াছে ।

টাইনস্ অব ইণ্ডিয়া সম্পাদক বলে-  
৬ মণিত জ'গুণ ( মধ্যারোহী ) সেনা দলের  
কর্ণেল ক্রলি আপনায় অধীনস্থ বহুকে বাকি  
কে সমান্য অপবাধে বদ্ধ করিয়া এত ক-  
দিয়াছিলেন যে তাহাতে এক ব্যক্তির মৃত্যু  
হইয়াছে । ইংরাজ সেনাদলেব এই একটি  
বিশেষ মোদ আকিসরের গুরুতর অপ-  
রাধ করিয়াছে বুদ্ধ জন কিয় স'ম'ন্য  
সেনারা কিছু কবিলেই তাহাদিগের গুরু  
দণ্ড হয়

হরকরা সম্পাদক টেলিগ্রাম যোগে বিব্র  
লিখিত সমাচার প্রাপ্ত হইয়াছেন:-আলে  
আপ্তিয়া ১২ এ মে । আমেরিকার বিদ্রোহ-  
রা ইংরাজ টাউন ত্যাগ করিয়াছে । গবর্ণমেন্টের  
সেনারা বরগার্ডকে আক্রমণ করিয়াছিল, কিন্তু  
রক্তকাণ্ড হইতে পারে নাট । উক্তর দলের  
বিস্তর লোক হত হইয়াছে । গবর্ণমেন্টের সে-  
নারা উইলিয়াম্ বগ তাহিয়ার করিয়াছে ।  
সিউরভ সাহেব দক্ষিণ বিশাখের অবদ্রোহ  
ক্রিয়া শিথিল করিয়া বাণিজ্যের নিমিত্ত নিউ-  
অরলিয়ন্স বুলিয়াছেন । মজিরা'র সহিত  
ফ্রান্সের যুদ্ধ আরম্ভ হইয়াছে ।

ইংলিসমানের লেডেনোস্থিত সংবাদ দাতা  
বলেম ভদ্রায় জনরব উঠিয়াছে সমুদ্র য কুপে  
মিস দেওয়া হইয়াছে, ইটরোপীয় সেনাগণের  
প্রাণ বিনাশ করাই তাহার উদ্দেশ্য । এবমিধ  
জনজাতির মূল অধ্বসন করা আতিশয় আ-  
শংসক । অন্যথা বহুতর অনিষ্ট ঘটবার সভা  
বন্দ ।

দিল্লী /গবর্ণমেন্ট করপুর্নস্থিত সংবাদ

দাঙ্গা বলেন, তদ্রূপে স্বতন মন্ত্রী পণ্ডিত শি-  
দান অতিশয় বিবেচনা সচকার কর্তব্য করি-  
তেছেন । তিনি সমস্ত পুরাতন কর্মচারিদি-  
গকে সিলার দিয়া তাহারা কাংকাজের জন্য  
সিলা চারদিগকে বিচার কালে নিযুক্ত করি-  
বেন । আপীল শরিফার জন্য ৩খান এ-  
উচ্চতম বিচারালয় চষ্টাচ্ছে । এই উক্তি যথ-  
সীমিত লক্ষণ । অন্য অন্য রাজ্যের এ-  
এই প্রতিব অমূল্যম করেন, তাহানিগের  
রাষ্ট্রপতি এক মূল ভগ ।

২১ নিউস সম্পাদক ভগলীত মর্যাদায়  
নিম্নে বক্তব্যেব এতদেশীয় শ্রুতিবা প্রাণ  
৭১৫ টাকার জন্য তাহাকে নিকো'র এনি-  
য়াছেন । অমরা ৬৭৭ টাকার বিক্রয়ে বি-  
দ্য-সে.গা প্রাণ পাওয়া যাইবে । তাহা  
২৫৩ টাকার উপর উঠিয়াছে সমস্ত চণ্ডী  
অুরিদিগের এই মকদ্দমার সনিম্মম  
প্রকাশ করা উচিত ।

৩০ এ জ্যৈষ্ঠ, মধ্যাহ্ন

লম্বো ন বিপাত - লম্বো নিম্নসিন এনি-  
কোম্পানি মীলচপের ই-গুজী অ-ব-  
কাল করিয়াছেন প্রতি যুক্ত ৮ আনা  
কীত হইতেছে । এবার টালপেদ্র মরলে  
৬০০০ টাকার নিম্নে তাহা করিয়া 'অবগত'  
ইবেন ।

লোভিত সমুদ্র দিয়া যে টেলিগ্রাফ হই-  
তেছে, তদ্বিত্তে হাউস অব কমন্স আ-  
বিদ্যেছেন তাহা অচঞ্চক ব-  
বাজর হইতে নিতে হইবে । এই সমস্ত  
ত্যাচারে কাহার সাধ্য আত্মানিগের ক-  
অসম্মতি দূর করিবেন ।

গবর্ণর জেনারেল নিউ টেলিগ্রাফে  
বাদ আনয়ন ও প্রেরণ যথা প্রতি ব-  
৩০০০ টাকা পাইবেন । আনব ইহা-  
শ্যকতা'দেপিতেছি না ।

ভারতবর্ষের বেইলওয়ের প্রধান ইঞ্জি-  
রর গবর্ণমেন্টে লিখিয়াছেন 'আগামি জা-  
রির পূর্বে বাণী পণ্ডিত রেইলওয়ে খোলা  
নাযা হইবে, কারণ কোম্পানির উপযুক্ত  
টানি নাই । কিন্তু গবর্ণর জেনারেল এ-  
অগ্রাহ্য করিয়া তাহানিগেকে ডিসেম্বর  
সের মধ্যে কালী পর্যন্ত ও তাহার পূর্বে

পাহী বলে চিহ্নিত, আসিষ্টাণ্ট গভ লার্ড  
ন হয় কেন? এখন পর্যন্ত এক লক্ষ  
ত্রিশ সহস্র সিপাহী আছে; তাহারাও  
কেবল ভারতবর্ষে থাকিবে, এই মতে এক  
দেশীয় দিগকে নিযুক্ত করিলে লোভ কি?  
ফলস্বরূপ এ দেশীয়দিগকে সিবিল  
সরকারে রাখাই না হয় কেন? ইউরো-  
পীয়দিগের কেহ কেহ এদেশীয় চিকিৎসা  
সকলকে আপনাদিগের গরিবদের চি-  
কিৎসা কার্যে নিয়োজিত করিতে অস-  
ম্মত হইতে পারেন বটে, কিন্তু তাহারা  
সংস্কারে অধিক হইবেন না; যদিই বা  
এক জন, জেগি অথবা সন্তোষ বিবেকের  
সংস্কারের অনুরোধে একটি জাতিকে  
এককালে একটি মহত্তর অধিকার হইতে  
বঞ্চিত করা কোন ক্রমেই বিবেচ্য হয় না।  
দ্বিতীয় বিষয়ে ইউরোপীয়েরা মক্কেল  
আদালতের অধীনস্থ। ইংলান্ডে এই যুক্তি  
তবে বলুন না কেন যে এ দেশীয় যুগ  
সেকদিগের নিকটে তাহাদিগের বিচার  
না হয়, গবর্ণমেন্ট কি ইউরোপীয়দিগের  
কুসংস্কারকে প্রজ্ঞা দিবার উদ্দেশ্যে এ  
দেশীয়দিগকে যুগসেকি পদ হইতে বঞ্চিত  
করিবেন? আমরা চ্যাম্বার্স হইলাম উইলিয়াম  
রিকমন্স সম্পাদক ইউরোপীয়দিগের উল্লি-  
খিত কুসংস্কারের প্রজ্ঞা দিরাছেন। যে  
রাজনীতি জেনিবেলের কুসংস্কারের অনু-  
বোধ বন্ধ করে তাহা নির্দোষ ও প্রশং-  
সনীয় নহে। যে বিষয় বিস্তৃত রাজনীতির  
অনুমোদিত, তাহা কখন বিস্তৃত ধর্মের  
অনুমোদিত হয় না। ইংলান্ডে ধর্ম ভেদ  
প্রদর্শন করিয়া রাজনীতি বিঘটিত ও বি-  
কলিত করেন, তাহারা যথার্থ রাজনীতিজ্ঞ  
নহেন। যিনি ভারতবর্ষের সুভাষাকামী  
এবং যিনি স্বদেশীয়দিগের প্রতিনিধি বলি  
য়া পরিচয় দিতে উৎসুক, তাহার এ সক-  
ল বিষয় বিবেচনা করিয়া লেখা কর্তব্য।  
হিন্দুপেট্রিয়ট এই জন্যই ভারতবর্ষীয়দি-  
গের প্রতিনিধি বলিয়া পরিগণিত ও আদ-  
রের পাত্র হইরাছেন।

বোম্বাইয়ের পারসী ও হিন্দুরা উল্লি-  
খিত অধিকারের পুনরুত্থান পালি  
রামেন্টে মহাসভায় আবেদন করিয়াছেন।  
মন্ত্রাজ ও বঙ্গ দেশের লোকদিগেরও এ  
বিষয়ে উৎসাহ থাকি বিবেচ্য নহে। এই  
বিষয় বিবেচনা নিমিত্ত পালিরামেন্টে যে  
আবেদন হয়, তাহাতে একটি মহতী ত্রুটি  
হইয়া থাকে। তিন প্রেসিডেন্সির এক  
ত্রুটি হইয়া এই সকল আবেদন করা কর্ত-  
ব্য। তাহা হইলে আবেদনের ভাব গুরুতর  
হয়। ভারতবর্ষের সভা কি কখন বোম্বাই ও  
মাদ্রাসের সভাকে এ বিষয়ে পরামর্শ না  
দেন? বর্তমান আবেদন দ্বারা এ দেশের  
গাভতীয় প্রেসিডেন্সি হইতে যুগপৎ প্রেরি-  
ত হয়, ভারতবর্ষীয় সভা তদ্বিষয়ে সবি-  
শেষ গল্প বন্ধন। উল্লিখিত অধিকার দ্বারা  
রাজ্য আনাদিগের যত দূর সাধ্য চেষ্টা  
করা উচিত। যদি ভারতবর্ষের সমুদায়  
লোকে একত্র হইয়া এ বিষয়ে প্রতিবাদ  
করেন, ইংলান্ডের গবর্ণমেন্ট কোন ক্রমেই  
আপনাদিগের অনাচার ও অমর্থ যুগক আত্মা  
অপরিবর্তিত রাখিতে সক্ষম হইবেন না।

#### পতিতভূমি বিক্রয়

এই বিষয়টি যেমন আনাদিগের অতীত  
গবর্ণরজেনরলকে শেখাবস্তায় প্রতিনিধিকারি  
দিগের প্রিয় পাত্র করিয়াছিল, তেমনি আ-  
বার মুতন গবর্ণর জেনরলকে প্রেমাপূর্ণ  
দিগের বিবেচ্য বিষয় করিয়া তুলিতেছে।  
লার্ড ক্যানিংয়ের সময়ে পতিত ভূমি বিক্রয়  
প্রতিজ্ঞা সিদ্ধ প্রায় হইয়াছিল, প্রতিনিধিকারি  
দিগের আন্দোলনের পরিণতি ছিল না।  
কিন্তু লার্ড এলগিন হইতে তাহাদিগের  
মনোরথ পূর্ণ হইবার ব্যাঘাত হইয়াছে।  
শেখোক্ত লার্ড আপাততঃ পতিতভূমি বি-  
ক্রয় বন্ধ করিয়া দিরাছেন, প্রতিনিধিকারি  
দলের কোপ সীমাতীত করিয়াছে। ভার-  
তবর্ষের ভূমিতে ইহাদিগের নিত্য লোভ  
দৃষ্টি পড়িয়াছে। ইহাদিগের প্রত্যাশা

সেই লার্ড ক্যানিং পতিত ভূমি বিক্রয়ের  
প্রতিজ্ঞা প্রকাশ করেন। যে দিবস লার্ড  
এলগিন কলিকাতায় আসিবেন, সেই দিবস  
শাসনকর্তা এইবিষয়ের বিল ব্যবস্থাপক  
সভায় অর্পণ করিয়া তাহা শীঘ্র বিবেচনা  
হইবার অভিপ্রায় প্রকাশ করেন। এই  
বিষয়ের শীঘ্র নিষ্পত্তি হয়, লার্ড ক্যানিংয়ের  
একান্ত ইচ্ছা ছিল, কিন্তু নানা কারণে এ  
বিষয় স্থগিত রাখিয়াছে।

আনাদিগের ভূতপূর্ব শাসনকর্তা পতি-  
তভূমি বিক্রয় করিবার যে আজ্ঞা দেন,  
প্রতিনিধিকারি দল ব্যতিরিক্ত অন্য সকলে  
তাহাতে সম্পূর্ণ অনুমোদন করেন নাই।  
পতিতভূমি বিক্রয় করিবার উদ্দেশ্য কেবল  
কি গবর্ণমেন্টের ধনাগার পরিপূর্ণ করা  
অথবা ইহার অপেক্ষা আর কিছু উদ্দেশ্য  
উদ্দেশ্য আছে। বন পূর্ণ ভূমি সকল  
পরিষ্কার করিয়া ভারতবর্ষের প্রতিনিধি  
সাধন করা কি মুখ্য উদ্দেশ্য নয়? যদি  
তাহা হয়, তাহা হইলে লার্ড ক্যানিংয়ের  
পতিতভূমি বিক্রয় করিবার আজ্ঞা নিন্দো-  
ষ নহে। প্রাপ্ত সাংবাদিকতার ভার-  
তবর্ষীয় ভূমির বিশেষজ্ঞ ব্যক্তিরা বলেন,  
মালাকা, সুন্দরবন প্রভৃতির ভূমির মাত্র  
এই সকল ভূমি বিক্রয় করিবার সময়ে  
ক্রেতাদিগকে এই প্রতিজ্ঞাপাশে বদ্ধ করি-  
য়া লওয়া কর্তব্য যে, যিনি যে ভূমি লই-  
বেন, তাহাকে বয়েক বৎসরের মধ্যে কি  
য়দংশ পরিষ্কৃত ও কথিত করিতে হইবে,  
নচেৎ গবর্ণমেন্ট ভূমি বাজেয়াপ্ত করিবেন,  
“প্রতিনিধিকারীরা” ইহাতে সন্মত ছিলেন  
না এবং লার্ড ক্যানিংও তাহাদিগের প্রা-  
র্থনা পরিপূর্ণ করাই প্রয়োজন জান ক-  
রেন। তাহারা মীল ও চা প্রভৃতির উৎপ-  
াদন কার্যে ত্রুটি হয়, তাহাদিগের যত দূর  
ধন থাকে, তাহা এক্ষণে কাহার অধিন  
নাই। তাহারা প্রথমে কিছু টাকা দিয়া  
করিয়া কাজ আরম্ভ করেন, শেষে “স-  
চাঁদ প্রভৃতির উপরেই নির্ভর। প্রাপ্ত



সাহেব প্রকৃতির অনুমোদনক্রমে নিজে  
প্রথা অবলম্বিত হইলে কেতুপদীর প্রকৃতি  
অনেক টাকা সংগ্রহের আশঙ্ক্য করে।  
তাহারা সেই আশঙ্ক্য অর্থ সংগ্রহ করি-  
কাথো প্রকৃত হইতে পারেন, তাহাদিগের  
দ্বারা দেশের কল্যাণ হইবার সম্ভাবনা।  
কিন্তু জিরাজিকারিদলে তদুপ লোকের  
সংখ্যা অল্প। সুতরাং গবর্ণর জেনারেলের  
মন্ত্রিদলের মধ্যে এ বিষয়ে মতভেদ হও-  
তে লাগে। এ গিন্ন এ বিষয়ে সর চার্লস  
উডের মত গ্রহণ প্রতীক্ষা করিয়াছেন।  
রাজপুরুষেরা তারতন্যে যে সমস্ত সুতন  
সুতন বিধি নিবেদন করিয়াছেন তাহা তার  
সংক্রান্ত। জিরাজিকারিদল লক্ষ্য করি-  
য়াছেন। তাহারা এই অনুরোধ  
করিয়া আসিতেছি। কিন্তু অত্র রাজ  
পুরুষেরা সকল সময়ে এই নিয়মের অনু-  
মোদন দিয়া আসিতে পারেন না। তাহারা  
কোন বিশেষের ভয়ে রাজনীতির অননুমো-  
দন অনেক কথ্য করিয়া থাকেন। একপ-  
ক্ষীয় সর চার্লস উডের হস্তার্পণ তার  
উপস্থিত মঙ্গল কেবল সন্দেহ নাই। সর চার-  
্লস উড বলেন, পলীগ্রাম মধ্যে যে সকল  
পতিত ভূমি আছে, তাহা সাধারণের গো-  
চারণের দ্বান ও সাধারণ সম্পত্তি, অতএব  
তাহা বিক্রয় করা বিধেয় হয় না। তাহারা  
সাধারণের স্বত্ব হানি হইবার সম্ভাবনা।  
পর্যন্ত প্রকৃতি হানি যে সকল বন পূর্ণ  
ভূমি আছে, তাহাই বিক্রয়ের যোগ্য।  
আমরাও এই বাক্যে অনুমোদন করি।  
কলকাতা আমাদিগের অভিপ্রেত মত, পূর্বত  
কল্প প্রকল্পে যে সকল ভূমি পতিত আছে,  
তাহাই জিরাজিকারিদলকে দেওয়া হয়  
এবং তাহারা তাহা লইয়া কলিকাতা নগর  
ক্ষেত্র। জিরাজিকারিদলের সচরাচর যে  
প্রকৃতির বৈধিক পাওয়া যায়, তাহাদি-  
গকে প্রদান, নগর ও জনপদে বাস করিতে

উক্ত প্রকৃতি অনিষ্ট ঘটবে। পূর্ববাসিন্দিগের  
অনিকে এই, জিরাজিকারিদলের দোরাণ্ডা  
তাহাদিগের বাস করা তর হইবে এবং  
জিরাজিকারিদলের অনিষ্ট এই যে পূর্ব  
বাসিন্দিগের সংসর্গে জিরাজিকারিদলের  
শাখীক ও মানসিক উত্তমদিব বনের  
ক্রমশঃ হ্রাস হইয়া যাইবে।

নীল প্রধান প্রকল্পের প্রস্ত

সিদ্ধান্তিকা

এ হতভাগ্যদিগের কি কষ্টের শেষ  
হইবে না? তাহা জান হরনীলকর ইহার  
অন্যতর উৎসন্ন না হইলে বুঝি রাজপুরু-  
ষেরা তাহাদিগের বিবাদের মীমাংসা করি-  
বেন না। উৎসন্ন হইতে প্রস্তুত হইবে,  
যেহেতু তাহারা চরল। নীল সংক্রান্ত  
যত মকদ্দমা হইয়াছে ও হইতেছে, তাহাব  
সমুদায়ই প্রায় বিচারপতিদিগের পক্ষ-  
পাতিতা ও অনতিদ্রষ্টব্য স্পষ্ট প্রকাশ পা-  
ইয়াছে। আমরা পূর্বে শুনিয়াছি, এখনও  
শুনিতোছি কোন কোন ডেপুটি কালেক্টর  
অন্যায় করিয়া ডিক্রি দিয়াছেন, কোন  
কোন মজিস্ট্রেট সামান্য দোষে অথবা  
বিনা দোষে কেবল নীলকরের কথায় অ-  
নেক প্রজাকে কারাবদ্ধ করিয়াছেন। ছোট  
আদালতের বারিষ্টার বিচারপতিরাও নী-  
লকরদিগের গৃহদেবতা। তাহাদিগকে  
পাইবার জন্য জিরাজিকারীর দল অনেক  
আগ্রাসন করিয়াছিলেন। বারিষ্টারেরাও  
অসন্তুষ্ট হইয়া তাহাদিগকে পূর্ণমনোরথ ক-  
রিয়াছেন। সম্রাতি যশোহরের অধ্যাপাতি  
জেনিটের প্রজারা তত্ৰত্য ছোট আদাল-  
তের অল্প লিখান সাজেবের নামে এই  
বলিয়া নালীশ করিয়াছে যে তিনি নীল-  
কর মিরাস সাহেবের কুঠিতে কাহারি ক-  
রেন। মিরাস বাহার নামে নালীশ করেন,  
তাহা সত্য হউক আর না হউক, বিচার-  
পতি তাহারই দিপক্ষে আজ্ঞা দেন। অধি-  
কৃত প্রজা কবে নীলকুঠিতে গমন করি-

তে পারে না; সুতরাং আর একতরফ  
ডিক্রি হইয়া থাকে। নীলকরদিগের  
জ্ঞতা ও অমায়িকতার জুটি নাই। তাহারা  
সকলকে অপনাদিগের তত্ৰত্য দেখাইবার  
জন্য কয়েক জনের নামে নালীশ করেন।  
তাহারা দাবন লইয়াছে, শীকার করিয়াছে।  
পাঠকগণ! জানেন তাহারা কে? তাহারা  
সকলেই নীলকরের লোক। তাহাদিগের  
বিরুদ্ধে ডিক্রি মাত্র হইয়াছে। কিন্তু তাহা  
দিগকে কোন ক্ষতি প্রকৃত হইতে হয় নাই।  
লিখান কথায় কথায় লোকের জরিমানা  
করেন। পাঠক বর্ণের অরণ্য থাকিতে পারে  
যশোহরের সহকারী মাজিস্ট্রেটের গুণে ও  
পুলিষ সেনাদিগের সহায়তায় মধ্যমান  
আচায়া নামক এক ব্যক্তির বাটীতে হয়টি  
হত্যা হয়। এই ব্যক্তিকে নীলকরদিগের  
চক্রান্তে ৩০০০ টাকা জরিমানা দিতে হই-  
য়াছে। আচায়া নীল বপন করিতে দি-  
য়ে না, তাহাতেই প্রজারা দাবন লইয়া  
করার তর বাসিতেছে নীলকরেরা এই  
কথা বলিবার। বিচারপতি তাহারা জরি-  
মানা করেন। এই ব্যক্তি গবর্ণমেন্টের নি-  
ম্নে আবেদন করিয়াছেন। যদি সচিচা-  
র এক কালে তারতন্য ত্যাগ না করিয়া  
কেন, এই ব্যক্তির হৃদয়ের প্রতীকার হইবে।  
বিচারপতি অর্থ অথবা প্রত্যর্থিক  
হিত একত্র বাস করিলে এতদেশীয়ের  
তাহার রক্ত বিচারে অবিশ্বাস করেন, ইহা  
প্রধান পুরুষেরা জানেন না এমন নয়।  
থাপি যে তাহারা ইহার নিবারণ করি-  
য়ে না, ইহা অল্প বিশ্বাসের বিষয় নহে।  
এই অবিশ্বাসের বিশিষ্ট কারণ আছে।  
এবং অনেক শুনা গিয়াছে নীলকরদিগের  
খানা ও সাল্লান বিচারপতির মতিভ্রম  
হইয়া দিয়াছে। লিখান কি কার্যে ইহা  
কুঠিতে কাহারি করেন? ইহাও কোন  
ব্যক্তি তাহার পক্ষপাতিতা শকা না করি-  
য়া? আমরা নিশ্চয় বলিতে পারি অনেক  
টে যে সকল নালীশ করিয়াছে তাহা স-

হে। প্রজার দায়ন লয় নাই। দায়ন ল  
লে নীলকরের। তাহা পাকা করিয়া লিখি  
রা নইতেন মনেই নাই, তাহার। সা  
মা কানকে বিনা রেজিষ্টারিতে করার  
লিখাইয়া নইবার পাত্র নহেন। যদি  
ল বিধান থাকিলে এই রূপ ঘটনা  
ওয়া অসম্ভাবিত মনে, নীলখতি পোল  
গ হইয়া অবধি পরম্পরের সেবিয়া  
নিয়াছে। ছিলই বা কি? একপ স্থলে  
দার প্রভৃতি যে সকল বলিল দ্বিতে  
হন, তাহা সহজে প্রমাণসিদ্ধ বিবেচনা  
রা কেন কমেই ন্যায়ানুগত মনে। যে  
চারপতি ইহা বুঝিয়া উঠিতে না পারে  
তাঁহাকে এই দণ্ডে বিচার দেওয়া  
কর্তব্য।

যশোহরেও এই হইতেছে। নদীয়ার  
বয়স হিন্দুপেট্রিগটে সবিশেষ বর্ণিত হই  
য়াছে। নদীয়ার এক জন খুজীয়া ডেপুটি  
কলেक्टर সম্প্রতি অন্যায় করিয়া এক মো  
ক্ষমায় নীলকরের জয় করিয়া দিয়াছেন।  
যে প্রজার নামে মালীশ হয়, তাহার উপা  
ধি পোন্দারী, কিন্তু নীলকরের যথার্থ বলি  
ল তাহা ঘোন্দারী লিখিত আছে। উক্ত  
প্রজা এই অন্যায় প্রজার প্রতিবাদ করি  
য়া তদ্রূপে এক লুই জাকসনসাহেবের নিক  
ট মালীশ করে। তিনি নথি চাহিয়াতে  
ডেপুটি কলেक्टर নলেন, তাহা ডাকে প্রেরি  
ত হইয়াছে। কিন্তু তাহা কৃষ্ণনগরের জজ  
মাদালতে পৌঁছাই নাই। লুই জাকসনসা  
হেব গমন করিলেন এলফিনস্টন জাকসন  
মাহেব দেখিলেন নথি হারাইয়াছে। অন  
হর এই বিজ্ঞ বহুদশী বিচারপতি প্রজা  
র বিরুদ্ধে ডিক্রী অপরিবর্তিত রাখিলেন  
যখন প্রজা নীলকরের দলিল  
জাল বলিতেছে, তখন এই রূপ প্রজা  
দান যে কতদূর অন্যায়, তাহা সকলে  
বুঝিতে পারিয়াছেন। দক্ষিণ কারোলি  
নার বিচারপতিরা বিচার করিবার সময়ে  
অধিকতর সাক্ষ্য শক্তিসম্পন্ন সুরাপান

করিয়া থাকেন। আমাদিগের বিচারপতি  
রা বিচারকালে সুরাপান না করিয়াও সু  
রাপারীর কাবা করেন।

একণে গবর্নমেন্টকে হুই একটা অনু  
রোধ করা উচিত। প্রথমতঃ লিবারকে এই  
দণ্ডে মিয়ান্সের নীলকুঠি ত্যাগ করিতে ব  
লুন, তাহার বিরুদ্ধে যে আবেদন হইয়া  
ছে, উক্তমতপে তাহার বিচার করা উচিত  
সাক্ষী দ্বারা যদি লিবারের পক্ষপাত সপ্র  
মাণ হয়, তাহা হইলে তাঁহাকে এই দণ্ডে  
পদচ্যুত করা কর্তব্য। খুজীয়া ডেপুটি কা  
লেक्टर কে পাঠকগণ বোধ হয় বুঝিতে পা  
রিয়ান। ইনি যখন আসেসর ছিলেন  
তখন ইহার নামে উৎকোচ গ্রহণের মালী  
শ হয়। ইনি ধর্মবলে রক্ষা পাইয়াছেন।  
কিন্তু ইহার জাতাকে কারাগারে যাইতে হ  
ইয়াছে। উক্ত সমুদায় সম্পন্ন ডেপুটি কা  
লেक्टर নথি ডাকে পাঠাইয়াছেন কি না;  
তাহা কাহা দ্বারা পাঠান হইয়াছিল; সে  
কি প্রকারে হারাইয়াছে; কোথায় এবং  
কি প্রকারে জারাইল, এই সকল বিষয়ের  
সবিশেষ অনুসন্ধান করা অভিনয় আবশ্য  
ক। উল্লিখিত নথি অগ্নি ডাকে যাব  
নাই তঃ

### পুস্তক প্রাপ্তি।

আমরা কতজনে সতর্কভাবে দীর্ঘকাল  
তেছি, এসপ্তাহে এক খনি সাংবাদিক  
খনি ইংরাজী এষ্ট দুই খনি প্রত্নতন পুস্তক  
প্রাপ্ত হইয়াছি। বাল্ল খনিব ন ব ডুগো-  
লারিচন। কনুটে, মা এষ্ট কুলের অন্যতর  
পণ্ডিত জীবন্ত রাজবন্দ তটোচর্য্য এতৎ  
প্রণয়ন কবিত্যাদয়। বাল্লখনিগের পাঠ্য ই  
হাতে সংক্ষেপে কুগোল হস্তাঙ্ক লিখিত হই-  
য়াছে। ইহা প্রথম শিক্ষার্থিগণের উপযোগী  
হইয়াছে। কটলগের দ্বিচরের অন্যতর মিস  
নরি রেবলগে জন বেংকট সাহেব জগলীর  
দুটিয়া বাজারের এক সভায় যে বক্তৃতা করে  
ন, তাহাতে দ্বিতীয় পুস্তক খানির ত্রুটি হই  
য়াছে। ইহার সাংগ্ৰহ আমরা আগামী বারে  
পাঠকগণের গোচর করিব

লগুন ১৫ই জুন ১৮৭২।

প্রিয় সম্পাদক।

লগুন একণে এক অপূর্ণ কব. ধ্যুরণ ক-  
রিয়াছে। প্রাচীন কবি ও পুরাতন লেখকেরা  
অবোধা, নিমেবা, বাবিলন, মেক্সিক ও রো-  
মক পত্তন প্রভৃতি নগরকে অশ্রু কুলের গো-  
রব স্বরূপ বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। সেই মনঃ  
কপিত বর্ণনা লক্ষ্য কেবল বর্তমান লগুনে  
দৃশ্য হইতেছে। এই মহানগর অশ্রু-কম-  
তার মতী কীর্তি। একণে ইহাকে একটা ক্ষু  
পৃথিবী বলিলে হয়। পৃথিবীর সর্বাংশ হইতে  
সহস্র সহস্র লোক সমাগত হইয়াছে; ইউ  
রোপ, আসিয়া, আফ্রিকা, এবং আমেরিকা  
যেন একটি আধিভরনিক কেন্দ্রে পরস্পর সা  
কাং করিতেছে। মিসর দেশের অধিপতি,  
জাপান দেশীয় রাজপুত্রগণ, তুর্কক, চীনা  
প্রভৃতি দেশের মুক্ত সকল, এবং রাজোপা  
ধিধারী নানা দেশীয় বহুসংখ্য ব্যক্তি এখানে  
বিচরণ করিতেছেন। এখানকার অসংখ্য মনো  
রমক বিষয় সকল মর্শকনের মিশ্র অতিবৃন্ত  
হইয়াছে। অথক্রীড়া, মলক্রীড়া, বোকাক্রীড়া,  
ক্রিকেট, বিলিয়ার্ড, চতুরন প্রভৃতি অশেষবিধ  
মামোদ সকল লোকদিগকে আকর্ষণ করি  
তেছে। সার কাল উপহৃত হইলে নানা  
স্থানে গীত নৃত্য, দ্বিগ্ন সম্মিলন প্রভৃতি বি  
বিধ মুখে লোক সকল পরিভ্রম হইতেছে।  
কিন্তু প্রভৃতি অগরিখ্যাত মটেরা এতমগনীন  
মনোহর নাট্যশালার আপনাদের কণ্ঠে  
মত প্রকাশ করিতেছেন। এক্ষণে লগুন  
অট্টালিকা প্রতিদ্বন্দ্ব বহুসংখ্য ব্যক্তিকে আ  
কর্ষণ করিতেছে। লাভ প্রহরের সাংবাদিক  
মিনোৎসাহিনী সভা ও ইউরোপান্ত অন্যত্র  
তিন সভা এখানে উপবেশন করিতে আসে  
বিখ্যাত ব্যক্তি একত্রিত হইতেছেন।  
রূপ চতুর্দিকে যে কত ব্যাপার উপা  
হোহ, তাহার সংখ্যা করিয়া উঠ দুঃ।  
বক্ত করা উচিত, স্বয়ং লগুনবাসী  
দীর্ঘ করিতেছে যে লগুনেব সর্বা  
থর অজ্ঞান, অজ্ঞতপূর্ণ কখনো তাঁহা  
আমি বিশেষ মনোযোগের সহিত  
তবর্ষীয় নিপকান্ত বহু সকল  
মিত সম্প্রতি এগজিভিশনে প্রিয়  
নান্য দেশীয় ব্যবসায় সহিত তুলনা



১। মাননীয় আইনজীবী মহোদয়গণের বিবেচনা  
 লাভের জন্য এই আবেদনটি প্রস্তুত করা হয়েছে।  
 ২। উক্ত আবেদনটিতে বর্ণিত সকল তথ্য সত্য এবং  
 সঠিক।  
 ৩। এই আবেদনটিতে বর্ণিত সকল তথ্য সত্য এবং  
 সঠিক।

[illegible]





তিনশত তর বসিতে হয় । ইহাতেই শিপাহিরা  
বাঝারে কেমন দৌরাখ্য করে তাহা সকলে  
বুঝিতে পারিবেন । দোকানিরা আত্যাচারে-  
খিরা দোকান বন্ধ করিতে এখনকার লোক-  
দিগের আহার সাধারণী শূন্য হইয়াছে, সুখি  
লোকেরা বেগাব খরিবার করে ঘরের বাহির  
হইয়া, কি ইতর, কি তর, গৃহস্থ মাঝেই  
খাতি ও প্রাণতরে লক্ষিত । শি-  
পাহিদিগের সমভিষাচারি অথ সকলকে রা-  
জ পথে রাখিতে সাধারণের গমনাগমনেরও  
সবিশেষ ব্যাঘাত আছে । এই দিবস বৈকালে  
এখনকার রাজধানীর হস্তিগক হস্তিগ লইয়া  
বাইতেছিল । অথচাতির খতাব হস্তি দেখি  
লে লক্ষ লক্ষ করিয়া থাকে । এই হস্তিকে আ-  
নিতে দেখিয়া শিপাহিরা নিবেশ করে । হস্তি-  
গক উপরাস্তর না থাকিতে সেই পথে আসি-  
তে লাগিল । তাহা দেখিয়া তিন চারি জন  
শিপাহি তত্রস্থিত একটা বাঁশ লইয়া প্রথমতঃ  
হস্তিকে বিলম্ব প্রহার করিল । তাহার পর  
সাহসের কর্ণসুল ও মস্তকে এমন প্রহার করিল  
যে, সে হস্তি হইতে ভূমিতে পড়িয়া রক্ত ব-  
হন করিতে লাগিল । দেখা গেল তাহার মস্ত-  
কের একস্থান অত্যন্ত ক্ষত হইয়াছে, তথাপি  
এ দুরাখারা প্রহার করিতে বিরত হয় নাই,  
হুতপ্রায় হইলে ছাড়িয়া দেয় । শুনিতে পাই  
গবর্ণমেন্টে ইহাদিগকে শাস্তিরক্ষার জন্য রাখি-  
য়াছেন কিন্তু আমাদের এখন এমন মন যে ই-  
হারা গেলেই আপদা শাস্তি হয় ।

গত আখিনমাসে পূজার কয়েক দিন ব-  
ন্ধ্যার জলপ লোকের বাজি ঘর রাখাটী তার হ-  
ইয়াছিল, সেই কঠোর উপর আবার কতকগুলি  
শিপাহি আসিয়া যৎপরোনাস্তি দৌরাখ্য  
করিয়া গিয়াছে । পরে কতকালে আবার এই  
জল হয় । বোধ করি এখন এই কণ্টাই হইতে  
ভলিল ।

## বিবিধ সংবাদ ।

৩১এ আশ্বিন সোমবার ।

মাক্কেটরের তত্ত্বাবধি মজুরদিগের সহা-  
য়তার জন্য উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে চাঁদা আরও  
হইয়াছে । তত্ত্বাবধি লেপ্টনকেট গবর্ণর ২০০ টা  
কা প্রদান করিয়াছেন ।

কয়েকজন প্রাণীকর্তার অন্ত্যস্তর নীল-

কর শিখ সাহেবের অধীনাগ্নি গল্পিত্যাগ করি-  
য়া অন্যত্র গমন করিয়াছে । তাহার ৬০০০০  
টাকা আর ছিল, তদ্ব্যতীত কেবল ৩৫০০০ টাকা  
মাত্র কর আদায় হইতেছে । আরও কয় হুজি  
করিলে আর হুজি হইবে ?

আলাহাবাদে জুরাচোরের দলবদ্ধি হইয়া-  
ছে । অনেক ইউরোপীয় বণিক বাহু আফসর  
দেখাওয়া খীর মিকট হইতে টাকা কর্ত্ত  
করিয়া খেবে প্রতারণা করিতেছেন ।

মেকেলিমিগের বিচার করিবার সময়ে  
সর মর্ডাউ ওয়েলস স্পর্ধাতিথানে কহিয়া ছে-  
ন বাহার। মেকেলিমা হয় তাহার। পুর্নতা নিব-  
ন্ধন আপনাদিগকে নিঃস্ব বলিয়া পরিচয় দেয়,  
অতএব ইহাদিগের বাসস্থানে গিয়া বিচার  
কর কর্তব্য । এইরূপ না করিলে প্রতীক যেরূপ  
সম্ভাবনা নাই ।

পারিসমগরে লিফ্রাক নামক এক ব্যক্তি  
আছে, তাহার দক্ষিণ গালে ৮ বুল্ল লম্বা  
শৃঙ্গাকার একটা পদার্থ আছে । কটেনবোর  
মিকটে একটি জীলোবের এই প্রকার একটা  
শৃঙ্গ ছিল । এই শৃঙ্গ আত্মপিও পারিসমুচি চিত্র  
শালিকায় রাখিয়াছে । বর্তমানের কাণ্ড বলিয়া  
তাদৃশ বিশ্বাস কর নর

কিনিক সম্পাদক এবং করিয়াছেন, উত্তর  
পশ্চিমাঞ্চলে যেতন একটি প্রধানতম বিচার-  
ালয় হইবে । সর চারল্‌স জাকসন টংলও গ  
মন করিতেছেন, অতএব সর মর্ডাউ ওয়েল্‌স  
স তত্ত্বাবধি প্রধান বিচারপতি হইবেন । সর  
মর্ডাউ ওয়েল্‌স উত্তর পশ্চিমের বোগ্য বি-  
চারপতি বটেন ।

বিধবিদ্যালয়ের পরীক্ষার্থ যে বাচ্চালা  
পুস্তক নির্ধারিত হইয়াছে, উক্ত পত্রের  
এক জন পত্র প্রেরক তাহার মোদো-  
লেখ করিয়াছেন । বিশেষতঃ তিনি বলেন,  
এবংসর যে প্রাণ নির্ধারিত করা হইয়াছে,  
তাহারা হাজগণের কিছু মাত্র উপকার নাই ।  
বিধবিদ্যালয়ের সভা সকলে কথন কখন  
হেন না ।

উক্ত সম্পাদক বলেন, অত্রতা গবর্ণমেন্টে  
আর লবণ প্রস্তুত করিবে না । আবার, নী  
লবণে অধিক লাভ হইতেছে । তবে আর  
কথা ব্যর কেন ?

সর চারল্‌স উক্ত পালি রানকে মহাসভা-

র কহিয়াছেন, তারতবর্গের উদ্ভূত অর্থ  
কালে লেও সাহেব হিলাবে এক কো-  
ভুলিয়াছেন । লেও সাহেবের ভুল হ-  
আমরা যারা বাই ।

লাহোর জমিকেলের এক জন পত্র প্রের-  
ক লিখিয়াছেন, এক জন লেপ্টনকেটের বা-  
হইতে কিছু প্রাণ অগম্য হওয়াতে তিনি  
তাহার খানসামার উপর সন্দেহ করেন । খা-  
নসামাকে এই চরিত্র বিবর খোঁকার করাটবা-  
জন্য তিনি তাহাকে এক হুজি বন্ধন করিয়া  
এক শাখ দ্বারা প্রহার করেন । এক ঘণ্টা প্র-  
হার করিয়া সাহেবের আশ্রি হওয়াতে আপ-  
নি এক চৌকিতে বসিয়া অন্য ভৃত্যদিগকে  
প্রহার করিতে আদেশ দিলেন । খানসামা  
বরাবর আপনার নিদোষিতার কথা বলিয়া  
আসিতছিল । এক জন তর লোক তদধনে  
লেপ্টনকেটের নিরস্ত হইতে বসিলেন । কি-  
তাহার কথা অগ্রাহ্য হওয়াতে তিনি ঐ বিল-  
ভেপুটি কমিসনরের গোচর করিলেন । ভেপুটি  
কমিসনরের আজ্ঞাক্রমে লেপ্টনকেটের হুত  
কারা ক্রম করা হইয়াছে, হতভাগা খানসা-  
মা চিকিৎসালয়ে আছে, তাহার কুখির বম-  
হইতেছে, তাহার জীবন সংশয় । এই লেপ্ট-  
নকেট আমাদিগকে দারোগার গুণ বিশ্বাস  
করাইলেন ।

টাইমস অণ্ড ইণ্ডিয়া পত্রে বোম্বাইয়ে  
কয়েক জন ভুলার বণিকের ধুর্নতান বিম-  
প্রকাশিত হইয়াছে । তাহার। পূর্বে এক ম-  
স্থির করিয়া পরে তাহার পরিবর্ত করা  
অনেককে কতি প্রস্ত হইতে হইয়াছে । পু-  
নী কি কেবল বন্ধনারই স্থল ?

অন্য প্রধানতম বিচারালয়ের ফৌজদারী  
সেসিয়ন আরও হইয়াছে । সর মর্ডাউ ওয়েল্‌স  
লস বিচারপতি । এবার কয়েকটি গুরুত্ব  
মৌকদমা আছে ।

হুজকের বিখ্যাত অফিসের বণি-  
হরমসজী রহমজী মেকেলিমা হইয়া বেকে-  
দীপে গলায়ন করিয়াছেন ।

হিন্দুপেট্রিট সম্পাদক বলেন সম্রাতি  
কয়েক জন অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট হরিণবা-  
দর্শন করিয়া অসন্তুষ্ট হইয়াছেন । তাহার।  
পালীগত যে গোব আছে, তাহা তাহার।  
জ গবর্ণমেন্টের গোচর করিবে । এই হত

উক্ত পত্রের লক্ষ্যোদ্ভিত সংবাদমাতা  
 বলেন, উক্ত বিচারকার্যের কতিপয় কা-  
 খেন আপনার বিশেষ্ট মধ্যে জাহ্নকহারদি-  
 নের প্রত্যেক দ্বিভিন্নতাম লিখিতক্রমে  
 তদ্বিষয়ে কার্যক্রমে ১৮৮৩  
 দিবসের ১৮৮৩



জা সেন। কাম্বল কেও অধীশ্বরি।

জন লেখক হইবার যোগ্য লোক।

গিলিয়ান সম্পাদক বলেন, আগরা যু

প্রতি স্থানে ওলাউঠার আতঙ্ক হই

হ। ওলাউঠা কি স্কুল অথুই অধিকার

রাইল ?

ইটোরায় বিরক্ত সিংহ নামক একজন

যুত হইয়াছে। রাজা মানসিংহ তাহার

আবাস হইয়া তাহাকে যুত করিয়াছেন। সে

আর ইংলণ্ডের রাজ্যে আসিতে পারি

বে না।

সম্রাটের মৃত্যুকে ওয়েলস একজন আ

কিনরের খামলাহাকে মিথ্যা দিবার সময়ে ব

সিদ্ধাছেন 'আমি সর্বদা শুনিতে পাই যুবক আ

কিনরদিগের কৃত্যেরা তাঁহাদিগেরই কৃত্যাদি

অপহরণ করে। এবার বেতন এই অপরাধে

যুত হইবে তাহাকে আমি নিঃসন্দেহ যোগ্য

ভুক্ত করিব।' সন্ন্যাসীকেওয়েলস উত্তম

কণ্ডা দিয়া করিয়াছেন। এই সঙ্গে আর একটা

বিষয় দিয়া করিয়া রাখা আবশ্যিক। যুবক আ

কিনরদিগের বাহারা কথায় কথায় নরকত্যা

করে, তাহাদিগের কিঞ্চিৎ বিচার করিবেন ?

ডাক্তার সম্পাদক বলেন, কুকের বাটীর দুই

জন মহিলা ভুটি অধীশ্বরি। বারাকপুরে গিয়া

ছিল। দুই জন 'ঐরবিকারী' তাহাদিগের

নিকট অধীশ্বরি করিবার চেষ্টা করিয়া তাহাতে

আরোহণ পূর্বক তাহাদিগকে এক পত্র দি

য়া বলিল 'অধীশ্বরি বাটীর কাছে নিকটে বাই

লে অধীশ্বরি মূল্য ও তাহাদিগের বকসিস মি

লিবে' যুতেরা এই কথা প্রত্যাশ করিল।

মহিলাসেবা নির্দিষ্ট স্থানে গিয়া প্রতারণা জা

নিতে পারিল। এই দুই যুত যুত হইয়াছে।

তাহাদিগের চল বৎসর কাল আসের আদেশ

হইয়াছে।

১লা আশ্বিন বৃহস্পতি।

বাসন্তীর আকিস এক গায়েতে সর্বদা

বে কপলা হয়, জনসাধারণ তাহা দেখিয়া

খা হইতেছে। পবলিক ওয়ার্ড গার্ডসমেন্টে

প্রধান রাজকর্মচারিদিগের নিবাসি ভবন

করিয়াছেন কোন আকিসে ও

কৃত স্থান আবশ্যিক।

মিলেটারি কিনাক কামিনন আ

ফেন পেবারেরা যুবকদের সেনা সংগ্রহ

বেতন, পেনসন প্রভৃতির টেক আডিটর ও

আর্কাইভকে জেনারেলের সম্মতির প্রতীক

করিয়া আপনারা তত্ত্ব স্থানীয় খানদার হই

তে তাহাইরা লইতে পারি যেন। তাহা হই

রাছে। অনেকের প্রতাপ কষ্ট সহ্য করিতে

হইত।

চীমদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে সি

মোহীরা সম্রাটের একটি যুদ্ধে জয় লাভ করি

রাছে। ক্যান্টো ও ইংরাজ সেনাপতি জাপান

মিগের নিবিষমধ্যে এক প্রকার রক্তক্ষয়

হে। আমরা এক্ষণে যুক্তিতে পাবিলম কি

অন্য কারেক রেজিমেন্টে নীকসেনা চীম দেশে

প্রেরিত হইবে ?

রাখ সাহেব কহিয়াছেন, বিদ্রোহের আর

কোন সাহেব তাহাকে বিদ্রোহের সেনাপতি

করেন। সেনাপতি জামেলক নানাকে তথা

হইতে দূরীভূত করিলে রাও সাহেব জামেলকে

কুল্পীতে পলায়ন করিয়া সেনা সংগ্রহ দ্বারা

তাতিচাতোপির সহিত একত্র হন। কুল

পী ইংরাজদিগের অধীনস্থ হইলে তাহারা

গোয়ালিয়রে গমন করেন। তৎপরে মধ্য জা

রতবর্ষে পলায়ন করেন। খাউসার নিকটে

তাতিয়া পরাজিত হইলে উভয়ের বিচ্ছেদ

হয়। ক্যান্টো রাণী কিয়দিকস তাহাদিগের

সহিত ছিলেন কিন্তু গোয়ালিয়রের নিকটে

আহত হইয়া তিনি অন্যত্র গমন করেন।

সমস্ত সৈন্য ছিন্ন ভিন্ন হইয়া গেলে রাও

সাহেব আত্ম সমর্পণ করিবার সম্মত করিয়া

ছিলেন, কিন্তু তাহার সহচরগণের অনুরোধে

তাহা করিতে পারেন নাই। তিনি নাম পরি

বর্ত্ত করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

করিয়া পলায়ে ও ক্যান্টো জমিদার

উক্ত সম্পাদক ললার সাহেবের পরিচয়

বাহু রাখিয়াই যোগ্য নিয়োগ দর্শনে জিজ্ঞাস

সা কহিয়াছেন ললার সাহেব কিছু মি

চাকার নর্মাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক ছিলেন

তিনি কোথায় গিয়াছেন ? ললার কি

টাকা কর্ত্ত করিয়া চন্দ্রনগরের দিগে সরি

তিয়াছেন।

২রা আশ্বিন বৃহস্পতিবার।

জিল্‌স পাত্র প্রকাশিত হইয়াছে তিন

ও ক্যান্টোর সর্বত্র সকল জরিপ করা হই

তেছে। কাম্বল জন কিরিচি ইহা করিতেছে

ন। প্রধান প্রধান শৃঙ্খলের উচ্চতার পরিমা

নিয়ম লিখিত হইতেছে—

এবরেট ২৬.০০২ ফিট

কেকে ২৮.২১৮ ই

কাম্বলক ২৮.১১৩ ই

খেলদিবি ২৩.৮২৩ ই

চানাপুর্বে এক জন ইন্ট্রোপীর স্পর্শ

একটি ইন্ট্রোপীর দ্বীপে কের সতীত্ব

করিয়াছে এই ব্যক্তি এক জন নিবিলিগারে

জারজ পুত্র। সে প্রথমতঃ সেনাদলে এক

শেপ্টেন-এ ছিল। তাহা সে এক তরঙ্গ সং

যুক্তিতে নিবাস করে একটি কনকবালি

লালী ক্যান্টো তাহাদিগের সহিত আইনে

লেপ্টেনেন্টে দ্বীপে নিবাস স্থাপনা যু

বেশ করেন, সে সেই নিবাসেই বাসিকার

বন্দা করিয়াছে। ই অবশেষেইয়ের ওক

কণ্ড করা কষ্টসা।

বীহতের কবলা কোম্পানির অংশ

শতকরা ৫ টাকা লাভ পাইয়াছেন। বর

পদ্যে ব্রুট ওয়ে হইলে তাহাদিগের অধি

তর লাভ ওটবাং সফল। আছে।

গবর্ণমেন্ট আদা করিয়াছেন, বার

কেপ আতিশয়ে যে সকল কমডারকে তা

ইরা সে ওয়া ওটা তাহারা যদি জরুরি

র থাকেন, তাহা হইলে তাহাদিগকে ই

য়ের বেতন পুরস্কার প্রদান দেওয়া হই

নচেৎ নহে।

সিঙ্গাপুরে বাম্পায় আলোক হইতে

১৫ মাইল দূর পুনানগরে বো

দে। স্বপক বস্ত্র কার্য আর

যে। আমাদিগের ব্যবসায় সফল

## সোমগ্রন্থ

কম দিন হইল, এক আদি ওলন্দাজ আ-  
দাম বোম্বাই শহরে নিবসিত এক জন বোম্বাই-  
রাকে আক্রমণ করিয়া ৩০ জনকে বন্দীকৃত  
করিয়াছে। বোম্বাইরাকার সবিশেষ লোক ও  
অধ্যবসায় সহকারে মুক্ত করিয়াছিল। তাহা-  
তে কয়েক জন ওলন্দাজ আকিসর মৃত হইয়া  
ছেন। ওলন্দাজ ও ইংরাজেরা বিলিয়া এই  
চুক্তিভিদের যান আকিসর দিন।

নর জন কল্যাণীমলভ্যাগী ইসন্য কাছো-  
লিয়ার বিদ্রোহীদিগের প্রধান হইয়া শ্যামলে  
নীর গবর্ণমেণ্টের বিরুদ্ধে যুদ্ধ আরম্ভ করিয়া-  
ছে। এই যুদ্ধে কল্যাণীরা বা শেষে শ্যামলে  
শেও হস্তক্ষেপ করেন।

বোম্বাইয়ের এক জন হিন্দু বণিক প্রচার  
করিয়া দিয়াছেন, যে ব্যক্তি ইংরাজিতে বেশ  
সংক্রান্ত উৎকৃষ্ট প্রসঙ্গ লিখিতে পারিবেন,  
তাহাকে ২০০০ টাকা পুরস্কার দিবেন। তদ্রূপ  
উইলিয়ম নিকোল কোম্পানির হস্তে এই টাকা  
আছে। সুবিখ্যাত ডাক্তর হগ লেখার পরী-  
ক্ষা করিবেন।

মহা চার্লস উক্ত প্রধানতম বিচারালয়ের  
বিচারপতিদিগের বেতন প্রভৃতি স্থির করি-  
য়াছেন, অতঃপর প্রধান বিচারপতি প্রতি  
বৎসর ৭২০০০ টাকা ও অন্য অন্য বিচারপতি  
২০,০০০ টাকা পাইবেন। সিভিলিয়ান  
বিচারপতিরা সিভিল সরবিসের নিয়মানুসারে  
বিদায় পাইবেন। সাধারণ কার্যোপলক্ষে  
হর দাস বিদায় দেওয়া হইবে। এক বৎ-  
সরের অধিক অল্পপস্থিত থাকিলে কর্ম  
হাইবে। প্রধান বিচারপতি এর বৎসরের  
পর ১৮,০০০ টাকা বার্ষিক স্থিতি পাইবেন,  
কিন্তু তাহাকে অন্ততঃ এই বার বৎসরের  
হর বৎসর প্রধান বিচারপতির কার্য  
করিতে হইবে। অন্য অন্য বিচারপতিরা  
নিয়মিত সময়ে পর অল্পক বেতন পেনসনে  
র স্বরূপ পাইবেন। ইংলণ্ড হইতে যে প্রধান  
বিচারপতি আগিয়াছেন, তিনি ১০,০০০ ও অন্য  
অন্য জন ৮০০০ টাকা পাইবেন।

বেঙ্গল কাউন্সিলি যিনি লক্ষ্যে মঙ্গল বিদ্রো-  
হকালে প্রবৃত্তি কানন অল-হুসেয় কর ক-  
রেন, তাহাকে পুরস্কার করা হইয়াছে।

বাক্সিংয়ের বিখ্যাত কল্যাণীয়ার মরেল

কল্যাণীয়ার ত্যাগ করিয়াছেন। হিন্দু বিচা-  
রের পূর্বে মরেলকে বাইতে দেওয়া বাহার  
পর নাই অন্য র হইয়াছে। মরেলের হইবার  
হুতা দুপাত্তরিত ও একজনের কালী হই-  
য়াছে।

গবর্ণমেণ্টের তিন তিন অঙ্গাণ্ডের দ্বি-  
লিত টাকা জমা আছে।

|                          |              |
|--------------------------|--------------|
| ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেণ্টের | ২,৫৪,৪৫,০২৭  |
| বঙ্গদেশীয় এই            | ১,৮২,০৫,৩৩৫  |
| উত্তর পশ্চিমাকলের        | ৩,০০,৭০,০২০  |
| পূর্বাঞ্চলীয় এই         | ৮০,৩৬৮       |
| বোম্বাইয়ের              | ৩,২৫,৫৮,৩২৫  |
| মধ্য ভারতবর্ষের এই       | ৫৮,৩০,৫২২    |
| মহিলাতায়র               | ২৫,১১,০৬৭    |
| মাদ্রাজের                | ৩,১৫,০০,৭০৩  |
| মোট টাকা                 | ১৮ ৪৩,২৭,০৬৭ |

গত দাস অপেক্ষা এবার তহবিলে অধিক  
টাকা আছে।

রসেল উইলিয়ামস মায়ক এক জন ইংরা  
জ আপনাকে কাউন্সেল রসেল বারিা পরিচয়  
দিয়া বোম্বাই ও মাদ্রাজের কয়েক ব্যাকে  
২০০০ টাকার হস্তি কাল করিয়া দত্ত হইয়াছে,  
এ ব্যক্তি ১৫ গণিত সেনাদলের এক জন লে-  
ফ্টেনেন্ট। ক্রমশঃ উক্তদের ইউরোপীয় মলেও  
জালকারিতা প্রবর্তিত হইতেছে।

লাহোর ক্রনিকেল সম্পাদক বলেন অল্প  
দিন হইল মোস্তাফিজুল হার পুত্র মফসস সন্নি-  
ক মুলতানজানের এক জন সৈন্যকে পরাজি-  
ত করিয়া কয়েকটি দুর্গ অধিকার করিয়াছেন।  
এবার প্রধানতম বিচারালয়ের সেশিয়নে ক-  
য়েকটি বারাকনাকে হুতবা খাওয়াইয়া তাহাদি-  
গের অলঙ্কার অপহরণ করিবার মোকদ্দমা  
হইয়াছে। মর মর্ডাউ ওয়েনস যাবতীর লে-  
খী ব্যক্তিকে মাত বৎসর করিয়া দুপাত্তরিত  
করিয়া বলিয়াছেন, এবার আর কেহ একজ  
করিলে তিনি গুরুতর দণ্ডবিধান করিবেন।  
গাবতীর কুক্রিয়া বারাকনাহুহে রাশীকৃত হ-  
ইয়াছে। গুরুতর বিধানকারী ক্রমে তাহার  
নিবারণ চেষ্টা করা উচিত।

আগামি শনিবার ভারতবর্ষীয় মাদ্রাজের  
সভার অধিবেশন হইবে। প্রধানতম বিচার

মহা সংক্রান্ত বিষয়করাই এই সভার প্রধান  
উদ্দেশ্য। সভার কে উপস্থিত থাকিবেন এবং  
কিভাবেই কলিকাতা অধিবেশন করিয়াছেন।

সিদ্ধান্তকালের সুচিন্তিত মতামত জানি-  
বৎ, তদ্রূপে রাষ্ট্র প্রতিনিধির প্রতিনিধি  
নিবারণের উদ্দেশে কয়েকটি সুচিন্তিত সিদ্ধান্ত  
করিতেছেন। তাহার সমস্তকার অন্য গবর্ণ-  
মেণ্টের কথাবলি হইবে কোম্পানি সিদ্ধান্ত  
প্রেরণ করিয়াছেন।

কিম্বোয় রাষ্ট্রের প্রতিনিধির সংবাদ  
হাতা বলেন, সেল ইন্ডিয়া গবর্ণর-জেনারেল  
করিয়া পজামীর সংবাদ। রবিন পূর্বক সাধা-  
রণ বিচারালয় প্রভৃতি স্থাপিত করিবার  
সংক্রান্ত করিয়াছেন। এই সকল ব্যক্তি অধিক  
তর করা হইবে, বাকিরা অন্য ব্যক্তি নির্দিষ্ট  
না হইবে বালাগা মর বিচার কার্য হইবে।

মাকের্টরের মজুরদিগের সমস্তকার জ-  
ন্য মর্দকত্ব ৫০,১০০০ আদায় হইয়াছে।  
একজনীয় আমেরে ক্রমশঃ টাকা দিতে  
ছেন।

অবোধ্যানেমেন্ট সম্পাদক বলেন কর্ম  
সাধারণ সেতুর একটি বিলাসে চিক বাইয়ায়  
ইহা অত্যন্ত লক্ষ্যে দিব্য মলেহ বি ১ মাকলা  
রেলওয়েতে গিয়াছিল যে পুল হইতেই  
সেই পুল সুলাইবার সিবির কে পান বীজ  
হর, তাহার একদিক কিম্বৎ প্রতিনিধি কাল  
ইভিনিয়রেরা বহুতরিত আকর্ষণ না হইয়াই  
কয়েক জন লোকের আশ্রয় হইয়া।

ইভিনিয়র অগ্নিতে প্রকাশিত হইয়াছে বা  
পলতার নিকটে পলতার পেশু আরম্ভ হইবে।  
ইহার জন্য ২৮ লক্ষ টাকা করি হইয়াছে। সে-  
তুর মাতটি বিলাস হইবে।

ইভিনিয়র বিচারের ক্রমগতর মতামত  
লাভী বলেন তদ্রূপে হোটে আদালতের তিন  
জন বিচার পতি বাহু কালীধর বিজ, দুর্গা-  
নাথসিংহ ও উমসন সাহেব সর্ব সাধারণের  
প্রিয় পাত্র হইয়াছেন। মীল করেরাও তাহা-  
দিগের বিচারের কোন দোষ কাছির করিতে  
পারেন না। ইহার তিন জনেই মদ্রাজের  
জিল্লার প্রতিনিধি বিচার পতি হইয়াছেন। মীল  
করেরা তাহাদিগের বিচারের সোম ব্যতির





আমাদিগের শিক্ষা সংস্কার কার্যের অর্থ, কলিঙ্গের অবলম্বিত নীতি মিতাক্ষ হুর্দোষ তাহাদিগের অনেক কাণ্ডে ইহার পরিচা পাওয়া গিয়াছে। অন্য একটা উদাহরণ প্রদর্শিত হইতেছে। বাঙ্গলার দক্ষিণ দিকের ইনস্পেক্টর উদ্ভে। সাহেব বিদ্যা প্রবন্ধ কব্রাতে মেডলিকট সাহেবকে তা পদে প্রতিষ্ঠিত করা হইয়াছে। মেডলিকট উক্ত বিদ্যার পারদর্শী, তিনি শিক্ষা সংস্কার কার্যের অভিজ্ঞ নহেন, বিশেষতঃ বাঙ্গলা জানেন না। অথচ তাঁহাকে ইনস্পেক্টর করা হইল। বাঙ্গলা না জানিলে এই কাজ চলিতে পারে না। এ জন্য এক জনকে



যার তাহার নতুনকারী করিয়া দেখিয়া হইল। নিম্নাংশে লক্ষ্য করিয়া দেখিলে এইরূপে যে কার্য করা হইতেছে, এটি অত্যন্ত সম্ভব। তাহার একটি বিষয়ের পার্থক্য এক ব্যক্তিকে প্রমাণিত কি এ টাকা নষ্ট হইল। এজন্যই তিনি আশঙ্কিত হইয়া নিম্নাংশ করিয়াছেন।

নিম্নাংশের বিদ্যালয়ের বখাৎ হইয়া যখন প্রায় অতিশয় হয়, তাহা হইলে সংস্কৃত ও মধ্যম বিদ্যালয়ের হাট হইতে প্রভাবিত বিদ্যালয়ে নিয়োজিত করিয়া নিয়ম করাই কর্তব্য। এখনও কলিকাতার একবিধ চেটা না হইবার একটা কারণ আছে। তাহার মনে করেন, যখন বঙ্গের অধিক কার্য করিবেন। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে এ বিষয়ে তাহার মনে পতিত হইয়াছে। যখন ব্যয়ে কখনো কাল কাজ হয় না। তাহার গুরুত্বাংশ নিম্নে শুধরিবার চেটার যে অর্থ ব্যয় করিবেন, তাহা কার্য হইবে সন্দেহ নাই।

— ১ —

গবর্ণমেন্টের লবণ প্রস্তুত করিবার

বিধান পরিচয়।

বাণিজ্যগত স্বাধীনতা না থাকিলে কখন উহার সম্যক জীবিত হয় না। এই নিমিত্ত সভ্য কালের লোকদিগকে যত্নবান হইয়া ক্রমে ক্রমে সেই স্বাধীনতার ব্যাপ্তি কারী বিষয় সকলকে দূরীভূত করিতে চেষ্টা যায়। অসত্য কালের লোকেরা তাহার বিপরীত বিবেচনা করেন। তাহার মনে করেন বাণিজ্য একচেটিয়া হইলেই অধিকতর লাভের হেতু হয়। তাহা হইলে এই প্রমাণক সংস্কার নিবন্ধন প্রাচীন কালের অধিকাংশ একচেটিয়া বাণিজ্য সম্বন্ধে স্মৃতিতে পাওয়া যায়। কিন্তু ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের সত্য কালের লোকেরা তাহা মনে ত্যাগ করিয়া বর্তমানের বাণিজ্যের একচেটিয়া সম্বন্ধ পরিচয় করিতে পারেন না। তাহারা বর্তমানের অধিকার অবধি

কেন ও কখনও তাহা প্রচেষ্টা করেন। একচেটিয়া হইতে পারিতেছে। ইহা কখনও প্রচেষ্টা করিয়া ওবাকের একচেটিয়া হইতে পারিয়াছেন; অধিকতর ও লবণের একচেটিয়া অন্যাপিও হইতে পারে। কিন্তু যে একটি ঘটনা হইয়াছে, তাহাতে তাহার বাণিজ্য স্বাধীন হইবার সম্ভাবনা হইয়া উঠিয়াছে।

নিবরণপুল, যেখানে প্রকৃতি স্থান হইতে অধিক পরিমাণে লবণের আমদানী হইতেছে। আমেরিকার প্রকৃতিস্থান হইবার পূর্বে নিবরণপুল হইতে এই দেশের দক্ষিণ বিভাগে বিস্তর লবণ বাইত। তদন্ত গবর্ণমেন্ট। কিন্তু বিভাগের বন্দর সকল অবরুদ্ধ করিতে সেই সমুদায় লবণ একত্রে এ দেশে আসিতেছে। এই লবণ কি বণ কি আদায় উত্তরধায়ে এ দেশের পাত্র ও করক উত্তরবিধ লবণ প্রাপেক্ষা উৎকৃষ্ট। সুতরাং বঙ্গ দেশে বিশেষতঃ উত্তর পশ্চিমাংশে এই লবণই অধিক উচিত হইতেছে। এই কারণে গবর্ণমেন্টের লবণ পূর্বে ন্যায় বিক্রয় হইতেছে না। বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্ট এই কারণ অবগত হইয়া রেবিট বেডের নিকট জিজ্ঞাসা করেন, গবর্ণমেন্ট লবণ প্রস্তুত করিবার কার্য পরিচয় করিতে পারেন কি না? বোডতত্ত্বের লিখিত হইল গবর্ণমেন্টের কৃত লবণের আর আদায় গৌরব নাই। গড়ে এ দেশে ৭৫ লক্ষ লবণ লাগিয়া থাকে। এক্ষণে গবর্ণমেন্টের তিন তিন গোলায় ৮৭ লক্ষ লবণ প্রস্তুত আছে। এতদ্বারা কলিকাতার নিবরণপুল প্রকৃতি স্থান হইতে ৩৫০০০০ লবণ আসিয়াছে। এই সকল কার্য প্রস্তুত হইবার পূর্বে বোডের প্রধান টেনেকোর্থ সাহেব করেন) চট্টগ্রাম হইতে ও বালেশ্বরের পোস্তান বঙ্গ কাছা পরিমাণে লবণ প্রস্তুত করা কর্তব্য। আমদানী লবণে যে শুল্ক লক্ষ

আহাতে কার্যের প্রাপ্তি হইবে। বিশেষতঃ এই পোস্তান হইতে লবণ প্রস্তুত করা অসম্ভব কর সন্দেহ নাই।

সেন্টেমেন্ট গবর্ণর বোডে ক্রমে আশঙ্কিত হইয়াছিল। ক্রমে পোস্তান উঠিয়া দিতে পারে কেবল এক্ষণে পোস্তান হইতে আদায় বন্দিত; যদি ইহাও লবণের আমদানী বন্ধ হইয়া যায়, এই নিমিত্ত গবর্ণমেন্টের গোলায় এক বৎসরের উপর যুক্ত ৮৭ লক্ষ লবণ লবণ সঞ্চিত থাকিবে। লবণ প্রস্তুত করা বন্ধ হইতে যে সকল মালী কর্তৃত্ব হইবে, তাহার ইচ্ছা করিলে লবণের তুলি সকল চিরকারী বন্দোবস্ত হইয়া তাহাতে কৃষি কার্য করিতে পারিবে। যে সকল বণিক লবণ ক্রয় করিতেন, তাহাদিগকে জানাইবার জন্য লবণের হিসাব প্রকাশিত হইবে। পূর্বে কেবল বিক্রীত লবণের হিসাব প্রকাশ করা হইত; এক্ষণে গবর্ণমেন্টের গোলায় কত লবণ আছে, এটি মনে হইবার করিয়া তাহার এক এক হিসাব প্রকাশিত হইবে।

যে কোন বাণিজ্য হউক, অন্যকে বধিত করিয়া গবর্ণমেন্টের স্বত্ব রাখা অত্যন্ত অন্যায় কর সন্দেহ নাই। কিন্তু লবণ ও অধিকতর আমদানির গবর্ণমেন্টের স্বত্বের প্রধান উপায় বলিয়া তাহা ত্যাগ করিতে পারিতেছেন না। গত বৎসর এক বৎসরে লবণে নিম্ন লিখিত আদায় হইয়াছে—

|                          |             |
|--------------------------|-------------|
| আমদানী লবণের শুল্ক       | ৩৭,৫০,০০০   |
| গবর্ণমেন্টের লবণের মূল্য | ১,৭২,০০,০০০ |
| মোট                      | ২,০৯,৫০,০০০ |
| একচেটিয়া প্রকৃতির বঙ্গ  | ৪৫,৫২২,৬০০  |
| লাভ                      | ২,২৭,২০,৭০০ |

এক বঙ্গদেশে বাণিজ্যের আর আদায়

পাঁচ কোটি লোক বসবাস করছে। আমাদের লবণে এত টাকা মূল্য হইবার সত্যতা আছে কি না? ইহা পরীক্ষা হইলে রহিল। আমাদের কই মনোমুগ্ধতার মানিক বা রৈম্যানিক হিসাব বাহির হয় না? তাহা হইলে আমরা এক আকার সংশয় তুলন করিতে পারিতাম।



নব্য সম্প্রদায় কিরূপে কাজ করিলে  
এদেশের উন্নতি সাধনে সমর্থ  
হইবেন?

হিন্দুগেটিংস, ইণ্ডিয়ান কিল্ড, ইণ্ডিয়ান রিকর্মর ও বাণালী, এই কয় খানি পত্র আমাদের ধর্ম ও সামাজিক আচার ব্যবহারাদির পরিবর্তন প্রসঙ্গ লইয়া কয়েক মাস হ আন্দোলন করিতেছেন। উদ্বুদ্ধ করিয়া আমাদের মধ্যে উপরি উক্ত প্রশ্ন উত্থিত হইতেছে। প্রশ্নটি যেমন সহজ, ইহার মীমাংসাও তেমন সহজ নহে। যে সকল বিষয়ে প্রধান প্রধান ব্যক্তিগণ ও মতবৈধ দৃষ্ট হয়, এবিষয়টিও তাহার অন্তর্নিবিষ্ট। ইহার সমাধান বিপথে একমতায় মর্মণ সম্ভাবিত নহে। কেহ বলেন, আমাদের দেশে এক্ষণে যে সমস্ত আচার ব্যবহারাদি প্রচলিত দৃষ্ট হয়, সম্পূর্ণ রূপে এককালে তাহার উচ্ছেদ করিতে না পারিলে উন্নতি লাভ সম্ভব না হইবে; কেহ কেহ বলেন, উন্নতি রীতিতে অবিস্মার্যকারী ন্যায় কার্য করিলে ইহা লাভ সুসাধ্য হইবে না। তাঁহাদিগের অভিপ্রেত এই, এককালে আমাদের আচার ব্যবহারাদির পরিবর্তন না করিয়া উহার অনুমোদিত প্রথা অবলম্বন করিয়া ক্রমে-ক্রমে সংশোধন করিতে হইবে। কেহকেহ আমাদের আচার ব্যবহারাদির মোহনী শক্তিতে একান্ত মুগ্ধ হইয়া উহার কোন দোষ দেখিতে পান না, সুতরাং তাঁহারা উহার পরিবর্তন উত্তম বলিয়া মানেন।

পৃথিবীর মধ্যে ধর্ম, রাজনীতি, মানব প্রণালী ও সামাজিক নিয়মের যত ঐক্যবর্ত্ত পরিবর্তন দৃষ্ট হয়, সে সমুদায়ই আর প্রথমাবস্থার এক বা তদধিক অলোক সামান্য প্রতিক্রিয়াসম্পন্ন শক্তি দ্বারা সঞ্চারিত হইয়াছে। কিন্তু সে সকল ব্যক্তি মধ্যবিধ উপায় অবলম্বন করিয়া কৃতকায হইতে পারেন নাই। তাঁহারা এক কালে তদানীন্তন জাতিসমূহ কুৎসিত প্রচার উন্মূলন চেষ্টা করিয়াই কৃতকৃত্য হইয়াছেন। প্রথমতঃ তাঁহাদিগের কেহই অনেক সংখ্যক অনুচর প্রাপ্ত হন নাই; অধ্যায়সার ও সাহস সহকারে কায্য করাতে তাঁহারা ক্রমশঃ সচর ও অনুচর প্রাপ্ত হইয়া স্বদেশের ঐশ্বর্যসাধনে সমর্থ হন এবং পৃথিবীর অন্য অন্য লোকদিগের সংখ্যানুষ্ঠানের দৃষ্টান্ত স্থল হইয়া যান। সুখর, জন মনস, কালবিন, উইকলিক, মচমর প্রভৃতি এই রূপে কায্য করিয়া মনঃ পরিবর্তন সাধন করিয়াছেন। কিন্তু তদন্তবশে যিনি যখন কোন বিষয়ের পনির্ভূত চেষ্টা পাইয়াছেন, সাহসের অস্পন্দ্য প্রযুক্ত প্রায়ই তিনি মধ্যবিধ উপায়ের অবলম্বনে যত্নবান হইয়াছেন, সুতরাং তদন্ত কৃতার্থতা লাভে সমর্থ হন নাই। আমরা রামমোহন রায়কে উদাহরণ স্বরূপ গ্রহণ করিলাম। তাঁহার দ্বারা আমাদের দেশের যথেষ্ট উপকার হইয়াছে, একথা আমরা অস্বীকার করি না, কিন্তু তিনি আপনাব চিত্ত শুদ্ধি ও সংস্কারানুরূপ একটি বহুত্ব পথ করিয়া যা ইচ্ছা পারেন না। তিনি প্রাচীন বেদ বেদান্তাদিকে মূলপত্রন করিয়া অগমার মত সংস্থাপন করেন। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে তিনি বিষয় ভ্রমে পতিত হইয়াছিলেন। তিনি মনে করিয়াছিলেন, প্রাচীন ও নব্য উভয় দলকেই কৌশল ক্রমে আপনায় মতে লইয়া অতীত সাধন করিবেন। কিন্তু এক্ষণে যেকোন দেখা যাইতেছে, তাহারা স্পষ্ট বোধ হইতেছে তাঁ

হার সেই অতীত পথ কটকটীয়া হইয়াছে। প্রাচীন দল প্রচলিত প্রথা বিনষ্ট তাহাতে এখিল হইতেছে। আর ইংরাজীতে মুনিষিক্ত ব্যক্তিরা আমাদের আদর্শ না থাকিতে ক্রমশঃ ক্রমশঃ পরিবর্তন করিতেছেন। বরং একটি অধিকার হইবে, নব্য সম্প্রদায়ের কটকটীয়া লোক হইতে আদর্শ করিয়া এ দেশের উন্নতি প্রতিবন্ধক হইয়াছেন। "কাল ও সমাজের অবস্থা বুঝি। চল। এইমাত্র জীবাদিগের কাণ্ডার মূল দৃষ্টি হইয়াছে। কিন্তু আমরা কত কাল কালের প্রতীক্ষা করিয়া কাণ্ডার কাল কবে হইবে।

উপরে যেকোন ভবিষ্যৎ, তাঁহাদের অনেকে একপ অনুমান করিতে পারেন যে আমরা নব্য বলকে এই অনুমোদন করি। তেহি যে তাঁহারা অস্বীকারের দ্বারা কাল কাল যাবতীর আচার ব্যবহারাদির উচ্ছেদ করিয়া কৃতনবিধ আচার ব্যবহারাদি প্রচলিত করেন। একপ অনুমোদন করা আমাদের দেশের অভিপ্রেত নহে। উৎসাহের উত্তম করা অবিরোধের কায্য সম্ভব নহে। কিন্তু বর্তমান সমুদায়ের পরিবর্তন হইতে গেলে সমাজের বিপর্যয় হইবে। বর্তমানের রীতি সমাজিক মতবাহার চেষ্টা পাওয়া সম্ভব নহে। কিন্তু বিপর্যয় করিয়া হইবে সেই সকল রীতি পরিবর্তন হইবে না? পুরাতন হইলেই যে কতিপয় রীতি প্রথা হইল একপ নিষ্ঠাভাবসম্বন্ধ। তাহা হইক, আমাদের বর্তমান রীতি সমাজিক মতবাহার বর্তমান কালক্রম্য করিয়া পরিবর্তন হইবে, অথবা যথেষ্ট প্রতিক্রিয়া হইবে। বর্তমান সমাজের আচার ব্যবহারাদি পরিবর্তন করিতে হইবে। বর্তমান সমাজের আচার ব্যবহারাদি পরিবর্তন করিতে হইবে। বর্তমান সমাজের আচার ব্যবহারাদি পরিবর্তন করিতে হইবে।





সিদ্ধ হইয়া নগর প্রভৃতিতে প্রচারিত হইয়াছে।  
আমেরিকায় প্রচারিত হইয়াছে।  
এইসকল আদিতে প্রচারিত হইয়াছে।  
নগর পরিবর্তন করিতে পারেন, তাহা  
রা কোন কোন স্থানেই থাকিবেন এই কথা  
বিশেষরূপে অবহিত হন।

## বিবিধ সংবাদ।

৩ই আগস্ট সোমবার।

বোম্বাইনগরে মালমসেলীর অধিকারের  
মাল ১৪০ টাকার বিক্রীত হইতেছে। গত  
সপ্তাহ অপেক্ষা ২০ টাকা মূল্য বৃদ্ধি হইয়াছে।

পশুর প্রতি অত্যাচার নিবারণের  
কর্তব্যরূপে স্বতন্ত্র কার্য সম্পন্ন করিতে  
ছেন। তাহাদিগের দুই জন প্রতিমিথি সর্বসা  
অগ্রসহায় করিতেছেন কে কোথায় পশুর  
প্রতি অত্যাচার করে। তাহারা ইহার মধ্যে  
৩০০ গাড়িয়ানকে সারথান করিয়াছেন।

কারুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে, দোস্ত  
মহম্মদ স্বয়ং করায় সম্মেলনীয় হইয়াছে  
নগরুলতান জান পুনর্বার সন্ধির প্রস্তাব  
করেন। কিন্তু পুনর্বার তাহার প্রস্তাব অগ্রাহ্য  
হইয়াছে। মুলতান জান পারস্যাদিভিত্তি  
নিকটে এক দূত প্রেরণ করিয়াছেন।

বিশিষ্ট বিচার করেন তিনি জিরাজিকা  
রীর দলের অধিষ্ঠান হন, তাহার প্রধান কারণ  
এই, এক মহামতি লাহোর জনিকেল পরে  
লিখিয়াছেন, কোন ইউরোপীয় এডভেনশ্যার  
কোন ভৃত্যকেও প্রহার করিলে গিউস  
সাহেব (কলিকাতার প্রধান মাজিষ্ট্রেট)  
তাহার দণ্ড করেন। এদেশে কত কগুলি  
একজন ইউরোপীয় আছেন, তাহারা যেক  
পূর্বক এডভেনশ্যারিগকে প্রহার ও বধ করেন,  
কেন কিছু না বলে, এই তাহাদিগের ইচ্ছা।  
হিষ্টম সাহেব প্রকৃতি ইহার প্রতিবন্ধক বলি  
তাই তাহাদিগের বড় রাগ।

সকলসাইট প্রচার করিয়াছেন উত্তর প-  
শ্চিমাকলের স্তম্ভিক নির্মাণের প্রকার, যত্নে  
উৎকর্ষ আছে, তাহা কলিকাতার মজরিকিগের  
সহায়তায় করা যাইবে। তাহা করিয়া উত্তর  
প্রদেশে সন্মান প্রাপ্ত।

উত্তর পশ্চিমাকলে বসেন উত্তর পশ্চিমাকলে  
নে যে ভিত্তি ভাঙের কোম্পানি আছেন, তা  
হারা একবার হইবেন। বাহারী ভাঙের  
খাতিয়ে গমনাগমন করিবেন, তাহাদিগের  
নিকট হইতে অধিক টাকা লওয়া ও তাঁহা  
দিগকে অধিক কষ্ট দেওয়া ই কি তাহাদিগের  
একবার হইবার উদ্দেশ্য?

১. বেরাগালি খাঁর নিকটস্থ নদী উচ্চলিত  
হইয়া এই স্থান ভাঙিয়া বাইবার উপক্রম হই  
রাছে।

২. কর্ণাট নদীর অত্যন্ত জল বৃদ্ধি ওয়া  
তে তাহার উপস্থিত সেতুর একটি গিলা তর  
হইয়াছে।

৩. পলাবের লেকেরা হুতন মোট লটতে  
সমর্থ নহে তথায় শতকরা ৭৫ টাকা বাঁটা  
নিরা মোট তালাইতে হইতেছে।

৪. সিলীগেজেট বলেন কোর্ড নামক একজন  
ইউরোপীয় পূর্বে খররাবাদে একজন শিক্ষক  
ছিলেন। কোন অপরাধে গম্ভীর হওয়াতে  
তিনি কারাগারে গমন করেন এবং দুইবৎসর তা  
খার অনেক স্থানে অর্থ করেন। জেলোবাসে  
তাঁহার দুইবৎসর ও খৃষ্টীয় ধর্ম প্রকাশিত হওয়া  
তে কয়েক জন তাঁহাকে প্রহার করে। এই  
কলর কালে তিনি এক জনকে বধ করেন।  
তদ্রূপে শাসন কর্তা তাঁহাকে রুখ করিয়া  
পোসোয়ারে বিচারের জন্য প্রেরণ করিয়া  
ছেন।

পোসোয়ারে একগণ ওলাউটন কিংক  
শাস্তি হইয়াছে।

৬. লেপ টনট গহরি ভিৎ ভিৎ আলিসে  
কাগজ কলম প্রভৃতি প্রোণের কতকগুলি  
নিম্ন প্রকাশ করিয়াছেন।

৭. হাউস ওবলর্ড লর্ড কনিংহামের মৃত্যুতে  
শোক প্রকাশ করিয়াছেন।

৮. চর্ক মিসমরির সেক্রেটারি টে, ট্রান্স সা-  
হেব হিন্দু পেট্রী পত্রে লিখিয়াছেন তাইসন  
সাহেব তাহাৎ দিওয়ালার একজন ইচ্ছাক  
লাখি হাউসে মাই তাহাকে মনোযোগী ক  
বার কথা তিনি পরে তাহা তাহার মাজি  
করিয়াছিলেন। বাহা ওইসন সর্ক সোমার  
মিসমরি ও মাজিষ্ট্রেটের কর্তৃত্ব  
করিয়াছেন।

উত্তর পশ্চিমাকলে  
ককে ইনকবটালির  
বার মজরাকিরিগের  
এক এক হইবে।

১ ই আগস্ট  
কিরাজিবাসি টোমাসের  
পুত্রী আনুভূতি সকল প্রকার  
ইহাতে কারুতর্কের অধিক  
বুজি আছে। যেখান  
নত কনিষ্ঠের সত্য ও  
সত্য প্রচার করা।

২. বাজারের ও কারুতর্কের  
মি (কেহে অমলেকপুরী কোম্পানি)  
নিখের বাৎসরিক রিপোর্ট  
ছেন। তাহারা যে সকল  
তথ্য চতুঃপাশে  
যেই বিবেচনা  
হওয়া লাগে।  
কারে ও প্রচার  
এবং অধিক সংবাদ  
আবশ্যক।

কিনিক বলেন মজরাকিরি  
আদীরিগের বাৎসরিক  
চাখিয়াছেন। তাহাদিগের  
ট্রেস সেক্রেটারি  
করিয়াছেন। উক্ত পুত্র  
রোপীয়দিগকে ইহার  
অগ্রয়োণ করিয়াছেন।  
র আদৌপায়  
এডভেনশ্যারিগে  
না হন।

উক্তপক্ষে এক জন  
করিয়াছেন।  
ছোই আদৌপায়  
কেন মজরাকিরি  
উক্ত সাহেব  
এক বাজার  
করিয়াছেন।

উক্ত সাহেব  
আদৌপায়  
করিয়াছেন।  
করিয়াছেন।  
করিয়াছেন।



হেতুকে আশ্রয়দানের সহকারী সভাপতিত্ব  
করিতে নিয়োগ দিয়াছেন । ইংলিস্তানী  
সভাপতিত্ব করণঃ অতিশয় হইতেছিল ।

টাইমস্ অব ইন্ডিয়া বলেন কোলকাতায়  
একটি ইউরোপীয় জীলোক কর্তৃক সর্বদা দুঃখ  
করিতা তাহার স্বামী সহিত বিবাদ করিত ।  
একদা সে অত্যন্ত উত্তম হইল। এক শি  
কল দ্বারা অত্যন্ত করিত। নিয়মিত  
ইউরোপীয় জীলোকদিগের আর এই দোষ  
হোয়া যায় ।

কলিকাতা পল্লী আশ্রয় নিকটবর্তী স্থান সমু  
দে নেকড়িয়া ব্যাঘ্রের অতিশয় উৎপাত হই  
রাছে । কালিকালে ব্যাঘ্র অনেক শিশু সন্তান  
হত্যাকার হইতে লটরা গিয়াছে  
কলিকাতা বলেন একটি জীলোক আশ্রয়  
নিকে রক্ষা করিবার জন্য তাহাকে খা টর  
হিত বন্ধন করিয়া রাখেন । রাজিতে কলিকাতা  
হি অবশ্য করিয়া তিনি আগ্রিত হইয়া  
খিলেন এক নেকড়িয়া তাহার সন্তানকে  
মিজেছে । গোলযোগ করিতে ব্যাঘ্র পলায়ন  
করিল, কিন্তু শিশুটির আশ্রয় তাহা হই  
ছে ।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন উক্ত স্থানে  
কটি সর্বোৎকৃষ্ট কটগ্রাক বস্ত্র লইয়া যাওয়া  
হইবে । এক বস্ত্রিক তাহা উৎকৃষ্ট হইতে  
পাইতেছেন । পারিসের ন্যায় ভারতবর্ষেও  
কটগ্রাক হইতেছে ।

উক্তপত্র আরও বলেন আলাহাবাদ  
জেলার এক অসীমারের বাটতে অনেক  
লোক ও তলবার পাওয়া গিয়াছে । তদন্ত  
আলাহাবাদ ১০০০ টাকা উৎকোচ লইয়া অসীমার  
রুদ্ধে সজ্জা রাখিতে যেন । অস্ত্র সকল ছুটির  
মধ্যে মুকারিত ছিল । এক গরু তাহা বাহি  
র করিয়াছে । খানাদার ও অসীমার উভয়েরই  
বন্দ হইয়াছে । নিরস্ত করিয়া বিদ্রোহ নিবা  
রণের চেষ্টা হইয়া । অস্ত্র গবর্নমেন্টে  
দিত্তে এই প্রকার করিয়াছিলেন, তথাপি  
এই অস্ত্র গারিবালডি তদন্ত হুকুমদিগের  
সহায়তার অধীন সিংকে দ্রুত করেন ।

কলিকাতা টাইমস্ বলেন তথায় তদানন্ত  
কত কলহাতে একখানি আশ্রয় নাবিক সহিত  
কলহ হইয়াছে ।

উক্ত পত্র আরও বলেন কলহমেনে দস্য  
হস্তির হাঙ্গ হইয়াছে । রাজা তাহার নিবাস  
খ বিশেষ বন্দবান হইয়াছেন ।

উক্ত পত্রে লিখিয়াছেন রেজুনে মৎস্য  
কর হওয়াতে সকলে বিরক্ত হইয়াছে  
আশ্রয়দিগের গবর্নমেন্টেও সজায় ক করির  
ধীবরদিগের অগ্রিম হইয়াছেন ।

উক্ত পত্র আরও বলিয়াছেন তদন্ত  
ক কৌনমেন্টে মাজিষ্ট্রেটের প্রধান সরকারী  
সেনাপতি তদন্ত তদন্ত করিতে তাহা  
প্রধানতঃ নিচারায়ে সর্বাংশ করা হইয়াছে  
তথ্য কি ? বেহারের জেলদারোগা যুক্ত হইয়া  
ছেন । ইউরোপীয় বরা এককল দোষে প্রা  
মণ্ড পায় না তবে রখা কেন এত দূর দৌলী  
দিগকে আনিয়া সাধারণ খনাগার হইতে  
ব্যব কর, হয়

আমরা সমাচার হিন্দুস্থানী পত্রে একটি প্র  
স্তাব মর্শন করিয়া বিশেষ দুঃখিত হইলাম ।  
ইংলিস্তান আশ্রয়দার সভাকেনালি গিয়াছি  
লেন বলিয়া সমাচার হিন্দুস্থানী তাহাকে পণ্ড  
প্রতিশ্রুতি শব্দ দ্বারা কষ্ট করিয়াছেন । আশ্রি  
গের লগুনহিত সংবাদ দাতা বলেন এট  
সকল মর্শন করিয়া ইংলণ্ডের লোকে বিরক্ত  
হন, বস্ততঃ কষ্টতানীর সহিত কষ্ট তাহী  
হওয়া কোন মতেই উচিত নহে ।

ই অবশ্য দুখবার ।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার কবি  
তেছি ভারতবর্ষের সভা " তদন্তের উপর  
হাসুল হওয়া বিধেয় কি না এটানামের এক  
খণ্ড পুস্তক আশ্রয়দিগের নিকটে প্রেরণ করি  
য়াছেন । আশ্রয়দিগের তদন্তপূর্ব লেগ্টনেট  
গবর্নর ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টের অনুপ্রোধ  
পরন্ত হইয়া তদন্তের উপরে কর গ্রহণ ক  
রিবার সঙ্কল্প করিয়া ভারতবর্ষের সভাকে এই  
অনুরোধ করেন যে কর আশ্রয়দিগের এক  
জি সজ্জার নিয়ন্ত্রিত করিয়া যেন । ভারতব  
র্ষের সভা তাহার প্রস্তাবে লেখেন এই কর  
সংগ্রহের যে কোন উপায় অবলম্বন করা হইক  
ত হ। কোন ক্রমেই অভ্যাসের নির্মূল হইবে  
না । বিশেষতঃ একখানি চিরস্থায়ী কলোব  
নের প্রতি প্রতিশ্রুতি করা হইবে । অপর সকল  
শে ব্যবস্থাপনা আর জিওগ আর হয়

হলে এদেশে তদন্তের দ্বারা বিলাসের বস্ত্র  
উপর কর লওয়া অবিধেয় । মঙ্গলময়ী  
নেটে সভার প্রতিনিধিত্বই যুক্তি অগতঃ গ্রহ  
ণ করিয়া এই কর গ্রহণ প্রত্যাখ্যান করিতে  
হাছেন । বলদেশ ভারতবর্ষের সভার নিকটে  
এবিধের কণগ্রহণ সন্দেহ নাই ।

অন্য পূর্ব বাঙ্গালার রেইলওয়েতে রাণা  
বাট পঞ্চাঙ্গ বাঙ্গালীর নকট চন্দ্রিহাছে । আগাধি  
বুধবার কুড়িয়া পর্য্যন্ত হইবে । এটা অষ্টোবর  
অবধি সাধারণে এই গাড়িতে আরোহণ করি  
তে পারিবেন সন্দেহ নাই ।

টাইমস্ অব ইন্ডিয়া পুনঃ মঙ্গল ইন্ড  
প্রকাশ হইতে কিছু লিখিত হস্তান্তর  
উক্ত করিয়াছেন । ইন্ডপ্রকাশ বলেন পু  
রাতন মহারাষ্ট্রীয় রাজাদিগের দপ্তরে রাজকা  
বা, যুদ্ধ দৌতা প্রকৃতি কার্যসংক্রান্ত অনেক  
বাগদ পত্র আছে । সোম্বাট গবর্নমেন্টে তাহা  
খিনষ্ট করিতে আদেশ দিয়াছেন । আমরা  
ইন্ডপ্রকাশের সহিত এই অসত্য আশ্রয়  
প্রতিবাদ করিতেছি ।

দিল্লীগেজেটের কার্যসংক্রান্ত সংবাদাতা  
বলেন সুলতান জাম ও সরদার সানওজ  
খাঁ ফরা মঙ্গল রক্ষা করিবার জন্য তথায় উপ  
স্থিত হইয়াছেন । দোস্ত মহম্মদ হরাট পণ্ডিত  
অব করিবেন পণ করিয়াছেন ।

উক্ত পত্র প্রেরক আরও বলেন কতকগুলি  
লি তুর্কমান হিরাটের নিকটবর্তী একখানি  
গ্রাম চত্ব করিয়া অনেক জীলোক ও পুরুষকে  
ধৃত করিয়া লইয়া গিয়াছে । পারস্যদেশীয়  
সেনাপতি দুর্জয় বিরজা এই বন্দ্য আভিকে  
কোরাসান হইতে নির্মূল করিয়া যেন, তথা  
পি তাকাদিগের দৌরাত্ম্য দায়ম ।

রেজুনে ক্রনিকেল বলেন কলহমেনে ওবা  
ও পানের আবাদ করিলে বিস্তর লাভ হয় ।  
কিনিক বলেন সম্রাট নেপোলিয়ন লগুন  
নিপ প্রেরণম যুৎ মর্শনার্থ গমন করিবেন ।

অযোধ্যা গেজেটের এক জন পত্র প্রের  
ক লিখল। পল্লীতের মাজিষ্ট্রেটের একজি অ  
স্ত্র সজ্জারের দুর্ভাগ্য প্রদর্শন করিয়াছেন ।  
এই ব্যক্তি এক কালী তাড়া লইয়াছিলেন  
তাহাদিগের দুঃখ পার্থিবানি থাকতে এক  
জন যুৎ শিক গরুকে ধুসিয়া অপরকে পরিহার

পলাতক প্রাপ্যদের কথায় প্রতিবেদন । নিম্নের প্রাপ্য  
 মোঃ মাহমুদ হুসাইন পাটিলকে টের নিকট বাস  
 ন করাতক বাড়িতে ই স্থানিত । অতিশয় দুঃ-  
 খি হুসাইন কঠিনত পাতন না । সেই বা-  
 দ্বি অগত্যা কষ্ট দ্বারা আত্মাটি রক্ষা করে  
 গিয়েছিলেন । অপর ব্যক্তি জাহান পারভীন খ-  
 নকে আর এখানে স্থান কঠিনত না । পারভি-  
 না বাড়িতে টের দিকটে বাসিন । করাতক বাড়ি-  
 টেই তৎকথায় পূর্বাধিক নিচারাঙ্গের আ-  
 জাদু করিয়া অস্ত্রিহীন । করিবান তর প্রেরণ  
 করিলেন ।।। নিম্নে পূর্বা অস্ত্রবস্ত্র পারি-  
 ন হইয়াছে ।

হয়করা বলেন ২৪ পরগণার জমদার লালদেব  
লাহেব লক লাহেবের ঐকনিধি স্বাক্ষর প্রদা-  
নকর বিচারালয়ের এক জন বিচারপতি হই-  
রাছেন। লক লাহেব শীকারলজ ইংলণ্ডে  
গমন করিতেছেন। ২৪ পরগণার কালেক্টর  
রাইট লাহেব লালদেবের পক্ষে দিবা-  
জিত হইরাছেন। রাইট লাহেব আপনার ম-  
ফিল হস্ত স্বরণ কালেক্টরির ঐকনিধি কোরাণী  
কে আপনার লিখিত লইরা বাইতে পারি-  
বেন শু ?

উক্ত গল্পের আনন্দবিকার সংবাদ দাতা  
সেনাপতি বটলরের বিখ্যাত বোমবার কারণ  
প্রকাশ করিয়া দিরাছেন। নিউজপত্রের অ-  
নেক "সম্ভ্রান্ত" শ্রীলোক সর্ববয়েকের সেনা ও  
সেনাপতিবিষয়ের দ্বারা দুঃখ পূর্ণ দিরাছেন-  
ন। সেনাপতি বটলর এত বিবরণার্থ উক্ত বো-  
মবারের সকলকে এই কথা জানান যদি কোন  
শ্রীলোক একপ ব্যবহার করেন, তাঁহাকে বে-  
শ্যার দ্বারা আত্মা ক্ষেপ্তরা হইবে। সেনাপতি  
বটলর বিব্রোহিসেনাপতি বরগার্ডের প্রীকে  
হস্তে পাইয় ও তাঁহার প্রতি বখেট সম্মান  
প্রদর্শন করিরাছেন। ইহাতে সেনাপতি বট-  
লরের কোন দোষ দেখা যায়ইতেছে না।

চাকামিউন ভবন, বিচারালয় সমূহ  
সাপ্তাহিক কল্যাণবন্ধি ব্যৱস্থা এক ভিগাৰ মি-  
নিস্তাৰ।

|              |         |
|--------------|---------|
| सहस्र आवाजें | २. टाका |
| सहस्र आवाजें | १. टाका |
| सहस्र आवाजें | १       |
| सहस्र आवाजें | १०      |

কোনও এক দেশে বা কোনও এক জাতিতে  
কোনও এক জাতিতে বা কোনও এক দেশে  
কোনও এক জাতিতে বা কোনও এক দেশে  
কোনও এক জাতিতে বা কোনও এক দেশে  
কোনও এক জাতিতে বা কোনও এক দেশে

পাঠকবর্গের সমস্ত ব্যক্তিকে পারে, যেসি  
মহের নিকটে তিন জন পুণ্ডিত সিংধুদী দুই  
জন একত্রে বেগার খরিদাতে তাহাঙ্গিনের  
সহিত গ্রামবাসীগণের দালা হয়। তাহাতে  
এক ব্যক্তি হত ও অপর এক জন গুরুতর  
রূপে আহত হয়। তদন্ত্য তেপুটি দাঙ্গির্দেই  
সিংধুদীগণকে দণ্ডনীর স্থির করেন। কিন্তু  
জাহ আহত-প্রকার দুই বৎসর বিরাম নেন।  
আপোলকরিয়া প্রকার। বিলাসত হইতে বৃত্ত  
হইরাছে। এই প্রকার বিচারে যে আঙ্গি-  
শক্তি রক্ষা হইতেছে, এ কেবল পরমেশ্বরের  
কৃপা বলিতে হইবে।

ইংলিসমানের পেসোব্রারের সংবাদবাহক।  
বলেন যথার্থি : ১ম গণিত পঞ্চাবী সেনাদলের  
সহিত আত্মিহি জাতীয় করেক যাত্মির দান।  
হওয়ারতে উত্তর দণ্ডেরই করেক জন হত হই  
রাহে । পঞ্চাবের সেন্টনকে গবর্ণর আত্মি-  
হিগকে ঘোবী স্থির কারা। তাহাতিগের অগ্নি  
মান। করিরাহেন ।

বোম্বাইয়ের সুখিণ্ড পাবসী বৃত্ত কোম  
নর্দী নর্দানসর্দী-জবাল্লিয়ার স্মরণার্থ পান  
মীরা এক দিবস আপনাবিগের ব্যবসায় বহু  
রাখিরছিলেন। শীঘ্র তাঁহার স্মরণার্থ তাঁদা  
হইবে।

চীনদেশে ইউরোপীয় বাণিজ্যের সবিশেষ  
 উন্নতি হইতেছে। মাফেউয়ের অনেক ক্রয়  
 ইয়ংসিকিরাও নদী তটস্থ স্থানসমূহে বিজয়-  
 ত হইতেছে। চীনের অনেক লোক বাণিজ্য  
 প্রবৃত্ত হইতেছেন।

চীনদেশীয় গবর্নরকে আপনাবিষয়ে অ-  
ধীনস্থ ব্যবসায়ী কর্মচারিকে অধিকেন সেকল  
পরিচয়্যাপ করিতে আজ্ঞা দিয়াছেন । এবং ক-  
তি ইহা করিবেন তাঁহাকে পদচ্যুত করিয়া  
নিয়মকম হইতে হইবে । ২২

পঞ্চায়েতক্রমে হেঙ্গামির ডাচ বইতে  
 ল। নকুলারী কমিস্যনর কোর্টের  
 এড২ নব্বো গবর্ণমেন্টে, দিকটো

পাইবাহেব  
যাতি অত্যাচার  
চাকা পাইবাহেব  
কাশীপুরে  
ক। হ। ডি.  
হায়র  
আমের  
দীর আহেব

অসমের নুবে হুজুর  
কর্তার কথা জানিয়ে পাঠ্য  
কালেট্রিকের মোকদ্দম  
হাসিনের রাজ্য সংক্রান্ত  
এ বিষয়ে বিশেষ করে  
শ্রী

বাংলাদেশের মুক্তিযুদ্ধের ইতিহাসে এক গুরুত্বপূর্ণ  
 দ্বারা গমনাপ্রদায় হইয়াছিল। এই সময়কালে  
 হে। সে এক জন উদ্ভাবনের চিন্তা  
 করিয়াছিল। বিচারপতি হইয়াছিলেন।  
 লেন, নতুনবিধানের আইন প্রণয়ন  
 হইয়াছে। মন্ত্রিসভা তিনি তাঁহার  
 লেন, কিন্তু অভিযুক্তের গুরুত্বপূর্ণ  
 হইবে। কলিকাতার এই অংশ এই  
 পদ্ধতি আবশ্যিক।

नामपुत्र ३ वरनपुत्र ३  
आचार्य हाणिता हौताह ।

গবর্ণমেন্টে আজ্ঞা বিজ্ঞাপন  
 নিম্নকার হুকুমদ্বারা প্রাপ্ত  
 নিম্নকার যে ২০ টাকার করিয়া  
 তাহা এখন কার্যবিজ্ঞান  
 ১ টাকার অর্থ প্রাপ্ত  
 পাতিয়া ইহাও  
 মাই।

[illegible]



উক্ত পত্র আরও বলেন মণিপুরের রাজার জাতি তাঁহাকে পদচ্যুত করিবার অভি-  
 প্রায়ে সেনাপত্র প্রেরণ করেন, কিন্তু ইংরাজ গবর্ণ-  
 মেন্টের কয়েক জন সিপাহী তাঁহার সেই সু-  
 স্পর্শনোত্তম সকল হইতে সেরা নাই। মণিপুরের  
 আর এক জন মরদার কাছাকাছি হইতে সেনা-  
 পত্র প্রেরণ করিয়া রাজার বিরুদ্ধে যাত্রা করিবার  
 সংকল্প করিয়াছেন। সেনাপতি সার্কটান ও  
 বিন্দু বিদ্রোহ নিবারণের জন্য চতুর্দিকে  
 সূত্র সূত্র হাতিয়া করিতেছেন।

কেওর ইতিহাস লিখিত নতুন সত্য  
 পণ্ডিত-কৃষি বিজ্ঞানের বিশেষজ্ঞ

রিতে সংগ্রহ করিয়াছেন। সাওদালভার্ম  
নতী চা কর্তৃপক্ষের বর্ষিক বহন দেখে  
হইতেছে।

উক্ত পত্র এতদেবীয় পুলিশ সংশোধন  
সঙ্গে বলিয়াছেন 'বর্তমান হিন্দু স্থানিকগের'  
ন্যায় বাজালীয়া আঘাতের পরবর্ত্তে আঘাত  
না করিবেম ততদিন, পুলিশসংশোধনে তাঁ  
স্থানিকগের কোন উপকার হইবে না' ক্রমশঃ  
ই-উর বঙ্গের পাটকেল বন্দোবস্ত হইতেছে।

গবর্ণমেণ্ট আজ্ঞা করিয়াছেন চাক ও মুর-  
সিদাবাদ ব্যতিরিক্ত সকলের আর সকল  
স্থানে গভবৎসরে যে পরিমাণে টমকমট'ক  
লওয়া হইয়াছিল, তাহাই প্রচলিত থাকিবে,  
তাহার আর কোন পরিবর্ত্ত হইবে না। যদি  
একপ হয় এখন কোন আসেসর অন্যায়  
কর খার্য্য, করিলে, প্রোভাগের ডংকপাং  
গবর্ণমেণ্টের গোচর করা কর্তব্য।

১০ই আশ্বিন শুক্রবার।

আমরা একটি অতি শোচনীয় ঘটনার সং-  
বাদ প্রাপ্ত হইয়াছি। জিরানপুরের অন্তঃপা-  
তি থানা হরিপালের অধীনস্থ 'শামাখরা টবু'  
ঠপুর গ্রামের এক দ'রম স্ত্রী কলিকাতার  
কর্ম করে। তাহার স্ত্রী তাহার বাসগামে থাকি-  
ত। স্ত্রীলোকটি অতিশয় সুন্দরী ও অপ-  
বয়স্ক। তাহার তাত্ত্ব অতিভাবক ছিল না।  
তিনটি তরলেক্সির ঘুমা তাহাকে কুণখ গা-  
মিনী করিবার অনেক চেষ্টা পায়, কিন্তু  
কিছুতেই হৃতকাণ্য হইতে পারিল না।  
এক দিবস এই স্ত্রীলোক স্থান করিয়া রজন  
করিবার জন্য অপর এক বাড়িতে অগ্নি আ-  
নিতে গেল। সেই সুযোগে এই দুর্ভাগ্য যুব-  
কেরা তাহার গুণে গিয়া সুকারিত হইয়া রহি-  
ল। সে রক্তমাগারে অগ্নি রাখিয়া শয়ন গৃহে  
কোন প্রাণ আনিতে গেল। এই দুর্ভাগ্যেরা এই  
অবসরে তাহাকে ধরিয়া ও তাহার মুখ বন্ধ  
করিয়া, ঘুরবন্দা করিল। এই অত্যাচার কালেই  
তাহার প্রাণ বিরোধ হইল। যুবকেরা এই ব-  
টনা দেখিয়া ভীত হইয়া পলায়ন করিল।  
পরে তত্ত্বতা জরীদারের গমস্তা মণ্ডল ও চৌ-  
কিদারকে কিছু উৎকোচ দিয়া স্ত্রীলোকটির  
গলদেশে বন্ধ দিয়া, সে টবুস্থানে প্রাণত্যাগ  
করিয়াছে, এই অবসর ভুলিয়া গেল। হরিপা-

লের দারোগা ও উদ্বাহনের কথা মাজিষ্ট্রেটের  
নিকটে রিপোর্ট করিলেন। চারি দিনসের পর  
এই হৃত দেহ জিরানপুরে আনীত হইল। কিছু  
দিন পরে স্ত্রী আশ্রয় বাড়িতে আসিয়া  
তাহার জীর মৃত্যুর প্রকৃত কারণ জানি-  
তে পারিয়া জিরানপুরের মাজিষ্ট্রেটের নিকটে  
মালোশ করিল। মাজিষ্ট্রেট টবুস্থানের দারোগা  
গার উপর অত্যাচারের তার দিলেন। এই  
দারোগার বয়ে সমুদায় কাণ্ড প্রকাশিত হই-  
য়াছে। হরিপালের দারোগা, গমস্তা মণ্ডল ও  
চৌকিদার দৃত হইয়াছে, দুর্ভাগ্য যুবক এর গ-  
লায়ন করিয়াছে। এই সংবাদটি যদি সত্য হয়,  
পুলিশ রাখিয়া গবর্ণমেণ্টের রক্ষা ব্যয় স্বীকারে  
প্রয়োজন কি?

কিনিকের বোয়ালিয়ার সংবাদদাতা ব-  
লেন, উক্ত নগর গ্রাম পথার গর্তস্থ হইল।  
সতকারী বাগী সকল ও ওয়াট'নের সুবিখ্যাত  
'অট্টালিকা' বিনষ্টপ্রায় হইয়াছে। তত্ত্বতা সা-  
ধারণ পুস্তকালয় ভগ্ন হইয়াছে। সর্ব ভগ্ন  
প্রায় ৪১২ লক্ষ টাকার সম্পত্তি নষ্ট হইতে  
বসিয়াছে। এত টাকার সম্পত্তি গেল, পূর্বে  
একটি বাঁধ দিবার চেষ্টা করিলে কি এ সকল  
রক্ষা হইত না?

ইংলিশমান বলেন, দমদমার সেনা নিবির  
থাকিবে কি না এই বিষয়ের বিবেচনার্থ এক  
কমিগন বসিয়াছে। সর হিউ রোজ এই স্থান  
ভ্যাগ করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। বিক্রোহ  
কালে দমদমার যে সকল বারিক নির্মিত হই-  
য়াছে, তাহাতে দল সহস্র সেনা বহুতবে থাকি-  
তে পারে। গবর্ণমেণ্টের বিস্তরব্যয় হইয়া-  
ছে। দমদমা অসাম্যকর স্থানও নহে। তবে  
কি কারণে তাহা ভ্যাগ করিবার চেষ্টা হই-  
তেছে? গবর্ণমেণ্টের খনস্থানে কি নথি হই-  
য়াছে?

উক্ত পত্র আরও বলেন, পূর্বে বজালার  
রেইলওয়ে ষ্টেশনের নিকটে একটি বাজার হ-  
ইবে। গবর্ণমেণ্টে তদ্রিখিত আড়াই লক্ষ টাকা  
দিয়াছেন।

কলিকতার সিভিলিয়ান দুইটি বাসর  
আসিয়া অত্যন্ত উৎপাত করিতে করিতে  
ব্যক্তি পুলিশ কমিসনরের নিকটে এই বিষয়  
জানাই রাছেন। দুই প্রেসিডেন্ট হইয়াও

আবশ্যক না কি? পূর্বেই কি সাধনী  
হিন্দুগেট দুই মীরার 'খাতিয়া' ভেঙুটি  
কালেক্টরের নথি হারাইবার বিষয়ে কথা গাথি  
রাছেন, ইতিহাস রিকর্ডবার তাহা সম্পূর্ণ প্রমাণ  
স্বীকার করেন নাই, এক বাঁধে অস্বীকার  
করেন নাই। তিনি বলেন ভেঙুটি কালেক্টর  
বাহু দীমানা আভ্য (আমরা অবশ্যই তার  
চৌচরণ সিংহকে লক্ষ্য করিয়াছি। তাহা  
তাহার নিকট কথা আর্থনা করি) তাহা  
দোষী হইতে পারেন না।

সাহা হউক সাধারণে এখিয়ারে রিকর্ডের  
মতের অনুমোদন করিবেন না। আমরা পূর্ব  
কার কহিতেছি নথি হারাইবার কারণ  
জান করা আবশ্যক।

উক্তসম্পাদক মিসনারি ডাক্তার সাহেব  
অপরাধ লবু করিবার চেষ্টা হইয়াছে।  
নি বে চেষ্টা কলম পার প্রকার লবু হইল।  
উক্ত হউক চরণাখ্যাত বার। সন্দেহ  
করা যে মৌসমর ইহা কোন কমেই  
সম্মতন করিতে পারিলাম না।

১১ই আশ্বিন শনিবার।

সমাচার হিন্দুস্থানী বলেন, কলিকাতায়  
এক বেগমের বাড়িতে দুই জন স্ত্রী  
করিয়া ২০০০ টাকার দ্রব্য অপহরণ করিয়াছে।  
তাহারা অন্যাগিও হৃত হইয়া গিয়া।  
উক্ত পত্রে তিনটি চত্যাভাঙের বিষয়  
হইয়াছে। এক ব্যক্তি অপর এক ভাঙের  
করিয়া হৃত হইয়াছে। পত্রে নিকটস্থ এক জন  
হুসমান আপনার স্ত্রীকে হৃত করিয়া বৃত্ত হ-  
ইয়াছে। হরদোখাই গ্রামে এক জন পুলিশ  
কমর্টাবল আত্মহত্যা করিয়াছে।  
এত হত্যা কি অন্য হইয়া থাকে?

যদিপূর্বে গোলাবোলের লতাকার বগ্নাভে  
তহার এক রেজিমেন্ট সিপাহী এখিয়ার হই-  
য়াছে।

ইংলিশমান করণ করিয়াছেন বাহু কামে-  
প্রমোহন ঠাকুর বারিষ্টরের পরীকার উদী-  
হইয়া অকালোক্ত বিববিখ্যানেরে তারতম্য  
অহিনের অধ্যাপক হইয়াছেন।

স্মিত সিখিত মূল্যে গবর্ণমেণ্টের বাগিন  
বিক্রীত হইয়াছে।

১ টাকার সিকা . . . ১১০—১১১০



৪ টাকার কোম্পানির ... ১০৪৫/—১০৪৬/০  
৫ টাকার ... ১০৪৬/—১০৪৭/০  
৬ টাকার ... ১০৪৭/—১০৪৮/০

### ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা ।

১৯ এ. জুলাই শনিবার ।

গবর্নর জেনারেল সভাপতি : সন্ন্যাসীসি-  
রর হারিস্টন, অরফিন, প্রে, বিটজটইলিয়ম,  
ও কাউই সীয়েহ উপস্থিত ছিলেন ।

প্রধানমন্ত্রীর বিচারালয়ে কি, ও ইষ্টার্প  
মাসুল আদায় ও ১৮৫৯ অবের ৮ আইনের  
কর্তৃকটি খারজা সহিত বরিবার অভিপ্রায়ে  
হারিস্টন সাহেব এক বিল অর্পণ করিলেন ।  
এই বিলের মর্ম এই, সুপ্রিম ও সদর কোর্ট  
একত্রিত হইয়া প্রধানমন্ত্রীর বিচারালয় হইয়াছে  
কি না কিন্তইনসের জন্য সুপ্রিম কোর্টে অংশে পূর্বে  
কর্তৃকটি করা হইবে । সদরের অংশে ১০  
অবের ৩০ খারজাসারে ইষ্টার্প মাসুল আ  
দায় হইবে ।

এই বিলটিতে সন্যাসীসির হারিস্টন  
সহিত বিচারালয়কে সদরের ন্যায় ইষ্টা-  
রপ করিবে কিন্তইনসের মর্মে কদম্বা পূর্বে স  
দরে আনিতে পারিত না, তাহাতে ইষ্টার্প  
লাগিবে না । বিচারপতিরা ১৮৫৯ অবের  
৮ আইন অনুসারে আপনাসিগের রায় আ  
পনারা দিখিবেন । এক্ষণে আপনাদের কাল  
৩০ দিবস স্থির আছে কিন্ত প্রধানমন্ত্রীর বিচার-  
ালয় বোকা পূর্বে ইহার পরিবর্ত করিতে পা  
রিবেন ।

### এ জুন পর্যন্তের ইউরোপীয় সমাচার ।

১ গবর্নমেন্টের সেনারা জমশা  
দ করিতেছে । একটি যুদ্ধ হই-  
য়াছে, ১০০০ সৈন্য হারিয়াছে ব-  
রা বিজোভীসিগের সভা-  
আসিয়াছে ।  
২ প্রধানমন্ত্রীর পত্র প্রকাশ করিয়াছেন,  
৩ আমেরিকার যুদ্ধ উপা-  
সিতে ৩০০০ সৈ-  
ন্য ও সাদিগ-  
হাসতা বি-  
করিতেছেন ।

৩০০০ সৈন্য তুলসি মন্ড করা  
৪০০০ সৈন্য  
৫০০০ সৈন্য  
৬০০০ সৈন্য  
৭০০০ সৈন্য  
৮০০০ সৈন্য  
৯০০০ সৈন্য  
১০০০০ সৈন্য

ইটালির মন্ত্রিসভা তত্ত্বতা রাজাকে এক অ-  
স্বাভাবিক পত্র প্রদান করিয়া রোমনকে ইটালির  
রাজধানী করিবার অনুরোধ করেন । রাজা তা  
হাদিগের মতের অনুমোদন করিয়াছেন ।

সন্ন্যাসীসির ওয়াইটের সেক্সিকোব পবর্গ  
মেটের সহিত এক সন্ধি হয় । কিন্তু তাহাতে  
পূর্বেকার এক সন্ধির উল্লেখ থাকিতে ইংলণ্ডীয়  
গবর্নমেন্ট তাহা গ্রাহ্য করিতে অসম্মত হই-  
য়াছেন ।

২১এ জুন আবল কানিঙকে ওয়েস্ট মিনটের  
আবি বাঁটিতে সমাধিত করা হইয়াছে ।

সেনাপতি করে সেক্সিকোবিত করানী সৈ-  
ন্যের অধ্যক্ষ হইয়াছেন । করানীবা অনব্রজায়  
নগরে চটিয়া আসিয়া সহকারী সেনাপ জনা প্র-  
তীক করিতেছে । ১০,০০০ সহকারী সৈন্য, কে-  
হ কেহ অনব্রব বলেন ১৫,০০০ সৈন্য প্রেরিত  
হইবে ।

গ্রীক দেশীয় নব্রি সন্ন্যাসীর এক ঘোষণা পত্র জা-  
রা প্রকাশ করিয়াছেন তাহাচার যথার্থ রাজনিয়-  
মামুসারে নানিক কার্য নিরূপ করিবেন । বক-  
ক সেনা সংগ্রহ ও মন্ত্রিসভার প্রতিনিধি মনে-  
নীত করিবার জন্য নীচু করেক খানি বিল অর্প-  
ণ করা হইবে ।

কান্টন অনুবরণ ও আর করেক জন ইংরা-  
জ অফিসরকে আপনাসিগের সেনা কলের অ-  
ধ্যক্ষ করিবার জন্য চীন দেশীয় গবর্নমেন্ট যে  
প্রস্তাব করিয়াছেন, ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট তাহা  
বিবেচনা করিতেছেন ।

আমেরিকার গবর্নমেন্ট প্রকাশ করিয়াছেন  
সন্ন্যাসীসির রিচমণ্ডের নিকটে যে যুদ্ধ হইয়াছে তা-  
হাতে ৫৭৩৯ জন মৃত, আহত ও অনশ্য হই-  
য়াছে ।

ইহা এক প্রকার নিশ্চয় হইয়াছে রুশীয়ার  
গবর্নমেন্ট বিটর ইমানুইলকে ইটালির রা-  
জা বালিয়া আঁকার করিবেন ।

### গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাল্লাদেনসীর লেপেন্টে গবর্নরের  
আদেশানুসারী নিয়োগ ।

বাবু বেনীনাথ সোম মেসনীপুরের ছোঁ  
আদালতের কাজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান  
দর আমিনের কমতা পাইবেন ।

বাবু নবীনকৃষ্ণ পালিত মেহেবপুরের ছোঁ  
আদালতের কাজ হইয়া নদীয়া জেলার প্রধান  
দর আমিনের কমতা পাইবেন ।

নিম্ন লিখিত প্রধান সদর আমিনের। প্রথম  
শ্রেণীর প্রধান সদর আমিন হইবেন ।

ব.সুতারকনাথ সেন ২৪ পরগণা

বাবু জীনগ বিদ্যাবাগীশ ত্রিহত

২.সুজগন্ধক বন্দোপাধ্যায় ত্রিপুরার প্রধান  
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলার প্রথম শ্রেণীর  
অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

বাবু কৈলাচচন্দ্র দে ২৪ পরগণার প্রধান  
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলার মাজিষ্ট্রেটের  
সপক্ষে কমতা পাইবেন ।

জে. মকট, নাচের মাজিষ্ট্রেটের সদর আমিন  
১ সদর মুনসেফ হইবেন ।

বাবু কৃষ্ণলাল বন্দে পূর্ণাধার মুরসিদাবাদে  
সদর আমিন ও সদর মুনসেফ হইবেন ।

নিম্ন লিখিত মুনসেফের। প্রথম শ্রেণীর  
প্রতিটি হইয়াছেন ।

বাবু রসিকলাল ও বাবু গজাচরণ লসক,ব  
মৌলবী আলি আজিম বেহারের প্রধান  
সদর আমিন হইবেন ।

মৌলবী ইরাদত আলি সাহাবাদের প্রধান  
সদর আমিন হইবেন ।

বাবু শব্দচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় পশ্চিম বর্ডমানে  
প্রধান সদর আমিন হইবেন ।

মৌলবী ইসমাদ আলি ত্রিহতের প্রধান  
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলার প্রথম শ্রেণীর  
অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

মৌলবী ইএত হোসেন মংগের প্রধান  
সদর আমিন হইবেন ।

মৌলবী আনোদী আলি পূর্বরার প্রধান  
সদর আমিন হইবে ।

বাবু তালীকান্ত বিদ্যাসাগর বাকরণের  
প্রধান সদর আমিন হইবেন ।

বাবু গজাচরণ সোম রত্নপুরের প্রধান  
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলার প্রথম শ্রেণীর  
মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

বাবু চরণগৌরী বসু চট্টগ্রামের প্রধান  
সদর আমিন হইবেন ।

“मनुर्जनां मेकानिदिनाय-यार्चिः सरसती मुनिजहती न ह्येषां ।”

मासिक सूझा २ टोकरी  
मासिक पाझिअन २० टोकरी

পরিচ্ছেদে তরু প্রবর্তনকারিণি  
প্রতি আশান্বিতের বক্তব্য এই, তাঁ  
লোকসমাজে অপমানিতের প্রতি  
রক্ষা করিবার নিমিত্ত যে উপায় ন  
রম জ্ঞান করিয়াছেন, তাহা পরি



আমরা যুক্তকণ্ঠে কহিতেছি, তা  
নম ক্রমেই কৃতকার্য হইতে পা  
না। আমরা হিত উদ্দেশ্য করি।  
গকে একটি সহজ উপায় কহিয়া  
হ, তাঁহারা আত্মনোব লংশোধন  
সহজে কৃতার্বতা লাভে সমর্থ হই  
। তাঁহারা নিষ্ঠুর জানিবেন বিষয়  
ঃ আমরা তাঁহাদিগের অনিচ্ছাচরণে  
স্তম্ভি।



মার্কসের তত্ত্বাবধায় ও তা  
রতত্ত্বাবধায় হুলা।

চর বেধিতে পাওয়া যায় স্বার্থ  
কেরা আপনাদিগের কটকে পুঁথি  
উপায়, কারণরূপে গণনা করে,  
সময়ে তাহারা অন্ধ হইয়া থাকে,  
দিগের কটকের সময় উপস্থিত হই  
হারা যদি অতিমত আশ্রয় না পায়,  
ইলেই তাহাদিগের বাঁধতা ও কো  
রিসীমা থাকে না। আমরা মাঝে  
তত্ত্বাবধায়কে এই তাবাগম দেখি  
যখন প্রচুর পরিমাণে আমেরিকা  
হুলা আসিত, তখন তাঁহারা ভারত  
ব্যয়ে উদাসীন ছিলেন; ভারতব  
। উৎপাদন চেষ্টা করিলে ভারতব  
গম হার বিবৃত হইয়া আপনাদি  
আয়োজিত হইবে, এ কথা তখন  
মগের মনে উঠা হয় নাই। কিন্তু  
কটোলি। রুদ্র ও তুলা মণ্ড  
এখন ভারতের প্রতি তাহাদি  
বৃষ্টি নিপতিত হইয়াছে। তাহারা এত  
এ চেষ্টা পাইলে এখন তাহাদিগকে  
। কাতর হইতে হইত না। স্বার্থসন্ধ  
উপায় উপস্থিত না হইলে সমস্ত  
র ফলম বিধে প্রকৃতি জন্মেন, অ  
ইকানীকন প্রকৃতি দেখি। মার্কস  
কৃতকার্যদিগকে দূর্বৃত্ত কহা যাইত।  
ইমিত্ত আমরা মুক্তিও করিতেছি।  
গারা ভারতের নিমিত্ত আত্মহিত চেষ্টা

করিতেছেন বরুন, তাহাতে বারণ কি  
তাঁহারা স্বার্থের নিমিত্ত যে আনাদিগের  
অহিঃ চেষ্টা করিতেছেন তাহাতেই বরণ  
অধিতেছে। পাঠকবর্গের আরও থাকিবে  
পারে, পূর্বে মার্কসের তত্ত্বাবধায়  
তাঁহাদিগের অতিমতীভূত কলিকাতার  
বণিক সম্মান্য মার্কসের ২২তম শুল্ক  
কমাইবার চেষ্টা পান। লণ্ডনে কয়েক  
জন তত্ত্বাবধায়ের সর চার্লস উডের  
সহিত সাক্ষাৎ করিয়া বক্তব্য আমদানী  
কর উঠিয়া দিবার অনুরোধ করেন।  
সর চার্লস উড তত্ত্বাবধায় কহিয়াছেন,  
আজিও ভারতবর্ষের ব্যয় অপেক্ষা আর  
অধিক হয় নাই, অধিক হইয়াছে বলিয়া  
যে হিসাব দেওয়া হইয়াছে, সে ভ্রমমাত্র;  
অতএব এমন অবস্থার মাসুল রহিত করা  
সম্ভব নহে। অতএব তিনি বণিক গণের  
প্রার্থনা পরিপূরণ করিতে অসমর্থ হইলেন।

হাউস অব কমন্সেও মার্কসের প্রতি  
নিধির প্রস্তাব ক্রমে তুল প্রসঙ্গ লইয়া যৎ  
কালে তর্ক বিতর্ক হয়, তৎকালেও সর চার্ল  
লস উড যথার্থ রাজনীতিজ্ঞের ন্যায় প্রত্যা  
স্তর দান করিয়াছেন। তিনি বলেন তত্ত্বাব  
যবর্গ ভারতবর্ষ হইতে তুল আমদানাকাকী  
হইয়াছেন, অতএব ভারতবর্ষের গবর্নমেন্ট  
তাঁহাদিগের মনোরথ সিদ্ধির নিমিত্ত সবি  
শেষ যত্নবান হইয়াছেন, তুলার সুবিধার  
নিমিত্তই পাবলিক ওয়াকে বিস্তর ব্যয় করা  
হইতেছে। কিন্তু তুলার জন্ম স্থান করা  
অবিধেয়।

আমরা তত্ত্বাবধায়দিগের চুরাশা দর্শন  
করিয়া বিস্ময়বিষ্ট হইতেছি। তাঁহাদিগের  
অতি হইতেছে বলিয়া কি আনাদিগের  
গবর্নমেন্ট আয়ের একটি উৎকৃষ্ট উপায়  
ত্যাগ করিবেন? এ আর মেলেই তৎপূর  
গার্থ আবার সূতন আয়ের প্রয়োজন হই  
বে সন্দেহ নাই। অপর, রাস্তা ঘাট  
প্রভৃতির নিমিত্ত আনাদিগের নিকট হইতে  
অত্যাচারের হেতু কৃত সূতন কর গ্রহণ

করিতে হইবে! তত্ত্বাবধায় নিম্নপুণে  
যদিও ক্রমাৎ ক্রমে তুল কমাইবেন। ইহা কি  
কাম্য। স্বাভাবিকতা। ইহা কি আপন।  
দিগের কটু মূর করিবার নিমিত্ত পরকে  
কটু বিবার চেষ্টা করণ আনাদিগের গব  
র্নমেন্ট তাঁহাদিগের সুবিধার নিমিত্ত আনাদি  
দিগের নিকট হইতে কর গ্রহণ না করিয়া  
কি রাস্তা ঘাট প্রভৃতির নিমিত্ত ইংলণ্ড হ  
ইতে টাকা আনিবেন? ভারতবর্ষের সম্পত্তি  
ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টের সম্পত্তি, তাহাদি  
গের স্বতন্ত্র সম্পত্তি নাই। অতএব যদিও  
বারগণের আত্ম কল্যাণের ইচ্ছা থাকে, তাহা  
রা যত্ন কোম্পানি কইয়া রাস্তা ঘাট প্রভৃ  
তি বিধে ব্যয় করিয়া স্বকাব্য সাধন চেষ্টা  
করুন। ভারতবর্ষে আমদানী কর গৃহীত  
হওয়াতে তাহাদিগের অতি হইতেছে না।

সর চার্লস উড উল্লিখিত তত্ত্বাব  
গণের অসমত প্রার্থনার যে উত্তর দান  
করিয়াছেন, তাহাতে একটি ত্রুটি ল  
ক্ষিত হইতেছে। ভারতবর্ষের আর উৎ  
কৃষ্ট হয় নাই, অতএব তিনি বক্তব্য মাসুল  
রহিত করিতে পারেন না, এইকণ উত্তর  
না দিয়া এককালে তুল মুক্তি ধরিয়া তা  
হার উত্তর দেওয়া উচিত ছিল। সে মুক্তি  
এই, ইংলণ্ডের প্রাণি অথবা সম্রাট্য বি  
শেষের সুবিধার নিমিত্ত ভারতবর্ষের আর  
পরিভ্যাগ করা বিধেয় নহে। ইংলণ্ড হইতে  
আমদানী বক্তব্য মাসুল লওয়া হইতেছে  
অনুধাৎন করিয়া দেখিলে এদেশীয়দিগের  
কক্ষেই তাহা পতিত হইতেছে, অতএব সেই  
মাসুল রহিত হইলে এ দেশেরই সুবিধা,  
এ দেশীয়েরা মূলতঃ মূল্যে বঞ্চিত পাইবেন,  
তথাপি যে আমরা এত আপত্তি করিতেছি,  
তাঁহা কারণ এই, অসাক্ষ্য কর রহিত হই  
লেই আনাদিগের নিকট হইতে সাক্ষ্য স  
হজে কর গৃহীত হইবে সন্দেহ নাই, কিন্তু  
সাক্ষ্য সহজে বরণ গ্রহণ এ দেশের মিতা  
স্ত বিধিভিত্তি, বিধেয় অধিবাস বিধেয় কারণ  
এই, সাক্ষ্য সহজে করে আত্মাত্মিক অত্যা

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

অত্যাচার বিধে, প্রদেশীয় জমীদার  
কোমিটে বহু কাম করে।

“सर्वव्यापि त्रिविधमयम् ।”

যে রোগী জীবন হইয়া উঠে অথবা তাহার  
কিন্দা করাইলেন।

সত্যটি এখানে ইউরোপীয়দিগের  
অজ্ঞানতার অত্যন্ত প্রকাশ হইয়া উঠিয়াছে।  
ইহান্ন প্রতীকার চেষ্টাতেই সকলে বদ্ধ  
সমস্ত আছেন। সুতরাং আমাদের পক্ষ  
পক্ষের অসীমদায়কিতার পাপক্রিয়া ও অজ্ঞা  
তারের প্রতি কেহ বড় দৃষ্টিপাত করিতে  
ছেন না। উহা একদণ্ড একপ্রকার আচ্ছন্ন  
হইয়া আছে। মহাপ্রবীণ অব্যাহত হইলে  
কুম প্রবীণ তাহার নিকটে দীপ্তি পায় না।  
অতঃ পর ইউরোপীয়দিগের অজ্ঞানতার  
ক্রমে-ক্রমে আর সকল অজ্ঞানতারকে ঢাকি  
রা কেলিতেছে। কিন্তু পাঠকগণ! এক্ষণ  
অনুমান করিলেও না যে, এ দেশের পুরাণ  
পাণ্ডিত্য (অসীমদায়কিতা) সকলেই নাথুশীল  
হইরাছেন।

এক ব্যক্তি বর্ধমানের এক কবীদারের  
অত্যাচার হৃদয় লিখিয়া আমাদিগের  
নিকটে পাঠাইয়াছেন। আমরা উহা যথা  
স্থানে প্রকাশ করিলাম। পাঠকগণ। আ  
শঙ্করা কি মনে করিতেছেন, সহুদার বর্ধ  
মান জিলার যথা হইতে এই একটি সাত  
শত পুরুষ আবিষ্কৃত হইয়াছেন। তাহা  
মহা। এই যত্ন অনেক বড় পুরুষ উহা  
যে আছেন। জীবন মধ্যে একজন ই-কি  
অত্যাচার প্রকাশিত। এই যত্নে যত্ন  
বিশ্ব অত্যাচার সর্বত্র আবিষ্কৃত। অত্যা  
চারের বিরুদ্ধে।

কোন না। কিন্তু এখন অনেক জমিদার  
জমিদার, ভূস্বামী এই আইনের মত  
কিছু করেন। এজন্যকে বহুতর  
আইনের দ্বারা পর নাই পীড়ন করিয়া  
কেন। তবে বিদেশের মধ্যে এই হইয়াছে,  
যেহেতু জমিদারেরা সর্বসমক্ষে একান্ত  
পেই আত্মসংরক্ষণে প্রয়াস করিতেছেন,  
এজন্য আর সেটা বড় করেন না।

জমিদারদিগের মধ্যে আর একটি দল  
হইয়াছে, তাঁহারা বড় পাকা লোক !  
তাহারা কুকাব্য পরিণাক করিবার উদ্দেশ্যে  
শেখারিহের বিদ্যালয় ও চিকিৎসালয় প্রভৃতি স্থাপন করিয়া থাকেন । আমাদিগের  
রাজ্যে এখন বঙ্গের একটি সম্রাট হইতে  
জমিদারদিগের এই শিকারী হইয়াছে । এই  
সম্রাটের গোপনে মা করেন, এমন কুকর্ম  
নাহি, পরদারগমন উৎকোচ গ্রহণ ও কু  
কর্মতা করিয়া পরের সর্বস্ব হরণ প্রভৃতি  
কিছুতেই পরাধীন করেন, তাঁহাদিগের এই  
সকল কুকর্ম জীর্ণ করিবার মহৌষধ  
আছে । সে ঔষধ এই, গভীরতা ও নান্দ  
বলী গ্রহণ ।

অধীকারেরা কি তির্যকাল অবিরোধিত  
তরুণ এই যুগ অশান্তির করিবে? ইহার  
কি নিবারণের উপায় নাই? উপায়  
আছে। সে উপায় এই, অধ্যবসায় সহকারে  
রাজপুরুষদিগের অনুসন্ধান করিয়া কুক্রি  
য়া বাহির করিবার চেষ্টা এবং যৌথের  
মধ্য ও তৃতীয় শ্রেণীর লোক। মধ্য ও তৃতী  
য় শ্রেণীকে এক হইয়া অধীকারদিগের  
যাবতীয় দোষের বিষয় রাজপুরুষদিগের  
গোচর করিতে হইবে। অধীকারদিগের সহ  
যত্ন ব্যতিরেকে রাজপুরুষেরা যখন কুক্রিয়া  
বা কুক্রিয় পরিবেশ করে, তখনই দুর্ভাগ্য  
ক হয়। এগুলিকে কুক্রিয়াকারী হিসাবে  
হইরের সন্দেহ নাই। ত্রুটিপূর্ণ পদ্ধতি  
দিগের অধীকারপূর্ণ হইয়া যাইতে পারে  
কি অধীকারেরা কুক্রিয়াকারী হইলে  
কুক্রিয়াকারী হইয়া যাইতে পারে।

১. স্বাধীনতা  
 ২. ইংল্যান্ড  
 ৩. ফ্রান্স  
 ৪. জার্মানি  
 ৫. রাশিয়া  
 ৬. আমেরিকা  
 ৭. ব্রিটেন  
 ৮. স্পেন  
 ৯. ইতালি  
 ১০. গ্রীস  
 ১১. তুরস্ক  
 ১২. মিশর  
 ১৩. ইরান  
 ১৪. ইরাক  
 ১৫. সিরিয়া  
 ১৬. লেবানন  
 ১৭. জর্ডান  
 ১৮. ইসরাইল  
 ১৯. ইজিপ্ত  
 ২০. সৌদি আরব  
 ২১. কুয়েত  
 ২২. ওমান  
 ২৩. যুক্ত আরব আমিরাত  
 ২৪. মালদেব  
 ২৫. শ্রীলঙ্কা  
 ২৬. নেপাল  
 ২৭. ভুটান  
 ২৮. মঙ্গোলিয়া  
 ২৯. চীন  
 ৩০. জাপান  
 ৩১. কোরিয়া  
 ৩২. তাইওয়ান  
 ৩৩. হংকং  
 ৩৪. মাকায়  
 ৩৫. মালয়েশিয়া  
 ৩৬. সিঙ্গাপুর  
 ৩৭. থাইল্যান্ড  
 ৩৮. ব্রুনাই  
 ৩৯. কম্বোডিয়া  
 ৪০. লাওস  
 ৪১. মিয়ানমার  
 ৪২. ভিয়েতনাম  
 ৪৩. কম্বোডিয়া  
 ৪৪. লাওস  
 ৪৫. মিয়ানমার  
 ৪৬. ভিয়েতনাম  
 ৪৭. কম্বোডিয়া  
 ৪৮. লাওস  
 ৪৯. মিয়ানমার  
 ৫০. ভিয়েতনাম

১৯৫২ সালের কার্যক্রমঃ কোমিউনিস্ট  
 সহ সশস্ত্র বিপ্লবের সফলতাঃ

এবং ব্যক্তি যদি  
 যন্ত্র, সেই যন্ত্র ব্যক্তি  
 হতে পারেন। পরে  
 প্রকৃতির সহিত মিলিত  
 যে সমর্থ হয়।

আমাদিগের মতামত অনুযায়ী  
এক অংশে যেমন সৌভাগ্য লাগে  
অপর অংশে তাঁহাদিগের বিবর্ত  
আছে । তাঁহাদিগকে জীবিত  
ন্যায় অত্যাচারকারী ইত্যাদি  
গর্ব হ্রাস করিয়া দেওয়া

[illegible]



সদিগের মারি মরকনা ও জিকাঁই  
গের জীকিকা : মরকনা : মোকা জাহির  
রা : বাত : তল : করা : মরকনা : জাহির  
হইত জীকী ও মরকনা : মোকা : এই স  
ল : কাঁকা : জাহির : উই : মরকনা : এতারণা  
সিদ্ধি : আছে :

আরও আরও যে বেদের কথা কহি  
কিছু দিন হইল, এ প্রকার  
কাহার জী কামাবাদে আসিয়া  
বসিত করে এবং উক্ত তারিণীচরণ সর  
রু ও তাহার পরিজনগণকে আপনাদি  
গর জীকী সিদ্ধি করিবার যোগ্য পাত্র  
রিয়া উহাদিগের সহিত আনু  
বন্ধন। তারিণীচরণের বিশ্বাস  
নিমিত্ত বেদে নানা প্রকার কৌ  
ত লাগিল। প্রতারকের নিকট  
ছিল, সে তারিণীচরণের নিকটে  
রাখিল। এইরূপে বিশ্বাস পাত্র  
গকদিন সে এই কথা কহিল যে  
একপ কুমতা আছে, সে কপার  
না কপিয়া দিতে পারে। ওদিগে  
র জী তারিণীচরণের জীকী নিকট  
হাদিগের আশ্রয় লক্ষী আছে  
ই লক্ষী তারিণীচরণের জীকে  
ব।

দিবার ও কপার টাকা সোনা  
দিন দ্বির হইল। নিম্নপিত  
বদিনী তারিণীচরণের জীকী  
রা কহিল, সে লক্ষী আনিবে,  
যত্ন পবিধান ও অলঙ্কার  
রিয়া লক্ষী আনা হইবে না,  
সকলকে সম্মত ও কৃতোপ  
ধাকিতে হইবে। অনন্তর, তা  
জী একখানি মৃতন বশ আ  
দাপনার অঙ্গে ও কন্যার অঙ্গে  
গার ছিল, তাহা খুলিয়া বেদি  
র। ও দিকে তারিণীচরণ বপা  
পাইবার সোভে এবং লুচ  
হরিয়া ১০০—১২৫ টাকা মুটা

ইয়া আনিবেন। সারংকান উপস্থিত হইলে  
তারিণীচরণ টা : ১ : গুলি পুটলি বাধিয়া  
লইয়া নির্দিষ্ট স্থানে গমন করিলেন, প্রতী  
রকও তথার আসিয়া উপস্থিত হইল।  
কথা বার্তা হইতে লাগিল। এদিকে বেদি  
নী মৃতন বশ ও তারিণীচরণের গৃহ হইতে  
আনীত অলঙ্কার পরিধান করিয়া লক্ষী  
লইয়া তারিণীচরণের গৃহাভিমুখে গমন  
করিয়া। কামরাবাস মাতলা রেলওয়ের  
ধারে। নিম্ন পথের উপরেই তারিণীচরণের  
একখানি দোকান আছে। সেই দোকানে  
আসিয়াই এই সকল কাণ্ড হইতোছিল,  
এমন সময়ে গাড়ি আসিয়া উপস্থিত হইল।  
সেই গোলযোগের সময় আপনার মনোরথ  
সিদ্ধির উত্তম অবসর বিবেচনা করিয়া প্র  
তারক টাকা গুলি চাহিয়া লইল এবং  
সেই গোলযোগে সরিয়া পড়িল। তারিণী  
চরণ মনে করিলেন, যদি সে তাহার গৃহের  
দিকে গিয়া থাকে, তাড়াতাড়ি সেই দিকে  
গেলেন, গিয়া দেখিলেন, বেদে ও বেদিনী  
নাই। একে বৃদ্ধ বয়স, তাহাতে সমস্ত দিন  
উপবাস, আশ্রয়ভঙ্গ, কড়ি, এবং জী ও  
কন্যার বৈধব্য দশা সূচক রিক্ত হস্ত দর্শন  
এই গুলি তারিণীচরণের হৃদয়ে শল্যের  
ম্যার খাখা জমাইতে লাগিল। সপরিবা  
রে হা হতোহ্মি করিতে লাগিলেন।

অজ্ঞ, মোতাজ, অবিস্মৃদ্ধধর্ম, লঘু  
চৈতন্য ব্যক্তিদিগকে এইরূপ প্রতারণা ক  
রিয়া প্রবঞ্চকেরা যে কৃতকাব্য হয়, তাহা  
আমাদিগের বিশ্ববাবু হইতেছে না, বিশ্ব  
য়ের বিশ্ব এই যে চুরী, জুরাচুরী, প্রতারণা  
প্রকৃতি বেদের উদ্ভুলনকারী নীতিসম্পন্ন  
অরঙ্গস রাজার আধিকার মধ্যে কৃতজীবী  
প্রবঞ্চকেরা নির্বিঘ্নে প্রতারণা করিয়া  
কৃতকাব্য হইতেছে অথচ গণবর্জিত, ইহার  
প্রতি দৃষ্টি করিতেছেন না। বেদে ও  
কান প্রকৃতি যে সকল কামাতি, বিদ্যাময়  
হাম ও নিয়ত জীবিত নাই, তাহাদিগের  
বিষয়ে একটা বিশেষ আশীর্বাদ প্রার্থনা

সেই আইন দ্বারা এই নিয়ম করিতে হইবে  
তাহারা মান্য স্থান অধিকারী না হইয়া  
এক স্থানে দ্বির হইয়া থাকে এবং কৃতকাব্য  
প্রকৃতি হইয়া জীবিকা অর্জনের চেষ্টা  
পার। তাহার কৃতকাব্য কাব্য রত হইলে  
কেবল যে তাহাদিগেরই জ্যেষ্ঠত্ব হইবে  
একপ মতে, মনুষ্য মাতেরই কৃতকাব্য বদে  
শের জীবিত সাধন বিষয়ে সহায়তার আব  
শ্যকতা আছে, তাহাও সম্পাদিত হইবে।

সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, বেদে  
ও কান প্রকৃতি এক এক উদাসীন গ্রামে  
গিয়া মধ্যে মধ্যে বাস করে, কিছু দিন  
থাকিয়া তথা হইতে প্রস্থান করে। একপ  
বাসপ্রথা অতিশয় মন্দ। সেই সেই গ্রামে  
র প্রতি তাহাদিগের যত্ন ও অনুরাগ থাকে  
না, গ্রামের লুতই হউক আর অন্ততই হ  
উক, তাহাতে তাহাদিগের হর্ববিবাহ নাই,  
গ্রামের লোকের সহিত আত্মীয়তা অথবা  
সৌহার্দ্য হয় না। একপ অবস্থার তাহাদি  
গের হইতে সেই সেই গ্রামের অধিক হই  
বার কি সমধিক সম্ভাবনা নাই। কোন কা  
রণে যদি গ্রামবাসিনদের সহিত তাহাদি  
গের বিরোধ হয়, তাহারা নির্ভয় ও নির্দয়  
হইয়া দারুণ বৈরনির্ধাতন করিতে পারে।  
তাহাদিগের দ্বারা চৌর্য্য দস্যুতা প্রকৃ  
তি কুক্রিয়ার অনুষ্ঠান অসম্ভাবিত ও বোধ  
হইতেছে না। তাহারা নিষ্কর্মা সুতরাং  
তাহাদিগের কৃকর্মে অধিকতর অনুরাগ জ  
মিবারই বিলম্ব সম্ভাবনা। বিশেষতঃ প  
কি বধের অভ্যাস দ্বারা তাহাদিগের বিল  
ম্ব ধনুঃ নিক্ষেপ হইয়া থাকে। বাহা হউক  
পরিশেষে আমরা পুনরায় অনুরোধ  
করি। গবর্ণমেন্ট একটা বিশেষ  
করি। এই সকল ব্যক্তির মান্য স্থান অধিক  
নিবেদন করিয়া দি। আপাততঃ তারতক  
বে : জাহির : পরিমাণে ডুল উৎপাদনের  
আয়োজন হইয়াছে, এই সকল ব্যক্তিকে  
এই ক্রিয়াকর্ম নিয়োজিত করান,

৩৪। ছোট আদালত সংক্রান্ত দুই  
নিষ্পত্তির মোকদ্দমার জন্য সাহেবের নি  
আপীল তির আবি আপীল নং ১৮ এবং  
মোকদ্দমাসমূহে দুইজন কবী প্রমাণ এই  
নিষ্পত্তি করিলে জজ সাহেব আদালত  
অগ্রাহ্য করিয়া নিষ্পত্তি করিলেন ১৮/১১/৩১



একটি বসন্ত  
আমি আছি শুধু

सम्मानित भक्तानाम् ।

१. अरुणोदयः सूर्योदयः, उत्तरार्धः रात्रिः

কিছুদিন ইহল সোমপুকারা নামক লিঙ্গেশ্বর  
 ঈশ্বর গমনের দিনটি প্রতিবৎসক লিঙ্গেশ্বর  
 হয়। তদ্বাচ্যে স্থিতিয়তি (কতক লিঙ্গেশ্বর ঈশ্বর  
 গমনে বিলম্ব অসুবিধা আছে কিছু অর্থসম্ভতি  
 নিরূহে কৃতকার্য হইতে পারিতেছেন না) অর্থাৎ  
 লিঙ্গেশ্বর গমনে ও স্থাখাবত। যেসকল ব্যক্তি অর্থ  
 বতে ঈশ্বর গমন বাসনা পূর্ণ করিতে পারিতে  
 ন, তাহা হইলেও অর্থ প্রাপ্তির উপায় কাবর।  
 দিবান একটা অবসর উপস্থিত হইয়াছে। সে এই  
 কাল ও ক্ষেত্রে যে টাকা, সংগৃহীত হইয়াছে, এদে-  
 খীয়েই তাহা 'অর্থ' আঁব কিছু কিছু টাকা দিন  
 ৩০ পাঠাইয়া দেবের অর্থ সংগৃহীত টাকা  
 হইবে। একই ক্রিয়া একটা কণ্ড কাঁরা হউক  
 ১০ মন্ত প্রাপ্তি দিয়াই বলা হইল ও যাইবে  
 অর্থের ১০ মন্ত, কণ্ড হইতে পাঠাইয়া পাথের  
 ১০ মন্ত, ১০ মন্ত, ১০ মন্ত, ১০ মন্ত, ১০ মন্ত  
 পাঠাইয়া ১০ মন্ত পাঠাইয়া দেওয়া হউক,  
 ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত  
 পাঠাইয়া ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত  
 ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত ১০ মন্ত

କଣ୍ଠ ୨ - ଲିପିକ ତାହା ସାଞ୍ଜେ ଖୁବ୍ ଘଟଣା ଶେଷ ହେବା  
 ସେହି ୨୨ ଲିପିକର ଲିପିକ ଶେଷ ହେବା ପରେ ଆମର ଲିପିକ  
 ସାହାଯ୍ୟରେ ବିଭାଜନ ହେବା ପାଇଁ ଆମେ ଲିପିକ  
 ଆମେ ଲିପିକ ତାହା ।

টি মাজিষ্ট্রেটেরা অত্যাচার করিতেছেন, তখন মুনসেফদের কিছু না করা ভাল দেখায় না।

হিন্দু পেট্রিওট বলেন, ভারতবর্ষে লে. ওয়ে সোসাইটি বহুল পুরের বেণুগণের নি-  
বৃত্তি হইতে কোটি টাকা কর্তৃক কবিত্তেছেন। প্র-  
তি অংশ ২০০ টাকা নিশ্চিত হইয়াছে।  
গবর্ণমেণ্টে শতকরা ৫, টাকা মূল পুর্নাইয়া  
নিবেশ অধীকার করিয়াছেন।

উক্ত পত্র প্রবণ করিয়াছেন, ২৪ পরগণার  
প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ওয়ার্ড সাহেব তদন্ত  
প্রতিনিধি কালেক্টরের কার্যভার গ্রহণ হও-  
য়াতে গবর্ণমেণ্টের নিকট একজন আইকে না-  
মাজিষ্ট্রেট চাহিয়াছিলেন কিন্তু গবর্ণমেণ্টে উত্তর  
দিয়াছেন যে তাহার অধীনে একজন অতি  
উপযুক্ত ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট আছেন, তাহা-  
হারাই কর্ম নিৰ্বাহ হইবেক। লেপ্টেনেন্ট গ-  
বর্ণর কোলবি আবদুল লতিফকে লক্ষ্য করিয়া  
এ কথা কহিয়াছেন। আবদুল লতিফ এই উপ-  
যুক্ত লোকই বটে।

উক্ত পত্র মেনিরের ছোট আদালতের  
লিঙ্গাম সাহেবের অবিচারের পুনরাব্রুতি  
বাদ করিয়াছেন। এই আদালতের বিপরীত  
কার্য করিয়া লোকের বাস্তবিক জীবন বহু  
লক্ষ বিক্ষুব্ধ করিতেছেন। প্রায় একশত  
প্রজা কেবল যে গো মহিলা লাক্ষ্য প্রভৃতি  
হইতে বঞ্চিত হইয়াছে তাহা মতে তাহা-  
দিগকে স্থান ভাগ করিতেও হইয়াছে।  
এই বিচারকের কাণ্ডের প্রতি যদি গবর্ণমেণ্টে  
অবিলম্বে বিশেষ ধরণে মনোযোগী না হন  
তাহা হইলে মহান অনর্থ ঘটবে সন্দেহ  
নাই।

পশ্চিমবঙ্গের এক জন পত্র প্রেরক কলিকা-  
তার, বাহুবাজারের লোকদিগের অসুখান  
প্রতি ও লাক্ষ্য মোঘের উল্লেখ করিয়া আ-  
লোচন করিয়াছেন। তিনি বলেন রাজধানীর  
এ পলীতে সচরিত্র ও রতবিন্য লোক প্রা-  
প্তিও বায় না। রতবিন্য ন হইত সচরিত্র  
স্বাধীন রাজধানীতে ক্রমশঃ বিরল হইয়া আ-  
সিতেছেন।

পাঠকগণের অরণ থাকিতে পারে লেপ-  
ট জাফর নামে যেব্যক্তি আপন খানসাবা-

কে চোর সন্দেহ করিয়া গাছে বাধিয়া বহু  
কাল অপর দৃষ্ট দ্বারা গুরুতর প্রহার করিয়া।  
ছিলেন, কোর্ট মারসলে তাহার বিচার হইবে।  
কোর্ট মারসলে বিচারের অসম্মতি হওয়াতে  
দুটি লাঠি হইবে। এক, অপরাধকে অগ্রিম  
কোর্টে আনিতে গবর্ণমেণ্টের অনেক ব্যয়  
হইত তাহা বাঁচিবে। দ্বিতীয়, কসাইটোলার  
মহোদয়েরা সেখানে বাইতে পরিবেন না।

কিনিক বলেন, আটলাক উইলসন সাহে-  
ব কলিকাতা পুলিশে বেগাম সাহেবের প্রতি-  
নিধি হইবেন এবং মুনসের সাহেবের অসম্মতি-  
তি কাল পর্যন্ত বেগাম সাহেব ছোট আদা-  
লতে তাহার কার্য নিৰ্বাহ করিবেন।

লাহোর ক্রমিকেল সম্পাদক বলেন, কলি-  
নগর দোস্তমহম্মদের হস্তে পড়ত হইয়াছে।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন, গোসোয়া-  
রে এলাউটার প্রাচুর্য হইয়াছে, ইউরো-  
পীয় সেনাদিগকে ইতস্ততঃ ঘেরণ করা হই-  
য়াছে।

আই. গবেষ্ট সম্পাদক বলেন, রেইল  
ওয়ের গাড়িতে এক জন আফিসর এক জন  
স্ত্রীলোককে অপমান করিয়াছে বলিয়া বে মন  
রন উঠিয়াছিল তাহা মিথ্যা। এক জন গার্ড  
এই কর্ম করিয়াছিল তাহার শাস্তি হইয়াছে।  
যিনি এমন সচরিত্র ব্যক্তিকে নাচনী করিয়া  
গাড়ীর পদ দিয়াছিলেন, তাহাকে অন্যবাদ  
দিতে হয়।

ডিক্রুজ নামে এক ব্যক্তি আর এক ব্য-  
ক্তিকে এক হঠকভাবে চক্রে আঘাত করিয়া  
ছিল বলিয়া তাহার পুলিশে ৩০ টাকা জরি-  
মানা হইয়াছে। চক্রে মূল্য কি দুই টাকার  
অধিক নয়।

১৪ই আশ্বিন মঙ্গলবার।

উক্ত পশ্চিমবঙ্গের সংবাদ পত্রে প্রকাশ হ-  
ইয়াছে ষ্ট্রিট কোড নামে এক জন ইউরো-  
পীয় রাওসাংহের টকাল হইয়াছেন। অ-  
নেকে তাঁহার টকাল হইতে চাছেন নাই, ইটি  
কোড টকাল হওয়াতে ঐরুখিকারী সনের  
কেহ কেহ তাহার উপর কুপিত হইয়াছেন।  
আত্মপক্ষ রক্ষার বতপ্রকার উপায় আছে,  
অপরাধী ব্যক্তিকে বিচার কালে সে সকল  
হইতে বঞ্চিত করা বিবেচনায়, এ নিয়মটি

আমাদিগের ঐরুখিকারীরা কখনো

আলাহাবাদ মেজেষ্ট বেলের সাহেব  
যে অদ্যাপিও ঐরুখিক অদ্যেব :  
ছুটানে অবস্থিতি করিতেছেন। অদ্য  
সাহেব " লামো : পাইয়াছেন সন্দেহ নাই।

কিনিক বলেন, উক্তব্যার করণ  
হইয়াছে। বিবাহ করাতে তথার গোলাবোল  
উপস্থিত হইয়াছে। ৪৩ পমিত এতদেব  
সেনাদল তথার প্রেরিত হইয়াছে। এই সকল  
কৃত্রিম যুদ্ধে নিরস্তর ব্যয় হইতে লাগিল।  
কোন ব্যক্তি এত ব্যয় চিরকাল দিয়া  
ঠিবেক। ত রতমদের ধনাগার কি অধিক।

বোম্বাইয়ের ব্যবস্থাপক সভা এই প্রজা-  
ব করিয়াছেন যে ব্যক্তির প্রতি কর্তন পাই-  
এমসহ কারাবাসের আদেশ হইবে তাহার  
হস্তের ধপে লৌহশৃঙ্খলে বদ্ধ রাখিতে  
হইবে, একপ নিষেধ করা মাতাঙ্গত মর শৃঙ্খ-  
লে বদ্ধ রাখা আর না রাখার তার মাজিষ্ট্রে-  
ট দিগের উপরে দেওয়াই কর্তব্য। তাহার  
বিবেচনা করিয়া বাহাকে অধিক অপরাধী  
বোধ করিবেন তাহাকে শৃঙ্খলে বদ্ধ রাখিবেন।

টাইমস অব ইন্ডিয়া বলেন জিহাদুর  
বাজার জ্যোতির্বেতা জন আলান, আই  
সাহেব ইংলণ্ডীয় রয়াল সোসাইটি হইতে  
কিধের বেতাল পাইয়াছেন। কিন্তু সাহেব  
বিখ্যাত জ্যোতির্বেতাদিগের শ্রুতকার্য  
এক কণ্ড প্রাথরা বান। রাউল সাহেব কোন  
হুতন আবিষ্কার করিতে এই বেতাল পাই-  
য়াছেন। জিহাদুর রাজার জ্যোতির্বিদ্যার  
সবিশেষ অমুরাগ আছে।

হুইটেড ওয়েল নামক এক জন কয়েদী  
হরিণবাসী হইতে পলায়ন করে, উইলিয়ম  
টুকলো তাহাকে ধুকাইয়া রাখে, তাহার  
উত্তরে প্রথমতম বিচারালয়ের সেনিগনে  
সমর্পিত হইয়াছে। এইনিমিত্ত আমাদিগের  
শাস্তিকারেরা পাপীর সংসর্গ করিতে নিষেধ  
করিয়াছেন।

২৮  
৬৬ টাকা নিউস বলেন, ২৪এ জুলাই চুর্ত  
হত্যাকারী হিলি বাপ্পীর জাহাজে কলিকা-  
তার প্রেরিত হইয়াছে। টাকা নিউস ৫ হত  
ভাগ্য নির্ভর ছিল, এই উপ লিখিয়া তাহার  
সন্ধান রক্ষা করিয়াছেন। ঐরুখিকারী



করা কর্তব্য, সন্দেহ কি? কিন্তু কাকি নিউস  
এই গল্পের লেখক খরিয়। অর্থে বাইতে চা  
হিভেছেন না ত? ১১

উক্ত পত্র আরো বলেন তদ্রূপে আজ আ  
বর ক্রয়ি গায়েব সম্প্রতি একাধীন হঠাৎ সর  
আলার বিচারালয় দর্শন করিতে যান। কাজ  
ইউক না ইউক জজের বে এমন সুমতি, ইহা  
ও আফাদের বিষয়।

১৫ই আশ্বিন বুধবার।

বন্দোবস্তের অন্তঃপাতী সকলি ইউক  
এক ব্যক্তি আমাদিগের নিকটে লিখিয়া পা  
ঠাইয়াছেন, ঐ গ্রামবাসী জবদার কীবুক  
যারু হরিশ্চন্দ্র যার চৌধুরী তথায় একটি বা  
লিকা বিদ্যালয় পুনঃ প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন।  
আমরা জানি যে যে কাণ্ড দ্বারা প্রগ্রামের  
সম্মিলন উন্নতি হয়, সেই সেই কার্যে হরিশ  
যারু বিলম্বন বর ও অগ্রগ আচে।

বকরুলের বিদ্যালয় সংক্রান্ত কয়েকখানি  
পত্র আমাদিগের হস্তগত হইয়াছে। তাঁদের  
অপত্তা প্রযুক্ত সেগুলি প্রচারিত করিতে  
পারিলাম না। সেই সকল পত্র পাঠ করিয়া  
তাৎপর্য পর্যালোচনা করিলে ইনস্পেক্টর ও  
ডেপুটি ইনস্পেক্টরেরা তদ্বাবধান বিষয়ে নি  
তান্ত লখাদর, ইহাই স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়।  
নিককেরা বিদ্যালয়ে বেকামত ব্যবহার ক  
রেন। পাঠেবও নিয়ম নাই, সময়েরও নিয়ম  
নাই। তদ্বাবধান না থাকিলে একপ হওয়া  
অসম্ভাবিত নহে। অল্প বেতন পান বলিয়া  
কি ইনস্পেক্টর ও ডেপুটি ইনস্পেক্টরদিগের  
কাজে গা লাগে না?

আমরা একখানি পত্র পাইয়াছি, তাৎপা  
ঠে জানা গেল, হাবড়া জিয়ার অন্তঃপাতী  
বহুখাটি প্রভৃতি কয়েকটি গ্রামে সর্পাঘাতে  
মৃত ব্যক্তির প্রাণ বিয়োগ হইয়াছে। পল্লী  
গ্রামের রাস্তা ঘাট তলে মম বলিয়াই গ্রীষ্ম  
ও বর্ষাকালে সর্প ভয় হয়। গ্রামস্থ ভোগেন্দ্র  
চাণা করিয়া যদি রাস্তা ঘাট পরিষ্কার রাখেন  
অকালে কালহস্তে পতিত হইতে হয় না।

এত দিনের পর ভারতবর্ষীয় যুদ্ধ প্রা  
চীন সংখ্যা কামান হইতেছে। বোম্বাই গবর্ন  
মেন্ট সম্প্রতি অনেক জাহাজ বিক্রয় করিবার  
আজ্ঞা দিয়াছেন। আপাততঃ ইহার দ্বারা

বার সংক্ষেপ হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু আ  
মরা দিবা চক্ষে দেখিতেছি - ইংল্যান্ডে  
ভারতবর্ষীয় সেনাদলের ৩ ন্যায় বে সে ৬নে  
খা কিয়ট কয়েক খানি রাজকীয় জাহাজ না  
রতবর্ষের খনাগার হইতে বার মটবে

আমাদিগের পুলিশের কি কখনই উন্নত  
হইবে না? পোর্ট মার্টির জেনরল প্রকাশ  
দিয়াছেন, বোম্বাই প্রেসিডেন্সি তক ও নগদ  
নামক স্থানের মধ্যে তদ্রূপে ডাক দুট হই  
য়াছে।

নিউ জিলাও হইতে সংবাদ আসিয়াছে  
ওটেগোর বন বনির কাজ নীতাদিত্য প্রযুক্ত  
৬ সময়ে ৩ দিনে নীতের প্রাক্তর্ভাব হওয়া  
ছে। বন্ধ হইয়াছে। তদ্রূপে আশ্রয় নিম  
ছুই আশ্রি ভূমি লইয়া যুক্ত করিতেছে। 'নত  
একপ সম্ভাবনা আছে, তদ্রূপে শাসন করা  
ইহার মীমাংসা করিয়া দিবেন। যে সে প্রক  
বে ইউক, নিউ জিলাওয়ের আশ্রয় নিবাসী  
গের লোণের কাল আসিয়াছে।

মাত্রাজ টাইমস বলেন সম্প্রতি কয়েকজন  
ভূমি ব্যক্তি কইয়াতুর ষ্টেশনের নিকটে বেইল  
ওয়ের উপর নৌপ্রভৃতি রাখিয়া আরোচী  
দিগের গাণ নাপের চেট্টা পাইয়াছিল কিন্তু  
সৌভাগ্যক্রমে কোন বিপদ ঘটনা হয় নাই।  
মধ্যে মধ্যে এই রূপ কল বাইতেছে, বেল  
ওয়ে কোম্পানি চুরাআদিগকে পরিগা গুল  
মণ্ড বিধান করিয়া তাংদিগকে অপর চুরের  
মণ্ডের আরণ করিতেছেন না কেন?

ফরাসীরা কোচিনটনে ক্রমশঃ সংগৃহ  
হইতেছেন। আসামের রাজা তাংদিগের  
সহিত সন্ধি করিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন কদা  
চী গবর্নমেন্টের সন্ততি ব্যতিরেক তিনি  
কোন বিদেশীয় গবর্নমেন্টের সন্তিত বোন  
প্রকার সন্ধি বা সহজ করিবেন না। ভারত  
বর্ষীয় রাজারা হেষ্টিংস ও লর্ড ওয়েলেসলি  
এই রূপ কোনলে পতিত হইয়া সামান্য জ  
মীদারের ন্যায় হইয়াছেন।

আমাদিগের পাঠকবর্গ লঙ্ সাহেবের  
বিল্যত যাত্রার কথাই শুনিয়াছিলেন। তা  
হার পর ভারত আর কোন কথা শুনে নাই।  
তিনি সম্প্রতি একজিটরহালের এক সভার  
উপস্থিত হইয়া যথেষ্ট সন্মান লাভ কবি  
য়াছেন। ইংলণ্ডের প্রধান ব্যক্তি স্পষ্টাকবে

কহিয়াছেন, তাঁহার অনাধ দণ্ড করা হইয়াছে  
একজন সম্ভ্রান্ত ব্যক্তি এই প্রস্তাব করিয়াছেন  
যে ত্রাবতবর্ষে লর্ড কাথেরল প্রণীত অনে  
র নিকাশারীর দণ্ড ঘটন আইন প্রেলিত  
করা লঙ্ সাহেব নীত নীলখট্ট এক পুস্তক  
প্রকাশ করিবেন। নীলকরেরা যখন এক জন  
মহাপ্রভু প্ররোচিতকে কষ্ট দিয়াছেন, তখন  
মহা তাংদিগের চুড়াগেয়া বীজ বপন কর  
হইয়াছে।

ই লঙ্ নিয়ম আছে, কোন ব্যক্তি যত  
দ্রুত গণনার পানি গ্রহণ করিতে পারেন না  
তদবর্ষে টংক দিগের উপর এই গাউন  
লর্ড না ববেচনা করিয়া; এন জন আকিস  
এই প্রস্তাব বৈধ কহিতে কলিকাতার বিশ  
প্রভা দিয়াছেন তাংগিতে কেহ এই ব  
স্বাধীন করেন, যখন পিতৃা ও মাতুলের  
মন্যকে বিবাহ করা অসম্মোদিত হইতেছে  
তখন যত পল্লী গণিনীকে বিবাহ করিবার  
নিয়ম করা তালকের সন্দেহ নাই।

দানপুরের বিগেডিয়াব নাট্যশালা  
এক দীক্ষাক্ষেপ প্রতি কলটিত ব্যবসায় দি  
শাভিলেন বলিয়া তাংক নিম্ন পদ তা  
কহিতে হইয়াছে।

কল্যাণী গোয়েট বলেন পটিনাব এ  
শক্তি চেষ্টাব লইয়া এক জন টংক  
বাটতে উৎপাত করা ত উক্ত টংক তা  
বে বন কবিতা হ। ভক্তকরা কবাক  
আমর সে বসে হুত ব্যক্তি স্থাপান কবি  
তাংর বন পূর্ণ বন করিবার চেট্টা কবা  
ভূত্য তাংবে বন করিয়াছে। বিচারে  
বাইবে।

১৬ই আশ্বিন রত্নস্পতি বার।

বোম্বাই গবর্নমেন্টের (নিকট  
মির। বন্দোবস্তের অন্য তদ্রূপে ব্যবস্থাপ  
তাং একবিল অর্পণ করিয়াছেন। কিন্তু আ  
ক লোক ইমাম কাম্বুলনের প্রস্তাবের প্রতি  
দ্বী হইয়াছেন।

লাণ্ড হোল্ডার্স সভা বারিউরের নি  
টে পরামর্শ লিখালা করিয়াছেন, গবর্নমে  
পতিত ভূমি বিক্রয় করিবার আশা দি  
করিপের জন্য আগামী টাকা লইয়া তা  
দিরাইয়া দিতেছেন। একপ স্থলে টাকা না  
ইয়া গবর্নমেন্টের নামে প্রতিজ্ঞা তাদের না

করা যায় কিনা? হ্যাঁ, যার, জীবনিকারীদি  
র মিনাম অফের শূন্য আউটলেট অর্থাৎ  
রা, সৃষ্টিকারী প্রকরণ অফের লোক এল  
ন ও সর চারলস উভের ছয় মাস ধাঁশী  
ইতে পারে।

বোম্বাইরে টোহিম নামক এক মুসল  
ন আপন উপপত্নীর পুরুষাত্বের আশঙ্কি  
ভঞ্জন করিয়া তাকে ও তাঁহার সান্নীকে  
করে। তাঁহার ধাঁশী হইয়াছে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া বলেন, সিংহল  
পবিত্র ত্রিকমলী নগরের সম্মুখে আবা  
নব যে জাহাজ ইতিপূর্বে জলদগ্ধ হা, ত্বরিত  
বা ত.হা হটতে ২৬-০০ টাকার মধ্য রুলান  
য়াছে। আরও অধিক টাকা ইটিনাদ প.  
থনা আছে।

কলিঙ্গতায় পুনর্জন্ম বলকিষ্কর সেনা ২-  
৩ পদে পিণ্ডরে ডালকো সি সলায় এক প্র-  
ব হইয়াছিল। লার্ড এলগিনের এ বিসংয  
ংপূর্ণ ইচ্ছা আছে। বলাচিষ্করদিগের তখনও  
সাহস ও অধ্যবসায় ছিল এমনও তা  
ই আছে।

বোম্বাই গেজেট বলেন, নতুন প্রদেশের  
সম্পদক কনক মাস মূলতঃ উৎসাহ বর্জ  
বোম্বাইয়েলস মত আলোকজগতের প্রতি  
প্রতি এক সত্তা করেন। বলাচিষ্কর অ.  
কে সম্পদনের মোকদমায় রণ ও মহা  
মহা বহুনাথ মীর নিজস্ব বিশেষ প্রসঙ্গ ধরি  
আমদ প্রকাশ করিয়াছেন। এবিষয়  
সংগঠিত বাতালী দেশ অপেক্ষা বড় হইল।

বোম্বাই প্রেসিডেন্সির হুতীর অধিব  
ইলও। একটের আরোহী দগের কঠোর স  
লইয়া অনেক গো লযোগ হইয়া গিয়াছে।  
হুতী কোম্পানি প্রতি শকটে ৩০ জনের  
অধিক উঠিতে দিবে না দ্বির করিয়াছেন।  
বোম্বাইয়ের সংখ্যা নির্দিষ্ট করা নিত্যন্ত  
সামান্য। কিন্তু এখানকার, রেলওয়ের মহা-  
কর্মেরা আরোহীর সুবিধা বুঝেন না।

ইংলিসমান গ্রন্থ করিয়াছেন, রাজা সিন  
র রা এক ভারতবর্ষীয় গন্যমণ্ডে ও সাধারণ  
বিশেষ সম্মান করিতে গোয়ালিয়ারের রা  
কিঞ্চিৎ অসন্তুষ্ট হইয়াছেন। মহারাজ সি  
কিয়া কি এত নির্দোষ যে গুপের যথোচিত  
প্রকার দেখিয়া অসন্তুষ্ট হইবেন?

লার্ড কানিং বিংখতি নক টাকার সম্পত্তি  
রাখিয়া গিয়াছেন। এই সম্ভার সম্পত্তি  
তাঁহার দ্বিতীয় ভাগিনের পাওরেন।

বোম্বাইয়ের লোকেরা সর জেমস আউট  
রামকে যে এক স্বর্ণ ঢাল দিয়াছেন, তাহা  
টাকাকে দেওর হইয়াছে। ডিউক অব অর্গ  
নি এক সত্তার টাকাকে ইহা প্রদান করেন।  
সর জেমস আউটরাম আদালতিও দুর্বল আ-  
ছেন।

পারস্য দেশের মধ্য দিয়া ভারতবর্ষে  
টেলিগ্রাফ কবিরার যে প্রস্তাব হয়, তদ্বিষয়ে  
তত্ত্বতা রাজা ও সম্মত হইয়াছেন। নসিকদিন  
নিজে টেলিগ্রাফ করিবেন সক্ষম করিয়াছেন।

সিঁকিমের রাজা ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের  
নিকট দক্ষিণীলিঙের চরকরণ প্রতি ১০০০  
৬০০০ টাকা প্রা. হইতে। গড় মুদ্রে ডাকার  
এই কর বন্ধ করা হয়। র পার আবেদন অমু  
সারে সর চারলস উর টাহা এই টাকা  
পুনর্বার দিবার আজ্ঞা দিয়াছেন। এতেনীয়  
বাজা ও নগরবাসিনকে নিম্ন নিম্ন প্রাপ্য মের  
হটতে বাধিত করিয়া ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্ট-  
কে সকলের বিবেচনাক্রমে করা সর চারলস  
বিদের অতিশ্রুত নহে। এই নিমিত্তই জীর্  
দ্বিকানিদিগের আশা উপরে ধ. আছে।

ইংলিসমান গত করা চলিগ্রাফ সংবাদ  
প্রাপ্ত হইয়াছেন রা ওসংসেবের পি চটি বিষয়ে  
সোম মপ্রমাণ ৩৩৩-৩ টাকার কাম হটবার  
আজ্ঞা হইয়াছে।

১৭ই অগস্ট প্রকাশ্য।

ইংলিসমান সম্পাদক সিখিয়াডালেন  
পাতিয়ালায় রাজা সিন্ধিক' হটত মাপন  
দেশে পাতিগমন করিয়া এক চরকরণ করিয়া  
দক্ষিণাৎ করিয়াছেন যে গবর্নমেন্টের  
সত্তা কোন নহে মাত্র। হটত য পবিপূর্ণ  
এতাকমীদিগকে এতাকমী করিয়া সমস্ত  
মন টংলঙে লটনা রাওরাই ও সত্তার উদ্দেশ-  
ন। ৩ পড়াবেন গবর্নর ইলা দেখিয়া সত্তল  
জের কমিসন হটত ইলা বাখাধ্য অমুসন্ধান ক-  
রিয়া কাহন। ইহা কর্মচারী পাতিয়ালায়  
হটত এক টকিল দ্বারা এই কথা জিজ্ঞাসা  
করিয়া পঠান। ১৭ই অগ্রহণ করিয়াচরকরণ  
হইয়া এই উত্তর দেন যে তিনি একগ কথা  
কখন কহেন নাই। একগ ভাবও তাঁহার মনে

উদয় হয় নাই। জাহাজ মনে না হটক, ইংলি-  
সমানের মনে হইয়াছে। এই সকল গবর্নর  
সম্পাদকট প রণায়ে ভারতবর্ষে ইংরাজ কী-  
অব লোণের কারণ হইবেন সম্ভব নাই।

সিনিকের পাদামের সংখ্যক লক্ষ্য ক  
হেন, লেপ্টনট গবর্নর ২০এ উক্ত স্থানে উপ  
স্থিত হইয়াছেন। প্রধান প্রধান লোকেরা  
তাঁহার আহ্বান বশ্যে আসিয়া সাক্ষাৎ করি-  
তেছেন। লেপ্টনট গবর্নর কিছু কাজ করিতে  
পারিবেন ত? না কেবল গবর্নমেন্টের কাজ  
করান সার হইবে?

উক্ত পত্র আরো কহেন যে তাগলপুরে  
এক খামি নোকা ৭০ জনেরও অধিক লো-  
ণের সহিত জলদগ্ধ হইয়াছে। কাহারো  
প্রাণ রক্ষা হয় নাই। তরকার দুর্ঘটনা। এত  
লোক লটতে কেওর ভয় কেন?

পুনঃ অব ভারত কহেন বোম্বাইয়ে কুলি-  
হান নামে এক স্থানে এক ব্যক্তি বিকৃত মৎ-  
শল্প প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে। বিকৃতি দীর্ঘ  
হুই ইখ ও প্রসঙ্গে দেড় ইক। ১৪ খটকা  
পরিচয় বহুনা ছিল। এই সময়ের মধ্যে এই ব্য-  
ক্তি মৃত্যু হয়। অনেক কহিতেছে, এই বি-  
কৃতিকে সর্পে দংশন করিয়াছিল। উক্ত প-  
নিন প্রদেশে বিকৃত উপগ্রন অত্যন্ত অ-  
ধিক।

লকোনগরের ব্যাংক এক জন ইউরোপীয়  
জল তণ্ডি ভালাইবার চেষ্টা গাইয়াছিল।  
কিন্তু ব্যাংক তাঁহাকে ধরিয়া পুলিশে অর্পণ  
করেন নাই। তত্ত্বতা গবর্নমেন্ট কর্মচারীরাও  
ইহাতে চকু মরিয়া আছেন। এতদ্বেনীয় হই-  
লে অবোধ্য গেজেট খন খন হকার স্বাক্ষি-  
তেন।

গ্রাহকগণের উৎসাহ দান বিরহে সক্ষম  
মুদ্রণ পত্রিকা উঠিয়া বাইবার উপক্রম হই-  
য়াছে। এই পত্রিকা যুগি গ্রাহকগণের নিকটে  
উৎসাহিতা হইয়াছিল।

১৮ই জুলাই শনিবার।

আমরা অতিশয় দুঃখিত হইয়া লিখিতে  
ছি, গড় কল্যা বাবু রূপাপ্রদান দ্বায প্রাণত্যাগ  
করিয়াছেন। স্বসম্পত্তিবাণ ডাক্তর ওরফ  
ডাক্তার জীবন মুখা বিশেষ হত.ন হইয়া ডাক্তা  
কে পরকাল চিন্তা করিতে বলেন। তৎকালে  
হাথিওটন গাহেব প্রভৃতি অনেক সত্ত্বাত



কৌতুহল উপস্থিত ছিলেন । কাণ্ড মিগবর  
মিষ্ট ও রসায়নাদি বাবুর স্ত্রী, জিহাদ, স্বপতির  
আচি হইয়াছেন । তাঁহার দুই পুত্র আছে । বঙ্গ  
দেশ একই উপযুক্ত পুত্র হইলেন ।

সংবাদ আসিয়াছে যে, সাহেবের এমন  
আয় ব্যয় হিসাবে বখাওই কলকটাকার হ-  
ল হইয়াছে । চীনদেশীয় যুদ্ধের ব্যয় ও রেটল  
ওরে সংক্রান্ত কতিপয়ে এই টাকা কন হইতে  
ছে । চীন দেশীয় যুদ্ধের ব্যয় না ইংলণ্ডের গব-  
র্নমেন্ট দিবেন ?

বিহারিলাল দত্ত নামে টেপাল আসিসের  
এক জন ফেরাণী নগর বদলাইয়া গোপনে টে-  
পাল বিক্রয় করিত । সে সপ্রতি ধৃত হইয়া-  
ছে । তাহার বাটী হইতে কয়েক খানি টেপাল  
বাহির হইয়াছে ।

আমরা শুনিলাম গবর্নর জেনরল স্ট্রোবর  
মাস পর্যন্ত উত্তর পশ্চিমাক্ষেপে গমন করিবেন ।  
তিনি দুই বৎসর তথায় অবস্থিতি করিবেন ।  
আগরায় তাঁহার বাসস্থান করা হইতেছে  
‘ভারতবর্ষ’ পরিভ্রমণের অব্যবহিত পাবেই  
লর্ড ডালহাউসি ও লর্ড কানিংহেম যত্ন  
করাতে লর্ড এলগিনের কলিকাতায় থাকি-  
তে কি সাহস হইতেছে না ?

মিষ্ট মিথিত মূল্যে গবর্নমেন্টের কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে ।

|                    |             |
|--------------------|-------------|
| ১ টাকার সিকা . . . | ১১—১১।০     |
| ৪ টাকার কোম্পানির  | ১২০০—১২১।০০ |
| টাকার ঐ            | ১০৪।০—১০৪।০ |
| ৫৪০ টাকার ঐ        | ১১—১২।০     |

ভারতবর্ষে নিযুক্ত আর জি সোটি টা-  
কা কর্তৃক করা হইবে অতঃপর কাগজের সজ্জার,  
নয়ন হইবার সম্ভাবনা ।

### ৩রা জুলাই প্যাসেজ টেক্সেপোয় সমাচার

১লা জুলাই ইংলণ্ডের ১৮৩৭ অব্দে  
বঙ্গদেশে চৌমুর বাজারস্থায় দুইটি সিকি  
মাক কারী সম্পন্ন হইয়াছে ।

রিচমণ্ডে দক্ষিণাংশের সেনাপতি জেন  
সৈন্য গণকে আক্রমণ করিয়া অনেক  
ত্যাগ করিয়াছে, তাহারা পুনঃপুনঃ অধিক  
সাহায্য প্রাপ্ত হইয়াছে ।

সামান্য সেনাপতি ক্রিমট ক মেনানডে, য  
আক্রমণ করিয়াছেন, তাহার সেনাপতি পুসে  
সেনাপতি সিলভাস কে রিপাবলিক দুর্গে রক্ষ-  
ই করিয়াছে ।

এতদূর অন্তর্য যে উত্তরাংশের যুদ্ধ কাছের  
অধ্যক্ষ তরতা গবর্নমেন্টের নিকট অধিক টে-  
নোব জনা দিখিবেন ।

পশ্চিমাংশে গবর্নমেন্টের সেনাপতি জেন  
কে বিবস করিয়া মেনকিন ও করিষ্টি এই উত্তর  
স্থানে অবস্থিতি করিতেছে । বসিষ্টি ৮০০০  
সৈন্য সচল সিলিলিখীপে আছে ।

ইউনাইটেড স্টেটের যাবতীয় সৈন্য  
তে মাস ৬ উঠিয়া দিবার ১ল প্রায় ৮ হে  
এবং বিজ্ঞানবিদগণের মাসগণনা লেপকর্ষ ১৮৭  
করিবার আজ, হইয়াছে ।

ক্রিস্টিয়ান গবর্নমেন্ট নিকট যমাহুএলার ইট  
লিখ বাক্য বাসায় বৈশাখের বহিরাগমন ১৮  
হা প্রচা হইয়াছে । মেনকিনের সেনাপতি  
ছাড়া জাত কওড়া ১১ল, সেনাপতি ১১ল  
পরাধিক হইয়াছে, সেনাপতি ১১ল ১৭  
প্রায় এককণ ডাব প্রচা হইয়াছে ।

ক্রিস্টিয়ান জেনারেল ইটল আসি  
ছে । প্রায় ১১ল ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
নগরে ১১ল ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

ইংলণ্ডের সেনাপতি ১৮ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ইটল ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ক্রান্তি ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ভারতবর্ষে ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ভারতবর্ষে ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ভারতবর্ষে ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

### গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাংলাদেশের সেনাপতি ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
আদেশ, প্রসারী নিয়ম

৮ই জুলাই—এ, মেনকিনের ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
মেন ক্রিমট হইবে, কিন্তু যতদিন  
কোন আক্রমণ না হয় ততদিন ও ১৭ ১৭ ১৭  
পারগলাব কর্মসম্পন্ন হইবে

মিমক চৌকির প্রতিনিধি ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
মেরেবল এচ, বি. ডেবরো ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ভার প্রাপ্ত হইবে ।

ই, জাকসন সাহেব নদীয়ার সিবিল ও সৈন্য  
সমাজ হইবে, কিন্তু যতদিন প্রসারী  
কাজ না হয় ততদিন তাঁহার এককণাব কার্য  
পারিতোষ থাকিবে ।

এ, এ, জুট্টন সাহেব ত্রিপুরায় সিবিল ও  
সৈন্য সমাজ হইবে ।

ডব্লিউ, বি. বকল যিনি এককণ বিনায়ল  
টমাসন বাকর যজ্ঞে সিবিল ও সৈন্য  
জাত হইবে ।

তমসুকের মিমকের এককণ ডি, কন, ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

মেনকিনের ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
জেন, মেককি সাহেব তথায় প্রথম প্রেরণ  
জিটেট ও কালেক্টর হইবে ।

পারী প্রতিনিধি মাজিউট ও কালেক্টর  
জি, এন, বাবলো সাহেব উক্ত সেনাপতি  
প্রেরণ মাজিউট ও কালেক্টর হইবে ।

সাহাবগব প্রতিনিধি মাজিউট ও কালেক্টর  
ইন এককণাটম সাহেব উক্ত সেনাপতি  
জিটেট ও কালেক্টর হইবে ।

বাগুচর প্রতিনিধি মাজিউট ও কালেক্টর  
ডব্লিউ, এন, ওয়ালস সাহেব উক্ত সেনাপতি  
জিটেট ও কালেক্টর হইবে ।

ই, এককণাটম সাহেব হাবডায় মাজিউট  
ও কালেক্টর হইবে । কিন্তু যতদিন অন্য  
না হয় পাটনায় প্রতিনিধি সিবিল ও সৈন্য  
জাত কর্তৃক করিবে ।

ইউ, লক উড সাহেব বর্জমানের ১৭  
মাজিউট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবে ।  
মাসমেন সেনাপতি ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
প্রতিনিধি মাজিউট ও কালেক্টর কর্তৃক  
করিবে ।

জি, এল, ডি, বি, সাহেব দ্বিতীয় প্রেরণ  
জিটেট মাজিউট ও ডেপুটি কালেক্টর  
হইবে ।

এ, এন, বাকগবে সাহেব দ্বিতীয় প্রেরণ  
জিটেট মাজিউট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবে  
এ, এন, সাহেব বঙ্গদেশীয় গবর্নমেন্টের  
কমিটি সেক্রেটারি হইবে । কিন্তু যতদিন আ-  
ক্রমণ না হয় ততদিন প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ভারতবর্ষে ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

বঙ্গদেশীয় গবর্নমেন্টের প্রতিনিধি ১৭  
সেক্রেটারি ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
বিভাগীয় প্রাপ্ত হইবে ।

ইউ, জি, সাহেব ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
ইন প্রায় ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
সহায়ত্ব ই ১৭ ।

১৭ জুলাই—জি, পি, ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

জি, এল, ডি, বি, সাহেব ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭  
১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭ ১৭

ବି- | ତାହାଙ୍କୁ ଛାଡ଼ିବାକୁ କହିଲେ ନାହିଁ, ଛାଡ଼ି ଦିଅନ୍ତୁ ।  
 କ- | କହିବାକୁ ନାହିଁ, ତେଣୁ କୁହୁଛି ।



এই পদে নবিকাগার মজিন্দার মাতলি ব্রহ্মচর্য  
সোনাপুর কৈনসের মজিন্দার মাতলি ব্রহ্মচর্য  
মজিন্দার মাতলি ব্রহ্মচর্য মজিন্দার মাতলি  
মজিন্দার মাতলি ব্রহ্মচর্য মজিন্দার মাতলি

# সোমপ্রকাশ

“সবর্গেরা প্রসন্নচিত্তে যাবিঃ সার্বভৌম সুমিত্রনন্দনী ন বীৰ্য্যনাং

{ সন ১২৬২। ২৭ আষাঢ়। ইং ১৮৬২। ১১ আগষ্ট

মাসিক মূল্য ১০ টাকা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন।

মকদ্দমেল সোমপ্রকাশ প্রের  
ণের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাঠিলে মকদ্দমেল সোম  
প্রকাশ প্রেরণ করা যাবে না। চাঁদার বাস্তবিক  
না ডাকমাগুল সন্ত ১০ এবং বাণ্যাসিক  
টাকা নিকপিত আছে। চর মাসের স্থান  
এই মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকদ্দমেল  
কি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের উদ্দেশ্যে  
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই  
পাঠাতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

সম্রাতি রাজ্যের নন্দীল বিদ্য লয়ের ছাত্র  
দেবের নিমিত্ত ‘ইউস অব দি মোব’ অর্থাৎ  
মুক্তি চেষ্টা ৫ গোলকের উপযোগিতা  
এক খানি ক্ষুদ্র গ্রন্থ কলিকাতা ট্যান্ডে  
বস্ত্রে সুসজ্জিত হইয়াছে। মূল্য ৫০ আনা।  
কলিকাতা।

১৮৬২। ২৩ জুলাই।

জিগোপালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

বিজ্ঞাপন।

মঙ্গল কাব্য মুদ্রিত হইয়াছে, ইহার আকা  
১২ পেজী করমাত্র ৩২৪ পৃষ্ঠা। মূল্য ১৫০  
বাকর কারীর প্রতি ১০ মাত্র। মকদ্দম গ্রহণা-  
র্থগণ মূল্যের সহিত আরো এক আনা ডাক  
মাগুল মিছিল পে মার্চিস আপিসে, আমার  
নিকট পাঠাইলে সুমিত্রনন্দনী পুস্তক পাঠাতে  
দিব।

জীনবীনচন্দ্র দত্ত।

বিজ্ঞাপন।

কর্মদেবী।

ঐযুক্ত ব্রজলাল বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত উ-  
ক্ত কাব্যের মুদ্রাক্ষর কার্য প্রায় শেষ হইল,  
গুরুগত্ব মহাশয়ের ঐযুক্ত বাবু বাজেন্দ্রলাল  
মিত্র ঐযুক্ত এডবেশন গেজেট সম্পাদক  
সহকারী টেক্সট বুক পোস্টিটর ঐযুক্ত সেক্রে-  
টারি সাহেবের নিকট অগ্রসম্মান করিবেন।  
মূল্য কংগ্রেসের মলাট ১ টাকা, কালিকো ১০।

বিজ্ঞাপন।

গত ২০ আষাঢ়/সামবাব ঐযুক্ত বাবু দে-  
বেজনাথ ঠাকুর মহাশয়ের পিতার বোধুপ সা-  
ম্বৎসরিক শ্রাদ্ধবাসরে যে ঐচ্ছ সংসং হইয়া-  
ছিল তাহার বিবরণ ক্ষুদ্র গ্রন্থে নিবন্ধ করিয়া  
তাহার দুই সহস্র খণ্ড বিতরণের জন্য  
তিনি কলিকাতা ব্রাহ্ম সমাজে অর্পণ করিয়া  
ছেন, তাহার প্রয়োজন হয়, তিনি সাধারণ নি-  
কটে প্রার্থনা করিলে প্রাপ্ত হইবেন ইতি।

ঐযুক্ত বন্দ্যোপাধ্যায় বোদান্তবাণী  
কলিকাতা ব্রাহ্ম সমাজের সম্পাদক

বিজ্ঞাপন।

মুদ্রোদ্যোগ ব্যাকরণ সেবনাগর অক্ষরে  
মুদ্রিত হইয়াছে, গটলডাল শালেজের নিকটে  
হরিশ্চন্দ্র তর্কালঙ্কারের দোকানে বিক্রয়  
হইতেছে। মূল্য ৭০ আনা মাত্র।

সোমপ্রকাশ।

২৭ আষাঢ় সোমবার।

সর চার্লস উড ও লেড সাহেব।

ভারতবর্ষের রাজস্ব সংঘটিত কাষে

তত্ত্বা পড়িয়াছে, কখন যে ইহার সুবিধা  
হইবে, একপ সম্ভাবনা দেখা যায়ইতেছে  
না। এখনে ইহা অক্ষকোরে আচ্ছন্ন ছিল।  
উইলসন সাহেব ইহাকে সেই অক্ষকোরে  
হইতে নির্মুক্ত করিবার চেষ্টা পান, কিন্তু  
তাঁহার করেকটি দোষ থাকাত্তে তিনি  
মাক্রুপে কৃতকাব্য হইতে পারেন নাই।  
লেড সাহেব ধীরে ধীরে কাব্য করিয়া  
অনেক সুবিধা করিয়া আনিয়াছিলেন,  
কিন্তু সর চার্লস উড সর্বত্র প্রতুতা  
বিনিয়োগ করিয়া তাঁহাকে বিরক্ত করিয়া  
তুলিয়াছেন। তিনি বিরক্ত হইয়া বী-  
পদ ত্যাগ করিয়াছেন। ইহা অক্ষকোরে  
কোর বিষয়।

লেড সাহেব যে আর ব্যর গণনা  
রেন, তাহা হইতে ইংলণ্ডীয় ব্যর ৩১৭৩  
৬০ টাকা ও রেলওয়ে সম্বন্ধে ৪৭৩৩২৪  
টাকা ছাড়িয়া দেওয়া হয়। ইংলণ্ড হই-  
তে এ দেশে যে টাকা আইনে, তাহা  
প্রতি টাকার হিসাব মত দুই সিলিং বা  
রা লওয়া বিধেয় হয়, কিন্তু তাহা না ল-  
য়া এক সিলিং মাত্র পেন লওয়া হই-  
ছিল, তাহাতে প্রতি টাকার প্রায় দুই প-  
সা ক্ষতি হয়। লেড সাহেব হিসাব করে  
একটি গণনা করেন নাই। বর্তমান ব-  
সরসম্বন্ধে ৫,৫০০০০০০ টাকা রেলওয়ে  
ব্যর হইবে। উল্লিখিত প্রকার বিনিময়ে  
হিসাবে আমাদিগকে ৪৫৮৩৩৩০ টা



কতি সহ করিতে হইতেছে। এক্ষণে  
সাহেব ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্টের নিকট প্রাপ্ত  
(চীনদেশীয় যুদ্ধ প্রকৃতি যুদ্ধ) টাকা বৎসর  
মানুষ বৎসরের আয়ের মধ্যে বন্টিত  
সর চার্লস উড জেনারেলের আদেশনা  
করিয়া নিম্ন লিখিত প্রকারে অকুলান দে  
খাইয়াছেন—

|                               |       |         |
|-------------------------------|-------|---------|
| রেলওয়ে                       | ক্ষতি | ৪৫৮৩৩৩০ |
| চীন দেশীয় যুদ্ধের প্রাপ্য    |       | ৪৫০০০০০ |
| ইংলণ্ডীয় যুদ্ধ ডিপার্টমেন্টে |       | ৭২৪৪৪৩  |
| অন্য অন্য প্রকার              |       | ১৪২৮০০০ |
| ভারতবর্ষীয় ধনাগার হইতে       |       |         |
| কর্জ ও তাহার সুদ              |       | ৬০০০০০  |

মোট ১১৬০৫৭৭৩

ইহার মধ্যে লেড সাহেবের হিসাবে যে  
১৪২০২১০ টাকা উদ্ধৃত আছে তাহা বাদ  
দিলে সর চার্লস উডের মতে ১০১৮৫  
১৭৬ টাকা অকুলান থাকে। সর চার্লস  
উড ইংলণ্ডের ব্যয়ের ৫৪১১৪৩২০  
টাকার হিসাব পাঠান, লেড সাহেব সে হি  
সাব প্রমাণ না করিয়া ৪৯৬১৯৮৬০ টাকা  
ইংলণ্ডের ব্যয় স্থির করেন। ইহাই তাঁহার  
লিখিত লেড সাহেবের বিবেচন হইবার  
কারণ। সর চার্লস উড গত বৎসর মৃত  
আকিসের জন্য ২০ লক্ষ টাকা লইয়া  
ছিলেন। সে সমুদার টাকা ব্যয় হয় মাই,  
যুক্তি অনুসারে লেড সাহেব তাহা এ বৎসর  
ইংলণ্ডের ব্যয় হইতে বাদ দিতে  
পারেন, কারণ আকিসের জন্য এ বৎসর  
আবার টাকা দিতে হইতেছে। সর চার্লস  
উড বক্তৃতা পথ ধরি। যেকোন হিসাব  
করিয়াছিলেন, তাহার সত্যের উল্লেখ  
করা বিকল। এই মাত্র বলিলেই পর্যাপ্ত  
হইবে, তিনি বাদ দিয়া সমুদার  
১১৬০৫৭৭৩ অকুলান দেখাইয়াছেন। লেড  
সাহেব শিকার কার্যে যে ১৪৬৪৫৩০ টাকা  
ব্যয় করেন, সর চার্লস উড তাহা রহি

ত করিব'ব আজ্ঞা দিয়াছেন। এ আজ্ঞাটি  
সর্বোত্তম প্রতিপালন করিয়া আদায় কর।

সর চার্লস উড কখনো যে নব্রতাবে  
সংগ্রহ প্রকৃতি প্রদর্শন করিয়া ফাট হট  
বাড়েন একপ মতে, তাঁহার লেড সাহেব  
বকে অসাধু গণ্য বলা হইয়াছে। প্রথম  
মে ১৮৫৯৬০ অকের আয় ব্যয়ের এক  
আনুমানিক হিসাব ও শেষে তাহার প্রকৃত  
হিসাব হয়। লেড সাহেব পূর্বে ৩ হিসাব  
অবলম্বন করিয়া আয় ব্যয় গণনা করিতে  
কোর্ট সেক্রেটারি বলেন “যখন এক ব্যক্তি  
র নিকটে প্রকৃত হিসাব রহিয়াছে, তখন  
তাঁহার আনুমানিক হিসাবের উপন নির্ভর  
করা অতিশয় অন্যায়। অতএব লেড সাহেব  
যে যে কোন কারণ প্রদর্শন করুন না কেন  
তাহা আদায়যোগ্য নহে। আমবা এক্ষণে  
নিগূঢ় কথা বুঝিতে পারিলাম। তারসবকে  
যত ব্যয় সংক্ষেপ হউক না কেন, এক্ষণে  
আমরা যত কর তার বহন করি না। বেন,  
আমাদিগের বিদ্যা শিক্ষা হউক, আর না  
হউক তাহাতে সরচার্লস উড ৭ ইংলণ্ডী  
র মজি সম্রাটের কতি নাই, গ্লাডস্টোন  
সাহেব মহাসভা দ্বারা আপনার বজেট  
প্রাচ্য করাইতে উপরিলেই কুচাঞ্চ হইলেন  
আমরা হুখা হুখা ইংলণ্ড ১৪০০০  
সৈন্যের বেতন দিতেছি। লেড সাহেব  
এই অপব্যয় নিবারণ করিতে গিয়া  
অপমানিত হইলেন। সর চার্লস উড  
ইংলণ্ডের ব্যয়ের বিষয়ে যে হিসাব  
প্রদান করিয়াছিলেন লেড সাহেব তাহা  
বোঝে প্রমাণ করিয়া কাণ্ড করেন নাট  
বলিয়াই সর চার্লস উডের যত আক্ষেপ।  
বাহা হউক, লেড সাহেব আত্মপক্ষ রক্ষা  
করিয়াছেন, ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট কিম্বদ  
মীমাংসা করেন আমরা সেই প্রতীক্ষা  
করিয়া বহিলাম।

লেড সাহেব ইংলণ্ডের টাকা এ দেশে  
শে তাহাইবার কতির বিষয়ে বলেন, রেল

বস্ত হক, তদনুসাবে ইংলণ্ড হইতে প্রেরিত  
টাকার দুই শিলিঙ খরিয়া তা লইয়া ১৬  
শিলিঙ মশ গেল খরিয়া লইয়া ৭  
হক, সেই নিমিত্ত তিনি তাহা গণনা ক.  
নাই। দ্বিতীয়, সর চার্লস উড বলে.  
চীন দেশের যুদ্ধকালে ভারতবর্ষীয় ধন  
গার হইতে যে টাকা দেওয়া হয়; তাহা  
সেই বৎসরের ব্যয় বলিয়া গণিত হইয়া  
ছিল, তাহা পরিশোধ করিয়া ইংলণ্ডীয়  
গবর্নমেন্ট যে টাকা দিয়াছেন, তাহা আ  
বার আর বলিয়া গণনা করা হইয়াছে,  
ইহা অন্যায়। লেড সাহেব ইহার যে উত্ত  
দান করিয়াছেন, তাহাত স্পষ্ট বোধ  
গম্য হইতেছে না, পুণসোক্ত বিবরণটির উত্ত  
রও প্রতিবন্ধ হইতেছেন, যথার্থ বটে, কিন্তু  
লেড সাহেবকে অমানসা করা অনুচিত  
হইয়াছে। মানুষের ভ্রম হওয়া অনৈমিত্তিক  
নহে। তিনি পদস্থ থাকিলে ভারতবর্ষের  
রাজস্ব কাষের অনেক সুবিধা হইত সন্দে  
হন নাই।

মহান্ প. ১৪৪।

প্রধান লোকেরা যত্নবান হইলে এ  
দেশের মর্ঘ ও আচারব্যবহারাদি কো  
ষ সংশোধন হইতে কত দিন লাগে  
নিদ্রে যে একখানি প্রেরিত পত্র প্রকটিত  
নৈল, পঠিকরণ। অতিমিবেশ সহকারে  
পট করুন, এ নিতে পারিবেন, কত প  
কত হইতে না বাহাদুর বলেন, সে জিও  
একপ অবস্থা আছে যদি কেহ  
এক পত্র ও অচর ব্যবহার দি পারি  
ত না হয় তাহার অনুমাত্র অতিক্রম  
কেন, এ নিত প্রণয়নট উপস্থিত হয়,  
কত পত্র হইতে হইবে।

১৮৫৭ সালের মর্ঘ।

মহান্ প. ১৪৫। সে, প্রকাশে প্রকাশিত গ্রন্থ  
ব্যাপ্তি, দুই পাতার মধ্যস্থত। প্র.

ত পক্ষে আপনকার পাঠকবর্গ অসংখ্য  
হয়েছে যে আশাদিগের ভাত্যাকা বিদ্যালয়ের  
জ্ঞান প্রদান শিক্ষক জীবন্ত পণ্ডিত  
র যুক্ত চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ের প্রাক্ষর  
এই ভক্তি থাকার জাতিভেদহীন ব-  
সাপবীত পরিচয় করিয়েছেন এবং, ত-  
ন্য এই গ্রামবাসী প্রাক্ষরগণ তাঁহাকে স-  
জ্ঞাত করতে চেষ্টা পাইয়াছিলেন। যদিও  
অন্যদিকে হইতে পারেন নাই বটে তত্বেপি  
সহিত এক চক্রে ধূমপান করিতে  
হইত কেহ অসম্মত প্রকাশ করিতেন এবং  
সহিত বাকীর কোন কর্ম উপলক্ষে ভোজন  
স্বাক্ষর নিমিত্ত হইলে গোলযোগ হইবেক  
হইত কহিতেন। সম্প্রতি তাঁহার পুত্রের অ-  
প্রাণন হইয়া গিয়াছে। সবুদার প্রাক্ষর কা-  
র প্রভৃতি তত্ত্বলোক ভোজনাদি করিয়া নি-  
রুপ রাখা করিয়াছিলেন। এখানে ১৮৬১  
খ্রিঃ প্রাচীন সম্প্রদায়ই প্রায় সবুদার, পরা  
হইত চট্টোপাধ্যায় ব্যক্তিরও অভাব নাই। মনে  
নে যাঁহার যাঁহা থাকুক, টেক কেহও কিছু  
কাম করিলেন না। হে প্রাক্ষরপ্রাচীন! এই  
ভাষায় কি আশাদজনক মত? ইহাতে কি  
আশাদেব নাহস ইতি করিতেছে না? যাঁহার  
হইতে শাস্ত্রের শাসনকে এবং শাস্ত্র হই-  
ত বস্তু ন ব্যবহারকে অধিকতর মান্য করিয়া  
আমরা কামনা কি তাহাদিগকে তর করিয়া  
তত্ত্বাচরণে বিরত থাকিব?

একান্ত বশবৎ জীরাখালচন্দ্র বোব  
ভাত্যাকা বিদ্যালয়ের দ্বিতীয় শিক্ষক  
প্রাক্ষর যজ্ঞোপবীত পরিচয় করি-  
ন এবং ত্রিসঙ্খ্য প্রাক্ষরকর্তব্য সঙ্খ্যাবন্ধ  
দি না কনিসে তাঁহার প্রাক্ষর প্রাক্ষর  
। যজ্ঞোপবীত ও যথাসম্মত সঙ্খ্যাবন্ধ  
দি প্রাক্ষর প্রাক্ষর জীবন স্বরূপ। তৎপরি-  
চয়গীর সহিত যজ্ঞোপবীতধারীরা সঙ্খ্যাব-  
ন্ধক নিরুপায়্যারে একত্র সঙ্খ্যাবন্ধাদি করি-  
তেন, ইহা তুল্য হিন্দুসমাজবিপ্লবকারী  
পরিবর্তন আর কি আছে? ইহার তুল্য আ-  
শ্রয়ব্যবস্থাদি পরিবর্তন দিগেরে এদেশী  
দিগের অনুমোদন কিরূপ উৎকৃষ্ট উদা-  
রণ আর কি হইতে পারে?

জীবন্ত বাবু হারাণচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের  
পুত্র পত্র ছাড়া আশাদিগের যেকোন সংখ্য-  
র অধিরাহিল, তদ্বারা স্পষ্ট বোধ হই-  
তেছে, ভাত্যাকাবাসী জমীদার জীবন্ত  
বাবু যজ্ঞেশ্বর সিংহের যত্নেই এই বাপা-  
রী সম্পন্ন হইয়াছে। যদি এক জন প্রধা-  
ন লোকের যত্নে এত দূর হইয়া উঠিল,  
যাবতীর প্রধান ব্যক্তি এইরূপ যত্নবান  
হইলে কোম্বিবা সম্পন্ন না হয়? প্রধা-  
ন ব্যক্তিদিগের অবিকাংশের একপ প্র-  
বৃত্তি নাই, সৎকিয়ামাহস মাই, সুশিক্ষা  
ও অধাবসায় নাই, তাহাতেই আমরা  
স্বদেশের দৈনন্দিন জীবিক দর্শনে বাকি  
ত ও হতাশ হইতেছি। আমরা স্বদেশীর  
প্রধান ব্যক্তিদিগের অবিকাংশের চলিত  
ধর্মে অকপট ভক্তি ও আস্থা দেখিতেছি  
না, চলিত ধর্মের নিষিদ্ধ কার্যের অনু-  
ষ্ঠানে তাঁহাদিগকে পরাও দেখিতেছি  
না, অথচ তাঁহাদিগকে বিশুদ্ধ ধর্ম ও আ-  
চার ব্যবহারাদির অবলম্বন অথবা তত্ত্বাব-  
সংশোধনে যত্নবান দেখিতে পাই না, ইহা  
আশাদিগের আত্মাত্মিক বিপন্ন ও ফোড়ের  
বিষয়।

মৃত বাবু রমা প্রসাদ রায়।

স্বদেশ আর একটি শোকবস্তুর আ-  
ঘাত প্রাপ্ত হইলেন। আমরা গতবারে বাবু  
রমা প্রসাদ রায়ের শোকাবহ শুভ্য সমাধি  
সংক্ষেপে পঠকগণের গোচর করিয়াছি।  
তিনি যেকোন দোক ছিলেন, তাহাতে সং-  
ক্ষেপে তাঁহার শুভ্য সমাধি লিখিয়া আশা-  
দিগের চিত্তের তৃপ্তি ও দুঃখ মিহ্রিত হই-  
তেছে না। ১৮ই আবেদন শনিবার বঁ।  
হার হুত্ব সমাচার প্রবণ করিয়া কলিবা।  
তায় তিনি চুখিত না হইয়াছেন একপ  
লোক অতিবিরল। এক সপ্তাহ পূর্ব অধগি  
আমরা তাঁহার জীবন বিষয়ে হতাশ হইয়াছি-  
লাম, তথাপি যখন তাঁহার হুত্ব কথা আশা-  
দিগের জ্ঞতিগোচর হইল, অস্তিত্বগত

বিচলিত করিয়া তুলিল। আমরা কিছু  
দিন পূর্বে যে ব্যক্তিকে আশাদিগের হুত্ব  
উচ্চতর বিচারালয়ের বিচারার্থে আশা-  
নে আসীন দেখিবার বাসনা করিয়াছিলাম  
বাঁহা হইতে স্বদেশের রাজকীর বিপদের  
সবিশেষ মৌরব লাভের আশা করিয়াছি-  
লাম, নির্মল হুত্ব তাঁহাকে লইয়া যেন।  
আমরা মনোরথ পূর্ণ করিতে পারিলাম না।  
বাবু রমা প্রসাদ রায় রাজা রামমোহন  
রায়ের কমিট পুত্র ছিলেন। তিনি ১২২৫  
অব্দের ১২ই আবেদন জন্ম গ্রহণ করেন। ৪৫  
বৎসর মাত্র তাঁহার বয়সকাল হইয়াছিল।  
শিশুকালে তিনি পেরেটাল আকাতেমিতে  
ও কয়েক বৎসর হিন্দুকালেজে অধ্যয়ন  
করেন। রাজা রামমোহন রায় ইংলণ্ডে  
গমন কালে রমা প্রসাদকে তাঁহার (রমা প্র-  
সাদের) জ্যেষ্ঠ ভাতা বাবু রাধিকা  
প্রসাদ রায় ও ব্যরকামাথ ঠাকুরের হস্তে  
সমর্পণ করিয়া যান। ব্যরকামাথ ঠাকুরের  
সবিশেষ সংসর্গ হওয়াতে অতি অস্পর্শরসে  
তাঁহার মনুষ্য পরীক্ষা করিবার ও সহজে  
হ্রসবগাহ বিবরণ সকল বুঝিয়া লইবার সবি-  
শেষ ক্ষমতা অধিরাহিল।

১৮৩৮ অব্দে তিনি তেপুজী কালেক্টরের  
পদ প্রাপ্ত হন, ১৮৪৫ অব্দ পর্যন্ত এই কর্ম  
করিয়াছিলেন। এই সময়ে বাবু রমা প্রসাদ  
ঠাকুর সমর আদালতে ওকালতী করিয়া  
যথেষ্ট খ্যাতি ও অর্থ উপার্জন করেন।  
রমা প্রসাদ বাবু তদধর্মে সময়ে ওকালতী  
করিতে গেলেন। এমসকুমার বাবুর নিকটে  
তাঁহার অনেক সাহায্য লাভ হইয়াছিল।  
পরিশ্রমে তিনি দীর্ঘ পদভাগ করিলেন  
রমা প্রসাদ গবর্ণমেন্টের প্রধান উত্তীর্ণ হই-  
লেন। সেই অবধি তাঁহার পৌরস্বত্ব হ্রাস  
হইতে লাগিল। লাভকামিও ও গ্রাউন্ট  
সাহেব তাঁহাকে সবিশেষ অনুগ্রহ ও রোহ  
করিতেন। গত বৎসর গ্রাউন্ট সাহেব তাঁহা-  
কে লিগাল রিমা প্রসাদের পদে প্রতিষ্ঠিত  
করেন। তিনি সমস্তা সহকারে ১৮৫৫



কিন্তু সঙ্গীতের ক্ষেত্রেও তিনি অসাধারণ। তিনি যেসব গানের সুর রচনা করেছেন, সেগুলি আজও জনপ্রিয়। তিনি যেসব গানের সুর রচনা করেছেন, সেগুলি আজও জনপ্রিয়।

তিনি বঙ্গদেশের ব্যবস্থাপক সভার সভাপতি পদে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিলেন। এখানেও তিনি আপনাদের বুদ্ধিমত্তা দিয়ে দেশের উন্নয়ন পরিচালনা করেন। তিনি দেশের সকল রাজা দিনকর রাও এবং সকল বিষয়ে পারদর্শিতা প্রকাশ করেছেন। তিনি পারেন নাই যেতে কিন্তু তিনি দেশের সকল রাজার বড় নিকট ছিলেন না। তিনি যখন রোগে আক্রান্ত হয়েছিলেন তখন তাঁর চিকিৎসার সুবিধার নিমিত্ত চৌর দিতে গিয়া অবস্থিতি করেন। তাঁহার চিকিৎসার যে চূড়ান্ত হয়েছিল একথা বলা বাহুল্য, কিন্তু কাল এমনি দ্রুত যে কি খনবল, কি লোক বল, কি চিকিৎসক দেন, কিছুতেই তাঁহাকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইল না।

আমরা রমাশ্রমার বাবুর জন্মদি মর গাও হুতাস্ত বেমন সংক্ষেপে বর্ণন করিলাম, তেমনি সংক্ষেপে তাঁহার স্বভাব ও চরিত্রাদির বিষয়ও কিছু বলা আবশ্যিক। তিনি অতিশয় বুদ্ধিমান ছিলেন। তিনি কেবল এক বুদ্ধিবলেই এত দূর সম্মান, গৌরব, ও যথেষ্ট অর্থ (কেহ বলে ২০, কেহ বলে ৩০ লক্ষ টাকা) অর্জন করিয়াছিলেন। তাঁহার স্বভাব বিনোদ ও নম্র ছিল, এই শুধে কি ইতিবাচী। কি গাও শীর অনেক প্রধান লোকের সঙ্গে তাঁহার সর্বশেষ আত্মীয়তা ও বন্ধুত্ব সম্পন্ন। কিন্তু তাঁহার স্বভাবগত একটা অনুকমতা দোষ স্পষ্ট লক্ষিত হইত। এই অনুকমতা দোষ নিবন্ধনই তাঁহার প্রকৃত মনস্বিতা, তেমনিতা প্রভৃতি করেকটা সদগুণের সমস্তা ছিল। এই দোষ থাকাতাই তিনি

কোন বিশেষ জেয় সাধন করিয়া গৃহীত পারেন নাই। তিনি যে লোকের সম্মান, তাঁহার নিকটে বঙ্গদেশ কি অধিক তার প্রতাপকার লাভের প্রত্যাশা করেন নাই। তাঁহার অসম্মানও সংক্রিয়াসহ স ছিল না, একথা বলিবার বোধ হয় অত্যাধিক হইবে না। তাঁহার পিতা হিন্দু সমাজে খ্যাতি লাভ বাসনা পরিত্যাগ ও অন্য অন্য ক্ষতি স্বীকার করিয়াও স্বদেশের ধর্ম ও আচার ব্যবহারাদিগত দোষ সংশোধন চেষ্টা করিয়া ইহাকে উৎকৃষ্ট অবস্থায় লইবার চেষ্টা পাইয়াছিলেন; তিনি অসার, অপদার্থ ও অসন্তের নিন্দা, ও কটু বাক্য করণপাত না করিয়া অকুতোভয়ে যে সংক্রিয়ানুষ্ঠানের পথ প্রদর্শন করিয়া বান, রমাশ্রমার তাঁহার পুত্র হইয়া কেবল এক সংক্রিয়াসহক বিরহে সেই পথের পথিক হইতে পারিলেন না। প্রভুত তিনি সেই প্রাচীন পদ্ধতি তত্ত্ব পথের পথিক হইয়া বিশেষজ্ঞ ব্যক্তিদিগের সূচার পাত্র হইয়াছিলেন।

তাঁহার চরিত্র বিশুদ্ধ ছিল বলিয়া আমাদের সংস্কার নাই, সুতরাং বিশুদ্ধ চরিত্র লোক বলিয়া তিনি আমাদের তত্ত্বিতাজনও ছিলেন না। তিনি যেকোন পদ্ধতি ছিলেন, তাঁহার যেকোন বুদ্ধিবৃত্তি, ক্ষমতা ও অর্থ সম্বন্ধি ছিল, তাহার সহিত যদি চরিত্রের বিশুদ্ধতা, স্বদেশানুরাগিতা ও স্বদেশপ্রেমিতা থাকিত, তিনি যে কেবল আমাদের অবিমিশ্র শোকে পাত্র হইতেন একথা নহে, আমরা প্রধান পুরুষ গণনা কালে তাঁহাকে দ্বিতীয় পদ দানে উৎসাহী হইতাম না।

বড় লোকের চরিত্রাদির বিষয়ে লেখনী প্রয়োগের যথার্থরূপে স্বকর্তব্য সম্পাদন করিয়া কৃতার্থত লাভ করা বড় সহজ নয়। পদ্ধতিগত নানাবিধ চূর্নিবার কারণবশতঃ চিত্তবিস্তার জীবনের সমধিক সম্ভাবনা। আমরা ব'রু রমাশ্রমার রায়ে চরিত্রাদি

বিষয়ে এসব করিয়া অপকপাতিত্ব স্বকর্তব্য সাধনে সমর্থ হইলাম কি না এই চিন্তা করিতেছিলাম, (গতবারে এই কারণে আমরা তাঁহার বিষয়ে কেবল প্রস্তাব লিখিতে সাহসী হই নাই) এমত সময়ে ইতিয়ান রিকর্ডের আবাদিগের হস্তে গত হইল। আমরা কৌতুহলাক্রান্ত হইয়া আশ্রয় পুরাঙ্গর রমাশ্রমার রায়ে হস্ত বিধায় প্রস্তাবটি অগ্রে পাঠ করিলাম। কিন্তু পাঠ করিয়া আমাদের হস্ত বিধায় উত্তর উপস্থিত হইল। হস্তের কারণ এই রমাশ্রমার বিষয়ে আমরা যেরূপ অগ্র প্রকাশ করিয়াছি, ইতিয়ান রিকর্ডে সেইরূপ করিয়াছেন। এতদ্বারা এ প্রকার প্রমাণ হইল যে রমাশ্রমার বিষয়ে আমাদের যে সংস্কার আছে, তা অসম্মানক নহে। বিবাদের কারণ এই, ইতিয়ান রিকর্ডের চিত্রের অনুদারতা বশতঃ হিন্দুপেট্রিয়ারেটের ভূতপূর্ব সম্পাদক হরিশ্চন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের স্বদেশ পিতা গুণের অপলাপ করিয়াছেন। উক্ত পত্র তিনি আর কেহ একথা কহেন না। আমরা যত দূর জানি, তাহাতে সন্তোষকর কহিতে পারি, এবিষয় তাঁহারে বাক্য ক্রমেই প্রমাণ যোগ্য নহে।

একটি কথা আমাদের মিতান্ত্র আবশ্যিক।

স্মারতভূমি এখানে এক অভূতপূর্ব ধারণা করিয়াছেন : এক্ষণে দিন দিন অকথিত পরিবর্তন ঘনঘোর হইতেছে, তাঁর সম্মানগণ এক্ষণে নানাবিধ শুভকল প্রকাশ করিতেছেন, কিন্তু আমাদের আভিযাত্রীর আভিলষিত আবশ্যিক বস্ত্র লাম্বা চরিতার্থতা লাভ হয় নাই। আমরা হইতে সৌভাগ্যকীর্ণ দর্শন করিতেছি। সম্মুখে অনেকগুলি চূর্নিতকর প্রবন্ধক রহিয়াছে। সে সকল অতিক্রম করিয়া তথায় গমন আপাততঃ অসাধ্য।

হইতেছে বটে, কিন্তু যদি অধিকাংশের  
হইয়া তথায় গমন কেঁটা করা বর,  
হই। সকল চাইবার সম্পূর্ণ সন্তোষনা আ  
। হিরতর প্রয়ত্ন, উৎসাহ ও অধ্যবসা  
র অঙ্গে কি কিছু প্রতিবন্ধকরূপে দণ্ডা  
মান হইতে পারে? কাপুরুষেরাই আপ  
নর আশঙ্কা করিয়া পরাধ্বং হয় ।

অন্যে কি চেঁচা পাইয়া আমাদিগের জ্ঞে  
সাধন করিয়া দিবে? আমরা কি অন্যর  
খ প্রতীক্ষা করিয়া রহিব? কখনই না ।  
স মঙ্গল বিস্তৃত ও হিরতর নহে । আপ  
দিগের মঙ্গল-আপনারাই চেঁচা করিয়া  
হইতে হইবে । আমরা যে জাতির অধি  
কারে বাস করিতেছি, তাঁহাদিগের দ্বারা  
মনেক সাহায্য লাভ হইতে পারে সন্দেহ  
নাই । তাঁহারা আমাদিগকে পথ প্রদর্শন  
করিতে পারেন; কোন কোন বিষয়ে  
তাঁহারা কাহা দ্বারাও আমাদিগের দৃষ্টান্ত  
হল হইয়াছে, কিন্তু তাঁহারা আমাদিগে  
র ব্যবহার কল্যাণ সাধন করিতে পারেন  
না । ভারতবর্ষ একটি ক্ষুদ্রতম প্রদেশ নহে ।  
সমুদায় দেশের উন্নতি সাধন বিদেশীয়দি  
গের দ্বারা সম্পাদিত হওয়া কোন ক্রমেই  
সম্ভাবিত নয় ।

আপনার জ্ঞেয়সাধন আপনারই কর্ত্ত  
বা বলিয়া যখন হির হইল, তখন সেই  
জ্ঞেয়সাধন বিষয়ে সাক্ষাৎ সম্বন্ধে কোন  
গুলি নিভান্ত আবশ্যক, তাহার বিবেচনা  
বিধেয় হইতেছে । কৃষি, শিল্প, বাণিজ্য  
পারী ও মানস উত্তরাধি বস; এষ্ট পাঁচ  
টি বিষয়ের জীর্জি সাধন সর্বত্র আব  
শ্যক ।

প্রথম, কৃষি । এক্ষণে গবর্ণমেন্ট পতিত  
ভূমি বিক্রয় করিতেছেন । তুর্নেক ইউরো  
পীয় সেই সকল ক্ষয় করিতে উদ্যত  
হইয়াছেন । ইউরোপীয়েরা এ দেশে কৃষি  
কাহা করিয়া এ দেশীয় কৃষকদিগকে উৎ  
কৃষ্ট কৃষিকাহা প্রণালীর শিক্ষা দেন ইহা  
মঙ্গলের বিষয় সন্দেহ নাই । কিন্তু যদি

অনুধাবন করিয়া দেখা যায়, এ দেশের  
ভূমি যত এ দেশীয়দিগের অধীনে থাকি  
য়া উৎকৃষ্ট প্রণালীতে তাহার কৃষিকাহা  
সম্পাদিত হইবে, ততই অধিকতর মঙ্গলের  
বিষয় । ভারতবর্ষে কৃষকের অভাব নাই;  
কেবল কৃষিকাহের উৎকৃষ্ট প্রণালীরই  
অভাব; যদি এই দেশ উর্বর না হইত,  
তাহা হইলে বর্তমান কৃষকেরা অর্ধেক  
দস্যও উৎপাদন করিতে সমর্থ হইত না ।  
অমরা যদি কৃষিকাহের উৎকৃষ্ট প্রণালী  
শিক্ষা করিয়া দেশের অধিকাংশ ভূমি  
আপনারা কর্ষণ করিতে পারি, তাহা হইলে  
আমাদিগের যথার্থ সৌভাগ্য লাভ হয় ।  
নতুবা ইউরোপীয়দিগের চা, নীল অথবা  
তুলা ক্ষেত্রে কেবল মজুরী করিলে কৃষক  
দিগের এখনও যে দশা, তখনও সেই দশা  
থাকিবে । অপর, আমরা যদি আপনারা  
তুলা প্রভৃতির উৎপাদন বিষয়ে সমর্থ হই,  
আমাদিগের উপায় ইংলণ্ডের নির্ভর ক  
রিতে হইবে সন্দেহ নাই । একপ হইলে  
কি আমাদিগের যুক্তিভর্ত্ত প্রার্থনা সকল  
এখনকার ন্যায় তখন অগ্রাহ্য হইবে; তখন  
কি আর অসার ও অপদার্থ বোধ ক  
রিয়া ইউরোপীয়েরা আমাদিগের প্রতি  
উৎসাহ করিতে পারিবেন? এক্ষণে বদে  
শীয় দিগের নিকটে আমাদিগের জিজ্ঞা  
স্য এই, আমরা যদি আপনারাই ভূমির অধি  
কাহী ও কৃষক এ উভয়ের কাহা নির্ভাহ  
করি, ইংলণ্ড আমাদিগের অধীন হই  
বেন; আর যদি নীলকন প্রভৃতির মজুরী  
কাহা দেখা করি, আমাদিগকে প্রত্যেক  
বার্ষিক ইউরোপীয়ের দাস হইতে হইবে,  
ভারতবর্গীয়েরা এই দুই উপায়ের কোন  
টা অবলম্বন করিতে চাহেন? — ৩০৩

দ্বিতীয়, শিল্প । আমাদিগের শিল্প নিম্নপুণ্ড  
বিলুপ্ত প্রায় হইয়াছে । ইংরাজ গবর্ণমেন্টই  
এই সোপের কারণ ১৮১০ অব্দের সময়ে  
পুর্বে ঢাকা, বিক্রমপুর, বাঙ্গালার প্রভৃতি  
প্রদেশ সকল ক্রমিক বন্দর ছিল । আমা

দিগের দেশের বস্ত্র ইউরোপীয় আমাদিগকে  
প্রদানে নীত হইত । কিন্তু ইংরাজ আমাদিগের  
তাঁত প্রভৃতির আত্মা ও অর্থ বর্ষে ইউ  
রোপীয় ভববার বর্গের সুবিধা হইত । আমাদিগের  
হওরাতে আমাদিগের দেশের বস্ত্রের  
বিক্রয় এক কালে সোপ পাইয়াছে । ইংরাজ  
রজারী করা ফুরে থাকুক, আমরা বস্ত্রের  
জমাও পয়সাও পরিমাণে বস্ত্র প্রদত্ত করি  
তে পারিতেছি না । সর্বদাই আমাদিগের  
গবর্ণমেন্ট ও অন্য অনেক ইউরোপীয় তাঁত  
তবর্ষের অর্থগণের উপায় উৎসাহন । এই  
কথার উল্লেখ করিয়া থাকেন । এই কথার  
যথার্থ অর্থ কি? ভারতবর্ষে প্রচুর তুলা  
উৎপন্ন ও বস্ত্র প্রভৃতি প্রদত্ত করিয়া পুর্বি  
বীর সমুদায় ধনেও প্রেরণ করা কি ইহার  
মুখ্য অর্থ নয়? গবর্ণমেন্ট জম ও কি কখন  
একপ ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন যেমত এক ট  
রের ন্যায় এখানে বাসীরা তাঁত ও অন্য  
বিধ কল হয়? আমরা ইংলণ্ডের উপায়  
বস্ত্রের জমা নির্ভর না করি; ইংলণ্ড আ  
মাদিগের উপরে নির্ভর করিবে, গবর্ণমেন্ট  
কি কখন একপ কথা ফুরে আনিয়াছেন?  
যদি তাহা না হইল, তবে আমাদিগের যথার্থ  
জীর্জি কোথায়? যত দিন এদেশীয়েরা  
শিল্পকাহা নিম্নপুণ হইয়া প্রদেশে মান্য  
বিধ প্রব্যাদি উৎপন্ন ও প্রদত্ত করিতে না  
পারিবেন, তাবৎ অর্থগণের দ্বার উৎসাহ  
দিত হইয়াছে, এ কথাটা মলা-বাঁধা শাস্ত্রানু  
সারে সম্ভব হইতে পারে না ।

তৃতীয়, বাণিজ্য । এক্ষণে ভারতবর্ষে  
১০ কোটি টাকার বাণিজ্য চইতেছে । বি  
ক ইহার কত অংশ আমাদিগের প্রায়  
সম্পাদিত হইতেছে? ভারতবর্ষ হইতে  
কয় কানি জাহাজ বিদেশে বাণিজ্য করি  
তে গমন করিয়া থাকে? বোম্বাইয়ের  
যেক জন পারসী বাতিলেকে ভারতবর্ষে  
যথার্থ বণিক কোথায়? পারসীরাও পু  
সকল অংশে বাণিজ্য করিতে গমন  
করেন না । আমাদিগের ব্যবসায়ীরা ই



পাণ্ডিত্যের নিকটে প্রবৃত্তি করিয়া দেশীয়দিগকে অধিক-জ্ঞান বিকশিত কর। তাহাতে তাঁহা হতাশ হইত এই কথা। বিবেচ্য হইতে তাঁহা আশ্রিতে না গিয়িলে দেশের স্বার্থ ধন হুঁহি হইত না। বাণিজ্য-বিপণী জীহুই চেষ্ঠা কি আশ্রিতের মিথ্যে আবশ্যক নয়? কলীয়ার প্রথম পিটার প্রজাতিগকে বাণিজ্য বিষয়ে বিশেষ উৎসাহ দান করিতেন; তিনি উক্ত জাতিগকে বিশেষে বাণিজ্য কাব্য শিক্ষার প্রেরণ করা হইত। এখানে কি লক্ষণ করা হইতেছে আমরা কি চির দিন এইরূপ অবস্থার থাকিব? আমরা কি আপনাদিগকে দেশে বাণিজ্য করিয়া দেশের ধন ও গৌরব হুঁহি করিব না? য দেশে বাণিজ্যের সবিশেষ উন্নতি হয়, দেশীয়দিগের অতুল বল ও অতুল সাহস হয়। আলেকজান্ডরকে তাঁহারের সমুদ্রে ৮ মাস কাল সেনানিবেশ করিয়া থাকিতে হইয়াছিল। তেরারসকে জয় করিতে তাঁহার যত কষ্ট না হইয়াছিল, এই যত্ন গ্রহণ করিতে তবপেক্ষা বহুগুণে অধিক কষ্ট হয়। বাণিজ্যের ফলেই দেশের লোকেরা দেশীয় বিত্তীয় কিনিপের সমৃদ্ধ হইতে মুক্ত হইয়াছিল; বাণিজ্যের ফলেই ইংরাজেরা মহাতীর মেপোলিসের পতন সাধন করিয়াছেন। ভারতবর্ষের বিত্তীয় পুত্রদেরই যেন এই কথা স্মরণ থাকে।

চতুর্থ, বুদ্ধিবল। বহুপ অল্প প্রত্যক্ষা দ্বিবেশ ও ব্যাখ্যাদি ব্যতিরেকে শারীরিক বল ও সাহসাদিবৃদ্ধি সম্ভাবিত নয়, সেইরূপ সবিশেষ চালনা ব্যতিরেকে বুদ্ধিবল বৃদ্ধির সম্ভাবনা নাই। বুদ্ধিবল বৃদ্ধির একমাত্র উপায় বিদ্যার সবিশেষ লব। এক্ষণে বিদ্যার অপেক্ষাকৃত বহুবিধ অনুশীলন হইতেছে, এ দেশীয় শিক্ষার সৈমন্তিন বুদ্ধিবলবৃদ্ধিও দৃষ্টিগোচর হইতেছে।

যেহেতু লক্ষিত হয়, তাহাও ক্রমশঃ সংশোধিত হইতেছে। উত্তরোত্তর তৎসংশোধনের সমধিক সম্ভাবনাও আছে।

পঞ্চম, শারীরিক বল বৃদ্ধি। এই বিষয়টিকে এ দেশীয়দিগের অত্যন্ত অসঙ্গতি আছে। সর্ব প্রকারে এ অসঙ্গতি দূর করা নিতান্ত আবশ্যক। এ অসঙ্গতিটি যাবৎ দূরীকৃত না হইবে, তাবৎ এ দেশীয়ের প্রকৃত মহত্ত্বলাভে সমর্থ হইবেন না। শারীরিক বলবৃদ্ধি ব্যতিরেকে সাহসাদি বৃদ্ধি সম্ভাবিত নয়। যে জাতির সাহস নাই, তাহার সম্ভা বিড়ম্বনা মাত্র। এই শারীরিক বল বৃদ্ধির উপায় করা অতিশয় আবশ্যক। গবর্ণমেন্ট ও এ দেশীয় লোক উভয়কেই তদ্বিষয়ে বদ্ধনীল হইতে হইবে। সে উপায় এই, গবর্ণমেন্টের নিজের বিদ্যালয় হটক, আর সাহায্য কৃত বিদ্যালয় হটক, সর্ব স্থলেরই বালকদিগের বাধ্যতামিত্তি নিয়ম করিয়া দিয়া উপযুক্ত শিক্ষক নিয়োগ করিতে হইবে; বিদ্যালয়ের অন্য অন্য কাব্যের মান্যতা হারও হস্তাবধান ও উৎসাহাদি দান করিতে হইবে; বালকদিগের কৃতবিদ্যা হইয়া বিদ্যালয় হইতে বাহির হইবার সময়ে কিছু দিন তাহা দিগকে অস্ত্র শিক্ষা দেওয়া কর্তব্য। বালকে ক্রা যদি এইরূপে শারীরিক বল সম্পন্ন, কৃতবিদ্যা ও শিক্ষিত হইয়া, তৎকর্তব্য আর একটা মুতম শ্রী ধারণ করিবে সন্দেহ নাই। এই চেষ্ঠা কখন নিষ্ফল হইবে না, করে কটা মহৎ ফল লাভ হইবে সন্দেহ নাই। আপন উপস্থিত হইলে এদেশীয়েরা কেবল যে আশ্রয়কার সমর্থ হইবেন একপ নহে, গবর্ণমেন্টেরও সবিশেষ সহায়তা করিতে পারিবেন। বিশেষ লাভ এই, তখন আর ইহারা ভীত, অসার ও অপদাণ বান্ধা উপেক্ষিত হইবেন না।

আমরা কলকাতা হইতে নিম্ন লিখিত পত্র খানি প্রাপ্ত হইয়াছি। বক্তৃতাটি অ

ত্যন্ত দীর্ঘ হইয়াছে বলিয়া তাহার কিয়ৎংশ এবং কয়েক জন স্বাক্ষরকারির নাম মাত্র প্রকটিত হইল।

পরম সন্মানান্বিত, ~~হরিশ বাবু~~ সেন  
একাদশ সন্মানান্বিত, ~~হরিশ বাবু~~ সেন

নিম্ন লিখিত ~~হরিশ বাবু~~ বিনয়ী, আপনাদিগের ভুবনোচ্চল পট্টক ~~হরিশ বাবু~~ লাভ পূর্বক মান লাভ করে এই আমার একান্ত বাসনা।—  
সম্রাতি এক দিন জীহুই বাবু বামতন্ত্র ~~হরিশ বাবু~~ জীহুই বাবু উদ্দেশ্যে দত্ত ও জীহুই বাবু দীনবন্ধু দ্বিতীয় এই কয় মহাশয় সমবেত হইয়া মৃত মহাত্মা হরিশচন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের অরণ্য বনিকাতা নগরীতে প্রায়শ অষ্টালিকার সাহায্য করণের মন্ত্রণা করেন। দীনবন্ধু বাবুই প্রধান সম্পাদকের তার গ্রহণ করিয়া অকপট যত্ন সহকারে অত্রত্য মহারাজ বাহাদুরের আদেশানুসারে এক সাতার অষ্টম করেন। ২৬এ জুলাই শনিবার বেলা ৪ টার সময় পবলিক লাইব্রেরিতে এই সভা সংস্থাপিত হয়। কলকাতার বহুতর তর ব্যক্তি সমাগত হইয়া এই সভা মণ্ডপ প্রতিষ্ঠা করিয়া ছিলেন। জীহুই বাবু তারিণীচরণ ঘোষ মহাশয় সভাপতি পদে ব্রতী হন। অনন্তর দীনবন্ধু বাবু যে বক্তৃতা দ্বারা সমাগত সভ্যগণের আশ্রয় করিয়াছিলেন তাহা নিয়ে প্রকটিত করিগেল।

“হরিশ বাবু বহুপ দেশভিত্তিক ছিলেন, হরিশ বাবু বহুপ পরোপকারী ছিলেন, হরিশ বাবু বহুপ স্নেহক ছিলেন, হরিশ বাবু অতঃপর উন্নত জনা যে পরিচয় করিয়াছেন, হরিশ বাবু রাজপুত্রবর্গের যে মহাশয়। কবিরাছেন তাহাতে তাঁহার অরণ্য কোন চিত্র স্থাপন করা করা সমান, কারণ তিনি চিরঅরণ্য তিনি প্রাতঃসন্দীপ, তিনি জুলিয়ার ঘোষা মন তাঁহাকে জুলেও তোলা দায় না। হরিশ বাবু অরণ্যে কোন অষ্টালিকা প্রকৃত হটক বা হটক তিনি আশ্রয়ের অষ্টালিকা অষ্টালিকা সত্য বিবাক করিতেছেন, হরিশ বাবুর অরণ্য কোন মনির প্রতিষ্ঠিত হটক বা না হটক, তিনি আমাদের মনির মনিরের আশ্রয় দেবতা হই আছেন, হরিশ বাবুর প্রতিদ্বন্দ্বি কোন রাজপুত্র স্থাপিত হটক না হটক, তিনি আমাদের পাথে দেশীপাথান মণ্ডাপান আছেন।





বার সতের নিকটবর্তী কদমগাছি গ্রামের  
যতুনাথ বন্দোপাধ্যায় নামক এক যুবক খ্রীষ্ট  
ধর্ম অবলম্বন করিয়াছেন। এই বালকটি বারা-  
সতের বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতেন। কিছু  
দিন হইল এই বিদ্যালয়ের এক জন প্রতিনিধি  
শিক্ষক হন। তাঁহার অধিক পড়া শুনা হয়

ই হিন্দু ও খৃষ্টিয় উভয় পক্ষেরই কিছু আ-  
ম না। যদি কল্যাণ সত্য হয়, একটি খৃষ্টিয়  
জাতির পানি গ্রহণের ইচ্ছাই তাঁহার বিপ-  
দ ত্যাগের কারণ। ইং। সত্য চাই। ই-  
ক অনেক যুবক জনতান্ত্রিক আন্দোলনে  
হইয়া থাকেন, এতদ্বারা অসত্য নহে। বি-  
বাহেরা এখনিই চাপি রাখিবেন, নচেৎ তাঁ-  
দের খর্ষের ও নরহত্যারের অবমান-  
না হইবে।

লাহোর জাতিবেল বলেন, দেওয়ান সি খাঁ  
এই হওয়াতে শস্যের নিরক্ষণ সুবিধা  
হইবে। কিন্তু জঙ্গলাবনে অনেক গৃহাদি  
হইবে।

মিলি গেজেট বলেন গে.জাম নদি কা-  
র এক জন বিদ্রোহীর বিচার হইয়া পাচ  
সর কারাবাসের সাজেশ হইয়াছে। এই  
জয় গভীর ন্যায় উদীল ছিলেন।

অযোধ্যা গেজেটে কামপুত্রে সংবাদ  
তা বলেন, তথায় একটি ইউরোপীয় বা-  
লি পানিগ্রহণার্থী হইয়া অনেক "সু-  
খ" ব্যক্তি অনেক চেষ্টা পান বালিগা-  
তি সুলভী কিন্তু সে কাঙ্ক্ষিত মনোভীত

স নাই। পশ্চিমে এক দিবস সূর্য্যকালে  
কানিত হইল, এক জন লীখাকার স্তম্ভের  
খান্য সৈনিক পুরুষ তাহা প্রথমতঃ

হইয়াছে। বাণিকার পিতা মাতা তাকে  
প্রকার অশুচিত মীচগামি প্রেম পারিভ্যাগ  
রিতে অনুরোধ করেন কিন্তু সে কিছুতেই

মত না হইল। পরিশেষে প্রিয়জনের সহিত  
লায়ন করিয়া তাহাকে বিবাহ করিয়াছে।

কণে তাহাকে বৃত্ত করা হইয়াছে। বালি  
টির বয়স্ক ১৫ বৎসর মাত্র। মতএস  
বয়ঃপ্রাপ্ত হয় নাই। মণ্ডবিধির অগ্র

গত্রে সৈনিক পুরুষের সাতবৎসর কারা-  
স হইতে পারে। সে এক্ষণে রক্ত আছে  
বৎ তাহার প্রথম বিচার তত্ত্বতা কানকোন-

টি আইন আওতে টের মিকটে হইতেছে।  
এই দুই মীল মানে না, তদ্বিস্তৃত আ-  
মি নহি। আবাদিগণের চিন্তা এই যে বাণি-

পরিদর্শক বলেন, বতবাজারের ১২৫ নং  
বাগানে বেকতি নামে এক জন সার্জন কাস  
কটিল। এই ব্যক্তির নিকট এক নামের ভাড়া  
পাওনা হইলে সে তাহা না দেওয়াতে ভাড়া  
কে বাণী ত্যাগ করিতে হয়। সে বৈবাহিক  
মালী হইয়া মিউনিসিপাল কমিশনারদের  
নিম্নে জানায় যে এই নীতি অত্যন্ত জীর্ণ  
হইয়াছে। তদ্বিস্তৃত ভাড়া চয় করা হয়।  
বাণীর অধিকারী মালীশ করাতে প্রধানতম  
সিচারালয় মিউনিসিপাল কমিশনারদের  
১০ টাকা ক্ষতিপূরণ ও উত্তর পক্ষে মোক  
১৫ ব্যয় দিবার আশ্বা করিয়াছেন। তাহা-  
দিগের নিজস্ব টাকা দিবার অঙ্গেন হইয়া-  
ছে তৎ তাহারা কলিকাতা বাসিদিগের টাকা  
মটরা যেন লাভ করেন না।

ঢাকা প্রকাশের এক জন পত্র প্রেরক নি-  
ম্ন চৌকির লোকদিগের আত্মচরিত্রের বিষয়  
লিখিয়াছেন। এই কর্মচারীর বিশেষতঃ  
পেশাদারী অভ্যাসের বরে। কলিকাতা বৎসর  
পূর্বে তাহারা বাবাসতের চতুঃপার্শ্বস্থিত  
প্রায় ক্রয়ানক অভ্যাসের করিত কিন্তু ক্র-  
কল্পে কলিকাতার মালীশ ও মধ্যে মধ্যে মক-  
চর প্রদোষিত করিয়া তাহাটিকে শান্ত ক-  
রিয়াছে। পূর্বে বাজারায় প্রকাশ করিলে  
হয় না?

উক্ত পত্র প্রাপ্ত করিয়াছেন সুসিদ্ধান্ত  
সম্প্রতি হুগলীয়ায় নীলকুঠিতে এক  
ব্যক্তিকে মাতামাংকাল গুণায় বদ্ধ রাখা  
হয়। সে কোন কোন পলায়ন করিয়া না-  
লীশ করাতে কুঠির গমস্তা ও কয়েকজন খা-  
লাশীর এক শত টাকা করিয়া অধিমান এই  
হইয়াছে। এপ্রকার গুরুতর মে বের এই দণ্ড!  
নীলের জেলায় এক আইন ৭০ টপা ব্যয়?

উক্ত পত্র দ্বারা প্রায়, যাউতেছে, ঢাকার  
চোরেরা কোরাবদম দাবা গৃহস্থগিকে আট-  
কন করিয়া চুরি করিতে আরম্ভ করিয়াছে।  
তবে বিমান চৌক হল।

বিশ্বপেট্রিষ্ট মিকাসংক্রান্ত ডিপার্টমেন্টে  
দেব প্রতি গবর্নমেন্টের অননুমতিতঃ বিলম্ব  
প্রদত্ত করিয়া, অক্ষপ করিয়াছেন। তারত-  
বর্গী সঙ্গ ও এদেশীয়দিগের শিক্ষা কার্যে  
তাৎক্ষণিক মনোযোগী নহেন। তাহারা মনোযোগী  
হইলে এ ডিপার্টমেন্টের অনেক মোহ  
সংলগ্ন হইতে পারে।

১১ এ প্রাক-মজদুর  
বণিক সম্মেলন টেলিগ্রাফিকেলি  
খিত ইউরোপীয় সমাচার প্রাপ্ত হইয়াছেন।  
মণ্ডন ১৭ ই জুলাই। টংগাটীর দুর্গ সুরক্ষা  
দৃঢ়তর করিবার বিধ কনকন হাউসের প্রায়  
হইয়াছে।

রুমীরের বিকট ইমানিট একক ইমানি  
রান্না বনিয়া খোকার করিয়াছেন।

১২ চারলস উড লেড মীট্রের আ-  
বাদের হিসাবের প্রতি মোকাবেলা করাতে  
তিনি খীয় পদ ত্যাগ করিয়াছেন।

নিউইয়র্ক ১৭ই জুলাই। রিচমন্ডের নিকটে  
কয়েকটি ভলকন যুদ্ধ হইয়াছে। ২৬ এ জন  
অবধি সাতদিন পর্যন্ত যুদ্ধ হয়। এই যুদ্ধের  
শেষে মাকিনসকে পরাজিত হইয়া ৮৭ ফ্রোশ  
পশ্চাদগমন করিতে হইয়াছে। তাহার বক্তব্য  
যুদ্ধব্যয় ২৫ টি কানাম ও অনেক বৈদ্য বিলাফ-  
হস্তে পতিত হইয়াছে।

গবর্নমেন্টের সেনারা জেহস নদের বিস্তারিত  
কামানের তাহাজের দ্বারা আক্রমণ করিয়া  
পশ্চাদগমন করিয়াছে।

সভাপতি লিঙ্কলন আর তিন লক্ষ টসম্য  
চাতিয়াছেন। চারলসটনের আক্রমণ ত্যাগ  
করা হইয়াছে।

কিনিক অবগণ করিয়াছেন বিরোজশাহ  
যথার্থই সুলতান আনের নিগিরে অবস্থিত  
করিতেছেন। ইহার পূর্বে বিরোজশাহ সেনা  
লে বৃত্ত হইয়াছেন শুধু গিরাহিল। দুই শত  
বৎসর পূর্বে ইংলণ্ডের লোকদিগের এই  
বিবাস ছিল, তাইনের বিজালের মতটি জীবন  
আছে, বিরোজ সাহ সেই এক প্রকার বিজা-  
ল হইবেন!!!

উক্ত পত্রের এক জন পত্র প্রেরক বলেন,  
ভাবতর্ককে বেঞ্চ ধারে প্রায় বিক্রয়ের রীতি  
আছে, একপ আর কোন স্থানে নাই। কলি-  
কাতার বাবর্ডীয় ইউরোপীয় ও ফিরিঙ্গি বাহ্য  
আড়বর দেয়াইবার নিমিত্ত কর্ত্ত করিয়া বৃত্ত  
মাত্রী করেন। এই অনিষ্ট নিবারণ পত্র  
প্রেরক ধারে প্রায় বিক্রয়ের প্রথা উঠাইয়া  
দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। আপনি সাংবাদ  
না হইয়া ধারের দোষ দিলে কি হইবে?

উক্ত পত্র উক্ত পক্ষিপালনে চিত্রপ্রা-  
বন্দোবস্তের প্রতিবাদ করিয়াছেন।



মতে এই বন্দোবস্ত খারাপ গবর্ণমেন্টের কতি  
কটবে। কিন্তু ও টাইমস অব ইণ্ডিয়া উভ  
য়েই এই আবেগ পড়িত হইয়াছেন। তুমির  
শাসন স্থিতি নিবন্ধন বাণিজ্য স্থিতি কি সাধারণ  
ভাণ্ডারের ও দেশের অপকারের হেতু নহে?

সিদ্ধমন্তীর আঁঠির পোপর বলেন, নও  
সরকার এক জন মুসলমান রাজস্ব সংক্রান্ত  
কর্মচারী তত্ত্বাবধি হিন্দুদিগের উপর অত্যন্ত  
অত্যাচার আরম্ভ করিয়াছে। ত হিন্দুদিগের  
বাগীতে ও কুপের নিকটে গোমালস রাখিয়া  
দেয়। কোন মুসলমানের নামে কোন হিন্দু  
নালিশ করিলে তাহা গ্রাহ্য হয় না। মধ্যে  
মধ্যে দুই এক সহস্র মুসলমান হিন্দুদিগের  
বাগী কুঠ করিয়া নানা প্রকার অপমান করিয়া  
থাকে। প্রায় ৩০০ হিন্দু একত্র হইয়া তাহার  
প্রতি নালিশ করিয়াছেন। এই ব্যক্তি গুজনাটে  
র লোক। একজন সিবিলাইটের সহায়ে এই  
কর্ম পাইয়া তাঁহার ভরসা তাহার এইরূপ  
অত্যাচারকারিতা হ্রাস হইয়াছে। নীলকর  
পের যে এত অত্যাচার দেখা যায়, অনেক  
স্থলে সিবিলাইটের সাহায্য তাহার অন্যতর  
প্রধান কারণ বলিয়া প্রতিগণিত হয়।

উক্ত পত্র প্রকাশ করিয়াছেন সর বার্টল  
মিয়ার শীর্ষ সিদ্ধমন্তী মর্শন করিবেন। আঁঠি  
সাহেব বেকন নদীরা ও বন্দোবস্তের লোকের  
ও বীভন সাহেব ভাগলপুরের লোকের প্রিয়  
পাত্র হইয়াছেন, সর বার্টল কিংবদন্ত সেইকরা  
সিদ্ধমন্তীর প্রিয় হইয়াছেন।

নিম্নলিখিত ইটরোপীয় আফিসর ও সেন  
গণ ইংলণ্ড হইতে ভারতবর্ষে আসিতেছে :-

| আফিসর        | সেনা |
|--------------|------|
| ২. জর্জেশ ৪৭ | ২০৭৬ |
| মাজাজে ৮     | ৭০০  |
| খোখাইয়ে ২৭  | ১১৩৭ |
| করাচিতে ৮    | ৭০০  |
| মোট ৮৩       | ৭০০  |

এইসে সিদ্ধান্ত হইতেছে তাৎপর্য  
এ সেনার প্রয়োজন আছে কিনা? গানস  
বেদনে ও অনিরাহিন্য এখানে ইটরোপীয়  
সেনার আর আবশ্যক নাই। আগের বন্দোবস্ত  
গার্ডের হস্তগোলে সর্ব হইবে?

কিন্তু সার্টের মর্শন এক ব্যক্তি এজন  
কর্মচারী জন কর্মচারীর

শেষতঃ ভগলাস সাহেবের অনবদ্যতা ও  
অযোগ্যতার বিষয়ে প্রধান বিচারপতির নিক  
টে এক আবেদন করেন। গত শনিবারে  
সেউলিয়াদিগের বিচার হইবার সময়ে সর  
মর্শাট ওয়েলস্ তাঁহাকে প্রায় ৭ মিতে  
বলিয়াছেন। ভগলাস সাহেব অচপাতিত,  
তথাপি সর মর্শাট ওয়েলস্ কিসাবে প্রমা  
ণ প্রদান করিবেন আশাশ্রিত শনিবার এ  
বিষয় স্থির হইবে।

ঢাকাবার্তা প্রকাশিকা বলেন তত্রতা জজ  
আমলাগণের উৎকোচ লওয়া বন্ধ করিবার  
চেষ্টা আছেন। বানভীণ পুরাতন কর্মচারী-  
কে পেন্সন নিগ্ধা বিদায় না দিলে ১০০ অধি  
কতর বেতনে কৃতবিদ্য লোকদিগকে নিযুক্ত  
না করিলে এ চেষ্টা রূপা ইহবে।

২২এ আবেদন বুধবার।

সম্প্রতি রাজ্যের এক জন নিমিত্ত  
নেব কন্যার বিবাহ সময়ে এক ৭ শ্রীযামে  
একজন জনমুখস যে ১২ টি মর্শাট পুট বাক্য  
বলি দেওয়া হইবে। তিনিমিত্ত তত্ত্বাবধি  
র লোক হইবে পালান করে। বিবাহ হইলে  
ত হারা গৃহে প্রত্যাগমন করিয়াছে। ইংরা-  
জেরা যে কিরণ শোক, এতদেশ লোকের  
খ্যাতি ও তাহা জানিতে পারিলেনা, তথাপি  
আমাদিগের রাজপুত্রেরা উৎকোচ প্রদানীতে  
সাধারণের শিখা দান চেষ্টা করিবেন না।  
এই বিষয়ে তাঁহাদিগের যত মিতব্যয়িতা  
অনার্যসলতা গুরুমহাশয়দিগের উপরেই তাঁ  
হাদিগের আগে দৃষ্টি পড়ে।

ঢাকার ইটরোপীয়ান রেজিমেণ্টের লেপ্ট-  
নন্ট মাকনেয়ারকে কোন অপরাধে বন্দী করিয়া  
কলিহাতার সাধারণ বিচারালয়ে বিচারের  
জন্য আনাগিয়া। তিনি শারাগার হইতে প-  
লায়ন করিয়াছেন। এখন কি কারাগার  
প্রাচীর এত অশক্ত হইয়াছে? খাজ প্রসঙ্গী  
আছে সন্দেহ নাই।

ভগলাস হইতে সংবাদ আসিয়াছে তত্রতা  
একটি বিধমতে তাঁহাব কনিষ্ঠার তাহার মৃত  
পতির কলিকতার আরোহণ করান হইয়া-  
ছে। তাহার মৃত্যুখেরা মৃত হইয়াছে।

লুনা গেল, ৪ঠা আগষ্ট বারু জরুরক  
মুখোপাধ্যায়ের মোকদ্দমা প্রিবি কোর্টিলে  
প্রদানিত হইবার কথা আছে।

ইন্ডিয়ান ক্যান্সন বলেন মোসাইয়ের মি-  
ক্কাখ্যের প্রিভেটের হার্মিগকে  
মি. ক্যান্সন গৃহে আবেদন করিতে ইচ্ছা না।  
মি. ক্যান্সন গৃহে হার্মিগের মনোমালিন্য দূর  
হইয়া পাছে সর্বত্র সমব্যবহার প্রদত্ত জন্ম,  
এই ভয়ে কি উক্ত ডিরেক্টর হুতা লটখ  
বাইতে যেন না শিখা সংক্রান্ত কাণ্ডের  
ডিরেক্টরের ইচ্ছা সাধ্য বটে

ডাক কর্মচ রিগা মধ্যে মধ্যে সামান্য  
পামফ্লেট লফল ও পুস্তকের ডাকে প্রেরণ করে-  
ন। তিনিমিত্ত অনেকের অন্তর্বিধা হয়। সম্রা  
তি পোর্টমার্টের জেনরল সাহেব আশা দিগ-  
ছেন, চরভোগার স্থান যে কোন পুস্তক  
হইবে, তাহা সংবাদ পত্রের ডাক প্রেরণ  
করা হইবে এই আশা প্রত্যাশিত হয়,  
এই আশাদিগের মনোবধ।

কিনিক পত্র বলেন, ত্রিপুরার রাজাব  
মৃত্যু হইয়াছে। এই রাজা আতশয্য ইতি  
পরায়ণ স্তরাসক্ত ছিলেন। একজন গোষ্ঠ  
মি. রাজা শাসন ও প্রায় শীঘ্র করিয়া আ-  
সিতেছেন।

উক্ত পত্র আরও বলেন ভারতবর্ষের সব-  
নামেই রাজা প্রেসার নারায়ণ দেবকে বুঝসি  
বাদের নারায়ণের নিকট হিসাব দিবার আশা  
সিদ্ধাছেন। আমাদিগের বরাবর এই আশা,  
জান হইতেছিল, প্রেসার নারায়ণ মৃত্যু হইয়া  
নবাবের উপর এত কমতা প্রকাশ করিত  
দিকপে মাফসী হইলেন।

মহারাজী য ইচ্ছা প্রকাশ বাবু তারকনাথ  
সেনের ২৩ পরগণার প্রতিনিধি জজের পদা-  
তিবেকের হিসাবে বিশেষ আশ্রয় প্রদান ক-  
রিয়া বোখাই গবর্ণমেন্টকে বলদেশীয় গবর্ণমে-  
ন্টের অনুসরণ করিতে অনুরোধ করিয়াছেন।  
তিনি বলেন এতদেশীয়দিগকে উচ্চতর পদ  
দিবার বিষয়ে যোগসেরা ইংরাজ মিগের ম-  
পেকা অধিক ধনাত্মক প্রকাশ করিয়াছেন।  
ইংরাজ মিগের অন্যান্যিও আকবরের নায়  
শাসন প্রণালী শিখা করিতে বাধী আছে।

শ্রীটের পে মার্টের কাণ্ডের মেরি স বিচা-  
রে তাহা হইয়া পলায়ন করিয়াছেন। সেনা-  
মলে একপে বড় বড় লোকের আবির্ভাব  
দেখা হইতেছে।

রেলুই ইন্টারন্যাশনাল একটী বৃত্ত  
আজকের কথা লিখিত আছে। একজন লোক  
গীতার হুল করিতে তাহাকে চিকিৎসার  
প্রণ কবিরাজ আত্মা কর। সে তাহা অগ্রা-  
করিয়া কয়েক জন সহচরের সহায়ত রুতি  
জন আকিসরকে খুঁত ও রক্ত করে। তদু-  
তে কয়েক জন ইউরোপীয় সেনা আগিয়া  
কিগরকিগকে মুক্ত ও বিদ্রোহীদিগকে রক্ত  
রিয়াছে। এই সংবাদ বহি বখাৰ হয় দে-  
। বাইতেছে, কর্মচারিগণের পরস্পরের  
পরে একটা শাসন স্থাপনা আছে তাহা  
নে তম হইতেছে।

বঙ্গদেশ বিদ্রোহী ভূটানের নিকটে খুঁত  
ইয়াছে। তাহার মণিপুরের রাজা চাক্রীদি  
ন হকে পদচ্যুত করিতে আগিয়া আগিয়া  
ত হইয়াছে। আমরা বোধকরি তাহার  
ট্রান্সের বিদ্রোহী মিলাই।

সুনা গেল পরবণী দাসী (বাসবধি কন্যা)  
গাইব পাড়ার বিদ্যালয়ের অন্য প্রতিমানে  
টাকা চাঁদা দিবেন অধীকার করিয়াছেন।  
গী বর্ষমণী পঞ্চমণী প্রভৃতি কয়েক জন স্ত্রী  
লাক বিদ্যা বিসয়ে সবিশেষ উৎসাহ দিত-  
ছেন।

২৩ জুলাই রুপাতিয়া।  
কামিনী সুবিখ্যাত বিদ্রোহী ও দস্যু গণে  
সিংহ হত হইয়াছে। কাপ্তেন ওয়াশ হঠাৎ  
তাহাকে আক্রমণ করিয়া কয়েক জন সহচর  
হত বধ করিয়াছেন।

হায়দরাবাদের নবীন খাঁর রাজ্য চালাইবার  
পক্রম করিতেছেন। তাহার বেগম ও দা-  
গিগের অন্য সন্তান তাঁহার সবিধল রৌপ্য  
প্রতিজ্ঞা করা হইয়াছে।

লাল জল দক্ষিণে ১২ লাখ চাঁদের আত্মা  
দিয়াছেন।

যদিগসে গড়নে ৩, ৭,০০০ লোক আছে।  
হার ২০০ ২,২৫ ০০০ ভারতবর্ষীয়। তাহার  
০,০০০ মাত্র জল গ্রহণ করিয়াছে। ফলতঃ  
পানি বেশিকের সংখ্যাটি অধিক।

এতর পশ্চিমাঞ্চল পঞ্চাবে গত বৎসরে  
নিজে ১,০৭,৭৫,০০০ টাকা শুল্ক  
প আত্মা হইয়াছে। পূর্বা বৎসর অপেক্ষা  
এক টাকা অধিক দেখা হইতেছে। বে

ইলওয়েসে কত হইবে তাহা আশাশিগের  
জানিতে পারিল

কাপ্তেন শালিস বোম্বাইনগরে খুঁত হই-  
য়াছেন। অপর দ্বারে তিনি পলাতক হইয়া  
ছিলেন।

ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্টে কিয় উৎসাহী সনু-  
কের রাজ্য লটতে অসম্মত হইয়াছেন।  
কালের এই এক সুযোগ।

কাট্টে টি আইন ক্রমঃ আপে আপে প্র-  
চলিত হইতেছে : ভারতবর্ষীয় ব্যাপক  
সভা শীঘ্র মধ্য ভারতবর্ষীয় পাবলিক শার্কা ও  
রেলওয়ের মজুরদিগের নিষিদ্ধ এই প্রকার  
একটি আটন করিবেন। সর্বসাধারণ দাতি  
বেন ইহা হুচের অগ্রা ০.০০ দিগে শেষে দাতি  
আছে।

বোন বাকি বলেন "ঐচ্ছিকারীরা  
মল ইউরোপীয় সেনা দ্বারের প্রধান সনু-  
রী নহেন? হুয়াই হিলি কলিকাতায় আসি-  
বার পূর্বে কয়েক জন বাকিষ্টন আবেদন করি-  
য়াছেন তাহার প্রথম বিচার ঘেন শোভনে না  
হয়। কেন তা জানা যশোহরে হইলে অনেক  
অপত্তনীয় প্রশ্ন প ওয়া বাটবে।

গত শুক্রবার শ্রীধামপুরের নিম্নে তাহা  
ইতি কবিসনবের অধীনস্থ এক খানি বাসী  
মেকার খেলার তাতিয়া স্মরণোৎসবের  
মুহূর্ত হইয়াছে।

একত অনশ্রুতি প্রদা অ্য ওয়েলস আ-  
গামি শান্তকালে ভারতবর্ষ দর্শন করিতে আ-  
সিবেন। আশা করিয়া সন্দেহ নাই।

শ্রীধামপুরের ট্রেন মার্টের বাকান (এক  
জন টোরাড) ৩০০ টাকা লট ৩২০ টকা  
তহব্বপ কবিতা পলায়ন করিয়া গাভায় খুঁত  
হইয়াছে। ঐচ্ছিকারীদিগের এক সংবাদ পত্র  
বলেন "উক্ত স্ত্রীদিগের ৮০ টাকা মাত্র বেতন  
দেওয়াতে সে এই কাব্য কবিতাছে। গতএক  
ইংলওয়ে কোম্পানিরই দেনা বলিতে হইবে।  
ভারতবর্ষীয় বসিগের "এলাট" অসম্মত।  
"জালকারিতা প্রভৃতিবাহির হইয়া পড়ে।

বঙ্গদেশীয় ব্যাঙ্কের অধ্যক্ষেরা ৩৩০০০০  
সেক্রেটারি ডিক্লিন সাহেবকে ১৫০০ গিনি  
পুরস্কার দিয়াছেন। এই পুরস্কার লোপ্য পাঞ্চে  
প্রদত্ত হইয়াছে।

মাজাজ এখিদিগর বলেন, "জাতিগের  
রাচার সমুদায় অলকারাদি প্রত্যাশন করা  
হইবে। কেবল কয়েকটি বীরক দ্বাখ হইতে  
হে। কেন? সে ওলি ভাল বলিয়া না কি  
লইতে হইলে সকল লওয়া কর্তব্য। অতঃ  
অতিশয় মীচামুতা প্রকাশ হয়।

ইউনিয়ন কবের মুহূর্ত হইয়াছে। এই  
তা ইউরোপীয় ও এতদেশীয়দিগের সৌখ-  
দ্য বর্গদের জন্য হয়। কিন্তু সে অতীর্ষ নিম্ন  
হইল না। আমাদিগের জাত্যাকিমান ও ইউ-  
রোপীয়দিগের অহংকার না কবিলে পরস্প-  
রের মিলন হইবে না।

মকমলাইট গ্রহণ করিয়াছেন পোস্টারার  
র সেমাণতি সর সিডনি কটন খীর পদ ত্যা-  
গ কবিতোছেন।

কাবুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে আশীর  
দোস্ত বঙ্গম হেরাটের ৭৫ কোশ দূরে অব-  
স্থিতি করিতেছেন।

সেও "অব ইতিয়া বলেন" এক দান দাবী  
ইলে বাঙালীরা সমুদায় খুঁতন দেখিয়া এক  
কালে ক্ষঃস হইবেন।" জ.মাদিগের বর্তমান  
ভীকরণ অনৈক্যতা ও কুসংস্কারের বিপর-  
বিসেকনা করিতে একথা অসম্মত বোধ  
হয় না।

গত কল্য একচেত্ন গৃহে নিম্নলিখিত আ-  
কিকেন বিক্রীত হইয়াছে—

| সিদ্ধক             | মূল্য    |
|--------------------|----------|
| বেহ রের ১০-৫       | ১৫,৭৮ ২৫ |
| কাশীর ১১৩৫         | ১৫,২৫,৩০ |
| বোহারেব অইকেন গড়ে | ১৫৭০১/৮  |
| ৫ কাশীর অতিভেন     | ২৩৪০৮    |

বিক্রীত হইয়াছে। তাখাপি সর চারলস উ-  
জকুশানের ভয় করেন।  
ভাকুর হরণ রক্ত নাশক একজন ইউরে-  
পীয় ২৫০ টাকার নোট চুরি করিয়া তাহা  
জাল স্বাক্ষর করিতে তাহাকে সেসিধনে সম-  
পণ করা হইয়াছে।

২৪ জুলাই শুক্রবার।  
নিরুপ অতুত ঘটনাটি কোন সান-  
বন্ধুর নিকট গ্রহণ করিয়া অতিশয় বিস্ময়  
পর হইল। চকিগণরগণার অশ্রুপাত  
ধবধি নামক পত্রীতে এক সংগোপের



ଆମେ ଏହାକୁ କିଏ ।

# সোমপ্রকাশ

“প্রবর্তনা মজলিসিনাথ পার্শ্বঃ সমস্তনী অনিসকনী ন হৌতনা।”

৪ ভাগ।  
৩২ পৃষ্ঠা।

{ সন ১২৬২। ৬ আশ্বিন। ইং ১৮৬২। ২১ জুলাই }

দৈনিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

বর্তমান হটেল বঙ্গভাষা কবির ত্যাগচরণ  
স প্রণীত সমগ্র কাব্য নামে যে এক মনোহর  
এক প্রচারিত হইয়াছিল তাহা এইক্ষণে  
পূর্ণাঙ্গ হওয়াতে আমি তাহা পুনর্প্রকাশিত  
করিয়া সাধারণ জনগণের গোচরার্থে প্রকাশ  
করিতেছি। বঙ্গভাষা কবির প্রসঙ্গিত ইহা  
এক মনোহর পাঠ করিতে সন্তোষ  
প্রসূত হইতে হয়। বঙ্গভাষা কবির  
এক পরিচয় ও পরিবর্তিত হইয়াছে যে  
কল কল অসংলগ্ন ও অপরিচিত ছিল, এ  
কল স্থান, সংলগ্ন সন্তোষিত কবিয়া  
এতে সাধ্যমত প্রয়ান পাওয়াই। এই পুস্তক  
অন্যত্র তিন শত পৃষ্ঠ হইবেক। ইহার মূল্য  
১০ টাকা, আকরকরিত প্রতি ১।০। প্রত্যেক  
স্বাক্ষরকারী পেমেন্টের আদ্যে আমার  
নিকট অঙ্গসন্ধান করিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ইনবীনচন্দ্র দত্ত।

সোমপ্রকাশ।

৩ই আশ্বিন সোমবার।

ইনকম টাকার খতিয়ান অত্যন্ত।

অর্থরক্ষক হওয়াতে প্রজ্ঞাপনের নিক  
হইতে কিছু কিছু লইয়া অসম্মতি দূর  
করিবার উদ্দেশে গবর্ণমেন্ট এ দেশে ইন  
কম টাকার প্রবর্তিত করিয়াছেন, কিন্তু কর্ম  
কারিরা অতি দ্রুত উপন্যাসপ্রসিক  
গময় অণ্ড এসবকারিণী হইসীর প্রাণ  
ধের ন্যায় একবারে প্রজ্ঞাপনের আরম্ভ  
করাণের চেষ্টায় আছেন। আমরা পূর্বে  
অর্থরক্ষারিদিগের এই চেষ্টার কবেকটি  
উদাহরণ প্রদর্শন করিয়াছি, সম্ভ্রান্তি কুমার

খালি, পাবনা প্রভৃতির মহাজনগণ এতৎ  
সংক্রান্ত যে এক দ্বারি পত্র পাঠাইয়াছেন  
নিম্নে প্রকটিত হইল, তাহা দর্শন করিলে  
পাঠকগণ খাৎ একটি উৎকৃষ্ট উদাহরণ  
প্রাপ্ত হইবেন।

মহাশয় জেলা মহাজনগণ ও পাবনার অধীন  
কুমারখালী প্রভৃতি স্থানের মহাজনগণ প্রথম  
বৎসরে ইনকম টাকার কবন প্রাপ্ত হইলে  
উদাহরণের বে যে সমস্ত প্রাপ্তি প্রদান কর  
ণের আর একত্র করিয়া উক্ত বৎসরে লিখিয়া  
দিয়া আসেসর মহাপরিদেগের নিকট অর্পণ  
করেন। তাহাতে প্রাপ্ত অর্থ ও অংশভাগী  
কর্মচারীদিগের লাভের টাকা লাভ যে না  
মের কার্যব্যয় তাহার নিজের যে বখাৰ্জ আর  
তাহাই লিখিত হয়। জেলার কালেক্টর সাহেব  
এ রিটার্নের লিখিত আয়ের উপর কিছু কিছু  
অতিরিক্ত খরচ আসেসরদিগের প্রতি আ  
দায়ের তার অর্পণ করেন। মহাজনেরা তবি  
বৎসরে আপনাদিগের প্রাপ্তি অন্যত্র হইতেছে ন  
লিয়া আপত্তি উপস্থাপন করিলে তাহা অগ্রাহ  
হইয়া কালেক্টর সাহেবের নির্ধারিত টাকার আ  
লয় হইয়া তাহার পার্সিকিট ও রসিদ পাও  
য়া হয়। মিনাজপুর ও কলিকাতা প্রভৃতি যে  
যে স্থানে মহাজনদিগের গদি আছে, তথাকার  
আসেসরদিগের নিকট এই সকল পার্সিকিট  
ও রসিদ প্রেরণ করা হয়, কিন্তু কলিকাতার  
আসেসর কলিকাতার বাণিজ্যের আর পাবনা  
প্রভৃতি স্থানে প্রদানের প্রমাণ স্বরূপ এই সক  
ল আসেসরের দত্ত পার্সিকিট ও রসিদ  
অগ্রাহ করিয়া কেবল মহাজনদিগের বাজার  
মন্ত্রের উপর দৃষ্টি করিয়া অন্যত্রকণে কা

তার নিকট ৫০০ কাহার নিকট ৭০০ কাহার  
নিকট ১১০০ শত টাকা পর্যন্ত আদায় করিয়া  
লইয়াছেন। ওদিকে মিনাজপুরের কালেক্টর  
সাহেব মহাশয়ও তথায় প্রেরিত এই সকল  
পার্সিকিট ও রসিদ অগ্রাহ করিয়া উক্ত  
স্থানের প্রতি মোকামে ১০০ শত টাকা পল্লি  
মাণে কাহার নিকট ২০০ কাহার নিকট ২৫০  
কাহার নিকট ৩০০০ আদায় টাকা বস পূর্ণক  
আদায় করিয়াছেন। ইহার মধ্যে আরো কিছু  
বিশেষ অভিচার আছে। যে সকল মহাজন  
উল্লিখিত টাকা সহসা সংগ্রহ করিয়া বিক্রয়  
অসমর্থ হইয়াছিলেন, তাঁহাদিগের কাহার  
৩০০০ হাজার টাকা টাকার খাৰ্জ হয়, তাহার  
প্রতি শতে ১০ টাকা হিসাবে খরচ খরচিয়া  
৩০০০ শত টাকা পাওরানী করিয়া ৩০০০  
শত বৎস চাউল নীলামে বিক্রয় করিয়া  
রাছেন। উক্ত চাউল পরিমাণে ৪০  
বৎস, খরচিয়া ৩০০০ শতট।। বাহারের সমুদায়  
বিসয়ের আর খরচিয়া ৪০০। ৫০০ অথবা ৭০০  
শত টাকা টাকার নির্ধারিত করা হয়,  
তাহাদিগের নিকট হইতে প্রায় ৫০০০  
হাজার টাকা অন্যত্রকণে আদায় করিয়া  
লওয়া হইয়াছে। বিশেষতঃ মিনাজপুরের  
চাউলের বস্তা নীলাম করিয়া এই টাকা আদা  
য় করাতে, মহাজন লোকেরা নিতান্ত হতাশ  
হইয়াছে। এক লক্ষ পচিশ হাজার টাকা আর  
না হইলে ৫০০০ হাজার টাকা টাকার হইতে  
পারে না। কিন্তু বাহার এক লক্ষ পচিশ হা  
জার টাকা মাত্র মূলধন, তাহার নিকট হইতে  
৫০০০ হাজার টাকা টাকার আদায় করিয়া ল  
ওয়া হইয়াছে, ইহার অপেক্ষা অন্যত্র আর  
কি আছে? মহাজনি কারুবানের পদ্ধতি এই।



कुमार खानि पानना  
अभितिन महाकुमार

অতঃপর বাণিজ্য-  
ব্যবসায় সুবিধা প্রদে-  
য় করিলেন !

दिनांक दिना - मकर ७ ३

যেই অক্ষয় ন

লাড়' যেকলি ২৮ ৮৮ '৮৮ ৮৮

যেক ব্যক্তির সম্বন্ধেই, চরিত্র উৎকর্ষের  
অধীশ্বর চতুর্থ উল্লেখ্য। আমরা মনে  
সত্য ইংলণ্ডের ১৮৫০ খ্রীঃ  
বছরের প্রথম ১৮৫০ খ্রীঃ পাইকার অধি-  
কার দেন। ১৮৫০ খ্রীঃ ১৮৫০ খ্রীঃ  
শীর্ষদিকগত চিত্রিত চিত্রিতসকলের পদ ল-  
ভেব অধিকার ১৮৫০ খ্রীঃ ১৮৫০ খ্রীঃ অ-  
ধিকার মূলতঃ ১৮৫০ খ্রীঃ ১৮৫০ খ্রীঃ অধিকার কেব-  
ল যে দুটি ভূত করা হয় একপক্ষে, সি-  
বিল সর্ভিসে প্রত্যাধিকার দান কপ ১৮৫০  
মেশীর্ষদিকগত অধিকার একটি কক্ষীয় দ্বারা উ-  
ল্লেখিত ববিদ্যে ওয়া হয়। ১৮৫০ খ্রীঃ সকল স্বত্ব  
অধিকারের মধ্যে চিত্রিত চিত্রিতসক পদ  
লাভের অধিকারকেই আমরা প্রধান জ্ঞান  
করিয়া থাকি। মান, সমুদ্র ও বেতন প্রকৃ-  
তির বিষয় চিত্রিত করিলে সিবিলাসিয়ান পদ  
আমাদিগের অত্যন্ত আদরের সম্বন্ধ নাই,  
কিন্তু উক্ত চিত্রিতসক পদ ইহা অপেক্ষা স-  
হেপকারক। ভারতবর্ষে রাজনীতিজ্ঞের অ-  
ভাব নাই। আইন বিষয়ে এতদেশীয় অধি-  
কাংশ অচিত্রিত কর্মচারী সিবিলাসিয়ানদি-  
গের অপেক্ষা নিষ্কণ্ট নহেন। সত্য কথা  
বলিতে কি, আমাদিগের অনেক ভ্রমুটি  
মাজিষ্ট্রেট ও সদর আলা যেভাবে কাজ  
করিয়া লক্ষ প্রতিষ্ঠ ও লোকের বিশ্বাস  
ভাঙন হইয়াছেন, অনেক সিবিলাসিয়ান সে-  
কপ হইতে পারেন নাই। কিন্তু বিজ্ঞান  
শাস্ত্রের বিষয়ে একপক্ষে ১৮৫০ খ্রীঃ বি-  
জ্ঞান শাস্ত্রের অধিকতর উন্নতি হয় নাই।  
অতঃ চিত্রিতসা বিদ্যালয় সকলে অল্প  
মাত্রাই শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। ভারত  
বর্ষের কোন স্থানে এডিনবর্গ অথবা পারি-  
সেব ন্যায় চিত্রিতসা বিদ্যালয় অনুশীলন

হটতেছে - এ দেশের কম জন চিকিৎসা  
 উদ্ভাবনী শক্তি প্রদর্শন করিয়া কোন  
 জনবিধ বিদ্যেব আবিষ্কৃত্য করিয়াছেন  
 নিজ্ঞানশাস্ত্র কেন্ বিধে তাঁহানিগে  
 নি-টে স্বামী মহিহাছেন - এ দেশে প্রা  
 তাৎপ্য সম্বন্ধে এক কথেন, এ কথ  
 অকিঞ্চিদ্র। বিজ্ঞান শাস্ত্র অধিক  
 অনুশীলন হইতেছে না, বলিদাত্ত প্রাতি  
 গুণের দিয়া দেখা যাইতেছে না ।

১ দেসীরাঙ্গিণের চিত্তিত্ব চিত্তিৎস  
পদ সাত পথ অক্লান্ত থাকিলে উৎসাহ  
নামে শিক্ষা করিয়া চিত্তিৎস শাস্ত্র স  
শেষ দুঃপন্ন হইবেন, আমাদিগের  
এক মডেল প্রাণা ছিল। কিন্তু সেনা  
প্রবেশাধিকার নিষেধ হওয়াতে আম  
নিঃস হতাশ ও ভয়ানক হইয়াছি  
এখন তাহাকে কেবল বিদ্যালয় হইয়া  
ইংল্যাণ্ডগমনার্থী হইবেন না, উক্ত  
অধিক মান ও অধিক বেতন হাক লোক  
বিদ্যা শিক্ষার একটা প্রাণা সেক্ষেত্রে  
করবে কেবল বিদ্যার জন্য বিদ্যা শিক্ষ  
করেন একটা লোক অতি শ্রান্ত।

যে দিন ভারতবর্ষীয় রাষ্ট্রকীর সেনা  
দল একত্রিত হইল, সেই দিনই আমাদের  
উল্লিখিত অধিকার হইতে বঞ্চিত হইয়া  
গেল। আরও উল্লিখিত : আমাদের  
গতকাল করিয়াছেন, তাঁহারা আমাদের  
গতকাল শাখারিক দোষকে উদ্ধার কারণ  
নিবেদন করেন। কিন্তু অনেক প্রমাণ  
ন চিহ্নিতক ৩ বিষয়ে যে : ত প্রদান  
রিয়াছেন, তদ্বারা উল্লিখিত বাক্যের  
লকত। সেই প্রতিপাদিত হইয়াছে। শরী  
রগত অপটুতা যদি প্রতিবন্ধক না হইল  
তবে আর কি অন্য প্রতিবন্ধক : তবে  
বর্ণভেদ প্রতিবন্ধক : ইংলণ্ডের  
৩ পত্র এ বিষয়ে আমাদের সহায়  
করিতেছে। উহাতে যেত, পীত, কৃষ্ণ  
লোহিত প্রভৃতি কোন বর্ণের কথা নাই  
তাল ইউরোপীয় দলে যেন না হইল,

# সোমপ্রকাশ

“মহর্ষিঃ প্রতিনিহিতায় পার্থিবঃ স্বরম্যন্তী যুগ্মিনমন্তী ন হীমন্তী।”

৪ ভাগ।  
৪০ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২ । ৩ ভাদ্র । ইং ১৮৮২ । ১৮ আগস্ট । }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

মকরলে সোমপ্রকাশ পত্র-  
খের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাঠিলে মকরলে সোম-  
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক  
মূল্য তাকনাশুল সমেত ১০ এবং সাপ্তাহিক  
টাকা নিকৃষ্ট আছে। যন মাসের গ্রামে  
অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকরলের  
ই কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা  
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই  
ইচ্ছা পূরিত হয়।

## বিজ্ঞাপন।

মুকবোধন্যাকরণ।

মুকবোধ সাধারণ বৈবরণ অক্ষরে  
মুদ্রিত হইয়া পটল প্রাপ্য বালেশ্বরের নিকটে  
মুকবোধ প্রকাশনারের দোকানে বিক্রয়  
হইতেছে। মূল্য ৫০ বাস আনা।

## বিজ্ঞাপন।

বাসবদত্তা।

৫ মনমোহন তর্কালঙ্কার কৃত পদ্ম বাস-  
বদত্তা আবশ্যক হইয়াছে। যিনি আমাকে  
হাব এক শত সংগ্রহ করিয়া দিতে পারিলেন  
আমাকে ৫ টাকা পারিতোষিক প্রদান করা  
হইবেক ইতি।

তারিখ ২৫ আশ্বিন ১২৬২ সাল } জীরাঙ্গদাস সেন  
সাহেব বরদহপুর

## বিজ্ঞাপন।

বঙ্গদেশের সকল লেটিং প্রকল্পের ও সমাচার  
এবং সাময়িক পত্রিকা পাঠ্য।  
বাহারী হাওলাত করিয়া বাঙ্গলা গ্রহ-  
নিত্তে মানস করেন তাহার নিয়ম লিখিত

নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের চাঁদা  
পুস্তকে স্বাক্ষর করিলে পুস্তকাদি হাওলাত  
দেওয়া যাউবেক।

১ম। গ্রন্থকালকে প্রতি গ্রন্থে আট আ-  
নার হিসাবে প্রতি মাসে চাঁদা দিতে হইবেক  
এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক,  
এক মাসের স্থান মূল্য গ্রহণ করা যাউবেক  
না।

২য়। এক মাসের অধিক কেহ কোন গ্রন্থ  
রাখিলে তাহাকে তাহার মূল্য দিতে হই-  
বেক।

৩য়। যিনি যে গ্রন্থের পুস্তক লইয়া  
যাউবেন, তাহা ১০ সেন্ট অথবা ২০ সেন্ট দি-  
তে হইবেক তাহার অমাপ্য করিলে পুস্তকের  
মূল্য দিতে হইবেক।

৪র্থ। অপরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তকের মূল্য  
জমা রাখিতে হইবে অথবা এক জন পরি-  
চিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক। তাহা  
হইলে তাহাকে পুস্তক হাওলাত দেওয়া যাউ-  
বেক।

৫ম। সমাচার ও সাময়িক পত্রিকা সকল  
আমাদিগের প্রকল্পের আদিয়া পাঠ করিলে  
কোন মূল্যই লাগিবেক না।

৬ম। তারিখ

নিউ ইংল্যান্ড লাইব্রেরি  
কলেজ স্ট্রীট নং ৮৩।

## সোমপ্রকাশ।

৩০ ভাদ্র সোমবার।

মকরলের কোটী আদায় ৩, ৫ মাসের  
ও প্রমাণ।

আমাদিগের রাজপুরুষেরা ভারতবর্ষ

যের হিত উদ্দেশ্য করিয়া যে সকল কাজ  
করেন, তাহা হইতে লোক মনোনিবেশ করি-  
বার দোষে তাহার অধিকাংশ কলোপধারণ  
হয় না। মকরলে ছোট আদায়ের স্থান  
একটি মহোপকারক কাণ্ড লক্ষ্যে রাই-  
কিছু বিচারপতির দোষে তাহা কলোপ  
কল প্রদান করা হুয়ে থাকুক, অর্থাৎ  
বিষয় কল উৎপাদন করিতেছে।

অন্য রকমেরোহিতোপরিভাসেবিধাশ্রয়  
যনং হুয়েহুত বদনমপূরি কারবা  
এই সমস্ত রয়ের আকর, ইহা হইতে  
লাভ হইবে এই আশা করিয়া ইহার সেবা  
করিলান, যন হুয়ে থাকুক, কারবারি  
হুখ পরিপূরিত হইল।

যখন ব্যবস্থাপক সত্যায় মকরলে  
ট আদায়ের প্রতিভার প্রদান লইয়া  
লোলন হয়, সেই সময়েই আমাদিগের  
হিলাম, যে সকল ব্যক্তি সমস্ত  
কাণ্ড করিয়া পরিপক ৩ লক্ষপ্রতি  
গ্রাহেন, সেই সেই ব্যক্তিকেই  
দান করা কর্তব্য, কিন্তু রাজপুরুষেরা  
ইহাদিগের প্রতি অতিশয় তত্ত্বমান হও-  
যাতে সকল স্থলে আমাদিগের মনোনিবেশ  
বিচারপতি নিয়োগ হয় নাই, তাহাতেই এ-  
কণে স্থানে স্থানে বহু অনর্থ ঘটিতেছে।  
আমরা যে এক খানি প্রেরিত পত্র পাই  
রাছি, তাহা আমাদিগের বক্তব্য সমর্থন  
করিতেছে। সে খানি নিম্নে প্রকটিত হইল।

মকরল! গ্রাউন্ডমাস্টার ও টেন্যান্টমাস্টার  
হুত চাহাআদিগের নীল প্রদান প্রদেশের প্রজা-

৩০৭



দ্রষ্টব্য হইতে উদ্ধার করিয়া দেও। এবং  
পক্ষীয় হুঁশ বিদ্যোচন চেষ্টায় লঙ্কাহেবের ক-  
সাম ও হিন্দুপেট্রিটের লেখনী খাম্বা সমু-  
দয় হুঁশ হইল! এক ছোট আদালত স্থাপিত হ-  
ওয়াতেই নীলকরদিগের পূর্ববৎ সৌখ্য ও  
অভ্যাচার পুনরাগমন করিয়াছে। যদি বাহু বা  
নীলকর মিত্র কিবা টমসন সাহেবেব ন্যায় নিব-  
পেক বিচারপতিগণ ছোট আদালত সলনের  
কক্ষের পক্ষে অতিবিস্তৃত হইতেন, আদালতিগণের  
এত হুঁশ হইত না এবং প্রজারা যে আত্ম-  
মত্ত উপাধীন করিয়াছিল তাহাও হারাইত না।  
যে একজন জন বারিটের বিচারপতিগণের নিয়াজি  
হইয়াছেন, তাহাও কুটিয়ার অল্প মহাসভা আদালত  
টেন্সল সাহেব সর্বত্র গুণে গুণায়িত। কিনাইমহেব  
লিখ্যাদি সাহেবেব সচিবতা মহাশয়ের অতিবিস্তৃত  
নাই। টেন্সল সাহেব তাঁহারও উপরে চলেন।  
ইনি স্বাভাৱি পক্ষপতিতা বিষয়ে সকলকে পরা-  
জয় করিয়াছেন। ইউরোপীয় যে মিথ্যা কহে  
ইহা তিনি আদালতেও বিচার করেন না। বিচার-  
স্থানে বসিয়া স্পষ্টই বলিয়া থাকেন যে সাহেব  
আজ কখন মিথ্যা কহ না। এরূপ বাচন স-  
ফল, তাহাও হইতে সক্ষমতার স্বার্থ বিচার হই-  
বার সম্ভাবনা কি? কোন নীলকর নালিশ উপ-  
স্থিত করিলে এক জন ইংরাজ সাক্ষী থাকিলেই  
সে সক্ষমতার নীলকরের নিশ্চয় জয় হয়।

উক্ত গুণগুণ মহোদয় এদেশীয় ও ইউরোপীয়  
উভয়ের সক্ষমতাতে একই আইনের ভিত্তিতে তথ্য  
করিয়া থাকেন! অত্যাচার হুঁশ নীলকর এক প্রজাব  
নায়ে, গাছ কাটিয়া লইয়াছে, বলিয়া তাহার  
হুঁশ পাইবার নালিশ করে। প্রতিবাদী প্রজা  
এই আপত্তি করিল, যে ১৪ আইনের ২ ধারায়  
সাহেবেব নালিশে ভাঙ্গি হুঁশিয়াছে। কিন্তু  
হুঁশ নীল পিটারপতি ১৮৮১ ১৩ আইনের ১৬  
ধারা খাটাইয়া প্রজাব তালিকার লিখিত মিনোন  
মি কেনি সাহেবের হুঁশ দেও, কেনি সাহেবেবের  
হুঁশে বাস এবং কেনি সাহেবের হুঁশে কাছাবিও  
করেন। ইহাও সহ্যতায় কেনি সাহেব অনেক  
প্রজার বিরুদ্ধে মিথ্যা নালিশ করিয়া 'পক্ষী পা-  
ইয়াছেন। কি আশ্চর্য্য! একটা ডব্বু গাছের হু-  
শ ৩০ টাকা! ইহা কি মহাশয় কখন এবং কবি-  
য়াছেন? কেনি সাহেব প্রত্যেক প্রামেব খানক-  
নাথো এখন প্রধান প্রজার নামে এই প্রজাব  
অন্যায় তালিকা প্রাপ্ত হওয়াতে প্রজারা হতাশ হ-  
ইয়া নীলের দায়ন স্বীকার করিয়াছে। স-  
ময় ও মহাশয়ের পাঠকবর্গ কেনি সাহেবেবের  
বিলম্ব জানেন নন্দেব মাই, 'কিন্তু তাঁহার শ-  
ব্দেব' প্রকাশ্যে সৌখ্য ও সাধারণের গোচর

হয় নাই। সাহেব অন্যায় করিয়া প্রজা সলনের  
পক্ষীয় হুঁশ হইতে থোক ধরিয়া সটকা ১০০০  
দিয়েছেন। অনেক প্রজার 'পক্ষী পা-ইয়া' গৌরব  
করিতে সাহেব ২০।১০ চাক ক-  
রিয়া দিয়াছেন। এতদ্বারা এক এক প্রজার 'প-  
ক্ষী কত' ৫ মিথ্যা নালিশ উপস্থিত হইয়া-  
ছিল। ওহাইমহেব, তাহা লিখিয়া 'মি কেনি সাহেব'  
প্রজাবিগের হুঁশ-গণন করিতে লাগিলেন। 'মি  
কেনি সাহেব' 'মি কেনি সাহেব' প্রজাবা 'মি কেনি সাহেব'  
কি মহাশয়! তাহাও সলনের, এই টেন্সল সাহেব  
হইয়া। অবশেষে আর সত্য করিতে না পারিয়া  
সহবেব সলনের 'কিটো' 'কিটো' 'কিটো'  
টেন্সল সাহেবের বিরুদ্ধে 'পক্ষী পা-ইয়া' ১০০০  
দিয়েছেন। কিন্তু 'পক্ষী পা-ইয়া' প্রজাব প্রা-  
দুষ্টিপা করিবেন 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব'  
করিয়া কোন প্রজাব 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব'  
কিন্তু 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব' 'পক্ষী পা-ইয়া'  
চলত হইতেন। প্রজাব 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব'  
প্রাথমিক, যাহা প্রজাবিগের 'কিটো' 'কিটো' 'কিটো'  
গণের প্রজাব কল্ল হুঁশ, দুর্ভাগ্যকে বক্ষা এবং 'পক্ষী পা-ইয়া'  
দিগের কর্তব্য কর্তব্য হুঁশ, তবে প্রজাবিগের 'পক্ষী পা-ইয়া'  
দনের প্রতি প্রতিবাদ করুন।

টেন্সল সাহেব কেনি সাহেবের হুঁশ  
বাস ও কাছারি করেন। এই কেনি সাহে-  
বের সক্তি প্রজাবিগের বিরোধ তত্ত্বার্থ  
টেন্সল মকসলে দিয়াছেন। কেনি সাহে-  
ব বাকী ও প্রজারা প্রতিবাদী। এরূপ  
কলে টেন্সলের কেনি সাহেব বাস ও কা-  
ছারি করা যে কোন রাজদ্বীপ আজ,  
বিধি অথবা যুক্তির অনুসারী। তাহা আ-  
দালতিগের বোধগম্য হইতেছে না। এবং  
মোট একপ অনতিজ্ঞা লোকদিগকে 'মি  
কেনি সাহেব' করিয়াছেন, ইহাও প্রজাবার 'পক্ষী পা-ইয়া' কে  
হইবেন।

আদালতিগের পত্র প্রেরক টেন্সলের  
বিষয়ে যেকপ লিখিয়াছেন, তাহা যদি  
সত্য হয় (ইহাও সত্যতা বিষয়ে সন্দেহ  
করিবার কারণ নাই, পত্র প্রেরক লিখি-  
য়াছেন, ইহা সপ্রমাণ করিয়া দিবেন)  
তবে বিচার কর্তব্য হুঁশ নবাবদিগের  
শাসিকার কালের বিচারকর্তাদিগের অ-  
পেক্ষা অধিকতর নির্দিষ্টকারক সলনের

নাই। উক্ত নবাবদিগের অধিকার কালে  
বিচার কর্তারা সাহেব সলনের প্রজাব স-  
রম্য করিয়াছেন, ইহাও অসাহেব সলনের  
করিতেছেন। বিচারপতির অবশিষ্ট ব্যব-  
হাব দেশের উন্নতির প্রধান প্রতিবন্ধক।  
যে দেশের প্রজাব স্বাধীনরাজি হইয়া  
কল্যাণি কাণ্ড করিতে সমর্থ না হয়, সে  
দেশের কখন উন্নতি হয় না। একপ ব্যব-  
হাব বাকী 'পক্ষী পা-ইয়া' নিতান্ত বিরোধী। জন  
ফোর্ট মিল লিখিয়াছেন 'মি কেনি সাহেব'  
এক প্রজাব এক প্রজাব অথবা এক প্রজাব  
সলনের 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব'  
অপর সম্প্রদায়ের ইহা সাধন করে, যাহা  
কতকগুলি প্রজাব অসাহেব চেকার এতি-  
রোধক হয় তাহা। বাকীশাহের হুঁশ যুক্তি  
নিশ্চয় বিরুদ্ধ, এই সকল আইন ও বা-  
বহুনা 'পক্ষী পা-ইয়া' দেশের সাধারণের  
উৎপাদন শাস্ত্র থাকে, তাহা করিয়া  
মায়। 'পক্ষী পা-ইয়া' 'মি কেনি সাহেব' 'পক্ষী পা-ইয়া'  
এ হুঁশে আইনের দোষ না থাকিলেও বি-  
চারপতির দোষে ব্যবহার দোষ জন্মি-  
য়াছে।

#### বিষয়বিবাহ।

আমরা জবাব করিয়া পরম আত্মীয়  
হইলাম। হুঁশ নীলকর অসাহেবী বী-  
সিংহ প্রামে ২৪ আবেগ শুক্রবার মহাসম-  
বোধে একটি বিবাহবিবাহ হইয়া গিয়া  
ছে। এই বীরসিংহ বিবাহবিবাহ প্রবর্তন  
ক্রিয়ুত ক্রমবচ্ছিন্ন বিদ্যাসাগরের বাসনা  
ন। ইতিপূর্বে এই প্রামের চতুর্দিকে  
অনেকোনা রামজীবনপুর প্রভৃতি নানান  
নে বিবাহ হইতেছিল, বীরসিংহ প্রামে  
এই প্রথম হুঁশপাত হইল। বীরসিংহ  
রাধানগর উড়পালা বজপুর লক্ষণপুর  
দুর্গাঙ্গী দীর্ঘগ্রাম মিশিকপুর গোবিন্দপুর  
প্রভৃতি প্রামেব সাধারণ তত্ত্বলোক স-  
হ হইয়া কর্তব্য সমাধ করিয়াছেন।

এ অঞ্চলে গত তিন বৎসরে কত

মে ২০ । ২২ টি বিবাহের বিবাহ হইয়াছে।  
কোন বিবাহেই একই সমারোহ  
একপ বহুগ্রামের সম্মতি ও বহু ভ্রম  
দ্বারা সমগম হয় নাই। বরের নাম  
যুত রামকৃষ্ণ পাঠক, বয়স ২১ বৎসর  
। এই ইহঁদের প্রথম বিবাহ। কন্যার নাম  
মতী কান্দিনী দেবী, ক্ষীরপাই নিবা  
সী জীবন্ত হারাধন চট্টোপাধ্যায়ের  
মা। পাঁচ বৎসর বয়সে চল্লুকোনানিবা  
। সীতারাম চৌধুরীর সন্তিত প্রথম  
বিবাহ হইয়া এই বৎসরেই বৈধব্য সম্বটে  
হয়। এক্ষণে কান্দিনীর বয়স্ক্রম ৯ নম্বর  
২২ সুর মাত্র। বিবেচনা করিতে গেলে অ  
পাি কান্দিনীর বিবাহের একুত বয়স  
নাই। এই বয়সের মধ্যে বিবাহ বৈধ  
সম্বটন ও পুনরায় বিবাহ হইল।

গবর্ণমেন্টের অধীন মিসনরিদিগের

কাঠার বিদ্যালয়ে সুশিক্ষা

চয়।

ভাবতর্থাযদিগের সমাজ, ধর্ম, রাজ্য ও  
সমগ্র প্রণালী প্রভৃতি যে যে বিষয়ে নিরুদ্বিগ্ন  
সন্দেহতা দুর্ভাগ্যের হইয়া থাকে, সে সমু  
দ্বয়গুলি এক কারণে পথ্যবসিত হইতে পারে;  
তাহা দুর্ভাগ্যের কারণ ও এক মাত্র উপায়  
নাই। বিদ্যালয়িকার অজাবই আমাদিগের  
ব্যবহৃত কারণ। আমাদিগের দেশের  
অংশে বিদ্যার সমধিক সমাদর হই  
যাচে, সে স্থলে হইতে কুসংস্কার প্রভৃতি  
লাগানোমুখ হইয়াছে। যে স্থলে তাহার  
মতাব, সেই স্থলেই নানা দোষের প্রভুত্ব।  
দি আমাদিগের কৃষকেরা লেখাপড়া জা  
নিত, তাহা হইলে কি তাহারা প্রত্যেক  
কৃষ্যধিকারী ও মীলকের দাস হইয়া  
পাকিত? অধ্যায় ও প্রথম জ্ঞেয় যদি প্রকৃত  
বিদ্যা হইতেন, আমাদিগের সামাজিক  
সমাজ কি জাতিও এদেশকে একপ ছর  
প্রভাব করিয়া স্থাপিত পারিত? ইংল  
ণ্ডের মহাপ্রভা কি আমাদিগের বখার্ব বহু

ও অধিকার দানে পরাধীন হইতে পারি  
তেন? কেবল এক বিদ্যালয়িকার অজাব কি  
আমাদিগের অমনেকা, ও সংক্রিয়া সাহ  
সাদি বিবাহের প্রধান কারণ নহে? এদেশ  
শেষ অধিকাংশ লোকে যদি কৃতবিদ্যা  
হইতেন, আমরা কি কানাড়ার ও অন্তরে  
লিয়ার উপনিবেশকারিদিগের দ্বারা সৌ  
ভাগ্যশালী হইতে পারিতাম না?

আমাদিগের গবর্ণমেন্ট ও আমরা এ  
বিষয়ে কত দূর কৃতকাব্য হইয়াছি, এক্ষণে  
তদ্বিষয় বিবেচনা করা আবশ্যক। বোধ  
হয়, একথা সকলেই স্বীকার করিবেন,  
দেশের লোকে সমধিক যত্নশীল না হইলে  
কেবল গবর্ণমেন্টের চেষ্টায় দেশের সম্যক  
উন্নতি লাভ হয় না। বিদ্যালয়িকার বিষয়ে  
এদেশের লোকের তাদৃশ যত্ন ও অনুরাগ  
নাই, সুতরাং গবর্ণমেন্ট যা কিছু করেন,  
তাহাই পর্যাপ্ত জ্ঞান করিয়া থাকেন।  
কিন্তু প্রণালী অবলম্বন করিলে দেশ সা  
ধারণ যাবতীয় লোকের শিক্ষা কাব্য সুন্দর  
রূপে সম্পন্ন হয়, এবং ধর্মনীতির উন্নতি  
সাধনের উপায় বিধান ব্যতিরেকে যে  
শিক্ষাদান প্রণালী, তাহা পূর্ণ ও প্রশংসা  
ীয় নয়, এ সকল চিন্তায় আমাদিগের  
দ্বারা গবর্ণমেন্ট ও ক্রেশ স্বীকারে বড় সম্বত  
গছেন। ধর্মনীতির সমধিক চর্চা ও সং  
প্রণালী অনুসারে যে সুশিক্ষা চাইতেছে  
না, প্রধান পুরুষদিগের কোন কোন ব্যক্তি  
। মুখেও একথা কখন কখন শ্রুতিতে পা  
ওয়া যায়।

বোম্বাইয়ের গবর্ণর সর ডাঃ স্যার  
এক বিদ্যালয়ের পরিচালক দায় সময়ে  
হইয়াছেন, গবর্ণমেন্টের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যা  
য়ের অপেক্ষা মিসনরিদিগের প্রতিষ্ঠিত  
বিদ্যালয়ে উত্তম শিক্ষা হইয়া থাকে। এই  
বিষয়ের মীমাংসার্থী হইয়া সংবাদ পত্র সা  
ল চাইলে বিতরিত হইয়াছেন। এক দল  
গবর্ণমেন্টের অবলম্বিত শিক্ষা প্রণালীকে  
খোঁ লইয়া বাইতেছেন, অপর দল মিসনরি

বিদ্যালয়ের শিক্ষা প্রণালীকে তাহাঁদের উপ  
রে লইয়া বাইবার চেষ্টায় আছেন। কিন্তু  
আমরা অনিন্দ্যবান্নির দ্বারা উক্ত উত্তরবিধ  
সমোদ শিক্ষা প্রণালীর একটরও উত্তম জ্ঞান  
নত প্রশংসাগামে উদ্বুদ্ধ নহি। যে শিক্ষা  
প্রণালী দ্বারা বুদ্ধিবৃত্তির অধিকতর বর্ধিত  
না হয়, সে অংশে গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের  
হাজিদিগেরই প্রধান্য নয়ন গোচর হইয়া  
থাকে। সাহিত্য, গণিত, ইতিহাস, বাণী  
শাস্ত্র, এ সমুদায় বিষয়ে গবর্ণমেন্ট বিদ্যা  
লয়ের হাজেরা আর সকলকে পরাভব করি  
য়াছেন। এংলিভেলি কলেজের সহিত  
অপর বিদ্যালয়ের ও তুলনাই হয় না।  
কিন্তু ধর্মনীতি সংক্রান্ত শিক্ষা প্রণালী  
প্রসঙ্গ উপস্থিত হইলে আমরা গবর্ণমেন্ট  
বিদ্যালয়ের হাজগণকে প্রধান্য পদস্থানে  
উৎসাহী নহি। গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ে যে  
রূপে কাব্য হইয়া থাকে, তাহাতে জ্ঞাত  
হাজগণের এবিষয়ে নিরুদ্বিগ্নতা হওয়া সম্ভব  
বৈত নয়। শিক্ষকগণ কেবল হাজ বিদ্যাকে  
পরীক্ষাভীর্ণ করাইবারই চেষ্টা পান।  
হাজেরা ছুট হটক, আর ছুটরিজ হটক;  
পাবিক পরীক্ষার সময়ে প্রশংসা লাভ  
করিলেই শিক্ষকেরা তাহার সমুদায় বোধ  
পার্জন করেন। কর্তৃপক্ষেরও এই  
নির্ভিত রীতিতে উৎসাহ দান করা হইয়া  
থাকে। অধিকন্তু হাজ পরীক্ষার উ  
ভীর্ণ হইলেই তাহার ছুট হন। এ অংশে  
মিসনরি বিদ্যালয়ও সমধিক সৌভাগ্য  
শালী নহেন। সেখানে বাইবেল পাঠনা  
য় বটে, কিন্তু তাহা হাজগণের চরিত্র সং  
শোধন বিষয়ে তাদৃশ উপযোগী হয় না।  
কোন হাজ গৃহে অথবা বিদ্যালয়ে কিঞ্চপ  
বাচরণ করিল; বাইবেলের উপদেশানুসারে  
কিল কি না, মিসনরি বিদ্যালয়ের অধ্য  
করা অথবা শিক্ষকগণ কি এ সকলের  
মনোজ্ঞান করিয়া থাকেন? এ সকলের  
মনোজ্ঞান ব্যতিরেকে কি হাজের ধর্মনী  
তিতে দৃঢ়পত্তি জন্মিবার অথবা চরিত্র



দোষ সংশোধিত হইবার সম্ভাবনা আছে ? উক্ত বিদ্যালয়ের হিন্দু ছাত্রদিগের গৃহে বাইবেলের উপদেশানুসরণ আচরণ হওয়াও সম্ভাবিত নয় । তাঁহারা বিদ্যালয়ে যে ধর্মের অনুসারী উপদেশ গ্রহণ করেন, গৃহে গিয়া তাহার বিপরীত ধর্মানুসারী আচরণ দেখেন । উক্ত বিদ্যালয়ের শিক্ষক গণেরও কেবল বাইবেল পাঠনাতে দৃষ্টি, তাহারা তাহার উপদেশানুসরণ আচরণ করিয়া না, সে বিষয়ে দৃষ্টি নাই । কেবল কি শুধু পক্ষীর ন্যায় গুটিকত বাইবেলের বাক্য শিখিলেই চরিতার্থতা লাভ হয় ?

বে-প্রণালীতে শিক্ষা করিলে সম্পূর্ণ রূপে চরিতার্থতা লাভের সম্ভাবনা আছে, কি গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের কি মিসনারি বিদ্যালয়ের কোন বিদ্যালয়ের অধ্যক্ষ রাই তদনুসরণ করেন না । সে প্রণালী এই, বিদ্যালয়ের নিয়ম প্রণি হইতে আরম্ভ করিয়া প্রথম পর্ব পর্যন্ত ধর্মনীতি সংক্রান্ত উপদেশ জমীদার নিয়ম করিতে হইবে । হা যেরা এই গৃহ কি বিদ্যালয় কোথায় কি রূপে পরিহার করিল, শিক্ষকদিগের ভবিষ্যতের সবিশেষ অনুসন্ধান করা আবশ্যিক । পাঠ না হইলে শিক্ষকেরা এখন যেমন ছাত্রদিগের দণ্ডবিধান করেন, চরিত্র দোষ বর্ণন করিলে তখন তেমন দণ্ডবিধান করিবেন । যত দিন এই নিয়ম না হইতেছে তত দিন কি গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয় কি মিসনারি বিদ্যালয় কোনস্থানেরই শিক্ষাপ্রণালী সঙ্গ হইতেছে না । সকল বিষয়েরই বাল্য বধি অভ্যাস চাই, অতএব বাস্তবিক দৃঢ়তা জন্মে না । সে অভ্যাস কোথায় ? তাহারা মিসনারি বিদ্যালয়ের অথবা গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের দুই চারি জন সচিবের ছাত্রকে প্রমাণ স্বরূপ প্রদর্শন করিয়া তত্তৎ বিদ্যালয়ের শিক্ষা প্রণালীর উৎকর্ষ ও অপকর্ষ প্রমাণ করিবার চেষ্টা পায়, তাঁহারা জ্ঞাত নব্বই নাই । দুই চারি জনের সচিবের দ্বারা শিক্ষা প্র

ণালীর উৎকর্ষ বা অপকর্ষ প্রমাণ হইবার সম্ভাবনা নাই ।

চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত ।

সর চার্লস উড একদিন ৩ টন অব কমন্সে কহিয়াছিলেন যদি চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত প্রথা ভারতবর্ষের সর্বদলে প্রবর্তিত করা যায়, ভারতবর্ষের যথার্থ মঙ্গল হইতে পারে । সর চার্লস উডের এইপ্রতি উদার চেষ্ঠার সমাদ গ্রহণ করিয়া দুটি কারণে অমানিগের অকৃত্রিম আনন্দ জন্মিতেছে । এক, এই প্রথা প্রবর্তিত হইলে ভারতবর্ষের সবিশেষ শ্রীবৃদ্ধি হইবে । দ্বিতীয়, এই প্রথা প্রবর্তন যুক্তি ও ন্যায্যনুসারে নিতান্ত আবশ্যিক । এতদিনের পর এই প্রচার শুণ সর চার্লস উডের হৃদয়ঙ্গম হইয়াছে । বঙ্গদেশে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত থাকিতে দেশের যে মহোপকার লাভ হইয়াছে, একথা অনেকের স্বীকার করিয়া থাকেন । গত বৎসরের চুক্তির কালে অনেক প্রধান ব্যক্তি উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে উল্লিখিত প্রকার বন্দোবস্ত করিবার অনুরোধ করেন । মধ্যে মধ্যে দ্রুতন দ্রুতন বন্দোবস্তের নিয়ম থাকিলে কৃষক ও জমীদারের ভূমির প্রতি যথার্থ মারা জন্মে না । করবৃদ্ধির ভয়ে অনেকে ভূমির শ্রীবৃদ্ধি সাধনে বিরুদ্ধ হয় ।

আমরা চিরস্থায়ী বন্দোবস্তের সপক্ষতা করিতেছি বটে, কিন্তু আমরা বঙ্গদেশের বন্দোবস্তের সপক্ষ নহি । এবন্দোবস্তের একটি মহা ন্দোষ আছে । এতদ্বারা জমীদারদিগেরই হস্তে অধিকতর ক্ষমতা দেওয়া হইয়াছে । কৃষকদিগের স্বত্ব ও অধিকারের বিষয়ে তাহদের যত্ন করা হয় নাই । পাঠকগণের স্মরণ থাকিতে পারে, আমরা পূর্বে একবার প্রমাণ করি তাহিলাম, কৃষকেরাই ভূমির যথার্থ অধিকারী । জমীদার ও রাজার কেবল করের সহিত সম্বন্ধ । বঙ্গদেশের ভূমির যে

রূপ বন্দোবস্ত করা হইয়াছে, তাহাতে জমীদারদিগেরই ভূস্বামিত্ব স্বীকার করা হইয়াছে । লাভ রণ ও রালিস গবর্ণমেন্টকে ভূমির অধিকারী বলিয়া স্বীকার করেন নাই । অনুগ্রহন করিয়া দেখিলে নৈসর্গিক নিয়ম ও বিত্তক যুক্তির অনুসারে রাজা ভূমির প্রকৃত স্বামী মহেন । উক্ত লাভ কৃষকদিগকে উপেক্ষা করিয়া যদি জমীদারদের হস্তে সর্বস্ব প্রদত্তা প্রদান না করতেন, তিনি ভূমির প্রকৃত স্বামীর আদরণে সমর্থ হইরাছিলেন, আমরা এক মুহূর্তকতে স্বীকার করিতাম । তিনি জমীদারদিগের হস্তে যথেষ্ট ক্ষমতা দিয়া কৃষকদিগের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিতেন, মীল প্রথা প্রদানের কৃষকদিগের দুঃসহ দুঃদশা আমানিগের দৃষ্টিগোচর হইত ? মীল প্রথা প্রদানের সহিত তত্রত্য প্রজাগণের কল্যাণে বিবাদ লইয়া গবর্ণমেন্টকে এত কষ্ট পাইতে হইবে কেন এই বিবাদের মীমাংসা সাধারণের টাকাই বা নষ্ট হইবে কেন ? কিন্তু সর চার্লস উড যে প্রকার বন্দোবস্তের সক্ষম করিয়াছেন, তাহাতে এতদ্বয়ের পরিহার সম্ভাবনা আছে । তিনি জমীদারদিগকে মধ্যস্থতা না করিয়া উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের কৃষকদিগের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিবার আদর্শ করিয়াছেন । এই বন্দোবস্ত এককাল সর্বত্র প্রবর্তিত করা হইবে না । সময়ে সময়ে যে সমস্ত বন্দোবস্ত হইয়াছে, তাহা নিয়মিত সময় উত্তীর্ণ হইলে বিবেচনা করিয়া চিরস্থায়ীকরণ কর ধায়া করা হইবে । পূর্বকার নিয়মানুসারে সকল স্থলে নি এককালে বন্দোবস্ত হয় নাই, অতএব বন্দোবস্ত সর্বত্র প্রচলিত হইতে আর বৎসর লাগিবে ।

সর চার্লস উডের প্রস্তাব পার্লামেন্ট সভার আদৃত ও প্রীত হইয়া বিধি হইলে নিম্ন লিখিত কয়েকটি মহান

কান লাভ হইবে। এখন, জমিদারী কুশী  
নী হইলে তাহাদিগের ভূমিতে সমস্ত জ  
মিবে; সুতরাং তাহারা আপনাপন আপন  
আপন ভূমির উন্নতি সাধন চেষ্টা করিবে।  
দ্বিতীয়, তাহাদিগের স্বাধীনতা ও সৌভা  
গ্য লাভ। তৃতীয়, তাহাদিগের স্বাধীনতা  
ও সৌভাগ্য লাভ হইলেই তৎসুলক ভারত  
বর্ষের বিশেষ জীবনকাল হইবে। চতুর্থ,  
একদম নীলকর জমিদারদিগের সহিত কল  
কদিগের নিক্ত বিরোধ থাকিতে তাহার  
মীমাংসার্ষ গবর্ণমেন্টকে বাধ্য হইয়া যে  
অর্থব্যয় ও কষ্টস্বীকার করিতে হইতেন,  
তাহার অনেক লাঘব হইবে। পঞ্চম, এ  
কদম উল্লিখিত বিরোধসুলক ভারতবর্ষে  
যে মিথ্যা প্রবন্ধনাদি প্রোত প্রবাহিত হইত  
হইতেন, তাহা সম্পূর্ণরূপে না হউক, অ  
নেক অংশে কমে হইবে। যত, যদি মিথ্যা  
প্রবন্ধনাদির স্রোত ও তৎসুলক মকদ্দমার  
স্রোত হইয়া গবর্ণমেন্টের বিচারকাণ্ডে অর্থ  
ব্যয় কমিয়া যায়, ভারতবর্ষের অর্থসঞ্চয়  
হইবার আর একটি উপায় হইবে। কলকাত  
পর চার্লস উডের প্রস্তাবিত চিরস্থায়ী ব  
ন্দোবস্ত প্রথা প্রবর্তিত হইলে ভারতবর্ষের  
বাজনীতি, সমাজ, রাজ্য প্রভৃতি বহুতর  
বিষয়ে সর্বজনীন মঙ্গললাভ হইবে সন্দেহ  
নাই।

পরিশেষে আমাদিগের আর একটি  
বক্তব্য আছে। উক্ত পশ্চিমাঞ্চল প্রভৃ  
তি প্রদেশসকলে ত উল্লিখিত বন্দোবস্ত  
হইতে চলিল, এখন বঙ্গদেশের উপায় কি  
বঙ্গদেশে বর্তমান বন্দোবস্ত থাকিলে ত  
মঙ্গল নাই। কিন্তু অসত্য জমিদারদিগকে  
ভুসানিহ হইতে বঞ্চিত করাও সাধ্যাত্ত  
নয়। তাহা করিতে গেলে অত্যাচারিত কার্য  
করা হইবে। লাভ কর্তৃক ওয়াসিস ১৭৩৯ খ  
সে যে প্রথম বন্দোবস্ত করেন, তাহার পর  
অনেক পরিবর্তন হইয়া গিয়াছে। অনেক  
জমিদারী অনেকসংখ্য লোকের অনেকবার  
বস্তান্তর হইয়াছে, তাহাতে অনেকের অনেক

অর্থব্যয় হইয়া গিয়াছে। এখন তাঁহাদিগ  
কে সেই সেই জমিদারী হইতে ছুটি  
করিতে গেলে অনেকের সর্বনাশ হইয়া  
যাইবে। সত্য গবর্ণমেন্ট কি একপ করিতে  
পারেন? তদ্বিষ, গবর্ণমেন্টের অধিকার  
তৎসুলক আর একটি অনর্থ ঘটবার  
সম্ভাবনা। তবে গবর্ণমেন্টের কিরূপ  
করা কর্তব্য? গবর্ণমেন্টের কর্তব্য এই, তাঁ  
হারা জমিদারদিগকে লগুয়াইয়া কুবকদি  
গের নিজ নিজ জোতের ভূমিতে অঙ্গ লা  
রে মৌরসীপাটী দেওয়ান। জমিদারদিগে  
র এপ্রস্তাবে অসম্মত হইবার কারণ নাই।  
এ বন্দোবস্ত করিলে তাঁহাদিগের ভূমি  
অপেক্ষাকৃত উর্বরতা ও সঙ্গত হইবে  
সন্দেহ নাই। তাঁহাদিগের ক.হাবও যদি  
ভূমির উপরে নিক্ষেপ করিবার ইচ্ছা  
থাকে, পণ্ডিত ভূমি বিক্রয় হইবার প্রস্তাব  
হইতেন, তাহা ক্রয় অথবা অরণ্যায়  
ভূমির আবাদ করুন। মৌরসী বন্দোবস্ত  
না থাকিলে প্রজারা ভূমিতে স্থায়িকর  
কিছু করিতে চাহে না। তাহার কারণ  
এই; সেকর কিছু করিলে জমিদারদিগের  
চোখ টাটিয়া উঠে। আমরা এক দিন  
স্বকর্ণে শুনিলাম, কোম জমিদারের এক  
গমস্তাকে এক প্রকা কহিতেছে, “আমি  
২০ বৎসর যে ভূমিতে বাস করিতেছি,  
ত হাতে ২।৪ টা গাছ বসাইয়াছি বলিয়া  
তোমরা খাজনা বাড়াইতে চাহিতেছ,  
আমি যে আওলাত করিয়াছি তাহার কি  
ছু মূল্য লাও উঠিয়া যাইব।” জমিদার  
দেরা স্বার্থপরতা বশতঃ প্রজাদিগের কষ্ট  
ও হিতাহিত বুঝিতে পারেন না।

#### পুস্তক প্রাপ্তি।

আমরা হৃদয়তা সহকারে বীকার করি  
তেছি নিম্ন লিখিত পুস্তক গুলি আমাদিগের  
হস্তগত হইয়াছে।

১। সাহিত্য মুক্তাবলী। শান্তিপুর ইংরা  
জি বিদ্যালয়ের পণ্ডিত জীবন্ত অরণ্যোপাল  
গোখাশি প্রণীত। সংস্কৃত সাহিত্যসম্পদ হই-

তে ইহা বাঙ্গাল্য সংস্কৃত হইয়াছে।

২। রাসায়নিক নং ১৫৬। জীবন্ত বাবু  
কুমার পাল রাসায়নিক নং ১৫৬ করিয়া  
বাঙ্গাল্য প্রণয়ন করিয়াছেন।

৩। ভাষানীতিলান। সংস্কৃত গ্রন্থ। কলি  
কাতা সংস্কৃত পাঠশালার অন্যতর অধ্যাপক  
জীবন্ত বাবু তর্কর ইহা মুদ্রিত ও প্রচারিত  
করিয়াছেন। ইহার মুদ্রক অংশ ও নক  
লের ব্যখ্যা করিয়া দেওয়া হইয়াছে।

৪। বঙ্গদেশের ইতিহাস। জীবন্ত বাবু  
বিদ্যমান ভাষায় প্রণয়িত ও প্রণয়িত  
প্রণয়ন করিয়াছেন।

৫। প্রচলিত আভিভাষ নামক এবং যুক্তি  
সম্বন্ধ কি না। ইহা হিতকর সাহিত্য নক। হই  
তে মুদ্রিত ও প্রচারিত হইয়াছে। আভিভা  
ষ নামক এবং যুক্তি সম্বন্ধ নহে, এতৎ প্রতিপাদ  
নই এতৎ প্রচারের সুখ্য উদ্দেশ্য।

৬। বঙ্গদেশ কাব্য। ভাষানীতিলান প্রণীত।  
জীবন্ত বাবু নবীনচন্দ্র দত্ত সংশোধন করিয়া  
ইহা মুদ্রণকাণ্ড সম্পন্ন করিয়াছেন।

প্রাপ্ত।

গুরুত্ব।

“গাদা কি কখন ঘোড়া হয়?”

এই শিরোনাম দিয়া গত ১৩ ই আগষ্টের  
সোমপ্রকাশে গুরু মহাপ্রসন্নকে শিক্ত  
করিবার চেষ্টা বিষয়ক যে একটি প্রস্তাব প্রকা  
শিত হইয়াছে, তদ্বিষয়ক সম্পূর্ণ সংবাদ প্র  
কাশ করাই আমরা এ প্রস্তাবের সুখ্য উদ্দেশ  
ন্য। আমাদিগের সূতপূর্ব লেপ্টমেন্ট গবর্ণর  
প্রাণী সাহেব পাঠশালার গুরুমহাপ্রসন্ন ও ছাত্র  
দিগকে পারিতোষিক দিবার জন্য কিঞ্চিৎ  
টাকা প্রেরণ করিয়া যান, কিন্তু নিকা সংক্রান্ত  
কাণ্ডের অধ্যক্ষেরা বাহাতে ঐ টাকা দ্বারা  
গুরুমহাপ্রসন্নকে শিক্ত করিয়া দেয়া  
হয়, তাহার চেষ্টা করিতেছেন। আর এক  
বৎসর গত হইল, উক্ত সাহেব কতকগুলি  
গুরু মহাপ্রসন্নকে ৫ টাকা হস্তি দিয়া কুমারী ন  
ন্দাল সুলেপাঠাইয়াছিলেন এবং তাহাদিগের  
হস্তপাঠশালার ১২ টাকা বেতনে এক এক  
নন্দাল ছাত্রকে নিযুক্ত কর, হইয়াছিল।  
গাবর্ণমেন্ট মনে করেন, উক্ত সাহেব এই



এখা অবলম্বন করিয়া কৃতকার্য হইয়াছেন।  
বিশ্ব এ রহস্য কাহার কাছে নিবেদন করি।

গত বৎসর উত্তীর্ণ হইয়াছে। সাতাহেবের সন্তান  
কোন ডেপুটি ইনস্পেক্টরেরা গুরুত্ব  
কার্যে প্রবৃত্ত হইলে, যেমন পল্টনের বেগাবের  
নিমিত্ত বহির্গত সিপাহীকে দেখিলে কুলী-  
লোক ভীত হয়, সেইরূপ গুরুত্বহীনদের  
ভীত ও ভয়ানক হইল, অনেক স্থলে এখন  
অন্যরূপ উদ্ভিগ্ন যে গবর্ণমেন্টে গুরু মহাশয় সি-  
গকে লইয়া গিয়া কুলী বা ভারবাহী পতর  
কার্যে নিয়োজিত করিবেন। সুতরাং প্রায়  
কোন ডেপুটি ইনস্পেক্টরই নর্মালে গুরু পা-  
ঠাইতে সমর্থ হইলেন না কেবল বর্তমানের  
সুযোগ্য ডেপুটি বাবু অনেক বর করিয়া প্রায়  
৮, ১০ টি গুরুকে নর্মালে প্রেরণ করিয়া প্রভুর  
আজ্ঞা প্রতিপালন করেন। কিন্তু এক্ষণে নি-  
শ্চয়রূপে অবগত হওয়া গিয়াছে যে এই সকল  
গুরু মধ্য ২১ জন ব্যক্তিরেকে প্রায় কেহই  
বাস্তবিক গুরু নহে, কাহারও পাঠশালা ছিল  
না, ডেপুটি বাবু প্রলোভন, উচ্চাটন, বশী-  
করণ প্রভৃতি দ্বারা প্ররোচিত হইয়া প্রায়ের অ-  
পর লোককে বশীভূত করিয়া এই কার্য সম্পা-  
দন করিয়াছিলেন। ইহাই উত্তীর্ণ সাতাহেবের  
কৃতকার্যতা লাভ।

সম্প্রতি উক্ত বিষয়ের জন্য যেরূপ প্রস্তাব  
হইতেছে পাঠক বর্গ তাহাও অবগত হউন।  
এবংসর গবর্ণমেন্টে উক্তরূপ কার্যের নিমিত্ত  
ত্রিশ হাজার টাকা দিবার সংকল্প করিয়াছেন।  
শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যের অধ্যক্ষেরা প্রস্তাব  
করিতেছেন যে এই টাকা তারা নর্মাল, কলকাতা  
ও চাকার এক একটি নর্মাল বিদ্যালয় স্থাপি-  
ত করা যাইবে। যাহান বাস্তবিক গুরুত্বহীন  
ছিল বা বাহারি গুরুত্বহীন হইতে অস্তিত্ব  
করে, তাহার ৫ টাকা প্রতিসহ এ নর্মালে তা-  
দিয়া এক বৎসরের জন্য অধ্যয়ন করিবে,  
যাংরা সার্টিফিকেট প্রাপ্ত পুরুষ প্রতিগত  
হইয়া গুরুত্বহীনদের কাছে, ব্যক্তিগত হইবে,  
গবর্ণমেন্টে তাহাদিগকে মাসিক এক টাকা  
প্রদান করিবেন। পাণ্ডের ব্যয় সমস্ত মাসিক  
১০০ শত টাকা বেতনে যে দুই জন সব ডে-  
পুটি ইনস্পেক্টর নিযুক্ত হইবেন, তাহার ৫  
একর পাঠশালায় জন্মদেখান করিয়া যে সকল  
ছাত্র ও গুরুত্বহীনদিগকে উক্ত দেখিবেন

তাহাদিগকে মধ্যে মধ্যে কিছু পারিতোষিক  
প্রদান করিবেন। এক্ষণে পাঠকবর্গ আমরা  
সেই কথিতে পারিতোষিক যে উত্তীর্ণ সাতাহেবের  
কৃতকার্যতা লাভের সহিত এই কার্যের কলের  
কতদূর ও কতদূর থাকিবে।

কলতঃ এবিষয়ে আমাদের গবর্ণমেন্টকে  
তাহা দোষ দিতে পারা যায় না, কারণ তাঁ-  
হার টাকা দিতে নিতান্ত কাতর হইতেছেন  
না, কিন্তু শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যের অধ্যক্ষেরা  
স্বতন্ত্র সর্বকম প্রকৃতি পাইয়া এই টাকা বাধবা-  
দে ব্যয় করিতেছেন। এইরূপ ও বর্ধক টাকা  
নষ্ট করিবার দৃষ্টান্তরূপ সেদিনকার প্রস্তাবে  
যে মেডলিকট সাতাহেবের ইনস্পেক্টর গবে-  
নিরোগ এবং তাহার বাজারের অনতি-  
জ্ঞতা প্রযুক্ত এক জন বাজালিকে তাহার  
সহকারী করার বিষয় উল্লিখিত হইয়াছে, তাহা  
বোধ হয় ভাল হয় নাই, কারণ ইহা অগ্রে  
স্বতঃসিদ্ধ বয় করিয়া গণ্য হইবে যে বাজা-  
লিরা সংগ্রহ বুঝিমান ও সংগ্রহ কৃতবিদ্য হই-  
লেও ইনস্পেক্টর প্রকৃতি বড় বড় পদ কখনই  
তাহাদিগকে দেওয়া হইবে না, স্বজাতি পালন  
ধন্দানুরে যে উহা ইতিরোপীয়দিগকে দিতে  
হইবে, ইহা গবর্ণমেন্টের এক প্রকার স্থির  
সংকল্প আছে দেখা যাইতেছে। যদি তাহাই  
হয় তবে মেডলিকটকে ইনস্পেক্টরী দেওয়া  
অন্যায় হইয়াছে বলা যাইতে পারে না। কিন্তু  
উপস্থিত আশঙ্ক্য এবং তাৎপর্য বিষয় এই যে  
অপরূপ ইনস্পেক্টর সাতাহেবেরাও বাজার  
পারদর্শিতা বিষয়ে মেডলিকটের তুল্যকক  
হইবেন, কিন্তু গবর্ণমেন্টে অন্যান্য স্থানে ইন-  
স্পেক্টরদিগের বাজলা জানার আবশ্যকতা  
অনুভব করেন নাই, কেবল মেডলিকট সাতাহে-  
বাজলা জানেন না সুতরাং তাহার সমুদায়  
শুনির্ভর হইতে পারিবে না তাহারা এক জন  
কৃতবিদ্য বাজালিকে তাহার সহকারী করিয়া  
দিয়াছেন। যাহা হউক “যুক্তি ঠিক হইলেই  
ভাল হয়। যদিই কোন কারণ বশতঃ তাহা না  
হয় তবে উহার একটি লাঞ্ছন বোঝনা করিয়া  
দেওয়া উচিত। ইহা যে এত দিনের পর  
গবর্ণমেন্টের বোধ হইয়াছে সেও আমাদের  
এক প্রকার গুণ সূচক বলিতে হইবে।

পরিণেমে আর একটি কথা লিখিয়া প্র-  
স্তাব সমাপন করা যাইতেছে। গবর্ণমেন্টে আ-

বাদিগের নিযুক্তি মেনীং লোকদিগের বিদ্যা-  
কার জন্য যে এত প্রয়াস পাইতেছেন তাহা  
না তাহাদিগের প্রতি আমরা সম্পূর্ণ কৃতজ্ঞ  
তা প্রকাশ করিতেছি। কিন্তু আমরা বাজা-  
আমরা এদেশের স্বাধীনতা বিশেষরূপে জা-  
আমরা নিশ্চয় বলিতেছি, তাহার ৫ ক  
সংসাদনের জন্য যে এখা অবলম্বন করি-  
ছেন তাহা কখনই কার্যকারিণী হইবে না।  
সি এই ২০ শতাংশ রূপে সংসাদন করিয়া  
তাঁহাদের বাস্তবিক অতিপ্রায় থাকে তা-  
উহারা পূর্বোক্ত প্রস্তাব সকল পরিচা-  
গ করিয়া সাহায্যদান প্রদানকেই সংশোধ-  
করুন অর্থাৎ এক্ষণে এই রূপ নিয়ম আ-  
যে ছাত্র দত্ত বেতন বাপে লোকেরা বড় টা-  
দিবেন গণ্য হইতে তত টাকা সাহায্য দিবে  
ছাত্র দত্ত বেতন লোকের সর্বিচ্ছিন্নন ক-  
ঈরিগণিত হইবে না। গবর্ণমেন্টে এই নি-  
রহিত করিয়া ছাত্র দত্ত বেতন বত হইবে তা-  
হাই লোকের সর্বিচ্ছিন্নন বিবেচনা করিয়া  
ত টাকা সাহায্য দান করিতে আরম্ভ করুন  
এ বেতন সকল সময়ে সমান থাকে না বা-  
উক্তন্য সম্পাদকদিগকে নিযুক্তি টাকা দি-  
অলীক করাইয়া লউন। গুরুত্বহীনদিগের  
পাঠশালায় প্রায় সর্বত্রই ৫ টাকা বেতন উ-  
রা থাকে, যদিও কোন স্থানে না উঠে তা-  
হইলে কিঞ্চিৎ বেশী করিলেই ৫ টাকা করাই-  
লহিতে পারা যায়। যাহা হউক, যেখানে  
টাকা বেতন উঠে গবর্ণমেন্টে তথায় ৫ টা-  
সাহায্যদান করুন। ১০ টাকা এক জন উপ-  
মান্য রূপ নর্মাল ছাত্রকে বা নিকটত কো-  
সাহায্য কৃত বিদ্যালয়ের এক জন কৃতবিদ-  
ছাত্রকে পাঠশালায় নিযুক্ত করিয়া দেওয়া  
হইতে পারে। এই রূপ শিক্ষক প্রাক্তির নি-  
অপর নর্মাল স্কুলে প্রেরণন নাই, বর্তমান  
নর্মাল দ্বয়ে কিঞ্চিৎ অধিক ব্যয় নিরূপণ করি-  
য়া দিলেই হইতে পারিবে। কিন্তু এই সকল  
কর সাহায্য কৃত বিদ্যালয়ের তদ্বাবধানে  
অন্য যে সকল ডেপুটি ইনস্পেক্টর নিয়ো-  
জিত করিবেন, তাহার ৫ সেই সেই প্রায়ের ২  
জন বুঝিমান যুবককে নর্মালে পাঠাইতে চেষ্টা  
করিবেন। কারণ প্রায়বাসী কোন ব্যক্তি অ-  
পর প্রায় ১০ টাকা মাসিক পাইলে তাহা  
একপ্রকার হস্তিতে পারে। এই সকল কা-

সম্পন্ন করিবার নিমিত্ত ইংরেজী ও বাঙ্গালী-  
ক বিশেষ ব্যুৎপত্তিশালী এক জন বাঙ্গালিকে  
নম্পট্টর নিযুক্ত করা মিথ্যাত্ব আশংক্য।  
জালি তির ইংরেজীয়া ভাষা এ কার্য নি-  
কর। কেবল আত্মরক্ষা ও স্যাম্পাদ মাত্র  
উদ্দেশ্য।



লণ্ডন ৩ রা জুলাই ১৮৬২।—

ক্রিস্টিয়ানসনক লণ্ডনেব সমারোহের নি-  
শ্চয়ত্ব স্থানত হয় নাট। পুঙ্খ পুঙ্খ লোক  
বল অন্বেষণার্থেইয়া মানা স্থানে অঙ্গ  
প্রিতোছে।

উল্লেখ্যরী একদেব স্থান আছেন, প্রতি  
অঙ্গ অঙ্গবর্ণ নিকটনের নিকটে পদক্ষেপ  
সেবন করিয়া থাকেন।

স্পেন রাজ্যের অধীশ্বরী এক কন্যা এসব  
প্রতিষ্ঠাছেন।

প্রসিয়ার রাজপুত্রবধূ (বিক্রেটারিয়ার সু-  
কতা) গর্তবতী হইয়াছেন।

ক্রিষ্টাল গালেসে বলাসমারোহে হাও  
লাংসব পদ্যবসিত হইয়াছে ৪০০০ গাথক  
কল্পিত হইয়া। হাওলেনের রচিত কতিপয়  
কোন করেন তাহাতে ১৫০০০ ব্যক্তি উপস্থিত  
ছিলেন।

গত ১৪ ই জুনে আপান দেশীয় রাজ  
পুত্রেরা হলাওর রটরজি নামক স্থানে উপ-  
স্থিত হন, তাহার। নিজ ভাষার লিখিত বহু-  
ভর পতাকা নিরীক্ষণ করিয়া চমৎকৃত হইয়া-  
ছিলেন, আপানের সহিত হলাওর বহুদিনা-  
ধি বাসিয়া থাকতে অনেক কলাগুর আপান  
দেশীয় ভাষা অবগত আছেন।

স্পেন দেশে যুবক পেরেথ নামী এক ভা-  
সকার ব্রাকসী বাস করিত, গত বিংশতি বর্ষ  
ব্যবসে স্পেনের অন্তর্গত গালিসিয়া প্রদেশ-  
ের পক্ষে মহাতীতি স্বরূপ ছিল, কতকগুলি  
মুদ্রার সহিত সে নানা স্থানে ভ্রমণ করিত  
করিত। এবং কোন পথিক তাহার হস্তে  
পড়িলে আর ভ্রাণ পাইত না। সে বৎসরোনা-  
কর্তৃক নিষ্ঠুর ছন্দা, এবং বহুকাল ব্যাপিয়া  
রাজ্যের ব্যবস্থাকে তদনন্ত ক্ষুণ্ণ করিতেছিল  
সংক্রান্তি সে মৃত হইয়াছে।

বিসর দেশের অধিপতি এখানে নানা কু-

লীনের গৃহে আতিথ্য প্রীকার করিতেছেন।

করাশীল ব্যবস্থাপকসমাজে শকট বোটকা-  
দিত উপর টাক লইয়া এক গোলযোগ উপ-  
স্থিত হয়, উক্ত বিষয়ক বিল সংশোধিত  
হইয়া গ্রাহ হইয়াছে।

ওয়াল্যাচিয়া রাজ্যের মন্ত্রিসমাজের সভা-  
পতি কাটার্গি সংক্রান্তি নিষ্পত্ত হইয়াছেন।

আমেরিকার ফের্ড্ ওক্স মায়ক স্থানে  
অঙ্গ দিবস পূর্বে এক ১৫ হয়, তাহাতে  
কনকেডরেইয়ের পক্ষে ৮৯০ ভোট, ৩৬২৭  
আহত, এবং ১২২২ জন শাস্তি নিরুদ্দেশ  
হইয়াছে। কনকেডরেইয়া প্রাণপণে যুদ্ধ ক-  
রিতেছে।

আমি পূর্বকার এক পক্ষে মিথিয়ারাছিল  
যে ক্রীষ্টিয়ানসনক রাজসিংহ মতের বিকল্পমত  
প্রচার করিতে ভকটর উইলিয়ামস্ এবং  
উইলসন্ সাহেবের নামে ধর্ম সমাজে অতি-  
যোগ উপস্থিত হয়, উক্ত বিষয় লইয়া এখানে  
মহান আন্দোলন হইয়াছিল। উইলিয়ামস্  
ও উইলসন্ উভয়েই চর্চ অব-ইংলণ্ডের  
পাদরি, তাহার। চর্চের মত প্রচারার্থ বেতন  
গ্রহণ করিতেছিলেন, অথচ তাহার। বথেষ্ট  
রূপে বাইবেলের ব্যাখ্যান করিয়াছেন। বিচার-  
দ্বারা উভয়ে নির্দোষ হইয়াছেন। অতএব  
বোধ হইতেছে যে চর্চ অব-ইংলণ্ডের দোহাই  
দিয়া একদেব লোকে বিনা দলকে বথেষ্ট মত  
অবলম্বন করিতে পারিবে। অনেক ইংরেজ  
যে এই রূপ অবস্থার অবস্থিত, তাহাতে স-  
ন্তোষ নাই।

কথিত হইয়াছে যে রুসিয়া ও প্রুসিয়া অ-  
বিলম্বে ইটালির স্বাধীনতা প্রীকার করিবেন।  
পারিসাল্ভি কাপ্রেয়া প্রীণে দীর্ঘ ভবনে প্র-  
তিগমন করিয়াছেন।

বেলজিয়ামের রাজা রোণ ভোগ করিতে  
ছিলেন, একদেব স্বাস্থ্য লাভ করিয়াছেন।

কানেকা প্রদেশে হস্তির অস্তাব হেতু  
লোকে কষ্ট ভোগ করিতেছে।

ইস্টাবুল নগরে ৫০০ শত ঘৃহ ও পণ্য  
শাল। হস্ত হইয়াছে।

সিঙ্গী নিকটে বসুনা উত্তরণের নিমিত্ত  
মাকোটর নগরে এক প্রকাণ্ড লৌহ সেতু নি-  
শ্চিত হইতেছে। তদ্বারা বাঙ্গালীর রথ ও সা-

মান্য নবটানি গমন করিতে পারিবে। উক্ত  
খিলানের সংখ্যা ১২। প্রত্যেকে ২১৬ কীট  
দীর্ঘ। একীকরণ ভবের প্রসারের সহিত  
দীর্ঘতাকে একত্রিত করিলে, সেতুর দীর্ঘতা  
সর্বত্র এক পাদক্ষেপের অতিরিক্ত হ-  
ইবে।

অবগতি হইল যে ভারতবর্ষ হইতে ১৮-  
৬১ শকে ১৩২৮ ব্যক্তি মরীচ উপস্থাপন  
করিয়াছে। প্রীলোকের সংখ্যা শতকরা  
৩৬।

আমেরিকার পিরু প্রদেশে এক ভূমিকম্প  
হইয়াছে।

মন্তেজিয়েরা দ্বীপকা পাখা দ্বারা যুদ্ধ  
বারম্বর পরাভব প্রীকার করিয়াছে।

লণ্ডনের পথের জনতা নিবারণার্থ ভূমির  
মধ্য দিয়া রেলওয়ে প্রস্তুত হইতেছিল  
উহা আগামী আগষ্ট মাসে খুলিবার কথা  
নির্ধারিত হয়; কিন্তু এক ভয়ানক ব্যাঘাত  
দ্বারা উক্ত ব্যাপার কিয়ৎকালের নিমিত্ত স্থ-  
গিত হইয়াছে। ক্রীট ভিহ নামক স্থানে কয়েক  
দিবস পূর্বে রেলওয়ের রীথ হইতে শব্দ নি-  
গত হয়। উহা অবশ্য মাত্র কার্যকরের। ভূমির  
নির ভাগ হইতে পলায়ন করে, তদনন্তর  
এক ৮৫ কীট গভীর, ৩০ কীট উচ্চ, এবং ২০  
হস্ত দীর্ঘ ভিত্তি সমূলে উপস্থাপিত হইয়া রেলও-  
য়ের উপর পতিত হইয়াছে, এবং ভূমির অ-  
ত্যন্তরস্থ বর্জের সর্বাংশ ভস্ম এককালে পু-  
হইয়াছে।

অন্য কোন ভাষণ প্রয়োজনীয় সংখ্যা  
উপলব্ধ হইতেছে না। আবারও ইংলণ্ডে  
অবস্থিতি পের হইয়া আসিয়াছে। অট্রিয়া  
এদেশ পরিত্যাগ করিয়া স্বদেশাভিমুখে যাত্রা  
করিব। কিন্তু করসা করি, যে সোমপ্রকাশে  
লণ্ডনের পত্র বের এই পর্যন্ত চিরকালের নি-  
মিত্ত পের না হয়। আমি নানা কার্যে ব্যাপ্ত  
থাকিয়া পাঁচ মাস ধাবৎ আপনাকে পত্র নি-  
খিরাছি। কোন ক্রমেই উচিত মত করিয়া  
নিখিতে পারি নাই; আমার লিপি সব  
মুদ্রার অশেষ দোষের আধার স্বরূপ হই-  
য়াছে। কিন্তু ইহা সম্পূর্ণ করসাযোগ্য।  
আমার অবস্থা বিবেচনা করিয়া আপন।  
সমস্ত পাঠকের। আদাকে কমা করিবেন



বিবাহে অন্য কোন শর্তে আবদ্ধ থাকিবে না।  
করিয়া বচোচিত হলে আপনাদের পাঠ-  
দের আনন্দ হইবে। যৌক কর প-  
করিয়া জন্মঃ অপরূপের লোক যে  
আগমন করিবেন, তাহার সম্যক ল-  
এতীত হইতেছে। এই দেশে আসি।  
বেরদের সহায়ক করা ভারতবর্ষেরদিগের  
লোকে। এক প্রধান উপায়। বাইরের  
সম, অসংখ্যক, বাইরের অর্থ সংগতি  
হইবে, বাইরা কৃত্রিম্য, তাগাদের অধি-  
কর কর লোক কর পরিভ্যাগ করিয়া এই  
মোহর পদার্থরাজ্যতুল্য ঘোণে জীবনের  
করণে কোণ করা উচিত। অর্থ ব্যবহার করি-  
ল অর্থ, অর্থ ব্যবহার না করিলে ই-  
জন্মের নিকটে আসরের ক্রটি নাই। আমি  
আমাদের মধ্যে অল্প চরিত্র লোক দ-  
লয় সহিত নাকারি করিয়াছি। জীবন যে অ-  
পার পদার্থ মনে, তাহা উদ্বল চরিত্র সকল  
অধ্যয়ন করিলে বিলক্ষণ প্রতীত হয়। আমি  
দেশান্তিযুগে বাইতেছি, অর্থ অতি দু-  
খ। ইংলণ্ড পরিভ্যাগ করিতেছি। বলিতে  
ক, এখানকার দেশ যেমন শীতল, এখানকার  
লকের ঘনত্ব ততোধিক উষ্ণ। সচরিত্র  
চরিত্র এদেশে আনিতে কোন অর্থ নাই।  
লাকাপবাদ কর কেবল আবারের বস্ত্র অম-  
র্থ মূল। আপনি, সম্পাদক মহাশয়। আ-  
বার সহিত একমত হউন আর না হউন,  
আমাকে অবশ্য জিজ্ঞাসা করিতে বিবেচন যে  
কত দিন আর প্রবৃদ্ধ ব্যক্তি বালকের, দুটি  
ব্যক্তি অধিক, পণ্ডিত ব্যক্তি দুইয়ের  
পথ অবলম্বন করিয়া চিনিঃ ২ একপ পথে  
গিয়া আমরা কেবল চিরবাস পরাধীনতা  
মুখেরে বন্ধ আছি। অতএব শ্রমিতা পরি-  
ভ্যাগ করিয়া আমাদিগের এককালে মনুষ্যের  
চাধ্য করিতে প্রবৃত্ত হওয়া সর্বতোভাবে  
উচিত ইতি।

ক্রিউমিটার ও পত্র,

গত ১লা ইংলণ্ডের দ্বিতীয়া দুই  
তার বিবাহ সম্পাদিত হইয়াছে।

## বিবিধ সংবাদ।

২১এ জীবন পোষক।

ক্রিউমিটার তাইটে মারিটেট আসনা,

মো-৩৩ ৩৩ (প্রত্যর্ধিগণকে কর্তব্য, এখন  
সময় সময়ে এহার পর্যন্তও করিয়া থাকেন  
তাহাতে উক্ত্য লোকেরা তাহার নামে  
পটনে পবণের নিকটে নালীশ করিয়াছেন  
জাতি মারিটেট মিসিনিয়ান ও - আবেদন  
কারীরা তার অরণ্যে রোমন কখন কেন।

ক্রিউমিটার সার আনিনকে উক্ত্য অ-  
পদ্যুত করিয়াছেন। সদর আনিন - জন্মের  
অনেক গোপনীয় কথা প্রকাশ করিবার তার  
প্রদর্শন করিয়াছেন। অর্থ তাইদের তাই না  
কি?

উক্ত পক্ষিকালের এক খনি পত্রে দুই  
হইল কয়েক জন ক্রিউমিটার লিখকতা। কয়েক  
প্রার্থনার উক্ত্য সাধারণ লিখা কার্যের ডি-  
রেক্টরের নিকটে আবেদন করেন। রিড সা-  
হেব তাহারিগের আবেদন গ্রাহ করেন নাই।  
তিনি তাহার এই কারণ প্রদর্শন করেন যে  
তাঁহাদিগের "সামাজিক পদ নাই" বো-  
হব এ সম্বন্ধে সত্য নয়, সত্য হইলেও এ-  
খানকার অনেকে মারা যান।

২৪ পবণের অর্থ লাক্টোর সাহেব (যিনি  
লিডু দিনের জন্য প্রধানতম বিচারালয়ের বি-  
চার পতি হইবেন কথা ছিল) পীড়া বশতঃ  
দুই মাসের বিদায় লইয়া ইংলণ্ডে বাইতেছে-  
ন। অযোগ্য কাহেল সাহেব অথবা মেডি-  
নীপুরের রসেল সাহেব তাহার পরিবর্তে নি-  
য়োজিত হইবেন।

বার রাখালদাস হালদার (ইনি কিছু দিন  
পূর্বে ইংলণ্ডে গমন করিয়াছিলেন) গত ৭  
নিবার বদেশে প্রত্যাগমন করিয়াছেন। ইনি  
যোগ্য ব্যক্তি, ইহার একটা যোগ্য পদ লাভ  
হইলেই আমাদিগের আত্মশ্রম আনন্দের বি-  
ষয় হয়।

ইংলিসমান বলেন, প্রিন্স অব ওয়েলসের  
এদেশে আগমন করা উচিত মনে, তাহা হই-  
লে তাহার লেফার্ড ও রসেল সাহেব প্রভৃতি-  
র ন্যায় সংস্কার হইবে। ই। ক্রিউমিটারি-  
দিগের কাধ্য প্রণালী সকলে আনিতে পারেন  
সেটি আল নয়। সিংহ ব্যাভানি রুড্রি ও অ-  
জকারই ভাল বাসে।

ডাক প্রকাশ বলেন, উক্ত্য বিখ্যাত জ-  
মীদার পোপস সাহেব একটি চীনা করিতে  
ছেন। উক্ত্য কালেদের কয়েক জন হত-

বিদ্যাহারকে সিভিলসার্ভিসের পরীক্ষার্থে ইংল-  
ণ্ডে পাঠাইবার নিমিত্ত মূল ধন সংগ্রহ ক-  
রাই ইহার উদ্দেশ্য। পোপস সাহেব চাক-  
অনেক মূল্যবানসম্পদ সংগ্রহ করেন। উক্ত্য  
লোকেরা এই এই তাহার সবিশেষ সহায়ত  
করেন এই আশাভিগের অপ্ররোধ।

উক্ত পত্র অর্থ করিয়ারজন কাছাড়ের দু-  
ধ করিণ আরও হইয়াছে। নীলগুণ প্র-  
দেশের ভূমি সকল কবে করিণ হইবে?

হিন্দুগেট দুই প্রধানতম বিচারালয়ে  
একটি অন্য আকার প্রদান করিয়াছে  
ন। সপ্রতি চৌয় ও বর্ণা নাবেব এক মো-  
কফনার দ্বিত করিতেছেন, জমীদারের মায়ে  
ও গমস্তারা মৌসি পাঠ। তাহে পারিগেন  
একপ নিগম হইলে কেবল যে জমীদারের  
বিপদাগর হইবেন একপ নহে, ভারতবর্ষে  
জালকারিতা ও প্রবঞ্চনা প্রভৃতির অ-  
একটি তার উল্লেখ করিয়া দেওয়া হইবে।

শ্যাম দেশ হইতে চীনদেশ পর্যন্ত এক  
রেইলওয়ে করিবার প্রস্তাব হইতেছে।

বুয়ার বন্দরে কবেদিদিগের বিষ-  
এক রিপোর্ট প্রকাশ হইয়াছে। একপে স-  
৪৩৪ ২২২ কয়েদি আছে। ইহার মধ্যে  
১৮৩৩ জন পুরুষ ও ১৫৫ টি স্ত্রীলোক আ-  
জীলোকেরা প্রায় বিবাহিত। অনেকে বিব-  
হ করিতে ইচ্ছা, বাস্তব বিবাহ করিয়াছে। তা-  
হার অতঃপর বাস করিয়া বাধীন হইয়া জী-  
ক নির্বাহ করিতেছে। তাহার অধিকসংখ্য  
স্ত্রীলোক প্রেরণ করা কর্তব্য। অনেকে করি-  
কাতা প্রভৃতি হইবে অতি অল্প অর্থের কা-  
লকেপন করিতেছে, তাহার পুনর্বার গৃহস্থ  
অর্থে প্রেরণ করিতে অভিলাষী হইবে সন্দে-  
হ নাই। কশীর পবণেরে মাকুরিয়ার উপা-  
বেশের লোক সংখ্যা বৃদ্ধি করিবার এই উপ-  
র অবলম্বন করি়াছেন।

টাইমস অব ইন্ডিয়া এক জন পত্র প্র-  
ক বলেন টমাস মাসক এক ব্যক্তি ভারত-  
র্বে বিদ্যালয় স্থাপন হুল করিয়া লণ্ডনে চ-  
করিতেছে। এই প্রবন্ধ এক বার না কার-  
কৃত হইয়াছিল?

পুমা অবজারবর বলেন, আমেরিকার  
কালেটের কাতিওয়ারের রেসিডেন্ট হইবেন  
কৃতপূর্ব রেসিডেন্ট উক্ত্য মন্যকে অপদ-

|         |             |
|---------|-------------|
| কলিকাতা | ২,৪০,০০-০০০ |
| বোম্বাই | ১,৫২,০০-০০০ |

৬ ইংলিসম্মানের এক জন পত্র প্রেরক লেখ  
সাহেবের হিসাবের এক প্রমাণ করিয়া বলি  
যাহেন \* তিনি (লেফ্‌টেন্যান্ট) মোহাপুর্কক  
সমসাদারগকে ডুলাইট গবর্নমেন্টের কাগজের  
মুলাঃ বন্দি করিয়াছেন। কোন বণিকসমাজ  
আপনানিগের অংশ বন্দি করিবার অতি প্রা-  
য়ে বন্দি বিখ্য। আর প্রকাশ করিতেছেন তাহা  
হইলে কি আইন অনুসারে উঃহাদিগের ন-

উক্তিবার নরবলি ও বালিকা হত্যা নিবারণ  
কথের অন্য যে সকল কার্যসম্পন্ন হইলেন, তাহা  
দিগকে হাকাইরা দিয়া এই কার্য ত্বরান্বিত





### লেখকগণ :

বাহু-কানিংকর চট্টোপাধ্যায়  
 সত্যেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়  
 বঙ্কিম চন্দ্র চট্টোপাধ্যায়





# সোমপ্রকাশ

“সর্বস্বাধীনতা মঙ্গলময়িণী যারিণী: স্বাধীনতা মঙ্গলময়ী ন হইল।”

৩ নং।  
৪১ নংক।

সন ১২৬৩। ১০ ভাদ্র। ইং ১৮৬২। ২৫ আগস্ট।

সাপ্তাহিক মূল্য ১ টাকা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

মকরমে সোমপ্রকাশ প্রের-  
ণের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মকরমে সোম-  
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক  
মূল্য ডাকসহ মাসে ১৫ এবং বার্ষিক  
২ টাকা নিশ্চিত আছে। ছয় মাসের মূল্য  
অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকরমের  
দিকে যেমন ব্যক্তি সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা  
কর, তিনি অগ্রিম মূল্য দিহিত পত্র লিখিলেই  
পাইতে পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

মুদ্রাবোধব্যাকরণ।

মুদ্রাবোধ ব্যাকরণ দেবনাগরী ভাষায়  
সংগৃহীত হইয়া পটলভূষণ কালেক্টর নিকটে  
২০ পৃষ্ঠা ও প্ৰদলকারের দোকানে বিক্রয়  
হইতেছে। মূল্য ৮০ বাস আন

## বিজ্ঞাপন।

বাসবদন্তী।

মদনমোহন তর্কালঙ্কার রচিত পদ্য বাস-  
বদন্তী আবশ্যিক হইয়াছে। যিনি আমাকে  
উহার এক পত্রসংগ্রহ করিয়া দিতে পারিবেন  
সে ১৫ টাকা পারিতোষিক প্রদান করা  
হইবে।

১৮৬২ খ্রিঃ ১০ ভাদ্র।  
সন ১২৬৩। ১০ ভাদ্র।

## বিজ্ঞাপন।

১৮৬২ খ্রিঃ ১০ ভাদ্র।  
এবং সার্বজনিক পত্রিকা পাঠ্য।  
ইহার বাণ্যাক্ত করিয়াখান। এই পাঠ

করিতে মানস করেন ইহার নিম্ন লিখিত  
নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের চাঁদা  
পুস্তকে থাকর করিলে পুস্তকাদি হাওয়াত  
কেন্দ্রা যাইবেক।

১ম। গ্রাহকগণকে প্রতি গ্রহণে আটমা  
নার হিসাবে প্রতি মাসে চাঁদা দিতে হইবেক,  
এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক,  
এক মাসের ভান মূল্য গ্রহণ করা যাইবে  
ক মা।

২য়। এক মাসের অধিক বেশ কোন গ্রহণ  
রাখিল তাহাকে তাহার মূল্য দিতে হই  
বেক।

৩য়। যিনি যে অবস্থায় পুস্তক লইয়া  
যাওয়া, তাহা হইলে সেই অবস্থায় কেবল দি  
তে হইবেক, তাহার মূল্য কবিলে পুস্তকের  
মূল্য দিতে হইবেক।

৪র্থ। অপরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তক মূল্য  
জমা রাখিতে হইবে, অথবা এক জন পরি  
চিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক, তাহা  
হইলে তাঁহা ক পুস্তক হাওয়াত কেন্দ্রা যাই  
বেক।

৫ম। সমাদার ও সম্মতিত পত্রিকা সকল  
আমাদিগের গ্রাহকগণের আদিত পাঠ করিতে  
কোন মূল্যই লাগিবেক না।

৩০ নং  
নিউ ইংল্যান্ড ১৫ নং  
কলকাতা ১৫ নং

## সোমপ্রকাশ।

১০৮ ভাদ্র ১২৬৩।

জ্যোতিষিকারের নিয়ম বিহীন।

প্রাধান্য।

ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেট জি.জি. বাবু জি.জি.

চন্দ্র ঘোষাল ( যিনি পূর্বে শান্তিপুরে ছি-  
লেন, এক্ষণে বম্বাইয়ে আছেন ) আমি  
নিগের মতজিজ্ঞাসু হইয়া আমাদিগের  
নিকটে একখানি মুদ্রিত আবেদন পত্র ও  
একটি আইনের পাণ্ডুলেখ্য পাঠাইয়া দি-  
য়াছেন। আমাদিগের মত এই সোমপ্রকাশ  
পে একটি হইল, পাঠকগণের সম্মতি তিনি  
অনুগ্রহ করিয়া দর্শন করিবেন।

এ আবেদনের মর্ম এই, বিদ্যাবান  
সারে স্বাধীন বিষয়ের বহু বিস্তারিত  
নিয়ম থাকতে এদেশের প্রাচীন ও  
বর্তমান ধর্মবিশ্বাস সকল ক্রমে ক্রমে ক্ষয়  
প্রাপ্ত হইয়াছে ও হইতেছে, অতএব উক্ত  
মূল্য বাহাতে একপ না হয়, তাহার এক  
টি উপায় করা কর্তব্য। সে উপায় এই,  
স্বাধীন বিষয়ের ক্ষয় ক্ষয় অংশ না হইয়া  
জ্যোতিষিকারের স্বাধীন বিষয়ের অধিকারী  
হন।

একপ একটি নিয়ম হওয়া যে নিতান্ত  
আবশ্যিক, তাহা আমরা গত বছর  
( ১২৬৮ সালের ) ১৫ই মাঘের সোমপ্র-  
কাশে বিস্তারিতরূপে প্রতিপাদন করিয়া  
ছি। পরিদর্শক ইহার প্রতিকূল পক্ষ  
অবলম্বন করিতে এই বর্ষের ২৯ই মাঘের  
সোমপ্রকাশেও ইহার পুনরাবলম্বন হইয়া  
যাওয়া সেই সেই পত্র কটিল হইতে বাধি-  
র করিয়া দেখিবার ক্রেশ দীর্ঘ দেব পরাইয়া  
হইবেক, অথবা আমাদিগের হস্তে সেই  
সেই পত্র নাই, আমাদিগের সুবিধার নিমিত্ত





মহা বিত্তীয় অনিকে নিবারণের একটি উ  
পায় করিয়া দিচ্ছে, তদনুসরণ করিলে  
কোন বিষয় জমিদার সম্ভাবনা থাকিবে না ।  
এবিষয়ের নিমিত্ত একটি সভা করিয়া যাবতী  
য় জমিদার ও কলুকদের প্রতীকিত তথ্য  
নিমন্ত্রণ করা হউক, তাঁহারা সকলে একত্রে  
চেষ্টা এই আবেদন পত্র স্বাক্ষর করিয়া ব্যব  
স্থাপক সভায় অর্পণ করুন । এইরূপে কায্য  
করিয়া যদি উহা বিধিবদ্ধ করা হয়, গবর্ণ  
মেন্টে আমাদের শাসনিক আচার ব্যব  
স্থাদি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিয়া অনুচিত  
কর্ম করিলেন বলিয়া লোকের বিদ্বেষ জ  
ন্মিত হইবে আশঙ্কা করা হইয়াছে, তাহা  
সংস্কারেই নিরাকৃত হইবে । সকলের সম্মতি  
করিয়া কাজ করিলে তাহাতে বিদ্বেষ জন্ম  
নাই সম্ভাবনা কি, একত্রে আর একটি  
সম্মতি প্রাপ্য লাভ হইবে । ইংলণ্ডের লো  
কসম্মতি বলে রাজত্ব সম্বন্ধে স্বাধীনতা  
লাভ করিয়াছেন, গবর্ণমেন্টের প্রকার সম্ম  
তি গ্রহণ পূর্বক কায্যনিষ্ঠান রূপ সেই স্বত্ব  
সম্মতিতে আমাদের হস্তগত হইবে ।

দ্বিতীয়, প্রস্তাবিত পাণ্ডুলেখের এক  
খণ্ডে লিখিত হইয়াছে, কোন ব্যক্তি তা  
হার পিতার মৃত্যুর পর যদি ধন্যত্বের গ্রহ  
ণ করে, সে আপনার পৈতৃক বিষয়ের অ  
ধিকার অধিকারী হইবে, অপব্যক্তি তাহার  
পিতার আশ্রিত পরিবারবর্গের তরুণপো  
ষিত থাকিবে । এখনি বিধিবিধান এ  
দেশীয় শাসন ও যুক্তির নিষ্ঠ হইতে বিরুদ্ধ ।  
অন্য দেশে অনুসারে হিন্দুধর্মপরিভ্রমণে পৈ  
তৃক ধনে অধিকার নাই । যুক্তি বিরোধ  
নাই, যে ব্যক্তিকে পৈতৃক ধনে অধিকার  
দেওয়া হইল, সে সম্মতীয় ধনের অধিকা  
রী না হইবে কেন ? অন্য অন্য পরিবারের  
আসাম্পাদন দ্বারা নিরুপস্থিত বিধান দ্বারা  
চরিতার্থতা লাভ হইতে পারে ।

তৃতীয়, প্রস্তাবিত আইনকে প্রতিক  
করিয়া তাহার রেজিষ্টারী কী প্রতীতির যে  
প্রস্তাব করা হইয়াছে, তাহাও যুক্তিসহ

হইতেছে না । উহা দ্বারা অত্যাচারের আর  
একটি পথ পালিত করা হইবে ।

হাইকোর্টের জজদিগের দ্বারা  
বাঙ্গলায় অনুবাদ করিবার  
আবশ্যকতা ।

অতি অল্প দিন হইল, সদর ও সু  
প্রিম কোর্ট একত্র হইয়া হাইকোর্ট নাম  
প্রাপ্ত হইয়াছে । এত দিন সদর আদা  
লতে এই নিয়ম ছিল ( আজিও উহা  
পরিবর্তন হয় নাই ) জজেরা আপনাদিগে  
র দ্বারা আপনাদিগের ইংরাজীতে লিখিতেন,  
তাহাদিগের সেই দ্বারা উদ্ভূত অনুবাদিত  
হইয়া সকলের আদালতের গোচ  
রার্থ স্থানে স্থানে প্রেরিত হইত । বাঙ্গ  
লা বিচার প্রতিষ্ঠান সমুদয়ে প্রত্যেকই এই  
নিয়ম অনুসরণ করিয়া অনুসৃত হইত । কিন্তু  
অনুবাদন করিয়া দেখিলে এ নিয়মটি কো  
ন ক্রমেই ব্যর্থমান হইতে পারে । বাঙ্গলা দেশে  
বাঙ্গলা ভাষা চলিত, সেখানে উদ্ভূত ভাষায়  
কৃত অনুবাদ প্রেরণ । সে কি প্রকার  
যুক্তি : বাঙ্গলা একটি স্বতন্ত্র প্রদেশ নহে ।  
ইংলণ্ডে চারি কোটি দশ লক্ষ লোকের  
বাস । সমুদয়ে উনচল্লিশটি জেলা আছে,  
তন্মধ্যে কেবল বিহার, পাটনা, ব্রহ্মপুত্র,  
তাগলপুর, হির্ডিত মাহাবদ পারগ  
এই কয়টি জেলায় হিন্দি ভাষা প্রচলিত  
আছে । উদ্ভূত ভাষা জজদিগের দ্বারা  
অনুবাদিত চারি কোটি দশ লক্ষ লো  
কের কাজের সহজ ও সুবিধার নিমিত্ত  
হইয়া থাকে : প্রত্যেক উহা লোকের কষ্ট  
ও অর্থ ক্ষয় একটা প্রবল কারণ হইয়া  
ঠাইয়াছে । এ দেশের লোকে উদ্ভূত ভা  
ষা নেন না, তাহার এই দ্বারা সুবিধার প্রয়ো  
জন হয়, তাহাকে ত্রিমিত্ত অর্থ ব্যয়,  
ক্লেশ ও অনোর অনুভূতি করিতে হয় ।  
অপর, গবর্ণমেন্ট ব্যয় করিয়া সে উদ্দেশ্য  
এ দ্বারা অনুবাদ সকলের সর্বত্র প্রের  
ণ করিয়া থাকেন, তাহারও ব্যয়ান্ত জন্ম

তেছে । যে ভাষা সকলেই বুঝে, ও  
তে কোন কাজ করিয়া সমর্থ হইতে পারে  
অতীত কাল লোকের সম্ভাবনা ছিল  
সদর আদালত ও শরীয়াত দ্বারা  
করিয়াছেন । ইহা এক্ষণে হাইকোর্টে প  
রিণত হইয়াছেন । আজিও কি উদ্ভূত  
অবিদ্যাকারিতা দ্বারা যুক্তিবিহীন বিচার  
অপরিবর্তিত থাকিবে : সদর আদালতের  
সেই পরিবর্তের সন্ধিত কি ইহার পরিবর্ত  
হইবে না ? হাইকোর্ট এই বিবরণ পরিবর্ত  
করিয়া বিচার বাঙ্গলা ভাষায় অনুবাদ  
প্রথা প্রবর্তিত করেন, সেই অনুরোধ করি  
বার নিমিত্তই অন্য আমরা এই প্রস্তাবনা  
করিয়াছি । হাইকোর্ট প্রতিষ্ঠিত হওয়ার  
এ দেশের অনেকগুলি সৌভাগ্য লাভ হই  
য়াছে, আরো অধিক সৌভাগ্য লাভের সম  
ভাবনা আছে । এই আদালতের এ দেশকে  
সর্বতোভাবে উন্নত করিয়া তুলিবারই চেষ্টা ;  
কিন্তু যে দোষ গুলি এই চেষ্টার অন্তরায়  
হইয়া রহিয়াছে, তাহা সংশোধন ব্যতিরেকে  
উহা সকল হইবার সম্ভাবনা নাই ।

জজদিগের দ্বারা বিচার বাঙ্গলায় অনু  
বাদ করিবার প্রথা প্রবর্তিত হইলে দুটা  
সম্ভাব্য কারণ হইবার সম্ভাবনা আছে ।  
প্রথম, সহজে গবর্ণমেন্টের উদ্দেশ্য সাধন  
হইবে । এ দেশের সকলেই অনায়াসে উ  
দ্ভূত অনুবাদ বোঝে সমর্থ হইবেন । বি  
ত্তীয়, উহা বাঙ্গলা ভাষায় জিজ্ঞাসা সাধনের  
একটি প্রধান উপায় হইবে । যে ভাষা  
আদালতের ভাষা হয়, অর্থকরী বলিয়া  
তৎক্ষণাত লোকের সমর্থিত হইয়া  
থাকে । এই উদ্দেশ্যেই লাভ হইতে এক  
শত এক বাঙ্গলা পাঠশালার প্রতিষ্ঠা ও  
এই প্রতিষ্ঠা করেন, যাঁহারা বাঙ্গলা ভা  
ষায় সুশিক্ষিত না হইবেন, তাহাদিগকে  
কর্ম দিবে না । কিন্তু উহা গবর্ণমেন্টের  
অন্য অন্য অনেক বিবরণী প্রতিষ্ঠার  
দ্বারা কল্যায় করিবার পূর্বেই বিচার  
সাধ্য । যে কোন উপায়ে হউক, বা



৫ ভাষার জীবন্তি সাধন যে গদ্যরূপে  
একটি কর্তব্য কর, বোধ হয়, তাহা  
আমাদিগের রাজপুরুষদিগের অনেকেই  
বীকার করিবেন। উইলিয়ম "দি কঙ্কর" ইংলণ্ডে ইংরাজী ভাষা বিলুপ্ত করিয়া  
করাণী ভাষা প্রচলিত করিবার যে রূপ  
চর্যমোরখ করিয়াছিলেন, আমাদিগের  
রাজপুরুষদিগের মধ্যে সেইরূপ চর্যমোর  
রখাশালী কেহ আছেই, একপ আমাদি  
গের বোধগম্য হয় না, যদি থাকেন; তাঁ  
হার। সংখ্যার বিভাজ্য অল্প সন্দেহ নাই।  
একপে আদালতে যে ভাষা প্রচলিত আ  
ছে, তাহা এক অজুত ভাষা। ডাক্তারী  
উষধের ম্যার একাধারে সহুদায় তাহাই  
আছে। রজাকরের সহিত এই ভাষার সা  
দৃশ্য করিলে বোধ হয় সমধিক সঙ্গত  
হয়। সংস্কৃত, আরবী, পারসী, বাঙ্গলা ও  
ইংরাজী, ইহার যে ভাষা উহাতে দেখিতে  
চাও তাহাই দেখিতে পাইবে। উহা যে  
কেমন ভাষা, আমাদিগের রাজপুরুষেরা  
যদি বুঝিতে চান, সংক্ষেপে এই মাত্র  
বলিলেই পর্যাপ্ত হইবে, বহু অনুসন্ধান  
করিয়াও সাত হাত দীর্ঘ এক খানি রুব  
কারির মধ্য হইতে সাতটি সমাপিকা ক্রি  
য়া বাহির করা ভার।

কেহ কেহ একথা কহিতে পারেন,  
মুন্দের প্রকৃতি কয়েকটি প্রদেশে হিন্দী  
প্রচলিত, অতএব কেবল বাঙ্গলা ভাষায়  
রায় অনুবাদ করিবার নিয়ম করিলে তাহা  
দিগের সুবিধা হইবে কেন? ইহার উত্তর  
হলে আমাদিগের বক্তব্য এই, হিন্দী ভা  
ষায় রায় অনুবাদ করিবার নিয়ম ২।১  
ব্যক্তি নিয়োজিত হউন। কিন্তু ৩৯টি জে  
লার মধ্যে মুন্দের প্রকৃতি সাতটিব সুবি  
ধার নিমিত্ত বক্রিষ্টির অসুবিধা ক  
বুজি নিক্ক হয় না। সেই সাতটিতেও উক্ত  
ভাষা চলিত নহে। এ হলে আর একটি  
বক্তব্য এই, যদি হিন্দী ভাষা প্রবর্তিত  
হয়, দেবনাগর লিপিতে যেন তাহার অনু

বাদ প্রথা আদৃত করা হয়। এখন যে  
উক্ত ভাষা লিখনে পারসী অক্ষর ব্যবহার  
আছে, তাহা অস্বরণীয় নহে। পারসী  
অক্ষরগুলি লিখন পঠনে সহজ নয়।  
উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের কথা তুলিয়া কোন  
আপত্তি করা এখানে যুক্তিসহ হইতেছে  
না। আমরা উপরে যে হাইকোর্টের প্র  
সঙ্গ করিলাম, ইহা বাঙ্গলা দেশেবটে উ  
ত্তর পশ্চিমাঞ্চলে বর্ত্তমান হাইকোর্ট প্রতি  
ষ্ঠিত হইবে, ইহা হিবির সিদ্ধান্ত আছে।  
তাহা হইলে তথায় সে দেশীয় ভাষা প্রচ  
লিত হইবে। সে অনুসারে এ হাইকোর্টে  
বাঙ্গলা ভাষা প্রচলিত করিবার বন্দা জন্ম  
তে পারে না।

—৩৩—

ভারতবর্ষীয় রমণীগণের দুঃখতা

—মোচনের উপায় কি—

আমরা আজ একখানি প্রেরিত পত্র  
পাঠকগণের গোচর করিতেছি, পাঠ করি  
লে আমাদিগের ন্যায় পাঠকগণও পবন  
প্রীতি লাভ করিবেন। ইহা এক জন বি  
দ্যাবতী ত্রীলোকের লিখিত। বাস হু, তাঁ  
হাকে অনেকেই জানেন, আমরা তাহাকে  
বিশেষ রূপে জানি। তাঁহার বাঙ্গলা লিপি  
বার বিলক্ষণ কমতা আছে। অনেক পু  
রুষে যেমন ত্রীলোকের নাম দিয়া আপ  
নাদিগের লিখিত পত্র সহস্র পত্র প্রচার  
করিয়া থাকেন, ইহা সে রূপ নয়। ইহা  
যথার্থই কোমল কর হইতে বিনির্গত  
হইয়াছে।

যিনি এই পত্র লিখিয়াছেন, তাহার  
স্বামী ও তাঁহার স্বামীর এক বন্ধু উভয়ে  
মুন্দেরে গিয়াছিলেন। তথা হইতে তাঁহার  
স্বামীর বন্ধু এই স্থানের বর্ণন করিয়া তাঁহাকে  
এক পত্র লিগেন। প্রস্তাবিত পত্র খানি তা  
হাই প্রকৃত।

মহত্ত্বঃ করণে—

মহাপ্রেরার সহস্র লিপি খানি প্রাপ্ত  
ইহা পরমাংশুসিদ্ধ হইল। হায়! লিপি

খানি পাঠ করিতে করিতে যে ক্ষণ মক্ষণ  
হইল, তাহা আর কি লিখিব। বহাশয়। জা  
নি না সে আনন্দাশ কি বিধান। মাপ  
নাগ যুগেরে গিয়া মানা প্রকার রমণীর পদ  
সকল বর্ণন করিয়া চব্বৎ ও অনিচ্ছনীর  
আনন্দলাভ করিতেছেন। শিব বাবু! আ  
নন্দ! দেখিতে তো পাইতে না, মস্তকের এক  
টা আশা থাকে, তাহাও অস্বরণীয় নাই।  
এ সকল বিষয়ের আশার মূলোচ্ছেদন আম  
দের কে করিয়ছে? ও! আর লেখন  
চলে না। আমরা এত পরাধীন যে আশা  
যাহাকে বলে তাহাও কবিত্তে পারি না। ও  
এর কোন একটা বিষয়ের আশা করিয়া মা  
ত্রই যেন ও বন্ধু হইতে কে বলিয়া উঠে  
বলে। পরাধীন, ওঁগ, এ প্রকার বহু বিধ  
যেব আশাকে মনে স্থান দিও না, যে কে  
একনা অস্তিত্ব রূপে কেশিতা হইয়া  
হই পিত। আমরা দিগকে শিক্ষাবদ্ধ। কলি  
য়া রাপিতার চন্দ্রী কি তত্ত্ব করিয়াছ। মাত  
পুত্রি। তোমার এই তর্কিনী তুহিতাদি  
গের প্রতি সত্য হইয়া কিংবদন্তি হু  
প্রদান কর, আমবা তথায় গিয়া আশ্বিন  
কবি, ১১ বধুনা আনন্দ কর না, নিত্য  
ভস্ম হইয়াছে। ওঁগ, মায়বান সঙ্গ  
১১ পদমেরব আমাদিগকে এ এসইনী  
বধুনা হইতে ওঁগ, ইহার সত্য। পিত। আ  
মাদের নানব বধুনা, অশ্রুতব করিতে পার  
এ পুত্রিণীতে তাহক মস্ত্য একটাও নাই (তা  
হার এই প্রকার সংস্কার) যদিও তুমি মনে  
মনস্তা সমস্তই অবগত আছ তথাপি  
বলিয়া চুপ করিয়া থাকিতে পারি না, অত  
তোমার নিকটে কিছু কাচ রোজন করি  
মনের যন্ত্রণাকে কিঞ্চিৎ লঘুত্ব করিবার  
ও করিয়াছি, ইহা বাতীত অমৃদুদের  
উপায় নাই। পিত। না হয় তোমার কি  
মুহুর্ত্তে শীঘ্র প্রেরণ কর, আমাদিগকে এ  
হটত উদ্ধার করিবার উপায় তিনি  
জানেন।

শিব বাবু! হাত বোঁধে অশ্রু বিম  
একটা কবিতা পাঠ করিয়াছিলাম, তাহার  
শেষে লিখিত হইয়াছে "অশ্রুখের শেষ  
করী করা" কবিতাটি পুঙ্খ রচিত, যদি

সকলকেই কোন রমণী স্মৃতিতে চাই, তাই  
হইলে তিনি অত্যাধিক বলিতেছেন যে "তবু  
খের শেষ এই হস্তাঙ্গা, যেখানে নারীকুলে  
জন্ম গ্রহণ করিয়া, সমস্তকাল এক এক বার যেন  
হয় যে পড়িতে শিখিয়াছিল বেন, যদি প  
ড়িতে না, পারিতাম তহা হইলে নানা  
প্রকার ইচ্ছা আনিতেও পারিতাম না, তা  
মি'র ইচ্ছা হইত না। মন একপ্রকার  
পঙ্কর ন্যায় হইয়া থাকিত কোন ক্রমেই অ-  
গ্রস্ত করিতে পারিতাম না। ক্রমে হইতে  
দুঃস্থ হইবার কক্ষতা বাহ্যিকের নাই কেবল  
ক্রেম বলিয়া বোঝা না, অত্যাধিক তাহাদের পক্ষে  
কত সুখকর বিবেচনা করিয়া দেখুন। মতা-  
মহা। অত্যাধিক মাংস প্রাণী লোক পাশা কেব  
লি আছে? যদি থাকে তবে লিখিবেন, তা-  
হাদের নহিত হইল। যদি কিছু প্রক  
হইতে পারি। আমি নিঃস্বার্থেই অন্যের  
এক অন্তঃকরণ করিবেন? কিন্তু খের বিষয়।  
তাদের, মন, আনিতে পারিয়া কি স্বীয় ক্রেম  
বাস্তবিক হস্তাঙ্গা কাবতে পারিব না তা  
কখনই পারিব না। তাই জানি। কেবল উ-  
পায়ে ক্রেম সম্বন্ধে বিস্তারিত লিখি।  
হুলি। অতএব মন। এত উত্তরা হইও না,  
বিবেচনা করিয়া দেখ এ যতনা যত্নসহকারে  
তোমার স্মৃতিতে চাইকে, তবে বিলাপ করি  
য়া কেন যতনা ব্যস্ত, তুমি কি জা. না যে  
যাহার নবট বিলাপ করিতেছে তিনি এই  
হস্তাঙ্গা মনের পুঙ্কন স্মৃতি। তিনি তো  
মহাৎ যে স্মৃতিতে চাইবেন তাহা কি প্রকারে  
জানিতে পারিলে? জীওতির দুখে যদি  
তাহারা স্মৃতিতে চাইবেন, তবে হস্তাঙ্গা গী  
কেন এত করে তোমার স্মৃতিতে চাইত না। তাহারা  
স্মৃতিতে চাইবেন কেন? তাহাদের চাকরাপীর  
মত, মতের কত অনায়াসে চলিয়া যাই  
তেছে। তাহারা আমাদের দুখবোধের  
চেটে বেন করিবেন? তাহাদের আর জ  
লিখিয়া শিব বাবুকে কষ্ট দিই। মন মন  
নিভাঃ অধীরা হইয়াছি। এ প্রকৃত বত  
একটি লিখিয়াছি। যাহা হউক, গীর বাক্য  
জা প্রাণ লোক কমা করিবেন। নিবেদন ইতি।

সম ১২৩০

১ ১২৩০

বাংলাদেশী :

এই পত্র জীলোকে নিখিয়াছেন বলি।  
রা আমরা এক কালে ভাব গলিয়া যাই  
নাই, আমাদের দেশের জীলোকেরা  
মুখ, সেই মুখ মনের এক জন বাহলা  
ভাবার যথার্থ রীতির অনুসারে এক পত্র  
লিখিতে পারেন, এ তাহারা ও গলাফ হই  
নাই, আমাদের এত সন্তুষ্ট হইবার কা  
রণ এই, এই সংক্ষিপ্ত পত্রমাধ্য এদেশীয়  
জীলাতির জীবন ও পরাধীনতার বিষয়  
সবিস্তর লিখিত হইয়াছে।

"তারতবর্ষীয় রমণীগণের জীবন"  
মোচনের উপায় কি? বলিয়া: আমরা  
উপরে যে প্রশ্ন উপস্থাপন করিয়াছি, এতৎ  
পত্র দ্বারা তাহারও উত্তর ও সিদ্ধান্ত করা  
হইয়াছে। বাহলা কপে জীলাতির বিদ্যা  
লিখাই সেই উপায়। রমণীগণের বিদ্যা  
লিখাই হইলেই তাঁহারা আমাদের জীবন  
বাহ্য বিষয় বুঝিতে পারিবেন, বুঝিতে  
পারিলেই তৎ প্রতীকার বিষয়ে সবিশেষ  
চেটা করিবেন। উল্লিখিত পত্র মধ্যে পত্র  
রচনা কারিণীর যেকোন মনের ভাব ব্যক্ত  
হইয়াছে, সুশিক্ষিত প্রভবে যদি অধিকাংশ  
জীলোকেদের মনের ভাব এইরূপ হয়, আ  
মরা কি আর তাঁহাদিগকে পশুবৎ মোচ  
নীয অবস্থায় রাখিতে সমর্থ হইব? তখন  
তাহারা আপনাদিগের জীবন মোচনের  
উপায় আপনাই করিয়া লইতে পারি  
বেন।

আমাদিগের জীলো: যদি চির কাল  
অজ্ঞানমুগ্ধকারে আবদ্ধ হইয়া থাকেন,  
আমরা যত তাঁহাদিগের হিতচেষ্টা করি  
না কেন, আমরা যত তাঁহাদিগের উন্নতি  
সাধন চেষ্টা করি না কেন, আমরা যত  
তাঁহাদিগের সুখ স্বচ্ছন্দ করিয়া দিবার  
চেষ্টা করি না কেন, আমরা যত তাঁহাদি  
গের স্বাধীনতা প্রদানের চেষ্টা করি না  
কেন, তাঁহারা কোন ক্রমেই সুখিত হইবেন  
না, প্রত্যুত তাঁহাদিগের সেই সেই  
স্বাধীনতাদি কেবল আমাদের নিঃস্বার্থে  
হইবে।

আমাদিগের জীলো: মু  
লে কেবল যে আমাদিগের  
সুখময় হইবে একপ নহে, ও  
পরম সৌভাগ্যশালিনী হইয়া ও  
আমাদিগের দেশের যে অতীর্ক  
দুঃখগোচর হইতেছে না, আমাদিগে  
গণের সুখতাই তাহার একটা প্রধা  
রণ। জীলাতিই প্রায় কম্পিত ও হ  
ধম ও জাতি সম্বল আচার ব্যবহার  
আজ্ঞার স্থল হইয়া থাকেন।

পাঠিত ভূমি বিক্রয় ও মর  
চরলস উড।

কমে কমে তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে  
সহিত টেটাসেক্রেটারির একটি অন্তঃস্থ  
যুক্ত হইয়া উঠিল। অত্যা গবর্ণমেন্টে  
কিছু কাজ করেন, সর চারলস উড সে  
সমুদায় প্রায় তন্ন তন্ন করিয়া বিবেচনা ক  
রেন, এবং প্রায়ই কিছু কিছু পরিবর্তন ক  
রিয়া থাকেন। কাণ্টাউবিল, তারতবর্ষীয়  
ব্যাঙ্কের সহিত বন্দোবস্ত, আর বাবের চি  
লাব, এবং সম্প্রতি আগত পতিত ভূমি বি  
ক্রয় সংক্রান্ত আজ্ঞা ইহার প্রমাণ। সর  
চারলস উড এবম্বিধ ব্যবহার করিতে তা  
রতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের স্বাধীনতা ব্যাহত  
হইতেছে সন্দেহ নাই। স্বাধীনতার একপ  
বাঘাত কাকারও অতীর্ক নহে। তারতবর্ষ  
যেই তারতবর্ষের শাসন জিয়া সম্পন্ন হই  
ইয়াই, একান্ত প্রার্থনীয়। যুক্তিও এই  
কথা বহিয়া দিতেছে। কিন্তু অনুবাদন  
করিয়া দেখিলে তাহার এই হস্তক্ষেপ দুই  
একটি বিষয় ব্যতিরেকে আমাদিগের অন  
র্থের নিমিত্ত হইতেছে না। অধিকাংশ  
যেই প্রায় দেখা যাইতেছে, তারতবর্ষের  
হিত সাধন তাহার উদ্দেশ্য। তিনি যে  
এইরূপে হস্তক্ষেপ করেন, তাহার কারণ  
কি? নিরবতির প্রত্যুৎপাদন কি তাহ  
র উদ্দেশ্য: তাহা হইতে তাহার কল্যা  
ণ নি তারতবর্ষের বলাৎকার হইত না।  
আমাদিগের ও আমাদিগের



রই অধিক প্রাচুর্য, অত্যাধিক  
ই প্রাচুর্য পরাধীন হইয়া  
ন, সর চার্লস উড এইরূপ মনে

পেট্র'কাথোর এত অনুসন্ধান করিয়া  
ন। যাহা হউক, বৎসরসঙ্গে এই  
উপস্থিত হইয়াছে, এক্ষণে তাহার  
ধারণা করা যাইতেছে।

লর্ড কানিং ১৭ই অক্টোবর গাংডী  
জমি প্রতি একর (৩ বিঘা) ২১০  
৫ টাকার হিসাবে বিক্রয় করিবার অনু  
মতি দেন (আমরা তৎকালে ইহার নি  
শাংলি প্রকাশ করিয়াছিলাম, এক্ষণে  
তাহার পুনরুদ্বোধের প্রয়োজন নাই) সর  
চার্লস উড এক্ষণে তাহার কয়েকটি বি  
গেই নিয়ম করিয়া দিতেছেন। তিনি বলে  
ন, পর্বতের উপরিভূমি, নদী তীরস্থ ও প্রান্ত  
রের ভূমির অনেক বৈলক্ষ্য আছে। সক  
ল ভূমি একবিধ মূল্যে বিক্রীত হইতে  
পারে না; যে ব্যক্তি এখানে আবেদন  
করিবেন, তিনিই ভূমি পাইবেন এ নিয়  
মও ন্যায্যনুগত নহে; আর লর্ড কানিং  
আজ্ঞা করিয়াছিলেন কোন পতিত ভূমি  
মুক্তন ক্রেতার হস্তগত হইলে যদি তাহার  
পর কেহ সেই ভূমিতে তাহার স্বত্ত্ব আছে  
বলিয়া আপত্তি করেন, তাহাকে এক বৎ  
সরের মধ্যে আপন স্বত্ত্ব সম্রমাণ করিতে  
হইবে, স্বত্ত্ব পূরণ হইলেও তিনি  
পূনঃপ্রাপ্ত হইবেন না, তাহাকে তাহার  
মূল্য দেওয়া হইবে এইমাত্র। সর চার্লস  
উড এই আজ্ঞা রহিত করিয়াছেন। তিনি  
বলেন অন্য অন্য ভূমির ন্যায় এসকলেরও  
স্বত্ত্বান্বয় নির্ণয়ার্থ ১২ বৎসর মিয়াদ দেওয়া  
কর্তব্য; আর সেই ভূমিতে অপরের স্বত্ত্ব  
আছে একরূপ প্রমাণ হইলে ইচ্ছা হয় তিনি  
মূল্য লইবেন নতুবা ভূমি লইবেন। সর  
চার্লস উডের মতে লর্ড কানিংয়ের উক্ত  
আজ্ঞা প্রচলিত আইন ও যুক্তির বিরুদ্ধ।  
সকল ভূমি বিক্রীত হইল; তিনি

মহাশয় করিয়া নিজ স্বত্ত্ব অন্য কার্যে  
তাহাকে মূল্য লইতে বলা হইল, কিন্তু  
তিনি তাহাতে অসম্মত হইলেন, এক  
মূলে বিচারপতি তাহার ভূমি প্রত্যাপ  
করিবার আজ্ঞা না দিয়া আর কি আজ্ঞা  
দিতে পারেন? সর চার্লস উড এইরূপ  
এ বিদ্যায় যে কথা গুলি কহিয়াছেন,  
সেই কারি দল তাহা যেরূপে শেখপ বস্তু  
নিঃস্বার্থ হিববুজি ব্যক্তিমাতেই ক.এ. অথ  
ওনীয় জ্ঞান করিবেন সন্দেহ নাই।

স্টেট সেক্রেটারি আরো বলেন, সেন্ট  
মন্টে গাংডোর সকল স্থানের ভূমির তার  
তম বিবেচনা করিয়া একটি মূল্যক  
মূল্য স্থির করিয়া রাখিবেন। যে ব্যক্তি  
এখানে ভূমির জন্য আবেদন করিবেন,  
তাহাকে করিপেবনার চমা দিতে হইবে।  
পরে নিকটবর্তী গ্রাম সমূহের প্রকাশ  
স্থানে এক সেংগা পত্র দেওয়া হইবে।  
এইরূপে তিন মাস অতীত হইলে পর যদি  
পলীশ্বামের কেহ কোন আপত্তি না ক  
রেন, তাহা হইলে ভূমি নীলামে বিক্রীত  
হইবে। নিকটবর্তী মূল্যে মূল্যে ইচ্ছা  
কীত হইবেন। প্রথম আবেদনকারী যদি  
নীলামে ক্রয় করিতে অপারগ হন, তাহা  
হইলে যে ব্যক্তি ক্রয় করিবেন তিনি প্র  
থম আবেদনকারির প্রদত্ত জমি পূরণ ব্যয়  
প্রদান করিবেন।

সর চার্লস উড আর এক স্থানে বলেন  
যাহাতে অধিক সংখ্যা ইউরোপীয় এদেশে  
বাস করেন, ইচ্ছা তাহার সম্পূর্ণ ইচ্ছা, কিন্তু  
তিনি তন্নিমিত্ত দেশস্থ লোকের স্বত্বান্বয় ক  
রিতে অস্বীকার করেন। "আমার প্রভুতি বন্য  
ভাটী দিগেব আপন আপন পৈতৃক ভূমি  
র উপর অতিশয় মায়ী আছে, তাহাদিগের  
ভূমি ইউরোপীয়দিগকে দেওয়া অন্যায়।"  
একর স্থানে ইউরোপীয়দিগের বসতি হই  
লে গবর্ণমেন্টের সহায়তা হওয়া দূরে থাকুক  
ক, তাহাদিগের নিমিত্ত অপরিমিত ব্যয়  
করিতে হইবে। তিনি আরো এক স্থানে

লিখিয়াছেন "কবকেরা সমুদ্র পাশে  
গবর্ণমেন্টের যথার্থ মঙ্গল।" শেখোক্ত বা  
কাটি স্বর্ণময় অক্ষর ভারতবর্ষীয় সভা পু  
রে তিথিতে লিখিয়া রাখাই বর্জ্য।

লর্ড কানিং লাও কোলডাস সভার  
দুঃকে পড়িয়া তাহাদিগের সন্তোষ সাধনা  
র ৭ই অক্টোবরের আজ্ঞা প্রকাশ করে  
ন। ভারতবর্ষীয়দিগের স্বার্থের প্রতি তৎ  
কাল তদৃশ দৃষ্টি ছিল না। সর চার্লস  
এ আদর্শ রহিত করিয়া উত্তম কার্য্য করিয়া  
ছেন। ভারতবর্ষী। গবর্ণমেন্ট ব্যতীত  
সভায় উক্ত বিধিবদ্ধ না করি ও সর চা  
রলস উডের মত না লইয়া কাহা আরম্ভ  
করিয় ভাল করেন নাই। অল্প মূল্যে  
ভূমি ক্রয় করিয়া তাহাতে আবার অধিক  
মূল্যে বিক্রয় করিয়া ব্যবসায় করা অ  
নেকের ইচ্ছা। সর চার্লস উড তাহা  
রুখিতে পারিয়াছেন। "করা ভারতবর্ষীয়  
গবর্ণমেন্টকে প্রতিজ্ঞাতসংকারী ও অসাম  
বলিতা গুলি দিয়াছিলেন, তাহার পাস  
ভূমি বিক্রয় সব চার্লস উডের অনুমো  
দিত, এসব দ লুনিয়াও বোধ হয় তুই হই  
বে।" ইচ্ছাদিগের অসন্তোষ জন্মিবার  
কাণ্ড এই, সর চার্লস উড এদে  
গের স্বার্থ উপেক্ষা করিয়া কেবল  
দিগের স্বার্থ সন্ধান করেন নাই

## বিবিধ সংবাদ।

১০ই ডিসেম্বর সেংগার।

নড়াডেগ হইতে এক ব্যক্তি লিখিয়া পা  
ঠাইয়াছেন, তত্রত্য চোট আদালতের জ  
জ্ঞান বক্ষ, অনাথ প্রভৃতির সুখ বিবরণ  
সাধ্য। নানার্থ একটি সমুদায় বস্ত্রাব সা  
য়ে ২৫০ আর্থ এক সভা করিয়াছিলেন  
একবিধ ও অন্যবিধ সাধারণ কল্যাণকর কা  
র্য্যে ব্যয় করি ল কেবল যে অর্থ স্বার্থক  
একর মতে, আপনাদিগের লেখা পড়া আ  
সারক হয়, অসার অপব্যয় মুখ, দুর্নী  
পরে সমুদায় জীবনের উপার্জন ও বিদ্যা  
সঞ্জন করা সুশিক্ষিত দিগের কর্তব্য নহ

হাইও নামে এক জন ইউরোপীয় দিল্লী  
গেজেট টাকার হস্তি ২০০০ টাকা করিয়া  
করাইয়া গিয়াছে। সে খুঁজ হইয়াছে, আজি  
নি জাল কার্যে কোন দল জড়িত?

ইংলণ্ডীয় হাউস অফ কমন্স ও লার্ডসিগে  
ক্লাটিকল পিস্তল ছুঁবার যে শাস্তি হয় তা  
তে লাভেরা জরী হইয়াছেন। কমনেরা  
আজিও লার্ডসিগের এত পিস্তল আ-  
ন? এই নিষিদ্ধ কি আজিও তাহানিগের  
মন এই নাম স্মৃতিতেছে না?

শিক্ষা প্রদর্শন ঘূষে দর্শকদিগের সিকটে  
১২০০ টাকা উঠিতেছে অষ্টাদশ বা  
পর্যন্ত উহা থাকিলে আর ১০,০০০ টাকা  
টিবে সন্দেহ নাই। চিত্র ও নানা প্রকার ক  
বিলেপ্তা বাণীয়া লোক প্রকৃতিতে প্রাক  
খান হইয়াছেন। ১৮৫১ অব্দে ইংলণ্ডে  
বিবরণে প্রাধান্য লাভ করিয়াছিলেন। প্র  
যোগিতার এই লাভ। কলিকাতার কবে নি-  
প্রদর্শনের হস্তি হইবে? এ হস্তি হইলে যে  
কতী উন্নতির পথ হয়।

গবর্নমেন্টে অরুণিয়ার সে সকল কুলি প্রের  
করিয়াছিলেন, তাহানিগের অনেকে বেত  
না পাটরা পলায়ন করিয়াছে। এ প্রদেশে  
কপ মটনা হইবার কোন নিষ্পত্তি কারণ আ  
হ সন্দেহ নাই, তাহা আমরা আজিও জানি  
হ পারি নাই?

নেও সাহেব অত্যন্ত পীড়িত হইয়াছেন।  
তাহার পলতাগের নায় পীড়ার সমাজ ও  
মহাও সকলে দুঃখিত হইবেন সন্দেহ নাই?

আসান কোম্পানির গত সভায় থাকে, কা  
ও যদি সাহেবকে অধ্যক্ষ পদ হইতে ব-  
কৃত করা হইয়াছে। অজ সাহেব। যিনি  
প্রথমতঃ নাকে ও কাটীরের নামে তহকশের  
করেন। ১৫০০ টাকা বেতনে এ কোম্পা-  
নির তত্ত্বাবধায়ক হইয়া জিহ্বা ও কাহাকে বা  
গোড়ান। কোম্পানি ৩০ লক্ষ টাকার এক  
সাগিচা কয় করিবার প্রস্তাব করিতে অ-  
নেক অংশী প্রতিবাদ করিয়াছেন। অজ সা  
হেব যেমন পরিজন করিয়াছিলেন, তেমনি  
তাহার শীকার হইল ভাল, কিন্তু উচাকৈ মি-  
কৃত করা চা কোম্পানির পরামর্শসিদ্ধ কার্য  
হই নাই।

হরকরা সংবাদ পাইয়াছেন রাও সাহেবে  
র কানী হইবার আদেশ হইয়াছে। কর্ণেল  
ব্রিটলীকেও কমিসরিএটকমিসন হইতে  
হাকান হইয়াছে। উচিত হইয়াছে। তাহার বে-  
কপ জড়াব, তিনি তৎপদের যোগ্য নহেন।

দিল্লীগেজেট বলেন, ফিরোজাবাদের যে  
ফোর্ড হেন মার্ভার ও তাহার সহচরেরা এক-  
টি গ্রীলোকের সত্য মর্মে করিয়াছিল আগ-  
রার সেশিয়ন জজ তাহানিগের কয়েক জনকে  
পাঁচ বৎসর ও অবশিষ্টকে দুই বৎসর মিন, ম  
দিয়াছেন। আমরা অনিলাম হেন মার্ভারের  
পাঁচ বৎসর হইয়াছে। একগে মলাংকার রক্তাক্ত  
সভার আবাদিগের ক্ষতিগাচর হইয়া থা-  
কে। আজিও জিজ্ঞাস্য কি সভাতার একটি  
সহচর ধর্ম।

উক্ত পত্র প্রবণ করিয়াছেন কানীতে ওলা  
উঠার প্রাচুর্য হইয়াছে।

আমরা আকাদিত হইয়া, হিন্দুপেট-  
হুট হুট অব ইতিয়ার নেও সাহেবের প্র  
শংসার কারণ প্রসিদ্ধে পারিয়া লিখিয়াছেন  
“আমরা পত্রতা করিয়া যত দূর পারিয়াছি  
নেও সাহেবের বর্তমান বর্ষের হিসাবের সহা-  
য়তা করিয়াছি। কিন্তু আমরা দুঃখিত হইতে-  
ছি, তিনি গতবর্ষের ৪ কোটি টাকার অকুলান  
গোপন করিয়া অম্যায় করিয়াছেন। বর্তমান  
পাত্রে (অধ্য কারের পেট হুটে) আমরা ইহা-  
উক্ত মোদারোপ করিয়াছি। তাহানিগের স-  
কলেরই এট সিদ্ধান্ত করিয়া রাখা উচিত,  
কেও অব ইতিয়া প্রশংসা অথবা নিন্দা যত  
দূরল জ্ঞানে করেন না।

এক জন হিন্দু উক্ত পত্রে লগুন হইতে  
লিখিয়াছেন, বোল ইন নগরের লোকেরা ক  
পীটের নবাবের রাজ্য জিরিয়া দিবার যে আ-  
বেদন করিয়াছিলেন তাহিন, লার্ড এলেন  
বরা কট ক্রি করিতে তত্ত্ব লোকেরা তাহা-  
কে কমা প্রার্থনা করিতে কহিয়াছেন। যিনি-  
যা বহু আবাদিগের গবর্নমেন্টের উদ্ধার  
করিয়া থেলা রোগ মাই।

নেও সাহেব সপ্রতি মর চার্লস উডের  
প্রত্যুত্তর বকপ যে পুস্তক লিখিয়াছেন, তা-  
হাতে তিনি তারতবর্ষের ধনাগারের জম, টা-  
কা প্রকৃতি জিরিয় লক্ষ প্রদর্শন করিয়া উ-  
পসংহার লে কহিয়াছেন এ যদি আমার আ-

র সংক্রান্ত আবশ্যক থাকে তা  
তাহা ইহা চটতেই হইবে, আমি  
শ্রেণি কেম না করিয়া কার্য করাবে  
বর্ষের দায়তীয় সুবিধান লোক শীকার  
হেন যে তত্ত্ব একজন রাজকার্যকার  
আমি নির্ভয়ে সাধুতা অবলম্বন পূর্ব  
করিয়াছি। আমি একথা বলিতে পা  
নার পূর্বে কোন ক্ষতি এ প্রকার কার্য  
তে প রেন নাই, আমি বাহা করিয়াছি  
সত্যবিত্ত বলিয়াও কেম মনে করেন ন  
নেও সাহেবের নিজের মুখে একথা তা  
নাইতেছে না।

চাকাপ্রকাশে বর্ণিত হইতে এক জন  
খিরাছেন, তত্ত্ব উকীল বাবু বিবেকর দা-  
র বর্ষে তাহার বাসিতে রমাঐসাদ বাবুর  
পার্শ্ব এক চাকার হইয়াছে। ইহার মধ্যে ৮  
টাকা উঠিয়াছে, রমাঐসাদ বাবুর অন্ন  
কিছু করা হইবে, সভা এখনও তাহা দি  
করেন নাই। এই টাকা তারতবর্ষের সভার  
কটে প্রেরিত হইক। হিন্দু সমাজগৃহ নির্মিত  
হইলে তন্মধ্যে রমাঐসাদ বাবুর এক চিত্রিত  
প্রতিমূর্তি, আরও অধিক টাকা সংগ্রহিত হ-  
ইলে তাহার প্রস্তর মূর্তি অর্ধ প্রতিমূর্তি ক  
কর্তব্য। হিন্দু সমাজ গৃহকে আবাদিগের  
জাতি সাধারণ হৃত অন্নপার্শ্ব গ্রহ করা কর্তব্য

৪ঠা ভাদ্র বঙ্গলগার।

গবর্নমেন্টের ডকের সুপারিন্টেন্ডেন্ট হই  
নিয়র বাইস সাহেবের কর্ম অসামান্যক বো  
হওয়াতে গবর্নমেন্টে যার সংক্ষেপ হে  
এক কালে ৪০০০ টাকা পুরস্কার দি  
তাহাকে বিদায় যেন। কিন্তু এমিকে আবা  
ডকের কর্তৃপক্ষ অপর এক জন ইকিনিয়রে  
জন্য গবর্নমেন্টে লেখেন। তারতবর্ষের গব-  
মেন্টের মেসিং সেক্রেটারি তাহানিগের পে  
নকতা করেন। একগে গবর্নমেন্টে জিজ্ঞা-  
করিয়াছেন যদি এক জন ইকিনিয়রের যথ  
প্রয়োজন, তবে বাইসকে পদচ্যুত করা হই  
কেন? বাইস সাহেব একগে কিছু নদী  
তরি সমুদ্রের কার্য করিতেছেন। এটি  
আবার গবর্নমেন্টে তাহাকে পুরস্কা  
টাকা প্রত্যর্পণ করিতে বলিয়াছেন  
কর জল কোথায় মতে



ন হইল। গালিপুরের কারাগার  
এমন বিখ্যাত দণ্ড্য পলায়ন করে।  
এক জন মৃত হইয়াছে।

সম্রাটের টেলিগ্রাফে নিম্ন লিখিত  
সংবাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন:—

১লা আগষ্ট। হাউস অব কমন্স প.  
কর্তৃপক্ষকে গবর্নমেন্টের দ্বারা  
করিবার অনুমতি দিয়াছেন। এই  
কেন্সিয়ারের মজুরদিগের উপকারার্থ  
কিছু হইবে।

উইলকিন্স ২২এ জুলাই। রিচমন্ডের স.  
কোন বিবরণের বিশেষ পরিবর্তন হয় নাই।

১৫ই জুলাই কিংসডামের জন্য বন্দ  
হইল। সেনাদলের জন্য দুতন ইস্যু সং-  
কল্পে আদেশ জারী হইতেছে। ইহার কল  
করা হবে। সভাপতি বিরোধিদিগের  
প্রতি বাজেঅপত্তি বিলে স্বাক্ষরিত করিয়াছে।

দেশের সীমান্ত অধিকাংশ প্রদেশের  
অনিশ্চিত ইহার প্রতি বাদ করিয়াছেন।

বিরোধীরা কেউকিউ জরী হইয়া আর  
সিদ্ধান্তে সেনা সমবেত করিতেছে। এমত  
জনকৃতি তাহার। নাসবিলের আড়াই কোশ  
দূরে আছে। জনকৃতি সেনাপতি জাক  
শন হারবার ফেরির অভিমুখে যাত্রা করি-  
তেছেন।

দিল্লী গেজেটের কাবুলস্থিত সংবাদদাতা  
কর্তৃপক্ষ শাসন কর্তৃক মহম্মদ আলি খাঁর বিচা-  
রের এক উদ্ভাবন প্রদর্শন করিয়াছেন। কোহি  
স্থান মিস্রাসী এক ব্যক্তির স্ত্রী অপর এক ব্য-  
ক্তির সহিত ব্যক্তিচারিণী হইয়া পলায়ন করা-  
তে তাহারিগের উভয়ের প্রাণ দণ্ড হইয়াছে।

কোহিস্থানবাসিকে পুনর্বার বিবাহের জন্য ৫০  
টাকা দেওয়া হইয়াছে। মহম্মদ আলি খাঁ  
অনেক চোরের প্রাণ দণ্ড করাতে সন্তোষ  
প্রাপ্ত হইয়া উপর বড় সন্তুষ্ট হইয়াছেন।

কাবুলে আলিস বোম্বাইয়ের পুলিশে আ-  
বৃত্ত হইয়াছেন। সেনাদলের বড় ওষুধি  
কিছু হইতেছে।

সিদ্ধান্তের সময় মুনসেফের আদালতের  
কর্তৃপক্ষ উকীল আবাদিগের নিকটে এই  
লিখিয়াছেন। মুনসেফ কোন মকদ্দমা  
করেন না। বাজাতে বলা হয় যে

তাঁহার চেই। অনেক স্থলে তিনি বলপূর্বক  
রক্ত কবাইয়া থাকেন। সাক্ষীদিগের জবান  
বন্দী পূর্বমত মহরিদিগের দ্বারা লওয়া হইত।  
থাকে। রক্তার বিপক্ষে 'আবাদিগের' তাহা  
সাপত্তি নাই। কিন্তু এবিষয়ে বাধিত করা  
অসম্ভব। তাক জবান বন্দী ও মুনসেফের গা  
লি দেওয়ার কথা যদি সত্য হয় তবে

কি জন বারাসভের পাখা তলতলকী হস্ততাকে  
এবিষয়ে মনোযোগী হইতে না বলেন?

নানা সাহেবের করেকজন কৃত্য গোঁরা লি  
রয়ে ১৩ হইয়াছে। তাহারিগের 'নকাউ' জ.  
নেক কাগজ পত্র বাহির হইয়াছে। বিদ্যারের  
অন্য তাহারিগকে কানপুরে প্রেরণ করা হ  
ইবে।

দিক প্রকাশের এক জন পত্রপ্রেরক আ-  
বেশ করিয়াছেন দিনার পুরে 'অনারহি' হওয়া  
তে তত্ত্বতা কবি বাধার বাগান্ড অগিয়াছে।  
গত ২২সরও তথায় তাহা লগা হয় নাই।  
তরিবন্ধন অনেক 'অনারহি' বর্ষ পাউ-  
তেছে।

উক্ত পত্রের যশোভনেয় সংবাদদাতা ব  
লেন চুরাখা মিলি যশোহবের জেলের এক  
উপরের ঘরে বাস করিতেছে। তথায় তাহা  
কে বাবতীর প্রয়োজনীয় ও বিল সেস্ট্রী  
দেওয়া হইতেছে। দিল্লীর সম্রাট ৪৭৩ সা  
চেবের বেলা কি হইয়াছিল? এক জন প্রত্যয়  
তাই জানা খোলাকি পাইতেন, অপরের খবর  
রে বিশ সেস্ট্রী লোহ শৃঙ্খল আছে বহু দি  
ত্রি হইয়াছে; সামান্য কথেনিদিগের ন্যায়  
আজার হইয়া থাকে। এই সকল সামান্য কা  
রণে গুরুতর 'অনার' ও কলহের উৎপত্তি হয়।  
আমরা ভিলিকে সুবাদ; ও উক্ত স্থান দিবার  
প্রতিবাদী নহি। বাবতীর সন্তোষ কথেনিদি-  
গের প্রতি এক প্রকার ব্যবহার না করা হয়  
কেন।

৫ই ভাদ্র বুধবার।  
ফিনিক্স বলেন ইন্সপেক্টর জীলেরা পুনর্বার  
র মোরাত্তা পারত করিয়াছে। তাহার। রা  
হিসোধে হুট করে। মাটি হইতে এক দল  
সৈন্যসীমার সেনা তাহারিগকে দমন করিতে  
গমন করিয়াছে। এই সকল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দমন-  
কর্ম একটা প্রধান কারণ।

আউয়ার পেলর বলেন এক জন খনিজ  
৫০০ টাকা চুরি বাস। তিনি তাঁহার বাস  
ভৃত্যের উপর সন্দেহ করিয়া তাঁহার এক জ.  
ন খনিজ কল চাবিকে মলিলেন উক্ত জ.  
সকল নামে তাহার। তাঁহার নিকটে পত্র লেখ  
'২ টাকা' পত্ৰিয়ারে কিমা। খনিজান সেই  
প্রকার কড়াতে বাগলের শিখা লিখিলেন তা  
কা পত্ৰিয়ারে। সেই পত্র বাগলের নামে  
আউলে কিছু খনিজান তাহা পুলিশে তাহা  
বলিয়া টাকাকে কারাগারে বাইতে তইয়  
কে। চে'র খনিজান জমা এই পত্র পূজা হইয়  
লি, বাউএর এই অপরাধ কমা'র খনিজ  
কেও নাই। কেবল আউইনের জাকদার আত  
দমন করিয়া কা'র করিলে জাজের ওকিল ও  
কাতা প্রকার পাগ। বালকটীও রক্ত হইয়াছে।

পূ. 'অনারহি'র এক জন পত্র 'প্রব  
বলেন কবি চে'বিডসন অপসার রো'প্র প্র  
ণ তাগ করিয়াছেন। কিন্তু জামরা লগি  
ছিক'ন ওলাউই ম'ই র'র মুখ হইয়াছে।

অখোপ গো'জের এক জন পত্র ১০০  
বলেন জাল'হাবাজের খিলাফ দণ্ড্য লগ'ব  
দ'হ' ৭০ খি'দ্র দ'হ' ২০ নাই। যে ন'প  
মখে পুলিশ কর্মচারি'র বেশ পরিমা' তির  
ম রিচারালয়ে ৫ প্র'ক না স্থানে গমন কর  
এবং ন'র ও তা'হাকে দ'ত ববিবান জমা 'জ  
নেক পুনর্বার দিন'র ঘোষণা হইয়াছে তথা  
সে খ'ত চ'ব'ন ই। সে কাল হইলে শকরনা  
রক্ত 'বকুন' মধ্যে এক জন হইত।

গত ২২বিবার পুলিশের কর্মস' ম' হ'ব  
নীলকুঠির বি'তে চ'মান ম'ম' এক জন স  
বারী কলি'শ'ত'স আনিয়া বাসার সঙ্ক'ন  
রাতে চারল'স ব'ক'হ' নামে এক টউরে  
তা'হাকে আপন বাড়িতে লইয়া যায়। উম  
তাহার নিকটে ১০০ টাকা নগদ ও ২০০ টাকা  
র নোট রাখেন। রাতিতে বেকার তাঁ'র  
সুরাপানে উদ্বল করে। পরে প্রাতঃকাল  
টাকা চাহিয়াছে সে কিছু জানে না বলি  
উজাকে বাড়ির বাহির করিয়া দেয়। 'প্র  
পুলিখে মালীপ করিয়াতে টাকা ও নোট বা  
র হইয়াছে। বেকার ক'র হইয়াছে ৭ প্র'মে  
প্রকার খ'হ'ত' ব'বি হইতেছে। ক'নেক দি  
৭০০০ আবাদিগের মিলিয়াই এক জ'র ম'ই

কলিকাতার পুলিশ কমিশনার ওয়াল্টার বরাইনগার প্রতি কলিকাতার নতুন সরকার পুলিশের রিপোর্ট প্রেরণ করেছেন। এই পুলিশ বরন হয় যে কলিকাতার বিশেষতঃ পূর্বতন অঞ্চলগুলিতে অসহ্য প্রতিবাদ করেন যে টারিফ এবং বক্স সংক্রমে লোকেরা সন্তোষ প্রকাশ দিয়ে সরকারে তাহা দিয়েছে বলেই ইহাছেন। ওয়াল্টার বরাইনগার ও তাঁর সহকারী স্থানীয় লোকেরা যে উত্তেজিতের প্রধান আত্মতা। কিন্তু নীচে দৃষ্ট করিয়াছেন, কিন্তু অসহ্য করে দিতে বাকী আছে।



৮ই ভাদ্র শনিবার ।

ত্রিবাঙ্করের রাজার বস্ত্রের আঁজাঙ্গুসারে একব্যক্তি হত হইয়াছে : এক জন ভৃত্যের উপরে তাঁহার এই সম্বন্ধে হস্ত যে তাহার সন্তান তাহার জ্বর প্রসক্তি হইয়াছে ! অতএব তিনি দুই জন দুর্ভাগ্য দ্বারা তাহার বধ সম্পন্ন করেন । বিচার হইয়া তাঁহার ২০ বৎসর কারাবাসের আদেশ হইয়াছে । ত্রিবাঙ্করের রাজা বর্ধা রাজবর্ষের অন্তঃসরণ করিয়াছেন কিনিক বলেন দিল্লীর দুই-হইতে দুই সেনাপতি উইলসনের ১,০১,১০০ টাকা প্রাপ্তির হইয়াছে । এই টাকা তাঁহার পরিবারের দেওয়া হইবে সম্বন্ধ নাই ।

উক্ত পত্র ২৫নং, দুই বাসের মধ্যে লিবার পুলের লবণে ২০ লক্ষ টাকা শুষ্ক উত্তীর্ণ হইতে ২০ এ আগষ্ট ১,২৪,০০০ টাকা আদায় হইবে । এ প্রকার শুষ্ক আদায়, কইলে লবণের পোস্তান উঠাইয়া দিলে ক্ষতি হইবে না ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ বিক্রীত হইতেছে ।

|                   |               |
|-------------------|---------------|
| ৪ টাকার সিকা      | ২১৬/-—২১৭/-   |
| ৪ টাকার কোম্পানির | ২৩৮/-—২৪০/-   |
| ৫ টাকার           | ১০৪১/-—১০৪২/- |
| ৫ ১/২ টাকার       | ১১১৮/-—১১২/-  |

## গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাদলাদশীর লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের আদেশান্তসারী নিয়োগ ।

১১ই আগষ্ট—লোহার জাহাজের সৎকার কমিশনার লেপ্টেনেন্ট আর. সি. মনি প্রথম ডেপুটি অধীন মাজিস্ট্রেটের কমতা প্রাপ্ত হইবেন ।

১২ই আগষ্ট—এচ. সি. আর. সি. র. মল সাহেব কিরীতবাসের জন্য মওজাদেব ত পাইয়া দ্বিতীয় জেদীর অধীন মাজিস্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

টি. শিব সাহেব মজীহার মাজি উট ও ক লেটের সৎকারী হইয়া দ্বিতীয় জেদীর অধীন মাজিস্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

জে. এস. আরমুইৎ সাহেব কুমিলার সাহায্য বিজ্ঞা সিকা কমিটির এক জন সভ্য হইবেন ।

এ. জা. সাহেব ১৮৬৩ জুনের ১ আইন আদালত কলিকাতার এজিডিবি, নিম্নোক্ত মাজি হইবেন । কা সাহেব উক্ত আদালত ১ মাসের অন্তর্গত পত্র দিতে পারিবেন ।

প্রকাশিত হইয়াছে, ডিবকি তটচাৰ্যকে তাহার রক্ষিত বেন্যা লোমাপ বধ করিয়াছে । এ ঘটনায় দুনি বিচার করিয়া ৫০০ টাকা আনিয়াছিল । তাহারই লোভে তাহাকে ঐ বৈদিনি ও তাহার আর এক উপপতি দুই জন বধ করে । তাহার উভয়ে সেনিয়নে মন পড়ি হইয়াছে । বেন্যালির পাণের আলয়, ঐ স্থানে পুজিবার সমিতিতে দৃষ্টি থাকে না কেন ? ৭ই ভাদ্র শুক্রবার ।

ভারতবর্ষের রেলওয়ে কোম্পানি প্রকাশ করিয়াছেন, গজার জল ও স্রোত রক্ষিত হইতে তাঁহারা সারি বোনে পারাপারের ব্যস্ততার জাহাজ চালাইবেন না । তবে দুই মাইল রেলিগেই প্রভাপ ব ছিল ।

রমাপ্রসাদ বাবুর মৃত্যু হওয়ার্তে কানিৎ পরণীর কণ্ঠের আর একজন সেক্রেটারি মনোনিবেশ করিবার জন্য অন্য ভারতবর্ষের সভ্য হইবে এক সভা হইবে ।

হরকরা প্রবণ করিয়াছেন কলিকাতার ইটরোগীর নাট্যশালা হইবে । আমা লিগের ও কথার কাজ কি ?

পঞ্জাবের দুর্ভাগ্য লেপ্টেনেন্ট জাকনের বিচার মূলতানের সাময়িক বিচারালয়ে হইতেছে । আমরা দেখিব ছোন্ স্থানে লিচার হয় ।

শিখপ্রবর্তনী সভার পুরস্কার দেওয়া হইয়াছে । আর ২৫০০০ ব্যক্তি ব্রহ্ম প্রদর্শন করিয়াছেন । ৬১৫ব্যক্তি মেডাল পাইয়াছেন । ইংলিগের মধ্যে ৩২৮ জন ইংলণ্ডের প্রজা ৩ ২৮৭ জন বিদেশীয় । বাবু চন্দ্রকুমার দে এডভোকেটের ঔষধ প্রকৃতির প্রদর্শন জন্য দুটি মেডাল পাইতেছেন ।

কিনিক এক জন পত্রপ্রেরকের পত্রের বিয়ে লিখিয়াছেন “পূর্বে ট.কা লইয়া কিছুই না দেখিয়া এ দেশের লোকের বতাব । ঐ কথায় এই দোষেই এক পুরুষে দামন লইলে তিন পুরুষে নিষ্কৃতি পায় না ! এই কারণেই কর্ত্ত ও দামন প্রকৃতি লক্ষ কখন এদেশের লোকের ক্ষতিগোচর হয় নাই ! মূল্যবান আর দুটি দুঃখভাবের কথা কহিতে ছুনিয়া গিয়াছেন । এক, কোন জবীজার কর বন্ধ করিলে এদেশের লোকপনে তাহার আশ্রয় করে এবং বিলাহ করিয়া বলে বিচার কর নাই ।

করিয়া তাহার অধ্যক্ষ্য প্রা-  
হেন । তাহার অনুরোধ প্রা-  
করা

। সিনকর রাও ভারতবর্ষের শাসন সংক্রান্ত এক খাতি, কুস্তক মুক্তি  
কন । হিন্দু, পাল বনেন, তাহা ৫০  
কন । সিনকর রাও প্রস্তাব করিয়াছেন,  
কন্য উপস্থাপন করিয়া দিয়া, ইতি  
৫। সিনকর রাও বাহা বলেন, তাহা  
পূর্বক প্রবণ ও গ্রহণ করা কর্তব্য । তাঁ  
ন্যায় রাজনীতিগত গবর্ণর জেনেরলের  
র অন্তর্গত ।

কুস্তক অব ইতিয়া ভারতবর্ষের রাজ্য  
ও অপব্যয় করিবার বিষয়ে ক্রোধ প্র  
ও লোহিতসময়ের টে গ্রাক্, পারস্য  
র টেলিগ্রাক্ এবং তখন ভারতবর্ষের বা-  
হয় যে অন্যায় ব্যয় হয় তাহার প্রতিবাদ  
রা লিখিয়াছেন “ ইংলণ্ডীয় ব্যয়ে আমা-  
র ( ভারতবর্ষের ) রাজ্যের চতুর্পাশ  
প্রাপ্ত হইতেছে । আমরা যথা সময়ে যথা  
ঠিক ও তর তর হিন্দু চাহি বাজা দারা আ-  
জানিতে পারিব, কিপ্রক.রে প্রতিবৎসর  
কোটি টাকা ব্যয়িত হয় । মহাসভার কো-  
টিব দেওয়া হয় না । যে ব্যবস্থাপক সভা  
আমাদিগের উপর শতকরা চারিটাকা

টাক খরচ করিয়াছেন, তাহারও কো-  
টি প্রাপ্ত হন না, এই অসমি আমাদি-  
কের বোল এই হইবে “ ইংলণ্ডের ব্যয়  
আর ভারতবর্ষের টনকটাক উঠাই-  
৩ আমরা সভ্যের এবিধে আমাদি-  
দেশের লোক.ক ঐ সকল অপব্যয় নিবা-  
ঠেই করিতে অনুরোধ করিয়াছি, কি  
আমাদের কোন ক্রমেই স্বেচ্ছা হইতে  
।

উক্ত পত্র বলেন সর দুবাট বইগদা  
সর সেনাদল কনাইয়া ও অন্য অন্য প্র-  
৫২ লক্ষ টাকা উঠাইয়াছেন কিন্তু ভার-  
ত গবর্ণমেন্ট আমাদিগের প্রাপ্য শত-  
৫০ টাকা লইলে এখনও পঞ্জাবের ২০ ল-  
ক্ষ অসুস্থ থাকে । আমাদিগের বাগমা করি-  
করিতে বর্ধন খাজানা দিয়া বহুদেশের  
কর করিতে ।

ମିଶ୍ର, ଭବାନୀ ଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ସହ କା:



না ও পরকালে তত্ত্ব জ্ঞান অর্জন  
তোম কবিত্তে চাইত না।

আমার বিবেচনার কারণেই বর্তমান  
ববস্থা দুটি অধীন কারণ আছে।

১। অপরিমিত ও কবরী আইন। আমি  
এখনকার কথা বলিতে পারি না, কিন্তু আমি  
বিশেষ রূপে জানি কালীতে আইন সমিত অ-  
মের কৃষি নিষিদ্ধ থাকে।

অপরিমিত পরিগ্রহ। কয়েদিগণের  
দৈনিক শ্রমিক বিবেচনা না করিয়া সকলকে  
এক কাম করিয়া সমান পরিমাণে কর  
ওয়া হয়, ইহা অত্যন্ত অন্যায়। আমি বারান-  
স কারণেই দেখিয়া আসিয়াছি, যে সকল  
অন্য আত্মাত্মিক পরিমাণ করিয়া দেওয়া হইতে  
হয় না, তাহা বলা ও পটিকা বসন্ত বসন্ত হয়।  
কিন্তু এই সময় মধ্যে তিন তিন প্রকার কর্মের  
সিদ্ধতা বিষয়ে কোন বিচার হয় না। কর্ম বস-  
ন্তিক অধবা অল্প আয়াল সাধা হউক না কেন  
কিন্তু সকল কি কর্মের সকলেরই সেই ও পটিকা  
পরিমাণ কর্ম করিতে হইবেক কিম্বা যে সকল কর্মের  
পরিমাণ নির্দিষ্ট হইতে পারে, তাহা সপাত্তি হ-  
ক এবং বাকি ৮ পটিকাই হউক সম্পূর্ণরূপে  
নষ্ট হইবে। হইলে অস্বাভাবিক নাই। তদনন্তর  
এ ব্যক্তিকে বাকি ৮ পটিকা হইয়া উঠল এবং  
বসন্ত হয় তাহাঙ্গিকে আরও বাকি ৮টা  
ও বসন্তের ন্যায় ঘুরিতে হয়।

২। বসন্তকে যে যে কারণে পরিগ্রহ করিয়া  
গত, তাহাও নিয়ে নির্দেশিত হইতেছে।  
দীর্ঘকাল না বাকি অবস্থায় একজন কর্মে-  
ণ দেওয়া উচিত যে তাহারা কাশাণাব  
মুক্ত হইলে পুনর্বার কর্মের লিঙ্গ না  
হইয়া স্ব স্ব কীটিকা উপার্জন করিতে  
ইহার প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখ, আবশ্যক  
পাছে সুবাইলে তাহা হয় না।

৩। কালী নিষিদ্ধ না থাকিলে তাহার  
বিশেষণা এইঃ

৪। বসন্ত। পরিমিত পরিগ্রহ। ক  
শীত বিনষ্ট হইয়া থাকে।

৫। বসন্ত কারণ হয় তাহাও বসন্ত  
কর্ম করিয়াই বা অন্যবিধ কর্ম

৬। কয়েদিগণের মতাকর ১৫।

৭। হইবে। কোর্টকেই সমস্ত

৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

যেন বসন্ত নাই, অথবা তাহাঙ্গকে বিবেচনা  
করিতে গেলে কয়েদিগণের স্ব স্ব প্রায় কর্ম  
মতের উপর গণনা করিয়া হইবেক কর্ম  
কর্মতা আছে ২ জন ও ইংলও ক্রমাগি ১৫৫  
যেই কয়েদিগণের, কর্মের স্ব স্ব গ্রহণ করেন  
না। কাশাণাব হইতে মুক্ত হইলে তাহাও  
কোন কর্ম পাওয়া অতি নষ্টকর হইয়া পড়ে,  
তাহাঙ্গের মতই কিংবা অর্থ থাকিলে ক্রম-  
শঃ কর্মের চেই। করিয়া সমস্তকরে কীটিকা  
নির্মাণ করিবার সুবিধা হইতে পারে। ১৫৫  
বলা হইবে, বসন্তকেই একবারে এত টাক, ৫ টি  
তে পারিবে না। ১৫৫ হউক যদি কার্ম  
দিগের বাস্তবিক উপকার করিবার মানস থাকে  
তবে কয়েদিগণের আত্মাত্মিক কর্ম নির্মাণ  
করিয়া দেওয়া ও যে কর্মের বসন্ত পরিগ্রহ করিতে  
হয় তাহাও পটিকা হইয়া কয়েদিগণের পরিমাণ করি-  
য়া দেওয়া উচিত।

১। কয়েদিগণের বসন্ত ও শ্রমিক অবস্থা  
বিবেচনা করিয়া পরিগ্রহের উত্তর বিশেষ কর্ম  
কর্মতা।

২। একজন এইরূপে আত্মাত্মিক কর্ম করিতে  
হইলে তাহাঙ্গকে কয়েদিগণ কর্ম করিতে দে-  
ওয়া হয়। এইরূপে যখন নষ্ট, কিম্বা দুই হইলে  
পাশ্চিমে দেওয়া অপেক্ষা মজবুত হইলে পূর্ণকাল  
দেওয়া ভাল। অতএব যখনই কয়েদিগণ মধ্যে  
বসন্তগণের আচার ও পরিগ্রহ মান ২ টি  
বিষয় ৩। ৪ প্রকার বিভাগ করিয়া একজন বসন্ত-  
বসন্ত কাল যখন যে বসন্তগণের যে সময় বাকি  
চলিত অংশকৃত উত্তম ও যাহাও খেদ কর্ম  
কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হইবে তাহাও অপেক্ষাকৃত  
উত্তম ভোজ্যাদি পাইবে, আর যাহাও, যখন হই-  
বে তাহাও অধম ভোজ্যাদি পাইবে। কিন্তু যে  
ভোজ্যাদি বসন্তগণের ন্যায় হইবে তাহাও  
অভিযুক্ত ও নিষ্প্রভ অপরূপ ও পীড়নায়ক  
নাহয়। তাহা হইলে আদার গৌণ হয় বসন্ত  
গণের শ্রমিক অবস্থা পূর্ণ, পেরু। কতক  
ভাল হইতে পারে।

৩। আমার বিবেচনার বসন্তগণের বসন্তগণের  
কর্ম কর্ম এত লেই, দিগের মনোহরিত চালা  
ন, মনুষ্যের রূপে হয় না। মানক প্রকৃতির প্রতি  
মতাক দৃষ্টি করিলে লক্ষ্যে যোব হয় যে শ্রমিক  
ও মানসিক পরিগ্রহ মতাক শ্রমিকের মানসিক  
পাছে। যদি মানসিক পরিগ্রহের আধিক্য  
হইলে মনুষ্য পাশ্চাত্য হইয়া পড়ে, তবে অপরিমিত  
শ্রমিক পরিগ্রহের মতাক মনোহরিত, চা-  
লা রহিত হইলে কেই বা পীড়া উপস্থিত

না হইবে, ২। আত্মাত্মিক মানসিক মনোহরিত  
লিঙ্গ বাকি: ৩। হইলে অতি, ক্রিষ্টা, প্রায়  
পরিগ্রহের ৪। ৫। ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।

১। কয়েদিগণের বসন্ত ও শ্রমিক অবস্থা  
বিবেচনা করিয়া পরিগ্রহের উত্তর বিশেষ কর্ম  
কর্মতা।

২। বসন্ত। পরিমিত পরিগ্রহ। ক

৩। বসন্ত কারণ হয় তাহাও বসন্ত

৪। কয়েদিগণের মতাকর ১৫।

৫। হইবে। কোর্টকেই সমস্ত

৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

২৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৩৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৪৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৫৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৬৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৭৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৮৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯১। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯২। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৩। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৪। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৫। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৬। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৭। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৮। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

৯৯। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

১০০। কোর্টকেই কোর্ট কর্মচারীর

# সোমপ্রকাশ

“সর্বসম্যকম্ সত্যমিতি সত্যং যদ্যপি সত্যমিতি ন বীজ্যম্।”

৪ ভাগ।  
৪২ সংখ্যা।

সম ১২৬২। ১৭ ভাদ্র। ইং ১৮৬২। ১ সেপ্টেম্বর

মামুন্সিংগ  
বারিষ্টিং অফিস

## বিজ্ঞাপন।

মফসলে সোমপ্রকাশের  
পের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মফসলে সোম  
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক  
মূল্য ডাকমাস্তুল সনেত ১০ এবং  
টাকা নিষ্কাশিত আছে। ইহা মাসের স্থানে  
প্রদত্ত মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মফসলের  
সকল কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা  
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিত  
পাইতে পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

বিবি মেয়র।

বিবি মেয়র এ কৌশলিনিকে জামাট  
তরফে, যাঁহারা ফটোগ্রাফিতে আপনাদি-  
গর ক্রী ও কন্যাদির প্রতিমূর্তি করিবার ইচ্ছা  
যেন, তাঁহারা তাঁহাকে সবাদ মিলে তিনি  
মতি উৎকৃষ্ট ও সুন্দররূপে তাঁহা করিয়া  
দেবেন। ৭৮ কর্কের (লালমিরজার) পূর্ব  
দিকে তাঁহার কার্খানায়, শুধার অগ্রসন্ধান  
করিলে সবিশেষ জানিতে পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

বাকলায় বুকু লেডিং গ্রন্থালয় ও সমাচার  
এবং সাময়িক পত্রিক পাঠগৃহ।  
যাঁহারা হাওলাত করিয়া বাজলা এত পাঠ  
করিতে মানস করেন তাঁহারা নিম্ন লিখিত  
নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের চাঁদা  
পুস্তকে আদায় করিলে পুস্তকাদি হাওলাত  
হইয়া যাইবেক।

১ ব। গ্রন্থসমূহকে প্রতি গ্রন্থে আট আ.  
মার হিসাবে প্রতি বছর চাঁদা দিতে হইবেক,

এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক,  
এক মাসের স্থান মূল্য গ্রহণ করা যাইবে-  
ক না।

২য়। এক মাসের অধিক কোহ কোন গ্রন্থ  
স্থাপিলে তাঁহাকে তাঁহার মূল্য দিতে হই-  
বেক।

৩য়। যিনি যে অবস্থায় পুস্তক লইয়া  
যা, তাঁহা তাঁহাকে সেই অবস্থায় কেন্দ্র দি-  
তে দিতে হইবেক তাঁহার অনাধা করিলে পুস্তকের  
মূল্য ১০ হইবেক।

৪র্থ। পরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তকের মূল্য  
জন দানিতে হইবে, অথবা এক জন পরি-  
চিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক। তাহা  
হইলে তাঁহা ক পুস্তক হাওলাত হইয়া যাই-  
বেক।

৫ম। সমাচার ও সাময়িক পত্রিকা সকল  
আমাদিগের গ্রন্থালয়ে আসিয়া পাঠ করিলে  
কোন মূল্যই লাগিবেক না।

গুণ গ্রন্থ

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরি  
কলেক্টর টিউ ২২৮৩।

## সোমপ্রকাশ।

১১ই ভাদ্র সোমবার।

হাজরতি

পাঁচ বৎসর অতীত হইল, উক্ত সা-  
হেব শিকারি বালকদিগের উৎসাহ বর্ধ  
নার্থ আদর্শ, ইংরাজী বাজলা ও বাজলা  
বিদ্যালয়ের পরীক্ষার্থী, হাজরতিগকে  
কয়েকটা হাজরতি দিবার ও সেই হাজ-  
রতি প্রাপ্ত ব্যক্তিগকে বিদ্যালয়ে  
বর্গমেষ্টে বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতে দিবা

র প্রস্তাব করেন। এ প্রস্তাব  
সন্মত হইল। ইহার ফল  
হে। পরীক্ষার্থী বিদ্যালয়ে  
লোকের সন্মানে পাই। ইহার  
তাহারা অর্থবিরহে দীর্ঘকাল  
অধ্যয়ন করিতে শক্ত হইয়া  
বিদ্যালয়ে অনেক উপকার  
হে, সন্মত হইল। কিন্তু কিছু  
মাসের মধ্যে ইহা কার্যকর হইয়া  
হে না। তৎকর্ত্ত প্রস্তাবানুসারে  
চারি বৎসর মাত্র হাজরতি প্রাপ্ত

ওদিকে এক্ষণে আর বাকী  
জ্যেষ্ঠ গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ে মরক্ক  
করিয়া গেবে বিশ্ববিদ্যালয়ের  
রীক। দিবার নিয়ম হইয়াছে। দ্বিতী  
বিদ্যালয় সকলেও সাত বৎসর  
না করিয়া পরীক্ষা দিবার উপায়  
কপ হলে নিত্য পক্ষে পক্ষে সাত  
পাঠ না করিলে কোম হাজ প্র  
পরীক্ষা নিষেধ সমর্থ হইয়া। কিন্তু  
চারি বৎসর উক্ত প্রস্তাব পাঁচ বৎস  
বেকমে পাঠ করিতে পার। তাহা  
ক হলে এই দোষ ঘটে, অনেক  
বিরহে অন্ততঃ প্রবেশিকা পরীক্ষা  
পূর্বে বিদ্যালয় পরিত্যাগ করি  
মুত্তরাং তাহাদিগের শিক্ষারও  
অপেক্ষ। চারি পাঁচ বৎসর মাত্র অ-  
দ্বিতীয় সুশিক্ষালাভের সম্ভাবনা বি-  
দ্যালয়ের সময়ে তাহারা তাহা হইতে



এটি সামান্য হুঁসুড়ি বিষয়  
হা অপেক্ষা নিম্নতর। কিন্তু লেড  
হাউসে ৮' ৬" রি বৎসর ব্যয়  
প্রবেশিত। ১১টীকার উত্তীর্ণ হইতে  
না। উক্ত লেড সাহেব ও শিক্ষাসংক্রান্ত  
কি এই বিষয় অবগত নহেন? যদি  
রা জানেন তাহা হইলে বালক  
কিন্তু বিদ্যা শিক্ষার আবশ্যন  
করা হইতে পারে। তাহা হইতে বঞ্চিত ক  
হেন। যদি পুণ্ড্রীণামের বিদ্যালয় ন  
উন্নতি ও বরিত্ত বালকদিগকে অধিক  
দেওয়া শিক্ষাসংক্রান্ত কর্তৃপক্ষের  
না হয়, তাহান চারি বৎসরের বৃত্তি  
উঠাই দিয়া অসুখ আর দুইবৎসর  
কেও উচিত। তাহা পরে তাহারা  
ব্যাখ্যা শিক্ষা নৈপুণ্য প্রদর্শন ক  
পাড়ে তাহা হইলে যত দিন তাহারা  
শিক্ষা লাভিত না যায় তত দিন বি  
ন ঠা করিবার অনুমতি দেওয়া  
। এ কথাও তাহাদিগকে কহিয়া  
আবশ্যক যে সাত বৎসরের পর  
যদি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইতে না  
হাতবৃত্তি পাইবে না।

৩রা বিলক্ষণ বলিতে পারি এই  
বৎসরের মধ্যে সকলেই উচ্চতম  
ত ঘাইবার যোগ্যতা লাভ করিতে  
। এইরূপ নিয়ম করিলে উক্ত ল  
অতীত সিদ্ধ হইবে সন্দেহ নাই।  
৫ বাৎসর্য্য রূপে নকস্বে লেখাপড়ার  
র সে বিষয়ে উক্ত সাহেবের অ  
কেহই অধিকতর যত্নবান নহেন,  
লিখিত মোহ বশতঃ তিনি সম্পূর্ণ  
হইতে পারিতেছেন না। এই  
কেন্দ্র উপন্যাস প্রসিদ্ধ টমটোল  
কল ও নির্মল জল লাভের  
লাভ বালকদিগের বিদ্যমা  
হইতে।

লেড সাহেব ও তাঁহাকে অভিনন্দন  
পত্র দান।

বনিক সম্প্রদায় ও লাণ্ডহোল্ডস  
সভা লেড সাহেবকে অভিনন্দন পত্র দি  
বার জন্য কলিকাতার সরকারে চৌনহালে  
এক সভা করিবার অনুরোধ করিয়াছেন।  
ভারতবর্ষীয় সভাকও তাঁহাদিগের সহ  
কারী হইতে বলেন, কিন্তু এই সভা তবি  
ষয়ে অসম্মত হইয়াছেন। লেড সাহেবের  
পুত্রভাগ ভারতবর্ষের দুর্ভাগ্যের বিষয়  
বলিতে হইবে, অতএব ভারতবর্ষীয়  
সভা বনিক সম্প্রদায়ের সহিত মিলিত হই  
য়া যে তাঁহাকে অভিনন্দন পত্র  
দানে উদ্বুদ্ধ হইলেন না, তিনি নিতু অনে  
কেই আপাততঃ তাঁহাদিগের প্রতি অক  
তজ্ঞতা দোষের আরোপ করিবেন সন্দেহ  
নাই। কিন্তু যদি তাহারা অনুধাবন করি  
য়া দেখেন, উক্ত সভা সম্মতিবচনায়ই কা  
র্য্য করিয়াছেন। লেড সাহেবকে অভিনন্দন  
পত্র দান, আর ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট ও সর  
চারলস উডের কাব্যের প্রতিবাদ করা  
সমান। জেবি অথবা সম্প্রদায় বিশেষ স্বা  
র্থদ্ধ হইয়া যা বসুন না কেন, সর চার  
লস উডের কাব্য এত অন্যায় হয় নাই যে  
এ দেশীয়েরা তাঁহার প্রতিবাদে প্রশংসা  
ও তাঁহার কাব্যের প্রতিবাদ করিয়া শুচি  
হইতে পারেন। তিনি লেড সাহেবের ভ্রম  
প্রদর্শন করিয়া কর্তব্য কর্মই করিয়া  
ছেন। জেবি সংশোধিত হইয়া প্রকৃত আয়  
ব্যয় ছিন্ন না হইলে জ্যেষ্ঠোলাভ সম্ভাবনা  
নাই। জমাআক আয় ব্যয় গণনার উপর  
নির্ভর করিয়া ব্যয়াদি কাব্য সম্পাদিত হই  
লে পরিণামে দারুণ কল উৎপন্ন হইয়া  
এসম্মতি নহে। তবে তাহার এই মোহ  
হইয়াছে যে তিনি লেড সাহেবের প্রতি  
অবশ্যক ক্রুদ্ধ ও কর্কশবাক্য প্রয়োগ  
করিয়াছেন। কিন্তু এ অপরাধে তিনি অত্যা  
চারকারী ও ভারতবর্ষের শত্রু বলিয়া  
পরিগণিত ও বিদিত হইতে পারেন না।

লেড সাহেবের কৃত আয় ব্যয় স  
ক্রান্ত হিন্দাব, সরচারলস উডের ভবিষ্যৎ  
পত্র ও মহাসভায় বক্তৃতা ও লেড সাহে  
বের আত্মপক্ষ সমর্থন, এসম্মতিবচন  
সাধারণের গোচর হইয়াছে। অপক্ষপাত  
নিঃস্বার্থ বক্তিতা এ বিষয়ে কি অতিপ্রা  
প্রকাশ করিয়াছেন? লেড সাহেবের যে ভ্রম  
হইয়াছে, হিরচিত কোন বক্তিতা নাই  
র করিবেন? রেইলওয়ে ঘটিত ইংলণ্ডী  
শিলিঙ ও এদেশীয় টাকার হিসাব  
চীন দেশীয় যুক্তের টাকার হিসাব লইবার  
বিবাদ হইতেছে। লেড সাহেব সম্প্রতি  
আত্মপক্ষ রক্ষার্থ যে প্রেরিত প্রস্তাবটি ট  
ইমস পত্রে প্রকাশ করিয়াছেন, তাহাতে  
লিখিত হইয়াছে প্রতিবৎসর গতে ৬ কো  
টি টাকা রেইলওয়ের জন্য ব্যয় হই  
ধাকে। সেই ব্যয় মূলধন হইতে হইবার  
কথা, রাজস্ব হইতে হইবার কথা নাই  
যখন একপ হইল, তখন ৬ কোটি টাকা  
রেইলওয়ের বাস্তবিক ব্যয় বলিয়া ধরি  
লহইতে হইবে, তাহার মধ্য হইতে ৫০ লক্ষ  
টাকা রাজস্ব ক্ষতি বলিয়া গণনা করা সম্ভ  
হইতে পারে না। কেবল নিয়ম ধরি  
বিবেচনা করিলে লেড সাহেবের কথা  
অসম্মতিবচন বলিয়া বোধ হয় বটে, কিন্তু  
জে তাহা কোথায় হইতেছে? সর চারল  
উড প্রতি টাকায় দুইপেনি ক্ষতি স্বীকা  
করিয়া রেইলওয়ের তন্য টাকা কর্ত্ত  
রেন। সে টাকা কিছু নগদ ভারতবর্ষে  
রণ করা হয় না। তাহা ইংলণ্ডের ব্যয়ে  
জন্য রাখিয়া সর চারলস উড তা  
তববে উহার বিল প্রেরণ করেন। সে  
টাকা সাধারণ রাজস্ব হইতে দেওয়া হয়  
একপেনি সাড়ে পাঁচকোটি টাকা হই  
হয় কোটি টাকার রসিদ দিতেছেন, আমা  
গকে সম্পূর্ণ হয় কোটি টাকা দিতে হই  
ছে, তাহার সুদের ত কথাই নাই, তাহা  
অবশিষ্ট অর্ধকোটি রাজস্ব হইতে না হই  
আর কোথা হইতে দিবার সম্ভাব্য।

নি আশ্রয় পাননি। অতঃপর তিনি লন্ডন  
হইতেছেন। কিন্তু তিনি দুই মিলিয়ন  
ধন। দুই মিলিয়ন দুই পেনি বিলিয়নের  
মাত্র। তাহা হইলে তদ্বিধাতে আমানিদের  
লাভ হইবে। এখানে আমানিদের বক্তব্য  
সুতরাং আর হার মত্রে তদ্বিধা পরিচয়  
করা বিবেচ্য হইবে না। তদ্বিধাতের উপরে  
নির্ভর করিয়াই ইংলীশের সভ্য গণপন্থের  
মাজেই কলঙ্ক বহিয়াছেন। তদ্বিধা গণ  
না করিয়া কলঙ্ক করা সঙ্গত হয়, তাহা  
হইলে রেইলওয়ের সুদের বর্ধন একাল  
পর্যন্ত বন্ধ হইয়াছে, তাহা জমা টা  
কার মধ্যে পরিগণিত করা হয় কেন  
রেইলওয়ে সম্পূর্ণ হইলে তিন তিন কো  
ম্পানি প্রায়শঃ অংশদানের সুদের টাকা  
ত প্রত্যর্পণ করিবেন। একপে কায্য করা  
প্রাপ্তদোষ দ্বারা অধুষিত মছে। সর ওয়াল  
পোল হইতেই এখনে এই প্রাপ্তির সূচি  
হয়। কলঙ্ক লেও সাহেব ও তাঁহার অঙ্গ  
সহকারীরা যে কল বসুধা না কেন, রেইলওয়ে  
র বিনিময় প্রতি অত্রতা গণপন্থের ক্ষতি  
হইতেছে সন্দেহ নাই। তাঁহার কেবল তর্ক  
শক্তি প্রদর্শন করা হইতেছে, কিন্তু সে ত  
কর গুরুতা ও সারবত্তা নাই। একপে আ  
পক্ষ রক্ষার চেষ্টা না করিয়া তিনি যদি  
স্বার্থীকরে সাহস পূর্বক বলিতেন যে তা  
হা এ প্রকার ক্ষতি সহ্য করিবেন  
এ সরে প্রতি টাকার দুই মিলিও  
নবেন, তাহা হইলে তাঁহার বখাৰ্খ  
সমীর কায্য করা হইত। বিনিময়ে  
ক্ষতি হয় না বলিয়া হিসাবের মারিপেট  
করা কেবল তর্কশাস্ত্রের আশ্রয় মাত্র।

চীনদেশের যুদ্ধ কালে অত্রতা গণ  
মেন্ট সৈন্যাদির ব্যয়ার্থ ইংলণ্ডীয় গণপন্থ  
টকে কণ স্বরূপ যে টাকা চীন ইংলণ্ডীয়  
গণপন্থে তাহা পরিচোধ করিয়াছেন।  
লেও সাহেব সেই টাকা আর মধ্যে গণনা  
করেন। সর চার্লস উড ইহার প্রতিবাদ

করিয়াছেন। আর শব্দে কলঙ্ক  
সম্বন্ধে করিলে ইহা একত আর  
পরিগণিত হইতে পারে না। ইহা কণ পরি  
চোধ মাত্র। তবে এ বৎসর এই অর্থের আ  
গম হইল, বলিয়া ইহাকে যদি আর মধ্যে  
গণনা করা হয়, তাহাতে কিছু  
বিশেষ ক্ষতি হইতেছে না। ইহা আর  
বলিয়াই হউক, অথবা কলঙ্ক আদায় বলি  
য়াই হউক, এ উভয়ের অন্যতর বা বলিয়া  
পরিগণিত হউক, তাহাতে ইটানিউ নাই,  
তাহা গণনার বীতিভেদ মাত্র।

হার বাদে টাকা উদ্ধৃত হইয়াছে একথা  
লেও সাহেব বারবার কহিতেছেন। তিনি  
বাঁকা সপ্রমাণ করিবার নিমিত্ত জমা টাকা  
(কাসবালান্স) প্রদর্শন করিতেছেন। কিন্তু  
সর চার্লস উড কহিতেছেন লুই প্রাপ্ত টা  
কাও নানা প্রকার কণের টাকা একজ জমা  
হওয়াতেই জমা টাকার বৃদ্ধি হইয়াছে।  
ধনাগার অধিক টাকা থাকিলেই যে আর,  
ব্যয়, অপেক্ষা অধিক হইল একথা স্বীকার  
করা হইতে পারে না। কি লেও সাহেব  
কি সর চার্লস উড কেহই উল্লিখিত জমা  
টাকার সন্নিহিত বৃত্তান্ত প্রকাশ করেন  
নাই। একপে ধনাগারে ১৯ কোটি টাকা  
জমা দৃষ্ট হইতেছে। অতএব এ বিষয়ে  
সর চার্লস উডের প্রতিবাদ করিয়া লেও  
সাহেবের উল্লিখিত জমা টাকার কারণ  
নিরূপণ করা আবশ্যিক।

আমরা পূর্বেও কহিয়াছিলাম পুনরায়ও  
কহিতেছি, লেও সাহেবের ভ্রম হইয়াছে  
সন্দেহ নাই। কিন্তু তা বলিয়া তিনি উপে  
ক্ষার যোগ্য নছেন। জমখুনা লোক  
কোথায়? তিনি ভারতবর্ষের এক জন যত্ন  
বর্হি হইতেন। কট্টাকট বিল প্রকৃতি  
দুই একটি বিষয়ে তিনি মীলকর প্রকৃতির  
সহায়তা করেন বটে, কিন্তু তাহাতে ইংলণ্ডে  
র দারিদ্র্যরূপ, বিদ্যালয়িকার উন্নতি ও অন্য  
অন্য একাধারে এ দেশের জীবিত হয়, ইহা  
তাঁহার আন্তরিক ইচ্ছা ছিল। এদেশীয় ও

ইউরোপীয়দের সমাজের পক্ষে  
হয়, তদ্বিধা তিনি প্রচেষ্টা করিয়া  
করেন। তাঁহার একটা বিশেষ গুণ এই  
তিনি উইলসন সাহেবের আদর্শ মত  
নবেন। তিনি বিজ্ঞ লোকের সমাজে  
প্রকাশ করিয়া কায্য করেন। এ প্রকার  
কই একপে আবশ্যিক। কলঙ্ক  
তান আমানিদের দ্বাধার বিল  
হে সন্দেহ নাই। তবে তাহাকে  
পত্র দিয়া বন্ধ চালাইয়া উভয়ের  
করাও আমানিদের অভিযাত মছে।

পবিত্র ওয়াক্ টিপার্ডের  
ভারতবর্ষের গণপন্থের  
লিক ওয়াক্ বাবের হিসাব প্রকাশ করি  
য়াছেন। প্রথম ৩৬৭৭ লক্ষ টাকার কলঙ্ক  
হয়, কিন্তু আদ ২০১১ লক্ষ টাকা  
সর্বমুখ ৩৬৮ লক্ষ টাকা ব্যয়  
কমটায়ের হয় এক টাকা ই  
ধরা হয় নাই, তাহা ধরিলে  
লক্ষ অধিক হয় যেহায়ে ও যে  
যত টাকা দেওয়া হইয়াছে, তাহা  
নিখিত হইল।

|                     |          |
|---------------------|----------|
| মাজাজ               | ৩        |
| বোয়াই              | ৫১       |
| বন্দোশ              | ৫২১      |
| উত্তর পক্ষ          | ৩০১      |
| পক্ষ                | ৫১       |
| অবোধা               | ১৭       |
| মধ্য ভারতবর্ষ       | ১৭১      |
| হারদ্রাবাদ          | ৩৬       |
| ব্রহ্মদেশ           | ১৫৬      |
| সিঙ্গাপুর প্রকৃতি   | ৪        |
| অন্য অন্য           | ২৬       |
| রেইলওয়ে            | ১৩১      |
| ইলেকট্রিক টেলিগ্রাফ | ৬৬       |
| পোর্ট আকিস          | ১        |
| জমা                 | ২০১      |
| মোট টাকা            | ৩৬৮ লক্ষ |



ইহার মধ্যে সেবারেই ৩৬.০  
৯,১১১ টাকা, কৃষির উন্নতি নিমিত্ত (খা  
ল খনন প্রভৃতির জন্য) ৩৬.২৮,৯৩২  
টাকা এবং রাস্তার উন্নতির জন্য  
১,০১,৪৭,৮০০ টাকা ব্যয় হইয়াছে।  
১১১ টাকা রাজস্ব প্রাপ্তিতে ব্যয়িত

গবর্ণমেন্টের যে সমস্ত ব্যয় ব্যয় হিসাব  
প্রস্তুত হইয়া থাকে, তদনুযায়ী আয়ের বি  
বরণে বরাদ্দেই অধিক টাকা দেখানিয়া  
কিন্তু ব্যয়ের বেলা সে রূপ নয়। উপরের  
হিসাব সর্ম্মম করিলেই সকলের জ্ঞান সু  
স্পষ্ট হইয়া যাইবে। এক্ষণে গড়ে প্র  
তি বৎসর কৈলঙের প্রকৃতি ১২ কোটি  
টাকা ব্যয় হইতেছে। ইহার মধ্যে আর  
জারি কে ১ সাধারণ রাজস্ব হইতে দেওয়া

বীর মধ্যে কোন গবর্ণমেন্ট এত  
এ বিষয়ে ব্যয় করতে পারেন  
কিন্তু ইহার অনুবন্ধী কল লাভ  
অনেক দূরে আছে। কি পরিমাণে  
ল ভোগে আমরা সমর্থ হইব, তাহা  
নিশ্চিত ও নিঃসন্দেহ হইতে পারি  
তে না। রাজস্ব প্রকৃতি প্রস্তুত হইলে  
এসে পরসম্পর্কে উন্নতি হইবে, এই মধুর  
ধনি কেবল অমৃতবর্তির ন্যায় কর্ণের আন  
ন্দ উৎপাদন করিতেছে। এই কল বিষয়ে  
ব্রাহ্মকোষ হইতে যে পরিমাণে ব্যয় হইতে  
ছে, আমরা যে তদনুযায়ী কলভোগী হই  
ব, তাহারও সম্ভাবনা দেখা যাইতেছে না।  
ইহার অধিক হইলে আরও কলভোগীর  
উন্নয়ন হইতেছে। এদিকে যে কলভোগী  
প্রথা হইয়াছে, আম বাস্পাস করে কলিতে  
পারি, তাহাতে লাভ হওয়া দূরে থাকুক, এ  
কল কার্যও সুচারু রূপে সম্পন্ন হয় না।  
কলভোগী দিবার আর্থিক এই "তেন্না আপনা  
রা অধিকাংশ লোক, আর জিজ্ঞাস্য মাত্র ব্য  
য় কর।" যেখানে যেখানে কলভোগী, সেই  
খানাই আর কোথায় পাওয়া যায়, উপ

যুক্ত প্রসিদ্ধ "ইহা কলভোগীর লবণ ও  
তৎ বিক্রয়ের কাজ" হইয়া উঠে। যাহা  
র হাত দিয়া কলভোগী ব্যয় করি তিনি  
নে করেন, তাহার মিত হইল কলভোগী  
রের মিত আছে। কলভোগীর কলভোগী  
মাণ দিয়া টাকা অর্জি লইয়া বিক্রয় হইয়া  
না হইতে সেই কলভোগীর মেরামত কবাইবার  
নিমিত্ত আবার কলভোগীর অধোগ করিতে  
হয়। যাহার হাত দিয়া এই কাপ কাপ  
হয়, তাহারও ক্ষতি নাই, কলভোগীরও  
ক্ষতি নাই, ক্ষতি কেবল গবর্ণমেন্টের। গ  
বর্ণমেন্টের ক্ষতি হইয়াই আমাদিগের  
ক্ষতি। এই রূপে যে অকারণ ক্ষতি করা  
হইতেছে, তাহার দায়ী কে? প্রায়ই শুনি  
তে পাওয়া হয়, অনেক ওবরসিয়ার বিনা  
মী করিয়া কলভোগী লইয়া থাকেন। এই স  
কল কারণে আমরা জিন করিয়া অনুরোধ  
করিতেছি গবর্ণমেন্ট এক কমিসন নিযুক্ত  
করিয়া পবলিক ওয়ার্কের ন্যায় এবং ওবর  
সিয়ার ও ইঞ্জিনিয়ারদিগের কাব্য প্রণালী  
র পরীক্ষা করুন। গবর্ণমেন্ট আর কত  
কাল আমাদিগের শোষিত দিয়া এই সকল  
ধূর্তকে পরিবর্তিত করিবেন।

—০—

অনুগ্রহ দিয়া চড়ক উঠাই।

দিবার আজ।

সর চার্লস উড এই আজ্ঞা করিয়া পা  
ঠাইয়াছেন যে, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট কর্তৃক  
চারিদিককে করিয়া দেন, তাহার অনু  
গ্রহ দিয়া চড়ক উঠাইয়া দিবার চেষ্টা পা  
ন, কিন্তু কোন রূপে যেন এদেশীয়দিগের  
ধর্ম্মে হস্তক্ষেপ না করেন। সর চার্লস  
উডের এআর একটা বর্ধার রাজনীতিজ্ঞের  
কাণ্ড করা হইয়াছে। প্রজার সুখ দুঃখ  
সম্বন্ধে উদাসীন হইয়া কেবল আপনার  
সুখ স্বচ্ছন্দে উপায় অধোগ করিয়া কাল  
তিপাত করা রাজার অধবা রাজপ্রতিনিধি  
প্রধান পুরুষের কর্তব্য কখন নয়। প্রজার  
কোন কোন অংশে কষ্ট আছে, আর সেই

সেই কষ্টের দূরীকরণই বা কি পুণ্য  
পুণ্যকর্ম্ম তাহার দৃষ্টি অনুসন্ধান করিয়া  
করিতে চেষ্টা করা কল্যাণ কল্যাণ।  
কল্যাণই চেষ্টা করিতে দিয়া প্রজাগণকে  
সুখের রেশমাগারে নিঃশীত করিতে  
হয় না। অধুনা কলভোগীর দৃষ্টি  
থবা রাজপ্রতিনিধিগণই সেই কলভোগীর  
আপাত কারণেই থাকেন।  
কারের বিরোধী হইয়া উঠিয়া  
করিতে গেলে তাহাতে পুণ্য হইতে  
লাভ সম্ভাবনা থাকিলেও পুণ্য এইরূপ  
ঘটনা হয়।

এ দেশে যত পুণ্য কলভোগীর ব্যবহার  
প্রচলিত আছে, চড়ক ভাঙার মধ্যে একটি  
পুণ্য। অনুধাবন করিয়া দেখিলে সকল  
বিষয়েরই প্রায় আংশিক দোষ ও আংশিক  
গুণ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু অমূল্য  
বিস্তর ভাবিয়া দেখিলে, চূড়ান্ত ক্রমে  
চড়কের এক অংশও একটি গুণ দেখিতে  
পাটলায় না। নৃত্য, গীত, বাঁদী প্রভৃতি  
ইহার অমূল্য পুণ্য সমুদায়ই অপকৃষ্ট  
বাদ্য এমন মধুর যে কিঞ্চিৎ অধিক কল  
অবগ করিলে কর্ণ বধির হইয়া যায়, তা  
হাকে প্রকৃতি করিবার নিমিত্ত চিকিৎসা  
করিবার প্রয়োজন হইয়া উঠে। নৃত্য  
খিলে কেবল যে গুণ জন্মে একপ নৃত্য  
উহা অলীকতা দোষ দ্বারা একান্ত দুর্বি  
উহা কোন ক্রমে তাহারও বি  
গের সর্ম্মনযোগ্য নহে। গীত,  
দোর অনুবন্ধ। এতদ্বিধ, বাঁদী  
ক করা ও কাপ খাওয়া প্রকৃতি কলভোগী  
নৃশংস ও বীভৎস কাণ্ড আছে।

কলভোগী এই নবনী অসত্য কালোচি  
আমাদিগের দেশের সুখ নীচ লোকের  
ইহার দ্বিতী। ইহা যে ইদানীন্তন কা  
অধিকতর অনর্থের নিদান হইবে, এ  
বলা বাহুল্য। ইহা যত নীচ এ দেশ  
তে অসহিত হয়, ততই সকলের মিত  
এই অসত্য নির্ভর ব্যবহারের উন্ন

[illegible]





লটবার অন্য আর্থিক পরিস্থিতি প্রকাশ করুন।  
প্রথম বাতীত এই বর্ণোচিত রূপে উল্লেখিত  
হইবেকেন।

ক্রমশঃ প্রকাশ্য।

## সংবাদ।

১৭ই ডায় সোমবার।

প্রধানমন্ত্রীর বিচারালয় বাবতীর জজ, সদর-  
আলা, সদর আমীর ও মুন্সেফদিগের বিক্রেত  
বিরণের এক হিসাব চাহিয়াছেন। বিরণে না  
তিরগিগের বিলকণ সাত হইবে। তাহাদিগের  
সেতম খাণ্ড করিয়া বাকী টাকার একটী কণ্ড  
করিয়া মুন্সেফ বিগের বেতন হুজির উপায় ক-  
রা কর্তব্য।

হুতম মণ্ডবিধানের আইন প্রচলিত হও-  
য়াতে এদেশে যে গবর্ণমেন্টে আছেন, এত দি-  
নের পর লোকে সেই অনুভব করিতেছেন।  
ইহার এই একটি বিশেষ উপকার দেখা যাই-  
তেছে, বিখ্যাত সাকীর মণ্ড আরম্ভ হইয়াছে।  
সাকিষ্টে টেরা প্রত্যহই আর পাঁচ সাত ব্য-  
ক্তিকে সেসিষ্টনে সমর্পণ করিতেছেন। এতলে  
তাহাদিগকে সাবধার করিয়া দেওয়া আবশ্য-  
ক যে উহাদিগের সম্বন্ধস্বরণ ও অধিকতর  
উৎসাহ তেহু মধ্যস্থ সাকির বেন মণ্ড না হয়।  
সাকিষ্টে টেরা উৎকোচ গ্রহণ সংক্রান্ত খারাটি  
আমলাগণের উপরে বাটাইতেছেন না কেন?

প্রধানমন্ত্রীর বিচারালয়, অধীশত আদালত  
সমূহকে নীচ নীচ আপীলের মকদ্দমা প্রেরণ  
করিতে কহিয়াছেন। আপীল গুনিবার জন্য  
প্রতিকরন বতর জর নিয়োজিত হইয়াছে-  
ন। সর বাণেস পিকক বডি এত ডাক্তা ডাকি-  
করিতে লাগিলেন, এতদিন দুই তিনপুরুষ আ-  
পীলের মকদ্দমা পড়িয়া থাকিবার যে ব্যবস্থা  
ছিল, সেই এখন তবে গোখার বাইবে।

মিক্রুস মামিক এক জন ফিরিঙ্গি এক বি-  
জীওয়ালার এক খানি কেমেরা কাড়িয়া লও-  
য়াতে ডাক্তার হুয় মাস মিগ্রান হইয়াছে।

মূলধনের বণিকেরা মাতকষ্টের মজুর দি-  
গের মহাকৃত্যর জন্য ২২৭০ টাকা টালা কবি-  
য়াছেন।

বিক্রপেট্টবটের এক জন পুত্রের মৃত-  
্যু খবর খালির সাকিষ্টে টেরা সাহেবের সাক্ষা-  
চক্রের কথা লিখিয়াছেন। ইহা এক জন পরী-

কোষ্ট্রি বিবিলিয়ান। হুয়ারখালিতে উক্ত  
বাকী না পাইয়া এই মহানতি তত্ত্বা বিলিয়ান  
বাসাৰ জইবার অন্য বিশেষ চেষ্টা পান, বিজা-  
লয়ের কার্য সম্পাদকের উপরে এক পরওহাল ও  
হইয়াছিল, কেবল টমপেট্টের মার্টিন সাহেবের  
নিষিদ্ধ কৃতকার্য হইতে পারেন নাই। হুতম  
বিবিলিয়ানদিগকে কি আকরে টানিতেছে।

মিলীগেজেট বলেন, আমীর দৌতবহন  
খান সেমারা বিরাটের অতিনিকটে গিয়াছে।  
তিনি নিকে অধ্যাপিত করিতে আছেন, তুল  
ডান জাম পুনর্বার সহি করিবার প্রার্থনা  
করেন কিন্তু তাহা অগ্রাহ হইয়াছে। একপ  
জনকতি তিনি আমীরের হস্ত আশ্রয়সমর্পণ  
করিবেন। এমিকেলসংবাদ আসিয়াছে পার-  
স্যাদিগের বিরাট আক্রমণের প্রতিবাদ ক-  
রিয়াছেন।

আগরার সদর নিজাবতে রাও সাহে  
বের বে দিবস বিচার হয় সে দিবস তাহার উ-  
কীল ইঁকোড সাহেব উপস্থিত ছিলেন না।  
তাহার নিষিদ্ধ এক দিবস বিলম্ব করা হয়, তা-  
খাপি তিনি অনুপস্থিত থাকিতে বিচার প-  
তিরা নথি রেখিয়া তাহার হুয়া হুজির আ-  
জা মিরাছেন। ইঁকোড এককর মকদ্দমার  
উকীল হইয়া কিজন্য মকদ্দমার সম্বন্ধে উপস্থি-  
ত ছিলেন না তাহা সাধারণের জাণ কর্তব্য।  
যেমন ইচ্ছা দোষী হউক না কেন তাখাপি অল-  
কাবী ব্যক্তিকে আশ্রয়কার বখেট সমস্ত ও উ-  
পায় করিতে দেওয়া কর্তব্য।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন, অক্টোবর মাস  
স অবধি ককল পুরের রেইলওয়ে আরম্ভ হই-  
বে, তদ্বিষয়ে ২৫ লক্ষ টাকা ব্যয় হইবে।

অবোধ্যাগেজেট লাণ্ড হোল্ডার মজার  
বিষয়ে লিখিয়াছেন “আমরা এতদিন এই ম-  
জার কাপনিক বাণো মুক্ত হইয়াছিলাম, তা-  
র্ধ ইঁহাদিগের কার্যের ও প্রতিবাদের মূল।  
সম্পাদকের এই সংস্কারটি এখন থাকিরা গেলে  
হয়।

হরকরা বলেন “আমরা সন্তুষ্ট হইলাম  
যে মিটার দিলির বণোকেই বিচার করিবার  
কপনা পরিচ্যাপ্ত করা হইয়াছে। তাহাকে  
কলিকাতার বিচারার্থ আমায়ন করা হইবে।  
একপ হুজার আর কলিকাতার আসিয়া-ও

আর কিছু নয় না। এখন কলিকাতার বাতা  
ন কিরিয়াছে।

মত কামিতম্বরণীর মজার রাজা প্রভা-  
পাত্র সিংহকে বাহু সমাধালায় রায়ে  
পরিষদে সেক্রেটারি করা হইয়াছে। নতুন  
ডি ককঃ সাহেব হুজ বাহুর প্রদর্শনা ও জা-  
হার অকাল হুজার নিষিদ্ধ অতাদ শোক প্র-  
কাশ করিয়াছেন।

কিমিক বলেন, ভারতবর্ষীয় মনঃশ্রুতির  
পবলিক ওয়ার্কের সেক্রেটারি সিক্রেটারি সে-  
ক্রেটারির মূল্য ৩৫০০ টাকা বেতন পাইবেন।

উক্ত পত্র বলেন ইংলিসম মত ক্রেত অব  
ইতিয়ার বর্তমান সম্পাদক পরিষদ হইতেছে।  
এরাল টর ব্রেট মণ্ডনে ইংলিসমাসের সংবা-  
দলাতা হইবেন। শিখের সম্পাদকতার কে ও  
অব ইতিয়ার প্রাকের সংখ্যা কহিয়া যাও-  
য়াতে তাহাকে তৎপন্ন জ্ঞাপ করিতে হই-  
তেছে। আমরা পূর্বেও কহিয়াছিলাম, এখনও  
কহিতেছি, এরালটর ব্রেট ও শিখ ভারতবর্ষ  
জ্ঞাপ না করিলে এদেশীয়দিগের সহিত  
ইউরোপীয়দিগের সত্য হইবে না।

১১ই ডায় মঙ্গলবার।

বোম্বাইনগরে হুতম মালম দেশীয় জাহি-  
কেনের প্রতি মাল ১৬০০ টাকার বিক্রীত হ-  
ইতেছে।

এক জন বাজার টাইমস পাত্র লিখিয়া-  
ছেন, দাকিণাত্যে পুন্ড্রীর উপায়ী চলিতে-  
ছে। বিবেচনা পূর্বক এই সংবাদে বিশ্বাস  
করা কর্তব্য। পরীক্ষা পূর্বক কর্তব্যের মত অ-  
ধ্যাপিত প্রবল আছে। ইহাও বিজ্ঞানের পর-  
চ্যুতির একটি উপায় নয়?

বাজার টাইমস প্রকাশিত একজন বা-  
জারী সেমারামবাস্তবতার বিষয় লিখিয়াছেন।  
এক জন কোরাটীর মার্টিন প্রধান সেমাপতির  
অনুমতি গ্রহণ ব্যক্তিরকে সিপাহীদিগকে  
হুতমবিশ্ব টুপি-খাণ্ড করিতে বলেন একপে  
সিপাহীদিগের পরিষদের মূল্য তাহাদিগের  
বেতন হইতে কর্তন করা হইতেছে। তাহারা  
তদ্বিষয়ে একবাক্য হইয়া হুতম টুপি গ্রহণ  
করিতে অসম্মত হইল। কোরাটীর মার্টিন ক-  
রেক জনকে রুদ্ধ করিতে সমুদায় রেজিমেন্টে  
অগ্রসর হইয়া রুদ্ধ হইতে চাহিল। গতবিশো



অধিকাংশ স্থানে আকিসরদিগের দোষেই  
টে। অতএব স্ততন কোর্টার কার্যকে সা-  
রক বিচারালয়ে অন্তর্ভুক্ত কর্তব্য।

দিল্লীতেও বৈদ্যনাথ জ্যোতিঃ প্রসাদ  
অতিশয় পীড়িত হইয়াছেন। তিনি কানী-  
ত আছেন।

উক্তপত্রের এক জন পত্র প্রেরক বলেন,  
দিল্লীতে দুই জন ইউরোপীয় সৈনিক পুত্র-  
ক জন সন্তান ইউরোপীয় ও এক জন রাজক-  
ক বধ করাতে সাধারণ বিচারালয়ে তাহা-  
দের বিচার হইতেছে। লেপ্টেনেন্ট জার্নাল  
কি হইল?

মাজারের ব্যবস্থাপক সভার সভ্য মোর  
সাহেব তদন্ত বিচারালয়ের বিচার প-  
ত্র পদত্যাগ করিয়াছেন। মোরহেড সাহেব  
পবিত্র লোক, সর হেনরি ওয়াডে র ঘৃণ্য হ-  
লে তিনি কয়েক মাস প্রতিনিধি শাসন কর্তা  
ছিলেন। মাজারের লোকেরা তাহার উপরে  
ভূট। বোধ হয় তিনি কর্তৃপক্ষের প্রিয়পাত্র  
হন তাহা হইলে তাহার একটি উপযুক্ত  
দ লাভ হইত।

মত শুক্রবার অর্থাৎ বোম্বাইয়ের প্রধান  
বিচারালয়ের কার্য আরম্ভ হইয়াছে।

ফিনিক্স গ্রন্থ করিয়াছেন কমিকাতার আ-  
রম্ভ হইয়াছে। প্রাণী কোন কাজের হইল না।  
তাহার ভাইকর্তা কার্কে সাহেব ও মিউনিসিপল  
কমিসনরের। ইহাকে যে কেবল নিত্যক  
কর্মণ্য জান করিয়াছেন একপ মতে, ইহা তা-  
রা নিকটবর্তি বাসী সকলেরও অনিষ্ট হইবার  
সম্ভাবনা হইয়াছে। আমরা পূর্বেই এ আশ-  
কা করিয়াছিলাম। সাধারণের টাকা যে রূপ  
ব্যয়িত হইল, এখন ইহার দায়ী কে?

উক্ত পত্রের চাকর সংবাদ দাতা বলেন  
কর্তব্য আইকে নাটকীয় সত্তা বহু অধিক  
দিন কাহারিতে আইসেন, এবং দুই  
এক ঘণ্টা থাকিয়া প্রস্থান করেন। সেরেস্তাদার  
সর্ব্ব সর্বা হইয়াছেন। আইকে নাটকীয় সি-  
লিয়ার ত? কাহারিতে দুই এক ঘণ্টা সে  
হত্যার পদখলি পড়ে সেও বখেটে।

চাকরপ্রকাশের এক জন পত্রপ্রেরক বলেন  
কর্তৃপক্ষের হোটে, মাজারের স্ততন জন  
কর্তৃপক্ষের হোটে, মাজারের স্ততন জন

নামিবার সময়ে হস্ত মোকাদ্দা দখি দুই ও ধী-  
বয়েরা নংস লইয়া এবং বেশ্যারা সঙ্গারমান  
থাকিয়া মজলিস করিয়াছে, পরদিবস অজ্ঞে  
র অতিপ্রায় হুসারে বেশ্যারা তাহার সাদা  
হাটয়া কিছু কিছু দক্ষিণা আনিয়াছে। অজ্ঞে  
সকল কয়েক জন গায়ক ও তাঁত আছে।  
কর্তৃপক্ষের হোটে কপাল তাঁত এমন চমক  
পাইয়াছেন।

উক্ত পত্রপ্রেরক লিখিয়াছেন পোটে নামক  
এক জন নীলকর তদন্ত মোজদারর না  
জিহেব নামে দিয়া নালীশ করাতে তাহার  
২০ টাকা ভরিমান হইয়াছে। ইউরোপীয়ে  
র বেলা জরিমানা এতদেখিয়া হটলে নিরাস  
হইত।

১২ই ভাদ্র বুধবার।

পূর্বে ঠাকুরিগের হস্তে পতিত ২৪৫ টা  
কর পশ্চিমবঙ্গলগামী পথিকেরা হস্ত সর্ব্ব  
হইতেন। এক্ষণে এই দুইজানিগের দমন হও-  
রাতে উকারা আর একটি হস্ত উপায় উদ্ভাবন  
করিয়াছে। যখন কোন মেলা বা ভীর্থে যাত্রি-  
রা গমন করে, তৎকালে প্রায় বাবতীর সরা-  
ইরে ২৪ জন মুন্সরী স্ত্রীলোক দেখিতে পা-  
ওয়া যায়। তাহারা কোন ট্যাক তারি তরলে  
প্রিয় যুবককে দেখিলে নাম হলে তাহাব স-  
হিত আলাপ ও ভাব করে। কেহ বা ভীর্থে  
বাইতে ছিলাম হঠাৎ অধীর সজ হারাটরাহি  
বলিয়া ছল করিয়া দুবা পথিকের সতর্ক হইয়।  
পথিমধ্যে এ কথা সে কথা হটগা তরলেজিহে  
রা বে তাহার প্রায় পাশে বসে হয়, একথা  
কথা বাহুল্য। এইরূপে প্রেমাস্পদ হইয়া  
শেষে সেই পাণ্ডুরসীরা পথিককে একপ প্রস-  
তোজন করার যে সে তোজনান্তে ঘোরতর  
মিহাস অক্লিষ্ট হয়, প্রাতঃকালে আগন্তিক  
হইয়া দেখে ৫ প্রাণদীনীর ৩ সহিত ট্যাকের  
টাকা অদৃশ্য হইয়াছে। এই স্ততন ধর্ম্মতা  
নিবারণার্থ পুলিশের স্ততন সতর্কতা আব-  
শ্যক।

বারানতের অজ্ঞাপতি কাঠালিয়া গ্রামে  
এক রাস্তার বাসিতে একটি ডাক উক্তি হই-  
য়া গিয়াছে। মজুরা বাসী মধ্যে প্রবর্ত হইলে  
দুই ঘণ্টা বাস্তব এক বিচারিগে গাদার মধ্যে  
দুকারিত হয়। অন্যতর মজুরা তাহার স্ত্রীকে

বিবাহ করিয়া দুইঘণ্টা করিতে উদাত ৪০ টা  
তখন তিনি আর দুকাইয়া থাকিতে না পা-  
রিয়া সম্মুখবর্তি এক বানি বরগা লইয়া মিক  
টবর্তি বাটী পাককে প্রবর্তে বস করিলেন  
তাহাব পর যে দুই জন তাহার স্ত্রীর দুই  
করিতেছিল, তাহাদিগেরও ঐশ সস্তার  
করিলেন। সর্ব্বশুদ্ধ তিন জন হস্ত ও চারি জন  
আহত হইলে মজুরা পলায়ন করিল। তাহা  
দিগের কয়েক জন হস্ত হইয়াছে। আমদ  
শুনিয়া আলাদিত হইলাম, তাৎক্ষণিক পু-  
দেওয়া হইবে।

টাইলু অব টাইলুয়ার এক জন পত্র প্রে-  
ক বলেন, নীল গিরির চা আলাদার চা আ-  
কা উৎকর্ষ হইয়াছে।

গত ছয় মাসের মধ্যে সর্ব্বশুদ্ধ ২০০  
জন মজুর বরিসসে গমন করিয়াছে উ-  
মধ্যে ৩১৩ জন গবর্ণমেণ্টের ও ১০০ জন  
অপনাদিগের বাথে গমন করে। তাহা  
গের মজুরী বরিসসে মিসিমিত সর্ব্ব উ-  
হটলে তাহাদিগকে তারতবর্গে পুনঃ প্রের-  
করিবার উপায় করিবার জন্য সর চারক ১০  
২,৫০,০০০ টাকা কোন এক কণ্ডে জমা কর-  
তে করিয়াছেন। অনেক মজুর খেছাপুর  
তথ্য বাস করিতেছে। সেখানে তবে বে-  
হয় নীলকর ও চাকর নাট।

আত্মাভিগের মেনে কুসংস্কারের আ-  
স্তি প্রাপ্তি বাধাতে যে কত জনের  
টিতেছে, পুনঃ অধঃস্রবের এক জন  
প্রেরক তাহার একটি চট্র প্রদর্শন করি-  
ছেন। কারকী প্রানের এক জন বিজ্ঞান কার-  
স্ত্রীলোককে একদিন এক কেউটে সাপে ব-  
ধন করে। কয়েক জন আকিসর তাহাকে টে-  
নিক চিকিৎসালয়ে বাইতে বলেন। কিন্তু  
অন্য সকলে তাহাকে এক গণেশের মন্দি-  
র বাইয়া মত পাঠ করিতে বলিল। সে তাহা  
করিল। কিন্তু ১৫ মিনিটের মধ্যে তাহা  
মৃত্যু হইল। এই সকল কুসংস্কার দূর হই-  
এক মাত্র উপায় আছে—বিদ্যা।

উক্ত পত্র প্রেরক আরও বলেন, চট্র  
বিশিষ্ট সর্ব্ব আছে বলিয়াই সংস্কার-  
জায়া। তিনি নিজে পরীক্ষা করি-  
দেখিয়াছেন যে একটি বুদ্ধের সার, যৌবন

[illegible]

আমরা এইখানেই বিচারালয়ের সেসিরে  
আসব হইতেছে। এখান আসাই মক্কীরা আ-  
হ। আমুর হিজির নাম অপরায়ির সিউ ম-  
য মেখিতেছি ন। বোম হর আগাখী দে-  
মনে ডাহার বিচার হইবে।

ডাকার স্টিউল বচেন, সেন্টেনকে গবর্নর জিহ  
ট বাইবার লবরে এক বারি তিন ঘটিকার জ  
ডাকার বানিয়ারিহিলেন । তিনি তত্ৰত্য টি  
কলানায় ও বারিক চর্চন করিয়া জিহটে গি  
হেলেন । আশরা এই পাত্র পাঠে আক্যামিত  
ইলান, বীভল সাহেব অনেক পুস্ত হইয়া  
জন ।

ইংলিসহানের লগুনস্থিত সাংবাদিকতা  
 কেন শিপপ্রদর্শনী সভা ভারতবর্ষের বি-  
 ভাগ নিয় লিখিত মেডাল ও প্রথম সা গল্প  
 য় ছেন :—

| বেতান                     | প্রমাণের পত্র, |
|---------------------------|----------------|
| অভিযোগ.....               | ৩৩..... ২৩     |
| উত্তর পক্ষিমাধ্যম-১২..... | ২              |
| পক্ষিমাধ্যম.....          | ৫              |
| অভিযোগ.....               | ৩..... ২       |
| সমাধি.....                | ১৪..... ৭      |
| অভিযোগ.....               | ৩..... ৬       |
| অভিযোগ.....               | ২২..... ১৪     |
| অভিযোগ.....               | ৩..... ২       |
| অভিযোগ.....               | ৭..... ২       |
| অভিযোগ.....               | ১..... ৩       |
| অভিযোগ.....               | ১১..... ১৩     |
| অভিযোগ.....               | ১৪..... ৭      |

---

|     |    |
|-----|----|
| ১৩৪ | ৩৪ |
|-----|----|

বঙ্গদেশই ভারতবর্ষের সকল স্বপ্ন আপো-  
 ঞ্চন হইতেছেন, তথাপি, পত্রপ্রেরক  
 লক্ষ্য বরিয়াছেন এতদেশীয় সমুদায় বঙ্গ  
 ল করিয়া পরীক্ষা করা হয় নাই। শিখ প্র  
 ণ সময়ে ইংলন্ডেও বহু উৎসাহ ছিলেন না  
 ত বিদেশীয় রাজকুমার ও মুকুটলোক প্রা  
 প্ত হইলে, তাঁহাদেরই আবাসস্থান নিয়ো  
 জিত করা অথবা অন্য কোন প্রকার অভ্য-

[illegible]

১৩ই তারিখ মহাসভাবার  
গণপত্র প্রকাশের অন্তর্গত। মুদ্রিত হইতে কলি  
কাতার প্রত্যয়গণন করিয়াছেন।

পূর্ববাক্যের য়েইল-ওয়ে ২৩ এ সেপ্টেম্বর  
মাক্কাফান পূর্বস্থিত ছিলিবে এবং ১লা অক্টো-  
বর কটিয়া পূর্বস্থিত ছিলিবে, কথা হইতেছে।

ফেব্রুয়ারি অবধি এপ্রেল পর্যন্ত ইনকম ট্যাক্স ও ইন্টারেস্ট মির লিখিত টাকা আদায় হইয়াছে।

| ଟିକା     |        | ହିସାବ    |           |
|----------|--------|----------|-----------|
| ତ        | ମରମେକି | ୭,୧୨     | ୧୭,୭୭,୨୧୮ |
| ମା       | କି     | ୦୭,୦୮୦   | ୧୧,୭୧,୫୭  |
| କିରାଜମେର |        | ୧୪,୭୭,୦୮ | ୧୧,୭୧,୫୭  |
| ମ        | କା     | ୦୪,୧୮    | ୧୧,୭୧,୫୭  |
| ମା       | କା     | ୦୪,୧୮    | ୧୧,୭୧,୫୭  |
| କୋ       | କା     | ୧୧,୭୧,୫୭ | ୧୧,୭୧,୫୭  |
| କୋ       | କା     | ୧୧,୭୧,୫୭ | ୧୧,୭୧,୫୭  |

একশে সর্কসুত ৩৩,৮৬,৪১০ মণ থাকে  
লবণ জমা হইয়াছে। ইহার মধ্যে লিবরপুল হ-  
ইতে ৩০,০৪,১২৪ মণ আসিয়াছে। ক্রান্ত  
সিংহল দ্বীপ ও লেঙ্গা প্রকৃতি স্থান হ-  
ইতে বাকী লবণ আসিয়াছে। গবর্ণমেন্ট এক-  
শে নিকিঙ্গে লবণের এক ডেট্রিয়া ত্যাগ করি-  
তে পারেন। তবে শুভযশের বিলম্ব কেন?

লাড' হামিলটন, মামনবরি, গ্রামপিল ও  
সর চারুলন উক্ত লাড কানিডের একটি প্রান্তর  
মণী প্রতিমূর্তি কবিবার উদ্দেশে এক শিক্ষাপ  
ন প্রকাশ করিয়া সর্বসাধারণের বিক্রেতা  
প্রার্থনা করিয়াছেন।

মন্সোনগরস্থ নবাব ইকুনিষ্টমোলা জাম  
করাতে কয়েক মাস পূর্বে তাহার ১০,০০০ টা  
কা জদিবান। হয়। স্বর্গদেউ অকণে আজি  
কতিরাতেম তিনি আর নবাব ইনাখি ধার্মিক ক

[illegible]

গণবর্গকে আত্মা করিয়েছিল। এমনকি  
পারস্য আর ই কোর সর্দিও  
হইবে না। শোকারেরা ইকান গ্রাম  
য়না অধিক পাইবেন। ইহার পর কখন  
কান পারস্য বাহির করিবার আশঙ্ক হইবে  
তখন কলিকটেরা লিড টাউ পার্শ্ব সম  
সোল আশা মিটে গারিবেন।

সর চান্দকান উক্ত আত্মা করিয়াছেন সব  
মেটের কর্তব্যচালিদিয়েন করিয়া তাহার চক  
পুজার বিরুদ্ধ সাহ মিরা করে তাহা উঠাই  
নিবার চেষ্ঠা করে, একবারে তাহার একা  
কণে খণ্ডের উত্তর হস্তক্ষেপ করিতে পারে  
না বটে কিন্তু ইহা বাহ্যতে প্রকাশ্য মার  
চেষ্ঠায় থাকা কর্তব্য। অবশ্য কর্তব্য লক্ষ্য  
মাই।

গত বর্ষে সিঙ্গাপুরে ১৭,৪৫,০০০ টাকা  
আর ৩১৩,৪০৫৪০ টাকা ব্যয় হইয়াছে  
এই আড়াই লক্ষ টকা বঙ্গভূমিকেই বোঝ  
করিয়া লওয়া হইয়াছে, আরো হইবে।

সিদ্ধমেনীর বিরপুর গ্রাম জলাশয়ের ঘাট  
এক কালে উৎসব হইত। এখানে রাই  
পুর বোয়ালিয়া ঘাইতে-মিলিত।

অনুগ্রহ করে দেখুন।

হুতোলাখ্যাতের আশীল অগ্রাহ্য করিয়া  
ন। তাঁহারা তাঁহাদের গবর্ণ জেনেরলের  
কথা আঁর্জনা করিতে বলিয়াছেন। তাহ  
আশীল ভাবে নিতান্ত নিম্ন হইয়াছে।  
এ-একজন গবর্ণ জেনেরলের নিকট আবেদন  
করিয়া কথা পাইতে পাবিবেন যোগ  
ইতেছে।

২১এ আগষ্ট কানপুরের মাজিষ্ট্রেট  
কাজারির সম্মুখে রাওসাহেবের বাণী হইয়া  
হেঁ। তিনি প্রাণত্যাগ কালেও আপন  
ভীলতা ও কাপুরুষতা প্রকাশ করেন নাই  
তিনি মৃত্যুকালেও বলিয়াছেন তাঁহার আত্ম



আরে কোন ইউরোপীয়ের কাছে যাব না। অনেক ইউরোপীয় "অলোক" "পত" "জীলোক" কী কী করেছে। গিরা-  
মেন।

সামান্য সাহেবের বাড়ির আত্ম-  
রে হুঁই প্রেরণে এক "মুন্সি" প্রকাশ  
করিয়াছেন। "মুন্সি" যেমন বড় ইচ্ছা তত  
কাজ তত্ত্বি পর্বতেরে ধন্যগার হুঁতে পা-  
রা বাইত একে আর তাহা হইবে না।  
১৫ টাকার অধিক একশত টাকা পর্যন্তের  
শ্রী জীলোক হইবে। ইহাতে পতকরা  
ক টাকার দ্বিগুণে বঁটা লাগিবে। এই  
৩০ দিবার জন্য বদলে সর্বশত ৫৫টি  
কামি হইবে। ইহা দ্বারা সর্বসাধারণের ক-  
ত ও বনিকদিগের সুবিধা করা হইল।

আমরা কিম্বদন্তি পূর্বে প্রবণ করিয়া  
উল্লিখিত হানাপুরের সেনাপতি ব্রিগেডিয়ার  
শী কোন জীলোককে অপমান করাতে তাঁ-  
কে পদত্যাগ করিতে হইয়াছে। ইংলিস  
আর তাঁহার বিস্তারিত বৃত্তান্ত প্রকাশ করি-  
য়াছেন। হুন্সি ব্রিগেডিয়ারের সহিত তত্ত্বা-  
গত উইলসন নামের জীল বিশেষ প্রণয় হি-  
। এমন কি ব্রিগেডিয়ার সর্বদা তাঁহার বাসি  
ত অবস্থিতি করিতেন ও তাঁহাকে নানা  
প্রকার উপচৌকন দিতেন। বিবিও নিজ বা-  
সি সহিত গমন না করিয়া ব্রিগেডিয়ারের  
কটে তুণ করিতেন। একদা কর্নেল হান-  
সলিও গমন করাতে বিবি অতি হুন্সি বৃত্ত  
বিধান করিয়া এক নাট্য শালায় আগমন  
করেন। তাঁহার বক্ষস্থল দেখা নিয়মে আত্ম  
বাঁকাতে ব্রিগেডিয়ার তাঁহাকে নিলক্ক ব-  
লেন। পর দিবস ব্রিগেডিয়ার বিবি নিকটে  
কথা প্রার্থনা করেন। বিবি সেইপরের উত্তর  
প্রাপ্তি লিখেন যে তিনি তাঁহার উপরে কুপিত  
নহই। কিন্তু একজন যুবক আকিসর তা-  
বিত্ত হইয়া ব্রিগেডিয়ারের "ব কর্ণে-  
ল নিকটে প্রেরণ করেন। কর্নেল এখান  
প্রাপ্তির নিকটে তাহা প্রেরণ করাতে সর  
কি রোজ ব্রিগেডিয়ারকে গম্ভ্যত করিয়া-  
ল। ব্রিগেডিয়ার কেবলকের ডিউকের নি-  
কটে প্রেরণ করিয়াছেন। সেনাবলে প্রত্য-  
কাল আকিসর কটে হইতেছে। সে দি-

বস সিবল পর্বত একজন আকিসর "তু-  
কমে, একটি জীলোকের হুন্সি করাতে  
জীলোকের দ্বারা তাহা প্রমান সেনাপতিকে  
জানাইরা হিলেন। এসকল দুর্ভাবহার সেনা-  
দলের সন্তোষ আকিসর দিগের মধ্যে হুঁই হ-  
ওয়া হুন্সির বিবর।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন সন্তোষি ত-  
খার একটি হুন্সি জলন্ত হইয়াছিল। এখা-  
নে করদিন বহিয়া একটি পুন্সি হুঁইতেছে।

কেও অব ইতিয়া হানদরাবানের নবাব  
কে হাকিয়া মহারাজ হোলকারকে খরিয়াছে-  
ন। বড় ত ল, বেন সকলেই জানিতে পারেন  
কেও আমাদিগের কেমন কেও।

উক্ত পত্র বলেন "লুনা টুপান" ও "তা-  
রতবীর" তাঁতিদিগের আর উঠাইবার তিনটি  
উৎসর্গ উপায় আছে। ইংলণ্ডীয় মূলধন জু-  
ল। পরিষ্কৃত করিবার কু ও কাট্টাকট আইন  
আমরা আর একটি উপায় বুলি, সেটি ইহা  
অপেক্ষা উৎসর্গ, ভারতবর্ষীয়দিগকে পেট  
ভাতার খাটাইয়া লইব র চেঁ।

উক্ত পত্র আরও বলেন কেও অব ইতি  
য়ার সম্প্রদায়ের পরিবর্ত হইবে বলিয়া বে  
কথা উঠিয়াছে তাহা অলোক। সত্যসত্তা সত্য  
হর অনেকের ইচ্ছা।

অ.মরা রারটস কেও একটি প্রস্তাব মে-  
খিয়া অতিশয় সুখিত হইল। একটি জী-  
লোক তাঁহার কুলীন দ্বাধীকে লিখিয়াছেন ব-  
দি তিনি তাঁহার নিকটে না আইসেন তাহা  
হইলে তিনি (জীলোক) অন্য এক যুবকের  
সহিত প্রণয় করিবেন। এই কি শিকার কল ?  
তাহা হইলে জীলিকা বহু করিয়া দেওয়াই  
কর্তব্য। সম্প্রদায়ের প্রতি আমাদিগের বক্ত-  
ব্য এই, সুখিত কৌলীনা প্রথা উঠিয়া বায়,  
আমাদিগের একান্ত ইচ্ছা, কিন্তু এই কল অ-  
সং বিবরকে আদর্শ করিয়া সেই চেঁ। করা  
যে কতকগুলি অন্যান্য তাহা সম্প্রদায় আপনায়  
লিখিত প্রস্তাবনী পুনরায় পাঠ করিয়া এক  
বার শিরিচিতে বিবেচনা করিয়া দেখিবেন।

১৫ই তার শুক্রবার।

লর্ডোব্রিড ১৮ পণ্ডিত ইয়েণ্ডলর অবারো-  
হি দলের একজন দলদার বাহাতে সেনাবি-  
দের অসন্তোষ জন্মে একশতকরা কহাতে

তাঁহার দুই বৎসর বিদায় হইয়াছে। অর্থাৎ  
ভারতীয় ব্যক্তিদিগের ভারতীয় সত্ববিধান  
নাই উচিত।

রাজ্যকর্মী হুন্সি সম্প্রদায়ের নামে অক-  
ল্পপন্নানকারী বলিয়া মালিশ হইয়াছে  
এক জন হুন্সি পূর্ণ তেগুটি মালিশে টে ও ব-  
রেক জন বারিষ্টার অর্থাৎ হইয়াছেন। কলিক-  
তার বাতাস রাজ্যকর্মী গিয়াছে।

কোচিন কুরিয়ার বলেন জিবাঙ্করে এ-  
দিন জীভলাস রাখিবার প্রথা ছিল। তদন্ত  
রাজ্য সম্প্রতি তাহা উঠাইয়া দিয়াছেন।  
ত দালের একে বিদ্যানিকা করিয়া আ-  
ন আপন অবস্থার উন্নতি সাধন করিতেছে  
অনেকে খুঁজি খুঁজি অবলম্বন করিয়াছে  
প্রিঙ্কলের রাজ্য অনেক দিনেরই উন্নয়ন  
বহার সর্বদা শুনা বাইতেছে।

সর বাটল কিয়ার প্রজাপ্রদায় সর্বিশে  
চেঁ।বান্ হইয়াছেন। বোম্বাই গেজেটে কি-  
দিবস পূর্বে তাতিওয়ারের রেসিডেন্ট মে-  
বারের বিরুদ্ধে একটি প্রস্তাব লিখিত হওয়া  
তে তিনি তৎক্ষণাৎ রেসিডেন্টকে পদচ্য-  
করেন। আবার সার্ভে বিবিউ প্রকৃতি বা-  
র সহায়তা করাতে শাসনকর্তা তাঁহাকে হু-  
ন পদে প্রতিষ্ঠিত করিতে সম্মত হইয়াছেন  
একপে কাজ করিয়া সর বাটল কিয়ার শে-  
বেন দুই কুল হারান না।

বেকার নামক ব্যক্তি এক জন নীলকরে  
টাকা চুরি করে, তাহার সেনিগনে দুই বৎস-  
বিদায় হইয়াছে।

বিবিফিই জরাল্ড আপন বেহারার  
যে এই বলিয়া মালিশ করেন যে সে রা-  
মোগে তাঁহার গৃহস্থে প্রবেশ করিয়া তাঁ-  
সতীন্দ্র নামের চর্চা পায়। উক্ত বেহারার  
রি বাস দিয়া হইয়াছে।

১৫ই তার শনিবার।

বনিক সম্প্রদায় সেও সাহেবকে অতিশয়  
ন পত্র প্রদান করিবার যে সম্প্রদায় করিয়া  
লেন তাহা হইতে কান্ত হইয়াছেন। গ-  
কল্য এক টেলিগ্রাম আসিয়াছে "সেও স-  
হেব ও সর্চারল্‌স উত্তর পরম্পর সত্য হ-  
য়াছে। সেও সাহেব ভারতবর্ষে প্রত্যাগ-  
করিতেছেন। ৮, এ সত্যসত্তা সত্য হর, আম-  
দিগের বাহাদীর।

কিনিসল অধঃ কলিকাতায় বসে শ্রমিক  
শ্রমিক প্রদানকৃত বিচারালয়ে প্রবেশ করি-  
ল এক জন বাঙালি অধিকতর যেখানে গমন  
করেন উকীল হইবেন।

উক্ত পত্র বসেন কুটামের লৌকিক ইংল  
শ্রমিক প্রদানকৃত উপর সর্বসা অত্যাচার  
করে, গবর্ণমেন্টে পরিবারের অধিকার  
কি-  
মিত্তি তত্ত্বা দীকার নিকটে এক জন  
পত্র প্রেরণ করিবেন সক্ষম করিয়াছেন।

ঐরাবতপুরের ইটরোপীয় রৌপ্য মাটির  
সঙ্গ্রহণ হইয়াছে। বিচারপতি মর্গান  
সিও কোন আত্মা দেন নাই। উক্ত রৌপ্য  
মাটির রক্ষার কার্য করায় বে কোন উল্লেখ  
হইতেছে না।

নিম্নলিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে।

|                   |            |
|-------------------|------------|
| ১ টাকার সিকা      | ১১/০—১১৫   |
| ২ টাকার কোম্পানির | ১০৫—১০৮/০  |
| ৩ টাকার           | ১০৮/০—১০৯৫ |
| ৪ টাকার           | ১১১৫—১১২   |

### ইউরোপীয় সভাচার।

ভিন্ন ভিন্ন সংবাদ পত্র হইতে উক্ত।  
সংগঠন ৪ঠা আগষ্ট। মহাসভার কার্য। যথ্য হই-  
য়াছে। ইংলণ্ডের বস্তুতঃ বিদেশীয় গব-  
র্ণমেন্টের সহিত সম্মত সংস্থাপনের আভিপ্রায়  
এই সংস্থাপনের গুরুত্বজন্য আক্ষেপ প্র-  
কাশ করা হইয়াছে।

মাল ৪ঠা আগষ্ট। গারিবল্ডি ৩১ এ  
লোটে পাল্লা মেরা ত্যাগ করিয়া কামলকোনে গ-  
মন করিব চেন। তথায় অনেক সেমা সংস্থাপিত  
হইতেছে।

পারিস ৫ই আগষ্ট। মন্টিনিগ্রো বালীরা  
গবর্ণমেন্টের যুদ্ধ আনত করিয়া আর ৫০০ তুরসকে  
করিয়াছে। সর্ব-রাত্ত্রি বিক্রো হইয়াছে।

৬ই আগষ্টের সকলে শান্তি হইয়াছেন।  
ইটালির রাজ্য এক ঘোষণা প্রকাশ করিয়া।  
হাঃ দেশে গুরুত্বপূর্ণ ঘটনা চেষ্টা আর  
প্রদানকৃত করিয়াছেন।

পারিস ৬ই আগষ্ট। স্পোবেস ও রেক-  
লিভ বস্তু প্রদানকৃত হইতেছে। গারিবল্ডি  
সংস্থাপনের বস্তুতঃ তিনি গবর্ণমেন্টের ক-  
র্য্যসম্পন্ন কার্য করিবেন না।

লন্ডন ৬ঠা আগষ্ট। অ্যামেরিকার উত্তর বি-  
ভাগে কাল কপে সেমা সংস্থাপিত হইতেছে না।  
ফলেক পানান সেমাপতি হইয়াছেন সত্য-  
পতি বিক্রো মগের দাদিগণকে মুক্ত ও তা-  
দ্বিত্বের সক্ষমতা বীলম করিবার বিলে দাক-  
করিয়াছেন। পাশ্চাত্য অ্যামেরিকান প্রতিম-  
তা উহা প্রতিবাদ করিয়াছেন। উক্ত বি-  
ভাগের লোকেরা একশত ত্রয়োবিশ হইতে-  
ছেন। বিক্রো পশ্চিমদেশে ক্রী হইয়াছে  
এবং ডাঙারিগের সেমাপতি জাকসন হারপার  
করিতে অগ্রসর হইতেছেন।

গারিবল্ডি বালীরা গবর্ণমেন্টের  
হইতে করিয়াছেন। তিনি কোথায় ঘাইয়ে  
ভাষার বিরুদ্ধাচা। ইটালির রাজ্য উত্তর  
কার্য নিয়ন্ত্রিত করিয়া উহাকে সমস্ত করি-  
বার ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন। কনস্টান্টিনো-  
লের সীমার নিকটে অনেক সেমা আনিয়াছেন।

সিল্লার মুঠ প্রাপ্ত টাকা ১ লা সেপ্টেম্বর  
ভারতবর্ষীয় আকিসে বিতরণ করা হইবে।

একজন জনপ্রতি অতিথার গবর্ণমেন্টে রোন  
রক্ষা করিবার জন্য প্রস্তুত হইতেছেন কিন্তু স-  
কলে ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন।

ইংলণ্ডের শীঘ্র গোষ্ঠার গুরুত্ব ভাবে গমন  
করিবেন।

মেনলস ৪ঠা আগষ্ট। ইটালির রাজ্য  
ঘোষণা করিয়াছেন আনত পূর্বক প্রকাশ করি-  
য়াছেন। ইটালির ও কনস্টান্টিনোলের  
সহিত মিলিত হইয়া ইংল্যান্ড রণতর দল  
কার্য করিবার আত্মা পাইয়াছে।

৬০০.০০ বিক্রো জেমস নদীর নিকটে আ-  
নিয়াছে। গবর্ণমেন্টের সেমা। সক্ষম পরা-  
জিত হইতেছে।

### গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালকালোপোয় সেপ্টেমেন্টে গবর্ণমেন্টের  
আদেশপ্রসারী নিয়োগ।

১৮ই আগষ্ট — নিম্নলিখিত নিয়োগের নিমিত্ত  
লিখিত কর্তৃত্বের উক্ত পত্র প্রাপ্ত হইয়া-  
ছেন —

জলেশ্বরের নিম্নলিখিত সাক্ষরী অপরি-  
শেষ আনত নিয়োগের সাধে পক্ষ প্রেরিত  
বাকরণের নিম্নলিখিত সাক্ষরী অপরিশেষ আনত  
ভিলারিগের বস্তু প্রেরিত।

সাক্ষরদের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কা-  
মেটর জে. সি. মাকলিন্দ সাধে উক্ত সেলার  
মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

১৯ই আগষ্ট — এক, এড. এ. লিচ সাধে  
বেতিকাল কালোতর আপদকারী হইয়াছেন।

২০ই আগষ্ট — বাঃ ডাঃ কান্ত বিদ্যাসাগর  
বেলাবেব প্রতিনিধি প্রদান সমস্ত আমীন হই-  
য়াছেন।

এল. ডবলিউ. পুচিন্দন সাধে বাকরণ-  
ের প্রতিনিধি প্রদান সমস্ত আমীন হইয়া-  
য়াছেন।

২১ই আগষ্ট — গুঃ বাসাকরণ আচার্য  
কেন্দ্রের সাধা চিকিৎসালয়ের ভার প্রাপ্ত  
হইবেন।

সেপ্টেমেন্টে গবর্ণমেন্টের প্রতিনিধি পাট্রেন্ট  
সেক্রেটারি মেজর জেমস পাট্রেন্ট সেক্রেটারি  
হইবেন।

২২ই আগষ্ট — সাক্ষরদের অধিকারিক মা-  
জিষ্ট্রেট বেবরেও ই. ডবলিউ. সিংস কোমদা-  
রি আইনের ২২ ধারানুসারে প্রথম জের  
অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

১০ই আগষ্ট কসায় ও অগ্রহীতা পক্ষের ক-  
মিসনরের সহকারী জে. বি. সাক্ষর পক্ষ

জেরি হইতে উক্ত পত্র পাইয়া। উক্ত পত্র  
হইবে।

২০ই আগষ্ট — বালোহের অধিকারিক  
সের ইলেক বাঃ বিদ্যুৎকৃত প্রদানকৃত  
দেশীয় ব্যবস্থাপক সভার ১৮-৬২ অধিকার  
সের ১৬ ধারা ও ১৮-৬৩ অধিকার ১০ আইন  
জানারে সক্ষমতার নালীম লইতে পারিবেন।

২১ই আগষ্ট জে. এক, ডবলিউ. ও সাক্ষর  
সাধে সাক্ষরদের অধিকারিক মাজিষ্ট্রেট  
কোমদারি আইনের ২২ ধারা ও ১৮-৬২ অধিকার  
১০ আইনের ১ ধারানুসারে ক্ষমতা পাইবেন।

২৩ই আগষ্ট — কপেন-এ, কুপিন্দন  
দ্বিতীয় জেরি জে. পুচিন্দন সাধে বাকরণ  
হইবে।

সৈয়দজম হোসেন ১৮-৬০ অধিকার ২৩ আইন  
ন অনুসারে ডাকার আলেক্স ও কপুটি কাল  
উর হইবেন।

### প্রেরিত।

সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহোদয়ের।

কোন সুবিধায় প্রকার করিয়াছেন “এক  
কপে এতদেশীয় এতলিত প্রকা সহকার পরি-  
কৃত হইবার উপক্রম হইতেছে। অতঃপ-  
হাতে সুবিধার পরিবর্তে সুবিধা সংস্থাপিত  
নাম, সে বিবরে সকলেরই সম্পূর্ণ সাক্ষর  
চিত্ত। আমাদের মধ্যে অনেকের  
কার্য করিয়াছেন আনত সমস্ত  
করিয়া অন্য আভি বাবহার অ-  
প্রস্তুত হই।” এধমকার কালে  
হাঃের সুবন্ধনের এই কথা সধ  
হইলে ভাষার। আমাদের মধ্যে  
গুলি চিত্তাগত সুবিধা দেখিতে  
সমস্ত প্রকা সুবিধার অন্য  
হিত হইতে হয় না। ভাষার কার্য  
বস্তু অনেক কাল পূর্বেই প্রকাশ  
উল্লেখিত হইতেছে। এত ও সমস্ত, এত  
ও ভক্তি, দয়া ও দাক্ষিণ্য প্রভৃতির কার্যকে  
এখানে মানব মনের অনেক পরিমিত প্রকাশ  
করিয়াছেন। একই আমরা দেখিতে পাই, আ-  
ভিগীর প্রকা রক্ষা অল্প আভিগীর, নৈ-  
মিক পিতৃকৃত অতিমারক প্রকা, এবং জাম  
কৃত প্রকা জামাই বর্ষীর আনত বিকা  
এখানে প্রকাশিত আছে। এসকল আলোচ  
করিয়া প্রকৃত হয় যে উপর্যুক্ত সুবিধা সকলে  
প্রচাৰকের। কেমন অদেশীয় মানব প্রকৃতি  
প্রকাশত। অবধানে সমস্ত হইয়াছিলেন  
ইতিহাস রিক্রম বৈদিক কি এক থানা বাজ  
সংস্থাপিত হইতে দেবেব বাবু নবপ্রকাশ  
কৃত বিজ্ঞ পিতৃপ্রকাশের বিপক্ষ কোন অধম  
সেধকের প্রকা অধুনা করিয়া অধিক প-  
প্রকটন করিয়াছেন। ভাষাতে বোধ হয় তিনি  
ভাষার মধ্যে বিশেষ অধুনা করেন  
ক্ষমতা পিতৃ ভক্তি প্রকাশে যে কি দোষ আ-  
আনিয়া। লিখিত করিতে পরিমিত না।





॥ भवर्त्ततां प्रकृतिवित्तप्य पार्थिवः सरस्वती मुक्तिमहती न जीयतां

मासिक शुल्क ५ रु. का  
वार्षिक मासिक ५० रु. का

উকীলদিগের যে গুণসম্বাদে  
তাহ বিষয় আমরা উপরে উল্লেখ করিয়া  
এ দেশের উকীলদিগের তাহা আছে  
না। সত্য কথা বলিতে কি কতিপয় ব্যক্তি  
ব্যতিরেকে এদেশের উকীলদিগের উপা  
সাধু বলিয়া আমরা দিগের তত্ত্ব মাই  
কীলের কাছে যাওয়া। আমরা দিগের পক্ষে  
রোগীর বিষ ভোজনের ব্যয় হইয়াছে  
কি জন্য লোকে তাহা দিগের প্রতিষ্ঠা  
অঙ্ক। সম্পন্ন নহেন ইহা কি ব্যবসায়  
দোষ ; না স্বভাবগত কোন দোষ আছে  
ব্যবসায়ের অথবা স্বভাবের দোষ হই  
ইহা দেশের উকীলেরাও সচরিত্র বলিয়া  
প্রতিষ্ঠা হইতে নাই। একটা বিশেষ নিয়ম  
দোষেই একপ ঘটিয়াছে। সে দোষ এ  
এ দেশের উকীলদিগের নকদমার



## মোমপ্রকাশ !

বাদালতে বক্তৃতা করিয়া অর্ধি একা  
রূপক সমর্থন এই উত্তর দাখ্য করিয়া  
কেন। ইংলণ্ডে বক্তৃতা শুধু লোক আ  
ছেন। আটবার মকদ্দমার কোর্ট ও বা  
রীকরের। বিচার কালে অর্ধি একাধিক  
পক্ষ সমর্থন করেন। এই কারণেই বারি  
উন্নতিগের চরিত্র দোষ খতিয়ার সত্যতা  
অপ।

বিশেষতঃ টেম্পলবারের আর একটি  
উন্নতিগের আছে। যে বারিউর ব্যবসায়  
স্বত্ব হইত অথবা সমাজ স্বত্ব হইত,  
এ মীমাংসার কাজ করেন, তাঁহাকে  
ইংলণ্ডে বারিউর খেঁচি হইতে বহি  
করা হইত। সস্ত্রিতি এতুইন  
জেনারেলিটি দোষ স্পষ্ট হওয়াতে  
ইংলণ্ডের বিচারালয় ত্যাগ করি  
রাহে। বারিউরদিগকে মকদ্দমার  
করিতে হয় না বলিয়াই লাড  
জেনারেলিটি, সর টমাস ডেনমার, লাড  
জেনারেলিটি, ও আড  
ম বিংশ শতাব্দীতে এবং  
লাড কোক এতুইতি বারি  
বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়া

শর উকীলদিগের অসচ্চরিত্রতা  
র একটি প্রধান কারণ আছে। আ  
দালতে যত উকীল দেখিতে  
হানিগের অধিকাংশই ভাল লেখা  
নো, কেবল আইন পরীক্ষা  
উকীল হইয়াছেন। সুতরাং তাঁহা  
র অধীনত দৃঢ়তর ভক্তি থাকা  
হইবে। আদালতে যখন প্রদত্ত  
যে প্রচুর্ডাব দৃঢ় হয়, উনি  
অসচ্চরিত্র উকীল ও মোক্তারের  
অসচ্চরিত্র প্রধান কারণ।। সে কালের  
কালেই মুখ। দৃঢ়ত, তাঁহাদিগের  
কিয়া ও ব্যবসায়; সাক্ষিদিগকে  
করা তালিমী করা গুণপনা এবং  
সাক্ষিদিগের এবং নির্ভর্য ও

ধনী মক্কেল পাইলে নানা হল কৌ  
শল ও তর প্রদর্শন দ্বারা তাহার অর্থ  
দোহন করা তাহাদিগের গৌরব। এই  
মহামতিবাহি আদালত মাপুরুষদিগের  
উপার্জন দ্বারা। সত্য বটে মধ্য মধ্য  
এক জন মধ্য মোক্তারও দেখিতে  
পাওয়া যায়। কিন্তু তাঁহারা মক্কেলদিগের  
মধ্য দ্বিত্ব ছই একখানি কুট ভূমির ন্যায়।  
তাহারা বালুকাময় প্রান্তরের তরুর  
তারই অধিকতর বৃদ্ধি হয়। ফলতঃ অল্প  
উকীল ও মোক্তারদিগের দোষে আমাদি  
গের দেশের মহত্তর অনিষ্ট ঘটিতেছে।  
ইহারা কিঞ্চিৎ স্বার্থের লোভে স্বলব্ধ অর্থ  
লে আত্মতা হানার ন্যায় লোকের মকদ্দমা  
প্রবৃত্তি সঞ্চারিত করিয়া দেয়। কখন কখন  
সুনিতে পাওয়া যায়, উজ্জ্বল ধূর্তেরা  
বাদী ও প্রতিবাদী উভয়ের নিকট হইতেই  
অর্থ সংগ্রহ করিয়া থাকে। এ অনিষ্টের  
নিবারণ না হইলে দেশোদ্ধার নাই।

একণে এতদ্বিবারের উপায় নিচ্ছে  
নিত হইতেছে। ইংলণ্ডের টেম্পল বারের  
ন্যায় উকীলদিগের একটি সভা করা এবং  
উহাদিগের কেবল আইনজ্ঞতার পরীক্ষা  
না হইয়া বাহ্যে বিদ্যা বুদ্ধি ও সচ্চরিত্র  
তাদি জানিতে পারা যায় একপ পরীক্ষা  
প্রণেয় নিয়ম করা হউক। এই সভায়  
বিচার হইয়া তাহাদিগের চরিত্র দোষ প্রমা  
ন হইবে, তাহারা বহিষ্কৃত হইবেন। উকী  
লদিগের একটি স্বতন্ত্র সম্প্রদায় এবং মক  
দ্দমা গুচাইয়া দিবার নিমিত্ত অটর্নীদিগের  
একটি স্বতন্ত্র সম্প্রদায় হউক। পাঠসংগণ।  
একপ বিবেচনা করিবেন না যে আটবার  
দ্বারা মকদ্দমা সাজাইয়া দিতে থাকিবেন  
না, একথা বলা আমাদিগের অতিপ্রত।  
নিখা ও প্রবক্তার অনুসার কেওয়া তাঁ  
হাদিগের ও একটি প্রধান কর্তব্য কর্ম  
হইবে। যখনই মকদ্দমার বিচারালয় চইতে  
যত মোক্তারেরা আস্ত দুর করা আবশ্য  
ক। তাহারা দ্বিতীয় প্রেণির ওকালতি পাবী

কর উকীল হইবেন, তাঁহারা তিন আ  
কেই মোক্তারি করিতে পারিবেন না।  
উকীলদিগের ন্যায় কোন মোক্তারের  
কমা বিদিত হইলে তাঁহাকেও ওকালতি  
দানত হইতে বহিষ্কৃত করিতে হইবে।  
আর একটি বিষয় এসব না করি  
এ প্রস্তাব উপ সংহার করা বিধেয় হই  
ছে না। কিঞ্চিৎ অধিক বেতনে সচ্চরিত্র  
লোক নিয়োজিত করিয়া আমলাগণের উ  
কোচ একণ রূপ না করিলে আদালতে  
সম্পূর্ণ কলিক সংশোধিত হইবে না।  
বৎসরের মধ্যে আমরা অনেক গুলি মহা  
পরিবর্তন করিলাম, কিন্তু উকীল  
বিষয়টি যে আজিও অপরিবর্তিত রহি  
ছে, তাহাতে কেবল যে দেশের দুর্নাম  
অনিষ্ট হইতেছে একপ নহে উহা এদেশের  
র ঐতিহ্য একটি প্রধান অস্ত্রায় বলি  
পরিগণিত হইতেছে।

নীল প্রবন্ধ প্রদেয়।

এদেশীয়েরা এখন কি করিতেছেন  
হিন্দু পেট্রিষ্টের নীলপ্রধান প্রদেয়  
সংবাদদাতা কোথায় গেলেন - এ সম  
এ জাদিগের বক্তৃতা কোথায় আছেন  
হাদিগের যে কোন উচ্চ বাচা সুনিতে  
ওয়া যাইতেছে না। তাঁহারা কি তাবি  
ছেন, নীলঘটিত গোলযোগের শেষ হই  
ছে? প্রত্যারা কি অত্যাচারের হস্ত হই  
বৃত্ত হইয়াছে? যাঁহারা একপ দ্বির ক  
রা নিশ্চিন্ত আছেন, তাঁহারা ভ্রম পতি  
হইয়াছেন বন্দেহ নাই। পুনর্বার সকলে  
বক্তৃতার হওয়া সর্ব্বব্য। অত্যাচারের  
মধ্য বৃদ্ধি হইতেছে।

এক জন মোমপ্রকাশ গ্রাহক পাব  
হইতে লিখিয়াছেন, "এদেশের নী  
করদিগের সচ্চরিত্র প্রমাণের বিব  
ব মীমাংসা হয় নাই, এখনও সম  
সময়ে বিবাদ বিসম্বাদ খুল ভাষ্যের ল  
পাওয়া গিয়া থাকে, সস্ত্রিতি তাহা

কুটির সাহেবের ন্যায় জীবনযাপনের  
 বাব ফাইল কর্তৃপক্ষের ন্যায় এক জন  
 ১০ আর এক জন.

সামর্যকালে খুলা বিতে দিল্লি হওয়ার  
 আমরা পত্র দ্বারা এই বিষয়টি জানে গোচর  
 করি। তাহাতে তিনি বিরক্ত করিয়া, আমা  
 দিগের নিকটে এই বিলয়ের এই কারণ সি  
 বিয়াছেন, তিনি এক মীল কুঠিতে (আ  
 য়া আপাততঃ পত্র প্রেরিত ও মীল কু  
 টির নাম প্রকাশ করিলাম না, তাহার কার  
 এই এবিষয়ে তাঁহার মত লওয়া হয়  
 রাই) কর্তৃক করিতে। তাঁহার  
 মা ও প্রজা আছে। তাঁহার প্রজারা  
 মীল বপন করে মাই বলিয়া কুটির কর্তৃক  
 সাজেব তাঁহার নামে মাদা প্রকার  
 মধ্য নালিশ করিয়া তাঁহাকে বৎপরে  
 প্তি কটে দেন। তাঁহার কারাবাস দুর্দশা  
 হইয়াছে। তিনি রাজসাহির সঙ্গে  
 নিকটে আপীল করিয়া কোন কোন বি  
 য়ে বিদ্ভুতি লাভ করিয়াছেন বটে, কিন্তু  
 পূর্ণ হলে তাঁহার আপদের শাস্তি হয়  
 াই। নিজ পত্রের শেষে তিনি লিখিয়াছেন  
 মীলদ পত্রের বর্ণনায় যদি কোন মহাক্ষার  
 ক্ষেত্র থাকে, তবে বারেক এ প্রদেশে আগ  
 ন করিয়া মীলকরের অভ্যাস ও বিচার  
 গালী ও অশ্রদের অবস্থা কখনকাল অবলো  
 ন করিলেই বর্ণিত পুস্তকের একটি কথা  
 তিও অবিশ্বাস করিবার অধুনা কারণ  
 ক্রিবে না। ১০ এই সকল দেখিয়া শুনিয়া  
 বোধ হয়, রাজ পুরুষের ইউরোপীয়ে  
 এদেশের জীবন করিতে অথবা এবে  
 সহ্য করিতে আসিয়াছেন। মীলকরে  
 এখন আবার জাকসন সাহেবের সহা  
 তা প্রাপ্ত হইয়াছেন।

জাকসন সাহেব আইনের সম্পূর্ণ বিপ  
 তরাজী হইয়া প্রজাদিগের কর হুকি  
 রিতেছেন। ১৮৪৯ অব্দে ১০ আইন  
 নুসারে কর হুকির বিজ্ঞাপন পূর্বে দেওয়া  
 সেই বিজ্ঞাপন দে দেওয়া হইয়াছে

জাকসন সাহেব  
 আইন ১০। কিছুই করেন  
 রাই। একদে তাঁহাদিগের কথার উপরে  
 নির্ভর করিয়াই জাকসন সাহেব কর হুকির  
 আদেশ দিতেছেন। ডেপুটি কালেক্টে  
 জাকসন সাহেব হইয়াছেন। প্রজারা সকলে  
 প্রধানতম বিচারালয়ে আপীল করিয়াছে,  
 একদে সর বার্নেস পিকক যাহা করেন।  
 কিন্তু প্রজারা সর্বস্বত্ব হইল। বাঁহারা তা  
 হাদিগকে দৈনিক অমজীবি করিবার ইচ্ছা  
 করেন, তাঁহাদিগের মনোরথ পূর্ণ হইবার  
 বিলম্ব সম্ভাবনা হইয়াছে। আমাদিগের  
 আরো আত্মত্বিক হৃদয়ের হইতেছে, যে বন  
 দেশীয় গবর্নমেন্ট এবিষয়ে উদাসীন রহি  
 য়াছেন। মুক্তন লেপটনর্ট গবর্নমেন্ট  
 বিলের প্রস্তাব করিয়া যেমন জীবনিকারী  
 বলের অনুরাগ লাভ চেষ্ঠা করিয়াছিলেন,  
 প্রজাদিগকে মীলকর মুখে সমর্পণ করিয়া  
 কি সেইরূপ অনুরাগ লাভের চেষ্ঠা আ  
 ছেন? যদি তাঁহার সেই অতিসন্ধি হয়,  
 তাহা চরিতসন্ধি সন্দেহ নাই। প্রজাকে  
 উৎসন্ন করিয়া কোন রাজা অথবা রাজ  
 প্রতিনিধি কখন প্রতিষ্ঠা তাঁজম করেন  
 নাই। বার্ষিক ইতিহাস এবিষয়ে সাক্ষ্য  
 প্রদান করিতেছে। লাভ কানিত তারত  
 ভূমিকে নির্দোষ শোণিত দ্বারা প্রাবিত ক  
 রিয়া জীবনিকারীদিগের সম্বোধ সাধন  
 চেষ্ঠা না করিয়া প্রজা ব্রহ্ম করিয়াছিলে  
 ন, তাহাতে তিনি প্রতিষ্ঠা তাঁজম কি অপ্রতি  
 ঠা তাঁজম হইয়াছিলেন, সেই জীবনিকারী  
 রাই কি শেষে সেই লাভ কানিতের প্রত্যাশা  
 গানে উল্লুপ্ত হন নাই? কোন জীবনিকারী  
 কি প্রান্ত সাহেবের নায়পরতার অপলা  
 পে সাহসী হইতে পারেন? জাকসন সা  
 হেব সে কুখ্যাত করিয়াছেন তাহা ন্যায়  
 সিদ্ধ কি না বঙ্গদেশীয় গবর্নমেন্ট আত  
 বোকেট জেনরলের মত লইয়া অনায়াসে  
 দ্বিগ করিতে পারেন।

পরিশেষে বঙ্গদেশীয় গবর্নমেন্টকে

আর একটি কথা লিখিলাম  
 প্রজাদের উপলক্ষ্যে  
 হে না? জাকসন ও কালেক্টর সাহেবের  
 রিপোর্টের কি হইল? তাহা কি  
 মতো থাকিয়া কীট বিদ্ভুতি  
 তাহা কি জন্ম আনিও প্রকাশিত হইতে  
 না? বীজম সাহেব কি তবে কলেক্টর  
 চকে খুলি মুক্তি নিবেদন করিয়া সকলকে  
 ডুলাইয়া রাখিবেন? আমরা কি প্রজাদি  
 গের কটের বিদ্যর বিদ্ভুত হইয়াছি  
 আমরা এত দিন জীবনিকারীদিগের  
 প্রকাশিত হইবে? কিন্তু কে তাহা হইল  
 না। যদি আর কিছু কাল না হয়, বঙ্গদেশ  
 একতাক হইয়া সেই রিপোর্ট প্রকাশিত  
 আবশ্যক।

হাজরামা

মুন্সামাডাই আর বার্ষিক ১। বার্ষিক  
 রতা বর্জমান সত্যতা ও সাংসারিক ব্যপা  
 রের একটি প্রধান অনুচর। এই বৈষয়িক  
 বাৎসরিক ব্যক্তিকে বর্ণন করিলাম আশা  
 গের বিদ্যর সঙ্গে না। সচরাচর প্রজা  
 ব্যক্তিকেই বার্ষিকসাধনাৎ তির তির  
 অবলম্বন করিতে দেখা যায়। কিন্তু বন  
 সেই সেই ব্যক্তির সেই সেই বার্ষিক  
 দ্বারা পরের অনিষ্ট সাধিত না হয়, তাহা  
 কেহ তাহার প্রতিবাদ করে না? কিন্তু বন  
 ন বার্ষিকতা সর্বসাধারণের অনিষ্ট  
 হেতু হইয়া উঠে; বন বার্ষিক ব্যক্তি  
 আপন অতীত সাধনাৎ নির্দেশ ও মিত্র  
 হ ব্যক্তিকে উৎসন্ন করিবার চেষ্ঠা পায়  
 বন সেই চেষ্ঠা সাধারণের হিত সাধন  
 দেশের গৌরব বর্ধন ও সমিতির অবলম্বন  
 হল করিয়া করা হয়, তখনই বাৎসরিক  
 একতাক দুগুণ হইয়া থাকে, তখনই তন  
 লোক সাধারণই তাহার প্রতিবাদ করা  
 র্জব্য। কর্তৃক সাধনাৎ কর্তৃক জন আত  
 তরির একটি বাৎসরিক বন চেষ্ঠা বর্ণন  
 করিয়া আমাদিগের অধ্যক্ষের অধ্য



আছে। ইহা নিগের ইচ্ছা এই, রাবায়ের সমুদায় রাজ্য শ্রীমুক্ত হইবে, বই তাঁহারিগের রাজ্য লইয়া শ্রীমুক্তি। নামধারিদিগকে বিভাগ করিয়া দেওয়া হয়। ভারতবর্ষের শ্রীমুক্তি এই শক্তি ইহা নিগের সবিশেষ সহায়তা করিতেছে।

পাঠকগণের শ্রবণ থাকিতে পারে যে ও অব ইতিয়া করেক মাস অবধি হায়দরাবাদের কর্ণেল ডেবিডসনের চরিত্রের প্রতি বোমারোপ করিয়া আসিতেছিলেন, তিনি উপরিহু কর্তৃপক্ষের কোপোদ্দীপন করিবার চেষ্টার জট করেন মাই। তিনি বলেন, তৎকালে মর্যাদা সূতন সমান চিত্র বসি করিয়া লইয়াছেন; এবং কর্ণেল ডেবিডসন ভূতলে উপবিষ্ট হইয়া ইংরাজ জাতির অবমাননা করিয়াছেন। যদিও কর্ণেল ডেবিডসনের স্বপূর্ণ এবং তিনি নিজে ভূতুকালে স্পষ্টাঙ্করে কহিয়াছেন, এ সকল মিথ্যা কথা, তথাপি উক্ত মহান তিরা বিরত হন মাই। জুনিয়স তদানীন্তন প্রধান সেনাপতি লাড গ্রাণবিলকে প্রথমতঃ হুগালি দেন, শেষে তাঁহার হৃদয় পরীক্ষা নিৰ্দ্ধার বলিয়া জানিতে পারেন,

তাঁহার অতিশয় পরিচাপ হয়, কিন্তু গোমারিগের শ্রীমুক্তিকারিদলের সে স্বভাব নহে। যে কারণে শ্রীমুক্তিকারিরা কর্ণেল ডেবিডসনের ও হায়দরাবাদের নিজামের উপরে এত কুপিত, তাহা এক্ষণে আমরা জানিতে পারিয়াছি। তাহা এই—

ওরিয়েন কেটিংস এতদ্দেশীয় রাজগণকে দাসত্ব শৃঙ্খলে বদ্ধ করিয়া রাহিয়ার জন্য সবিস্তারি আলাপসম্মতি করে। ইহার ফল তাৎপর্য্য এই, যে যে রাজ্যে শ্রীমুক্তি, একপ সম্বন্ধ হইবে, তাঁহার রাজ্যে করেক অস্ত্র সৈন্য থাকিবে, ইংরাজ সেনাপতিগণ তাহার অধিনায়কতা করিবেন, তাঁহারিগের বেতনের জন্য সেই শতাংশ। ইংরাজের কিয়ৎংশ ছাড়িয়া দিবেন। এই সকল সৈন্য থাকিতে রাজ্য বহিঃশত্রুর

উপদ্রব হইতে মুক্ত হইলেন বটে কিন্তু উহার আশ্রয়। অপরী স্বরূপ রহিল। নিজামের রাজ্যের ওরার প্রদেশ এই নিমিত্ত ছাড়িয়া দেওয়া হইয়াছে। তাঁহার সহিত এই বন্দোবস্ত থাকে যে সেনাগণের বেতন প্রভৃতি দিয়া যে টাকা উদ্ধৃত থাকিবে, তাহা তাঁহাকে প্রত্যর্পণ করা হইবে। বন্দোবস্ত মাস হইল, যখন মধ্যভারতবর্ষে স্বতন্ত্র কমিসনর নিযুক্ত করিবার প্রস্তাব হয়, তৎকালে টেম্পল সাহেব নিজামের নিকটে প্রস্তাব করেন, বোরারের উদ্ধৃত টাকা নিজামকে না দিয়া দেশের শ্রীমুক্তি স্বতন্ত্র বস্তা পদ্ধতিতে ব্যয় করা হইবে, এবং পূর্বে যেমন এই প্রদেশ রেসিডেন্টের হস্তে ছিল সেদপ না থাকিয়া স্বতন্ত্র কর্তৃপক্ষের অধীন হইবে। ফলতঃ টেম্পল সাহেবের প্রকারান্তরে এই কথা বলা হইল যে বোরার প্রদেশটিকে তিনি তাঁহার সূতন কমিসনারির অন্তর্গত করিতে অভিলষী হইয়াছেন। নিজাম ইহাতে অসম্মতি প্রকাশ করিলেন।

বোরার মহারাজ্যীয়দিগের নিকট হইতে অনেক কষ্টে লওয়া হয়; ইহা তাঁহার ঐশ্বর্য্যক রাজ্য; এতৎ পরিচায় গ কবিলে তাঁহাকে কেনস প্রজাগণের নিকটে নয় অন্য অন্য রাজগণের নিকটেও স্থগিত ও নিমিত্ত হইতে হয়। এই সকল বিবেচনা করিয়া তিনি তাহা পরিচায় করিতে সম্মত হইলেন না। পাঠকগণ! শ্রীমুক্তিকারিদিগের কি অদ্ভুত দৃঢ় প্রতিজ্ঞতা দেখুন! তাহার পর গবর্নমেন্টকে বলা হইল, বোরারে বোরোপযুক্ত আয় হয় না, সাধারণ খরচায় হইতে অনেক টাকা দিতে হয়। কিন্তু অনুসন্ধান দ্বারা প্রকাশিত হইল, তথ্য প্রায় এক কোটি টাকা আসি ইয়া থাকে। বায় বাদে কয়েক লক্ষ টাকা উদ্ধৃত হইবে। এ নিকে সোলাপুর বিনিময় করিয়া গবর্নমেন্ট নিজামের নিকট হইতে গোদাবরীর তটস্থিত

কোট আন লইয়াছেন। বোরারের উদ্ধৃত টাকা গোদাবরীর তটস্থিত করিবার নিমিত্ত বিনিয়োগিত হয়, ইহা টেম্পল সাহেব তাঁহার কয়েক জন শ্রীমুক্তিকারি সহায়কে ইহা ছিল। কিন্তু এখন আর বলপূর্ব্বক তাহা লওয়া সম্ভাবিত নয়। লাড কামিংস বল প্রকাশের কাল অতীত করিয়া গিয়াছেন। বিশেষতঃ কর্ণেল ডেবিডসন নিজামকে মনঃপীড়া দিতে অসম্মত হন, তাঁহার অনুরোধ অনুসারে গবর্নমেন্ট টেম্পল সাহেবের প্রস্তাব গ্রহণ করিলেন না। এ জন্য কর্ণেল ডেবিডসন ক্রোধে অব ইতিয়া দলের অধিরূপ হইলেন। ইতিমধ্যে নিজামের দ্বার চিত্র গ্রহণে অসম্মতিকারি সুযোগ উপস্থিত হইল। আর কি? তিনি নিজামকে বিশ্বাসঘাতক, বিক্রম প্রভৃতি উপাধি প্রদান করা হইল। কর্ণেল ডেবিডসন অসার অপরাধ ও দীর কষ্ট কর্ষ উপেক্ষাকারী প্রভৃতি বিশেষণ দ্বারা নিদেশিত হইতে লাগিলেন। তাঁহার বোরার সাহস পৌরুষ প্রভৃতি সমুদায় বিফল হইল।

ইহার অপেক্ষা স্বার্থপরতা আর আছে? এক রাজ্য ঐশ্বর্য্যক রাজ্য পরিচায় করিতে অসম্মত হওয়াতে “শ্রীমুক্তিকারিদলের” অতীর্ষ সিক্ত হইল না। ইহা তুল্য অপরাধ আর কি হইতে পারে? রেসিডেন্ট বল পূর্ব্বক তাহা লহলেন। অতএব পদচ্যুতিক্রম দণ্ড বিধায় দণ্ডিত। কি কেবল তাঁহার অপরাধের পরিচায় হওয়া সম্ভাবিত হয়? শ্রীমুক্তিকারিদলের অদ্ভুত স্বভাব। কর্ণেল ডেবিডসন যদি পূর্ব্বক নিজামের রাজ্য লইতে, এবং লক্ষ বিক্রম প্রভৃতি, তাহা হইলে তিনি স্বদেশের ধৌর্য্যবর্জন, সাধারণের বিক্রম কর্তব্য কর্ষ সুন্দর রূপে সাধন করিয়া বলিয়া তাঁহার প্রদেশের সীমা থাকিত তিনি অন্যায় করিয়া এক চুরি করিয়া তাহার সর্ব্বস্বান্ত করিয়া মনঃপীড়া

কন্যাশ্রমঃ শস্যভেদে রাজসম্যগ্ৰাঃ পূৰ্ণমভিঃ  
অষ্টবসন্তে কন্যাদালে গোবীন্দান,  
মর্দে রোহিণীদান মশমে কন্যাদানের  
ইহার পরে রাজসম্যগ্ৰাঃ পূৰ্ণমভিঃ  
কন্যাক্রম হইলেই ব্রহ্মপুত্র কন্যাদান করি  
তখন আর কালমোহ হইবেক না আত











১. বোম্বাই স্টেটে নিবন্ধিত বঙ্গদেশের  
উক্ত তত্ত্ব নিবন্ধিত বঙ্গদেশের  
তার পক্ষে উক্ত বঙ্গদেশ আইন





[illegible]

३. अनादिन श्रीचक्राभ्यां निधना। भर्तृहृद  
द्विज क देवदत्त । उद्दिष्ट एकै वासि-  
नी इत्येतादृशः ।

পুয়ের একজন বণিক রাওসাহেবের  
জন দুই লক্ষ টাকা দিতে চাহিয়াছি-  
রাওসাহেবের উক্ত বিচার কালীন ন-  
জামতে উপস্থিত না হইয়া টেলিগ্রাফে  
জেরালের নিকটে ফরা আর্দন) ক-  
লেন বিত্ত কোম এড্বোকেট এণ্ড  
। এই ব্যক্তি যদি কোন লক্ষ অতি প্রা-  
প্তি হইয়া থাকেন তাহা হইলে তাঁ-  
জার ওকালতি করিতে দেওয়া উচি-

ବାହା: ହେ ବନ୍ଧବେ କାଳିନୀ ତିମିରା । ବାବକ ଏ-  
 । ନୈମିକ ଆମ କରିବା ବଡ଼ ହୈଦାତେ !

২১এ ডায় স্ক্রবাইন ।

নাগপুরে বহুকালাবধি তিনি শুক এত  
উপায় মন করা এক টাকা অঙ্ক মওয়া  
মন্ত্রাতি ডায়া উত্তীর্ণা গিয়াছে। উঃ  
শাহার ছিল।

এতি রক্তগিরি গ্রামের নিকটে একথা-  
রব আশাঃ জলবধ ও তর হইয়াছে।  
বাগাট ও কয়েকজন ইষ্টদ্রোগীর ত-  
লিঙ্গপুরে আসিতে ছিলেন। সর্বস্বত  
জন লোক ছিল, ইহাঃ মধ্যে প্রায় ১০০  
প্রাণত্যাগ করিয়াছে। অত্যন্ত ব্যক্তির্থে-  
প্রতিবাসীরা জীবিত ব্যক্তিদিগকে ঘটনা-  
সাহায্য প্রদান করিয়াছেন।

‘জা’ লেও সাহেবকে এড্‌মিন বিহার অনাক  
‘ন’ হালে সভা ছুইবে করেক জন এড্‌মিন  
‘র’ দুক হি ও ‘আই’ গির ‘আই’ কেহ ‘আই’  
‘ন’ মনেন’।

বিলম্বে শত্রু বসেন, বিলম্বে সর্করা জ-  
 নানিতেছে । সুতরাং যেন হুই আর  
 হুইতেছে । কোন ব্যক্তি - জালাশি-  
 ত হুই ।

[illegible]

কবিগোষ্ঠীঃ কবিগোষ্ঠীসহ উক্ত এই কাহিন্যে কবিগোষ্ঠী  
কবিগোষ্ঠীঃ কবিগোষ্ঠীসহ উক্ত এই কাহিন্যে কবিগোষ্ঠী  
কবিগোষ্ঠীঃ কবিগোষ্ঠীসহ উক্ত এই কাহিন্যে কবিগোষ্ঠী

ইতিহাস গ্রিক-রোমান যোদ্ধাদের মত  
কিন্তু মাথায় কাঁচের বহনাতার উপর  
কলিকাতার বাইলিংকে উদ্ভেজনা করিয়া  
য। মাথায় কাঁচের ছাত্র হস্তির দ্বারা হস্তবিন্দ  
ছাত্রের মাথা উপর কর্তৃক পার্শ্ববর্ত  
আবাসিতের দ্বারা বিস্তার এককর যথার  
লিখা করিবার অনেক বিলম্ব আছে।

२२.१ काष्ठ अनिवाह ।

সর চার্লস উড আত্ম-সিদ্ধাচ্ছেন যতদূরে  
র হোট আত্ম-সিদ্ধাচ্ছেন যতদূরে  
তদূরে পড়ি। সিন্ডে হইবে। এই বার যারি  
উত্তরে। বিপাকে পড়িলেন।

গত সন্ধ্যা এক সন্দেশ যুগে নিম্নলিখিত  
অধিকেন বিক্রীত হইয়াছে।

|          | সিদ্ধক | কাঁকা     |
|----------|--------|-----------|
| বেহায়ের | ১০০১   | ১৮,৪৫,৩০০ |
| কাশীর    | ১১৩৫   | ১৫,৪৮,০৫০ |



১২৬১. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ১  
 ১২৬২. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ২  
 ১২৬৩. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৩  
 ১২৬৪. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৪  
 ১২৬৫. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৫  
 ১২৬৬. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৬  
 ১২৬৭. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৭  
 ১২৬৮. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৮  
 ১২৬৯. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ৯  
 ১২৭০. জীবন-কল্প-সংগ্রহ - ১০

হয়। তিনি তাঁর সন্তানদের কন্যা  
কে বড় করিয়েছেন। এই জন  
নং কন্যাতে তিনি তার পরিচয়  
করেন। বৌদ্ধ ধর্মের প্রতি  
করেন। সেই পালকালয়  
সি প্রত্যহ এই পালকের  
করেন। তাঁরই সন্তান ইংল্যান্ডের  
হইলে এই পালক আনা হয়।

বোম্বাই প্রেসিডেন্সিতে এক  
চার হইয়াছে। বেলগানের এক জন  
তার দুইজন বেলগানের নামে এই  
করেন যে তাঁহার তাঁহার বেতন  
। বিচারপতি বেলগানের বেতন  
করেন। বিচারে হাতকাড় ও  
এক অঙ্গকার করে হুজুর্গা  
তার গায়ে যে ৫০০০ টাকার  
প্রতি ছিল তাহা ও এই "নাহী  
করেন। তাঁহার বিনা কারণে  
হিলেন এই দাবী করাতে  
। নিম্ন বিবরণ বিনয় করিয়া  
হইয়াছেন। এক্ষণে এই  
বিবরণ এই দুইজন কর্তার  
ত মনোযোগী হইবেন কিনা? এই  
চারের জন্য আমরা টেনসিক  
তার তার দিবার দিনে  
হেবিলিউ বোড কমিসন  
র মূল্য নিরূপণ করিতে  
দেখিয়া গবর্নমেন্ট এই সকল  
নিয়মাবলি প্রকাশ করিয়াছেন  
তাহা ও বিলয়ে আদালতের  
গামিতে প্রকাশিত হইবে।

সদর আদালত আদালত করিয়াছেন  
কালেক্টর অফিস বরকসিগের  
ক, তাঁহারিগের অনন্যোবো  
গের কতি হর তাহা হইলে  
হইতে হইবে। উক্ত আদালত  
মহা সর্কসাই দেখিতেছি  
দীকারি প্রায়ই নীলকরদিগকে  
হা নষ্ট করা হয়।

মাকেরিগের মহারিগের  
লিকাতার ২০,০০০, লোহার  
প্রায় ১০,০২০ টাকা  
বাইল দিবার বোম্বাই  
এবিধে একটি

মহা করিগের কারিগর  
করিগের কারিগর  
এক জন পারসী  
হয়ে ২০ জন  
এই কারিগর  
করিগের কারিগর

এই কারিগর গবর্নমেন্টের  
খানারে নিয়মিত টাকা

|                     |              |
|---------------------|--------------|
| কারিগর গবর্নমেন্টের | ৫,৮৮,৮৫,১০৮  |
| কারিগর              | ১,২৮,১২,০৬৫  |
| উত্তর পশ্চিম        | ৩,২১২১,০২০   |
| পশ্চিম              | ১,০০,১২ ৩৮৮  |
| বোম্বাই             | ৩,০০ ০২ ৩১৮  |
| মধ্যে কারিগর        | ৬০,০৫,১১০    |
| কারিগর প্রতি        | ১০,২১,৮৮৮    |
| মাসিক               | ২,৩১,৮৮,১১৮  |
| মোট টাকা            | ১০,৮৮,১২,৩৮৮ |

এত জন টাকা আর  
মাহার প্রিন্সেল বলেন  
১০ জন সন্তান বাকি  
এই বিনা। অর্থাৎ  
সহর অধি পতন নদীর  
জপুর পর্গাত একটি  
ইহা হইলে অমৃত  
বালিক্যস্থান হয়।

২৩এ সেপ্টেম্বর অবধি  
পর্গাত প্রধানতম ও  
চারালয় বন্ধ থাকিবে।

জিলস পল্ল বলেন  
মোহার ২০ বৎসরের  
সিকর করিতে ইচ্ছুক  
হইয়াছেন।

বিভ সাহেবের গ্রীষ্ম  
অধিক টাকা  
বাকালি ছিলেন না।  
পিও আরও হইল না।

আলিপুরের বেল  
কার কইতেছে  
তগলপুরে অবস্থিতি  
করিবেন।

এবংসর সিপ্লি  
হইতে এগার জন  
ইয়াছেন। তিনি  
৮ জন সন্তান  
কারী ইঞ্জিনিয়ারের  
উপাধি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন।

আ দিয়ার  
করিগের কারিগর  
করিগের কারিগর

এই কারিগর গবর্নমেন্টের  
খানারে নিয়মিত টাকা

এক জন কারিগর  
করিগের কারিগর  
রা ২০ টাকার বেতনের  
দিয়াছেন। আমরা  
করি। মাসিক  
বিবরণে  
উক্ত পল্ল  
নীর্ষ জে  
পুলিশের  
করিগের কারিগর

আদালতের  
তি সি  
বিচারের  
রানক পাণ  
এইমত  
হত্যাকারী  
করকরা সর্ক  
খাপি  
দিবার

এই  
হুণা  
শিত  
খুল হইবে?

পাতি  
গবর্নমেন্ট  
কিসর  
কারণ  
সে  
কোন

বোম্বাই  
জাতক  
ভাগ  
বেইলে

কলিকাতার





আমাদের দেশের লোকেরা যেমন  
আমাদের দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

প্রেরিত ।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহোদয়  
সমীপে

আমি কলিকাতা হইতে আগিয়াব সময়ে  
"গোপালগঞ্জ" নামক যে একটি গাট আছে,  
এই গাটটি বাণী নামক (কথার রাশিতে  
নোকা বাধিয়াছিল। কিছু পরে দেখিলাম যে  
একজন মুসলমান আসিয়া বুটামাডী বলিয়া  
শ্রীযুক্ত নোকা হইতে গাট পরমা আদার করি-  
তেছেন, কমে আমার নোকাতেও আসিয়া উপ-  
স্থিত হইল, পরমা দাঁড় বসাতে আমি ভিজাস।

আমাদের দেশের লোকেরা যেমন  
আমাদের দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহোদয়ে

আমি কলিকাতা হইতে আগিয়াব সময়ে  
একজন ডিপার্টমেন্টে কি করতর হাদুই  
হইয়া উঠিয়াছে। এই ডিপার্টমেন্টে কমে  
কোন কর্মচারি চরিত্রের বিষয় সরণ করিলে  
হস্ত পদাঙ্গি সকল উন্নত মধ্যে অবস্থিত হয়, বা-  
শক্তি স্তম্ভিত হয় এবং ইহার প্রতি এতদূর অগ্নে  
যে ইহার জিনিসা ধিরাও আর চাঁপতে ইচ্ছা  
হয় না। হার! গবর্ণমেন্ট মনে করিতেছেন যে  
তাঁহারা চতুর্ভুজ যে বিদ্যাবীজ নিক্ষেপ করি-  
তেছেন, তাহা হে অমৃতনয় কল উৎপন্ন হইবে,  
কিন্তু তাঁহাদের অনবধানতা দোষে তাহা হইতে

আমাদের দেশের লোকেরা যেমন  
আমাদের দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন

এই দেশের লোকেরা যেমন  
এই দেশের লোকেরা যেমন



[illegible]





করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক  
করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক  
করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক

১৯২২ সালের ১৮-১২

সোমপ্রকাশ  
সংবাদ পত্র  
১৯২২ সালের ১৮-১২

## সোমপ্রকাশ

১৯২২ সালের ১৮-১২

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার ক-  
রিতেছি, কোড়াসাঁকোর প্রসিদ্ধ দাতা  
শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসন্ন  
সহ সোমপ্রকাশের উন্নতির নিমিত্ত ২০০  
টাকা দান করিয়াছেন।

আমরা সানন্দচিত্তে প্রকাশ করি-  
তেছি, বিশ্বানুরাগী শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র  
বোম্বাই বাণীশ বৃত্ত প্রবৃত্ত হইয়া পুজার  
ব্যয়বহিত পূর্বে আমাদিগের আমের বি-  
দ্যালয়ের পরীক্ষা গ্রহণ করিয়া সন্তোষ  
প্রকাশ্যে চল্লিশটি পারিতোষিক দান ক-  
রিয়াছেন। পারিতোষিক দান কালে  
অনেকে উপস্থিত ছিলেন। হরিনাতির  
শ্রীযুক্ত বাবু নবীনচন্দ্র বোম্বাই বাণীশ বি-  
দ্যালয়ের উৎসাহ বর্ধনার্থ তৎকালে ক্রিয়-  
মান করিয়াছিলেন। ইহাতে হাত ও গতি-  
ত উভয়েরই সনিশ্চয় উৎসাহ বৃদ্ধি হই-  
য়াছে।

১৯৩২ সালের মত দুর্গোৎসবের আ-  
রম্ভ শেষ হইল। এবারের কৃতজ্ঞতা  
স্বীকার অতীতসংস ব্যবহার করিয়াছে-  
ন। স্বামী এক মৃত্যুতত্ত্ব রূপ চল গ্রহণ  
করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক  
করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক  
করিলে স্বামী নন্দাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক

না হইলে সব  
ও অকালকাল

দুর্গোৎসবের জন্য হিন্দু জাতির মহা-  
মহোৎসব আর মাই। হিন্দুশাস্ত্রকারেরা  
তদনুষ্ঠানে মহাকাল লাভ লিখিয়াছেন।  
কিন্তু বাবতীর হিন্দু এ উৎসবভোগী নহেন।  
বেকার প্রবেশ পার হইলে দুর্গাপ্রতিমার  
সহিত বক্তৃতা সঙ্গম হইয়া না। যে যে স্থানে  
বেদের ও একেশ্বরবাদের প্রাচুর্য্য,  
সেই সেই স্থানে প্রায় প্রতিমার অদর্শন।  
বাঙ্গালিরাই কেবল এই উৎসবভোগী এক  
চেটিয়া করিয়া লইয়াছেন। ইহা নিগের  
এক চেটিয়া করিয়া লওয়া বিশ্ববের বিষয়  
নহে। ইহারা জৈন পার্শ্বাতিক বীর্ষ্য  
ও সাহসে হীন, মানসিক সাহসে  
একাত্ম বীন। সুতরাং ইহারা কাক কাপে  
সেই অধিকার পরমেশ্বরের সাক্ষ্য আরা-  
ধনার সাহসী হইতে পারেন না।

এই বিশ্বজমীন মহানন্দের সময়ে  
আমরাই কেবল বিশুদ্ধ জ্ঞাননিগের সহিত  
মিরানন্দে কালক্ষেপ করিলাম। দুর্গোৎস-  
ব কালের অন্ন দান, বস্ত্র দান, ও অন্য-  
বিধ দান এবং পূজা প্রণালী, এ সমস্ত  
বিষয়ের চিন্তা যে যে সময়ে আমাদিগের  
হৃদয় প্রবেশে প্রবর্তিত হইয়াছে, সেই সেই  
সময়েই আমরা নিতান্ত অতৃপ্ত হইয়াছি।  
আমাদিগের দেশের লোকেরা সেই সর্ব নি-  
য়তা, সর্বপ্রকৃতিচিন্তা পরম পদার্থের আরা-  
ধনার পরাধীন হইয়া অকিঞ্চিৎকর মিথ্যুর  
চেতনহীন জড় পদার্থের পূজা করিয়া  
আপনাদিগের অসারতা ও কৃত্রিমতার  
পরিচয় প্রদান করিতেছেন, ইহা দেখিয়া  
চিন্তের সুখানুভব সত্তাবনা কি? এই ম-  
সের ১৫। ১৬। ১৭ই এই তিন দিন  
দল। দেশের অনেক অর্থ তরীভূত হইয়া-  
ছে। অসংখ্য দরিদ্র লোককে এই তিন দিন  
উপর পুত্রিয়া সামান্য দ্রব্য ভোজন করিয়া  
পরম কীর্তি লভ্য করিয়াছেন, একথা আমরা  
স্বীকার করিতে পারি না।

করিয়া দেখা যায়  
গাভ অতি সামান্য  
ইবে সন্তোষ মাই। পর  
উপকারে উপকার  
রূপে যে অসংখ্য  
যদি হিন্দুর  
করা হইয়াছে  
উপকার ভোগে  
আলৌকিক দ্বারা  
না। যে কাব্য দ্বারা  
উপকার লাভ সত্তা  
অধিকতর পুণ্য লভ্য  
সবকালীন  
দোষ এহ, লোকের  
লস্যাৎসব বর্জিত হই  
প্রভৃতি সমুদায় লভ্য  
লুপ্ত হইয়া যায়।

অ

এতৎসং

ত পত্র আমাদিগে  
স্থানে প্রকৃতি হ  
ধিকার প্রস্তাব জ  
ত হইয়াছেন, পা  
কোপ চিত্ত বর্জন

১। পরমেশ্বর  
সকল পুত্রই সম  
দায় বিশ্ববের অ  
লে তাহা হইতে  
স্তাব নৈসর্গিক  
পিতার পুত্রগণে  
হার সে নিতান্ত  
তদ্বিষয়ে অমি  
যাইতে পারে তাহা  
যে কোন কালে  
ফুল। পার্শ্ব, শু  
ন হইয়া জুলান  
না হইয়া





এর একটি বিশেষ কারণ বশতঃ সবি-  
মেহ সম্পন্ন হন। যেহেতু স্বতঃ এই  
কম্পানি অথবা নিগম ব্যক্তিক্রমেও মহা  
উণ সম্পন্ন বলিয়া বোধ করাইয়া দেয়,  
জাহাজ হলে নিগম বাণিজ্য হইতেই বিব-  
কর কর্তৃক তার পতিত হইবার সম্ভা-  
বনা।

১৫

আসার চা কোম্পানির সভাপতি  
মাকে সাহেব।

কর্তৃক বৈশিষ্ট্য সমাধান, ধর্মোপদে-  
শের অধ্যয়ন, বিচারকর্তৃক প্রধান  
নির্ভর বলিয়া গণ্যের লক্ষ্য শুদ্ধকরণ  
এবং কুজিয়াকারির আত্মসাধন প্রতিপা-  
দন, এগুলি কেবল অসম্ভব নয়, নিতান্ত  
উপায়সকল। আসার চা কোম্পানির সভা-  
পতি মাকে সাহেবের বিষয়ে সম্প্রতি এই  
উল্লেখ কর কাণ্ড ঘটাইয়াছে। পাঠকগণের  
গুরুত্ব থাকিতে পারে, আমরা ২। ৩ বার  
লিখি রাখিলাম, মাকে ও কার্টার সাহেবের  
মধ্যে তিনটি বিষয়ের অভিযোগ উপস্থিত  
হয়। এক, এই দুই ব্যক্তি উক্ত কোম্পানির  
সম্পদ দ্বারা আপনাদিগের ক্ষেত্রে কাজ ক-  
রাইয়া লইয়াছেন। দ্বিতীয়, উহারা উক্ত  
কোম্পানির চার বীজ লইয়া নিজ ক্ষেত্রে  
ফসল করিয়াছেন। তৃতীয়, উহারা কো-  
ম্পানির কাগজ পত্র কৃত্রিম করিয়াছেন।

এই বিষয়ের অনুসন্ধানার্থ এক কমি-  
টি নিয়োজিত হন। তাঁহারা যে রিপোর্ট  
করেন, তাহা মাকে সাহেবের অনুকূল হয়  
নাই। সেই হেতু মাকে সাহেব আত্মপক্ষ  
সমর্থন করিয়া উত্তর প্রচার করিয়াছেন।

সেই উত্তর জালি এ হলে সংক্ষেপে উক্ত  
কমিটি পাঠকগণ তাহা সমর্থন কবি-  
কেন। আমরা সে সুবিধে পারিবে, তাহা-  
কে মাকে সাহেবের নিষেধাবিতা কেনন প্র-  
মাণ করিয়াছে।

কর্তৃক সাহেবের প্রত্যাশিতাধীন এই

উত্তর দিয়াছেন, তিনি যে সকল মজুরকে  
যে সময়ে নিজ ক্ষেত্রে নিয়োজিত করে-  
ন, আসার চা কোম্পানির তৎকালে তা-  
হাতে প্রয়োজন ছিল না; তাহারা অনি-  
য়োজিত থাকিলে হয় পসাদন করিত নতু-  
বা কোম্পানিকে তাহাদিগের নিষিদ্ধ কতি-  
এত হইতে হইত। তিনি মজুর লইয়া বরং  
কোম্পানির উপকার করিয়াছেন। এ হলে  
আমাদিগের জিজ্ঞাসা এই, মজুরে যদি  
কোম্পানির প্রয়োজন ছিল না, কোম্পানির  
নিয়োজিত লোক তাহাদিগকে সংগ্রহ ক-  
রিয়া তথায় আনিয়ন করিল কেন? প্রয়োজন  
আছে কি না মাকে একথা কান্দে। তা-  
না করিয়াছিলেন? কাহার নিষেধ হইতে  
বা অনুমতি লইয়াছিলেন? কলকাতা জাহাজ-  
র কর্তৃকর্তা হইয়া বরং ব্যবসায়ী হইলে  
আরই এইকপ ঘটনা হইয়া থাকে।

২। দ্বিতীয় অভিযোগের এই উত্তর  
প্রদত্ত হইয়াছে, মাকে চার বীজের জন্য  
প্রার্থনা করিয়াছিলেন, এবং তাহাকে ঐ  
চার বীজ বিক্রয় করিতে কোম্পানির ল-  
জ হইয়াছে। বেদ। ব্রহ্মকে যেমন  
তোম্বা ও তোম্বা, হব্য ও হোতা, কাব্য  
ও কর্তা বলিয়া ভব করিয়া থাকেন, মা-  
কের বিষয়েও সেইকপ ঘটাইয়াছে। মাকে  
বরং আবেদন করিয়াছিলেন, তাহার ডি-  
রেক্টরের আসনে উপবিষ্ট হইয়া সেই আ-  
বেদন গ্রাহ্য করিয়াছিলেন।

কলকাতা মাকে সাহেবকে চার বীজ বি-  
ক্রয় করা কর্তব্য কি না, তৎকালে এই বি-  
বেচনা হয়, তৎকালে ডিরেক্টর সভার  
মাকে, কার্টার ও এক জন সেক্রেটারিয়ার  
উপস্থিত ছিলেন। মাকে এইকপ সভার  
মত লইয়া কি সাহসে চার বীজ ক্রয় করি-  
লেন? কি কপে তিনি স্থির করিলেন যে  
তাঁহাকে চার বীজ বিক্রয় করিবার বিষয়ে  
কোম্পানির মত হইয়াছে? তিনি ও কার-  
টর এই দুই জনেই কি কোম্পানির  
কর্তৃক সাহেবের প্রত্যাশিতাধীন এই

ডিরেক্টর তৎকালে  
তা বলিয়া তাঁহার  
ধের হইতে পারে না  
সভা আনি করা তাঁ-  
বতঃ কোম্পানির চার  
বার অথবা ন্যায় একপ  
বিষয়ের নিষ্পত্তি করা যে  
মুগ্ধ হয় নাই। বিস্তর ক-  
রীতি এই, তাহারা এক  
অধ্যক্ষ সভায় উপস্থি-  
মত কোন মতই দেন না  
কোম্পানির চার বীজ  
আছে, তখন তদ্বিক্রম  
লাভ জ্ঞান সম্ভাবনা কি

৩। মাকে সাহেব  
বিষয়ে বলেন কোম্পা-  
কৃত্রিম করা হয় নাই, কো-  
ব্যতিক্রম ঘটাইয়াছে।  
জন তত্ত্ব লোক, তিনি কো-  
পজ পত্র কৃত্রিম করিয়া  
আমাদিগের নিতান্ত ধ-  
তবে কেবল ২। ৪ টা  
২৫বের পরিবর্তে ১২৫  
নিয়ম ব্যতিক্রম ঘটাইয়া

পতিত ভবিষ্যি  
গত হই  
কাজে আ  
করিতে পা  
শন করি  
বেশের  
শস্যোৎপ

ধারণের  
নিতান্ত  
দূর হইতে  
পারত তা  
কর্তৃক  
কর্তৃক

সেইসময় শি ।

[illegible]

নেকে পতিত ভূমি ক্রয় করিয়া তৎক্ষণাৎ  
৭১২ টাকা অপেক্ষাকৃত অধিক মূল্য বি-  
ক্রয় করিয়া অধিক লাভ করিবার চেষ্টা  
করিবেন সন্দেহ নাই। কলকাতা ইয়া অনে-  
কের ব্যবসায় স্থল হইয়া উঠিবে। তাহাতে  
দেশের কি ইষ্টলাভ হইবে -

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

অনেকে অস্বাভাবিক বস্তু। যেহেতু  
 জগৎ দোষ বিচারে অনুৎসুক দেখিয়া অস-  
 ক্ত্য প্রকাশ করিয়া গমনেন। অস্বাভা-  
 বিক ও জগৎ দোষ বিচারে অনিচ্ছা নাই  
 কিন্তু কষ্টকারিদিগের সঙ্গ সময়ে  
 অস্বাভাবিক মনোবল পূর্ণ হইয়া পানি মা।  
 একদা, একদা, একদা মনোবল পূর্ণ হইয়া  
 সঙ্গ, কষ্টকর কষ্টকর পুস্তক হইতে  
 ছে বাটে, কিন্তু অস্বাভাবিক হইয়া  
 গিয়া দৃষ্ট হয়। সেসময়ে যত্ন, বাকী, -  
 যত্নকর ন্যায় হইতে পারে। এখানে  
 বলা হইতে পারে অস্বাভাবিক বস্তু।  
 চর হইতে পারে। অস্বাভাবিক হইতে  
 সঙ্গিন হইতে পারে। অস্বাভাবিক হইতে  
 হইতে পারে। অস্বাভাবিক হইতে

প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ১. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ২. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৩. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৪. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৫. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৬. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৭. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৮. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ৯. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯  
 ১০. প্রথম অধ্যায়ঃ ১৮৮৩ খ্রিঃ ১৯

ধাকেক, তাহার অধিকাংশই অস-  
পকার্য, তাহার গুণ দ্বাৰা বিচা-  
জায় না। তবে সে সকল আছে  
গুণ ও দৃষ্ট হয়, বিশিষ্ট কারণে  
আমরা আরই তাহার গুণ দ্বাৰা  
পরাভুত হই না।

সম্প্রতি চাই খাতি বাক্য  
 সাদিগের হস্তগত হইল।  
 তাহার গুণ দোষ বিচারে  
 একের নাম স্ব. দর্শন, দ্বিতীয়ের  
 দ্বিতীয় নাম স্ব. দর্শন ও তৎকাল  
 ১০১১ ১০১২।

উক স হেব প্রথম গ্রন্থ বিশিষ্ট  
প্রচলিত করিবার সম্বন্ধ করিয়া দেও  
এই স্বভাবের বর্ণনা এই অধিক। যেহেতু  
ছবি আঁশে বিস্তৃত করিয়াছেন। প্রথম  
কবি, দেবী, শ্রীমদ্ভক্ত, ইত্যাদি  
সঙ্গে ধর্মরাজের সম্ভার রূপান্তর  
করাচ্ছে। আম দিগের ইন্দ্রাণী কন্যা  
গণ প্রায়ই একটি সুখমিত্ত প্রণালী  
মন করিয়া থাকেন। যাবতীয় বাকা  
বাড়ি বিশেষের তীব্র চরিত্র অথ  
নামক নাট্যকারের বিধির  
খিদ হয় গা থাকে। অনেকে বে  
এই অঙ্গ অঙ্গত ইহার জন্য  
ন, কাব্যের জগৎ ঘোষ অলঙ্কার  
যদিগের তাদৃশ নৃষ্টি থাকে  
করে কতিপয় পত্র পাঠ করি  
এই ভাবে; সেই একই  
এই বিদ্য কাব্যে এ সময় দুর্ঘট  
যা। কাব্য খানির রচনাও মন্দ হয়  
এই মধ্যে অন্য অন্য এদের ও  
ভব মুক্তিও কঠোর হতে বিস্তৃত  
এই ভাবেও সচেতন হইয়াছে।  
এই ইচ্ছা হইতে উদ্ধৃত করে কটা  
দর্শন বলুন।

୧ ଛା' ଏବଂ ବ୍ରଜସୀ କାଢ଼ି ନିଅ ।  
 ୨ ଛା' ଶିଖରୀ, ଧୂସର ଛା' ଛା' ।  
 ୩ ଛା' ଛା' ଛା' ଛା' ଛା' ଛା' ।





৩ সাহেবের অধিনীত দুলা অপেক্ষা ৩৩  
কা অধিক বেশি বটভেদে, তথাপি কি  
শিকা সংক্রান্ত দান বন্ধ থাকিলে?

যিনিক প্রবণ করিয়াছেন পর স্বেচ্ছায়  
লিভে জেড সাহেবের কপে আসিতে চাহে-  
তাঃ হটলে ইউরোপীয় বেহালার কল  
এই উঠিয়া বাইবে।

মিল্লোগেজেটের কাবুলি সৎকার জাত  
করিয়াছেন, তাহার মোস্তাফিজ খাঁ দূত  
কতিপ কপে হেরাট আক্রমণ করিয়াছেন।  
একটি দার খান ছিল তাহাও কল হই  
ছে। অতীতের শিকারে খাদ্য প্রভৃতি  
হইয়াছে, দুলা চান জানেন কোন প্রকার  
সহায়তা করিতেছেন না।

সাহেবের কল থেকে, সতের মাঝেইয়ের  
দুলাইগর নগর জাম জম্য পাতিয়াবার  
কা ১০০০ টাকা ১০০০ ও নবাব  
১০০০ টাকা দিয়াছেন ইত্যাদি অনেক  
কিছুরি ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০  
এ ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

সাহেবের কল থেকে, সতের মাঝেইয়ের  
দুলাইগর নগর জাম জম্য পাতিয়াবার  
কা ১০০০ টাকা ১০০০ ও নবাব  
১০০০ টাকা দিয়াছেন ইত্যাদি অনেক  
কিছুরি ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

সাহেবের কল থেকে, সতের মাঝেইয়ের  
দুলাইগর নগর জাম জম্য পাতিয়াবার  
কা ১০০০ টাকা ১০০০ ও নবাব  
১০০০ টাকা দিয়াছেন ইত্যাদি অনেক  
কিছুরি ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০

অকর্মণ্য হইয়া ২।৪ টাকার বিক্রীত হই  
রাছে, বোম্ব মোস্তাফিজ খাঁ ১০০০। ২০০  
টাকা উপার্জন করিয়াছে। সেনাদলে এই স  
কল দুর্ভাবতার করে নিবারণ হইবে।

কিনিক বলেন গবর্নমেন্টের সাপোর্ট  
কৃতি কৃত্যগণ হামায়েত হইবার সময়ে বে  
জাতা পাইয়া থাকে এখন স্বেচ্ছায় কে কত  
পাইবে তাহার একটি নিয়ম স্থির করা হইবে  
কাকিনাত্তে অম্ব কটের প্রয়োজন হই  
তেছে গবর্নমেন্ট তাহার দ্রুত চাহি-  
য়াছেন। স্বেচ্ছায় অম্ব কট টা ১০ হানে  
দেওয়া হইক না কেন।

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

সাহেবের কল থেকে, সতের মাঝেইয়ের  
দুলাইগর নগর জাম জম্য পাতিয়াবার  
কা ১০০০ টাকা ১০০০ ও নবাব  
১০০০ টাকা দিয়াছেন ইত্যাদি অনেক  
কিছুরি ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত  
ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

ইউরোপীয় সৈন্যের অধিনীত

সাহেবের কল থেকে, সতের মাঝেইয়ের  
দুলাইগর নগর জাম জম্য পাতিয়াবার  
কা ১০০০ টাকা ১০০০ ও নবাব  
১০০০ টাকা দিয়াছেন ইত্যাদি অনেক  
কিছুরি ১০০০ টাকা ১০০০ টাকা ১০০০

গত কল্য প্রধানতম বিচারালয়ের কোর্ট  
দারি সেলিয়ান বসিয়াছে: বর্ধা সাহেব বি  
চারপতি। প্রতিমানে সেলিয়ান হইয়াছে  
এবার অপই মোকদ্দমা আছে।

বলভিয়ার সেনাদলের বিরুদ্ধে আক্রমণ  
মত প্রকাশ করিয়াছিল, প্রতিমানে হইয়াছে  
হাতে অস্ত্রমোদন না করিয়া বসন্তের প্রক  
শ করিয়াছেন। সন্ধ্যায় অস্ত্রমোদন করিয়া  
দেখিবেন, বতরিন এদেশীয় সৈন্যের সাহায্য  
বল ও সাহসের হুঁচকি হইবে, ইউরোপীয়  
রোপীয় দলে সন্ধান নাই।

সাইগিন নগর ক্রমশঃ সন্ধ্যায় গর্ভে  
হে। কোর্টের কুরিয়ার পুনর্বার এবিধের  
কোপ প্রকাশ করিয়াছেন। গবর্নমেন্টের তা  
র রক্ষার ভেট করিয়া যদি কৃতকার্য হইয়া  
সত্যতা না থাকে তবে দুলা টাকা মট কট  
ন কেন।

১০ই আখিন বহুপতিয়া।

পুনরায় বাবড়ীর শস্য অধিনীত হইয়াছে।  
কৃতকার্য ইউরোপীয় ও এদেশীয় সকল সৈ  
ন্য করিয়াছেন বসন্তের প্রক বাস্তব হইয়াছে।



सर्वोच्च न्यायालय कोटिवाचक एवं ईश्वरपूज्य म०

এমত জনপ্রতি কর্ণেল প্রিন্সিপল দিখা  
লইয়া লার্ড এলগিন ও সর হিউরোজের  
মনোভল হইয়াছে। এবিষয় সর চার্লসউডের  
নিকটে প্রেরণ করা হইয়াছে। লার্ড এলগিন

লেপ্টেনন্ট গবর্নর ভাগলপুরে গমন করি  
য়াছেন। দীর্ঘকাল তিনি তথার অতি থাকি











कन्याहिंस समग्र इतिवृत्तः

যখন এটা সুবর্ণালীকৃত সত্য  
 যা, তখনও নান্দ্যব পাবিনীম।  
 সেই বিস্তারিত অধিক কল ভেদ  
 যা, তখনই মনে পড়ে  
 যিনি যিনি যিনি এই চিত্রাঙ্ক  
 যা, তখনই মনে পড়ে  
 যিনি যিনি যিনি নবীন সত্য

স্বাধীনতা আন্দোলনের কাছাকাছি ছিল, মতান্তর তাহা

রের অভাবে একদে বিচার কার্য অতি অপ্র-  
 ন্ত হুত্বমধ্যে নিশ্চয় চইতেছে। যাহা অতি  
 সংকীর্ণ বলিয়া বাহি এতিবাধি সকলকে অস্বা-  
 স্বস্ত বরের বাহিরে দণ্ডারমান থাকিতে হয়,  
 এ সুবিধা হুরীকরণার্থ গ্রামের পশ্চিম প্রান্তে  
 অতি সুন্দরিতা ও বিস্তৃত এক প্রান্তর মধ্যে  
 কয়েকটি গৃহাদি আটালিকা নির্মিত হইতেছে,  
 সুইডেন রাজ্যের মধ্যেই নির্মাণ কার্য সাজ হই-  
 তে পাঠে। এ গ্রামের নাম ও অগ্ৰাণা নাম  
 বিস্তর জগৎ, আহার্যীয় বা পানীয় দ্রব্য অতি  
 সুস্বাদু, উচ্চ সুলা-মিলেও নিম্নাভার। এ  
 দেশের লোক অত্যন্ত ধর্ম ও কপট, নিজ ছি-  
 তের নিমিত্ত কর্মে নী পাবে এমন কুর্খম নাই  
 আর্থের অল্পরোধে কাহারও প্রাণ বধ করিতেও  
 সৈধ্য করে না। পরোপকার ও সরল ব্যবহার  
 কাহাকে কহে তাহা ইহার। এককালে জানে  
 না, অকারণে লোকের নিশ্চয়বাদ ও মানি করা  
 ইহাদিগের স্বাভাবিক সংস্কার। এখানে কেহ  
 কাহার স্তম্ভাতি করে না, মীচ জাতীর লোক  
 অত্যন্ত অবাধ্য ও অবিদিত, ধনী ব্যক্তিরা অর্থ  
 গৃহ, ব্যয়কৃত ও ধর্ম জ্ঞান বর্জিত। এখানে স-  
 ত্রাতি একটা দাতব্য চিকিৎসা শ্রম ও গবর্ণমেন্ট  
 সাহায্য প্রাপ্ত একটা ইনোকু বিদ্যালয় ছোট  
 আদালতের সমুদায় পরোপকার, বিদ্যালয়রাণী  
 বিজ্ঞবর বাবু স্বাক্ষরার্থ দায় বাহাজুরের এ-  
 কান্ত যত্নে ও সাহায্যে স্থাপিত হইয়াছে।  
 ইনি অতি বদামা এবং সাধারণ হিতকর ব্যা-  
 পাবে ইহার যত্নপাবনা হইতে উৎসাহ ও অল্পরাগ  
 বিচার কবে, ও ইহার যথেষ্ট স্তম্ভাতি, বহিঃ  
 প্রাচীন হইয়াছেন তথাপি ব লকের ন্যায় প-  
 বিজ্ঞানী। এ দেশের মোতামাদ বলিতে চইবে  
 যদি ইহার আর কিছু দিন এখানে থাকা হয়।  
 এখানে ইহা সিলেখ না করিয়া দ্রাক্ষ থাকিতে  
 পারিলাম না। সে এখানকার পুন্স মায়েগ  
 বাবু পার্কীভীচরণ বন্দোপাধ্যায় ও এডালের  
 জমিদার মহাশয়দিগের মোক্তার বাবু দেবনা  
 ধারণ রায় মহাশয়ের। উপরি উক্ত বিদ্যালয় ও  
 চিকিৎসালয় স্থাপনার নিমিত্ত যথেষ্ট প্রদ  
 আয়স স্বীকার করিয়াছেন। বাহাতে চির  
 স্থায়ী হয় তাহার নিমিত্ত শরীর, মন ও অর্থ  
 দিয়া উপকার করিতেছেন। এ দেশের সর্ব  
 সাধনে এই মহাত্ম্যবহিঃপর যোগ্য অধ্যাপক  
 ও উদ্যোগ দোখিতেছি তাহাতে অল্পকাল  
 ধোই দেশের অবস্থা উন্নতির নিশ্চয় সম্ভাবন  
 এখানকার তেপুটী মাজিষ্ট্রেট এক জন নায়েব  
 ইনি ইতিপূর্বে এক জন নীলকর ছিলেন কি

[illegible]





# সোমপ্রকাশ

“সম্মান্য প্রকৃতিস্থিত্যে অধিঃ বরস্বতী স্মৃতিসহসী ন বীৰ্য্যতা।”

১১। { সন ১২৬২। ৪ কার্তিক। ইং ১৮৬২। ২০ অক্টোবর } দৈনিক মূল্য ১ টাক।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাক।

## বিজ্ঞাপন।

হলে সোমপ্রকাশ ৩০০-  
গের মিস্ত্রম।

মূল্য না পাইলে মকরলে সেমি-  
ন করা যায় না। ইহার বার্ষিক  
মূল্য সমস্ত ১০ এবং বার্ষিক  
পিত্ত আছে। হর মাসের স্থানে  
এ গ্রন্থ করা যায় না। বাক্যপের  
ব্যক্তিগত সোমপ্রকাশ গ্রন্থের বিক্রি  
নি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই  
পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

গাৰি ২৮শ ২৯শ ও ৩০শ অক্টোবর  
বুধ ও বৃহস্পতিবার কলিকাতা ল  
লে প্রবেশাধিনিগের পরীক্ষা হইতে হ  
সম্প্রতি ১০ টী হইবে যিনি যাতে  
১০ মালি হইবে সত্যকতা আছে  
হস্তগাধিগ্রহণে অথবা প্রতি  
গাও ওয়ায় পাঠ করিতে আসিলে  
উহার উক্ত দিন নিবস বেল ৮  
১০ মালি কলিকাতা মহাল জাম (১০  
১০ টী ৩৪ মং ভবনে) উপাধ্যত  
বাহাদিরের বয়ঃক্রম ১৬ ২২ মাসের স্থান  
১০ বিদ্যালয়ে প্রবিষ্ট হইতে পাইবেন  
কি কেহ আপনার বিদ্যা ও চরিত্র বি  
ক্রে প্রকাশ্য পত্র পাঠিয়া থাকেন তবে  
পাইয়া আসিবেন। পত্রাতিপিত্ত বিসম  
১০ পরীক্ষা গ্রহণ করা যাইবেক  
উপক্রমণিকা

বাক্যলার ইতিহাস গ্রন্থ ও বিতরণাগ  
অন্য বহুশাসিক ও সামান্য তথ্যের পর্যন্ত  
কো, জি, মেজিকট  
বাক্যলার মধ্য বিতরণাগ ছদ্ম ইনস্পেক্টর  
১০ই সেপ্টেম্বর  
সন ১৮৬২ খাল

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরি

৮৬ নং কলেজ স্ট্রীট।

পানও দলন।

ঐশ্বর্য্য বাধ হু'মলাস নু'পাখ্যার মহা-  
শর গোষ্ঠাক নিত্যানন্দ ঐতর ৮৪ এবং ৭৮  
রিত বৈক্য ৪৩২২ সমস্ত নিবসন সংগ্রহ ক  
বিষ। গোষ্ঠীর সাধু ভাষায় গল্পে রসে ও সুপ্রি  
ত করিয়া পাঠকগণের নামে এক পানি অতি  
নব পুস্তক বিক্রিয়াবে আমাধিগের প্রতি তা  
র গণ করিমাছেন। আদর্শ উচ্চর অমো-  
পায় পাঠ বহিঃ সবেলন বে. প্রতুর্কর্ষী  
কি ১০ অধিকলিপিগ্রহণে বচনাব নিমিত্ত  
১০ বিসম ৩১১ গ্রহণ করেন নাই অথচ  
১০ নাই ও অতি ৪৩২২ (বাপ করি এট  
পুস্তক ধর্ম্মজিগ'য় হাতিব ৩৩৫ই প্রয়ো-  
জনীয়, বিশেষতঃ বৈক্যবর্ণমা'বলদি মহাশয়  
গণের অতি বাধ্যতক এবং গ্রন্থকর  
নিজাও উচিত যেহেতু বহুমানসময়ের  
বৈক্যবর্ণমা'বলদি অনেকেরই স্বীয় ধর্ম্মের মধ্যে  
বহিঃ পুস্তকের মূল্য ৮ বাবো আদ্য হাতি।  
উত্তর দানর্ষ

## বিজ্ঞাপন।

আগামী ২৮ মে ও ২৯ মে অক্টোবর

১২ই ও ১৩ই কার্তিক মঙ্গল ও বুধবার হইবে।

কিনন হুগলী মধ্যম বিদ্যালয়ের  
নিগের পরীক্ষা পর্যন্ত পুস্তক উক্ত বিদ্যালয়  
বনে গৃহীত হইবে। পরীক্ষার বিষয় বাক্যলার  
ভাষা ব্যাকরণ কিকিৎ অক ও বৃহস্পতি  
ইতি।

তাং ২৮ মে সেপ্টেম্বর ১৮৬২।

বাক্যলার মধ্যবিভাগস্থ বিদ্যালয়  
সমূহ অকিমি এটিং  
ইনস্পেক্টর।

## বিজ্ঞাপন।

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরি

৮৬ নং কলেজ স্ট্রীট।

বাক্যলার উপাধ্যত ঐশ্বর্য্য  
৩৩ বৈদ্যবর্ণমা'বল উহার দ্বারা একশিত  
সমস্ত বিক্রয়ের সম্পূর্ণ ভার আমাধিগের  
পর অর্পণ করিমাছেন, অতএব আমাধিগের  
উক্ত গ্রন্থ সকল আমাধিগের নিকট হইতে  
হিলে প্রাপ্ত হইবেন ইতি।

প্রকাশিত পুস্তকের নাম।

বৈদ্যবর্ণমা'বল তৃতীয়বার সুপ্রিত  
পঞ্চদশী দ্বিতীয়বার সুপ্রিত  
ঐশ্বর্য্যবর্ণমা'বল তৃতীয়বার ও ভাষা  
বৈদ্যবর্ণমা'বল প্রতুর্কর্ষী  
বৈদ্যবর্ণমা'বল অধিকরণ প্রতি সংখ্যা  
মহাত্ম্যবর্ণমা'বল পুস্তকলোপাখ্যায়  
হর উপনিষদ  
লাভবর্ণমা'বল অধিকরণ  
বৈদ্যবর্ণমা'বল শারীরিক হুজের প্র



সোমপ্রকাশ ।

৪ঠা কার্তিক সোমবার ।

মারীত্ব ।

বিধাতার হৃদয় এই কি নিয়ম যে ২০  
নিশেধ হইয়া সুখে কালযাপন করি-  
তে পারিবে না? আমরা প্রায়ই দেখিতে  
পাইতেছি, এক একটি ভয় তাঁহার পিছ-  
নে লাগিয়া আছে। বঙ্গদেশীয়েরা এত  
দিন বস্তু তত্ত্বাদির ভয়ে নিঃশঙ্ক ভাবে  
ছিলেন। সে ভয়টি যেমন কিছু কমিয়া  
আসিয়াছে, তেমন ওদিকে মারীত্বের কা-  
ড়িয়া উঠিয়াছে। এটি ও জন্মপদ বিশে-  
ষের মারীত্বের কথা প্রায়ই অস্বাভাবিক  
প্রতিপোচন হইয়া থাকে। বারাসত প্র-  
তি করে একটি এম এমের বাস্তবতা হইয়া  
উঠিয়াছে বলিলে হয়। অল্প কয়েক বছ-  
র স্বাধিকার বিস্তার করিতেছে। পাণ্ডু-  
রো সমিহিত গ্রাম সকলের  
পাঠকগণ তা দৃষ্টে মনোনিবেশন,  
উদ্বুদ্ধ মনোভাৱে জিলাত অধিকার দেবপ্রাম  
অধিকার, সমস্ত গ্রামে অত্যন্ত মারী  
তা হইয়াছে। এত মারীত্ব সংক্রান্ত এক  
খান প্রেরিত পত্র পাঠকগণ যথাস্থানে  
বর্ণন করিবেন।

মধ্যে মধ্যে সবিত্তে পাওয়া যায়, মা-  
রীত্ব উপস্থিত হইলে তৎকালে কোন  
কোন স্থানে আপাততঃ তৎপ্রতীকারের  
কিছু কিছু চেষ্টা হইয়া থাকে কিন্তু তাহা  
সম্যক কল্যাণকর হয় না। বিশেষতঃ  
তাঁহার ভাবি মারীত্ব। বঙ্গদেশে কোন  
কমতা নাই। যাহাতে ওদিকে ওদিকে  
হয়, সেই সেই উদ্দেশ্যে বঙ্গদেশে কয়েকটি  
বর্তমানভাবে কর্তব্য। মারীত্বের ভয়-  
ভাত অনেকগুলি কারণ আছে। মারী-  
ত্ব অনুসন্ধান করিয়া অজ্ঞাত বঙ্গদেশ  
লর আবিষ্কার এবং জ্ঞাত হইয়া  
রূপকরণ চেষ্টা করিলে মারীত্বের ভয়  
হইবার সম্ভাবনা কম। মারীত্বের  
বর্ণনামে মারীত্ব ও দেশের

উভয়েরই সীমিত বহুমান হওয়া উচিত,  
অন্যথা কৃতার্থতা লাভ সম্ভাবনা নাই।  
যে অংশে গবর্ণমেন্টের আদর্শ যে অংশে  
দেশের লোকের বস্তু আদর্শ, তাহার  
উল্লেখ করিয়া দিতে হবে।

বর্ষাবসান সময়েরই প্রায় পাল্লী সময়ে  
এই বিকারাদির সাত্তিক প্রাদুর্ভাব হয়।  
ইহার কারণ নিকটস্থ জল নদে; অনেক  
ক গ্রামে দেখিতে পাওয়া যায়, এখানে ও  
পরিষ্কৃত রাস্তা, ঘাট ও সরোবর নদী মাঠ।  
চতুর্দিক বনে ও জলে পরিপূর্ণ হয়। লতা  
পাতা প্রভৃতি পচিয়া উঠে। গরুরা ক-  
দমের ভয়ে অধিক দূরে গমন করে না।  
রখা ও গৃহের পাখিও জলিল। মলমল  
প করে। পক্ষ সকল কক্ষমে ও দুর্গম  
জায়গায় পরিপূর্ণ থাকে, গমন করিয়া  
হইতে অতি অস্বাভাবিক কষ্টসিদ্ধি বাস, নিঃ-  
সৃত হয়, তাহার অস্বাভাবিকতা স্পষ্ট।  
সাত্তিক রোগ ও বিকার জন্ম। এ সম-  
কারণে পীড়া না হইলে বলা যায়, তাহা  
তাঁহার প্রতীকার ও তাহার উপায়  
নাই। অনেক স্থলে সুচিকিৎসক নষ্ট,  
বাচার চিকিৎসা করিয়া কেবল, তাহা  
নিতান্ত অনতিক্রম, তাহা দিগে। জ্ঞান পী-  
ড়ার শাস্তি শাস্ত দূরে থাকে। তাহা  
রূপিত হয়।

উপরে পীড়ার যে কারণ গুলি বর্ণিত  
হইল, গ্রামের লোকের ও রাজকর্মচারি-  
বিশেষ যদি সবিশেষ যত্ন থাকে, তাহাঁত  
নিরাকরণ ক্রমশঃ হইবে। গ্রামের প্রতি  
গৃহস্থ যদি যত্নসহিত যত্ন টিচিতে কিছু  
কিছু দান করিয়া গ্রামের রখা মনোবলদির  
উৎকর্ষ সম্পাদন চেষ্টা করে, তাহা সত-  
ক্ষেপে সম্পন্ন হইয়া উঠে। কিন্তু অস্বাভাবিক  
দেশের লোকের এমনি ক্রমশঃ যে সে  
চেষ্টা দূরে থাকুক, অনেক নিকট হইতে  
বঙ্গদেশে, নিঃসৃত হয় ও রখা, রখা বায়  
পরিষ্কৃত করেন। তাহা হইলে, অতঃপর তাঁ-  
হা হইতে দূরে থাকি। পরিষ্কৃত করিয়া গা-

মের রাস্তা, ঘাট ও পুষ্করিণী প্র-  
মত্ত ও পরিষ্কৃত করিবার এবং ক-  
প্রভৃতি কাটিয়া পরিষ্কৃত করিবার  
পাটন এবং যাহাতে গ্রামের মধ্যে  
চিকিৎসক ও উত্তম ঔষধ গুলি ও  
হয়, তাহারও চেষ্টা করুন।

গবর্ণমেন্টের কর্তব্য এই,  
নিম্ন কর্মচারিদিগের প্রতি দৃ-  
শ্যই আত্মা প্রদান করেন  
মধ্যে সে স্থানে বসে। অতঃপর  
তাঁহার কাটা হইবে। মের এবং  
প্রভৃতি অপরিষ্কৃত দৃষ্ট হইলে  
তাহা পরিষ্কৃত করান। রখা দিগে  
সংকট ক্রমশঃ নিমিত্ত গবর্ণমে-  
ন্ট প্রদান করিতেছেন তাহা এবং  
তাঁহা টায়ে দান উদ্ভূত হইবে  
কারণে বিনিয়োগিত কর। কর্তব্য  
এক যেমন পুলিশকর্মচারিদিগের  
তৎপরি কর্তব্য বোধে তাঁহারা যদি এই  
কারণে অনুষ্ঠান করেন, তাহা হইতে  
তাঁহাদের সম্ভাবনা। নিম্ন, গবর্ণমে-  
ন্টের দৃষ্ট দান। চিকিৎসকের  
তাঁহার সংকট রূপিত করিতে হইবে।  
যে দেশের লোকেরা নিম্ন নিম্ন  
সেই সেই স্থানেই হইবে চিকিৎসা  
গুলি ও চিকিৎসা হইবে।  
গবর্ণমেন্টের দান যা নদ পরিষ্কৃত  
প্রতিষ্ঠিত করিবার যে বীতি আছে তাহা  
পরিষ্কৃত করিতে হইবে। গ্রামের প্রায়  
অধি নিবার নিম্নমেন্ট চিকিৎসা দান  
কর্তব্য হইবে, থাকে। এমনি পদ  
বিস্তার গবর্ণমেন্ট অধি দান গ্রহণ  
এবং এই ভাবে গ্রহণ করিয়া গ্রামস্থ  
কর্ম কর্তব্য অস্বাভাবিক নিম্নপদ  
চতুর্থ, যখন যে স্থানে মারীত্ব উপ-  
হইবে, মেডিকেল কমিশন নিয়োগ  
তাঁহার সিদ্ধান্ত নির্ণয় করিয়া তৎপ্রতী  
চেষ্টা করা আবশ্যিক।





॥ अथ शिवस्य स्तुति ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ अथ शिवस्य स्तुति ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

শেষ দিন ও ক্ষণমাই, পৌর্বদিবস ইউক,  
 আর ১ মাস দিবস ইউক, প্রাতঃ - ইউক,  
 আর সাংকাল ইউক, পিতার ১২ বছর  
 মনে উদয় হইবে, তখনই চিত্ত ক্লান্ততার-  
 ১২ অংশ হইবে। পত্র প্রেরকও এ  
 ১২ অংশ করিয়াছেন। তবে এ তিনি  
 রাখিয়াছেন, 'সমুদয় পৃথিবীরই নীতি  
 এই যে যে নিয়মে যে কোন কথা সংঘটিত  
 হয়, সেই দিবস উপলক্ষই তাহার সারস্ব-  
 তমূলক হয়। পিতার যে দিবসে হৃদয় হ-

[illegible]

১। **স্বিকৃত** মনুজানাথ তর্করত্ন **এণী**  
**খাত** **এণী**। **যে** **খাত** **উক্ত** **যে** **প্র**



করিয়া যে পদ নিশ্চয় হয়, এতদ্বারা তা-  
হার অনেক জ্ঞান ঘাইতে পারিবে ।

২। অধিক রম্যমাণ্যে যে প্রবীণ এক  
খানি সূত্র গ্রন্থ । ইহাতে প্রায়শঃ যে সূ-  
ত্রবিধি আদ্য করিয়াছেন, তাহার সপ-  
ক্ষতা কবা হইয়াছে ।

৩। স্বতন্ত্র পৌচা । ইহাতে অমাবস্যা-  
র প্রভুত্বের বর্তমান অবস্থা সংবিত্তর বর্ণিত  
হইয়াছে ।

৪। কলুটোলা ব্রাহ্ম সমাজের বিতীর্ণ  
সংগ্রহের সত্য বক্তৃতা

৫। ব্রাহ্মসমাজ । উপরি উক্ত সমাজ  
প্রবর্তী হইতে উদ্ধৃত করিয়া ইহা  
সংগ্রহ করিয়াছেন ।

## বিবিধ সংবাদ ।

২৪এ আশ্বিন বৃহস্পতি বার ।

আটয়ার পেশারের এক জন পত্র প্রেরক  
বলেন সঙ্গত ক্ষেত্রি নগর পদপাল আসি  
রাহিল । তাহার প্রায় চারিজন শ্রমিক  
আসিল । সেই সময় অতিশয় গ্রীষ্ম হইয়া  
ছিল ।

সুদা পেশা কর্তৃক বন্দী হইয়া গেল কো-  
র্টের ১০ ইনবেন্টরী আদালতের রেইলও-  
য়ে পুলিশের ।

বিউনিশিপাল কমিশনারের এডমিনিস্ট্রেশন  
পর চৈতন্য হইয়াছে । নলিকাতাবাসীর বা-  
হ্যে ভাল অলপার ৩০০০ উপার উদ্ভাবন পূর্ব  
ক গবর্ণ মেন্টের নিকটে ১০০০টি করিয়াছেন ।

বাজারের চোরেরা ক্রমশঃ অধিক সঙ্খ-  
্য হইতেছে । কয়েক মাস পূর্বে তাহারা শু-  
ভ্রাতা প্রথম বিচারপতি ও গবর্ণমেন্টের এই-  
কোট পৌরোহিত্যের অর্থ অপহরণ করিয়া গেল ।

সম্রাটের মৃত উইলিয়ম ডেলিগনের নিজের  
১০০ টাকার মরগ ও একটি বহুক চুরি গিয়াছে ।  
অন্যভাবে তারোপের এই একটি উদ্ভব

২৪এ আশ্বিন শুক্রবার ।

আলাহাবাদে গেলের মৃত্যু  
করিয়াছেন ।

কলিকাতার চরিত্র মর্শনে

কোন ব্যক্তি বলিবেন প্রবর্তনীর মধ্যে অ-  
ধিক সংখ্যক তরলোক আছেন? কয়েক বি-  
টলি বলিয়াছেন কলিকাতার কনিসন বসিবার  
সময়ে মেজর ডিউয়ার্ডসন প্রধান সেনা পতি  
র নিশা করিয়াছিলেন উক্ত কমিশনের অধ্যক্ষ  
বলেন সে কথা মিথ্যা ।

কাগজের আলিসের বিচার আরম্ভ হইয়া-  
ছে । তিনি ১৮,০০০ টাকা শুদ্ধকরণ করিয়াছেন  
বলিয়া উক্ত অপবাদ দেওয়া হইয়াছে

সর বাণেশ্বর পিকক সেনিয়র জজের কাছে  
এই আত্ম করিয়াছেন তাহার প্রধান ৩২ বি-  
চাবালরে প্রায়ের ইংলিশ ও বাংলা দুই  
প্রকার মকল পাঠাইয়াছেন । সেনিয়র জজ  
সঙ্গে ক্রমশঃ ইংলিশ ও বাংলা প্রদর্শিত কবাই  
ইহার উদ্দেশ্য ।

২৪এ আশ্বিন শনিবার ।

মহীশ্বর রেকর্ডার বলেন সম্রাটের এডমিন-  
স্ট্রেশন কয়েক জন দস্য উৎপাত করিয়াছিল  
কিন্তু পুলিশের সঙ্গে তাহার নিরাক্ষর হইয়াছে  
মোদাবতীর বাসের কার্য নাগপুরের কমিশন  
রের হস্তে দেওয়া হইবে ।

উক্ত পত্র আরও বলেন সর বাউল কি যা-  
রের আত্ম তত্ত্বতা প্রধানতম বিচারালয়ে  
বিচার পতির পদ ত্যাগ করিলেন ।

বোম্বাই স্টেটে রিভিউ প্রবণ করিয়াছেন  
স্পেনের রাজ্যী মাতরিকুনগরে শিখ প্রদর্শন  
ন করিবার জন্য এক কমিশন নিযুক্ত করিয়া  
হইতেছে ।

২৪এ আশ্বিন সোমবার ।

নীল গিরিধার বলেন লার্ড এলগিন নীল  
উত্কাষণ্ডে হইবেন । তথা হইতে তিনি স-  
র উইলিয়ম ডেলিগনের পতিত জব্বুরে গমন  
করিবেন ।

ওয়ার্ডেন সাহেব ১৮ ১১ ১২ অব্যয় পুলিশ  
ন বিপেট প্রকাশ করিয়াছেন । লেপটনান্ট গ-  
বর্ণর তাহার কার্য দক্ষতার সন্তুষ্ট হইয়াছেন ।  
বক্তাঃ ওয়ার্ডেন সাহেব কমিশনের হওয়া অ-  
বধি কলিকাতার পুলিশের অনেক উন্নতি হই-  
য়াছে ।

আলাহাবাদে গেলের মৃত্যু  
এক জন মুসলমান এক জন ইটালীয়  
সৈনিক পুরুষের মধ্যে খুশি হইয়া অপমান করি

রাহিল ত হার এক বৎসর পেরাধ হই  
কিন্তু নাজিহান পুরের জজের নিকটে  
ল করিয়া সে যুক্ত হয় । অধিকৃত প্রথম  
পতি জজের উপর বিরুদ্ধ হইয়া লার্ড  
নকে তাহা আদায় করিয়াছেন । মুসলমান  
কোন ওরুতর দোষ করে নাই যে তাহ  
ক বৎসর বেয়াস হইতে পারে ।

বিবিজান নারী এক বারাকনা পুলসন  
ক এক জন বি বিলিকে অতিশয় ভাল বা-  
পুলসন কিছুদিন তাহার প্রতি অহুত  
সম্রাটের বিবাহ করিবে শুনিয়া বিবি  
নিম পান করিতে । বিবি পান করিয়া তাহার  
পয়সার হয় এবং এতদ্বারা তাহার প্রতি  
গণকে বলে । তদনুসারে তাহাকে চিকিৎসা  
য়ে লইয়া যাওয়া হয় কিন্তু দুই ঘটনার  
ক হার হইয়াছে

কিনিক প্রবণ করিয়াছেন স্পেনের  
এক জন কমিশন প্রধানতম বিচার  
একটি মত প্রদান করা হই  
১৮১১ টি মৃত্যু বলেন লেপটনান্ট গবর্ণ  
বাসন্ত পুত্রি স্থানে উদ্বা ও চিকিৎসা  
এই সম্রাটের এডমিনিস্ট্রেশন এই, সকল  
এই সম্রাটের হইয়াছেন, তাহার  
নিরাক্ষর না তকাল এক কমিশন বসবে  
১৮১১ টি মৃত্যু বলেন লেপটনান্ট গবর্ণ  
এই সম্রাটের এডমিনিস্ট্রেশন এই, সকল  
এই সম্রাটের হইয়াছেন, তাহার  
নিরাক্ষর না তকাল এক কমিশন বসবে  
১৮১১ টি মৃত্যু বলেন লেপটনান্ট গবর্ণ

সম্রাটের বি বিলিকে অতিশয় ভাল বা-  
পুলসন কিছুদিন তাহার প্রতি অহুত  
সম্রাটের বিবাহ করিবে শুনিয়া বিবি  
নিম পান করিতে । বিবি পান করিয়া তাহার  
পয়সার হয় এবং এতদ্বারা তাহার প্রতি  
গণকে বলে । তদনুসারে তাহাকে চিকিৎসা  
য়ে লইয়া যাওয়া হয় কিন্তু দুই ঘটনার  
ক হার হইয়াছে

২৪ আশ্বিন মঙ্গল বার ।

কিনিক বলেন শবর সেন সাহেব  
টোবরে উৎসব হইতে বাত্মা ও হইয়াছে  
ইনি যুক্ত রিচি সাহেবের সঙ্গে মিল  
হইবেন ।

উক্ত পত্র বলেন চন্দন নগরের  
এক প্রবর্তকের প্রাণ নষ্ট করিয়া  
করিয়াছেন । কলিকাতার পুলিশের  
যুক্ত করিবার নিমিত্ত কলিকাতা পুলিশের  
চারিকেই নিষিদ্ধ ছিলেন, ওয়ার্ডেন সা-  
তাহা দিগকে যুক্ত করিয়া প্রেরণ করিয়া

সিঙ্গিগোলেট কলিকাতার  
দিল্লীর বাসিন্দার মৃত্যু হইয়াছে ।

১৯২০-২১ বৎসর হইয়াছিল। বাসনাহকে  
শেষ হইতে বহিষ্কৃত করাতে মনোহুঃখেই  
প্রাণত্যাগ করিয়াছেন।

মাস্তাজ টাইমস কছেন লাকেসারারের  
মুরব্বির সাহায্যার্থে বোম্বাইয়ে ২ লক্ষ  
টাকা আদায় হইয়াছে।

উক্ত পত্র আরো কছেন কামাণার নার-  
ম ডট্টল সাহেবের প্রভাবে তথায় ১৪ টি  
শ্রীলোক এসব কথাইবার দিয়াই লিখিত  
হইয়া পড়িয়া গিয়াছে। ইহাও ষষ্ঠশতাব্দী,  
১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের  
১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের

১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের  
১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের

১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের  
১৬০০ খ্রীঃাব্দের অন্তরোখে যত দিন টাহাভের  
সমাপ্ত ন, হয়। গবর্ণমেণ্ট ইংলিণ্ডের

৩১-এ আখির বুধবার।

মাস্তাজ টাইমস রেকর্ডের সংবা-  
দাতার নিকট লেখা করিয়াছেন যেও পুলি-  
সের অধ্যক্ষ মেণ্টেমন্টে মেকেলি সাহেবের  
নামে পুলিস মেনার। এই বলিয়া অভিযোগ  
করিয়াছে যে তাহারা হর মাসের বেতন প্রা-  
প্ত হয় নাই। উক্তই অন্য টাকারও হিসা-  
ব পাওয়া যায় নাই। তিনি খুঁত হইয়াছেন  
দ্বারা বিচার হইবে।

বসিয়ারা এখনও কাঁড় হই নাই, পুনরা-  
র উৎপাদ করিবে একদল সত্বেবনা অহু  
তাহারা কহে তাহাদের রাজ্য ছাড়িয়া না দি-  
লে তাহারা কাত হইবে না। রাজ্য একবার  
লইলে কি আর সেওরা যাব।

কিম্বদের একজন সংবাদ দাতা কছেন  
যথ্য ভারত বণের কমিশনার টেম্পল সাহেবে-  
র বরে তথাকার সর্ভিসেব উন্নতি হইতেছে।  
তিনি রাজ্য খতিয়ানের উৎকর্ষ সাধনে সবি-  
শেষ মনোযোগী হইয়াছেন। ১৭ লোকের এ-  
কজন

১৭ লোকের একজন

মাস্তাজ টাইমস রেকর্ডের সংবা-  
দাতার নিকট লেখা করিয়াছেন যেও পুলি-  
সের অধ্যক্ষ মেণ্টেমন্টে মেকেলি সাহেবের  
নামে পুলিস মেনার। এই বলিয়া অভিযোগ  
করিয়াছে যে তাহারা হর মাসের বেতন প্রা-  
প্ত হয় নাই। উক্তই অন্য টাকারও হিসা-  
ব পাওয়া যায় নাই। তিনি খুঁত হইয়াছেন  
দ্বারা বিচার হইবে।

উক্ত পত্র আরো কছেন প্রধানতঃ বিচা-  
রালয়ে আর দুই জন অসকে কিছু দিনের অ-  
ন্য নিযুক্ত করিবার অন্তসংগ কথিরা প্রধান  
বিচার পতি গবর্ণমেণ্টে দি. পি. রাছেন।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া কছেন অহরল হোসে  
ন নামে এক ব্যক্তি বিদোহ কালে ২ জন ই-  
গোপীয়কে ধৃত করিয়া লখনৌয়ের বেগমের  
র হস্তে সমর্পণ করিয়াছিল, বেগম তাহাদের  
জীবন নাশ করেন, অহরল হোসেন আপন নাম  
পরিবর্তন করিয়া নিখুঁত হোসেন নাম গ্রহণ  
করিয়া নিজামের অধীনে এক তালুক দারের  
নিকট কর্তৃ প্রাপ্ত হইয়া অবস্থিতি করিতে

নিজামের অনুমতি লইয়া কাগেন  
কুটার এবিষয় অনুসন্ধান করিতে গিয়াছিলে  
ন কিন্তু সে ব্যক্তি এই সমাজের পাইয়া প্রস্থান  
করে তাহার খুঁত ও জী ধৃত হয়, পক্ষাৎ অ-  
নেক অনুসন্ধানের পর সে ব্যক্তি ও ধৃত হই-  
য়াছে অতি শীঘ্র বিচার হইবে।

ওবারলাও মিউন পত্রে দুই হইল ইংলণ্ডে  
এক কাগলের ক'রখানায় আগুন লাগিয়া অ-  
নেক ক্ষতি হইয়াছে। প্রায় ১০০০ টাকার  
সামগ্রী অগ্নিসং হইয়া গিয়াছে।

অপর এক জন শ্রীলোক আপন ২ টি  
শিশু লইয়া আপন ইচ্ছায় জলমগ্ন হই-  
য়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে। প্রথমতঃ সন্তান দুটি-  
কে জলে নিক্ষেপ করে পরে আপনি গিয়া  
পড়ে, সকলেরই মৃত্যু হইয়াছে। কারণ অনুস-  
ন্ধান করিয়া শির হইয়াছে যে এই শ্রীলোকের  
দ্বারী তাহাকে অতিশয় কষ্ট দিত সেই হুগে  
সে প্রাণত্যাগ করিয়াছে। এইকণ লুপৎস  
অনেক আছে।

আর একটি শ্রীলোক তাহাচারে প্রাণত্যা-  
গ করিয়াছে। তাহার দ্বারী তাহাকে কয়েক  
দিন আহার দেয় নাই। সে ক্রমে মৃতপ্রায় হ-  
ইয়া এক ব্যক্তি তাহাকে আগুন লাগিতে ম-  
ইয়া তার কিছ তাহার প্রাণ রক্ষা করিতে স-  
মর্থ হয় নাই।

৩১-এ আখির বুধবার।

হরকরা কছেন যে সর খেদুস আউটব্রা  
অত্যন্ত পীড়িত হইয়া তাই কলি অবস্থিতি ক-  
রিতেছেন।

আলাহাবাদ গেজেট কছেন ১৭ই মবেবর  
অলিগড় হইতে হাটাস গবর্ণমেন্ট এক দাখা  
রেইলওয়ে খুলিবে।

ক্লেভ অব ইণ্ডিয়া কছেন বেহালার  
সাহায্যার্থে মৌলমিমে ৩০৪৫০ এবং  
৩১৫০ টাকা সংগৃহীত হইয়াছে।

হরকরা কছেন বোম্বাইয়ের পুর্বিভাগ ৭ নম্বর  
সর অর্ডার কর্তৃক অসংখ্য কলি  
নেক মৃত্যু হইয়াছেন।

ক্লেভ কছেন কোচিনে বনভাগ অগ্নি  
খিণ্ডন হুতি হইয়াছে।

আলাহাবাদ গেজেট কছেন সাহাবা  
এক জন মুলগার এক ইউরোপীয় সেবার  
মুখে খুঁত লিখিয়াছিল বহিরা বৈমি-  
নিক মাস্তাজ টাইমসকে ১ বৎসরের মিথিত  
কারাবাসের আজ্ঞা দিয়াছিলেন। তাহা  
কার অজ সাহেব সে আজ্ঞা রদিত করিয়া  
ছেন। প্রধান সেবারতি ইংলণ্ড করিয়া  
গবর্ণর সাহেবকে লিখিয়াছেন। তাহা  
বের এতাদৃশ চক্রি আর উপর দুই মাস  
রেন। বৈমিনিকিদের ইচ্ছা হইয়াছে  
দণ্ডাজ্ঞা আবশ্যক হইবে। ইংলণ্ড-এ সেবার  
হইতে পারে না।

১৭ই কার্তিক বুধবার।

কিম্বদ কছেন, যথিক সত্যসত্যমুখের  
গবর্ণমেণ্টের নিকটে এই বলিয়া আবেদন করি-  
য়াছেন যে গরুর গাভির গোষ্ঠীরাই বোম্ব  
এক বার গোলাবোজ করিয়াছিল, পুনরায় সে  
কণ করিতে না পারে এবং একটা উপায় ক-  
কর্তব্য। আলাহাবাদের সাংসারিক ব্যাপারে কা-  
কি অসুবিধা আছে, গবর্ণমেণ্ট তাহাও বি-  
তথ্যিয়া দিবে। এক গাভি কোম্ব মি. এই  
সেই ক গোষ্ঠীরাই গরু দুই মাস

আউটব্রা পোপার কছেন দুই বৎসর বরসে  
র একটি বালক কলিচিতে অলমগ্ন হইয়াছিল  
তাহার মাতা তাহাকে রক্ষা করিবার অ-  
আপনি জলে কলি দিয়া পতিত হইল, হুগে  
প্রাণ নাশ হইয়াছে।





(২) বহুজ্ঞ ও যৌনিকতা কি বৈদিক জৈ-  
বী-বল? জায়াদিগের লেখায় কি কুলীন এট ব-  
ৈদিক জৈবী শব্দের বিশেষণ ছিল? ২৭৪  
জায়াদিগের লেখা কিভাবে ব্যাখ্যাত হইল? ২



ও আটবছর পূর্ণ হইয়া গেল।  
বিবাহ কাল আসিলে বিহিতক  
দিন বৎসরের পর সাহসে  
কম্যার বাগ্‌বানফাল শ. ৫২ বি  
তে আর কোন সন্দেহ রহিল  
যরা এই সিদ্ধি ৫৫ অনুমোদন

২৬এ তালিকের সোম প্রকাশে নিম্নি:

“বেদান্তবাণীশ আজন্মদ্বন্দ্ব চূড়  
কন্যা বিপদ্যতে, ইত্যাদি শাস্ত্র  
করিয়া তিস বৎসরের পর সাত  
পঞ্চাশৎ বাৎসর্যের কাল মিলন  
হেঁচা পাইয়াছেন, কিন্তু অনুধাবন  
দেখিলে এ চেই। সুসমস্ত হইতে  
চূড়ার পরই বাধাদান করিতে হইত  
‘সংগে’ একপ করিতেছে না। তা  
অনিষ্টের নিবারণ চেই। হই  
ইচ্ছা করিয়া সে অনিষ্টে ‘পড়া  
বিবাহের ছই এক মাস পূর্বে ব  
নের নিষম করিলে শাস্ত্র ও যুক্তি উ  
অবাহিত থাকে, অথচ একটী বিষম  
যুক্তির শাস্ত্র, লোক, ও যুক্তিবি  
হইবে যুক্তি লাভ হয়। ..

কেন, অবাগীশার উচিত চি  
 তিনি আমাদিগের এই সিদ্ধান্তকে  
 বচন ও মত যুক্তি দ্বারা অপসিদ্ধান্ত  
 প্রতিপন্ন করিয়া দেন, নতুবা এই সিদ্ধান্ত  
 সত্য হইবে। 'কার' করিয়া।

संस्कृत-विभागः

ବିଷୟାମ୍ଳ ୫୫୩

ବିଦ୍ୟାବାହନ ଓ ସଂଗ୍ରହ

“ प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रान्तमहती न वीथतां

वार्डिक भूला ३ टैक  
वार्डिक भूला १० टैक

করিয়া বিস্তার করা ভার, যেখানে  
ওণ কবিলেন। তাহাই তাঁহার মতে বিস্তার  
বৃত্তির অন্তর্গত। এইরূপে বাহার  
বুঝি, তদন্তসারে বহি বিস্তার বৃত্তির  
হয়, তাহা হইলে তৎপ্রকারে বীজের  
স্বপক সত্যর একই নীতি। মিথিষ্ট  
সেওরা উচিত। আচারবিধির মতে  
মূল। বৃত্ত্যধিকরণ যে করেবর  
আছে, তাহা রহিত করাই করি।  
ত এ দেশের লোকে বাজনা  
বিধ কর নবকে কিতিং অধিক  
সেবার পর নাই কাড়র  
আবার যে সকল ব্যক্তি  
ভূমিতে বাসিষ্ঠ্যভিমান  
গের নিকট হইতে অধিক  
তাঁরা অধিকতর  
বলা বাহুল্য। তাহারা  
অভ্যাচারে আন  
হইলে এ ব্যক্তির  
হয়, প্রকারে  
দিগের যে  
তাঁরা  
বিকীর্ণ, বিবেচন  
হইতে  
উপনিবেশ  
কেন্দ্র, কেন্দ্র  
সেইরূপ  
আচারবিধির  
বাঁধন  
সক  
বাঁধন  
কোন



১) থাকে। পৃথিমধ্যে এক এক  
স্বাধীন জাত পাল্লার্থে ব্যয় বহু  
করে একত্র করিয়া লইয়া থাকে।  
আমাদিগের খাড়া জুখবা স্থল  
প্রতি প্রতিপাত করা হয় না।  
এমে নীত হইতে তাহার। যত্নপূ  
তে পরিচাল্য পাইয়া। সেখানে  
কিছুমান্য খাধীনতা থাকে না।  
কিন্তু খাধীনতা না থাকিলে তা  
নিষ্কার থাকে না। সুনির্ভর পাইয়া  
বহুনা সহ্য করিতে না পারিয়া  
করে। উহা বিবের অসংখ্য হইতে  
পরিচাল্য লাক্ত হয় না। এই সমস্ত  
বিষয় বিচারার্থ একটি নিম্নোক্ত  
মুদ্রাক্ষরিকের বর্তন হই  
করিলে প্রাপ্তিত্য এবারে  
সারাদেশে ব্যবহৃত পত্র  
কর্তৃক প্রচার করা হইবে।

তাঁহাচিহ্ন কথ্য কহিতেছি না; যে সমস্ত  
নীচাশয় সম্পাদক অকার্য্য অপরের মান  
সম্মানহানি করিয়া খীর পত্রের প্রীতি  
সম্পাদন বাসনা করেন, অথ সেই জন্ম  
জন্মিগণের কথারই প্রসঙ্গ হইতেছে।

পরিদর্শক সম্পাদককে উল্লিখিত  
সম্পাদক বল প্রবর্ত দেখিয়া আমা  
দিগের আতঙ্কিত কোত জগিয়াছে।  
অমর কখন তাঁহার অনিষ্ট করি নাই,  
এই ইচ্ছা সাধন চেষ্টা করিয়াছি। সে কথা  
তিনি স্বয়ংই স্বীকার করিয়াছেন। কিন্তু  
তিনি যে কেন আমাদিগের অনিষ্ট চেষ্টা  
পাইতেছেন, আমরা বুঝিতে পারিতেছি  
না। তাঁহার সহিত আমাদিগের প্রতিযোগি  
তা নাই, তাঁহাকে আমরা প্রতিযোগী  
জ্ঞানও করি না। কিন্তু এই কার্তিকের পরি  
দর্শকে এইভাবে লিখিত হইয়াছে যে আ  
মরা প্রবৃত্ত বাবু কালীপ্রসন্ন সিংহের নি  
কটে গিয়া এই অনুরোধ করিয়া আসি  
রাছি যে বেদান্তবাসীশের প্রেরিত পত্র  
পরিদর্শকে প্রচারিত না হয়। আমরা  
এত দুর্ব ও মীচ মাই যে কাহাকে এবিধ  
অসম্মত অনুরোধ করিব। এ কথা আমরা  
গত বারের সোমপ্রকাশের প্রেরিত স্থলে  
লিখিয়া দিয়াছি। কিন্তু পরিদর্শক সম্পা  
দক কি প্রমাণে ও কি কারণে যে উল্লি  
খিত কথা লিখিয়াছেন, অবিলম্বে তাহা  
আমাদিগকে জানাইবেন। অন্যথা হাই  
কোর্টে তাঁহার সহিত আমাদিগের সাক্ষাৎ  
হইবে। আমরা ধন ও গ্রাণ অপেক্ষাও  
চরিত্রকে অধিক মূল্য জ্ঞান করি। পরিদ  
র্শক সম্পাদক আমাদিগের সেই নির্মল  
চরিত্রকে কলুষিত করিতে উদ্যত হইয়া  
ছেন। এ চেষ্টাটি তাঁহার অবিদ্যাকারিতা  
রূপ নয়, তিনি সুবি পূর্ব আমাদিগের  
অনিষ্ট সাধনের অভিপ্রায়েই চেষ্টা করি  
য়া উল্লিখিত প্রকার লিখিয়াছেন। অত  
এব তাঁহার এ অপরাধ কোন ক্রমে ক্ষমা  
করা যোগ্য নহে।

ঐযুক্ত কালীপ্রসন্ন সিংহের  
প্রেরিত পত্র প্রকাশ করা  
হইয়াছে কেন?

পাঠকগণ! আজি আমরা আপনাদি  
গকে কিরূপে বিরক্ত করিতে চলিলাম।  
আপনারা ক্ষমা করিবেন। যে বিষয়ের প্র  
সঙ্গ করা হইতেছে, ইহা যে কেবল আপ  
নাদিগের বিরক্তিকর একপ নয়, আমাদি  
গেরও নিতান্ত অসুবিধা; অসুখ ও ক্ষেত  
কর। কোন ক্রমে এতপ্রকারে আমাদি  
গের উদ্ধা ছিল না। অগত্যা আমাদিগকে  
এবিধে হস্তক্ষেপ করিতে হইতেছে।

যে বিষয় লইয়া বেদান্তবাসীশের স  
হিত আমাদিগের বিবাহ হইতেছে, পাঠ  
কগণের যদি অরুণ না থাকে, সহজেই  
সহ্য হইয়া উল্লিখিত হইতেছে।

প্রায় তিন মাস হইল, বেদান্তবাসীশ বা  
কিনাতা কুলীন বৈদিক জৈনীর কুলসম্বন্ধের  
কাল পরিবর্তন সংক্রান্ত একটি প্রস্তাব লি  
খিয়া কতকগুলি পুস্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত  
করেন। উহা একখণ্ড আমাদিগের নিকটে  
প্রেরিত হয়। আমাদিগের কেবল নিয়ম  
আছে, আমরা উহার ওণ দোষ বিচার  
করত হইলাম; দেখিলাম প্রায় ষাণ্ঠি সা  
রবান হয় নাই; কে প্রসঙ্গে যে যে দোষ  
বোধ হইল, আমরা তাহা ২৪এ তারিখের  
সোমপ্রকাশে লিখিয়া গিলাম। বেদান্তবা  
সীশের বিরুদ্ধে অপমানিত হইয়া পড়ি  
ল। তিনি যার পর নাই, কুলিত (১)  
হইয়া উঠিলেন এবং বৈরনির্ঘাতন চেষ্টা  
শেষিতে লাগিলেন। তিনি প্রথমে আপ  
নার মনের ভাব গোপনে রাখিয়া আমাদি  
গের নিকটে একখানি প্রেরিত পত্র পা  
ঠাইলেন। প্রস্তাবে বলা বিষয়ের কোন কথা  
না থাকায় প্রস্তাবে আমাদিগের ইচ্ছা

(১) কুলী কুলিয়ার কোন সাক্ষ্য প্রমাণ  
বিহীন। তিনি আমাদিগের বিরুদ্ধে  
কোন প্রমাণ প্রদান করেন নাই।

















সেখপ্রকাশ ।

টা অকরে, যোগ করিয়া পাঠক বুঝাশুধে। পা-  
 ঠ করেন : আসন্ন। গত বারের পাতা দেখিলেই  
 একটি একের আঁকর পাবিব ও আর একটি শব্দ কু-  
 তন যোগে হইয়াছে, অর্থাৎ এ-এর বেন লের  
 প না হয় । শ্রীমানমচার বেলাই বাগীশ

৪. আশ্বিন ১৩৮৩

পাঠকগণ! দেখুন বেদান্তবাস্তুরূপের  
 এই পত্রে দুটি মূল বস্তু, ১. উক্ত বে  
 দান্ত হইয়াছে, ২. ৪৫ ১৪ ১৫ নং পত্র  
 কতক নাই, ৩. উক্ত পত্রের ১. ২. ৩. ৪. ৫. ৬. ৭. ৮. ৯. ১০. ১১. ১২. ১৩. ১৪. ১৫. ১৬. ১৭. ১৮. ১৯. ২০. ২১. ২২. ২৩. ২৪. ২৫. ২৬. ২৭. ২৮. ২৯. ৩০. ৩১. ৩২. ৩৩. ৩৪. ৩৫. ৩৬. ৩৭. ৩৮. ৩৯. ৪০. ৪১. ৪২. ৪৩. ৪৪. ৪৫. ৪৬. ৪৭. ৪৮. ৪৯. ৫০. ৫১. ৫২. ৫৩. ৫৪. ৫৫. ৫৬. ৫৭. ৫৮. ৫৯. ৬০. ৬১. ৬২. ৬৩. ৬৪. ৬৫. ৬৬. ৬৭. ৬৮. ৬৯. ৭০. ৭১. ৭২. ৭৩. ৭৪. ৭৫. ৭৬. ৭৭. ৭৮. ৭৯. ৮০. ৮১. ৮২. ৮৩. ৮৪. ৮৫. ৮৬. ৮৭. ৮৮. ৮৯. ৯০. ৯১. ৯২. ৯৩. ৯৪. ৯৫. ৯৬. ৯৭. ৯৮. ৯৯. ১০০. ১০১. ১০২. ১০৩. ১০৪. ১০৫. ১০৬. ১০৭. ১০৮. ১০৯. ১১০. ১১১. ১১২. ১১৩. ১১৪. ১১৫. ১১৬. ১১৭. ১১৮. ১১৯. ১২০. ১২১. ১২২. ১২৩. ১২৪. ১২৫. ১২৬. ১২৭. ১২৮. ১২৯. ১৩০. ১৩১. ১৩২. ১৩৩. ১৩৪. ১৩৫. ১৩৬. ১৩৭. ১৩৮. ১৩৯. ১৪০. ১৪১. ১৪২. ১৪৩. ১৪৪. ১৪৫. ১৪৬. ১৪৭. ১৪৮. ১৪৯. ১৫০. ১৫১. ১৫২. ১৫৩. ১৫৪. ১৫৫. ১৫৬. ১৫৭. ১৫৮. ১৫৯. ১৬০. ১৬১. ১৬২. ১৬৩. ১৬৪. ১৬৫. ১৬৬. ১৬৭. ১৬৮. ১৬৯. ১৭০. ১৭১. ১৭২. ১৭৩. ১৭৪. ১৭৫. ১৭৬. ১৭৭. ১৭৮. ১৭৯. ১৮০. ১৮১. ১৮২. ১৮৩. ১৮৪. ১৮৫. ১৮৬. ১৮৭. ১৮৮. ১৮৯. ১৯০. ১৯১. ১৯২. ১৯৩. ১৯৪. ১৯৫. ১৯৬. ১৯৭. ১৯৮. ১৯৯. ২০০. ২০১. ২০২. ২০৩. ২০৪. ২০৫. ২০৬. ২০৭. ২০৮. ২০৯. ২১০. ২১১. ২১২. ২১৩. ২১৪. ২১৫. ২১৬. ২১৭. ২১৮. ২১৯. ২২০. ২২১. ২২২. ২২৩. ২২৪. ২২৫. ২২৬. ২২৭. ২২৮. ২২৯. ২৩০. ২৩১. ২৩২. ২৩৩. ২৩৪. ২৩৫. ২৩৬. ২৩৭. ২৩৮. ২৩৯. ২৪০. ২৪১. ২৪২. ২৪৩. ২৪৪. ২৪৫. ২৪৬. ২৪৭. ২৪৮. ২৪৯. ২৫০. ২৫১. ২৫২. ২৫৩. ২৫৪. ২৫৫. ২৫৬. ২৫৭. ২৫৮. ২৫৯. ২৬০. ২৬১. ২৬২. ২৬৩. ২৬৪. ২৬৫. ২৬৬. ২৬৭. ২৬৮. ২৬৯. ২৭০. ২৭১. ২৭২. ২৭৩. ২৭৪. ২৭৫. ২৭৬. ২৭৭. ২৭৮. ২৭৯. ২৮০. ২৮১. ২৮২. ২৮৩. ২৮৪. ২৮৫. ২৮৬. ২৮৭. ২৮৮. ২৮৯. ২৯০. ২৯১. ২৯২. ২৯৩. ২৯৪. ২৯৫. ২৯৬. ২৯৭. ২৯৮. ২৯৯. ৩০০. ৩০১. ৩০২. ৩০৩. ৩০৪. ৩০৫. ৩০৬. ৩০৭. ৩০৮. ৩০৯. ৩১০. ৩১১. ৩১২. ৩১৩. ৩১৪. ৩১৫. ৩১৬. ৩১৭. ৩১৮. ৩১৯. ৩২০. ৩২১. ৩২২. ৩২৩. ৩২৪. ৩২৫. ৩২৬. ৩২৭. ৩২৮. ৩২৯. ৩৩০. ৩৩১. ৩৩২. ৩৩৩. ৩৩৪. ৩৩৫. ৩৩৬. ৩৩৭. ৩৩৮. ৩৩৯. ৩৪০. ৩৪১. ৩৪২. ৩৪৩. ৩৪৪. ৩৪৫. ৩৪৬. ৩৪৭. ৩৪৮. ৩৪৯. ৩৫০. ৩৫১. ৩৫২. ৩৫৩. ৩৫৪. ৩৫৫. ৩৫৬. ৩৫৭. ৩৫৮. ৩৫৯. ৩৬০. ৩৬১. ৩৬২. ৩৬৩. ৩৬৪. ৩৬৫. ৩৬৬. ৩৬৭. ৩৬৮. ৩৬৯. ৩৭০. ৩৭১. ৩৭২. ৩৭৩. ৩৭৪. ৩৭৫. ৩৭৬. ৩৭৭. ৩৭৮. ৩৭৯. ৩৮০. ৩৮১. ৩৮২. ৩৮৩. ৩৮৪. ৩৮৫. ৩৮৬. ৩৮৭. ৩৮৮. ৩৮৯. ৩৯০. ৩৯১. ৩৯২. ৩৯৩. ৩৯৪. ৩৯৫. ৩৯৬. ৩৯৭. ৩৯৮. ৩৯৯. ৪০০. ৪০১. ৪০২. ৪০৩. ৪০৪. ৪০৫. ৪০৬. ৪০৭. ৪০৮. ৪০৯. ৪১০. ৪১১. ৪১২. ৪১৩. ৪১৪. ৪১৫. ৪১৬. ৪১৭. ৪১৮. ৪১৯. ৪২০. ৪২১. ৪২২. ৪২৩. ৪২৪. ৪২৫. ৪২৬. ৪২৭. ৪২৮. ৪২৯. ৪৩০. ৪৩১. ৪৩২. ৪৩৩. ৪৩৪. ৪৩৫. ৪৩৬. ৪৩৭. ৪৩৮. ৪৩৯. ৪৪০. ৪৪১. ৪৪২. ৪৪৩. ৪৪৪. ৪৪৫. ৪৪৬. ৪৪৭. ৪৪৮. ৪৪৯. ৪৫০. ৪৫১. ৪৫২. ৪৫৩. ৪৫৪. ৪৫৫. ৪৫৬. ৪৫৭. ৪৫৮. ৪৫৯. ৪৬০. ৪৬১. ৪৬২. ৪৬৩. ৪৬৪. ৪৬৫. ৪৬৬. ৪৬৭. ৪৬৮. ৪৬৯. ৪৭০. ৪৭১. ৪৭২. ৪৭৩. ৪৭৪. ৪৭৫. ৪৭৬. ৪৭৭. ৪৭৮. ৪৭৯. ৪৮০. ৪৮১. ৪৮২. ৪৮৩. ৪৮৪. ৪৮৫. ৪৮৬. ৪৮৭. ৪৮৮. ৪৮৯. ৪৯০. ৪৯১. ৪৯২. ৪৯৩. ৪৯৪. ৪৯৫. ৪৯৬. ৪৯৭. ৪৯৮. ৪৯৯. ৫০০. ৫০১. ৫০২. ৫০৩. ৫০৪. ৫০৫. ৫০৬. ৫০৭. ৫০৮. ৫০৯. ৫১০. ৫১১. ৫১২. ৫১৩. ৫১৪. ৫১৫. ৫১৬. ৫১৭. ৫১৮. ৫১৯. ৫২০. ৫২১. ৫২২. ৫২৩. ৫২৪. ৫২৫. ৫২৬. ৫২৭

[illegible]

বা বলিষ্ঠা কর্তী  
 হতে পাটের জাই  
 পাতে কন্যা দান  
 হন, সেটা ব্যব  
 নিখিয়াহিল্যম, ডি  
 য়া জাইতে পাট  
 দেওয়া যায় না। ই  
 নিখিয়াহিল্যম,  
 'পাতে কন্যা দান  
 লীম বৈদিক  
 কোম ২

'যা'ই হউক  
 মানুষবাণী শব্দে  
 কোপ পরিত্যাগ  
 করুন, এবং হৃ  
 কান্ত আনন্দ কা  
 নেক্টের অন্ত  
 রিলে আমরা  
 প্রভা করিনাং

[illegible]

१. साहित्य ब्रह्मदेव साह-  
२. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
३. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
४. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
५. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
६. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
७. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
८. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
९. साहित्य ब्रह्मदेव सा-  
१०. साहित्य ब्रह्मदेव सा-

**THE**

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

**THE UNIVERSITY OF CHICAGO**

1950年10月1日

इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः

৬ বিদ্যা, এ সবদ্বারাতে উ-  
দ্বিগ্ধে বিনা সম্বন্ধে আট

ਸ੍ਰ. ਜੀਤ ਕੁਮਾਰ ਸਾਹਿਬ

কলকাতা ডেপুটি কমিশনার  
কলকাতা, মে ১৯৩৩ খ্রিঃ

ਸਾਮਾਜਿਕ ਧਾਰਮਿਕ ਅਤੇ ਸਾਮਾਜਿਕ

কিন্তু আচরণের চেতন

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१. आर्य समाज के संस्थापक

काश द्रव्य मज्जल बहि-  
मज्जल अथ अष्टादशोऽध्यायः

[illegible]

হুটেতে হুটে। এতদল বে  
কথ, কিয়ানস। কত কি। বশা

১৭৬ উঠাইয়া দেওয়া একো  
১৭৭ ১৮০ কালীন কি কথায়

বিশ্ব উন্নয়ন, দ্বিতীয়  
স

॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ମୁକ୍ତକଳନ ଦେଲେ ଜାଣ  
ମୁକ୍ତକାଳି ତୁମ ନାହିଁ :

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

আমরা প্রাথমিক শ্রমিক লীগে পরিণত  
 হইয়া পৌরসভার আর্থিক প্রতিবেদন দাবী  
 উপস্থিত হইয়াছি। বিলাসবাহী অ.মারিগে  
 হুন্দের, সিন্ডিকেটের সঙ্গে আমরা একই অ  
 ফারেন্স পরামর্শ গ্রহণ করিলাম, তদ্ব্যতী  
 বাসিন্দা কীর্তিকর বিলাসবাহীর একটি প্রকৃত  
 পাপ প্রদর্শন করিয়া দে। করিতেছেন  
 ইচ্ছা করি। সার্বভৌমত্ব বুঝাওঁয়ার প্র



রতনবীণা সত্য হ্যাঁ পত্নী হইতেছে । আরও  
কিছু সত্য কথা আছে । হুজি না হইলে তা  
রতনবীণা বলল নাহি ।

একটুকু নির লিখিত হুগোয় অধিক  
বিবরণ হইগছে ।

বোঁর... ১৯৪২৫০ টাকা  
বাৎসাল্যদেয় ১৩৪৩২০০ ট

পেট্রি রট কছেন স্বেচ্ছায়ের রাজ্য নগে-  
জনারায়ণ মহাবীর রতনবীণা উপাধি প্রা-  
হইরাছেন ।

উক্ত পত্র আরো লিখেন গবর্ণমেন্ট বঙ্গ  
নে বিদ্যালয়িকার জন্য দুই বঙ্গের অপেক্ষা  
এবার ১৭৫০২১ টাকা অধিক দিয়াছেন । সে-  
সংকে বে টাকার অন্য লিখিতাভিলেপ ও  
নামদার প্রাচ্য হয় নাই । কিন্তু গবর্ণি সাহেব  
কহিয়াছেন যে উল্লিখিত টাক ব্যতিরিক্ত  
যদি আর অধিক টাকা আবশ্যক হয় তাহা ও  
দেওয়া হইবেক । লিখা সংজ্ঞাত ব্যয় সংকে  
প করা কোন ক্রমেই গিণেয় নয় ।

এই কাণ্ডিক বঙ্গবীর ।

কিনিক কট মগবীর জেনারেল উত্তর  
ক্ষিত্র প্রদেশে যাইবেন বলিয়া টেনে গজল  
আজ্ঞাত প্রকৃত থাকিতে অসম্মত কহি-  
ছেন ।

উক্ত পত্র আরো লিখেন হুজি না হইলে  
মিলি পদ্যন্ত - সীত পদ্যন্ত চক্রে যাহা  
গণের জন্য ১০ ০০ ০০০ টাকা প্রদেয়  
কর্মচারীরা প্রত্যেক ১০ টের অধিক চাহিয়াছেন

উক্ত পত্র আরো লিখেন হুজি না হইলে  
ক সত্য সত্যগণ নির হইয়াছেন । আর  
১০ ০০ ০০০ টাকার প্রদেয় হইয়াছে ।  
নবাবল হুজি না হইলে ১০ ০০ ০০০ টাকা  
করগুন লাগে ১০ ০০ ০০০ টাকা প্রদেয়  
হইবে । আর ১০ ০০ ০০০ টাকা প্রদেয়  
রনা প্রদান হইয়াছে । আর ১০ ০০ ০০০  
শতাব্দীতে প্রদেয় হইয়াছে । আর ১০ ০০ ০০০  
নিম্নতম প্রদেয় হইয়াছে । আর ১০ ০০ ০০০  
পত্র প্রদেয় হইয়াছে । আর ১০ ০০ ০০০  
হেব ১০ ০০ ০০০ টাকা প্রদেয় হইয়াছে ।  
পদ্যন্ত ১০ ০০ ০০০ টাকা প্রদেয় হইয়াছে ।

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে

একটি কমরুট উল্লিখিত হইয়াছে  
পাতিত জুনি সৎকান্ত কে টিটি সত্যগুণে  
বেদ সত্য গাণ্ডীক সত্যগুণে সত্যগুণে





[illegible][illegible]

୨୨—ସେକ୍ସଜିଆ, ମଧ୍ୟାହ୍ନ, ଶେଷ  
 ବେଳା, କମ୍ପିଜିଆ ଟୋପି, ଗତିମଧ୍ୟକର  
 ମାଳାମାଳ, କରମାଳାମାଳ, କେମାଳି  
 ତାର ମାଳା, ମେଳା, କେମାଳାମାଳା  
 ଶେଷ ।

জ. ক্রম গণ্যাক পার হইয়া  
২২৩ উপস্থিত হইয়াছেন যেখানে  
মৌরিক কংক্রিট হইয়া গিয়াছে।  
কংক্রিট পট্টাকত হইয়া ভরজেনি  
করাইছে। যোগের উত্তর পক্ষে ১৩০  
ফুট দূরত্বে। ৩১০ পার্শ্বেরিক ২০০  
ফুট দূরত্বে পট্টাকত হইয়াছে।  
১১. পট্টাকত হইয়া পট্টাকত হইয়া  
পট্টাকত হইয়া পট্টাকত হইয়া  
হইয়াছে। ১২. পট্টাকত হইয়া  
পট্টাকত হইয়া পট্টাকত হইয়া

গদ্যমৈত্রেয়ী

राधानाथजी (मदर के) १५५५

‘‘দেশান্তরী নিষেগ ৬.৩:

৮ অষ্টম বর্ষ—মিঃ সি. বসু ব্যক্তিগত  
 মিঃ হে. নাথানাল বিদ্যালয়, কলিকতা মে  
 বস, হাটু কালীচরণ ঘোষ ও  
 প্রভৃতি।

সদস্য: ড. মোহাম্মদ হুমায়ুন কবীর  
সদস্য: ড. মোহাম্মদ হুমায়ুন কবীর









[illegible][illegible][illegible]



100

**बाबुसाहेबराव**

... ..

[illegible][illegible]





१ : हे मासिक मासिक

1990

১৯৭১ সালে বাংলাদেশের স্বাধীনতা  
 যুদ্ধের সময় বাংলাদেশের আদি...





ଜଣେ ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା

১৬। প্রাণ প্রবাহিতকৃতম্বেদ ।

०१। अस्मिन्महात्म्ये शक्तिपर्वः ॥ ३॥





# সোমপ্রকাশ

প্রবর্তনা প্রতিনিধিত্বের দায়িত্ব: ১৯৫০-৫১: সর্বদা নবীন

সংখ্যা: ১২৬২। ৭ অক্টোবর। ইং. ১৯৫১। ১০ সেপ্টেম্বর। প্রতিটি কপি ১ টাকা। বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন

বিজ্ঞাপন জনা সর্বদা নবীন



আমরা উপরে বর্ণিত বিদেশ  
উদ্যোগ অর্থাৎ দেশের উন্নয়ন করি  
বটে, কিন্তু বিদেশীরাগিরির অত্যা  
চারকতর ভয়ঙ্কর ইঙ্গ: উদ্ভিগত। কে  
বল প্রতীকার হয় না। প্রতীকার হই  
কিছু মহান্ গুণবান্দের আশ্রয় এক, যি  
হইতে অত্যাচার করিলে আত্মনিগে  
পরিধান বিষয়ে তৎসমসংক্রান্ত বিচার  
সংসার ন্যায়পরতা আর ক্ষুর্ভি পায় না।  
বিভীষ, এতদ্বিধ যে সকল ব্যক্তি বিচার  
পাল পাল অধিষ্ঠিত আছেন, তাঁহাদের  
অগ্রে সাহেবের মঙ্গলনা উপস্থিত হইয়া  
প্রাথ তাহার পরাজয় হয় না। রেলওয়ে প্র  
কৃতি ইউরোপীয় কর্মচারীরা ইহার উদাহরণ  
হল। আমরা অনেক বার জবাব করিয়াছি  
রেলওয়ে সাহেবেরা এদেশীয় দিগের এ  
তি যাহার পব নাই অত্যাচার করিয়াছে  
কিন্তু অভিযুক্ত হইয়া আদালতে উপস্থিত  
হইয়াই অমনি অব্যাহতি পাইয়াছেন।  
কখন কখন এমন ঘটনাও হয়, যাহার উপর  
সাহেব অত্যাচার করিলেন তাহার উপর  
র হওয়া দূরে থাকুক তাহাকে আদালত  
দালতের দণ্ড লইতে হয়। সেটুকু  
কালে ধর্ম ও ন্যায়পরতা প্রভৃতি  
কর্তৃক পরিচালিত করিয়া দূরে রাখি  
য়ে। এইরূপ ব্যবহারের একটি কারণ অর্থাৎ  
এদেশীয় বিচারকেরা সাহেবদিগকে রা  
খাইতে চাহেন না। সাহেবেরা কুপিত হই  
য়া পাইলে উপায়ের অভাব নিকটে আসে।

কাজের প্রতি অন্যায় কবিতা অর্থাৎ হুই  
র ভাষায় তিতিয়র কবিতা। কিন্তু মূলক  
এই প্রত্যয়টি উপস্থিত হইয়াছে, হানাকরে  
প্রতিটি প্রেরিত পত্রের তাৎপৰ্য্য করিয়েন।  
প্রত্যেকের নিকট হইতে খোঁটাগাড়ির  
এমন লওয়া হইয়াছে, ইহা সামান্য কো-  
রুপ অত্যাচার নহে। এক্ষণে আমরা  
অপেক্ষা করিয়া আছি, এ পরমা গুলি কে-  
রায় মাএব : না কমিশনার ?

মকসলের আদালতে (৩০) ১৯৬২  
কাজ হয়।

আজি আমরা মকসলের কাজ, মাজি-  
স্ট্রেট ও ডেপুটি মাজিস্ট্রেট প্রভৃতিকে মিলি-  
তাবিত বিষয় গুলি উপস্থাপন দিলাম।

১। মাজির হাজিরার মক্কা ন জীর দুই  
১০০ টাকা ও আসামীর হাজিরার  
১০০ টাকা আনা।

২। আসামীর জামিন দিবার অসম্মতি  
হইলে তাহার নিকট হইতে মাজির খতকরা  
১০০ টাকা লইয়া থাকেন।

৩। মকসলের মকল হইতে গেলে পে-  
কার ১০ আনা।

৪। এজহার দিতে গেলে ১০ আনা  
দিতে হয়।

৫। মজিল করত হইতে গেলে পেকার  
টাকা না লইয়া কিরাইরা, কেম না।

৬। পেকারের বেয়ার জমা দিতে গেলে  
এক আনা অধিক দিতে হয়।

৭। মোক্তার মাঝা তজদিক করিতে হ-  
লে পেকার ১০ আনা লইয়া থাকেন।

৮। কাউন্সিল মকল হইতে গেলে পেকার  
প্রতি মকলে কি, কিং অধিক ১ টাকা লইয়া  
থাকেন।

৯। বাহারী পুখীর জবান বন্দী লই, তা-  
হার প্রতি মাজির নিকট হইতে ১০ আনা  
লইয়া লয়।

১০। পেকারের। কিন্তু হইবার আগের  
১০০ টাকা লইতে পারেন।

১১। মাজির। কিন্তু হইবার আগের  
১০০ টাকা লইতে পারেন।

রে গ্রহণ করিয়েন। কিন্তু অত্যাচার  
কির হতে তিসেরপতীর হুইপাতি  
হুইপাতি কলের মায় হইবার হুইপাতি  
নকেহ নাই। যখন কেহ কাহাকে কো-  
ন উপহার দিবার, তখন তাহার একটি  
উদ্দেশ্য সাধন চেষ্টা থাকে। উপহার  
এইতা উপহার দাতারই মনোরথ পূর্ণ  
করিবার সাধ্যানুসারে চেষ্টা করিয়া  
না। এই বিশ্বজনীন ব্যবহার মর্মে না  
হনী হইয়া আমরাও একটি মক্কা করিয়া  
উল্লিখিত বিষয়গুলি মায়পর প্রকাশিত  
কর্তব্যকারী মক্কা ও মাজিস্ট্রেট প্রভৃতির  
এই উপস্থিত করিলাম। আমাদিগের মক-  
প্প এই, এ অনিষ্ট গুলির নিবারণ হয়।  
তাহা হইলেই আমরা চরিতার্থ হইব।

মক্কা হইতে আর অন্যমক্কা  
হউক, মকপ্পপাতে অন্যায় ও অত্যাচার  
নিবারণার্থই ধর্মাদিকরণ প্রতিষ্ঠিত হ-  
ইয়াছে। মায়কারী রাজা ও রাজপ্রতি  
নিধনন অন্যায় নিবারণকালে আদ্য পর  
বিবেচনা করেন না।

মক্কা হইতে আর অন্যমক্কা  
হউক, মকপ্পপাতে অন্যায় ও অত্যাচার  
নিবারণার্থই ধর্মাদিকরণ প্রতিষ্ঠিত হ-  
ইয়াছে। মায়কারী রাজা ও রাজপ্রতি  
নিধনন অন্যায় নিবারণকালে আদ্য পর  
বিবেচনা করেন না।

রাজা হইলেই কোথ লোভানি পরি-  
ভাগ করিয়া বিলা পক্ষপাতে স্বকর্তব্য  
সম্পাদন করিতে হইবে, এই বিবেচনা  
করিয়াই সেই রাজা চ্যোতন কি পুত্র কি  
মক্কা হইতে নিবারণ করিতেন তাহারই  
মক্কা বিধান করিতেন।

রাজা চ্যোতন অন্য অন্য অ শে অ  
ত্যাচারী হইয়া বলিয়া অনিষ্ট হইতে  
কিন্তু তিনি যখন প্রমাণ প্রাপ্ত হইলে  
সাধ্যানুসারে মক্কা ও মাজিস্ট্রেট প্রভৃতির  
চাৰ ফুল মক্কা নিবারণ করিতেন বলিয়া  
বলিত হইতেহে, তখন যে ইহা মক্কা  
মক্কা মক্কা মক্কা মক্কা মক্কা

অবশ্য কর্তব্য একটা বলা বা  
আমরা উপরে আদালত মক্কা  
বিষয়ের উল্লেখ করিয়াছি, তাহার  
টি মায়সিক? কোম আইনে মাজি-  
বে মাজির, পেকার প্রভৃতি বাদী ও  
মীর নিকট হইতে টাকা লইবেন।

এ সকল টাকা কি পরবর্তীকালে  
ফুল হইবে? মক্কা ও মাজিস্ট্রেট প্রভৃতির  
ন আদালতের এমন প্রমাণ ও প্রমাণ  
অন্যায় নিবারণে সমর্থ হইতেহে না, তা-  
খন যে তাহার প্রমাণ অপ্রমাণ হইত অ-  
ন্যায়ের স্বার্থ প্রমাণ হইয়া নিবারণ ক-  
রিতেহে, তাহাতে কিরূপে প্রমাণ হই-  
বে? তাহারাই বিবেচনা করিয়া দেখুন  
না কেন, অর্থাৎ প্রমাণের মক্কা হইতে  
মাজির লাভে সমর্থ হইবে বলিয়াই মক্কা  
প্রকার অনুসৃত আইনের সৃষ্টি হইতেহে।  
কিন্তু আমাদিগের অর্থে প্রমাণ প্রমাণ  
বাস্তব থাকিলে আইনের যে উদ্দেশ্য সি-  
দ্ধ হইবার সম্ভাবনা কি? পরিচয় প্রমাণ  
দিগের অনুরোধ এই, বিচারকগণ অর্থাৎ  
শেখ অনুমোদন করিয়া দেখুন, মক্কা মক্কা  
র আদালতে উল্লিখিত প্রমাণ প্রমাণ  
প্রমাণ হইতেহে করিয়া অর্থাৎ তাহার  
জানিতে পারেন প্রমাণ প্রমাণ হইতে অর্থাৎ  
মক্কা মক্কা মক্কা মক্কা মক্কা

৩০  
মক্কা হইতে আর অন্যমক্কা  
হউক, মকপ্পপাতে অন্যায় ও অত্যাচার  
নিবারণার্থই ধর্মাদিকরণ প্রতিষ্ঠিত হ-  
ইয়াছে। মায়কারী রাজা ও রাজপ্রতি  
নিধনন অন্যায় নিবারণকালে আদ্য পর  
বিবেচনা করেন না।



লক্ষ্য। ইংলণ্ডে প্রকৃতি প্রায়শঃ  
পথে প্রথা অবলম্বিত হয়, তাই  
করিলে উহা যে স্বাধীনতার একটি লক্ষ্য  
তাহা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইবে। ইংলণ্ড  
অধীশ্বর অনেকের নিকট হইতে তত্ত্ব  
অস্বীকারের যথেষ্ট বলপূর্বক মাগুন  
নামে সন্দেহজনক, তৎকালে কৃষ্ণ  
বিচারপ্রথা অবলম্বিত করিবার কথা  
শব্দ করিয়া লিখিয়া লওয়া হইয়াছিল।  
সর, বিজ্ঞানশাস্ত্রেও তথ্য উচ্চ এবং  
তৎকালে সর্বস্বাধীনতা লাভচেষ্টাই  
বিস্তৃত সমস্ত ৮৮ চেষ্টার মূল।  
আমাদিগের ৫৭ জুরি হইবার যোগ্য  
কোনই একজন নয়, কেবল মকদ্দমার বি  
লভিগণের দোষে সেই যোগ্য লোক  
হইতেছে না। তাঁহাদিগের কার্য ও  
কার্য দেখিয়া স্পষ্ট বোধ হয়, তাঁহারা জু  
রির বিধি বিধি বিধি। এ প্রথাটি মকদ্দম  
তে রহিত হয়, তাঁহাদিগের ইহা অন্য  
ট নয়, একথা বলিলে বোধ হয় অত্যাশ্চর্য  
য হয় না। আমরা কয়েক জন পূর্বে আ  
করিয়াছিলাম ২৪ পরপর কয়েক জন  
জুরির পদ আশ্রয় হইয়াছে। অর্থাৎ  
হগলীর অঙ্গ জুরি নিয়োগ বিধির এক  
অঙ্গ বাবদ আরম্ভ করিয়াছেন। উক্ত  
হাদিগকে জুরি পদে মনোনীত ক  
তেছেন, তন্মধ্যে দুনি, গোয়লা প্রভৃতি  
গাভীরাতিরই আর অদর্শন নাই। সুতরা  
মাত্র মকদ্দমার এক এক মল জুরি  
চলিত করেন। সুরতি খেলার রীতি  
জুরি বাচনী হইয়া থাকে। বাহারা প্র  
তি মনোনীত না হন, তাঁহাদিগকে  
পাঁচ দিন উপস্থিত থাকিতে হয়।  
হাদিগের উপস্থিতির স্থান নাই। তাঁহা  
দিগের প্রতি অপ্রতিভ গম্ভীর করা হয়  
এবং যে মকদ্দমার যেজন নিষ্পত্তি  
করিয়া থাকে, তিনি জুরিদিগের  
কর্তব্যের পূর্বেই আসিয়া উপস্থিত করেন।

তাঁহাদিগের নিকট ৩ জন ক  
র্য অস্বীকার হইতেছে। ৩ জন  
জুরি হইতে মকদ্দমার দোষ  
অস্বীকারে বসিয়া নয় অনেক স্থানে এই  
রূপ ঘটতেছে। এতদ্ব্যতীত কখনও  
কি? এক কারণে হাদিগের পদে  
প্রতিষ্ঠিত হইতেছে। সে এই - মিথি  
রাম বিচারপতিরা আপনারা সর্বস্ব স্ব  
তে চাহেন, তাঁহাদিগের যে মত, তন্মুসা  
রে বিচার হয়, ইহাই তাঁহাদিগের অভি  
প্রেত। জুরিরা সকল সময়ে তাঁহাদিগের  
মতে মত দেন না। সুতরাং জুরি প্রথা তাঁ  
হাদিগের বিরুদ্ধে না হইবে কেন? এই  
কারণেই বোধ হয়, তাঁহারা সুশিক্ষিত,  
যোগ্য ও অপকপত্তী লোকদিগকে জু  
রির পদে মনোনীত করিতে অস্বীকারী  
নহেন। অযোগ্য লোক নিয়োগ হারা ক  
মে জুরিপ্রথা সকলের অবজ্ঞাত হইয়া  
উঠিয়া গেলেই তাঁহাদিগের কর্তব্য যায়।  
যেভাবে কার্য করিলে অতীত মিথি  
হইবার সম্ভাবনা আছে, এক্ষণে তাহা নি  
শ্চয় হইতেছে। এতদ্ব্যতীত সাধারণ  
জুরিপ্রথা এই মতন অবলম্বিত হইয়াছে।  
সুতরাং বলিয়া আজিও সকলে ইহার মর্ম  
এহে সমর্থ হন নাই। বিশেষতঃ অনেকের  
একজন স্বতন্ত্র আছে, যাহাতে সাক্ষাৎ সম  
ক্ষেপে সাক্ষ্য না থাকে, তাহাতে সাক্ষ  
রগণ প্রকৃতি করে না। যখন ইংলণ্ডে জুরি  
প্রথা প্রথম অবলম্বিত হয়, তখনও এইরূপ  
ঘটনা হইয়াছিল। অতীত হাদিগের  
উপরে জুরি নিয়োগের তত্ত্ব লভিত হইবে  
তাঁহাদিগের কর্তব্য, তাঁহারা সুশিক্ষিত  
স্ববোধ অনুবৃত্ত ও উৎসাহসম্মান লোক  
দেখিয়াই তৎপদে নিয়োজিত করিবার চেষ্টা  
করেন। এক্ষণে সকল সম্মান লোক  
অধিক মিতা তর, তাহা আমরা অস্বীকার  
করি না। কিন্তু ইংলণ্ডের কার্য বি  
বেচনা পূর্বক কার্য করিয়া, মকদ্দমার

মকদ্দমার কি মত সুতরাং সুতরাং  
নির্ধারণিত করা হইতেছে। মকদ্দমার  
প্রতি মত এক এক বার মেনিফেস্ট  
বসিতেছে। এক মত জুরি দ্বারা কি এক  
মেনিফেস্ট মকদ্দমার বিচার চলে ন।  
প্রত্যেক মকদ্দমায় ৭ জন করিয়া জুরি ক  
রিলে এত জুরি কোথায় পাওয়া যাইবে?  
পারিলেবে বিশেষ করিয়া আর একটি  
কথার উল্লেখ না করিয়া এ বিষয়ের উপসং  
হার করা বিধেয় হইতেছে না। বিচার  
পতিরা যেন কোনরূপে জুরিদিগের  
মাননা না করেন। জুরি প্রথা যখন জুরি  
উত্তর স্বাধীনতা ও অপূর্ব একটি স্ব  
লাভ সঙ্গ রহিয়াছে, তখন জুরির অব  
মাননা হইলেই জুরিদিগের অমাননা  
হইবে। আমরা স্পষ্টাক্ষরে কহিতেছি,  
ভারতবর্ষ পুনঃ পুনঃ সে অপমান সহ ক  
রিবেন না।  
বিভিন্ন শিল্পের আশ্রয় গৃহের  
সামান্যতা।  
পত বাতের মিত্যাসাক্ষা এই নিয়োগ  
দিয়া যে প্রস্তাব লিখিত হয়, পাঠকগণ  
তাহা পাঠ করিয়াছেন সন্দেহ নাই এবং  
আমাদিগের দেশের বিধবাহিগের দুর্দশা  
রও একটি উদাহরণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। এ  
দেশে সতী দ্রীর আদর্শ স্বরূপ অনেক  
বিধবা আছে, আমরা সুতরাং কহে একথা  
স্বীকার করি, কিন্তু এদেশের বিধবাগণ যে  
রূপ অসহ্য যন্ত্রণা সহ্য করিতেছেন এক  
তাঁহাদিগের প্রদরাক্ষাণ যে রূপ পাঠক  
অজান অন্ধকারে আবৃত হইয়া আছে,  
তাহাতে সকলেই যে সংশয় করিয়া হইয়া  
সং পঞ্চমমানে সমর্থ হইবে ইহা কোন  
ক্রমেই সম্ভবিত নহে। অনেকসংখ্য বিধ  
বা অসহ্য প্রদরাক্ষাণ বিমোহিত ও ব  
জির বোঝা প্রাণে বিনষ্ট হইয়া অগণ  
সংখ্যক বিধবা পতিত। তাহারা

[illegible][illegible]





[illegible]

উক্ত নথির প্রতিলিপি সংশ্লিষ্ট কর্মসূচি

[illegible]



২রা আশ্বিন বুধবার

ইংল্যান্ডের মহানগর লন্ডনে ২রা আশ্বিন বুধবার ইংল্যান্ডের ২য় প্রধান বিচারিক কর্মকর্তা, সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

এবার লন্ডনের কবিগুরু সার বার্ট্রান্ড ব্রুকসের বক্তব্য শুধুমাত্র কয়েকজন কবিগুরুকেই

ইরা বৃত্ত লিখিত ভেটিংসন বৃত্ত কর্ণেল ভেটিংসনের ছবি, তিনি এবিষয়ের কিছু জানেন না। এই ব্যক্তি ও বিবি বরের অস্যা-পিও বিচার হয় নাই।

বাঙালী পত্র ব্রহ্মের প্রিন্স অব ওয়েলস ভারতবর্ষে আগমন করিবেন না।

বাংলাদেশের অল্প বয়স্ক এবং শিক্ষা ও গাণিতিকতা দেখি। এখানাবিই এই পত্রের প্রতি আশাবিগ্নের ভক্তির অপত। হয় কিন্তু শুধু কালে আমরা যেন করিয়াছি-যান, ইহা ক্রমে শুধুরিয়া উঠিবেক। একপে দিন দিন আশাবিগ্নের সে আশা অলীক হইতেছে। উক্ত পত্র চেঁচায় আহ্নেব হিন্দু পেট্রোলের যত্নোহানি ও কনভা নষ্ট করিয়া আপনি এখান হইয়া উঠিবেন, কিন্তু সে তাহার চুয়াখা, তাহাতে এই মাত্র কল-মাক হইবে, হিন্দুপেট্র হুই হিন্দুভাতির এ তিনিখি খবর, তাহার শিক্ষা করিয়া তিনি হিন্দু ভাতির শুভদেবী বলিয়া পত্তিগণিত হইবেন।

ঢাকা নিউস ব্ত আফ্রানিত হইয়াছেন। লেপটনন্টে গবর্নর ঢাকার এতদেশীয় ভরলোক মিলকে বখোচিত সম্মান করেন নাই। বীতন সাহেব গনিমিয়ার গাড়ি না লইয়া এক জন নীলকরের গাড়ি লওয়াতে তিনি বিশেষ আফ্রান প্রকাশ করিয়া বিরূপ করিয়া বলি য়াছেন ও ভারতবর্ষের সভা সতর্ক হউন। উক্ত সম্পাদক এত দুকিতে পারেন। জীবন্তি কারীরা আজিও ইহাকে আপনাদিগের পালের গোঁড়া করিলেন না, বত চুপের বিবর।

উক্তপত্র বলেন কোহাঝে এক জন চু-কেটিত ব্যক্তি এক জন চাকরের কবর হইতে তাহার মৃত দেহ বাহির করিয়াছে। গবর্নমেন্টে এই সকল ব্যক্তিকে ধৃত করিবার জন্য ১০০ ও এক জন চাকর ২০০ টাকা দিবেন বো বনা করিয়াছেন। ঢাকা নিউস এই উপলক্ষে হিন্দু ও মুসলমানদিগকে গালি দিয়াছেন। এই বারে ঢাকা নিউসেব গ্রাহক বৃদ্ধি হইবে সন্দেহ নাই। টেলিগ্রাম ও হরকরা এইরূপে গ্রাহক বৃদ্ধি করিয়াছেন।

৩রা আশ্বিন রহস্যভিবার।

গত বর্ষে সিংহল ১১.৭ ৭৫,১২,৯৭০ টাকা

আর হইয়াছেন আর আর ১১,৭৫,১২,৯৭০ টাকা উক্ত হইয়াছে। কলকাতা শিকদার সাধারণ কার্যে অনেক টাকা ব্যয় করিয়াছেন। নিহল খাঁস ভারতবর্ষের আরও বিবরণ।

নেপালহিত অনেক ইংরেজ আশিনয় থাকি ডাকে বহুলা প্রমাণ হইয়াছে। যখন তত্ত্ব জ্ঞানবৈজ্ঞানিক কলকাতা হাঙ্গি ও রাতে রেসিডেন্টের নিকটে যে বিকল আশান্বিত হয়। তিনি আজি মিরাটেন আশিনয়দিগের কোন প্রমাণ পাঠাইবার প্রয়োজন হইলে তাহা এখনে নেপালের গুরু সাধারণ কারী কর্তৃক চারিকে দেখাইতে হইবে।

রূপবীর সিংহের অভ্যুত্থার কবর নিখারিত হইবে? তিনি আজি করিয়াছেন, নীতকালে ইংরাজ অমলকারিরা তাহার রাজ্যে থাকি তে পারিবেন না। সেই সময়ে প্রচার্য নগর কাটিয়া থাকে, সেই সময়ই তাহার অভ্যুত্থার করিবার সময়, অমলকারিরা পাছে তাহা জানিতে পারে, এই নিমিত্ত তিনি ঐ রূপ আজি করিয়াছেন।

মাস্ত্রাজে একটি নাট্যশালা করিবার জন্য ১০০০ টাকা মূলধন সংগৃহীত হইয়াছে। কলিকতায়ও একটি ইউরোপীয় নাট্যশালা হইতেছে। আমরা কেবল দেখিতে ও শুনিতে তাহা।

অগ্নিবিহার বিদ্রোহিদিগকে ক্ষমা করিবার ঘোষণা করা হইয়াছে। দুই জন রাজাকে তাহা দিগের নিকটে প্রেরণ করা হইয়াছে। ওসিকে সিংহবিদ্রোহের পরস্পর গৃহ বিহার উপস্থিত অতএব তাহাদিগের অস্ত্র ত্যাগ করা অসংভাবিত নহে।

১লা অক্টোবর গবর্নর জেনারেল রেডক্লিফ, মূল মিন ও নেয়ার বন্দর কর্মচারী গমন করিবেন। তিনি একমাসের অধিক কাল রাজধানীতে অস্থাপস্থিত থাকিবেন না।

এবংসহ ৩০ জন সিংহলিয়ান এদেশে আসিতেছেন। ইংলিগের বয়স ২৯। ২০৬৩১ বৎসরের অধিক নয়।

শীকদিগের গুরু বিক্রাম সিংহের মৃত্যু হইয়াছে। তাহার চেঁচায় ১৮৪৫ খ্রিঃ শীক দিগের সহিত কোম্পানির যুদ্ধ হয়। বিক্রাম সিংহ সর্বশেষ সাহসে সহিত যুদ্ধ করি যাহিলেন, যুদ্ধের পর তাহাকে কলিকাতা পেশন

Q. 42

“ प्रवर्त्तन्तां प्रकृतिविज्ञानाय चार्थिभः संरक्षन्तीं शुनिमहती न हं यतां । ”

महानिबन्ध

1990

महाराष्ट्र राज्य सरकार

পদ আছে যে সমস্ত 'উচ্চাধিকার' হয়-

ମତ ଫଳ ଏ ଦେଶୀୟ କେବଳ ମାଧ୍ୟମ

কেন্দ্র ন্যায় কৌশলটিই বর্তমানের কৌশল

ਪਾਕਿਸਤਾਨ : ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ

॥०॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

স্বাধীনতা সংগ্রামের সময়

১৯৭১ সালের ১৫ আগস্ট

বঙ্গ বাণিজ্য বাণিজ্যিকের উপস্থিতি

समस्त न. बहादुर बहिन

আর সে বাধীনতা গুরুত্ব নাই।

ज नाही, मे माझा माई, मे मनहिता माई

ਜੇ ਵਿਦਿਆ ਨਾਹੈ, ਜਕੀਰਿ ਵਿਦਿਆਮ ਏਕਿ

চয়ে প্রাচ্যে ; সে গুলির উজ্জ্বল কহিতে

বে, উদ্ধার করিতে হইল অথবা হইল।

बहम सिन्या निम्नोय उपार करिगो निर्दिष्ट

ହରବ ; ମୁଖିଆ ବାଞ୍ଚିବେକେ ଡେହନିବିଆ

मनश्चित्तं वाधीनतां वृत्तमन्तः प्रवृत्तिः कोऽपि

ଆନୁଷ୍ଠାନିକ ସମୀକ୍ଷା : ୧୫୦

हैदराबादी एमिग्रेशन नमिका: १९५१-५२

55. 2000年1月1日

[illegible]

—

করিতে হইবে।  
 (নিম্নের কলাম-৩)

১৫

১০০০

১। তাহাফিগে: এছা

गति वि.अ.व. कार.अ.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

क: अक्याचा? हसेद

ॐ श्रीगणेशाय नमः

। हानिद                      अहं जदम कौह







পদস্থ করিয়াছেন। গিবসন এই অফিস-  
চারের সময়ে এক জন অলিম্পিক সফল  
ট্রেট ছিলেন, সেপেটমেন্ট গবর্নর স্টিভ  
হুইটে তাঁর নাম কাটায়া বিতরণ করি-  
য়াছেন।

কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
সেখানে কিভাবে হুইটে হইয়াছেন। কিনিস বেল-  
ন হিউপেট্রিওটের পত্র প্রেরণ যে হুইটে  
লিখিয়াছেন, তাহা বর্ণনা মতে। এই হেতু  
তিথি উহার একটি বক্তব্য হুইটে লিখিয়া-  
ছেন। সে এই:—এক দিন কাটারিতে  
রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
সেখানে কিভাবে হুইটে হইয়াছেন। কিনিস বেল-  
ন হিউপেট্রিওটের পত্র প্রেরণ যে হুইটে  
লিখিয়াছেন, তাহা বর্ণনা মতে। এই হেতু  
তিথি উহার একটি বক্তব্য হুইটে লিখিয়া-  
ছেন। সে এই:—এক দিন কাটারিতে  
রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

কেহই রিডমন্ডেলকে নির্দোষ বিবেচনা  
করিবেন না। বরং রিডমন্ডেল ওয়াডে  
পাণী বলিয়া লোকের নিকটে প্রতীক্ষমান  
হইবে। এই প্রস্তাবটি লিখিয়া কেবল চা-  
কের মধ্যে এই ঘটনা, কিনিস বিলুপেট্রিওট  
পাঠে সকল বিষয়ের কথাবলা হুইটে বর্ণন  
করিয়া থাকেন বলিয়া, তাহার যে খ্যাতি  
ছিল, তাহা লোপ হইতে চলিল। রিড-  
মন্ডেল গিবসনের অনুমতি লইয়া বিবা-  
হের পর দিন হুইটিকে দ্বন্দ্ব ৩০ বেড  
সারে, ইহাতে কি তাহার অপরাধ লম্ব  
হইতেছে? যদি চা-কর কোথাকারে হুই-  
টিকে তুষ্ট করিয়া, তরানক অধার করিত,  
তাহা হইলে আইনে না হটক, যুক্তিতে  
তাহার দোষ কতক কমার যোগ্য হইত।  
কিনিস সে তাহা করে নাই, এক দিন হুই-  
টিকে তুষ্ট করিয়া রাখে; ইহার মধ্যে  
তাহার কোথের শাস্তি হওয়াই সম্ভাব্য।  
কিনিস কোথ শাস্তি না হইয়া। প্রথমতঃ ক-  
র্পোরার সহিত পরামর্শ করিয়া হুইটিকে  
কর্পোরার সমক্ষে যে নির্দোষ প্রচার করা  
হইয়াছে, সেটা সম্ভবতঃ হইয়াছে ন-  
কহ নাই। তাহার গিবসন ও রিডমন্ডেল  
উভয়েই বক্তব্য ও অস্বাভাবিকতার  
লিখিত পত্রিত হইয়াছে। তবে লম্ব-  
ক হুইটিকে, হুইটিকে তাহার উপরে দো-  
ষকে তুষ্ট করিয়া অস্বাভাব্য প্রকারে  
সারে। হুইটিকে “অস্বাভাব্য” ও “প্র-  
চুর এটি তুষ্টকার” কারণ কি? কিনিস  
কর্পোরার নিকটকে কি কেহ বক্তব্য আশ্বাস  
দেপদ্য ব্যক্তিকে অস্বাভাব্য প্রচার করা  
করা অস্বাভাব্য চিত্রে করিতে পারি। কিনিস  
মন্ডেল যে প্রোগ্রাম লোক, ইহা হইবে।

কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
সেখানে কিভাবে হুইটে হইয়াছেন। কিনিস বেল-  
ন হিউপেট্রিওটের পত্র প্রেরণ যে হুইটে  
লিখিয়াছেন, তাহা বর্ণনা মতে। এই হেতু  
তিথি উহার একটি বক্তব্য হুইটে লিখিয়া-  
ছেন। সে এই:—এক দিন কাটারিতে  
রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

ব্যবহার করিয়া থাকে, তাহা হুইটে  
সেই সময়ে তাহা প্রকাশ করিয়া  
কোন যুক্তিতে করিতেছে। কিনিস  
রিডমন্ডেল করিলেই তা সম্ভব  
শাস্তি হয়। পরিচয় অস্বাভাব্য  
হল হইয়া কি অন্য অস্বাভাব্য  
নিবারণ সমর্থ হয় না? তাহার  
ধোর এই প্রকার সম্ভবতঃ  
হুইটিকে কেবল অস্বাভাব্য  
করিয়া কেহ অস্বাভাব্য করিয়া  
হইতে তাহার সম্ভব বিধান  
যে সে যদি হুইটে দণ্ড দিয়া  
করে, গবর্নমেন্টের থাকিলা

আমরা কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই  
অস্বাভাব্য প্রস্তাব হুইটিকে  
ন এতদেবীর জলিবারে  
তাহা অস্বাভাব্য প্রচার করা  
অপেক্ষা অস্বাভাব্য প্রচার  
হই প্রচারিত হইবে। কিনিস  
বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
করিয়া থাকে। এক জন  
কোথ করিয়া কি অস্বাভাব্য  
ব্যাপসিত হইবে? তাহার  
সারে কেহ গিবসনের  
কথা বলিতে সম্ভবতঃ  
ও কপি প্রচারিত হইবে। কিনিস  
কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
সেখানে কিভাবে হুইটে হইয়াছেন। কিনিস বেল-  
ন হিউপেট্রিওটের পত্র প্রেরণ যে হুইটে  
লিখিয়াছেন, তাহা বর্ণনা মতে। এই হেতু  
তিথি উহার একটি বক্তব্য হুইটে লিখিয়া-  
ছেন। সে এই:—এক দিন কাটারিতে  
রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল

কিনিস বিলুপেট্রিওটের এই প্রস্তাব  
সেখানে কিভাবে হুইটে হইয়াছেন। কিনিস বেল-  
ন হিউপেট্রিওটের পত্র প্রেরণ যে হুইটে  
লিখিয়াছেন, তাহা বর্ণনা মতে। এই হেতু  
তিথি উহার একটি বক্তব্য হুইটে লিখিয়া-  
ছেন। সে এই:—এক দিন কাটারিতে  
রিডমন্ডেল হুইটিকে কয়েকটি আশ্ব করে,  
হুইটিকে তুষ্ট করিয়া। প্রত্যেকেরই যে ওয়াডে  
উক্ত চা-কর তাহার গলে এক চপেটা-  
ঘাত করিল। হুইটিকে সাহসে বলিয়া তর  
না করিয়া। এক লোক কিনিস বেল কাইরা  
তাহাকে অধার করিয়া একটি পাইল।  
চা-কর সেই জন করিয়া। লাইনকর্ডে অধার  
বার তাহাকে হুইটিকে করিয়া। সেই  
তাহাকে ওয়াডে করিয়া। চা-কর না-  
কিয়া। সফল



১. প্রার্থনা ।  
 ২. তির বেতন হকি ।  
 ৩. প্রার্থনা সর্ব প্রকারে বিশেষ-  
 ৪. প্রার্থনা ৩০ ৫. প্রার্থনা বিশেষ-  
 ৬. প্রার্থনা ১. ৭. প্রার্থনা পত্র-  
 ৮. প্রার্থনা ৩. ৯. প্রার্থনা  
 ১০. প্রার্থনা করিতে কোন  
 ১১. প্রার্থনা প্রার্থনা ৩. ১২. প্রার্থনা  
 ১৩. প্রার্থনা ৩. ১৪. প্রার্থনা  
 ১৫. প্রার্থনা ৩. ১৬. প্রার্থনা  
 ১৭. প্রার্থনা ৩. ১৮. প্রার্থনা  
 ১৯. প্রার্থনা ৩. ২০. প্রার্থনা  
 ২১. প্রার্থনা ৩. ২২. প্রার্থনা  
 ২৩. প্রার্থনা ৩. ২৪. প্রার্থনা  
 ২৫. প্রার্থনা ৩. ২৬. প্রার্থনা  
 ২৭. প্রার্থনা ৩. ২৮. প্রার্থনা  
 ২৯. প্রার্থনা ৩. ৩০. প্রার্থনা

১. কর্মসম্পন্ন কর্মীদের কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ২. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৩. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৪. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৫. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৬. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৭. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৮. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ৯. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন  
 ১০. কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন কর্মসম্পন্ন

[illegible]

বিচারের একই স্বত্বস্বত্বস্বত্বের প্রতি অর্থের  
ইতেই কৌশলী এবং কালেক্টরী সংক্রান্ত  
সকলকার বিচারের তারিখ করা হয়, তবে  
এ সকল ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর  
এবং, দুবসেইরা সকল বিষয়ে জু-  
জিস্ট হইয়া পরিমাণে গণ্য প্রকারে যোগ্য ও  
পারদর্শী হইতে পারেন এবং তাহা হইলে  
তদ্বিষয়ে কেবল ইংরেজী উপকার সম্বন্ধে  
গবর্ণমেন্টে আবশ্যিক হইতে সকল সময়ে সকল  
বিষয়েই, লোভ্য পাত্র অন্যান্যের পাইতে  
পারেন। যদি কেহ বিবেচনা করেন যে একপ  
নিয়ম হইবার সভাবন নাই তখন ইহাও  
আমাইতেছি যে একপে প্রত্যেক জিলাতে  
প্রায় ৩৫ টি করিয়া সব ডিবিজন হইয়াছে।  
তদ্বিষয়ে সেই সকল সব ডিবিজান তির  
সম্মত স্থানে মুন্সেফের কাছারি হইবেক না।  
সব ডিবিজনের ডেপুটি কালেক্টর ও ডেপুটি  
মাজিস্ট্রেট কি আইনমাজিস্ট্রেটেরা কো-  
র্টারী ও কালেক্টরী সংক্রান্ত সকল  
মুন্সেফদিগের নিকট অর্পণ করিলে মুন্সেফেরা  
অন্যান্যেই তাহার বিচার করিতে পারেন।  
আর যে সকল ব্যক্তির হস্তে পোলিষের ক্ষমতা  
থাকে :০ আইন সংক্রান্ত সকলকার বি-  
চারের তারিখ তারিখের প্রতি অর্পণ হইলে  
কি জানি যদি তাহার। তাহাতেও পোলিষের  
ক্ষমতা প্রকাশ করেন দেখা করি যে আশঙ্কা  
করে গবর্ণমেন্ট তাহাদিগকে শৈবোক্ত সকল-  
কার বিচার করিতে ক্ষমতা দেন নাই। কিন্তু  
আমি দেখিতেছি ইহা কেবল মন্ত্রকের মর্মে  
এর প্রতি নির্ভর করে, অথচ সিভিলিয়ান ক-  
মিচারী দলের উপর গবর্ণমেন্ট সে বিষয়ে গ-  
বেহ করেন নাই অথচ অফিসের কর্মচারী  
দিগের প্রতি যে ক্ষমতা দিয়া সম্পূর্ণ অন্যত্র  
বিলেবত। একপে অনেক জিলাতেই স্বতন্ত্র  
পোলিষ কর্মচারী নিযুক্ত হইত। পোলিষের  
প্রতি কোর্টারী বিচারকদিগের কর্তৃত্ব নাই।

[illegible]

শরীফ। মিরাও উত্তীর্ণ হইতে পারিলেন না, অগত্যা যেস তাঁহারে পলটাক করিতে হইল। ইহাতে কেবল সেই ব্যক্তিরই মিশ্রণ হইল। অপর আর একজন নহে লোকে নিরোপিত করিতেও এজন্য মিথ্যাক্ত অবিবেচক বলিতে পারি। অধিকন্তু সেই অযোগ্য পাত্রের হস্ত কাটা দ্বারা বাকী প্রতিবাদিগণের যেকোন আশ্রিত হইয়া বলা যায় না। যদি ডেপুটি কালেক্টর ও ডেপুটি মাজিস্ট্রেট এ২২ দুইজন ও উকীলগণের পরীক্ষার একই নিয়ম করা হয় তবে অবশ্যেই আর উক্ত প্রকার ঘটনা হইবার সম্ভাবনা ও বারংবার পরীক্ষা লইবার প্রয়োজন থাকে না। দুইজনগণের যোগ্যতা দৃষ্টে ক্ষমতায় উক্ত রিপোর্ট করিলে যেমন উক্তই তাহাদিগের পক্ষ হইতে হইয়া থাকে তেমনি কালেক্টর ও মাজিস্ট্রেটের ডেপুটি কালেক্টর ও ডেপুটি মাজিস্ট্রেটগণের কার্য দৃষ্টে উক্ত রিপোর্ট করিলে তাহাদিগেরও পক্ষ হইতে হইতে পারে, এক্ষণে তাহা না হইতে হইবে একজন নহে। প্রত্যেকই যদি বলেন সময়ে সময়ে অধিক পরিমাণে ডেপুটি কালেক্টর ও ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের আবশ্যক হইতে পারে। কিন্তু একজন শরীফ লইলে পরীক্ষা করিয়া ব্যক্তির সংখ্যা সংকপ না হইতে পারে একজন নহে, দেখা হইতেছে যে বুঝাযা কি অন্য যোগ্য পক্ষ না পাওয়াতে পরীক্ষা করিয়া অনেকে ব্যক্তিকে নানা আদালতে ওকালতি করিতে হইতেছে অথচ সেই সকল আদালতে এত অধিক উকীল আছেন যে উকীলের সংখ্যা করিয়া মোক আদালতের কর্মের দানি হইবার সম্ভাবনা হইবে তবে বিশেষ করণে পরীক্ষা করিয়া ব্যক্তির সংখ্যা হইলে কর্মের দানি বিধান ও বুঝি ম লোক বাড়নি করিয়া বিনা পরীক্ষার কোন কোন ব্যক্তিকে ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের পক্ষ হইতে যুক্ত করিলে কোন দানি হইতে পারে না।

४) देव गणेश वरदादि मूर्तियों को नष्ट

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 भगवत्पदं विप्रं विद्वांसं विद्वत्पदं विद्वत्पदं विद्वत्पदं  
 भगवत्पदं विप्रं विद्वांसं विद्वत्पदं विद्वत्पदं विद्वत्पदं

একশ-সিক্তা সিক্তা  
সীকোদীপ ব্যক্তি  
আদালতের উক্তি  
সেরেআদালতের  
সতের বেত সতের  
বেত ও আদালত  
সেরে বেত এক  
র কাছাকাছি  
করি উইয়াসিনেট  
অন্য আদালত

কিন্তু আত্মজ্ঞান  
কোন ব্যক্তি যখন  
হইতে পারেন তা  
সিদ্ধ হই, আর  
এতি বিচারের  
চাক্ষুণ্য নি  
মন্তেব কি ক  
যোগ্য ব্যক্তি  
জ্ঞানের বিজ  
সম্প্রতি যে  
জ্ঞানকে আ  
বলবলের হো  
ইহারা অজ  
সিগের আতি  
কারণ এই যে  
আত্মন  
জ্ঞান  
হই

१. विना श्रम विना  
 २. श्रम विना विना  
 ३. विना श्रम विना  
 ४. श्रम विना विना  
 ५. विना श्रम विना  
 ६. श्रम विना विना  
 ७. विना श्रम विना  
 ८. श्रम विना विना  
 ९. विना श्रम विना  
 १०. श्रम विना विना



উক্তসংখ্য। ভেদেই  
ইত্যাদি গুরু প্রভৃতি  
সকল জিনিস আদা-  
লতদ্বারা এইভাবে  
সম্পত্তি বা সম্পদ  
সকল প্রকৃতভাবে  
কেনে নাই। অতীত  
এই বৃহৎসংখ্যের কি  
কীকার করিবে  
আদালতের কোন  
পক্ষ কীকার করি-  
বে। এই ভবিষ্যতে  
আদালতের  
কর্তৃপক্ষকে স  
আদালতের কাৰ্য্যে  
সহায়তা এই কর্তব্য  
১। এরূপ স-  
পক্ষ না হইলে  
২। এরূপে আ-  
করিতে হইবে  
আদালতের  
সহায়তায়  
ন এবং প্রধান  
সহায়তা লিখিত  
সিদ্ধান্তের সহ-

আপনি ওয়াশিংটন করিয়া ওয়েল। দ্বিতীয়  
পোর্ট আপিলে উপস্থিত হইয়া আসি। বারমান  
ত্রিশ দিন পথে পথে জব্দ করিয়া, কখন কখন  
দৈব সুযোগে নিরাপত্তার গাছতলায় বসিয়া  
রাতি প্রভাত করিয়া এই কর্তব্য বাস্তবায়িত  
কিরিতি ব্যতীত ইউরোপীয় কোন ভয় সস্তা  
নকে স্বীকার করিতে দেখা যায় না, বোধ করি  
এই কারণেই উক্ত ব্যক্তিবিভাগের বেতন অত্য-  
প হইয়াছে। ইনিম্পেট্রিওপোর্ট মার্টারনিগের  
ম্যার পরিচর ও ক্রম স্বীকার করিতে গবর্ণ-  
মেন্টের অন্য কোন কর্মচারীর সে। যায় না,  
পোর্ট আপিলের প্রধান কর্মকর্তাদিগের স  
বিবেচনার আওতা বৃদ্ধি করুন। ইনিম্পেট্রিও  
পোর্টমার্টারনিগের প্রমোশন পাইবার সময়  
উপস্থিত হইলে বাস্তবায়িত হইবে। বিশেষ যোগ্য  
ও পদোন্নতি পাইবে। কিরিতিরা অত্র  
প্রমোশন পাইয়া থাকেন। কখন ব্যক্তি বাস্তবায়িত  
ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনিগের মজিত আদালত  
পরিচর আছে। তাঁহারা ভয় সস্তান অতি  
সুচরিত্র এবং একপ বিদ্যান ও বুদ্ধিমান  
যে প্রমোশনের ম্যার যোগ্য লোক অতিক্রম  
পাওয়া যায় ও বোধ করি সস্তার উপকৃত  
ধরনসমূহ না থাকিতেই এই ভয় সস্তা-  
সেরা অভ্যাস বেতনে একপ পরিচর ও কষ্ট  
স্বীকার করিতেছেন, ইহা বিবেচনা অন্য কোন  
পক্ষ পাইবার ও প্রত্যক্ষ নাই, বিচার কার্য  
ব্যতীত গবর্ণমেন্টের অন্য যে সকল কর্ম অত্র  
হে, তাহা ইহারা না পান কেন? বাহা হউক ই-  
হা বিবেচনা বেতন বৃদ্ধি করিয়া দেওয়া অতি  
কর্তব্য। ক্রম ভেদেই ইনিম্পেট্রিওপোর্ট নিগের  
পরিচর ও ক্রম ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনি-  
গের পরিচর প্রায় তুল্য। ইহা বিবেচনা যায়।  
দেশের হউ উপকার হইতেছে গবর্ণমেন্টের  
অন্য কে ন-কর্মচারী, ইহারা যে কপ হইয়া  
নহে, ভেদেই ইনিম্পেট্রিওপোর্ট, সকলেই বিদ্যান  
এবং কাৰ্য্য অযোগ্য ও অসমর্থ লোক প্রায় না  
ই। ইহারা বা সস্তা একপ টাকার বেতন  
পাইয়া থাকেন, ইনিম্পেট্রিওপোর্ট মার্টারনিগের  
মাসিক বেতন ১২০০ আদালত টাকার মত  
নহে, মার্টারনিগের ম্যার পরিচর ইহারা  
ক-কর্মচারী, ইহারা ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনিগের  
ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনিগের

এবং মধ্যে মধ্যে তাইরেই ভেদেই  
লিখিয়া এই অতিরিক্ত বেতন লাভীক করিয়া  
থাকেন। ক্রম ভেদেই ইনিম্পেট্রিওপোর্ট  
চেষ্টা। তাহা সস্তার ভেদেই ইনিম্পেট্রিওপোর্ট  
করেন। এই ব্যক্তিবিভাগের প্রধান যোগ্য  
বৃদ্ধি করিয়া দেওয়া। কি গবর্ণমেন্টের কর্তব্য  
নহে? সম্পদক মহাপ্রভ। একপে এইরূপে  
নিগের ব্যবস্থাপক সস্তার সস্তার ও প্রধানতম  
বিচারালয়ের বিচারকের পক্ষ পক্ষ ও পাই  
বার নিয়ম হইয়াছে, গবর্ণমেন্ট কালেক্টর ব-  
জালি শিক্ষকদিগের জন্য কি বরাবরই এক  
কপ থাকিল? প্রমোশনের পক্ষ পাওয়া দূরে  
থাকুক এপক্ষ কোন এক ব্যক্তি বাস্তবায়িত নি-  
ককে কালেক্টর ভেদে মার্টারনিগের পক্ষ পাইতে  
দেখা গেল না। অত্র কিরিতিবিভাগের মধ্যে  
কোন ব্যক্তিকে কখন ইনিম্পেট্রিওপোর্ট কখন কলে  
জের প্রমোশন কখন বা হেড মার্টার হইতে  
দেখা যায়, কিরিতিরা কি বাস্তবায়িত শিক্ষকদি-  
গের অপেক্ষা বিদ্যান ও শিক্ষিত লোক সস্তার  
যোগ্য।

### বিবিধ সংবাদ ।

১৯ এ কার্তিক সোমবার ।

গেজেট প্রকাশ হইয়াছে, বাবু রামগো-  
পাল সোম বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সস্তার আ-  
ন্যতম সভাপদে নিয়োজিত হইয়াছেন। রাম  
গোপাল বাবুকে প্রথমে ব্যবস্থাপক সভা প্র-  
হণ না করিতে আদালতের যে মনোভাব  
অস্তিত্ব ছিল, তাহা দূর হইল। তিনি এক জন  
মহাশয় যোগ্য পাত্র, উচ্চ বিদ্যা বুদ্ধি ও বহু  
ভাষা পারদর্শী ব্যক্তি। বঙ্গদেশের বিত্তসাধনের  
আন্তরিক ইচ্ছা আছে। উক্ত সভা বঙ্গদেশের  
সকল মনোভাব ও প্রয়োজন চাক্ষুষ। এদেশীয়  
সভাপ্রধান করিতেছেন না কেন?

একিটমাত্র একটি ভোট আদালত স্থাপি-  
ত হইয়াছে। পুণ্ডিত সস্তার আদালত বাবু গঙ্গা-  
ধর সোম বিচারপতি হইয়াছেন।  
বিলম্বিত হইয়াছে, প্রমোশনের ব্যাপক  
কিছুই হয়নি, মার্টারনিগের ম্যার পরিচর ইহারা  
ক-কর্মচারী, ইহারা ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনিগের  
ইনিম্পেট্রিওপোর্টমার্টারনিগের

১৭ ১৫০ টাকা  
জিলার পোর্ট  
একপে প্রত্য  
(সংখ্য) অতিরিক্ত  
পোর্ট আপিল  
করিতে হয়  
নি কোন পোর্ট  
আদালত  
আদালত

# সোমপ্রকাশ

“ প্রবর্তনা প্রকৃতিস্থিতা যথার্থিঃ সংসারী যুগ্মিত্বাতি ন স্বীচনা । ”

৪ ভাগ ।  
১০ ২৭ ১৮৮১ ।

{ সন ১২৬২ । ২৫ কার্তিক । ইং ১৮৬২ । ১০ নবেম্বর }

{ দ্বিতীয়  
বার্ষিক আঁ

নিজ্ঞাপন ।

গ্রাহকগণের প্রতি

গ্রাহকগণকে জ্ঞান দিতে হইবে আশ্রিত  
ন স অতীত যুগেতে অনেকের প্রদত্ত সো  
প্রকাশের মূল্য নিম্নলিখিত হইয়াছে, বার্তিক  
মাস অতীত হইলেও অনেকের মূল্য শেন  
উত্তরে, অতএব তাঁহারা দ্রুত করিয়া মূল্য পা  
টাইল; কেন। উক্ত মূল্য বলিকাতা সংস্কৃত  
বাল্যে আশ্রিতগণের নামে পাঠাইলেই আ  
মরা নির্ভয়ে ও শীঘ্র পাইব ।

নিজ্ঞাপন ।

শ্রীমত কালীপ্রসন্ন সিংহ মহোদয়  
প্রদত্ত পুরাণ সংগ্রহের  
অষ্টম খণ্ড তীর্থ পার্শ্ব

প্রদত্ত হইয়াছে। নির্দিষ্ট গ্রাহকগণ তা  
ব গ্রহণ করুন। যে সকল মহাশয় প্র  
দত্ত, দ্বিতীয়, বা তৃতীয় খণ্ড লাভ লইয়া নি  
র্বাচন আর আর খণ্ড লব্ধ নাই, তাঁহারা শেষ  
“ সকল সময়ে গ্রহণ করুন কিছু পড়ে কোন  
কাজ পাঠকের না ।

স্বাক্ষরিত বোম্বাই ২১ কার্তিক  
১২৬২

সোমপ্রকাশ ।

২৫ কার্তিক মোসম্বর ।

শ্রীমদচর্য্য বেদান্তবগীশ

২৬ এ কার্তিক বৈশাখ জ্যৈষ্ঠ কুলসম্বন্ধ  
যচিত আর আর গ্রন্থ প্রদত্ত পত্র পা  
ঠাইয়াছিলেন। অতএব তাঁহারা দ্রুত ও বে

মপ্রকাশে প্রচার করিলাম না। তাহার কা  
রণ এই, আমরা প্রতিজ্ঞা করিয়াছি এবিষ  
য়ের বিচারে প্রবৃত্ত হইয়া আর পাঠকগ  
ণের বিরাম উপাদান করিব না। বেদান্ত  
বগীশের যদি এ বিষয়ের সীমাংসা করা  
অভিপ্রের্ত হয়, আমরা একটা সংপরামর্শ  
বলি, গ্রহণ ও গ্রহণ করুন। উক্তের ৬২  
বাক্য হইয়া কলিকাতা সংস্কৃত কলেজের  
— প্রকল্পসমূহের তর্ক পঞ্চানন, করতচন্দ্র  
শিরোমণি, প্রমোদচন্দ্র তর্কবাগীশ এবং তা  
রামাধ তর্কবাচস্পতি এই কয় মহোপধ্যায়  
মহাশয়কে মধ্যস্থত পদে বরণ করা হউক।  
ইহারা উক্তের প্রদর্শিত শাস্ত্র ও যুক্তি  
গ্রহণ করিয়া যে সীমাংসা করিয়া দিবেন,  
তাঁহাই আমরা সোমপ্রকাশে প্রচার করি  
য়া দিব এবং তদনুসারী কার্যের আচ  
রণে পরাবৃত্ত হইব না। উপসংহার স্থলে  
পুনরায় কহিতেছি, যথা বিচারে কল  
মাই ।

—

বার্তা২৬ ।

পাণ্ডুরা প্রভৃতি স্থানের মাতৃকর সং  
গ্রহ চাই যিনি পত্র আমাদিগের হস্তে  
আমিয়াছে, যথাস্থানে উহা একটিত হই  
ল। অন্যত্র পত্র প্রেরক পৌড়িত ব্যক্তি  
দিগের সাহায্যার্থ পাঠাইবা দিবার নির্দিষ্ট  
আমাদিগের নিকটে। আর দী টাকা পাঠা  
ইয়াছিলেন, কিন্তু পৌড়িতসাহায্যকারি  
নী সাক্ষ্যকরণ নাই, অতিষ্ঠিত হইও নাই,  
কোমরে পাঠাইয়া

প্রেরিতার নিকটে এতি।  
পত্রদ্বারে কলিকাতা প্রান্ত ২  
খাঁ এবং শ্রীমুখ্য বাবু কোমর  
বিষয়ে প্রধান উপযোগী হইল  
এবারে কাহাকে উপযোগী  
দেবেহু বাবু এখানে নাই,  
পৌড়িত ।

পত্র প্রেরকেরা  
ছেন, অনেক স্থানে বাক্য প্রদত্ত  
উপস্থিত হইয়াছে। অনেক  
মম শক্তি করিয়া প্রতিবন্ধের  
সাহায্য দান করা অতিশয়  
কলিকাতা ও অন্য অন্য স্থানে  
একপে লাভের সাধের আশ্রিত  
নুক হইয়াছেন, তাঁহারা কবি  
কবিতা সেপও পৌড়িত স্থানে  
রেন, তাহাঙ্গিগণ যথেষ্ট উপকার  
আমরা পূর্বেও কহিয়াছিলাম পুনরায়  
কহিতেছি, পত্র প্রেরকেরা অন্য বাক্য  
হইতে যে অর্থ সংগ্রহ করিতে পারেন,  
করুন, কিন্তু তাঁহাঙ্গিগণের কর্তব্য, যে  
স্থানে মাতৃকর উপস্থিত হইয়াছে, তৎক্ষণ  
লোক-কলিকাতা এই পরামর্শ কেন যে তাঁ  
হারা পৌড়িতের সাহায্য লইয়া তাঁহাদের  
বাঁসা করিবার এবং গ্রাম পরিষ্কৃত রাখি  
পার ।

লাভের সাধের সাহায্যার্থ  
হাদের সভা ।



র সারের অত্রতা টৌনহালে এক বৃহত্তী  
তা হুয়া নিয়াছে । সত্যার উদ্দেশ্য লা  
আয়ের সাহায্য-দান । মিলেটারি,  
জিহা মিসমি, বহিষ্কৃত প্রভৃতি সর্ববিধ  
ইউরোপীয় ও দেশীয় হিন্দু, মুসলমান  
রানী প্রভৃতি নানা জাতীয় লোক সত্য  
লে এই-সময় ছিলেন । গবর্নর জেনারেল ও  
সেক্রেটারি গবর্নরও আসন  
সত্যাকে অলঙ্ঘ্য করিয়াছি  
প্রধান লোক গমন করাতেই  
পাড়া হইয়াছিল, একপ মতে,  
বিধ রক্ষিত বসন ও কৃত্রিম  
জড়িত হইয়াছিল ।

ধমে সত্যার উদ্দেশ্য ব্যক্ত  
সাহার পর ক্রমে ক্রমে লাভ  
কৃতিকম আর্ট ও ডক সাহেব  
দ্বারা বক্তৃতা করেন । সত্যার

সারের পর ও বহান্যাত্মিক  
পক্ষ কুরাই সেই সেই বক্তৃতার মুখ্য  
উদ্দেশ্য । সে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইয়াছে ।  
সত্যারই মতে তৎকালে লাকেনারের  
বিপা পক্ষ ব্যক্তিগণের মধ্যে দুই  
ও তদ্বৎ বিনাশের ইচ্ছা আছে । সত্য-  
কেই বক্তৃতা অবগত করিয়া উদ্ভীষিত ও  
উৎসাহিত হন । লর্ড এলগিন বক্তৃতা  
কালে ই অনুরোধ করেন কেউকর পশ্চি  
মাকলে ছুটিক্ষ সময়ে যে ধন সঞ্চিত হই  
ছিল, তাহার অবশিষ্ট যে টাকা আছে,  
তাছা লাকেনারের পাঠাইয়া দেও । হয় ।

অর্থাৎ তাঁহার বহিঃ প্রেরণ করিয়া ধন  
প্রস্তাব এবং সেই ধন র  
কর্তৃক ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া  
রের গর সত্যার কর হ-

ল ।

সত্যার উদ্দেশ্য এইখানি অতিন  
সত্য

সত্যার

ঠকপণের গোচর করিয়াছি । সর চার্লস  
উডকে পদচ্যুত করা “ক্রিস্টিয়ানি মলে-  
র ” একান্ত পণ হইয়াছে । কলতঃ এই দল  
তাঁহাকে “ পেচাকেও ” করিয়া তুলিয়া-  
ছেন । উহাদিগের বাক্যে বিশ্বাস করিয়া  
ইংলণ্ডের অনেক প্রধান লোকেরও এই  
কপ সংস্কার হইয়াছে যে ভারতবর্ষে কি  
ইউরোপীয় কি এ দেশীয় সকল লোক  
রই সর চার্লস উডের কার্যের প্রতি আ  
ত্যন্তিক বিরাগ জন্মিয়াছে । একপ সংস্কার  
জন্মিবার একটি বিশিষ্ট কারণও আছে ।  
চার্লস উড মহীশূরের রাজকুমারদিগকে  
৫০ লক্ষ টাকা দিলে পর এ দেশীয়েরা  
ক্রিস্টিয়ানি মলে-র হইয়া টৌনহা  
লের সত্যার একমতে এই কার্যের যে  
প্রতিবাদ করেন, চতুর শিরে মনি ক্রিস্টি  
কারি দল একত্রে তাহাই এ দেশীয়দিগের  
বিরাগ লক্ষণ বলিয়া এমাত দিয়া গা-  
কেন ।

যাহা হউক, ইংলণ্ডের প্রধান ব্যক্তি  
দিগের উদ্ভিষিত অমূলক সংস্কার থাক  
তাল হইতেছে না । তাহাতে ভারতবর্ষের  
সর্বশেষ অনিষ্ট ঘটনার সম্ভাবনা আছে ।  
সাহাটে এই সংস্কারটি দূরীভূত হয়, একপ  
চেষ্টা করা অতিশয় আবশ্যক । ভারতব  
র্ষের সমুদায় প্রেসিডেন্সির লোকে এই  
সময়ে একবাক্য হইয়া সর চার্লস উডকে  
অবিলম্বে এক খানি অতিনন্দনপত্র প্রদা  
ন করুন । তাহা হইলেই এ দেশের লো  
কেরা উক্ত সেক্রেটারির প্রতি অনুরক্ত  
কি বিরক্ত ইংলণ্ডীয়েরা অনায়াসে বুঝ  
তে পারিবেন ।

সর চার্লস উড এ দেশীয়দিগের ক  
তজ্ঞতা প্রদর্শন ও অতিনন্দন পত্র লাভে  
র যোগ্য পাত্র সন্দেহ নাই । ভারতবর্ষী  
য়েরা যে অনায়াসে অত্রতা ব্যবস্থাপক স  
ত্যার কৃতজ্ঞতা হইয়াছেন, সে কাহার  
অনুরোধে ? ইহাও যে অনায়াসে

লেন, তাহার অনুকূল কারণ কে ? কোন্  
ব্যক্তি যত্নবান হইয়া এতদেশীয়দিগকে  
বহু অনর্থমূল কষ্টাঙ্ক বিল হইতে রক্ষা  
করিতেছেন ? এদেশীয় পদচ্যুত রাজগণ ও  
প্রধান ব্যক্তিদিগের আর্থিক পূরণ করিয়া  
মনঃকোত দূর করা প্রথম উদ্দেশ্য কাহার ?  
নীপকর বিবাদ বালে কোন ব্যক্তি প্র  
দিগের বহুতাকরিয়াছিলেন ? ভারতবর্ষের  
সর্বমূলে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত হয়, এ আশ  
রিক ইচ্ছাটি কার ? পশ্চিম ভূমি বিক্রয়  
সম্বন্ধে এ দেশীয়দিগের সমস্ত স্বত্বলোপ ও  
অনিষ্ট চইবাব যে সম্ভাবনা হইয়াছিল  
কে বা তদ্বিবরণ করিয়াছেন ? এক সর চা  
রলস উডের নাম নির্দেশ করিলেই এই  
প্রশ্নগুলির সমস্তর ইহাবে সম্বন্ধ নাই  
যে ব্যক্তি এ দেশের এমন বিতৈষী, তিনি  
কি অতিনন্দন পত্র লাভের যোগ্য পাত্র  
নহেন ।

সর চার্লস উড ও ক্রিস্টিয়ানি

যে ব্যক্তি সুর্য্যপানাদিকপ প্রদান  
বাসনে আসক্ত হয়, গুরুজনের গল্পমা  
কারণ বলতঃ তাহার তৎ পরিত্যাগ চেষ্টা  
করিলে সে যেমন এককালে তত্ত্বাগে সম  
র্থ না হইয়া একবার এ মানক দ্রব্য সেব  
একবার ও মানক দ্রব্য সেবন করিয়া  
হিরিচিত্ততা প্রদর্শন করে, কষ্টাঙ্ক বি  
লইয়া অত্রতা কতকগুলি ইউরোপী  
য়ের সেটকপ দ্বারা ঘটানো । এই  
তাঁহাদিগের বাসন স্বরূপ হইয়াছে । ই  
হারা কোনকালেই উহার মোহনী শা  
বিস্ত হইতে পারিতেছেন না । সর চা  
রলস উড বীভন সাহেবের  
কষ্টাঙ্ক বিল অগ্রাহ্য করিলেন, ব্রিটিশ  
হেব কাহাকেও তৎকালে দেশদ্রাবী সংজ্ঞা  
করিয়া ব্যবস্থাপক সত্যার উপস্থিত কা  
লেন, কিন্তু তাহাও সর চার্লস উড  
শানিত অগ্রের দূরে পশ্চিম হইয়াছে  
কিহি জাহা মুক্তি প্রাপ্তি প্রাপ্তি





সংসদে জমাদি মাসের নিম্ন লিখিত  
বিবরণী টাকার ও ইতিবাচক আকার হই

| বিবরণী                        | ১৯৩০-৩১   | ১৯৩১-৩২   | ১৯৩২-৩৩   | ১৯৩৩-৩৪   | ১৯৩৪-৩৫   | ১৯৩৫-৩৬   |
|-------------------------------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| সংসদে জমাদি মাসের নিম্ন লিখিত | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ |
| বিবরণী                        | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ |
| টাকার ও ইতিবাচক আকার হই       | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ | ১৯,০০,০০০ |

সিদ্ধান্ত লিখিত- তারতম্যের অসম্মতত্ব, তা-  
হাতিদের সম্মত মতের কথা কি ?

২৩৫ আর্থিক পরিবার ।  
কেন্দ্রীয় একটি বিবরণী হইয়াছে । ইহা  
তে ইতিবাচক ও ক্রিয়াকর্মী বাসকে প্রাধান্য  
দেওয়া হইবে । পরবর্তীতে তথ্যমিত্র ১,৫০০ টাকা

আর্থিক ক্রিয়াকর্মী বলেন, অসম্মতত্বের ম-  
তে সরাসরি মতগান দি এক প্রকার করিয়া  
করেন এবং অসম্মতত্বিক মতগানে ট্যাক্স খেল-  
ত নিষেধ । পরবর্তীতে লেগেটমাইট গবর্নর এ  
সম্মত ভাল বাসেন না ।

কিন্তু বলেন প্রধানতম বিচারালয়ের  
আপীল আদালতের ( পূর্বতন সদরের ) উ-  
চ্চীর্ণালমোক্তারের সহায়তার অন্যতম  
মহত্ব টাকার অধিক চাহি করিয়াছেন ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে পরবর্তীতে কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে ।

|                   |        |
|-------------------|--------|
| ১ টাকার নিকা      | ১০-১০। |
| ২ টাকার কোম্পানির | ১০-১০। |
| ৩ টাকার ই         | ১০-১০। |
| ৪ টাকার ই         | ১০-১০। |

ব্যবস্থাপক সভা ।

বিভিন্ন মতের একতম-মত হইয়া নিম্ন-  
লিখিত মতগান করিলেন ।

নিম্নলিখিত বিবরণী মতগান করিলেন ।  
১৯৩৫-৩৬ টাকার ও ইতিবাচক আকার হই  
২৩৫ আর্থিক পরিবার ।

কেন্দ্রীয় একটি বিবরণী হইয়াছে । ইহা  
তে ইতিবাচক ও ক্রিয়াকর্মী বাসকে প্রাধান্য  
দেওয়া হইবে । পরবর্তীতে তথ্যমিত্র ১,৫০০ টাকা

আর্থিক ক্রিয়াকর্মী বলেন, অসম্মতত্বের ম-  
তে সরাসরি মতগান দি এক প্রকার করিয়া  
করেন এবং অসম্মতত্বিক মতগানে ট্যাক্স খেল-  
ত নিষেধ । পরবর্তীতে লেগেটমাইট গবর্নর এ  
সম্মত ভাল বাসেন না ।

কিন্তু বলেন প্রধানতম বিচারালয়ের  
আপীল আদালতের ( পূর্বতন সদরের ) উ-  
চ্চীর্ণালমোক্তারের সহায়তার অন্যতম  
মহত্ব টাকার অধিক চাহি করিয়াছেন ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে পরবর্তীতে কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে ।

|                   |        |
|-------------------|--------|
| ১ টাকার নিকা      | ১০-১০। |
| ২ টাকার কোম্পানির | ১০-১০। |
| ৩ টাকার ই         | ১০-১০। |
| ৪ টাকার ই         | ১০-১০। |

উক্ত আর্থিক পরিবার মতগান  
করিলেন । ইতিবাচক আকার হই  
২৩৫ আর্থিক পরিবার ।

ইতিবাচক

২৩৫ আর্থিক পরিবার মতগান  
করিলেন ।

কেন্দ্রীয় একটি বিবরণী হইয়াছে । ইহা  
তে ইতিবাচক ও ক্রিয়াকর্মী বাসকে প্রাধান্য  
দেওয়া হইবে । পরবর্তীতে তথ্যমিত্র ১,৫০০ টাকা

আর্থিক ক্রিয়াকর্মী বলেন, অসম্মতত্বের ম-  
তে সরাসরি মতগান দি এক প্রকার করিয়া  
করেন এবং অসম্মতত্বিক মতগানে ট্যাক্স খেল-  
ত নিষেধ । পরবর্তীতে লেগেটমাইট গবর্নর এ  
সম্মত ভাল বাসেন না ।

কিন্তু বলেন প্রধানতম বিচারালয়ের  
আপীল আদালতের ( পূর্বতন সদরের ) উ-  
চ্চীর্ণালমোক্তারের সহায়তার অন্যতম  
মহত্ব টাকার অধিক চাহি করিয়াছেন ।

পরবর্তীতে বি

২৩৫ আর্থিক পরিবার মতগান  
করিলেন ।

কেন্দ্রীয় একটি বিবরণী হইয়াছে । ইহা  
তে ইতিবাচক ও ক্রিয়াকর্মী বাসকে প্রাধান্য  
দেওয়া হইবে । পরবর্তীতে তথ্যমিত্র ১,৫০০ টাকা

আর্থিক ক্রিয়াকর্মী বলেন, অসম্মতত্বের ম-  
তে সরাসরি মতগান দি এক প্রকার করিয়া  
করেন এবং অসম্মতত্বিক মতগানে ট্যাক্স খেল-  
ত নিষেধ । পরবর্তীতে লেগেটমাইট গবর্নর এ  
সম্মত ভাল বাসেন না ।

কিন্তু বলেন প্রধানতম বিচারালয়ের  
আপীল আদালতের ( পূর্বতন সদরের ) উ-  
চ্চীর্ণালমোক্তারের সহায়তার অন্যতম  
মহত্ব টাকার অধিক চাহি করিয়াছেন ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে পরবর্তীতে কাগজ  
বিক্রীত হইতেছে ।

|                   |        |
|-------------------|--------|
| ১ টাকার নিকা      | ১০-১০। |
| ২ টাকার কোম্পানির | ১০-১০। |
| ৩ টাকার ই         | ১০-১০। |
| ৪ টাকার ই         | ১০-১০। |

অন্য কল  
 তার সখিতর উত্তরে-সমস্ত হইল  
 আশ্রয় করে আশ্রয়-পুনরায় এ বি-  
 য়র এসব করিব। তারলস উভ উভ  
 লর-হুল-বুজি-বরিস। যেখন বিচারক-  
 গাছেন, তাই বিবেচন পলটী এতীয়াস  
 যে, তিনি এদেশের আদালতের অবস্থা  
 হুজিয়ারিগলের মনের ভাব এবং এ  
 ইম বিধিক হইল। এচলিত হইলে এবে  
 র যে মত, অনিষ্ট ঘটিলে, তাহা পলটী  
 প হুজিয়ারিগল। আমরা পূর্বে যে কথা  
 ইয়াছিল। উক্ত দায়ব বিল বিধিক  
 নে এদেশে কলটী এখা উঠিয়া যা-  
 য, তিনিও সে মত করিগাছেন। তাঁ-  
 এক একর পলটী করেই কই। হইয়া-  
 যে হুল যুক্তি অকলস করিয়া  
 টেনের এতাব করা হইয়াছে, তাহা  
 ৩৬ নহে। বোধ কর, এক ব্যক্তি এক  
 ৩৭ কুকা করিয়া দিবে বলিয়া কিছু  
 মন লইয়া কোন টেন প্রতিবন্ধক বনত  
 ৩৮ পারিল না, কিন্তু দায়বদতা এসার  
 ৩৯ দিলেন, যে হুটতা করিয়া জুকা-  
 ৪০ য় মাই, বিচারকতা তাহার এতি এক-  
 ৪১ সরের কারাবাসের আদেশ করিলেন।  
 ৪২ তার কুল। হুজিয়ারিগল অসমত আইন  
 ৪৩ র কি হইতে পারে? তারলস উভ ক-  
 ৪৪ ম, কোন রাজ্যের কোন, আইনে একপ  
 ৪৫ ই।

পূর্ববর্তন হুজিয়ারিগল এতাব  
 আদালতের সাক্ষরক পূর্ববর্তন  
 নমিয়ারিগল মন করিব করিগাছেন। ইনি  
 ৪৬ টের মনবের হুজিয়ারিগল হইয়া ইল-  
 ৪৭ রকন করিগাছেন। ইনি একমত কর-  
 ৪৮ তক করিগাছেন। ৪৯ ইনি উভ ক-  
 ৫০ ম। ইনি উভ ক-  
 ৫১ ম। ইনি উভ ক-  
 ৫২ ম। ইনি উভ ক-

তার সখিতর উত্তরে-সমস্ত হইল  
 আশ্রয় করে আশ্রয়-পুনরায় এ বি-  
 য়র এসব করিব। তারলস উভ উভ  
 লর-হুল-বুজি-বরিস। যেখন বিচারক-  
 গাছেন, তাই বিবেচন পলটী এতীয়াস  
 যে, তিনি এদেশের আদালতের অবস্থা  
 হুজিয়ারিগলের মনের ভাব এবং এ  
 ইম বিধিক হইল। এচলিত হইলে এবে  
 র যে মত, অনিষ্ট ঘটিলে, তাহা পলটী  
 প হুজিয়ারিগল। আমরা পূর্বে যে কথা  
 ইয়াছিল। উক্ত দায়ব বিল বিধিক  
 নে এদেশে কলটী এখা উঠিয়া যা-  
 য, তিনিও সে মত করিগাছেন। তাঁ-  
 এক একর পলটী করেই কই। হইয়া-  
 যে হুল যুক্তি অকলস করিয়া  
 টেনের এতাব করা হইয়াছে, তাহা  
 ৩৬ নহে। বোধ কর, এক ব্যক্তি এক  
 ৩৭ কুকা করিয়া দিবে বলিয়া কিছু  
 মন লইয়া কোন টেন প্রতিবন্ধক বনত  
 ৩৮ পারিল না, কিন্তু দায়বদতা এসার  
 ৩৯ দিলেন, যে হুটতা করিয়া জুকা-  
 ৪০ য় মাই, বিচারকতা তাহার এতি এক-  
 ৪১ সরের কারাবাসের আদেশ করিলেন।  
 ৪২ তার কুল। হুজিয়ারিগল অসমত আইন  
 ৪৩ র কি হইতে পারে? তারলস উভ ক-  
 ৪৪ ম, কোন রাজ্যের কোন, আইনে একপ  
 ৪৫ ই।

তার সখিতর উত্তরে-সমস্ত হইল  
 আশ্রয় করে আশ্রয়-পুনরায় এ বি-  
 য়র এসব করিব। তারলস উভ উভ  
 লর-হুল-বুজি-বরিস। যেখন বিচারক-  
 গাছেন, তাই বিবেচন পলটী এতীয়াস  
 যে, তিনি এদেশের আদালতের অবস্থা  
 হুজিয়ারিগলের মনের ভাব এবং এ  
 ইম বিধিক হইল। এচলিত হইলে এবে  
 র যে মত, অনিষ্ট ঘটিলে, তাহা পলটী  
 প হুজিয়ারিগল। আমরা পূর্বে যে কথা  
 ইয়াছিল। উক্ত দায়ব বিল বিধিক  
 নে এদেশে কলটী এখা উঠিয়া যা-  
 য, তিনিও সে মত করিগাছেন। তাঁ-  
 এক একর পলটী করেই কই। হইয়া-  
 যে হুল যুক্তি অকলস করিয়া  
 টেনের এতাব করা হইয়াছে, তাহা  
 ৩৬ নহে। বোধ কর, এক ব্যক্তি এক  
 ৩৭ কুকা করিয়া দিবে বলিয়া কিছু  
 মন লইয়া কোন টেন প্রতিবন্ধক বনত  
 ৩৮ পারিল না, কিন্তু দায়বদতা এসার  
 ৩৯ দিলেন, যে হুটতা করিয়া জুকা-  
 ৪০ য় মাই, বিচারকতা তাহার এতি এক-  
 ৪১ সরের কারাবাসের আদেশ করিলেন।  
 ৪২ তার কুল। হুজিয়ারিগল অসমত আইন  
 ৪৩ র কি হইতে পারে? তারলস উভ ক-  
 ৪৪ ম, কোন রাজ্যের কোন, আইনে একপ  
 ৪৫ ই।



[illegible][illegible]

১৯৭৪ সালের ১৫ জানুয়ারি

\_\_\_\_\_







# সোমপ্রকাশ

সর্বস্বামী সত্যনিষ্ঠায়ায় ধার্মিকঃ সর্বস্বামী সত্যনিষ্ঠায়ায় ন বীৰ্য্যম্ ।

৪ ভাগ - ২৩ { সন ১২৬৩ } ৩ অগ্রহায়ণ । ইং ১৮৮২ । ১৭ নবেম্বর

১০ নং  
১০ নং

বিজ্ঞাপন ।

গ্রাহকগণের প্রতি ।

গ্রাহকগণের জ্ঞান বাইতেছে, অধিক  
অভ্যাস করিতে অনেকের প্রদত্ত পৌ  
বাদের মূল্য বিশেষিত হইয়াছে, কাঙ্ক্ষিত  
সত্য হইলেও অনেকের মূল্য পৌ  
বাদের উচ্চতা হইয়া কঠিন মূল্য পা-  
য়া কেন । উচ্চ মূল্য কলিকাতা সংস্কৃত  
লভে আশাশ্রিতের নামে পাঠাইলেই আ-  
মিষ্টিরে ও শীঘ্র পাইব ।

বিজ্ঞাপন ।

চাচড়িপোতা বিব'নী জীবন্ত রক্তশিখর  
বের পুত্র জীবন্ত কালীকুমার সিংহ অগ্র-  
হায়ণ হইয়াছে । ইহার বর্ষ গৌর বর্ষ-  
২২ বৎসর, সক্ষমদিগের জুলপির নিকট  
টি ছোট আনন্দি আছে । সম্যপি কেহ  
লক্ষণাকান্ত ব্যক্তির অনুসন্ধান করিয়া  
সোমপ্রকাশ সম্পাদকের নিকট স'বাস দিতে  
বন, তাঁহাকে ২৫ টাকা পুরস্কার দেওয়া  
যে ।

সোমপ্রকাশ ।

১০ নং ১০ নং ১০ নং

অসম জগদীশ্বরকে ধন্যবাদ দিবার  
২ পাঠকগণের নিকটে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ  
দিবার দিন উপস্থিত হইয়াছে । জগদী-  
শ্বর রূপা ও পাঠকগণের উৎসাহ দানে  
৩ ও পরিবর্তিত হইয়া সোমপ্রকাশ  
৪ পাঁচ বৎসরের হইল । আমরা অনেক  
কষ্ট হইয়া আরও উন্নতি প্রকৃতির

বিষয় অবগত হইবার নিমিত্ত নিকট উৎ-  
সুক দেখিতে পাই । পাঠকগণের সেই  
কৌতুহল বিনোদন করাও আমাদের  
অবশ্য কর্তব্য । আরগণনায় সম্ভাবকের  
সবিশেষ বন্ধ নাই । আর অধিক হটক,  
আর অল্প হটক, সম্ভাবক সাধ্যানুসারে  
পরিচয় করিয়া যাবজীবন সোমপ্রকাশ  
প্রচারণরূপ অদীকৃত ব্রত প্রতিপালন  
করিবেন, এই তাঁহার প্রতিজ্ঞা । অতএব  
আমাদের বিষয় জানিয়া পাঠকগণের বিশে-  
ষ ইচ্ছালাভ নাই । তবে তাহ বা এই মাত্র  
জানিয়া রাখুন, যত আর রুচি হইবে, ততই  
ইহার উন্নতি তাঁহাদিগের নয়নগোচর  
হইবে । বাস্তব বিষয়ে বক্তব্য এই, সোম-  
প্রকাশের নিকট ও নৈমিত্তিক বাস নিকট  
অল্প নহে । গ্রাহকগণের রূপায় সফল  
তাঁহা চলিয়া যাইতেছে । বোধ হয়, এবি-  
ষে কোন বাঙ্গালী সম্প্রদায় সোমপ্রকাশের  
মাত্র সৌভাগ্যশালী নহে । এহলে গ্রাহক  
গণের একটী গুণের বিশেষ বিশেষ করিয়া  
উল্লেখ করা যৌক্তিক মনে করা বিধেয়  
হইতেছেন । সোমপ্রকাশের গ্রাহকদিগের  
আর যেই মূল্যদানে কাদরতা, রূপগতা  
অথবা উৎসাহী প্রদর্শন করেন না । এ  
হলে অন্য একটী গুণেরও উল্লেখ করা  
অবশ্যক, তাঁহারা একবার গ্রাহক হইল,  
তাঁহারা আর ইহাকে আর পরিত্যাগ ক-  
রেন না ।

উন্নতি বিষয়ের বিচারকর্তা আমরা  
এই, সত্যদর্শী অপকপাণী পাঠকগণ

তাঁহার বর্ষাবিচারকর্তা, তাঁহাদিগের  
বিষয়ের বিচয়ের অধিকারও আছে ।  
আমরা এই মাত্র বলিতে পারি, সোম-  
প্রকাশের বৈশিষ্ট্য হইতে মাত্র  
২২ নং ও বাবিনীকিতের উন্নতি  
মাত্র উন্নতি ও উন্নতি নহে । সোম  
সকল নিম্নলিখিত ও উন্নতি  
উন্নতি হইতেছে । ইহার বৈশিষ্ট্য  
পদার্থ হইবে, তাহার সর্ব  
রাহে । পাঠকগণ যদি উন্নতি  
বীকার করিতে চাহেন, আর  
উন্নতি এই, অনেক ইহার উন্নতি  
করিয়া উন্নতি হইয়াছেন । তাঁহা  
সর্বদাই সোমপ্রকাশের করিয়া  
তাঁহারা যে অভিপ্রায়ে দোষ সন্ধান  
তাঁহা মহোপকারের নিমিত্ত হইতে  
হে । ইহা কৃতজ্ঞতা হইয়া সেই সম  
দোষের যত সংশোধন চেষ্টা করিতে  
ততই ইহার উন্নতিলাভ হইতেছে । অগ  
উন্নতি লক্ষণ এই, সোমপ্রকাশের যত  
বিষয়ে যে অভিপ্রায় প্রকাশ করা হয়, তাহ  
বিশুদ্ধ যুক্তির অনুসারেই ব্যক্ত করা হই  
রা থাকে, তাঁহাতে ব্যক্তি, সম্ভাবনার অর্থ  
জাতিবিশেষের অনুরোধ বা সুখপোষণ  
নাই । তাহাতে অনেক সোমপ্রকাশের  
উপর আর পর নাই কুপিত হইয়াছেন  
ইহা অনাদরের হইলে কখন লোকে  
কোপে পতিত হইত না । লোকে কো  
উন্নতির লক্ষণ, ইহা অসিদ্ধ বাক্য নহে



য়েরা। ইংল্যান্ডের লোকের সূচী সংস্করণ  
হয়, তাহারা ইংল্যান্ডের মত স্বতাব গোপন  
করিয়া রাখিতে পারে না। তাহাতেই ইউ  
রোপীয়দিগের জুয়াখুড়ার সচরাচর আমা  
দিগের ন্যায় গোচর হইয়া থাকে। এই  
বিকার ঘাথারী স্বীকারে আমরা সম্মত  
নহি। এদেশে ভ্রমলোক আইসেন না এ  
কপ নয়, ইউরোপখণ্ডে অতদূর নাই এমনও  
নয়। উল্লিখিত বিপরীত ভাব দর্শন করি  
বার একটি বিশিষ্ট কারণ আছে। এদেশী  
দিগের দোষই সেই কারণ।  
ইউরোপখণ্ডে বিশেষতঃ ইংলণ্ডে যা  
ধীনতা রক্ষণের নিত্য বিরামমান। এতি  
বেশীরা পরস্পরকে আত্মসম্বন্ধে সূচী  
ধীন জীব বলিয়া জানি করিয়া থাকেন। সু  
তরাং কাহারও উপরে কাহার অসম্বন্ধ প্রভু  
ত্ব করিয়া উঠা নাই। কেহ সে ইচ্ছা করি  
লেও তাহা পারেন না। তাহার অতিকল পাইয়া  
থাকে, কাজে কাজেই ইচ্ছা-নিরুপ করিয়া  
রাখিতে হয়। এখানে সেধপ হয় না। ইউ  
রোপীয়েরা বিশেষতঃ ইংলণ্ডীয়েরা এদেশে  
উপস্থিত হইলেই তাহাদিগের অস্বকরণে  
এদেশীয়দিগকে নিরুপ ও অধীন প্রজা এবং  
অপমানদিগকে প্রধান ও প্রভু বলিয়া এক  
টি বিভাজন অতিমান জন্মে। এদেশীয়ে  
রাও আপনাদিগের পদ ও গৌরব বিন্দু  
হইয়া অন্যায় কাণ্ড ও আচরণ দ্বারা সেই  
অতিমান বহির্ভুক্ত প্রদর্শিত করিয়া দেন।  
শেষে এই কল হইয়, ইউরোপীয়েরা জুয়া  
হইয়া উঠেন, এদেশীয়দিগকে সেই দৌ  
রাঙ্গা সজা করিতে হয়।

ইউরোপীয়দিগের প্রধান ও প্রভু ব  
লিয়া অতিমান জন্মে এবং তাহাদিগের  
অপমানদিগকে প্রধান ও প্রভু বলিয়া এক  
টি বিভাজন অতিমান জন্মে। এদেশীয়ে  
রাও আপনাদিগের পদ ও গৌরব বিন্দু  
হইয়া অন্যায় কাণ্ড ও আচরণ দ্বারা সেই  
অতিমান বহির্ভুক্ত প্রদর্শিত করিয়া দেন।  
শেষে এই কল হইয়, ইউরোপীয়েরা জুয়া  
হইয়া উঠেন, এদেশীয়দিগকে সেই দৌ  
রাঙ্গা সজা করিতে হয়।

ইউরোপীয়দিগের প্রধান ও প্রভু ব  
লিয়া অতিমান জন্মে এবং তাহাদিগের  
অপমানদিগকে প্রধান ও প্রভু বলিয়া এক  
টি বিভাজন অতিমান জন্মে। এদেশীয়ে  
রাও আপনাদিগের পদ ও গৌরব বিন্দু  
হইয়া অন্যায় কাণ্ড ও আচরণ দ্বারা সেই  
অতিমান বহির্ভুক্ত প্রদর্শিত করিয়া দেন।  
শেষে এই কল হইয়, ইউরোপীয়েরা জুয়া  
হইয়া উঠেন, এদেশীয়দিগকে সেই দৌ  
রাঙ্গা সজা করিতে হয়।

ইউরোপীয়দিগের প্রধান ও প্রভু ব  
লিয়া অতিমান জন্মে এবং তাহাদিগের  
অপমানদিগকে প্রধান ও প্রভু বলিয়া এক  
টি বিভাজন অতিমান জন্মে। এদেশীয়ে  
রাও আপনাদিগের পদ ও গৌরব বিন্দু  
হইয়া অন্যায় কাণ্ড ও আচরণ দ্বারা সেই  
অতিমান বহির্ভুক্ত প্রদর্শিত করিয়া দেন।  
শেষে এই কল হইয়, ইউরোপীয়েরা জুয়া  
হইয়া উঠেন, এদেশীয়দিগকে সেই দৌ  
রাঙ্গা সজা করিতে হয়।

সের মার থাকিবে। এতদ্বারা পালি দিন  
আর প্রচার কর, তাহারা বিকল্প করি  
তে পারিবে না; বিকল্প করিলেই অনর্থ।  
অত্যাশ্রয় এদেশীয় দোষে সেই অন  
র্থের সম ক নিবারণ হয় না, সুতরাং উ  
রোপীয়দিগের দৌরাঙ্গা ও প্রভুত্ব  
হইতে থাকে। ইংলণ্ডীয়দিগের মনে এই  
কপে যে অতিমান বর্ধিত হয়, অন্য অন্য  
ইউরোপীয়ের মনে তাহা সংক্রামিত হইয়া  
থাকে।

এ দেশীয়েরা ইউরোপীয়ের অগ্রে সে  
দীন আচরণ করেন, তাহার দুই কারণ  
ইহাদিগের তীক্ষ্ণতা ও কাপুরুষতা। যে  
যুক্তি ও পেটুলন পরিধান দেখিলেই ই  
হারা দেব জ্ঞান করেন। দেবতা রুট হই  
লে আর নিস্তার নাই, এই ভাবিয়া সদি  
শেষ আনুগত্য দ্বারা তাহাদিগের চিত্তকে  
সন্তোষিত রাখিবার আশপণ চেষ্টা পান।  
অপমানই হউক, আর লাঞ্ছনাই হউক,  
তাহাতে উত্তর করা নাই। সাহেবেবা তা  
জার জাতি, তাহাদিগের কৃত অপমানের  
পরিণাম চেষ্টা করিয়া ইউরোপীয়ের  
বল নাই। একে ত আপনারা হীনবল ও  
অশীল, তাহাতে আবার রাজপুরুষেরা  
ইহাদিগের পক্ষ, কি করিতে গিয়া কোন  
বিপাকে পড়িব, অতএব এই চিন্তাই উপ  
স্থিত হয়। সুতরাং ভয়ানক হইয়া প্র  
তীকার চেষ্টার প্রবৃত্তি জন্মে না।

এদেশীয়েরা কি এইরূপে ইউরোপীয়  
দিগের প্রভুত্ব বৃদ্ধি করিয়া নিত্য কাপু  
রুষের ন্যায় চিরকাল ইউরোপীয়ের অত্যা  
চার সহ্য করিবেন? ইহার কি প্রতীকারের  
উপায় নাই? লাঠীর বদলে লাঠী, ইটের  
বদলে ইট, ও গুলির বদলে গুলি কি সেই  
একুত উপায় নয়? যদি ইহারা হীনবলতা  
ও অশীলসাহসতা দেখে সেই একুত উপায়ের  
অবলম্বনে গম্ভীর হয় না, রাজদ্বারত উদা  
চিত্ত অসহ্য হইয়া বহিরা হইয়া ক্রুর করি  
বার প্রয়োজন, তখন রাজদ্বারত হউন।

কেহ কেহ ইহার এই কারণ নিবেদন  
করেন, ইউরোপ খণ্ডের যত অপকৃষ্ট ও  
দুঃখ লোক তাহাদেরই আইসে, তাহা দি

অন্যদিকে বলাই, আর অন্যদিকে বলাই, আর  
 ন, খুঁটি ও পাইলট বিকটে পাইলটের সন্ধান  
 ত্যাগ করিয়া বিলাত ও কানাডায় হু-  
 তলাকে অনুসন্ধান করি। সকলেরই প্রাণ  
 হোচিৎসান ও সৌন্দর্য আছে। এত-  
 নিকটে রাষ্ট্রীয় স্বপ্নহোচিৎসান সন্ধাননা  
 গত খেতর, রাষ্ট্রীয় নিকটে ও প্রকার প-  
 হাচিৎসান সন্ধাননা তেমনি সন্ধান। যিনি হ-  
 ন অত্যাচার করিবার বিষয়ে কাহারও  
 বিচার ও ক্ষমতা নাই।

অধিকন্তর কেন্দ্রের বিষয় এই, এনে-  
 রেয়া ইউরোপীয়রাইনের প্রকার হুঁচি  
 রিয়া এতদিক করিয়া তুলিয়াছেন যে পদ,  
 ন, সন্তান ও গুণ প্রকৃতি সর্বাত্মে স্নেহ  
 দেশীয় কোন ব্যক্তি কোন সামান্য  
 উরোপীয়কে প্রণাম করিলেও সে  
 ইচ্ছাকৃত প্রতিপ্রণাম করে না, কিন্তু  
 দেশীয় নিত্য নমস্কার হইতে বিরত হয়  
 । একবার যে ব্যক্তি প্রতি প্রণাম করিল  
 , তাহাকে আর প্রণাম করা কেন? ই-  
 রেপীয়কে প্রণাম করিলে কি স্বর্গসো-  
 ন সংঘটন করা হয়? তেমনই অত্যা-  
 চিৎসান কি প্রণামের যোগ্য? সে যদি প্র-  
 ন না করিলে কুপিত হয়, তাহার সংস-  
 র প্রয়োজন কি? জিতেজির আলমহীম  
 হুযোগ ও অধ্যবসায়দান ব্যক্তির জী-  
 বা বার সর্বত্রই উৎসাহিত আছে। তজি-  
 ত এত শক্তি ও কাতরতা কেন?

রিচি সাহেবের কট্টাইলিল ও  
 'সর চারলস উড'।

সর চারলস উড প্রকৃতপক্ষে কুবক-  
 ক ত্রিটিক জাতির গৌরবের সন্নিহিত হই-  
 ব রক্ষা করিলেন। বীতর সাহেবের ক-  
 টে বিল ও 'রিচি সাহেবের' করার ক-  
 র বিল রিচি সাহেবের, এই আত্মা দিয়া  
 নি রাজনীতিকতা বিষয়ে পূরন প্রতীপ  
 সন্ধান করিয়াছেন। বীতর সাহেবের  
 ন হুযোগ ও অধ্যবসায়দান করিয়া সামান্য

কুবক, কুবক, বীতর সাহেবের  
 কুবক, কুবক করিয়া রাষ্ট্রীয় চেতনা  
 রিচি সাহেবের কিল সাহায্য কুবক  
 । এ সাহেব হইলে যে ব্যক্তি ক-  
 তরকম করিলে, তাহারই কারাগার বাস  
 হইত। কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া দেখা  
 যায় স্নেহ প্রতীপদান হইবে, কুবকেরা এ  
 বিলেরও কুবক-সন্ধান। তাহার হুঁচি মধ্যে  
 থাকিয়া জিহ্বা কারি কলের ইচ্ছামত সন্ধান  
 কার্য নির্বাহ করিলে, এই উদ্দেশ্যেই  
 ইচ্ছা বিসম্বল আইনের প্রস্তাব করা হই-  
 রাছিল।

সর চারলস উড স্নেহাকরেই এই  
 বলিয়া তারতন্যের গবর্ণমেন্টকে অনুযোগ  
 করিয়াছেন যে বীতর ও প্রজাপণের বি-  
 বাদ হইবার পর অবধি তাহার প্রথমোক্ত  
 অত্যাচারকারিগণের সহায়তা ও অনো-  
 রজন করিবার নিষিদ্ধ বিশেষ আইন করি-  
 বার চেষ্টা পাঠিয়েছেন। রিচি সাহেবের  
 প্রস্তাব বিধিবদ্ধ হইলে সর্ববিধ প্রতিজ্ঞা  
 ভঙ্গেরই দণ্ড হইবার সম্ভাবনা, কোন ব্য-  
 ক্তির পরিচালনা নাই। এইরূপে আরও  
 করিয়া সর চারলস উড লিখিয়াছেন "যদি  
 এই বিলের মূল হুঁচি ন্যায়নিক হইত, তাহা  
 হইলে ইহা ইংলও ও অন্য অন্য দেশেও  
 প্রচলিত করা অনায়াস হইত না। কিন্তু  
 আমি কোন দেশের ব্যবস্থা সংগ্রহে এ  
 প্রকার আইন দেখিতে পাই না।"

২. তিনি আরো বলেন ব্যবস্থাপক  
 সভার যাবতীয় সভারও এ বিলের  
 বিষয়ে একমত হইত হয় না কেহ কেহ  
 ইহাকে কুবিকাচ জ্ঞা, কেহ বা কেবল কুব-  
 দেশ, কেহ বা বাণিজ্য জবোর বিষয়ে এত  
 লিত করিবার অধুরোধ করিয়াছেন। ইহা  
 বিধিবদ্ধ হইলে যে সে বিচারালয় যে  
 কোন ব্যক্তিকে এতিকাচকারী বলিয়া  
 হয় সাজ অবধি হইবে ও সাজ পাইবে, ইহা  
 স্নানী কেমনে কুবক করিয়া হুঁচি পাই-  
 বে? কুবক ব্যক্তি যদি বিচারালয় হইত

রিচি সাহেবের কুবক, কুবক  
 কেহ তাহাকে কুবক, কুবক  
 ইহা লিখিলে এবং তাহার বি-  
 চিত্তই তাহার বিচার হইত।  
 স্নান যদি কেবল কুবক  
 আছে, তাহা বিচারালয়  
 । কেহ হুঁচি অথবা অত্যাচার  
 করার কুবক করিলে, আইনের  
 তাহার দণ্ডের বিধান লিখিত।  
 সন করিয়া সর চারলস লিখিয়াছেন  
 তা অথবা অত্যাচার করিলে বিচার  
 প্রস্তাবিত আইনে করিয়া কেহ কুবক  
 রাহেবটে, কিন্তু তাহা স্নান  
 তেহে না। কিন্তু, কি বিচার  
 আদালতই প্রতিবাদী হুঁচি করিয়া  
 কুবক করিয়াছে কি না ইহা বিচার  
 সন্ধান না করিয়া বিচার করিলে  
 না, তাহাতে প্রতিবাদী বিচার  
 অথবা প্রতিবাদী অনেক কুবক  
 সন্ধান করিতে হইবে, তাহা কুবক  
 লয়ের অনেক সন্ধান হুঁচি স্নান  
 দেশের এক বার হইবে যে কোন  
 প.পত্রিয়া নিবরণার্থী হুঁচি হয় না।

প্রস্তাবিত আইনের নির্দিষ্ট অধিকার  
 গের অন্তর্ভুক্তি করিয়াছেন, "যদি  
 খিত হইয়াছে, করার কুবক  
 যে কতি হইয়াছে, অথবা যে কতি  
 সম্ভাবনা ছিল, তাহা পূরণ করিয়া  
 হইবে। কুবক কর, এক ব্যক্তি  
 বসিয়া ১০০ টাকার স্নান, সে-কুবক  
 পারিল না। কুবক পাইলে কুবক  
 স্নান হইত; এতদ্বারা কুবক  
 ১০০ টাকার কুবক হইবে; তাহা  
 কুবক কুবক কুবক কুবক, ও অন্য দেশে  
 ব্যক্তিদের অথবা প্রতিবাদী জানিতে হইবে  
 ইহা স্নান না কুবক বাপার স্নান।  
 স্নান, তিনি স্নান কুবকদের  
 কুবক করিয়া বলিয়াছেন, স্নান  
 কুবক করার পত্র লিখিয়া কুবক হয়



কই তাঁহারকিন্ধকে এক বার দুই  
গাব হয়, নিয়া চিরকাল খাটাইয়া লম,  
হইবে না র অধ্যাহতি হয় না।

বেশী বিস্তৃত সুক্তি এক্ষণে করি-  
হতে মনুলস উক্ত প্রস্তাবিত বিলকে  
তালি করিয়াছেন এবং ভারতবর্ষীয়  
শাস্ত্রীয় একত্রে তাহা রহিত করিবার  
পীর হইয়াছেন। তিনি বলেন “বাণিজ্য  
করিবার পক্ষে সুবিধার জন্য বিশেষ  
করিয়া আর পক্ষকে ক্ষতিগ্রস্ত  
অতিরিক্ত অনার; উত্তর পক্ষেই  
আইন অনুসারে আপন আপন  
গায়ের উন্নতি চেষ্টা না করিলে বাণি-  
জ্য হইবে না। যাহাতে শীঘ্র বিচার  
যা সম্পন্ন হয়, সেই রূপ আদালত খা-  
লেই যথেষ্ট; কোন পক্ষের স্বাধীনতা  
লাপ চেষ্টা যুক্তিসিদ্ধ নহে।”

পরিদর্শক সম্প্রদায়ের বালকতা।

উক্ত সম্প্রদায় আজিও আমাদিগের  
আকার উত্তর দিলেন না, তিনি আমাদি-  
গের প্রতি যে বোঝারোপ করিয়াছিলেন,  
তাহাও তাহা সপ্রমাণ করিলেন না। তিনি  
হবে উদ্ধত ও অবিহ্ব্যকারী হইয়া অকা-  
ল্য বিবেচনা করিতে আমাদিগের মনে যে  
কাত ও কোপ জন্মিয়াছিল, তাঁহার ইলা  
দীর্ঘম তীক্ষ্ণতা ও অবজ্ঞিতা দেখিয়া তাহা  
আপনা হইতেই দূরীভূত হইতেছে। তিনি  
ক্রিয়াকারী বাবু কালীএসর সিংহের বোঝাই  
দ্বারা কৌশল করে আমাদিগকে মিথ্যা-  
বাদী করিবার চেষ্টা পাঠিয়াছেন, কিন্তু  
সেই বাবু সন্দেহ করেই তাহাকে মিথ্যাবাদী  
হিস্তিয়াছেন। কালীএসর বাবু এই কার্তিক  
আমাদিগের নিকটে এত উচিত এক খানি  
পত্র পাঠাইয়াছেন। আমরা এতদিন পরি-  
দর্শকের উক্ত প্রস্তাবের তাহা প্রকাশ  
করি নাই। কিন্তু যাহা হানে তাহা একটু  
কিন্তু, পাঠকগণের নিকট প্রকাশ করিয়া  
আমাদের পাঠ

আমরা পূর্বাগত সমস্ত পর্বাত্মোচনা ক-  
রিয়া দেখিলাম, পরিদর্শক সম্প্রদায়ের নি-  
তান্ত বালকতা প্রকাশ করা হইয়াছে। বাল-  
কের উপরে প্রৌঢ়ের ক্রোধ করা অবিধেয়,  
এই বিবেচনা করিয়া আমরা আপনা হই-  
তেই তাঁহার অপরাধক্ষমা করিলাম। তিনি  
যে কিরূপ অশিষ্টসাধনে উদ্যত হইয়াছিলে-  
ন, বালকতা এযুগে তাহা বুঝিতে পারেনা  
নাই। যাহাতে আমাদিগের দেশের লো-  
কের অমঙ্গল ও অসুবিধা মোক্ষসংশোধিত  
হইয়া তাঁহার সৎপথের পথিক হন, আমরা  
প্রার্থনা এই চেষ্টা পাঠাইছি, কিন্তু আমরা  
যদি মিথ্যা প্রবন্ধ দি-  
আর আমাদিগের উপ-  
গ্রহণ করিয়া ভদ্রনুসং-  
হত হইবেন।

|  |  |
|--|--|
| প্রাণনা আহার<br>করিতে পারে   | সামান্য  |
| অনেক সময়ে যু-<br>ক্ত ও অত্যন্তের সি-<br>দ্ধি হয়। বাল্যাবস্থায়<br>অভ্যাস, কে-<br>কেন একপ-<br>পতিত হইলে | যদি, দেহ<br>খজা, সং-<br>হত হইতে<br>যা যাহার<br>। সুক্তি-<br>দৃষ্টিপথে<br>হুটী বিভা-<br>তীর ও বি-<br>হিত হইল। কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া<br>কেনা যায়, কেন শ্রদ্ধাধারির স্মৃতিত মুণ্ড-<br>কেন বিধর্মী জ্ঞান করাই সমস্ত হয়। সুক্তি<br>কেন শ্রদ্ধাধারির সপক্ষতা করিতেছে।<br>জননীধর যখন পুরুষকে কেন ও শ্রদ্ধা<br>একান করিয়াছেন, তখন তদ্বারণ সুক্তি<br>বিলম্ব কাহা নহে। সোতা সম্প্রদায় হউ-<br>ক, আর অন্য কিছু হউক, তাহার একটি<br>উদ্দেশ্য আছে। তদ্বারণ না করিলে সে<br>উদ্দেশ্য সিদ্ধির ব্যাঘাত জন্মে। শ্রদ্ধাধর<br>ইংরাজী জুতা পর ও পিরাম গার হইয়া,<br>এই অপরাধে তাহাকে “বৃষ্টান” বলা হয়<br>কিন্তু সে যদি জিজ্ঞাসা করে, ইংরাজী<br>জুতা পরা পিরাম গার দেওয়াই কি |

বৃষ্টান পদব্রজ আর তাহা হইলে আর  
অর্থ ইচ্ছা হইত হয়। ইহা যদি মিথ্যা  
বলিয়া বিবরণচন্দ্রাবলি এবং ইন্দ্রের  
অনন্ত শক্তি ও অনন্ত মহিমার বিবরণ চি-  
ও তাঁহার এণ কীর্তন করে, আর সন্তো-  
রতীরে অথবা মসিকের মধ্যে, মণ্ডারমা  
ও মুক্তিকনয়ন হইয়া এক বার জুতা পর  
তিত ও একবার তথা হইতে উখিত হই-  
য়া নমাজ না করে, গোড়া মুসলমানের  
এখনই তাহাকে নাস্তিক বলিয়া তাহা  
সহিত আলোপ পরিত্যাগ করিবেন। পিতা  
যদি মেরির প্রতিবৃদ্ধি গৃহে না রাখে  
এণ্ড প্রভৃতি এখনই তাহাকে ধর্মহীন  
বলিয়া হুগা ও নিন্দা করিবে। জর্জের যা  
জনসংস্কার ক্রিয়া না হয়, তাহার সহচর  
রা এখনই তাহাকে চির নিরামাশী বলি-  
হির করিয়া রাখিবে। তাহাব অরূপ  
ঈশ্বরতত্ত্ব সহচরদিগের মধ্যে তদ্বারণ  
সমর্থ হইবে না। কলিকাতা ব্রাহ্ম সমাজ  
র আচার্যের পিতৃ ভ্রাতৃ এসনে, প্রার্থনা  
দ্বারা আহার উন্নতি হয় না, এই উপ-  
নেধাতে আমাদিগের বিষয়েও এক  
ঘটনা হইয়াছে।

আমরা পরম্পরা শুনিলাম, উল্লিখিত  
ভারতী বাহির হইয়া মাত্র কতকগুলি ব্রা-  
এক কালে কে ধৈর্যবীর হইয়া উঠিলেন  
রোষাবোধ বশত; তাঁহার আমাদিগে  
এযুগে প্রার্থনা ও উপাসনা এ উত্তর  
ধের তেহ প্রহরণ সমর্থ হইলেন না। তাঁ-  
হার প্রথম কণ্ঠেই আমাদিগকে উপাসনা  
অধীকারকারী নাস্তিক বলিয়া হির ক-  
লেন। কিন্তু কোথায় শক্তি হই-  
যখন তাঁহার অতিমিবেশ পূর্বক প্রস্তাব  
পাঠ করিলেন, তাহা বিগের অম দূরীভূ-  
হইল। শুনা ও আদর পত্র দেখা বাই-  
ছে, এখনও প্রার্থনা ব্রিটিশ বাক্যটির তা-  
পক্ষ; অনেকের, হৃদয়বল-  
তাঁহার জ্ঞান, করিতেছেন, আমরা তা-  
হিঁদের প্রার্থনা রহিত পরিচালনা করি-

উপদেশ দিতেছি। আমাদের পক্ষে উদ্দেশ্য নাই। প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি হয় কিনা, সেই বিচার উপস্থিত হইয়াছে। যদি কেহ আত্মার, বল, সাহস, ও উৎসাহের নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে চাহেন করুন, তাহাতে আপত্তি নাই। কিন্তু প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি অথবা জগতের শ্রীবৃদ্ধি লাভ সম্ভব নাই; আমরা পূর্বে এ কথা, কহিয়াছিলাম, এখনও কহিতেছি।

কঠোরপন্থা নীতি হয়, একপ দৃঢ়তার নীতিকলে বরং আত্মার ও জগতের অনুন্নতিবই সম্ভাবনা। সমুদায় নীতান্তর্জাতিক হইয়া সৎগ্রহ পূর্বক বস্ত্রবস্ত্রের উপায় উদ্ভাবন না করিয়া যদি এইরূপ প্রার্থনা করিয়া নিশ্চিন্ত হইত "হে করুণাময়! আমাকে এই দুঃসহ নীতি যন্ত্রণা হইতে রক্ষা কর" তাহা হইলে কি বস্ত্রের ত্রুটি হইত? মাধুয যদি গৃহ নির্মাণ চেষ্টা করিয়া নীতি প্রায় ও বর্ষার উপদ্রব হইতে আত্মরক্ষার চেষ্টা না পাইয়া নিরন্তর ঈশ্বরের প্রার্থনা-গম্যগণ হইত, একপ উৎকৃষ্ট অট্টালিকা সকল কি আমাদের পক্ষে নষ্ট হইত? "জগদীশ্বর! আমাকে কঠোর মধ্য কামোত্তোলন কর" এই প্রার্থনা করিলে যদি মানুষের প্রার্থনা পূর্ণ হইত, কখন বেলওয়ার ত্রুটি হইত না।

আত্মার ও জগতের উন্নতির কারণ বস্ত্র, প্রার্থনা সে কারণ নহে। প্রার্থনা সে কারণ হইলে দুর্ভ, মীচপ্রকৃতি, ও ক্রুর জনক ব্যক্তিবর্গেরও আত্মার উন্নতি হইত। ক্রুরকর্মের ধনসম্ভার দুর্ভ লোকে কিরূপ প্রার্থনা করে? "শত্রু বিপাত হই না আমার একাধ ও একান্ত দুর্ভ হউক" এই কি তাহার প্রার্থনার নয়? সেই বিস প্রার্থনা পূর্ণ হইবার কি সম্ভাবনা আছে? প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি হয় না, বরং উহা দ্বারা আত্মার উন্নতি অনুন্নতি জন্মাইতে পারে। বাহ্যিক আত্মা উন্নত না হইয়া, অন্তরঙ্গ মন হইতে

তাহার মুখ হইতে কি কখন একপ প্রার্থনা নির্গত হয়? কলতঃ যেনপ বিচার করা গেল, তদ্বারা স্পষ্ট প্রতিপন্ন হইয়াছে, প্রার্থনা আত্মার উন্নতি সাধিকা নয়, উন্নতির অনুশাসিকা।

অচিহ্নিত কর্মচারিদিগের  
প্রতি অনুরোধ আত্মা।

প্রথমে সর্বদা বিনামের সমাদ পাইয়া অর্ধ বিনম্র হইয়াছে এটা সমাদ প্রতিপোচর হইলে যেকপ মনের তাব হয়, বহু স্পতি বারের গবর্ণমেন্ট গেজেটে প্রচারিত সর চারলস উডের আত্মা প্রবণ করিয়া পদচুক্তি অচিহ্নিত কর্মচারিদিগের মনে সেইরূপ ভাবের উদয় হইবে। গবর্ণমেন্ট আফিসের ব্যয় সংক্ষেপ হওয়াতে অনেক কর্মচারী পদ চ্যুত হইয়াছেন। তারতম্যীয় গবর্ণমেন্টের প্রস্তাব ক্রমে সর চারলস আত্মা দিয়ছেন, যাঁহাদিগের ২০ বৎসর কর্ম করা হইয়াছে, তাঁহারা অপারগতা বিষয়ে চিকিৎসকের সর্টিফিকেট দিন আর না দিন প্রার্থনা করিলেই পেনশন পাইবেন।

আমাদিগের প্রাণে বেদান্তবাদী  
শেব অসম্মতি।

আমরা মধ্যস্থ মানিয়া বেদান্তবাদী-শেব সঙ্কিত বিবাদের মীমাংসা যে প্রস্তাব করিয়াছিলাম, তাহা দ্বারা আপনাতঃ বক্তব্য লিখিয়া তিনি আমাদিগের নিকটে এক পত্র পাঠাইয়াছিলেন, তাহা একাংশ যোগ্য বোধ না হওয়ায় তাহা গ্রহণ কবিলাম না। বেদান্তবাদী আমাদিগের মানিত মধ্যস্থের প্রতি মীমাংসা তার সমর্পণ করিতে সম্মত হন নাই। তিনি বলেন, প্রস্তাবিত মধ্যস্থিগের মধ্যে তিন ব্যক্তি তিন জাতীয় লোক, তাঁহারা বৈদিক জাতীয় কুল-সম্বন্ধ সংক্রান্ত বিশেষ হুজুর অবগত নহেন। দ্বিতীয়, মধ্যস্থের আমাদিগের

কিষ্কিৎকর বলিয়া প্রতীয়মান। বুদ্ধিমান লোকে যে বিষয়ের সম্ভাবন নহেন, তাঁহা বাস্তবিক সত্যে প্রবৃত্ত হইলে তাহা ধবা বুদ্ধিতে পারেন না, ইহা সুশ্রাম। আমরা জানিতাম, বুদ্ধিমুখী অবিসর নাই। বাগ্মানের এই জল কোন্টী? এবং কৃতদার পাতে দান প্রতিবিদ্ধ কিনা? এই দুটী মীমাংসারই মধ্যস্থ মানা হইতেছে। হেরা শাস্ত্র ও যুক্তি অনুসারে তাহার চার বরিয়া মীমাংসা করিয়া দিতে জেনোবিশেষের ব্যবহার জ্ঞান না হলে শাস্ত্রজ ব্যক্তিরা তাহা দ্বারা অসমর্থ হইবেন, এবং বহু বিন্যাস কি কপে না সিদ্ধ হইতেছে? এ যুক্তিতে তিন তিন জাতীয় তিন তিন ব্যবস্থাপক আবশ্যক হয়। এদেশে কি জেনোবিশেষের ব্যবস্থাপক বিশেষ নিকপিত আছেন? যুক্তি ও শাস্ত্র এ উভয়ই টিকি জেনোবিশেষ অনুগত নহে।

দ্বিতীয় আপত্তির বিষয় চিন্তা করিয়া আমরা নিত্য বিস্ময়প্রাপ্ত হইতেছি। দ্ব্যহেরা আমাদিগের সঙ্কিত অসম্মতি। কখন পাছে পক্ষপাত করেন, বেদান্তবাদী এই পক্ষ করিয়াছেন, এ পক্ষ কিরূপে মনোমধ্যে উদ্ভূত হইল? উদ্ভূত বাক্যেরোগ দ্বারা মধ্যস্থিগের কেবল অসম্মতি করা হইয়াছে। সমস্ত ব্যক্তির উপরেও যদি কোন বিষয়ের মধ্যস্থতা তার সমর্পণ হয়, তাহা হইলে তাঁহারাও মনে পক্ষপাত প্রবৃত্তি করেন না, আর তাহা সম্ভব। পক্ষপাত সার্বিক ব্যক্তিবর্গের তাহা হইল। বুদ্ধিমান, ইহা কি সম্ভাবিত হয়? বিশেষজ্ঞ তাঁহাদিগের কৃত মীমাংসা সোম একাংশে প্রকাশিত হইবার কথা আছে। অবশ্যই মীমাংসা প্রচারিত হইলে মীমাংসার মধ্যস্থিগের মুখ্যতা হইবে? বেদান্তবাদী



গর জুসয়ে তাহার প্রাচ-  
স্মৃত্তিকি ভবিষ্যৎ সমর্থ

বৌদ্ধ বৈদিক জ্ঞানীর মধ্য হ-  
ই গ্রন্থের প্রস্তাব করিয়াছেন,  
যাহারা বিশুদ্ধ যুক্তির অনুসারে  
বিচারে পারণ, তাঁহারা যে জ্ঞে-  
উন, তাঁহাদিগকে মধ্যম পদে বরণ  
র বিষয়ে আমাদিগের আশঙ্কি না-  
বিষয়ে আমাদিগের এই মাত্র বক্ত-  
দামরা যে চারি ব্যক্তিকে মধ্যম পদে  
নীত করিয়াছিলাম, তাঁহাদিগের স-  
সপত্তিত লোক চাই, আর কোন আ-  
ত নাই।

### পুস্তকমাণ্ড ।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার করি  
ছি, লিখিত পুস্তকগুলি, প্রাপ্ত হই-  
ছে।

১। কোঁজাদারী গাইয়ের প্রথম ভাগ।

গোরখপুরের তেপুটি মালিকের ও তেপুটি  
মালিকের জীবিত বাবু গ্যারীমোহন বন্দ্যো-  
পাধ্যায় ইহার সঙ্কলন করিয়াছেন। ইহাতে  
অন্য পণ্ডিতের মতাদি, কোঁজাদারী  
অন্য অন্য বিশেষ বিশেষ আইন  
এবং কলিকাতা ও আগরার সমস্ত আদাল-  
তের সরকুলার প্রকৃতিসমিবেশিত হইয়াছে।  
কলিকাতা ডি'রোজারিও কোম্পানি ইহা  
মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছেন।

২। কুবেরী উপাখ্যান।

ইহা জীবিত বাবু কামদাস বন্দ্যোপাধ্যায়  
প্রণীত। গুপ্তবাস গোষ্ঠীর মধ্যে এতদুপাখ্যান  
প্রচারণ কার্য সম্পন্ন করিয়াছেন উহার মূল্য  
ছয় আনা অবধারিত হইয়াছে। ইহাতে গদ্য  
ও পদ্য উভয়ই আছে। গদ্য ভাষা পদ্য  
ও গদ্য ক্রিয়াক্রিয় মিটে হইয়াছে। গদ্যের এই এ  
কটি বিশেষ দোষ ঘটিয়াছে অনেক ছক্কর সং-  
গ্রহে তদন্থ ব্যবহার ও অসঙ্গত প্রযুক্ত হই-  
য়াছে। সংস্কৃত ভাষার ব্যুৎপন্ন না হইয়া  
সংস্কৃত মত প্রকাশ্য হইতে পারে। প্রায়ই এই  
প্রকার ভাষা

৩। পুস্তকমাণ্ড ।

ইহা সংস্কৃত গ্রন্থ। চানক্যি-নীতি জীবিত  
বাবু চানক্যি পিরোমনি ইহার রচনা করিয়া-  
ছেন। ইহাতে নন্দদুলাল নন্দ বঙ্গের  
গোকবারা কয়েকটি স্থব কথা হইয়াছে। নি-  
বেশনি বরণ তাহার সীকাও করিয়াছেন।  
শোক গুলি বক্ত মন্ত হয় নাই। এখন সংস্কৃত  
গ্রন্থ লিখিয়া কৃতজ্ঞতা লাভ সম্ভব নহে।

৪। মনিহরণ।

জীবিত যজ্ঞেশ্বর কট্টাচার্য জীবিত যজ্ঞেশ্বর  
অন্তর্গত মনিহরণের উপাখ্যান ভাগ ইহাতে  
সঙ্কলন করিয়াছেন, ইহা গোষ্ঠী বঙ্গ হস্তিত  
ও প্রচারিত হইয়াছে। মূল্য তিন আনা  
নিকপিত দৃষ্ট হইল।

৫। পাণ্ডু দলন।

জীবিত বাবু রামলাল ধূমোপাধ্যায় এই  
গ্রন্থ বাবু প্রেসিডেন্সি প্রেসে মুদ্রিত ও প্র-  
চারিত করিয়াছেন। ইহাতে গৌরী ও নি-  
ত্যানন্দে মজিক ও জীবন চরিত্র এবং বেড়া  
মেকি ও কঠোরতা প্রভৃতির বিবরণ লিপিত  
হইয়াছে। আমবা প্রকারকৃত বিজ্ঞাপনের  
কিরণ উদ্ভূত করিয়া দিলাম, পাঠকগণ  
তদ্বারা গ্রন্থ প্রণয়নের উদ্দেশ্য বুঝিতে পা-  
রিবেন। সে এই—

“একদা একদা বৈষ্ণব ধর্ম দ্বারা যে কত  
প্রকার অসিষ্ট ঘটনোৎপত্তি বোধ হয় তাহা সঙ্ক-  
লেই অবগত আছেন। নিত্যানন্দ এই ধর্মের  
প্রবর্তিত। তিনি গৌরীর একজন পরম ব-  
ক্ত ছিলেন। সর্বাঙ্গি শ্রী শতাব্দী অতীত হইল এই  
ধর্ম প্রচলিত হইয়াছে। ইহার বক্ত জীবিত হই-  
তেছে, ততই যেন অসিষ্ট ঘটনোৎপত্তি; তাহার  
কারণ এই, অধিকাংশ ইন্দ্রিয়গারাগ অঙ্গ ও  
সমাজিক ব্যক্তিরাই আপন আপন বাসনা চ-  
রিতার্থের নিমিত্ত ইহার আশ্রয় লইতে অগ্রসর  
হয়। তাহার “পরিভ্রম করা বৈষ্ণবধর্মের বি-  
লম্ব কর” এই বলিয়া তাহাতে পরামর্শ দেয়  
এবং তদ্বারা দ্বারা জীবিত নির্ভাষ করে। তি-  
কার দ্বারা অসিষ্ট ঘটনোৎপত্তি নির্ভাষ হয় ক-  
লিয়া তাহের অসিষ্টতা থাকে না। সুতরাং কি-  
মে সত্যের মিত্র সমাজ হইবে, তিনে তাহার  
হের মূল সুবণ্ড করিব এবং কি প্রকারে তাহার  
নিগদে প্রচারিত করিয়া আপন সমাজের মিত্র  
করিব এই চিন্তার সত্য বক্ত থাকে এবং বক্ত  
ভীর ও কলঙ্কারাগের দোষ দ্বারা তাহার  
অসিষ্টতা হইবে।

৩১০ বৎসর অতীত হইল, গৌরী নদ

দীপে অগম্য বিজ্ঞের উরসে ও নদী দেবীর  
গর্ভে জন্ম গ্রহণ করেন। তিনি অতিশয় বি-  
শুদ্ধচিত্ত ও ধর্মগারাগ ছিলেন। তাঁহার  
অলোক সামান্য গুণ সম্পন্ন দেখিয়া অনেক  
নারায়ণের অবতার বোধ করিয়া তাঁহার অ-  
স্তর হয়। দেশ বখন অজ্ঞান অন্ধতমসে আ-  
কৃত থাকে, তখন কোন অসামান্য লোককে  
এক জন জান করা অসম্ভাবিত নয়। আমরা  
জিহ্বা তির দেশে বক্ত অবতারের কথা শুনিতে  
পাই, এইরূপে সে সমুদায়ের হৃদয় হইয়াছে।  
গৌরী সন্তান বিকল্পগারাগ ছিলেন। তাঁ-  
হার সমস্ত অর্থাৎ বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের প্রাচুর্য  
হয়। প্রাথমিক বৈষ্ণব; বিশুদ্ধ চরিত্র ও  
বর্ষা পার্শ্বিক ছিলেন। কিন্তু অধিকসংখ্য  
মূর্থ লোকে এই সম্প্রদায় প্রবর্তিত হওয়াতে এ-  
কদা তাহার অতিশয় অধনা মনা উপস্থিত  
হইয়াছে। যে সম্প্রদায় হৃদয়, তদ্ব্যতীত অধিক  
সংখ্য কৃতবিদ্যালোক না থাকিলে কখনই  
তাহার গৌরব ও উন্নতি হয় না। বৃষ্ট ধর্মের  
এত উন্নতি হইয়াছে কেন? ইউরোপ খণ্ডের  
বিদ্যাপ্রভাবই কি তাহার অসাধারণ কারণ  
নয়? ধর্ম মূর্থ লোকের হস্তে পতিত হইলে যে  
তাহার অধোগতি হয়, তাহা ব্রহ্মে অপরূপ সং-  
শয় নাই। আমরা সচরাচর দেখিতে পাই,  
‘মসন রজা কোন কোন পরীক্ষার দাবতীর  
মূর্থ ইত্যর লোককে বৃষ্টধর্মাবলম্বী করিয়া  
ছেন। কিন্তু তাহাদিগের হৃদয়ে বৃষ্ট ধর্মের  
উন্নতি ঘুরে থাকুক, কেবল অবমাননাই হই-  
তেছে। মূর্থ ইউরোপীয়েরাও ইহার একট  
অসামান্য দৃষ্টান্ত হল।

অপর, সম্প্রদায় প্রবর্তকের প্রকৃত মত  
বিশুদ্ধ ছিল না। ইহাও এই সম্প্রদায়ের অপ-  
কর্তে একটি প্রধান কারণ। গৌরী সংস্কৃতি  
বিস্তৃত হইয়া বক্ত গ্রহণ করেন। দৃষ্ট হইয়া  
ধর্মের ‘অসিষ্টতা’ করা তাঁহার অসম্ভাবিত  
ছিল না। তাঁহার অনেক অসিষ্টতা ও তৎপরে  
পারিত হইয়াছিল। বর্তি অসম্ভাবন করিয়া  
মোক্ষ কার, ইহাই এই সম্প্রদায়ের দাবতীর  
অসম্ভাবিত হইয়াছে।  
এই অসম্ভাবিত হইয়াছে ও পারিতিক উ-  
ন্নতি হইয়াছে।

বধ বলনার্থ ধর্মের ছাটি ছেঁয়াছে। সেই  
ধর্ম যে আমাদিগকে ঐহিক সুখে বঞ্চিত  
করিয়া ছাটি লোপ ক্রিয়ায় অবস্থিত করিবে,  
তাহা কোন ক্রমেই অগম্যতার অতিশ্রেয়  
নহে। বর্তমান সময়ের ভারতীয় পুরুষ সংসা-  
র বিমুক্ত হইয়া পৌরাণিক ন্যায় যদি দার  
পরিভ্রমণ ও দার পরিত্যাগ না করেন, অগম্য  
ধর্মের ছাটি কি স্বপ্নকাল মধ্যে বিশেষণ প্রাপ্ত  
হইবে না? এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইতে-  
ছে, সংসার ধর্মের জলাকলি দিয়া বৈরাগ্য  
অবলম্বন করা কেবলমাত্র অতিশ্রেয় নহে। ভা-  
স্কায় অনতিক্রম্যেত কার্য করিয়া ভাস্করের হ-  
স্তাধীনা লাভের সম্ভাবনা কি? বৈকল্যেরা যত  
দার সংসর্গ পরিত্যাগী হইতে লাগিল, ততই  
ঐ দলে পশুপীতির বন্ধন রূপ হইতে লাগিল।  
এক প্রীতে অশ্রুতপ্ত থাকিয়া বিস্তৃত সাংসা-  
রিক সুখ ভোগ দূরে গেল, ভাস্কর্য্যের প্রবেশ  
নয়ন। পশু ব্যবহারও ঐ সম্প্রদায়ের অনে-  
ক দুর্জীবনাবস্থা নিকটে লক্ষ্য পাইতে লা-  
গিল। অধিকের মধ্যে এই হইল, অনেক  
সংস্কারিক নিকা করিলেন। প্রকৃত ধর্মের  
নাম বোধে অসমর্থ হইয়া বিকৃত ধর্ম প্র-  
বর্ত্ত করিলেন যে এইরূপ ধর্মই হইল টা  
প্ৰতিষ্ঠান প্রসিদ্ধ কথা। রোমান কাথলিক  
ও বৎকালে পাপনি চলে পরিণয় প্রতিবেশ  
এই পাপিষ্ঠাভিলেপ, ইংলণ্ড প্রভৃতি স্থানে  
যেহ বিলুপ্ত ব্যবহার উপস্থিত হইয়াছিল।  
একটিল উপপত্তী রাখা ঐ দলের প্রায় স্পষ্ট  
স্বার্থ হইয়া উঠিয়াছিল।

কলতঃ পাবণ দলনকার ইনকস সম্প্রদায়  
কলতঃ এ দেশের যে যে অমিষ্ট ঘটনোহে  
পলিয়া বর্ণন করিয়াছেন, আমরা যত দূর  
সম্পর্ক করে কহিতে পারি, তাহার এক  
কথা অস্বাভাবিক নহে।

সুতরাং বিত্ত প্রভৃতির গুণ দোষ বিষয়ে আ-  
মাদিগের বক্তব্য এই, অনেক স্থলে প্রকৃ-  
ত অর্থ লক্ষিত হইল। ভবিষ্যৎ প্রকৃ-  
ত অনেক গুলি প্রকৃতিবাহিত হইয়াছে। রচনা উৎ-  
সর্গ না হইত, নীরস ও বাজলা ভাবের রীতি  
কল্প হইত না।

প্রাপ্ত।

বেধুন সোসাইটি।

তদ্বৎস কাল নয়নের অন্তর লে খাবি-

রা হুসজিহা বেশ সুখার পুনবার বেধুন  
সোসাইটি আমাদিগের সমক্ষে উপস্থিত  
হইয়াছেন। প্রিয় সুখদ অনেক দিবস দূর  
দেশে থাকিলে যেমন বড় খাদ্যর তাঁহার  
দর্শনার্থ বাকুল হন, এবং তিনি উপস্থিত হ-  
ইলে প্রীতি বিস্ফারিত নেত্রে তাঁহাকে আ-  
লিঙ্গন করিতে প্রাথমিক চন, কলিকাতা বা  
সিয়া। বেধুন সোসাইটির নির্মিত এত দিন  
সেইরূপ উৎকর্ষিত ছিলেন এবং গত দুই  
তিবার তাঁহাকে দর্শন করিয়া নয়নের কৃত-  
জ্ঞতা লাভ করিয়াছেন। এত সন্ত, কাহারও  
অপ্রীতি ভাজন নহেন। গবর্নর জেনারেলের  
প্রকাণ্ড সভা তাঁহাকে তুল্য জ্ঞান করেন নাই,  
বদ্বেশের ব্যবস্থাপকেরাও অবজ্ঞা করেন  
নাই; কাশী, মহারাষ্ট্র, ও কলিকাতার রাজা  
রাও তাঁহার সম্মান বর্ধনে ক্রটি করেন নাই,  
বিসনরিয়া তাঁহাকে পার্শ্ব ও অপরিচিত বলি-  
য়া ঘৃণা করেন নাই। সংবাদ পত্র সম্পাদকে-  
রাও তাঁহাকে অপ্রীতিকর বলিয়া হেয়জ্ঞান  
করেন নাই; অন্য অন্য লোকের ত কথাই  
নাই।

রাজি ৭৭০ ঘটিকার সময় সভার কাণ্ড আ-  
রম্ভ হইল। সভার নিয়মিত কর্ম সমাপন হই-  
লে ডাক্তর নর্ম্যান চিবস একটি বক্তৃতা ক-  
রিলেন। শাসনিক স্বাস্থ্য বিধান পাঠের প্রা-  
ধান্য প্রতিপাদন করাই বক্তৃতার মুখ্য উ-  
দ্দেশ্য। চিবস আমাদিগকে হুতন কিছু  
শিক্ষা দিতে পারেন নাই বটে কিন্তু মুক্ত  
কণ্ঠে স্বীকার করিতে হইবে যে অনেক গুলি  
মহোপকারি বিষয় আমাদিগের স্মৃতিপথে  
ঈদ্রিত করিয়া দিয়াছেন। তিনি বলেন, পরি-  
ভ্রমণ থাকা, নিশ্চল বায়ু সেবন করা এবং নি-  
শ্চল জল পান করাই আমাদিগের শারীরিক  
সুস্থ থাকিবার প্রধান উপায়। কিন্তু কলিকা-  
তা যেমন অপরিস্রব হইয়াছে, ইহর জল  
বায়ু ও তেমনই মন্দ হইয়াছে। জল লবণাক্ত  
হওয়াতে যত, উদরের পীড়া, কাশী প্রভৃতি  
রোগ কলিকাতার মুক্তিমান হইয়া বিচল  
করিতেছে। বায়ু দুর্গন্ধ পদার্থের সহিত মি-  
শ্রিত হইয়া নাসা রস্মে প্রবেশ করিয়া গী-  
হার দ্বার উন্মোচিত করির দিতেছে। কলি-  
কাতাতে যত জলাশয় আছে, তাহার এক-

টিতেও উৎকর্ষ জল পাওয়া যায় না।  
লবণাক্ত জল অন্তরে অন্তরে  
কোন প্রকারীতে পানিত হয়, কোথাও  
পুকুরীতে বা দুর্গন্ধ মর্দ্যাদার জল আদৌ  
পড়ে। পানীর জলের অন্য দুর্গন্ধ, পুকুরী  
খনন করা কর্তব্য এবং সেই পুকুরীতে  
হাতে বিস্তীর্ণাঠ দিয়া গটির জল আসিয়া  
পানিত হয় একটা উপায় করা। অধিক  
উৎকর্ষে তিনি বলেন এই সকল বিষয়ে কিছু  
নিষ্পন্ন কমিসনরদিগের ন্যায় কলিকাতা  
বাসিন্দাদেরও সম্পূর্ণরূপে মনোবোধ্য হওয়া  
উচিত। কলিকাতাবাসীরা যদি কার্যে অগ্র-  
সন্ধান করিয়া কার্যে প্রবৃত্ত হন, তাহা হইলে  
আমাদের বাক্যের উৎকর্ষ তাঁহাদিগের স্বাস্থ্য  
মন্দ হইবে সন্দেহ নাই। তাহারা বিবেচনা ক-  
রিয়। সেখান কলিকাতার মধ্যে তরানক দারী-  
তর কি নির্মিত উপস্থিত হয়? ইংলণ্ডেই বা  
এত অল্প সংখ্য লোকের সুস্থতা হয় কেন?  
কোন রোগে কত লোক আগত্যাগ করে  
তাঁহারা এখনে ইহার নির্ণয় করুন, তাহার  
পর তত্ত্বাবধানের উপায় অবলম্বন করিবেন।

ডাক্তর চিবসের প্রস্তাব গঠি সমাপন হ-  
ইলে পর রাজা কালীচন্দ্র বাহাদুর এবং  
রাজা দিনকর রাও প্রস্তাব লেখককে সম্মান  
প্রদান করিলেন। পক্ষাৎ ব কালীচন্দ্রের স্বাস্থ্য  
চিবসের সপকতা করিয়া এই একটি অধিক  
কথা বলিলেন যে প্রাচ্যের প্রীতি অবলম্বন  
আমাদিগের জামোপকারিত্বের একটি প্রধান  
অস্ত্র হইয়াছে। তিনি এই বাক্যটী নিজাম  
শাস্ত্রীর প্রমাণ দ্বারা সকলের বিলক্ষণ প্রদর্শন  
করিয়। দিলেন। তাহার পর রেনডরও লাল-  
বিহারী দে তক সাহেবের অনুরোধের বশ  
বর্তী হইয়া এতৎ সম্বন্ধে কিছু কিছু কহিলেন।  
সেবে তক সাহেব এক সুস্বীর্ণ বক্তৃতা করিয়া  
সম্বাদন করিলেন। তাহার গত সেসনের  
বক্তৃতার সহিত এ বক্তৃতার বড় ইতর নি-  
শেষ নাই। হুতনের মধ্যে কেবল এই মা-  
ত্ৰনা মেল ভাষণ প্রদীপে বাজলা দে  
অধিক টাকা ব্যয় হইয়া থাকে।

বিবিধ সংবাদ।

২৫৫ কার্তিক সোমবার।

আমরা গতবারে লিখিয়াছিলাম,



বচনাময় পেন্সন লওয়াতে ওয়াইন শিগ  
... দে নিবৃত্ত হইয়াছেন, কিন্তু সবিধেয় অ-  
... জানা গেল, আজিও তৎপদে  
... নিষ্পত্তি হয় নাই । একে গবর্ণমেণ্টে শি-  
... সংক্রান্ত কার্যে অসম্মত হইয়াছেন, তাহা  
... আর অযোগ্য লোক নিয়োগ দ্বারা অ-  
... সিত না হয় ।

... আই সার্ভিসে রিবিউর সম্পাদক মাকলি  
... ১০০০ টাকা মাসিক বেতনে হরকরার  
... হইতেছেন । মাকলিন গালিলান ক  
... ওয়াশিংটন ডেটের জ্যেষ্ঠ সচিবের বোধ  
... এই বারে ইংলিসমানকে হারি মানিতে  
... হবে ।

১লা ডিসেম্বর লেডি এলগিনকে সুএজ হ-  
... তে আনিবার জন্য কেরোজ নামক বাখীর  
... প্রেরিত হইবে ।

... শুনিলান প্রধানতম বিচারালয়  
... কথিত হইয়াছেন এক মাসের মধ্যে যে উকী  
... আটটি বাদ আপীল অগ্রাহ্য হইবে, তা  
... আর তথায় ওকালতী করিতে দেওয়া  
... হইবে না । সর বাব্বেন্স শিকক আপীলের সং  
... বমাইবার ও এডভোকেট উকীলদিগকে  
... করিবার চেষ্টায় আছেন ।

লর্ডন টাইমস লাড কানিওর জুনি সং-  
... আচার্য প্রতিবাদ করিয়া বন্নিয়াছেন  
... ওয়ার্ড কোম্পানির সময়ে বোধ্য রাজনী  
... তিগ্ন নিগে এলসনীর রাজনীতির, অধিক  
... আর ভবনে আশাদিগের রাজনীতির এক  
... পক্ষে পক্ষ কবা হইতেছে । ৩ এমিকে  
... ব'টস দ্বারা খোঁসত পরিবর্ত করিয়া  
... লিখাছেন, সব ১৭৭৭ উডেন জুনি সংক্রান্ত  
... আরও আরও উপকার করিবে ।  
... ক'মিউ, সর বাব্বেন্স নিগে ও বাদ-  
... মঙ্গলিত বীড়া সংক্রান্ত তথ্য  
... হারিগারীর মনোরঞ্জন করাই তাৎপরি  
... প্রধাম কর্তব্য বিবেচনা হইয়াছিল ।

ইঞ্জিনিয়ার বিল্ডে লিখিত হইয়াছে, বর্তমানে  
... রাজার দারজিলিঙ বাকীর সমস্ত  
... ন্যায় এক প্রকার খুলি কাঠের টেগা  
... তাহা কিঞ্চিৎ কলিকাতার  
... পণ্ডিতগণের নিকটে প্রেরণ  
... হইবে ।

অযোধ্যাগেজেট বলেন, তদ্রূপ গোল  
... সেনাদলের এক জন সার্ভেন্ট এক  
... অপরাধে রুদ্ধ হইয়াছিল । সে সার্ভিসিগের  
... সজ্ঞাতসারে এক কুপে ... প্রাপ্যতা  
... করিয়াছে । নরহত্যা, আত্মহত্যা, দাতব্যী, ...  
... প্রধানের প্রতি অসামান্য প্রকৃতি বহুকেটি  
... মোন এক্ষণে সেনাদলে প্রচুর পরিমাণে প্রবর্তি  
... হইয়াছে । ইহার মূল সংশোধন আদেশ ।

উক্ত পত্র আরও বলেন, সিক্কর কমিসনর  
... ঘোষণা করিয়াছেন, যে ব্যক্তি পদপাল নষ্ট  
... করিবার অব্যক্তিগত উপায় উদ্ভাবন করি  
... বেন, তাঁহাকে ৫০,০০০ টাকা পুরস্কার দেওয়া  
... হইবে ।

টাইমস ... বলেন, হিন্দু ...  
... নামে নানা সাক্ষ্যে । এর জন অশুচর হামদ  
... রাবাদে পুত চট্টোয় হিন্দুদের সফায়েরা  
... একে একে সকলেই ... হইতেছেন ।

আমরা কয়েক সপ্তাহ অধিচ কাল দেশ  
... হিন্দুদিগী সত্যের কথা শুনিয়া আসিতেছি,  
... চাকানিটস সে দিবস গলিয়াছিলেন 'আরুদ্র'  
... পরিভাগ করিয়া সভা অধিক লাজ বসিতে  
... ছেন । কিন্তু চাকাপ্রকাশে সত্যের বিরুদ্ধ পক্ষ  
... করিয়া বিশ্বদ্রোণ হইয়াছে, সত্যের বেলা  
... আরুদ্র তার সত্যেরা বড় চলাটগাছেন ।  
... বাতাল দেশে সংক্রিয়ামাঙ্গল্যপ্রবেশের অনেক  
... বিলম্ব আছে ।

২৬এ কার্তিক মঙ্গলবার ।

গত কল্যা ইংলণ্ডের ... পুত্র  
... বঙ্গপ্রাণিব উপলক্ষে যে বক্তৃতা ... তাতে  
... বক্তৃতােকের সনাক্ত হইয়াছিল ।

গত কল্যা ... লিখিত ...  
... হইয়াছে ।

|         | নাম  | মোট টাকা   |
|---------|------|------------|
| সেহেরের | ১৩০৪ | ১৮, ১৪০০   |
| কালীর   | ১১০১ | ১৫, ৬৫, ৫০ |

অজরীল হোসেন নামক এক জন ছুত  
... পূর্ণ নিম্নোখী ও হত্যাকারী পুত হইয়াছে ।

লিঙ্গীগেজেট বলেন, অরপুদ হইতে ক  
... ক ... লে ... হইবে ...  
... লাভ হইলে ... প্রার হইয়া  
... লাভপাশন করিবে, তাহাদিগের নিমিত্ত  
... বা ... হইবে ।

বলদন করিবার আবশ্যকতা নাই । বাহার  
... বাকি ... নিরা ... দিগকে ... খাটা  
... ইয়া ... চার তাহাদিগেরই ...  
... আবশ্যক ।

উক্ত পত্র হেরাট হেইতে সংবাদ পাওয়া  
... চেন এক জন প ... যুতের যন্ত্রে মোস্ত মন  
... দেব সচিত্র সুলতান ... সজ্জি হইয়াছে ।

উক্ত পত্র ... করিয়াছেন, ভারতবর্ষীয়  
... গবর্ণমেণ্টে ... নদীর ... করিতে যে নি  
... লেখ করেন, সে আচার্য পরিবর্ত করিয়াছেন ।  
... শীত তথায় ... হইবে ।

এক জন ... হইতে ...  
... ক ... ছুই ... বালক ও ...  
... কর প্রাণ ... করিয়াছে ।

২৭এ কার্তিক বুধবার ।

আগামি ... ভারতবর্ষীয় ...  
... পাটনা ... খুলিবে । আপাততঃ এটি নিম্ন  
... কর হইয়াছে ... এককালে ত  
... থান লইয়া ... হইবে না, এক ...  
... করে খাণ্ডে হইবে ।

এই ... পূর্ণ ...  
... পুত্র ... খুলিবে, এতদুপলক্ষে এক  
... জোজ হইবে ।

আসাদিগের গেজেট বলেন ভারতবর্ষীয়  
... রেইলওয়ে কোম্পানি বহুদূর ...  
... হীনের ... জন্য ...  
... শকট করিবেন ...  
... আমোদ ...  
... খাণ্ডে ।

... নিউ ...  
... দ্বারা ...  
... আর ...  
... হার ...  
... হাট ...  
... স ...  
... র ...  
... তা ...  
... র ...  
... করিতে হইবে ।

কিনিয়ে এক ...  
... তাহাতে ...  
... প ...

হিলেন, তৎকালে রাজা বিষ্টের ইমানিউ  
ল একদিবস তাঁহার মিত্র সাজা করিতে  
গিয়াছিলেন। ইহা বিন্দয়ের নচে। রাজা ও  
সিবালদির পরস্পর প্রথম আছে। রোম  
ইবার বিবলে রাজা ও সেনাপতি উভ-  
য়ই মত সমান এবং উভয়েই বরাণী  
মাইটের উপর বিরক্ত। এইনিমিত্ত গারিবা-  
ডি ইটালী গণসম্মেটে কর্তৃক নিশীড়িত হ  
য়া ও বাজার উপর অসহ্য প্রকাশ করেন।  
এই

‘উল্লখ’ নামক ‘বাল্মীকি’ নামের একটি কবিতা  
বিশিষ্ট প্রকৃত বৃত্তান্ত প্রকাশ করিয়াছেন। এই  
কবিতা বিবিধ ভেদিতমানের নাম করিয়া নবান  
‘উল্লখ’ উল্লখের নিকট হইতে একল।  
‘উল্লখ’ এই নামের সাধারণতঃ ক  
‘উল্লখ’ জন্ম টাকার দেন বলিয়া যে জনএস কর  
‘উল্লখ’ চিহ্ন। ; যের একজন মাজাজী ফিবিজি,  
‘উল্লখ’ দের বাজার গনতম বন্দোবস্তী।  
‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ গব। ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ নি  
‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’  
‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’  
‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’ ‘উল্লখ’

২৮ এ কাহিনী রহস্যভিৎস।  
 জ্ঞানরা দুঃখিত ইটেল ম. টে. গুয়ান এল -  
 দার মজাদ ৭ এ উক্তি। যাটভেতে।

গোখাইনগরে চাষি জন টেউটেপৌর টি-  
কিংসক ভ্রমভ্রা পাবনগে ৬৪ নিকটে এই ব-  
লি। খাঃ ১২৪৪ ১২৪৪ খ্রিস্টাব্দে কক্ষাটিকার ও  
প্রশংসা পত্র হীন। যুক্তিকার বাসেজের দাঃ  
চিকিৎসা বাসে। প্রকৃত ইংল্যান্ডে জাঃ ১২৪৪  
নিটে খটিতেছে অতএব এংল্যান্ডকে চিকিৎসা  
করিতে নিবেশ করা নঃ ১২৪৪। ময় বাটল  
চাষ ভ্রমভ্রমে বহিষ্কৃত, যুক্তি বৈমকল চি-  
কিংসক প্রকৃত বিশাল দোষ প্রকণিত হইত  
ফাঃ হইলে ত্রিঃ খাঃ ১২৪৪ বিবেচনা করি-  
তে পাঃ ১২৪৪। কিন্তু যখন রেখা বাঃ ১২৪৪  
ফাঃ ১২৪৪ দ্বারা দঃ ১২৪৪ অনেক  
চাঃ ১২৪৪ হইতেছে, উপর তাঃ ১২৪৪  
বল করিয়া দিয়া করেকর চাঃ ১২৪৪  
বাসাঃ ১২৪৪ চাঃ ১২৪৪ দঃ ১২৪৪  
চাঃ ১২৪৪। ময় বাটল দঃ ১২৪৪  
ফাঃ ১২৪৪ ময় বাটল দঃ ১২৪৪

মালিক'জের পুলাপখচারিরা উ'কো  
 (বাতে তহব) মালিক'জের গোয়েন্দা  
 পুলাপখচারিরা মালিক'জের গোয়েন্দা  
 মালিক'জের পুলাপখচারিরা  
 মালিক'জের পুলাপখচারিরা  
 মালিক'জের পুলাপখচারিরা

ହରକରା ବଲେନ, ଆଡ଼ୋରର ଧାରଣ ଏକ ଧାନ  
 ଧାନର ଅଂଶକୁ ନିଜର ହାତରେ କମ ୨ ବାଟିମାନ  
 ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ଜନ ଆଂଶକୁ ଧାନର ଅଧ୍ୟାୟ ଓ  
 ଧାନକିମ୍ବଦନ୍ତେ ଧାନ କରାଉଛି ଧାନର ଧାନ

‘ভাষানিগের উপর আভিযয় সম্বন্ধে একমত  
কি. ঘাটেন

বোম্বাইয়ের ৮ ব্যক্তি, একটি স্ত্রীলোককে  
ডাইন জ্ঞান করিয়া তাঁহার নাসিকা ছেদন  
করাতে ডাহানিগের ৫৩২ বৎসর করিয়া  
সেখানে হইয়াছে। মূৰ্খতা কি বিকৃধনা ?

দক্ষিণ হেরাল্ড বনেন মহাবাজ সিম্বিয়া  
আগামি পুণিয়ার ১ নং ব্রাঞ্চ ভোজন করা-  
উবেন

নিম্নলিখিত দ্রুতন নোট প্রচলিত হই-  
তেছে

|                          |    |      |       |
|--------------------------|----|------|-------|
| କ.ଜି.ନା.ଜା               | ଟି | ନା.ଅ | ନା.ଟି |
| ହଜି.ଭ.ସୋ.ଟି ୨ ୫୦ ୦୦, ୦୦୦ |    |      |       |
| ଅ.ଡି.ଡି.ଟି.କ ୨ ୨୨, ୫୩    | ୧୦ |      | ୨୫୦   |
| ଅ.ଡି.ଡି. ୧୧ ୩୩           |    |      |       |
| ଅ.ଡି.ଡି. ୩୩୩୩୩୩୩୩        |    |      |       |
| ୧୦୧୧୫ ୫ ୫୫               |    |      | ୧୦ ୫୫ |

[illegible]

১৫ জুলাই ১৯৫১ সালে, জাতিসংঘে বিশেষতঃ পূর্ব বেঙ্গলে চতুর্থ প্রতিরোধী স্বেচ্ছাসেবী স্বেচ্ছাসেবী হতে। "সরকারী ইহার কারণ।  
 "অন্যতঃ সর্বত্র সকল স্থান অপেক্ষা বেরাচর  
 ১৫ জুলাই ১৯৫১ সালে, জাতিসংঘে বিশেষতঃ পূর্ব বেঙ্গলে চতুর্থ প্রতিরোধী স্বেচ্ছাসেবী স্বেচ্ছাসেবী হতে। "সরকারী ইহার কারণ।  
 "অন্যতঃ সর্বত্র সকল স্থান অপেক্ষা বেরাচর  
 ১৫ জুলাই ১৯৫১ সালে, জাতিসংঘে বিশেষতঃ পূর্ব বেঙ্গলে চতুর্থ প্রতিরোধী স্বেচ্ছাসেবী স্বেচ্ছাসেবী হতে। "সরকারী ইহার কারণ।  
 "অন্যতঃ সর্বত্র সকল স্থান অপেক্ষা বেরাচর

কলাও দেশান্ত এক অখ্যাতের শরে এক  
একার ঘাস ভরে, ডাকার ডুলার উত্তম বস্ত্র  
কইতেছে। টেকসাল নগরের এক ধনী নরিক

ইহার ব্যবসা আরম্ভ করিয়াছেন।  
বোধ হয় কুলার অনেক গৌরব বাইরে।  
২০৭ কার্তিক শুক্লাব্দ।

বাঁহারা লাটফারগেরের কল্লিরাহিলে  
হাবুতার অন্য সতা করিরাহিলেন।  
ইহার মধ্যে ৩৬০০০ টাকা সংগ্রহ করিরা  
এতদিন অর পুরের রাজা তত্ব নিংহ  
টাকা প্রদান করিরাছেন। রাজপুতনার  
অন্য রাজারাও শীঘ্র চাঁদা দিবেন। ইতি  
এখান হইতে ৪ লক্ষ টাকা প্রেরিত হইরা  
সম্প্রতি নলগাটি রৌসের নিকটে  
ব্যক্তির প্রেরণ নষ্ট হইরাছে। এক জন পুহি  
ইনস্পেকটর, দুই জন কনষ্টেবল ও এক জন  
জমিদার এক টেলা গাড়ি ভাড়া করিরা রেই  
ওরে দিরা যাইতেহিলেন, এযত সময়ে বুট  
রের বাপ্পীর শকট আসিরা পড়িবাতে ডা-  
হারা সকলে এক কালে চূর্ণ হইরা গিরাছেন।  
যে ব্যক্তি টেলা গাড়ি লাকা দিরাহিল তাহা  
কে ধন্য করা হইরাছে।

ইংলিসমান জীবন করিয়াছেন, সরু ঘিঁ  
 রোজ একদিন অখাকচ খইয়া যাইতেছিলে  
 আতপ ডাণিত হইয়া মুকিত হইয়া ভুতত  
 পতিত হন, একণে তিনি কিঞ্চিৎ মুখ হই  
 ছেন ।

૧૭. અગ્રહાયુગ અનિવાર્ય ।

একজন চক্রকোণী হইতে লিখিয়া পাঠাই  
 গাছেন, কিছু দিন হইল যেদিনীপুর জিলার  
 অন্তর্গত নেভারোটল নামক সরাসরের কিঞ্চি-  
 তদূরে গৌবর্জন খালের তীরস্থ ডাকী ঘুসির  
 উপর হঠাৎ এক আশ্চর্য মহ পড়িয়াছে। মহলী  
 অতিশয় গভীর ও ২-৩। অনেক বনে ঘোষ  
 পাচড়া পুরাতন বর বাত প্রভৃতি অনেক প্র-  
 কার যোগাক্রান্ত লোক তাহাতে দান ও তা-  
 হার অল পান করিয়া স্বাস্থ্য লাভ করিয়াছে।  
 দক্ষিণ হরাল্ড বলেন এক জন আফি-  
 সার বিচারকার্যে নিয়োজিত এক কর্মচারীর  
 দ্রোকে ব্যক্তিগারিণী করাতে ঐহার দ্বারা তাঁহ  
 কে সন্তোষ প্রদান করেন। আফিসরকে তদ্রি-  
 বন্ধন কর্ত্ত ডাঙ্গ করিতে হইয়াছে। সেনাদল  
 ই সমুদয় জীবনের ন্যায় ধর্ম্মনীতিকেও তদ্রি-  
 জান করেন ?

নিম্ন লিখিত মূল্যে গব. স্টোরেটের নং-  
বিক্রীত হইতেছে :—

|                    |            |
|--------------------|------------|
| ২৪ টাকার সিকা      | ২২—২২।     |
| ৪ টাকার কোম্পানির  | ২৪—২৪।     |
| ৫ টাকার সিকা       | ১০৪৫—১০৪৫। |
| ৫৪ টাকার কোম্পানির | ১১২।—১১২।  |

ଅଧ୍ୟାନୁଷ୍ଠାନ ବିଚାରାଳୟ ।

আমক ও হেমন্ত প্র ৩৫০ টাকা চুরি করিয়া  
ডাঃ সিংগের ২০ বৎসর মেগাদ হইয়াছে।



নীচরণ ও গিরিধারী এক শত টাকার খানি নোট চুরি করাতে তাহাদিগের সর মেয়াদ হইয়াছে।

গিরাচাঁদ খান এক বেশ্যার কয়েক খানির অপহরণ করাতে তাহাকে তিন বৎসর কারাগারে থাকিতে হইবে।

হরিদাস নামক এক ব্যক্তি এক জনের বাড়ী গিয়া দেওয়াতে তাহার ১১ বৎসর বীণা বাসের আদেশ হইয়াছে।

গাম নামক এক ব্যক্তি কতকগুলি জলকান দ্রব্য নষ্ট করিয়া নামক অপর এক ব্যক্তিকে ধরিয়া তদ্বিস্তৃত প্রথম ব্যক্তির এক বৎসর ও তীরের তিন বৎসর মেয়াদ হইয়াছে।

আমল দাস এক ছড়া গোনার নেন চুরি করিয়া বেনীমাখর চৌধুরীকে দেয়। তদ্বিস্তৃত তাহার ৭ বৎসর বীণাস্তর বাসের ও বেনীমাখরের এক বৎসর কারাবাসের আজ্ঞা হইয়াছে।

মসুমনি শাহ, নেত্রাবি মলিক ও খেদা একখানি কাঁচপি মসুমল চুরি করাতে তাহাদিগের দুই বৎসর মেয়াদ হইয়াছে।

মিনমাখ সেন ১০০ টাকার নোট চুরি করিয়া বালিয়া তাহার দুই বৎসর মেয়াদ হইয়াছে।

### ইউরোপীয় সমাচার।

নোবেল ১৩ই অক্টোবর।

অনেক পাদরী ও বোবলন পাদরীরা রাজা বেক্টর ইমানুইলেস বিক্রম বড়বড় করিয়া হুত হইয়াছে। যে সকল কাগজ পত্র পুলিশদ্বারা হুত হইয়াছে তাহারা বোম্বের গবর্নমেন্টের দ্বারা সম্মান হইয়াছে।

লণ্ডন ১০ই অক্টোবর।

মাজিলন গটমাক নদীতে এক সেতু করিয়া লরপার ফেরিতে গান হইবার চেষ্টায় আছেন। ক্রিজোহীরা যুদ্ধে বিনষ্ট হইয়া তাঁহাব প্রতিরোধ করিবার চেষ্টায় একে বিনষ্ট হইয়াছে।

নিউকাসলে দাউন্টন সাহেব বলিয়াছেন বিজোহী সভাপতি ডেবিস সেনা ও রণতরঙ্গল লড়াই করিয়াছেন, অতএব তিনি শীঘ্র আত্মীয় হইবেন। একজন জনপ্রতি ই লর্ডের গবর্নমেন্ট শীঘ্র দক্ষিণ প্রদেশকে স্বাধীন বলিয়া স্বীকার করিবেন।

লণ্ডন ১৮ই অক্টোবর—আমেরিকা ও ইটালি-বিষয় বিবেচনার্থ এক বিশেষ মন্ত্রিসভা ৮শ ২৫ই অক্টোবর—৮ই কের্টিকিতে তরানক যুদ্ধ হইয়াছে। বিজোহীরা অনেক হত ও পলায়িত হইয়াছে। গবর্নমেন্টের ৩০০০ লোক হত হইয়াছে। বিজোহীরা পটমাক পার হইয়া চেমল নদী অধিকার করিয়াছে। গবর্নমেন্ট কান্ট্রি উপনিবেশের প্রজাব ভাগ করিয়াছেন। বিজোহীদিগের প্রতি প্রতিরোধ সমাজ প্রতিকারের রাজস্ব বিয়তক কে বর্জিতাছেন যে তিনি স্বল্পপূর্বক দশ ল-

ক তুলার বস্ত্র। ইউরোপে বিক্রয়ার্থ প্রদান করেন।

নিউইয়র্ক ১৭ই অক্টোবর। নিউইয়র্কে সাধারণ লোকদিগের এক সভা হইয়া গিয়াছে। সভাপতি লিফলনের ঘোষণা পত্রের প্রতি ঘোষণা বাপ কর হইয়াছে। বিজোহীরা পেনসিলভেনিয়ার বড় রেইলওয়ে নষ্ট করিয়াছে।

পারিস ২৭ই অক্টোবর—ডি. লাটোর অবগণি বোম্বে, টানিরাত্তি বারলিন ও সার্টজেন টিউনিং হুত হইয়াছেন। বাটোজি ইটালীয় মন্ত্রি বৎসর মধ্যে রহিলেন।

পারিস ২৭ই অক্টোবর—ডি. লাটোর অবগণি বোম্বে, টানিরাত্তি বারলিন ও সার্টজেন টিউনিং হুত হইয়াছেন। বাটোজি ইটালীয় মন্ত্রি বৎসর মধ্যে রহিলেন।

লণ্ডন ১৮ই অক্টোবর—থ্রুবেলস পদত্যাগ করিয়াছেন। ডুহেন ডিলটস তদীয় পদে নিযুক্ত হইয়াছেন। কোল্ড ও পারিসিগিলির পদ ত্যাগের সম্ভাবনা।

প্রাচীর গবর্নমেন্ট পুনর্বার আত্মীয় হইবার পরিকল্পনা করিয়াছেন। মহাসভা তা অগ্রাহ্য করাতে রাজা সভা বন্ধ করিয়াছেন গারিবাল্ডি অগ্নে অগ্নে আত্মত্যাগ হইতেছেন। তিনি স্মৃতি হইলে ইংলণ্ড দর্শন করিবেন।

বিজোহীরা কর্তৃত্বের নিকটে গবর্নমেন্টে সেনা দ্বিগুণক আক্রমণ করে, কিন্তু দুই দিনস ভয়ানক যুদ্ধের পর পরাজিত হইয়াছে। বারকেন হে-তে সম্রাট গারিবাল্ডির বিরুদ্ধে এক সভা হইয়া ভয়ানক দাঙ্গা হওয়াতে গবর্নমেন্ট লণ্ডন ও মহানগরের একাংশ স্থানে লক করিতে নিষেধ করিয়াছেন।

### গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বাল্লালেন্দোর লেপ্টেনেন্ট গবর্নর

আদেশানুসারী নিয়োগ।

৩রা নবেম্বর। নিম্নলিখিত কর্মচারীরা আপন আপন জেলার ফেরিক ও কমিটির মেম্বর হইবেন।

মেজর এ. এড. পোর্টম, পাটনার পুলিশের ডিষ্ট্রিক্ট সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইবে

কাল্পেন রিবার চিহ্নতের  
কাল্পেন, সিবাই সাহাবাদের  
কাল্পেন সি. ডি. এস. কল্ক, বোয়ারেস  
লেপ্টেনেন্ট আব. এম. সিন্ধার সাক্ষরনের সহকারী পুলিশ সুপারিন্টেন্ডেন্ট।

৪ঠা নবেম্বর। সালকীয়ার বুলোক বাবু ন-রোতম মলিক বজ্রেশ্বর বাবুপাক সভার ৩ আইন অধ্যক্ষ হওয়ার ডেপুটি কালেক্টরের কমন্ড পাঠিবেন

৫ই নবেম্বর। বতদিন কাকর জুনা আসিবেন বতদিন সব ডিসিটালী সরঞ্জাম বাবু ছারক, নাথ তটচারা ভগলপুরের বিলরেজাবের চিকিৎসার ভার পাইবেন।

৬ই নবেম্বর। আর, জে, অটসাকব বেহারের সিবিল ও সেনিয়ার জজ হইবেন কিন্তু বতদিন

অম্বাকান আজ্ঞা সাহয় রাজস্বীর প্রতিমিধি কমন্ডর থাকিবেন।

পাটনার প্রতিমিধি সিবিল ও সেনিয়ার জজ হইবে, লাটোর সাহেব ওয়ারস পূর্ণ সিবিল ও সেনিয়ার জজ হইবেন।

এ.আব. টমসন সাহেব হাওড়ার মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন। কিন্তু বতদিন অম্বা জোন আজ্ঞা, না হয় সাহাবাদের প্রতিমিধি সিবিল ও সেনিয়ার জজ থাকিবেন।

এস.সি. কাল্ডেল সাহেব বাজস্বীতে প্রথম প্রমোদ মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন কিন্তু বতদিন অম্বা জোন আজ্ঞা, না হয় সাহাবাদের প্রতিমিধি সিবিল ও সেনিয়ার জজ থাকিবেন।

জে.আ.স. মসগ্রাট সাহেব বাজস্বীর প্রতিমিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর থাকিবেন।

এচ.সি. সন্দলগু রক্তন হীর প্রতিমিধি জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

বাবু দ্বিগুণ বিলাস মুরসিদাবাদ হে ট আদালতের প্রতিমিধি জজ হইয়া উক্ত জেলা-ব সমন আদার কমতা পাইবেন।

পাটনার ছোট আদালতের জজ ডবলিউ, নাইট সাহেব নিজ কর্মচারীত কুনার খানব এ প্রতিমিধি জজ হইবেন।

বেববেগ আর সু. ও নন্দলাব পুর্বা হিত হইবেন।

বেববেগ জবাইউ এরাবক গোঁকাটির পুর্বা হিত হইবেন।

৩রা নবেম্বর প্রতিমিধি সিবিল জাইন্ট লব-জমপি, এক, বিলু সাহেব বজ্রহানে মঙ্গল পদ হইবেন। ময়মন সিংহের প্রতিমিধি সিবিল আদালতের সারজন আব. বাববিস সাহেব তথ্য লব পদ হইবেন।

গব আন্টি-ট সবজন বাবু অরদায়েণ কাল্পি বিলাসজের দাতব্য চিকিৎসালয় তথ্য পাইবেন।

১লা নবেম্বর—লেপ্টেনেন্ট এক হেগাস পত জালু বিলাসন লা আবাব কামরুপ বে প্রতিমিধি প্রতিমিধি ১৫৬টাক হইয়াছেন

আসামের অধ্যক্ষপতি, বোম্বের প্রতিমিধি মঙ্গলী কমন্ডর এ. সি. কাল্পেন সাহেব সম আনিমের কমন্ড পাইয়াছেন।

বালেশ্বরের প্রতিমিধি ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মোল্লী গোলাম সফদ নিজ সুপারিন্টেন্ডেন্টের বিচারের কমন্ড প্রাপ্ত হইয়াছেন।

৭ই নবেম্বর—মেজর আর এল টমসন ১৭ নিউ বজ্রেশ্বরী হু. লব সেনাদলের অধ্যক্ষ হইয়াছেন।

পাটনার ১৭ নবেম্বর ডেপুটি জিম কাল্পেন মেজর ১৭ নবেম্বর বাবু পিউ ভগলপুরের মেজর হইবেন।

১৭ নবেম্বর—মেজর আর এল টমসন ১৭ নিউ বজ্রেশ্বরী হু. লব সেনাদলের অধ্যক্ষ হইবেন।

১৭ নবেম্বর। আর, জে, অটসাকব বেহারের সিবিল ও সেনিয়ার জজ হইবেন কিন্তু বতদিন

সংবাদে সচকারী পূর্ণাঙ্গ প্রকাশিত হইতে  
এই প্রস্তাব প্রণয়ন করা হইয়াছে।

পত্রপ্রেরকের প্রতি

শ্রী.উপাধ্যায় দ্বারা প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

প্রেরিত

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়

শ্রী.উপাধ্যায় প্রেরিত পত্র প্রাপ্ত  
শ্রী.উপাধ্যায়





# সোমপ্রকাশ

"সবরীলা মতপিত্তাথ যার্মিঃ সর্বস্বতী স্তুতিমহতী ন স্বীকর্তা।"

ভাগ :  
২ সংখ্যা :

সূত্র ১২৬২। ১০ অগ্রহায়ণ। ইং ১৮৬২। ২৪ নবেম্বর

মূল্য ১ টাকার  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকার

বিজ্ঞাপন।

এককগণের প্রতি।

এককগণকে জনান যাতেওহে কার্যিক  
সংস্কৃত হওয়াতে অনেকের প্রভুত লো  
মাত্রাটো বহুলা বিশেষিত হইয়াছে, অগ্রহা  
য়ণ মাস 'অন্তীত' হইলেও অনেকের মূল্য বেশ  
হইবে, অতএব তাঁহারা বহা করিয়া মূল্য পা-  
ইয়া দেন। উক্ত 'লা কলিকাতা' সংস্কৃত  
বলেতে আমাদিগের নামে পাঠাইলেই আ-  
বরা নিশ্চয় ও শীঘ্র পাইব।

বিজ্ঞাপন।

চাকরিপাতা নিবারণ। ঐযুক্ত চক্ষুশিখর  
সংস্কৃত পুত্র ঐযুক্ত কাজীজব্বার সিংহ সন্ত-  
সন্ত হইয়াছে। ইহার ক্রীড়ার, স্ত্রী ক্রম  
সংস্কৃত, দ্বিগুণিতগের স্ত্রীপিত্ত নিকট  
কেউ ছোট আনতিন আছে। বহুলা কেউ  
উক্ত লক্ষণমাত্র ব্যক্তির 'সন্তসন্ত' করিয়া  
সামগ্রিক সমস্তদের নিকট সংস্কৃত দিতে  
গানেন, উক্তকে ১১ টাকা পত্রকার দেওয়া  
হইবে।

সোমপ্রকাশ।

১০৬ অগ্রহায়ণ। সোমবার।

অগ্রহায়ণের দিওহে।

তাকা নিউস লিখিয়াছেন কবিতার  
কবিতার অধ্যাপিও অত্র পরিচয় ক  
র নাই। এটি সত্যের পূর্বে অম্মা ৫ মর্শ  
ঘোষণা করিয়া দিয়াছিলেন, বীভন, স  
বৎসর আসামে গমন করিয়া গরদার  
দগকে এক বহুলায় আশ্রয় করেন

এবং পুনর্বার অম্মা প্রদর্শন ঘোষণা ক-  
রিয়া দেন, কিন্তু কেউ কলকাতা হইতে  
পারেন নাই। প্রায় ১০০ মাত্র বিদ্রোহী  
সমবেত হইয়া আছে। তাহারা গবর্ণম-  
েন্টের বাক্যে বিশ্বাস করিতেছে না। তাহা-  
রা কহিতেছে, গবর্ণমেন্ট যদি নিম্নলিখিত  
চারিটি প্রস্তাবে সম্মত হন, তাহারা শস্ত্র  
ত্যাগ করিব।

প্রথম, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের কর্ত-  
ত্বাধিগণের হস্তে তাহাদিগের শাসনত্ব  
সমর্পিত না হইয়া গবর্ণমেন্টের হস্তে স-  
মর্পিত হইবে।

দ্বিতীয়, সর্বপ্রকার ক্রীড়াইয়া দি-  
তে হইবে।

তৃতীয়, তাহাদিগের দেশের মধ্যে  
সিপাহী থাকিবে।

চতুর্থ, গবর্ণমেন্টকে তাহাদিগের হস্তে  
দারগাদিগকে সমর্পণ করিতে হইবে।

তাহারা যে কারণে 'সন্ত' করিয়া  
ছে, তাহারা তাহাদিগের মনের 'ত' ও  
বিত্রোত প্রভৃতির কারণ স্পষ্ট 'বাধনমা'  
হইতেছে। গবর্ণমেন্টের কর্তৃত্বপন্থান  
এবং তাহারা তদান্বে অসম্মত হইলে ক-  
র্ত্তাধিগণের অত্যাচার করিয়া তদান্বে  
চেষ্টা এই ছুটি তাহাদিগের হস্তে বি-  
ক্রোহবদ্ধ প্রদীপিত করিয়া দিয়াছে।  
কর্ত্তাধিগণের যদি অত্যাচার না থাকি-  
বে, গবর্ণমেন্ট দারগাদিগকে তাহাদি-  
গের হস্তে সমর্পণ করেন, তাহারা একপা  
অনুরোধ করিবে কোম। অপর, তাহারা

গবর্ণমেন্ট কর্ত্তাধিগণের শাসনত্ব  
তে চাহিতেছে না বা কেন? গবর্ণমেন্ট  
কর্ত্তাধিগণ যে তাহাদিগের উপায়  
চাব করিয়াছেন, তাহাদের আশঙ্কিত  
অনুমান সন্দেহ করিতেছে না। অত্যাচার  
করা তাহাদিগের একটি রোগ আছে, তাহারা  
আশঙ্কিতের অবিকৃত নাই।

উল্লিখিত বনাজাতীরেরা এক এক  
স্বাধীনতা লাভের প্রার্থনা করিয়াছে।  
প্রার্থনা অনৈসর্গিক নহে। মানুষের স্বা-  
ধীনতা স্বাভাবিক প্রকৃতি আছে। স্বা-  
ধীনতা অনাক্রান্ত অত্যাচারকণ বহুলা  
কৃত হন, উল্লিখিত হইয়া উঠে। তিনি  
গবর্ণমেন্ট যে তাহাদিগের প্রার্থনা পরিপূ-  
রণে সমর্থ হইবেন, বোধ হইতেছে।  
যদিও তাহারা বৃহৎ সন্তসন্তকার্য ও তাহা-  
নীলতা দীকারে উদ্বুদ্ধ হন, তাহাদিগকে  
তাহাদিগকে তাহাদের অনুমতি প্রদান  
করিবে না। তাহাদের বর্তমান বরাবর, অ-  
পমানাই সন্তসন্তকার্য প্রদান করিয়া গ-  
মহিত সন্ত করিয়া আনিয়াছেন, আ-  
বে তাহারা অকৃত্তক নিরীম প্রদানে স-  
হইয়া সন্ত করিবেন, কোন ক্রমেই  
বিত্র নহে। বিশেষতঃ খসিয়ারা অতি  
মান্য পক্ষ।

এই বিবরণ লেখা সমাচার পত্র  
সকল মহলে তুলন আন্দোলন  
হইয়াছে। অনেক উক্ত বহুলা  
পক্ষে এককালে উদ্বলন করিয়া  
হইতেছেন। তাহারা সন্তসন্তকার্য



কম্পনা করিয়া হেতুবাদ হলে  
এই প্রদর্শন করিতেছেন। গবর্ণমেন্ট  
ই অলীক ব্যাক্যে ভীত হইবেন, এত  
সার নহেন। বিপক্ষের ত্রিটিস জাতির  
কটে খণ্ডোক্ত স্বরূপ। তাহাদিগের না  
হে অত্রফল, না আছে শিক্ষা নৈপুণ্য,  
আছে সেমাপতি; তাহারা কতকগুলি ত্রিটি-  
গবর্ণমেন্টের সহিত প্রতিযোগিতা করি-  
সমর্থ হইবে;

গবর্ণমেন্ট অনুমোদিত অসংপরা-  
জিতের বাক্যে একটি জাতিকে যে উ-  
ল্লস করেন, ইহা কোন ক্রমেই আমাদি-  
র অনুমোদিত নহে। তাহারা আত্মপৌ-  
রুষ করিয়া উল্লিখিত বন্যজাতীয়দি-  
ক আংশিক স্বাধীনতা প্রদান পূর্বক বা-  
ত বিবাদের শেষ করিতে পারেন, সেই  
করুন। তাহাতে তাহাদিগের মহ-  
র হুজি বিনা হুস হইবে না। যদি তা-  
দিগের একপ শঙ্কা থাকে যে বন্য জাতী-  
য় সময়ে সময়ে ত্রিটিস অধিকার মধ্যে  
বৈধ হইয়া উপক্রম করিবে, রাজ্যের  
মীমার নিরমিত সৈন্য রাখিয়া দি-  
ই সে শঙ্কা দূরীভূত হইতে পারে। অ-  
র রাজ্য অধিকার করিয়া স্বাধিকার  
করা এবং অন্য অন্য জাতির উল্লস  
করা বিস্তৃত রাজনীতির অনুমোদিত  
হ। এতৎ কার্য হা। ২৩তম অর্থ  
হইয়া থাকে। ত্রিটিস গবর্ণমেন্ট বহু  
জাতির প্রমাণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। এই  
রাজনীতির অনুগামী হইয়া  
কর্তৃক কার্য করিয়াছিলেন বলিয়া  
তাহারা সম্মত হইতে পারিতে

এতৎ সংক্রান্ত যে আইন আছে, তাহা ভ-  
নিঃরন বিষয়ে প্রযোজ্য হয় না। একবিব-  
ক্ষন চতুর্ভুজ হইতে করণ ও আর্ড বিলাপ  
ও আবেদনহীন সঙ্কট প্রতি গোচর হইয়া  
পাকে। রাজপুরুষেরা এত যে অনামনক,  
তথাপি এই করণহীন তাহাদিগের প্রতি  
পথের উদ্বোধকারী হইয়াছে। গত ১৫ই  
নবেম্বরের বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভায় এই  
কথা উত্থাপিত হইয়া শূদ্র আইন সংশোধন  
পূর্বক একটি স্মৃতি আইনের পাণ্ডুলেখ্য  
করা হইয়াছে এবং এই পাণ্ডুলেখ্য সিলেট  
কমিটির বিবেচনার্থ সমর্পিত হইয়াছে।  
অ.ভ.বোকেট জেনরল, বাবু প্রমথকুমার  
ঠাকুর, মৌলবী আবদুল মতীক এবং জা-  
লেন সাহেব ইহারা সিলেট কমিটির অ-  
ন্তর্নিবেশিত হইয়াছেন। জালেন সাহেব  
এই আইনের প্রস্তাবকর্তা। প্রস্তাবিত  
আইনের তৃতীয় ধারায় এই বিধান করা  
হইয়াছে যে কর্মচারী আইনের বিরুদ্ধ  
ব্যবহার করিবেন, তাহার ২০০ টাকা অ-  
র্থ বা দুই মাস কারাবাস দণ্ড হইবে। বি-  
জোহানি কালে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টরা-  
দি দ্বারা বলপূর্বক শকটাদির আহরণ প্র-  
স্তাবিত আইনের অননুমোদনীয় নহে।

সৈনিক পুরুষেরা মকদ্দলে যে প্রকার  
অত্যাচার করে, তাহা কাহার অবিলম্বিত  
নাই। তাহার পরিচয় প্রদানার্থ অধিকতর  
প্রমাণ পাইতে হয় না। গোয়ার পল্টন  
আগিতেছে সুনিলে গ্রামের লোকেরা গৃহ  
দ্বার রুদ্ধ করে এবং দোকানীরা দোকান  
বন্ধ করিয়া পলায়নপর হয়। ইহাই এই  
অত্যাচারের উৎকর্ষ পরিচায়ক। বাবু  
প্রমথকুমার ঠাকুরও ইহার বিষয় সত্য  
গোচর করিয়াছেন। সৈন্য মধ্যে এই নি-  
য়ম আছে, সৈন্যের যাত্রাকালে কোর্টার  
মার্টর ও তাহার কয়েকজন অনুচর সঙ্গে  
যান। যে দিবস যে স্থানে হাউস হইবে,  
তিনি তাহা কয়েকজন করিয়া সৈন্যের প্র-  
ত্যেকনোংগামী প্রায় সাতজন ও শকট

সংগ্রহ করেন। সেই সংগ্রহ কালজী-  
ত্যাচার হইবার একটা প্রমাণ কাল। এ-  
মার্টর মার্টরের অনুচরেরা এই সময়ে  
প্রতিভাকে সুন্দররূপে চরিতার্থ করি-  
লেন। তাহাদিগের তদানীন্তন ব্যবহার  
মনি মনোহর যে তাহার প্রশংসা করি-  
শেষ করা যায় না। বোধ কর, তাহাদি-  
শকট ও যোজম হইয়াছে, তাহারা জন্ম  
বগাধী হইয়া বহির্গত হইল; কিন্তু  
দেখিল, কয়েকখানি শূন্য শকট ও ক-  
খানি ভ্রব্যপূর্ণ শকট বাইতেছে; এ-  
পূর্ণ শকটের দিকেই সর্বপ্রথমে তাহাদি-  
দৃষ্টি নিপাতিত হইবে; তদব্যোধ্যাংই  
হারা নিতান্ত ব্যগ্রম্মা হইবে; শূন্য শ-  
চলিয়া গেল গেল, তাহাতে তাহাদি-  
ক্ষতি নাই। পূর্ণ শকট রুদ্ধ হইলে ত-  
মিরা ব্যতর হইয়া তাহাদিগের শরণ  
হয়, এবং তাহাদিগের প্রমাদন ও প্রী-  
সম্পাদনের যে উপায় আছে, তাহা করি-  
যুক্তি লাভ করে। প্রীজনপূর্ণ শকট দু-  
পথে পতিত হইলে উক্ত অনুচরদিগে  
আজ্ঞাভের পরিসীমা থাকে না। ই-  
দ্বারা তাহাদিগের রসরস প্রভৃতি ও অ-  
ভোক্ত উভয়েরই চরিতার্থতা হয়।

কোয়ার্টার মার্টরের অনুচরদিগে  
ওণ্ড এই বর্ণিত হইল, তাহার প-  
প্রকৃত সৈনিক পুরুষেরা আছেন। তাহা  
পিছরবন্ধ খাপের ন্যায়। স্বপ্নম-  
কাল স্বাধীনতা লাভ হইলে তাহারা  
কালের নিরুদ্ধ মনোরথ পূর্ণ করিয়া ল-  
তৎকালে প্রজাগণের ধন, মান ও প্র-  
রক্ষা সংশয় হইল হইয়া উঠে। পাঠক  
একপ বিবেচনা করিবেন না যে বাহা  
সৈনিকদিগের অত্যাচার নিবারণিত হ-  
আকিসরদিগের নে চেষ্ঠা নাই, সে  
বিলক্ষণ আছে। সৈন্য সংক্রান্ত আইন  
সংক্রান্ত প্রতিক্রিয়া অত্যন্ত কঠিন। আ-  
গরদিগের প্রতিক্রিয়া হইলে অত্যাচার  
সৈনিকদিগের বিরুদ্ধে হইবে।

সৈন্যের অত্যাচার করিবার  
অসংখ্য উপায়।

সৈন্যের যাত্রা  
কালে তাহাদের  
অত্যাচার করে।

চরিত্র ব্যক্তিবিশেষের আবেদন তাঁর দিগেব  
অতিশোচনীয় হইবার একটি মহান অন্তরায়  
আছে, তাহাতেই অত্যাচারকারিগণের  
সকল সময়ে অতিক্রম হয় না। আকি-  
সত্তেরা সকলের অধিগম্য নহেন। এখ-  
নতঃ প্রামাণ্যলোকে নিবির প্রবেশে সা-  
হসী হয় না; যদিও কেহ সাহস করি-  
য়ায়, প্রহরীরা তাহাদিগের গমনের অব-  
রোধ করে।

সৈন্য সংক্রান্ত কর্মচারিরা যে অধি-  
বর্ত্ত অত্যাচার করিবে, তাহা তাহাদের বি-  
শ্বাসের বিষয় মাত্র, রাষ্ট্র রক্ষা করিতেছে  
বলিয়া তাহাদিগের একটি মিলক্ষণ অতি-  
মান আছে : অকিসত্তেরাও সমস্ত বিশেষে  
তাহাদিগকে অসমত প্রায় দিয় থাকেন।  
কিন্তু সৈন্য সংক্রান্ত অত্যাচারের বিষয়  
সর্বদেশে ও সর্ব জাতিতে চির এসিক  
আছে। কি প্রাচীন, কি মধ্য, যাবতীয় ই-  
চ্ছাসটে এতদ্বিষয়ে সাক্ষ্যমান করিতেছে।  
যে দেশে বিশুদ্ধ ইচ্ছাস নাই, সে দেশে-  
ও কাহা প্রায় পাঠ ওয়াও ইচ্ছাব সর্বশেষ  
পরিচর্য পওয়া যায়। শিশুপাল বধের  
একস্থানে বর্ণিত হইয়াছে, কৃষ্ণ যখন দুধি-  
হিতের রাজ্যের গড়ে যান, তৎকালে অ-  
সংখ্য সৈন্য তাঁহার সম্মতিবাহরে ছিল,  
কিন্তু সৈন্যগণ কোন প্রায়ের কোন শ্রমিত  
সাধন করে নাই।

নিম্নলিখিতঃ বর্মীতঃলা ও মৈ

স্বজন সমুদ্রোপা সমুদ্রান্তি স্থিতিঃ।

প্রায়ের সৈন্যকরোদবারিটঃ।

কিম্বদন্ত্যঃ চরিত্রঃপি কেশবঃ।

সমুদ্র প্রায় কালে যখন চরিত্র হয়,  
তল দ্বারা সমস্ত এহীতল সম্পূর্ণরূপে আ-  
ক্রমণ করিয়া বেল্য কপ মর্যাদা উল্লঙ্ঘন  
করেন, কিন্তু কৃষ্ণ অসংখ্য সৈন্য দ্বারা  
কৃত্য ব্যাপিয়া যাইতেছেন তথাপি প্রায়  
বাসিন্দিগের বিশেষ মর্যাদার উল্লঙ্ঘন অ-  
র্থাৎ কোন দৌরভ্য করে নাই।

উপরি লিখিত প্রায় দ্বারা কৃষ্ণের

প্রায়সা করা হইতেছে। প্রায়সা এই  
পূর্বকালে প্রায়ের যে যে স্থান দিয়া সৈন্য-  
গণ গমন করিত তত্বতা লোকদিগের উপরে  
দৌরাভ্য করিত, কৃষ্ণের শাসন ও সৈন্য  
বশতঃ সৈন্যগণ প্রায়ী ব্যক্তিবিশেষের অতি  
কর্তব্যবহার করিতে পারেন নাই।

যাহা হউক, অধিকতর বিশ্রামের বিষয়  
এই, যে স্থানে রাজসম্রাট সেই স্থানেই গ-  
র্ভিত, উজ্জ্বল ও অত্যাচারকরিত। তাব ময়  
নগোচর হয়। যিনি ন জিহ্বাট আশ্রয়  
র পদাভিকের পদ পাইলেন, তাঁহার মনে  
মনে এই অভিমান জন্মিল, তিনি যেন স্বা-  
ভাব পদ পাইয়াছেন, তাঁহার সহিত তুল্য  
ভাবে কথা কহে সাধা কার : গীড়নকা-  
রিতা ও অর্থ সংগ্রহ চেষ্টা তাঁহার গর্বের  
কোন অংশে স্থান নহে। কলতঃ রাজস  
ম্রাট নিবন্ধন মনে মনে যে গর্ব ও অত্যা-  
চার পারিতা প্রবৃত্তি জন্মে, এটি কিছু মূত  
ন কথা নহে। বড় বড় লোকেরও হইয়া  
পাকে। হিউম এলিজাবেথের অধিকার  
বর্ণনাবসরে এক স্থানে লিখিয়াছেন : 'খান্য  
দ্রব্য সংগ্রহ করা বহুকালের অধিকার ;  
রাজকর্মচারিগণ এই অধিকার বলে রাজসং-  
সারের নিমিত্ত সন্নিহিত জনপদ হইতে আ-  
পনাদিগের ইচ্ছানুযায়ী দ্রব্য সংগ্রহ করিতেন  
এবং তাহা লইয়া যাইবার নিমিত্ত বলপূর্বক  
প্রজার শকটাদি গ্রহণ করিতেন : এই সকল  
দ্রব্যের মূল্য নির্দিষ্ট ছিল বটে, কিন্তু দ্রব্য  
স্বামীরা প্রায় মূল্য পাইত না, যে পাইত,  
সে শীঘ্র পাইত না। \* \* \* প্রজাগণ রাজ  
সংসারে এই অধিকারকে উপাত্ত স্বক-  
প জ্ঞান করিত, এবং খান্য সংগ্রহ রাজ  
কর্মচারিগণের ঐচ্ছিক হওয়াতে তৎক্ষণক  
অনেক বিধ অত্যাচার হইত।' কলতঃ আ-  
বাদিগের মত যোথ হইতেছে, এলিজাবেথের  
কর্মচারিরা তাঁহার আশ্রয়ী, অর্থাৎ  
শক্তির বলে অত্যাচার করিতেন। শেবে  
কমল হাউসের এতদ্বিবার্ণার্থ একটি আইন  
ন করা নিত্য আবশ্যক হইয়া উঠিল।

তৃতীয় এডওয়ার্ডের  
বিবার্ণার্থ নগরী বিধি বিধান  
হইয়াছিল।

সর্বশেষ আশ্রয়ী বিধি  
তিন শতাব্দীর পূর্বেবাসন  
র ইতিহাস মধ্যে লিখিত হইয়াছে, অর্থাৎ  
তৎসম্প্রদায় অত্যাচার হইতে প্রায়ের  
অতি পথ অবিষ্ট হইতেছে। কলতঃ  
কি ইহার নিবারণ হইবে না? কলতঃ  
কি ভয়কর! যাহার যে পরিমাণ রাজ  
সম্রাট প্রাধান্য আছে, তাঁহাকে প্রায়ের  
মাণে অনায়াস ও অত্যাচারপরাধ  
পাওয়া যায়। আশ্রয়ী মেল  
কিন্তু অল্পক আশ্রয়িতের অধিকার  
লেন, কালি শুনা গেল, অল্পক অল্পক  
টি মাজিষ্ট্রেটকে প্রায় করিয়াছেন।

উপসংহার হলে আমাদিগের  
এই, রাজসম্রাট যে পরিমাণে রাজ  
রিদগের গর্ভিতা, উজ্জ্বল ও অসংখ্য  
তার মূল, প্রায় পুরুষদিগকে সেই  
প্রায়সবান হইয়া তৎক্ষণম  
তে হইবে। সৈন্য সংক্রান্ত  
কাহার উপর অত্যাচার  
যে ব্যক্তির যাহা প্রায় হয়  
র গণার হিসাব করিয়া যদি  
ধ করিয়া দেন, শকট  
দিগের নাম অবশে  
কেন?

পাতিরাণীর রাজ্য হইয়া ও তৎক্ষণ  
সত্য নিয়োগ প্রভাব।

আমরা হর্ষিত হইয়া প্রকাশ করি  
পাতিরাণীর মহারাজ নরেন্দ্র সিং  
পরিভ্রমণ করিয়াছেন। তাঁহার কাল  
সম্রাট হইয়াছিল, তিনি তা  
জানিতে পারিয়াছিলেন। এই  
পূর্বেই তৎক্ষণীয় ব্যবস্থা  
তে অবসর গ্রহণ করেন। কি  
তিনি প্রাণত্যাগ করিয়াছেন।



করেন নাই। নরেন্দ্র সিংহ ১৮৪৫  
নরসিংহাসনে আরোহণ করেন। এই  
বৎসর কাল তিনি খীর রাজ্য সুন্দর  
করিয়াছিলেন। কুম্ভকার তাঁ-  
র কনিষ্ঠপুত্র। অন্য অন্য রাজার মায়  
কুম্ভকারকে সম্পূর্ণরূপে স্বপুত্র  
রূপে রাখিতে পারে নাই। অপর দিন  
ইল, তিনি তদন্ত্য বিধবাসিনের আংশিক  
উন্নতির উপায়কে যে আজ্ঞা প্রদান  
করিয়াছিলেন, তদ্বারা তাঁহার চিত্তের উ-  
ন্নতির পরিচয় পাওয়া গিয়াছে  
এই বছরের বিজোহ কালে তিনি নিজ  
কক্ষে শান্তভাবে রাখিয়া গবর্নমেন্টের  
সহায়তা করিয়াছিলেন, তদ্বারা তাঁহার  
জনীতিজ্ঞতা ও প্রভুত্বের সবিশেষ প-  
ট্র হইয়াছে। তিনি অতিশয় বলবান ও  
জিহলেন। সাধুতা ও সরলতা তাঁহার  
বৈশিষ্ট্য ছিল। তাঁহার একটি পুত্র  
হইল। তাঁহার বয়স চতুর্দশ বৎসর।  
কুম্ভারাজ নরেন্দ্র সিংহ ভারতবর্ষীয় বা-  
হ্যিক সত্বে সত্য পদে প্রতিষ্ঠিত হি-  
লেন। তাঁহার মৃত্যু হওয়াতে তৎপদ শূন্য  
হইল। এক্ষণে কোন ব্যক্তি তৎস্থানে নি-  
যুক্ত হইবেন? এই প্রশ্নের সমাধান  
প্রদান হইয়াছে। কেহ কেহ রাজা মান-  
সিংহকে কপূরতলার রাজ্যকে  
প্রদান করিতেছেন। কিন্তু আমাদিগের মন  
মানসিংহের প্রতি পক্ষপাতী হই-  
ল। কপূর রাজ্য এক ইষ্ট  
কুম্ভার কন্যার পুত্রের হস্তে  
হইবে, তাঁহার অধিকাংশ জমিদার  
কুম্ভার বিবাহ হইয়াছে। একপক্ষ  
কুম্ভার সত্য পদ প্রাপ্ত হইলে  
কুম্ভারকে সপ্রণয় দৃষ্টিতে দ-  
র্শন করিবেন না।  
আমাদিগের আর একটি প্র-  
শ্ন, কুম্ভার ও কুম্ভারের অধিকা-  
ংশ নহে। এই অবস্থায় উ-  
ক্ত ব্যক্তি দেশের এক জন

প্রতিনিধি গ্রহণ করা অতিশয় আবশ্যিক।  
এতদ্বারা কেবল যে বাঙ্গলা দেশের চিত্ত  
রঞ্জন ও প্রীতি সম্পাদন করা হইবে এ-  
কপক্ষে, ইহা এই প্রদেশের আন্তরিক  
ভাবে অবগত হইবার এবং অনেকবিধ  
শ্রেয় সাধনের দ্বার স্বরূপ হইবে। সভা  
স্থলে যখন যে প্রদেশের শ্রুতশ্রুত পরি-  
ধান প্রস্তাব উপস্থিত হয়, তৎপ্রদেশীয়  
প্রতিনিধিরা কি অন্তত পরিচার ও শ্রুত  
সম্বিধানের প্রাণ পণ চেষ্টা পান না?  
দুঃখ অকপট চেষ্টা ব্যতিরেকে কি সমাজ  
রূপে ইষ্টলাভ সম্ভবনা আছে? ইংলণ্ড  
প্রভৃতি স্থানে প্রতি জিলার প্রতিনিধি  
গ্রহণ রীতি প্রবর্তিত হইয়াছে কেন? বা-  
ঙ্গলা দেশীয়েরা ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক  
সভাকে আত্মীয়ভাবে দর্শন না করিয়া  
উদাসীন ভাবে দর্শন করেন, ইহা কোন  
ক্রমে প্রার্থনীয় নহে। কিন্তু যদি প্রত-  
িনিধি গৃহীত না হইল, এই সভার প্রতি এ-  
প্রদেশের আত্মীয়প্রতিমান জগিতার সম্ভা-  
বনা কি? এ স্থলে আর একটি চিন্তা ক-  
রাও আবশ্যিক। ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক  
সভা এক্ষণে গবর্নর জেনারেলের নিম্ন সভা  
বলিয়া গণিত ও সম্মানিত হইয়া থাকে।  
এখন উহার উপরে গবর্নর জেনারেলের  
সর্বতোমুখী প্রভুতা আছে। উহার এই  
অবস্থাই কি চিরকাল সমান থাকিবে?  
ক্রমে যখন উহার উপরে ভারতবর্ষীয়দিগের  
প্রভুতা ও আত্মীয়প্রতিমান জগিতা ভারতব-  
র্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা এই নামটি অর্জন  
হইবে, তখনও কি বাঙ্গলা দেশ বঞ্চিত  
থাকিবে? বাঙ্গলা দেশ কি ভারতবর্ষের  
অংশ নহে? এই সময়ে তাহার স্বত্বপাত  
না হইলে তৎকালে কি অপর ভারতব-  
র্ষীয়েরা বঙ্গ দেশকে উদাসীন দৃষ্টিতে  
দর্শন করিবেন না? এখান পুরুষেরা বঙ্গ  
দেশের প্রতি এত নিরমুগ্ধ হইয়াছেন  
কেন? এখানে যোগ্য প্রতিনিধি নিজে না  
হলিয়া কি তাঁহাদিগের সহকারী জগিতা

হে? না, বঙ্গ দেশে বর্ণমেষ্টের কোন  
লাভ নাই, ইহা কেবল উৎপাত স্বরূপ হই-  
য়া আছে, এই বিবেচনা করিয়া তাঁহারা ইহার  
উপরে বিরক্ত হইয়াছেন? কিন্তু আমরা  
স্পষ্টাক্ষরে কহিতে পারি, ভারতবর্ষের  
অন্য অন্য স্থানে বঙ্গ দেশের মায় যোগ্য  
প্রতিনিধি লাভ সহজ নহে। বঙ্গ দেশ  
গবর্নমেষ্টের উপকারী কি না, তাহা যোগ্য  
আমাদিগের অধিক বক্তব্য নাই, এতদ্বারা  
বলিলেই পর্যাপ্ত হইতে পারে, যখন তা-  
র ভারতবর্ষীয় গবর্নমেষ্টের বাধি? আর বা-  
হ্যিক প্রকাশিত হয়, তৎস্থলে বঙ্গদেশের  
আর সর্বোপরি প্রধান রূপে দেখীপ্যমান  
হইয়া থাকে।

—৪—

ডাক্তার হামবর ও যবিনপুর

বেলগঙ্গা

গঙ্গার চড়া পড়তে এখন জাহাজ  
রুহু জাহাজ কলিকাতায় আসিতে পারে  
না। এক শত বৎসর পূর্বে রণতরির সা-  
ধাক ওয়াটসন জাহাজের সহায়তায় এই  
চন্দন নগর পর্যন্ত বড় বড় যুদ্ধ জাহাজ  
জলইয়া গিয়াছিলেন। মির কাসিমের  
সময়ে মধ্যবিধ সওদাগরী জাহাজ মুরসি-  
দাবাদ পর্যন্ত গিয়াছে। কিন্তু এখন বর্ষা  
কালেও সামান্য বাত্মীয় জাহাজ চড়ায়  
আটকিয়া যায়। এই কারণে, বারাকম  
হেড লগুনের যেকোন কলিকাতার একপ  
একটি বাহির বন্দর আবশ্যিক হইয়া উঠে  
মাতলাকে সেই বন্দর পরিবার ও তথা  
হইতে রেলওয়ে দ্বারা জ্বা সামগ্রী আনি-  
বার প্রস্তাব হইয়া রেলওয়ের কার্য আ-  
বৃত্ত হয়। এই কার্য প্রায় শেষ হইয়া আসি-  
য়াছে। শুনা গাইতেছে, এই জানুয়ারি  
মাসে মাতলা পর্যন্ত গাড়ি চলিবে। এ-  
দিকে জাহাজের অধিক আমদানী দেখি-  
য়া গবর্নমেষ্ট কলিকাতা হইতে ভারতবর্ষ-  
বন্দর পর্যন্ত একটি স্বতন্ত্র রেলওয়ে প্রস্তুত  
করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। এই বিষয়ে













[illegible]



২৫ র বরদার তাঁহাঙ্গিরে যোগ্য হইয়াছে কি না : ২৮-এ তাঁহাঙ্গিরে পড়িয়া আকরা "বর্ধাণ" কীর আশাপক মেজার ৩ এই প্রসিদ্ধ বাকীর আর একটা উল্লেখ পাইলাম।

কুমারখালি হইতে এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, উহার সন্নিহিত স্থান সকলে হরের আত্মত্বিক প্রাচুর্য্য হইয়াছে। গণী পূর্ণাঙ্গ আছে, বিনা চিকিৎসার অনে-  
কালীন করিতেছে।

চীনদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে ইং-  
রাজ ও ক্রানী পেনারা সম্প্রতি বিদ্রোহী-  
গণকে পরাজিত করিয়া কলোয়া ও কালিও না  
দুকুর্জি দুর্গ অধিকার করিয়াছে। সিমোহী-  
হ। মেবোত নগরাস্থিত কালে সবিধেব  
সাহস প্রকাশ করিয়াছিল :

কিনিক্স এবং করিয়াছেন চাকা কালেজে  
দুই জন অধ্যাপক নিযুক্ত করিবাব অন্য সা-  
ধারণ বিদ্যালয়িকারি ভিরেটব গবর্ণমেণ্টকে  
অগ্ররোধ করিয়াছেন। ইহারা প্রত্যেকে যা  
দিক ৫০০ টাকা বেতন পাইবেন, এবং ইহা

একজন এক জন আইনের অধ্যাপক হ-  
উবেব। তদ্রূপ অধ্যাপকও বেতন বৃদ্ধি করি-  
বার প্রস্তাব হইয়াছে। চাকাকালেজে অধিক  
সংখ্য অধ্যাপক নিয়োজিত হন, টাঙ্গা প্রাধ-  
নীয়। আকালিগের ইচ্ছা হুগলি কুমারগর ও  
মহরমপুর কালেজেও তাল তাল অধ্যাপক  
সালিয়া বি, এ, উপাধির পুঙ্খক পাঠনা ও প-  
নীক্ষ প্রহণের নিয়ম প্রবর্তিত করা হয়। তা-  
ই : লে দিন দিন বি এ, র সংখ্যা বৃদ্ধি হই-  
তে থাকে।

উক্ত পত্র আরও বলেন রুস নামক যে বি-  
খ্যাত জালকারী জেল হইতে পলায়ন করে সে  
হাবতায় ৬৩ টি আছে। বন অসামান্য লোক,  
উচ্চাক নামান্য বাদ্যগৃহে রাখা উচিত হয়  
না। উহার যোগ একটা বস্ত্র কারী গৃহ  
নির্মাণ উচিত।

মিল্লীগেজেটের কারুলিভিত সংবাদ দাতা  
হেইজ বহুমান খাঁর সৌভাগ্য গুলতানজামব  
সুপ্রসন্ন কর্তব্য পূর্ণ আবদুল্লা খাঁর চতুস্তার এক  
কুটিল প্রবণতা করিয়াছেন। সপ্তম নতানে  
জীর হুজুর হইলে আবদুল্লা খাঁ তাহাঙ্গিরে  
সেই সম্বন্ধিত করিবার জন্য হেরাটের বাহি-  
রে এক প্রান্তরে গমন করেন আশীর্বাদ

আকালিগের কয়েক জন সর্কার ডাক্তার  
দ্বিতীয় জেই মনোহিত হটলে আশীর আর  
হুজা হাউজ অগ্নি নিবিবে আনিয়া তাঁহাকে  
কোলে লইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন "তুমি আ-  
নাকে জান ?" মালক বলিলেন "হাঁ। আপ-  
নি আমাকে বাত মন। কিন্তু আপনাকে সন্নিহিত  
র নাই। পারস্যদেশীয় রাজা আমালিগকে  
যে রাজ্য দিয়াছেন আপনি তাহা লইতে উ-  
দ্যত হইয়াছেন।" মোস্তফাহুদ খাঁ লক্ষ্য  
হুজুর করিয়া রহিলেন।

উক্ত পত্রপ্রেরক আরও বলেন  
পারস্য সৈন্য হেরাটের নিকটে আগমন কর-  
য়াছে, আশীর এক প্রকার যুদ্ধ ভণ্ডে সন্ধি  
করিয়াছেন। যে কারণে উক্ত সন্ধি হইয়াছে,  
অনন্দের বিষয়।

টাইমস অব ইণ্ডিয়ায় এক জন পত্রপ্র-  
েরক বলেন মকিন মহারাজের এক স্থানে খব  
বাহির হইয়াছে।

আউয়ার পেপার বলেন, কোড্রিতে যে  
ইউরোপীয় সালিকাকে এক জন ধীবরের নি-  
কটে পাওয়া যায়, সে ওয়াটসন নামক এক জন  
পাদস্ত্রি বালিতে আছে একজন জনপ্রতি  
কম্যাটির পিতা নাতা উভয়ে জীবিত আছে,  
সে আরজ বলিয়া তাঁহারা লক্ষ্য তাহাকে  
ধীবরের হস্তে সমর্পণ করে। ব্যক্তিত্বের এ  
কল।

ইংলিসমানের পারিসস্থ সংবাদ দাতা  
বলেন, কাল ও জর্ডানে জনরব উঠিয়াছে  
ইংলণ্ডের নীত সিংসন পরিভ্রমণ করি-  
বেন। প্রাগ আকবরের মৃত্যুর পর অবশি-  
স্তি নি একস্থানে স্থানিত হইয়া থাকেন না,  
তাঁহাই শেষ হয় এই সময়ের ৪ তাঁহার  
পুনরায় বিবাহ চেষ্টার অন্তরালে কাব্য।

গবর্ণমেণ্টের ভিন্ন ভিন্ন খননায়োনিয় লি-  
খিত টাকার প্রমাণ আছে:-

|                          |            |
|--------------------------|------------|
| ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেণ্টের | ৪৬০৬৩০ ১৮  |
| বঙ্গদেশীয়               | ২০০২ ৫২ ৩১ |
| উত্তর পশ্চিমপ্রদেশ       | ২১০৮ ৩২ ৪২ |
| পঞ্জাবের                 | ১০১৪ ২২ ২৮ |
| গোয়াটের                 | ২১৮ ১৪ ২২  |
| ম্যাট্রিক ট্রাস্টের      | ৫০৫ ৩ ১৮   |
| মাকিন, তোর               | ১৩৩ ৬২ ৪২  |
| মাক্সিমেল                | ২৩০৮ ৬৮ ৪২ |
| মোট টাকা                 | ১০৬৬৪৫৮ ৩৮ |

বিদ্রোহী গোটটি বলেন, হাকিম সাহেব  
ব্যক্তির কাজ আত্ম করিয়াছেন। এত দি-  
মের পর হাকিম সাহেব প্রকৃত পক্ষে দাকা  
ট্যাঙ্কন।

উক্ত পত্র আসামে কুলি-প্রেরকের কতিপ-  
নের রিপোর্ট প্রকাশিত করিয়াছেন। দ্বীপ-  
মত কুলিমিগের তত্ত্বাবধান করা হয় না।  
কুহ নৌকার ও আহাঙ্গে করিয়া তাহাঙ্গিরে  
গো মতিবাদির নায় লইয়া যাওয়া হয়। তা-  
হাকিমের আহাঙ্গ নামগীর প্রতি চুটি করা  
হয় না। বঙ্গদেশীয় বঙ্গদেশীয় নত্যা এত  
সংক্রান্ত যে বিল করিয়াছেন, তাহাতে যে  
এ সকল বিষয়ের বিবেচনা করা হয়।

৪ঠা অগ্রহারণ ইকলবার।  
টাইমস অব ইণ্ডিয়ায় নিম্নের সংবাদ  
দাতা বলেন, ওজরাটের বণিকেরা তদ্রূপ  
সমুদায় কুলি জর করিয়াছেন। কুলির  
ইচ্ছাও বিতরণ লাভ করিতেছে।

ইংলিসমান সিংলা হটতে সংবাদ পাঠ-  
িয়াছেন, সব হিউ রোজ উত্তর কালতবর্ষ সৈ-  
নিক উপনিবেশ করিতে ইচ্ছা হইয়াছেন  
লাভ এলগিল এ বিষয়ে সমস্ত হইয়াছেন  
৪৮৪ জন এতদেশীয় রাজাদিগের নিকট  
কুলি জর করা হইবে। ভারতবর্ষ উপনিবে-  
শের যোগা স্থল নত।

কিনিক্স বলেন, কাশীর রেলওয়ে দুটি  
বার দুই সপ্তাহ পরে নিরক্ষণ পূর্ব পর্যন্ত  
কাশীর নব টি স্থানবে। যমুনার নৈক নিম্ন  
না হটলে আলাহাবাদের নিকট রেলওয়ে  
যোগ হইবে না। ১ বঙ্গের তাহা হওয়া করি-  
যমুনার সেতু নির্মাণ করিতে যোগ অগে-  
অধিকতর ব্যয় হইবে। মিল্লীগেজেটের  
নকট পুলিশে হাকিমের বিলম্বিত তৎ-  
ব্দে।

প্রাকৃতিক প্রবণতা করিয়াছেন ( তিনি ই-  
কতক সত্য বলিতে পারেন না ) নিম্নত-  
বাবু প্যাট্রীটাল সিংহ সপরিবারে ১৮২৮  
অবলম্বন করিবেন। কিছুদিন পরে  
প্রকার জনরব উঠিয়াছিল। প্রাকৃতিক  
ইয় খণ্ডের মোত বঙ্গ করিতে অবলম্বন  
কেন ?  
কতক হেতুরে পূর্ণ আগ্রহের সে-  
কালিকে লেখক করিতে তাহার আভাও





संस्कृत-भाषा-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

কলিকাতার রেলওয়ে স্টেশনের নিকটবর্তী  
এই প্রকার মত হইয়াছে। এষ্ট সাতের  
অতিপ্রায় প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন  
সোনাপুর হইতে যতলা রেলওয়ের  
কলিকাতা বাহির করিয়া কুশি, অথবা  
যশোহরবর পর্যন্ত এই রাস্তা লইয়া যা-  
ন হয়। সোনাপুর হইতে যশোহরবর  
যাত্রা রেলওয়ে করিলে ১৮ ক্রোশ প-  
থ অধিক দূর হয় না, আর কুশি পযা-  
ব করিলে ২২ ক্রোশ হয়। বীড়ন সাহেব  
এই সাহেবের প্রস্তাবে অনুমোদন না  
করিয়া কলিকাতা হইতে এককালে ডায়-  
মণ্ডালবর পর্যন্ত একটি যত্ন রাস্তা করি-  
ব প্রস্তাব করিয়াছেন। কলিকাতা হই-  
তে ডায়মণ্ডালবর ১৪ ক্রোশ মাত্র। সো-  
নাপুর হইয়া যাইতে গেলে ১৮ ক্রোশ  
বীড়ন সাহেবের প্রস্তাব গৃহীত হই-  
লে ১৮ ক্রোশ পথ কমিয়া যায়। এক্ষণে  
উভয়বিধ প্রস্তাবের গুণ দোষ বিবে-  
চনা হইতেছে।

আমাদিগের মতে সোনাপুর হইয়া কু-  
শি পর্যন্ত রেলওয়ে করিবার প্রস্তাবটিই  
অধিক যুক্তিসঙ্গত হইতেছে। এ দিকে  
গমন পথ কিছু অধিক হয়, তেজস এ দিকে  
অধিক হইবে। এই দিকেই অধি-  
শ্রম লোকের বসতি। লোক সকল মিলাত  
রমণও নহে। আরোহী ও অন্য অন্য  
গিয়া জ্বা, উভয়েরই আচুতা হইবার  
লক্ষণ সম্ভাবনা আছে। লক্ষ্যকরে, কলি-  
কাতা হইতে সরল রেখার এককালে ডায়-  
মণ্ডালবর রাস্তা করিলে নিঃসংশয় এ লাভ  
হইবে। সেক্ষেত্রে রেলওয়েতে গমনা  
করিবার যোগ্য লোক অধিক নাই।  
পর, কুশিতে বসন্ত হইলে তথার বড়  
জাহাজ আনিতে পারিবে, ডায়মণ্ডাল-  
বরে সেদিক হইবে না। সেখানে জল

করিবেন। দুইনিমিত্তক পথ শু শাখা করি  
বার প্রস্তাব আছে হইয়াছে এবং তদর্থ  
ইঞ্জিনিয়ার প্রকৃতি নিয়োজিত হইয়াছেন।  
যশোহর হইয়া করিমপুর পর্যন্ত শাখা প্র-  
স্তাব করিবার যে প্রস্তাব হয়, তাহা কি  
হইল? কুশিয়ার সম্মুখে চড়া পড়িয়াছে  
ঢাকা ও আসামের বাণিজ্য করিমপুর  
ও যশোহর দিরাই করিতে হইবে। এ  
দিকে শাখা না করিলে রেলওয়ে কোম্পা-  
নির লাভ হইবে না। কলিকাতার বার  
আনা তমাক ও শুড় বারাসত হইতে  
ইসে। যশোহর হইতে ধান্য, তমাক, শুড়  
সর্বপ প্রভৃতি নানাবিধ জ্বের আমদানী  
হয়। যদি ঢাকার বাণিজ্য পূর্বের ন্যায়  
জলপথে হইতে থাকে এম সেকেনে  
গরুর গাড়িতে দ্রব্য বারাসত ও যশো-  
হরের জ্বের আমদানী হয়, তাহা হইলে  
পূর্ব রাস্তার রেলওয়ে কোম্পানি কি  
কেবল রাজসাহী, মদীয়া ও পাবনার দ্র-  
ব্য লাভ করিতে পারিবেন?

পরিদর্শকের সম্পাদক পরিবর্ত ও  
কলেবর রখি।

এই অগ্রহায়ণ মাসের প্রথম দিনাবধি  
পরিদর্শকের সম্পাদক পরিবর্ত ও কলে-  
বর হুজি হইয়াছে। এ দুটাই আমাদিগের  
আনন্দের হেতু হইয়াছে। পরিদর্শক দৈ-  
নিক পত্র। পাঠকগণ দৈনিক পত্র দ্বারা  
বহু বিষয় অবগত হইবার বাসনা করেন।  
কিন্তু এক দিও উহার যেকোন ক্ষুদ্র অবয়ব  
ছিল, তাহাঙ্গে আমাদিগের মনোরথ পূর্ণ  
হইবার সম্ভাবনা ছিল না। এখন উহার  
আকার বৃদ্ধি হইয়াছে। এখন জাহাজ অ-  
নেক বিষয় উহাতে সমাবেশিত হইবে।  
দ্বিতীয় আঙ্কামের বিষয় এই, প্রবৃত্ত বাহু  
কালীপ্রসন্ন সিংহ সম্পাদকতা তার গ্রহণ  
করিয়াছেন। বঙ্গভাষার উন্নতি  
উহার পরিচালক অরুণাচল ও বঙ্গ ভাষা  
তিনি লক্ষ্য রাখিবেন। পরিদর্শকের আ-

য়ের জ্ঞানতা দর্শন করিলে তিনি  
মোৎসাহ হইবেন, সে সম্ভাবনা  
বৃদ্ধাকার পত্রের নিতা কাব্য সমা-  
ল্যায় সাধ্য নয়, কালীপ্রসন্নের কল্যাণ  
হারতঃ সম্পাদক সার্বভৌম আছে।  
প্রথমাবধি কয়েক গানি পরিদর্শক  
নিবেশ পূর্বক পাঠ করিলাম। যে যে  
কাব লিখিত হইয়াছে, এত জাহাজ  
দ্বার গুলি অতিশয় হৃদয় গ্রাহী। বঙ্গভাষার  
সমাদানির বিষয়ে আমরা কিছু অগুণী  
তুষ্ট আছি। এবিষয়ে সাপ্তাহিক পত্র  
ন্যায় পরিদর্শক যে পরোক্ষিত গ্রাহী  
ইহা আমাদিগের অতিশ্রুত মতে। সম্পাদ-  
ক মকমলে ও হাইকোর্ট প্রভৃতি  
সমাদ সংগ্রহার্থ লোক নিয়োজিত করুন  
এই আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ। প্রথম  
বিবসের পরিদর্শকের প্রথম প্রস্তাব  
কিয়ৎকাল উক্ত করিয়া দিলাম, সম্পাদ-  
সেইটা প্রণয় করিয়া কাব্য করেন,  
আমাদিগের বাসনা। তাহা হইলে যে  
যে আমরা পরিচোষ লাভ করিব এ  
নয়, বঙ্গদেশের বৃদ্ধ ও উন্নয়ন হইবে।

“আমাদিগের অধিকাংশ লোক সু-  
পত্রের তাৎপৰ্য্য সমাদর করেন না, অসং-  
তার কলোপচারকতার বিষয়ও অবগত  
ন। বাহারা উৎসাহী আবার স্তম্ভপ্রতি  
করিয়াছেন, আমাদিগকে কলিকাতা  
পাঠে আগ্রহাতিশয় প্রকাশ করিতে  
থায় বটে, কিন্তু ইংরাজী পত্র পাঠাই  
দিগের সম্পূর্ণ উৎসাহ নিমিত্ত হইল। ই-  
ংরে না পাইলেও আমাদিগের যত্ন  
পাঠ করিতে কলি অসমর্থ। অতঃপর  
এই যে বাহাদুর সংবাদ পত্রের অধি-  
শ্রম ও অকর্মণ্য, সেই সেই ইংরে  
হইতে এক জাহাজ পুরাতন সংবাদ  
করিয়া কাব্য পূর্ণ করিয়া থাকেন, সে  
বাহাদুর সংবাদ পত্র কোন একখানি  
পত্রের পরিচালক অরুণাচল বাহু  
আমাদিগের হৃদয় গ্রাহী। কোম্পানি  
কলিকাতা হইয়া কেবল পাঠক  
কলিকাতা বাহু আছে। ইংরে

আমরা পত্রের পরিদর্শক  
বাহাদুর রেলওয়ে করিমপুর



নী নহে একপ বালা। সংবাদ পত্র  
বিশেষতঃ ইংরাজি পত্রের বড় দূর  
সংগ্রহ ও বতরুত পুৰিখা হয়, বালা  
তত দূর সংবাদ সংগ্রহ ও পুৰিখা তাই  
পাৰ নাই, ইংরাজি ভাষাভিজ্ঞ অধি  
যুক্তিই উক্ত কার্যে বালা। সংবাদ  
তে অধিক আস্থা প্রদর্শন করেন না।  
: তাই তাঁহাদের সম্পূর্ণ জ্ঞান কারণ বা  
পত্রের দীর্ঘ, নীতি, ভাষার, বহু  
পত্রই ইংরাজি ভাষা তাইতে সম্পূর্ণ বিতি  
ইংরাজেরা কোন বস্তু বা ব্যাপারকে নিভা  
দৃশ্যীয় অথবা আন্দ্রণীয় বিবেচনা করেন,  
যত তাহারা যেন ও অবস্থা তেহে তাহা  
সম্পূর্ণ বিপরীত বিবেচনা করিয়া থাকি। বি-  
শেষতঃ অসুখ জাহাজ অসুখ স্থানে আসিয়াছে  
কিন অসুখ জাহাজ কলিকাতা পরিত্যা  
করিয়া ইংলণ্ডে গমন করিবে ইংরাজী  
পত্রে এই সমস্ত পাঠ করিয়া ইংরাজের  
দার হয় বটে কিন্তু তাহাতে বালাসির  
পকার হইতে পারে? যাহা বালা  
বালাসির উপযোগী যত উত্তম উত্তম বি-  
ব্রকান্তি হয়, ইংরাজি পত্রে তত দূর  
গাণা করা বাইতে পারে না। ইংরাজেরা  
লিপিগের ন্যায় বালাসির নীতি নীতি  
ব্রহ্মি অবগত নহেন সুতরাং কেবলিউ-  
জাল সম্প্রদায় বালাসিগের মন বত  
আবর্তিত করিয়া সংপথে স্থাপন করি  
পারেন ইংরাজেরা তত নীতি পারিয়া  
না। বিশেষতঃ যে ভাষা সাধারণের  
গা হইতে পারে, সেই ভাষাতেই সং-  
গ্রহ প্রচার করা উচিত, কারণ কোন এ-  
তকর প্রস্তাব উপস্থিত করিলে সাধারণ  
হা অবিলম্বে প্রত্যাখ্যান করিয়া লেব গুণ  
করিতে পারেন। অতঃ পরে বক্তব্যে যে  
খানি বালা। পত্র প্রচার হইতেছে  
সংলগ্নদেরই অসুখ বৃত্ত সুতরাং  
ইংরাজি পত্রের উপযোগী সমুদায়  
আলিঙ্গ হওয়া দুৰ্ঘট হইয়া পড়ে।  
এই কারণে এই পরিচর্যকের কল-  
করিলে। বালাসিগের উপ-  
লব্ধি অসম্ভব অন্যান্য বস্তু বালা  
কর, হইয়া উচিত না। তাহা ও তা-  
কি।

বালা। পত্রে সাধারণের অনায়াসে  
বাহ্যতে সেই সকল কারণ সম্পূর্ণ রূপে  
অপনীত হয়, তদ্বিষয়ে বিশেষ বক্তব্য  
হইবে। আমরা প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে, জ্ঞান  
পূর্বক সমস্ত পত্র চটাই হইবে না,  
বাহ্যতে কোন বিশেষতঃ অতিবাহন না হয়, ত-  
দ্বিষয়ে বিশেষ বক্তব্য হইবে। যদিও পৃথিবী-  
র কোন সমুদায়ই পক্ষপাতের হাত এড়াইতে  
পারেন তথাপি আমরা অস্বীকার করিতে-  
ছি যে, জ্ঞান পূর্বক বস্তু পক্ষপাত লোপে  
লিঙ্গ হইবে না। যাহাতে দেশের কল্যাণ  
বাণি নিরাপত্তা ও তদ্বিষয়ে নিয়ত নিযুক্ত থা-  
কিব, দেশের স্বাধীনতা, স্বাধীনতা, স্ব-  
গণকে জ্ঞানবৃত্ত প্রদান করা, পরোপকারি  
ও প্রজাপীড়ক পুরাণ-দিগের দোষাঙ্গা নিবা-  
রণ এই সমস্ত কার্যই আমাদিগের প্রধান  
উদ্দেশ্য। আমরা পাঠকদিগের নিকট নিতান্ত  
অপরিচিত নহি, আমরা নিতান্ত হইতে  
বালাসি-সাহিত্যের যার পর নাই সেবা করি  
তেছি পরন্তু তাহাতে কত দূর হৃতকারী হই-  
য়াছি তাহা বলিতে পারি না। তবে একপে  
এই যাত্রা প্রত্যাশা করা বাইতে পারে যে ব-  
চ পি দেশহিতৈষী মহাপুরুষ আমাদিগকে  
সাহায্য ও উৎসাহ প্রদান করেন, তাহা হইলে  
আমাদিগের অতীর্ষ সিদ্ধ হইতে অধিক কাল  
বিলম্ব হইবে না।

প্রাপ্ত।

হুগল জেলায় অর্জুত হ'মে'দর  
মদে'র পশ্চিমবিক্রমী এ'ন' পিসা-  
রতী মদীর পূর্বদিকবর্তী  
লোকদিগের দুর্ভিক্ষ।

দায়োঁর নহু যে কিসক ভয়ত তাহা অনেক  
কেই বিবৃত আছে। রেলওয়ের রক্ষণ জন্য  
ইহার চাকরপাশে দুইজন বাদ হইয়াছে, পশ্চিম  
পাশে একেবারেই বাদ শূন্য। মধ্যে মধ্যে যদিও  
কোন কোন স্থানে বাদ ছিল, পাছে রেলওয়ের  
বাদের ব্যাধিত হয় এজন্য বর্ধমানের লোক-  
তেরা তাহা একেবারেই নিষিদ্ধ করিয়াছে।  
নীলাবতীও বড় শূন্য নদী নহে, ইহাও পশ্চিম  
পাশে বর্ধমানের বিলকরণে বাদ করিয়াছে-  
ন, কিন্তু পূর্বপাশে কিছুই নাই। সুতরাং এই  
উভয়ের মধ্যবর্তী লোকদিগের দুর্ভিক্ষ ভয়-  
ত হইতে পারে।

ত লেবনী নিষিদ্ধ কোনওরূপে সমর্থ হয় না।

এই মধ্যবর্তী দানী বর্ধমানের গ্রাম জনপু-  
হইয়া থাকে। ইহাতে আর কোন রূপ সমা হুত  
বাস সম্ভাবনা নাই। অতি সামান্য বস্তু হইলেও  
ইহা প্রাপ্ত হইয়া যায়। বর্ধা চারিমান গ্রাম  
কেবল কাটাও বটীতে জনবান ভিন্ন পাতার  
করিতে পারে না। এখানকার অধিকাংশ  
বংশাদি সম্প্রদায় প্রাণত্যাগ করে, অবশিষ্ট  
যাহা থাকে তাহাও কোম কোম সময়ের  
নদীজলে প্রাস করিয়া যায়। সমুদায়ের  
কল অবস্থা হইয়া থাকে। এখানে দল  
হয় আন কি পরিচর্য প্রদান করিব, প্রায় কোন  
গৃহ ভূগর্ভস্থ আচ্ছাদিত নহে। প্রতিবৎসর  
বর্ষাতে প্রায় সকলকেই আপন আপন বাস  
হই এক হুত উচ্চ পলিমা হুতন গৃহ নির্মাণ  
করিতে হয়। তাহাও কেবল দেশ ও তালপা-  
দ্বারা আচ্ছাদিত। যদিও কোন কোন সময়ে এ-  
কারা কায়ক্লেশে ধান্য ব্যতিরিক্ত অন্যান্য কোন  
রূপ পশুপালন করে, তাহাও চরিত্র জম  
দায়বাস সমুদায় আচ্ছাদ্য করিয়া যায়।  
যে বাল্য উৎপাদন করে, তাহারা তাহা  
কিন-পও প্রাপ্ত হয় না। জমীদারেরা প্রজা-  
গের লিবে শত, পঁচ শত, ভাজার অঙ্কতি ব্যক্তি-  
করিয়া রাখিয়াছেন, সুতরাং তাহাদের সে  
সমুদায় পরিজন ব্যক্তি টাকার আদায় ও উপক-  
হয় না। এখানে ভদ্রাবির আইন স্থানপাল না  
এই সকল কারণে প্রজারা একেবারে চত, ন হই-  
য় পড়িয়াছে। তথাপি জমীদারেরা তাহাদিগকে  
ছাড়েন না। বাহুরা একসময়ে মীলকরদিগের  
মহোদয় হইয়া পড়িয়াছেন।

এই প্রদেশের অতি অল্পস্থানে কাটাও  
সাহায্য পাতিরেক বোর ধান্য হইয়া থাকে  
জমীদারেরা যেনো যেনে করিলে আরো অনেক  
স্থানে উক্ত ধান্য হইতে পারে। বাহুরা যদি কি-  
কিৎ পরিচর্য কীকার এবং অর্থ ব্যয় করিব,  
মদীর জলের দ্বারা প্রজাদিগকে বোর ধান্য  
চাব করান, তাহা হইলে প্রজাদিগেরও  
লাভ হইতে পারে এবং দেশও  
কাঙ্ক্ষিত হইবে। জমীদার বাহুরা তাহা করি-  
বার ইচ্ছা নাই। কেবল প্রজারা যেহেতু ম-  
অসি তাহারা দুই দিবা ধান্য কাটকে খাওয়া  
যদি কোন কালে কোন প্রকার ধান্য উৎপাদ  
করিবে। জমীদারেরা দীর্ঘ, বসন্ত  
করিয়া থাকেন। প্রজারা ইহা হইতে  
কল, লোকদিগের দুর্ভিক্ষ হইতে পারে।

বঙ্গদেশে আবাদিরের-সংখ্যাক্রমে  
 ১. ২. ৩. ৪. ৫. ৬. ৭. ৮. ৯. ১০. ১১. ১২. ১৩. ১৪. ১৫. ১৬. ১৭. ১৮. ১৯. ২০. ২১. ২২. ২৩. ২৪. ২৫. ২৬. ২৭. ২৮. ২৯. ৩০. ৩১. ৩২. ৩৩. ৩৪. ৩৫. ৩৬. ৩৭. ৩৮. ৩৯. ৪০. ৪১. ৪২. ৪৩. ৪৪. ৪৫. ৪৬. ৪৭. ৪৮. ৪৯. ৫০. ৫১. ৫২. ৫৩. ৫৪. ৫৫. ৫৬. ৫৭. ৫৮. ৫৯. ৬০. ৬১. ৬২. ৬৩. ৬৪. ৬৫. ৬৬. ৬৭. ৬৮. ৬৯. ৭০. ৭১. ৭২. ৭৩. ৭৪. ৭৫. ৭৬. ৭৭. ৭৮. ৭৯. ৮০. ৮১. ৮২. ৮৩. ৮৪. ৮৫. ৮৬. ৮৭. ৮৮. ৮৯. ৯০. ৯১. ৯২. ৯৩. ৯৪. ৯৫. ৯৬. ৯৭. ৯৮. ৯৯. ১০০.

[illegible]



১০ই অক্টোবর ১৯৬৩

ମାତ୍ର ୨୯ ନଭେମ୍ବର ୨୮-୭୨ । କଟକ ।

ହସନାହ ନିମ୍ନକ ଅଭ୍ୟାସାନୁସାରେ  
'କି' ଅର୍ପଣାଦେଶର କର୍ମ ମୋଚର  
ହସନା ?

কমিটীর দুই বিচারক তাঁদের কাজে জ  
কমিটীর দুই বিচারক তাঁদের কাজে জ  
কমিটীর দুই বিচারক তাঁদের কাজে জ

ये, विना हस्तक्षेप  
 १५४ हरे न मेरे हस्तक्षेप बिना नारायण  
 का हाथ छूटने, यह है मेरा लोभ, मैं नारायण का  
 लोभ मेरे हाथों में, मेरा हाथ मेरे हाथों में  
 रुद्रिणी, नारायण, नारायण, नारायण, नारायण

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବଳଦେବ ଗୀତା ସାହିତ୍ୟ      ମିଶ୍ର  
 ୧୨୬୯ ଅଗ୍ରହାରଣ ଚଉତିଥେ ୧୦ କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ  
 ବାହୁ ମଧୁସୂଦନ ମାତା ହୃଦୟ  
 ୧୨୭୦ ଅଗ୍ରହାରଣ ଚଉତିଥେ ୧୦ କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ  
 ବାହୁ ଚଉତିଥେ ବିଷ      ଦୁର୍ଗ

१२ ११ कार्तिक संवत् १८४१ वर्षात्  
 श्रीगुरु बानु मोन लठ्ठा नमो नमो  
 नमो नमो

১৯১৯ খ্রিষ্টাব্দে ইংল্যান্ডে গিয়েছিলেন।  
 তাঁর নাম ছিল মিঃ এ. এ. হাওয়ার্ড।  
 তিনি গিয়েছিলেন ১৯১৯ খ্রিষ্টাব্দে।

১২৬৯ তাম্রি হতে ৭০ আর্থিক পর্ষাদ ১০  
 ত্রিগুণ বারু মনুস্কম যের বাউল ১০  
 ১২৬৯ অগ্রহায়ণ হতে ৭০ আর্থিক পর্ষাদ ১০

১. **অনুষ্ঠান বাদ্য সংগীত: উদ্বোধন**  
 ২২.৩২ **স্বাগতিক: বীরেন্দ্র চন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়** ৫ টি  
 অনুষ্ঠান বাদ্য সংগীত: উদ্বোধন

১২৬৯ কার্ফিউ অবশিষ্ট নং আবেদন পর্যালোচনা  
কলিকতা নগর পৌরসভা বিধান সভার

১২৬৯ অত্রহাতিব অত্রহি: ৭০ টেকন'খ গার্ব'হ  
 অত্রহি: ৭০ টেকন'খ গার্ব'হ  
 ১২৭০ অত্রহাতিব অত্রহি: ৭০ টেকন'খ গার্ব'হ

১২৬৯ অগ্রহায়ণ অধি ৭০ ইংল্যান্ড পর্যায় ৭  
 ১২৭০ অশ্বিনী ১০ পর্যায় ৩ বৈশাখ

১৯৩৯ সাল জুলাই মাসের ১০ তারিখের সভার  
 ১৯৩৯ সাল জুলাই মাসের ১০ তারিখের সভার  
 ১৯৩৯ সাল জুলাই মাসের ১০ তারিখের সভার

১. অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা  
 ২. অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা  
 ৩. অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা অসম চাৰু বোৰাৰ পৰা

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

১৯৭৬ সালের ১৫ জানুয়ারি  
 ১৯৭৬ সালের ১৫ জানুয়ারি  
 ১৯৭৬ সালের ১৫ জানুয়ারি

( ১ ) জাতিসংঘের কিছু না করিয়া কেবল  
বর্ণাশ্রমভেদে বিভাজন করিতে মৌলিকান ইউ-  
নেস্কো কর্তৃক নির্দেশিত





সঙ্গে লাগিয়া কলিকাতার বন্দরভাঙ্গা, ১৭ই অক্টোবর ১৯২২

১১ই অক্টোবর বুধবার ।

শ্রীযুক্ত শ্রীমতী গঙ্গাচরণ সেন ও স্বামিনারায়ণ বিদ্যাসাগর প্রভৃতি লোকের কাছ হইতে ৩০০ টাকা আদায় হইয়াছে। ১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

শ্রীযুক্ত শ্রীমতী গঙ্গাচরণ সেন ও স্বামিনারায়ণ বিদ্যাসাগর প্রভৃতি লোকের কাছ হইতে ৩০০ টাকা আদায় হইয়াছে। ১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

১১ই অক্টোবর বুধবার ১৯২২।

যাহা হউক, আমরা যেমন স্বীকার করিলাম, ইনকম ট্যাক্স বটত মিনিটে প্রচার করিয়া তাঁহার কীর্তি কলঙ্কিত হইয়াছে। কিন্তু তিনি যে সেই কণ্ঠ ফালনে সমর্থ হইবেন, তাহার প্রমাণ কি? তাঁহার অস্বাক্ষর স্বাধীনবৃত্তি। কার্য্যকালে তাঁহার স্বাধীনতা বৃত্তিই বসবসী হয়। তদ্বিবক্ষন উৎপত্তির সহিত পুনরায় অসৌহারিক অসম্ভাবনা নাই।

কসভা উপরি বর্ণিত কারণের লৈর একটিও আমাদিগের ক্ষমতায় নহে না। আমাদিগের এই বোধ হইতেছে, তিনি অসামান্য প্রতিভাশালী সম্পন্ন লোক; তাঁহার অসাধারণ উদ্ভাবনী শক্তি ও তারতম্যের কল্যাণ সাধনের আন্তরিক ইচ্ছা ও চেষ্টা আছে। তাঁহার সেই শক্তি ইচ্ছা ও চেষ্টা সকল ও পূর্ণ করিবার একান্ত স্থান তারতম্য। তদ্ব্যতীত হইয়া তিনি এ দেশে আগমন করিতেছেন।

সর চার্লস টিবিলিয়ানের নিরোগ তারতম্যবিনিগের মোক্তারের বিষয় সম্বন্ধ নাই। যেহেতু তারতম্যবিনিগের কেন, সকল জেগিই অজ্ঞান হইবেন। বুদ্ধি, বিদ্যা, কার্য্যক্ষমতা, তারতম্যের অবহেলা ও রাজনীতিজ্ঞতা বিষয়ে সর চার্লস টিবিলিয়ান তারতম্যবিত্ত কোন অধিকারি নিকট নহেন। তিনি মাল্জামে পত্র মাসের অধিক ছিলেন না, তাহার মধ্যে তাঁহার অনেকবিধ উৎকর্ষ সংঘিত হয়। ইনাম ভূমির বন্দোবস্ত, গোদাবরীর গর্ভ বুদ্ধি, বিচার প্রণালীর উৎকর্ষ, বিদ্যা শিক্ষা, অগ্নি পরিষ্কৃত রাখা প্রভৃতি করে যুটি বিষয়ে তিনি বিশেষরূপে বিশেষজ্ঞ করিয়াছেন। একদেশীয় জমিদার ও সম্রাট প্রভৃতিরকে পদস্থ রাখা তাঁহার একাধিক কীর্তিই প্রধানতঃ লাভ কানিগের একত্রে সংক্রান্ত প্রস্তাব করেন। ইনকম ট্যাক্স প্রবর্তিত হইলে ইনকম ট্যাক্স উৎকর্ষ করিয়া

শিক পুরুষের নানা ভিনি যে বাক্যের উপনাম করিয়া যান, তাহা পূর্ণ চইয়াছে। এই ইচ্ছিত কর নিবন্ধন বিজ্ঞান ঘটনা হয় নাই, যখন বাট কিছু সকল জেনী হইতে বিরক্ত হইয়াছেন; আসেসরেরা যে রূপ অত্যাচার করেন, বিজ্ঞান শাস্তির অব্যবহিত উত্তর কাল বলিয়াই পুনরায় বিজ্ঞানীয় প্রকল্পিত হয় নাই।

সর সারলস টিবিলিয়ান এ দেশে ইউরোপীয় উপনিবেশের এক জন প্রধান মন্ত্রক, কিন্তু এ দেশীয়েরা ইউরোপীয় সিগের দাস হইয়া থাকেন, অথবা উৎসাহ হইয়া মান, তাহা তাঁহার অতিশ্রুত নহে। সে অতিশ্রুত হই— কিন্তু কল্যাণে বিলে যুগ প্রদর্শন কর। ইউরোপীয় মূল ধন বিনিয়োগ দ্বারা তারতম্যের উন্নতি সাধন সম্ভাবনা আছে বলিয়াই তিনি উপনিবেশে মন্ত্রক করিয়া থাকেন। তাঁহার এতদ্বিষয়ক মত অস্বাক্ষর কি না, সে স্বতন্ত্র কথা। কিন্তু তাঁহার উৎকর্ষ অসম্ভব নহে, যখন হউক, জীবনিকান্তি বা তাঁহার নিকাট যথোচিত সাহায্য প্রাপ্ত হইবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু লেড সাহেবের মতে তিনি নীলীবসে মজ্জন করিবে না। তারতম্যের জীবনিকান্তি ও তারতম্যবিনিগের কল্যাণে সাধন তাঁহার প্রধান উদ্দেশ্য। বোধ হয় ইনকম ট্যাক্স যে স্থান হইতে আগিয়া তারতম্যে অধিষ্ঠান করিয়াছিলেন, চার্লস টিবিলিয়ানের শুভাগমনে তাহা কে সেই জায়গানই আয়ত্ত করিতে হইবে। আগামি এপ্রেল মাসের বাজেটের পর আর আমরা তাহ কে দেখিতে পাইব না। যাহা হউক, কাষোর কি হইল। যে উইলসন সাহেবের কার্যের প্রতিবাদ করিতে গিয়া তিনি পদচ্যুত হইয়াছিলেন তিনি সেই উইলসনের কার্য নিযুক্ত হইলেন। যে তার রহিত করিবার জন্য তিনি পূর্বে প্রাঙ্গণে চেষ্টা পাইয়াছেন, এ কারণে সেই কার্য উঠাইয়া দেওয়া তাঁহারই

৫  
৬  
৭  
৮  
৯  
১০  
১১  
১২  
১৩  
১৪  
১৫  
১৬  
১৭  
১৮  
১৯  
২০  
২১  
২২  
২৩  
২৪  
২৫  
২৬  
২৭  
২৮  
২৯  
৩০  
৩১  
৩২  
৩৩  
৩৪  
৩৫  
৩৬  
৩৭  
৩৮  
৩৯  
৪০  
৪১  
৪২  
৪৩  
৪৪  
৪৫  
৪৬  
৪৭  
৪৮  
৪৯  
৫০  
৫১  
৫২  
৫৩  
৫৪  
৫৫  
৫৬  
৫৭  
৫৮  
৫৯  
৬০  
৬১  
৬২  
৬৩  
৬৪  
৬৫  
৬৬  
৬৭  
৬৮  
৬৯  
৭০  
৭১  
৭২  
৭৩  
৭৪  
৭৫  
৭৬  
৭৭  
৭৮  
৭৯  
৮০  
৮১  
৮২  
৮৩  
৮৪  
৮৫  
৮৬  
৮৭  
৮৮  
৮৯  
৯০  
৯১  
৯২  
৯৩  
৯৪  
৯৫  
৯৬  
৯৭  
৯৮  
৯৯  
১০০



একবার মাজিমেটের নিকটে তাহাঙ্গিকে  
লইয়া গাইবে হইবে এবং তখন তাহাঙ্গি  
গের গন্তব্য স্থান, কর্ম, যেমন প্রভৃতির  
বিষয় স্পষ্ট করিয়া বুঝাইয়া দিতে চাইবে।  
এ সকল ক্রিয়া ঘটারা অসম্মত হইবে  
তাহাঙ্গিকে কহেনা গিয়া হইবে না। তা

তাহার পরে মাজিমেট কুলিদিগের রেজি  
স্টার গিয়া তাহার এক মকল নিজে  
খিবেন। আর এক খানি কন্ট্রোলারকে  
দিবেন।

২৮

পরে তাহাতে কুলিদিগের বান  
কষ্ট না হয়, কুলিদের উপায় দিত  
করা হইয়াছে। আড্ডাফোর্ট সাংগে  
কারী মজিক নিজে এক জন বিদগ্ধ  
লোক দিবেন।

তাহার পরে এক লি ডাবি  
এই কয়েকটি কথা জিজ্ঞাসা করিবে-  
পথে সে কোন কষ্ট পাইয়াছে কি না। সে  
নিজের গন্তব্য স্থান ও কর্তব্য কর্ম প্রভৃ-  
তির বিষয় ভাল কণে অবগত হইয়াছে  
কি না। তখনও যদি কেহ এক হইয়া  
তাহাকে কন্ট্রোলারের বামে নিম্নোক্ত

কথা পাঠাইয়া দিতে হইবে। তাহার পর  
টিকিৎসক সকলের অবস্থাদির পরীক্ষা ক-  
রা দিবেন। পরীক্ষা করা হইলে প্রতিজ্ঞা  
পত্র প্রস্তুত করা হইবে। পাঁচবৎসরের  
অধিক কালের প্রতিজ্ঞা পত্র কনা হইলে

প্রতিজ্ঞা পত্রের তাৎপর্য়া ও অর্থ  
কুলিদিগকে বুঝাইয়া দেওয়া হইলে  
কুলিরা এক কল্লুবৎসর তাহাতে  
বসতি করিবেন যে নৌকা বা বাষ্পীয়  
যান দ্বারা কুলি প্রেরিত হইবে, তা

কুলিরা তাহাদের অনুমতি  
কুলিরা তাহাদের অনুমতি  
কুলিরা তাহাদের অনুমতি  
কুলিরা তাহাদের অনুমতি

কুলিরা তাহাদের অনুমতি  
কুলিরা তাহাদের অনুমতি

মতবাদ দিবেন। তাহা-ক অবিলাস কুলিদি  
গকে তাহাঙ্গিগা অধিকার বাস স্থান  
দিবেন। যদি তিনি বিলম্ব করেন, মাজি  
মেট নিজে বাজে তাহাঙ্গিকে বাসা দিয়া  
চা করের নিকটে টোল আদায় ক-  
রা লইবেন।

এই বিলটি অনেক অংশে প্রায়ঃসমীক-  
রিত হইয়াছে মতবাদ নাই। কিন্তু তাহা

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

কুলিদের সুখস্বচ্ছন্দ শেষ হইল। কিন্তু তখন

# সোমপ্রকাশ

সর্বস্বতা সন্ধানিহিতাধ দাধিন: স্বরক্ষা কুচিন্ধিতা ন হীযতা ।

৫ ভাগ ।

৩ সংখ্যা ।

সন ১২৬২ । ১৭ অগ্রহায়ণ । ইং ১৮৬২ । ১ ডিসেম্বর

বার্ষিক

বিজ্ঞাপন ।

গ্রাহকগণের প্রতি ।

গ্রাহকগণকে জানান যাউতেছে, কালিক  
মাস অর্থাৎ ইংল্যান্ডে অনেকের প্রস্তুত গো  
মসকালের মূল্য নিম্নেবিত হইয়াছে, অগ্রা  
য়ণ মাস অর্থাৎ ইংল্যান্ডে অনেকের মূল্য শেখ  
হইবে, অতএব তাঁহারা দ্রুত করিয়া মূল্য পা  
ঠাইয়া দেন। উক্ত মূল্য কলিকাতা সংস্কৃত  
কালেক্টে আনানিগের নামে পাঠাইলেই আ  
মরা নিকিয়ে ও শীঘ্র পাইব ।

সোমপ্রকাশ ।

১২৬ অগ্রহায়ণ সোমবার ।

সে ক ল হইলে কি রেলওয়ের পানী

রা নিস্তার পাউত ।

কর রোগ যেমন অন্য অন্য বহু রো  
গের আশ্রয়, পবলিক ওয়ার্ক বিশেষতঃ  
রেলওয়ে ডিপার্টমেন্টে তেমনি বহু দোষের  
আশ্রয় স্থান হইয়াছে । এখানে ধর্ম ও ধর্ম  
নীতি ক্ষীণবল হইয়া একান্ত ক্ষীণ ভাবে  
আধিপত্য করিতেছেন । সামান্য চৌয়  
অবধি করিয়া কুতস্থতা পর্যন্ত ৮ ঘু ওর  
যাবতীর পাতকেরই এ ডিপার্টমেন্টের প্রতি  
সবিশেষ অনুগ্রহ আছে । অধিকতর ক্ষেত্র  
ও বিশেষ বিমর এই, গচরাচর দেখিতে  
পাওয়া যায়, এই ডিপার্টমেন্টের প্রধান পা  
নীয়া ধর্ম ও ধর্মনীতিপ কঙ্ক দ্বারা  
আচ্ছন্ন হইয়া বিলম্বরূপে আপনাদিগের  
অন্য অনুরক্তির চরিতার্থ করিয়া থাকে,  
কেহ তাঁহাদিগের কার্যের প্রতি সংলগ্নও  
করিতে পারে না ।

রেলওয়ে কর্মচারিদিগের আচরণ ও  
ব্যবহার রক্তাক্ত সতত আমা, কনের প্রতি  
পক্ষ প্রদিক্ট হইয়া থাকে । আমরা প্রায়ই  
কল্পিতে পাই, অনুরক্ত কর্মচারী অনুরক্ত মাসের  
অনুরক্ত তারিখে বেলওয়েতে প্রবেশ করি  
যাইলেন, এই অল্প কালের মধ্যে এক  
টাকা সংগ্রহ করিয়া কর্ম পরিত্যাগ করি  
লেন । উল্লিখিত ডিপার্টমেন্টে অর্থ রূপ  
হরণ করিয়া জীৱি বিদার বিলম্বিত ।  
উপায়ও আছে । এক গুণে জিহ্বণ  
লিখিয়া দিলেও কেহ সহসা ধরিতে পারেন  
না, ধরিবেই বা কে ? উক্ত ব্যবহারিগের  
সম্পত্তি, তাঁহারা কখন চক্ষে দেখেন না ;  
কর্মচারিদিগের উপরেই নির্ভর । প্রধান  
কর্মচারী যদি কুতস্থতা দোষে দূষিত হই  
লেন, তাহার ত কথাই নাই ।

কুতস্থতার ন্যায় আর একটি দোষের  
সম্বন্ধ আছে। তাহা হইতে গোচর হইয়া থাকে ।  
রেলওয়ে কর্মচারিদিগের অনেকের কার্য  
ও ব্যবহার দ্বারা বোধ হয়, তাঁহারা গবর্ণ  
মেন্ট নজর স্বীকার করেন না । তাঁহারা  
বয়ংই অনুগ্রহ ও নিগ্রহ কর্তা । এক জন  
সামান্য অপরাধ করিয়াছে, হয় ত তাঁহার  
গুরুতর দণ্ড করিলেন, কেহ বা গুরুতর  
অপরাধ করিয়া সামান্য দণ্ডে নিষ্পত্তি  
পাইল । দণ্ডিত ব্যক্তির এই বিধি বিচার  
পদ্ধতি, কর্ণগোচর করিয়াও আর কুতস্থতা  
লাভ হয় না । রেলওয়ে দ্বারা দেশের অ  
ধিকতর কল্যাণ হইতেছে, অতএব তৎক  
র্মচারিগের দণ্ড বিধান অসম্ভব । পাছে রেল

ওয়ের কোন অধিক  
রা হটক, অথবা  
আনুগত্য কি বিলম্ব  
ট্রেট ও মালিট্রেটের  
যোগ করেন না ।  
রিদিগের নিকটে  
খাই বিকল হইলে  
যখন যত অপরাধ  
ল, তখন গবর্ণমেন্ট  
কৈ ? রেলওয়ে  
কৈ আছে, এ সং  
হরণ দণ্ড বিচার  
বিধিগত, যে ব্যক্তি  
হইয়া গবর্ণমেন্ট  
করিল, সে ব্যক্তি  
রাখে অপরাধী  
আদালতে তাঁহার  
কিছু যে কারণ  
পাইল, তখন গবর্ণ  
লাভ হইল । গবর্ণ  
ন্যেই বা একান্ত  
রেলওয়ে সম্বন্ধে  
কেন ? একগুণে অনেক  
করিতে পারেন । ই  
রণ আছে, তদ্ব্য  
রেলওয়েতে হোট  
ধিক, হোট মো  
কর্ম করিতে হয়  
কংশ দুর্ভাগ্য  
নিকটে অধিকার



র এক হু পরাধীন  
রে । সুতরাং তাহা  
বিস্তৃত ব্যবহারের  
পারে না । দ্বিতীয়,  
গর বিশেষতঃ ইটরো  
নুকণ দণ্ড হয় না ।  
রিরা যদি অসত্য বা  
ইতেন, শিক্ষা পাই  
অসত্য রাজারা যদি  
তেন, অসত্য কর্মচারী  
ও করিয়াছে, তাহার  
বেতন ছিল, পঞ্চাৎ  
টাকা হইয়াছিল, কিন্তু  
৫০০০ টাকা ব্যয় করি  
একমাত্র তাহার বিধ  
কার্য্য হইত সন্দেহ  
গবর্নমেন্টের অধিকার  
র তাঁকাইতেরা নিম্নার

অসত্যনিগের তাঁকাইতী  
নিগেরই ? রেলওয়ে কো  
ম্পানি এতোক কর্মচারির  
কর্মসংশ্লিষ্ট প্রবর্তিত  
ধীন কর্মচারির এতি অ  
নি অনুরাগ কেন ? তা  
ই কেহ সন্দেহ করে কি  
কপে সময় অতিবাহিত  
ই সবিশেষ অনুসন্ধান  
র অনেক নিবারণ হই

মিলিটারি ভারতবর্ষে

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

মিলিটারি সোমপ্রকাশ

যতঃ বর্তমান মন্ত্রিসভার অধিকার  
সময়ে ভারতবর্ষে আগমন করিবেন,  
যেহ হয় অমের কেহ একই হইবে করেন  
নাই । অতএব ইহার ভারতবর্ষে আগমন  
সমাচার প্রতিগোচর হইলে পাঠকগণের  
চিত্ত চমৎকৃত হইবে সন্দেহ কি ? কিছু  
দিন পূর্বে মাদ্রাজ টাইমস্ মিথিয়াছিলে-  
ন, যর চার্লস ট্রিবিয়ান লেভ সাচে  
বের বর্ষে নিযুক্ত হইয়াছেন । আমরা  
তৎকালে একবার বিশ্বাস করি নাই ।  
বিশ্ব গত সোমবার যে টেলিগ্রাম আসি-  
য়াছে, তাহাতে তাঁহার নিয়োগ-বিষয়ে  
আর আশ্বাসের অধিকার সংশয় নাই ।

যে মন্ত্রিবর্গ তাঁহাকে পদচ্যুত করি  
য়াছিলেন, তিনি তাঁহাদিগের অধীনেই  
আবার কর্ম স্বীকার করিলেন কেন ?  
অনেকে ইহা বুঝিতে পারিতেছেন না ।  
ইহা বুঝাও সহজ : ৮ । সচরাচর  
তোকে যে যে কারে রাজকর্ম স্বীকার  
করে, তাঁহার তাহার কিছুই অসম্মতি  
নাই : ধন, মান ও পদ পৌরুষ এ সমুদ-  
য়ই আছে । তিনি যখন মিলিটারি স-  
জান এবং মেকলের পুঙ্ক প্রভৃতি সম্প-  
ত্তির অধিকারী হইয়াছেন । কেহ কেহ  
কহিতেছেন, মাদ্রাজের গবর্নরী কালে তিনি  
উইলার্ড প্রবর্তিত টাকার বিরোধী হইয়া  
যে মিনিট মিথিয়া প্রচারিত করেন, তৎকা-  
র তাঁহার অবিদ্যাকারিতার পরিচয় হই  
য়া তাঁহার কীর্তিতে যে কলঙ্ক অঙ্ক হই  
য়াছে, তৎকাল করিবার উদ্দেশ্যেই তিনি  
পুনরায় ভারতবর্ষে আগমন করিতেছেন ।  
কিন্তু এ কারণ টি আশ্বাসের প্রকরণ  
তোমকর হইতেছে না । প্রথমতঃ মিনিট  
প্রচার করা আশ্বাসের হতে তাঁহার যো-  
যের নিমিত্ত হয় নাই । তিনি এক জন ভা-  
রতবর্ষের দ্বিতীয় কর্মচারী । কাব্য  
যারা ভারতবর্ষের অধিকৃত হইবার সত্য  
করা আছে, যতঃ পরক্য যোগে হইত, তৎ  
কালোই চেষ্টা তাঁহার অধিকৃত করিয়া ।

তিনি মিনিট প্রচারকেই তৎপ্রতিরোধের  
উৎকৃষ্ট উপায় বলিয়া কল্পনা করিয়া  
ছিলেন । তিনি ইনকম টাক্স প্রবর্তিত  
না করিয়া ব্যয় সংকল্পে ব্যয় আর ব্যয়  
সমতা বিধানের পরামর্শ দিয়াছিলেন ।  
এই পরামর্শের অনুসরণ করিয়া কার্য  
অনুষ্ঠিত হইলে যদি আর যার সমতা বি-  
ধান সম্ভাবনা না থাকিত, তাহা হইলে  
তিনি দোষী হইতেন সন্দেহ নাই । কিন্তু  
যখন অমাকেও সেই ব্যয় সংকল্প  
কপ উপায় অবলম্বন করিয়া আর ব্যয়ের  
সমতা বিধান করিতে হইয়াছে, তখন তাঁ  
হাকে দূষিত করা ন্যায্য হইতেছে না ।  
তৎকালে হবনোটি টাকার অসম্মতি ছিল,  
ইনকম টাক্স কি তৎপূরণে সমর্থ হইয়া-  
ছিল ? এ হলে আর এতটা বিয়নেরও বি-  
বেচনা করা আবশ্যিক । চার্লস ট্রিবি-  
য়ান তৎকালে প্রতিবাদী হন, তৎকালে  
ইনকম টাক্স প্রত্যাব বিধিবদ্ধ হয় নাই ।  
এ প্রত্যাব বিধিবদ্ধ করা কর্তব্য কি না,  
তাহার বিচার হইতেছিল । রাজপুরুষেরা  
ইনকম টাক্স প্রত্যাবের এতি পক্ষপাত  
নিবন্ধন অক্ষ : ১ হই : ১ যদি উপকার ও অ-  
পকার গণনা করিয়া উহা বিধিবদ্ধ করিবার  
অভিলাষ করিতেন, কখনই উহা বিধিবদ্ধ  
হইত না । চার্লস ট্রিবিয়ান তাঁহাদি-  
গের কৃতজ্ঞতাজন হইতেন সন্দেহ  
নাই । এতদূশ হলে ইনকম টাক্স বিধি  
বিধায়ী রাজপুরুষেরা দোষী না হইত।  
তিনি বিকপে দোষী হইতে পারেন -  
অনেকে এই বলিয়া তাঁহার এতি দোষী  
প্রোপ করেন যে যখন সকল প্রধান রাজ  
পুরুষে একত্রে হইয়া একই কাজ করিতে  
ছিলেন, তখন বিকল্প বাণী হইয়া তাঁহার  
তৎপ্রতিরোধ চেষ্টাকরা বিধের হয় নাই ।  
ইহার উত্তর হলে আশ্বাসের প্রকরণ এই,  
সকলে বুঝিতে না পারিয়া যদি একই অ-  
ন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারিলেন,  
অন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারিলেন,  
অন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারিলেন,

মহা : মীল উৎসব হইল কেন ? হিন্দু-  
সাম্প্রদায়িক আচার্যগণ আট আনা দিতে  
চাহিয়াও কৃতকাৰ্য্য হইলেন না কেন ?  
পনিজের এক বংশ বেতন ও বিক্রয়  
জন্মের এক একরূপে দুলা নির্ধারণ ক-  
রিয়া রাখাই অন্যান্য । এক্ষণে প্রতি বৎ-  
সর উৎসবের জন্মের দুলা হুজি হই-  
তেছে । দুই বৎসর পূর্বে যে মজুরকে এ-  
তাহ হয় পরমায় খাটান হইয়াছে, সে  
এক্ষণে প্রতি দিন চারি আনা উপার্জন  
করিতেছে । একপ হলে দুই ও নির্বোধ  
বাকিরিক্ত কোন্ ব্যক্তি পাঁচ বৎসরের  
জনা একবিধ বেতনে বন্ধ থাকিতে অ-  
ভিলাষী হইবে ? শেষে মীলকরনিগের  
মায় খটনা হইবে সন্দেহ নাই । ক্রমশঃ  
নিম্ন জেনীর লোকেরা আইন ও আদানত  
ও মুক্তায়ুক্ত কার্য্য হুজিতে পাণ্ডিত্যে হ ।  
কুলিরা যতদিন নিতান্ত দুঃখ থাকিবে, তত-  
দিনই চা-করনিগের লাভ, কিন্তু তাহাবি-  
গের দীর্ঘকাল বিমুক্ততা দর্শন সস্তাবিত  
নহে । সস্তাবিত হইলেও কি তাহাবিগকে  
অতিশয় কষ্ট গবর্ণমেণ্টের কর্তব্য । এক  
জন বুদ্ধিমান মজুর দুই জন অল্প মজুরের  
কাজ করিতে পারে । বেতনের নিয়ম এক  
বিধ থাকিলে আসাম প্রভৃতি স্থানে বুদ্ধি-  
মান মজুরের গমন সস্তাবনা কি ? আমা-  
নিগের মতে কর্ম স্থানে অবস্থানের কাল  
নিয়ম করা বিশেষ নহে এবং যে বৎসর  
যেকপ বাক্য হইবে, তদনুসারে মজুর  
নিগের বেতন নির্ণয় করা কর্তব্য । এই নি-  
য়ম স্থান না হইলে উ. সি. সিত প্রভাবিত বি-  
শেষ সোস্তম্য ও লাভ হইবার সস্তাবনা  
নাই ।

আদি ও উত্তরোত্তর এদেশীয়-  
নিগের মজুরেরাও গান বুদ্ধিতে  
পারেন । ই ।

২৭এ নবেম্বরের ১৮৮৬ অব ইতিহাস

রাজা দিনকর রাওর ভারতবর্ষীয় গব-

র্ণমেণ্টকে সহ পরামর্শ দান এই নি-  
রোনাগের একটা প্রকারে দেখিয়া আমা-  
নিগের অন্তঃকরণে দুঃখ হইতেছিল-  
য়ের উদয় হইল । আমা-নিগের কা-  
রণ এই, রাজা দিনকর রাও একজন অ-  
সাধারণ বুদ্ধিমান ও ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে-  
ণ্টের হিতৈষী । হিতৈষী বুদ্ধিমান ব্যক্তির  
রাজ্যে হিতার্থ গবর্ণমেণ্টকে যেকপ প-  
রামর্শ দেওয়া উচিত, রাজা দিনকর রাও  
সেই একরূপে পরামর্শ দিয়াছেন । তিনি  
বলেন “এক শতাব্দী পূর্বে এদেশীয় রাজ-  
গণ লোক রক্ষণ করিয়া প্রজা পালন ক-  
রিয়াছিলেন । বিশেষতঃ আকবরের প্রতি  
সকলে বিশেষ সম্মতি ছিল । আকবর জু-  
মির রাজ্য সংক্রান্ত উৎকৃষ্ট বন্দোবস্ত  
করিয়াছিলেন ; অন্যবিধ কষ্ট কমাইয়া  
দিয়াছিলেন ; এবং পঞ্চায়েত প্রথা প্রব-  
র্তিত করিয়া শাসন কার্য্য নির্বাহ করি-  
ন । কিন্তু তাহার উত্তরাধিকারিগণ তা-  
দর্শিত পথের পথিক না হওয়াতে  
রা অসম্মতি হইল ; অসম্মতি হইয়া  
রাজনিগকে রাজ্যস্বার্থ আশায় কা-  
ইংরাজনিগের শাসন এলাহী ও  
অশ্রীতিকর নহে । ইংরাজনিগের রাজ্য  
ক্রমে বঙ্গোবস্ত উত্তম ; সমুদ্রতরঙ্গ  
মণ্ড দানের রীতি উৎকৃষ্ট ; কামেনজ ট-  
কুল প্রভৃতি অনেক হইয়াছে ; রেলওয়ে  
নির্মাণ ও খাদ্যাদি খনন করা হইয়াছে ;  
এবং ইংরাজনিগের ৩ তিচ্ছা অধিপালন বি-  
ষয়ে দৃঢ়তা আছে । যে যে কারণে এদে-  
শীয়নিগের ব্রিটিশ গবর্ণমেণ্টের প্রতি  
অসন্তোষ জন্মিয়াছে, দিনকর রাও তাহার  
কয়েকটীরও উল্লেখ করিয়াছেন । সে ক-  
য়েকটা এই—ইনকমটোয়, প্রজা-  
অপ্রভু তত্ত্ব উত্তরবিধ লোকে, মিত্র  
হইতেই দুলা রূপে অল্প প্রদত্ত এবং অন-  
বহিত হইয়া দিন দিন আইন পরিবর্তন ।  
বিশ্বের বিধ এই, জাতিবিগের  
দেশের নির্বোধ ও অসম্মতি লোকেরাও



সংবাদ বিবরণে মনোহর লেখনী এককালে বিজ্ঞান-  
ম কল্পিতাছে, অশ্রুনাও কোন অসামান্য ব্যা-  
পার উপস্থিত নাহ, তথাপি সন্ধিহিত নগর  
ও পরী হইতে গাছা কিছু সংগ্রহ করিয়াছি,  
তাঁহা অবলম্বে প্রেরণ না করিয়া কান্ত  
থাকিতে পারিলাম না, যেহেতু দুইজন পতি-  
য়াছে, কে জানি আমার কোন পার্শ্ববর্তী অসম  
পতিয়াছে একপ মনস মহাশয়ের মনে উদয়  
হয়, কথা। আলস্যপরতন্ত্র হইয়া মহাশয়ের  
পাঠকবর্গকে এদেশীয় কোন কৌতুকজনক বা  
হিতকর ব্যাপারের জ্ঞানলাভ হইতে বঞ্চিত  
রাখিয়াছি মনে করেন, সেই আশঙ্কায়  
কামি অসময়ে লেখনী ধারণ করিলাম। এবং  
পর অন্যান্য দেশের প্রতি ধর্ম্মরাজের যে  
রূপ দৃষ্টি, এদেশের প্রতিও তদ্রূপ, ধর্ম্মরাজ,  
অর ও বিকারাদি প্রিয়বরসংগণকে সহায়  
করিয়া মনোবাঞ্ছা পূর্ণ করিতেছেন, নিজ  
কোট চাঁদপুর বসিও তাহার দৃষ্টিপথে পতিত  
নাহি কিন্তু পার্শ্ববর্তীপল্লীসমূহে তাহার  
বিদ্যা। গত দুইমাসের মধ্যে কত পরি-  
য়ে ছার, খার হইয়াছে, কত রজনী অনা-  
ইয়াছে, কত পতি প্রাণাধিকারপ প্রতি  
মনের শান্তিসহ বিসর্জন দিয়াছে, কত  
র জোক পুণ্য হইয়াছে, কত পিতার  
জি আশা ও অবলম্বন উন্মিত হইয়াছে,  
র আর লীলা নাই। মহাশয়। দৌলতগঞ্জ  
ানপুর ও বজরাগঞ্জ গ্রামে নিরন্তর হাছা-  
কার ধনি অতিগোচর হইতেছে। সুতরাং গৃহস্থের  
ঘারে ঘারে ভ্রমণ করিতেছে, সকল গৃহেই তা-  
হার বোড়শোপচারে অতিথি সৎকার হইতে  
ছে, তথাপি তাহার রকোদর পূর্ণ ও লঠরানল  
নিরন্তর হইতেছে না।

গত বুধবার রজনী বিজয়র সময়ে এত্ৰা-  
নের এক ক্রোশ অন্তরে টেকরহী নদীতে এক  
খনি কুত্র তরী জলমগ্ন হইয়া একটি ত্রীলোক  
প্রাপ্ত হইয়াছে। ঐ তরীতে কোন ভদ্র  
লোকের পরিবার বাইতেছিল। ৩ টি কুলকা-  
মিনী ও ৩ টি ২। ৩ বর্ষবয়স্ক শিশু দুইজন দুই  
পুরুষ ভ্রমণে ছিল। পোতঘাটীর অবিদ্য-  
কারিতা লোপনিবন্ধন পোত জলমগ্ন হয়।  
জলমগ্ন হইয়াতাত্রই উল্লিখিত শিশুদ্বিগের  
লব্ধায়ে মৃৎপিণ্ডের ন্যায় মনোভলশাঙ্গী হট-

বার বিলম্ব সম্ভাবনা ছিল কিন্তু ভাগ্যক্রমে  
তাঁহাদের প্রাণরক্ষা হইয়াছে, তাঁহাদের জ-  
ননা অগত্যাগ্রেহে মুক্ত হইয়া আগুন জীবনের  
মমতা পরিত্যাগ করিয়া খালকগুলিকে বন্ধ-  
স্থলে স্থাপন করিয়া কেবল পদসঞ্চালনের  
দ্বারা সম্ভরণ দিয়া নিরাপদে কুলে উপস্থিত  
হইলেন। কয়েক দিবস অতীত হইল খালকুল্যা-  
নিবাস কালীকুমার নরকার নামে এদেশের  
একজন প্রসিদ্ধ আলম্ব্যবসারী অখানকার ভিপু-  
রী ২. এষ্টের কর্তৃক ধৃত হইয়া মশোহরের দেশ-  
জঙ্গ মাঠেবের বৈচায়ে সমপিত হয়। জঙ্গ সা-  
হেব তাহার ৭ বৎসর কারাবাসের আত্মা দিয়া  
ছেন। এখানে একপ জনপ্রতি যে চুক্তি কালী  
কুমার বিদ্যর লোকের সর্জনশ করিয়াছে এবং  
ঐ রূপ নীচরতি অবলম্বন করিয়া জীবিকা নি-  
র্বাহ করিত একথাও বিখ্য। নহে কিন্তু উপস্থি-  
ত বিবরণে সে দণ্ডার্থ হয় না। তাহার  
বহিত অভিযোগকার বিষয় শত্রুতা ছিল, সেই  
মহাব্রজে তাঁহাকে বিপাকে কেল ইয়াছে। যে  
একল কৃত্রিম মোহন, কুলিকা, মস্যাখার প্রভৃতি  
দ্রব্য তাহার গৃহ হইতে বাহির করা হয় ও ব-  
হার বলে তাহার কারাবাসের আদেশ হইয়া  
ছে, সে সমুদয় তাহার নিজের নহে, নিজের  
হইলে সে বিলম্ব সম্ভাবন করিয়া রাখিত,  
বহির্জাতীয় গোহৃহের কোন প্রকাশ্য স্থানে  
রক্ষা বদ্ধ করিয়া সুলাইয়া রাখিত না। তাহ-  
র বিপক্ষ বৈরমিগতনমানসে সেই সকল ব-  
জাদি কোমল ক্রমে পূর্কাক্ষেই তথায় রাখিয়া  
আসিয়া ডেপুটী মাজিষ্ট্রেটের নিকট তাহার  
নামে অভিযোগ করে। গত ২ তাহাকে  
সঙ্গে লইয়া গিয়া ঐ সকল দ্রব্যাদি দেখাউয়া  
দেয়। যে স্থলে হটক অপরাধীর শাস্তি হক-  
রাই অজ্ঞাদের বিবরণ। গত পরশ্বর রজনী-  
যোগে এক জন মিথ্যাবাদি চরের বাক্যে বি-  
শ্বাস করিয়া ডেপুটী অপর এক জন আলম্ব্য-  
সায়ীর অন্তসজ্ঞানে গমন করিয়াছিলেন।  
তথা হইতে একটি কুহু মোহর একটি নকল  
ও একটি জীর্ণ পের আনিয়াছেন। এই তিন-  
টি দ্রব্য তাহার কণ্ঠমণ্ডপের কোণে এক  
কুড়ির ভিতর ছিল, শুনিতেছি এমত  
অতি ভদ্রলোক, কোন কালে ইহার একপ  
আশ্রয় নাই, তাহার এক জন প্রতিবাসী

## সেউজগাছ ।

লিখনন জীবন-সঙ্গ

করাতে বিদ্যোদিত। বঙ্গবিশ্ববিদ্যালয়

হইয়াছে। আবাসিগের আর্থনীত এই দুইয়ের  
সহিত বেন হাসভেরও শেব হয়।

সুপারের বেগম সপ্রতি ইউরোপীয় ও  
একজনীর অনেক সত্য লোককে এক ভো  
জ দিতাহেন। রাণীর মতন তাঁর অধিবাস  
সাধনসহিত দিকনে এই ভোজ যেওরাই।  
ভোজের সময়ে তিনি সপরিবারে তথার উপ-  
স্থিত ছিলেন। বেগম কি কেবল বাঘ আফর  
দ্বারা প্রতি-ভিলাত চেঁচায় আছেন? নিজ  
স্বীয় অভ্যন্তরীণ উন্নতি সাধন দ্বারা  
বিস্ময় বশোলাভের পাইতেছেন কি  
না?

মাস্তাজের এক খানি সংবাদ পড়ে দুই  
হইল বেলাতের পরিত গল্পের ৪৮ জন কয়েদী  
কাজ করিতেছিল, হঠাৎ তাহারা এহরী  
দিশের সন্তক কাড়িয়া লইয়া পলায়ন করিয়া  
ছিল। পলায়ন ৩৭ জন ব্যক্তির মধ্যে ৭  
জন পুনর্কায় হত হইয়াছে। পুলিশ এহরী রা  
তাহাজিগকে ধৃত করিবার বশোচিত চেঁচায় :  
তাই বলিয়া তাহাজিগের দুইবৎসর করিয়া বি-  
হীন হইয়াছে। পুলিশের। রূপান্তরিত ব্যক্তিরে-  
কে আর কোন দুর্ভাগ্য হয় না। কনষ্টান্টিন  
পুলিশ কি করেন দেখা যাইবে।

রশ্মিঃ সিংহ অমৃতসরের বিখ্যাত দী  
ঘির নিকটে এক মন্দির করিয়া বান। তদ্রূপ  
লে কের এইরূপ সংস্কার আছে, ঐ দীঘিতে  
স্নান করিলে কুষ্ঠ আরোগ্য হয়। ক্রমশঃ তথা  
র অনেক কুষ্ঠরোগী সমবেত হইয়াছে।  
ইহাতে পঞ্চাব গবর্নমেণ্ট এই মন্দিরটি এক  
আত্মার করিবার মানসে মাসে ৮০ টাকা  
দিয়েন সংরক্ষণ করিয়াছেন। সর রবার্ট  
মটগমারি এবং সনীর সন্দেহ নাই।

সপ্রতি সম্রাট আলেকজান্ডার আজ  
দিতাহেন, কশীরা রাজ্যের বিচারপতিদি-  
গের পুলিশের উপরে কসত। থাকিবে না।  
ভারতবর্ষে এইরূপ চেঁচায় হইতেছে। কশী-  
রাতে কি ভারতবর্ষের ন্যায় পুলিশসম্পর্কে  
উৎকোচ প্রোত প্রবাহিত আছে। জিত  
কোন দেশের?

কনক সাহেব, আলমোদার একটি

বে

ক

টি বিলিয়ার এ প্রকার করিয়া  
শীরের বিরুদ্ধে হইয়া আছে।

ব্যবস্থাপক সরকার এই সার  
বিলার লইয়া ইংলণ্ডে গিয়া

একজন সর্জনাই আদায়  
তে। সেএকজন গোবান্ডি

কটে এক জাহাজ অসমর্থ  
নাবিকগণকে বন্দ করিয়া

নাবক বেইন জাহাজে গিয়া  
লবন হইয়াছে। কোথায়

ই, কিংকিরতল বেইন, মিলে  
পুণ্ডার আর এক খানি জাহাজ

জাহাজের অধ্যক্ষগণের এক  
কেন?

বোম্বাই মেজের ক  
মাসক একজন ইহুদি

লর নির্মাণ করিয়া  
মিলে ১০,০০০ টাকা

হেন। ইহাতে ২০০ রোগীর  
হইবে। সর বাটল কি

দিয়া চিকিৎসার নির্মাণ করিবার  
দিয়াছেন।

যাকামোর বেলাত  
নাট্য শালায় দুইজন

পতিঃ বিরুদ্ধে কোন  
জন অকিসর জাহাজের

অর মকট গর দিচ্ছেন।  
আকিসরেরা কিংকিরতল

সর কিংকিরতল কি  
প্যাণ্ডাগুলি

১৪ই অক্টোবর  
গ' সোমবার

ব্যবস্থাইয়াছে। জিনাথ ঘোষ ও  
ব্যক্তি হয় পান করিয়া এক

করে। জিনাথ সর্জন, তথায়  
তাহার মত তদ্রূপ এক

বালিকার দ্বারা অ.পনার  
চরিতার্থ করে। কালিকার

আরও ২। "বাবুরা" এই  
অন্তঃসত্ত্বা বোম্বাই

সেউজগাছ

ইংলণ্ডে

আগামী

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ

সেউজগাছ



কম চিকিৎসা  
গণিত করে  
১. জীবন সংগ্রহ ও তাহার  
২. তৎকালীন প্রকৃতির সংবাদ  
৩. তাহার গুরুত্বপূর্ণ হই-  
৪. টিকিৎসাদির আবেশ কিস্তি  
৫. রোগ্য লাভ করিতে পারে

১. পাতকসং—সি. ১—১২০ অবধি ১২০ পর্যন্ত  
২. পাতকসং—সি. ১—১২০ অবধি ১২০ পর্যন্ত  
৩. কোং টা—১২০ অবধি—১২০ পর্যন্ত  
৪. কোং টা—১২০ অবধি—১২০ পর্যন্ত  
৫. কোং টা—১২০ অবধি—১২০ পর্যন্ত  
৬. কোং টা—১২০ অবধি—১২০ পর্যন্ত

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

ইউরোপীয় সমাচার।

লণ্ডন ৩১ জানুয়ারি।

আমেরিকা ২২৫ অক্টোবর মাকিলন অগ্র-  
গত হয় নাই। মহানগর সত্য বসোদিত করি-  
বার সময়ে সাধারণতঃ লক্ষীর অনেক লোক  
সত্য পূর্ণ প্রাপ্ত হইয়াছেন।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

লণ্ডন ২৭ অক্টোবর।

আমেরিকার যুদ্ধে মাকিলনকে টলিডোকে  
কোটকিতে হত্যা করা হইয়া গিয়াছে। মাকিলন  
টের সেনারা কর্তী হইয়াছে বলিতেছে। বিজ-  
নী সেনাপতি কুর্টজি ৩০ ডাকার টেনা আই-  
গটমাক পার হইয়া মেক্সিকো, সেনাবিল টেমি-  
য়া ও বাহাজিমিয়ার এবেল করিয়া এক লক্ষ  
অব.ও বিস্তার প্রাপ্ত হইয়া গিয়াছে। মাকিল-  
চারলস টৌমে অখান পিবির স্থাপিত করিয়া  
ছেন। বিজোহীসভাতে প্রকাশ করা হইয়াছে  
কল লক্ষ বস্ত। তুল্য কর অবদা বল পূর্কক লই-  
য়া উত্তরোপে বিজয়ার্থ প্রারণ করা উচিত। এ-  
সে রাজ বিগ্রহ ঘটাইছে। রাজা ওধো সিংহ  
মন ভাগ করিয়া পলায়ন করিয়াছেন। ক-  
গুলি অখান ব্যক্তি কিছু দিবেক অন্য এক শাস-  
ন স্থাপনী স্থাপিত করি গিয়াছেন।

পৌরসভা ২২৫ অক্টোবর মাকিলনকে  
পরিভাগ করিয়া মাকিলনকে মাকিলনকে  
পাইয়াছে। মাকিলন মাকিলন মাকিলন  
মাকিলনকে মাকিলনকে মাকিলনকে  
মাকিলনকে মাকিলনকে মাকিলনকে  
মাকিলনকে মাকিলনকে মাকিলনকে

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।  
১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

১২ ই অগ্রহণ কর্তব্যপক সত্য।

[illegible]



১২০১ ভা. ১  
 ১২০২ ভা. ২  
 ১২০৩ ভা. ৩  
 ১২০৪ ভা. ৪  
 ১২০৫ ভা. ৫  
 ১২০৬ ভা. ৬  
 ১২০৭ ভা. ৭  
 ১২০৮ ভা. ৮  
 ১২০৯ ভা. ৯  
 ১২১০ ভা. ১০  
 ১২১১ ভা. ১১  
 ১২১২ ভা. ১২  
 ১২১৩ ভা. ১৩  
 ১২১৪ ভা. ১৪  
 ১২১৫ ভা. ১৫  
 ১২১৬ ভা. ১৬  
 ১২১৭ ভা. ১৭  
 ১২১৮ ভা. ১৮  
 ১২১৯ ভা. ১৯  
 ১২২০ ভা. ২০  
 ১২২১ ভা. ২১  
 ১২২২ ভা. ২২  
 ১২২৩ ভা. ২৩  
 ১২২৪ ভা. ২৪  
 ১২২৫ ভা. ২৫  
 ১২২৬ ভা. ২৬  
 ১২২৭ ভা. ২৭  
 ১২২৮ ভা. ২৮  
 ১২২৯ ভা. ২৯  
 ১২৩০ ভা. ৩০  
 ১২৩১ ভা. ৩১  
 ১২৩২ ভা. ৩২  
 ১২৩৩ ভা. ৩৩  
 ১২৩৪ ভা. ৩৪  
 ১২৩৫ ভা. ৩৫  
 ১২৩৬ ভা. ৩৬  
 ১২৩৭ ভা. ৩৭  
 ১২৩৮ ভা. ৩৮  
 ১২৩৯ ভা. ৩৯  
 ১২৪০ ভা. ৪০  
 ১২৪১ ভা. ৪১  
 ১২৪২ ভা. ৪২  
 ১২৪৩ ভা. ৪৩  
 ১২৪৪ ভা. ৪৪  
 ১২৪৫ ভা. ৪৫  
 ১২৪৬ ভা. ৪৬  
 ১২৪৭ ভা. ৪৭  
 ১২৪৮ ভা. ৪৮  
 ১২৪৯ ভা. ৪৯  
 ১২৫০ ভা. ৫০  
 ১২৫১ ভা. ৫১  
 ১২৫২ ভা. ৫২  
 ১২৫৩ ভা. ৫৩  
 ১২৫৪ ভা. ৫৪  
 ১২৫৫ ভা. ৫৫  
 ১২৫৬ ভা. ৫৬  
 ১২৫৭ ভা. ৫৭  
 ১২৫৮ ভা. ৫৮  
 ১২৫৯ ভা. ৫৯  
 ১২৬০ ভা. ৬০  
 ১২৬১ ভা. ৬১  
 ১২৬২ ভা. ৬২  
 ১২৬৩ ভা. ৬৩  
 ১২৬৪ ভা. ৬৪  
 ১২৬৫ ভা. ৬৫  
 ১২৬৬ ভা. ৬৬  
 ১২৬৭ ভা. ৬৭  
 ১২৬৮ ভা. ৬৮  
 ১২৬৯ ভা. ৬৯  
 ১২৭০ ভা. ৭০  
 ১২৭১ ভা. ৭১  
 ১২৭২ ভা. ৭২  
 ১২৭৩ ভা. ৭৩  
 ১২৭৪ ভা. ৭৪  
 ১২৭৫ ভা. ৭৫  
 ১২৭৬ ভা. ৭৬  
 ১২৭৭ ভা. ৭৭  
 ১২৭৮ ভা. ৭৮  
 ১২৭৯ ভা. ৭৯  
 ১২৮০ ভা. ৮০  
 ১২৮১ ভা. ৮১  
 ১২৮২ ভা. ৮২  
 ১২৮৩ ভা. ৮৩  
 ১২৮৪ ভা. ৮৪  
 ১২৮৫ ভা. ৮৫  
 ১২৮৬ ভা. ৮৬  
 ১২৮৭ ভা. ৮৭  
 ১২৮৮ ভা. ৮৮  
 ১২৮৯ ভা. ৮৯  
 ১২৯০ ভা. ৯০  
 ১২৯১ ভা. ৯১  
 ১২৯২ ভা. ৯২  
 ১২৯৩ ভা. ৯৩  
 ১২৯৪ ভা. ৯৪  
 ১২৯৫ ভা. ৯৫  
 ১২৯৬ ভা. ৯৬  
 ১২৯৭ ভা. ৯৭  
 ১২৯৮ ভা. ৯৮  
 ১২৯৯ ভা. ৯৯  
 ১৩০০ ভা. ১০০

# সোমপ্রকাশ

“ প্রবর্তনা প্রকৃতিহিন্দাধ ধাৰ্হিবঃ স্বরস্বতা স্তমিমহনী ন স্বীযতা ।

৫ ভাগ ।  
৪ সংখ্যা ।

সন ১২৬২ । ২৪ অগ্রহায়ণ । ইং ১৮৬২ । ৭ ডিসেম্বর

মাসিক মূল্য ১ টা  
বার্ষিক মূল্য ১০ টা

## বিজ্ঞাপন ।

### গ্রাহকগণের প্রতি ।

গ্রাহকগণকে জানান বাইতেছে দার্শনিক  
ব'স অতীত হওয়াতে অনেকের প্রদত্ত সো  
মপ্রকাশের মূল্য নিম্নলিখিত হইয়াছে, অগ্রহা  
য়ণ মাস অতীত হইলে ও অনেকের মূল্য শেষ  
হইবে, তাহা এই তাঁহারা দ্রুত করিয়া মূল্য পা  
ঠাইয়া দেন । উক্ত মূল্য কলিকাতা  
কারখানা স্ট্রীট নং ১০২ ইয়াতে পাঠাই  
ব ।

— — —

## বিজ্ঞাপন ।

আমি কাব্য নির্ণয় নামে একখানি অল  
কার গ্রন্থ বাজলা তাহার প্রথম পুস্তক মুদ্রি  
ত ও প্রচারিত করিয়াছি । মূল্য ১ টাকা ।  
কলিকাতা মূল্যপূর্ণ বিস্তারিত বহু অথবা  
সংস্কৃত কালেজে প্রযুক্ত গিরীশচন্দ্র বিদ্যা  
রত্ন মহাশয়ের নিকটে অগ্রসংগ্রহ করিলে পা  
ইবেন ।

জিলালমোহন ডাটাচার্জ ।

## বিজ্ঞাপন ।

এই বজাঙ্গনে নিম্নলিখিত পুস্তক ওলি বি  
ক্রয় স্থাপিত আছে ।  
কোমল বসুকাব্য ১ম ভাগ মূল্য ১০  
২য় ভাগ ২  
কলিকাতা মূল্যপূর্ণ বিস্তারিত বহু অথবা  
সংস্কৃত কালেজে প্রযুক্ত গিরীশচন্দ্র বিদ্যা  
রত্ন মহাশয়ের নিকটে অগ্রসংগ্রহ করিলে পা  
ইবেন ।

একেই কি বলা সভ্যতা ? ২য় বার মুদ্রিত ৥  
শক্তি নানেকের ইংরাজী অর্থবাচ  
নীতাহরণ  
বাসনাবৃত্তা  
সাহিত্য বৃত্তাবলী  
খুগোল বৃত্ত  
আফিকার মানচিত্র  
লক্ষ্য ০ ৮  
মূল্য ০ ৮

মোলোকের উপযোগিতা  
ইন্দ্রমণ্ডাকের আইন  
ট্যানহোপ বজালর

নং ১৮২ বহুবাচার রোড  
জিলালমোহন ডাটাচার্জ

২৭ — — —

## বিজ্ঞাপন ।

আমার প্রদত্ত ভারতবর্ষের ইতিহাস  
গ্রন্থ প্রয়োজন হইবে, আমার নিকট মূল্য  
(মশ আনা মাত্র) পাঠাইলে অথবা হুগলি  
প্রেনে অগ্রসংগ্রহ করিলে পাঠাতে পারিবেন ।  
জিলালমোহন ডাটাচার্জ ।

## সোমপ্রকাশ ।

২৪ অগ্রহায়ণ সোমবার ।

সর চার্লস উড ও জিওরিকারিদল ।

পার্লিগ্রামেন্ট সতর আগাম যেমন  
ভারতবর্ষের রাজকাব্য সম্বন্ধে একটি  
মহাশক্তি হইবেক যোষণা এই অল  
কি রণবজা করিতেছেন । বিজ্ঞাপন  
আহুত ও নিকট হইতেছেন । এক  
কর যোষণা ভারতবর্ষের কেউ কেউ  
সর চার্লস উড ও জিওরিকারিদল

জিওরিকারিদল । সর চার্লস  
কাব্য প্রণালী যুদ্ধের লক্ষ্য  
মল এই কাব্য প্রণালীর  
যাহেন । রণস্থলে যে পক্ষ  
পক্ষেই অল লাভ । বীর  
বাঁকিবে, তিনিই জিত  
মার্কেন্টের অল  
করিয়াছেন  
হুগলে বিরোধি পক্ষের  
দে ! নিজে বলাবলি  
অল লাভ লিখিত করি  
সর চার্লস উডের অল  
গন্ধে নাই ।

বাঁহারা ভারতবর্ষের  
অল করিয়া কেউ কেউ  
কল দোষ বিবেচনা করি  
হাকে পরিচাল্য করিয়া  
পক্ষে পক্ষপাতী করি  
একত অলগণকে  
কলগণ সাধন  
বাঁহারা ভারতবর্ষের  
কলগণ সাধন  
বাঁহারা ভারতবর্ষের  
কলগণ সাধন



নিম্নে করিরাছেন এবং লেডি  
বাক্সে কিয়দংশ উদ্ধৃত  
লাভে দেখাইয়াছেন । এখন  
কোন ক অবলম্বন করিবেন  
কলস উত্তরে কার্য প্রণালী প্রতি  
এই আরা । তাঁহার কার্যের প্রতি  
তার ভার বর্ণনাদিগের স্বার্থ পরি  
রিত্য ইচ্ছিকারিদলের স্বার্থ স  
মানুরোধ, এ ছুইই এক কথা । অত  
বল উত্তরে বিপক্ষতা করিতে  
রাজ্যের বিপক্ষতা করা হইবে ।  
ইচ্ছিকারিদলের সপক্ষতা না  
খণ্ডিগালি খাইতে হইবে । তাঁ  
বেন, এদেশীয়েরা আজিও  
পাতিলাত করিতে পারেন  
ইহাদিগের কর্তব্যাকর্তব্য  
আজিও অকৃতজ্ঞতা ইহাদি  
ইতে দূরীভূত হয় নাই, ইহা  
২৪৬৭ । তাঁর প্রসাদে মানুষের মত  
হন, তাহার ই বিপক্ষতাচরণ করি  
। যাহা হউক, বাবুরা এই গালির  
পর চারলস উত্তরে বিপক্ষতাচরণ  
। স্বজন্ম ভূমির অনিষ্ট সাধনে প্রবৃত্ত  
ন, ইহা কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে ।  
কহ কহ বলেন, এখন যেমন ছোট  
ফটারির তার তবর্ষের কার্যে সর্বক্ষ  
তা আছে, এরূপ না থাকিয়া যদি ই  
অপত্তা হব তারতবর্ষের সবিশেষ  
ল হইতে পারে । সেও সাহেব সেই  
ব কল্যাণ লাভের প্রমাণ হলে লাই  
স ও ইনকমটাক্সের কিয়দংশ পরিত্যা  
ক উদ্বাহরণ স্বরূপ নির্দেশ করিয়াছে  
তারতবর্ষের গবর্ণমেন্টের যত স্বাধীনতা  
ততই তারতবর্ষীয়দিগের কল্যাণ  
ভের সম্ভাবনা, আমরা বহুবার একথা  
কার করিয়াছি । কিন্তু এহলে আমাদি  
ব একটি বক্তব্য আছে, যেখানে জীৱকি  
রিদলের সহিত এদেশীয়দিগের স্বার্থ  
ক দূপ হইবে, সেই প্রকারই সেই কল্যাণ

লাভ হইতে পারিবে । কিন্তু পরস্পরের স্বার্থ  
ভেদ হলে ইহা না হইবে । ইচ্ছিকারিদলের  
সম্পূর্ণ সম্ভাবনা । ইচ্ছিকারিদলের  
কারিদলের মতই ক গবর্ণমেন্টের  
নিকটে সমবিব । সেটু মহ  
প্রচাবের প্রবল যত্ন । সে যত্ন  
ইংরাজী সমাচার পত্র । রাজ্য পুরুষদিগের  
অনেকে এদেশীয়দিগের মতে অস্বা  
করেন না । অনেকের একপ সম্ভাবনাও  
আছে যে এদেশীয়দিগের একটা সাধারণ  
মত নাই ( এটি সামান্য মূর্খতার কথা নহে,  
আমরা দেখিতে পাইতেছি এই সাধারণ  
মতের উপরে সমাজের অনেক গুণাগুণ  
নির্ভর করিতেছে ) তাহাও জীৱকি কা  
দলের মতানুসারে চলিবেন সন্দেহ  
নাই । তাহা হইলে এদেশীয়দিগের ইচ্ছ  
কৃত ও স্বাধ সিদ্ধির সম্ভাবনা কি :  
যে মত যখন প্রবল হয়, তখন  
তার কার্য হইয়া থাকে, ইহা চিরপ্রসিদ্ধ  
আছে । ইংলণ্ডে অধীশ্বর সপ্তম হেনরি  
র সময়ে এমসন ও ডডলি নামে দুই  
জন কর্মচারী রাজানুমোদিত হইয়া একা  
পীড়ন করিয়া অর্থ সংগ্রহ করে । একা  
রা তাহাদিগের উপরে খড়্গহস্ত ছিল,  
অর্ন্তম হেনরির রাজত্ব হইলে তাহাদিগের  
দণ্ডবিধান চেষ্টা হয় । কিন্তু পীড়নকারী  
বলিয়া তাহাদিগের নামে অভিযোগ করি  
য়া তাহাদিগের কৃত্যের লাভের সম্ভাবনা না  
থাকাতো এই বলিয়া কল্পিত অভিযোগ  
করা হইল যে তাহারা সপ্তমহেনরির হত্যার  
পর অর্ন্তম হেনরির আশংসহার করিয়া  
স্বহস্তে রাজ্যভার গ্রহণ করিবার চেষ্টা পাই  
য়াছিল । এই অভিযোগের বিচার হইয়া  
তাহাদিগের দণ্ড হয় । জুরিরাও তাহাদি  
গের দণ্ড হওয়া সকলের অতিমত দেখিয়া  
ঐ কল্পিত দোষে তাহাদিগকে অপরাধী  
করিয়াছিলেন । আজিও তারতবর্ষে যে  
ইউরোপীয় অপরাধীর যথাবিধি দণ্ড হয়  
না, তাহাও কারণ এই । ইউরোপীয়ের

পাছে অসম্মত হন, গবর্ণমেন্ট এই ভয়  
করেন । অতএব যাবৎ এদেশীয়দিগের  
মত ইউরোপীয়দিগের তুল্য ভাবে আ  
দৃত না হইতেছে, তাবৎ ছোট সেক্রেট  
রির ক্ষমতার প্রাস করিবার চেষ্টা ভয়  
স্বায়ক নহে ।

অতঃ পর কালেও বি এ উপাধি  
লাভের পরীক্ষা গ্রহণ রীতি  
প্রবর্তিত করা উচিত ।

সম্প্রতি ১৮৬১ । ৬১ অক্টোবর এডুকে  
শন রিপোর্ট প্রচারিত হইয়াছে । পাঠক  
গণ ইহার স্থূল মর্ম প্রস্তাবান্তরে সন্দেহ  
করবেন । ইহা আটকিন্সন সাহেবের দ্বি  
তীয় বর্ষের কার্যের বিবরণ । এই দুই বর্ষ  
সরের মধ্যে আমবাংলার নিকটে অনেক  
কবিধ ইষ্ট কল লাভের প্রত্যাশা করিয়া  
ছিলাম । কিন্তু অনেক বিষয়ে পূর্ণমনো  
রূপ হইতে পারি নাই । তবে তাঁহার বি  
ষয়ে এককালে হতাশ হওয়াও হয় নাই  
বোধ হয়, তিনি দীর্ঘকাল আর আমাদিগ  
কে ক্ষোভ প্রকাশের অবসর প্রদান করি  
বেন না । অন্য আমরা এই এসঙ্গে তাঁহা  
কে দুই একটি নংপরামর্শ দানে প্রবৃত্ত  
হইলাম ।

বঙ্গদেশে যত বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত  
হউক, যে পর্যন্ত এতদেশীয় বিদ্যার্থিগ  
ণের মনে বিজ্ঞান, নীতি, ধর্মনীতি, পদা  
বিদ্যা ও বাস্তবজ্ঞান প্রভৃতি দৃঢ়তরূপে  
বদ্ধমূল না হইবে, সে পর্যন্ত একটু কল্যা  
ণ লাভ সম্ভাবনা নাই । সামান্য লেখ  
পড়া লিখিয়া বিশেষ ইষ্ট লাভ সম্ভাবি  
নহে, বরং তাহা অনিষ্টেরই হেতু হয়  
এক জন সংকৃত কবি লিখিয়াছেন—

অজঃ সুখসারাদিঃ  
সুখতরঙ্গসারাদিঃ বিশেষজ্ঞা ।  
জাননবহুর্জিনমঃ  
অজাণি মরং মরুতমতি ।

কর্মকে অনায়াসে সম্বর্ত্ত করা যায়  
নিজের বাস্তব জ্ঞান সাধন অত

সহ্য কর; কিন্তু যে ব্যক্তি যৎকিঞ্চিৎ জানে, তাহাও তাহার মনোরঞ্জন করিতে পারেন না।

পোপও এক স্থানে এই ভাবে লিখি-  
রাছেন:

অপজ্ঞান অনর্থের কারণ, পেয়িরি-  
য়ান নির্ভর জল পয়ান্ত পরিমাণে পান না  
করিলে উদ্ধার করে।

কলত: অপজ্ঞা বস্তুরাই ভারতবর্ষের  
উন্নতি লাভের প্রধান অন্তরায় হইয়াছে।  
ভারতবর্ষবাসী অধিকাংশ লোকের অপ-  
জ্ঞতা নিবন্ধ যে অনিষ্ট ঘটিতেছে, আম-  
রা অণু অণু তাহা অনুভব করিতেছি। তবে  
অপজ্ঞা হইতে এতদিন গবর্ণমেন্টের কিছু  
উপকার লাভ হইল বটে। কেরানীমিরি  
প্রভৃতি কয়েকটি কর্ম অন্যরূপে চলিয়া  
যাইতেছিল। কিন্তু এক্ষণে যুক্তায়ত্তের  
সম্মতিক্রমে প্রাচুর্য হওয়াতে সে উপকা-  
র ক্রমে হ্রাস হইয়া আসিতেছে।

একণে বিবেচনা করা কর্তব্য এ দে-  
শে বিজ্ঞান শাস্ত্রাদির সমধিক প্রাচুর্য  
হইবার উপায় কি? প্রথমত: এতদেশীয়-  
দিগের যত্ন, অর্থ সাহায্য দান, এবং গবর্ণ-  
মেন্টের আনুকূল্য। তাঁহারা বঙ্গদেশ-  
শকে উত্তমরূপে জানেন, তাঁহারা অন্য-  
রূপে বুঝিতে পারিবেন, এদেশীয়েরা  
আজিও এতাদৃশ ক্ষমতাপন্ন হন নাই যে  
এবস্থিৎ বৃহৎ কার্যে হস্তার্পণ করিয়া স-  
ম্পূর্ণরূপে কৃতকার্য হইয়া উঠেন। গত ৩০  
বৎসরের মধ্যে অনেক বিপদ ঘটিয়া হইয়াছে,  
একথা আমরা অস্বীকার করি না। গবর্ণ-  
মেন্ট অনেককে সুশিক্ষিত করিয়াছেন;  
অনেকে গবর্ণমেন্টের অঙ্গাঙ্গি বিজ্ঞানাদি  
শাস্ত্র সম্বন্ধে ব্যুৎপন্ন হইয়াছেন। তার  
তবর্ষকে অজানাতার হইতে উদ্ধার করি-  
বার অনেকের ইচ্ছা ও চেষ্টা জন্মিয়াছে।  
অনেকে সেই চেষ্টানুসরণ কার্যও আরম্ভ  
করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহাদিগের সাহায্য  
যুক্তা সম্বন্ধে উপকার হইবার সম্ভাবনা

আছে, সেই চেষ্টাকারিদিগের মধ্যে  
জ্ঞানধনী লোকের সংখ্যা অতি অল্প।  
ইকানীকুম ধর্মদিগের অনেক বিদ্যা-  
লয় প্রতিষ্ঠাকে একটি আসবারের মধ্যে  
বোধ করেন। কলত: এ দেশীয়েরা আ-  
জিও বহুদায়্যাসমাধ্য বিজ্ঞান শাস্ত্রা-  
দির অনুশীলনার্থ বিদ্যালয়াদি প্রতিষ্ঠায়  
সমর্থ হন নাই। গবর্ণমেন্ট প্রতিষ্ঠিত তা-  
দৃশ বিদ্যালয়ের সংখ্যাও অধিক নহে।  
যে ছুই একটি প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, অপ-  
কাল মধ্যে তাহাতে আশাধিক কলত:ও  
হইয়াছে। এই সময়ে আনাদিগের বিজ-  
তম ইয়ত্ত সাহেবের কথা স্মৃতিপথে উদ্ভি-  
ত হইল। ইয়ত্ত সাহেব তিন বৎসর পূর্বে  
স.উ. কলিকাতা ট্রিষ্টে বসিয়া লিখিয়াছি-  
লেন, গবর্ণমেন্ট যদি এক্ষণে শিক্ষা দান কা-  
র্যে পরাধীন হন, ক্ষতি হইবে না, বাঙ্গা-  
লিয়া এক্ষণে বিদ্যার রসজ্ঞ হইয়াছেন  
এবং তাহার কলোপধারিতা বুঝিতে পারি-  
য়াছেন, তাহারা এক্ষণে অন্য সাহায্য নির-  
পেক্ষ হইয়া স্বয়ং শিক্ষাকার্যে সীক্ষিত  
হইতে পারিবেন। বোধ হয়, ইয়ত্ত সাহেব  
ক্রমেও কখন চৌরবিরুদ্বীয়া অতিক্রম  
করিয়া সীমালঙ্ঘন দোষে দূষিত হন নাই  
এ দেশে বিজ্ঞানাদি শাস্ত্রের সমধিক অনু-  
শীলন না হওয়াতে এ দেশের কত অনি-  
ষ্ট ও গবর্ণমেন্টের কত ক্ষতি হইতেছে,  
তাঁহারা মকমল পরীক্ষা করিয়া দেখিয়া-  
ছেন, তাঁহারা বুঝিতে পারিয়াছেন।  
আমরা বাহ্যিকরূপে যে যে বিষয়ের শিক্ষা  
দান প্রস্তাব করিতেছি, কলিকাতা প্রেসিডে-  
ন্সি কলেজ কেবল এক উদ্যোগমণী আছে।  
গবর্ণমেন্টের অর্থের অসঙ্গতি নিবন্ধন হ-  
উক, অথবা শিক্ষাকার্যের কর্মচারিদি-  
গের অমবধানতা বশত হউক, অথবা যে ক-  
য়েকটি মকমল বিদ্যালয় প্রেসিডেন্সি কা-  
লেজের সমকক্ষতা লাভার্থ উদ্যোগ হইয়া  
ছিল, তাহাদিগের উদ্যোগ বন্ধ করা  
হইয়াছে। পোপের রসায়ন-বিদ্যার সুবি-  
ধ

প্রভে সেইগুলি পুনরুৎপাদিত  
ত হয়, এই শঙ্কা তাঁহা নাহলে  
বৎসরটো তাহার দুটো এক মাস  
অ.বা. করিয়া থাকে না। তাহা  
বার স্থান নাই, মকমলে কালোজ্ঞ  
একটা প্রেসিডেন্সি কলেজ  
হিস্তাকালেজকে সর্বা  
উত্তমরূপে করিয়াছিল,  
অগ্রবর্তি হওন

কিরা সাও। পাটকরণ :  
করিয়া ১৮৫৪ অব্দ পর্যন্ত  
কলকাতা ও হুগলী কলেজ  
হা ছিল, একবার মর্শম  
১৮৫০ অব্দে ৯ জন প্রথম  
পান, তদ্বধ্যে ঢাকার ৪ জন  
২ জন, হুগলীর এক জন  
২ জন। ১৮৫১ অব্দে  
ঢাকার ২ জন, হুগলীর ২ জন  
৪ জন এবং হিস্ত কলেজ  
হুজি পাইয়াছিলেন ১৮  
মধ্যে ঢাকার ২ জন, হুগলীর  
হুগলীর ৪ জন এবং হিস্ত  
জন পরীক্ষাতে হুগলীর  
১৮৫৩। ৫৪ অব্দে ১ জন, হুগলীর  
৪ জন, এবং কলিকাতার ১ জন  
১৪ জন হুজি হুজি হুজি

১২ এক্ষণে তাহা হইতেছে  
বলের কালেজ কলিকাতা  
কালেজের শিক্ষার্থী ছিলেন। তবে এই  
বিদ্যালয় এক্ষণে বন্ধ হইয়াছে।  
কেন? গবর্ণমেন্টের অর্থের  
ইহার কারণ নহে? গবর্ণমেন্ট যেন  
এই অর্থের অসঙ্গতি জল কারণ  
করিয়াছিলেন, এখন সে পথও  
হইয়াছে।

১৮৬০। ৬১ অব্দে এই বঙ্গদেশে  
গবর্ণমেন্টের ১৩ কোটি টাকা  
উদ্যোগ শিক্ষা কার্যে কেবল ৪ লক্ষ  
ব্যয়িত হইয়াছে। হিস্ত করিয়া দেখিলে



## সোমপ্রকাশ :

ব্যক্তিতে) দশ আনা পড়ি  
না। ইংলণ্ডেরা কেবল এত যে সভ্য,  
সেখানেও মেটেকে প্রতি ছাত্রে  
১৮০ দিতে। বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্ট  
নিয়মবিধয়ে কৃপণতা করিতেছেন  
আমর ভেতে পারিতেছি না।  
ইসে গবর্ণমেন্ট কি তা  
ন করেন না? এক্ষণে  
দু বিদ্যালয় হইয়াছে।

যায়ে রিয়া অনেক ছাত্র প্রবে  
হইতেছে কিন্তু তাহাদিগের  
কতজন মাত্র সার হইতেছে।  
কয়েক কালেজে অধ্যয়ন ক  
রিয়। কলিকাতার অবস্থিতি  
হইতে বার্ষিক ব্যয় নির্বাহ  
ভালি কালেজে অধ্যয়ন  
কালেজে সহজ নহে। যদি  
কালেজ থাকিত, তাহা  
ই সকল কালেজে  
নইত। তাহা হইলে  
নিরোধ এই, তাহে চাকর  
বহরমপুর সড়তি স্থানে বি এ উপা  
র পীকা দানপ্রথা প্রবর্তিত হয়, তাই  
রই রসাহেব তদ্বিষয়ে বদ্ববান হন।  
আদিগের বক্তব্য শেষ রহিল, আ  
ধারে আমরা পুনরায় এবিধে হস্তক্ষেপ  
করিব।

গের ন্যায় অল্পম ফীশবল ও শীনসাহস  
হইতেন সন্দেহ নাই।

কাপুরুষেরা যেকোন উপরে নির্ভর  
করিয়া থাকেন, সেইরূপ আমরা কেবল এক  
দেশের দোষকে কারণ রূপে নির্ণয় করিয়া  
নিশ্চিত না হইয়া যদি অন্য অন্য কারণের  
অন্বেষণে প্রবৃত্ত হই, বালা বিবাহ, অসার  
দ্রব্য ত্যাগ, সুলভ জীবিকা, শ্রমের অন  
ত্যাগ প্রভৃতি অনেকগুলি কারণ আমাদি  
গের বুদ্ধিপথে আবির্ভূত হইতে সন্দেহ  
নাই। অন্য বাল্যবিবাহাদির ওসক বরা  
আমাদিগের অতিশ্রুত নহে, শ্রমের অন  
ত্যাগ, প্রবলের অত্যাচার, পরাধীনতা,  
ও যে সে সময়ে প্রচলিত পরাধীনতা এই  
কারণাদিগের দ্বারা হইয়াছে অতিশ্রুত।  
শারীরিক পরিশ্রম অত্যাগ  
শরীরিক পরিশ্রম হইয়া কখন বল,  
ও তাহা হইতে হয় না, কিন্তু বঙ্গ  
দেশের দুঃখীরা তাহা ব্যবহার দোষে সেট  
শারীরিক শ্রমের মহান উপস্থিত হইয়া  
ছে। পূর্বে মনু প্রভৃতি প্রাচীন রাজগণের  
অধিকার কালে তাহাদিগের বর্ণ বিভাগ  
প্রথা প্রবর্তিত হয়, তাহা বর্ণের সৌক  
র্য্যই সেই বিভাগের উদ্দেশ্য। তৎকালে  
বর্ণের ব্যবসায় ও কার্য  
আপন আপন ব্যব  
সকল বর্ণকেই বাল্য  
করিতে হইত। অমাত্য  
সের রীতি ছিল বটে, কিন্তু স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র  
বর্ণের স্বতন্ত্র ব্যবসায় নিকপিত থাকিতে  
শারীরিক বল বীর্য়াদি বিধে স্বতন্ত্র ই  
তর বিশেষ দৃষ্ট হইত। অন্য কোন বর্ণই  
তদ্বিধে কত্রির বর্ণের তুল্য ছিল না।  
কত্রিরেরা শৈশবাবধি অস্ত্র ও ব্যায়ামাদি  
শিক্ষায় কালক্ষেপ করিত, সুতরাং অন্য  
যাবতীয় বর্ণের অপেক্ষা তাহাদিগের বল,  
বীর্য়, উৎসাহ ও সাহসাদি গুণের উৎক  
র্ষ লাভ হইত।

একদম কর্তব্যই হিন্দু জাতির ব্যবসা

রানি বিভাগ, বিগ্রহ প্রভৃ হইয়াছে। কিন্তু  
ভারতবর্ষের অন্য কোন অংশ বাঙ্গালার  
শের ন্যায় অসৌভাগ্যবান নহে। অন্য  
অংশের হিন্দুদিগের ব্যবসায় বিচার নাই  
উত্তর পশ্চিম অঞ্চলে গণন কর, এই বি  
গ্রহ স্পষ্ট নথনগোচর হইবে। যজ্ঞ, য  
জ্ঞন, অধ্যয়ন, অধাপন, দান, ও প্রভি  
এই এই ছয়টি যে ব্রাহ্মণ জাতির কর্তব্য  
বর্ধ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছিল, এক  
সেই জাতি স্বহস্তে লাভল ধরিয়া ক্ষে  
কর্ষণ করিতেছে; দৌবারিকতা প্রভৃ  
অতি নিকট কর্তব্য ও তাহাদিগের অনানু  
ও অনবলম্বিত নহে। তাহারা কর্তব্য বহন  
দি করিয়া থাকে, তাহাদিগের আপন  
হইতেই অমাত্য হইয়া উঠে। এই সকল  
দেশে এমন একটা রীতি হইয়া উঠিয়াছে  
যাহারা অন্ন সাধ্য কার্যে ব্যায়াম্য  
হয়, তাহারাও শারীরিক বল বীর্য়াদি  
অর্জন ও বর্দ্ধন চেষ্টার পরাধীন হই  
হিন্দুস্থানীয় ভাববানেরাই ইহার প্রমা  
দল।

বঙ্গদেশে ইহার সম্পূর্ণ বৈপরীত্য  
দ্রষ্ট হইতেছে। এদেশের কোন জেণীর  
প্রায় প্রকৃত রূপ অমাত্য নাই। এদেশ  
শের উচ্চ জেণীর লোক ব্রাহ্মণ ও কাষ  
যাহাতে শারীরিক বল বীর্য়াদির বৃদ্ধি হয়  
তাহাদিগের তাদৃশ অন্ন সন্সর্ক নাই  
অত্যন্ত ব্রাহ্মণ জাতির জীবিকা যেক  
সুলভ, তাহাদিগের যদা কদাচিত  
অলচালনা হয়, তাহাই অস্বস্ত। এই জ  
তিকে স্বজীবিকার আকরণার্থ প্রয়াস  
হইতে হয় না। অন্য অন্য জেণীর উপরে  
ইহাদিগের জীবিকা অর্জনের ভার। অন্য  
অন্য জেণী ইহাদিগকে পৌরোহিত্য কা  
বরণ করিয়াছেন। ইহারা তাহাদিগের  
পরলোকপ্রয়োজন সাধন করিয়া দেন  
তাহারাও তদ্বিনিময়ে ইহাদিগের ঐহিক  
প্রয়োজন সাধন করেন। পরস্পরের  
নিঃস্বার্থ স্বার্থসাধকতা তাহ হইয়াছে,

অন্য দেশের জীবন যে কেহ কোন কাজ করিয়া থাকেন তাহাকে অবশ্যই কিঞ্চিৎ জ্ঞান লাভ করিতে হইবে। উন্নত মূল্যের জীবিকা সম্বন্ধে ইচ্ছা ... সমাধা কার্যে হস্তক্ষেপের সম্ভাবনা কি? বঙ্গদেশের জ্ঞান বরং অসামান্যে প্রাণ জাগ করিবেন, তথাপি বহুত্ব হল চালন করিবেন না। কেহ জ্ঞানপ্রের হল চালন প্রসঙ্গ করিলে তাহার। সহস্র মুখ হইয়া শাস্ত্রজ্ঞতার পরিচয় দানে উৎসুক হন, কিন্তু তাহানিগের অনুজ্ঞিত শাস্ত্রনিষিদ্ধ অন্যবিধ ব্যবহার বিষয় প্রসঙ্গ হইলে মুক হইয়া থাকেন।

ইংরাজ সংসর্গ ও ইংরাজী বিদগ্ধ প্রভাব বলে দিন দিন হিন্দুধর্মে লোকের অসাহা, জ্ঞানহীনতার সংখ্যা ও তাহানিগের বিলাসিতার বৃদ্ধি হওয়াতে জ্ঞানপ্রভাব শাস্ত্রজ্ঞানবিহীন আর একটা যে মূল্য জীবিকা অবলম্বন করিয়াছেন, তাহাতেও বলবীর্ষ্যকর জন্মের নাম পঙ্ক নাই। সে জীবিকা চাকরী। তাহাতে দিন দিন বল বীর্ষ্যের ক্ষয় সম্ভাবনা বিনা বৃদ্ধি সম্ভাবনা নাই। কাম্বুজনিগেরও চাকরী উপজীব্য। তাহারাও বলবীর্ষ্যকর জন্ম সাধ্য কার্যে হস্তক্ষেপ করেন না।

অন্য অন্য জাতীয় শাস্ত্রিক জন্ম অভ্যাস আছে বটে, কিন্তু বঙ্গদেশের ভূমি সর্বত্র বলিয়া জীবিকা মূল্য হওয়াতে তাহাও যথোচিত নহে। বঙ্গদেশীয় কুবকনিগের বিষয় পর্যালোচনা করিলেই আমাদের বক্তব্য পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম হইবে। প্রথমতঃ একেশ্বরীয় ঈশ্বরিকার্যোপযোগী হল প্রভৃতি দ্রব্য দ্রাক অতি সামান্য ও নিকট লম্বুভার। তাহার পরিচালনাও আমের তামূল আবশ্যকতা হয় না। ভূমি অল্প প্রভৃতিই পদা গুণ লস্য প্রদান করে। যখন একপ মুখিয়া করিয়াছে, তখন কুবকেরা আলসাপন্ন না হইবে, কেন? অলসের অস্তিত্ব পরীক্ষিতারি পৌনিকের পদমা

নয়ম পথ বিস্তৃত থাকে না। মঙ্গল্য ব্যক্তির অধিক পরিমাণে দ্রব্য ভোজন সম্ভাবিত নয়। যাহার আভাব অল্প, সে জ্ঞানবীর্ষ্য না হইবে কেন? অল্পবীর্ষ্যের সাহস অল্প হওয়াও অনৈসর্গিক ও অসম্ভব নহে। আমরা বিলক্ষণ পরীক্ষা করিয়া দেখিছি, এই বাঙ্গালদেশের যে যে স্থানের ভূমির কৃষি কার্য অসম্ভবতর জ্ঞানসাধ্য, সেই সেই স্থানের লোকেরা অপেক্ষাকৃত অধিক ভোজী ও অধিকবীর্ষ্য। এই বাঙ্গালদেশের পূর্ব ও পশ্চিম ভাগ দর্শন কর; পূর্ব ভাগের অপেক্ষা পশ্চিম ভাগের লোকের বহুবীর্ষ্যাদি বিষয়ে বিলক্ষণ প্রাধান্য লাভ করিয়াছে। তাহার অধিক গ্রাম কলে, অধিক আভাব কার, সুতরাং তাহানিগের বীর্ষ্য বগ ও সাহসানি সন্দেহে নহিল। জন্ম, আহার ও বল বীর্ষ্য, সাহসাদি পদ্যসংস্পর্শে। এম অধিক থাকিলে ক্রমে সারবান দ্রব্য ভোজনের প্রাণও প্রবর্তিত হইয়া উঠে।

উপরে বেকপ প্রদর্শিত হইল, তদ্বারা স্পষ্ট সূত্রমাণ হইতেছে, বঙ্গদেশের কুবকানিগের জীব গোবদিগের যথোচিত ... না থাকিতে বহু বীর্ষ্য সাহসাদি বিষয়ে মূল্যতা জন্মিয়াছে। এতদ্বিষয়, প্রবলের কৃত অপ্রাচীর সহিততা ও চিরপরাধী নতা প্রভৃতি আর কয়েকটা এই মূল্যতার কারণ আছে। কুবকানিগের চির পরাধীন হইয়া যাবতর এমল ব্যক্তিদিগের অত্যাচার সহ বরিতা আসিতেছে। সুতরাং তাহানিগের জীবন নত যে কিছু নৈসর্গিক সাহসাদি গুণ ছিল, তাহা উত্তর ও প্রাপ্ত না হইয়া ক্রমে বিলম্বিত হইয়াছে। যে যে সময়ে তাহানিগের সাহসাদি গুণ ক্রমে নষ্ট হইয়া য়, প্রবলেরা অমনি জ্ঞান কৌতুক প্রদর্শন, করেন। তৎফলস্বরূপ তাহা নির্বান হইয়া যায়। যেহেতু যদি কেহ একটা বৃক্ষ রোপণ করিয়া তাহার চতুর্দিকে জিহ্মি নির্মাণ ও উপরে ছাচ

করিয়া দিয়া তাহা করিয়া দেয়, সে হলেও কি আপনীর দ্বারা আত্ম দ্রব্যের হইবে?

পাঠকগণ আমরা পাঠ করিয়া একপ ম বঙ্গদেশের জলবায়ু একটা বলা আমাদের জ্ঞানসাধনের বক্তব্য জন্মশীল অধাবসায় প্রদর্শন হইয়া সেই রিগা দেশকে উত্তর রিবর চেটা পাঠ, কৃত নাই। আসসা পরিতাপ। সেই চেটা করাই কর্ভব্য।

৪১ —  
ভারতবর্ষের নিম্ন ও বা ...  
অপ কিং হাং মা ...  
মেসেজারিস টেলিগ্রাফ ...  
সী। জাহাজ কোম্পানির ...  
রক্ত দিবসে করাসী ব ...  
কাব্য কারক মনুর কোম্পানি ...  
দশ বৎসর পূর্বে ...  
বিজ্ঞা ছিল, এক্ষণে তাহার ...  
ধিক বৃদ্ধি হইয়াছে। ইউরোপ ...  
রিক, ভারতবর্ষ বিশেষতঃ ...  
সী বণিকেরা ইংরাজ বণিকের ...  
কোন কোন স্থলে ...  
রতেছেন। যে ...  
নিম্ন ...  
একদেব ...  
বিলাসক্রমের ...  
সমকক্ষ ...  
নহে। যে দেশে ...  
ক্রোশ ...  
লৌহ ...  
পরিশোধ ...  
স্থানি ...



মানি একে খাতি

। গাড়ি ও বাম্পীর

। ছিলেন । ১২৬২

এক কোম্পানি পয়সা

ধরণ করিয়া ইংলণ্ডীয়

কোম্পানির তুল্যকর

রিজম, শিপ, বাণি

। বিদ্যেবেই এম বুদ্ধ

অগ্রসর হইতেছেন

ফিলিপের রাজ্যের

করিয়া করাসী ইতিমধ্যে

। তাঁহার বর্তমান

। অবশ্যই জিত

। ক্ষতি ইহার মূল কারণ

নামাটিন ওভতি রূপ

। কোম্পানি করিতে সমর্থ হন

। কংগ্রেস দ্বারা সম্পাদিত

র কোল্ড ইহার উত্তর দান

। সম্রাট তৃতীয় সের্গেয়

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তখন তিনি বসিয়াছেন । এখন

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

। তিনিই ক্রান্তের এই অভ্যুত

উপরে নির্ভর করিতেছে । আমরা নিজে

। আমরা এমনিভাবে আশা করি

। প্রথমতঃ বসিতে পারিতেছি

। গের সার ছিল, তাই

। উত্তেজিত : কংগ্রেস

। বর্তমানের

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

বাংলার রেলওয়ে করেন নাই ।

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

। এই

[illegible]

ପ୍ରଥମ ପଦ୍ୟର ଅର୍ଥ 'କାହାଣୀର ଅନୁସାରେ'

[illegible]

শোভা পক, ৩টা ২ বা হইতেই একবারে  
বান খনখো, . . . . . করিয়। তাহা  
স্বদেশ আশ, আকর করিল। এখনকেই  
কোন উঠাউবা দিরাটহন, শুভরাং দায়া  
এখন স্ফটিকাদনা হইয়া পড়িয়াছে, কি  
দিকে কি হইবে কিছুই দ্বিগ্ন করিতে পারি  
হে না। শোভা ন বহিত হইল দেখিয়া তা  
হতাভন আগ দান বন্ধ করিয়াছে, এবং আ  
আশান পূর্ক প্রাণোন্ন নিমিত্ত লক্ষ্যসি  
না করিতেছে। এদিকে আশীষ জমীদার  
গের কর্মচারিগণ খাজানার জন্য কয়লা  
বহিয়াছে। শুনিগে জাহাঙ্গিরের পারিবার  
শও অসাতাবে চিত্ত কেনি কলবর, এতেন  
দীম হীন বলসীকা এখন কোন দিক  
করে। বিদেশবস্ত্র এবং ধান্যাদি লম্বা আ  
ল্য হইয়াছে সুতরাং শুধারা লাভ হওয়া  
রে খাজক রাজকর পোষায় কিনা, মনে  
পার, এদিকে আশুবাণিজ্যেরও সুবিধা  
হবে, তাহালাইন কবিরাও রক্ষা পাই  
একবারে হীলপের একবারে ভাবিয়া দেখেন  
জাহাঙ্গির কেমন লক্ষ্যে পারি রাহে।

[illegible]









THE UNIVERSITY OF CHICAGO

নীলীকণ্ঠ নামে একজন কবি ছিলেন। তিনি হুঁরি  
 বর। তাঁর দ্বারা লিখিত অনেক গল্পই চৌরের আত্ম-  
 জ্ঞান প্রদীপিত করিতে পারেন। সত্যপন্থিগণ বিবল  
 অনেক আত্মজ্ঞানকে বহিঃপ্রকাশ করিয়া উক্ত চৌর  
 হৃত হইয়া পুনর্নিবেশ লাভীত হইয়াছে। চৌরের  
 নাম আর কোনাও নাই, নিম্নে তাহার নিকটবর্তী  
 পাঠ্য লিখিত আছে। চৌর ভদ্রবংশীয় এবং কি  
 চরিত্র ইংরাজী ও অন্যান্য করিয়াছিল। পুনিব  
 কর্তৃক চৌরের খানতালানী চর, তাহাতে উ-  
 ক্ত হুরির কথা সত্যীত আরো অমায়িক বহু  
 হুরি নামক কবির হইয়াছে। মৃত্যুর মূ-  
 লীর বাহার হুরি মল একান্তি ও কলমেণের হুরি-  
 ত ইত্যাদিও উক্ত চৌরের নিকট পাঠ্য হওয়া  
 নাই। এ ব্যক্তি সামান্য চৌর নহে, কলিকাতা  
 তা হুরনীদার'ন ও রাণাখাটি একান্তি হানেও  
 হুরি করিয়াছে। চৌরের খানতালানীতে তা-  
 হার একখানি ক্ষুদ্র খানতালানি ব্যক্তি হইয়াছে,  
 এখানি নিম্নোক্তের মত, অর্থাৎ অত্যাধিক বহি।  
 স যেখানে যেখানে হুরি করিয়া যাহা বাহা হস্ত-  
 ত করিয়াছে, তাহাও সহিত তাহা উক্ত বহিতে  
 ইংরাজী ভাষায় লিখিত আছে। বহির লিখন  
 হুরি সকল বিবর কদম্বক করিয়াছে। পাঠকগণ  
 অনেক হুরির হস্তান্ত শুনিয়াছেন, কিন্তু এমন  
 একটি সুশিক্ষিত চৌরের কথা কখনও শুনিতে  
 পান নাই, অতএব পাঠকগণ! আলমাস্টিগের  
 কীতুচক বিনোদন নিমিত্ত আনয়। আরকানা-  
 বর নিম্নোক্তের আনয়ক আত্মজ্ঞান নিম্নে  
 লিখিত করিয়া।

[illegible][illegible]

যে-উ ২৭২০  
ইহাতে বোধ হয়, হারিকামাথ কুল হাড়ি-  
রাই চৌর্য্য হুতি আরম্ভ করিয়াছে, কিন্তু সূতীক  
বুদ্ধিবলে এতকাল বাঁচিয়া আসিয়াছে। আমর  
নিষ্করমস্তিতে পারি যদি বাঁশীরাম পালের  
বক্তকে চম্পার্পণ না করিত, এবং অত্যাচার  
না বাধু যদি প্রাণপণ চেষ্টা না করিতেন তাহা  
হইলে হারিকামাথ অবাধে এড়াইয়া বাইতে পা-  
রিত। হারিকামাথের বয়সক্রম এক্ষণে ২০ বৎসরের  
অধিক হইবে না, উহার সঙ্গী অমান্য প্রধান  
প্রধান চোরকেও কোমলসালী বারোনা মহা-  
শয় বিবিধ চেষ্টা করির ধরিয়ছেন। ঐ সকল  
চোরকে ধরিবার জন্য দারোগা-বাঘু যে সকল  
অকৌশল অবলম্বন করিয়াছিলেন, তাহা তিন-  
তিন আঘাত করিতে শতবার প্রয়োগ করি-  
লাম।

## ইউরোপীয় সমাচার ।

সকল এর। মবেদন। মাকিলন অ. এসব হইতে পাঠের নাই। তাঁহাকে সেমাপা তবু হইতে বহিষ্কৃত করিবার বিষয় লইয়া বড় এগালযোগ হইতেছে। পদবর্ণনেষ্ট বলপূর্ব্বক সেন। সংগ্রহ চেষ্টা। কবাক্তে নকলে প্রতিবন্ধকতা। কারিত্তেছে। ন। কিন্তু সেমাদ্ভার। ইহার নিবারণ করা হইতেছে। বারলিনগার এক কাস্তি বিজ্ঞান য টমার আশঙ্কা হইয়াছে। কুল, ইংলণ্ড, ও কলীয়া। গ্রীসের বিষয়ে সমাপ্ত করিবেন না। পণ কস্তি-  
রছেন। পল্লভ্যত রাজাও রাষ্ট্রী মিউনিটে উপ-  
স্থিত হইয়াছেন। বিনিমে এক বড়বাল্লর বিষয়  
একাশিত হইয়াছে। ১৭ জন স্কিকিংসক গাঙ্গি-  
বলভির শরীরের অবতার বিষয় বিবেচনা। করি-  
য়া তাঁহার আকোশা সাত দিশের করিয়াছেন।  
ইংলণ্ডের ব্যাকের বেংটের কাথকে হরি ৭ জাম

কর্তব্য। অতএব বৃদ্ধ হইয়াছে। সুতরাং  
 পরোক্ষ কুমারী সাতের উত্তীর্ণ হইয়াছে।  
 বলা পাত বাহির করিয়াছেন। কুমারী  
 নিকট প্রতিক্রিয়ায় প্রতিক্রিয়ায় (নিম্ন  
 'কর্মের প্রতিনিধি)। বসিয়াছেন।  
 সেনার জন্য সত্যত অধিক বার হইয়াছে।  
 এই আধেয়িক্যের বসিয়া দিবার হইয়াছে।  
 রক্তের হইয়াছে। তাহাতে এখন কাজ হইয়াছে।  
 রক্ত হইয়াছে। তাহাতে এখন কাজ হইয়াছে।  
 নারক দুর্গ জয় করিয়াছেন। সেখানেই  
 যে কন্যা সেখানেই ক্রিয়মান কোর্টে  
 হইয়াছে। অতএব দুই আশা করিত  
 যোজিত হইয়াছেন। সহ জেনার  
 মিত হইতে আশা করিত হইতেছেন।  
 দুকানির বারসিমে হইতেছেন।  
 টন দিতে দিতে হইয়াছেন।  
 রক্ত অতঃপর পাত পাইবেন।  
 মানক যে প্রীতিলোকের প্রাণের  
 রাখে কানী হইবে। অতঃপর  
 দণ্ড কিম্বা দিলের জন্য হুগিত হইয়াছে।

কোরিয়ার ডিউক, ল্যান্ড মরফ ও ল্যান্ড ড্রাই  
ম্যান উল্লেখ ও চিহ্ন পাইনি। বাকেরি  
বাকের অধিক ১২ লক্ষ টাকা তহবিল উহ  
নের অনুরোধে প্রত্ন হইয়াছেন।

নিউইয়র্কের দৈনিক লক্ষ্যবাহী বিজ্ঞানী ক  
ক আলবার্ট আইনস্টাইনের কার্যের প্রতি  
করিয়াছেন। এই লক্ষ্যবাহী উত্তর বিজ্ঞান  
অনেক লক্ষ্যবাহী নিউ ইয়র্ক হু এবং কলম্বিয়া  
বলেই ইয়র্ক কর্তৃপক্ষের অধীনস্থ বিজ্ঞানী  
জর্জ হুইটম্যান সাহসে করেন। লক্ষ্যবাহী ক  
সাক্ষর সেলুলোজ বার্লিনের অগ্রসর হইলে  
বিল্ডিং বিল্ডিং এক হুইট সেলুলোজ কোম্পানী  
সেই ফল ও ইয়র্ক টোনের বিল্ডিং কোম্পানী  
ফেলে।

ମନିଂ ପ୍ରକାଶକ ବଳେଇ, କମିଟିର ସଦସ୍ୟମାନ  
ମହାନୀ ସଦସ୍ୟମାନଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧାବାହୁସାଥେ ସ୍ବାଧୀନ  
କାର ପଦେ ବ୍ୟାପ୍ତ। ମୁକାବେ କରକା ହେଉଥିବ  
ହେଲେବୁଦ୍ଧର ମର ଚାହୁଣନ ହିରିନିରାମେଇ ନିଜ  
ମେ ଆହୁମୋଦନ କରିବାହୁଅନ।

সংসদ ১২ই অক্টোবর  
 শিল্পক কলেজ এবং ক্রোমো গ্রাম, পানবরী  
 লাকেনারের হুজিরার বিবরণ উল্লেখ করিয়া  
 কোত প্রকাশ করিয়াছেন এবং কহিয়াছেন তা  
 মেসারার হুজরীতে যেই হুজরী সন্নিবিষ্ট তাই  
 মণিও হেরাজক বসেন, ইত্যাদি ক্রোমোর এ  
 তাব সন্নিবিষ্ট করিয়া আসিয়াছেন হুজরী হুজরী  
 করিয়াছেন তা।

শেষ পর্যন্ত বিজ্ঞাপন।

১৩ই সেপ্টেম্বর—সাহাবাদের প্রতিমিহি জা.  
ই. সাক্ষীকৃত ও তেওঁটি কালেক্টর জে. এ. এ.  
কে. বি. ইউ. সাহেব কিছু দিনের জন্য সাহাবা-  
দিকাগের ভার পাইবেন।



১৫ই নবেম্বর—ডব্লিউ, জে. জামেন সাহেব  
১৮৬০ অব্দের ৩২ আইন অনুসারে কলিকাতার  
এক জন বিশেষ কমিশনার হইবেন।

ই. জে. সটল ওয়ার্থ সাহেব বাঁকুড়ার সাধা-  
রণ বিদ্যালয় কমিটির এক জন সভ্য হইবেন।  
মিঃ লিথিও হুঃ জুকেরা বকবেশীর বাবুদা-  
সক সভ্য ১৮৬২ অব্দের ৬ আইনের ১০৪  
বিধানে ক্রমতঃ পাইবেনঃ—

বাবু নবীনচন্দ্র ঘোষ। বাজ, ঢাকা।

বাবু রামকুমার পাল চৌধুরি। বাজিউপুর  
রসম সিংহ।

এডঃ মৌরী চিকিৎসক সাবদাশনাদ ও  
হিউটের দাতব্য চিকিৎসালয়ের ভার গ্রহণ  
হইবেন।

এডঃ মৌরী চিকিৎসক নীতল সিংহ নবগ্রা-  
ম দাতব্য চিকিৎসালয়ের ভার গ্রহণ হই-  
বেন।

১৫ই নবেম্বর—এচ. আর. মাদ্রাস সাহেব  
সদনীপুরের প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর  
হইবেন।

টি. ই. রেবেন্স সাহেব সাহরনের মাজিষ্ট্রেট  
ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন; কিন্তু  
কিছু দিন যেহেতু বিবরণ। আইসেন ততদিন  
কিছু পুলিস সীমার এজেন্সীর ভার গ্রহণ  
হইবেন।

এ. বি. ককন সাহেব ঢাকার প্রতিনিধি মাজি-  
ষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

টি. এ. হুগ্গি সাহেব চট্টগ্রামের সাধারণ  
বিদ্যালয় কমিটির সেক্রেটারি হইবেন।

আসামের মিলিটারি কর্মচারীরা ১৮৫৪  
অব্দের ১০ আইনের ১ ধারানুসারে ক্রমতঃ পা-  
ইবেন।

সহকারী কমিশনার  
লেপটিন্যান্ট ই. এ. কয়েল গোয়ালপাড়া।  
লেপটিন্যান্ট ডব্লিউ, সি. এম. ক্লার্ক নবগ্রা-  
ম। এ. এম. কিলিপম দুবং।  
জে. এগ্রিগি—শিবসাগর।  
এন. লাইস—দিবরুগড়।

অতিরিক্ত সহকারী কমিশনার বাবু গুণাতি  
বাবু বড়ুয়া গোয়ালপাড়া।

অতিরিক্ত সহকারী কমিশনার এচ. কোপ  
সাহেব শিবসাগর।

পিক্সপুলের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি  
কালেক্টর বাবু পুস্কুম সাহেব মৌজদার আই-  
নের ৩৮ ধারানুসারে সেলিমসে সম্পন্ন করিয়া  
হ মোকদমার প্রথম বিচার করিতে পাইবেন।

৭ই নবেম্বর—জে. পি. গ্রান্ট সাহেব লখনোর  
চৌকির প্রতিনিধি কলেক্টর হইয়া ১৮৬৮  
অব্দের ১৯ আইনের ৩৩ ধারানুসারে ক্রমতঃ  
পাইবেন। হোটেনাপুরের সহকারী কমিশনার  
লেপটিন্যান্ট আর. সি. মনি পালমাউ বিতা-  
গের ভারপাইয়া মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্রমতঃ  
পাইবেন।

লেপটিন্যান্ট ই. এ. কিলিপম হোটেনাপু-  
রের একজন সহকারী কমিশনার হইবেন।

### প্রেরিত

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয় সমীপে।

এত দিনের পর আমাদেয় গ্রামের উত্তরো-  
ত্তর শ্রীহরি ও উন্নতি সাধন হইবেক তাঁহার  
পূর্বলক্ষণ দর্শিত হইতেছে। বলা কিয়দিক গন্ত  
হইল আমি মহাশয়ের শ্রীকায় সিধিয়াছিলম  
যে এখানকার চৌকিদারেরা আর চৌকিতে  
আইসেন। কিন্তু পুলিস অর্গানাইজেশন  
টেওন্ট রোজ সাহেবের শুভাগমনাবধি এখা-  
নকার চৌকিদারেরা ও অন্যান্য পুলিস সংক্রান্ত  
কর্মচারীরা। খীর, খীর, কার্য সকল সুচারুরূপে  
সম্পন্ন করিতেছেন।

কিছু দিন গত হইল মাজিষ্ট্রেট হুগ সাহেব  
এখানে আসিয়াছিলেন, এবং আসিয়া এখান-  
কার দ'তব। ডম্পলরিব হুগবুয়া অবগত হ-  
ইয়া অতিশয় কোতঃ একজন পূর্বক তৎসম-  
সংক্রান্ত এক সভা করিয়া এবং আগমিতে ঐ সভার  
সভাপতি হইয়া বহুদূর নীচ তাকরখানার  
খবচ পত্র সুচারুরূপে চলে তাঁহার বিশেষ রূপ  
উপায় করিয়া গিয়াছেন।

এখানকার রাস্তা ঘাটের যেকি আওহাল,  
এবং বর্ষাকালে এপলী হইতে অন্য পলীতে  
গমনা গমন করিতে হইলে যেকি রেল ভোগ  
করিতে হয় তাহা মহাশয়কে আমি বর্ষাকালের  
প্রারম্ভেই অবগত করাইয়াছিলাম। কিন্তু মহা-  
শয় আমর। করসা করি যে অন্যতর বিলম্বেই  
রাস্তা ঘাটের দুঃখ হইতে উদ্ধার হইতে পারিব,  
কারণ এখানকার অনাচারি মাজিষ্ট্রেট লরস,  
এবং উল্লিখিত অগারিন্ টেওন্ট রোজ এই দুই  
মহাশয় রাস্তা ঘেরাওত করিবার জন্য অত্যন্ত  
দয়ালু হইয়াছেন। মহাশয়, এখানকার ভীর্ণ  
রাষ্ট্রের সংস্কার হউক বা না হউক ইহার আ-  
নোদন হওয়াতেই আমরা পরিতোষ প্রাপ্ত  
হইয়াছি, যেমন লোকে বলিয়া থাকেন।

কুচি বাঁকুড়া শ্রীক মা সাহেব  
ভাল।

একপে এখানে নীতের অতিশয়  
হইয়াছে বটে তথাপি অতিরিক্ত অধিকার  
হুগ সাহেব। বরং হুগি হইতেছে, এবং  
মধ্যে দুই একটি একাউন্টর জারী প্রদান  
করিতেছে।

২৭শ নবেম্বর হুগ্গাতিয়ার এখানকার শ্রী  
মিলন সংক্রান্ত বিদ্যালয়ের ছাত্রদের সাং-  
সদিক পরীক্ষা হইবেক, এবং একজন ছাত্র  
হুগে যে, তাঁহার ডকা সাহেব ঐ পরীক্ষা  
সমাপ্ত করিবেন। মগাশয়, এই অন্যতর  
সভা হয় তাহা হইলেই আমাদেয় সান্তি  
আমাদের বিবর্ত।

৬ সাহেবের পরিবর্তে এখানে এক নুত  
ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট আসিয়াছেন, আমরা ভব  
করি ইনি এতাদ পাবু ব সতম সিধ্য। কা  
সময় বার না করিয়া এখানকার মঙ্গল চে  
পাইবেন সম্ভব নাহি

বালনা  
২৬শ নবেম্বর। ১৮৬২ } এক পাঠক

### মূল্যপ্রাপ্তি

শ্রীযুক্ত বাবু হরমোহন বন্দ্যোপা-  
ধ্যায় সাহেব। ১২৬২। ১৫ অগ্রহায়ণ হইতে  
৭০। ১৫ অগ্রহায়ণ পর্য্যন্ত কোং ১০ টা

শ্রীযুক্ত বাবু রাম গোপাল রিঃ : মনিঃ  
১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিত পর্য্যন্ত ১০

টমস কলকাতা ডপগান গোলা ১০  
আবার হইতে অগ্রহায়ণ পর্য্যন্ত। কোং ৫ টা

শ্রীযুক্ত বাবু তারকনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বাগি-  
১২৬২ পৌষ হইতে তৈলী পর্য্যন্ত কোং ৫ টা

শ্রীযুক্ত বাবু তাম লোচন ঘোষ কৃষ্ণনগর  
১২৬২ আগষ্ট হইতে ৬৩ জুলাই পর্য্যন্ত ১০

শ্রীযুক্ত বাবু বরলাল সাহা কৃষ্ণনগর  
১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিত পর্য্যন্ত  
কোং ১০ টা

শ্রীযুক্ত বাবু বজেন্দ্র মালী দাদোয়া রত্নপুর  
১২৬২ আবার হইতে ৭০ তৈলী পর্য্যন্ত। ১০

শ্রীযুক্ত বাবু দুর্গাচরণ গুপ্ত মিউনিসিপালি-  
সাহেবের কোং ১০ টা

শ্রীযুক্ত বাবু চারুচন্দ্র ঘোষ শিবুলীয়া ১০  
অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিত পর্য্যন্ত। কোং ১০

শ্রীযুক্ত বাবু বিপিন বিহারী ভাট্টা হাট  
১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ তৈলী পর্য্যন্ত

এই পত্র কলিকাতার  
সর্বত্র বৈশেষিক  
বিশেষায়নের কর্তব্য

সোমপ্রকাশ ১২৪৭ অঙ্কহরেন ১২৬৯।

বিজ্ঞাপন ১

সহী নাথারগের জমাদারের জানান আইনভেবে যে পীশ বহাল জিহি ৫৫ গ্রামের অধ্যাহিত নিম্নের লিখিত হোলজিহে  
আপন আপন জমদার বাকী আদায় না করায় সন ১৮৩৫ সালের ৮ আইন কমে সন ১৮৬২ সালের ১০ দীপার ১২  
১২৬৯ সালের ২৬ অগ্রহায়ণ সুবদায় মোকাম আলিপুরের ডেপুটি বালেউরি কাছারিতে নিলাম বিক্রয় হইবেক যে  
ব্রিট করিতে মানস রাখে তাহার ঐ তারিখে হাজির হইয়া নিলাম ডাক করিতে পারে আর প্রকাশ থাকে যে  
নিলাম ব্রিট করিবেক তৎক্ষণাৎ শতকরা ১৫ টাকার হিসাবে দাখিল করিয়া অবশিষ্ট পণ নিলামের তারিখ হইবে  
দিন দুই প্রহরের সময় দাখিল করিতে হইবেক।

[illegible]



| নং ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং | বাঁকি দারের নাম। | নং | ডিবিজান | নং |
|------------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|
|------------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|------------------|----|---------|----|

# সোমপ্রকাশ

“সর্বসংসারী সন্তানসিদ্ধিলাভে পার্থিবঃ সর্বস্বতী শ্রুতিমন্তনী ন শৌচতঃ।”

৫ ভাগ।  
৫ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ১ পৌষ। ইং ১৮৬২। ১৫ ডিসেম্বর }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

### গ্রাহকগণের প্রতি।

গ্রাহকগণকে জানান যাউতেছে, কার্তিক মাস অতীত হওয়াতে অনেকের প্রদত্ত সোমপ্রকাশের মূল্য নিশ্চেষ্ট হইয়াছে, অগ্রহাষণ মাস অতীত হইলেও অনেকের মূল্য শেষ হইবে, অতএব তাহারাই দ্রুত করিয়া মূল্য পাঠাইয়া দেন। উক্ত মূল্য কলিকাতা সংকলিত কালেজে আনানিগের নামে পাঠাইলেই আমরা নির্ভয়ে ও শীঘ্র পাঠিব।

— — —

## বিজ্ঞাপন।

আমি কাব্য নির্মিত নামে একখানি অলংকার গ্রন্থ বাসনা তাহার প্রণয়ন পূর্বক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছি। মূল্য ১ টাকা। কলিকাতা ব্রজপুর বিদ্যালয় যথেষ্ট অর্থব্যয় সংকলিত কালেজে প্রদত্ত গিরীশচন্দ্র বিদ্যাবতী মহাশয়ের নিকটে অগ্রসংকলন করিলে পাঠাইবেন।

ঐশ্বর্যমোহন তর্কচাঁদ।

## বিজ্ঞাপন।

এই মাসে নিম্নলিখিত পুস্তক গুলি বিক্রয় স্থাপিত আছে।

|                         |         |           |     |
|-------------------------|---------|-----------|-----|
| মেঘনাদ বধকাব্য          | ১ম ভাগ  | সর্বমূল্য | ১।০ |
| ঐ                       | ২য় ভাগ | সর্বমূল্য | ১।০ |
| তিলোত্তমা সন্তান কাব্য  | ২য় বার | সর্বমূল্য | ১।০ |
| বীরসেনা কাব্য           |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| কুরুক্ষেত্রী নাটক       |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| পদ্মাবতী নাটক           |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| উক্ত নাটকের স্মৃতির রোঁ | ২য় বার | সর্বমূল্য | ১।০ |

|                            |         |           |     |
|----------------------------|---------|-----------|-----|
| একেই কি বলে সত্যতা         | ২য় বার | সর্বমূল্য | ১।০ |
| শ্রীমদ্ভাগবত ইংরাজী অনূদিত |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| গীতাংগ                     |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| বাসবদত্তা                  |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| সাহিত্য বুদ্ধিবলী          |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| কুগোল চর                   |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| আকিকান বানচিত্র            |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| প্রথম পাঠ                  |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| প্রাণিবৃত্তান্ত            |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| গোলোকের উপযোগিতা           |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| উনকম্বটাকের আচর            |         | সর্বমূল্য | ১।০ |
| উপনিষদ যজ্ঞালয়            |         | সর্বমূল্য | ১।০ |

নং ১৮২ বহুবাজার বোড  
ঐতিহ্য চন্দ্র সত্ত্ব কাং

— — —

## বিজ্ঞাপন।

আমার প্রণীত ভারতবর্গের ইতিহাস বাহার প্রয়োজন হইবে, আমার নিকট মূল্য ১ টাকা আনা দ্রুত পাঠাইলে অথবা ছগলি প্রেসে অগ্রসংকলন করিলে পাঠাইতে পারিবেন।

ঐতিহ্য চন্দ্র সত্ত্ব, চাটপাড়।

## বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণের গোপনীয় প্রকাশ করা যাউতেছে যে কলিকাতা গবর্নমেন্ট ও গবর্নমেন্ট সাহায্যকৃত এবং অপর সর্ববিদ্যালয় সমস্তের বালকগণের উৎসাহার্থ গবর্নমেন্ট বার্ষিক যে একটি অর্থনৈতিক ছাত্ররাজি প্রদান করিয়াছেন আগামি ২০শে, ৩০শে ও ৩১শে ডিসেম্বর সোম, মঙ্গল, বুধবার কলিকাতার নন্দ্যাল স্কুলে এই সকল ছাত্রাভ্যাসিকগণের পরীক্ষা হইবে। ১১ বৎসরের অধিকবয়স্ক

বালকেরা উক্ত পরীক্ষায় গৃহীত হইবেক না। কলিকাতা হাবতীর বাচ্চারা পাঠ্য লার বালকগণ উক্ত পরীক্ষা দিতে পারিলে কেবল উচ্চাভিগের সচরিত্রের এবং কলিকাতার এক বা একাধিক পাঠশালায় অধ্যয়ন মাস কাল অধ্যয়নের বিশ্বাস বোগ্য প্রদান হইবে না। দিতে না পারিলে তাহারাই পরীক্ষা দিতে পারিবেন না।

যে বালক স্কুলে লিখেন এবং পুস্তক পুস্তক অপারগ হইবে তাহাকে অন্যান্য বিদ্যা পরীক্ষায় গ্রহণ করা হইবে না।

যে যে বালক পরীক্ষাভ্যাস হইয়া এই কল ছাত্ররাজি পাইবে তাহারাই হিন্দুস্কুলে অন্য গবর্নমেন্ট স্কুলে কিনা বেতনে পাঠ্য সর পাঠ করিতে পারিবেন।

কলিকাতা  
১৮৬২ সাল  
১১ ডিসেম্বর

## বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণকে জানান যাউতেছে যে যার মাতুলপুত্র ও নীলকণ্ঠ সেনের মৃত্যু পর তাহার কোন উত্তরাধিকারী না থাকিলে তাহার শ্রীমান ও আমার মাতামহ যুগলচন্দ্র সেন মহাশয়ের ধন সম্পত্তি ব্যবস্থাসমূহে আমার অধিকার হইয়াছে আমি এক্ষণে পত্রগণে হাবিলদার কুমার প্রাণকান্ত আমার মাতামহের আমানত বাজী পুত্ররীণী ও বাগিনী প্রভৃতির মত হাবি ইংরাজী ১ ডিসেম্বর উক্ত আমানত ঐতিহ্য বহু গোপন প্রত্যক্ষাধ্যায় মত মতকে বিক্রয় করিয়া ১১ অগ্রহায়ণ বিক্র



## সোমপ্রকাশ

রাজ্যে পরিচালিত হইয়াছে। আর উক্ত  
কর্তৃপক্ষের অধীনে বিচারের সহিত  
সিদ্ধি যে যে সাক্ষি আদার মাতা-  
কর্তৃপক্ষের ও ইচ্ছামূলক করিয়াছেন  
আমার অন্তরে তাহা খানাতর করিয়া  
করিয়াছেন তাহা সাক্ষি বা তাঁহা  
কর্তৃপক্ষের ও ইচ্ছামূলক সেট সেট বিষয়ের দাবি  
সাক্ষি বা আদার অন্তরে আদার  
কর্তৃপক্ষের দিতে হইবে। প্রথমতঃ উক্ত  
কর্তৃপক্ষ ৬ মিলকর পেন্সন বিনামূল্যে কোন  
বিচার মতে, দ্বিতীয়তঃ আদার সাক্ষিদের  
বিচারের অধিকার নাহি। অতএব তাঁ  
বিচার করা নিতান্ত অসঙ্গত।

ঈশ্বরকান্দা বায়

১৯৬০ সাল

১২ অক্টোবর

অগ্রহায়ণ হিন্দু, শ্রাবণ পণ্ডিত।

## সোমপ্রকাশ

১লা নোবেম্বর ১৯৬০

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক দপ্তর একটি

অধ্যাপক কালন কালন।

অতিপ্রাচীন সাক্ষ্য ব্যক্তি, নিগের লেখ  
হুখ হইতে সময়ে সময়ে যে সমস্ত  
বাঁকা বিনিমিত হয়, কোন ক্ষেত্রে ও  
কালে ফলাংশে তাহার অণুমাত্র  
উল্লেখ হয় না। বরং কখন কখন অধিক  
ও দৃষ্ট হইয়া থাকে। পোপ কহিয়া  
না আদ্য বিজ্ঞানসিদ্ধি হইয়া যেমন  
পুণ্ডিতের নিরর্থক বোধ করিতে  
হয়, অতএব এ দেশে একপক্ষ  
অতিমাত্রী চরম অত্যাচারে নিরর্থক  
করিবে। অতএব সাক্ষ্যপত্র সত্য  
যে মতো একজনকে ও অন্যজনকে  
প্রত্যক্ষ উদাহরণ দিতে হয়। এক  
জন ব্যবস্থাপক আপনাকে ও অন্য  
জনকে বিধির জরী মান হইতে  
বর্জিত হইবে যে ব্যক্তি

তাহেন, আর এক জন তাহা সত্য  
করিয়া বহিত করিতেছেন। কিন্তু দিন  
পূর্বে আমাদিগের ভূতপূর্ব লিপিকা  
পত্রের প্রাপ্ত সাক্ষ্য সত্যপত্র আ-

সনে উপস্থিত হইয়া এই আইন পরিবার  
প্রস্তাব করিয়াছিলেন যে এক অথবা ক-  
য়েক ব্যক্তি, যোগে যদি কোন গ্রামে  
দায় উপস্থিত হয়, সেই অপরাধে গ্রামের  
সমস্ত ব্যক্তি সন্তুষ্ট হইবে। এক্ষণে বী-  
ভম সাক্ষ্য সত্যপত্র আসনে আসান  
হইয়া এই প্রস্তাবটি রহিত করিলেন। প্রাপ্ত  
সাক্ষ্য যে কি কারণে ও কি যুক্তিতে এ  
কপ অন্যায় বিধি বিধানের প্রস্তাব করি-  
য়াছিলেন, এবং সে চিন্তার আর প্রয়োজন  
নাই। ব্যবস্থাপক সভা অকীর্তি হইতে  
এবং বঙ্গদেশীয়েরা অন্যায় দণ্ড হইতে  
যে রক্ষা পাইলেন, এই সৌভাগ্যে বৈষয়।

বি, এ, উপাধি পরীক্ষা

আমরা পুনরায় এ বিষয়ে হস্তক্ষেপ  
করিলাম। অগলী, কলকাতা প্রকৃতি ক-  
লেজে বি, এ, উপাধি লাভার্থিদের পা-  
ঠোপযোগি পুস্তক পাঠনার রীতি অব্যক্তি  
হইলে অনতিদীর্ঘকাল মধ্যে এসকল বিদ্যা-  
লয়েব সর্বশেষ উন্নতি হইয়া উঠিবে সন্দে-  
হ নাই। প্রেসিডেন্সি কলেজের বর্তমান  
ইতিহাস-প্রাপক শ্রীযুক্ত ই. বি. ক. উএল  
সাহেবের সমস্ত সুপণ্ডিত, সচ্চরিত্র, ধীর  
প্রকৃতি, দয়ালু ধার্মিক ব্যক্তি। যদি  
অধ্যাপক পদে নিয়োজিত হন, কোন ব্যক্তি  
তত্ত্ববিদ্যালয়ের জীবিত নিবারণ করিয়া  
রাখিতে সমর্থ হইবে। অধ্যাপকদিগের  
প্রাণেই বাহুল্যকপে ছাত্রদিগের বিনা ও  
চরিত্র শিক্ষা প্রকৃতি যাবতীয় সক্ষম অ-  
র্জিত হয়। আমরা প্রচার সূত্রে  
পাই, অধ্যাপক ও তত্ত্বাবধায়ক উভয়ে  
মিলিয়া অনেক বিদ্যালয়কে উৎসন্ন দি-  
তেছেন। একপক্ষ হওয়া বিচিত্র নহে। ব্যা-  
খ্যাই কেবল সাংস্কৃতিক নয়, গুণসম্বলিত  
সাংস্কৃতিক হইয়া থাকে।

এ জগৎবোরা যদি ব্যয়ের কথা কুলিয়া  
এ বিষয়ে উদাসীন্য প্রদর্শন করেন, তাহা  
যে হইতেছে না। গবর্নমেন্ট শিক্ষা

বে অধ্যাপক বান কুলিয়া সাক্ষ্য  
এ আক্ষেপ করিয়া থাকেন। অন্য কথা  
কি, শিক্ষা কার্যেই প্রধানতম অধ্যাপক  
কিন্তু সাক্ষ্য ও সে দিন ১৮৬০। ৬১ অ-  
ধের শিক্ষা সংক্রান্ত রিপোর্ট মধ্যে এ বি-  
ষয়ের প্রসঙ্গ করিয়া আক্ষেপ করিয়াছেন।  
তিনি বলেন, ১৮৫৯। ৬০ অর্থে কেবল  
এই এক বছরে ১৩ কোটি টাকা আর ও  
৮ লক্ষ মাত্র ব্যয় হইয়াছে। এ আয়ের  
রোদশ অংশও (এক কোটি) যদি  
শিক্ষাকার্যে প্রদত্ত হয়, সমস্ত ভার-  
তবর্ষ কি কুতর্প হয় না। গবর্নমে-  
ন্টের এ বিষয়ে হস্তক্ষেপ করা  
কি ন্যায়সিদ্ধ হইতেছে? যদি কেহ একপ-  
ক্ষ জিজ্ঞাসা করেন, এ দেশের তাবি সর্বা-  
ধীন মঙ্গল লাভের মূল কারণ কি? চীনদেশ  
ধীরে ধীরে সাক্ষ্য এক গৃহস্থকে পু-  
পৌত্র, কন্যা, কন্যা, পুত্রবধূ প্রকৃতি বহুতর  
পরিবার পরিবেষ্টিত হইয়া মুখে কালান্তি  
পাত করিতে দেখিয়া বিস্ময়বিত্ত হইয়া  
জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, তোমাকে তিম-  
ব্রত অর্থাৎ বিধি পরিজন পরিবেষ্টিত  
দেখিতেছি, অথচ তুমি ওপ সঙ্কল্পে কাল  
হরণে সমর্থ হইতেছ, ইত্যাদি বীজ কি  
গৃহস্থ উত্তর দিলেন, সচ্চরিত্র সচ্চরিত্র  
সচ্চরিত্র; আমরাও সেইরূপ উক্ত প্রস্তাব  
উত্তর দানহলে শিক্ষা শিক্ষা শিক্ষা বিন-  
বার উচ্চারণ করিব।

শিক্ষা সংক্রান্ত ব্যয় সংক্ষেপে দ্বারা  
প্রস্তাবিত বিষয়ে ব্যয়ের আনুকূল্য হইবার  
সর্বশেষ সত্যবনা আছে। শিক্ষা কার্যে  
একতর অর্থের অধিকাংশ তত্ত্বাবধায়ক ও  
অধ্যাপকদিগের উদরসাৎ হইয়া থাকে।  
তাহাদিগের সংখ্যা ও বেতন স্থান করিয়া  
সেই উক্ত অর্থ যদি শিক্ষক ও অধ্যাপক  
দিগের বিষয়ে বিনিয়োগিত করা হয়, যে  
যে আমাদিগের প্রস্তাবিত বিষয় সুসি-  
দ্ধ হইবে একপক্ষ নয়, শিক্ষা সংক্রান্ত উপা-  
য়েই একপক্ষ একপক্ষ একপক্ষ একপক্ষ

।। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ১। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ২। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৩। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৪। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৫। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৬। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৭। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৮। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ৯। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত  
 ১০। এই ডিপার্টমেন্টে একটা বিপরীত

ধাকেক। এই সকল অসমত ও অপমান  
 নিব'রিত হইলে কি রাজপুত্রেরা ভাবত  
 বহী'গদিগের শিক্ষা কাছের দানকালে  
 মুক্ত হইতে পাবেন না। ইহাদিগের  
 বিদ্যালিগার অনুরোধে খোঁচত চেষ্টা  
 পাইয়া সেই সেই অপমান নিব'রণ কি  
 বিধেব নয়? রাজপুত্রেরা ভারত ভূমিকে  
 কামছা বাধ করিয়া নিব'রিত অর্থ কোহন  
 কবিত্তেছেন, কিন্তু ইহা সন্তানগণ অজান  
 অজ্ঞতনসে মগ্ন হইয়া বিসন্ন হইতেছেন,  
 ইহা অত্যন্ত ক্ষোভের বিষয়। এই প্রসঙ্গে  
 সংস্কৃত আরবী ও লাতিন প্রভৃতির বিষয়ে  
 বি, এ, পরীক্ষার সম্বন্ধে কিছু বক্তব্য আছে।  
 এক্ষণে ইংরাজীভর ভাষার পরীক্ষার কলা  
 কল বিবেচনা কালে বাঙ্গালী প্রভৃতি চলিত  
 ভাষা এবং সংস্কৃত প্রভৃতি অচলিত ভাষা  
 উভয়ই ভূমিকাপে সমান হইয়া থাকে।  
 কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া দেখা যায়  
 চলিত ও অচলিত উভয়ই ভাষার ভূ-  
 সমাদর বিধেব হইতেছে না। অচলিত  
 ভাষার ব্যুৎপত্তি লাভ যেসকল পরিভ্রম  
 ও কষ্টসাধ্য, চলিত ভাষার সেসকল হওয়া  
 কোনক্রমেই সম্ভাবিত নহে। অতএব উক্ত  
 উভয় ভাষার পরীক্ষাদা'দিগের কলাংশে  
 অমানুষিক পুরস্কার দেওয়া কর্তব্য। সেই  
 পুরস্কার ম'নের দুটি উপায় আছে। এক  
 যে সময়ে পরীক্ষা হয়, পরীক্ষকেরা  
 চলিত বাঙ্গালী ভাষার লিখিত প্রশ্নে  
 র উত্তরের সহিত অচলিত সংস্কৃতাদি  
 ভাষার লিখিত উত্তর ভুলানুসার বলিয়া  
 গণনা না করেন। উদাহ. প্রশ্নঃ—  
 দ্বারা আমাদিগের বক্তব্যটি সমধিক পরি-  
 ক্ষুণ্ণ রূপে পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া  
 দেওয়া যাইতেছে। বোধ করুন, একজন  
 বাঙ্গালী ভাষার আর এক জন সংস্কৃত ভা-  
 ষার পরীক্ষা দিতে গেলেন। পরীক্ষক উক্ত  
 র পরীক্ষার্থিকে পাঁচ পাঁচটা করিয়া প্রশ্ন  
 দিলেন। উত্তরেই প্রশ্নগুলির উত্তর উক্ত  
 র করিলেন। পরীক্ষক প্রতি প্রশ্নেই

নয়র করিয়া দিয়া এতোকাল পা-  
 রিয়া নয়র দিলেন। পরীক্ষক  
 ভুল্য ভুল্য করিয়া যদি সংস্কৃত  
 বিস্তারিত নয়র দেন, এবং সেই  
 অন্য অন্য বিষয়ে ক্রটি থাকে  
 তাহা পূরণ করিবার নিয়ম  
 হইলেই সংস্কৃত পরীক্ষা  
 হইল।  
 দ্বিতীয় পুঙ্খানুপুঙ্খ চাক্ষু-  
 রকর, এককর্মপ্রার্থী হইয়া  
 উপস্থিত হইয়াছেন। দুই  
 পাখিধারী। কিন্তু ইহাদিগের  
 বাঙ্গালার আর একজন সংস্কৃত  
 ভাষা হইয়াছিলেন। একটা  
 ক্রমে ক্রমে দেওয়াই উচিত। অ-  
 তির বিষয়েও এই নিয়মের অনু-  
 ১।  
 আরও বর্ণনা করিয়া  
 বার আত্ম  
 বাণিজ্য ও ব্যবহার  
 মুক্তা ও নোট প্রভৃতি  
 রাখে। এরোজানোপযোগী  
 ভাষা দ্বারা তাহার মুক্তা  
 থাকে, তাহার সংস্কৃত, ভাষা  
 অথবা আকার নির্ণয়। ভাষা  
 পণ করা হয় না। অনেক  
 প্রকার মুক্তা অচলিত  
 প্রকার মুক্তার সকল  
 না। এই ভাষার  
 লিখিত ভাষা, কিন্তু ইহার ভাষা  
 অনেক সময়ে অনেক  
 এক প্রশ্নেই হইতে এদেশের  
 মুক্তা লইয়া যাইবার  
 নেক প্রকার কষ্ট উপস্থিত হয়।  
 দ্বিতীয় মুক্তার  
 কিন্তু ভাষার  
 হইল। তাহা অচলিত



কালিকর্ণায়া ও অষ্টেলিয়ার স্বর্ণ খনি  
খনির হইবার পর অবধি এক ইংলণ্ডে  
তিব্বতের নশ কোটি টাকার স্বর্ণ আ  
তেছে! ক্রিস ও আমেরিকায় টোকা অ  
কা স্বর্ণ ম্যান নচে। এতি বৎসর  
পরিমাণ বৃদ্ধি হইতেছে। অনেক  
জাতিরা এই আশঙ্কা করিয়াছিল  
যে স্বর্ণ অসমুদ্রা ও হতাদর হই  
কিন্তু এক্ষণে এ আশঙ্কা অমূলক বলি  
এতি পর হইয়াছে। বিংশতি বৎসর  
অসমুদ্রা স্বর্ণ মুদ্রা ছিল,  
এতি বৎসর তিন কোটি করিয়া  
হইতেছে। এক আমেরিকার গৃহ  
কর্ম তথা হইতে ইউরোপে প্রায়  
১০ টাকার স্বর্ণ মুদ্রা আসিয়াছে।  
যদি বনিক ও সর্বসাধারণের  
না হইত, তাহা হইলে কি ইহা  
চলিত হইত? উইলসন সাহেব  
বর্ণনা করিয়াছেন যে একবার  
তাহার হইল এক্ষণে  
প্রায় দুই কোটি টাকার গিনি, প.উ  
রানী ক্রাফ প্রভৃতি একেই আ  
কর্ষিত হইয়াছে। তাহা একেই  
গরদিগের চৌধ্য ও উদরবোধ্য  
করিতেছে।

নোট চালাইবার সময়ে বনিক সম্রা  
টাকার পর্যন্ত নোট করিবার আ  
ম করেন, কিন্তু নোট সর্বত্র প্রচলিত  
ব না, গবর্ণমেন্টের ক্ষতি হইবে, এই  
করিয়া লেজ সাহেব তাহা প্রচলিত  
কেন্দ্র করিয়াছেন। কিন্তু স্ব. মুদ্রার  
প্রচলন নাই, কি র জাতি কি মক  
সকল স্থানে ইহা প্রচলিত হইবে  
এই বিষয়ের বেবল একটা  
প্রস্তাব আছে। তরতী  
কর্ম  
সম্পত্তি বলিয়া চান  
। প্রস্তাব  
সংস্কারানুসং  
এতি তাঁহাদের সম্বন্ধে অসম  
হ। তাহারা

ওজন না করিয়া ইহার এক রকম গ্রহণ  
করেন না। স্বর্ণ মুদ্রা প্রচলিত হইলে তা  
বিশেষত বনিকেরা তাহা তরির দরের হি  
বে লইবেন। পরসার হিসাবে টাকা, অ  
থবা টাকার হিসাবে মোটের ন্যায় তাহা  
গৃহীত হইবে না। অতএব গবর্ণমেন্টের  
প্রস্তাব স্বর্ণ মুদ্রার মূল্য নিকট করা  
অথবা তাহাতে খাদ দেওয়া সাধ্যাত্ত  
হইবে না। কুটিনিয়ন, সত্রাট মাদ্রিগামি  
লিয়ান প্রভৃতি কয়েকজন ভূপতি মুদ্রায়  
খাদ দিয়া শেষে ক্ষতি ও অপমান প্রাপ্ত  
হইয়াছিলেন। যাহা হউক এক্ষণে আমাদি  
গের বক্তব্য এই, প্রধান প্রধান বনিকদিগকে  
ডাকাইয়া কত মূল্যের স্বর্ণ মোহর প্রভৃতি  
প্রস্তুত করা কতব্য ইহা নিকপণ করিয়া  
স্বর্ণ মুদ্রা প্রচলিত করা উচিত। ঠিক যদি  
১৬ টাকার স্বর্ণ মোহর হয়, তাহা লইয়া  
১৬ টাকা দিতে কে অসম্মত হইবেন?  
বাঁটার ভয় করা অনায়াস। টাকারও কি  
বাঁটা লাগেনা? বিত্ত স্বর্ণের মুদ্রা হইলেও  
যদি বাঁটা লাগে, তাহাতে ক্ষতি কি? টা  
কার ন্যায় ইহারও দু'আনি পর্যন্ত করা  
কর্তব্য। ইহা দ্বারা যে বিশেষ উপকার  
লাভ হইবে, তাহার বর্ণন করা বাহুল্য।  
এক্ষণে গড়ে প্রত্যেক ভারতবর্ষীয় জীলো  
কের গড়ে ৫০ টাকার স্বর্ণ আছে। স্বর্ণ  
মুদ্রা প্রচলিত হইলে অলঙ্কারের এতি  
ক্রমে এ দেশীয়দিগের উদাসীনা হইবে,  
দেশের ধনবৃদ্ধি হইবে, এবং গবর্ণমেন্টেরও  
বিলক্ষণ সুবিধা হইবে।

১০ কালিকাতা কুলীন টেমিক  
জেনী পুনর্জার ।

২। ৩ মাস বয়স্ক কালে পুত্রের  
এবং অশৌচান্তে কন্যার বাগদান এথা  
এই জেনীর উত্তির একটা প্রধান প্রতি  
বন্ধক হইয়াছে। জীবন্ত আমদানি বে  
দান্তবানী সেই বুদ্ধি ও পারদ্রিক  
অথবা প্রচার পরিবর্তন প্রভৃতি

হইয়া এই জেনীর মহোপকার সাধনে  
বৃত্ত হইয়াছেন, কিন্তু তাঁহার আশা  
অম হওয়াতে সেই চেষ্টা সকল হইয়া  
সত্তাবনা দেখা যাউতেছে না। সেই অম  
সংশোধিত হইয়া যদি এই জেনীর উপকার  
সাধিত হয়, এই আশায় আমরা পুনঃ পুনঃ  
এ বিষয়ের আন্দোলনে প্রবৃত্ত হইতে  
ছি। পাঠকগণ আমাদিগের এ অপরাধ  
গ্রহণ করিবেন না।

৩। অগ্রহারণের সোমপ্রকাশে মধ্য  
স্থ মানিবার বিঘাযে যে অতিপ্রায় একাশ  
করা হয়, বেদান্তবানীশ তদনুযায়ী হইয়া  
৩০৭ অগ্রহারণ গ্রহসম্পত্তি বাব আমাদিগে  
র নিকট এক পর প্রেরণ কবেন। তাহা  
তে দৃষ্ট হইল, বৈদিক জেনীর ২৬ ব্যক্তি  
র নাম লিখিত হইয়াছে। বেদান্তবানীশ  
উহার মধ্য হইতে মনোনীত করিয়া মীমাং  
সা নিকপণ করিতে কহিয়াছেন। আম  
রা প্রথমে যে কয় মহোপাধায়কে মধ্যস্থ  
মনোনীত করিয়াছিল, তাহারা বেদান্ত  
বানীশের মনোনীত হন নাই। অতএব  
আমরা আর মনোনীত করিবার তার গ্রহণ  
করিতে অতিলাধী নহি, এ তার বেদান্ত  
বানীশের উপরেই সমর্পণ করিলাম।  
তিনি যাহাকে ইচ্ছা মনোনীত করিয়া এবং  
কোন দিম কোন স্থানে সজা হইয়া এবিধ  
রের বিচার হইবে তাহা স্থির করিয়া পূর্বে  
পর লিখিবেন, আমরা সেই দিন সেই  
স্থানে উপস্থিত হইব। কিন্তু এখানে এক  
টা কথার উল্লেখ করা নিতান্ত আবশ্যিক  
হইতেছে। উপস্থিত বিধরে স্মৃতিশাস্ত্র  
লইয়া বিচার উপস্থিত। যাহাদিগের সেই  
স্মৃতি শাস্ত্রে পাণ্ডিত্য ও কাহার মধ্যস্থ  
সামর্থ্য আছে, তাহা মধ্যস্থ যেন মনোনী  
ত করা হয়। আমরা বেদান্তবানীশকে বৈ  
দিক জেনীর বাগদান বিঘাযে পথ  
লবন করিতে কহিয়াছিলাম, প্রদূষন  
তাই চাক্রিক প্রভৃতি এসিদ্ধ স্মৃতিশাস্ত্রের  
কাহিনী অনুমোদিত হইয়াছে।

এই পত্রিকায় প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হইবে।

সমাজিক বহুপদ

অসমীয়া সমাজিক, সোমবার পত্রিকাত... বোম্বেতে প্রকাশিত হইয়াছে, সে অত্যন্ত কার্যকর বিবেচনীয় বস্তুপৰ্য্যন্ত পাঠ্য... এই পত্রিকায় প্রকাশিত হইবে।

আজমত হুজুৰ ইত্যাদি (১) বচন... ইত্যাদি।

(১) আজমত হুজুৰ ইত্যাদি (১) বচন... ইত্যাদি।

সোমবার পত্রিকায় প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হইবে।

আজমত হুজুৰ ইত্যাদি (১) বচন... ইত্যাদি।

সমাজিক বহুপদ

অসমীয়া সমাজিক, সোমবার পত্রিকাত... বোম্বেতে প্রকাশিত হইয়াছে, সে অত্যন্ত কার্যকর বিবেচনীয় বস্তুপৰ্য্যন্ত পাঠ্য... এই পত্রিকায় প্রকাশিত হইবে।







[illegible][illegible][illegible][illegible]

কিন্তু রাজা রাজপুত্র থাকিলেই তাঁহার পক্ষ হইত।  
 ১০. রাজপুত্রের পক্ষ হইতে নিযুক্ত হইলেন  
 ১১. ইতিমধ্যেই রাজার পাহাৰায়ে পাহাৰা-  
 ১২. পাহাৰায়ে রাজা। আরও বাক্যের বোঝা পড়ে  
 ১৩. হইল। তাঁর নরপ কোম্পানিকে অনেক সন্তান  
 ১৪. তাঁহার মাতার কাঁচ বিক্রয় করিয়া বিধা  
 ১৫. করিয়া গরিব লোক তাঁহার দাবি দিয়া মালী  
 ১৬. করিল। তদন্ত মল্লর আলার দিকে  
 ১৭. মোকদ্দমা হইয়া প্রমাণ হইল তিনি ২৫  
 ১৮. টাকা দিয়া পাঠবেন। রাজা। আরও ৫০০  
 ১৯. টাকা দাবী রাখাইরাহিলেন। এই মোকদ্দমা  
 ২০. অব্যাহত হইরাছে।

উচ্চশিক্ষার পরিগন্য নংবার দাতা। জাতি  
চাকর নইন। ইংল্যান্ড জন্ম। খনিজাদেশ  
সকল। বিজ্ঞানে একজন ৩০,০০,০০০ টাকা  
কুলা আছে। ইয়াও শীঘ্র কল্যাণ হইবার  
নতান।

কালে আমরাও উত্তরাধে ইংলণ্ডের ও আমেরিকার উত্তর বিভাগের সুস্থিত যুদ্ধ হইবার লক্ষ্য রাখিয়াছি। তাহা হইলে যাহা, যাহা নীতি ও ইংরাজদিগের বিখ্যাত আধীনতাধিনে তাহা আমরা করিব।

আবদা। অবগত হইলাম এ সুনিয়মে  
 শ্রী কৃষ্ণ বিমুক্ত বিচার হইল না। বশোক্ত হইতে  
 এই সকল কথি আশিষ্টাৎ তাহা ইচ্ছা করিতে  
 অনুবোধিত বা হওয়া ইহার কারণ।

২৪৫ অগ্রহায়ণ মঙ্গলবার ।  
 গজলজ্জ্বরে বহু মমীরোগে ভাঙল ভক্ত  
 কামিকা বিদ্যালয়ের পরীক্ষা হইল।  
 হইল। আমরায় অম্বর বিরহে পরীক্ষা হইল  
 উপস্থিত হইতে এবং বিদ্য দি কক্ষে এমনি  
 হইতে পারি নাই ! অনেক বক্তৃতা দি  
 সত্যমুখে উপস্থিত হিলা । আমরায়  
 ভাঙল উপস্থিত বক্তৃতা পুস্তক দি  
 হইল। হইল। হইল। হইল। হইল।  
 কামিকা বিদ্যালয়ের পরীক্ষা হইল।

[illegible]

१. १९५५-५६  
 २. १९५६-५७  
 ३. १९५७-५८  
 ४. १९५८-५९  
 ५. १९५९-६०  
 ६. १९६०-६१  
 ७. १९६१-६२  
 ८. १९६२-६३  
 ९. १९६३-६४  
 १०. १९६४-६५

संस्कृत-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

1. **General Information**  
 2. **Project Description**  
 3. **Objectives**  
 4. **Methodology**  
 5. **Results**  
 6. **Conclusion**  
 7. **References**  
 8. **Appendices**  
 9. **Tables**  
 10. **Figures**  
 11. **Summary**  
 12. **Abstract**  
 13. **Introduction**  
 14. **Background**  
 15. **Scope**  
 16. **Limitations**  
 17. **Assumptions**  
 18. **Definitions**  
 19. **Notations**  
 20. **References**  
 21. **Appendices**  
 22. **Tables**  
 23. **Figures**  
 24. **Summary**  
 25. **Abstract**  
 26. **Introduction**  
 27. **Background**  
 28. **Scope**  
 29. **Limitations**  
 30. **Assumptions**  
 31. **Definitions**  
 32. **Notations**  
 33. **References**  
 34. **Appendices**  
 35. **Tables**  
 36. **Figures**  
 37. **Summary**  
 38. **Abstract**  
 39. **Introduction**  
 40. **Background**  
 41. **Scope**  
 42. **Limitations**  
 43. **Assumptions**  
 44. **Definitions**  
 45. **Notations**  
 46. **References**  
 47. **Appendices**  
 48. **Tables**  
 49. **Figures**  
 50. **Summary**  
 51. **Abstract**  
 52. **Introduction**  
 53. **Background**  
 54. **Scope**  
 55. **Limitations**  
 56. **Assumptions**  
 57. **Definitions**  
 58. **Notations**  
 59. **References**  
 60. **Appendices**  
 61. **Tables**  
 62. **Figures**  
 63. **Summary**  
 64. **Abstract**  
 65. **Introduction**  
 66. **Background**  
 67. **Scope**  
 68. **Limitations**  
 69. **Assumptions**  
 70. **Definitions**  
 71. **Notations**  
 72. **References**  
 73. **Appendices**  
 74. **Tables**  
 75. **Figures**  
 76. **Summary**  
 77. **Abstract**  
 78. **Introduction**  
 79. **Background**  
 80. **Scope**  
 81. **Limitations**  
 82. **Assumptions**  
 83. **Definitions**  
 84. **Notations**  
 85. **References**  
 86. **Appendices**  
 87. **Tables**  
 88. **Figures**  
 89. **Summary**  
 90. **Abstract**  
 91. **Introduction**  
 92. **Background**  
 93. **Scope**  
 94. **Limitations**  
 95. **Assumptions**  
 96. **Definitions**  
 97. **Notations**  
 98. **References**  
 99. **Appendices**  
 100. **Tables**  
 101. **Figures**  
 102. **Summary**  
 103. **Abstract**  
 104. **Introduction**  
 105. **Background**  
 106. **Scope**  
 107. **Limitations**  
 108. **Assumptions**  
 109. **Definitions**  
 110. **Notations**  
 111. **References**  
 112. **Appendices**  
 113. **Tables**  
 114. **Figures**  
 115. **Summary**  
 116. **Abstract**  
 117. **Introduction**  
 118. **Background**  
 119. **Scope**  
 120. **Limitations**  
 121. **Assumptions**  
 122. **Definitions**  
 123. **Notations**  
 124. **References**  
 125. **Appendices**  
 126. **Tables**  
 127. **Figures**  
 128. **Summary**  
 129. **Abstract**  
 130. **Introduction**  
 131. **Background**  
 132. **Scope**  
 133. **Limitations**  
 134. **Assumptions**  
 135. **Definitions**  
 136. **Notations**  
 137. **References**  
 138. **Appendices**  
 139. **Tables**  
 140. **Figures**  
 141. **Summary**  
 142. **Abstract**  
 143. **Introduction**  
 144. **Background**  
 145. **Scope**  
 146. **Limitations**  
 147. **Assumptions**  
 148. **Definitions**  
 149. **Notations**  
 150. **References**  
 151. **Appendices**  
 152. **Tables**  
 153. **Figures**  
 154. **Summary**  
 155. **Abstract**  
 156. **Introduction**  
 157. **Background**  
 158. **Scope**  
 159. **Limitations**  
 160. **Assumptions**  
 161. **Definitions**  
 162. **Notations**  
 163. **References**  
 164. **Appendices**  
 165. **Tables**  
 166. **Figures**  
 167. **Summary**  
 168. **Abstract**  
 169. **Introduction**  
 170. **Background**  
 171. **Scope**  
 172. **Limitations**  
 173. **Assumptions**  
 174. **Definitions**  
 175. **Notations**  
 176. **References**  
 177. **Appendices**  
 178. **Tables**  
 179. **Figures**  
 180. **Summary**  
 181. **Abstract**  
 182. **Introduction**  
 183. **Background**  
 184. **Scope**  
 185. **Limitations**  
 186. **Assumptions**  
 187. **Definitions**  
 188. **Notations**  
 189. **References**  
 190. **Appendices**  
 191. **Tables**  
 192. **Figures**  
 193. **Summary**  
 194. **Abstract**  
 195. **Introduction**  
 196. **Background**  
 197. **Scope**  
 198. **Limitations**  
 199. **Assumptions**  
 200. **Definitions**  
 201. **Notations**  
 202. **References**  
 203. **Appendices**  
 204. **Tables**  
 205. **Figures**  
 206. **Summary**  
 207. **Abstract**  
 208. **Introduction**  
 209. **Background**  
 210. **Scope**  
 211. **Limitations**  
 212. **Assumptions**  
 213. **Definitions**  
 214. **Notations**  
 215. **References**  
 216. **Appendices**  
 217. **Tables**  
 218. **Figures**  
 219. **Summary**  
 220. **Abstract**  
 221. **Introduction**  
 222. **Background**  
 223. **Scope**  
 224. **Limitations**  
 225. **Assumptions**  
 226. **Definitions**  
 227. **Notations**  
 228. **References**  
 229. **Appendices**  
 230. **Tables**  
 231. **Figures**  
 232. **Summary**  
 233. **Abstract**  
 234. **Introduction**  
 235. **Background**  
 236. **Scope**  
 237. **Limitations**  
 238. **Assumptions**  
 239. **Definitions**  
 240. **Notations**  
 241. **References**  
 242. **Appendices**  
 243. **Tables**  
 244. **Figures**  
 245. **Summary**  
 246. **Abstract**  
 247. **Introduction**  
 248. **Background**  
 249. **Scope**  
 250. **Limitations**  
 251. **Assumptions**  
 252. **Definitions**  
 253. **Notations**  
 254. **References**  
 255. **Appendices**

[illegible]



হিউস্টন না। তারিখের ব্যতিক্রম অন্য কোন দেশে পাতিবৃত্তের একশ সত্তরটির উল্লেখ পাওয়া যায় না।

কল্যাণ বেল। দুই প্রহরের মধ্যে একটি হস্ত প্রাণলোক চীনাভাসের দ্বিধিতে স্থল আনিতে গিয়া অলম্বন হইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে। তারো কমা গেল হালসির বাগানে এক কোঁচুর একটি বাসিগাহ আসে কেলা ছিল। কোঁচুর এক কোঁচুরে সেই বাসিগাহ তুলিয়া দিতে কতে। জেলের কলে ছবিরা বেমন বাসিগাহটি তুলিয়ে অল্পনি খাচি ছুরিয়া তাহার হাতের উপর গতিত হয়। হাত আটকিয়া বাওয়াতে উঠিতে না পারিয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে।

আমরা শুভাশ্রম লাভ এলগিনের গ মত্যাগের ২২ অলোক, তিনি আগাধি কে করারি মানে। ২২ পক্ষিমাফলে গমন করি-  
বেম

ইউরোপীয় বুদ্ধবার  
খত কল্যাণ। সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

বন্ধুলাইট অল্লকখানী করেন, ২২ নও সাহেব  
একমলটোম সাহেবের কল্যাণ নিবৃত্ত।

উক্ত পত্র বলেন, ২২ গতিত ইউরোপীয়  
সকলদের ২২ নামে এক জন টেমিক এক  
জন মচরকে বধ করিয়া গলায়ন করে। এক  
বনিক তাগানে খরিবার চেটী করাতে সে তাঁ  
হাকে গুলি করে, বনিক তাগাতে বিশেষ  
আঘাত প্রাণ হইয়া অপর আর এক ব্য-  
ক্তির সাহায্যে তাহাকে ২২ করিয়াছে। এই  
বতকাণ্য কল্লির মিহাতে কল্যাণ হইবে।

নিম্ন লিখিত গতিত দুই ৮-২ নিমিত্ত  
দেখাইয়াছে।

|        |        |
|--------|--------|
| সিয়ার | কল্যাণ |
| আশাধ   | ১১২৮   |
| সিয়ার | ০.২৫১  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |
| সিয়ার | ২.২৫৩  |

হইয়াছে কল্যাণ। সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

সম্রাতি বেলিয়া। খাটার একটি খাচি ২২  
ইউরোপীয় বুদ্ধবার  
খত কল্যাণ। সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

গত লেগিসলেশনের শেষে প্রাণত্যাগের সব মর্তী  
কে ওয়েলসকে বলিয়াছেন, মাজিষ্ট্রেটেরা অতি  
সাধারণ সাধারণ মোকদ্দমা সেমিনারে প্রেরণ  
করিয়া তুলির কার্য বাতান। তাহাদিগের  
মিহে এসকল মকদ্দমার নিষ্পত্তি করা কর্তব্য।  
লর মর্তীকে ওয়েলস তাহাদিগের মর্তী অত্র  
মোদন করিয়া প্রধান বিচারপতি ও লেপট  
নকে গবর্নরের নিকটে তাহাদিগের পত্র প্রেরণ  
করিয়াছেন। সকলেই আপন আপন কঠোর  
হস্ত হইতে যুক্তি লাভের চেটী করে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া অবন করিয়াছেন  
সর বার্বেল পিকক আর একটি কর্তব্যি ২২-  
কাল প্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকা-  
শিত মতের সম্পূর্ণ বিপরীত। বিস্তৃত  
অল্লকখানী করিয়া কাব্য না করিলে একর্ণ  
= ডাইনপ্রাক্স রোগীর প্রাণ বাঁকাই  
থাকে।

তারিখের হইতে কল্যাণ অধিক পরি-  
ক্রমে কল্যাণ নিবরণে বাইতেছে। এ মকল  
১৩, ০০, ০০০ বস্তা গিয়াছে, আগাধি বর্ধে  
অধিক বাইবার সভাকলা আছে। এই কল্যাণ  
এ দেশে প্রাণিয়া এইখানেই কল্যাণ কাব্য  
২২ প্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকা-  
শিত মতের সম্পূর্ণ বিপরীত। বিস্তৃত  
অল্লকখানী করিয়া কাব্য না করিলে একর্ণ  
= ডাইনপ্রাক্স রোগীর প্রাণ বাঁকাই  
থাকে।

২২ প্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকা-  
শিত মতের সম্পূর্ণ বিপরীত। বিস্তৃত  
অল্লকখানী করিয়া কাব্য না করিলে একর্ণ  
= ডাইনপ্রাক্স রোগীর প্রাণ বাঁকাই  
থাকে।

উক্ত পত্র আরো বলেন সর সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

শ্রুতি লোকসিয়ারের কল্যাণপ্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকাশিত হইয়াছেন।

হিন্দু স পত্রের একজন পত্র প্রেরক বদল  
সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

সম্রাতি বোম্বাই নগরে তরানক ২২  
২২ খটকা পর্যন্ত যুক্তি এইরা গিয়াছে।

বোম্বাইয়ের যে সকল সিভিলিয়ান, পত্র  
কোম্পানী হইতে পারেন নাই, গবর্নমেন্ট তা  
হাদিগকে ব্যবস্থাবিদ্যালয়ে উপদেশ প্রদ  
করিবার অনুমতি দিয়াছেন। সিভিলিয়ানে  
মাঠে মারা বান কের।

একখানি ইংরাজী পত্রে দুই মর্তী, ১৮২  
অন্য তারিখ বর্ধের মাসা অল্লক হইতে বদল  
২২, ০০, ০০০ বস্তা গিয়াছে, আগাধি বর্ধে  
অধিক বাইবার সভাকলা আছে। এই কল্যাণ  
এ দেশে প্রাণিয়া এইখানেই কল্যাণ কাব্য  
২২ প্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকা-  
শিত মতের সম্পূর্ণ বিপরীত। বিস্তৃত  
অল্লকখানী করিয়া কাব্য না করিলে একর্ণ  
= ডাইনপ্রাক্স রোগীর প্রাণ বাঁকাই  
থাকে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া আরো কল্যাণপ্রকল্পমাত্র যে মত প্রকাশ করিয়াছেন  
তাঁহা হিন্দুসম্প্রদায়ের মোকদ্দমা কালীন প্রকাশিত হইয়াছেন।

উক্ত পত্র আরো বলেন সর সিভিনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। ২২ গতিত অধ্যক্ষ সর বে মস হোপ অল্লকখানী হইতে যাত্রা করিয়া  
না।

স্বকতা করিবেন না। রাজা উৎকর্ষ উপায় অবলম্বন করিয়াছেন।

গবর্ণমেন্টের তিন তিন ধন্যগারে নিম্ন লিখিত টাকা প্রমাণ আছে:—

|                          |              |
|--------------------------|--------------|
| ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের | ৫,৭০,২২,০৬০  |
| বঙ্গদেশীয়               | ১,৮০,০০,০২৭  |
| মন্ত্র পশ্চিমবঙ্গের      | ২,০৫,০৮,৭০০  |
| পঞ্জাবের                 | ৮,৬,০৪,৫৬১   |
| বোম্বাইয়ের              | ২,০০,২০,৪০০  |
| মধ্যভারতবর্ষের           | ৪০,৭১,০০০    |
| চাকিনাভোর                | ১২,০১,৮৫২    |
| মাদ্রাজের                | ২,১৪,০৮,৮৫৬  |
| মোট টাকা                 | ১৫,০৪,০০,০১২ |

ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কয়েক মাসাবধি প্রতিক্ষানে ৫০ লক্ষ করিয়া লইতেছেন। সম্রাতি তৎকালীন শ্রম ও ভূতির জন্যও কিঞ্চিৎ নিয়াছে। ইহাতেই বোধ হইতেছে হঠাৎ ১০ কোটি হইতে ১৫ কোটি হইয়াছে। বাণী হটক গবর্ণমেন্টের টাকার কার্য প্রদর্শন করা শর্তব্য।

কেন্দ্রীয় ইতিহাস বলেন ইউল সাহেব হায়দরাবাদের সাক্ষিবিশিষ্ট হইয়াছেন।

উক্ত পত্র আরও বলেন আগতার সদর ভজেরা গাজিপুরের ভজের উপর অসোক্তোন্ন প্রকাশ করিয়াছেন। এই কি সত্য? এতদ্ব্যতীত সমাজ কি এই দুর্ভাগ্য মিলিলিমান বিচার পতির নিষ্ঠুরতা সহ করিবেন?

১৮-এ অগ্রহায়ণ শুক্রবার।

সর বাণেশ পিক আপীল সংক্রান্ত কার্য ত্যাগ করিয়া সোমবার অধি অন্য কার্য করিবেন। সর চার্লস জাকসন আপীল সংক্রান্ত কার্যে বাইতেছেন।

পুনা অবজ্ঞা হর বলেন "আজি-কার নিম্ন আছে কোন যুবক যত দিন পর্যন্ত যুদ্ধে অগ্রসর বধ করিতে না পারে তত দিন তাহার বিবাহ অথবা তাহাকে স্বত্ব্য বলিয়া গণ্য করা হইবে না। ইহা বেঙ্গালের প্রতি কি এ নিয়ম খাটে না? যারা ধরা বাকালির স্বত্ব্য ও কন্যার বহিষ্ঠত। কিন্তু আমরা অগ্রসর করিতেছি, যতদিন পর্যন্ত সবা বাকালী এক বিধা, মোকদমা উপস্থিত হইবে ততদিন সলিল, বিধা সাকী ও নিম্ন

অর্ধেক বিধা বলিয়া বাস্তব বিচারালয়ে ও আপীল আদালত পর্যন্ত অসী হইয়া আত্মপ্রসিক উৎকর্ষ নিম্ন নিম্নে কিঞ্চিৎ লইতে না পরিবেন, ততদিন তাহাকে বিবাহ করিতে দেওয়া উচিত নহে। বিধা করি যা মকদমায় অবলম্বন করিবেন অধিকারী এতদিন বাকালিগের হস্তগত ছিল সবার্ষ বটে পুনা অবজ্ঞা হর বিধা বৎ-ন নাট, কিন্তু জীবিত কন্যা বাকালিগে আসিয়া বা জীবিতগেব তুল্যকর মতিত এ অধিকারী করণ করিয়া, সেইমতেন পুনা অবজ্ঞারবর নীলকমিনের বিধাট মেখিলেট গামবা মত। কি বিধা ১৫০০০০ জনিতে গাবিবেন পুনা অবজ্ঞারবর ওকপ প্রস্তাব না করিয়া যদি ওকপ প্রস্তাব কবিতেন যে বাকালিগা বাবৎ ঘন ঘন ভোজপান ও ছারাব ন্যায় আত্মগত্যাগি যারা বিচারপতিগিকে তুলাইতে না দিখিবেন, তখন বিবাহ করিতে পারিবেন না, তাহা হইলে তিনি নিঃসন্দেহ ধন্যবাদ পাইবেন।

৫৭

গতকাল্য রৌনহালে একটি ভোজ ওমৃত্যু হইয়া গিয়াছে। প্রায় ছয়শত ব্যক্তি তথায় উপস্থিত ছিলেন। মকসাদারের মজুরিগের সহায়তার জন্য এই ভোজ হর নিমন্ত্রিত ব্যক্তিরা প্রত্যেকে ৩০ টাকা দিয়াছেন। স্পেন ও উইলসনের কোটেল হইতে তাহারা বিনা ব্যয়ে আহাতির সবা পাইয়াছেন।

ফোট ম'গপুর হইতে একজন বিনিক পত্রে লিখিয়াছেন নিম্ন বহিষ্ঠত প্রদেশেও কানটোল্লি পুনিং হইতেছে। এদিকে বঙ্গদেশে হাবড়া পর্যন্ত উক্ত পুলিশ হইয়াছে।

উক্ত পত্রপ্রেরক তা সও বলেন ফোটনা গপ্তের রাজান বাহাদুরের সহিত বিবাহ হওয়াতে উক্তর গবর্ণমেন্টের নিকটে আবেদন করিয়াছেন। আপনাদিগের গৃহ বিবাহ আপনারা নিষ্পত্তি করিয়া লওয়াই শু মুখ্য কপ, তাহা পানিলে হান, মধ্যাহ ও যাবীত তা প্রভৃতি সদস্যর রক্ষা হয়, তাহা না পারিলে পেরস্পর বিবাহ করিয়া উৎসাহ না হইয়া এই উপায় অবলম্বন করা কল্ল নহে।

টাইমস অব ইতিহাস বলিয়াতায় সপ্তাহ দাড়া বঙ্গের রাজা নিরুত্তর হইতে পরিচ

স সহকারে ইংরাজী অধ্যয়ন আরম্ভ করিয়াছেন। রাজা এখনে বাঁচা শাস্ত্র ও রাজনীতিবর্ত্ত পুস্তক পাঠ করিতেছেন।

মাদ্রাজ টাইমস বলেন, সম্রাতি জর্জের বাজিরা (ইবার) সকলেই কাশ্মিরী ও পূর্ব উপলক্ষে রাতে মহাসমারোহে পূর্বক শিবির ও মগরনিয় গমন করিতে তৎকালিকর সহিত অন্য অন্য প্রেণীর যোজ্যত্ব বাকালি হইয়াছে। কিন্তু ভারতবর্ষে তিন অন্যর প্রাণি একপে খর্ষ হইয়া প্রায় বিবাহ কর না বঙ্গদেশে কেবল একটি কুস্তান আছে। সর্বদা ধারতে শুনিয়া বিশ্বদুগর হইবেন পাছু রাতে কোন হিন্দু বাজনা বাজাইয়া বাইলেই ততর্ক মুসলমানেরা হালকপ্রের।

বেঙ্গল সোসাইটিতে গতকাল্য বারু কিলে রীচীল মিড্র আ ১৫ ব্রীলোকপনেনে অবস্থার বিবরে এক ব পাঠ করিয়াছেন প্রস্তাবের কাল উক্তী ইহা কার্যের কাজ করে আসিবে?

১৯ অগ্রহায়ণ শনিবার।

বিনিক বলেন, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে আত্মবন্দে হইতে ২৫ টি উত্তর অব আদির অন্য কাগেন কুপার ৭৩ একজন অধি কিঞ্চিৎ সাক্ষ্যপ্রেরণ করিয়াছেন। এই সকল অধেব অন্য গবর্ণমেন্টে ২৭,৫০০ টাকা প্রদান করিয়াছেন। এই অধ্বারা একদেশে উৎকর্ষ অব উৎপাদন করা এই ভেটীর মুখ্য উৎকর্ষ। এদেশের লোককে বলবান করবার উদ্দেশ্যে হইতেছে।

মাদ্রাজ টাইমস বলেন, তত্ত্ব্য আত্মবিনীর্থে উর জেনেরালের উপর সকলে বিরুদ্ধ হওয়াতে উক্ত পত্র উত্তীর্ণ হইবে। অন্যবশ্য কণম উত্তীর্ণ মিড্র বঙ্গ-ব্যয় সংকল্প হইতেই হবলের বিবর।

সম্রাতি মাদ্রাজের প্রাণকম বিচারালয়ের সেকিটনের কার্যারম্ভে সর ম'গুসল বণিয়াছেন এবার অঙ্গসংগর মধ্যে সনে ক কপি প্রভৃতির পপ তি অগ্রতীত হইয়াছে। ৫০০০ জন লোক আছে। এক বেষ্টা ও তাহার উপগতি পর এক ব্যক্তিবে বধ করিয়া তাহার হৃৎ হইয়াইয়া রাখে। এক বণিক এক উকৈ টাকা



নেপালসেই চতুঃপাক্ষী পুনর্বার বীণ  
 বাজীর সহস্রাঃ গিরি চঃ সমুদ্র হইয়াছেন,  
 নেত্রীর কান্দি ইতি ইত্যাদি।

থাকার অবসরও পড়ে উঠেছিল রাজ।  
 ইংলিস্টদের বিতীর্ণ পুরা রাজ্যে যাব জায়ে  
 করস গোনের রাজ্যে হইবেন । ১৮-৩২ অঙ্গের  
 সন্ধি অনুসারে ফুল ইংলণ্ড ও কুশীরাজ রাজ  
 বংশীর কেহ উক্ত দেশের সিংহাসন পাউতে  
 পারিবেন না । জৌদিয়েরা আর কোন কল্পণী  
 কে মটাবেন না । ইটালী একশে ইংলিশের নাম  
 স্বাধীন অতএব রাজকুমার আলফ্রেড সিং  
 হাসন না পাউলে আমদিস্তদের রহ এয়া  
 অসম্ভাবিত নহে ।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভা

২৩ এ অক্টোবর শনিবার।  
অ'লেন সচিব কলিকাতার স্ক্রু অ'ল'র  
সংজ্ঞা শু বিজ্ঞেব সিলেক্টকমিটিব প্রি' ১৫ অ'ল'র  
কমিটিয়ে। এই বিল নিম্নপু'রোক্তন ৫, ৬ ও ৭-  
৩৫ পরিভা'কু'ইল।

পল্লীগাম্বে একের অধিক কয়েক ব্যক্তিও অগ  
বাধে দাঙ্গা হটলে পান্ডার নন্দন লোকের জ  
মানী কবিবার বিলের দিবাগ্নি সিলেক্ট কমিটি  
বিপ্লোট কবিদ্যাছেন, ইন্ডের সাংগেব তাহ। সভায়  
অর্পণ ক বরা। বল্লেন এখান ইত্যাদি আবশ্যক  
তা নাই। বেটলাও ও পিটম'স সাংগেব ইত্যাদি  
প্রতিবাদ করিলেন। কিন্তু সভাপতি ও অন্য  
জনা সভা একমত হওয়াতে ছিল অগ্রাহ্য হই  
ল। বেটলাও সাংগেবের প্রস্তাবানুসারে পিটম'স  
সাংগেব কুলি প্রেরণের বিলের সিলেক্ট কমিটির  
এক জন সভ্য হইলেন।

ভারতবর্ষীয় বায়বীয় পদ সত্য।

২৬ এ অক্টোবর দুখবাব ।  
সেইম সাহেব করার তলের বিলে সিলেটে  
কমিটির রিপোর্ট প্রদান করিলেন । তিনি ইণ্ডি-  
র বিষয়ে আলমস কিসুই বলিলেন না ।  
তিনি আনু ১৮৬১ অব্দের ২৯ অক্টোবর মংলা-  
ধন বিষয়ক এক বিল প্রণয়ন করিবার অনুমতি  
চাহিলেন ।

ହାରିଂଟେନ ମାତେବ ହେଉଥାନ୍ତି ସକଳଙ୍କ କବିତା  
ର ଅବିନେୟ ନାଟ୍ୟାବଳୀ ବିଭକ୍ତ ବିଳାସ ଅର୍ପଣ କର  
ଥେନ !

माधव काटोहर कला कुंभ महेबाब विजय  
 ये मिळाले कर्मणि "इष्ट" न. मिळाले उद्देशाने  
 माधव काटोहर कला कुंभ महेबाब विजय

ইউরোপীয় সভাচার ।

উৎস। ইংলণ্ডেরী খরাজো প্রত্যাগমন  
 করিয়াছেন, আগামী বৎসর কাঁচো সুবর্ণাজো  
 বিবাহ হইবে। রাজকুমারী আদেলক জগ্গি ন  
 রাজীব মিকটে বাস করিতেছেন; কিন্তু বক্রমিন  
 বিবাহ ন) বহু, তৎদিন রাজী রাজকুমারকে আ  
 জোজগ্গিনার সহিত সাক্ষাৎ করিছে-বিবাহ

কবিরা হন। রাক্ষসের ঔষধ কবিরী ও ক-  
শীলগড়ি একত্র ইটোলিতে আছেন। এমন  
কখনও যিনি 'একদিন' লক্ষ্যে আসি কবির  
হ- মর হারিলম টি বিলিগান মঠে আনিয়ে  
ডিউক ইন্টার্নস আর্কিবিট হইবে। মণ্ডনে আ-  
তনয় সুস্বাদু হইবে।

কৃষ্ণ : সমুদ্রি নোনা জিরান আবেহিক; র  
 দু'ক হস্তাৰ্ণ; কবিত্ব বজা স্তমীরা ও ই'লগেত  
 গাবর্নমেণ্টের বিকট শাস্ত্রীক ত্বন, কিছু জী-  
 বাব তাইটিতে সশ্রুত ত্বন

এসিয়া। ব'জার প্রকার সহিত নিবন্ধ অ'বল  
হইয়াছে। ব'জার জোষ্ঠ পূর ভাঁহার কার্যের  
প্র'ভাব ক'শিয়াছেন। উক্ত দেশে রাজ বিজ্ঞ  
যটিবান সজািন।

শ্রীসেন বাকবিক্রান্তি'র রাজার সম-  
সার 'ভাব' স্বভবে গ্রহণ করিয়াছেন। কোন  
বাক্য উক্ত রাজার চমকিত নাই। বোধ হয়  
শ্রীসেনের রাজকুমার ইন্দ্রজিৎ বাক্য  
ইহাতে পানেন।

উটালি। গ'নব'ল্ভি অনেক লোক চাইছে।  
 'ফ'ন। ক'লেজ সচিব ইটালির পূর্বদিক সো-  
 দাফনাই। সমুটি নেপোলিয়ন যোগ্য সেনা। ক-  
 গি'র'ব'b'  
 ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'b'  
 ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'b'  
 ব'ব'ব'ব'b'  
 ব'ব'b'  
 ব'b'

গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন।

জাফল দেশীয় লেপ্টোনিচ গাছের  
আরোহণসাহায্য নিয়োগ।

২৫এ মনেষ্য—নগরীর ডেপুটি-মাজিষ্ট্রেট  
ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী নীল-ব্রহ্মান বেদি  
সীপুবে মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা প্রাতিষেদ।

২৯৬ নম্বরের—এ. কে. চৌধুরী সাহেব ক.  
আপুনের ডেপুটি কমিসনার হইলেন।

ক্যাপ্টেন, টি, জাফর হুদাঙ্গের ভেথুটি কবিসমর  
হইবেন।

সেপ্টেম্বৰ এচ, কোজাৰীৰ পোহালগা  
ফাৰ শ্ৰুতিনিধি কেপ্টি জনিমবৰ হুচেৰন।

এখন গণিত বজাদেশীকৃত পুলিশ মোমকন যু  
জ্জ্বল্য গবন কবিলা মিত্র লিখিত। আকিসনে  
ডাকখো কার্য কহিবেন—

সেন্টিনকে এক, ডবলিউ এডওয়ার্ডস।

“मि, एक, कुरुपि।”

“ଏହା, ଏହା, ବୁଦ୍ଧ, ମହାତ୍ମା ।

“सि. अम. अति”

জানার, যেহেতু বাজিবেট ক. ডেপুটি, কামে  
ইর এম. ডিপুটিয়ার বহু ইক. জেনার বাজিবেট  
টের ল. প. কামে বাজিবেট।

২৯। ভিনেবর—শিবদাসদেব, অতিথি

নিজস্বাধীন স্থান। ১৯৩৭ সালে  
পূর্ব গঙ্গা কবিগণ তাঁহা ১: ১৫০০  
সংখ্যায়। তথ্যই তিন একবার খোঁজ  
জিজ্ঞাসা করে। অ. ক. ম. ম.। কিন্তু তাঁহা  
পরমবন্ধ। অধুনা নব্বোটা ন. ঘোষাল,  
শিউরে নবজনের। ১৯৩৭ সালে ও অধুনা  
অধুনা ন. ম. ও অধুনা শাসন।





# সোমপ্রব

“স্বপ্নলীলা প্রতিনিধিত্বম্ যথার্থম্: স্বপ্নলীলা মুনিবল্লী ন বীজলী।”

৫ ভাগ।  
৩ সংখ্যা।

সন ১২৬২। ৮ পৌষ। ইং ১৮৬২। ২২ ডিসেম্বর

১০ টাকা।  
১০ টাকা।

## বিজ্ঞাপন।

আমি কাব্য নির্ণয় নামে একখানি অলংকার গ্রন্থ বঙ্গলা ভাষায় প্রথম পুস্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছি। মূল্য ১ টাকা। কলিকাতা মুদ্রাপুর বিদ্যালয় বঙ্গ অথবা সংস্কৃত কলেজে প্রযুক্ত পিয়ারিচন্দ্র বিদ্যালয় মহাশয়ের নিকটে অর্জনা করিলে পা ইবেন।

জীলালমোহন ভট্টাচার্য।

## বিজ্ঞাপন।

এই মহাশয়ের নিম্নলিখিত পুস্তক গুলি বিক্রয়ার্থে স্থাপিত আছে।

|  |                   |     |
|--|-------------------|-----|
| সেবনাম বখাব্য                            | ১ম ভাগ সলীক মূল্য | ১।০ |
| ২য় ভাগ                                  | ১                 |     |
| ভিলোত্বাসম্বল কাব্য ২য় বার মুদ্রিত      | ৬                 |     |
| বীরাঙ্গনা কাব্য                          | ১০।০              |     |
| চন্দ্রকুমারী নাটক                        | ২                 |     |
| পদ্মাবতী নাটক                            | ৬০।০              |     |
| বৃদ্ধ মালিকের খাতিরের গৌ ২য় বার মুদ্রিত | ৭                 |     |
| একেই কি বলে সত্যতা ২য় বার মুদ্রিত       | ১।০               |     |
| শশিধরা নাটকের ইংরাজী অনুবাদ              | ২                 |     |
| সীতাহরণ                                  | ১                 |     |
| বাসবদত্তা                                | ১।০               |     |
| মাহিত্য মুক্তাশলী                        | ১।০               |     |
| মুগ্ধবোধ                                 | ৭।০               |     |
| আক্ষিপাণ্ড মানচিত্র                      | ২                 |     |
| প্রথম পাঠ                                | ১।০               |     |
| প্রাণিচরিত                               | ১।০               |     |
| গোলাকের উপযোগিতা                         | ১।০               |     |
| ইন্দ্রকুমারের আইন                        | ৬                 |     |
| উদাহরণ বঙ্গালয়                          |                   |     |
| ১২ ১৩ ১৪ বঙ্গবীজের রোড                   |                   |     |

জীলালমোহন ভট্টাচার্য

## বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণের গোচরার্থে প্রকাশ করা যাইতেছে যে কলিকাতার গবর্ণমেন্ট ও গবর্ণমেন্টে সাহায্যত এবং অপর বঙ্গবিদ্যালয় সমূহের বালকগণের উৎসাহার্থে গবর্ণমেন্টে বার্ষিক যে মরতি অটকনিক হস্তান্তর প্রদান করিয়াছেন আগামি ২০শ, ৩০শে ৩১শে ডিসেম্বর সোম, মঙ্গল, বুধবারে কলিকাতার নবদ্বীপ কলে এই সকল বাল্যাকাডেমিকগণের পরীক্ষা হইবেক। ১১ বৎসরের অধিকবয়স্ক বালকেরা উক্ত পরীক্ষায় গৃহীত হইবেক না।

কলিকাতার যাবতীয় বাঙ্গালা পাঠশালায় বালকগণ উক্ত পরীক্ষা দিতে পারিবে। কেবল তাহাঙ্গিরের সচরিত্রের এবং কলিকাতার এক বা একাধিক পাঠশালায় অস্থান হয় বাস কাল অধ্যয়নের বিশ্বাসযোগ্য প্রমাণ বাহারা দিতে না পারিবে তাহারা পরীক্ষা দিতে পারিবে না।

যে বালক প্রাপ্ত লিখনে এবং পুস্তক পাঠে অপারগ হইবে তাহাকে অন্যান্য বিষয়ের পরীক্ষায় গ্রহণ করা যাইবে না।

যে যে বালক পরীক্ষোত্তীর্ণ হইয়া এই সকল হস্তান্তর পাইবে তাহারা হিন্দুকলে বা অন্য গবর্ণমেন্ট কলে বিনা বেতনে পাঠ বৎসর পাঠে করিতে পারিবে।

কলিকাতা  
১৮৬২ সাল  
১১ ডিসেম্বর

## বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণের গোচরার্থে প্রকাশ করা যাইতেছে যে কলিকাতার যাবতীয় বাঙ্গালা পাঠশালায় বালকগণ উক্ত পরীক্ষা দিতে পারিবে।

পর তাহার কোম ইচ্ছাধিকারী না হইলে তাহার শিষ্টাচার ও আচার কাঁচা হইবে।  
১৮৬২ সাল  
১১ ডিসেম্বর

জীলালমোহন  
সন ১২৬২ সাল  
১১ ডিসেম্বর

কলিকাতার জিলাত অফিসে  
১৮৬২ সাল  
১১ ডিসেম্বর



কলিকাতা কোম্পানির নিকট  
যে জাতি ন কিং হস্তান্তর আনিতে  
টে আবেদন করিলে নবিক  
পারিষদে

## সোমপ্রকাশ

৮ই পৌষ ১২৬৩ চন্দ্রকুমার তর্ক  
প্রেরিত যে ব্যবস্থা ১লা পৌষের  
মঙ্গলবারে প্রকাশিত হয়, তাহা  
সমস্ত বোধাত্মক বাণীশ ৩২ সংখ্যক একখানি  
প্রেরিত পত্র আমাদিগের নিকটে প্রেরণ  
করিয়াছেন, তাহা বখাণীতি ও সংক্ষেপে  
লিখিত হওয়াতে অসম্পূর্ণক গৃহীত ও  
গণ্যহুত প্রকৃতি হইল। তর্কবাহী ও  
বখা বা বক্তৃতা না করিয়া বখাণীতি উক্ত  
কর্ম করিয়া প্রকৃতকর্তার সংশয় ছেদ করে  
হাস্যাদিগের অনুরোধ।

পৌষ সোমবার বেলা ১০ ঘটিকা  
মধ্যে নিম্ন লিখিত পত্র খানি আমা  
হস্তগত হইয়াছে। পত্র পাঠ করিয়া  
র নাই বিস্ময় হইয়াছি। আম  
কর্তৃক এই পত্র প্রেরণের স্তোত্র করিব,  
কিন্তু এতটুকু ইচ্ছা না, পাঠকগণও তাহার  
অর্থপ্রার্থী হইবেন এবং যাঁহাদিগের হস্তে  
বন্দোবস্ত করিবার ভার আছে,  
ও দেখুন, ফেরন কীভাবে অর্জন  
হইবে। সে পত্র এই—

হাস্যাদিগের।

গাঙ্গাধর শনিবারে পুজোপলক্ষে আমা  
বিদ্যালয়ে এক মঙ্গল চরিত্রিত্তির জন্য  
ইবে, এবং আদিও নিজস্বগীতে যাইব।  
এবং আগামী সোমবার হইতে আমা  
সোমপ্রকাশ দেহেরপুত্রে না পাঠাইয়া

গাঙ্গাধর গভের পাড়া।  
বেল, তাহা হইলে  
ইবেদন ইতি।  
বিবাহ।

আম . আরো একখানি সংক্ষিপ্ত পত্র  
প্রকাশ করিলাম। যদি এতৎপত্র  
কর্তব্য অনুষ্ঠিত হয়, তবেমেকের অ-  
দূর হইবে পত্র এই—

সম্পাদক মহাশয়। পূর্ববাঙ্গলার রেলওয়ে  
কোম্পানির যে এককলি চৌব দুই হটল, তন্ম  
যে প্রধান এককলি অন্য উল্লিখিত হইতেছে,  
তাঁহারা অবগত হইয়া সংশোধন করুন।  
যে সমুদায় টিকিট মুদ্রাক্রিত হইয়াছে সে সমুদা  
য়ই ইংরেজি ভাষায় স্তত্রাং সাধারণের বো  
ধগম্য নহে, সময়ে সময়ে টিকিট বিলি বখাচা  
রিয়া দুয়ের ইন্টেনশনের মাসুল লইয়া নিকটে  
র ইন্টেনশনের টিকিট দিয়া ইংরেজি ভাষায়  
অনতিদূর লোকদিগকে বক্তৃতা করিয়া আপ  
নারা বিলকণ লাভ করিতেছেন। প্রকৃত  
লোকেরা তন্মত্ব অপরানিত হইয়া দ্বিগুণ  
মাসুল দিয়া জ্ঞান পাইতেছে। "ইহাকেই  
বলে নায়ে কড়ি দিয়া বুঝে পার" এক্ষণে  
কোম্পানির উচিত, তাঁহারা টিকিট ইংরেজি ও  
বাঙ্গলা দুই ভাষাতেই মুদ্রিত করেন।

কোন আরোহী কুমার খানী

পত্র প্রেরক যে লিখিয়াছেন, এক ই-  
ন্টেনশনের মাসুল লইয়া অন্য ইন্টেনশনের  
টিকিট দেওয়া হয়, একথা অবধারণ নহে।  
আমরা সর্বদা রেলওয়েতে গমনাগমন ক  
রিয়া থাকি। প্রায়ই দেখিতে পাই, ইং-  
রাজী অনতিদূর আরোহীরা, কোন ই-  
ন্টেনশন হইতে কোন ইন্টেনশন পর্যন্ত টিকি  
ট পাইলেন, আমাদিগকে টিকিট দেখাই  
য়া জামিয়া লইয়া থাকেন। টিকিটে যে  
গোলযোগ হয়, তাহাও ইহার কারণ।  
সম্রাণ হইতেছে। তবে প্রায়ই কৰ্ম  
চারিদগের প্রতি যে অবধান প্রদর্শন  
করিয়াছেন, আমরা তাহা দেখিয়া

জন অপর  
সাধারণ প্রকৃত  
নারী বৃত্ত নহে।  
লোকের

নিম্নলিখিত প্রকৃতকর্তার

হইয়া থাকে। বাহা হউক, পত্রপ্রেরক  
ইংরাজী ও বাঙ্গলা উভয় ভাষায় টিকিট  
মুদ্রিত করিবার যে পরামর্শ দিয়াছেন,  
তাহা উক্তকর্তৃক সৎকর্ম মাই। রেলওয়ে  
কোম্পানিদিগের এ পরামর্শের অনুসরণ  
করা অবশ্য কর্তব্য।

মকবলের বিচার কর্তাদিগের কাব্য ও

চরিত্র মর্শনার তত্ত্বাবধানক নি-

গোণের আবশ্যকতা।

অন্য আমরা আরো দুই খানি পত্র এই  
হলে প্রকাশ করিলাম। প্রধান পুরুষেরা  
অভিনিবেশপূর্বক পাঠ করুন, দেখিতে পাই  
বেন যে সমস্ত বিচারকর্তা সচরিত্র, ধীর-  
কৃতি ও যথাবিধি স্বকর্তব্য সম্পাদন করিতে  
ছেন, তাঁহারা প্রায়গণের কেমন অনুরা  
তাজন হইতেছেন, আর যাঁহারা ইহার  
বিপরীতকর্তব্য ও বিপর্যয়কারী হইতে-  
ছেন, লোকে তাঁহাদিগের প্রতি কিরূপ  
বিরাগ প্রকাশ করিতেছে। আমরা প্রা-  
উ বিবাকদিগকে যোগ্য গবর্নমেন্টের যোগ্য  
প্রতিনিধি জ্ঞান করিয়া তাঁহাদিগের হস্তে  
ধন, প্রাণ ও মান সমুদায় সমর্পণ করিয়া  
নিশ্চিত হইয়াছেন। কিন্তু প্রাতিববাকেরা  
যদি কোথাদিরিপুর একান্ত পরতন্ত্র হইয়া  
তাঁহাদিগের সেই সেই অনুল্লা পদার্থের  
রক্ষণে ব্যগ্রমনা না হইয়া তাহার হস্তা হন,  
প্রায়গণের বিরাগ তাজননা হইবেন কেন?  
অনুধাবন করিয়া দেখিলে এই বিরাগ  
কোথার পর্য্যবসিত হইতেছে বলিয়া প্র-  
তীয়মান হইবে? আর, প্রাতিববাকেরা  
উক্ততাদি কারণ বশতঃ আমরা প্রতি অ-  
ন্য করিলে তন্মত্ব এতৎপ্রকৃতিই  
বা কে হইবেন? গবর্নমেন্ট কি সেই বি-  
রাগ ও প্রত্যাবর্ত্তনী নহেন? সাজাজ  
ক্রমে ক্রমে অত্যন্ত বৃহৎ হইয়া পড়িয়াছে,  
অতএব সর্বত্র সচরিত্র ও উপযুক্ত  
বাক নিরোধ সত্তাবিত্ত হয়, একথা  
কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।

“ইরাক জয়ের অব্যবহিত পরে এক দল  
কার বণিক এই দেশের মরুভূমিতে হত  
হইলে পর উহার অন্যতর বণিকের মাতা  
গজনীতে উপনীত হইয়া এই বিধর সুলতান  
মামুদের গোচর করিয়া বিস্তর বিলাপ ক-  
রিলেন । মামুদ বলিলেন, রাজ্যের তত দুরে  
শান্তিরক্ষা করা তাঁহার সাধ্যারত্ত নয় ।  
তাহাতে জীলোকটী নিঃশব্দ চিত্তে এই  
উত্তর দিলেন, “তুমি যে দেশ শাসন  
করিবার ক্ষমতা নাই এবং বিচার দিবসে  
তোমাকে যাচার রক্ষণাবেক্ষণ কাহার  
জবাব দিতে হইবে, সে দেশ গ্রহণ কর  
কেন : ”

স্থানে স্থানে বিচার পত্রের দোষে যে  
অবিচার হইতেছে, তত্ত্বাবধানের দুটি উপা-  
র আছে । প্রথম, আড্ডি-বাক নিয়োগ  
কালে সজ্ঞিত ও উপযুক্ত পাত্র দেখিয়া  
নিয়োজিত করা ; দ্বিতীয়, নিয়োজিত ব্য-  
ক্তিবিশিষ্টের কাব্য ও চরিত্রের তত্ত্বাবধান  
রীতি অবলম্বিত করা । এই দুটি উপায়েরই  
অবলম্বনে যত্নবান হওয়া উচিত । কিন্তু  
প্রথমটির অবলম্বন নিরতকাল সাধ্যারত্ত  
হইতেছে না । পরীক্ষা লইয়া আড্ডি-বাক  
নিয়োগের রীতি আছে । কিন্তু সচরাচর  
দেখিতে পাওয়া যাইতেছে, বিদ্যারই  
কেবল পরীক্ষা হইয়া থাকে, চরিত্রের প-  
রীক্ষা লওয়া হয় না । সুতরাং যাহাদিগের  
চরিত্র গত দোষ থাকে, কাব্য দালে তাহা  
প্রকাশ হইয়া পড়ে । চরিত্র পরীক্ষার  
নিয়মও সহজ নহে । দ্বিতীয় উপায়ের বি-  
ষয়ে আমাদিগের কয়েকটি বক্তব্য আছে ।  
প্রথম, যাহারা তত্ত্বাবধান ক্রিয়ায় নিয়ো-  
জিত হইবেন, তাহাদিগকে অনন্যস ও  
পক্ষপাতপূর্ণা চিত্তকে সহচর করিয়া চতু-  
র্দিক জ্ঞান পূর্বক সর্ব স্থানের বিচারালয়  
কর্মান করিতে হইবে । তাহারা যে যে বি-  
চার পত্রের কাব্য ও চরিত্রগত দোষের  
বিষয়ে বিশিষ্ট জ্ঞান পাঠ্যের প্রথমে

তাহাদিগকে সাবধান করিয়া দিবেন  
কিন্তু তাহারা সাবধান না হইয়া যুক্তি দ্বিতী-  
য় দ্বারা একপ করেন, তাহাদিগকে দ্বারা-  
করিত করিতে হইবে এবং তাহাদিগের  
নাম অরক্ষণার্থক বহিতে একথা লিখিত হই-  
বে ; উক্তপত্র প্রদান কালে উহার গণনা করা  
হইবে । তাহাতেও না শুধরিয়া উঠিলে  
তাঁহার পদচ্যুত হইবেন । পত্র হয় এই—  
মহাশয় ! রাজা ও প্রজাতে রক্ষা রক্ষ  
কর এবং বর্জ্য বর্জ্যকর সদস্য আছে । উক্তদো  
বর্জন পেশ । রক্ষণই পেশ : কারণ রক্ষণাতা  
বে সজ্ঞানগণ ও অসৎ ব্যবহারগণদ্বারা হইতে  
পারেন । শাস্ত্র কথিত আছে .

প্রজাং সংরক্ষতি যুগঃ সা বর্জয়তি পার্শ্বিণঃ ।  
বর্জনাং রক্ষণং প্রকৃত্তম্ভাবে সচপাশং ॥

রাজা প্রজাকে রক্ষা করেন, প্রজা তাঁহা-  
কে রক্ষিত করেন । কিন্তু বর্জন সাপেক্ষা রক্ষণ  
জের : কারণ রক্ষণাতাবে সৎ ও অসৎ হই-  
য়া যায় :

সেই রক্ষণ মান্য প্রকারে উক্ত হইয়াছে .  
নবরত্ন নামক গ্রন্থে লিখিত আছে—

উৎখাতান্ প্রতিরোপয়ন কৃত্তান্তিঃ শি-  
বঃ শিশুন বর্জয়ন ।

প্রোতুখান নমহন নতান সন্দান বিগোময়ন  
সংকতান

তীতান কটেকিনোবহিঃশিঃগন : মানন যু  
সেচয়

মাল্যকার ইব প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : চিরং  
মক্ষতি

সেজন : পর - পুনরায়  
বোপন, স, শঙ্কর, চরন, বালরক্ষের

বর্জন উক্ত রক্ষণ নীতিগত, নত মন্তক রক্ষ  
র উন্নয়ন এবং গবাপর ক্ষতিত রক্ষের বিচিনী  
করণ, তীক্ষ্ণকরণ যুক্ত বর্জনের ব্যতিকরণ ও

মান রক্ষের ব্যতিকরণ সেচন করিয়া অকীর  
উন্নয়ন এবং সম্পাদন করে, সেই রূপ

( মাল্যকারের প্রায় ) প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : রাজা  
চিরকাল যত্ন ভোগ করিবেন ।

আমরা বক্তব্যে কহিতে, যে বর্জন  
গবাপর ক্ষতিত রক্ষের প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
মাল্যকারের ন্যায় প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : উপদানে রক্ষ

আমরা বক্তব্যে কহিতে, যে বর্জন  
গবাপর ক্ষতিত রক্ষের প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
মাল্যকারের ন্যায় প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : উপদানে রক্ষ

আমরা বক্তব্যে কহিতে, যে বর্জন  
গবাপর ক্ষতিত রক্ষের প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
মাল্যকারের ন্যায় প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : উপদানে রক্ষ

যত্নবান হইয়াছেন ।  
ও উপর্যুক্ত প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া

বিচার মনুষ্য পা  
যত্নবান হইয়াছেন ।

অভিনয় রক্ষ নহে  
মও বিখ্যাত যাবত

অনীতির মারাত্মক  
করা করাকে

মেটের তত্ত্বাবধানের  
কলবান হইয়াছেন ।

এই-বহিঃশিঃগন : করিয়া  
শ অনেক অংশে চুরী

জীলোকদিগের পরা  
আদান প্রদান (বাহ্য

রার প্রায় গত্যন্ত  
শীতনের সময়ে উ

হইয়াছে : তিনি  
র সবিচার করিয়া

মহাত্মা প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
মাল্যকার ন্যায় সর্ব জন

ছে । তাঁহার সত্যগন  
দক্ষ্যতার ঘটনা হয়

মান সময়ে দিন  
তই মহাত্মা কল্যাণ

তবে কল্যাণ, ত  
করি তাদৃশ কল্যাণ

ন । প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
নিয়োগ হই হই

প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া  
মহাত্মাকে প্রোতুখানোবহিঃশিঃগন : করিয়া

আমিনী গদ  
খান মাল্যকার

তাহার করিয়া  
ও বিপুল

বিস্তরণ ১৭৬  
২৬ দিনকোর

না  
জীলোকদিগের

অপরাধ  
করা

করাদেশ  
জীলোকদিগের

করাদেশ  
জীলোকদিগের



বাহিরের সভা গ্রহণ যদি পার্লামেন্ট  
সেই সভার অন্তর্ভুক্ত না হইল, তাহানি-  
গের যদি কোন ক্ষমতাই না রহিল, “ বা  
বহুপক্ষ সভায় বাহিরের সভা গ্রহণ করা  
হইয়াছে ” বলিয়া একটি আদেশ করিবার  
স্বত্ব কলি : সভাপতি আপন আপন  
স্বাধীন বিশুদ্ধ মূল বায়ু পরিষ্কার ক  
... কলিকাতার কুচিত মূল বায়ু ...  
... হইতে হইবে বা কেন ? এই সভার ...

[illegible]



[illegible]

হুদিনাবধি হাজিগিরের খান বিরাগ বহি  
ধূমিত হইতেছিল, সম্প্রতি একটি ঘটনা  
পাশাপাশি সহযোগে হওয়াতে সেই অগ্নি  
জ্বলিছে হইয়া প্রজ্বলিত হইয়া উঠিয়াছে ।  
স ঘটনাটি এই—

বাকলা ক্রাসের ছাত্রেরা তত্ক্ষণে নিগ  
নুসারে প্রতিদিন প্রত্যেককালে পণ্যার  
নমে চিকিৎসালয়ে উপস্থিত হন । ডাক্তার  
রা যে ঔষধ ও পথ্য ব্যবস্থা করেন, তাঁ  
রা তাহা মর্শন ও প্রবণ করিয়া অত্যন্ত  
গাণিধিককে ঔষধ সেবন করাইয়া থাকেন ।  
হাজিগিরকে কৃতকর্মী করাটো এ নিয়মে  
কর্মী, ইহা প্রশংসনীয় মনে হয় না ।

কিন্তু ক্ষেত্রের বিষয় এই, কতকগুলি  
বিষয়কারী অভিমানমত্ত ডাক্তার এই  
কর্মীতাটা বিদ্বেষিত হইয়া মনে করেন, গব  
র্নমেন্ট হাজিগিরকে তাঁহাদিগের ও রোগিদি  
গের পরিচর্য্যা নিয়োজিত করিয়াছেন ।  
হাউক এক দিবস বনমালী চট্টোপাধ্যায়  
সঙ্গে এক ছাত্র আপনাত কর্তব্য করিতে  
হন । ঐ দিবস তত্ক্ষণ এক পরিচারকের  
দ্বিত তাহার বিরোধ হয় । তিনি চলিয়া  
যাইলে ঐ পরিচারক বৈরমিষাতনাধী  
ইয়া কয়েক ঘণ্টা কুইনাইনের একটি  
মাত্রা হস্তে করিয়া প্রথম ইংরাজী ক্রাসের  
এক যুবকের নিকটে গিয়া কহিল, বনমালী  
করিয়া লইবার উদ্দেশ্যে এই কুইনাইন  
প্রস্তুত করিয়াছিল, লইয়া যাইতে পারে  
নাই । যুবক জিজ্ঞাসা করিলেন “তুমি  
কুইনাইন সহিত তাহাকে ধরিলে না কেন ?  
পরিচারক সঙ্কটের দ্বিভে পারিল না ।  
যখন সে লোক সাহেবের নিকটে গিয়া  
কথা কহিল । সেও চীৎকারে ন্যায়  
বাকলা ক্রাসের প্রতি প্রতি ও প্রসন্ন নহেন  
পরিচারকের কথাই তাঁহার বোধজ্ঞান হই  
ল । তিনি বনমালীকে চোর দ্বির করিয়া  
অপোলের মিঃটে রিপোর্ট করিলেন  
হাজিগিরের নামে । প্রিন্সিপাল বিশেষ  
অনুসন্ধান না করিয়া এককর্মী পুলিশে

পাঠাইয়া দিলেন । পুলিশ উক্ত পরিচারক  
ও সেকের বাকো বনমালীর দল দিমের  
কারাবাস কর্তৃক করিলেন । প্রিন্সিপাল  
যদি বিশেষ অনুসন্ধান করতেন বনমালী  
কখনই দোষী হইতেন না । তিনি তাহা না  
করিয়া যখন এক ক্ষুদ্রকর্মী পরিচা  
রকের বাকো এক জন ভদ্র লোককে বিনা  
পরোধে কারা প্রাপ্ত করিলেন, তখন তাহার  
কি চরিত্রা ঘটে, এই শঙ্ক করিয়া এবং  
ব্যবহার অপমান হইতেছে, তাহার প্রতি  
কার হইতেছে না, এই ভাবিয়া বাকলা  
ক্রাসের অপরাধজ্ঞান এক বাকো কালেক  
পরিচর্যা করিয়াছেন ।

আমরা অনুসন্ধান করিয়া জানিলাম,  
এ যথার্থ বৃত্তান্ত । এই বৃত্তান্ত প্রবণ  
করিয়া আমাদিগের কোম রূপেই বনমালী  
কে অপরাধী বলিয়া বোধ হইতেছে না ।  
বনমালীর কুইনাইন চুরী করা যদি অতি  
প্রোত হইত, তিনি পুরিয়া প্রাপ্ত করিয়া  
কেলিয়া আসিতেন কেন ? পরিচারকেরা  
তাঁহাকে সেই পুরিয়া সহিত ধরিল না  
কেন ? কেবল এক সন্দেহের উপরে নির্ভর  
করিয়া বনমালীর দণ্ডবিধান করা হইয়াছে  
অতএব আমরা পুলিশের উপরেও সন্দেহ  
হইলাম না । বনমালী যদি বাস্তবিকই  
চুরী করিবার অভিপ্রায়ে কুইনাইনের পু  
রিয়া বাধিয়া থাকেন, এবং বিদ্বেষিত ক্রমে  
অথবা সুযোগ না হওয়াতে তাহা কালে  
কে কেলিয়া আসিয়া থাকেন, তাহা হই  
লেও যখন পুলিশ বিশিষ্ট প্রমাণ পাই  
লেন না, তখন কেবল এক সন্দেহের  
র নির্ভর করিয়া দণ্ড বিধান আইন অনু  
সারে ন্যায়ানুগত হইতে পারে না । বন  
মালী যে নিদোষ, তাহার অপরাধ প্রমাণ  
এই, যে চোর হইলে ১৫০ ছাত্র তাহার  
দ্বন্দ্বিতা হইয়া কখনই কালেক পরি  
চর্যা করিতেন না । অতঃ লোকের কথা  
দূরে থাকুক, ছোৱের সহিত চোরও সম  
দ্বন্দ্বিতা প্রমাণ করিয়া ; করিবার ই

চ্ছা থাকিলেও বাহিরে প্রকাশ করা  
পারে না ।

যাহা হউক, আমরা উপরে  
পুনরাবহিত হই, বনমালীর  
দণ্ডটা হাজিগিরের কালেক প  
নিমিত্ত মাত্র । চীৎকারে অন্যান্য  
র বাস্তবিক কারণ । এক্ষণে  
মেডিকাল কালেকের প্রধান  
একদিন একটি কমিটি করিয়াছিলেন ।  
বাধ্য বলিয়া সর্বদা হ. ক্রাসের নাম  
হাজিগিরের অবধারিত হইয়াছে ।

নর্থনু চীৎকার ও হাজিগির উভয়ের  
যাই আমাদিগের নিকটে প্রতিকার  
প্রতীক্ষান হইতেছে । আমরা এই  
জনীন ব্যবহার দেখিতে পাই, বিশেষ  
লোকে হাজিগিরকে পূজা নিমিত্তে  
করেন, কিন্তু চীৎকার তাঁহাদিগের  
জ্ঞান করিতেছেন । কোন্  
ধার কবে কোন্ হাজিগির পুলিশে  
হেন ? চীৎকার যে হাজিগিরকে  
মর্শন করেন, ইহাই তাহার  
ধারণ প্রমাণ । হাজিগির বালক, তাহার  
সর্বদা কর্তব্যকর্তব্য বোধে সর্বদা  
পদে পদে তাহাদিগের অপরাধ  
সত্যবদ্য আছে । পুলিশে  
কে কি সেই দোষ সংশোধনের  
নাই ? প্রিন্সিপাল পুলিশে  
যদি সর্বদা অপরাধ হাজিগিরকে  
অথবা নাই কর্তব্য করেন, অপরাধজ্ঞান । কি  
সেই দৃষ্টান্ত মর্শন করিয়া আপন আপন  
দোষ সংশোধন করিয়া করেন না ? তত্ক্ষণ  
প্রিন্সিপালের কি করেন ? কোন বালক  
বুদ্ধিমান প্রবুদ্ধ হুঁকিতে না পারিয়া কোন  
অপকর্ম করিলে তাহার প্রথমে হিতমত  
পদে তাহা তাহাকে সাবধান করিয়া  
তাহাতে সাবধান না হইলে অর্থদণ্ড  
দণ্ড কর্তব্য করেন, কিন্তু আমাদিগের  
প্রকৃতি, দয়ালুত্ব, হিন্দুত্ব, চীৎকার  
সাহেব মূর্তনবিধ প্রণালী অবলম্বন করিয়া



হেঁচ। মাথরা সুনিয়ামি, চীৎস সাচিব  
 চাঁ দিকে “ হারামজান, চোর ও  
 হিঃ ১১৫। সি অবশ মধুর সুশ্লিষ্ট বাক্য  
 র। বাস জন করিয়া থাকেন! যদি এ  
 ত্যা গর । হয়, তাঁহার তুল্য অপকৃষ্ট  
 হা ক ঐন্দিপালের মধ্যে যেহ  
 যাইছে- আমাদিগের ত একপ বোধ হয়  
 না। হা “ চোর ও কুলি ” তাঁহার এ  
 সংকার কোথা হইতে জন্মিল? দুই এক  
 জন ছাত্রের চৌর্য দেখিয়া কি তাঁহার এই  
 সংকার জন্মিয়াছে? তাহা হইলে ত তাঁহা  
 র অন্তঃকরণ অতিশয় উদার ও বুদ্ধি নিতা  
 হু জীৱ বলিতে হইবে!! এদেশের যে স  
 কল গাঁও ২।৪ জন ইউরোপীয়কে অসৎ  
 দেখিয়া যাবতীয় ইউরোপীয়কে অসৎ ব  
 লিয়াছির করিয়া রাখিয়াছেন, চীৎস তা  
 হারিক কি বোধ করেন? বালা ক্রাসের  
 হা “ চীৎস ” রও স্বভাবগত দোষ নাই,  
 একথা আমরা কহিতেছি না। কিন্তু আমরা  
 যত দূর জানি ঈর্ষাকরে কহিতে প রি  
 উহাদিগের অনেকেরই চরিত্র উৎকৃষ্ট  
 এবং অনেকেরই তত্ত্ব গৃহে জগৎপ্রবণ করি  
 য়াছেন, তবে পিতা মাতার অসঙ্গতি প্রযু  
 ক্ত কাল রূপে লেখা পড়া শিখিতে পারে  
 ন নাই, তাই বালা ক্রাসে এবিধ হইয়া  
 ছেন।

হাতিদিগের প্রতি আমাদিগের বক্তব্য  
 এই, তাঁহারা কালেজ পরিত্যাগ করিয়া গ  
 র্হিত্ত কর্তব্য করিয়াছেন। চীৎসের অসম্মান  
 ঐন্দিপালের অসঙ্গ হইয়াছিল,  
 তাঁহারা কালেজে থাকিয়া উপবে জানাই  
 লেন নাই কেন? তাঁহারা কি এই শঙ্কা করি  
 য়াছিলেন যে উপরের কর্তৃপক্ষ ঐন্দিপা  
 লের বিরোধী বলিয়া তাঁহাদিগের আবে  
 দন অগ্রাহ্য করিবেন? সেটা তাঁহাদিগের  
 জ্ঞানি। ঐন্দিপাল হউন, আর যিনি হউন,  
 আজি কালি কেহ বা ইহা কহিয়া  
 পার পাইতে পারেন না। ইহা নী ন উপ  
 র কর্তৃপক্ষের বিচার দ্বারা সত্য উদ্ভা

টিত আছে। ন্যায় প্রার্থনার তাহাতে প্রবে  
 শ হইবে নহে। অধ্যাপক ও অধ্যাপকে  
 সহচর করিয়া কার্যে প্রবৃত্ত হইলে সৰ্ব  
 লোকেই কৃতার্থ হইতে পারেন সন্দেহ  
 নাই।

ইহাব চরম ফল কি হইবে, জানিবার  
 নিমিত্ত পাঠকগণ উৎসুক চইবেন সন্দেহ  
 নাই কিন্তু এখন নিশ্চয় করিয়া কেম কথ  
 বলা আমাদিগের সাধ্যাত্ত নহে। এক্ষণে  
 সমুদায় বিবরণ লেণ্টনটগবর্নরের বিবেচনা  
 উপর নির্ভর করিতেছে। শুনাগেল ছাত্রেরা  
 আপাদিগের কালেজ পরিত্যাগের বিষয়  
 জানাইয়া ঐন্দিপালের নিকটে যে আবে  
 দন করেন তাহা লেণ্টনটগবর্নরের নিক  
 টে প্রেরিত হইয়াছে এবং তাহাতে এই  
 রূপ লিখিত হইয়াছে, ছাত্রেরা এক জন  
 চোরের সহিত সমস্বত্বতা ও অব্যাহত  
 প্রকাশ করিতেছে, অতএব তাহাদিগের  
 নাম কাটিয়া দেওয়া গেল। এত লোকে  
 কালেজ পরিত্যাগ করে কেন? ইহার স  
 বিশেষ অনুসন্ধান না লইয়া লেণ্টনট  
 গবর্নর কেবল যে চীৎসের বাক্য প্রমাণে  
 বালা ক্রাসের যাবতীয় ছাত্রের নাম  
 কাটিয়া দিতে কহিবেন এবং যত দিন  
 সূতন ক্রাস না হয়, ততদিন অধ্যাপক  
 দিগকে বসাইয়া বেতুন দিবেন, ইহা  
 কোম ক্রমেই জয়যম হইতেছে না। যদি  
 তিনি অন্যায় অনুরোধবশবর্তী হইয়া  
 ঐন্দিপালের মানরক্ষার্থ হাতিদিগের নাম  
 কর্তনের অনুমতি দেন, অতঃক অন্যায় করা  
 হইবে। এ বিষয়ে মূল দোষী ঐন্দিপাল,  
 ছাত্রেরা নহেন। যিনি মূল দোষী, তিনি  
 দিনান্তে অব্যাহতি পাইয়া বিরাজ করি  
 বেন, আর সেই মূল দোষীর দোষ যাহা  
 দিগকে অনুচিত কার্যে প্রবর্তিত করিল  
 তাঁহা বা দণ্ডিত হইবেন, ইহা কি কখন  
 ন্যায়ানুগত হয়? আমাদিগের মতে উক্তরূপ  
 দণ্ডনীয়। লেণ্টনটগবর্নর উক্তরূপে এ  
 ব্যয় সাবধান করিয়া দিয়া এ বিবাদের

মাংসা করিয়া দেন, এই আমাদিগের  
 অভিপ্রায়। তাহা না করি। যদি এই ১৫০ ছাত্র  
 ছাত্রের নাম কাটিয়া দেওয়া হয়, বালা ক্রাস  
 দেশের একটি মহতী ক্ষতি হইবে। উহা  
 রা শিখিত হইলে বালা ক্রাস দেশের কুচি  
 কিৎস কষ্টেব অনেক নিবারণ হইবে  
 সন্দেহ নাই। আমাদিগের যেকপ অভি  
 লাস, বালা ক্রাসের ছাত্রেরা তদনুরূপ  
 সুশ্লিষ্ট না হউন, উহারা যেকপ শিক্ষা  
 পাইতেছেন, তাহাতেও বালা ক্রাসের  
 অনেক উপকার লাভ হইতেছে। উপকার  
 হইতেছে বলিয়াই আমরা মধ্যে মধ্যে ঐ  
 ক্রাসের উৎকর্ষ সম্পাদনার্থ গবর্নমেন্ট,  
 কালেজের কর্তৃপক্ষ এবং শিক্ষকগণকে  
 উত্তেজনা করিয়া থাকি।

পরিশেষে আর একটি কথা উল্লেখ  
 করিয়া প্রস্তাবের উপসংহার করা যাইতে  
 ছে। পরম্পরা শুনা গেল, এই ঘটনার  
 পর অবধি নার্মান চীৎস অনেক শিষ্ট  
 হইয়াছেন।

### বিধবাবিবাহ ।

গত ৩০ অগ্রহায়ণ রবিবারে জাভানাবা  
 দেব সন্নিক্ত হাজীপুর গ্রামে মহা সমারে হে  
 একটি বিধবাবিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। জীবন্ত  
 রাজারাম যোগোপাধ্যায় বর, বরের সস্ত্রাক্রম  
 ২৪ বৎসর, এই তাহার প্রথম বিবাহ। কন্যার  
 নাম জীবন্তী তরঙ্গিনী দেবী। ৭ সাত বৎসর  
 বয়সে তরঙ্গিনীর প্রথম বিবাহ ৩৮ আট  
 বৎসর বয়সে ঐশ্বর্য্য সঙ্গটন হয় এক্ষণে  
 উহার বয়ঃক্রম ১০ মণ বৎসর মাত্র।  
 জিলাবাড়ার অন্তঃপতী পার্শ্বতীপুর নিবা  
 সী নন্দকুমার চৌধুরীর সহিত তরঙ্গিনীর প্র  
 থম বিবাহ হইয়াছিল।

বিধবাবিবাহ নিরূপ হইয়াছে, উৎপাত  
 গিয়াছে, যনে করিয়া বাঁহারা উল্লসিত হই  
 য়াছিলেন, অল্যতনীর সখাদ তাঁহাদিগের  
 দিসংকর, আর বাঁহারা ভগ্নোৎসাহ হইয়া  
 ছিলেন, তাঁহাদিগের উল্লাসকর হইবে সন্দেহ  
 নাই। পরীক্ষায়ে যখন কয়েকটি বিবাহ  
 সম্পন্ন হইবে, তখন যে ইহার বি

নিম্নলিখিত প্রকৃতিতে তথ্যের আরও আলা-  
বিগত, সৎকার-রহিত হইতেছে না। বিদ্যাসাগর  
র হই প্রতিক্রিয়া জীবী নহ, তিনি অনেক ন-  
সেই বিবাহবিবাহকে পিতামাতার ও বধুবরের  
ইয়া প্রবর্তিত ও প্রাথমিক বিবাহের ন্যায়  
সমারোহ সম্পাদিত হইয়া চরিতার্থ হইবে  
সন্দেহ নাই।

## নিবন্ধ সংবাদ।

১ম পৌষ সেবার।

উৎসর্গের প্রসঙ্গের নীতি সত্য, তবু হই  
যাও। আক্ষেপের বিষয় এই যে মেলা ১৮৭১  
অঙ্গের মেলায় ন্যায় নরকপ্রকারে উৎসর্গ হয়  
নাই।

নদীয়ার এক জন নীলকর এক প্রজাকে  
বলপূর্বক ওদামে বন্দ করেন। ক্রমক তত্ত্ব  
ইউরোপীয় ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের নিকটে না  
লীশ কবে। নীলকরও তাহাকে চোর বলিয়া  
অভিযোগ করে। জিজ্ঞাসাবাদসময় প্রচার  
মালীশ অগ্রাহ করিয়া তাহাকে বিচার দেন।  
সে সেনিয়র অঙ্গের নিকটে মালীশ করাতে  
তাহা নথী তলপ করেন। ডেপুটি তাহাতে  
অসম্মত হওয়াতে প্রথমতঃ বিচারালয়ের  
নিকটে এরিষয় জানান হয়। প্রচার বিচার  
পতি তাহার পক্ষাতির "সন্তোষ" করেন।  
কিন্তু বীতশ্রদ্ধা হইয়া তাহা না করিয়া ডেপুটি  
মাজিস্ট্রেটের বেতন ও কর্মতার হাস করিয়া-  
ছেন। আবার দুইবার পরে তাহার বে পূর্ন-  
মত বেতন হইবে একথা বলা বাহুল্য।

আমরা আশঙ্কিত হইলাম, ভারতবর্ষের  
গবর্ণমেন্ট গম্ভীর গর্তে পড়ি করিবার নিষিদ্ধ  
যত্নবান হইয়াছেন। ইহাতে দুটি লাভ হইবে,  
এক, জাতিবিরোধের প্রভাব, গম্ভীর পতিত হই  
লে জাতিবিরোধের বীজ তাড়িয়া অথবা অল  
মাবিত হইয়া ৬০ ৫০ দেশের অনিষ্ট হইতে  
হিল তাহার সত্য হইবে। দ্বিতীয়, গম্ভীর বে  
চড়া, পকিরাহে, তাহার উদ্ধার হইবে।  
৩ গম্ভীর ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের মৃত্যু হইয়াছে।  
এই বিষয়লাভক হইয়া। নীলকরগণের উ-  
নয় করিবার মূল কারণ।

আমরা আশঙ্কিত হইলাম, ভারতবর্ষের

প্রকৃতি সাতের পদত্যাগ করিবার সময়ে কয়েক  
জন মেজেক্টারি ও কোর্ট আফালকের অঙ্গের  
বেতন হ্রাস করিবার প্রস্তাব করিয়া গিয়াছেন।  
অন্যেই অল বাথে, দুপেকেরা হাকতাল  
পরিহার করেন, উদর পুরিয়া খাইতে  
পান মা কিছু কই তাহাদিগের নাম  
করেন না।

উক্ত পত্র মাসের বিশেষতঃ জী আতির  
অত্যাচারের একটি উদাহরণ দিয়াছেন।  
এক ব্যক্তি (ইউরোপীয়) এক যু. ডীর পাণি  
প্রবর্তা হইয়া তাহার পিতা মাতাকে এবিষ-  
য় জানান। তাহার তাহার প্রস্তাবে সম্মত  
হন, কিন্তু কন্যাটি তৎকালে অনিষ্ট ছিল।  
প্রার্থী কিছু দিন এই পত্রিগত মধ্যে বাস কর  
ক্রমশঃ কন্যাস্বর্য এমত প্রিয় পাত্র হইলেন যে  
সম্মতি হইয়া তাহার পিতা মাতার মত প-  
রিবর্ত হওয়াতে মাতৃক নারিক। যু. ড্যাগ ক-  
রিয়া পলায়ন করিয়াছে। কোর্টনিগ প্রথা  
আর পিতা মাতার প্রভাব উত্তরের একর  
সমাবেশ হওয়া কঠিন।

অন্যোধ্যগেজেট বলেন, বাঁদার বিখ্যাত  
মৃত্যু মল্লপুং লিংক হত হইয়াছে। এই ডাকা-  
ইত বিংশতি বৎসর পর্যন্ত উক্ত প্রদেশের  
আর শ্রমণ চটাইল। সে সম্রাট নগর  
নিকটে নিহিত ছিল, অন্যত সময়ে কয়েক জন  
তাহাকে খরিয়াছেন।

মিলিগেজেট পাতিমালার রাজার মৃত্যুর  
বিষয়ে হিন্দুস্তানি তাহার নিঃশিখিত হস্ত  
এক প করিয়াছেন, রাজ. মৃত্যুকালীন সাত  
শত - কয়েক হস্ত এক শত গল্প ও  
দুইসহস্র টাকা ও অনেক মিষ্টান্ন বিতরণ  
করিয়াছিলেন। তাই পাতি চন্দন কাষ্ঠ তিন  
শত ও পাচশন নারিকেল দ্বারা শব দাহ  
হয়। গম্ভীর রাজার তাম্রলিঙ্গ গলে দুই শত  
জোড়া মল তাকলিগকে দেওয়া হয়। তাহার  
মৃত্যুতে সকলে একপ দুঃখিত হইয়াছিলেন।  
সে কয়েক দিন নিবস রক্তন করেন নাই। ঐ  
কয়েক দিবস দাক্তীর দোকান বন্ধ ছিল।  
বিচারালয় ও সরকারী কার্যসমস্ত না  
হিন বন্ধ হয়। রাজা মরোজ লিংক যে কথার  
প্রচারিত হইয়া ছিল তাহা এতদ্বারা প্রকাশ  
পাইতেছে। আশাশিগের অন্য অন্য রাজার

বি এই কপজমার সারি  
মাজিস্ট্রেট হইয়া ১৮৭১  
মিলিগাম ৪ ১ ডিসেম্বর ইংল্যান্ড  
রাছেন। জাতিবিরোধী মাসের  
তবর্বে আসিবেন। মাজিস্ট্রেট  
সবিশেষ সমারোহ ও আদর  
রিবার উদ্যোগ করিয়াছেন।

হিন্দুপেট্রিট বাত হইতে লম্বা  
হেন সম্রাতি রেলওয়ে সংক্রান্ত  
হইয়াছে। কয়েক খানি মাসের  
তালিয়াছে, অন্য কোন অনিষ্ট  
পর, মালপুর্ন ও দুপেকের মনে  
রেলওয়ে বনিয়া গিয়াছে।

উক্ত পত্র আসা হইতে লম্বা  
রাছেন, এক জন সহকারী জী বর্তমান  
মুলমান হরজীকে একটা বেলা  
বলেন, হরজী তাহাতে অসম্মত হইয়া  
কর তাহাকে এমন প্রহার করে যে  
খা কাটিয়া রক্ত বাহির হইয়াছে।  
জিয়া গিয়াছে মালীশ করাতে  
টাকা জরিমানা হইয়াছে। হরজী  
অপরাধ সে যে অতিরিক্ত দণ্ডকে  
এই তাহার ফল।

ফিনিক বলেন, দুপেকারিগের  
মাজিস্ট্রেটের বেতন হ্রাস করিয়া  
পনামিগের বেতন হ্রাস করিয়া  
তে বলপূর্বক গবর্ণমেন্টে  
গের মত চাহিয়াছেন। প্রচার  
ন, সেরেস্তাদারের ৩০ ৬  
কা বেতন খার্য করা কর্তব্য।  
৫০ টাকার মূল বেতন হইলে  
লিবে না। তাহা হইলেই  
হুটি এদিক ওদিক  
আর কিছু দেন না দেন?

উক্ত পত্র এক জন চন্দন নগর  
লিখিয়াছেন, বারাসতো (জমা  
মহা) চারি  
হইতেছে। এট  
হইতেছে।

গিহান মিরার অবন  
নী মিলিগাম নগরে  
বিবার অন্য



৩০ জন। সম্রাট নিজস্বায়ে প্রতি বৎসর এত  
কম খরচ করেন। কালে বিদ্যালয়  
বাহির করা লইয়াছিলেন, কেবল এই  
কম খরচ খাতিরে যে ছাত্রেরা নিত্য  
কলেজের গবর্নমেন্টের কর্তৃক করিতেন।  
সম্রাট অনেক বিদ্যে আনয়নের প্র  
চেষ্টা ও সম্মান ভাজন হইয়াছেন। আমা-  
র মনোরথ এই, ইংলণ্ডের ও ভারতবর্ষের  
বিদ্যাকে তাহার বৃত্তান্তের অন্তর্গামী হইয়া  
প্রতিবৎসর কর্তৃকমনকে ইংলণ্ডে বিদ্যালয়-  
কালে প্রেরণ করেন।

উক্তলোকের বেঙ্গলীপুত্র সংখ্যক সাতা  
বলেন, সম্রাট তদ্রূপ দুইজন জনৈক পর-  
স্পর দালা করাতে কর্তৃক ব্যক্তি আহত  
হইয়াছে। জমীদারের। এতদাব অধ্যাপিও  
ত্যাগ করিলেন না।

বারাসতে এক "ভাট"চারের পুত্র" নক-  
লী দ্বারা একটি গরু ধর করাতে তাহার এক  
নংসর বেহাগ হইয়াছে। ভাটচার্য্যযুবক নক-  
লী বাহির করিতে না পারিয়া এক ছুঁই দ্বারা  
তাঁহা বাহির করাতে গরুর মৃত্যু হয়।

আমরা শুনিতে হইরা প্রকাশ করিতেছি  
উক্ত দ্বানের গীতাক্ষিপব্য অধ্যাপিও বার  
নাই। এক্ষণে বিস্তর লোকের মৃত্যু হইতেছে।  
বাঁহারা জমাদ্বারে দুই বৎসর অরোগ করিয়া  
আসিতেছেন তাঁহারা এক্ষণে কিঞ্চিৎ অর  
থিত্যে প্রাণ ত্যাগ করিতেছেন। পুরুষের  
পক্ষে সব দাঁহ ও স্বেপন আরম্ভ হইয়াছে।  
গবর্নমেন্ট অধ্যাপিও কবিসন নিযুক্ত অথবা  
ঔষধ প্রেরণ করিলেন না।

২৪। পৌষ ১২৬২।

গবর্নমেন্টের সেক্রেটারি ল-  
সিওন কর্তৃক খীর কর্মের তার পুনঃস্থ  
করা হইতে সাহেব বোর্ডে দিখাতে

কোম্পানীর কোন কোন পক্ষে প্রকাশিত  
হইয়াছে। তাহা বোঝানো দাঁহ ও স্বেপনের  
প্রায় অনেক বন্ধি। অল্প বন্ধিরা অধিকতর  
দাঁহ। আদ্যে প্রেরণ করিয়া থাকেন। ইহা  
তে প্রেরণ বন্ধি। সম্রাটের বোঝা করিয়া  
দাঁহের দাঁহ কোন দাঁহ প্রেরণ করিয়া  
হই। তাহা তাহাকে প্রেরণ করিয়া

সম্রাট ও অল্প অল্প বান্ধিয়া সত্য হইতে  
বহিষ্কৃত করা হইবে

দ্বিতী গেমেন্ট বাকেন পক্ষায়ে আর কত  
কগুলি চোট আদ্যলত স্থাপিত হইবে।

উক্ত গেমেন্ট আরও বাকেন পাতিবানার  
হুতন রাজা বহেজ সিংহ প্রাণ বহুত নন  
বলিয়া কর্তৃকজন প্রতিনিধির হুত শাসন  
তার লেওর হইবে। অপর, শতজর (সংল  
জের) কবিসনর প্রিন্সেপ সাহেব একজন  
প্রতিনিধি হইবেন। বালক রাজার বিদ্যা  
লিকার অল্প একজন উপযুক্ত ইংরাজকে  
নিযুক্ত করা কর্তব্য।

কিনিক অরণ করিয়াছেন গবর্নমেন্টে  
কলিকাতার রণতরির এক আভা করিতেছে  
ন, বোম্বাই হইতে অর্ধেক জাহাজ এখানে আ  
সিবে। ভবিষ্যৎ বিদ্যাপুত্রের তরু পরিষ্কৃত  
করা হইতেছে। এক্ষণে জনপ্রতি রণতরির  
অধ্যক্ষ সর জেমস হোপ এবিষয়ের নিষিদ্ধই  
কলিকাতার আলিয়াভিলেন।

শীত মাতলা পর্য্যন্ত রেইলওয়ে খুলিবে।  
শিলালির সেতু প্রায় প্রস্তুত হইল। বিনত  
হইতে কর্তৃকখানি জাহাজ এবার এককালে  
মাতলার আসিতেছে।

কাশ্মীরের রাজা শ্রীর উপরে অধিকতর  
কর লইতেছেন। পান দোন নিবারণই তাঁহার  
অভিপ্রোভ। আনয়নের মতে এ উৎকর্ষ উপ-  
পায় নহে। শ্রীর মূল্য অধিক হইলে মাতা  
লোরা খাবার চাউল বিক্রয় করিয়াও শ্রী  
ক্রয় করিবে। দ্রোণ, মধ্যভাগের মায়,সও  
দ্বারা তাঁহার নিবারণ চেষ্টা বিধেয়।

৩রা পৌষ বুধবার।

২২এ ডিসেম্বর জামী পর্য্যন্ত রেইলওয়ে  
খুলিবে। তাহা বোঝাতে

দাঁহের হইতে সংকল্প আসিয়াছে বা-  
তীর সত্য লোক জোড়া নহে হইতে সপ-  
রিবারে প্রেরণ করিতেছেন। বিদ্যোহের লক্ষ্য  
সত্যবন। পিকিনে কোন গোলযোগ নাই।  
মতবধী নহে যে পারুলী অধিকতর জাহাজ  
করিয়াছিল, তাঁহার জন বৎসর বেহাগ হই-  
তে

আনয়নের একজন ইতিমধ্যে উপ-  
করণ করিয়াছেন।

কেন্দ্রীয়কে বধ করিয়াছিল। সামরিক বিদ্যা  
লয়ে অবিচার প্রায় হয় না। কিন্তু লেপ্টনান্ট  
জেনারেলের কি হইল?

প্রধান সেনাপতি এক্ষণে মানা স্থান  
অরণ করিয়া সেনানিগের অবস্থা দর্শন করি-  
তেছেন। তিনি শীঘ্র কাশ্মীরে গমন করি-  
বেন।

পরিদর্শক সম্পাদক বলেন, ডেনিভেলি  
কালেজের বাল ল। তাঁহার প্রথম অধ্যাপক  
পক্ষে জীবিত কলিকাতার ভাটচার্য্য, দ্বিতীয় পক্ষে  
রাজকুমার বন্দোপাধ্যায় নিয়োজিত হইয়া-  
ছেন। আমরা ৮ পক্ষা করিয়াছিলাম তাহা  
দুর হইল

৪ঠা পৌষ বৃহস্পতিবার

ভাটচার্য্য দ্বারের আরম্ভে আলিগড় প-  
গাত রেইলওয়ে খুলিবে। আর ২২এ ফ্রোশ  
হইলে আলাহাবাদ অবধি দ্বিতী পর্য্যন্ত রেই  
লওয়ে হয়। যদি ১-৬০ পেটেন্টের পর্য্যন্ত  
বনুনার সেতু প্রস্তুত হয়, আগামি পূজার সম-  
য়ে অনেকে হরকার টিকিট লইয়া দ্বিতীতে  
নাগিতে পারিবেন।

লেপ্টনান্ট মাকলিন বিক্রমলক। নামক  
এক জন হুত পূর্বে বিদ্রোহী ও হত্যাকা-  
রিকে ধরওয়ারে ধৃত করিয়াছেন। এ ব্য-  
ক্তি বানসন সাহেবকে বধ করিয়াছিল

মহারাজার ইচ্ছাপ্রকাশ বলেন, এক জন  
রাফল ইংলণ্ডে ২১ইতেছেন। এবিধ বৃত্তান্ত  
নিত্য আশঙ্ক্য।

পুনঃঅবস্থার বাকেন ডেনিভ মাতল  
নামক যে ইহা পুনঃতে একটি চিকিৎসালয়  
করিতেছেন। কিন্তু একটি ইহা বিদ্যোহের  
জন্য ৫০০০ টাকা করিয়াছেন।

মাজাজ টাইলস বলেন, সানোলের লো-  
কো। একটি টাইলসে করিবার জন্য এক কো  
শ্মাকি করিবেন। বাকেন্দ্রীয় বিদ্রোহী  
প্রতি নাই কেন?

মাজাজের কর্তৃক সেনাই করিবার কল  
আসিয়াছে। তাঁহার দাঁহ আদ্য প্রেরণ কৈ  
নাই হইয়া থাকে। আনয়নের ইচ্ছা  
দাঁহ। তাহা তাহাকে প্রেরণ করিয়া





ক আদিবে ডাঙা খুলিলেই মেয়ে খাইবে,

ବା ଦେଶୀକୃଷିପଣ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ସମ୍ଭବ ହେଉଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ

\_\_\_\_\_





## পত্রপ্রেরকের প্রতি ।

আমরা সন্তোষে অঙ্গুলিমালা না করিয়া  
পাশবীর সাম্রাজ্যের পত্র প্রকাশ করি  
না ।

কাম্বির অন্তঃপাতি গোপীনাথ পুর পর-  
শনা পটবা বেহিদি আলি খাঁর সহিত নবাব  
সিদ্দিকের বে বিবাদ হইল । ও তৎকালক অত  
চাৰ হইতেছে অতঃপাতি প্রেরিত পত্র এমনি  
অন্তঃ প্রেরণ ও করণ্য ভাষার লিখিত হইত  
হইতে যে তাহা কোন ক্রমেই প্রকাশ বোধ্য  
নো হইল না ।

হাতিরা কাম্বির পত্র প্রকাশ করিলে  
অপর পত্র প্রেরকের সহিত কেবল বিবাদ  
সম্বন্ধ হইবে ।

গৌতমিক ধর্মাবলম্বী কোন এক ব্রাহ্মকে  
কাম্বির ব্রাহ্মধর্মকে গালি দিয়াছেন । এই  
কাম্বির পত্র পরিভ্রান্ত হইল । সোমপ্রকাশ  
কাম্বির ও বৈবর্তনীয়তন বক্তৃতা নহে ।

এনকালী চাপরাশীর নামে উপরে এক  
কাম্বির অবেদন করিল কেবল তাহার নর আর  
কাম্বির অম্বার বাস্তব লইবার রোগ থাকে,  
তাহার প্রতীকার হইবে ।

কাম্বির অবেদন ২ দ্ব্যকরিত পত্র প্র-  
কাশ করানো না । ইহাতে ইনকমটাল সংগ্র-  
হকারের অভিচারের কথা লিখিত আছে । এ  
পুরাণ সম্বাদ ।

রোসনা নিবাসির পত্র অত্যন্তদীর্ঘ বলিয়া  
পরিভ্রান্ত হইল ।

## প্রেরিত

সাম্বার জীমুস্ত সোমপ্রকাশ সঙ্গীতক  
মহাশয় সমীপেয় ।

গত শারদীর পূজার অবকাশে মানা স্থানে  
অম্বার করিয়া পশ্চাৎ জেল, মসীয়াব অন্তঃপাতি  
উল্লা প্রাণের মহাবীরীকমিত হুদায় দেখিতে  
গিয়াছিল । মহাবীরী কন্যা ভাগীরথীর উত্তর  
ভৈরব পর পত্র প্রাণ লোক শূনা ও বন্যহত  
হইয়াছে । প্রাণের মহাবীরীকমিত আছে, তাহার  
অব কৌশল করিতেছে । এই সকল পোকাবচ বা-  
পার প্রাণের মহাবীরীকমিত হইল, তখন  
আমার পৌতলিক প্রাণের উত্তর হইল ।  
প্রাণের অতি হুদায় প্রাণের পূর্বে  
ইহা বে কৌশল ও আনন্দে পূর্ণ ছিল, তৎকালকে

তাহার বিলম্ব এমনি পাইলাম অতঃপাতি  
আমি এক প্রকার নিশ্চয় করিলাম পূর্বে ইহাতে  
লিখিত নহে ব; পত্র লিখিত বর লো কর বস  
তি ছিল । কাম্বির লক্ষণ দেখিয়া বোধ  
হইল পূর্বে ইহা অতি পরিভ্রান্ত স্থান ছিল;  
কিন্তু এক্ষণে চতুর্দিক কলমে পূর্ণ হইয়াছে ।  
হুদায় হুদায় বাকী সকল পত্রিত হইতেছে কোন  
স্থানে দুই চারি জন মহাবীর বসিয়া আছে । অ-  
পার প্রাণে প্রবেশ করিলে বক্তৃতা কৃত কৃত  
বালক বালিকাধর্মের জীভাব উল্লাস দেখিতে  
পাওয়া যায় তাহা এই প্রাণের কৃতাপি দেখিতে  
পাইলাম না । তাহাতে মনঃ হুদায় হুদায় ল-  
গিল । এক স্থানে প্রায় ৫০/ বিধা পরিমিত এক-  
টি বেরা স্থানের মধ্য হইতে কোন প্রাণের  
মহাবীরী ব্যক্তির পূর্ণতম অর্ন্তলিখিত ভিত্তি  
মূল ইহা প্রাণের বেহিদি প্রাণের কৌশল কর্তৃক  
উৎপাদিত হইতেছে । তাহার স্থান স্থানে অ-  
তঃপাতি পত্রের একটি পূর্ণ মহাবীর প-  
ত্র হইতেছে । এই বাকীর ভিত্তিমূলের চিত্র  
ও অবশিষ্ট অংশ সকল দেখিয়া আমি বলিয়া  
পাইলাম । অবশেষে চতুর্থ পত্র করিতে না পা-  
রিয়া মাথার হাত দিয়া কন্দন করিতে লা-  
গিল । এমত সময়ে কোন ভক্ত মহাবীর আমাকে  
কন্দনের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন । আমার  
প্রত্যুত্তর প্রাণে তিনি আমাকে “ হুদায় হুদায়-  
ই বিবদ বটে, কাম্বির বিবদ বটে ” বলিয়া  
বক্তৃতা সাধুদান প্রদান করিয়া তাহার পরিচয়  
জিজ্ঞাসা করিলে তাহার সহিত আলাপ হইল ।  
দেখিলাম তাহার শরীর আর আর শরীর হই-  
য়াছে । পদ ও বাহুদয় কৌশল, উদর ক্ষীণ ও হুদায়  
মণ্ডল কালশিরাতে আচ্ছন্ন হইয়াছে । তাহার  
মিষ্ট প্রাণের পূর্ণ সৌভাগ্যের ও বর্তমান  
হুদায়ের অনেক কথা শুনিলাম । শুনিয়া আ-  
মার হৃদয় বিদীর্ণ হইতে লাগিল । এই রূপে  
বেলা একটা অবধি সঙ্গা পর্যন্ত প্রাণের কাম্বির  
পূর্ণ ও উত্তর ভাগ বর্ণন করিয়া পূর্ণ ভাগে  
উত্তীর্ণ হইলাম । পূর্ণ ভাগের এক স্থানে কিছু  
ধর্ম ধর্ম হুদায় হইল । চতুর্দিকে অটালিকা, ভ-  
ক্ত ভাগ দিয়া একাধা রক্ত । চতুর্দিকে বৈ-  
কুণ্ঠ্যার লোক গম্ভীর করিতেছে । প্রাণের  
কিছু সত্য হইল । জিজ্ঞাসা হইয়া জ্ঞাত হইলাম  
যে বাকীর স্থান এক্ষণে প্রাণের মধ্যে প্রদান  
ধনী । তাহার মহাবীরী, বিবদ, বিতর অনেক  
আছে । শুনিলাম সেই বাকী হইতে ৩৬ জন  
লোক মহাবীরীতে বিবদ হইয়াছেন । প্রাণের  
পরিভ্রান্ত করিয়া কিছু হুদায় করিতেছে বাকী

করিতে করিতে পূর্ণ মধ্যে দেখিলাম কতক-  
গুলি ভক্ত মহাবীর কোন সত্য বর্ণন করিতে ছ-  
ন । আমিলাম যে সে বিবদ প্রাণ মধ্যে একটা  
উত্তর প্রাণের করিবার উদ্দেশে তাহার এক  
সত্য করিবেন । আমি শুনিয়া তাহারিণকে  
করিলাম যে এত দিন এখানে উত্তর প্রাণের হুদায়  
কেন । তাহার করিলেন, এত দিনের বিবদ  
এমনি ভর্যমত ছিল ও তাহার আমবা আপন  
আপন লইয়া এই বাকী ছিল, যে উত্তর প্রাণের  
কি এক জন করিবার তাহারিণ । চিত্তিৎস। ক-  
মাইবার অবকাশ কাল পাওয়া যায় নাট । এক-  
ধে মহাবীরী রূপ প্রবল হুদায়ের কিছু শক্তি  
হইয়াছে, তাহাতেই আমিলাম প্রাণের মহাবীর  
এত দিনের পর উত্তর প্রাণের হইতেছে । অতঃপাতি  
তাহার আমবা পরিচয় জিজ্ঞাসা করিয়া আমা-  
র কবিলে আমি তাহার মনের সঙ্গে সেই সত্য-  
র গমন করিলাম । উক্ত প্রাণের হুদায়ী মহাবীর  
রেনদিগের বাকীতেই সত্য হইল । হুদায়ী ম-  
হাবীরের নাম আমবা পূর্বে শুনা ছিল ।  
বাকী সেই পরিবারের কোন কোন মহাবীরের  
সহিত আলাপ হওয়ার অতিশয় আনন্দিত  
হইলাম ।

সত্যাব পর ৭ বাকীর সময় সত্য আরম্ভ হই-  
ল । কোন এক ভক্ত মহাবীর প্রাণের সত্য প্রা-  
তিদিককে সত্যধর্ম করিয়া সত্য উত্তর প্রাণের  
এক বক্তৃতা করিলেন তৎপরে প্রাণের পূ-  
র্ণ বাকী ও বর্তমান অবস্থা বিবরে এক জুড়ী  
পবন পাঠ করিলেন । তৎপরে অপর এক  
বাকী এক বক্তৃতা করিলেন । অবশেষে সত্য  
কার্যের বিবরণ ও বিবরণ লিপি বক্তৃতা  
লে পর রাতি ৮ ঘটিকার সময় সত্য ভক্ত হইল ।  
এই সত্য বাকী দেখিয়া আমার মনে অত্যন্ত  
আনন্দের সত্য হইল । ইহাতে যে সকল হুদায়  
উল্লিখিত ছিলেন তাহার আশ্রয়দের স-  
ত্য সুসিদ্ধ করিতে পারিলে প্রাণের পরবোধ-  
কার হইবেক ।

আমি যে সকল মহাবীরের সহিত সত্য পি-  
রাছিলাম তাহার আমাকে মহাবীরের সহিত  
সে রাতি তাহারিণের বাকীতে লইয়া গেলেন,  
এবং আমার প্রাণের ক্রমে উক্ত বক্তৃতাটি আ-  
মাকে আনিয়া দিলে আমি তাহার এক প্রতি  
লিপি লইলাম । আমার এই জ্ঞান ভক্ত মহাবীর  
পত্রের অমূল্য সত্য পাত্র একাধিত হইলে  
পশ্চাৎ বাকীর মিত্র এই বক্তৃতা পাঠাইয়া  
কাম্বির পাঠ করিয়া মহাবীর অমূল্য ক-  
মাইবার অবকাশ কাল পাওয়া যায় নাট । এক-  
ধে মহাবীরী রূপ প্রবল হুদায়ের কিছু শক্তি  
হইয়াছে, তাহাতেই আমিলাম প্রাণের মহাবীর  
এত দিনের পর উত্তর প্রাণের হইতেছে । অতঃপাতি  
তাহার আমবা পরিচয় জিজ্ঞাসা করিয়া আমা-  
র কবিলে আমি তাহার মনের সঙ্গে সেই সত্য-  
র গমন করিলাম । উক্ত প্রাণের হুদায়ী মহাবীর  
রেনদিগের বাকীতেই সত্য হইল । হুদায়ী ম-  
হাবীরের নাম আমবা পূর্বে শুনা ছিল ।  
বাকী সেই পরিবারের কোন কোন মহাবীরের  
সহিত আলাপ হওয়ার অতিশয় আনন্দিত  
হইলাম ।

র হইয়াছে। যেখানে তাহা আবার দেখা  
যায়। সেখানেও পাইতে পারি। তাহা কর  
করা অসম্ভব। পূর্বেই তাহা এই পত্র খানি  
দেখাইয়াছি। তাহাকে চিত্রায়িত করি।

১৯৩১  
৫ই অক্টোবর  
২৩২

কুইয়া বিচার করিলে সত্যের অপমান হইবার  
বড় সম্ভাবনা থাকে না।

সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহানগরে।

গত ১লা পৌষের সোমপ্রকাশে কুমার-  
খানি নিবাসি শ্রীযুক্ত চন্দ্রকুমার ভট্টাচার্য্যের ত-  
উচারণ মহাপ্রভুর বাগ্মান কাল প্রকৃতির নির্ণ-  
র বিষয়ক বিচারে প্রস্ততি দেবির। আমি পরি-  
তোষ লাভ করিলাম। আবার অভিনয় ছিল,  
কোন প্রধান মার্জ অধ্যাপক এবিষয়ে প্রস্তত হ-  
ইয়া তদন্ত করিয়া বিচার পূর্বক বীমা'সা ক

রিয়া দিলে, আশা ১৩। তবে যদি কিছু জম  
হইয়া থাকে তাহা হইবে। ভট্টাচার্য্য  
ব্যাখ্যার লিপি কোমল দেখিয়া তাহাকে সব  
ও প্রাচীন উক্ত শ্রী পারদর্শী প্রধান মার্জ অ-  
ধ্যাপক বলিয়া বোধ হইল, অতএব তাহার মিক  
ট উক্ত বিষয়ের কোন কোন অংশেই প্রশ্ন করি-  
য়া হইয়া করিতে অভিনয় করি। আমান  
মান। গত সকল প্রশ্ন ও উত্তরে লিখি-  
লে বাহুল্য জন্ম। পাছে সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
ও তাহার আহবান বিস্তৃত হয়, এই চেষ্টা  
সময়ে সময়ে অল্প অল্প লিখি, ক্রমশঃ এক একট  
অংশেই প্রশ্ন করিতে প্রস্তত হইলাম, ভট্টাচার্য্য  
গৌণ মধ্যম যেন কৃপাপূর্বক তাহার উত্তর  
দিয়া প্রার্থনা পূর্ণ করেন। তিনি, তিন বর্ষের  
পর বিবাহ কালের পূর্বপর্বাণ্ড বাগ্মানের কাল  
(১) স্মৃতি রূপে নির্দেশ করিতে আমার এই বি-  
ষয়টি নিঃসংকোচ হইয়াছে, অতএব তদ্বিষয়ে  
আমি কোন প্রশ্ন নাই। কিন্তু ভট্টাচার্য্য মহাপ্রভুর  
কৃতদর্শনের পূর্ব কালকে যে বিবাহের কাল  
(২) তিব্বতী লিখিয়াছেন, তদ্বিষয়ে আমা-  
র সন্দেহ ছুটয়া গিয়াছে; কারণ, সেটি অত্যন্ত  
পূর্বকাল কি না তাহা সত্য পূর্বকাল। যদি কৃতদ-  
র্শন এই কথাটি লিখিত। এবং কৃতদ পূর্বকালকে  
বিবাহকাল বলিয়া বিচার করি, তাহা হইলে

(১) ১৩ পৌষের সোমপ্রকাশে ৫৩  
পৃষ্ঠার ২ পৃষ্ঠে শ্রীযুক্ত চন্দ্রকুমার ভট্টাচার্য্যের  
পক্ষে লিখিত আছে, “বিবাহ পূর্বক বিবাহ  
কাল পূর্বক বিবাহ” বাগ্মানের কর্তব্যমিতি  
মিতি, “বাগ্মান শালোচিত্তাকালোবধি  
বিবাহ প্রাক্কাল পর্যন্ত” চুড়াকাল  
পর্যন্ত বিবাহকালপর্যন্ত বাগ্মানের বিচিত্র  
মিতি।

সকল কুমার মহাপ্রভুর কাল এই  
কৃতদর্শন, অতএব কৃতদর্শন বিবাহের কাল  
নির্ণয় হইবে। অতএব বিবাহ কাল  
শ্রুতি শ্রুতি কুমার কৃতদর্শন মত বিবাহ  
কাল বলিয়া নির্দেশ করি।

এই ১৩ পৌষের বিবাহটি সর্বসাধারণেরই  
এবং লেখাটীও অসংকোচ হইল, অতএব  
ইহাতে সোমপ্রকাশ সম্পাদক বা তাহার  
পক্ষের বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ নাই।

৪ পৌষ চন্দ্রমাসের ১৭৮৪।  
শ্রীমানমহাশয় বৈদ্যবাহিনী।

-৪-

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহানগর সন্নিকটে।

(১) বিগত ১৮ই কার্তিকের সোমপ্রকাশে  
মুক্তকর্মের বেতন হ্রাস বিষয়ক একটি প্রস্তাব  
দেখিয়া তদ্বিষয়ে কিছু লিখিতে ইচ্ছা হইল।  
মুক্তকর্মের বেতন হ্রাস এক প্রকার বর্জ্য  
প্রস্তাব। মাত্র হইয়াছে হ্রাস করিয়া  
কামা কর্তৃপক্ষের এবং বিবরে হান পায়।  
এইকালে কবে কালের মাত্র হ্রাসের আ-  
লোচন করিয়া বসত। কাল হইয়া উ-  
ঠিয়াছে। আশায়ের পূর্বদিক তেমন পূর্ব  
বিজ্ঞার প্রাচীনা মতের মতের মত, তা-  
হার মাত্র মুক্তি আশায়ের আশায়, তাহার  
আশায় বেতন হ্রাস করিতে গিয়া মানিক  
ক। সঙ্গীত বসত ধার্য্য করিয়া গিয়াছেন।  
সময়ে মাসে ২৫টি মোকদ্দমা নিষ্পত্তি  
করিবার বিধি ছিল অথচ প্রত্যেক আদালতে মন টাকা  
সঙ্গীত ধার্য্য ছিল, এইকালে গড়ে প্রত্যেক মন-  
কুমার এক পত মোকদ্দমার কম নিষ্পত্তি হ-  
ত। এককালে ৪ টাকার সেই বসত মন  
হইতে পারে?

মুক্তকর্ম অর্থাৎ কৃতদর্শন থাকার কথা।  
রীতিমত পাঠ্য আবশ্যক তাহাতে ক্রমশঃ  
এক ছটাক তৈলের আবশ্যক এই হিসাবে মন  
আমার তৈলের কম হইতে পারে না। কার্তিক  
বসত পরিকার অন্য মেঘরকেও এক টাকা দিতে  
হয়। কালী কলমে ১০ আনা ব্যয় হয়, নবী  
পাখা ছটা ও লাঠি প্রকৃতিতে ৮ আনা এবং  
কাগজ ৩ টাকার কমে তেনে মতেই হয় না। ই-  
হার অতিরিক্ত মাত্র বাধাই গড়া আশায়ের  
বিস্তার বিজ্ঞান, ১০০ ট বাধাইবার বসত আছে

(১) একে ১০০ টাকার মাত্র পারিতোষ হইল  
তাহা ১০০ টাকার মাত্র পারিতোষ হইল

যাহা হইক, পূর্বদিকের এবিষয়ে একটি  
প্রস্তাব করা আবশ্যক, আমি নিম্নের বিবরণে  
আমি কালে সেই ১০০ টাকার পারিতোষ



বহুসংখ্যক ১২৬৯ ২৩এ আশ্রয়স্থল ।

।।उद्योग।।

অতঃপর আরও অনেককাল চলিল ।  
 এ শান্ত সময়ে নাথ, কে পারে থা কিতে  
 জুলিয়া তোমার ? হৃদয় আনন্দ কালে  
 করিয়া বসন্ত, কেবা জুলিতে তোমার ?  
 তুমি শান্তি নিরন্তর, স্বপ্নের  
 অমূল্য রতন টির প্রীতি প্রদর্শন,  
 তুমি চিত্ত বিশোধন মানস রঞ্জন ।  
 অহো কি আনন্দ জ্বর। বহিষ প্রভাতে,  
 অধঃময়, কে পা'ব বর্ণিতে দেখে তব,  
 অধঃময় রূপছটা রবিকরে, মেঘে,  
 গহমে, উদ্যানে, জলে, ফুলে, রক্ষে,  
 সুসুখে, পল্লবে, অথ সাগর উথলে,  
 উথলে ব্যতিথির বর্ষা-স্নান স্নানে ।  
 উষার শোভার তুমি, এত শান্ত,  
 যে নিকে নিরখি দেখি তোমারি অপূর্ণ  
 কাঙ্ক্ষা জলে ফুলে ফুলে তোমারি কিরণ ।  
 তোমারি কিরণে মম মানস আকাশ  
 প্রকাশিত প্রভাকর করে বর্ষা বস্ত্রে  
 সকল ফুল, তুমি জদর জোৎস্না ।  
 এই কেসদূর অশীতল বা'বপূর্ণ  
 জ্যোতিষভী, বাবিনদা মধিন মানসে  
 কল কল হবে পরিতৃপ্ত কর্ণধ্বজ  
 ধাইছে প্রবল বেগে গাউছে তোমার  
 গুণ, কেনা বস্ত্র সন্ধ্যা তোমার কীর্তনে  
 এ শান্ত সময়ে, শান্তি রস প্রদর্শন  
 তব শান্তি রসে যেই জুলাইয়া মন  
 ধ্যানিছে তোমার ধন্য সেই প্রাশান্ত  
 তে'নার বক্ষণ সৌরভে প্রসুতিছে  
 সঙ্গ সঙ্গি মম বসন্ত কুসুম  
 শইরাছি তাকা পূজা হেতু ওচরণ  
 পূবাণ্ড তন্তোর বক্ষা মনোবাঞ্ছা তুমি ।  
 কি ধন না মেলে দেখি তে'নার হৃদয়  
 কুটীর হৃদয়গাহ জোৎস্না প্রকাশে ।  
 তব অপকণ্ঠ রূপ চেবিয়া সন্দূর  
 চইছে মগন অর্থ আনন্দ সাগরে  
 চল মম সব চরণ অবসান ধন্য  
 ধন্য দেব বলিব কি হারবে কেমনে  
 প্রতিব তোমার ময়। মা'নিলে পাণী  
 নলে ময়। প্রেম হারা কার না সম্পত্তি  
 ওচল নিকেতন চিব মধু মাখা  
 এত শান্তিনীতা তাত্ত্ব পূর্ণনিকে উব।  
 ২২। ধরে বেশ রূপজন মনোজোড়া  
 চিত্ত বিনামিথি বনোবত সঙ্গ  
 মন্য নবোদিত স্নাত্ত্ব করে ম  
 'বনাশে মলিনী বনোবত কুর্জবনে  
 জ্যোতিষ সঙ্গ দেবী কর্ণধ্বজ

আরক্ত্য করণে  
 বন রীতি শির বৃহ চুড় শলা কেঁকে ।  
 জমি জমেন দশ দিক খইল প্রকাশ ।  
 নিমেষ উল্লসে বসী পাবনা অশ্রু  
 কোল জীবন । জনে উঠিছে কলোনি  
 মা'সায়ে পাখী উড়িল চৌদিকে  
 লইয়া গে. শাল কোঠে ঘাইছে বাথ  
 শস্য - একত্রে কৃষিকীৰি ব্যবসায়ী কর  
 কুমে আর লোক স্তর রাজা একা ধনী  
 দীন বৃহ সুখ হৃদ্য বালক সকল  
 চর্কল হইল রাত মগডের কাজে  
 তে লাখ তেজসমিদ্ধ বহু বিশ্ব উব  
 ডাকিছে সংসার চারী মাধিতে আমায়  
 শার্ঘ্যনা প্রাণেশ মম এই প্রিয় কারী  
 তব ঘাছ। পারি যেন মাধিতে অল্লান  
 সুখে থাকে যেন মন লকা তে'না প্রতি  
 যেন প্রতি পদে ও একমেবাদ্বিতীয় ।  
 কলিকাতা ঠাকনিয়া ২৬ এ অগ্রহায়ণ  
 প্রিয়ারকামাধ ৩৩

### बलाशक्ति ।

[illegible]

এই গল্প কলিকাতার পূর্বী মাওল। দেও-৩৫৬৬ মে  
লাপ্তর টেনসনের বন্ধিন ভাবা-৩৫৬৬৬ ৩। রতান  
বিশ্বনাথবাবুর এটিতে ৩৫৬৬ ৩৫৬৬৬ ৩৫৬৬ ৩৫৬৬

**महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग**

ਸਰਕਾਰੀ ਡਾਕ

मई तक हुआ १ टोका।  
वार्षिक काजिम २० टोका।

विद्यालयम् ।

করিমপুর জিলার অধঃপাতি ষাটকোয়ারি  
করিমপুর নামে যে পাহাড়, তারূক ইত্যাদি  
হা দরগাহনি যেওরা সুখাই বিজয় করা  
ইবে। যাঁহার সেই তারূক দরগাহনি লুট  
র. অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
লকাতার আর্ড'ন বহিনর কো-পারমিটারি  
আবেদন করিলে সর্বিশেষ হুদাফ আশিতে  
রিবেন।

\* এই খোঁজ নে'মহা'রি ।

আমরা আশঙ্ক সহকারে পাঠকগণের  
চর করিতেছি, ঈশ্বর বাবু শত্রুনাথ  
শুভ প্রথমতম বিচারালয়ের অন্যতর  
চারপক্ষের পক্ষে অতিবিক্ত হইয়াছেন।  
প্রশাসন বাবুর কৃপা হওয়াতে এ দেশীয়  
পত্র ব্যক্তির স্বার্থ তৎপদ লাভ কেবল  
মিলনসাধ্য হইয়াছিল একপক্ষের সঙ্গে  
এও হইয়া উঠিয়াছিল। এক্ষণে আশা  
গণের সে সন্ধিই ঘুর হইল।

ব্যবস্থাপক সভার এ দেশীয়দের  
বেশাধিকার লাভের সময় এ পদটিও  
কেনের সৌভাগ্য হইল। ক্রিয়া বিধে  
এ দুটি বিষয়ই ইংরাজ গবর্ণমেন্ট  
রাজবীরদিগের পরীক্ষা স্থান হইল।  
এ গবর্ণমেন্ট এক একজন পরীক্ষার  
ইংরাজের, একজন এ-দেশীয়ের  
পদ লাভের সম্ভাব্যতা হইলেন। গবর্ণমে  
ন্ট পরীক্ষা এই ভাবেই আদ্যাক সংসারে

[illegible]

এদেশীয়বিধের পরীক্ষা এই কৃত্তিক  
ব্রহ্মা দ্বাবস্থাপন ও প্রবাসভর আশ্রয়দে

এইতিহাসিক ইংরেজদের, তাঁহারা যদি যুদ্ধে  
 সহকারী স্বাধীনতা প্রদান করিয়া, সংস্কার  
 রা. এখন পুরুষদেরের উচিত হইবে।  
 'তে পারেন, কেবলম্ বে'। এ. দৌলতপুর  
 কল্যাণ দ্বারা উল্লিখিত হইবে, এখন  
 ইংরেজ। তাঁহাদিগকে কতকগণে বিভাজিত  
 করিয়াছেন, তাঁহাদিগেরও দুই উদ্দেশ্য  
 হইবে। ইংরেজ। যে পুরুষের উদ্দেশ্য  
 বৈ, স্বাধীনতা পুরুষের উদ্দেশ্য  
 ইংরেজ। তাঁহাদিগের কাব্য/সংস্কার দ্বারা এক  
 তাঁহা। ইংরেজ।

[illegible]



ই তাহারা কেবল সন্ধানই প্রচার করি-  
 হিলাম। আমরা যদি এই সন্ধানটিকে  
 রতান, আর বটনাটিকে প্রত্যাখ্যান করি-  
 য় প্রেরক আপনাকে স্বতন্ত্রানিত বোধ-  
 রিয়া কুপিত হইতেন সন্দেহ নাই। তাহা-  
 ক, তাহারা উত্তর কালে সাবধান হই-  
 আমাদিগের অনুরোধ। তাহারা যে-  
 হ বনিয়া আরব্যোপম্যানের মূল্য  
 ত সন্ধান রচনা করেন না, তাহা  
 বিলম্ব করি। তাহারা যখন তাহা  
 বা ব্যক্তি বিশেষের মুখে না শুনিয়া  
 গম কখন লেখেন না বস্তু কিংবা  
 তাহা লোক মুখে কোন সন্ধান অবশ্য  
 বেন, সন্ধান দাতা কিংবা লোক, তাহা  
 কো বিশ্বাস করা যায় কি না, এই সকল  
 বেচনা করিয়া বেন কাজ করেন। আম-  
 পত্র প্রেরক দিগকে এই সাবধান করি-  
 হি তাহারা এই, দুই মেরা সহিত  
 বাধান করিয়া বনিয়া আছে। তাহারা  
 পিত্ত বোঝের আরোপ করিয়াও তত-  
 কের গ্রামি ও প্রেরক কার্যের বিষয়  
 রবার চেঁটার ক্রটি করে না, আর যদি  
 তাহা একটু পূর্ণ পায়, তাহা হইলে কি-  
 র নিস্তার রাখে? মহাকবি কালিদাস  
 ত সংক্ষেপে খেলের স্বভাব প্রকাশ করি-  
 ন কবিরাজে।—

অলোকসামান্যকটিন্যহেতুকং  
 বিসমিতমশ্রুতং মহাকব্যং ।  
 মহাত্মা কি কারণে কিংবা বাহ্যিক  
 রম, খেলের তাহা বুঝিতে না পারিয়া  
 কাদিগের অলোকসামান্য চরিত্রের  
 কা করিয়া থাকে। মহাকবি ভারবি ক-  
 রাছেন।—

মুনিষি নিরাগনঃ কুতোমে  
 ভরমিতোষ ন কৃত্যে তদাঃ ।  
 গুরুভিঃ বচনং বরাণং  
 কিমিহাতি মুনিষ্যঃ সলজ্জঃ ।

অর্থাৎ তপস্যা করিলে এক ব্রাহ্মণ  
 বিবেকে দেখিয়া, মনে মনে কহিতেছেন,  
 কি মুনি, নিরাগর, আমার তর কি,

আরা পূর্বে তাহা প্রচার করি-  
 য় প্রেরক আপনাকে স্বতন্ত্রানিত বোধ-  
 রিয়া কুপিত হইতেন সন্দেহ নাই। তাহা-  
 ক, তাহারা উত্তর কালে সাবধান হই-  
 আমাদিগের অনুরোধ। তাহারা যে-  
 হ বনিয়া আরব্যোপম্যানের মূল্য  
 ত সন্ধান রচনা করেন না, তাহা  
 বিলম্ব করি। তাহারা যখন তাহা  
 বা ব্যক্তি বিশেষের মুখে না শুনিয়া  
 গম কখন লেখেন না বস্তু কিংবা  
 তাহা লোক মুখে কোন সন্ধান অবশ্য  
 বেন, সন্ধান দাতা কিংবা লোক, তাহা  
 কো বিশ্বাস করা যায় কি না, এই সকল  
 বেচনা করিয়া বেন কাজ করেন। আম-  
 পত্র প্রেরক দিগকে এই সাবধান করি-  
 হি তাহারা এই, দুই মেরা সহিত  
 বাধান করিয়া বনিয়া আছে। তাহারা  
 পিত্ত বোঝের আরোপ করিয়াও তত-  
 কের গ্রামি ও প্রেরক কার্যের বিষয়  
 রবার চেঁটার ক্রটি করে না, আর যদি  
 তাহা একটু পূর্ণ পায়, তাহা হইলে কি-  
 র নিস্তার রাখে? মহাকবি কালিদাস  
 ত সংক্ষেপে খেলের স্বভাব প্রকাশ করি-  
 ন কবিরাজে।—

সম্রাট আমরাঃ প্রেস নামক ৩৫-  
 লতীর এক সমাচার পত্রে "ভারতবর্ষের  
 আশা শাসন" এই নিয়োনামাঙ্কিত একটি  
 প্রস্তাব পাঠ করিয়া অপমিত। প্রস্তাব  
 হইলাম। লেখক ইহাতে ইংলণ্ডের যে যে  
 কর্তব্য ও ভারতবর্ষের যে যে অবশ্যক  
 প্রায় উক্ত রূপে বর্ণন করিয়াছেন। কের  
 ক ইংসন-মাত্র হইল, এদেশে প্রবল ও  
 রাজ্য, কল প্রভৃতি হইতে আরম্ভ হইয়া-  
 ছে। তিনি বলেন, ইহার পূর্বে "যদি  
 আমরা ভারতবর্ষ হইতে বহিষ্কৃত হইতাম,  
 তাহা হইলে আমাদিগের অরণ্য রিভি  
 প্রকিত না। পূর্বে যদিও আমাদিগের  
 হস্তে ভারতবর্ষের ইতিহাসের ইচ্ছা ছিল  
 বটে কিন্তু আমাদিগের উপার রাজনীতির  
 অনুসরণীতি ছিল না। আমরা এক দিন  
 কেবল আমাদিগের রিজের লাভের আ-  
 গারেই ভারতবর্ষ শাসন করিয়া আসিয়া-  
 ছি। আমরা এমনি আর্থার রিটার যে  
 ভারতবর্ষ রিভিগকে কাদিগের স্বদেশ  
 শাসন সংক্রান্ত কার্য ও প্রস্তাব প্রকাশ

করিয়াছিলাম। কাদিগের  
 হাদিগের অপ্রাপ্তবয়স্ক আমাদিগের  
 কগ অধিকার ছিল, উচিত সাধন লেখক  
 ছিল না।

১৮৫৭ খ্রিঃ বিদ্রোহ আমাদিগের  
 যেকন প্রাথমিক করিগকে, কেমনি মহতর  
 করিয়াছে। পূর্বে আমরা  
 ভারতবর্ষের বাক্য অবশ্য করি নাই।  
 এখন প্রতিপদ, এবিধ হইয়া  
 আমরা তাহার সাধু রসের আ-  
 দর্শন করি। এই নাই। বিদ্রোহই ইংরা  
 "অনেকের চৈতন্যোদয় করিয়া  
 করি। ভারতবর্ষ রিভিগকে ঘৃণা করা  
 পূর্বে প্রচলিত ছিল না। এই ক্রম-  
 হইতে হইয়া পত্র, অবধি গবর্নমেন্ট  
 বাক্তি রিভিগ মানবদনে যত্নবীল  
 হইয়াছেন; এজন্য রিভিগকে ব্যবস্থাপক  
 প্রভৃতি প্রবেশ করি দানে সম্মত হইয়া-  
 ছেন এবং গবর্নমেন্ট অধীনস্থ রাজগ-  
 নের রাজ্য লইয়া স্বরাজ্য স্থাপি করিবার  
 ইচ্ছা পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাহাপি আ-  
 মরা একটা প্রস্তাব দেখিতেছি, ভারতব-  
 র্বে আজিও একটা এক দল আছে, তা-  
 হারা মর্মে একজন রিভিগের অপমান  
 রিবার চেঁটার করিতেছেন এবং আমাদি-  
 গের দেশের রাজ্য, মর্মে ও সম্রাট ব্যক্তি  
 দিগকে এবং প্রেরক প্রকাশ করিবার  
 চেঁটার আছে। "ভারতবর্ষের ইতিহাস"  
 এই প্রস্তাব তাহাদিগের প্রকৃত ভাব গো-  
 পনে রাখিবার এবং প্রেরক "জলাইবার  
 প্রস্তাব হইয়াছে। তাহাদিগের অস্তাব-  
 দের প্রকৃত ভাব কি? পাঠকগণ জানি-  
 তামনিমিত্ত উল্লিখিত হইতে পারেন। আ-  
 মরা ইহানীতন কালের সর্বপ্রথম বক্তা  
 ও একজন উপস্থিত রাজনীতিজ্ঞের বাক্য  
 উদ্ধৃত করিয়াছি। পাঠকগণের অবগত  
 করিয়া দিতেছি। বক্তা বলেন "অন্য  
 প্রথম বিদিত প্রাচীন যুগে আমাদি-  
 গের ভারতবর্ষের ইতিহাস প্রকাশ

চীন দেশ, 'রাজনীতি', 'আইন' ও 'আচার ব্যবহার' বিষয়িত 'পরিবর্তিত' করিবার চেষ্টা। পায় : এদেশের সীমা বিপদ ও কল্যাণ, সাধারণকে দারিদ্র্যরূপে মিলি ও করা রাজ্য ও সমাজ ব্যক্তিদিগকে অধঃপাতিত করা এই সকল বিষয়েই তা রা সতত যত্নবান হয়। যে সকল বিষয় বা ব্যক্তি দ্বারা তাহাদিগের অত্যাচার বি বারণের সম্ভাবনা থাকে, তাহা উন্মূলন করা তাহাদিগের একান্ত অভিপ্রেতি।

আমাদিগের ঐতিহাসিকারিদলের কি এইরূপ চেষ্টা নয়? তাঁহারা কি এতদেশীয় রাজস্বকে পদচ্যুত করিবার ও সমাজ ব্যক্তিদিগকে অবমানিত করিবার প্রথম উদ্যোগী নহেন? যে সকল রাজারা পদ চ্যুত হইয়াছেন, তাঁহাদিগের নাম পর্যন্ত লোপ করা কি তাঁহাদিগের অভিপ্রেত নয়? আমাদিগের দেশীয় ভ্রাতৃগণ কেওর লিখিত মুরসিদাবাদ ও হারদরাবাদের নবাবের বিরোধী প্রস্তাবগুলি পাঠ ক রিলে জানিতে পারিবেন।

উল্লিখিত প্রস্তাব লেখক অযোধ্যার ভাবতবর্ষীয় সত্কার প্রংশসা করিয়া তত্ৰতা লুকমারদিগের হস্তে কোন কোন কমতা দ্বারা প্রস্তাব করিয়াছেন এবং তৎপ্রসঙ্গে লিখিয়াছেন "এই সকল লোককে আমরা পূর্বে অপমান করিঃ" তাঁহাদিগের নাম প র্যন্ত লোপ করিবার চেষ্টা পাইয়াছিলাম যে.পি ১৮৫৭ অব্দের ভয়ানক বিদ্রোহ উপস্থিত হইলে যখন আমরা কমতাহীন ও অপায়কীন হইরা হতভাগ প্রায় হইয়া গিলাম, এই জ্ঞেয় মধ্য হইতেই আমরা বি ভবত ও সহকারী পাইয়াছিলাম।" পতিয়ালার রাজা ইহার দৃষ্টান্ত হল, ত পি এতদেশীয় ইংরাজী পক্ষে তাঁহাকে খাসখাতক পর্যন্ত বলা হইয়াছে। অন র প্রস্তাব লেখক সর চার্লস উডবে অযোধ্যার ও অন্য অন্য স্থানে চিরস্থায়ী শাসন প্রস্তাব করিবার অনুরোধ

পেবে লিখিয়াছেন "অযোধ্যার ভাস্কর্য্যেরা বেকপ গুরুতর বিঘ্ন সকলে র তর্কবিতর্ক করিতেছেন তদ্বারা বঙ্গ বহুতা শক্তি পূরা করা যে নির্ভিত হয় নাই বটে, তথাপি কুক্ষিতা ও রাজনীতি- জ্ঞতার পরিচয় পাওয়া গিয়াছে। তাঁহারা যে সকল বিষয়ে তর্ক করিতেছেন, তা হা কেবল অযোধ্যার নহে, সমুদায় ভাবতব- র্ষে লুভকর। যখন এত সত্কার এ প্রকারে কার্য সম্পাদিত হইতেছে, তখন আমবা স্পষ্টাক্ষরে কহিতে পারি, ভাবতবর্ষীয় উচ্চ জ্ঞেয় লোকদিগের এক সত্কা করি রা শাসন ও আইন বিষয়ে পরামর্শ লওয়া কর্তব্য। ভাবতবর্ষীয়দিগকে শাসনকা- র্যের অংশ ভোগী করিবার আমাদিগের যে ইচ্ছা আছে, তাহা আমরা এই উপায দ্বারা সম্পাদন করিতে সমর্থ হইব।"

উল্লিখিত প্রস্তাবলেখককে ধন্যবাদ দিয়া এই প্রস্তাবের উপসংহার ক হইতেছে। এদেশে একটি জাতি সাধারণ সত্কা করিবার সময় উপস্থিত হই য়াছে। আমবা বারবার ইহার প্রস্তাব ক রিয়াছি। আমাদিগের নৃপের বিবরণ এই, যখন আমাদিগের ভাবতবর্ষীয় সত্কা নি দ্রিত আছেন, এবিষয় ইংলণ্ডে আন্দো লিত হইতেছে। যত দিন ইহা না হইতে ছে, তত দিন আমাদিগের বর্ষণ স্বাকীমক্কা ও যথার্থ উদ্ভিষ্ট হইতেছে না। সকল বি ঘয়েই গনগণের বদন্যতার উপর নির্ভ র করিয়া থাকিলে কেবল আপনাদিগের অলস ও নিরহ স্বভাবের পরিচয় দেওয়া হয় এই মাত্র। চেষ্টা না করিয়া কোন দে শের মঙ্গল হইয়া থাকে - ইংলণ্ড ও ইটালীর দিকে দৃষ্টিপাত করিলেই আমা দিগের নাকটি স্পষ্ট জ্ঞেয়মম হইবে। আমাদিগের দেশের লোকেরা কি এখনও এই মহাতীর্থে সাধনে পরাধ্ব থাকিবেন?

ভারতবর্ষীয় সত্কার এত নিম্ন কেন?

আমরা এবার ভাবতবর্ষীয় সত্কারে এত অভিভূত দেখিতেছি কারণ কি? ইংলণ্ডের মোন দেশ বাচ্য শুনিতে পাইতে না কেন? লাণ্ডোল্ডের ম লাগিয়া কি তাঁহার শরীরকে হু লস করিয়া পরিশেষে নিভ্রাতিভূত করিয়া তুলিয়াছে? বহুকাল হইল, সত্কার অধি বেশন বার্তা; অথবা কার্য বিবরণ প্রামাণি গের প্রতিপদপ্রবর্তি হয় নাই। সত্কার একগুণে অনেকগুলি মফস্বলের জমীদার প্রবেশ করিয়াছেন, তাহাই কি সত্কার একগুণ ভাবপরিবর্তের কারণ? না আর কোন নিগূঢ় কারণ আছে? অনরবে শুনি তে পাওয়া যায়, সত্কা পূর্বের ন্যায় কেবল জমীদারদিগের মনোরঞ্জন করিবেন সত্কা প করিয়াছেন, একজনা জমীদারদিগের স্বার্থহানিকর কোন বিষয় উপস্থিত নাই, সত্কাও নিদ্রিত হইয়া আছেন; তাহুশ বি ঘন উপস্থিত হইলেই সত্কা নিভ্রা হইতে উদ্ভিত হইবেন এত? অপ্রোদিত সিংহের ন্যায় হুতন বল প্রাপ্ত হইয়া অসীম সাহস সহকারে যুদ্ধিতে আরম্ভ করিবেন। ইহাই কি একমুত কারণ?

যাহা হউক, আমরা সত্কার পূর্বের ন্যায় তেজস্বিতা ও উৎসাহশীলতা দেখি তে পাইতেছি না। এখন কি তাঁহার উ সাহ ও তেজঃ প্রকাশের বিষয় উপস্থিত নাই? অনেক আছে। সত্কা কেবল নিভ্রা বশেষে তাহা দেখিতে ও জানিতে পারিতে ছেন না। ভাবতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সত্কার বিত্তীয় অধিবেশন হইয়া গেল, তথাপি তথায় বাজলা দেশের ইনিধি বৃদ্ধি হইলেন না, ভাবতবর্ষীয় সত্কা কি তাহার প্রতিবাদ করিয়াছেন? সব বার্গেন পিকল ছিল সাহেব এটিত কর নহেন। মফস্বার যে নিভ্রাতি করিয়াছেন সত্কা কি তাহার প্রতিবাদ কর আমাদিগের দেশে বিঘ্ন





জর্জনি ও আমেরিকা প্রভৃতি স্থানে প্রেরণ করিবে। একপে কার্য আরম্ভ হইলে অনেকবিধ উপকার লাভের সম্ভাবনা আছে। সেই সেই দেশের সহিত সবিশেষ সাক্ষাৎ হইলে পর পরস্পর বাধা বাধকতা হইয়া উঠিবে; এ দেশে যে যে বিদ্যে জ্ঞান প্রাপ্ত সংস্কারের প্রাচুর্য আছে, ক্রমে তা আর ছান হইয়া আসিবে, লোকের উৎসাহ শক্তি সঞ্চিত হইয়া উঠিবে এবং একমূলক ক্রমে জাহাজ চালাই শিক্ষা ও কল প্রভৃতির এ দেশে আনয়ন নির্মাণ ও চালানাদির শিক্ষা কাব্য সহজে সম্পাদিত হইয়া উঠিবে। অর্থ লাভের ত কথাই নাই। যাঁহাদিগের অর্থ সম্বন্ধ আছে, তাঁহারা এত দিন নিরীকভাবে কোম্পানির কাগজের সুখ খাইয়া দেশের যে দুর্ভিক্ষ করিয়াছেন, তাহার আর কথা নাই। কিন্তু এখন আর এইরূপে দুর্ভিক্ষ করা উচিত হইতেছে না। তাঁহারা যতদূর সম্ভব এবিধ কার্যে হস্তক্ষেপ করিয়া যথেষ্ট সহিত আপনাদিগের সাহস উৎসাহ বল বীজ্য বিক্রমাদির বৃদ্ধি করুন। আমরা অন্য এবিধে সহায় বস্তব্য শেষ করিতে পারিলাম না।

### মোগলবংশ লোপ।

মোগলরা এই ভারতবর্ষে বহুকাল প্রায় প্রতাপ সহকারে রাজত্ব করিয়াছিলেন। উৎকর্ষশীল বীজ্য শালী অসামান্য ক্ষমতা সম্পন্ন করেক ব্যক্তি অল্প গ্রহণ করেন, তাহাদিগের গুণেই এই বংশের সবিশেষ উন্নতি হইয়াছিল। কিন্তু একদাবার তরুর এক মূল্য নোব এই, কইতাবাম্ ব্যক্তিদ্বিগের মরণে রাজত্ব যেমন উজ্জ্বল হইয়া উঠেন, তেমনি তাহাদিগের বিলম্ব হইলেই হীনপ্রভ হইয়া পড়েন। অসম্মত রাজাদিগের কাণ্ডকাব্য বহুদূর এই বংশের ক্রমে হীন দশা উপস্থিত। এদেশে ইংরাজেরা লম্বপ্রতিষ্ঠ হইলে এই বংশের রাজত্ব কেবল নাম মাত্র পুঙ্খ নশ্ব হয়। ১৮৫৭ আন্দোলন বিদ্রোহ ও হানি বাহাদুর সাহেবের মৃত্যু হওয়ার পরে সেই নাম

মাত্র রাজত্বের সহিত রাজবংশেরও লোপ হইয়াছে। আমরা অন্য এই বংশের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস পাঠকগণের গোচর করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

মোগল (১) রাজবংশের আদিম ব্যক্তির নাম বাবর। তিনি সুবিখ্যাত টাইমুর ও অজিন খাঁর বংশোদ্ভব। তিনি অতিশয় শৌর্য শালী, সাহসিক ও অকুণ্ঠিত ছিলেন। তাঁহার মাতা প্রকার দশা বিপর্যয় হয়। কিন্তু তাঁহার অসামান্য খুশর ও মনবিশ্ব এই দুটি গুণ থাকতে তিনি কখন কোন অবস্থাতেই তরোৎসাহ ও বিচরনা হইতেন না। কখন বচসংখ্য সেনার অধিপতি হইয়া সুবিস্তৃত রাজ্যে অধিপত্য করিতেন, কখন বা অসামান্য বদনে দারিদ্র্য দশার কঠোর ক্রেশ সহ্য করিতেন। তিনি বারবার মাতা কষ্ট ভোগ করিয়া পরিশেষে দিল্লীর সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন। রাজ্যের অর্জন, বর্জন, ও রক্ষণ কার্যে তাঁহার বল, বীজ্য, ও অধ্যবসায়িতা যাবতীর গুণ বিনির্বোজিত হইয়াছিল। বহুদিগের প্রতি তিনি সম্মান ও প্রেমবান্ ছিলেন। বংশের কষ্ট ভোগ কালেও কখন তাঁহার দশা ও বাৎসল্য ভাবের অনুমাত্র স্থানতা দৃষ্ট হয় নাই। তাঁহার মোগলের মধ্যে এই ছিল। তিনি সুরাশ্রয় ছিলেন। কিন্তু মদ্য পান করিয়া ইন্দোনীকন সুরাপাদিদ্বিগের ন্যায় তিনি উন্নত হইতেন না। তিনি নদীতটে, তরুশূলে বা অন্য কোন স্থলস্থ স্থানে প্রিয় স্নানগগণ বেষ্টিত হইয়া সুরাপান করিয়া আনন্দ ভ্রম অশ্রুতব করিতেন, তিনি নিম্ন হস্তে আপন জীবন যুদ্ধান্ত লিখিয়া যান তাঁহার রচনা লিপিত ও অক্ষয়প্রাচীণ। রাজ্যের আদি কালে তাঁহার সবিশেষ ব্যয় ছিল। তাঁহার সৎস্কার কালে অনেক লাণী রূপ তড়াগাদি খনন করা হয়। ৩৮ বৎসর রাজত্ব করিয়া তিনি মৃত্যু মুখে পতিত হইলেন।

বাবর মানবলীলা সম্বরণ করিলে পর তাঁ-

(১) ভারতবর্ষ বাসিন্দা। তাৎপার্য আভি প্রিয় উত্তর প্রদেশস্থ যাবতীর স্থানসমানকে মোগল এই শব্দ দ্বারা নির্দেশ করিয়া থাকেন। বাবরের জননী মোগল রাজপুত্রী ছিলেন বলিয়া বোধ হয় খাবরকে মোগল বোধ হইত।

হার পুত্র হুমায়ুন আত্মপক্ষের সহিত দেশে আসিলে তাঁর সম্বরণ করিয়া সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। তাঁহার রাজত্বের প্রায় সংগ্রামেই পর্যাবসিত হইয়াছিল। শেষে রাজ্যচ্যুত হইলেন। তৎকালে অনেক কষ্ট ভোগ করিতে হইয়াছিল। কঠোর সময়ে লগবিখ্যাত আকবর জন্ম হয়। ১৬ বৎসর পূর্বে তিনি পুত্রসন্তান দিল্লীর সিংহাসনে প্রাপ্ত হইলেন। কিন্তু ইতিপূর্বে তিনি অধিক দিন জীবিত ছিলেন না। তাঁহার মৃত্যুকালে রাজ্য অতি শিথিলাবস্থায় ছিল। তিনি ২৬ বৎসর রাজত্ব করেন। এই কাল মধ্যে আর ১৬ বৎসর রাজ্যচ্যুত হইয়া থাকেন। বাবর মাতৃবংশের বংশে অস্তিত্ব ও প্রীতির স্মরণ কর, হুমায়ুনের আত্মপক্ষ বিশেষ গুণ ছিল না, বরং কোন কোন বিষয়ে তিনি আপনাদিগের মানসিক দুর্বলতার পরিচয় দিয়াছিলেন।

হুমায়ুনের মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্র আকবর সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন। তাঁহার বরং অকুণ্ঠিত হইল। তাঁহার মৃত্যুর পরে তাঁহার সন্তান হস্তে রাজ্যের যাবতীর কার্য আর পতিত হইল। অষ্টাদশবর্ষ বরং অকালে আকবর বরং রাজ্য কার্য নির্বাহ করিতে অক্ষম করিলেন। রাজ্যের শাসনভার গ্রহণ করিয়াই তাঁহাকে রাজত্ব বর্জন লাভ্যাজ্যের বিষয় তাগের পুনরধিকারকরণ, শত্রু বধন ও মর্জিত হইয়াছিল। স্থাপন ইত্যাদি ক্ষুদ্র-কাণ্ডে ব্যাপ্ত হইতে হইল। তিনি নিজ দুর্বলতা, উচ্চ বদতা ও দুর্ভাগ্যপ্রাপ্ততা গুণে ক্রমে ক্রমে নবিত্ব অতিক্রম করিয়া উঠিলেন। কিন্তু তিনি জীবনাবসান পর্যন্ত নিঃশত্রু, নিরাপন্ন ও সুস্থিত হইতে পারেন নাই। কখন অবাধ্য ও খলোপ পুত্রদিগের সহিত যুদ্ধ, কখন রাজবিদ্বেষিত্বকে বধন, কখন বা পুত্রবিহীন রাজ্যের পুনরুদ্ধার ইত্যাদি কার্যে জীবনের অধিকাংশ কাল তাঁহাকে কেপে বসিত হইয়াছিল। তিনি অসামান্য কষ্টভোগের অস্ত্রভানে উদাসীন ছিলেন না। মৃত্যু হইতে অবসর পাইলেই তিনি তদ্বিষয়ে যত্নাবলি বেশ করিতেন। তিনি যে উপায়ে নিশ্চিত



এছিলেন, তাঁহা— নিজ পদোপযোগি  
পদেগের হিতকর কার্যের অনুষ্ঠান না  
হা। অলস হইয়া থাকা স্বভাবিত নহে।  
। রাজাদিগের অধিকার কালে ধর্ম্যক্রিয়া  
হে যে সমস্ত কর নিরূপিত হইয়াছিল  
হা। তদ্বিহীন করিলেন। তিনি অতিশয়  
শক্তিশালী ছিলেন। তিনি কোন ধর্মের বি-  
বর্তী অথবা দুর্বলী ছিলেন না। তিনি একে  
পরবাদী ছিলেন। বিস্তৃত ধর্ম অবলম্বন করা  
ত তাঁহার প্রতি দোঁড়া মূলমানের। অত্যন্ত  
বরক্ত হইয়াছিল। পরমার্থ তত্ত্বদীপানে দাক  
রের স্পৃহা একপ বলবতী ছিল এবং তৎসংগত  
ধর্মোপার্গ তিনি প্রায় সমস্ত ধর্মের আগরণ  
রিতে পারিতেন। তিনি হিন্দু, কিংসু, জৈন, কি  
সুন্নি মসল ধর্মের আলোচনা করিত। তিনি  
তাঁহার নিজ ভাগ গ্রহণ করিতেন। সাহিত্য ও  
জ্ঞানাদি শাস্ত্রের আলোচনা বিষয়েও তাঁ-  
হার অস্বাভাবিক মনোভা ছিল না। সংস্কৃত  
ইতে সহস্রবিধ কব্য, বর্ণন, বীজগণিতাদি  
গণিত জ্ঞান অস্বাভাবিক হইত। এত ও  
গাণিত্য জ্ঞান হইতেও প্রভেদ অস্বাভাবিক বি-  
য়ে তিনি বহুবান্ ছিলেন। এই সকল বিষয়ে  
কতি ও আবহুল কলম নামে দুই সহোদর  
গাচার সর্বশেষ সহায়তা করেন। বিস্তৃত ধ  
র্মের জ্ঞানগ্রহণে তিনি কেবল সম্য হইয়া  
ছিলেন, তদনুসরণ কার্যের অনুষ্ঠানেও তিনি  
উদ্যোগী ছিলেন না। তিনি মূলমান ধর্ম  
নির্দিষ্ট কতিপয় অধৌক্তিক ধর্ম্য ক্রিয়ার  
ধলোপ সাধনের চেষ্টা পাইয়াছিলেন। হিন্দু  
ধর্মাদিগের সমস্ত দাবীর অলঙ্কার  
স্বাধীন এবং অপব্যবসে জীর্ণগ্নের বিবাহ  
বৈধ্য করেন। বিধবাগণকে পুনর্বিবাহ  
করিতে অনুমতি দেন। দ্বাংধের বিষয় এই  
ধর্ম্য জ্ঞান এই সকল শুভ চেষ্টা তাঁহার শরী-  
র প্রভেদ লক্ষ্যে বিশাল প্রাপ্ত হইয়া যায়।  
তিনি যদি বাহ্যিক রূপে বিদ্যাশিক্ষার উপায়  
প্রদান করিত। অধিকাংশ লোকের সমস্ত কল-  
হইত। অস্বাভাবিক হইয়া তত করিতে পা-  
ইতেন, হইয়া হইলে তাঁহার মনোভাতিপ্রায়  
কালের পরিশ্রমে সম্পন্ন হইত সমস্তই নাট।  
সম্পন্ন হইয়া ও তিনি কোথা হিন্দুদিগকে  
কর্তব্য ও কর্তব্য পদ দানে পরামর্শ দিতেন

না। রাজার একপ উদ্যোগ তাব না হইলে তিনি  
জাতীর প্রজার কি কখন সুখ সাধন কর ?  
সংগ্রাম স্থলেও তাঁহার লক্ষণ নেত্র বাস  
তলে অবনত হইত। বনস্থলে বন্যদিগকে  
গোলায় করিবার প্রথা তিনি রহিত করেন।  
যাহাতে দুর্ব অস্ত্রালিকাদি নির্মাণ ক্রিয়ার উৎ-  
কর্ষ হয়, তাহাও তাঁহার সর্বশেষ দৃষ্টি ছিল।  
আকবর রাজ্য সংক্রান্ত বিষয়ের দোশ  
সংশোধনের যে তিনটি উপায় অবলম্বন করি-  
য়াছিলেন, তাহারা তাঁহার প্রতিজ্ঞাশালিতা,  
উদ্যোগশীলতা ও কার্যদক্ষতার সর্বশেষ  
পরিচয় পাওয়া বাইতেছে। সে এই—  
প্রথম। রাজ্যের সমস্ত ভূমির বখাণ পরি-  
মাণ।  
দ্বিতীয়। কোন ক্ষেত্রে কত শস্য উৎপাদ  
হয় ও সেট শস্যের কত অংশ রাজাকে দেও-  
রা উচিত, তাহার নির্ণয়।  
তৃতীয়। রাজার প্রাপ্য শস্যের মূল্য নি-  
রূপণ।  
বিচার প্রণালী ও টেনিকদিগের বেতন  
দানের রীতি খট্টিত যে সমস্ত দোষ ছিল, আ-  
কবর তাহারও সংশোধন বিষয়ে উদ্যোগী ছি-  
লেন না। তিনি যে যে কার্যের অনুষ্ঠান করি-  
তেন, তাহার সমুদায়েরই তাঁহার দয়াগুণের  
সর্বশেষ পরিচয় হইত, কিন্তু একটা বিষয়ের  
বিষয় এই যে কোন কোন অপরাধে তাঁহার  
অধিকার কালে হস্তগত হইতেন মৃতের  
বিধি উল্লিখিত হয় নাই।  
আকবর এইরূপ নানাবিধ কার্যে মনোযোগী  
হইয়া প্রায় ৫০ বৎসর কাল রাজ্য ভোগ করি-  
য়া মানবজাতি সধরণ করেন। তাঁহার গুণ  
দোষের বিষয় পর্যালোচনা করিলে স্পষ্ট প্র-  
তীয়মান হইবে যে তাঁহার মনুষ্য ভূপতি মূল-  
তলে সচরাচর লক্ষ গ্রহণ করেন না। তিনি  
বিলকণ সুখী ও বলবান্ ছিলেন। তাঁহার অ-  
নুসরণও নানাবিধ মনুষ্যগণে ভূষিত ছিল।  
তিনি ইঞ্জিয়পূরণ ছিলেন না, অতিশয় প-  
রিশ্রমী ছিলেন। তিনি তিন বর্ষ মাত্র মিহা  
যাত্রা পরিভ্রমণ হইতেন। তিনি কখন কখন  
পদপ্রক্ষে ১৫। ২০ ক্রোশ পথ একদিনের মধ্যে  
চলিতেন অথপূর্বে ১১০ ক্রোশ পথ দুই দি-  
বসে গমন করিয়াছিলেন। তিনি অতিশয়  
দাতা ছিলেন।  
যেহ আশা দিয়া থাকে হইবে।

মুদ্রন পুস্তক ও পত্রিকা।

আমরা কতজ্ঞতা সহকারে খোদার কলি  
ত্রেহি, নিম্ন লিখিত দুইখানি পুস্তক ও এক  
খানি পত্রিকা আশাদিগের মুদ্রণ হইয়াছে।  
১। সাধুতাবা সুবোধ ব্যাকরণ। জীব  
ব্যাকরণ নন্দী ইহার প্রণয়নকর্তা।  
গ্রন্থকার পরিচয় পূর্বক জানেও বিষয় ইহ  
সমাধেয়িত করিয়াছেন। বাস্তব্য তাব  
যে সমস্ত ক্রিয়াপদাদি ব্যবহৃত হইয়া থাকে  
তাঁহার রূপ ও লক্ষণাদি দিয়া হইয়াছে। অ-  
পর বাস্তব্য তাব সংস্কৃত হইতে ব্যুৎপন্ন  
হইয়াছে, ইহাতে অনেক অসিদ্ধিত সং-  
শয় ব্যবহৃত হয়। সংস্কৃত ব্যাকরণ না জ-  
নিলে তাঁহার সাধন প্রক্রিয়া জানা যায় না  
এই বিবেচনা করিয়া সুবোধ ব্যাকরণক  
সুদবোধের অনেক প্রশ্ন অত্যাধিক করিয়া দি-  
য়াছেন। এই ব্যাকরণের অনেক স্থান আশা  
দিগের মতে পরিবর্তনীয় ও পরিভ্রম  
যোগ্য হইল। গ্রন্থকার এক স্থানে লিখিয়াছেন  
“শুদ্ধ বর্তমান এবং সুত সাধীপ্য বর্তমা-  
কালে প্রায় বী বিস্তৃতি হয়। যথা, তিনি খ  
ইতেছেন, আমি লিখিতেছি, তুমি দেখিতেছ  
আমি এইমাত্র আনিতেছি।” এই রূপ  
যেকটি মূল ও উদাহরণ আছে। বাস্তব্য বা-  
করণে এ কেন ?  
২। পদার্থ তত্ত্ব। ইহা ইংরাজীর অস-  
বায়। জিনা হরলির “সমুদায়ী বংশব্য-  
নিবাসী জীবিত বায় দায়কামাখ দান অস্বা-  
কর্তা। ইহাতে অনেক গুলি উপকারী বি-  
স্মিবেশিত হইয়াছে। রচনা নিতান্ত নির্দো-  
না হউক, নীরস ও কলম হইয়াছে। আম  
কয়েকটি বিষয় অতিশয় পূর্বক পাঠ করি-  
লান, কোন কোন বিষয় অসম্পূর্ণ ও কে  
কোন বিষয় ইহাতে সন্নিবেশনের অযোগ্য  
বলিয়া বোধ হইল। গ্রন্থের “গর্ভ” ও  
শিল্পোদায় দিয়া একটি প্রস্তাব লিখিত হই-  
য়াছে, তাহা আরো কিছু বিস্তারিত করি-  
লেখা আবশ্যিক ছিল। বৌদ্ধবাদের বসিয়া  
“প্রস্তাবটি লিখিত হইয়াছে, তাহাতে পদ-  
অসিদ্ধিত কথা অসম্পূর্ণ ও অন্য কথা বাস্তব্য  
উদাহরণ হইয়াছে ও প্রায় এক ভাষে  
কোনো কোনো স্থান অসম্পূর্ণ আছে তা

শিক্ষা প্রকল্পের এক জন সংবাদ দাতা ক-  
লক, বঙ্গবন্ধুর অনুপাতী করেকী প্রাণে  
অভ্যাসক আর হইতেছে। একটি প্রাণে প্রাণ  
এককণ্ড লোক করেক চিবলের মধ্যে প্রাণ  
অভ্যাস করিতেছে। গবর্নকে কহিসনও বনাই



৫, ঊষখ-ও মিলেন না । ভারতবর্ষীয়  
কি নিদ্রা বাইতেছেন? তাঁহারা যদেখী  
র অনুরাগ ভাজন হইবার আর কি সু-  
গ পাইবেন?

১৫ই পৌষ মঙ্গলবার ।

পূনা অবজারবর বলেন, বোম্বাইয়ের রে-  
ফট হইতে সর্বদা প্রবাসি হুরি যার  
রত্ন্য রেইলওয়ে কোম্পানি গবর্ণ-  
মেন্ট ত্যাগ করিয়া আপনারা পুলিষ  
নেযুক্ত করিছেন । এটা গবর্ণমেন্টের  
র সন্ধেই নাই । কোন্ দিম আসামের  
গকে লাঠি থকিয়া খসিয়াগিনকে চুরী-  
কিতে বাইতে হয় ।

গপুরে " হত্যভারতবর্ষীয় টাইমস "   
একখানি সপ্তাহিক উৎসাহী সংবাদ  
পত্র হইতে আরম্ভ হইয়াছে । প্রকাশ-  
ক ভারতবর্ষের উন্নতি চুড়িগোচর হই-  
তেছে ।

অব্যাহাংগেজেট বলেন, আসগর  
খান, নাক-একজন ছুতপুর্ন বিরোধী লোক  
গরে ধৃত হইয়াছে । এই ব্যক্তি আর তিন  
জন সহচরের সহিত লিটল মাসক একজন  
ইরোপীয় কেরানীর পরিচারককে বধ করি-  
ল ।

এত দিনের পর কলিকাতার অক্ষয়  
কোম্পানির শেষ হইল । টালা সাহেবের স-  
হে ইহা যাবতীয় নীলামকারী কোম্পানি  
অপেক্ষা প্রধান ছিল । অধ্যক্ষ ও কর্মচারি-  
গণের মধ্যে কয়েক বৎসরাধি ইহা প্রচলিত  
ছিল । আসিতেছিল । গত কল্যাণ যাহা  
করানী ও সরকারকে হাটাইয়া দেওয়া  
হইতেছে । প্রাক্তন মাত্র হিসাব পরিচারক বরি-  
ন্থ নিযুক্ত আছেন । কোম্পানির মোতা-  
বিত্তি বিবরণ তাঁহাদেরই হইবে । শুনা  
হইতেছে বারু গোবিন্দচন্দ্র সেন, হীরালাল  
স ও জালালজাতি প্রমাদ পুনর্বার ই কার্য  
সম্পন্ন করিবেন । আমরা এমিয়ে তাঁহাদি-  
গকে অনুমোদন করি না, তাঁহারা এ চেষ্টা  
ত্যাগ করিয়া একটি বস্ত্র প্রস্তুতকারী কোম্পা-  
নি করুন । তাহা হইলেই সমস্তে এদেশে  
অনেক উন্নতি হইবে ।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে অপ্রত্যাশিত মামল

বাঙ্গালী জাহাজের সংখ্যার ১০০০০ ✓  
প্রদান করিয়াছেন । গবর্ণমেন্টেই একজন  
কার্য্যই অনেক । জাহাজ জাহাজ বিক্রয়  
করিয়া গবর্ণমেন্টে একত্রে পচা জাহাজে তালি  
দিয়া চক্ষু টাক্ষ নষ্ট করিতেছেন ।

গেজেটে কয়েকখানি পত্র প্রকাশিত হই-  
তেছে : চট্টগ্রামের সিভিল আর্টিষ্টসে সভ্যজন  
ডাক্তার বিটমস ও নিমকের সহকারী সুপরি-  
টেণ্ডেন্ট ক্রস সাহেব তত্ত্ব্য প্রতিনিধি কনি  
সনকে লিখিয়াছেন, চট্টগ্রাম প্রদেশে উত্তম  
কাফি ও চা চাষিতে পারে । উপায় কয়েক  
খানি চার কেন্দ্র হইয়াছে । এক কেন্দ্রের চা  
এমন উত্তম যে লন্ডনের একজন বিখ্যাত ব-  
নিক বলেন, তাহা ভারতবর্ষীয় যাবতীয় চা  
অপেক্ষা উত্তম । পর্বতের মধ্যে অনেক স্থানে  
চা আপনি জন্মিয়া থাকে । ডাক্তার বিটমস  
আরও বলেন, তৎপন্ন বন্য আরাকট নামে  
এক প্রকার মূল মনে, তাহার উত্তম কাপ-  
ড়ের মাক হইতে পারে ।

কিনিক বলেন লেপ্টনট গবর্নর বোডের  
অনুরোধ না শুনিয়া ইটালী আফিসের খা-  
তাবির বেতন ২৩০ হইতে ৩০০ টাকা করি-  
য়াছেন । বীডন সাহেব বলেন, এখন খাতাবি-  
কে অধিকতর টাকা ভাণ্ডার দিতে ও গুরুতর  
কার্য্যে দায়ী হইতে হইতেছে, তখন তাঁহার  
বেতন হ্রাস না করা অন্যায় । যথার্থ বিচার !

উক্ত পত্র আরও বলেন, ভারতবর্ষীয়  
গবর্ণমেন্ট আজ দিরাছেন গবর্ণমেন্টের যত  
হাতি খাড়া আছে তাহা উত্তীরা বাইবে ।  
গবর্ণমেন্ট বাজার হইতে হাতি ক্রয় করিবেন ।  
যত বেশী হাতি আছে সে সমুদায় বিক্রয়  
করা হইবে । হাতি খারর যত মার হয়, তত  
স্বল্প লাভ হয় না । আমরা জানি চট্টগ্রামের  
খানসাহ গবর্ণমেন্টকে কতিপয় করিতে হয়,  
অথচ চট্টগ্রাম ও জিহতে প্রখ্যাত হাতি খাড়া  
আছে । একচেহিরা সভ্যতার সম্পূর্ণ বিরোধী ।

অন্যকার টেলিগ্রাফে সংবাদ আনিয়াছে,  
ইটালির মন্ত্রিবর্গ কর্তৃক জাহাজ করিয়াছেন ।  
কলতঃ রাটেলি প্রখ্যাত মন্ত্রী হওয়া অবধি  
ইটালীর গবর্ণমেন্টে কমান্ডের কক্ষকর্তা নির্বা-  
চিত কার্য্য করিয়াছেন । কেবল তাঁহার  
নামে বিবরণ হয় নাই । এই নির্বিকার

বিবরণ বিবরণ হইয়াছেন । কেবল যেমন  
ছিলেন তাঁহার তুল্য লোক একত্রে ইউরোপে  
নাই । সম্রাট নেপোলিয়ন নিজে বলিয়াছেন  
" ইউরোপের মধ্যে যত লোক আছে তাহা-  
র মধ্যে আমি কেবলকে ভয় করি " কেবলের  
মৃত্যুর পর ফ্রান্সিসেসাল ইটালির সম্মান  
অব্যাহত রাখিয়াছিলেন, ফরাসী যক্ষমত্রে  
তাঁহাকে পর ত্যাগ করিতে হয় । কিন্তু এখন  
সমুদায় ইটালির লোক ও রাজা একত্রে  
হইয়াছেন, তখন রাটেলি আর শাসন করিতে  
পারেন না ।

আর একটি মুখের সম্বাদ এই গার্লিবাল-  
ডির কত স্থান হইতে এক জন ফরাসী চিকিৎ-  
সক একটি গুলি বাজির করিয়াছেন । সেনাপ-  
তি শীত্র শীত্র হইতেছেন । ওয়েসিংটন  
বলিয়াছিলেন, এক নেপোলিয়ন চম্পি লক্ষ্য  
উত্তম সেনার তুল্য, সেই প্রকার এক গার্লি-  
বালডি অষ্ট্রীয় গবর্ণমেন্টের তর ও ইটালি  
সাহসের কারণ হইয়াছেন ।

১৫ই পৌষ বুধবার ।

মাস্তাজ গবর্ণমেন্টে গ্রিবাঙ্কের রাজ্যে  
জাতিগণ সম্মান সহকারে গ্রহণ করিয়াছেন ।  
হিন্দু, মুসলমান ও ইউরোপীয় সকল জাতি  
একত্র হইয়া তুল্যভাবে রাজার ঘণ্টাচিত্ত সম্মা-  
ননা করেন । শাসন কর্তা সব উইলিয়ম ডেনি-  
সন স্বয়ং মাস্তাজের প্রধান প্রধান লোককে  
গকে রাজার পরিচিত করিয়া দিয়াছেন ।  
জাতিগণের যেমন কলিকাতার প্রবল, এমন  
কোথাও নহে ।

আগামি শুক্রবার ইতেন বাগানে একটি  
ব্যোমধান উদ্দিবে । ভিন নামে এক ব্যক্তি তা-  
হাতে আত্মোৎসর্গ করিবেন আশ্রয় আরও শু-  
নিলাব, বেহুসের অধ্যক্ষ জনটমের জী এসকে  
উদ্দিবেন ।

অন্যকার গেজেটে বৃত্ত হইল, বারু ফে-  
রোহন চট্টোপাধ্যায় পুনর্বার যদেখী, সহ-  
কারী সিভিল গে মার্টিনের অধীন আর গ্রহণ  
করিয়াছেন । কলকাতা, উত্তর পশ্চিম ও পূর্বা-  
বের সিভিল গে মার্টিনের পক্ষ পূর্ণ্য হইলেই  
তিনি ই পক্ষ পূর্ণ্য হইবে ।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে অপ্রত্যাশিত মামল

কল র ত্রিভুজ বৃক্সের নিধে বাবিরারি  
ঠেসনে মালের গাফি আকিয়া সিগুছে। বি  
শেষ বৃত্তান্ত প্রকাশিত হয় নাই। এক জন  
কিকিট গাফি জাজি সাফে আভার সময় না  
আসিয়া সাফে তিনটার সময়ে আসিয়াছে।  
এই নকট দ্বারা অচে ১৩ আনা হটগু-  
চে। একশে ভারতবর্ষীয় কোম্পানির রেইল  
ওয়েতে এসকল জুইটনা এত খটতেছে  
কেন?

১১ই পৌষ সম্প্রতিবার।  
মিল্লীগেজেট বলেন, লেপ্টনটে আকসান  
য় বিচার আকুত হইয়াছে। কোবল নান্দ  
একজন বোখাইয়ের কারিগর তাঁতায় পক্ষ  
সমর্থন করিতেছেন। সেই জন বিবিজি সাকী  
বলিয়াছেন তাঁহার। কামসামার প্রহা দর্শন  
করিয়া জেগুটি কমিসনরকে সংবাদ দেন।  
কিরদিকের জনা বিচার বন্ধ রাখিয়াছে।  
এক জন ইউরোপীয় কপাটিতে জুনা  
চুরি করিয়া কিছু টাকা পলায়ন করিয়া  
রাজপুতনার গল্পন করে। তথায় সে আপ-  
নাকে লণ্ডনস্থিত ইন্ডে টেজ লণ্ডন মিউ-  
সেয় ৩ এক জন সংবাদসূতা ও চিত্রকর ব-  
লিয়া পরিচয় দেয়। তদ্বিষয়ে অনেক ইউ-

রোপীয় কপটমাকে তাহাকে সম্বোধ করেন,  
এবং কোর কোর কিছু টাকাও দিগাহেন।  
পত্রে হঠাৎ করাচি হইতে তাহাকে বন্দী করি  
খটি পাঠওয়ারি আসিয়াছে। সে আভিয়ার পে  
পত্র সম্পাদককে এই বলিয়া পত্র লিখিয়াছে  
এবং হালস। পত্রগ্রহ করিয়া বতবুর পারেন  
সহায়তা করিবেন। আমি বাহাতে নির্দোষী  
হই এ চেটী আপনাকে করিতে হইবে। ০০০০  
বাহাতে আবার বোখাইয়ের প্রধানতর বি-  
চারালয়ে বিচার হয় আমি সে চেটী করিব,  
কাল আমি নিশ্চয় কামি তত্ত্ব্য ছুরি আ-  
মা নির্দোষী বলি। ১৮ ইংরাজী সবা  
টার পত্র ১৮৮০। দোণী ইউরোপীয়দি  
গের সহায়তা করেন এবং জুরিও তাহা  
দ্রিগকে মুক্ত করিয়া দিবার চেটী করেন, ইহা  
কেবল যে ইউরোপীয়দিগের প্রাপ্তিক্রিয়া  
প্রবর্তি হুদ্রির কারণ একশ নহে, এতদ্ব্যতীত  
এদেশীয়দিগেরও এই সংস্কার জন্মিয়াছে যে  
রাজপুতবেরা পক্ষপাত নিবন্ধন ইউরোপী  
য়দিগের সহায়তা করেন না।

মক্সলাইট বলেন, অবোধার কথিতনর  
উইওফিলড্ সাহেবের উত্তরপশ্চিমাঞ্চলের  
শাসন কর্তৃত্ব পদ পাইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।  
অবে ধ্যা গেজেট বলেন অসগার আলি  
নামক বিদ্রোহী ও হত্যাকারী এত দিন বে। ন  
সাহ মফুলের বাটীর দেওয়ান ছিল। এজনা  
বেগম ককিধুং ১১ওয়া হইয়াছে, তিনি  
এত প্রকার লোককে কি জন্য আপন  
বাটীতে রাখিয়াছিলেন। সদর মরোগাকেও  
এনিমিত্ত বহুনা জগ করিতে হইবে।

মাকাজ টাইমস বলেন ১৮৮১ সালে টি  
নিয়ানন্দ সমাধির ২০ জন সাধু প-  
পখালরে নহাসমারোহ হইবে। ১৮৮১  
লান করা হইয়াছে তাহাতে ইংলণ্ডের  
লাড এলগিন, সব উটলিয়ম ডেনিসন, জিও  
ফ্রের রাজা, কপাটের নবাব ও সব চারলস  
টু বিলিয়ার্ণের নাম লেখা ও তাঁহাদিগের প্র-  
শংসা করা হইয়াছে। সর চারলস টু বিলি-  
য়ার্ন মাকাজ টাইমস ও এতদেশীয় সর্বসাধা-  
বনের যথার্থ প্রিয় পাঠ্য।

ফিনক্স বলেন গত মঙ্গলবার নিমতলার  
কজন মনীষ্যের বাটীর সম্মুখস্থ মরুমদায়  
একটি পাল পাওয়া যায়। তাহা খোলাতে এক  
বাবা পুত্রের মৃত দেহ বাহির হইয়াছে। সে  
কে, ও কোর ব্যক্তি তাহাকে বধ করিয়াছে  
তাঁহার অঙ্গুদখান হয় নাট। পুলিশ কর্মচারী  
গ্রিপ সাহেব হত্যাকারীকে ধৃত করিবার বি-  
শেষ চেটী করিতেছেন।

উক্ত পত্র ইংলণ্ডীয় একখানি কাগজ হ-  
ইতে একটি কিসাব উদ্ধৃত করিয়া বলিয়াছেন।  
এবং সর তত্ত্ব্য সংবাদ পত্রের নিমিত্ত অ

সেকারড অফ ইন্ডিয়ান কারিক  
টাইমস প্রকৃতি সকল কামসামার প্রহা  
হইয়াছে। বুর ও বোখাইয়ের কারিগর  
সংস্কারের প্রবর্তক ব্যক্তি হন। তাঁহা  
কই নাই বলিয়া প্রবর্তক অফ হইতে  
যথার্থ, চিত্রকর উভয় ও মাকাজ  
সম্পাদক প্রকৃতি সকল ব্যবসায়িক  
কটা বহুসময়ের সময় আছে। কোন কারিগর  
কার বুর ও গ্রীসের হুদ্রিকর ও উপাধি  
তবে প্রবর্তক করিল কেন?

১২ই পৌষ শুক্রবার।  
গত রাতিতে কপটমোরি বাবু কেজ টকা  
হন মলিক আপনার হাট হইতে কক মকামার  
য় পড়িয়া হৃতপ্রায় হইয়াছেন। চিত্রকর  
রা কহিতেছেন তাঁহার জীকন সংস্কার  
আলাহাবাদ গেজেট বলেন, সীরা আফ-  
রার ২৫০০ হুতন সৈন্য প্রেরিত হইবে।

উক্ত পত্র আরও বলেন, তথায় একজন  
ইউরোপীয় সৈনিকের বন্দী হইয়া গিয়াছে।  
উক্ত পত্রবারা আরও আনা গেল মাকাজ  
তথায় একটি সেতু ভগ্ন হইয়া। ব্যক্তি কক  
কয়েক জন বন্দীকরণে আহত হইয়াছে।

ঢাকা মিউ বলেন সম্প্রতি চিত্রকর  
কয়েক জন সকার বেজর হটমের সহিত সা-  
কাং করিয়া বুর প্রকৃতি পরিচয় ও মাকাজ  
কথা বলিয়াছেন। বত বীজ ও বুর  
শেষ হয়, ততই জাল।

১৩ই পৌষ শনিবার।  
গত শুক্রবার অপরায় পাট খটকার  
মরে ইতেন বাগানে নিরপিত সবরে জির্ন কা-  
হেব তাহার পুত্র ও বাবা বেরিয়ার মোদ  
বানে আকাশমার্গে উবত হইয়াছিলেন  
১৪মখান কামসামার পুর্বা দিকি সাগে মক  
১ চৌরকির দিকি মকাজ টাইমস পড়িয়া  
হইয়াছে।

মিল্লীগেজেট বলেন, মকাজ টাইমস  
কালে গবর্নমেন্টে কতিপয় হইয়াছেন।  
১৩০০ মণ বীজ বিক্রয়ের চেটী হয়, কিন্তু কে-  
বল ৫০০ মণ বিক্রয় হইয়াছে। কামসামার  
মাকাজ টাইমস কহিয়াছেন। ১৮৮১ মকাজ  
মূল্য ১০০ ১/২ পা।

উক্ত স গাফি আকসান বকো ট লতে  
বরীর হুইকন আকিসর জালির ১৮৮১  
প্রিয়াছিলেন। সিদ্ধির লোকে তাহা দিক  
কে বন্দী করিয়াছেন। তাহার ১৮৮১  
জিতরে কাহারও বাটীর অস্ত্রাতি নাট  
এতদ্ব্যতীত বোখাই একটি তুলাকা ও উপা-  
ত হইতে পাও।

মাকাজ টাইমস বলেন মাকাজ  
ও টাইমস সেলর ও হুইল্যান নামে  
বলি কামসামার পাণী মারিতে গিয়াছিল।



১০

১২

১৪

১৬

১৮

২০

২২

২৪

২৬

২৮

৩০

৩২

৩৪

৩৬

৩৮

৪০

৪২

৪৪

৪৬

৪৮

৫০

৫২

৫৪

৫৬

৫৮

৬০

৬২

৬৪

৬৬

৬৮

৭০

৭২

৭৪

৭৬

৭৮

৮০

৮২

৮৪

৮৬

৮৮

৯০

৯২

৯৪

৯৬

৯৮

১০০

৩ই শৌর শ্রমিবার।  
 - রোজউর করবার জিন্দ অশাবল্যক  
 - তাতে তাহ। পরিভাষ্য কইল।  
 - তর এতাবাত্তলারে ইতেন নাহের  
 - শোভ, রক্তি সংজ্ঞাত বিলের বিলক-  
 - এক জন সভা হইলেন।

[illegible][illegible]

গৰ্ভমেষ্টে বিজ্ঞাপন ।

[illegible][illegible]





১. ইহা হইল কুতজতা তহি শ্রীতি দেওয়া ও  
 ২. ইহা হইল শ্রীতি প্রার্থনা করা হইয়া উল্লাসন।  
 ৩. ইহা উল্লাসন। বখাৰ্ণ ও আত্মাৰ্ণ হইলে শ্রীতি  
 ৪. ইহা আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ৫. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ৬. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ৭. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ৮. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ৯. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ  
 ১০. ইহা হইল আত্মাৰ্ণ হইলে বখাৰ্ণ। ইহা হইল আত্মাৰ্ণ

হোটেছে অনসমর্থ হইলে পারিবারিক বাস্তবিক জীবনে ক্রন্দন করুন, তখন সেই পরবর্তী বাস্তবিক জীবনের ক্রন্দন ভবিষ্যৎ আবার সুখ, শান্তি, পরিবেশ না? নিজ বলে আপনকে অতিক্রম করিতে অনসমর্থ হইলে তাহাতে কি সহায়তা করিবে না? সেই পরবর্তী বাস্তবিক জীবনের জন্য লালসারিত হইলে তিনি কি দর্শন দিবে না? একদা বাস্তবিক জীবনে বলিতে ইচ্ছা করেন, বলুন, কিছু সাধু জীবন ইহা একবার তাহাতেও পারেন না, বাস্তবিক জীবনে উঠি ইহা জন্য শিষ্ট হইত এমনি। তাহা হইলে মাতা কি তাহাকে কোন্ডে গ্রহণ করিবে না, ইহা আপনাকে অনুরোধ আর কি আছে? কিন্তু আবার দেখ, যতক্ষণ পুত্র মাতার নিকটে বাইতে না অভিলষ করে, ততক্ষণ তিনি যদি তাহাকে দেখেই সহিতও কোন্ডে লন, সে তখনও মাতার স্নেহ সুকৃতিতে পারে না, মাতার কোন্ডে গিয়া সুখী হইতে পারে না, ক্রন্দনই করিতে থাকে। ইচ্ছা সেই জন্য এমন সময় দেখুন। আমাদিগকে গ্রহণ করেন, যখন আমাদিগের হৃদয় বলিম কামনাতে পূর্ণ না থাকে, যখন অসুস্থবাসি আমাদিগের হৃদয়ে স্থান পাউতে পারে, যখন তাঁহাকে পাইবার জন্য আমাদিগের অস্তিত্ব বোধ ও প্রার্থনা উদ্ভূত হইতে থাকে। বাস্তবিক আন্তরিক প্রার্থনা করিলে সে প্রার্থনা প্রাণী হয় না বলেন, বাস্তবিক প্রার্থনা বিনোদী হইয়। উৎকর্ষ করেন, তাঁহারা সম্ভবতঃ পরিবর্তন করিতে চান। তাঁহারা ইচ্ছার করণ উপর দোষারোপ করেন। প্রার্থনা যে উপাসনার একটি অঙ্গ ইহা দ্বারা ইচ্ছার সহিত আমাদিগের সম্বন্ধে। হয় সহবাস হয়। প্রার্থনা আকাশের অতীত ইচ্ছাকে নিকট করিয়া দেয়। অস্তরে যে সকল আত্মবিকৃত জীব আছে তাহা সফল প্রার্থন উর্ক দ্বারাও অপূর্ণ হইবার নহে। উর্কেতে পরাজিত হইতে পারি কিন্তু আত্মার সময় প্রার্থনা নিজ প্রভু হস্তার করিতে।

কোন এক ব্রাহ্ম।

১২৪৯ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫০ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫১ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫২ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৩ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৪ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৫ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৬ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৭ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৮ কার্তিক মাসে ১০ টাকার  
 ১২৫৯ কার্তিক মাসে ১০ টাকার

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

ଜନ ୧୨/୦୩/୨୨ ପୌର । ନି. ୨୮-୭୨ । ୧ ଜାମିନାରି

育子訓育 育子訓育

কলিকাতার জিলায় অর্থাৎ পাকী কলিকতাবাসি  
দইকাতার দ্বারা যে শতাব্দী কালকৃত আছে,  
জাহা, চরপুকুরি, ছেঁকা, অথবা বিক্রম দ্বারা  
বাইবে। বাঁহার সেই কালকৃত দইকাতার দ্বারা  
বাহু অথবা কলিকতাবাসি ইহা আছে, তিনি  
কলিকতাবাসি জাহা ও কলিকতাবাসি কলিকতাবাসি  
টে আটকান করিলে দইকাতার দ্বারা কলিকতাবাসি  
পাকীকলিকতাবাসি।

## ২২.৬ শৌখিন সেলফারি

আমরা এ সম্বন্ধে মতামত এই একটী  
শ্রীমত মহান দিগা পাঠকগণের চিত্তকে  
সমুদিত করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। টেলি  
গ্রাম মহান আমিরাদে, ই লাটোর সাহেবে  
হুজা হইয়াছে। বাঁহারা ইকটক বিশেষ  
জনে জ্ঞানম, এই মহামন্ত্রী শুমিরা তাঁরা  
আধিকার সুবিত্ত হইবেন মতামত  
ই। বিচারকগণ ইহা সবিবেশ না  
কর্তব্য ছিল। বিচারকেরা মিথ্যা মক  
মা আমিরাদে ইহা হুজা খুলি দিগা  
হা। জরী হুজা পাঠকেন না। ইমি বখান  
ও জরীকান মকাম সাহে হুজেন, জাহ  
মহান মকাম হুজা বিচারের অংশনা  
ম জাহ কামিরা। মকাম কাপোরা  
মকাম জাহ মকাম হুজা মকাম  
মকাম ইহা মকাম পাঠক না।  
মকাম মকাম মকাম মকাম  
মকাম মকাম মকাম মকাম

কমিউনিস্টের আগে তিনি যে বিনা পক্ষপাতে  
সাক্ষ্য দান করেন, তাহাই এ বিষয় মনে  
মান্য করিয়া দিতেছে। তাঁহার মত অধিক  
ছিল। কেহ কেহ তাঁহার প্রতি এই বলিয়া  
দেবোত্তোপ করিয়া থাকেন যে অবলম্বিত  
প্রতি তাঁহার একটি স্বাভাবিক বিষয় দুটি ও  
দুটি অধিক ছিল, এই দুই কারণে তিনি  
কখন কখন দুর্বলের পক্ষ টানিয়া বিচার  
করিতেন, তাহাতে কখন কখন অবলম্বিত  
পক্ষে অন্যায় হইত। এই অপরাধ কত দূর  
মত, তাহা আমরা মিস্ত্র করিয়া বলিতে  
পারি না। বিচারকসকল অভিযোগ এক  
দুই হইলে একপ ঘটনা হওয়াও সম্ভব  
বিষয় নয়। যাহা হউক, যে কারণে প্রমাণিত  
হইয়া তাঁহার প্রতি উল্লিখিত শেষ আলোচনা  
শিষ্ট হয়, তাহাতে অধিকাংশ প্রমাণের  
যে একপ ঘটনা হইবার সম্ভাবনা ছিল না,  
তাহা আমরা সন্দেহের নির্দেশ করিতে  
পারি। এখন ও দুর্বলে সন্দেহ হইলে যে  
অবলম্বিত পক্ষে অন্যায় করেন, ইহা অসম্ভব  
প্রমাণ ও অসম্ভব প্রমাণ দ্বারা বহে।

নকল মোকরই বিবর বিশেষ্য আর  
একটি বিশেষ্য ক্রম আছে। উদাহরণ  
নেক সময়ে অনেক সময় ঘটনা  
বিশেষ্য: বাহার কর্তৃক ও কার্যকর  
যিক আশ্রয়, তাঁহা দ্বিভূত আশ্রয়  
খাটবার সম্ভাবনা। যোগনিরা মিষ্টাভাস  
ও অবিষয়, সেবিষয় কখনোই  
কোন কখনো উদাহরণ এই কথার

[illegible]

নন্দ্যক্তি বোঝার যেগুলি  
ইতিহাসিক নিদর্শন ৩৪  
কল্পিত। তাঁহার সেই  
মধ্যে উল্লিখিত অসংখ্য  
প্রমাণের দ্বারা প্রমাণিত  
কৃত নামের কয়েক  
করা হইতে পারে।  
মহা নিম্নে লিখিত  
কল্পিত অসংখ্য

১০০  
 ১০১  
 ১০২  
 ১০৩  
 ১০৪  
 ১০৫  
 ১০৬  
 ১০৭  
 ১০৮  
 ১০৯  
 ১১০  
 ১১১  
 ১১২  
 ১১৩  
 ১১৪  
 ১১৫  
 ১১৬  
 ১১৭  
 ১১৮  
 ১১৯  
 ১২০  
 ১২১  
 ১২২  
 ১২৩  
 ১২৪  
 ১২৫  
 ১২৬  
 ১২৭  
 ১২৮  
 ১২৯  
 ১৩০  
 ১৩১  
 ১৩২  
 ১৩৩  
 ১৩৪  
 ১৩৫  
 ১৩৬  
 ১৩৭  
 ১৩৮  
 ১৩৯  
 ১৪০  
 ১৪১  
 ১৪২  
 ১৪৩  
 ১৪৪  
 ১৪৫  
 ১৪৬  
 ১৪৭  
 ১৪৮  
 ১৪৯  
 ১৫০  
 ১৫১  
 ১৫২  
 ১৫৩  
 ১৫৪  
 ১৫৫  
 ১৫৬  
 ১৫৭  
 ১৫৮  
 ১৫৯  
 ১৬০  
 ১৬১  
 ১৬২  
 ১৬৩  
 ১৬৪  
 ১৬৫  
 ১৬৬  
 ১৬৭  
 ১৬৮  
 ১৬৯  
 ১৭০  
 ১৭১  
 ১৭২  
 ১৭৩  
 ১৭৪  
 ১৭৫  
 ১৭৬  
 ১৭৭  
 ১৭৮  
 ১৭৯  
 ১৮০  
 ১৮১  
 ১৮২  
 ১৮৩  
 ১৮৪  
 ১৮৫  
 ১৮৬  
 ১৮৭  
 ১৮৮  
 ১৮৯  
 ১৯০  
 ১৯১  
 ১৯২  
 ১৯৩  
 ১৯৪  
 ১৯৫  
 ১৯৬  
 ১৯৭  
 ১৯৮  
 ১৯৯  
 ২০০



## সোহাগকাণ্ড

রাহেন, তাঁহানিগেরও কতকগুলি নাম  
মে নিজে দেখিতে হইতেছে—

- ১। স্বয়ং
- ২। অধিকাংশমান
- ৩। গণীচরণ
- ৪। বনিক
- ৫। টিকিজন ইত্যাদি

১। স্বয়ং ও আন্তঃভাষ্যের নাম নবম ও  
২। তে দুই হইল। এবার মেডলি  
পরীক্ষা করেন নাই। পূর্ণ ও আন্ত  
নাম এক নীচে গেল কেন? যে যে  
হালি ও ক্রিয়ানিতে প্রতিযোগিতা  
হইবে সেই হলেই আমরা বাঙ্গালিদি  
বাঙ্গা লাভ করিতে দেখিতে পাই  
৩। তজ্জি বাহ্যের চক্রে ইহার বিপরী  
ল কারণ কি? এক নাম পক্ষপাত  
৪। তিরিষ্কার কোন কারণ আছে আশা  
গেরও একপ বোধ হইতেছে না। বাহা  
উক, প্রিন্সিপালগিরের একপ পক্ষপাত  
৫। অত্যন্ত অমঙ্গলের কারণ সন্দেহ  
হই। যে যে স্থল পক্ষপাতের উল্লেখ  
এতিহাস হইয়াছে। সে সে স্থানে  
পক্ষপাত ঘর্ষন অনঙ্গ কোণের বিবরণ  
দেখাই।

১। লাভ পানরটন ও হাফেটের  
২। বনিক সম্ভার।

৩। চলিত ভাষায় যে কতকগুলি প্রশিষ্ট  
শব্দ আদ্য, ৪। হারা — গানের কব  
বাক্য হয়, অন্য কোন উপায় দ্বারা বৈকল্য  
হইতে পারে যেমন ৫। ওল ভেমনি বাহা  
৬। এই একটি প্রশিষ্ট শব্দ আছে।  
৭। ইহা কখনো অনেক সময়ে অনারাসে আগ  
বাক্যের কখনোও নিগূঢ় অভিপ্রায় সক  
ল কখনো কখনো করিয়া  
৮। দেওর — প্রাক্তি মাফেট  
৯। হের বনিক সম্ভার — বের এসক  
লইরা যে প্রায়ের — ইহাও বীর প্র  
১০। নাম নবম লাভ পক্ষপাতের কারণ যে উত্তর

নাম করেন, তাহা ও তাহার কল পাঠক  
গণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া বিচার নিমিত্ত আ  
মরা অসমর্থ হইয়াছি। এই করিয়া উক্ত  
প্রশিষ্ট শব্দগুলি গ্রহণ করাইরা দিতেছি,  
পাঠকগণ কল বুঝিয়া লউন। অঙ্গ দিন  
হইল, মাফেটের বনিক সম্ভার লাভ  
পানরটনের লাভ সাফা করিয়া এক  
আবেদন পত্র প্রকাশ পূর্বক সর চরলস  
উডের কার্যের প্রতি দোষারোপ ও তার  
তবর্ষের শাসন প্রণালী পরিবর্তের অনুরোধ  
করেন। আবেদনকারিরা আবেদন  
মধ্যে একশ্রেণীর গিরের মঙ্গল ও তারতম্য  
বের উল্লেখ এই ভূমিকা করিয়া পতিত  
ভূমি বিক্রয় ও তৎসম্বন্ধে এই বলিয়া লাভ  
কানিডের আজ্ঞার প্রার্থনা ও সর চারলস  
উডের নিন্দা করিয়াছেন যে লাভ কানি  
ডের আজ্ঞা সর্ব সাধারণের প্রিয় ও সর  
চারলস উডের কৃত তৎপরিবর্তন সকলের  
আশ্রয় হইয়াছে। তাহার পর কষ্টটি  
বিলের কথা তুলিয়া বলা হইয়াছে যে  
এই বিল রহিত করিতে সর চারলস উডের  
“অন্যায়কারিতা, বিধ্বংসকারিতা, ও নি  
র্ভুক্ততা প্রকাশ হইয়াছে।” এতাবধায়  
নর একথাও কহা হইয়াছে যে হেঁট  
সেক্রেটারি তারতম্যের প্রধান আশ্রয়  
কার্যে সতত হস্তক্ষেপ করিয়া গবর্নর  
জেনরলকে দেশীয় লোকের নিকটে অপ  
বদ্ব ও হের করিয়া তুলিয়াছেন। অতএব  
তারতম্যের সম্ভারণ বিবরণ ব্যক্তিরকে  
সামান্য বিবরণে হেঁট সেক্রেটারি ও তাঁহা  
র সত্য হস্তার্পণ কহা আবশ্য হইতেছে না।  
পরে ক্রমে তাঁহানিগের দ্বার্ষপরতা উল্  
লেখ হইয়া উঠিল। তাঁহারা অসমর্থ বদ  
নাই করিলেন, সর চারলস উডের বৈকল্য  
তারতম্য হইতে কল আনিতেছে, বা  
এবং তাঁহারা ইহাও প্রকাশ করিতেছেন  
উপযুক্ত কর্তৃপক্ষের পক্ষপাত করিতে  
হইয়াছে।

আহাশিগের

র নাম করিয়াছেন; তাহাও  
হিত হইয়া অঙ্গ ও প্রকাশ করিয়া দি  
এইভাবে উত্তর দিলেন যে আশ্রয়কারি  
এই আবেদন দ্বারা সর চারলস উডের  
নামে অভিযোগ করাই উদ্দেশ্য, কিন্তু  
আমি বিলকল কল অঙ্গরত আছি, সর  
চারলস উড এক জন উপযুক্ত লোক  
তিনি এ বিষয়ের সত্যকর উত্তর দিলেন  
সমর্থ হইবেন সন্দেহ নাই। তাহার পর  
তিনি তারতম্যের শাসন কার্য সম্পূর্ণরূপে  
গবর্নর জেনরলের ও তৎবীর্য কর্তৃত্ব  
গিরের হস্তগত করিয়া বিচার এসক করি  
য়া করিলেন “যদিও (মাফেটের  
বনিক সম্ভারের ইহা উত্তম সম্প বলিয়া  
বোধ হইয়া থাকে, কিন্তু ইংলণ্ডের আ  
কেশ ও মহাসভা ইহার অনুমোদন ক  
ন না। সুতরাং কোম্পানি বাণিজ্য বি  
য়ে অধিকতর বাস্তব থাকিতে, তাঁহানিগের  
রাজনীতি বাণিজ্যের স্বীকৃতির পরাধীন  
ইরাহিল, সুতরাং, তাঁহারা সামান্য বিব  
হস্তার্পণ করিতে পারিতেন না। এক  
আর সেকপ নাই, অতএব এমন আর  
ন একথাও আবশ্যকীয় হইতে পারে না।  
বুঝ মন্ত্রী আরো বলেন, “আমি দেখিতে  
পাই, আপনারা লিবরপুল হইতে কল  
প্রকৃতি স্থানে বিক্রয়ার্থ তুল্য প্রেরণ করি  
তেছেন, তাহাও কি জন্য আপনারা তুল  
পাইয়ায় না বলিয়া যে চীৎকার করিতে  
ছেন তাহা বুঝিতে পারিতেছি না।

আমরা সর্ব রাষ্ট্র কহিতে পা  
অত্যা স্বীকৃতিবিরহিত্যের অনুরোধে  
লোক সমাজের যত্নে এই আবেদন ক  
হইয়াছে। লাভ পানরটন ও বনিক  
বাস কার্যে কল বিবরণ প্রকাশ  
কল, সেক ও সেক করিয়া  
বাস কল করেন নাই। তিনি, কল  
বুঝ হইয়াছে। তিনি, এক জন  
ও ইংলণ্ডের, সেক রাজনীতি। আ  
বিরহিত্যের স্বীকৃতিবিরহিত্যের











মুহুর্ত হওয়ার পরে তিনি তাঁহার আশ্রয়স্থানের  
আজ্ঞা দিলেন । তাঁহার রাজ্যাভিষেকের  
প্রথম সাপ্তাহিক শিবসে উৎসব কার্যে আর  
সাত্ৰি কোটি মুদ্রা বিসর্জিত হয় । আর ৩০  
বৎসর রাজ্য শাসনের পর সাজাহান উৎকট  
রোগাক্রান্ত হইলেন । তাঁহার চারি পুত্র ছিল,  
আরওজের আপনাত্ত হুজিয়ারুদ্দৌল ও সাহল  
এতে পিতা ও তিন আত্মা জীবিত থাকিতে ও  
হোমসে আয়োজন করিলেন । পিতাকে  
হার আশ্রয়স্থানে রাখা করিয়া রাখি  
ন । হুজিয়ারুদ্দৌলী জ্যেষ্ঠ আত্মকে রণে  
প্রাক্তন করিলেন এবং কনিষ্ঠ আত্মকে  
গাণাস হারা মাজারিহীন করিয়া নিগড়  
ও করিলেন ; বিজীর জিতা বলদেলে  
নি করিলেন ।

সাজাহান রাজ্যভট্ট হইয়া সাত বৎসর  
জীবিত ছিলেন । তৎকালীন আরওজের  
তাঁহার প্রতি প্রতি ও সমস্ত প্রকারে প্রতি  
করেন নাই । তাঁহার রাজ্যশাসনকালে তা-  
বতকাল হইতে সৌভাগ্যশালিনী হইরাছিল,  
ন্য সৌভাগ্যশালিনী সন্ন্যাসী সত্ত্বের তদ্বৎ  
পুত্রি সালিনী কর্ণাই । তিনি তিনই রাজার  
সহিত কয়েকবার সংগ্রামে লিপ্ত হইরাছিলেন  
কিন্তু তাঁহার বিজয় প্রাপ্তি আর কখন শান্তি  
রক্ষা ব্যতীত হয় নাই । তিনি যখননাগ  
ছিলেন বটে, কিন্তু শিষ্টপালনে ও দুর্ভাগ্যে  
অনবহিত ছিলেন না । তিনি বহু কখন প্র-  
ত্যহ নিশীতন করেন নাই । সাজাহানের  
মৃত্যু সহস্রাব্দে সন্ন্যাসী তারতবর্ষে হই  
লেন । সুপ্রসিদ্ধ মরু রাসম হারা তাঁহার সহ  
জার বলকণ পরিচর হইতেছে । উক্ত  
রাজ্যশাসন বহুলা ধীরকালি মুক্তদি হারা নি-  
শীত কর । শিখারের ব্যয় ১৫ লক্ষ টাকা ।  
একটি তিনি হুজিয়ারি নির্মাণে প্রচুর অর্থ  
ব্যয় করিলেন । তিনি নিম্নোক্ত একই হুজন  
নগর নির্মাণ করিয়াছিলেন । প্রাচীন নগর  
আপেক্ষা তাঁহার রাজ্যপ্রান্তে নগর ও রাজ  
পথাদি সুকলম্বনে উৎকট । নবতান্ত  
মহলনারী তাঁহার প্রেরণী মহাবীর সমস্তির  
তন্য আগ্রাসণের এক সন্তপন প্রাসন  
নিশিত হুজর লোকের তাঁহারে ও তাঁহামহল ও  
গলদা থাকে । তাঁহামহল ও আপেক্ষা  
হই প্রাক্তন বি ইটরোপ কি আসির

হুজাপি নগরপ্রান্তে হই নাই । সাজাহান  
রাজ্যশাসন শোভা হুজির নিমিত্ত অনেক  
অর্থ ব্যয় করিয়াছিলেন । তিনি যখন রাজ্য  
চ্যুত কর প্রচুর বসন তাঁহার খনাগারে বাট-  
লক, কোমলেন তাঁহার চতুর্দশ নগর টাকা  
ছিল । শুভির বনি, মুক্তা, বালকর প্রভৃতি  
অসংখ্য বহুল্য দ্রব্য রাজ্যকোষে সংগৃহীত  
হইরাছিল । সাজাহানের অধিকতর প্রাণসার  
বিসয় এই যে তিনি এত অর্থ সংগ্রহ করিয়া  
যান, কিন্তু কেহ তাঁহার উপরে প্রজাপীড়-  
নের হোমিটোপ করেন নাই ; তিনি মৃতন  
বিধ করেরও হুজি করেন নাই । কেবল নির-  
মিত রাজস্ব হইতে এই অর্থ সঞ্চিত হয় ।  
এইরূপ রাজা ও রাজ্যই প্রাণীয় সন্দেহ  
নাই ।

আরওজের সিংহাসনে আরও হইরা  
হলে ও কৌশলে আত্মরয়ের জীবন নান  
করিলেন । মহারাষ্ট্রীর ও রমঃপুতদিগের স-  
হিত যুদ্ধে তাঁহার বহুকাল অভিযান্ত্রিক হয় ।  
মুসলমানেরা তাঁহাকে মহান আকবর অপে-  
ক্ষাও প্রেষ্ঠ বলিয়া জ্ঞান করেন । তিনি শিপ  
কার্যের ও বিদ্যাশিক্ষার উৎসাহ দাতা হি-  
লেন । তাঁহার অধিকার কালে অনেক বিদ্যালয়  
প্রতিষ্ঠিত হয় । বিচার কার্যে তাঁহার পক্ষপাত  
ছিল না । প্রত্যহ প্রচুরে গাভ্রোধান করিয়া  
তিনি আর চারিদিক বেতার মধ্যে সত্যমণ্ডপে  
আসীন হইতেন । তথার সকল প্রজাই বাট-  
তে পারিত । তিনি সকলেরই অভিযোগ গ্রহণ  
করিতেন । কোন দরিদ্র ব্যক্তি বিচারার্থী  
হইয়া সত্য আসিয়া যতকণ আর্থ থাকি-  
ত, ততকণ কর করিলে সে যাহা উপার্জন  
করিতে পারিত সন্ন্যাসী তাহাকে ততপুত্র অর্থ  
দিয়া বিদায় করিতেন । তিনি বিলকণ দাতা  
ছিলেন । তিনি বেহুণ অব্যবসায়ীক তাঁ  
করুজি কার্যকর ঠেগ্যাশালী সাহলী প্র-  
ত্যাপনমতি তক্তিমান ও পরিদ্রবী ছিলেন  
সেইরূপ যদি তাঁহার সন্ন্যাসী উরু ও প্রাণ-  
তন্য হইতেন, তাহা হইলে যথার্থই তিনি  
একজন প্রাণসন্ন্যাসী সন্ন্যাসী হইতেন সন্দেহ  
নাই । কিন্তু কোমের বিবরণেই, তাঁহার করু-  
জি বিশেষ লোভ ছিল । তিনি দুর্ভ ও কণটক-  
তন ছিলেন । তাঁহার আর্থিক রাজস্বিক দুর্ভ-  
লতা হেতু তিনি কোম হয়

মুখ সম্পাদনে অসমর্থ হইরাছিলেন একজন  
হে, মোখল রাজ্য বিলই হইবার মুখপাত করি-  
য়া যান । তিনি অত্যন্ত গৌরব মুসলমান হি-  
লেন । হিন্দুধর্মের প্রতি তাঁহার অতিশয়  
বিশেষ ছিল । অন্যান্য সন্ন্যাসীর ন্যায় তিনি  
তাঁহারদিগকে সন্ন্যাস ও উত্পন্ন হেন নাই ।  
আকবর তাঁহারদিগের নিকট হইতে বেহর-  
প্রাণ গ্রহিত করিয়া যান, তিনি পুনরায় প্রাণ  
করিতে আরম্ভ করেন । তিনি আমলানি ও  
রুগ্যানি দ্রব্যাদির উপরও মুসলমানদিগের অ-  
পেক্ষা হিন্দুদিগের নিকট হইতে অধিক দ্র-  
প্রাণের আদেশ হেন । হিন্দুদিগের পৌ-  
লিক উপাসনা কালে রাজ্য আত্মরয়ের মিত্র  
করিলেন । এষ্ট সমস্ত কারণে রমঃপুত ও  
হারাধিরেরা তাঁহার প্রতি অতিরিক্ত বির-  
হিত । তাঁহার বিরুদ্ধে আত্মধারণ করিয়া  
তিনি কাহাকেও বিশ্বাস করিতেন না । এই  
হেতু তাঁহার সেনাপতিগণ তাঁহার প্রতি বি-  
রক্ত হইরা যথাবিধি আপন আপন করুণ ও  
অর্থ নিস্পাদন করিতেন না । এই দোষেই তিনি  
কাহারও প্রীতিলাভে সমর্থ হন নাই । প্রত্যহ  
তাঁহার আত্মরূপ ছিল । সাহলী হইরা একজন  
মীচত্বির বশবদ হইতে আর কাহাকে নে-  
খিতে পাওরা-বার না । তাঁহার রাজস্ব কা-  
লের খেদান্যে তাঁহার অর্থে একজন অস-  
জতি হইরাছিল যে তিনি রীতিমত সেনা-  
গের বেতন দানে অপরাধ হইরাছিলেন ।  
সাজাহানকে যে রূপে তিনি বাধ্যকৃত করেন  
পাছে তাঁহার পুত্রেরাও তাঁহাকে সেইরূপ  
ভরস্ব্যাদিত করে এই আশঙ্কা তাঁহার মনে  
সদা জাগরক ছিল । এই প্রকার বহুলা  
লোকে "পাপের কল" করে । বাহা হউন  
এইরূপে ২০ বৎসর রাজ্যের পর তিনি দেহ  
পরিত্যাগ করিলেন । তিনি আলমলীর উপা-  
ধি গ্রহণ করিয়াছিলেন । এই সমস্ত কা-  
র্য্য বোধ হয় মুসলমানেরা তাঁহাকে আ-  
কবর অপেক্ষা প্রেষ্ঠ জ্ঞান করে ।

#### পুস্তকসংক্রান্ত :-

আমরা হুজিয়ারি সহকারে স্বীকার করি-  
তেছি যে নিম্নোক্ত দুই কালি হুজন পুস্তক  
ও প্রাক্তন আত্মশিষ্টকর অসমর্থ হইরাছেন ।

১। সিঁড়িগা মিসেসী জীবিত বাবু বো-  
জনাথ চট্টোপাধ্যায়ের কত বাকসি বক্তৃ-  
। গত ১১ই ডিসেম্বর বে বেবুন সভায় হয়,  
যুক্ত বাবু কিশোরীচাঁদ সিং তাহাতে এ-  
নীর প্রীতিকা ঘটত একটি প্রস্তাব পাঠ  
রন, তৎপ্রসঙ্গে অনেক বক্তৃতা হয়, এ-  
কতটি তাহার অন্যতর। বোম্বের বাবু  
রোটিড ও সুন্দর বক্তৃতা করিয়াছেন।  
নি বিবিধ উত্তেজনাবাক্যে এতদ্বিধের  
লীমসিংগের উৎসাহ বর্ধন চেঁচী পাইয়া-  
ন কিন্তু বক্তাদের অন্তঃসাহ দ্বারা ইহাটি  
র জনর এমনি শীতল হইয়া গিয়াছে যে  
ক উত্তেজনা বাক্যে উক হইবার সম্ভাবনা  
ই।

২। ঢাকা পোশন বিদ্যালয়ের পণ্ডিত  
যুক্ত মাধবচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় প্রণীত ভারত  
বন্ধ। হিন্দু মুসলমান ও ইংরাজদিগের  
সন কালে ভারতবর্ষের বেকপ অবস্থা ছিল  
হইয়াছে, তাহাতে তাহার বর্ণন করা হই-  
ছে। এপ্রবন্ধটিও চাকার মাথা বেবুন স-  
জে পণ্ডিত হয়। প্রবন্ধ রচয়িতা সংক্ষেপে  
বকপে হিন্দু, মুসলমান ও ইংরাজদিগের  
মিকার কালের ভারতব্য করিয়া টেনাকণ্য  
বর্ণন করিয়াছেন। রচয়িতাও সরল হই-  
ছে।

## বিবিধ সংবাদ।

১৫ই পৌষ সোমবার।

মিল্লীগেজেট বলেন, টিকিত আসিষ্টাণ্ট  
জেনেরা আপনাদিগের বেতন হ্রাস নিমি-  
গবর্নমেন্টে পুরস্কার আবেদন করিয়াছেন।  
উক্ত সম্পাদক আরো বলেন, গবর্নমেন্ট  
র গচ্ছিতকালের খাল বন্ধ করাতে তাহার  
মিকারের অভ্যন্তর অল্পবিধা ঘটয়াছে।  
অন্যকালে তত্ত্বাত্ত লোকদিগের অতিশয় জল  
ই হয়। তাহার রেলওয়ে হওয়াতে গবর্নমে-  
ন্ট খাল পূরণের প্রতি আর পূর্ববৎ ব্যয়  
হইতেছে না। কেবল এক রেলওয়ের উৎ-  
সে হ্রাসকরণে উপেক্ষা করিলে চলিবে  
না। তাহাই মৌঃ সন্দীপন ঘটি।

সম্পাদক হিন্দুগামী বলেন, অসোখ্যার  
খান কবিরাজ হইয়াছেন। সাতকোষ করিয়া

লেপটমকে গবর্নরের পদে প্রাঃ হইবেন। তি-  
নি ই পদে নিযুক্ত হইলে তত্ত্বাত্ত লোকদি-  
গের আদ্যাকের পরিশীমা থাকিবে না। উক্ত  
যুক্ত মোঃ উপযুক্ত পদ পাইলেই ভাল হয়।

মিল্লীগেজেট বলেন, পাতিয়ালায় রাজপু-  
ত্র যতদিন প্রাপ্তবয়স্ক না হইবেন তত দিন  
গবর্নমেন্ট হইতে নিযুক্ত এক জন ইন্টারপী-  
রের হস্তে তাহার সমস্ত নিগরের তত্ত্বাবধান  
তার সমর্পিত থাকিবে। সেই নিয়োগটি বেন  
তাঁহার বনকরের আর একটি ভারবরূপ না  
হয়।

লক্ষ্যে প্রমোশনের আশ্রয় পাতি বোধপুরের  
এক জন সন্তোষ ডালুকারের পরলোক প্রা-  
প্তি হইলে তাহার স্ত্রী সহগমনের উদ্যোগ ক-  
রেন। পুলিশ কর্মচারীরা তাহাকে হতকাব্য  
হইতে দেন নাই।

সোলাপুর হইতে তারমরাবার পর্যন্ত  
হুতন রেলওয়ে হইবার নিমিত্ত ভূমি অরীপ  
করা হইয়াছে।

গত শনিবার ই এচ লসিংটন সাহেব  
বিলাত হইতে প্রত্যাগমন পূর্বক তাহার নিজ  
কার্যতার গ্রহণ করিয়াছেন। ইডেন সাহেবও  
তাঁহার পূর্বকর্ত্তে গিয়াছেন।

হরকরা সম্পাদক বলেন, বকবনের এক  
জন অচিহ্নিত সদর আমীন আপন কর্ম বখা  
বিধি সম্পাদন করিয়া পেশন লইয়া ছিলেন,  
পেশনের টাকার তাহার পরিবার ভরণ পো-  
ষ না হওয়ার গবর্নমেন্টে আবেদন করেন।  
গবর্নর তাহাকে অন্য এক বকবল কোর্টের টে-  
কীলের পর প্রদান করিয়াছেন। এই সুযোগ  
পাইয়া অপর পেশনধারীরা গবর্নমেন্টে আবে-  
দন করিতেছেন। এই ত রোগ।

গুনা বাইতেছে এতদেশীয় সম্ভ্রান্ত  
ব্যক্তির বাবু অয়রক সুখোপাধ্যায়কে যুক্ত  
করিবার উদ্দেশে লেপটমকে গবর্নরের নিকট  
আবেদন করিবার চেষ্টার আছেন। এখন  
চেঁচী সজ্ঞ হইবারও সম্ভাবনা আছে।

হিন্দুপেট্রিট বলেন, এক জন গবর্নমেন্টে  
কর্মচারী এই প্রস্তাব করিয়াছেন, কিন্তু  
লাতে পরমাহ না হইয়া বাণু বাকরের কোম  
বাটে হয়, নিমন্তল্য পর্যন্ত বন্দর হইবে, তাহা  
হইলে হিন্দুগামের মোকের অভ্যন্তর অল্প-  
বিধা হইবে।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন, বকবনের  
র যুক্তপূর্ব জল বাবু কানীপুর, মিল্লীগেজেট  
বাবু নবীনচন্দ্র পালিত নিযুক্ত হইয়াছেন।  
নীলকর মহামতিরা ইহার প্রতিও প্রসন্ন হই-  
ন। গবর্নমেন্টের উচিত ছিল তাহার এক জন  
নীলকরসহায় জলকে পাঠাইয়া দিত।

ঢাকা প্রকাশের খুলনার সংবাদ দ্বারা জানা-  
ন, তত্ত্বাত্ত কতকগুলি কর্মচারী মিল-  
রোগদ্বারা মোহিত্য করিতে আরম্ভ করিয়া-  
ছে, এক জন মৃত হইয়াছে, অপরজন কঠি-  
লে অমান্য পাণীজাত্যও মৃত হইতে পারেন।  
গবর্নমেন্টের এ বিধরে বিশেষ সতর্কতা  
হত্যাকারিদিগের বিরুদ্ধে প্রদর্শিত হইয়া  
কর্তব্য। আমরা মধ্যে মধ্যে সতর্কতা  
প্রদর্শন করিয়া থাকি। এ সম্বন্ধে বিশেষ  
মন দর ত ?

১৬ই পৌষ বঙ্গবাজার  
সাগরপ্রমোশে মিলমিল ডাকাইতির অভিযান  
প্রাচুর্য হইতেছে। ডাকাইতেরা সুপাটন  
জলমধ্যে অবস্থিতি করে। মধ্যে মধ্যে  
হির্গত হইয়া পথিকদিগের বখাসর্বক অন্-  
হরণ পূর্বক বনমধ্যে প্রবিষ্ট হয়। তাহা-  
দের নিয়োহিপ্রধান দেবীসিংহ ডাকাই-  
গের অধ্যক্ষ। পুলিশ কর্মচারীরা ডাকাই-  
গকে ধৃত করিবার জন্য বিস্তর চেষ্টা করিতে-  
ছেন কিন্তু হতকাব্য হইতে পারিতেছেন  
না।

পুরা অবজারবর বলেন, সোলাপুর, বেলারী  
ও থাকওয়ারে বোম্বাই ব্যাকের মাঝে সং-  
তাপিত হইবার কম্পনা আছে।

পরিদর্শকে হুট হুট, কলিকাতা ও জামা-  
না হ্রদের নদীতে রাজিকালে বেগুন জা-  
হাজ ও নৌকা থাকিবে না সমসাগমন করি-  
বে তাহার প্রতীক্ষণরূপে আলো না দিলে  
নাথিকদিগের এক এক লত টাকা জরিমানা  
হইবে।

উক্ত পদ আরও বলেন, বে জীবিত অ-  
খোখানি পাকিস্তানী পিতার সন্তান জ-  
এই জন ছিল পাটকা পরিভ্যাগ, উক্তীয়  
ব্যয় কবলে শয়ন ও হবিব্যাগ ভোজন, এই  
কৃতি হিন্দুদিগের চিরপ্রচলিত প্রথাগত  
কলিঙ্গ একাতন দিবসে জীবিত বাবু দেবেজম-  
ম হিন্দুগাম ডিয়ার মোকাম মিল্লীগেজেট





আমাদের দেশের অনেক স্থানে একে একে ইংরেজী  
 ভাষায় কথাবার্তা চলিতেছে। উক্ত ভাষা  
 আমাদের দেশে একে একে ইংরেজী  
 ভাষায় কথাবার্তা চলিতেছে। উক্ত ভাষা  
 আমাদের দেশে একে একে ইংরেজী  
 ভাষায় কথাবার্তা চলিতেছে। উক্ত ভাষা

ইংলণ্ডে অল্পবয়স্ক উইলিয়াম নামে এক ছোট্ট  
 লোক তারতর্কীর প্রধান সেমাপতি  
 পদে দায়িত্ব পালিত করিতেছেন। আরও অনেক  
 ছোট্ট লোক তারতর্কীর প্রধান সেমাপতি  
 পদে দায়িত্ব পালিত করিতেছেন। আরও অনেক  
 ছোট্ট লোক তারতর্কীর প্রধান সেমাপতি  
 পদে দায়িত্ব পালিত করিতেছেন। আরও অনেক

সম্রাট এর দ্বি-রোজ ইংরেজের অধী-  
 ন ছিলেন। অনেক জন আফগানকে মৃত্যু দি-  
 তেছেন। তাহার বেনামের বন্দিকদের  
 কটে কর্তৃত্ব করিয়াছিলেন।  
 ইংলণ্ডে অনেক জন আফগানকে মৃত্যু দি-  
 তেছেন। তাহার বেনামের বন্দিকদের  
 কটে কর্তৃত্ব করিয়াছিলেন।

১৯৪৫ সালে গুরুবার।  
 গুরুবারে ইংলিষ্টের উইলিয়াম নামে এক  
 লোক তারতর্কীর প্রধান সেমাপতি  
 পদে দায়িত্ব পালিত করিতেছেন। আরও অনেক  
 ছোট্ট লোক তারতর্কীর প্রধান সেমাপতি  
 পদে দায়িত্ব পালিত করিতেছেন। আরও অনেক

ইংলিষ্টের বলায়, আসা-ব-আনকস  
 ইংলিষ্টের বলায়, আসা-ব-আনকস  
 ইংলিষ্টের বলায়, আসা-ব-আনকস  
 ইংলিষ্টের বলায়, আসা-ব-আনকস

অন্য-স্থানে অনেক জন আফগানকে মৃত্যু দি-  
 তেছেন। তাহার বেনামের বন্দিকদের  
 কটে কর্তৃত্ব করিয়াছিলেন।  
 ইংলণ্ডে অনেক জন আফগানকে মৃত্যু দি-  
 তেছেন। তাহার বেনামের বন্দিকদের  
 কটে কর্তৃত্ব করিয়াছিলেন।

হোম নিউসে দুই মাইল, লাভ' পামরটন  
 লোক সাহেবকে কোন উপনিবেশের শাসন  
 কর্তা করিয়া প্রেরণ করিবেন। একটি উপ-  
 নিবেশ তাহার নিজের করিয়া না দিলে কিন্তু  
 উপনিবেশের শাসন করিবেন না।

হেটসেজের লোকের মৃত্যু প্রাণ  
 প্রাণ সেনাদলে বিস্তৃত করিবার আজ্ঞা দিয়া  
 দেন।

মাকেরের মজুরদের সহায়তার জন্য  
 এই নগরে চল লোক টাকা চালাইয়াছে।  
 লোক হইতে প্রত্যেক ৬০,০০০ টাকা বাই-  
 তেছে। সকলে অনুমান করেন, বড়দিন  
 পর্যন্ত এক কোটি টাকা সংগ্রহ হইতে পারে।  
 এবিষয়ে ইংলণ্ড অতিশয় আগ্রহী। আফগানের  
 দেশ আরও উৎসাহ হইতেছে, তবু দেখা  
 কত টাকা আসিবে হইল।

লোকের রাজকীয় বিচারালয়ে একটি  
 আফগান মকদ্দমা হইয়াছে। অর্থাৎ মাকেরে  
 গোবার এক জন বারিডের, প্রত্যক্ষ করানী  
 গবর্নমেন্ট। এখন মাকের পাবলিশ লোকের  
 মাকেরের জন্য ২৫ মিলিয়ন নামক মৃত  
 পত্রের মাকেরের প্রত্যেক তিন লক্ষ টাকা  
 দিয়া কথা হয়। কোবর অধিবাসী ফরাসী  
 সেনাদের ১০০ মৃত্যু করেন। ফরাসী গব-  
 র্নমেন্ট তিন লক্ষ টাকা দিয়াছিলেন কিন্তু সে  
 টাকা নানা ছাউ ফিরাতে মোবরের হস্তে  
 ৬০,০০০ মাত্র পড়ে। তিনি বাকি টাকা পাই-  
 য়ার জন্য নালিশ করিয়াছেন। মোকদ্দমার  
 কারণ ইংলণ্ডে হওয়াতে তদন্ত বিচারালয়  
 মজুর পরিসিনিকে (একজন ফরাসী দেশ দ-

খ্যাত বিবরের মন্ত্রী (ফরাসী) নামে  
 রাখেন। ইংলিষ্টের মন্ত্রীর নাম  
 তার অল্প এই যে মোবর  
 বাই বাবার বই পান বাই।

সম্রাট কর্তৃক জন ইটালীয়  
 টকে বণ্ড করিবার চেষ্টা পায়।  
 জন একটি রাত্রে পুলিশের পুলিশ  
 করেন। প্রত্যেক গুলির সম্মুখে বে-  
 র সিংহাসন স্থাপিত হয়, তাহার  
 পিণে বাম্বার রাখা হইয়াছিল। ৩০  
 লোক মৃত হইয়াছে।

প্রিন্স আলফ্রেড গ্রীসের সিং-  
 লেন না বোধ হইতেছে। ইংলিষ্টের  
 তাহাতে অমত। ক্রীস ও গ্রীস  
 বাদ করিয়া সভাবনা আছে  
 সের রাজা হইয়া গ্রীসকে আক্রমণ  
 করিবে না করিলে তাহাকে আক্রমণ  
 হইবে। ইংলণ্ড তাহাকে কমান্ড  
 সাহায্য করিবেন না।

মাকের টাইমসের সম্পাদক  
 মৃত্যু হইয়াছে। ইনি এক জন উপ-  
 দেষ ছিলেন।

টাইমস অব ইংল্যান্ড এক জন পত্র  
 ক বলেন, মাকেরের ইমান খান নামে  
 রের প্রবিধায় অন্য সমস্ত কুলে একটি পত্র  
 (গিয়ার) করিতেছেন। ইনি বহির্ভূত  
 ইমান ও নগর রক্ষা করিবার একটি উত্তম উপ-  
 দেষ। ইমান তদ্বিষয়ে করাচি হইতে কয়েক জন  
 সরবরাহ লইয়া বাইতেছেন। বাহিন্য বি-  
 মাকেরের ইমান ও পাবলিশের রাজা আ-  
 য়ার মধ্যে বিবাদ হইয়াছে।

লোকের মাকেরের বন্দিক সম্রাটের  
 অভিনন্দন পত্রের উত্তর দিয়াছেন। তিনি  
 বন্দিক ও রাজপুত্রের ইংলিষ্টের দিগ-  
 তারি দিগে দুই মাইল সময় মুক্তি কাজ  
 রিবার অগ্ররোধ করিয়াছেন। কাজই  
 আর সর চার্লস উত্তরে তাড়াতাড়ি গবর্ন-  
 মেন্টে বন্দিক করিতে সাহসী হই-  
 ন।

সম্রাট বেহার ও কাশী হইতে বিস্তার  
 হিংস্রের কিস্তি আসিয়াছে। বোর্ডের  
 জোয়া ও সেক্রেটারি তাহা দর্শন করিয়া  
 সংস্কার করিয়াছেন। সম্রাট চীনে  
 হইবে। চীন দেশ কেবল এক আফগান  
 মৃত হইল।



### সেবাগ্রহণ :

এ পৌষ শ্রাদ্ধদিন ।

টি বেলেন, কলিকাতা হইতে  
শত শত ১০ ঘণ্টায় পিরাহে  
মার্কিটে বিস্তর লোক তথায়  
শত শত স্নান সাড়ে তিনটার ম  
স্বর। রেইলওয়ে খোলা ও প্র-  
কাশীতে প্রায় ২০ জন লোক  
১৫০ স্বপনের মধ্যে তথায় এত  
কৃত হয় নাই । \*

‘আমরা বলেন, সন্তানের গোল  
শিও বায় নাই : স্বর্গের জেনরলে  
‘স্বাক্ষরিত’ বাজার। নিম্নলিখিত

১৯৫৫ খ্রীঃ অব্দে কংগ্রেসের সংবাদদাতা বলেন,

শাণী দুই জন ইংরাজ আ-  
বহস্থ করিয়া। নগরের চতুর্দিকে  
গিহিল, তাহাঙ্গিগের মধ্যে যে ব্যক্তি  
দীর্ঘকাল পরে আর কয়েক জনের  
সহ করিয়া নিগত হইয়াছে। বঙ্গ-  
জাতির এই কার্য দ্বারা নিজ অধঃপতন  
হইয়াছে।

সি অগ্নিকেল বহেনন জপ্টনটে জা  
ননের বিদ্যেয় শেষ হইয়াছে। তাহার উকী  
উহম কাণে উনী। পক্ষ মন মি কসিয়ায়ুন।

କିତ ସମ୍ଭବ ଥାକାତେ ତାହାର ନିଷ୍ପତ୍ତି ହେଉଅଛି ।

২. ৭ ভাগ চয় এমনত প্রকার হয় নাই । জমি  
কন অটম্বান করেন এই দুর্নীতির দুই বৎসর

১৯৭১ টি পৈয়াশীয়াসিঙার নিকটে জ্বলছে

‘କି ବାସ୍ତବ ମିଳା ପଡ଼ିବ’ ଶିରିଡ଼େକେ ।

মেজর পোপ নামক ইংরাজবর্গীয় সৈন্য  
একজন আফিমের এমলি নামে একটি অবিদা

६३। युवतीक वस्त्र कपड़ा निव रजिगा आ  
 पनाम शूक लईमा: निवा अथवा यज्ञापीन

কমিটিতে ভবিষ্যৎ সম্বন্ধে আলোচনা করে, আর  
তদনুসারে কার্যকরী পদক্ষেপ নেওয়া হবে।

১৯৪৬ খ্রিষ্টাব্দে উল্লেখ্য ন্যায় বর্তমান  
উল্লেখ্য শিখা নামের পরিচালনা

গরমত তের দহদাহে মুখের ভূঃ  
গরমত বৈ। উল্লেখের সর্বসামান্যে

১) এ-একটি সোনারালোকের পৌনঃপুন্য ।

‘मयाछात्र’ ।

সকল উন্নতি সাধন। কেউ কিছু বর্ণে দেশ  
বিভাগে ভেঙে পরিণত হয় নাই। স্বাভাবিক অব-  
স্থা। এ প্রকার যে গণনাগোষ্ঠে বসবাস করতেন  
সেই গণনাগোষ্ঠেই বসে। বিজ্ঞানীরা। অসম-  
গত। পিছনে পড়ে বসে। তাহার।  
মিসিসিপির নদী। এক প্রান্তে প্রাচীর করিয়া  
হে। আশেপাশে। সর্বত্র পল সর্বত্র মধ্যস্থত  
প্রদান। উপলক্ষে। ক্রম ও উন্নতি। বিশেষতঃ  
শেখার। দেশের প্রতি বিস্তৃতি প্রকাশ করি-  
তেছেন।

২১এ নবেম্বরের নিউইয়র্ক টাইম্‌স লিখিত  
হয়েছে, আন্দোলন। ( বিজ্ঞানবিশিষ্ট যুদ্ধ  
জাহাজ ) জাহাজে দুই চাইতছে, তদ্বিষয়ে  
আন্দোলন কখন না কখন ই নগরের নিকটে  
কতিপূরণ করিয়া লইবেন। সন্দেহের ছাড়া  
বিষয় অধিক দিন থাকিবে না। বিজ্ঞানের  
বিষয়ে উল্লিখিত কয়েকটি ইহা শেষ কয়েক  
আন্দোলনের বিশেষ সময় টংলগের যত  
সাধা অদমাননা করিয়াছেন, এবং যত দিন  
একজন আন্দোলনকারী লিখিত থাকিবেন, তত  
দিন ই লগ ইয়ার জমা হুতি কইবেন। মো-  
দিল কইতে কালিগী। মাগক এত বাল্পিয়  
জাহাজ দুই লইয়, যাইতেছিল তাহা আন্দ-  
োলন প্রবী জাহাজের বন, খত কইয়া ছ।

[illegible]

গবৰ্ণমেণ্টৰ সেনাপতি হ'ল পান কক নম পাই  
হটে হ'ল পাইব, এই উদ্দেশ্য বিজ্ঞপ্তিৰ নম্বৰ  
সংকলনিত কানাম সনাইট হ'ল। গবৰ্ণমেণ্টৰ  
সেনাপতি কাল-মোৰ্থ আছে। সেনাপতি হোৱা  
প্ৰতিপত্তি কামন কৰি বিজ্ঞপ্তিৰ "স" পত্ৰ জ্ঞান।  
যাও নাই। নিম্নলিখিত নিকটস্থ পৌৰাণিক  
দুই হ'ল নম্বৰ "স" হ'ল, এক লক্ষ্যৰ  
অধিন গবৰ্ণমেণ্ট সেনা পৌৰাণিক হ'ল।  
কামন বিজ্ঞপ্তিৰ "স" হ'ল পত্ৰ ককল বিজ্ঞপ্তি  
হ'ল গবৰ্ণমেণ্ট নম্বৰ "স" বিজ্ঞপ্তিৰ পক্ষে  
পৌৰাণিক দুই হ'ল ৭৫,০০০ মোৰ্চাৰ  
হ'ল

পুলকিত হইয়া উঠিয়াছিল।

जुलै १९४६ ई. म. १५ । सा. १५३३ । २०७

[illegible][illegible]

কান্টনমেন্ট জল সেচন ও খাল খননকারী  
মিফুর লোড বাসান ( ট্রাকার ) ,  
মাইল বেইল হয়ে ।  
ম: কান্টনমেন্ট জল সেচন ও খাল খনন কারী  
ফলাফল ।

शार्दूलपत्रे विज्ञापन ।

স্বাভাবিকভাবেই সেখানেও গবেষণার  
কাজ চলছে।

২০৫ খ্রিসাব্দে। লোন্ডার্ডার মুন্সে  
হাকিম আমলুল করিম কোন্ডারি কটিমে  
দাসাত্মদায়ে উক্ত বিভাগে প্রথম জেলীর অধি  
কৃতিকো-টর কর্তব্যে পাইটর হোল।

২৩ম ডিবেট : জবাবদি, এড. অর্থাৎ  
সংসদে কল্যাণের ন্যায়গোষ্ঠী থাকিলেই হবে।

যেমন, জিহ্বা ও হৃদয়, কান ও চোখ, মা ও পুত্র  
উভয় ক্ষেত্রেই এই নিয়মটি কাজেই না আসে।  
সেই কারণেই এটি বৈধ নয়।

কমলিটি যেটুকু মনে পড়েছে সব মনে পড়েছে।  
 নীলাজাতিটি হইল। নীলাজাতি ও ডেপুটি  
 কালেক্টরের কথাতা পাঠ্যবস্তু ; কিন্তু বড়  
 জমা কোম-আজ্ঞা না হইল উক্ত জেলায় এত  
 মিনি জাতিটি নীলাজাতি ও ডেপুটি কালেক্টর  
 পাঠ্যবস্তু ।

[illegible]

শি. এ. চন্দ্র নাথের চট্টগ্রামের সহকারী  
ম্যাজিষ্ট্রেট হ'য়ে, কো.অর্ডার অ্যান্ড নের ২২ খাবা-  
হুসাবে এখন শেখীর অধীন কংজিষ্ট্রেটের ক-  
মন্ড, পাইপের, কিন্তু বস্ত্র দিই অন্য কোন অ-  
জ্ঞান। এর উক্ত জেলায় অতিমিবি জাইন্ট মা-  
জিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর থাকিবেন।

১৯৮০-৮১ অর্থবছরে "হিম্মত" নামের একটি নতুন পত্রিকা প্রকাশিত হয়। এটি একটি সাময়িকী। এটি প্রকাশিত হয় ১৯৮০-৮১ অর্থবছরে। এটি প্রকাশিত হয় ১৯৮০-৮১ অর্থবছরে।

এক, কে, কে, ডিউটেট সার্কেব সাগাবাজের  
সংকারী, মাঝিয়েট ও কালেক্টর হইরা কোম-  
সারি আইনের ২২ ধারানুসারে কনভ; পাটনা  
সাবিহাস বিভাগের ভার পাইছেন

৩০শে ডিসেম্বর। ই. ডাণ্টন সাহেব লাহোরে  
দেহভূতীর প্রাণীর লোকসাহিত্যে পুণ্ডিত লোকসাহিত্যে-  
কৃষ্ণ চন্দ্রসহ।

এ, এচ, আইসিএল সাংগে বর্তমানের সূত্রীয় প্র-  
ণীত সহকারী পুলিশ সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইবেন।  
ই, জেকেস সাংগে পুলিশ সূত্রীয় প্রেসদায়  
প্রকাষী পুলিশ সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইবেন।

## প্রেরিত

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ পত্রিকা  
মহোদয়ের।

ਸਿਟਿਕਸ਼ਨ ਸਿਫੰਟ—

অতি অল্পদিনেই বইটন এখানে ক'লক'ল শব্দ  
ক'লক'ল শব্দেই বইটন আনিয়াছে । ইংলিও  
ক'লক'ল শব্দেই বইটন আনিয়াছে । ইংলিও  
ক'লক'ল শব্দেই বইটন আনিয়াছে । ইংলিও

হাটের মাঝখানে একটি বড়, আচ্ছাদিত তালিয়ার অধ-  
মোক্ষাধারকে নির্দেশ করে। এখান থেকে  
যদিও বোঝানোর পাঠ্য ন. ২৩ হতে লইয়া গেল  
গলি তখন আট ক্রীড়া ক্রীড়ার মিলার হু লক্ষ্য  
ল, মিল মিল একটি অধিক ক. ৩ হাটতেছে।

শ্রী. হুগলী অর্থিক সলোদ প্রার্থনা, কবিতা

‘কিছু হ্যাঁ কতক আরে না’ হ্যাঁ নাহে বার, কিন্তু  
ক’ল্যাক লাহর সফ করিতে হয়। বিশেষ ‘ও উহ’  
হ্যাঁ হ্যাঁ ২০। ২৫ জন একতর হইল। বেতনঃ।

ହୃଦୟର ନିମ୍ନ ବୃଦ୍ଧିର ଫଳରେ ହୃଦୟର ଆକାର ବୃଦ୍ଧି  
 ପ୍ରାପ୍ତ ହୁଏ । ( ବୟସ୍କ ବୃଦ୍ଧ ) ବୟସ୍କ ଚାନ୍ଦ୍ର ଶ୍ରୀ-  
 ହୃଦୟ ନିମ୍ନ ଶ୍ରେଣୀର ନିମ୍ନ ବିଭାଗରେ ।

২। ৪ নিম্নপত্রের ঐ কাগজ সহিত বহিঃ ক পত্র  
জাহাকে ধরিয় বসে এবং এ এ আশাব, কাগজ  
তুমি যাহার নিকট কিনিয়াছ তাহাকে দেখ।  
ইহা হইবে, সুনির্মিত কাগজ।

ভাড়া দিও। বলিগা। ভাড়া দাওয়া করে। কখন  
মোড়ানে গিয়া। কিছু দিনের পর, দান চাউনে  
সঙ্গে যে কিছু কাপড় বা খুটনী থাকে, মদ্যের  
পরিদর্শন উভয় বাধিয়া। মদ্যের কিছু দান

১। ৮ তম একত্র হইয়া আসিয়া, দোনা-দীকে আ-  
ক্রমণ করে এবং তাহার (দিশা-কোণ) পুটলী কা-  
তির লটেরা হু এমত ভাষ ক'বায় পুনঃস্থায় ৫৮।

কানৌদ সর্কসহ ৬ ও প্রাচীনতম বিদ্য হ'ত। এত  
কাল গোলাঘাটে পুর্কি এখাকান একজন কুটী  
ওয়ালান চিটাব ফলে পুটলী কাড়িয়া, ক'রা.

এই সময় দেখা গেল। উনিয়া অনেক বন্ধন ক-  
রিতে পায়েন আবার সব কি বাক। মাই? ৩।

আ'ছন ! তুহা'লফে ওয়া পৌ'বেব বিব'বন' ম'জ  
মিনিতেছি । এই মিন কওক'জন মিনা'ভী বাজা'র  
ময়। পায়গা ম। মিয়, ইদাত লইয়। ব'র, কাম চাহি

[illegible]

০। গ। জনসিদ্ধান্তটি সঠিক বা ত্রুটি স্বতঃ হ'লে  
নাসিবেন। সিদ্ধান্ত-বাক্যকে কেবলমাত্র 'ভিত্তি'  
কথাটান) তাহলেই প্রস্তার করেন। এবং  
এইভাবেও বলা যায় যে এখানে কোনও

১৪৫ হিন্দু আইন। রাধিকার। দেবীর জাতি। ন. আ-  
 ১৪৬ জমিদারদের। ন. দেব। বে. গ. দ. ১৪৭। পু. ১৪৮  
 ১৪৯। ন. দেব। ১৫০। ই. ১৫১। ১৫২। ১৫৩। ১৫৪। ১৫৫।

পৰিত্ৰিত কোমলমিথকে উৎসাহ বিচৰে; আৰ্হি  
মুখিব, কেমন কবিতা কোমল, অশমে থাকে  
ই একান্তত অসম্মতৰ পৰে হাতমুখিৰে

১২। ইউরোপীয়-আমেরিকান ফেডারেল  
 ১৩। ইউরোপীয়-আমেরিকান ফেডারেল

[illegible]

১১. কোন কোন দেশের সঙ্গে বাংলাদেশের সীমান্ত রয়েছে?

১৯৭১ সালের ১৫ আগস্ট  
 তারিখ: ১৫/০৮/৭১

मिनायु केरुग करिवा, व  
वालि: ३३ गोहर मिना  
पर शिर करुग विप: ३३, व

অনা. ডা. হু. পাত অদি. বে.  
সে. হু. পের ডা. উ. স. চারি.  
আদি. এক. ক. দ. দি. গ. স.

১। নিম্নলিখিত। যেসব মোঃ  
 আমানতের ডেপুটি বাবু হইল  
 অতঃপর প্রত্যেক কর্তব্য। আইন।

গবেষণার জন্য  
কলিকাতা (১)

সোমসংক্রান্ত ১০ বিজ্ঞপ্তি

[illegible]

কিছুতেই হঠাৎ সশাসনক কামাচার

हिन। किहू आ'म गरि मरे की मरु आ'म  
करनः आदिना, जोह कहेहुँ, अन, कि  
आदर हुँ, नहेसहि भोज नहि गरि।

১১। জনাব যে সংসদে এই আইন প্রণয়নের  
সময়ে লিখিত বইখানা, প্রিন্টার্স, লিটারার  
প্রভৃতি।

ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ କରିବା ପାଇଁ ଏହି ପତ୍ରଟି ପ୍ରକାଶ କରାଯାଉଛି ।

[illegible]

ডিকার্ড : আনুগত্য : মিসডানিহিগকে পুত্র  
নরকে প্রেরণ করা আবার যিগেটনার কড়িকা

১১) প্রকৃত অর্থে যে প্রত্যাহা ঘটনা-প্র  
সংক্রিয়াক্রিয়ের অন্তর্ভুক্ত করা ও প্রকৃত  
সংক্রিয়াক্রিয়ের কারণ। সিদ্ধান্তি বিধানে এই প্রকৃত  
সংক্রিয়াক্রিয়ের কারণ। প্রকৃত অর্থে প্রকৃত। প্রকৃত

१) आर. क. नं. १५५५/१९६३ दि. १०/११/६३  
 २) आर. क. नं. १५५५/१९६३ दि. १०/११/६३

Figure 1. The effect of the initial concentration of the monomer on the polymerization of  $\alpha$ -methylstyrene initiated by  $\text{SnCl}_4$  in  $\text{CH}_2\text{Cl}_2$  at  $-78^\circ\text{C}$  for 24 h. The concentration of the initiator was  $1.0 \times 10^{-2} \text{ mol/L}$ . The concentration of the monomer was (a)  $0.1 \text{ mol/L}$ , (b)  $0.2 \text{ mol/L}$ , (c)  $0.3 \text{ mol/L}$ , (d)  $0.4 \text{ mol/L}$ , (e)  $0.5 \text{ mol/L}$ , (f)  $0.6 \text{ mol/L}$ , (g)  $0.7 \text{ mol/L}$ , (h)  $0.8 \text{ mol/L}$ , (i)  $0.9 \text{ mol/L}$ , and (j)  $1.0 \text{ mol/L}$ .



১৯৪৭

[illegible]

১২৬৯ পৌষ চতুর্দশী ৭০ জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৮

पञ्चमः पाठः ।

\_\_\_\_\_

"प्रवर्तनीं प्रवर्तयितुं चारिणः सदासी सुनिश्चयी न भवेत् ।"

সন ১২৬৩। ২৩ পৌষ। ইং ১৮৬৩। ১২ জানুয়ারি

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

করিনাপুর জিলায় অস্ত্র-পাণ্ডী বাটকেয়ারি  
মহকুমতপুর নামে যে পন্থনি তালুক আছে,  
তাহা করপন্থনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
বাইবে। বাঁহার সেই তালুক করপন্থনি লই  
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার "আর্ডার" ডিবি'র কোম্পানির নিক-  
টে আবেদন করিলে নথিগত হস্তাক্ষরান্বিত  
পারিবেদন

ସଂକ୍ଷେପ ଶୈଳୀ ଗୋଷ୍ଠୀଦ୍ୱାରା ।

আমরা : ছিদ্দিন অবধি গোমস্তাকানের  
আরও : রেমা বাড়াইবার চেষ্টা করি-  
তেছি । একই কৌশল ধরে কৃতকাব্য হইতে  
পারিতেছি না । করমা বাড়িলেই সেই  
সঙ্গে সঙ্গে সকল বিষয়েরই ব্যয় বৃদ্ধি হ-  
ইবে । প্রথম, আমের অক্ষর সংগ্রহ করি-  
তে হইবে । দ্বিতীয়, কাগজ, কালী, ক-  
লোয়াড়িয়ার ও অন্য অন্য সরঞ্জাম বাড়ি-  
তে হইবে । তৃতীয়, বর্ণ সংশোধক ও  
লেখকের সংখ্যা বৃদ্ধি করিতে হইবে । এই  
সঙ্গে সঙ্গে সম্পাদকের বেপারিও ও আ-  
গারবৃদ্ধি এবং পত্রের আতি হইবে, আমরা  
তালা বাড়িলে গণনা করিতেছি না । আর স  
হাজার অধিক আর ব্যক্তিরকে লক্ষ্য হও  
গা সঙ্কটবিত্ত হবে । কিন্তু সে আর ইচ্ছিত  
কি ? গোমস্তাকানের বৃদ্ধি হই  
করা এবং কালের আশাধনের অস্তিত্ব  
না । কিন্তু কালের অস্তিত্ব অসম্ভব  
করিবার ইচ্ছা করিতেছি, যদি আশঙ্কন

ଦେବ ଅନୁମୋଦିତ ହୁଏ, ଅତିଶଯିତ ମିଳି  
 ହୁଏତେ ମାତ

যে অবধি সোমপ্রকাশের দ্বানিক এক ও  
অন্য বার্ষিক বৎসর টাকায় মূল্য করা হই  
রাহে, সে অবধি মকবলের প্রায়শ্চিত্তের  
নিকট হইতে ডাক মামুল গ্রহণ পরিহার  
করা গিয়াছে। সেজন্য কতিবাসর ডাক  
এই, কলিকাতার সহিত মকবলের বহু  
লক্ষ্য আছে। মকবলবাসিনা সোমপ্রকাশ  
মিলা অনেক বিকর অবগত হইতে পারেন  
তদ্বিষয়ে এখানে জানাওকার সম্বন্ধে  
আছে, অনেকের অবস্থাও ভাল। বি  
মকবল বাসিনাদের এ সকল সুবিধা  
উদাহরণের কেবল এক সম্ভাব্য পটভূমি  
র নির্ভর, সকলের অবস্থাও ভাল নয়  
অধিক ব্যয় করিয়া সম্ভাব্য পর গ্রহণ  
ন। এই সকল বিবেচনা করিয়া আমরা  
সিদ্ধি নিম্ন অদলদল করি। এক  
আমাদের সে নিম্ন ব্যক্তি  
মকবলবাসী অথবা সোমপ্রকাশ পত্রিক  
পক্ষে সেই লাভ ভোগে বঞ্চিত কতিবাস  
ইচ্ছা নাই। তবে আমাদের ইচ্ছা এই  
যাঁহারা সমর্থ হইবেন, তাঁহারা যদি ইচ্ছা  
পূর্বক স্বতন্ত্র ডাক মামুল দেন, তাহা  
আমরা এক করিয়া ইচ্ছা করিয়া  
সহিত আগমনের চিত্র। আমরা  
কতিবাসে পারি। আমরা কতিবাস  
ইচ্ছা নাই। কতিবাসে পারি। আমরা  
পেন বসিনা। কতিবাসে পারি। আমরা  
ইচ্ছা নাই। কতিবাসে পারি। আমরা

[illegible]



যে কারণে হাজারে বেতন  
 প্রদান করা হয়, তাহাও এখানে পা  
 য়ের কারণে করা অপ্রাসঙ্গিক হইতে  
 পারে। অতীত কালে কাউন্সিল সাহেব  
 প্রদত্ত ও বিদ্যমানের বেতন হুজি  
 রিয়া দ্বারা অনুমান করা হইলে তা  
 হইতে প্রাপ্তের বেতন প্রাপ্ত ও এ  
 কালের প্রাপ্ত বেতন সঙ্কট

[illegible]

বার উন্নতিসাধনকী, সংস্কৃত ভাষার অঙ্কিত।  
 সংস্কৃত ভাষার লালন পালনেই বাৎসরিক-  
 বা বার্ষিক পরিশুদ্ধ ও বর্ধনশীল হইতে  
 ছে। এই কালেক্টরের সংস্কৃত ডিপার্টমেন্ট  
 যে, সে এমনি হতভাগ্য যে ইহার  
 অন্তর্নিবিষ্ট ইংরাজী ডিপার্টমেন্টের সহিত  
 প্রতিযোগিতা করিতেও সমর্থ নহে।  
 সত্যি অজ্ঞতা অধ্যাপক ও শিক্ষকবিশিষ্ট  
 বেকন হুজির যে এতদাব ইংরাজী, শুমা  
 গেল, তাহাতেও উল্লিখিত বিনয়ন তাব  
 অলক্ষিত হইতেছে না। ইংরাজী শিক্ষক  
 নিগের ৫০।২৫৭২০ প্রকৃতি টাকা বাড়াই  
 বার অনুরোধ করা হইয়াছে, কিন্তু সংস্কৃত  
 অধ্যাপকনিগের অর্ধট দশ ছাড়িয়া উঠি  
 তে পারে নাই। আমানিগের বিজ্ঞ, অগ-  
 ক্ষণাতী, বখার্বদশী অধ্যাপক এই কলি বিবে  
 চনা করিয়া ইহার প্রতিবিধান চেষ্টা  
 করেন এই আমানিগের অনুরোধ।

তারতর্কীর সত্যের বিহীন ভদ্র।  
এই সত্য নিজ্ঞা ভদ্র করি " সুখিনী  
হইতে উদ্ধৃত হইরাছেন। ১৫  
জোয়া বহু কালের পর পাখান  
এই দ্বারা সত্যকে "বিত্তিক  
হেন। সত্যটি সত্য অধিনা  
সর চারুলস উত্তরে এত  
পত্র দ্বিবার লক্ষ্য করিয়াছেন  
যদি সত্য হয়, অতঃপর বদর্শ  
মীলিতমের করিবার।  
পাইরাহিলান, তাহা আশুনি  
রাহে।

সত্যের বে মিথ্যা ভাব  
ভাবের আর একটি  
ইহা বিশ্বপেট্রিট হল  
মিথের কৃত করেকটি  
কল্পিতা আত্মপাত কল  
ভবি বৈশাল কল





2004





যোগাযোগের মাধ্যমে রাষ্ট্রের কালে তির তির  
 সীমিত ভারতবর্ষের 'বাণিজ্য সম্বন্ধ'  
 ইংল্যান্ডের 'উন্নতি হইয়াছিল' 'একপ বোধ'  
 না। এই হইবার কারণও লক্ষিত  
 হইতেছে। এক দেশজাত প্রত্য অন্য দেশে  
 তদ্রূপ জাত প্রত্যের সন্ধিত বিবি  
 বাণিজ্যের আবিস্কি হয়। যে দেশে  
 যে যে প্রত্যের অভাব থাকে, সেই  
 দেশে সেই প্রত্যের পরিমাণে তির দেশ  
 প্রত্যের প্রত্যের 'আপনারিগের' অভাব  
 পূরণের চেষ্টা করে। উল্লেখ্য 'প্রায়োজনো'  
 'পরিযোগি' নামা প্রত্যের অভাব প্রত্যের অন্ত  
 ভুক্ত হয়, 'উত্তরাং ইংল্যান্ডের' 'ভারতবর্ষ, আ  
 (১) 'যোগাযোগ' সম্বন্ধিগের প্রত্য সকলেই  
 'আপনারিগের' 'পিতার' 'উৎসাহ' 'ভাব' 'প্রাণ'  
 'হৃদে' 'প্রাণ' 'হৃদে' 'সংসারি' 'কবিতা' 'হেঁদে'। অনেক  
 'রাজকুমার' 'আপনারিগের' 'পিতার' 'সন্ধিত' 'রাজ'  
 'এক' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু' 'বিলম্ব' 'পরিচয়' 'দিয়া'  
 'হেঁদে'। 'চল' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু'  
 'যোগাযোগ' 'সম্বন্ধিগের' 'পিতার' 'সন্ধিত' 'রাজ'  
 'এক' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু' 'বিলম্ব' 'পরিচয়' 'দিয়া'  
 'হেঁদে'। 'চল' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু' 'ইংল্যান্ড' 'কিন্তু'

২। রাষ্ট্রীয় স্বাধীনতার আন্দোলনকে  
বাকীরা অনুবাদ। শ্যামবাজারে বিদ্যালয়ের  
মত প্রকাশিত। স্বাধীনতা আন্দোলনকে বিদ্যালয়  
এবং। ইহা স্বাধীনতা আন্দোলনকে বিদ্যালয়  
বাকীরা অনুবাদ। শ্যামবাজারে বিদ্যালয়ের

विषय-सूची

সোমপ্রকাশ

১

\* ३७-६५ नोड् अक्षरावली यः ।

গত কল্য নিম্নলিখিত ঠিকার মহিলা  
কল্যাণগৃহে বিক্রীত হইবার্হঃ—

সিবিলাইজেশন! সর চান্দলাল উদ্ভের নি  
 ৫৫ যে আবেগ কল্পিত ছিলেন তাবিশেষে

সরকারী স্কুল উচ্চ মাধ্যমিক বিদ্যালয়, কলকাতা  
১৯৬০ খ্রিঃ ১০ই আগস্ট

সত্যজিৎ রায়সাহেবের নিকটে যেমন রাখক  
ক'রালীজি কাহানক' তবু হইয়াছে, তাহাতে

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

১. বাজার টাইমস বলেন উল্লেখ্য টেবিলের  
সহ চারজন টিবিবিয়ানের প্রতি উল্লেখ্য

চলকরা এলেন লাটৌর সাহেবের জুতা  
হলয়াতে সাহাবাদ্দর মাঝিগে ট ৭ কালেক্টর

আলহাবাদ শেফেট বলেন নাক্সালের  
প্রধান সংগঠিত সব ক্ষেত্র স ফ্রাট ইউন ৭-

লক্ষ্যের ইচ্ছাযুক্তি স্বীকার্যেরা ভীর  
ভুক্তা শিক্ষা কল্পিত অত্যাচারে এক সত্তা ন

নবীনপ্র পাল নাথিক এক ব্যক্তি বাম  
নাথী এক বেলার ব্যক্তি হইবে হইবে গমন

এই প্রকার সংবাদ সর্বদা গুলিতে পাওয়া যায়।  
কিন্তু এই দু'করিএ বা কুহিনের প্রতি গুরুত্ব

আমরা সবাই দেখতে পাই, ইউরোপী

কেন্দ্রীয় শিল্প মন্ত্রী

আবদুল হক, জামিউল উলুম, কলকাতা, ১৯৩৩

ড' এফা' ই. ওয়াশিংটন সেন্সিটিভিভিটি টেস্টের ফলাফল  
ইন্টারফ L-মাত্রা: হিউম্যানসেবান্ডার বাজার: ১০%

আছে। বাহ্যিক সেবাপ্রণেয় চরিত্র এবং  
শোষণ হয়, তাহিরে ক্রিয়াক

विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली  
अन्य विद्यापीठे, मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, इत्यादि

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

কেন্দ্রের আধীন 'ট্রিফা' বাক্সের, কখন কখন  
 যি আধিক্যের প্রয়োজনে, তাহা হইলে, তাহা  
 কখন প্রকৃতি দ্বারা করিয়া থাকেন।

राष्ट्र गणतन्त्र दिवस २०१९  
दिवस २०१९

ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଏହି ଦୁଇ ଅଭିଯୋଗର  
ବହୁତ ସଂଖ୍ୟା ଏକମାତ୍ର ନିମ୍ନ ଉଲ୍ଲେଖିତ

ডেবি নিউজ পাত্রে কুইন ক্রীম  
নিউ ক্রাফট একটু ক্রাফট ক্রাফট

बनिय। उद्देश्य कदाचित् नमिषः नमिषः  
यदेवादिनी नमिषः नमिषः नमिषः नमिषः  
कान्त नमिषः नमिषः नमिषः नमिषः

नमोऽस्ति ते भगवते अथान विज्ञानमिति ।  
इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

[illegible]

অন্যদিকে সশস্ত্র বাহিনীকে সশস্ত্র করে দেওয়া এবং  
অন্যদিকে সশস্ত্র বাহিনীকে সশস্ত্র করে দেওয়া

১৯৪৭-৪৮ সালের মধ্যে মুখ্যমন্ত্রী

১. চারুনাথ - লিখিতকৃত বাহি আনকর দ্রষ্টব্য



‘ ब्रह्मदेवी’ वादकः भूत वास्तविक शक्तिः  
 अस्ति वादकः । अस्मिन् वादकः ईश्वर-  
 वादकः १२ ईश्वर-वादक-वादकः ।

১০০  
ইউরোপীয় সংবাদ।  
১৯৪৫, ১৯ই ডিসেম্বর মিউনিখ ২৯ নবেম্বর  
মিউনিখ বর্ণে কোন খবর নেই। - আক্রমণ  
কিন্তু বর্ণনা বর্ণনামেটেব শিবির পর্যন্ত এর  
কোন বর্ণনা নেই। উক্ত ক্যারোলিনার বিজ্ঞানী  
বর্ণনামেটের এছাড়া সেনাদিগকে, মিউনিখ  
ক্যারোলিনার কাছে। তাছাড়া বর্ণনামেটের  
ক্যারোলিন (৩০০) সেনাকে বর্ণনামেট করি  
ক্যারোলিনায় বর্ণনামেটের পক্ষে পাই নাই







**(१)**

[illegible]

अकाल भण्डार आगनी कसमा  
दुर्लभम २० डिग्रे १५-७२ माल।

अथ, तत्र तत्र !

গত ৯ই পৌষের সোমবারে প্রকটিত প-  
ারকারেই বিবাহ কাল। কিন্তু বিবাহক বিটানে জীবুত  
অনেকচক্ষু বেলাকুবাণীশ মহাশয়ের অন্তঃ  
উৎসাহ কর্তব্যে পাত্রকে মস্তেব লাভ করিলেন।  
আমি কতু মর্শনের পূর্বকালকে বিবাহ কাল  
বলিয়া উল্লেখ করিয়াছি তাহাও বেলাকুবাণীশ  
মহাশয় যে বাহা কতুর পূর্বকাল কি অন্তঃপূর্ব  
পূর্বকাল এই প্রশ্ন করিয়াছেন তাহাও মিস্ত্রী  
গে প্রকটিত হইল। বেলাকুবাণীশ মহাশয় ময়  
একালে সুখিপাত করিয়া আমায় পরিজনের  
সফলত বিধানে চিন্তার্থ করুন।

ତଥାହି ।  
 ନାସତ୍ କରଣସୂତସଃ କ୍ଳାନ୍ତସ୍ତେ  
 ମୂଳୋଽସ୍ୟ ସଂସାରାଦିନି ସାଂସାରୀନଃ ।  
 ତାସାଃ କୁଃଶାସି ହଃଶାସି କାତାଃ ।  
 ସାତ୍ତ୍ୱାପିତ୍ତକାଂଘିତି ସର୍ବଶାମଃ ॥

[illegible]

একটি স্থানীয় বেসরকারি প্রতিষ্ঠান থেকে  
একটি স্থানীয় বেসরকারি প্রতিষ্ঠান থেকে

(১) জাতিগত ভাষা পরিচালিত হইল। গ।  
(২) জাতিগত গণপরিষদের স্থাপত্যচিত্র: পাঁচ।  
জাতিগত গণপরিষদের স্থাপত্যচিত্র: পাঁচ।

অতঃপর বিচারে কখন কিস্তিভাবে নিবন্ধ করিতে  
করবে। বঙ্গদেশেই বিত্ত আদায়ের লেও কর্তৃক  
ই "সুবিধা" নামে এক নতুন বিকল্প আদায়  
করিতে আরম্ভ করা। দুই চর ন।। বঙ্গদেশে  
কল্যাণ অর্থের নামাকাল কর। এবং পিছ  
কালের সুবিধা নামে অর্থ চাইয়াছে।  
তবে এই অর্থ আদায়ের  
মোহ নাই।

[illegible]

সংস্কৃত কলিতার্থ এই কইরাছে যে পূর্বকাল  
বিক্রম সত্বেন কমগার কতকালঃ পিণ্ডিগির নরক  
পাত্ত প্রাপ্তি হেতুক সন্তুষ্টবৎসরাদুর্ভব বিবাহের  
সাক্ষ্যবিত্তিকঃ সন্তুষ্ট বর্ষদ পাত্র মাধ্যম-  
কতুর পূর্বকাল বিবাহ কাল সংস্কৃত নির্দিষ্ট হই-  
তাহে ভাগ্যবান লগো অষ্টম নবম দশম উচ্যত  
প্রশস্ত মাএ কতিম যে কাল সে গোপ কাল  
ইতি তারিখ ১৩ পৌষ

कृष्णभक्तिसिद्धिनिधि  
श्रीकृष्णकृतः उक्तः श्रीकृष्ण

77

ত্রিযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্ভাষক  
 মহাশয় সমীচেষ্টা ।

ତାଙ୍କର କି ହୁଏନୁ, କୃଷିର ପର୍ବାର ବଳରେ  
 ସୁଖିନ ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀର ସୁଖ ବଡ଼ ହେଲା । ତାଙ୍କ  
 ହାତେ କୃଷିର କଳପଥେ ସାଫଳ୍ୟ ପାଇଁ ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀ-  
 ନାଥ ନନ୍ଦୀ ଅତିଶୟ ପ୍ରସିଦ୍ଧ । ତାଙ୍କ କାରଣ ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀ  
 ନାଥ ନନ୍ଦୀ କେବଳ କାଳେଟି ତରାଫ ନର ଏବଂ ତେ  
 ଯେ ହାତ କା ହାତେ କାର୍ଯ୍ୟରେ ହୁଏ ନିଜେ  
 ମୋହନ ହୁଏ । ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀ ନିଜେ ଯେ ପଦ୍ମାବତୀ-  
 ଯେ ପଦ୍ମାବତୀ ତଥା ହାତେ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଏକ ଶ୍ର-  
 ଶ୍ରେୟ ବାଣୀ । କାରଣ ଯେ ହାତେ ପଦ୍ମାବତୀ ହାତେ  
 ଆକାଶ ନିଜ ନାମେ । ଅପର ଦେଶର ପଥ ଆସେ  
 ତଥାପି କୃଷିର ହାତେ ଯେ ଦିନ କଳିକାତୀର  
 ହାତେ ଯେ ଦିନ, ତଥା କୃଷିର ହାତେ ଅପର  
 ନାଥ ନନ୍ଦୀ ମହା କାର୍ଯ୍ୟ ହୁଏନା । କୃଷିର ହାତେ  
 ତାଙ୍କର ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀ ମହା, କାରଣ ପଦ୍ମାବତୀ ବାଣୀର ଏକ-  
 ଟାଣ । ଏକଦେ ଏତେ ଦେଶରେ ତାମିରେ ହର ତଥା  
 ଅନ୍ତରାଳ ଏବଂ ସହକାରେ କୃଷିର ହାତେ ତାଙ୍କର  
 ନାଥ ନନ୍ଦୀ ଆସା ହୁଏ । ତାଙ୍କର ନାଥ ନନ୍ଦୀ ଏକଦେ  
 ନାଥେ ନାଥେ ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀର ନାଥ କୃଷିର ନାଥ  
 ବଡ଼ କରିଛନ୍ତି କିନ୍ତୁ ନେ ଶ୍ରୀରାମ ନାଥ ହାତେ  
 ନାଥେ ନାଥେ, କାରଣ ଇନ୍ଦ୍ରାଣୀର ନାଥ ନାଥ  
 ତଥା ହାତେ ତାଙ୍କର ଏକଦେଶ ନାଥେ ନାଥ  
 କିନ୍ତୁ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ  
 ଅପର ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ  
 ବିଦ୍ୟା କରନ୍ତା ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ  
 ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ ନାଥେ

[illegible][illegible]





# সোমপ্রকাশ

“সর্বস্বাধীনতা সত্যমিহিমাংসনং যত্নমিহিমাংসনং যত্নমিহিমাংসনং যত্নমিহিমাংসনং”

৫ ভাগ।  
১০ নং খা।

{ সন ১২৬২। ৭ই মাঘ। ইং ১৮৬৩। ১২ জানুয়ারি }

{ দৈনিক মুদ্রা ১০  
বার্ষিক মুদ্রা ৩০০ }

বিজ্ঞাপন।

মুদ্রারক্ষণ।

১৮৬৪র এক্টের নিমিত্ত মুদ্রারক্ষণ পুস্তক প্রণীত হইয়া কলিকাতা মুদ্রাপুর বি-  
দ্যালয় বস্ত্রে ১ টাকা মূল্যে বিক্রয় হইতেছে।  
বিশেষীয় গ্রাহকগণ তথ্য বা সংকৃত কা-  
লেজে ইংলিশচন্দ্র বিদ্যালয়ের নিকট পো-  
ষ্টেজ ও মূল্য পাঠাইলে পাইবেন। প্রত্যেক  
পাঠ খানার ওজন এক সের।

ইংলিশচন্দ্র শর্মা

বিজ্ঞাপন।

বাসবদত্তা।

কবিবর ৬৮ বঙ্গমোহন তর্কালঙ্কার প্রণীত  
পদ্যময় উক্ত উৎকর্ষ কাব্য অতি উত্তমরূপে  
পুনর্মুদ্রিত করা হইতেছে, অচিরে প্রকাশিত  
হইবেক বাহ্য আবশ্যক হয় তিনি স্বীয় নাম  
নাম স্বাক্ষর পূর্বক বহরমপুর নিবাসী জ্যেষ্ঠ  
বাবু রামদাস সেনের নিকট মূল্য সহ পত্র পি-  
থিলে পুস্তক ১৮৮র প্রাপ্ত হইবেন। মূল্য ১ এক  
টাকা মাত্র। বিশেষীয় গ্রাহকগণ পুস্তক ভাঙে  
প্রেরণ করণ মাতুলের অন্য ৭০ জনা অতি  
দ্রুত পাঠাইবেন ইতি।

তাৎ ৩রা মাঘ। ১২৬২ সন।

ঈরামদাস সেন

বহরমপুর

বিজ্ঞাপন।

বিচার পত্রিকা।

ইংলও প্রকৃতি দেশের প্রধান প্রধান  
বিচারালয়ের বিচার পণ্ডিত দ্বারা যে সকল  
বিচার পত্রিকা প্রণীত হইয়াছে, বিশেষতঃ

মহাশয় জে ডবলিউ স্মিথ সাহেবের প্রণীত  
যে বিচার পত্রিকা প্রধান প্রধান আদালতের  
ব্যবহারার্থ ইংরাজী ভাষায় বিরাচিত হইয়া  
নিরূপিত হইয়াছে, তাহা হইতে এ দেশে-  
শের ব্যবহার উপযোগী ও প্রয়োজনীয় এবং  
ব্যবহার বিচারের নিয়ম বোধ গম্য হয়, এমত  
বিবিধ বিধান চাকর ডেপুটি কালেক্টর জ্যেষ্ঠ  
বাবু ব্রজমোহন দত্ত ও অন্যান্য ব্যক্তিগণ ক-  
র্তৃক মূল্য বঙ্গ ভাষায় অনুবাদিত হইয়া  
জ্যেষ্ঠ বাবু গৌরমোহন দত্ত ও জ্যেষ্ঠ বাবু  
চুর্গাকান্ত চক্রবর্ত্তি কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে,  
গ্রাহকগণ কাঁচারিগণের প্রস্থানে তহবিল  
লে প্রাপ্ত হইবেন মূল্য ১ এক টাকা মাত্র।

গুপ্ত প্রাপ্ত

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরী

১২ই জানুয়ারি ১৮৬৩

বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিলার অস্থঃপাতী বাটকেমারি  
মহকুমতপুর নামে যে পত্রিকা প্রকাশিত  
হইয়াছে, তাহা মরণপত্রিকা নামে অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। বাহ্য সেই পত্রিকা মরণপত্রিকা নামে  
বাবু জগদীশ চন্দ্র কলিতার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতায় জার্ডন ফিনান্স কোম্পানির নিক-  
টে আবেদন করিলে সর্বশেষ রক্তাক্ত জানিতে  
পারিলে।

সোমপ্রকাশ।

৭ই মাঘ সোমবার।

১৮৬৩ অব্দে ১৩ আইন।

সে দিবস বাহলা দেশের সেন্টেমেন্ট  
গবর্নর আজ্ঞা করিয়াছেন চাঁদা, রাজস-

দী, মুরসিদাবাদ, কাছা, সাল-  
সাগর, দারজিলিং, নবাব, মুর্শি-  
দাবাদে ১৮৬৩ অব্দে ১৩ আইন  
লিখিত হইবে। এই আইনে এই আইন  
কোন মন্তব্য যদি করায় তাহা হইবে  
দারী আদালতে মকদ্দমা হইয়া  
যও ও নিষ্পত্ত হইবে। এই আইন  
গবর্নমেন্টের এই বিধি প্রণীত  
উদ্দেশ্য কি, বলিয়া না দিবে।  
মকদ্দমা হইতে পারিলেই  
বিল তারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের  
হেবের প্রিয় পুত্র, তাহার মকদ্দমা  
হওয়াতে গবর্নমেন্ট ১৩ আইন  
লিখিত হইবে। উক্ত আইন  
জেলারও এই আইন চলিবে।  
মকদ্দমা হইয়া ১৩ আইন  
সাহেবের মকদ্দমা মকদ্দমা  
বলা হইয়া।

করেক ১৮৬৩ অব্দে প্রণীত  
হইতেছে, ইংলিশচন্দ্র বিদ্যালয়  
কলিকাতায় মকদ্দমা হইয়া  
পণ ডেউ। পাইতেছেন। ইংল-  
যদি এবেতে জাতিসাধা। সত্য  
দেশীয়বিগের স্বাভাবিক  
অথবা রাজনীতি সংক্রান্ত স্বাধীনতা  
প্রকাশ হই। অমনি মহাপুরুষের  
বসেন, তা হইবে ইংলও  
পারে না; কিন্তু কাপি হোলে,  
প্রকৃতি ভূমিসংক্রান্ত যে সমস্ত বস্তু  
এক মল মাজের ভূম্যধিকারি



মজুর ৭ হর, ইহাদিগেরি মতে  
 হল তাৎকালিকের অযোগ্য নহে।  
 না আশ্রয়। সর্বদা ৫৯ আর্ডার ১০  
 ও ক্রমবিকাশের তুরান্বিতের প্রতি  
 র্নম-কমি-শন-বর্ধন-মোটও বর্তমান কর  
 বিধান আশ্রয়-নিগের যুগ বন্ধ করি  
 তাহাদিগের পরম বহুগণের ২ অতী  
 নের ~~আহন~~ আহন !  
 আহন! বিলের প্রথম ও দ্বিতীয়  
 হইত তৎকালে আশ্রয়-নিগের এইকল  
 ইহাদিগের যে প্রস্তাবকারিরা একটি  
 ক সংস্কারের পরাধীন হইয়াই এ  
 ন্তী করিতেছেন। কিন্তু এখন আ-  
 শ্রয়-নিগেরি প্যারিতেছি, তাহাদি-  
 গেরি মতে কেমন উপায়ে হউক, ক  
 তক (এ দেশে, যতদূর ক্রমক ও যতদূর  
 হইত, তৎকালেই মজুরী করে) কারা  
 নাম-নিগেরি পীড়ন করিয়া নীল  
 দাস করিয়া দেওয়াই তাহাদিগের  
 প্রতীক। নতুন, কি জন্য রিচি সাহে  
 লের মজুর-পত্র করণেই ১৩ আইন  
 ৩ চা-কর, এদেশে প্রচলিত করা  
 হইত। বিশেষ আইনের আবশ্যকতা  
 ধারণ দৃষ্টিবিধি দ্বারা কি চরিতা  
 তের সত্যতা নাই? এতদিন উল্লি  
 দশ সকলে এই আইন প্রচলিত  
 নাই, এতদিন কি তত্ত্ব, এদেশ  
 মের কর্তব্য বহু ছিল? যদি বহু ইংল  
 রেয়া বড় উৎপাদ করে; একটি  
 আইন না করিলে তারতবর্ষেও এ  
 প্রকার হইতে পারে। এদেশে আ  
 ত্র প্রথম উজাসা এড ইংলণ্ডের  
 ২ জারজি-মের মজুর কি সম...  
 এতদূর মজুর-নিগের নীলকর  
 গ-মজুরের ম্যার ~~কি~~ দামে ৩...  
 রিয়া প্যারি-নিগেরি মজুর...  
 রক? মজুর-নিগেরি মজুর...  
 তের। আর প্রত্ন... মজুর...  
 কর্তব্য কখন হানি কিরূপে ২।৪

জনকে যে হুঁচকি লাগিয়া যায়, জ  
 মীনারের গম্ভীর প্রত্নতির দোষই তাহার  
 অধিকাংশের কারণ। করে না। তারত  
 বর্ষের ক্রমবিকাশের অংশ-মুখে নীলকর-নিগের  
 বিরোধী হইয়াই; তাহার বহুকাল অস-  
 হ অত্যাচার সহ করিয়া শেষ নীলকর স  
 ম্পর্ক পরিত্যাগ করিয়াছে। নিউপোর্ট,  
 গ্রাসগো প্রভৃতি নগরে মজুরেরা বেতন  
 হ্রাসের আশ্রয়ে একতাক্য হইয়া যে প্রকার  
 প্রত্নতির দোষই তাহার অধিকাংশের  
 মজুর-নিগের প্রাণ বধ করিয়া তৎকাল অত্যা  
 চার করিয়াছে, তাহা এ দেশের লোকের  
 কখন জবাব ও মরন পথে অবতীর্ণ হই  
 নাই। এখানে কোন দল অত্যাচার সহ্য  
 করে? নীল কমিসন, এতদেশীয় সংবাদ  
 পত্র, মিসমিট্রি কোন দলের অত্যাচা  
 রের কথা বলিয়া থাকেন? নীলকর ও  
 চা-করেরাই যে অত্যাচারকারী গবর্নমেন্ট  
 কি এ কথা অস্বীকার করিতে সাহসী হই-  
 বেন? কোন চা-কর বা নীলকর এ পর্যন্ত  
 নিজ ক্রমক অথবা মজুরের নিকটে প্রহার  
 সহ্য করিয়াছেন? কোন নীল বা চা-কর  
 মজুর-নিগের অসমত বেতন প্রার্থনার উৎ-  
 সন্ন হইয়াছে? নীল চাষ পরিত্যক্ত হইল  
 কেন? ক্রমবিকাশের দোষ না নীলকরের অত্যা-  
 চার তাহার কারণ? যখন ঐরূপকারী দলে  
 রই অত্যাচার সঙ্গাণ হইতেছে, যখন ক্র  
 মক ও মজুর-নিগের তরানক অত্যাচার হ  
 ইতে মুক্ত কুরিবার প্রার্থনার চতুর্দিক হ  
 ইতে করণ হনি উখিত হইতেছে, যেখানে  
 অসহ্য অত্যাচার হইলেই গবর্নর জেনেরল  
 পদার্থ তৎকালে জানিতে পারেন, সেই  
 কলিকাতারও যখন আইন দোষে সময়ে  
 সময়ে মহান অপকার হইতেছে, তখন গব  
 র্ণমেন্ট কি সাহসে নির্ভীক নীল প্রদেশে  
 ৩ আইন প্রচলিত করিলেন? ভাল! গ  
 বর্নমেন্ট মজুর-নিগের ক্রমবিকাশ বিধর যেন  
 চিত্র না করিলেন, সর চারলস উডের  
 তৎকাল ও হুঁচকি কিরূপে এড়াইবেন?

তিনি যে সেই উক্ত আশ্রয় হইতে তা  
 বর্ষের মজুর-নিগের কাহাই তার তার করি  
 লেন।  
 চাকা নিউস ও এতদেশীয় সংবাদ  
 পত্রেরি আধীনতা।  
 বিজ্ঞানের বিশেষতঃ নীলগাউন্ড  
 মজুর-নিগের পর অবধি অনেকের এই  
 কার জমিয়াছে এতদেশীয়েরা, বিশেষতঃ  
 বাঙ্গালিরা ইংরাজ-নিগের অতিশয় শত  
 হইয়াছেন। মধ্যে মধ্যে কোম কোম ই  
 রাজী সংবাদ পত্রে এই ভাব প্রকটি  
 হয়। সম্পাদকেরা কখন কখন এ দেশী  
 দিগকে বিজ্ঞান-মুরাগী ও ইংলণ্ড-মুরাগী  
 প্রতি প্রত্নতির দোষই তাহার অধিকাংশের  
 নে গালি দিয়া থাকেন। আমরা এত দি  
 কতিপয় ইউরোপীয়ের বিশেষ-বিশেষ  
 বলিয়া এ বিষয়ে উপেক্ষা করিয়াছিলাম  
 কিন্তু যখন এই মজুর-নিগেরি মজুর-  
 মনোমধ্যে ক্রমবিকাশ বহু হইতেছে তখন  
 ইহার প্রতিবাদ করিয়া এ দেশীয়-নিগের  
 অভিযোগের সাধুতা সঙ্গাণ ও ইউরো  
 পীয়-নিগের ক্রমবিকাশ দূর করা অবশ্য ক  
 র্তব্য হইয়াছে।  
 গতমাস ৩ নং নিউসে এক খানি  
 বাঙ্গালী পুস্তকের সমালোচন কালে বল  
 হইয়াছে, বাঙ্গালীরা একদল গবর্নমেন্টের  
 প্রতি বিরাগ প্রদর্শন করিতেছেন, তাহা  
 নিগের প্রীতি ও প্রত্নিত সংবাদ পত্রে  
 সর্বদা গবর্নমেন্টের নিন্দাবাদ দৃষ্ট হয়।  
 আর এক স্থলে চিবস সাহেবের নিয়মে  
 লিখিত হইয়াছে, ইউরোপীয় কর্তৃপক্ষ  
 নিগের দোষ দর্শন করিলেই এতদেশীয়  
 দ্বিতীয় সঙ্গাণ পত্র তাহাকে বিপাকে কে  
 লিবার চেষ্টা পান। চাকা নিউস কোন  
 চক্ষে ও কিরূপে অবহার এতদেশীয় সংবাদ  
 পত্র সকলকে বিজ্ঞান-মুরাগী ও প্রত্নতির  
 দোষই তাহার অধিকাংশের  
 গবর্নমেন্ট এদেশী  
 নিগের অসহ্য ও অপ্রিয় কাহোর অনু  
 ঠান করিলে তাহার প্রতিবাদ করা কি





সরকারি ট্রিনিটিয়ান।

এ মহান জাতি ১লা মার্চ কলিকাতায়  
ত হইয়া বর্ধাবিধি লিপ্যন্তর করিয়া  
সরকারে সভার অন্যতর সভ্য পদে  
দিত হইয়াছেন। আমাদিগের দেশে  
তিনিই ভারতবর্ষীয় সভার ও কর্মস  
সুশাসন অতি শীঘ্র ইহার সভা  
লা করিবেন; ইহার সম্মাননা  
হইতে ভোপদনি হই যাচ্ছে।  
শও বঙ্গদেশের এতিমিধি ইহার  
সভাস্থান হইয়া অকপট হইয়া ই-  
ধন্য করিতেছে। এদেশে গের  
জাত বিবরে অসংখ্য কথ-  
ইহার ধূল্য সৌভাগ্য দী দে-  
ওয়া যায়। অন্য অন্য লক্ষ-  
এদেশে উপনীত হইয়া  
এ অনুষ্ঠান হারা ইহারি-  
করিতে হয়, কিন্তু তিনি  
লাজন হইয়া আছেন। দেশের  
করা ইহার প্রতি এমনি গীত ও  
যে ইনি হইবে গবর্নর জেনারেল  
হইবেন মার্কস এই আশা করি-  
ছেন।

এদেশের অযোগ্য এনে এতি  
এতার স্থাপন করেন নাই ইহা হইতে  
দেশের যে মহান অজ্ঞান হাতের এক  
হীয়া আছে, ইনি মার্কসের গবর্নর  
দেব অবস্থা কালে তাহা বাহ্যিক সকল  
দ্রিয়গ্রন্থে সেই চিত্র মবোরধ পূর্ব করি  
উপরে গী উপরর গারগীও ইহার  
অপরিচিত নহ। উৎসাহ,  
ধর্মবিশ্বাস, দ্বিভেদ ওয়া, অতি ইহা-  
কর্মসিদ্ধি, যোগ্যতা আদিও এ সক-  
করিতে পারে নাই। আর,  
এই এতিমিধি ইহা অসিগা-  
বিকার করে। ইহার সদিগে  
করিবে। আর, আর, সুখ-  
এবার এমনি একটা  
উপায় অসংখ্য দেশে গবর্নর পাতি-

য। যদি প্রকার ইতিমিধি করিবার ইচ্ছা  
থাকে, তাহা পূর্ণ ইতিমিধি হইয়া না। তিনি  
যদি মুসলমানের আরও বর্ধের নিয়ম করিয়া  
আমল আর সৈধ্যইয়া দিতে পারেন,  
আমাদিগের কল্যাণে গবর্নরমন্টে কখন প্রকার  
উন্নতি সাধনার্থে যাবে কাতরতা ও রূপ-তা  
করিবেন না।

কি কি মাযোক্ত অনুষ্ঠান করিলে  
এদেশের সদিগের সদিগের উপকর হইয়া  
এইটি জাতিবার সভাবনা আছে, তাহা  
ইহার জ্ঞানকর করিয়া দিবার নিমিত্ত  
অন্যকে প্ররাম পাঠিতে হয়। তিনি  
এদেশে অনেক দিন ছিলেন, এদেশের  
বিবরে তাহার সদিগের অতিমতা করি-  
য়াছে। তথাপি আমরা তাহাকে একটা  
বিবরে বিশেষরূপে মনোনিবেশ করিতে  
অনুরোধ করিতেছি, তাহা সম্পাদিত  
হইলেই এদেশের গবর্নর বিবরের উন্নতি  
ভাগ উন্নতি হইবে সন্দেহ নাই। সে  
বিবর—শিক্ষা। দুই চারিটি অক্ষ, দুই চারি  
টি এদেশের নাম, ও দুই চারিটি গল্প  
শিক্ষা হইলেই যে শিক্ষা সম্পূর্ণ হয়, সে  
শিক্ষার নিমিত্ত আমরা সর চাবলস ট্রিনি-  
লিয়ামকে অনুরোধ করিতেছি না। তাহা  
এক প্রকার বিবরণ হইলে হয়। যে শিক্ষা  
হারা এদেশের সদিগের ধর্মনীতি ও বুদ্ধিবৃত্তি  
প্রভৃতি গবর্নর বিবর মার্জিত হয়, এদেশ  
শিক্ষার্থী আমরা অনুরোধ করিতেছি। তা  
দুই উদার শিক্ষা ব্যক্তিরকে কার একপ  
সামর্থ্য আছে, যে চিত্রকণের আলস্যকে  
অপূর্ণ করিয়া এদেশের লোকের চিত্র  
কে দয়া উৎসাহ সম্পন্ন ও অধ্যবসায়বান  
করিয়া উন্নতি পাবে। কার একপ সাম-  
র্থ্য আছে যে অগভীর ভীততাকে দূরী-  
কৃত করিয়া সাহস ও সজ্ঞিতসাহসকে  
জন্মে বজ্রমূল করিয়া দিতে পারে। কার  
একপ সামর্থ্য আছে যে বুদ্ধি, বাক্য  
ও কাব্যাদি বিবরণী বিবরণ আর দ্বী-  
মতা প্রভৃতি উন্নতি করিয়া বুদ্ধি-  
বান

বাক্যকণে ইহা ইহার শিক্ষার্থী  
বহুবার দিন। সন্ধ্যা ইহার সন্ধ্যা  
এই অর্থ কোথা হইতে আনিবে। এ দেশের  
র সম্মান প্ররাম পাওয়াও আবশ্যক  
চারলস ট্রিনিলিয়াম লাত্ বেটিক সন্ধ্যা  
দায়ের লোক। বেটিকের গবর্নর পদ  
কালে তিনি এদেশে ছিলেন। যার সন্ধ্যা  
ক্ষেপ কাযো তাহার বিলক্ষণ প্রাণ  
আছে। যার সন্ধ্যাপার্থ তাহাকে অমায়  
দুষ্টিক্ষেপ করিতে হইবে না। তিনি  
এক বার, সৈন্য সংখ্যা ও সৈন্যের ব্যয়  
পবলিক ওয়ার্ক এবং ইংলণ্ডে ভারতবর্ষের  
বলিয়া যে ব্যয় হইতেছে; তাহার এতি  
দুষ্টিপাত করুন, এই সকল বিবর সংগ্রহ  
অপব্যয় মিলাত হইলেই বর্ধাকালের  
গণা জোতের মায় আরের জোক বর্ধি-  
ও প্রবাহিত হইতে থাকিবে। বাহ্যিক  
এ দেশীয় যোগ্য ব্যক্তিদিকে উন্নত পদ  
এমান করাও ব্যয় সংক্ষেপের একটা উ-  
উপায়। উপসংহার হলে আর একটা  
বিবরের উল্লেখ করা আবশ্যক হইতেছে  
অনেকের বেশপ সংস্কার জন্মিয়াছে  
এখন গবর্নরমন্টে যার শিক্ষা বান ভারপ্রা-  
না করিয়া যদি কেবল সাহায্য বান প্র-  
অবলম্বন করেন, আমরা সে কৃতকাব্য হইতে  
পারেন, চারলস ট্রিনিলিয়াম সেই মুস-  
কালের পরতর হইয়া বেন কাব্য না  
রেন। আমরা গবর্নরমন্টে আর, সন্ধ্যা বা-  
করি; গবর্নরমন্টে সন্ধ্যার সন্ধ্যা জাতি  
মিগবর্নর সাহায্যবান প্রমা অবলম্বন  
করিয়া কৃতকাব্য, লাতের আদিও অনেক  
বিবর আছে।

আমেরিকার মুখ।  
যে বিবর সদিগের বিবরণ সন্ধ্যার  
অসিগার করিয়া অর্থ প্ররাম দিগে  
করেন, সেই বিবরণেই আমরা বিবরণ  
আমেরিকার সন্ধ্যা, সন্ধ্যাবান প্রমা  
বুদ্ধি, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা  
অসিগার, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা, সন্ধ্যা

[illegible]

১৭  
 ১৮  
 ১৯  
 ২০  
 ২১  
 ২২  
 ২৩  
 ২৪  
 ২৫  
 ২৬  
 ২৭  
 ২৮  
 ২৯  
 ৩০  
 ৩১  
 ৩২  
 ৩৩  
 ৩৪  
 ৩৫  
 ৩৬  
 ৩৭  
 ৩৮  
 ৩৯  
 ৪০  
 ৪১  
 ৪২  
 ৪৩  
 ৪৪  
 ৪৫  
 ৪৬  
 ৪৭  
 ৪৮  
 ৪৯  
 ৫০  
 ৫১  
 ৫২  
 ৫৩  
 ৫৪  
 ৫৫  
 ৫৬  
 ৫৭  
 ৫৮  
 ৫৯  
 ৬০  
 ৬১  
 ৬২  
 ৬৩  
 ৬৪  
 ৬৫  
 ৬৬  
 ৬৭  
 ৬৮  
 ৬৯  
 ৭০  
 ৭১  
 ৭২  
 ৭৩  
 ৭৪  
 ৭৫  
 ৭৬  
 ৭৭  
 ৭৮  
 ৭৯  
 ৮০  
 ৮১  
 ৮২  
 ৮৩  
 ৮৪  
 ৮৫  
 ৮৬  
 ৮৭  
 ৮৮  
 ৮৯  
 ৯০  
 ৯১  
 ৯২  
 ৯৩  
 ৯৪  
 ৯৫  
 ৯৬  
 ৯৭  
 ৯৮  
 ৯৯  
 ১০০



विश्वविद्यालय

२३-६. नैमि गोपबन्धु ।

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

| ক্রম | বিবরণ      | মূল্য    |
|------|------------|----------|
| ১    | ইউজিও-সিটি | ৫,০০,০০০ |
| ২    | সিটি-ইউজিও | ২,০০,০০০ |
| ৩    | সিটি-ইউজিও | ২,০০,০০০ |
| ৪    | সিটি-ইউজিও | ২,০০,০০০ |

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ अर्जुन उवाच ॥  
 कुरुक्षेत्रे भद्रा ॥ अर्जुन उवाच ॥

[illegible]





100

কেন্দ্র আর ইতিহাস গ্রন্থাবলীর মত মন্ত্রী বাধব  
রাণার প্রাথমিক প্রচেষ্টা অনুসারে একটি উচ্চতর প্রস্তাব  
নির্মিত হইয়াছে। ইহা মন্ত্রী ইচ্ছা করিতে স্থান  
কিন্তু হইয়াছে। গ্রন্থাবলীর মত মন্ত্রী  
প্রাথমিক প্রাথমিক প্রাথমিক প্রাথমিক  
কারণে ইচ্ছা করিতে স্থান করিতে স্থান  
তাঁহার হস্ত। ইচ্ছা করিতে স্থান করিতে স্থান  
রাণার এত নিম্নতর হইবে তাহা জানি  
যাহা মন্ত্রী তাহা মন্ত্রী করিতে স্থান করিতে স্থান  
হইবে। অনুসৃত হইবে। ইচ্ছা করিতে স্থান  
মন্ত্রী হইবে। তাহা মন্ত্রী করিতে স্থান করিতে স্থান  
কারণে ইচ্ছা করিতে স্থান করিতে স্থান  
কারণে ইচ্ছা করিতে স্থান করিতে স্থান



কিন্তু বলাইতে পারেন যে, চার্লস  
ইউনিয়ন পোর্ট আফিস ও টেকনিক্যাল  
স্কুলে গিয়াছিলেন। তখনকার কৰ্মচারীরা  
কাজে গিয়াছিলেন। তাহাদের আশীর্বাদে  
কাজ চলিতেছিল।

আমেরিকার এই উদ্যোগে 'আদি' নামের  
একটি পত্রিকা প্রকাশিত হইয়াছিল।  
এই পত্রিকা 'আদি' নামের 'আদি' নামের  
একটি পত্রিকা প্রকাশিত হইয়াছিল।  
এই পত্রিকা 'আদি' নামের 'আদি' নামের  
একটি পত্রিকা প্রকাশিত হইয়াছিল।

সকলের এক হইতেই কোম্পানির  
নাম পাতিয়া বাহুবোলে একটি চলাইবার  
চেষ্টা করিতেছেন। তাহাতে আদির  
আশীর্বাদে কাজ চলিতেছে।

কিন্তু বলাইতে পারেন যে, চার্লস  
ইউনিয়ন পোর্ট আফিস ও টেকনিক্যাল  
স্কুলে গিয়াছিলেন। তখনকার কৰ্মচারীরা  
কাজে গিয়াছিলেন। তাহাদের আশীর্বাদে  
কাজ চলিতেছিল।

৫ ইয়াং পলিটিক্স।

ভারতবর্ষের টেকনিক্যাল একজন কৰ্মচারী  
কমলাইট নামের পত্রিকা নিজ নিজ  
কর্মক্ষেত্রে সম্পাদকের নামে পুলিশ  
অধিদপ্তরে গিয়াছিলেন। তাহাদের  
আশীর্বাদে কাজ চলিতেছিল।

৬ ইয়াং পলিটিক্স।

ভারতবর্ষের টেকনিক্যাল একজন কৰ্মচারী  
কমলাইট নামের পত্রিকা নিজ নিজ  
কর্মক্ষেত্রে সম্পাদকের নামে পুলিশ  
অধিদপ্তরে গিয়াছিলেন। তাহাদের  
আশীর্বাদে কাজ চলিতেছিল।

৭ ইয়াং পলিটিক্স।

৮ ইয়াং পলিটিক্স।

ভারতবর্ষের টেকনিক্যাল একজন কৰ্মচারী  
কমলাইট নামের পত্রিকা নিজ নিজ  
কর্মক্ষেত্রে সম্পাদকের নামে পুলিশ  
অধিদপ্তরে গিয়াছিলেন। তাহাদের  
আশীর্বাদে কাজ চলিতেছিল।

৯ ইয়াং পলিটিক্স।

১০ ইয়াং পলিটিক্স।

১১ ইয়াং পলিটিক্স।

### ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সভা।

১২ ইয়াং পলিটিক্স।

১৩ ইয়াং পলিটিক্স।

১৪ ইয়াং পলিটিক্স।

১৫ ইয়াং পলিটিক্স।

### ইউরোপীয় সমাচার।

১৬ ইয়াং পলিটিক্স।

১৭ ইয়াং পলিটিক্স।

১৮ ইয়াং পলিটিক্স।

১৯ ইয়াং পলিটিক্স।

২০ ইয়াং পলিটিক্স।

২১ ইয়াং পলিটিক্স।

২২ ইয়াং পলিটিক্স।

২৩ ইয়াং পলিটিক্স।

২৪ ইয়াং পলিটিক্স।

২৫ ইয়াং পলিটিক্স।

২৬ ইয়াং পলিটিক্স।

২৭ ইয়াং পলিটিক্স।

২৮ ইয়াং পলিটিক্স।



‘হ’ এই খুদে উত্তরদলের ৩০০ টাকার আর্থ  
সহায়ে। ‘এ’ও ‘ক’ও পার্শ্বিক ভিবিবি সা-  
কলিকাতা বিচারকের কাছে নিষ্পত্ত হই-  
ল।

লগুন—২৭৫ কিলোমিটার। আমেরিকার উত্ত-  
পূর্বের ফ্লোরিডা ২০০০০ টন পর্যন্ত হুত হওয়াতে  
স্বল্প পরিমাণে হুত। রোমানক মদী  
এ পরিমাণে পরিচালিত।

গণশ্রমেণৈ বিজ্ঞান !

বালকসমূহের লেপ্টোমাইনোসিস

आर्य समाज की विद्यालय ।

১১ ই অক্টোবর—নিম্নলিখিত কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের নিম্নলিখিত বিভাগগুলির তত্ত্বাবধানে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয় বিজ্ঞান শিক্ষা কমিটির সভা

१. बालाजी मन्त्रालय  
 २. बालाजी मन्त्रालय  
 ३. बालाजी मन्त्रालय  
 ४. बालाजी मन्त्रालय

২৪৪ কিসেগর—জি.জবালিউ, ডিভিয়ার লাহেব  
পজি। জোরিটার বাবাসুর ?  
২৪৫ কিসেগর—জবালিউ, এন, জাটকিসন  
২৪৬ বেখুন বিহাঙ্গেরে, সত্যার একজন সত্য  
২৪৭ ।

১.এ 'ভিক্টর' - 'ক্যাথলিক' মিশ্র  
উপন্যাসে 'ক্যাথলিক' মিশ্র  
'ব্রেবেনিও নরবেগ কুটীর' জেনার অসী-  
ম অসীম হইবে।  
[অসীম ও অসীম]

১। অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰাচীন ইতিহাস।  
২। অসমীয়া ভাষাৰ বৰ্ণমালা।  
৩। অসমীয়া ভাষাৰ ব্যাকৰণ।  
৪। অসমীয়া ভাষাৰ শব্দভাণ্ডাৰ।  
৫। অসমীয়া ভাষাৰ লিপি।  
৬। অসমীয়া ভাষাৰ সাহিত্য।  
৭। অসমীয়া ভাষাৰ সাধাৰণ ব্যৱহাৰ।  
৮। অসমীয়া ভাষাৰ সাধাৰণ ব্যৱহাৰ।  
৯। অসমীয়া ভাষাৰ সাধাৰণ ব্যৱহাৰ।  
১০। অসমীয়া ভাষাৰ সাধাৰণ ব্যৱহাৰ।

সংক্ষেপে বর্ণিত হইবে।  
 এই আত্মজীবনী—এ. এ. ইলিয়ার সাহেব  
 কর্তৃক লিখিত হইবে।

২৪ নং বিবরণ—আম, টি. এক হাতিমস

[illegible][illegible]

উক্ত অধিদপ্তরসহ সংশ্লিষ্ট সকলকে অবগিত করা হলো।

**सुखादयः प्रकृत्यैव विनिर्दिष्टा इति चेन्न ।**

[illegible]

সি এ. হাশিম সাহেব আইকিমেজিটেট ও  
ডেপুটি কমিসাৰেৰ এজিনিথি হইয়াছেন।  
ডাব্লিউ সারদন সাহেব ও বহু জনবান্ধৱ  
যোৰ ডেপুটি মেজিটেট হইয়াছেন।

জাতি, পান-বারি সাহেব বেঙ্গালের সরকারী  
নিবন্ধিত সরকারের প্রতিনিধি হয়েছেন।  
জে. ডি. ফেল্ড মৈনামসিংহের সরকারী নি-  
বন্ধিত সরকারের প্রতিনিধি হয়েছেন।

১০. আইনের ১ম ধারার অধীনে কামরূপের মহা  
কারী কমিশনার হইরাছেন।  
ভারমণ্ডারবারের ডেপুটি মেজিস্ট্রেট

১০ই জুলাই--সেফর অবজিউ এ, এ

কমিটির একজন সভ্য হয়েছিলেন।  
 জে. এ. হপকিনস সাহেব বেহারের মে.  
 টে. টে. ও কলেজটোর সভাপতি হয়ে ১৮৬৩

আজকের ২৬ অক্টোবর ১২ খারিচুনাতে দ্বিতীয়  
শ্রেণীর যেকোনো টিকের সমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন  
এইচ ক্লাস সাংসদ বাবুদান খারিচুনা  
কালেক্টরের সমতা হইয়া উক্ত আফিসের আত্ম

সংস্কৃত ভাষায় 'সংস্কৃত' শব্দটির অর্থ 'সংস্কৃত'।  
 'সংস্কৃত' শব্দটির অর্থ 'সংস্কৃত'।

বাবু গিরিশচন্দ্র ঘোষ রক্তপূরের এখা  
মহাভারত-জীবন-হইবেন। কিন্তু যে পর্যন্ত

এখানকার সবার আশীর্বাদে এতিনিহি থাকিবেন।  
সকল আশীর্বাদে এতিনিহি নেওকউত্থিন।  
সকল আশীর্বাদে এতিনিহি নেওকউত্থিন।

१. योनिनी आनि हावेनर किहमिनर नना ।  
 २. वाहु यीहवपल्ल होवुनी वाकुडाह गमर क

১৩ই আগস্ট—মাইল উত্তরে, মাধব ব  
সিদ্ধান্তের ইচ্ছা এইমত—ইচ্ছা হইয়াছেন।

पञ्चमः अङ्कः

শাহ সওদাগরি বাসিন্দা এসেছে কালীকটক  
 দেব মন্দির নতুন হুজুর বাড়ি পল্লী অনেক নতুন  
 হুজুর বাড়ি একতরফা বাড়িতে গুলি ও চৌকি লা-  
 গান দিলায়। লীম হুজুরা হুজুর বাড়ি পল্লী  
 হইল।

কান্দীর জিহ্বাকমোহনঃ বহুকালাবধিঃ  
 কালান্তি করিহঃ ১৫৫, অস্থিরে বহুকা ১৫৬, পতি-  
 চিত্ত ও বিহব যান্তি জিহ্বা ১৫৭। পাঠাইলে  
 কান্দীর সকল বিবরণ প্রকাশ করি মাঃ

১. **শ্রীকৃষ্ণ** : মাধব নাম অকৃত্রিম যে বিশ্বব্রহ্মাণ্ডে  
 ইন্দ্রা করিরাছেন, তাহা ঐশ্বিক বিদ্যা, তাহা হৈছে  
 যোকজ্ঞান। অতীতের সমস্ত ব্যাপ্তিতে পাতের মা।  
 ২. **শ্রীমদ** : ইন্দ্রাণি বিদ্যাঃ পাতের মা।

আসিগাছো, জাভাওক কোন পরিচিত ব্যক্তির  
আজর না থাকেও এখানেই হইল না।  
বাক্স গেলের কোন কুণ্ডলকের চিত্রের আঁতি  
দেখাওণ করিয়া সে পাত্র আসাদিগেদ নিকটে

খোঁপালাপ পুবেৰ হুকাৰ যটুত পহ ও অঃ  
কয়েক ধানি পাঠ এৰাৰে বচিল]

আর্থিক, বিদ্যুৎ অনেক গরম সৌনধ্যভাবে  
এচানিচ হইয়াছে, এতদন্যকৃত গরম এচান্য  
কবে আশাভিগেন উছা নাই, এট হই  
" শ্রিগোপাল চন্দ্র চক্রবর্তী, এই স্বাক্ষরিত

পৰৱৰ্তীকালত হ'ল।  
 লক্ষণোপাল বসুৰ পাত্ৰ আত্মজিহ্বা মো-  
 জাহে বোধ হ'ওঁতে প্রকাশিত হ'ল না।  
 উল্লেখ চক্ৰ লক্ষণ যে বিবৰ লিখিব-হো-

তাঁহাতে আশা দিগেদ সংস্কার হওৱাতে, জনসং  
প্রকাশ কৰিতে পাবিলাম নঃ।  
“নতমঃ” এই সংকল্পিত পদ পাঠ কৰিব  
পাঠকগণৰ স্বীকৃতি লাভেৰে সম্ভাৱ্য নাই।

শ্রীমানকান্ত দত্ত সারস্বত পণ্ডের দাবমণ্ড  
শ শা কবিতা যে পত্র প্রেরণ করিয়াছেন তাহ  
প্রকটিত হইল না। ডাক্তার কানং এই, অপর  
চিত্ত ব্যক্তি কুতনিমিত্ত দায় লবংসং

প্রেরিত

মৌলিক নীতিমালা  
মহোদয় ।  
মৌলিক নীতিমালা

১৫. ১৯৬১ খ্রিঃ ১১ই আগস্টের তারিখের পত্র  
 ১৬. ১৯৬১ খ্রিঃ ১১ই আগস্টের তারিখের পত্র

সাঁওতালদের মধ্যে ১০ জনের মধ্যে ১ জন  
 ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে  
 ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে  
 ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে ১৯৫৬ খ্রিষ্টাব্দে

কম্পিউটার প্রযুক্তির অর্থনৈতিক প্রভাব

[illegible]



সোণপ্রসূতি

1. ବିଦ୍ୟାବଳୀ ଶିକ୍ଷାବଳୀର ଉପାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷାବଳୀର ଉପାଦାନ ଓ ଶିକ୍ଷାବଳୀର ଉପାଦାନ

\* प्रवर्तनी प्रकृतिचिह्नाय अर्थिः करस्यो नुतिवचसोः प्रतीकम् ।

**प्राथमिक शिक्षा - अक्षरज्ञान**

The page contains extremely faint and illegible handwritten or printed text, likely bleed-through from another document.

[Illegible]



## সোম

১৮৮৭ খ্রিস্টাব্দে রিয়া বেধুন রেজেন্টের অধীনে  
কিভাবে কি যথার্থ বিচারের ঐক্য রক্ষা হইল  
এক জন যথার্থ মূল্য দিয়া তুমি আর  
এক জন যথার্থ মূল্য হইতে বঞ্চিত হইল না?  
তা হইলে কেতা যদি বিক্রয়ের কয়েলা-  
নি আর রেজেন্টের করিয়া লইত তাহা  
হইলে পরিচয়ে তাহার বস্তু দুঃস হইত  
না। কিন্তু তাহার এই অংশ অনুবধানতা-  
তে কি তাহার সকল বস্তু নষ্ট হইয়া  
গিয়াছিল? তাহাতে তাহার বস্তু  
কি হইল? অন্য কোন সহজ উপায়  
কি হইত? তাহার কষ্টের কষ্টের কষ্টের  
কষ্টের কষ্টের কষ্টের কষ্টের কষ্টের  
কষ্টের কষ্টের কষ্টের কষ্টের কষ্টের

সর চার্লস উডকে নিজস্বা করিয়াছি  
লেন গবর্নমেন্টের চিহ্নিত সিভিল কর্পচা  
রিয়া কোম্পানির কোম্পানির অংশী হই  
তে পারেন কি না? তদন্তের সর চার্লস  
উড লিখিয়াছেন অংশ গ্রহণ করিবার পক্ষে  
কেন হানি নাই; কিন্তু তাহা ব্যবসায়  
স্বল্প অংশ বিক্রয় করা নিষিদ্ধ এবং যে  
প্রদেশে কোম্পানির কার্য চলিবে, তাহার  
তাহারা কোন পদ পাইতে পারিবেন না।  
তারতম্যের গবর্নমেন্ট চা, নীল, তুলা  
একত্রির বিষয়ে নিজস্বা করিয়াছিলেন  
চিহ্নিত কর্পচারীরা কৃষি কার্যের কোন  
কোম্পানির অংশী হইতে পারেন কি না?  
সর চার্লস উড তাহার এই উত্তর দেন,

নাহাভেরে ভালুক এতদ্রিতি  
কেন। অনেকের মীল ও চা  
আছে। যদি ইহা সত্য হয়, তাহা  
নীল ও চা হইতে অত্যন্ত  
য়ের বিষয় আছে। এ দেশের  
সকল অধ্যাপিও অতি চমৎকার  
আছে। তাহার উপর কর্পচারি  
সর সন্তোষ থাকিলে অত্যন্ত  
কেন? অতএব গবর্নমেন্টের  
তীয় কর্পচারির নিকটে এই  
করাইয়া লমবে, যে যে  
কর্ম করিবেন, তদন্ত  
তুমি অথবা ব্যবসায়ের  
থাকে। তাহারা এ  
তাহাদিগের উরত পদ  
নাই; তাহাদিগের  
করা কর্তব্য।

কিন্তু আমরা জানি গবর্নমেন্টের  
ক কর্পচারী আসামের চা  
মংশী। কেহ কেহ এই কোম্পানির  
করও কার্য করিয়া থাকেন। গবর্নমেন্ট  
কর্পচারির উদ্দেশ্যে সন্তোষ রাখা  
য্যক্ত অন্যান্য। কোম্পানির  
মংশী বাল্য। তাহাদের  
মিত্র সন্তোষ হইল। সুতরাং  
যে সকল অধ্যাপি হয়  
উপেক্ষা করেন। এ সকল  
যথার্থ কর্তব্য। যদি  
নিত্য সন্তোষ

অথবা কোন একাধারে ব্যবসায়ীর কার্য  
করি ত পারিবেন না। যে প্রদেশে চা-  
কেন থাকিবে তাহার তাহারা কোন  
কর্ম পাইবেন না। লাভ  
করিয়াছিলেন যে কর্পচারী  
বেন, তাহাকে আর  
হইবে না। সর চার্লস উড তাহাতে  
অন্ত হইয়াছেন। পক্ষান্তরে  
কর্পচারীরা একেবারে কোন  
মিকার মধ্যে তুমি  
কর করিতে পারিবেন না।

কলিকাতার  
সর্বসাধারণের  
অবগ করিয়া গবর্নমেন্ট  
নিসিপাল কার্য  
বহুবান হইয়াছে।  
ব্যবস্থাপক সভা  
নিত্য তাহাদের  
রে নিলে  
তাতে তাহা পরিত্যক্ত  
তার অর্পিত হইবার  
সকলের সংক্ষেপ  
কিন, অতএব সে  
করা অনাবশ্যক।  
কিন্তু তাহাদের  
একজন বিলের  
বির উদ্দেশ্য এই  
করিবোঁ টেরা  
করিবোঁ টেরা  
করিবোঁ টেরা  
করিবোঁ টেরা

ইহার বেতন মাসিক ১৫০০ টাকার অধিক  
হইবে না। এতি বৎসরের আরম্ভে সভা  
পতি রাজধানীর পোতা হুজি হেতু এক  
পয় ব্যয়ের হিসাব ও মিউনিসিপাল কর  
হুজি প্রভৃতির প্রস্তাব করিবেন। উক্ত  
মাসিক টেন্ডা এই গুলি বিবেচনা করি-  
য়া ব্যয় সংক্ষেপ বা হুজি, অথবা অন্য  
কোন পরিবর্ত করিতে পারিবেন। বিশেষ  
প্রয়োজন উপস্থিত হইলে সভাপতি সভা  
সময় সভাস্থলে আহ্বান করিবেন, এবং  
নি ও সহকারী সভাপতি আর পাঁচ  
জন সভা একত্র হইলেই সভার কার্য হই-  
বে। পক্ষান্তরে দশ জন সভ্য এক মত  
হইলে সভাপতিকে সভা করিতে বলিতে  
পারিবেন। যদি তিনি এ অনুরোধ গ্রহণ  
না করেন, তাহা হইলে ঐ দশ ব্যক্তি অন্য  
জন সভাপতিগকে আহ্বান করিয়া আপ-  
সমুহ করিতে পারিবেন। সভাপতি  
সহকারী সভাপতি অনুপস্থিত অথ-  
বা যেহী এ কথা যদি তিনি অংশের দুই  
অংশ সভা এক মত ইয়া বলেন, তাহা  
হইলে সভাপতিগকে পরচুক্ত করা হইবে।  
সভাপতির সহায়তার জন্য এক জন ইঞ্জি-  
নিয়ার চিকিৎসক ও কর নির্ধারক নিযুক্ত  
করবেন। সভার ইঞ্জিনিয়ারকে নিযুক্ত  
অথবা পরচুক্ত করিতে পারিবেন। যে  
সকল কর্মচারির বেতন ২০০ টাকার মূল  
ত হাদিগকে সভাপতি নিযুক্ত অথবা পর-  
চুক্ত করিতে পারিবেন। সভার সময়ে  
সময়ে কোন ক্ষুদ্র কার্য বিবেচনা করি-  
বার জন্য বিশেষ কমিটি করিতে পারিবে  
ন। কিন্তু এই বিশেষ সভা কেবল পরা-  
মর্শ দিবেন; কোন বিষয়ের প্রতিবাদ ক-  
রিতে পারিবেন না। লেপটেনেন্ট গবর্নর  
যদি যোগ্য বোধ করেন সভাপতির হস্তে  
রাজধানীর পুলিশের ভার দান পাবিবে  
ন। নগরের পোতা হুজি কারবার জন্য  
যে যে প্রকার আবশ্যক তাহা নগরবাসিন্তি  
সঙ্গে দিতে হইবে, কোনরূপে সহজে

ধারণ রাখার হইতে দেওয়া হইবে না।  
এই প্রস্তাবটি অনেক অংশ উল্লেখ  
হইয়াছে সন্দেহ নাই। কিন্তু ইহার আংশ-  
নিক অস্বাভাবিকতা দোষও দৃষ্ট হইতেছে।  
একদম কলিকাতার পোতা হুজি হেতু এ-  
কাধক লক্ষ টাকা কর স্বরূপ আদায় হয়।  
ইহার মধ্যে ইনকমট্যাক্সের খতকরা এক  
টাকা আছে। কিন্তু আপাততঃ যে এক  
ভুল হইতেছে তাহাতে ও অন্য অন্য বি-  
ষয়ের ব্যয় আর অপেক্ষা অধিক হইতে  
ছে তন্নিমিত্ত প্রায় দশ লক্ষ টাকা কর্তব্য  
করিতে হইবে। ইহার সুদ এবং নিয়মিত  
ব্যয় নির্বাহের ভবিষ্যৎ উপায় কি? ইহা  
সাধারণ তাহার কয়েকটি উপায় প্রদর্শন  
করিয়াছেন। গবর্নমেন্ট গজাটীর (১১-ও)  
হাড়িরা দিতেছেন। তদ্বারা সভা কয়েকটি  
গড়া করিবেন। যত দিন গড়া না হইতেছে,  
তত দিন তীরে বাগিচা জব্বা রাখিলে  
তদুপরি প্রতি টনে ২ টাকার অধিক কর  
লওয়া হইবে। ঐ প্রকার গবর্নমেন্টকে  
কলিকাতার খালও হাড়িরা দিতে হইবে।  
আর তীরে জব্বা রাখিলে কর লওয়া  
হইবে। আপাততঃ ধাপায় যে পরিমাণে  
মাংস লওয়া হয় তাহারও কিঞ্চিৎ হুজি  
করা হইতে পারে। ইহাতেও যদি ব্যয়  
কুলান না হয় মুটে, পাইকেড়, দোকান  
দার প্রভৃতি ক্ষুদ্র ব্যবসায়িদিগকে প্রতি  
বৎসর দুই টাকার অধিক কর দিতে  
হইবে। এক্ষিণ যে সকল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র  
খড়ু, ঘরের ও কুটারের কর নাই তাহার  
কর লাগিবে। গাড়ী, ঘোড়া প্রভৃতিরও  
কর সংগৃহীত হইবে। ২২৭

তারতবর্ষীয় সাধারণ ধনাগার হইতে  
কোন বিশেষ স্থানের উন্নতির নিমিত্ত টাকা  
দেওয়া আমাদিগের নিকান্ত অন্য  
যাহাতে তারতবর্ষীয় গবর্নমে-  
ন্ট আবশ্যক একপ অংশ

যদি উক্ত  
সেমান ক  
ব্যক্তিগণ  
ক্ষুদ্র ব্যবসা  
যে প্রস্তাব  
গের বক্তব্য  
হুজি ক... তাহা  
নাই বটে কিন্তু  
হইতে কর এহণ  
যদিও অত্যাচার  
পলীগ্রাম হই  
হইবে না।  
অবশ্য উপ-  
কির একটি ই  
মিউনিসি  
র্নমেন্ট নিয়ে  
প্রস্তাব করা  
অনুমোদিত  
সেইরূপে  
এতিমিথি হই  
করিলে কি  
ডারমানব  
যে ক্ষমতা  
মাজিষ্ট্রেট  
ব করা না  
আর বয়সক ব  
অবশ্য জাতিস  
বে সন্দেহ নাই  
রিবার প্রা  
লিত করা  
নিয়োগ তার  
বিবেচনা



১৫ সভাপতি  
বলিয়া যে  
হিত করা  
বর ব্যয়ও  
হইবে । ই  
সভাপ  
লিখিত পত্র উত্তর  
বল হওয়া চুক

মহাসভার  
যে যে বিষ  
তি লিখলেন  
র সহিত স  
লন পূর্বের  
ই নাই বটে  
পদ পূর্বের  
নামেরিকার  
ঠাছেন তাহা  
রু কীতদাস  
যে সন্ধি  
তি সন্তো  
বিভাগের  
লিলেন দেড়  
এককালে রু  
দাবনা ছিল না  
ক্রান্তী জাহাজ  
করিতে সমর্থ  
টির বিস্তর যুদ্ধ  
বাণিজ্য জা

যুদ্ধ উপলক্ষে বিস্তর ব্যয় আবশ্যক হও  
য়াতে গবর্নমেন্ট নোট প্রচলিত করেন ।  
এ নোট গবর্নমেন্ট চিত্রিত টাকার ন্যায়  
নিজে কর স্বরূপ গ্রহণ করাতে তাহার  
মূল্যের বিশেষ ক্ষতি হয় নাই । বিস্তর বরা  
বর কাগজ প্রচলিত রাখা যুক্তি সিদ্ধ নয়  
বলিয়া তিনি নগদ টাকা আদান প্রদান  
করিবার প্রস্তাব করলেন, অথবা বলিলেন  
মুদ্রায়ও কিছু পরিবর্তন করা হইবে । এক  
শ্রেণী আমেরিকায় প্রতি বৎসর ১১৬ কোটি  
টাকা ব্যয় হইতেছে । সভাপতি আসন্ন  
প্রণালী বিষয়ক কয়েকটি পরিবর্তনেরও  
প্রস্তাব করিলেন ।

দাসদিগের বিষয়ে লিখলেন বলিলেন হা  
হার। এই যুদ্ধের সময়ে স্বাধীনতা লাভ করি  
বেন, তাহার। তাহা চিরকাল ভোগ করিতে  
পারিবেন । দেশের যে সকল প্রদেশে দাস  
রাখিবার প্রথা ১২০০ অব্দ পূর্ণ হইবার  
পূর্বে উঠিয়া যাইবে, তত্বে লোকদিগকে  
ক্ষতি পূরণ স্বরূপ গবর্নমেন্টের কাগজ অ  
থবা নগদ টাকা দেওয়া হইবে । এ প্রস্তা  
বে, লিঙ্কনের উদ্যোগ প্রদর্শিত হইয়াছে  
বটে, কিন্তু তিনি অদ্যাপিও দক্ষিণ বি  
ভাগের মুখাপেক্ষা করিতেছেন । তাহার  
অমাণ এই, তিনি বলিলেন, যাহারা গবর্ন  
মেন্ট কাগজ চাইয়া দাসদিগকে মুক্ত করি  
বেন, তাহার। যদি পুনর্বার এই প্রকার অনু  
সরণ করেন, তাহা হইলে তাহাদিগকে যে  
কাগজ প্রত্যর্পণ করিতে হইবে ইহার  
অর্থ কিভাবে কি দাসদিগকে নিরুপা  
ধিক স্বাধীনতা প্রদান সভাপতির অভি  
প্রেরণ নয় । আর মুক্ত দাসদিগকে জনপ  
দের বাহিরে স্থান প্রদান প্রস্তাবটিও আ  
গর নিকটে ন্যায়ানুগত বলিয়া প্রতী  
ত হইবে না ।

আমেরিকায় ১১০,০০,০০,০০০

হইয়াছে । যুদ্ধ শেষ হ  
হইবার সভাবনা

১০৪ ধানি পালি দেওয়া জাহাজ আছে ।  
লৌহাকৃত জাহাজ ও বিস্তর কাগজের  
মৌকা প্রস্তুত হইতেছে । আট লক্ষ সেনা  
যুদ্ধক্ষেত্রে আছে । এক টাকা, এক জাহাজ  
ও এক সৈন্য থাকিতেও গবর্নমেন্টে  
জর হইতেছে না । তাহার কারণ গবর্নমেন্টের  
এক জনও উত্তর সেনাপতি নাই ।  
তাহা হইলে দক্ষিণ বিভাগ এতদিন নিঃ  
সংশয় পরাজিত হইত । নেপোলিয়ন নিজে  
এক কালে এত সৈন্য রণক্ষেত্রে কখন  
হুগা যান নাই । সভাপতি বিজ্ঞান নিয়  
রণ করিবার নিমিত্ত দৃঢ়তর প্রতিক্রিয়া করি  
রাছেন । বিজ্ঞানবিধিগের গুরুতর দণ্ড বি  
ধান করা তাহার একান্ত অভিপ্রায় ।

সভাপতি লিঙ্কনের বিপক্ষে রা যুদ্ধপ  
বলুন, আমাদিগের বিরুদ্ধে বোধ হইতেছে  
তিনি এক জন যথার্থ উপযুক্ত লোক ।  
কিন্তু তাহার অধীনে উপযুক্ত রাজনীতিক  
অথবা সেনাপতি নাই । গারিবল্দি  
য়াল ডিনি, লর্ড ক্রাইড, অথবা রাসাল  
পেলিসিয়াসের ন্যায় এক জন সেনাপতি  
থাকিলে আমেরিকাকে এ যুদ্ধ যুদ্ধে এক  
কাল দখল হইতে হইত না ।

ব্রাহ্মণের প্রতিবন্ধ ।

যুদ্ধক্ষেত্রে কেবল বেঙ্গলপাঠনা বেসাহিত  
বাবতীর খর্যা ক্রিয়াকলাপ বিস্তৃত প্রায় হই  
রাছে । আর সে দর্শনপোশাক যাপন নাই,  
সে অগ্নিষ্টোম নাই, সে জাতিভেদ নাই, সমুদায়  
ই লোপ পাইয়াছে । কিন্তু কতিপয় প্রান্তের  
বঙ্গে সেই জাতির পুনঃ প্রভাব হইবার উপক্রম  
দৃষ্ট হইতেছে । লক্ষ্যতি, ব্রাহ্মণ্যাদির  
ক্রিয়াকলাপ কেবল বেঙ্গলপাঠনার (যিনি তখন  
উপাসিত পাইয়াছেন) পুত্রের আভ্যন্তর হইয়া  
গিয়াছে । আত্ম কর্ম বঙ্গদেশকে পরিভ্রমণ  
করিয়া এত দুঃস্থ প্রস্থান করিয়াছে যে এখন  
কে কেশব চন্দ্র গান্ধীর এই ক্রিয়ার উত্তর  
উত্তর দেখিয়া যথার্থই বিস্ময়গত হইয়াছেন ।  
অন্য কথা কি হস্তিয়ার বিস্তারিত প্রাদেশিক  
অন্যদের মধ্যে আত্মকর্ম স্বর্গ জিনিষ





৭ ই মার্চ: সোমবার।

৬. ১৯৬৬ খ্রিস্টাব্দে পশ্চিমবঙ্গের নব্বইতম বি-  
ভাগ কৃষি - ইন্সলেক্ট আছে, তাহারা নব্বইতম  
বিভাগের ৬৯তম (৬৯তম) ইইতে পশ্চিমবঙ্গের

উক্ত পত্র লেখন করিয়াছেন নীচের মতঃ  
 গয় ইন্সটিটিউট অফ উইমেন অ্যান্ড স্টাডেন্টস অফ  
 কল্লিগেট লাইব্রেরি, এম্বিকর এক হোটেল,  
 দিল্লিতে সপ্রমাণ হইয়াছে : অল উইমেন্স উইথ  
 দাবতীর বিবৃতি । এম্বিকর, গ্রেট স্ট্রিট  
 বের প্রিন্সিপাল । সর চারলস ট্রি-সিডান  
 অফিস প্রিন্সিপাল জিয়ার্টিংমেটের পক্ষ-  
 দ্বারা কল্লিগেট লাইব্রেরি  
 চাকরগঞ্জ এম্বিকর পত্র প্রকাশ

করিয়াছেন। এক জন আধিকারী কর্তৃক জন  
সংস্কারের প্রক্রিয়ায় কলিকাতার নিকট  
উত্তরে একজনকে বন্দকরিয়া আনিয়া  
নিজ চাকরে রাখিয়া ছিল। এই প্রক্রিয়া  
কারিগর প্রেরিত এক ছদ্মকা-উপস্থাপনকে  
দীপার করিবার জন্য নৌকার সুড়িয়া এক  
দীপার আঁহাতে বন্দপূর্বক লইয়া যায়। পরে  
আঁহা-নিগড়ে চট্টগ্রামের এক গর্ভতে রাখে  
চাকরের লোকসংখ্যা হ্রাস করিবার  
আঁহা-প্রায়ে একাধিক করা হইয়াছিল।  
এক জন দারোগা কার্যউপলক্ষে তথায়  
গিয়া এই হত্যার আনিয়া রিপোর্ট করেন। জী  
লোকেরা হত হইয়াছেন। আরও বর্ধ ক্রমশঃ  
কলিকাতার লোকেরা হইতে চলিলেন, যদি স.  
বাস সত্য হয় তাহা হইলে চাকরের বাস-  
জীবন করা বাসের আঁহা দেওয়া কর্তব্য।  
তথায় একদল গুরু দণ্ডনা হইলে সকল  
টরোপীয়ের প্রতি আরও বর্ধবাসিনিগের  
অধিকার জন্মিলে।

৮ ই মার্চ মঙ্গলবার।

কলিকাতা হইতে ২৪ পরগণার বা-  
সে ১৫ টি অধীন কর্তৃক পানার বাসিক ১৫  
টাকা বেতনে কতকগুলি ডাকঘর নিযুক্ত  
করেন। সর্বমুদ্রা এই রূপ হইলে ভাস-  
নায়।

গোয়ে সাটাতে প্রতিটি বলেন যে ২৪  
প্রকারি বিদ্যেহী ক্রিয়াকলাপের দ্বারা পতি-  
রাছেন। পেনে নাম সাহেবের দ্বারা পদার  
দায় না হয়।

আলোহাবাদ গেজেটে বলেন তথায় গবর্ণ-  
মেন্টের টেলিগ্রাফ অফিস নি-  
ম্নপার্শ্ব ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্টে ১৬ লক্ষ টাকা ২-  
লক্ষ কলিয়ারে

তিনি আরও বলেন যে আগরা পোর্ট  
অফিসের কর্তৃক জন বাসি হ্রাস দাখল লও-  
য়া ও অন্যান্য অপরাধে কারা রুদ্ধ হইয়াছেন  
চৌমুখী আর কতকগুলি অসভ্য লোকের  
পুণির উপায় হইয়া থাকে। এই সকল ব-  
সাপুরুষই এদেশের কলঙ্কের কারণ হই-  
য়াছেন।

আমরা অন্য নিম্ন লিখিত পত্রখানি প্রাপ্ত  
কর্তৃক বক্তৃতা অংশী পরিচালনা করিয়া এই-

আমি গ্রহণ করিয়া। আমি সাক্ষিদের আ-  
জ্ঞান পূর্বক সর্বসাধারণের গোচরার্থ প্রকাশ  
করিতেছি যে বর্তমান মাসের ২৭ এ পৌষ  
বাংলা মহানবীর আদেশিয়ার প্রদেশীয় দু-  
খি লোকসিগের সাহায্য জন্য অর্থ সংগ্রহার্থে  
এক সভা হয়। তাহাতে প্রায় ৫০০ লক্ষ টাকা  
সংগৃহীত হইয়াছে। এই সভার অন্তর্ভুক্ত বিদ্যা  
লয়ের প্রধান শিক্ষক প্রবক্তা বাসি প্রিয়সকর  
যে যে বক্তৃতা পাঠ করেন তাহার সারাংশ  
পাঠাইতেছি অগ্রহে পূর্বক মহানবীর বিখ্যা-  
ত পত্রিকা-পাঠে স্থান দান করিলে যথোচিত  
বাহিত হইবে। নিবেদন।

মহানবীর এইরূপে স্থানে স্থানে স-  
জা কবিয়া আপনসিগের পরম্বাক্যতরতানি-  
গুণের পরিচয় প্রদান করুন।

৯ ই মার্চ বুধবার।

কলিকাতা বলেন লর্ড এলগিন ও লেডি এ-  
লগিন উভয়ে একত্রে সভা করিবেন। ২২ এ রা-  
ত্রি ৬ টার সময় এই সভার অধিবেশন হইবে।  
তিনি আরও বলেন ফেন্সিয়াল মেজর সর  
চার্লস ট্রিবিগ্যান শনিবার মিলিটারি কিনার  
ডিনার্টমেন্টের অধ্যক্ষসিগের আকিস মেসি  
ডে-গিয়াছিলেন সোমবার কঠম হাউস মেসি  
তে যাইবেন।

আউট গেজেটে বলেন যে, এলাহাবাদের ল-  
কমোর্ট ও ম্যাজিস্ট্রেট, ডবলিউ ডবলিউ  
ক্যামবেল সাহেব এলাহাবাদ ও জব্বলপুর  
রেলওয়ে স্টেশনসিগের নিকট হইতে বাসি  
ক ২০.০০ টাকা বেতনে বাসন। ট্র্যাকিং ম্যা-  
নেজরের আকিসে নিযুক্ত হইয়াছেন।

তিনি আরও বলেন য. আদালত আ-  
লিহ বিপক্ষে হত্যাকারি বলিয়া যে অভিযোগ  
হইয়াছিল একদল লক্ষ্যে ডেপুটি কমিসনর কা-  
পাল সাহেবের উপর তথ্য তদ্বিহীনতার  
দারপন হইয়াছে, গুনিয়া সন্তো হইলাম।

তিনি আরও বলেন যে মারকুইন ব্রিডাল-  
বনের মৃত্যুর পর লেস্টার ডবলিউ সি কা-  
মবেল সাহেব কলিকাতা পদের ও সম্পত্তি উ-  
ত্তরাধিকারী হইয়াছেন। তাহার সম্পত্তিও  
কম ৭৫০০০০ টাকার অধিক হইবে। কাম-  
বেল সাহেব এই অতুল সম্পত্তির অধিকারী

হইয়া  
হন, এই সম্পত্তির  
কিন্তু তাহার  
৫ টার সময়  
দ্রিড, মইরা  
লাল সি প্যাটেল  
সাহেবও সেইসময়  
কিন্তু সার-খোলা  
বলিতে পারিলে।  
টাইবন অফ ইন্ডিয়া  
মহানবীর বাসি  
মাসিক তিন জনে  
রা হত হইয়াছে  
মাই, আমরা  
পাই। পরবর্তী  
নিডান্ত

এক জন  
হীকা লইবার  
হিন পরে  
নে শুক্তি  
ইহাতে  
ব্যতীত

১০ ই মার্চ  
মাসে এক  
হেন; তাহার  
নিকটে  
যেন। তাহার  
প্রতি  
অকটোবর  
লওনে  
তারতবর্ধ  
বে। পর  
অনেক  
মাসের  
রাজা  
উক্ত  
ব্যবস্থাপক  
বেন।

উত্তর  
জি  
মূল  
জিগ



THE FOLLOWING INFORMATION IS FOR YOUR INFORMATION ONLY. IT IS NOT TO BE USED FOR ANY OTHER PURPOSE. IT IS NOT TO BE REPRODUCED OR TRANSMITTED IN ANY FORM OR BY ANY MEANS, ELECTRONIC OR MECHANICAL, INCLUDING PHOTOCOPYING, RECORDING, OR BY ANY INFORMATION STORAGE AND RETRIEVAL SYSTEM, WITHOUT THE WRITTEN PERMISSION OF THE NATIONAL AERONAUTICS AND SPACE ADMINISTRATION.

[illegible][illegible]

দিল্লী ২২<sup>শ</sup> জুন ১৯৪৭ খ্রীস্টাব্দে  
সংবাদদাতা বঙ্গোপকূল এক জন খানস  
মা এক আয়ার মাস্টারকে মেরে ফেলতে তাহ  
র ১ বৎসর বেরদ হইয়াছে। খানসার  
চিত আয়ার কুদরত ছিল। ৬ মাসের  
বৎসর খানসারের অর্থাৎ খানসার  
করে, খানসারের মাস্টারকে মেরে  
১২ টি সে জানিত না। সংবাদদাতা, ১৯৪৭

আমি তোমার জন্যে হঠাৎ আজ্ঞা হইয়াছে  
আমি তোমার জন্যে হঠাৎ আজ্ঞা হইয়াছে  
আমি তোমার জন্যে হঠাৎ আজ্ঞা হইয়াছে  
আমি তোমার জন্যে হঠাৎ আজ্ঞা হইয়াছে  
আমি তোমার জন্যে হঠাৎ আজ্ঞা হইয়াছে

কম্পন করিতে পারেন। মাঝামাঝির দে  
বদ্বার সত্যতা হইবে কত দূরেই আছেন।  
দেবদ্বার পূর্ণ। এক তেজস্বেয় ইউরো  
পীয় সেনা প্রেরিত হইয়াছে গবর্নমেন্ট তত  
ক্ষণেই প্রতিক্রিয়া করিয়া ক্রিয়ায় আসিয়া দিয়া  
হয়।

১৯৩৩ সালের ১২ই আগস্ট তারিখে  
 এই কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের  
 সচিব মহোদয়ের নিকটস্থ  
 কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের  
 লাইব্রেরি বিভাগে  
 প্রেরণ করা হইবে।

কলিকাতা : অমৃত উদ্বিগ্ন, কলিকাতা ২২ ডিসেম্বর।

কেন্দ্র আর ইউনিয়ন অনুমান করেন মানুষের  
ভারতবর্ষের জন্য এক প্রকার রেডহানী আই-  
করিবার যে কমিসন হন তাঁহারা ভারতবর্ষের  
ব্যবস্থাপক সভার আগত অধিবেশনে অর্পণা  
দিগের রিপোর্ট প্রকাশ করিবেন । ভারত  
বর্ষের এক প্রকার দার ভাগ হওয়া অসম্ভব  
ভাবে স্যেডীফিকার প্রচলিত করিতে পারি  
এক দিন সভাবনা থাকে ।

উক্ত সন্ন্যাসী সন্ন্যাসী উভয়ের নিবিলিখিত  
 বিবেচনা, সুবিধা ও ব্যবস্থার বিষয়ে আত্মীয়  
 প্রতিবাদ করিয়াছেন। সন্ন্যাসী উভয়  
 করিবেন। উভয় পক্ষের মতামতি তাহার কিছুই  
 লাভ বলিবে না। প্রধান কথা।

কিন্তু নতুন রেজিষ্ট্র বোর্ডের হস্তে  
ইনকর টাকার কার্য বাইতেন। কলিকাতার  
কমিশনার বর্গ বিদ্যাস পাইবেন এবং তাঁহানি  
গের সেক্রেটারির পদ উত্তীর্ণ বাইবে। কোন  
কতি নাই।

উক্তগণ বিদেশ কারনে রনিয়াছেন মদ  
শ্রমিক উবিভিন্নান নীঃ ইনকমটাক্স উঠাইব  
মদেয় । ভারতবর্ষ উঁহার নিকটে এক প্রত্য  
করেন ।

११ ई मास शुक्रवार ।

ভারতবর্ষের গণপরিষদের অধিবেশনে খাজনার  
 তার চারলস উক্ত আত্মা দিয়ারছেন ১৩ লক্ষ  
 টাকা ব্যয়ে আলাহাবাদে হুতন আফিস প্রকৃ  
 তি হইবে। কাশ্মির পাইল এই তার প্রাপ্ত  
 টেরাছেন। হুতন কমিটি কোম্পানি খাজ  
 নার তার লইবেন।

উক্ত পশ্চিমবঙ্গের জবর দেওয়ানী আ-  
দিত আত্মা দিয়াছেন যে কোন সিদ্ধান্ত  
কোন ব্যক্তিকে দিখা সাক্ষী দিতে শক্ত করি-  
লেন, তাহা কহর মাজিরে টেল দিকটে প্র-  
কটিয়ন মতে নিজে অনুসন্ধান করিয়া সে-  
খানে সমর্থন করিবেন। সকল সময়ে একজ  
তবেইত।

ইংলিসনান শিক্ষার মধ্যে অবশ্যই এই  
ন এডমন্ড হোন্সসাহেব পরভাগ করিলে  
রিংটন সাহেব তদীয় পক্ষে নিযুক্ত হইবন  
। ম. সিংহের ইচ্ছা তাই ।

শ্রীকৃষ্ণ বালেন হস্তলবীর এক জন দাস্য।

কী-উদ্যোগ কৃতমেহ নদার আশিভেহিনী  
 কী-উদ্যোগ কৃতমেহ নদার আশিভেহিনী  
 কী-উদ্যোগ কৃতমেহ নদার আশিভেহিনী

উক্ত পত্র লগুন হইতে সংবাদ পাইরা-  
হেন সর হিউরোজকে পক্ষহত্য করা হইবে  
হিহু হইরাছে। ভারতবর্ষের প্রধান সেনাপতি  
র পদ উঠিয়া বাপরা সড়ক। প্রত্যেক প্রেসি  
ডেন্সির এক এক প্র নি সেনাপতি হইবেন।  
সর রবার্ট সেপিরর যুদ্ধ ডিগাটমেন্টের সেক্রে  
টারি স্বরূপ সকলের উপরে কর্তৃত্ব করিবেন।  
কেম্ব্রিজের ডিউক জনি সর হিউরোজকে বি  
চারের অব্যবস্থার জন্য যদি পক্ষহত্য করেন তাহা  
হইলে ইংলণ্ডীয় সেনাদল এক জন বীর হারা  
ইবেন। কুলী ও প্রিভীলী বটন্ত বিষয় যদি  
এত দোষের হয়, ডিউক অব কেম্ব্রিজ টহা  
অপেক্ষা গুরুতর মোষ করিরাছেন। ধর্ম্মনী  
তির বিষয়ে ইংলণ্ডীয় প্রধান সেনাপতি বিখ।  
ত নহেন অধিক কি রানীস পিতৃহান হইলে  
তিনি নিজে এত দিন পক্ষহত্য হইতেন।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া বলেন মল্লীপ সিংহ-  
র তত্ত্বাবধায়ক সার জন লোগানি বোম্বাইতে  
আনিয়াছেন।

কিনিকাল যলেন কিছুদিন পূর্বে ভারতবর্ষীয়  
রেইলওয়েস এক্সেসের আতিথে এক সভা হয়।  
তথায় চতুর্ভাষীরা শব্দটির আবশ্যকতার  
বিষয়ে তর্ক হওয়াতে অধিকাংশ সভ্য ইহার  
বিরুদ্ধ মত প্রকাশ করিয়াছেন। রেইলওয়েস  
কোম্পানি আপনাদিগের পায় আপনারা কু  
ঠার মারিতেছেন।

সেইলগেতে জীলোকদিগের শকটে  
বেশ্যাদিগকে বাইতে দেওয়া উচিত নহে  
অন্যরা এই বলিয়া যে প্রস্তাব করিয়াছিল  
ইউরোপীয় রিকর্দার তাহা লীসকত ও হালোর  
উপযুক্ত বলিয়া বিজ্ঞানী করিয়াছেন . কে  
বেশ্যা, কে ভদ্রাধিলা, ইহা কিপ্রকারে জানা  
বাইবে ? আর তাড়ানিলে বেশ্যারা কিজন্য না  
অন্য অন্য জীলোকের সহিত ,, এক শকটে  
বাঁঠিতে পারিবে ? রিকর্দার এ প্রশ্ন এক  
ফেলীয় সমাজ নর ইউরোপীয় দিক্তকে করি-  
য়াছেন ? ইউরোপে যাহা হউক এদেশে বেশ্যা  
ও ভদ্র জীলোক লেখিয়া যাত্রা জানা যায়  
দি তাড়ানিলে এক প্রকার সমাজের তবে জী

সোবিত্তের জন্ম ছিল নকটের আশ্রয়স্থানে।  
সমাজের কি শেষ অবস্থার বিরুদ্ধে যাত্রা  
শকট যখন আবশ্যিক, তখন বেঁচে থাকাই ক-  
হিছুও করিবার প্রস্তাব অসম্ভব নয়। ইতি-  
ম্ন ন বিকল্পের আনিবেন আরও বিরুদ্ধ প্র-  
দর্শক, কিন্তু আরও এক কালে মূল শক্তি  
যুগ-ও অসম্ভব বোধ করি।

আমরা হৃদয়ঙ্গব সহকারে স্বীকার করিতেছি যে  
সাধারণ বিদ্যালয়িকার ডিরেক্টরের  
ডে বর্তমান বর্ষের হাজরতি এত  
পের দুইখানি হিসাব প্রেরিত হইয়াছে। গত  
২৪ জন নিম্নর ৩৩০ জন ছাত্রের  
বৃত্তি পাইয়াছে। নিম্নর প্রার্থিত  
লি কালোজের অধিকাংশ ছাত্র  
ইরে কলুটোলা বিদ্যালয় ও হুগলী কালো  
প্রধান। হিন্দুজুল বারানত কল  
কয়েকটি উত্তম বিদ্যালয় এবার অনেক  
হইয়াছে। আমরা আটকিনসন সাহেব  
জাত করিতেছি, বিদ্যালয়িকার সাহায্য  
রিপোর্ট ও অন্য অন্য কারণে  
কটি নিম্নগ্রন্থ প্রেরণ করা হয়

निम्नलिखित वाक्यों विधिविचारका प्रयोग करके  
प्रतीकात्मक शब्दों द्वारा वाक्यों को व्यक्त करें।

‘ବିଷୟ ଶେଷ’ ।

|                              |                       |
|------------------------------|-----------------------|
| রাসবিহারী ঘোষ                | প্রেনি ডেনিক          |
| কান্তিচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় | সংকটভঞ্জন             |
| কেশবনাথ বসি                  | প্রেনিডেন্সিয়াল      |
| উমাচাঁদ চট্টোপাধ্যায়        | প্রেনিডেন্সিয়াল      |
| চন্দ্রনাথ বসু                | প্রেনিডেন্সিয়াল      |
| চন্দ্রকুমার দাস              | প্রেনিডেন্সিয়াল      |
| কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়      | ত্রিচন্দ্র ইন্দ্রিষ্ট |
| জুবনমোহন পোদ্দেল             | ত্রিচন্দ্র ইন্দ্রিষ্ট |
| গৌবিন্দচন্দ্র ঘোষ            | প্রেনিডেন্সিয়াল      |

२. व. धोनी ।

कॉलेज/उपविभाग

|                          |                   |
|--------------------------|-------------------|
| বেনীবাধব দে              | প্রেসিডেন্সি কলেজ |
| হরচন্দ্র চক্রবর্তী       | সংযুক্ত কলেজ।     |
| অখিলউ, জে, মিস্ত্রী      | ডাবুটন কলেজ       |
| নিহারচন্দ্র মুখোপাধ্যায় | প্রেসিডেন্সি কলেজ |
| দ্যাখাচরণ চক্রবর্তী      | প্রেসিডেন্সি কলেজ |
| কগলি বিভাগ।              |                   |

**कृष्णमणि विभाग :**

কেশবচন্দ্র রায়  
 বোম্বে, চন্দ্র  
 কবীন্দ্র সিংহ



একজনকে





একজন কুলির নামে সলোমোনে একজন  
 গভর্ণমেন্ট লাইসেন্স ছিল বলিয়া অভিযোগ হও-  
 ঠে মালিক্টেট সাহেব গুরুতর পরিশ্রমের  
 হই এক মাস কারাবাসের অতঃপর দিয়া  
 গেল।

উইলিয়াম শিখ সাহেব কিছু সময় জিনি-  
 ফিকারিরাছে বলিয়া একপ্রীরনামেনালিস ক  
 াব এমাপ হওয়াতে তাহার গুরু  
 বিক্রমের সহিত ৬ মাস মেয়াদ হইরাছে।

এম এমপরি সাহেব আবার ১১০ মূল্যের  
 াবান চুরি করিয়াছে বলিয়া তিন মাসের  
 াবে মালিস করার মালিক্টেট সাহেব এমাপ  
 াইরা তাহার দুইমাস কারাবাসসহিত করি-  
 য়েছেন।

একজন কুলসমান একপ্রীরতিভী সাহেব  
 ক অপবাদ করিয়াছিল বলিয়া তাহার দণ  
 াক হইরাছে।

চর্চাট গুহান নামে এক জন ইউরোপীয়  
 লিখাকারের পোষকের বোকাগে "ল পোকার  
 ক কাটিতে বাওয়াতে সারজন সাহেব তাহাকে  
 াজিবে আনিয়া ছিলেন। মালিক্টেট সাহেব  
 াবান লইরা তাহার এক মাস মেয়াদ দি-  
 য়েছেন, ইউরোপীয় কি না?

### গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালুলাদেশীয় লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের

আদেশানুসারী নিয়োগ।

৭ই জানুয়ারি--কে. জি মকেট সাহেব নি-  
 ক জৌদীর অপরিতেওন্টের সহকারী ও  
 কালেক্টর ও চট্টগ্রামের বন্দরের অধ্য-  
 য়ক হইরাছেন।

কালেক্টরের নিমক এজেন্টের সহকারী ডব-  
 লিউ, ক্লাক সাহেব বর্তমানতে উখিত  
 হইছেন।

১২ই জানুয়ারি--বেহাভেব প্রতিনিধি এ  
 াক লুদর অগ্নিস বাবু তাবকনাথ বিদ্যাপাণ্ডার  
 জেতার কুলিল মতাবেতে প্রতিনিধি বে  
 হইরাছেন।

১৩ই জানুয়ারি--জ. টি সাহেব চট্ট-  
 ামের মালিক্টেট ও কালেক্টরের সহকারী  
 হইরাছেন। ১৮-১৯ অক্টোবর ২৫ আইনের ২২  
 াবানসারে ১৮ জেদীর অধীন মালিক্টেটের  
 মতা প্রাপ্ত হইরাছেন।

মালিকার জাহিউলমালিক্টেট ও ডেপুটি ক-  
 াক্টর এইচ. ডেভিস সাহেব বঙ্গালি হইরা  
 দিল্লীপুরে গিয়াছেন।

গি. ডি মিল্ড সাহেব ১৮-১৯ অক্টোবর ২৫ আ-  
 ইনের ২২ ধারা ও ১৮-১৯ অক্টোবর ১০ আইনের  
 ১ ধারানুসারে মালিক্টেট জেলায় চাড়াডাকার  
 ১৮ জেদীর অধীন মালিক্টেট ও চন। এবং  
 উক্ত আইনের ৩৮ ধারানুসারে প্রানস বি-  
 চারালারে আসিধান উপযুক্ত মোকদ্দম অথবা  
 দৌলী ব্যক্তির লগ্নম তদ্বানুসন্ধানে সমস্ত ক-  
 মতা প্রাপ্ত হইরাছেন।

১৪ই জানুয়ারি--কালেক্টর সাহেব (সেমা  
 মিলেলেব) প্রতিনিধি জাহিউলমালিক্টেট মে-  
 জর, এম এমপরি সাহেব বারাকপুরের কাল-  
 ানমেটের মালিক্টেট ও ১০ ধারানুসারে  
 রোন ক সারিউ-ওন্ট হইরাছেন।

১৩ই জানুয়ারি--নিম্ন লিখিত ১৩ই জানু-  
 ারিতে কালেক্টর সাহেব এমাপের  
 এমোশন গাইরাছেন।

ডবলিউ, জাহ, ডেভিস সাহেব  
 সি পি জাহ, জাহ সাহেব  
 বাবু ইব্রাহিম খোদা  
 অতঃপর ন্যায়ক

দ্বিতীয় প্রণীতে  
 জে. টি, ওয়াল্ট সাহেব  
 টি, এ, ডবল সাহেব  
 ডবলিউ, জি. এম সাহেব  
 এ, এম কোল সাহেব  
 ডবলিউ, এইচ, প্রাইম

১৫ই জানুয়ারি  
 মৌলবি ইকবাল  
 ডবলিউ, ও বেলি সাহেব  
 বাবু মধুরানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়  
 মৌলবী আসেন আবেদ  
 বাবু হারিকানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়  
 ডবলিউ, সারসম সাহেব

ডবলিউ, ডেভিস সাহেব  
 বাবু কালি  
 পৌরচর

সি, ডবলিউ, উইলমট সাহেব  
 জি, মান সাহেব  
 টি, টি, জ সাহেব  
 মৌলবি আলি আসেন  
 এম, জিনট সাহেব

বাবু জাহাঙ্গীর মুখোপাধ্যায়  
 বাবু ইব্রাহিম মিস  
 বাবু অতঃপর বঙ্গ  
 বাবু শ্যামলাল মুখোপাধ্যায়  
 এইচ. ডেভিস সাহেব  
 মৌলবী গোলাস খোসেন  
 মুমসি দ্বিভুক্তিন

বাবু মহেশ্চন্দ্রনাথ বঙ্গ  
 সারতে ডি  
 ইমেন্ট

ডবলিউ, জি ডিগারি সাহেব  
 জে. এ মিকটন সাহেব  
 জে. জি সাহেব  
 জে. ই. জাহিউল সাহেব  
 ডবলিউ, জে. মেকটন সাহেব  
 বাবু জে. মেকটন সাহেব

কালিপ্রদ সাহেব  
 এ, ডি. বি. বোর্ডেন  
 বাবু জাহাঙ্গীর সাহেব  
 একমি আব ওয়াকার সাহেব  
 বাবু রাসবিহারী বঙ্গ

রামচন্দ্র বঙ্গ  
 এতঃপনাব  
 এইচ এম, ডেভিস  
 ই. এম, জি, সাহেব  
 বাবু জাহাঙ্গীর চট্টোপাধ্যায় বি, এ

বাবু মামলাদার বেন  
 এম, সি, জাহাঙ্গীর সাহেব  
 মৌলবি ওয়াকার আলি  
 বাবু জাহাঙ্গীর গোলাস  
 বাবু মিসনাথ জাহিউ

ই. বি, গডলি সাহেব  
 মৌলবি আবদুল জাহিউ  
 পক্ষ  
 বাবু ওবচন্দ্র বোম  
 " ডবল সাহেব

" বাবু সাহেব  
 মৌলবী জি. মেকটন  
 বাবু শ্যামলাল চট্টোপাধ্যায়  
 " মৌলবি জাহাঙ্গীর সাহেব  
 মৌলবী টেমল আলি

বাবু ডবল সাহেব  
 এ. বাবু জাহাঙ্গীর সাহেব  
 বাবু জি. মেকটন  
 " বাবু সাহেব  
 নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা ডেপুটি মালিক্টেট

ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইরাছেন  
 মদিয়া বঙ্গ, চর ২৪ পরগণা  
 বাবু আনন্দমোহন বঙ্গ  
 মদিয়া বঙ্গোড় পরগণা পাবনা।

বাবু জাহাঙ্গীর মৌলবি  
 " কালিচন্দ্র বোম  
 মদিয়া বঙ্গোড় ২৪ পরগণা পাবনা, কলিকতা  
 " কলিকতা হাঙ্গালাপা

১৪ই জানুয়ারি--ও কালিচন্দ্র সাহেব  
 মেডিকেল কলেক্টর প্রতিনিধি হইরাছেন।  
 ১৫ই জানুয়ারি--লেপ্টেনেন্ট জে. পি. গি  
 সাহেব শিবসাগরের গবলিক ইন্ট্রাগনে লো  
 কাল কমিটির মেম্বর হইরাছেন।

জে. বঙ্গ ওয়েল সাহেব মৈমন সিংহের লো  
 ক কমিটির মেম্বর হইরাছেন  
 ১৬ই জানুয়ারি--বেহাভেব প্রতিনিধি  
 পুন্ড্রাভিউট ও ডেপুটি কালেক্টর সাহেব  
 কমতা গাইরাছেন।

ঐতিহ্যবাহু আনানিক আকরিত পত্ৰ এ-  
বংশ ভব। আবশ্যক বোধ হইল না, পরগ্ৰেয়ক  
সিহু চিন দেখুন মহিবে যদি পুনরাগ উপজব  
কবে. পুনরাগ রাজগোচর করিবে, অবশ্য  
প্রতীকার হইবে।

“শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়াঃ সূত্রার্থাঃ” শ্রে-  
ষ্ঠতম পণ্ডিত বঙ্কিম চন্দ্র চট্টোপাধ্যায়  
জি. এ. এ. লি. দ্বারা লিখিত।  
পরিচালিত।  
প্ৰথম প্ৰকাশ।  
প্ৰথম প্ৰকাশ।

বটমালের ১২ প্রকাশ করা গেল না, তা-  
হাৎ কারণ এই, তিনি যে প্রতিমায় প্রকাশ ক-  
রিয়াছেন, ওহা সকলের অনুমোদিত হউ-  
বে না।

তাবতবধীয়া সভা সংজ্ঞাত পরে যে যে বিষয়  
লেখিত হইয়াছে, তাহার জায় সমুদায়ই মৌল  
কোশে একাধিও হইয়াছে, তবে পত্রদ্বয়ের  
মাঝে সভার বর্তমান একাংশ হয় না বলিয়া যে  
ক'ক্ষেপ করিয়াছেন, তাহা অসঙ্গত নহে, মাঝে  
বর্তার কার্য্য বিষয় একাংশ নব, অদিশয় আবে-  
শক।

হাঙ্গারিয়ার নিবাসি নরু শ্রুতি বক্তব্য এই, (১)-  
কনস্টান্টিনোপল হইয়া; যদি স্বেই অর্থ ব্যয়কোষ  
হইত না হইয়া; গ্রামের উন্নতির নিমিত্ত ব্যয়িত  
হইত। এ টাক্স হইয়া; অসম্মত নয়। তবে বিলম্ব  
কাণ্ড হইয়াছে বলিয়া পক্ষ প্রেরণ ১ কোটি  
সংগ্রহে, সাক্ষিগোষ্ঠীর পোচব করিলে  
পক্ষ নিবাসন হইতে পারিবে।

পরমপুজ্যীয় শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ  
সম্পাদক মহাশয়েষ ।

অতঃপর আমিই প্রাথমিকের উন্নয়ন দিচ্ছি।  
কেন ও আলমারি দুই সংস্কার এই যে প্রা-  
থমিক খার, এদেশের জীবাশ্ম হচ্ছে, আর ক-

খনই ব্রাহ্মদিগের নিকট গিয়া কুৎসা আপন-  
কার অপসারণের জন্যে গিয়া নাই। এই সকল  
কার্য্য হারা বিলম্ব প্রকীর্ত্তন হইতেছে যে  
আপনি আধুনিক ব্রাহ্মদিগের অন্তরাগ করেন  
ও ব্রাহ্মদিগের এক জন বন্ধু। আমিও পূর্বে  
আপনকার মতপ্রতিটি ছিলান, সম্প্রতি বিলম্ব  
অন্তরাগ কবিতা দেখিলান যে ব্রাহ্ম ধর্ম্ম  
আমাদের দেশে কিছু কবিতা পারিতেছে  
না। ও ব্রাহ্মদিগের কার্য্য অনেক আবার স্বল্প-  
বুদ্ধিতে সমীচীন বলিয়া প্রতীক্ষ্য হইতেছে  
না। কিছু দিন হইল অশোভ্যনাথ পাকড়ানি  
কি প্রণালীতে পৈতৃক অর্দ্ধি করিলেন তাহার  
প্রতি আমি অশু পাটিলান না। সম্প্রতি কেশব  
বাবুর পুত্রের জাত কথ্য দেখিতে গিয়াছিলান  
দেখানেন "শিব আত্মদেও ত্রিদেও ইত্যাদি"  
প্রার্থনা শুনিলাম কিছু ব্রাহ্ম ধর্ম্মের ব্যাখ্যানে  
পড়িয়াছিলান যে "আমরা পৌত্তলিকদিগের  
মত আশু দেও নথ দেও ইত্যাদি প্রার্থনা কবি  
না। অনন্তর কিছুই ঠিক করিয়া উঠিতে পারিলাম  
না। যে দেবেশ্বর বাবু কলিকাতা ব্রাহ্ম সমাজে  
ব্যাখ্যান দিতে দিতে উক্ত প্রকার বাক্য প্রয়োগ  
করিয়াছিলেন তিনিই আবার কেশব বাবুর  
পুত্রের জাত কথ্য উপলক্ষে এই প্রকার বাক্য  
প্রয়োগ করিলেন। আমি বধন এই সকল  
চিন্তায় ব্যাকুল আছি তখন আবার কেশব  
বাবুর পরিবারস্থ কোন ব্যক্তি আমাকে সমীচীর  
বিলেন যে "প্রিয়তম" বাহিরে এই সকল ধুন্যাস  
দেখিতেছ কিছু বাটীর ভিতর পৌত্তলিক ক্রিয়া  
অল্পসারে বাকী পূজা সম্প্রদ হইয়াছে" এই  
বাক্য শুনিয়া আমার কেশব এক অনির্কটনীর্ট  
ভাবে উদ্ভব হইল, সখিলান ব্রাহ্মদিগের সকল  
লগাই কপট দেখিতে পাই।। কেশব বাবু—যাঁ  
রাকে আমিবা নিখিল ধর্ম্ম ব্রাহ্ম বলিয়া জানি,  
তাহার দীর্ঘত এই প্রকার ব্যাখ্যান হইল। আ  
বার মনে করি—অশু বাবুর পুত্রের যে দিন  
অবপ্রাশন ব্রাহ্ম ধর্ম্মানুগারে হইয়াছিল তাহার  
দিন দুই পাবে তাহার মৃত্যু হইয়াছিল বলিয়া  
কেশব বাবু স্বাভাবিক অপত্যদেহে বাকী-  
হুত হইয়া বাকী পূজা কবাইলেন এবং বাহি-  
র ব্রাহ্ম অনুষ্ঠান করিলেন।

४ठा भाग { श्रीमन्नाथ शर्मा ।  
 २४७७

ত্রিযুক্ত, সোমপ্রকাশনালয়  
 মহোদয়ের।  
 মহাশয়! আপনার ২২৬ পৌষের সোম-

একালে বিবিধ সংবাদ মধ্যে একটি শুভ সংবাদ পাঠ করিয়া বিখিত হইলাম। ইহা হইল বাবু অবোধাধাশাখ পাকড়ানি মহাশয় জীৱিততার সুখা দিবসাবধি দশ দিন পর্যন্ত উপরীয দাবণ, পান্ধকা পত্রিকাগ, কখনে পর, হবিয়া, ২ ভোজন এছতি হিন্দু ধর্মীয়করণ পোষ্ট গ্রন্থ পূর্বক ত্রাক ধর্ম মতে শিষ্ট সংগ্রহ করিয়াছেন। ইহা যদি সত্য হয়, তাহা কই অসুখ সংবাদ নহেই নাই। ইহার পাকড়ানি মহাশয় দুই কালের মনোরণা করিতে গিয়া কি নির্দল ত্রাক ধর্মের কমকারোপ করিলেন? তিনি যদি লোকতরে এতই জীৱিত ছিলেন, তবে ত্রাক মতে আছ করিতে যেমন কেন? ত্রাকেরা কি কপোরাধি বিস্তার করিবার জন্য অসুখান করিয়া থাকেন? ত্রাকেরা কি অচ্যাপিও লোকতরের এক দান? সম্প্রদায় মহাশয়! যদি পাকড়ানি মহাশয় (বৌদ্ধ মতে ইনি আতিথে, ত্রাকণ) দশ দিন জীবিত হইয়াছিলেন তাহা ইহার মতে মনুষ্য হইয়া ১৫ দিন, সুতরাং ত্রাকেরা এক দান অপোষ্ট ত্রাক করিবেন, ইহার অসুখোদে ত্রাকধর্মের দান তেজ স্বীকার করিতে হইল। বড়ই ভায়েকদের দিবস। সম্প্রদায় মহাশয়! মধ্যে মধ্যে ত্রাকের পের এএকুর কার্যের বিস্ময়কর দেখিয়া তাহা কেই ত্রাক ধর্মের প্রতি বিরুদ্ধ আশি প্রকাশ করিয়া থাকেন। কিন্তু তাঁহারা যদি বিশেষতঃ করিয়া দেখেন, উপাসকের দোষে কখন ধর্মের দোষ হয় না।

অবশেষে ত্রাণকাজটি সমাপ্ত হইয়া গিয়াছিল।  
এই প্রস্তাবের উপলক্ষ্যেই 'কলিকতা পাবলিক লাইব্রেরি'  
না। বাস্তবে আর উপরি উক্ত ঘটনা গা হইয়া  
একটা ত্রাণকর্মের সাহায্যে 'বাঁকা' সিঁড়ি  
কর্তব্য।

২৪। মাঘ } কোমঃ এক জন  
 ২২০২ } ডাক ।

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসঙ্গীতক  
মহাশয় নমস্কার ।

সহানুভূতি! গত ২২শে ডিসেম্বর সোমশ্রমের  
অনুগ্রহ করিয়া! আমার বে অমণ হুতাত একাশ  
করিয়াছেন, তাহার লিখিত প্রতিজ্ঞা অনুসারে  
উল্লাসের মারীভর নিবারণী সভার বক্তৃতা  
জাংগল্য নিয়ে লিখিলাব। একাশ করিয়া বা-  
খিত করিবেন।

“উলা” এই গ্রামের নাম বোধ হয় নক্ষত্র  
বলবানিগণই তুলিয়াছেন। ইহার পূর্বে কুখসৌ-



ইহাদি গুণ সমুদ্র জুলাল কঁকাদর আবাস  
 গাছ। রাজপথ বনাকীর্ণ হইয়াছে। ঘাট বা  
 লোক জুনা ও উৎসবাদি আশোদ জুনা বহি  
 চে। এই গ্রামের নিবিড় বনজি পূর্ণ, বন  
 সমাকীর্ণ অদপার হুৎ এক শুভক্ষের সঙ্গ  
 ডিয়া আছে। সম্ভার গম হৈয়ার কাছাকাটে  
 লোক যাতায়াত করে না। কিন্তু সন ১২৬৩  
 অবদি সন ১২৬৬ সাল পর্যন্ত চি বৎসর  
 ভাবে গন্ত হইয়াছে উল্লেখ্য। ক্রমে ভাল  
 হইতেছে, এই ৪ বৎসরে গ্রামের ব্যক্তি  
 সমস্ত সংখ্যা নিবাসীর মধ্যে সমুদ্র সমস্ত  
 কালের কবলে পতিত হইয়াছেন। অমু  
 পদ্য সমস্ত লোক স্থানান্তরিত হইয়াছেন।  
 লিখিত সমস্ত ব্যক্তি স্থানান্তরিতবেকে বেগ  
 বহিয়াছেন, তবে আরে ইহা মিলেই শরীর  
 হইয়াছে চিকিৎসার ব্যয়ে। অংগের শুভ  
 টর্চিয়া নির্জন হইয়া গিয়াছে। অম  
 পক্ষে আবিষ্কার নির্মাণ করা হুৎসংগ হইয়াছে।

“এই উন্নয়নক ছুবসনর প্রতীক”ব ম  
 টিনেশে এও মন হইয়াছে। আমর এও  
 সেবল আপন আপন লেখা লাল কাল  
 কাল আদি সকল সময় লেখা কাল অতীত  
 আনন্দমগ্নের মন্থন প্রামদ্য জীবিত বাহি  
 কালকাল হইতে মন্থিত অন্তঃকরণে  
 এবং আনন্দমগ্নের পূর্ণ প্রবেশে জাল হইতে  
 দেও পূর্ণবাসন হইতেছে। এই উন্নয়নক প্র  
 কল্পার্থ আমর মন্থনে দুটি মন্থন প্র  
 কল্প। এক প্রথম প্রথম প্রথম কল্প  
 মন্থন একটা উন্নয়নক প্রথম কল্প। এই  
 বিবরণে উন্নয়নক ও উন্নয়ন প্রথম কল্প। এক  
 দুটি মন্থনেই আনন্দমগ্নের মন্থন প্রথম কল্প  
 মন্থন আনন্দমগ্ন। সকলে মন্থন হইতে  
 মন্থন প্রথম কল্প। কল্প প্রথম কল্প  
 প্রথম কল্প মন্থন হইতে মন্থন। মন্থন প্র  
 মন্থন প্রথম কল্প আনন্দমগ্নের বিবরণে মন্থন প্রথম কল্প  
 হইতে মন্থন।

“জমল ও পঞ্চিল দুর্গজ বাবিপুত্র যের  
মতঃ পবিত্র করি যদিও অগ্রেই কার্য।  
তাহা গবায়েষ্টের সাহায্য ব্যতীবেক একে  
য়েই হইতে পারিবে না। বিশেষতঃ তাহা  
তাম্র ব্যয় সাধা। একটী উদ্যোগের স্থাপন  
সাধ্য তাহা অসম্ভব নহে। বলতঃ একটী উদ্য  
গের নিত্যক জাতিশক হইয়া উঠিয়াছে।  
মজলকর কার্যে সাধারণের উৎসাহ প্রাপ্ত  
কেন্দ্র বিদ্যমানের ধর্ম্মগণের সাহায্য।  
প্রয়োজন। মজুত আবাদিগণের গ্রাম হই  
তৎসংক্রান্ত নষ্টায় ব্যয় নির্বাহ হওয়া অসম্ভব।





হইবে। 'সোমপ্রকাশ' অর্থাৎ 'সোম' চরিত্র-  
 ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

উৎসর্গপ্রদানপ্রতিষ্ঠার ১০০ টি বৎসরকালের সম্ভা-  
 বন নাই (১)  
 ২ পৌঃ  
 ৩ অশ্বিনপূর্ণিমা

" গোপালপাল বাহাদুর  
 ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 " " অজিতপাল বসু এসহবৈষ্ণব  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 " " জিনাথ মিত্র সম্বন্ধে বাণী  
 ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত

মল্যপ্রাপ্তি ।

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

শ্রীমতী বা ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

সোমপ্রকাশ সংকলিত করেকটি  
 বিশেষ নিয়ম।  
 অগ্রিম মূল্য না পাইলে মকদ্দমাদে

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

(১) আশ্বিন ভাগ পরিত্যক্ত হইল।

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আশ্বিন পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত

# সোমপ্রকাশ

প্রবর্তনা প্রকাশিতাথ্য মার্চিন. মরসুমী স্তমিতমহলী ন হীমতা

৫ ভাগ।  
১০ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ২১এ মাঘ। ইং ১৮৬৩। ২ ফেব্রুয়ারি { দৈনিক মূল্য ১ টাকা।  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

## সোমপ্রকাশের অবয়ব বৃদ্ধি সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবশিষ্ট সোমপ্রকাশের আর এক  
ম. বৃদ্ধি হইল। সভাপতি বাহাদুর বাহাদুর  
ক. মূল্য ১০ টাকা। অপরিসংখিত বৃদ্ধি।  
বালের গ্রাহকদিগকে অত্যন্ত ডাক মাফুল  
উইটে। বার্ষিক ডাক মাফুল ৩০ হইবে,  
বাহাদুর ২০। প্রথম সংক্রান্ত টিউরে  
করীয়া ক্রিয়েন, তাঁহার ডাক মাফুল  
(১) বাহাদুর ১০। (২) বাহাদুর ২০।  
ডাক মাফুল দিতে হইবে।

## বিজ্ঞাপন।

## মুদ্রারক্ষণ।

১৮৬৩এ এপ্রিলের নিমিত্ত মুদ্রারক্ষণ  
শোধিত হইয়া কলিকাতা মুদ্রারক্ষণ  
১ টাকা মূল্যে বিক্রয় হইতেছে।  
মূল্যে গ্রহীতাদিগকে স্বাধীন বা সংকট ক-  
ক ইংলিশচন্দ্র বিজ্ঞাপনের নিকট পা-  
১০ মূল্য পাঠাইলে পাইবেন প্রত্যেক  
খানার এক এক সের।

ইংলিশচন্দ্র শর্ম্মা

## বিজ্ঞাপন।

## বিচার পদ্ধতি।

ইংলিশচন্দ্র দেশের প্রধান প্রধান  
বিচারের বিচার প্রণালী দ্বারা যে সকল  
পদ্ধতি প্রকটিত হইয়াছে, বিশেষতঃ

মহামান্য জে ডবলিউ শিখ সাহেবের প্রণীত  
যে বিচার পদ্ধতি প্রধান প্রধান আদালতের  
ব্যবহারার্থ ইংরাজী ভাষায় বিস্তারিত হইয়া  
নিবন্ধিত হইয়াছে, তাহা হইতে এ প্রদে-  
শের ব্যবহার উপযোগী এ প্রয়োজনীয় এত-  
দূর বিচারে নিয়ম বোধ গম্য হয়, এত  
বিবিধ নিয়ম ভাষার ভেদে কালেইর জীবিত  
ব্যক্তি মোহন দত্ত ও অন্যান্য ব্যক্তিগণ ক-  
ক সেরন বসতায় অগ্রবানিত হইয়া  
জীবিত ব্যক্তি মোহন দত্ত ও জীবিত ব্যক্তি  
মুদ্রারক্ষণ চন্দ্রবন্তি কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।  
গ্রাহকগণ আমাদিগের গ্রহণলয়ে তত্ত্ব করিলে  
প্রাপ্ত হইবেন মূল্য ১ এক টাকা মাত্র।

গুপ্ত রাসন

নিউ ইন্ডিয়ান লাইব্রেরী

১৫ই ফেব্রুয়ারি ১৮৬৩

## বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা জিলার অফিসে পাঠী বটকেয়ারি  
মহকুমদপুর নামে যে পত্রিকা তাহা আছে,  
তাহা মরণজন্য দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। বটকেয়ারি সেট পত্রিকা মরণজন্য লই-  
বার অর্থ ক্রয় করিয়া ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার অফিসে মিনন বোম্পানির নিক-  
টে আবেদন করিলে সর্বশেষ বৃত্তান্ত জানিতে  
পারিবেন।

## সোমপ্রকাশ।

২১এ মোমবার।

আমরা গত বারে কোন কারণ বশতঃ  
সোমপ্রকাশের সমুদায় কার্য সচক্ষে স-  
র্জন করিতে পারি নাই, কোন কোন বিষ-

ষে সহকারিদিগের উপরে ভারপূর্ণ  
হইয়াছিল। তাঁহাদিগের অবয়ব  
গত বারের সোমপ্রকাশের কতিপয়  
হোলিকরণ হইয়া উঠিয়াছে। আমরা  
ভবিষ্যৎ বার পর নাই ক্রয় হইয়াছে।  
বোধ হয় পাঠকগণ আমাদিগের উপর  
গুণে এ অপরাধ মার্জনা করিবেন।

বোম্বাইয়ের রামচন্দ্র বালকৃষ্ণ  
গুপ্ত গমন করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন।  
আমরা গতবারে এ সমাচার পাঠকগণকে  
গোচর করিয়াছিলাম, এবার  
আখীরের নিকটে তাঁহার ইংলণ্ড গমনের  
উদ্দেশ্যাদি অবগত করিলাম। তিনি  
মানে ইংলণ্ডে যাত্রা করিবেন। বোম্বাই  
য়ের কয়েক জন পারসী তাঁহাকে একত্র  
করিয়া পাঠাইতেছেন। শুনা গেল, কতি-  
কাতার কোন কোন বণিকও তাঁহার  
সাহায্যে উঠুং হইয়াছেন। এই ক-  
আনন্দের সমাদ। এদেশীয় লোকেরা বহু  
দিন এই রূপ এজেন্ট ও প্রতিমিহি হইয়া  
ইউরোপ খণ্ডে গমন পূর্বক কার্য নির্বাহ  
না করিবেন, তত দিন এদেশের কাকিত  
অতীত লাভ সম্ভাবনা নাই। আমরা এক-  
বিধ বিষয়ের নিমিত্ত দেশীয় লোকদিগকে  
সর্বদা উত্তেজনা করিয়া থাকি।

রামচন্দ্র বালকৃষ্ণ উপযুক্ত লোক  
ভারতবর্ষের অর্থ সাংশোধন বিষয়ে তাঁ-  
হার সর্বেশ্বর যত্ন আছে। তাঁহার অর্থ-  
রূপ উদার। তিনি ইংলণ্ডে অবস্থান করি-



১। কেবল বাণিজ্য বলিয়া । ৩। তৎবর্ণের অনেক বিষয়েই প্রয়োজিত সম্ভাবনা আছে ।

—•—

বাবু জয়কৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়ের কণ্ঠস্বর শুনেই মুক্তি লাভের সম্ভাবনা প্রকাশিত হয়। আমরা যেমন হতাশ হয়েছিলাম, তখনই আর একটি অমঙ্গল ঘটে। অসহযোগিতা হইল। শুনা গেল কারাবাস ও এখনও তাঁহার নিরুদ্ভূত প্রতীতির সমন্বিত আচার্য্যতা করিয়া সম্পূর্ণরূপে নিরুদ্ভূত হইতে পারে নাই ; এখনও তিনি বৈরনির্ঘাতন প্রতীতি পরিত্যাগ করিতে পারেন নাই ; এখনও তিনি অসন্তোষের পরামর্শের বশবর্তী হইয়া বিপক্ষগণকে তরুণ প্রদর্শন করিতেছেন । যাহা হউক, এসময় যদি সত্য হয়, অত্যন্ত ক্ষোভের বিষয় । ক্ষোভের কারণ এই, জয়কৃষ্ণ বাবু কেবল মনুষ্য সমাজের কণ্টক স্বরূপ অকর্মণ্য ও অপদার্থ নহেন । তাঁহাতে পদার্থ আছে । তাঁহার জুলা অধাবসায়ী দীল চতুর ও দক্ষ লোক এদেশীয় জমীদারবলে অল্প দৃষ্ট হন । তিনি দেশহিত কর অনেক সংক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিয়াছেন । তাঁহার যদি দুই একটি প্রধান দোষ না থাকিত, তিনি এক জন মহাত্মা বলিয়া পরিগণিত হইতে পারিতেন সন্দেহ নাই । এই দোষ দুইটিতে বিশ্ব মাত্র গোমুগের ম্যায় তাঁহার সমুদায় সংক্রিয়ানুষ্ঠানকে বিফল করিয়া তুলিয়াছে ।

শিবকৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায় যে দীপান্তবাসী হইয়াছেন, তাঁহার নিমিত্ত আমরা কখনকালও কাতর হই না । কারণ তিনি কেবল মনুষ্য সমাজের কণ্টক স্বরূপ ছিলেন । কিন্তু যে সকল ব্যক্তি হইতে দেশের উপকার লাভের সম্ভাবনা আছে, তাঁহাদের দোষ দুর্ভাগ্য অবগণ করিলে অসহযোগিতা অতিরিক্ত বাধা করে । আমরা মনোঃ এক দিবস অবগণ করিলাম, বাবু কালীপ্র

সম সিংহের চৌকপুরের বাগানে এক ব্যক্তি মদ্যে মেশা হইয়া বসিয়া আছেন মরুতিয়া ( অহিকেনসার ) মিষ্টি করিয়া খাইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে । এতৎ সংক্রান্ত এইরূপ একটি ভয়ঙ্কর জনবহু ঘটনা ছিল যে কালীপ্রসন্ন বাবু রক্ত দেহবীর নিমিত্ত মদ্যে মরুতিয়া, মিশাইয়া দিয়া ছিলেন । যাহা হউক, এই সম্ভাব্য প্রতীতি গোচর হইবার আশা দিগেব অন্যতর বৎপারোনাস্তি পরিত্যাগিত হইল । পরিত্যাগের কারণ এই, কালীপ্রসন্ন বাবু হইতে বঙ্গদেশের অনেকবিধ উপকার লাভ হইতেছে, তাঁহার আশ্রয়ে একটা এতদূর অর্থকর কুৎসিত ঘটনা ঘটিল । শান্তি রক্ষার জন্য তাঁহার প্রতি সন্দেহ করাতে তাঁহার বিপদ ঘটিবার সম্ভাবনাও হইয়াছিল । এই ক্ষোভের বিষয় এই যে তিনি নির্দোষ হইয়াছেন ।

যাহা হউক, অন্য এবিষয়ের প্রসঙ্গ করবার তাৎপর্য্য এই, এদেশের ভাগ্যবানদিগের অনেকের অসংসর্গ প্রত্যয়ে অনেক সৌভাগ্য ও অপবাধ ঘটিয়া থাকে । ভাগ্যদেব কল্পিত হইয়া সে সংসর্গ পরিত্যাগ করিয়া সংস্কৃত হইয়াছেন এবং জীবিত সামান্য সংক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিয়া দেশের মুখ উজ্জ্বল করেন । আমাদের অসংসর্গ ভাগ্যদেবের প্রসংসাদ অসংসর্গেই সর্বত্র উৎসুক, নিম্নাবস্থা অবগণন ।

কিন্তু মাত্র কয়েক জন জ্ঞানীই যে কেবল মাত্র তাব দেখাইতেছেন একপন্থা, আর একপন্থা দেখিয়াছেন । কয়েক জন সুবর্ণবর্ণিত যজ্ঞোপবীত ধারণ করিয়া বৈশ্য হইয়া চেষ্টা পাইতেছেন । অনেক দিন অর্থাৎ এবিষয়ের গোলযোগ ধারণ হইয়াছে । এতৎসংক্রান্ত একটি বাবুও প্রকটিত হইয়াছে । এই সমুদয়ে আমাদের এক অস্বাভাবিক এক দানি ব্যবস্থা পত্র আমাদের হস্তে আনিয়া দিলেন । তাঁ-

হার মানস এই, আমরা এই বিষয় কয়েক কিছু আলোচন ও বিচার করি ; ১। সুবর্ণবর্ণিত যজ্ঞোপবীত ধারণ করিয়া অগতির যে কি ইচ্ছা হইবে কিছু বিচার করিয়া উঠিতে পারিলাম না । সুতরাং এবিষয়ে বিচারে প্রতীতি জন্মিল না । ২। মুরোধকারী আশীর্বাদ প্রতি আমাদের বক্তব্য এই, অনেক কুটীয়াছে, আমাদের কে এই সঙ্গে ফেলিয়া আর দল ভাঙিয়া দিব ব পরোক্ষ নাই । এই প্রস্তাব লিখিতে লিখিতে আমাদের একটি কুটীয়া বলা উপস্থিত হইল, যে কালে যে বিষয় সর্বাংশে প্রতীতি হয়, সে কালের একটি বিশেষ বিশেষ নাম হইয়া থাকে । যথা— " সত্য, ত্রেতা, দ্বাপর, বাল্মীকি ইত্যাদি ইত্যাদি ভাষায় গোমুগের ম্যায় আইরন এক প্রকৃতি আছে, কলিকাতা এই বর্তমান অবস্থায় কতজন এক কি নাম দেওয়া হয় । আমরা পাঠকগণকে উপরেই সেই নামটি মনে করিয়া তাঁর অর্পণ করিলাম । আমাদের মতে যে নামটি উদ্ভূত হইয়াছে, আমরা তাহা প্রকটিত সাহসী হইলাম না ।

সব চারপাশ টি বিলিয়ার্ডের আশ্রয়  
নন্দন পাত্র দান ।

কমল চেম্বরের সভাপতি জে. এন. ব্রুস সাহেব প্রকৃতি বর্ণকম্প্রদায়ক ও বিচিত্র হইল । ১০ই মার্চ শনিবার এবং তারপর বর্মান সভার সভাপতি রাজা রাধাকান্ত বসু সাহেব প্রকৃতি এদেশীয়দিগের প্রতিভা প্রকাশ হইয়া ১৫ই মঙ্গলবার মর চারপাশ টি বিলিয়ার্ডের সভাপতি করিয়া এক অতিনন্দন পত্র দান করিয়াছেন । এ উত্তমবিধ অভিনন্দন পত্র অনুবাদ হইয়া স্বানান্তরে প্রকটিত হইল ।

মর চারপাশ টি বিলিয়ার্ড উদার যথ উত্তর দান করিয়া অভিনন্দন পত্র প্রদানের সম্মান বর্জন করিয়াছেন । উপরেই অভিনন্দন কর্তা ও উত্তরদাতা

২১শে মার্চ ১৯৬৯ টি হইয়াছে। পঁচিশ  
সংস্করণে অধিক হইবে সর চার্লস টি  
মিলিয়াম সিবিগিয়ান গণে প্রতিষ্ঠিত হইয়া  
যেখানে আগমন করিয়াছিলেন। তৎকালে  
জা রাখাকান্দুয়ে ও কালীকান্দুয়ে বাহা  
রের সঙ্ঘিত তাঁহার আলাপ ছিল। বহুকা  
পর পরস্পর সাক্ষাৎকার লাভ হওয়া  
সেই পূর্বে তাব স্মৃতিপথে আকর্ষ হয়।  
সংস্করণ পরস্পর আলাপ সুখ অনুভব  
রিয়া প্রতিটি লাভ করেন। এদেশের  
টি চার্লস টি বিলিয়ামের যে অক  
ট দেহ আছে, তাহা এই আলাপক্রিয়া  
তিহি অন্তিমকন পত্রের যে উত্তর  
ন করেন তাহার সুন্দর প্রতীকমান  
হইতেছে।

সর চার্লস টি বিলিয়াম এদেশে আ  
মন করাতে অন্তিমকন পত্রদাতৃগণ কে  
ল যে অকৃতিম আশ্রয় প্রকাশ করিয়া  
ন একপ নয়, তাহা হইতে ভারতবর্ষের  
শেষতা স্ব স্ব সংস্করণের মহাতীর্থে  
ভেদে যে সম্পূর্ণ আশা আছে, তা  
ও প্রকাশ করা হইয়াছে। কাহার কি  
স্থিত বিষয়, অন্তিমকন পত্র পাঠ ক  
লে তৎসংস্করণ লাভ হুত হয় না।  
পিচ্যা ভবোর কর কমিয়া যায় এবং  
তা খাট প্রভৃতি সুন্দররূপ হইয়া উহার  
বিশেষ উন্নতি হন, ইহাই বণিক সংস্কার  
র প্রধান আর্থিক বিষয়। ভারতবর্ষী  
তা এদেশের প্রতিনিধি; ইনকম ট্যাক্স  
দেশীরদিগের বিব্র বিধিষ্ট পদার্থ; এ  
সকল রূপিত হয়, ইহা যে এই সত্যের প্র  
নিধিগণের প্রধান আর্থনীতি হইবে  
কথা বলা বাহুল্য।

চার্লস টি বিলিয়াম হইতে উত্তরনিধ  
অন্তিমকন পত্রদাতৃগণেরই যে মনোরথ পূর্ণ  
হইবে তাহার বিলক্ষণ লক্ষণ দেখা গাই  
হইছে। তিনি কলিকাতায় পদার্পণ করিয়া  
বহিষ্কৃত নহেন, বিশেষ বিশেষ  
মহাশয়ের দর্শন করিতেছেন। কটম

হউন ও ইনকম ট্যাক্স আকিস উত্তর  
হইতেই তাঁহার জুলাইপে দৃষ্টি নিপতিত  
হইয়াছে। তিনি তৎসংস্করণ ইনকম ট্যাক্সের  
প্রতিবাদী, অতএব তাঁহার যে তত্ত্বমূলক  
চর্চা করিবে, তাহা কিছু বিচিত্র নহে,  
বাণিজ্য জগৎকে করগ্রহ হইতে মুক্ত করাও  
তাঁহার অভিপ্রেত। তিনি ভারতবর্ষীয়  
সত্যের প্রদত্ত অন্তিমকন পত্রের উত্তর  
দান কালে স্পষ্টাক্ষরেই কহিয়াছেন, অ  
জন্ম সমুদায় জেগীর বিষয় তিনি জুলা  
রূপে দর্শন করিবেন।

যে উপায় দ্বারা এতদ্বিষয়িনী অতীর্থে  
মিছির সম্ভাবনা আছে, জনববে শুনা যাই  
তেছে, তিনি তদবলম্বন চেঁচায় উদ্যমীন  
নহেন। মাস্ত্রাজে জনরব উঠিয়াছে, সৈন্য  
কমাইয়া দেওয়া হইবে, এখ নও অনেকে  
কর্ণাকর্ণ করিতেছেন যে সিবিগিয়ানদি  
গের বেতন কমাইয়া দেওয়া হইবে।  
আর পল্লিতা গ চেঁচা করিতে গেলে ব্যর  
সংক্ষেপ বাতিরেকে তদ্বিষয়ে কুতর্ভতা  
লাভের সম্ভাবনা কি? এরোজনাতিরিক্ত  
সৈন্য ও সিবিগিয়ানদিগের মোটা বেতনই  
ভারতবর্ষীয় কেশবগৃহ শুষ্ক ও শুনা করি  
তেছে। অসম্মা বরাবর সৈন্য সংক্রান্ত  
অনাবশ্যক ও অসঙ্গত ব্যয়ের বিষয়ের প্র  
তিবাদ করিয়া আসিতেছি। চার্লস টি  
বিলিয়াম যদি পবলিকওয়ার্ডের বিশেষতঃ  
রেলওয়ের ডাকহাউসদিগের বিষয়ে কিছু  
মনোযোগ করেন, অনেক ব্যয় সংক্ষেপ  
করিয়া আনিতে পারিবেন।

জিলিং মহাশয়, মাকির জবান  
বন্দী ও বিচার।

১৯ই মার্চ সোমবার হিলির বিচার  
আরম্ভ হয়। যাবতীয় পেটিশুরি, বিস্তর  
দর্শক ও অন্য অন্য লোক উপস্থিত হি  
লেন। বেলা ১১ ঘটিকার পর বিচারপতি  
সর চার্লস জাকসন আসন পরিগ্রহ করি  
লে কাঠ হিলির অপরাধবৃত্তান্ত পাঠ ক-

রিলেন। ইংলণ্ডের বারীরা বিচার  
প্রতিবাদী। ইংলণ্ডের পক্ষ উকীল  
আডবোকেট জেনারেল ও এডওয়ার্ড সার্ভেস  
প্রতিবাদীর পক্ষ উকীল ডেইন ও পাল জা  
হেব। বারীর উকীল আডবোকেট জেনার  
রল কাউই সাহেব প্রথমে মিয় গিলির  
বক্তৃতা করিলেন—

কুড়ি মহাপুরুষ। আমি আপনাদিগকে  
কে যে মকদ্দমার বিচার করিতে আসিয়াছি  
করিতেছি, তাহা অতি গুরুতর। সামান্য  
বিষয়ে যে কোন বৈলক্ষণ্য থাকুক না কেন  
এবং সংবাদ পত্রাদিতে যে কিছু বলা হ  
উক না কেন, আমি প্রার্থনা করি আপ  
নারা যথার্থ এমনি গ্রহণ করিয়া নিরপেক্ষ  
রূপে আশ্রয়ত প্রকাশ করিবেন। হিলির  
বিষয়ে আপনাদিগের বিচার্য এই—  
এ ব্যক্তি কুহিন্দুজাকে ২৫ করিয়াছে।  
না? ১৮৬১-অক্টোবর ২৬এ মবেদন  
রাজিতে কতকগুলি লোক এক গারাম দী  
হইয়া বঙ্গাখালি গ্রাম আক্রমণ করে। ক  
সংকারিদিগের বিশৃঙ্খল জনের হস্তে বন্দুক  
ছিল। তাহার প্রথমে এক ব্যক্তি গুলি  
রাতে ছুই তিন জন আহত হয়। কুহিন্দু  
লাও এই সময়ে আহত হয়। মে আহত  
হইয়া (মাকিরা যেমন বলিয়াছে আমি  
কেবল তদনুসারে বলিতেছি) আগুন  
সংপুরে গমন করে। তদ্বার তাহার বহু  
হলে এক গুলি লাগাতে তাঁহার মৃত্যু হয়,  
পরে তাহার মৃত দেহ এক মৌকিতে ক  
রা স্থানান্তরে লইয়া যাওয়া হয়। তাহান  
মৃত দেহ অব্যাপিও পাওয়া যায় নাই।  
অতএব প্রথমে এই প্রশ্ন হইতেছে সে য  
থার্থ আশ্রয়ত করিয়াছে কি না? বিস্ত  
তাহার এক জন নির্যাত অসীম বলে ম  
কের গুলি লাগিয়া তাহার মৃত্যু হইয়াছে,  
এক জন ইউরোপীয় তাকে বধ করি  
য়াছে ইহাও সাক্ষ্য বলিয়াছে কিন্তু সেই  
ব্যক্তি হিনি কি না তাহা বিবেচনা করি  
তে হইবে। বর্তমানে তাহাকে হত্যাকারী



বলিয়া কেবল অপরাধী করিতেছেন। সে  
নে আক্রমণের সময় ছিল, এবং অন্যকে  
হত্যা ও লুণ্ঠ প্রভৃতিতে প্রবৃত্তি দেয়, এ  
বিষয়ে গবর্ণমেন্ট বাদী নহেন। অতএব  
অপরাধী যদি দেখেন সে নিজে হত্যা  
করিয়াছে, তবে তাহাকে দোষী বলিবেন।  
১৮২ এককালে মুক্ত করিবার অনুরোধ  
করিলেন।

কাউই সাহেব তৎপরে লুণ্ঠ প্রভৃতির  
বিষয় উল্লেখ করিলেন কিন্তু স্পর্শ বাত্যা  
হিলির প্রতি কোন দোষারোপ করিলেন  
না। পরিশেষে বলিলেন হিলি মুক্ত হইলে  
তিনি সমুদ্র হইবেন। আরো তিনি এ ক  
থাও বলিলেন সাক্ষিদিগের বক্তব্য বহু  
বাক্য আছে এবং সাক্ষিদিগের সকলে  
হিলিকে স্পর্শ হত্যাকারী প্রমাণ করিতে  
পারে নাই। তৎপরে নিম্ন লিখিত সাক্ষি  
দিগের জবানবন্দী হইল।

হিলির ভগিনীপতি কুন্ডিস বিহার  
বলিলেন হিলি এই দেশে জন্মিয়াছে, তাহা  
বাত্য পিতা উভয়ে অগ্রসর হওয়ার লোক,  
অগ্রসর এতলে তাহার ২১ বৎসর বয়স  
পূর্ণ হইবে। পবে এক জন এতদেশীয়  
সাক্ষী বলিল গত বৎসর ১২ই অথবা ১৩ই  
অগ্রহাণ্ণে যে দাঙ্গা হয়, তাহাতে রহিমু  
জার পাণে প্রথমে গুলি লাগে, পরে সে  
বাটার ভিতর পলায়ন করিলে বাহিরের  
দার হইতে হিলি সহস্র তাহার বক্ষস্থলে  
গুলি করে। তাহাতে তাহার হত্যা হয়  
এই সেই হিলি তাহার বন্দে নাই। সে  
তখন খেতবস্ত্র পরিধান করিয়াছিল। তই  
ন সাহেবের ঐশ্বর্য নুসারে সে বন্দী হিলি  
দ্বারা রক্ত দেয় নাই এবং সে আর কা  
রও রক্ত মাখা দেখে নাই।

এপর সাক্ষী সন্নিকৃষ্ণ ও ঐ একাধ  
ক মাদা দিয়া হিলিকে বর্ধা হত্যাকারী  
বলিয়া নির্দেশ করিল। সে দাঙ্গার সম  
য় রহিমুজার নিকটে দণ্ডায়মান ছিল।  
অতঃপূর্ব সাক্ষীর নাম স্পর্শাতি

ধানে বলিল, সে মরেল, সাহেবের কয়েক  
জন লাঠিয়াল ও সিপাহীকে দর্শন করিয়া  
ছিল। আর একজন সাক্ষীও একপ লপথ  
পূর্বক হিলিকে হত্যাকারী বলিয়া নির্দেশ  
করিল এবং হিলিকে চিনিয়া দিল। তঁরী  
বলিল, আমি রহিমুজার বাটাতে থাকি  
তাম। হিলি স্বরূপে রহিমুজাকে ২৫ করে,  
পরে তাহার মৃত দেহ ও আমাকে এক  
নৌকায় লইয়া যায়। হিলি প্রথমে সেই  
নৌকায় ছিল। হিলি যাবতীয় দস্যুকে  
লুণ্ঠ ও বধ করিতে উৎসাহ দেয়। বড়ু ও  
ঐ প্রকার সাক্ষ্য দিল। রহিমুজার স্ত্রী  
কলগা বিবি বলিল, আক্রমণকারিরা বাটা  
র নিকটে আসিলে রহিমুজা গবর্ণমেন্ট ও  
ইংলণ্ডেশ্বরীর দোহাই দিয়া হিলিকে ব  
লিল “আমাকে যেখানে ইচ্ছা লইয়া চল  
নিক্ত আমাকে প্রাণে নষ্ট করিও না, আ  
মার অনেক পোষা পরিবার আছে, আর  
যদিও আমাকে বধ করা তোমাদিগের এ  
কান্ত ইচ্ছা হইয়া থাকে, দোহাই ঈশ্বরের  
আমার পরিবারের স্ত্রীলোকদিগের কোন  
প্রকারে অপমান করিও না।” হিলি স্ব  
হস্ত রহিমুজাকে গুলি করে। পক্ষাৎ  
তাহার আজানুসারে আমাকে ও মৃত বা  
টার দেহ অন্য অন্য ব্যক্তির সতি  
লইয়া যাওয়া হয়। রহিমুজার একটি পুত্র  
ও কয়েকটি স্ত্রীলোক গুলি দ্বারা অস্ত  
হয়। কোন প্রকারে হিলির লোকেরা বিন  
য় অবশ করে নাই। সে সময়ে আমি এম  
নিষ্ঠিত হইয়াছিলাম যে হিলির কি প্র  
কার বস্ত্র তাহা দর্শন করি নাই।

তোবি ধিনিও ঐ প্রকার বলিল।  
সে হিলিকে চিনিতে পারে না, কিন্তু নিশ্চ  
য় কপে বলিল এক জন ইউরোপীয় তথায়  
উপস্থিত ছিল। সেখানকারও ঐ প্রকার বলি  
ল। বিশেষের মধ্যে এই বলিল যে হিলি  
র চুখের কিয়দংশ সে দেখিয়াছে, এবং  
সে যে মরেলের সুপরিণ্টেণ্ট গার্ড ভবিষ্যে  
কোন সন্দেহ নাই।

সাঁউদি বলিল, সে হিলিকে স্বহস্ত  
গুলি করিতে দেখে নাই, কিন্তু নিশ্চয়  
রিয়া একপাৎ বলিতে পারে না যে হি  
হইতে একান্ত হয় নাই। ডেপুটি মা  
ফোর্ট বকিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় বলিলে  
আমি গত বৎসরের অগ্রহাণ্ণ মাসে ব  
খানির দাঙ্গার কথা অবশ করিয়া তৎ  
গমন করিয়াছিলাম। তিন জন সাক্ষী  
জবানবন্দী লই, তাহার মধ্যে এক জন  
মৃত প্রায় ছিল। ১২ই ডিসেম্বর জুরির  
হিলির সহিত আমার সাক্ষাৎ হয়। মা  
লের কয়েক জন প্রজার উপর সন্দেহ  
ওয়াতে আমি হিলিকে তাহার নিকটে ধরি  
দিতে বলি। হিলি বলিলেন তাহা  
নির্দোষী। হিলির নাম চিজাস করায়  
তিনি তাহা বলিলেন না। মরেলের বাটা  
ভিতর হইতে দুই ব্যক্তিকে বাহির ক  
হয়। ৬ই ডিসেম্বর হিলিকে প্রেরণ ক  
বার পরখানা দিয়াছিলাম। হিলির এ  
জন বন্ধু গত জুলাই মাসে বলেন বাহা  
হিলি বলিয়া খুঁত করা হইয়াছে সে বস্ত্র  
হিলি নহে। হিলি যে হত্যাকারী একথা  
নেক ব্যক্তি তাহার নিকটে বলিয়াছে।

পুলিষ জমাদার মীনবজ সিংহ বলি  
ল, আমি হিলিকে স্বচক্ষে দাঙ্গা স্থলে  
দর্শন করিয়াছি। তাহার পর সে হিলিকে  
চিনিয়া দিল। কুন্দর চৌকিদারও ঐক  
বলিল। হেনরি লুই মিচেল হিলিকে  
আসানে খুঁত করেন। যখন সে খু  
হয়, তখন সে প্রথমে ক্রন্দন করি  
উঠিয়াছিল। পবে সে আপনাকে হি  
বলিয়া পরিচয় দেয়। সাক্ষীর জবানব  
শেষ হইলে যিনি জুরিদিগের প্রধান, তিনি  
বলিলেন হিলির পক্ষ সমর্থনকারী উ  
লের বাক্য অবশের আবশ্যকতা নাই  
বাদী তাহার দোষ সপ্রমাণ করিতে পা  
ন নাই। অনন্তর জুরিরা সকলে তাহা  
একবাক্যে নির্দোষী বলিলেন। বিচারপা  
তাহাতে সম্মতি দেওয়াতে তাহাকে তৎ

হুজুর করিলেন। দুখবার সৌন্দর্য্য  
হইয়াছে।

কি কারণে হিলিকে হাতিরা দেওয়া  
হইল বুঝা গেল না।

পাঠকগণ! আপনারা কি সূতর সরা-  
জবগোষ্ঠক হইয়া মোমপ্রকাশের পথ  
প্রীকণ করিয়া আছেন? মোমপ্রকাশ  
তি সওয়ায়ে যথাসক্তি সূতর সরাব দিয়া  
পনাগিগের কৌতুহল পূর্ণ করিয়া থাকে  
টি কিছু আছি যে একটী সত্যকৃত  
সরাব দিতে চানিয়াছে, কিন্তু সরা-  
র কখন আশ্রয়গিগের অবশ্য বিবরণ  
বোধ করে নাই, অবশ্য সরা সূত্রে থাকুক  
মন আশ্রয় সরাব কখন যে আপনাবি  
র অবশ্য পথের অতিথি হইবে, আপনা  
একপ কখন মনেও করেন নাই। সে  
এই—ভেনিস হিলি বিনা দণ্ডে  
হাতি পাইয়াছে!! গত দুখবারের  
সংকালে এই সরাচার যখন মগরমর  
ল, মগর বিস্ময়, রোষ, কোত, ও ভয়ে  
একান্ত পরাধীন হইয়া কপাকর ধারণ  
রাখিল। যাহারা স্বকর্ণে আজ্ঞাবান  
না করিয়াছিলেন, তাহারা এখন  
পথে বিশ্বাস করেন নাই। তাহানিগের  
বিশ্বাস হওয়া আশ্রয়গিগের বিবরণ মতে।  
সির চুরাচারতার বিবরণে কাহারও সন্দেহ  
ছিল না; তাহাকে বরাখালির অরাজক  
গের কড়া বলিয়া তাহানিগের দৃঢ়তর  
কার জমিয়াছিল; তাহার অপরাধও  
তর সুন্দরী এমনি দ্বারা সপ্রমাণ হই  
তে, অর্থাৎ সেই চুরাখা অব্যাহতি পা  
। এ সরাব শুনিতে সত্য বলিয়া তাহা  
কাহার বিশ্বাস জন্মিতে পারে? যাহা  
ক, এই দুখবার সবিচার, আইন, সূত্রে  
নিয়ম ও তারতম্যের স্বয়ং এ সরাবার  
পের নিকটে পরাধীন হইয়াছে। সামান্য  
গা অবশি ধনবান বণিক পথার্ত্ত সক  
ই সাক্ষ্য দিয়াপন্ন হইয়াছেন। ইতি

সৌন্দর্য্য অপরাধ করিলে দণ্ড হয় না  
বলিয়া এদেশীয়দিগের যে সংকার ছিল,  
গত দুখবার তাহা লোকের হৃদয়ে দৃঢ়তর  
বলে বদ্ধবল করিয়া দিয়াছে। সেপোলি  
নসের পতন কালে তাহার সেনারা যেকণ  
স্থানিত ও রোবপনরশ হইয়াছিল, বরা  
খালির অরাজক কাণ্ডকারীর মুক্তি লাভ  
অবশ্যে এদেশীয় সমাজ ততোধিক স্থানিত  
হইয়াছে। হায়! তারতম্য কি দুখবার  
তে পতিত হইলেন!

চুরিরা যেকণ মত প্রকাশ করুন না  
কেন, আমরা সূত্রে কঠোর কহিতে পাতি  
হিলি হইতে বরাখালির হত্যাকাণ্ড হইয়া  
ছে। সাক্ষিদিগের বাক্যে আমাদিগের  
অনুমান মতঃ কহিতেছেন। এ প্রকার  
অত্যাচার, একপ মনঃসমানবস্বতাব, একপ  
অনুচিত ব্যবহার অন্য কোন দেশে কখন  
দৃষ্ট হয় নাই। করাসী বিজ্ঞোহে সহস্র  
সহস্র লোক এক এক স্থানে হত হইয়াছেন  
যথার্থ বটে, কিন্তু এগার শাস্তির, সময়ে  
কোন সভ্যদেশে ও সভ্যতম গবর্ণমেন্টের  
অধীনে দুর্বল ব্যক্তির উপরে একপ অত্যা  
চার হইয়াছে, ইহা কখন অবশ্য করা যায়  
নাই। ইতহাস একপ আর একটী দৃষ্টান্ত  
প্রদর্শন করিতে পারেন না। অত্যাচার  
তা কালের বিচারও ইহার নিকটে লজ্জিত  
হইয়াছে। মনুষ্য কোথ লোভার্থপরতা ও  
বৈরমিহাতননিষ্ঠতাদি দ্বারা প্রেরিত হইয়া  
যে সমস্ত কুকিয়া করিয়া থাকে, সেসবদ্বারা  
এক হিলির দ্বারা এক পদে সম্পাদিত হই  
য়াছে। হিলি গ্রহদাহ গ্রহবিলুপ্তন হত্যা  
বলাৎকার ক্রম হত্যাদি কোন পাপ ক্রিয়া  
রই অনুষ্ঠান করিতে বাকি রাখে নাই।  
অমানক যুদ্ধের পরও অস্বলীল সেনাগণ  
শত্রু দলের মৃত ব্যক্তিদ্বিগের অস্ত্যেতি  
ক্রিয়া করিতে বের নিত্য চুরাখা হিলি  
রহিমউল্লাকে এ সম্মান প্রদান করে  
নাই।

কি প্রমাণ ও কি মুক্তি অবলম্বন করি

রা চুরিরা হিলিকে হুজুর করিলেন, তাহা  
কুকিয়া উঠা আমাদিগের মুক্তিপথের স  
তীত হইতেছে। সাক্ষিরা কি বলিয়াছে?  
তাহারা কি বলে নাই যে এক জন ইউরো  
পীয় বাহার সময়ে উপস্থিত ছিল?  
সকলেই কি স্পষ্টাক্ষরে কহে নাই যে  
মরেনের লোক হইতে এই কাণ্ড হইয়াছে?  
অধিকাংশ লোকে কি হিলিকে হত্যাকাণ্ড  
বলিয়া নির্দেশ করে নাই? রাজিকার  
দালা ও হত্যাকাণ্ড হইয়াছিল; সূত্রে  
উল্লার নিকটে তাহারা ছিল, তাহারা  
সকলে শপথ পূর্বক বলিয়াছে যে তাহারা  
চক্ষে দেখিয়াছে হিলি বন্দক দ্বারা তাহার  
প্রাণ বধ করিয়াছে। তাহারা সূত্রে ছিল  
তাহারা যথার্থ বাহা দেখিয়াছে, তাহাই  
লিয়াছে, অর্থাৎ এক জন ইউরোপীয় দা  
লাহলে ছিল, কিন্তু সে হিলিকে তাহার  
তাহা তাহারা-অস্ত্যকার-ও পূর্ণ প্রযুক্ত স্পষ্ট  
দেখিতে পার নাই। হিলির প্রাণিধের  
বস্ত্রের বর্ণের বিবরণও সাক্ষিদিগের  
বাক্যের অনুমান বৈলক্ষ্য ২য় নাই।  
তবে বৈলক্ষ্যের মধ্যে এই হইতেছে  
কেহ বলে তাহার হাতে বন্দক ছিল,  
কিন্তু তাহা ছুড়িতে দেখে নাই, কেহ বলে  
বন্দকে সশীল ছিল, কেহ বলে তাহা ছিল  
না। এই বৈলক্ষ্য দেখিয়া কি রিরা কি  
কবাক্য মিথ্যা জ্ঞান করিয়াছেন?  
একপ হওয়া কি সৈন্যগিক মত? সেই সাক্ষ  
ণ বাহার সময়ে; লোক হত ও আহত হই  
তেছে; চুরাখা জীলোকদিগের অবমান  
না করিতেছে, ও দিকে গৃহ দাহ হইতে  
ছে; সে সময়ে কি সকলের চিত্ত সমান  
অবস্থায় থাকা সম্ভাবিত? উগ্রবিসমতা  
হেতু কি দুটিবিজ্ঞ হইবার সম্ভাবনা  
নাই? সকলেই কি সমান স্থানে ও সমান  
অবস্থায় থাকিয়াছিলেন? এই রূপ সামান্য  
লক্ষ্য হওয়াতেই সাক্ষিবাক্য যে সত্য  
তাহাই কি সপ্রমাণ হইতেছে না? সাক্ষিরা  
শিক্ষিত হইলে তাহানিগের বাক্যের বৈল



কণা হইবে কেন? কোন সাক্ষী তাহাকে চিনি বলিয়াছে, কেহ বা বলিয়াছে চিনি না; তাহাতে কি হিলির অপরাধের স্থান তা হইতে পারে? অমেরকে কি হিলিকে স্পর্শ বা অন্য হত্যাকারী বলিয়া নির্দেশ করে নাই? অমেরকে কি তাহাকে আদালতে চিনিয়া দেয় নাই? হিলির কি মরেনের সহিত পরিচয় নাই? সে কি সুরুলিয়াতে কখন যায় নাই? তবে যে কাল ও দুরত্বা ঘটনাক্রমে বৈলক্ষ্য হইয়াছে, কৃষকদিগের সেকপ হওয়াই মৈসরিক। আমরা অনেক কৃষককে দেখিয়াছি, তাহা দিগের কাল ও দুরত্বের জ্ঞান নাই। বিশেষ যতঃ এক অধিক দিনের পর তাহা দিগের সকল বিষয় অরণ থাকে। কি সত্যাবিত? যখন তেপুটি মাজিষ্ট্রেট বহিম বাবু সন্দেহ করিয়া হিলিকে পরিত্যক্ত হান, সে বারবার আপনার ঈ মাম ভাঁড়াইয়াছিল কেন? সে দোষী না হইলে নাম ভাঁড়াইবার কি প্রয়োজন ছিল? আমরা শুনিয়াছি যখন বহিম বাবু তাহাকে চিনিতে পারিয়া প্রেরণ করিবার চেষ্টা পান, তখন ঐ চেষ্টা বলিয়াছিল “বে মরেলপেজের উপরে পদাধি করিতে, আমি তাহাকে গুলি করি।

আর হিলি যদি দোষী না হইবে, সে কি অন্য পলায়ন করিল? যখন আ সাম্মে ধৃত হয়, তখন তাহার সহিত প্রায় ১৫০ টাকার অধিকেন ছিল, তাহা বিক্রয় করিয়া ত্রুণ ও চীনদেশে যাইবে সে এই সঙ্গপ করিয়াছিল।

এই সমস্ত সন্দেহপূর্ণ প্রশ্ন থাকি তে যদি হিলির অপরাধ প্রমাণ না হইল, কিসে যে প্রমাণ হইবে, তাহা ও আমরা বুঝিতে পারিতেছি না। আদালতে বহু সন্দেহ সাক্ষী উপস্থিত হইয়াছিল, তাহাদিগের মধ্যে দুই চারি জনের বাক্যের আংশিক কিছু কিছু বৈলক্ষ্য হয়, কিন্তু অনেকের বাক্যের বৈলক্ষ্য হয় নাই। যাদিগের বাক্যের বৈলক্ষ্য হয় নাই, যদি

কেবল তাহারা মাজি সাক্ষী থাকিত, তাহা হইলে জুরিরা কি করিতেন? কাউই না হইবে বা কিভাবে ইলিতেন যে সকল সাক্ষী হিলির কোন প্রমাণ করিতে পারে নাই? বে হইলে অমেরকে সাক্ষী থাকে, সেখানে সকল সাক্ষীর দ্বারা কি সকল বিষয় প্রমাণ হয়? এক জন ইউরোপীয় দালা হলে ছিল, কতকগুলি দালা প্রমাণ হইয়াছে; সেই ইউরোপীয় মরেনের লোক কতকগুলি দালা ইহা প্রমাণ হইয়াছে; আর কতকগুলি দালা প্রমাণ হইয়াছে, মরেনের সেই লোকে হিলি ও সেই হিলিই রহিম উজারি প্রমাণ বোধ করিয়াছে। বাস্তবিক রহিম উজারি প্রমাণ হওয়া ও দালাকর্তা কে, জুরিরা যদি পক্ষপাতপূর্ণাচিত্তে হয় অনুসন্ধান দ্বারা বাহির করিবার আন্তরিক চেষ্টা করিতেন, তাহা হইলে কি তাহারা

রীতির অনুসারে প্রমাণের বলাবল ও সত্যাসত্যতা বিচার করিতেন না? তাহা হইলে কি হিলিকে বর্ধা দোষী বলিয়া তাহাদিগের স্বপক্ষের হইত না? তাহাদিগের বাস্তবিক সে সকল চেষ্টা ছিল না, কেবল ত্রুণ রক্ষা করা হইয়াছে এই মর্মে। তাহারা হিলিকে অনুপ্রবেশ করিয়া হাতিয়া দিয়াছেন কি না, সে বিষয়ের বিচারে আমাদিগের প্রয়োজন নাই।

তাল আমরা যেন বীকের করিবার জুরিরা বে বিচার করিয়াছেন, তাহাই ঠিক, হিলি দোষী নহে, কিন্তু মনুষ্য হত্যার প্রমাণাদি যে সমস্ত বিষয় কাণ্ড ঘটিল, সে কে করিল? গবর্নমেন্ট কি স্থির করিয়াছেন? ডেবিলে কি অদৃশ্য রূপে ঐ সকল কাজ করিয়াছে? মাকিএবেল বলিয়াছেন কোন পাপকীরার অনুসন্ধান করিতে হইলে আগে আপন আপন জিজ্ঞাসা করিবে, তাহা করা কোন ব্যক্তির দ্বারা? এ যুক্তির অনুসারে রহিম উজারকে হত্যা করা দ্বারা কার? আগে এই বিবেচনা করা আবশ্যিক। এই ঘটনার পূর্বে মরেনের

সহিত রহিম উজার দুই জন বন্ধু দালা হইয়া যায়। তাহাতে মরেনের অধীনের কয়েকজনের মেয়াদ হয়। মরেন তাহাতে আতঙ্কিত হন। রহিম উজারকে জব্দ করা বরাবর তাহার আন্তরিক চেষ্টা ছিল, সে সেই জন্য আপন গাঁতি জন্য প্রকৃতি সুশিক্ষিতকে বিক্রয় করিয়া সামান্য কৃষি কার্য অবলম্বন করেন। দালায় সমস্ত যে মরেনের তরক লোক তখনো ছিল তদ্বিষয়ে কাহারও সন্দেহ নাই, এক জন ইউরোপীয় বে তদ্বিষয় ছিল, ইহাও কেহ অস্বীকার করিতে পারিতেন না। তবে সে ইউরোপীয় কে? মনুষ্য ইউরোপীয় তাহুরী! আপন দালা হলে উপস্থিত থাকিলে পাছে উত্তরকালে কোন বিপাকে পড়িতে হয়, এই ভাবিয়া মরেন বহু দামান্ত রাখ হইয়া অধীনস্থ লোক দালা কি কাজ শেষ করিয়া লয়েন নাই; হিলি কি তাহার অধীন লোক নহে? পৌলত চৌকিদার হত্যা কালে কি বলিয়াছিল? হিলি হইতে রহিম উজার সর্বনাশ হইয়াছে এই কথা কি সে বলে নাই? একপ প্রমাণ সত্য ও যে হিলি নির্দোষ হইল, আমরা কোন ক্ষমতাই ইহা বুঝিতে পারিতেছি না। ইউরোপীয়েরা এ পর্যন্ত ইউরোপীয়দিগকে বধ করিয়া মুক্তি লাভ করিয়াছেন বটে, কিন্তু এত দুর্ভাগ্য করিয়া যে হিলি মুক্তি লাভ করিবে তাহা অমের অগোচর। তাল সে যেন রহিম উজার হত্যাকারী বলিয়া দণ্ডিত না হইল, সে যে দালায় সমস্ত উপস্থিত ছিল, তাহার কি হইল? তাহার দণ্ড কোথায়? আমাদিগের স্বক্ষমতি বিচারপতি ও জুরিরা দ্বারা অধ্যক্ষতা ও উৎসাহ দানে কুকাচার্য্যর অনুষ্ঠান হয়, তাহাকে কি দোষী জ্ঞান করেন না? এখন অবধি কি এই দ্রব্য হইবে যে দালায় উপরে দালায় রাগ থাকিবে, সে বহুতে তাহার প্রমাণ বধ না করিয়া অন্য দালা কাইরা বিনা বড়ো অব্যাহতি পাই

আমরা স্পষ্টাভিধানে বালভেই আ-  
বোকেট জোরাল হিলিকে দোষী করি-  
র চেষ্টা পান নাই । জুরির নিকটে  
তিনি যে প্রকার বক্তৃতা করিয়াছেন তা-  
তে তাঁহার বাদীর ওকালতী করা না  
হইয়া হিলিরই ওকালতী করা হইয়াছে ।  
তিনি মরেলকে সাক্ষী মানিলেন না  
কেন, কেননা সাহেব এক বার মরেল ও  
হিমটের ঘটনিত মোকদ্দমার বিচার করেন,  
তাঁহার সাক্ষ্য গ্রহণ করিলেন না কেন ?  
তাঁহার বক্তৃতা মধ্যে উৎসাহের নাম গন্ধ  
নাই । তিনি এইরূপে কাজ করেন,  
তিনি কি গবর্নমেন্টের প্রতিনিধি ও পরা-  
সম্রাট হইবার যোগ্য লোক ? গবর্নমে-  
ন্ট বানী হইয়া আর একটা অন্যায্য করি-  
তেছেন । মর্গান সাহেবের নিকটে যশো-  
র হিলির বিচার হইবে যে কথা হিলি-  
ক হইল না কেন, তাহার কসাইটোলার  
সাক্ষ্য নাই বলিয়া কি হইল না ?  
বিচার যে অভিযয় অন্যায্য হইয়াছে  
হ' বলা বাহুল্য । একপ অবিচার  
প্রিমকোর্টেও হইবে নাই ।

— — —

হিলির মকদ্দমা রক্তাক্ত ইংলণ্ডের

পোকেটের গোচর কর

কর্তব্য ।

আমরা কতিপয়ে, হিলি রক্তাক্তের  
প্রাণ জাতি, ও মান এ সম্রাটের সহায়  
কসাইটোলার মহাপুরুষেরা কতিপয়ে  
নাই । এখন এবিসয়েস মীমাংসা পোষা  
হাইকোর্টে হইল না । হাইকোর্ট ক-  
ট টোলারই " সেনা সেচার " মধ্যে ঘটনা-  
ন । কলিকাতায় উচ্চতম আদালত প্রতি-  
ষ্ঠিত হইতে আমরা যে উচ্চতম আদালত  
সাহেব, তাহা ত বাস্তবিক সেই স্বরূপ  
ন । হিলির মকদ্দমা দেখিয়া বিস্ময় যাহ  
তেছে উচ্চতম আদালত এদেশের  
অনির্ভর সাধনের নিমিত্তই হইয়াছে, তাহা  
এই এক এবিসয়েস মীমাংসা দ্বারা  
নয়, ন্যায়পরতা, অপকৃতিত্বাদি তদা

হইতে অন্তর্হিত নহে । সেখানে কসাইটো-  
লার সাক্ষ্যাদিগণের আধিপত্য নাই । উ-  
চ্চতম পোকেটের পক্ষপাতহীন হইয়া বাস্তবিক  
বিষয় তদ তদ পরিত্যাগ বিচার করিয়া থাকেন ।  
উচ্চতমের নিকটে এবিসয়েস যথার্থ মীমাং-  
সা হইবে সন্দেহ নাই ।

এবিসয়েস ইংলণ্ডের গোচর করিবার  
আর একটি কারণ আছে । ইংলণ্ডেরী মনে  
করিতেছেন, ভারতবর্ষের আধিপত্য ইষ্ট  
ইণ্ডিয়া কোম্পানির হস্তান্তর হওয়াতে  
সেই সঙ্গে সঙ্গে অভ্যুত্থার ও অবিচারাদি স-  
মুদায় গ্রহণ করিয়াছে । তিনি দেখুন, ভার-  
তবর্ষবাসীরা কেমন সন্তোষে আছেন । মকদ্দ-  
মাসিদ্ধিগণের দন, প্রাণ, মান কেমন নিরাপদে  
রক্ষিয়াছে । কিংবা অর্থবল থাকিলে এখানে  
না চলে এমন কর্মই নাই । এখানে যেমন  
পুলিস তেমন বিচারকতা, তেমনই জুরি  
সকলই সমান । প্রবল ব্যক্তির বিশেষত্ব ইষ্ট-  
রোপীয়দিগের সুখাপেক্ষা না করিয়া অগত্যা  
পাতে কেহই প্রাণ কাম করিতে পারেন না ।  
স্বাক্ষী ইষ্টরোপীয়দিগকে দুর্দম দাকণ ব্যাজের  
স্বাক্ষ্য জাতিরা দিয়া এদেশীয়দিগকে উৎসাহ করি-  
বার নিমিত্ত কি ভারতবর্ষের শাসন তার গ্রহণ  
করিয়াছেন ? অগত্যা করি এই নিমিত্ত ইং-  
রাজতন্ত্রকে তুল্য সাগর পার করিয়া এদে-  
শে আনিয়াছেন ? ভারতবর্ষ নব্বন্ধে এই কি  
উচ্চতমের কলন্য কল্প ? যদি উল্লিখিত  
প্রকার অত্যাচার কাণ্ড হইয়া অমনি অমনি  
গোচর ভারতবাসিদিগের দন প্রাণাদি রক্ষার  
আর উদ্দেশ্য কি ? আমরা এই দিন যে ঘণ্টা-  
খিতাবে নিম্ন ৬ বিটস গবর্নমেন্টের প্রশং-  
সা ও মন্য ফারত্যা যে প্রশংসা ও গর্ব কো-  
রু হইল । যবনাধিকারেও একপ ঘটনা  
নিবল ছিল । কোনো এক যে অর্থ  
কাজ সেখানে অনেক কুজিয়ায় প্রবর্তিত  
কবে সেই কি প্রশংসা দোষী নহে ? তাহার  
দন না হইলে কি কুজিয়ার নিবারণ সম্ভাবনা  
আছে ? উপস্থিত বিষয়ে তাহা বৈ হইল ?  
সকল ব্যক্তির মন হইয়াছে, উচ্চতমের  
আমরা কি ? তাহা এই মাত্র নিবেদন  
আমরা আইলান, দানী করিলাম, পারে  
কোন উপায়ে উপাশ্রিত হয়, সাহেব

রক্ষা করিবেন । অপরাধি জাতি প্রযুক্ত নাহে  
ভরসা তাহারা অর্থ মোত নব্বন্ধ করিতে  
পারে না । ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টে কিংবা সেই  
মূল দোষ সংশোধনে যত্নবান নহেন ।

উপস্থিত বিষয়ই ইংলণ্ডের গোচর  
করিবার ক্ষেত্র আর এক বিষয় জাহকে জা-  
নাম আবশ্যক । জুরি প্রথাটি যেন আইন  
দেশে না থাকে । জুরি প্রথা প্রমাণগণের  
ধীনতা ও সবিচার মূল যথার্থ বটে, কিন্তু তাহা  
ন তাহার এই রূপ চূর্ণনা হইল, তখন তাহা  
এদেশ হইতে বহু নীত অন্তর্হিত হয়, ততই  
মকদ্দমের বিষয় ।

উপস্থিত বিষয় বেধে ইংলণ্ডের গোচর  
করিতে হইবে, আমরা তাহারও প্রকার  
ভেদ করিয়া দিতেছি । সর মর্গটকে তুলে  
সের বেলায় বেধে আবেদন কর । হইয়াছি-  
ল, তাহাতে প্রয়োজন নাই । হিলির মকদ্দ-  
মার বাস্তবিক রক্তাক্ত আদ্যোপাধ্য পুস্তকাকারী  
মুদ্রিত করিয়া ইংলণ্ডের প্রধান প্রধান মো-  
কদ্দমার নিকটে প্রেরণ করা উচিত । তাহাতে  
জুরির বিচারের কথা যেন বিশেষ করিয়া লি-  
খিত থাকে । বহু দিন আমরা ইষ্টরোপীয়-  
দিগের তুল্যকরতা লাভে সমর্থ না হইব  
এবং বহু দিন ইষ্টরোপীয়দিগের সমসংখ্য  
এদেশীয় লোক জুরির গলে প্রতিষ্ঠিত না  
হইবেন, তত দিন জুরি প্রথা দ্বারা এদেশের  
অনিষ্ট বিনা ইষ্টলাভ সম্ভাবনা নাই । কসাই-  
টোলার জুরিদিগের যে কেমন রূপ, তাহা  
অনবেদন উত্তম সাহেবের একটি সংক্ষিপ্ত  
বাক্য দ্বারা পরিচিত হইয়াছে । তিনি বলিয়া-  
ছিলেন, " অপরাধ করিয়া যদি আমার অ-  
ব্যক্তি পাইবার আশা থাকে, তাহা হইলে  
আমি সুপ্রীমকোর্টের বিচারই মনোনীত  
করিব । "

সুপ্রীমকোর্টের এসকল হওয়ার হাইকোর্-  
টের মহিমা উহার ভারতম্য নীতির একটি  
ইচ্ছা আমাদিগের হৃদয়ে উদ্ভিত হইল । স-  
বিচার প্রদানকল্পে এই উচ্চতম আদালতের  
কেহই কম নহেন যেরূপে তাহা সাহেব  
বাললাদেবের নীলবর্ণীভিত প্রমাণগণের  
চুরন্যার বিষয় সাধারণের গোচর করিবার  
চেষ্টা করিয়াছিলেন, সেই অপরাধে ততপুঙ্



প্রায়শ্চকোট তাহার কারাবাস দণ্ড করেন। আর হাইকোর্ট প্রজার সর্গস্বাক্ষরী তুরা-  
স্বাক্ষরকৈ দৈন্যপ্যমান প্রমাণ সম্বন্ধে ও বিনা দণ্ডে  
অব্যাহতি দিলেন। হাইকোর্ট হওয়াতে  
তারতবর্ধের বে মহোপকার লাভ হইয়াছে,  
এই প্রসঙ্গে টেনশনের মোক্কেলা তাহাও  
জানিতে পারিবে।

প্রস্তাবিত পুস্তক মধ্যে আর একটি বি-  
য়ের উল্লেখ করাও আবশ্যিক। বঙ্গদেশের  
প্রজারা বন্ধু ও আত্মাদি প্রয়োগে পটু নন,  
এবং তাঁহাদিগের ঘরে আত্মাদি থাকিবারও  
যে নাই! পক্ষান্তরে বঙ্গদেশবাসী উত্তরো  
পীয়েরা সঙ্কল্পে স্বর্গে বন্ধুত্ব রাখিতে  
পারেন, তাহার প্রয়োগ বিষয়ে তাঁহাদিগের  
বিলম্ব টেনশন ও আছে, একদল লোক বন্ধুত্ব  
সময়ে সময়ে মহতী অনর্থ ঘটনা হইয়া থাকে  
নরেন্দ্রের লোকদিগের বন্ধুত্ব ব্যবহার নি-  
শিদ্ধ হইত, তাহা হইলে কি গুলির বান্না রহি  
মইল্লার প্রাণবধ সম্ভাবনা থাকিত? উত্তর প  
ক্ষে তুল্য ব্যবহারই উচিত। হয় এককালে সক  
লেরই অস্ত্র ব্যবহার নিষিদ্ধ হউক, ন বা  
সকলেরই অস্ত্র ব্যবহার অসম্মত হউক। নি-  
স্ত্র প্রজামণ্ডলীর মধ্যে অস্ত্রধারী উত্তরোণী  
যেব বাস কি ভয়ঙ্কর ব্যাপার নয়?

### প্রাপ্ত।

১। এখানে একটি দুঃখ প্রকাশ্য সম-  
স্তাপিত হইয়াছে। ইহার প্রারম্ভ অতি অস-  
ত্বিন হইয়াছে, বসিষ্টে কি অন্যান্যি দাসত্ব  
করনাই। আগানী কল্য যজ্ঞলবার ইহার চতুর্থ  
অধিবেশন হইবে। ৬। অস্ত্রের আত্মাদির বিষয়  
এই যে বিরুদ্ধতাবলম্বী মহাপুরুষেরা ইহার  
অন্তর্ভুক্তগণকে প্রদ্য। ১। কোন বিজ্ঞানিক  
প্রদর্শন করেন নাই। ৩। ৪। অসুপদিনেই পরী-  
ক্ষা হয় না সত্য বটে 'কয়' ভূতাদেশনে বেকপ  
পরিজ্ঞান লাভ করা গিয়াছে এবং অস্ত্রতা নো-  
ভা মহাপ্রবণের বেকপ বিজ্ঞিত চ.বস্ত্র, ত্রাঙ্ক  
১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।

কেহ কেহ এসজার বাতারাও আরও করিয়া  
ছেন এবং কোম সত্যকে সম্পূর্ণ ঋণে ত্রাঙ্ক-  
ধর্মাবলম্বী আনিয়াও কেহই প্রকাশ্যে কোন  
বিরাগ প্রদর্শন করিতেছেন না, ইহা কি  
অত্যন্ত আত্মাদির নহে? হে! জগদীশ!  
এ তোমারই অপার ২ পার মহিনা! এই  
বিশুদ্ধ ধর্মের জয়পতাকা এখানেও যে  
উজ্জ্বল হইবে ইহা কে ঋণেও পারিতেন!  
২। এখানে একটি ইংরেজি বঙ্গবিদ্যালয়  
বহুকাল যাবৎ প্রতিষ্ঠিত ও কয়েকবৎসর যাবৎ  
গবর্ণমেন্টের অঙ্গুষ্ঠাও প্রাপ্ত হইতেছে।  
কিন্তু তাহার জীবন্তি কিছুই হয় নাই বলিলে  
অত্যুক্তি হয় না। প্রায়ই দিনদিন ইহার  
মূলফয়ই হইতেছে। ই. ১। কোন সাহায্য কা-  
রিগণের যত্নশীলতাও অত্যাধিক কোন হিতকারী  
কার্য অমতে সিদ্ধ হয় না। এই বিদ্যালয়টির  
যে যে লোক সাধারণের চৃষ্টিগোচর হইতে  
আরও হইতেছে, অনুভব কি আশ্চর্য মাত্রও  
যদি গবর্ণমেন্টের কারিগোচর হয় তাহা হইলে  
কি আর তাহারা ইহার সাহায্য দানে অকা-  
রাখিবেন? প্রত্যুত সাহায্যদান রচিতই  
হইবে। অতএব স্কুলটির কার্যকারক হেত  
বাটার প্রচেষ্টার সকলকেই আমার দায়িত্ব  
নিবেদন এই দ্বারাতে ইহার বার্ষিকপ্রণালী সং-  
শোধিত হয় তাহাও প্রতি কাহারই অবশ্য না  
থাকে।

৩। অসুপদিন হইল এখানকার দুশোকীটি  
উদ্বিগ্ন-গিয়া আপাততঃ ঘোষ গানের চৌকী  
ভুক্ত হইয়াছে। এটি বৎ ভাল হয় নাই। এই  
পেরপুর স্থানটি নিতান্ত ক্ষুদ্র নহে। এখানে  
মহানদীতে কয়েকটি জমিদারের অধিবেশন,  
ইহাদের নিকটস্থ না থাকিয়া সুমসেক চৌকীর  
চিরস্থায়ী ভগ্না নিতান্ত অসম্ভাবিত বে, হ  
হইতেছে।

৪। এখানকার খানটি মল্ল নয়, আশুনি  
দায়গা নাহেবও হিটেশী ও সত্তৎসাহী বটে  
ন। কিন্তু সম্পাদক মহাশয় একটি বিষয় এক-  
ণও উল্লেখ করি নাই সেইটি আমার আজ্ঞাকার  
প্রদান উল্লেখ্য, সে এই যে এখানে আসি  
য়াই স্থানিগাহিলাই একপে ২০ আইনগাহি  
চৌকীদারি ঠাকুর বসিয়াছে এবং পুলিশ নাম-  
ধারি কতিপয় চৌকীদার রক্ষক নিদিষ্ট হই-

য়াছে একপে সকল বিষয় ভাল করিয়া দেখা  
গেল, এ কেবল নামে গোয়াস্ত্র আশানি ভ-  
ক্ষণ। বিখ্যাত (পুলিশ) পুলিশদের কর্তব্য  
নিম্নতঃ নিবন্ধন অস্ত্রতা অসম্পন্ন বরং পূর্ণ  
পেকা অধিক রেশই সহ্য করিতে হইতেছে  
অধিকতঃ অসম্পন্ন উহাদের কাহাকে "পু-  
লিশ" না কহিরা "চৌকীদার" বলিলে-তা-  
হাকে বেণীগারের বাইতে হয়। সুতপূর্ণ  
ইন্ট্রাফিট্রের নিকটে উক্তরূপ একটি মো-  
কদনা হইয়া অস্ত্র কয়েকজন জেসফোগ  
করিয়াছে।

পুলিশগণ (উক্ত নাম ধারী চৌকীদার-  
গণ) কেনই যে তাহাদের কর্তব্যের প্রতি মনে  
যোথী না হয় তাহা বুদ্ধিগ উঠাও মহানায়  
এককোমালপুরের জাট-ট (একপে ডিপুটী)  
সাহেবের একিময়ে মনোযোগ করা অতিশয়  
কর্তব্য হইয়াছে ইহাদের (পুলিশদের) অসম্পন্ন  
যোগিতায় একপে তা রাখা দিয়া মুখ নান  
কত না কহিরা চিনিবার মো নাই।

এই উক্ত। চৌকীদারি টাক, নিবন্ধন  
করিবার সময়েও কয়েকজন পক্ষাউত  
স্বর বৈরনির্বা তনের পরা কাটা প্রদান ক-  
রাছেন, তন্নিবন্ধন যে কত গরিব বেচারা ম-  
শাইতেছে তাহার প্রতি কৃপাক্ষেপ বহু  
হুটি নাই। ডি, মাজিষ্ট্রেট সাহেবও বুদ্ধিগ  
রাহিয়া পক্ষাউত নিমোণ দারন, আমদা  
কি বলিল:

যাহা হউক সুতপূর্ণ ডিপুটী সাহেব ব-  
গুলির সংস্কার করান আবশ্য করিয়াছেন কিন্তু  
তাহার কাহা, আনি ন বেন মধ্যে মধ্যে  
গিত থাকে স্থানীয় জনগণ তো টাক নি-  
তিলাইও গৌণ করিতে পারেন না, পুলিশগা  
টাক অসম্পন্ন কার্যে বিলম্ব দক্ষ, এখানে  
পুলিশ প্রহরী নিযুক্ত হওয়া অস্বদি দুবি ডা  
কাইতিরও অত্যন্ত প্রাচুর্য, হইয়াছে  
পূর্বে সম্পন্ন ব্যক্তিগণ লাঠিয়াল ও বন্ধুকধারী  
বরকন্দা চাকর রাগিয়া প্রহরীর কাহা নি-  
কীহ করিতেছেন। কেহ কেহ অম্যাপি খন প্র-  
ণের করে তাহাই করিতেছেন।

৫। ১০। আনির জমীদার শ্রীযুক্ত বার  
গোবিন্দকুমার চৌধুরী মহাশয় সম্প্রতি একটি  
কটোপ্রাক আনাইয়া অস্ত্র ব্যক্তিগণের

বি ফুল। ধূমে পাকিরাছেন। বাহা হটক  
তিনি এই নিষিদ্ধ সকলের খবরবাহী বটেন  
সেরপুর

১২৬৬, ১ মাস।

## বিবিধ সংবাদ।

১২ ই মার্চ সোমবার।

গভ মঙ্গলবার লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বাকীপুত্র  
ক মঙ্গলবার করেন। ঐ সময়ে বেহারের বাব  
দার তাম্রকলার ও সন্তোষ লোক উপস্থিত  
ইয়াছিলেন। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বেহারের সু  
ন পুলিশ দর্শন করিয়া গবর্নর জেনরলের  
হিত কাশী পর্য্যন্ত গমন করিবেন।

ঢাকাপ্রকাশ বলেন, সাতারের এক জন  
জন এক স্বাক্ষরের পুস্তকে হত্যা করিয়া  
চারালয়ের গুণে অব্যাহতি পাওয়াতে খাম  
টয়ের ব্যবহারী অসং লোক কুকর্মে উৎ  
সর্গী হইয়াছে। তাহারি প্রকাশ্যরূপে বলি  
তছে যখন এক ব্যক্তি হত্যা করিয়া মুক্তি  
লাভ করিল তখন সাধারণ চুরি করিলে কাছা  
ও দণ্ড দিবার সম্ভাবনা নাই। যথার্থ কথা,  
চারালয়ের দোষ সমাজে বর্জ্য, কলিকাতা-  
জুরিগণের বিচার দোষে ইউরোপীয় দিগে  
অত্যাচার স্থিতি হইতেছে।

হিন্দুপেট্রি যট প্রবণ করিয়াছেন মার্চমাসে  
শেষ পর্য্যন্ত ভারতবর্ষীয় খ্যাতনামক সভায়  
অধ্যয়ন করিবেন। ইহার মধ্যে সরকারী ট্রিনিটি  
ন ১৮৬৩:৬৪ অবধি আর ব্যয়ের হিসাব  
প্রকাশ করিতে পারেন।

উক্তপত্র বলেন, কিছুদিন পূর্বে ট্রেবর  
মর্দান সাহেব বারু দিগবর মিত্রের মোক-  
দমায় জমীদারের ন্যারেবেরা মৌরসী পাট্টা  
তাহা সুস্থিত হইবে বলিয়া যে আত্মা দি  
ছিলেন প্রথমতঃ বিচারপতি সন্তোষ তা  
থ বিক্রয় হস্ত প্রকাশ করিয়াছেন, জন,  
লর সাহেব নামক এক জন জমীদার ন্যারে-  
য় মৌরসী পাট্টা দিবার কসতার বিগরে  
শীল করাতে বারু দিগবরমিত্রের মোকদ-  
ম পুনর্বিচার হইতেছে। এ আত্মাটি রহি-  
করা অকল্য কর্তব্য, অমখা প্রত্যয়ক  
য়েবের হাতে পাকিয়া অনেক জমীদারের  
নির্দেশ হইবার সম্ভাবনা

অন্য টৌনহালে ওকালতির পরীক্ষা আ-  
রম্ভ হইয়াছে। ট্রেবর, গুড্রি, গ্রেপল  
ডিকটা, ও বোকেট সাহেব পরীক্ষণপান  
নিযুক্ত হইয়াছেন।

উত্তরপশ্চিমাঞ্চলের মিজামত আদালত  
আজা দিয়াছেন যেন সরাই বা কোটেলে  
কোন ব্যক্তি অত্যাচার করিলে অধ্যক্ষেরা তা  
হাকে বহিষ্কৃত করিতে পারিবেন। যদি তিনি  
সহজে চলিয়া না যান তাহা হইলে পুনরাব  
লোকেতা তাহাকে ধর করিয়া দিবে। ওই  
আজা বলবর্তী করা উচিত ডাক হুদ  
আর কোটেলের শাস্তিভঙ্গের কথা আদালত  
গের অভিযোগের হইবে না।

দিল্লীগেজেট খাইরাবাদের মেলায় জীৱজি  
দর্শনে বিশেষ হর্ষ প্রকাশ করিয়াছেন। তিন  
বৎসর হইল এই মেলা আরম্ভ হইয়াছে। এসং  
সর সর্বস্ব ১৪২,৮৪৮ টাকার প্রবের বা  
হইয়াছে। ইহার মধ্যে ৩২:৫১ টাকার গো  
মহিন অথ প্রকৃতি বিক্রীত হইয়াছে। প্রব  
মেন্টের উৎসাহ না থাকিলে বাণিজ্যের পরি  
শেষ জীৱজি হয় না। পূর্বকালে মিসবনে  
বিদেশে গিয়া বাণিজ্য করা অসম্ভব বলিয়া গ  
গণিত হইত কিন্তু রাজা টলেমির উৎসাহ দানে  
বাণিজ্যের এত জীৱজি হইয়াছিল যে দেশ  
ল তাহার অনেক শাসনের ব্যয় চলিত। ওই  
সকল কারণেই আমরা সর্বদা বলিতেছি  
তবর্ষীয় গবর্নমেন্টে গরি বখোচিত উৎসাহ দে  
ভারতবর্ষ আনিবার বস্ত্রের বাণিজ্য এক  
কিয়া করিতে পারেন।

আল হাবাব গেজেট বলেন, আগন্ত  
উক্ত নগরে এত লোকের আনন্দানি হইয়াছে  
যে হোটেলের স্থান হয় না। কাশী পর্য্যন্ত  
লগ্নে খোলাতে বিস্তর লোক কমিগাতা হই  
তে তথায় গমন করিয়াছেন।

উক্তপত্রের এক জন সংবাদ দাতা বলেন  
বীদায় অরেক জতিশয় প্রাচুর্য্য হইয়াছে।  
তথায় যখনও তাঁরে একটি হুতম ট্রান্সপে  
হইয়াছে।

১৩ ই মাস মঙ্গলবার।

ইংলিসমান মরিসস হইতে সংবাদ পাইয়া  
ছেন তথায় বিস্তর চিনি প্রস্তুত হইয়াছে  
কিন্তু সে সমুদায় বিক্রীত হইবার ডাকুল সভা

বনা দেখা যাইতেছে না। মরিসস  
একটি বন্যাসী উপনিবেশ হইয়া উঠিতেছে  
সংস্কৃত লেখের এক জন জমীদার, হরকরা  
নিষিদ্ধ করেন, সন্তোষ তথায় পতিত হু  
বিক্রয় হইবার সময়ে কয়েকটি কুদ্র লাঠি প্র  
এ হারে ১৮০০ টাকা, নীল, ব হইয়াছে। কি  
একাত্তর। একটি হুতম লাঠির প্র  
এক, ১০ টাকার অধিক লাভ হয় না  
তাহার কারণ এই এক ব্যক্তি প্রথমে তাহার  
জন্য ব্যবসাস করেন। অপর এক জন আ  
জন করিয়া বিক্রয়ের সময়ে আপন আবেদন  
পত্র ফিরাইয়া লন। দ্বিতীয় হইয়াছে যে কুদ্র  
বিশেষ আবেদনকারী উপস্থিত না থাকে  
তাহার নীলাম হয় না। শুভরাং উক্ত ৩০  
একাত্তর প্রতি একারে ২০ টাকায় বিক্রীত হয়  
পত্রের এক জন মান করেন আবেদন কারী  
এক পদাশী হইয়া এই প্রকারে গবর্নমেন্টে  
উপস্থিত হইলেন, সবে করিয়া আরম্ভ।

কিনিল বলেন, বিজয়নগরের দ্বার  
বিস্তর সহস্রসংখ্যক বন্যাসী হইয়াছে। হইতে  
কাশী গমন করিয়াছেন।

এক বর আনন্দোদয়নস্থিত সংবাদ  
দাতা বলেন, আগন্তবর্তী হুতম আফি  
এক প্রস্তাব ও মোকদমা নিষিদ্ধ হইতেছে  
য, ১৪৩ শাসনের গোলাধ কিছু করিতে  
পারে এই প্রবর্ত প্রবর্ত দেওয়া হইয়াছে  
সব চারজন উক্ত ১৬ লক্ষ টাকা দিয়াছে  
তাহার দাত লক্ষ টাকার সনাপনের ব্যয়  
হইতেছে। বারিক, মিশ্রাণে ৬৩ টাকা  
হইবে। সনাপণ যে আনন্দোদয় আবেদন দু  
করুন

খলিয়া হইতে টেলিগ্রাফে সংবাদ  
রাছে ১৭ ই জানুয়ারি লেপ্টেনেন্ট  
ব্রহ্মোদীদিকে স্মৃতিযোগে  
করিয়া কুদ্র নগর হইতে পৌজ  
লেপ্টেনেন্ট কিংজি আনন্দ ৪০

চাকারি ১৭ চাকারি ১৭  
সাতসের প্রবর্তনা  
ল কপেল বিচার  
গের এত  
বাস্তব  
১৭ অধ্যয়ন  
১৭ অধ্যয়ন



গবর্নমেন্টের সেনারা বঙ্গবন্ধুকে সে গুলি লটে  
করা হয়। দ্বিতীয় মর্কট গুলিও  
সংগঠন করে। ৩৪ জন  
সংগঠন করে। ৩৪ জন  
সংগঠন করে। ৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন  
৩৪ জন

নজর না পাওয়াতে গবর্নমেন্ট করেছিয়ারা  
কাজ উত্তেজিত। গবর্নমেন্ট খোঁকার করিরা-  
পাবলিক ওয়ার্কে যত কাজ ব্যয় হয়,  
তত লাভ হয় না। এই ডিপার্টমেন্টে কি ভদ্র-  
লোক প্রবেশ করেন না, না, যে লকার যার  
সেই থাকেন হয়

১৯৬৬ সালের লোকেরা তত্ত্বাত্ত্বিক  
গবর্নর নর হেনেরি ওয়ার্ডের এক প্রস্তাবময়ী  
প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন।

একশ্রেণী কার্মিকর্গীর এক চীনে গিয়াছে  
যে সজুরী তাহানিগের এক চেটিয়া হইয়াছে  
বলিতে হয়। তত্ত্বাত্ত্বিক ব্যবস্থাপক সভা তিনি  
এক জন দেন প্রত্যেক চীনের নিকটে মানিক  
২০০ ডলার কর লওয়া হইবে। বিচারালয়ে  
এবিধের মালীশ হওয়াতে ব্যবস্থাপক সভার  
আজ্ঞা রুটিত হইয়াছে। মাসে মাসে এই রূপ  
সংস্কার নিয়ম না করিলে ব্যবস্থাপক সভার  
গোপন থাকে কেন?

২০, জি. কর্জন নামক মাস্তাজ রেইলও  
এর এক জন বন্দ্যচারী ১৭৮ টাকার এক হস্তি  
সাল কল্যাত তাহার ১৫ মাস মেয়াদ হই-  
লিবে।

বোম্বাইস্টেডে'রিবিউ বলেন উক্ত বন্দর  
রূপ কর্তব্যের জন্য গবর্নমেন্ট করেক খানি  
৩০০০ টাকা মাত্রের আদায়ের মায় করিতে-  
ছেন। কিন্তু ভারতবর্ষীয় রণতরিকার কো-  
র্পাসের তাহার অধ্যক্ষতা করিতে সম্মত  
নহেন। উহার এই কার্যে অপমান জান  
করেন না কি?

এই ফেজারি তুলনা ও আলিগড় প-  
থিক রেইলওয়ে খুলিবে।

গবর্নমেন্টে আঁকা দিয়াছেন সুন্দরবন,  
মাকড় ও আসানে তাহার আবাদ করিবেন  
বসিয়া ১৯ বৎসর মেয়াদে ফসি লইয়াছেন।  
গরু যদি উচ্চ করেন ফসি দিয়া ফসি  
নিকর লটেতে পারিবেন। সুন্দরবনের ফসি-  
লসার রা এই সময়ে একবার গা কাড়িয়া  
সংস্কার হইতে উচিত হউন।

কলিকতার রাজা মাল্যাজের জির জির  
সংস্কার দিয়াছেন উৎসাহ বন্দ্যার্থ ১৫০০  
টাকা দিয়াছেন।

আমরা খনিলাম সর চার্লস ট্রিবিয়ান

ভারতবর্ষীয় সভার প্রতিনিধি গণের  
বঙ্গদেশের বিদ্যালয় সংস্কার কথোপকথন  
করিয়াছেন। ভারতবর্ষীয় সভা যদি  
হিদির নৃশংস দুর্কৃত লোকসিগের হস্ত  
মুক্ত দেখিতে চাহেন, তবে একটি  
শিক্ষাপ্রণালী স্থাপন চেষ্টা দেখুন।

হিল্ল পত্র বলেন দেয়াছেন গবর্নর  
রলের শরীর রক্ষক সেনাদলের এক  
নির্দিষ্ট হইতেছে। গবর্নর জেনরল সিং  
হইতে দেয়াছেন গমন করিবেন।

কমিসরিএট কমিসনের কার্য শেষ  
যাচ্ছে। তাহানিগের রিপোর্ট শীঘ্র প্রচার  
হয়, এই আশানিগের ইচ্ছা। সর চার্লস  
ট্রিবিয়ান এক বার পাবলিক ওয়ার্কে-  
নিগে কি দৃষ্টি করিবেন না?

গত বৎসর কলিকাতায় ১,১৬,২২৭ গ্যালন  
খেনোম ও ১০২, ৫৩২ গ্যালন রুম বিক্রীত  
হইয়াছে। বঙ্গদেশে একশ্রেণী ৬৫টি ভাটি হই-  
য়াছে। একা কলিকাতার রুম ও খেনোম  
গতবৎসরে ৩,৮৬,৭২৭ টাকা লভ হইয়াছে।  
আমরা দেখিতে পাইতেছি গবর্নমেন্টে সর  
উৎসাহ দিয়া প্রজাতিগকে মাতাল করিতে  
ছেন। যৎকিঞ্চিৎ আর্থ লোভে প্রজাতিগকে  
এই রূপে উৎসাহ করা কি সত্য গবর্নমেন্টের  
উচিত।

রাধপুত্রের নবাব লাক্ষ্মীনারায়ণের মৃত্যু  
নিগের সহায়তাব জন্য ১০,০০০ টাকা প্রদান  
করিয়াছেন। সম্রাতি বীরভূমের বিখ্যাত জম  
মালিক সাহেবের যত্নে তথায় এতৎ সংস্কার  
এক সভা হইয়াছিল।

আমরা সংবাদ ভারত বঙ্গ নামক এক খানি  
সুতর সংবাদ পত্রের করেক সংখ্যা প্রাপ্ত হই-  
য়াছি। ইহা বিশ্বমনোরঞ্জন যত্নে মুদ্রিত  
হইতেছে। পত্র খানি চিরজীবী  
হইয়া ভারতের বঙ্গভা করেন, এই আশা-  
নিগের আর্থমা।

কিনিক বলেন গবর্নরজেনরল ১ ফেজ-  
য়ারি কলিকাতা হইতে পাটনার দাইবেন।  
তথায় এক দরবার করিয়া পরে কাশী ও  
অখালার দরবার করিবেন। অখালার পর  
বের লোকনিক গবর্নর লর্ড এলগিনের  
সাক্ষাৎ করিবেন। গবর্নর জেনরল গ্রীষ্ম কাল  
সিঙ্গিলার পর্কতে আতিথ্য করিবেন, এব

১৮১৫ অব্দের শীতকালে কলিকাতার এত্যাগমন করিয়াছেন। তারতবর্ষের গবর্নর জেনারেল সিংহের কি আশঙ্কায় এই কাল হইবে?

উক্ত পত্র হলেন বারু শঙ্করনাথ পণ্ডিতের সনৎ অম্বাশিও আইসে রাই, আপাততঃ তাঁহার ত্রিশকর স্বর্ণ বানের ব্যার হইয়াছে। তিনি বিচার কাণ্ড অথবা ওকালতি এতুইয়ের কিছুই করিতে পারিতেছেন না। ডেই সেক্রেটারি তাবিরাহিলেন তারতবর্ষের গবর্নরকে তাঁহার নিয়োগপ্রদ প্রদান করিলেন, কিন্তু তাঁহার সিংহের সে অমতা না খানাত্তে ইংলণ্ডে এ বিষয়ের নিমিত্ত লেখা হইয়াছে।

টাইমস অব ইন্ডিয়া পারিসন্ড সংবাদ দাতা বলেন যদিও ফ্রান্সীসরাই এতি বৎসর নিজ ব্যয়ের জন্য এক কোটি চত্বিশ লক্ষ টাকা পাউন্ড খাটেন, তথাপি তাঁহার ও রাজার এত ব্যয় যে ইহাতে কলান হয় না, মধ্যে মধ্যে ইহা সিংহের নিকটে কর্ত্ত করিতে হয়। সঙ্গী টের ১৩ টি বাগি ও বিস্তার অর্থ আছে। রাজার বহু অলঙ্কার প্রভৃতিতে তদানিক ব্যয় করেন। দুই নেপোলিয়ন যেমন রাজনীতিজ্ঞ তেমন বাগ্মশাস্ত্রজ্ঞ নহেন।

মাজ্জাজের বিচারালয়ে এক জন গবর্নরকে রিপোর্টার নিযুক্ত হইয়াছেন। ইনি বাবতীর মোকদ্দমার বিবরণ লিখিয়া প্রকাশ করিবেন। আশ্রয় এ অপরাধের কারণ বুঝিতে পারিতেছি না। সংবাদ পত্রের রিপোর্টারেরা তবে কি করেন?

কাঞ্চলিক দল বহিষ্কৃত এক ব্যক্তি সন্ততি বাইপিনের কাঞ্চলিক গিরজার প্রবেশ করিতে গিরজার বাবতীর লোক তাঁহাকে তদানিক প্রহার করেন। পুলিশের লোকেরা যখন সময়ে আসিয়া উপস্থিত না হইলে তাঁহার প্রাণ নষ্ট হইবার সম্ভাবনা ছিল। গিরজার পুরোহিত এই বিষয়ে উৎসাহ দিয়াছিলেন বলিয়া তাঁহার দুই শত টাকা জরিমানা ও দুই শত টাকার মুচলকা লওয়া হইয়াছে। (বে খব্দ যে পরিমাণে আত্মসম্মান তদবলবিধিধের সেই পরিমাণে অসত্যতা প্রতিগোচর হয়।

১৮ই মার্চ শুক্রবার।

সিউনিমিপাল কমিসনরের কলিকাতার ইংলণ্ড প্রণালীর (ডেপুটি) জন্য আট

লক্ষ টাকা কর্ত্ত কার্য্যে বিজ্ঞান দিরাছেন। তারতবর্ষের সত্য ১৯৬১ নিকটে আবেদন করিয়াছিলেন। তাঁহার যে কমিসন প্রদান করেন, তাহার কি হইল।

হরকরা দুর্ভাগ্য হিলিকে নয় মাস লাজত রাখা অন্যায় হইয়াছে বলিয়া প্রদেয় করিয়াছেন। তিনি যশোহরের মাজিষ্ট্রেটের প্রতি দোষারোপ করিয়া এতদেফতে সিংহের চরিত্রের প্রতি দোষারোপ করিয়াছেন। হার মতে ইউরোপীয় সিংহের ক্ষমতা খানিকটা স্বাধীনতা অব্যাহত থাকিবার সম্ভব নাই। অবশ্য মল গরুর জন্য এতদেফতে ৬০ ককে বধ করিয়া আবার হাজত কিংবা হো লডার্ন সভাকে এবিষয়ে আবেদন করিতে বলা হইল।

সিঙ্গুদেশস্থ হারদরাবার মন্ডরে ১৭৭৭নেকে গুলানে ৬০০ টাকার অহিকেন রাখা হয়। কিন্তু সন্ততি বাক খুলিয়া লেখা হইয়াছে, তাহা কেবল খুলিতে পরিপূর্ণ রক্তিয়াছে। পি গীলিকা অহিকেন রাখা। কি খুলি তালরা বাখিয়াছে?

পুন্য অবজারবর বলেন অপসরিন হইল খালাতে পুলিশের লোকের সহিত করেন ৩০ আকিসরের এক ঢাকা হইয়াগিয়াছে। সম্মাননের এক বেসেডাব স্রী এক হিন্দুর পুত্রের নীতে হান করিয়া ৩০ পুলিশ কর্ত্তারিরা বাবতীর বেসেডা ও অর্থ করেন করে। সাক্ষি সরেরা বেসেডা সিংহের পক্ষ হইয়া মাজি করিয়া তাহারিগকে মুক্ত করেন। তত্ৰা পোক্ত হার পুনর্বার তাহারিগকে করেন কবিরাজ আশা দেওয়াতে পুলিশের সহিত আকিসর সিংহে তদানিক দালা হয়। আকিসরের পুলিশ ডে কিলার সিংহের লাঠির সম্মুখে তিসিতে না পারিয়া পরাজিত হইয়া পক্ষাৎ হত হইয়াছেন। এক জন গুরুতররূপে আহত হইয়াছেন। মল ব্যাপার নয়।

সমাজের হিন্দুস্থানী বলেন একতর বৃন্দ মানেয়া অনরব খুলিয়া দিরাছেন নেপালের সহিত তারতবর্ষের গবর্নরকে শীত এক মুক্ত হইবে। তাঁহার আরও বলেন মহারাজ সিংহ বিজয় সিংহ নেপালে গমন করিতে অসম্মত হইয়াছেন। অখচ সিংহ

কর সিংহ অল বাহাদুরের সহিত মীকার করি ১৯৬১ ১০ই মকল অনরব রাই গবর্নরকে প্রতি ১৯৬১ বনের তাবের বিলকণ পারি ১৯৬১।

সিনিফ ১৯৬১ বকদেফের গবর্নরকে আশা সিংহের ১৯৬১ অবধি বাহার্য্য সর্গ বধ করি ১৯৬১ তাবের প্রাতি সার্ব সারি আর্য্য পুর খার সারি। ১৯৬১ ১৯৬১ হইবে। প্রতি ১৯৬১ বকদেফে ইহার ১৯৬১ টাকা ব্যয় ১৯৬১ থাকে। আশি কার্য্য নীতন সাতকোর ১৯৬১ জাতীয় সর্গের উপর বধ ১৯৬১ হইবে।

১৯ই মার্চ শনিবার।

সিঙ্গুদেশস্থ একখানি আমেরিকান আশা-সেব করেন এক জন নাবিকের (মালাই) বোধ হইতেছে) উপর বিরক্ত হইয়া এক খিৎসর দারা তাহার পায়ে আঘাত করে। তত্ৰা সে মারা তাহার অস্তিত্ব ছিল। অনরব করেন গবর্নরকে লোক দারা ১৯৬১ ১৯৬১ জাতীয় সারি মুক্ত হয়। রাষ্ট্রবোধে করেন মন নাবিক কাণ্ডে-এব উৎসাহে আহত নাবিককে বলপূর্বক চিকিৎসালয় হইতে জাহাজে লইয়া যায়। কিন্তু তাহাকে পুনর্বার পাওয়া গিয়াছে। বাহাইতক, গবর্নরকে ১৯৬১ প্রকাশিগের জীবন ও সম্পত্তি আদিকর নিরাপত্তা করিতে হইল।

আলাবার গেজেট বলেন, কাশী ও ত্রি-বিশি স্থানে ওলাউঠা দ্বিধেব প্রাদুর্ভাব হইয়াছে।

সিঙ্গুদেশস্থ দুই গবর্নরকে কাঞ্চালিক দিরাতে হইতেছে।

|                   |              |
|-------------------|--------------|
| ৪ টাকার সিকা      | ৩২ : ২২।০    |
| ৫ টাকার কোম্পানির | ৩৪। : ১৪।০   |
| ৫ টাকার সিকা      | ১০৪। : ১০৪   |
| ১১ টাকার কোম্পানি | ১১২। : ১১২।০ |

তারতবর্ষের ১৯৬১ পক্ষ মল।

১৯৬১ লক্ষ্যাবি পুণ্ডার।

১৯৬১ ১৯৬১ টন সাহেব কমিসনর জেনারেল ১৯৬১ ১৯৬১ ও লিওপল্ড পরগণা সাধা বগ আইনের অধীনস্থ করিবার বিলের প্রস্তাব করিলেন এবং করিলেন এই বিল নিম্নলিখিত





১। এক দিবস উক্ত খল মলের মধ্যে অপর কোন ব্যক্তি সন্তান ছাড়াই পরিষ্কার ধারণ করিয়া উক্ত রাজ্যের নিকট আসিয়া ব্যক্তি করে যে, আ-  
জ্ঞানসিদ্ধি কর বা ৭০ জনের উপর মিলে আসি  
কোন স্থানটি কর ২-৫-১০ করিয়া দিতে  
পারি। ২। বিদ্যায়ী মোস্তাফিজিক গোপনে  
উক্ত সা কবিলেন যে এ ব্যক্তিকে এত টাকা  
৬০০ হইতে পারে কিনা এবং ২-৫-১০ সময়ে  
আবার সমুদায় স ২-৫-১০ গবর্ণমেন্টের অধীনতায়  
সহ, প্রত্যয় ৬০০ হইতে ৩০০০ কোম  
কার্যস নিমিত্ত টাকা পাঠিয়ে সন্তান, নাই।  
৩। সন্তান হয় না হয় দিলে, কহিল যে, এই ব্যক্তি-  
ক ৫০। ৬০ জনের উপর ৫০। ৬০ জন টা-  
কা ৬০ বিদ্যায়ী করিয়া দেওয়া হইতে পারে কিন্তু  
সময় ন সময়ে, টাকা নাই। ৪। আমরা বিবেচনা  
করি, ইহা একটা সমুদায় আছে, বদ্যায়ী  
৫। ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।

কর কার্য করিলে তাহা ঠিক ঠিক উঠিতে পারে,  
গবর্ণমেন্ট ইহার কিছুই বিশেষরূপ বিবেচনা  
করিয়া দেখিয়া কার্যে পরত হন নাই। তাঁহারা  
সাধারণতঃ এইরূপ নিয়ম প্রচার করিয়া দিয়া-  
ছেন, ৫০ টাকার ১ এক মন মাথাওয়াটারের  
প্রতি সমুদায় জমিদারকেই শতক ২ টাকা  
করিয়া ডাক কর দিতে হইবে। গবর্ণমেন্ট কোন  
সম্মতি প্রদান করিয়া দিয়াছেন। এক্ষণে তাম্রত নিয়ম  
প্রবর্তিত করিলেন, আমরা কলিকাতা টাউন পা-  
লিতেছি না। শতক ২ টাকা করিয়া লইলে বৎ-  
সর বৎসর বৎসর ২০ লক্ষ টাকা হইবে, তাহা ন-  
সমুদায়ই কি ডাক কর দায় ২০ লক্ষ হইয়া যাই-  
বে। অন্যান্য স্থানের কথা হুইবে আরক, আমরা  
কেবল ঢাকার জমিদারী ডাকের আয়স্বর বিবে-  
চনা করিয়াই এতৎ প্রণয়নীয়মান করিতেছি।  
ঢাকায় বৎসর বৎসর ২ লক্ষ টাকা মনর মাল-  
জারী আদায় হইয়া থাকে। ইহা ব মতো ৫০  
টাকার অনধিক মালজারীসমূহের মালজারী  
রীর মধ্যে আয়মানিক ২ লক্ষ টাকা ধরিয়া লই-  
লাম। ২০ লক্ষ টাকা হইতেই ৪ লক্ষ ৮০ লক্ষ  
লে ৫০ লক্ষ টাকা অবশিষ্ট থাকে। শতক ২ টাকা  
হারে ডাক কর গ্রহণে এই ৫ লক্ষ হইতে বৎসর  
বৎসর ১০০০০ টাকা সংগৃহীত হইবে। ইহাই  
ঢাকার জমিদারী ডাকের আয়মানিক বার্ষিক  
আয়। এক্ষণে বায়েস বিষয়ে বিবেচনা করিয়া  
দেখা যাক। সম্মতি ঢাকা ১৪ টী থানা (২)  
আছে। আমরা ২০ টী থানা লইলাম। প্রত্যেক  
থানায় ২০ লক্ষ ৮০ লক্ষ করিয়া নিযুক্ত রাখিলেই  
সুস্বাদু কাক চলেতে পারে। এই সকল হর-  
করার প্রত্যেকের মাসিক ২৫০০ ৫ টাকা করিয়া  
ধরা যাক। ইহা ৬ প্রতিবৎসর ৬০০০ টাকা  
ব্যয়িত হইত। ২০ থানা বিশেষ বিশেষ  
অবস্থান খন্দে, নিমিত্ত আয় হইতে পারে।  
অতিবাহিত ১০০০ টাকা যোগ করিয়া ৮০০০ করি-  
লাম। ইহাই ২০ থানা জমিদারী ডাকের আয়মা-  
নিক বাস্তব লাভ। আমরা সাধারণতঃ বলিতে  
পারি, ইহা অল্প, অল্পাধিক মাত্রা অধিক  
ব্যয় লাগিলে না। পূর্বে ইহা কৃত আয়মানিক  
আমি ১০০০০ হইতে এই আয়মানিক ব্যয়  
৮০০০০ যদি দিলে অতিবাহিত ২০০০ টাকা থাকে।  
অন্য ২০ জনের জমিদারী ডাকের আয় হইতে ও  
গাফিলত বর্ষে বর্ষে এরূপ কিছু কিছু উক্ত  
২০ জন সম্পূর্ণ সন্তান ৩০০০০০ এরূপ ক-  
রিয়া ঠিক দিলে আয় ৫০০০০ হাজার টাকার  
স্থান কম হইবে না। বৎসর বৎসর এই অতি-  
রিক্ত টাকাগুলি দিয়া গবর্ণমেন্ট কি করিবেন?

সাত কর্তৃপক্ষালি বাহাদুর কেবল সরকারি  
সিদ্ধি ও পত্রাদি প্রেরণের দায় দিয়া থাকি-  
অমিদারী ডাকের প্রতী করেন। কলিকাতা অতি  
বিক্রম অর্থ সংগ্রহ করিয়া রাজস্বের পূর্ণতা  
থবা অন্য কোন কাজসারী কার্যে অতিপ্রয়  
মন। তাহা সূত্র নিহত নহে। তবে অনুমতি  
কর্তৃপক্ষের। কি নিমিত্ত সেই জমিদারী ডাক  
কর দিয়া বায়েস অতিরিক্ত কর সংগ্রহ করিতে  
উদ্যত হইয়াছেন? তাঁহাদিগের এই অবস্থার  
বহার দিবস জমিদারগণের মনে প্রতিকূল  
সন্তোষের সঞ্চার হইয়াছে। ইনকমট্যাক্স জমিদার  
অসন্তোষ ভালরূপে সূত্রীভূত হইয়া বহিতে ন  
ইতে আবার জমিদারি ডাকের উপলক্ষে জমি-  
দারগণকে তাহা অসন্তুষ্ট করিয়া ফেলা গবর্ণমেন্ট  
চৌকর কর নহে। আমরা গবর্ণমেন্টকে জিজ্ঞাসা  
করি তাঁহারা সম্মতি যেমিরনে জমিদারী ডাক  
কর সন্তুষ্ট করিতে প্রতী হইয়াছেন, তাহা ন-  
এই রহিত করিয়া কেবল এবং প্রত্যেক জমিদার  
জমিদারি ডাকের প্রতী বর্ষে বর্ষে কর-  
টাকার আয়স্বর, তাহা বিশেষরূপ বিবেচনা  
করিয়া দেখুন। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।

পাঠ্য ১  
— ১ —  
জমিদারী ডাক।  
যখন জমিদারী ডাকের প্রবর্তন নিয়ম প্রবি-  
ষ্ট করিয়া অতিমাত্রা নিয়ম প্রবর্তন করি-  
য়া দিয়া ২০ থানা আমরা ২০ থানা হিসাব  
প্রবর্তন বৎসর ২০ লক্ষ ৮০ লক্ষ টাকা মনর মাল-  
জারী আদায় হইতে পারে। গবর্ণমেন্ট আয় ২০  
লক্ষ ৮০ লক্ষ টাকা করিয়া দিয়া ২০ থানা  
সমুদায় জমিদারের নিকট ২০ লক্ষ ৮০ লক্ষ  
বিষয়ে প্রণয়ন করিবেন। কিন্তু এক্ষণে তাহার  
পক্ষ টেকসইতা লক্ষিত হইতেছে। জমিদারী  
ডাক বার্ষিক ব্যয় নির্দিষ্ট হইবে এবং বর্ষে বর্ষে  
প্রয়োজন, জমিদারগণের ৩ ৩ হিসাব

জমিদারী ডাকের অন্য একটা ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।



১। প্রত্যাবর্তি উদ্ভব বটে কিংবা নতুন  
নিজ গাছ পুটায় কি পোষকদ্রব্য হইবে  
ইহা ন. আ. ক. অংশক স  
কৃষক কত ভুল হইবে, গিন মন, কাসি কট  
কিছুই ন. আ. ক. বিজ্ঞানবদী একই  
বেদ ১৫৬ তিনি যদি আশঙ্কিত হইতেন  
হন, ২. ক'ব হইতে বাকি হইতেন  
ক'ব ন. আ. ক. সেই বাকি নতুন ক'ব  
বিনয় পুটায় ন. আ. ক. গাছের ক'ব  
বিনয় পুটায় বাস্তু হইলে গাছের ক'ব  
ন. আ. ক. গাছের ক'ব হইবে। গ।

এইর সঙ্গীতক

আপনি গত ২২এ পৌষের সোমপ্রকাশে  
বিকারিত বিষয়ে যে প্রস্তাবটি লিখিয়াছেন  
হা পাঠ করিয়া: আপনার উপর অস্বস্তির  
কিছু অনেক হইয়াছে। আপনি যে উদ্দেশ্য  
বলেন, আমি তা বিচারিলাম আপনি তাঁটিকে  
টিপ করবেন। সম্পাদক দাদা। আমি যা-  
নাই, আমি নাকি কেবাও বলিয়া নাকে  
ত দিলে পাঁচ, কখনও বস্তু কল্যাণ কর বলিলে  
ন হইত। আপনি বলিলেন জাম  
হইছে, তখন কিছু টিপসি বসে। গবর্ণমেন্টকে  
পারি মোব দিতেছেন কেন? আপনি কখনো  
ন "এক চিলে দুই পক্ষ মাঝে"। কিন্তু গব-  
র্নমেন্ট আবারি যথেষ্ট এক চিলে "তিন পক্ষ  
দিতেন। প্রথম মতের একচেটে করিয়া। অ-  
পরোপ ধনলাভ করিতেছেন। দ্বিতীয় আপন-  
মত বিজ্ঞ ও সৌন্দর্যবদ্ধ। মোকদ্দিমের  
মতটি করিতেছেন যে মতের কর ধার্য করা  
যখন মত বাঙালি নিয়ন্ত্রণ নিবন্ধন। তৃতীয়।  
বিশ্ব ব্যক্তিগত মতগত উৎসাহ দিতেছেন  
যদি বাবা পুত্র বাও, অথবা: তপুটি শাক্তবের  
যে মতের আর কখনোই ২ নম্বর ডাককে  
প্রেরণ করিয়া গিয়াছে, অথবা ডেপুটী কালেক্টর  
আমাদের দল হকি করিয়াছেন বলিয়া প্রথম  
পাইয়াছেন, এবং মোকাদ্দেম অধিক জন  
দেতে হইলে ক্রোশ কর বলিয়া মোকাদ্দেম বা-  
ব মিকটে মিকটে ডিস্টিন্গুইশ করিও হইয়া-  
। আপনি যা বলুন তা বলুন, গবর্ণমেন্টে আ-  
মের বখেটে দিতকারী। আমাদেব সৎথা হইব  
যা গবর্ণমেন্ট যে আয়াস পাইয়েছেন তাহাতে  
বরা কত বাধিত তাহা আপনি কি বুঝিবেন।  
তপুর্কে প্রাক্ত মনোক্রোশ পক্ষ গিয়া কর্তাকে  
নিতে হইত, এখন যে দিকে চাই তাঁদের  
ট বাহার। এক দিকে দুই ক্রোশ, এক দিকে  
৬ ক্রোশ জনপূর্বসোপান কর কর করিতে-  
। কুখিতে পাইয়াছেন। প্রায়ের নিকটে দু-  
ই হইত তাঁটি ও, তিত্ত হইয়াছে। ইত্যাদি  
নার কাউ আনিস পাইতাম না, এক'ম প-  
ব পক্ষ দুটাখাত। দয়ালু গবর্ণমেন্টে পক্ষ হা  
ব হাত হইতে বাঁচাইয়াছেন। সম্পাদক  
উ। আপনি বৈদিক তাহা নেদারগামী  
লকে জানাইয়াছিলেন, তাহাও কারণ এটা  
দৃশ মত লোক বৈদিকের দলভুক্ত, বৈদিক  
লর বড় জাতি। আমি যদি জনসমা. প্র পরি-  
দিতে পারিতাম যে আপনি অস্বস্তি বদল-  
বইলে আমাদেব দলের গোববন প-

দ্রিমীয়া থাকিত না। ১৫ কবি আপনি আসা-  
দের দলভুক্ত পাইলেন দ্বিতীয় ১৭৪০ হন না,  
পাছে আপনাব চরিত্রসংস্করণে আরো  
"অকার্য" মতও ১৭, কিন্তু আপনাব সে তর  
করা হইল। কখনো ১৭, ১৮ ১৯ বোতলানক আ-  
মাব সেন্স অক ডিসেন্সি আছে। আম'২ কোন  
এইর বক্তৃ--১১২ ১৪৩ নহাওমতীধর নাট  
শ্রীলোকাকান্তি ১৪৩২ একাংশ উল্লেখ বলিয়া-  
ছিলেন "আপ'২ দুই চরুক দিয়াও বাইতে  
পারি, তত দিয়াও বাইতে পারি"। অ'গিও  
সেইকণ বলিতেছি আমি দিমিত পান করিতে  
পারি বিস্মতিও পান করবেন পারি। একদিন  
হুতোমোদার সমস্তিয়াহ "ম পুরুষবাকের অ-  
টালিকায় পদ্যপর্ণ করিয়াছিলেন ইং'বাজি এক  
ঘট্টার মধ্যে সেবিসামলিমে মেরি হইয়া পাড়-  
ল ম। বাবুজানাব খোল আন সানশিন দিয়া  
হ, জাম'২। কিছুকাল পরে আসিতিটি নিবাকা-  
২০ ইপলক করব। শাস্ত্র লগর অর্থ'২ ব্রাহ্মণ  
প্রাধান্য করিলাম। ২২ জাম'২ ২৩ প'গি আ  
ম'২ হুদগত হইল। ২৪ নাবা যেমন কীলাল  
নিমিত্ত কীর প'২ অস্বস্তি "আমি ব্রাহ্মণ মত  
এক সেই ২৪, ২৫, ২৬, ২৭, ২৮, ২৯, ৩০, ৩১  
আমি বাগাক হইলাম এবং মজলময়ন বলিলা-  
ম "২০, আমি বৈবনডের বড়বাড়ীতে তিনাব ক-  
বিত্তে আসিয়াছি, অস্বস্তি নব মনুগে আসি না  
ই। এই ম'২ ২৪ ২৫তে কাচ পাতি আচড়া-  
ইয়া ফেলিল, ২৬ ২৭ অথবা টেবিগোর উপডাকার  
নাতে তিন হাত হইল'২। অতএব আপনি বি-  
লান্তি মতের ২৭ নম্বর রহিত করবার ইচ্ছা  
ক'২২ আমান কত অনিষ্ট কাবতেছেন তাহা  
অবহিত হইয়া অস্বস্তি বদল করুন। এক ৬টাচারী  
ব্রাহ্মণের বক্তব্য বক্তব্য। ব্রাহ্মণী আপনাব সৌন্দ-  
র্য হেতু বক্তব্যকালে ১১ ট, কাটিয়াছিলেন।  
অ'২ ফলস্বরূপ, ৬টাচারী ৬৮ টি উক হইয়া  
তথাকথিত ৬৮ নম্বর কবিলেন ব্রাহ্মণী কাঁপটা  
তা। সোমাদার ৬টাচারীর ঘরে তাল দেখা  
না। ১২ ৬টাচারী অতিমান ভাব উত্তর দিলেন  
অস্বস্তি প'২ আপ'২ তুলে দিকি রান'২ ১১। আ-  
পনি ১২ ৬টাচারী তুলে দেন, সেবি সানশিনের  
আমদানি বদল করেন, তখন আমাদেব জনা কি  
কাঁটা কমলি বাবহা করিবেন? এখন মন খুলে  
গিয়াছে আপন'২ একটা কথা জিজ্ঞাস্য করি  
ব্রাহ্মণী স'২ বদল পাছে কি ভাল কাগচ দিতে  
নাই? ১৮ ৬টাচারী, ইচ্ছা তাই (১)

(১) সোমপ্রকাশের কোন আশে কোন  
মোব ও কটি না। পা'২ সম্পাদকের আন্তরিক  
এ চেটা আছে। আর হকি সৎকারে যত উহার  
অবস্থার উৎকর্ষ হইবে, ততই ইহার উৎকর্ষ পা-  
ঠকপণেব নতুন মোচর হইবে। ম।

পরমপুণ্যীয় জীবন্ত মোকাদ্দেম  
সম্পাদক মকাদ্দেম

২৬কোচ গ্রাম যে ব্রাহ্মণজাতিগণের একটি  
প্রধান ভোগ, তাহা বঙ্গদেশমাত্রেই সর্বত্র বি-  
দিত আছে। কিন্তু গ্রীষ্মে সেই ভোগ এক  
প্রকার মেশাচার হইয়া উঠিয়াছে। এখানকার  
বড় আদালত সনসদে হুজিও অবস্থার বিষয়  
গবর্ণমেন্টে পূর্ণতা আনান হ। ১৬: কিন্তু দুইটি  
একালোকের যে আমলাদে, যত পড়াভর  
হুজিও হইতেছে তাহা কেব দেখিয়াও দেখিতে  
ছেন না তদিতাও তদিতেন ন।  
অন্য দিবস হইল আমি এখানকার কালেক্ট-  
রিতে কতক টাকা রাজস্ব দিতে গিয়াছিল।  
যুগে প্রবেশ করিয়া আমলাদিগের বৌদ্ধিক  
দেখিয়া একবারে হতাশ হইলাম। দেখিলাম  
প্রত্যেক জেলাদার, এককত টাকা রাজস্বের  
উপর ১০ আনা, তহনীলদার ১০ আনা, প্রক-  
টরির মহ'২ ১০ আনা সদর পাটওয়ারী  
আনা, পোদার ১ টাকা কিলিকদার ১০ আনা  
না পাইলে চালামে আকর, কি টাকা অমত  
কি নবন রেজটরি ইত্যাদি করেন না। যদি ইচ্ছা  
এ সকল না দেন, তিনি প্রাক্তকালাবি সাত-  
কাল পর্বাভ মণ্ডরমান হইয়া বারবার বিলম্ব  
কবিলেও তাহারি কিরিয়া চার'২। তিনি সত-  
দর্শনী দেন তাঁহান দুই মিনিটের মধ্যেই  
কার্য সাধন হয়। প্রধান কর্মীদ্বয়ের  
বরচ দিতে বড় কুষ্ঠিত হন না, তাঁহাদের  
চার'২ গণও বড় পড়াভর হন না। কিন্তু  
তালুকদার ও রায়তলোকেরই বক্তব্য।  
কথা বোধ করি বিচারকদিগেরও মিতা  
গোচর নহে, কিন্তু কেব ইচ্ছা ওই ইচ্ছা  
রূপ করিতে সচেষ্ট হন না। অতএব আমি  
কালেক্টর জীবন্ত টেইলর নাদেব, ও  
বাবু বহনাথ বসু ও কালিকানাস বসু তপুটি-  
কালেক্টরদিগকে মিতাভ বিষয় ও আর্থনা কলি-  
তেছি, তাঁহারা কালেক্টরির শিরিভাদার, পে-  
দাব, নাজির, ও প্রধান প্রধান কর্মীদার ও  
মিরাসদারাদির গোমাকাদিগকে ভলব মিতা  
তাহাদের অবানবদলি গ্রহণরূপে কালেক্টরির  
লম্বোদর অর্থগুণুদিগের উৎকোচ মোকাদ্দে  
চিকিৎসা বিধান করেন।

জিঃ টি।  
৫ মা'২ ১৯৩২  
কম্বাতি  
ভানুকদার





উপরি লিখিত প্রকৃতি জিজ্ঞাসা করিলে  
ন। এই প্রকৃতি তাহে বোধ হইতে  
জমীদারেরা "বাক্স আদায়" বলিয়া  
জানি নিকট হইতে যে অবৈধ অর্থ  
করেন, তাহা সাধারণের গোপন  
জমীদারিগণের অন্যান্য ব্যবহারের  
চর দেওয়া পদ্ধতির দ্বারা বৈধ  
ক্রেত, বাক্স আদায় কাহাকে বলে  
জানা সকল মতে : প্রকৃতি



রের যত বিবাদ বিন্যাস হয়, এই ব্যক্তি  
সদায়ই তাহার একটি প্রধান কারণ ।

বাজে আদায় যে প্রজাদিগের অধিক-  
ত বেশকর হয়, তাহার আর একটি  
শেষ কারণ আছে । এই অর্থ কেবল জমী-  
দারের কোষগৃহভূক্ত হয় না, নায়েব  
গমতা প্রভৃতি উহার আরো অধিক অংশী  
হইলেন । বোধ কর, জমীদার পিতার  
সদা কৃত্য উপলক্ষে প্রজার নিকটে একটি  
কাঁচা করিলেন । যে প্রজাকে সেই চাঁদার  
ক টাকা দিতে হইবে, সে গমতাকে টাকা  
দিত্তি স্থান কম্প ১০ আনা না দিয়া নি-  
তি পাইতে পারে না । একদা নায়েব ও  
সামান্যিক প্রভৃতিরও অংশ আছে

এইসে নায়েব ও গমতার কিঞ্চিৎ  
রিচর দেওয়াও অতিশয় আবশ্যক হই-  
তেছে, তাহা হইলে পাঠকগণ অনাগ্রাসে  
যিতে পারিবেন, কিংবা অল্পত প্রণালী  
জমীদারীর কার্য চলিতেছে । নায়েব  
গমতা জমীদারের কর্মচারী । তাঁহারা  
কমলে থাকেন । প্রজার সহিত তাঁহাদি-  
গরই সতত ও সাক্ষাৎ সহজ । গমতা  
জমীদার আদায় করেন । তাঁহার অধীনে  
এক এক জন পাইক থাকে । নায়েব গম-  
তাদিগের কার্য ও জমীদারদিগের মক-  
সল সংক্রান্ত অন্য অন্য কার্য কর্তন  
করেন । এক এক নায়েবের অধীনে ৫ । ৭  
হইবা তাহারও অধিক গমতা থাকে । গম-  
তা ও নায়েবদিগের কমতা ও বেতনের  
কথা শুধু করিলে ইহার অনতিজ্ঞ পাঠক  
সম্মত হইবেন । ১৭ পরগণায় সচ-  
রাষ্ট্র প্রভৃতি পাওয়া যায়, গমতার  
কমতা ও বেতন পাইয়া থাকেন,  
আ অন্য-জিলার ২ ও ১ টাকাও আছে ।  
নায়েবের বেতন সচরাচর ২০ । ২৫ টাকাই  
হইয়া থাকে, উচ্চ সংখ্যা ৫০ । ৬০ টাকা ।  
একজন কি বিবেচনা করিতেছেন, ইহা  
কি এই অংশ বেতনেই পরিচালিত থাকে  
ইহাতেই কি ইহাদিগের মিল নির্ধারিত

হয় ? ইহা অপেক্ষা কি ইহাদিগের আর  
অধিক উপার্জন নাই ? আমরাই উত্তর দি-  
তেছি, আরো অনেক উপার্জন আছে । এক  
টাকা মানিক বেতন পাইয়া কি এক জন  
গমতার কখন চলিতে পারে ? গমতার  
উদাসীন নহেন, তাঁহাদিগের পুত্র কল্যা-  
ণি আছে, তাঁহাদিগের গৃহে নিত্য নৈমি-  
ত্তিক ক্রিয়ার অনুষ্ঠান হইয়া থাকে, কোন  
কোন ব্যক্তি জুর্গোৎসব ও শ্যামাপূজা প্র-  
ভৃতিও করেন । এ সকল কি ব্যয়বিনা সম্ভা-  
সিত হইবার সম্ভাবনা আছে ? নায়েবেরা  
উচ্চ পদস্থ, তাঁহাদিগের আবার সেই পরি-  
মাণে এই সকল কার্যে অধিক ব্যয় হইয়া  
থাকে । সে সমুদায় ব্যয়ই তাঁহার প্রজার  
নিকটে হইতে সংগ্রহ করিয়া লয় ।  
জমীদার ও নায়েবদিগের ন্যায় গমতাদি-  
গেরও আবহাব আছে । তন্নিম্ন তাঁহাদি-  
গের একটি নির্দিষ্ট আদায় আছে । তাহার  
বার্ষিক যত টাকা আদায় করেন, তাহার  
একটি টাকায় হিসাব আনা বলিয়া ১০  
আনা করিয়া লইয়া থাকেন ।

পাঠকগণ গমতাদিগের যেমন সামান্য  
বেতনের কথা শু নলেন, তাঁহাদিগের  
কমতা কিন্তু তেমন সামান্য নয় । তাঁহাদিগের  
কমতার সীমা নাই, তাঁহার আইন  
আদালত মানেন না, যে প্রজা বাজনা অর্থ  
বা গমতাদিগের এ.স. দিতে বিলম্ব করে,  
তাহাকে (গমতার) উচ্চ লোককেই এইরূপে  
প্রহারাদি করে, তদ্রূপ প্রজার সহিত একদা  
ব্যবহার করিতে সাহসী হইয়া না ) উপায়ে  
প্রহার করা গমতাদিগের সহজ (এবং  
অনেক কমিগেছে বাটে তথাপি অন্যের  
পর্বত ) কথা । প্রজারা তাঁহাদিগকে সম-  
স্বরূপ দেখে । তাঁহাদিগের হাতের ন্যায়  
মুখেরও বিলম্বণ গুণ আছে । যখন এমন  
পরিণতি যে প্রজাদিগের সহিত ব্যবহার  
কালে তাহাদিগের বাক্য শ্রাব্য করিলে  
কর্ণ হাত ( গমতার একে অনিচ্ছিত,  
তাছাড়া সতত ইতর লোকের সহিত সহ-

সঙ্গ, একদা হওয়া যত আশ্চর্য্য বিব-  
নয় ) দিতে হয় । নায়েবদিগের কমতা  
আবার ইহার বহু গুণে অধিক । এক এক  
নায়েবের অধীনে ৫ । ৭ জন গমতা থাকে  
সেই ৫ । ৭ জন গমতার প্রত্যেকের কমতা  
কমতা, তাহা একত্র করিয়া যত হয়, এক  
নায়েব তত কমতা ধারণ করেন

গমতা ও নায়েবদিগের বার্ষিক আ-  
দায়, অধিদিত্তবৃত্তান্ত পাঠকগণ বো-  
ধ্য, এখনও স্পষ্ট করিয়া বুঝিতে পারেন  
নাই । গমতার সচরাচর বার্ষিক ২ । ৩  
শত এবং নায়েবের ২ । ৩ হাজার টাকা  
উপার্জন করেন । ইহা স্থান কম্প উপ-  
কোন কোন গমতা ও নায়েবের  
ইহা অপেক্ষা অধিক হয় । জমীদারি  
গের ন্যায় নায়েবেরাও প্রজাদিগের নি-  
চ নজর পান, এবং পুজাদির অর্থশ্রা-  
নাদির কালে চাঁদা করিয়া থাকেন ।

আমরা সামান্যিক স্পষ্টরূপে বাজে  
নায়েব স্বকল্প পাঠকগণের জ্ঞানবলন করি-  
য়া দিবার চেষ্টা করিয়া গমতা ও নায়েবদিগের  
ব্যবহৃত এত বিস্তারিত অধিকা সিবিলাস  
একণে যে যে বাবে জমীদারদিগের বা-  
জাদায় হইয়া থাকে, তাহার একটি কা-  
র্য দেওয়া বাইতেছে ।

১ । প্রজার প্রকার বিবাদ করিয়া  
জমীদারের নিকটে উচ্চ হইলে জমী-  
দার বাহাকে অধিক অপরাধী বোধ করে  
কিন্তু তাহার অর্থ দণ্ড ( জমীদারের নিব-  
প্রহারাদি অণ্ডের অপেক্ষা অর্থ দণ্ডের  
প্রাধান্য ) করিয়া থাকেন । তাঁহাদিগের  
লোভ রিপুটী কিঞ্চিৎ অবল, তাঁহারা উ-  
নোর নিকটে হইতেই কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ গ্রহণ  
করেন ।

২ । উৎসব, পিতৃ মাতৃ কৃত্য অর্থ  
পুজাদির অর্থপ্রাপ্তিাদির উপলক্ষ করি-  
চাঁদা

৩ । পণ্ডিত কুমির খামের জমা ।  
৪ । নায়েবের জমা ।  
৫ । কোন কোন জমীদার, লো

কিন্তু কিছু কিছু ক্ষেত্রে...  
১. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
২. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৩. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৪. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৫. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৬. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৭. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৮. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৯. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
১০. জমিদারদের বিরুদ্ধে...

আমরা দেখিতে পাইতেছি, মীলকর-  
গর ম্যার জমিদারদের উপরেও  
ম লোকের দৃষ্টি নিপাতিত হইতেছে।  
এবং জমিদারদের বিরুদ্ধে সর্বদা হওয়াই  
উচিত। আমরা উপরে গমতা ও মীলকর-  
গরের যে ধর্মবাহিনী কৃষক বর্গকে রক্ষা-  
জমিদারেরা একবার দ্বিগুণ ও পঞ্চগুণ  
চিহ্নে বিবেচনা করিয়া দেখুন যে  
লক বহু অর্নিট ঘটতেছে কি না? এ  
আপনারদের শরীরের শোণিত শুষ্ক  
হয়। যে অর্নিট উপস্থাপন করিতেছে, তা  
তাঁহার সর্বদা মীলকর করিতেছে।  
তাহা না। জমিদারেরা উপস্থাপন করি-  
ম্যার গমতা ও মীলকরদেরকে তাহা-  
মর মতো ছাড়িয়া দিয়াছেন। তাহাদি-  
যে বেবল বর্গকে করিতেছে। একপ  
গমতা, মারের ও মীলকরদের চর-  
র দর্শন ও চরিত্র অধন দ্বারা তাহা  
মর চরিত্রও দুর্ভাগ হইয়া যাইতেছে।  
মিদের অর্নিট হইলে যে অর্নিট  
সেই কি জমিদারের অর্নিট নয়?  
হাই জমিদারদের মর্মে। এবং আমি  
নিয়া আপনাদের অর্নিট আপন  
করিতেছেন। অর্নিট নিবারণের

কিন্তু কিছু কিছু ক্ষেত্রে...  
১. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
২. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৩. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৪. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৫. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৬. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৭. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৮. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৯. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
১০. জমিদারদের বিরুদ্ধে...

আমরা দেখিতে পাইতেছি, মীলকর-  
গর ম্যার জমিদারদের উপরেও  
ম লোকের দৃষ্টি নিপাতিত হইতেছে।  
এবং জমিদারদের বিরুদ্ধে সর্বদা হওয়াই  
উচিত। আমরা উপরে গমতা ও মীলকর-  
গরের যে ধর্মবাহিনী কৃষক বর্গকে রক্ষা-  
জমিদারেরা একবার দ্বিগুণ ও পঞ্চগুণ  
চিহ্নে বিবেচনা করিয়া দেখুন যে  
লক বহু অর্নিট ঘটতেছে কি না? এ  
আপনারদের শরীরের শোণিত শুষ্ক  
হয়। যে অর্নিট উপস্থাপন করিতেছে, তা  
তাঁহার সর্বদা মীলকর করিতেছে।  
তাহা না। জমিদারেরা উপস্থাপন করি-  
ম্যার গমতা ও মীলকরদেরকে তাহা-  
মর মতো ছাড়িয়া দিয়াছেন। তাহাদি-  
যে বেবল বর্গকে করিতেছে। একপ  
গমতা, মারের ও মীলকরদের চর-  
র দর্শন ও চরিত্র অধন দ্বারা তাহা  
মর চরিত্রও দুর্ভাগ হইয়া যাইতেছে।  
মিদের অর্নিট হইলে যে অর্নিট  
সেই কি জমিদারের অর্নিট নয়?  
হাই জমিদারদের মর্মে। এবং আমি  
নিয়া আপনাদের অর্নিট আপন  
করিতেছেন। অর্নিট নিবারণের

কিন্তু কিছু কিছু ক্ষেত্রে...  
১. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
২. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৩. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৪. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৫. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৬. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৭. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৮. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
৯. জমিদারদের বিরুদ্ধে...  
১০. জমিদারদের বিরুদ্ধে...



[illegible][illegible]

পেট্টে অফিস ১

১২. আমরা শুনিয়া অস্বাভাবিক হইলান  
সর চারলস্ বি. বিলিয়াম পোর্ট আফিসের  
প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়াছেন। অস্বাভাবিক  
এই প্রকার সারেক দিবস হইল তিনি গোপ  
নত্বের সুরক্ষিতার ডাক স্মরণ দেখিতে  
সিয়ারাইল স্মরণ আশালী বর্ণন করিয়া  
সমস্ত স্মরণ।

[illegible][illegible]

অন্যদের কল্যাণ  
ইচ্ছা করে

## ବିଶ୍ୱନାଟକସଂଗ୍ରହ

[illegible]

স্বদেশীরা তাহার উত্তর দানে মৌসাব লম্বী হইয়া আসছেন। এই সকল বিষয়ে চেষ্টা করিয়া কৃতকায্য হইবার কি সম্ভব হইবে? আমরা বলিতেছি, হইয়াছে। তবে আর বিষয় কেন?

১. বোধ হয়, সকলেই জানেন আমাদিগের দেশের ব্যবস্থা ও শাসন যত্নিত ও সুতর বিষয় সকলের সমাধান ইংলণ্ডে হইয়া থাকে। ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের আশ্রয় উপর আমাদিগের আর অপোষ নাই। সত্য বটে উক্ত গবর্ণমেন্ট পক্ষপাতশূন্য, তাঁহারা প্রমেও ভারতবর্ষীয়দিগকে অসুখী করিতে চাহেন না, কিন্তু তাঁহারা সর্বদা সকল বিষয়ের স্বকণ জানিতে পারেন না। তাহার উপর আমার আমাদিগের প্রিয়জিকারী ব'লবগণ আসছেন। তাঁহারা "ভারতবর্ষীয়দিগের মঙ্গল ও ইটো" মূলধন বিনিয়োগের নামে যাবতীয় বিষয় ভিন্ন বর্ণে বিভিন্ন নরিন প্রদর্শন করে ন। ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট সাহসী হইয়া সত্য সকল বিষয়ে প্রকৃত অবস্থা ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের গোচর করিতে পারেন না। একপ স্থলে কি করা কর্তব্য? যাবৎ এদেশে স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত না হয়, যাবৎ এদেশের কারক ব্যক্তিক এদেশের প্রতিনিধি স্বরূপ ইংলণ্ডে নিয়োজিত করিয়া রাখা উচিত। আপাততঃ ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টে এদেশের ব্যবস্থা কৃতান্ত জারিত না পারিতে যে যে অনিষ্ট ঘটিবার সম্ভাবনা আছে, প্রতিনিধিগণ ইংলণ্ডে অবস্থান করিলে কেবল যে শুদ্ধিবাগে সমর্থ হইবেন একপ নয়, তাঁহারা ক্রমে তা ভারতবর্ষ স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত করিয়া চেষ্টা করিয়া কৃতকায্য ও হইতে পারিবেন।

এখন আমরা স্বদেশীরাগিকে দিগমা করিতেছি, ইংলণ্ডের ম্যাব এদেশে স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত করিবার চেষ্টা পাওয়া উচিত কি না? সাধারণ ভাষায় প্রচেষ্টা বিধেয় কি না? আমরা চিত্তকাল সেধিব আমাদিগের দেশের আইন, কনস্টাশন প্রভৃতি স্বকৃতক কায্য সম্বন্ধে করেকজন গবর্ণমেন্ট কর্মচারির দ্বারা জ্ঞানিত হইবে? কত দিন আমবা দেশের শাসন ও মুক্ত সংস্কার কায্য হইতে হইবে? আমরা অনেক বার প্রশ্ন করিয়াছি, কিন্তু এখন পর্যন্ত

এই প্রশ্নের উত্তর এক টনা, কানী, আলিহা নাদোর, পুন, সজা, কলোকাগিকেও জানান করা হইবে। স্থান কলোকাগি নাদোর উপর মুন খামের সংবাদ কলিকতা, কোম্বাই, ও মাদ্রাস প্রভৃতি জিনিস প্রভৃতি হইবে। ভারতবর্ষীয়দিগের এই প্রকরণ করিয়া কায্য সমাধান করুন। এদেশের প্রকৃত অবস্থা হইতে গোচর করাই প্রতিনিধিগণের দায়িত্ব হইবে। যাবৎ প্রচেষ্টা সংগ্রহ হইবে না। আমাদিগের শুনিতে পাই যোমাইয়ের স্বদেশী নীরা কথার কথায় লক্ষ্য রাখা দরকার। বরেন্দ্র ত প্রসিদ্ধ আসছেন। এবিষয়ে ইহারা কাকর হইবেন?

হুতন এই।  
বিজয়বরুণ। ইহাকে কথ্য বলে। ইকপাকার জীবিত বাবু গোপীমোহন ইহার রচনা করিয়াছেন। এদের নাম নামেই ইহার নাম দেওয়া হইয়াছে। কার বিজ্ঞাপনের আশ্রয়ে লিখিয়া "ইংলণ্ডীয় ভাষায় মঙ্গল নামে মনো প্রসিদ্ধ উপাখ্যান এই সকল যে প্রণালীতে মঙ্গলিত হইয়া থাকে সেই প্রণালী অনুসারে এই পুস্তক আমি রচিত হইবার কিন্তু আমার এই উদ্যম সম্প্রদায়ের সহ হইবার কোন সম্ভাবনা বোধ হইবে না। যেহেতু ইউরোপীয় লোকদিগের কায্য সকল যেকপ স্বতন্ত্র ও চমকজনক, ভারতবর্ষীয় লোকদিগের প্রকরণ দেখিতে পাওয়া যায় না। সুপ্রসিদ্ধ লোকের কায্য অসংখ্য বাঙ্গালী ভাষায় ইংলণ্ডীয়

এই প্রশ্নের উত্তর এক টনা, কানী, আলিহা নাদোর, পুন, সজা, কলোকাগিকেও জানান করা হইবে। স্থান কলোকাগি নাদোর উপর মুন খামের সংবাদ কলিকতা, কোম্বাই, ও মাদ্রাস প্রভৃতি জিনিস প্রভৃতি হইবে। ভারতবর্ষীয়দিগের এই প্রকরণ করিয়া কায্য সমাধান করুন। এদেশের প্রকৃত অবস্থা হইতে গোচর করাই প্রতিনিধিগণের দায়িত্ব হইবে। যাবৎ প্রচেষ্টা সংগ্রহ হইবে না। আমাদিগের শুনিতে পাই যোমাইয়ের স্বদেশী নীরা কথার কথায় লক্ষ্য রাখা দরকার। বরেন্দ্র ত প্রসিদ্ধ আসছেন। এবিষয়ে ইহারা কাকর হইবেন?

হুতন এই।  
বিজয়বরুণ। ইহাকে কথ্য বলে। ইকপাকার জীবিত বাবু গোপীমোহন ইহার রচনা করিয়াছেন। এদের নাম নামেই ইহার নাম দেওয়া হইয়াছে। কার বিজ্ঞাপনের আশ্রয়ে লিখিয়া "ইংলণ্ডীয় ভাষায় মঙ্গল নামে মনো প্রসিদ্ধ উপাখ্যান এই সকল যে প্রণালীতে মঙ্গলিত হইয়া থাকে সেই প্রণালী অনুসারে এই পুস্তক আমি রচিত হইবার কিন্তু আমার এই উদ্যম সম্প্রদায়ের সহ হইবার কোন সম্ভাবনা বোধ হইবে না। যেহেতু ইউরোপীয় লোকদিগের কায্য সকল যেকপ স্বতন্ত্র ও চমকজনক, ভারতবর্ষীয় লোকদিগের প্রকরণ দেখিতে পাওয়া যায় না। সুপ্রসিদ্ধ লোকের কায্য অসংখ্য বাঙ্গালী ভাষায় ইংলণ্ডীয়



যে এইরূপ রচনা করা সুকঠিন । এ  
পেছকার কৃতিত্ব লাভ বিধে অসা  
ধারণ করেছেন, কিন্তু আমরা  
এ আদ্যোপাত্ত অভিনিবেশপূর্বক  
করিয়া দেখিলাম, তাঁহার আশাধিক  
করা হইয়াছে । তাঁহার রচনা  
এইরূপে পড়িয়াই পরিচর দেওয়া  
হয় । আমরা অনেক স্থলে তাঁহার র  
চনার উৎকর্ষ দেখিয়া পরিতোষ  
হইলাম । কয়েক স্থানে তাঁহার বর্ণনা  
সুন্দর ও উৎকর্ষালঙ্কারের সুতনু  
করিয়া অধিকতর আশ্চর্য্যিত হই  
কিন্তু নিজ রচনাকে অন্য অন্য  
দ্বারাও অলঙ্কৃত করিয়াছেন ।  
কিণের বেশের আচার ব্যবহার ও  
জিহ্বা অনুগামী হইয়া বস্তু দূর নৈস  
বৃত্ত বস্তুমান কল্পনা করা যাইতে  
এতদূর তাহার ক্ষমতা করেন নাই ।  
সমস্তে বিজয়বল্লভের আশ সঙ্কট  
পাঠিত হইয়াছে, নৈসর্গিক উপায় দ্বারা  
নিম্নে সে সকল হইতে উদ্ধার হইয়াছে  
। আমাদিগের মত এই যে এদেশের  
গাঠনিক প্রকৃতির দ্বারা নিজ প্রকৃতির  
রককে আশ্চর্য্যকর অলৌকিক উপা  
য় প্রকাশ করিয়াছেন ।

চন্দ্রকলতা প্রকৃতির মারিবা । যে কার  
ও যেকোন বিজয়বল্লভের প্রতি তাঁহার  
সুযোগ সঞ্চার হয় এবং প্রকৃতি যে  
সাবধান হইয়া তাহার অনুরাগ বর্ণন  
করিয়াছেন, তাহাতে তাঁহার ভূয়সী প্রকৃ  
তিতে হয় । তিনি এদেশী । আমাদিগের  
প্রকৃতির দ্বারা নিজ প্রকৃতির  
সমস্ত দোষে মুক্তি করেন নাই । চন্দ্রক  
লতা কেবল বিজয়বল্লভের প্রকৃতি  
বর্ণন করিয়াই বিমোহিত হইয়াছেন,  
ইহা আমরা প্রকৃতির সহায়তায়  
প্রমাণ করিতে উৎসুক হইতাম  
যে কারণে উদাহরণস্বরূপ প্রীতি  
র প্রতি প্রণয় সুকঠোর বহুদল হয়,

এতদূর তাহার ক্ষমতা প্রধান কারণ ঘটাই  
য়া দিয়াছেন । বিজয়বল্লভ শৌর্য্য প্রকাশ  
করিয়া প্রকৃতির প্রকৃতি হইতে চন্দ্রক  
লতাকে রক্ষা করেন এই এক কাব্য দ্বারা  
চন্দ্রকলতার প্রণয় সঞ্চারের ক্ষমতা  
ও উপস্থিত হয় । এক, বিজয়বল্লভের  
শৌর্য্য ; দ্বিতীয়, প্রণয় রক্ষা দ্বারা রহস্য  
উপকার সহজ । মহাবংশ প্রকৃত রমণীগণ  
দীর পুরুষেই অধিকতর অনুরক্ত হইয়া  
থাকেন ।

এতদূর উপসংহারটিও মনোহর হই  
য়াছে । কয়েকটি স্থানে কেবল কিছু কিছু  
পুনরাবৃত্তি দোষ দৃষ্ট হইল । যে যে স্থলে  
পূর্ব বৃত্তান্ত বর্ণন করা হইয়াছে তাহা তত  
বিস্তারিত বর্ণনা না বলিয়া সংক্ষেপে  
বলিলে সমধিক সুন্দরতর হইত সন্দেহ  
নাই । বিজয়বল্লভের বিস্ময়বিষয় ও  
সোমদত্তের অসাধুতাই বিজয়বল্লভের যাব  
তীয় চরিত্রের কারণ বলিয়া বর্ণিত হইয়া  
ছে । এই প্রসঙ্গে প্রকৃতির বস্তু বিবাতকে  
বহু অনর্থের মূল বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া  
ছেন । লিখন ভঙ্গী দ্বারা বোধ হইতেছে,  
ইহার দোষ কীর্তন করিয়া এতদ্বিধে লো  
কের বিবেচনা হইয়া দেওয়া প্রত্যাশিত  
কথার একটি প্রধান উদ্দেশ্য ।

এই প্রকৃতির আদ্যোপাত্ত পাঠ করিয়া  
আমাদিগের এই সংস্কার জন্মিল, বিজয়ব  
ল্লভে কিলিভত্তের টিমজোজ নামক নবলে  
র অনেক অনুরাগ আছে । উক্তর নামকে  
ইহা জন্ম হইয়া প্রথম অবস্থিত ছিল ;  
উক্তর নামকেই অসামান্য উদ্যম ও সাহ  
সিকতা গুণ সম্ভব বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন;  
যে কারণে উক্তর নামিকার উক্তর নামকে  
প্রতি প্রণয় সঞ্চার হয়, তদন্ত গৌসাদৃশ্য  
হইয়াছে যে কারণে উক্তর নামিকার পিতা  
উক্তর নামকে কন্যাদানে অসম্মত  
হন, তাহারও এক রূপত আছে ; প্রকৃতির  
উপসংহার ও প্রণয় এক রূপে করা হইয়া  
ছে, তবে কোন কোন বিধে বিজয়বল্লভের

উৎকর্ষ আর কোন কোন  
নয়ন পৌর হইতেছে । উক্ত জোজোজ চরিত্র  
ও বোধ ছিল ; বিজয়বল্লভ চরিত্র  
বলিয়া বর্ণিত হইয়াছেন । এটি "কথার  
একটি প্রধান আর্থনীর গুণ । কথা পাঠে  
লোকের মন যেমন মোহিত ও নিরুত্তর  
হুত্তি সকল উদ্বিগ্ন হইয়া উঠে, এমন  
আর অন্য কিছুতে হয় না ; কথাপাঠক  
হিগের মধ্যে হুত্তিচিত্ত লোকই অধিক  
দৃষ্ট হয় ; একপ স্থলে বাহাতে নামক ও  
নামিকার চরিত্র গুণ দোষ বর্ণিত বর্ণন ক  
রিয়া পাঠকগণের নিরুত্তর প্রকৃতিসকল  
সঙ্কট হইয়া তদনুকরণ প্রকৃতি না আছে,  
এতদূর প্রকৃতির একপ চেষ্টা পাঠকরা অতিশয়  
উচিত । বিজয়বল্লভপ্রকৃতি প্রকৃতি  
বাহুল্য রূপে লক্ষিত হইল ।

কিলিভত্ত নামিকার পলায়নাদি বৃত্তান্ত  
বর্ণন করিয়া নিজ প্রকৃতি যেমন অধিকতর  
র মনোহর করিয়াছেন, বিজয়বল্লভের  
সেইরূপ করেন নাই । আমাদিগের দেশের  
প্রীলোকেরা পিতৃবল্লভ পক্ষীর মায় দৃষ্ট  
মতোই রক্ত থাকেন, তাহা কিণের প্রকৃতি  
দি বর্ণিত হইলে পাঠে অনৈসর্গিক হয়,  
এতদূর বোধ হয়, এই কথা করিয়াছেন ।  
কিন্তু আমরা একপ পক্ষের কোন কারণ  
দেখিতে চাই । অন্যত্র সংকট জটাকবি  
মালতীমাধবকার জটাক বিমালতীর প্রকৃতি  
বৃত্তান্ত বর্ণন করিয়া অনৈসর্গিক বর্ণনাকারী  
বলিয়া উপেক্ষিত হন নাই ।

অনুচিত অনুভবকারী জ্ঞানবিধের  
পক্ষ সমর্থন ।

এলা সেক্ষরারিগ ইতিহাসে বিজয় পাঠ  
করিয়া আমরা অতিশয় ক্ষুদ্র ও বিস্মিত হই  
লাম । বিজয় ও প্রকৃতির কারণ এই— প্রথম,  
প্রাথমিক সঙ্কটের যে যে ব্যক্তি জন প্রকৃতি  
প্রতি কল্পনায় প্রবৃত্ত হইয়াছেন, সম্প্রদায়  
জ্ঞানবিধের জন সংশোধন চেষ্টা পান নাই  
প্রকৃতির জ্ঞানবিধের পক্ষ সমর্থন করিয়া সেট  
প্রকৃতির জ্ঞানবিধের প্রকৃতি বর্ণন করিয়া দিতে

হেন, ইহাতে প্রার্থার কঠোর কার্যের অন্যথা-  
চলন কর হইয়াছে। দ্বিতীয়, এ পবিত্র সোম-  
প্রকাশে প্রাক্ষর্য সংক্রান্ত যে যে বিষয় লি-  
খিত হইয়াছে, তাহা তিনি বর্ষোচিত আভি-  
নিবেশ সহকারে পাঠ করেন নাই। তাহা হই-  
লে তিনি কখন এত প নিষিদ্ধের ন্য যে আম-  
রা প্রেরারকে অব্যবসায়িক ও খণ্ডিত বিষয় বলিয়া  
উল্লেখ করিয়া তাহাতে লোকের বিরোধ জন্মা-  
ইবার চেষ্টা পাইতেছি। আমরা সম্পাদককে  
অন্তরোধ করিতেছি, সোমপ্রকাশের যে যে  
স্থলে প্রার্থনা ঘটত প্রস্তাব লিখিত হইয়াছে,  
তাহা উল্লেখ করিয়া দেখিবেন, দেখিতে  
পাইবেন, আমরা স্পষ্টাক্ষরে লিখিয়াছি  
প্রার্থনের উপাসনামূলক লক্ষ্যপথ্য, প্রার্থনামূলক  
লক্ষ্যপথ্য নহে উপাসনা; নিত্য কঠোর কার্য,  
না করিলে প্রত্যাবাস কয়ে, প্রার্থনা অব্যব-  
সায়িক নহে তাহা করিলে পাপ জন্মেনা, কিন্তু  
ইহাতে অস্বাভাবিক লক্ষ্যপথ্য নাই, যদি  
কহ উৎসাহ ও আত্মবল সাহায্যের নিমিত্ত  
প্রার্থনা কবিত্তে চাহেন, করুন তাহাতে  
আনান্ধের আপত্তি নাই।

তৃতীয়, সম্পাদক প্রাক্ষিপিকের প্রতি আ-  
শ্রয়িতার বক্তব্য, কোথায় লক্ষ্য হইল না। প্রা-  
ক্কা সমাজের বসিয়া বিলম্ব প্রণালীতে সমি-  
তীরের উপাসনা করিল এবং গৃহে বসিয়া হিন্দু  
ধর্মের নিকট দীক্ষিত হইয়া যোগ্যতা  
পের অর্জন করিল, একই উপদেশ দেওয়া  
কোন ক্রমেই আশ্রয়িতার অধিকার নহে।  
অতএব, আমরা প্রাক্ষিপিকের পক্ষ সমর্থন  
পরিধান করিয়া বিস্তৃত প্রাক্ষিপিক প্রণালীতে  
প্রতিবাদী নহি। আশ্রয়িতার এতাদৃশ  
বক্তব্য প্রাক্কা বিস্তৃত বুদ্ধির অনুসরণ  
করিয়া গৃহে ও বাহিরে সমাজ সমাজে সেই  
আশ্রয়িতার আশ্রয় করিল। প্রাক্ষিপিকের  
মিথ্যাচার লক্ষ্যই আশ্রয়িতার অধিকার। প্রাক্ষিপিক  
কর হইয়াছে, আমরা যেখানে পাইতেছি,  
প্রাক্কা কোমি কোমি বিবরণ হিন্দু ধর্মের আর  
কোন কোন বিবরণে বিস্তৃত বুদ্ধির অনুসরণ  
করিতেছেন। আমরা এখানে কেবল বাহুর  
এবং আশ্রয়িতার বিবরণী দৃষ্টান্ত হইয়া এবং  
যদি অধিক, আশ্রয়িতার ক্রমে  
এই সংস্কারী কোমি হইতে

জাৰ্জিন' বিত্তৰ দৃষ্টি কি এ সংস্কার অগাধ-  
না দিতেছে? ইহা বিত্তৰ দৃষ্টিৰ অধ্বনোদ-  
িত হইলেন অন্য অন্য ভাৱিতেন্তে এ ব্যবহার  
বুঠ হওত সন্দেহ নাই। ই রাজ, জৰ্জিন, ক-  
ৰ্ম্মাণী ও মুসলমান প্রকৃতি কি জাতকৰ্ম্ম ক-  
ৰিয়া থাকেন? এটী বেদোদিত কৰ্ম্ম - পুণ্য  
জাতিৰ জাতিভাৱ: দুৰ্গাং ৩ এই জাতি আছে।  
তাহেৰা এ কৰ্ম্মাণী দেশ চাইতে গ্রহণ কৰিয়া  
ছেন, কিন্তু অত্যাধিক কালে বেদোদিত অধ্বনান  
জ্যাগ কৰিয়া যুক্তিৰ অধ্বনয়ন কৰিয়াছেন।  
একপে আমাৰিণে ৩ জিজ্ঞাস্য এই, বাঁহাৰা  
বিত্তৰ যুক্তি অধ্বনয়ন কৰিয়া তাৰ মৰ্ম্ম  
প্রসারে উদাত্ত হইয়াছেন, তাঁহাদিগে  
য এৰণ স্বতঃ কেন? তাঁহাদিগে  
অবলম্বন কি? বেদ না যুক্তি? যদি প্রথমটী  
অবলম্বন হয়, তাঁহা হইলে তদনুসারী  
অধ্বনান না? বহিহেছেন কেন? আর  
যদি স্বতঃস্বৰ্গ আশ্রয় গ্রহণ কৰিণ, থাকেন,  
জাতকৰ্ম্মাদি পৰিভ্যাগ কৰুন। আমাৰা প-  
ৰ্ণকৰে তাঁহাদিগকে কৰিহেতি, একপে কাৰ্য্য  
কৰিলে তাঁহাৰা কাঁহাৰও প্রীতি ও তজ্জিৰ  
জাজন হইত পাবিবেন না। বাঁহাদিগে  
বেদে বিশ্বাস আছে, তাঁহাৰা বেদোদিত অধ্ব-  
নাননা দেখিলেই তাঁহাদিগকে (তাহাদিগকে)  
নাশত ও জ্ঞান কৰিবেন, আব বাঁহাদিগে  
বেদে বিশ্বাস ন'ই, বাঁহাৰা বিত্তৰ যুক্তিৰ  
অনুসারী চইয়া এই প্রকৃতিৰ মৰ্ম্মপুস্তক  
চাইতে সেই অপিতীয়েৰ উপাসনা কৰ্ত্তব্য  
বলিয়া শিক্ষা কৰিয়াছেন, তাঁহাৰা তাঁহাদি  
গকে অপ্রতিত অধ্বনানকারী ও কৰ্ম্মট বলিয়া  
অজ্ঞান কৰিবেন। তদুচিত অধ্বনানকারী  
তাহেৰা মনে কৰে, উদয় পক্ষই বলা কৰি  
বেন কিন্তু ইহা কখন সম্ভাবিত হয়? এমি  
ক কৰ্ম্মাণী ও আছে? যে ব্যক্তি সকলেৰ ম-  
নোৱজন কৰিহে য'য় নে কাঁহাবই মনোৱজন  
কৰিহে পাবেন না।

(:) পাঠকগণ ভববেশ ও পণ্ডপত্রিতে হইয়া  
অসুখান আকিয়া দেওিত পাঠনেন ।

কপট ভাষা অবলম্বন  
কালের আবর্তিত সময়কাল  
এইরূপ করিয়াছেন। অতীত  
এবং ভবিষ্যৎ বহুদূর  
পরতা বর্ণন করিয়া  
পূর্বক বহু বিবাদের  
এরূপ অসামঞ্জস্য  
কর্মের অন্তর্ভুক্তি  
আছে, অতএব তাঁহার  
বিস্তৃত করিলে তাঁহার  
হইবে—তাঁহা হইলে  
পতিত হইয়াছেন, বলা  
হ। রূতকারী হইবার  
এখন সরল তাব অবলম্বন  
প্রাচুর্য্য করি অন্তর্ভুক্ত  
গ গুরিরা বেহমর পুরক  
হইরা ভক্তিভাষ্যেই সঙ্গ  
আরাধনা করেন, তাঁহা  
কাণ্ড অন্তর্ভুক্ত করিয়া  
উপাসনা দ্বারা কি  
ভাষা আছে। তাঁহার  
চিত্তে বিবেচনা করিয়া  
উপাসনা বিধিই কি  
উল্লেখ করিয়া দিতে  
হইবে না? অন্তর্ভুক্ত  
সবই নাই। অন্তর্ভুক্ত  
জিরা। অতএব  
পরিণাম দারুণ হইয়া  
উপদেশের হুতি  
তবাক্ষ প্রথমে  
প্রা ৩ করেন, তাঁহা  
হিলেন, "আমোদ  
রেকে সাধু  
বসনে বসি  
রা নানা  
তাঁহা। এই  
খণ্ডিকা হইলেই  
নির্দেশ এই  
এই  
হিষ্ণু  
অনর্থ  
এবং



[illegible]

১। পরস্পরা শুনিতে পাই, অহুঁহু  
আমাদের অতিপ্রাণ হৃদিতে  
কি প্রকার অশ্রুনা করেন। যা ক  
কি কহে কহিতেছি, আমরা উ  
কহি নহি। তাঁহারা এদেশের এ  
কি কহিসাধন বিষয়ে হস্তক্ষেপ  
অধ্যবসায় সহকারে কার্য করিতে  
কি তাঁহাদের উপরে আমাদের  
হইবে। সেই সেই প্রকারেই  
এই বহন তাঁহাদেরই পক্ষে  
কি পাই, অতিপ্রাণ হৃদিতে

পলে জাহা সৎশোধন চেটে। পাইরা থাকি  
আমাদিগের লক্ষণিত হত এই, বিনি হটন,  
বখন বাঁহার ভর দেখিব, তৎক্ষণাৎ জাহরা  
তৎসৎশোধন চেটে। করিব, তাহাতে কেহ রুটে  
হটন, আর তুটে হটন, তাহাতে আমাদিগের  
ক্ষোভ নাই।

এই প্রস্তাবটি ক্রমে অসম্ভব দীর্ঘ হইয়া উঠিল, ইতিমধ্যে বিরোধের অন্য অন্য ব্যক্ত্যের উত্তর দানে অধ্যক্ষের বিরুদ্ধে রহিয়া গেল। অধ্যক্ষের নিকটে আত্মসমীক্ষার অন্তিম প্রায় এই, আত্মসমীক্ষার অন্যথা হুত অতিপ্রায় তিনি অন্যথা হুত লোকের গোচর করিয়া সাধারণকে ক্রমে পতিত করিয়াছেন, অতএব তিনি এই প্রস্তাবের সম্মতি অন্তর্বাণ করিয়া সাধারণের সম্মতগণ করিয়া দেন।

উপসংহার শব্দে আমরা গুনরায অশুষ্ঠা-  
নকারী ব্রাহ্মদিগকে বিনয় বাক্যে অনুরোধ ক-  
রিতেছি, তাঁহারা যে উচ্চ সোপানে আরোহণ  
করিয়াছেন, তাহা হইতে অধঃপতিত না হন।  
তাঁহারা যে ব্রাহ্মধর্মকে হৃৎ ধন্য করিবার চেষ্টা  
পাইতেছেন, আমরা অনেক কখন তাঁহাদের  
প্রতিবাদী নহি। আমাদিগের দৃষ্টির সংস্কার  
এই, বিশুদ্ধ ব্রাহ্মধর্ম হাবৎ এদেশের যুগধর্ম  
না হইবে, তাবৎ এদেশের সম্ম্যক উন্নতি লাভ  
প্রত্যাশা নাই। তাঁহারা যে অশুচিত অশুষ্ঠা-  
নকে গৃহ মধ্যে প্রবেশিত করিয়া পরিজন গ-  
ণের চিত্তের লম্বুতা ও নীচতা সম্পাদন চেষ্টা  
পাইতেছেন, আমরা তাহারাই কেবল প্রতি-  
বাদী। কল কথা এই, ঈর্ষ্যান্বিত গতি নি-  
পত্তীর পুরুষাত্বের সহিত রহস্য আলাপের  
ব্যয়ি বিশুদ্ধ ব্রাহ্মধর্ম অশুষ্ঠান সম্বন্ধ সহিত  
পারেন না।

विविध संवाद ।

২১ এ মাঘ সোমবার ।

১৩. রাজ্যসভার সভাপতি সাহেব উল্লাহ খান  
 মডেল বিচারালয়ের এক জন জজ হইয়াছেন

• ডাক্তার উইলিয়ামস ও ডাক্তার উইলসন  
 খ্রীষ্ট ধর্মের জোব প্রকাশন করাতে তাঁহার  
 এক বৎসরের জন্য নিজ নিজ কর্তৃক হইতে পুঁজি  
 ও হইয়াছেন। তাঁহাদিগকে বন্ধনকারি ব্যক্তি

ନିଷେଧ ହୁଏତ । ତାହାର ଅବିବେକୋନ୍ମତେ ଏ  
 ବେଳ ଆତ୍ମୀୟ କହିବେନ ।

কমিসারিএটে কমিসন বসানোর সাধা-  
রাজ্য হইতে এক লক্ষ টাকা ব্যয় হইয়াছে  
বাধে ছুঁলে আঠার আ।

সম্রাতি সর চার্লস টু বিলিয়ান ব্যবস্থাপ  
সভার সভাপতিগণকে আশ্বাস করিয়া ইনকম  
কেনর কাছাকাছালীর বিষয় জিজ্ঞাসা করি  
ছেন। বোধ হয় ইনকমটাকেনর অস্তিত্ব  
উপস্থিত।

ডাকা প্রকাশ বলেন ডাবার কনেকজন যে  
রাসানবাদী জীলোক, পুরুষ ও বালক  
লিকা আনিয়াছে। বাজিরে তাহারা বাজি  
রের ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া নিঃপাত ক  
কিন্তু গোপনে তাহাদিগের জীলোকেয়া বা  
জীর ভদ্রলোকেয়া বাজিতে গিয়া জীলো  
দিগের সঙ্গিত আলাপ কর। যখন পুরুষ  
রা বাজী না থাকেন, তখন তাহারা না  
একর তার তব্বী একাশ ব বৈতে থাকে।  
দিকে দুই এক জন একেকাক করে, আয়  
কে দুই এক জন সিদ্ধক বা কা আনিয়া  
অপহরণ করিব র চেষ্টা করে। সম্রাতি ডাক  
দারগা তাহাদিগকে চোর বলিয়া দৃত বডি  
বিত্তর টাকার অসংখ্য প্রকৃতি বাহির কা  
রাছেন। খোঁড়াপানের লোকেয়া দহা আ  
পানেরাও তাহাদিগকে ডাকাইত বলিয়া  
করে।

উক্ত পত্রের চেষ্টাশীল সংবাদ দাতা পত্রিকার জ্যেষ্ঠ দাসী রূপিতা প্রকাশ এক উদাহরণ সমর্পণ করিয়াছেন। কতক আর্থিক নানক এক জমিদারের এক বীলী পত্রিকার কলমে কতক ফালি ছোট আঙ্গুলে আছে এক প্রতিলিপি পত্র লিখিল করি নালীন করেন যে পত্রী ( দাসী ) উক্ত নিকটে ৪৫ টাকা মূল্য ৬ ৫ টাকা মূল্য লইয়া খোঁজ করি, সে ব্যবসায়ীক হইয়া বার বারীতে থাকিবে আর সে বারী উক্ত করিবে তাহা তাহাকে দিবে। বিচার পত্রি বারী কালীকির দ্বারা এ নালীন অগ্র করিয়াছেন। বখন বীলী রূপিতা প্রকাশ বার পত্রি আঙ্গুলিত হয় তাহা লিখিতাকার প্রতিলিপির অর্থে



পাক হইলেই মালী সোমিয়া থাকেন।  
বর্ণনা দিওঁ একিবারে বনোঁকোণী হইলে  
হু কেব জাহাজে আমাধিগের উপরে বহু গ  
ত করি। মালী হউক, যা হু জাহাজাখান উ-  
গাণী হইয়া কিজন্য একিবারে একটি আ-  
কন ধী করেন ?

টাইলস অব ইন্ডিয়া বলেন নর হোল প্রাণে  
খব ও থাকারী পর্জতে সেনাদলের এক  
পুত্র নিবাস স্থাপিত করিবার ক্ষুদ্র তথ্য  
মন করিয়াছেন। নর ইন্ডিয়া-মালিকি  
অপুতনার পর্জতের বিবরণে ২ অবশ্য করি  
ছেন। এসকল বিবরণে কর্তব্য ব্যয় করা একশে  
তিনশত অন্যায়।

নিরীণেজেট বলেন এই কেন্দ্রারি কানী  
রেইলওয়ে টেননে একটি কোজ ও মৃত্য  
ইবে। গবর্নর জেনরল তথ্য উপস্থিত  
কিবে।

উক্তপত্র আফানিহ হইয়া প্রকাশ করি-  
ছেন লক্ষ্য পর্জত একটি মাখা রেইলও  
হইবে। তাহা হইলে বাহাদুর কাঠের  
নিজের বিশেষ গুণিণী হইবে।

আলাহাবাদ গেজেটের এক জন সংবাদ  
তা বলেন রেওর্স অফিস করিতে থাকা  
রীপকারী রাজার নিকটে বখোচিত সহা-  
তা পাইতেছেন না। রাজবাণী অরীপ করা  
বশ্যক হওয়াতে রাজা আবিরাহিলের  
মচারীরা তাহার বাণীর জীলোকদিগকে  
খিতে জাহেন। রেনিডেট কোলস সাহেব  
ই জন দুর করিবার উদ্দেশে রাজার নিকটে  
মন করিয়াছেন।

সম্রাতি আগনে অতিশয় শিলাভর্ত হইয়া  
রাহে। কলোত ডিহাকার তক একটা বি-  
শিষ্ট হইয়াছে।

হাট আফানিহের প্রধান অফিসার সাহে-  
ইংলও হইতে প্রত্যাগমন করিয়া পুনরায়  
ক-কর্ম গ্রহণ করিয়াছেন। আমরা শুনিম-  
কোন সাহেব পুন্নিবে প্রত্যাগমন না করি-  
পুনরায় এক জন ব্যক্তি হইতেছেন।  
পীল সন্থে ব্যক্তিগতগের অর প্রায়  
উন্নতি। অফিস-কোম সাহেব কি আ-  
র পুনরায় ব্যক্তিগত হইতেছেন তাহা আ-  
বিবরণে পাঠিত হইবে না।

কিউকোম ব্যক্তিগত সংবাদ মাখা বলে

ন সম্রাতি কর্তৃক কারাগার হইতে চাকর  
করেদি পলায়ন করে। কিন্তু তাহা চাকর  
নিমিত্ত এক মারের কর্তৃক মৃত হইয়াছে।  
মিউন ৩০-টা। পুরকার পাইবেন।  
বরিসালের জেল হইতে সর্করা করেদি পলা-  
য়ন করে, আমরা শুনিমাহি তাহার বখন মল  
কাটিতে বার সেই মর হই এক জন ম-  
মখা গ্রহণ করে, কিন্তু এ-গিরা বাধে  
খাইয়াছে ওমর করিয়া বকা পাইয়া থাকে।

টিনদেশ হইতে সংবাদ আনিয়াছে সম্রাটে  
র সেনারা ইন্ডোপীর আফিসারগের  
থাকি শিকিত হইয়া যুধ বিবরে বিলক-  
পারগ হইতেছে। সেনাপতি বরগইন পর  
হুত হইয়াছেন। টিনদেশীয় গবর্নরেটের  
বিশেষীয়গের সহিত ক্রমশঃ লড়াই হইতেছে।  
অধিকেনের মূল্য অল্প হইয়াছে।

নিম্নলিখিত সংবাদ শুনি, হিন্দুগেট  
হইতে গৃহীত হইল।

গবর্নরেট পরীক্ষা করেকটি বালনা  
আদর্শ বিদ্যালয় স্থাপিত ও তদাধিত এক  
জন বিনেব ইনস্পেক্টর নিযুক্ত করিবেন।

মৌলবী আবদুল মতিন বিবিসিয়া-  
লয়ের এক জন মত হইতেছেন।

কলিকাতার অংকারীপরিচেষ্টা হ-  
পটিন সাহেব গত ইন্ডোপটিন অরুচি  
সংক্রান্ত করেকটি হুতন বিবর প্রকাশ  
করিয়াছেন।

হুত জেনরি রিকোর্স সাহেবের এক-চিহ্ন  
ত প্রতিশ্রুতি ভারতবর্ষের সভ্যগে মাখা  
হইয়াছে।

পরিবর্তক বলেন এক ব্যক্তি ওকামতির  
পরীক্ষা দিবার জন্য তবানীপুরে বাস করিয়া  
ছিলেন। পরীক্ষার দিবস পলায়ন করিতে  
গিয়া তাহার হঠাৎ মৃত্যু হইয়াছে।

২২ এ মঙ্গল বার।

এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন ২৪  
পরগনার অস্ত্রপাতি বারুইপুরে সম্রাতি  
লাফাঙ্গারের দুর্ভিক্ষবিপদাপন্ন ব্যক্তিগের  
সাহায্যার্থ এক সভা হর। সভা স্থলে অনেক  
কেই উপস্থিত ছিলেন। সকলেই কিছু কিছু  
দান করেন, বার রাজস্বের রাসতৌখী ১০০  
টাকা দান করিয়াছেন। এবিধ বিবরণে মা-  
নোর কথা শুনিতে আমাধিগের অতিশয় আ-  
নন্দ হর।

বাখির্সে টের কল্যাণ  
কর্মচারীগের সম্রাট  
নিব কর্মচারীরা অফিস  
বেরা পরিগত হইয়া  
মাত্র গজাবিহীন হইল।  
মালির্সে উপস্থিত  
কেন্দ্র আফিসার বার  
পাশ, করেই বই হইল।  
ইংলিষবান মল্লিক

মৈয়াম ইন্ডিয়া

১৫ মণ্ডি মৈয়াম  
শ বিবরণে।

আলাহাবাদ গেজেট  
চারী বেডলি সাহেবের  
ইত রাজপাল সিংহ  
বাণীভরিত হইয়াছে।

জিনি আরও অনেক  
শ্রিত হইয়াছে, তাহার  
হইবে এবং

মাই, কর্তব্য-পীত হইবে

উক্ত পত্র আফানিহ

জেনরল আবদারি

মৌলবী ও বাসি

এখন মৌলবী

নিত হইল।

কলিকাতার

হইয়াছে।

ই রেন মাখা

অপর সরকারি

হইতে মৌলবী

সেইখান হইতে

আর একটা

যেমন অনেক

বনাও তেজসি

চলিবে সেকালে

বহু হইবার

মতী মালী

কে কলিকাতা

কনাই।

প্রদেপের বর্তমান

রেন মতাব

উন্নতির

পতিত



আবার আসল এইদেখ. চীনদেশ  
 দুইজন কুশি আনিয়া প্রকল্পের  
 য় নির্মাণ করিবার মানন করি-  
 ত। ট্রিনিদাদ প্রদেশের যেটকাও  
 বৈদেশিক করিতে নিষিদ্ধ।  
 এই লোক বৈদেশিক কর্তব্যনা সু-  
 র্যাদেশের করাইলে ট্রিনিদাদ ব  
 রামি এই সমস্ত বৈদেশিক সম্পদ  
 কর্তে হইয়াছে। তিনিগণ বৈশি  
 লোক, বোধ হয় ক্রমে সকল  
 হাতিয়ার এই কল্পে রমন করিতে  
 হইবে।

পোশোয়ারের শাসন ভার-  
 হইল। প্রিগেডিয়াস হেলি সাহেবের  
 ৭ করিয়াছে। ইহা এখন সেনাপ-  
 কতক। পরবর্ত্তের অধীন হইবে।  
 চাইতেই ইহার অধ্যতর একটি  
 পরবর্ত্ত হয় এক জন চিত্র  
 করিতে হইবে।

কর্তব্য সহকারী কমিসনর ডর-  
 ট সাহেব বলিয়াছেন এবং সর  
 পেকা পুরাতন আধিক রেসন জ  
 ১৯২০ সন চার্লস ট্রিনিদাদ  
 উঠাইবার উদ্ভোগ দেখিতে  
 যিগের সুখনিবারণই রাজকর্-  
 ব কর্তব্য কর্তব্য।

স্বাভিচার প্রেমহালে ওকালতি  
 ই শব্দের অধিক পরীক্ষা ইল  
 ইলেন। আবার অনিয়া সুখিত  
 সন্তোষি কালেক্টর একজন উপা-  
 উহার অন্যতব পরীক্ষারিক্রে প্র  
 লখিয়া পাঠাইয়া দিবার ডেটা পা-  
 কিন্তু অপর হাতিয়ার তাহা  
 সুখিকিত ব্যক্তিরও যদি একা  
 টব্য বলিয়া বোধ হইল না, তবে  
 কার কি কল হইল?

অলার তরফর নিম্না গতি হইয়া  
 নিম্না গতি এক ইকির অপেক্ষা

দিল্লীগেজেট বলেন ৩ নথিত বাটালিয়ন  
 রাইফল সৈন্যদল গত রাতিতে আগরা যাত্রা  
 করিয়াছে।

ইংলিসমান বলেন উক্ত পশ্চিম প্রদেশে  
 র লেপ্টনকে গবর্নর এডমন্টন সাহেবের পানে  
 এইচ, বি, হারিংটন সাহেব নিযুক্ত হইবেন।

বোম্বাই হইতে চারিজন পারদী কলিকা  
 তার আগমন করিয়াছেন। ইহারা গত কল্য  
 সংকৃত কালেমে আসিয়াছিলেন। ইহারা  
 গের নাম ডাক্তার ডাউনসী, অর্থেষর  
 কামসী, রসসমী রসসমী কামা, এবং  
 রসসমী নামার ওরাজি কামা। ইহারা ইটরো-  
 পের অনেক বেশ কর্মন করিয়াছেন। সমুদায়  
 তারতবর্ষ কর্মন করিবারও ইহাঙ্গিগের ইচ্ছা  
 আছে। বাকালী জমিদার ও ধনী ব্যক্তির  
 গের কবে এইরূপ প্রতিজ্ঞা করবে?

২৪ এ মাস বৃহস্পতিবার।

ডাক্তার নিলসিয়ন নামক এক জন করাসী  
 চিকিৎসক গারিবল্টির ক্ষত পদ হইতে এক  
 বন্দুকের গুলি বাহির করিয়াছেন। ইটালীয়ে-  
 রা এই ডাক্তারের আভিষয় সম্মান বর্জন করি-  
 য়াছেন। একাধিক বাস্তবিক অত্যন্ত সম্মানের  
 হইয়াছে। কারণ সমুদায় ইটালীয় ও ইংরাজ  
 চিকিৎসক পূর্বে বলিয়াছিলেন ডাক্তার পদ  
 মধ্যে গুলি নাই এক জন ইংরাজ এই গুলির  
 জন্য ২০,০০০ টাকা (দ্বিতে চাছেন) গারি-  
 বল্টি ডাক্তার কেনিয়া দিতে বলেন, কিন্তু  
 সেনাপতি টর ডাচা মেগলসের চিত্র শাসিকায়  
 রাখিয়াছেন। ইহাতেই আরও একাধ  
 পাঠিতেই গারিবল্টির ম্যার অর্থাধগর  
 বন্দেব হিটলরী অর্পণ মাত্র অপর প্রহণ করি-  
 য়াছেন।

পকাবে সুইনাইন ও গর্জন হকের চাব হট-  
 তেহে। কাকাতাতেও উহার বীজ বগন আ-  
 রত হইয়াছে। আবার দারুজিলিগের হকের  
 বিবয়ে বেকপ প্রবণ করিতেহি তাহাতে ল  
 কাহে সিফোনা হক হওয়া সম্ভব নহে।

এতদেশীয়েরা অ বিখ্যাত কুরানের। কি-  
 ত সম্রাতি টাইমস অব ইলিয়া বলিয়াছেন  
 পেনিলুয়ার ওরিন্টল কোম্পানি প্রতি-  
 যোগিত। নিবারণ করিবার উদ্দেশে ও আশ  
 নাহিগের কর্মচারিগণের বেকন হইয়া

আপনারিগের সাত গোপন করিয়া। ইহা  
 আবার দৈনিক কোম্পানি আপনাবিধি সা-  
 যুক্ত। সঙ্গরোণ করিতে পারেন কি না?

গী জবুয়ার মে লাম বহুমান সাত ও প্রহণ  
 এলগিহকে আপন বাটীতে নিবৃত্ত করায়  
 তাঁহার তাহ। প্রহণ করেন। তিনিই  
 করি সমায় পর পুত্র আভিষয় বিবৃত্ত হই-  
 য়াছেন। এক বহাতি বলেন সত্য বটে গো-  
 লাম বহুমান ইংলণ্ডে রাজীর বাটীতে নিবৃত্তি  
 ত হন, তথাপি তাঁহার প্রতিনিধিকে নি-  
 বাটীতে নিবৃত্ত কর। অসম সাহস। অজা  
 ফুল নীল জীহুজিকারিরা এইরূপ কাব্যে অস-  
 সাহস বোধ করেন বটে কিন্তু রাজকুমারের  
 তাহা বোধ করেন না।

হারদরাবাহে এই অতুত জনরব উঠিয়া  
 রোহিলারা যুট আরত করিয়াছে এবং নিজ  
 সের এক জন সেনাপতি তাহারিগকে হ  
 করিতে গিয়া হত হইয়াছেন। মগরা ও নাম  
 যে ব্যক্তি নানা সাহেবের সহায় বলিয়া  
 হন, তাঁহার নিকটে কয়েকখানি পত্র পাঠ  
 গিয়াছে। এসমুদায় নানা সাহেবের নিষিদ্ধ  
 এক খানিতে তিনি লিখিয়াছেন যুদ্ধে পর  
 জিত হইয়া তিনি এক ডাক ব্রহ্মকর্তা ব  
 পলায়ন করেন। তিনি এক বার হুজুৎশে  
 মিকাতার অসিয়া বহু বাজারের পণিকতি  
 নিকটে আপনার গবর্ন মেজের কাগজ বিক্রী  
 করিয়া শেষে নেপালে পলায়ন করেন। না  
 গানব মগুরাওকে দাখিখাতে বিদ্রোহ উপ-  
 পিত করিবার জন্য কয়েকখানি পত্র লিখি-  
 য়েন। বোধ হয় নানা সাহেবের নাম পণিক  
 এরূপ অতুত জনরবের নিষিদ্ধ হইবে না।

দিল্লীগেজেট বলেন একোৱ প্রদেশের  
 অতাবে লাহোর হইতে মুলতান পুত্রের  
 লওয়ে সম্পূর্ণ হইতেছে না। রেইলওয়ে  
 প্যামি তিরিহিট লোহের এতটা প্যাকিভেড  
 গত বৎসর ২, ৮০, ৮০০ জন আরোহী গম-  
 গমন করেন, ইহাঙ্গিগের মধ্যে ২, ৭৭, ০০০  
 তুর্কীর প্রদেশে গমন করেন। কোম্পানি  
 যার সার লক্ষকরা জিন টাঙ্গা হাত হইয়া  
 সাধারণ লাহোর হইতে কয়েক রেইল  
 অধিগিগের পুত্রের পুত্র হইবে।  
 আবার দিল্লী করিয়া উঠিয়া পারিষদ

সিদ্ধান্তে সিদ্ধান্ত বসেন যেমন বিদ্যোৎসাহ  
কইরাছে। বিদ্যোৎসাহ: ৩০০০ করাতীকে বেষ্টি  
ত করিয়া কিছু কিছু আকারের বিশেষ কর্তৃক বিদ্যা  
তে। চীনদেশে ইংরেজ এক মল্ল করাতী সেবা কর  
বার গমন করিতেছে। বিদ্যোৎসাহে বসেন আরও  
চীনদেশের মালিক, কামার খোঁজবের ও অতি  
মত হানিকর।

পূর্বে বসেন, ১৮৫১/৫২ অব্দে সিদ্ধান্ত  
পূর্বে ৪০০, ১৫, ৫২০ টাকার বাণিজ্যের মূল্য  
নী ও ৪, ৫১, ২১, ১০৪ টাকার আদানী হইয়া  
ছে। সিদ্ধান্তের ক্রমশ: ক্রিয়ার কইতেছে।  
কিন্তু কবে আদানী উক্ত উপনিবেশের ব্যয় আর  
হইতে শুরু হইবে?

পূর্বে বসেন পূর্বে সিদ্ধান্ত। কুলার সাহায্য  
কর, উঠাইয়া দিবার আদানী করিয়াছেন। উক্ত  
সাহায্যের মাধ্যমে কুলার কুলি পাঁচ বৎসরের  
অন্য মিত্রের দেওয়া হইবে। কুলারকে অন্য  
বিষ কোন ক্রমও দিতে হইবে না। পাঁচ বৎস  
রের পর সাহায্যের ব্যবস্থা আদানী কর লওয়া  
হইবে। এক্ষণে এসেছেন অনেক এমিয়ে  
মাংসাদিগের সহযোগিতার পরিচয় দিতেছেন  
একটি ও ক্রিয়াকারিত্বের নিকটে নিষ্ঠা  
র নাই।

সোমাইয়ের বিখ্যাত মালিকের মহাসভা নয়  
আলেকজান্ডার গ্রীকে আদানীদিগের বাই  
ন চালাইয়া করিয়াছেন। নয় আলেকজান্ডার  
গ্রীকে এদের মালিক উপস্থিত, যে ব্যক্তি তাঁ  
হাঁক বক্তৃতা পাঠ করিয়াছেন তিনি তাঁহার  
অসাধারণ ক্ষমতা খোঁজার করিলেন।

অসাধারণ ক্ষমতার এক জন পাত্র প্রেরক  
লেন, সিনলা পাত্রের মালিক হানাতর  
মিটার অন্য মালিক। মালিক এক সপ্ত টানা  
খান করিয়াছেন। এই টাকা ব্যাটী কর যা  
আদানী হইবে। সপ্ততি তথ্যের দেও দিন  
মালিক হুটি ও কর হইয়া বস ২ রক ও বাটি  
কইরাছে। অনেক বাট ও আদানী বা  
টিয়াই লেনে আদানীদিগে পুলিয়া গিয়াছিল।  
বাস্তব এক বক্তৃতা পড়িয়াছে যে সাহায্য সপ্ত  
মল্ল হইয়াছে।

করাতী মালিক লেন হইতে না লইয়া তৎ  
বিস্তে এক কটি মিসর কারতবর্ষ ও চীন  
ইতে রেল লইয়া বাটীয়া সপ্ত করিয়াছে।  
তাহা হইলে লালম মালিক ইংরেজের  
মালিক বাণিজ্য একচেটিয়া করিবে।

সৌন্দর্য আদানী লতিক বার সাহায্য  
ল মালিক সাহায্য মালিক চক্রবর্তী কলি  
কলি মালিক মালিক হইয়াছেন। যদি  
মালিক মালিকের প্রতিমিথি অঙ্গ এই নি  
মি হইয়া থাকে কিম্বা সাহায্য চক্রবর্তী  
মালিকের প্রতিমিথি হইতে পারেন, আ  
দানীতে পারিতোষি না। তিনি যে কেবল

এমিয়েদিগের সকলকার সংসর্গ পরিচালনা  
করিয়াছেন এক্ষণে অন্য মল্ল হুটিতে পাই  
কি নি এমিয়েদিগের প্রতি এমিয়ে মল্ল  
লেনটন মালিক আদানী মালিকের মা  
জিই টাকার তত্ত্বাভি পাত্র ব্যাটীকে কে  
ক মল্ল লেন হুটি সংগ্রহ করিতে পারিলেন না।  
দারিদ্র্যের ফোঁসাদি আইন প্রসিদ্ধ হই  
য়াছে।

পূর্বে মালিকের মালিক হইতে ১১  
খানী আদানী করিবে এক্ষণে অন্যর উঠি  
য়াছে। সপ্ততি মালিক আদানী কর  
রা একটা রোজ কইরাছে।

মত বসেন মালিকের মালিক হইতে ১২,  
৫২ ১৬১ বস্তু। কুলার মালিক হইয়াছে। বর্ধ  
মান বর্ধে আরও কর মালিক।

মত কল্য এক্ষণে পূর্বে নিয়মিত  
টাকার অধিকার বিক্রীত হইয়াছে।

| সিদ্ধান্ত    | মত         |
|--------------|------------|
| বেহারের ১৮৩১ | ১৪৫৫ ১১/১০ |
| কাশীর ১১৪০   | ১০৩১ ৪/৫   |
|              | মেট্রিকা   |
|              | ২১, ০০ ২১৫ |
|              | ২১, ০০ ০২৫ |

কেন্দ্র অব ইতিহাস তিলির বোকালাব  
বিষয়ে বলিয়াছেন এমিয়েদিগের মালিকের  
কথার প্রত্যয় করা যায় না। আদানী এক স্থানে  
লেখা হইয়াছে কুলি মালিক নির্দেশী কথার  
পরিবর্তে মালিকের প্রাধান্যের মালিকের  
মৌল সঙ্গীত হইল না তাহা হইলে মালিক  
সাধারণের মালিক তাহা মালিকের মালিকের একতা  
হইত। এই লেখার মাঝে স্পষ্ট লেখা হই  
তেছে তাঁহার মতে মালিক নির্দেশী মালিক।

২৫ এপ্রিল মালিকের মালিকের মালিকের  
ইংলিসমাল মালিকের মালিকের মালিকের  
রে ও মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

মত কল্য মালিকের মালিকের মালিকের  
কলে গমন করিয়াছেন। আদানী মালিকের  
র হইল ওরে মালিকের মালিকের মালিকের  
অনেক মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

মত কল্য মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

আলাহাবাদ মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

পিটর, বে. রিড মালিকের মালিকের  
কল্য মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

একটি মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

ইতিহাস মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

উক্ত মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

২৩ এপ্রিল মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের

মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের  
মালিকের মালিকের মালিকের মালিকের



[illegible]

সংঘ ৩ই জানুয়ারি। কোর্ডারক্স বর্গের  
নিকটে এখন সারিভের পরাক্রমের বিশেষ প্রকাশ  
প্রকাশিত হইয়াছে। এখানে বড় প্রমাণ হই-  
তছে যেখানে অথবা ইহাই প্রমাণ। বিজ্ঞানীরা  
কিছুনা পরাক্রমিত সেনাদলকে সাপিনাক পাত্র হ-  
ইতে দিল তাহা বুঝা গাইতেছে না। ব্যক্তিগতকে  
আজ্ঞান করা হইয়াছে। কিন্তু কি কারণে জা-  
তায় নাই। গ্রীসের দাবড়ীর লোক এক মত হইয়া  
র জয়যাত্রা আনন্দকে বাল্য বসির মনোমীত  
করিয়াছে। ইংলণ্ড গ্রীসকে আক্রমণের দীপক  
চাড়াইয়া দিতে চাহিয়াছেন। কিন্তু এবারে  
এই নতুন জাতি যুদ্ধের সম্রাট হইতে হইবে।  
কবে দ্বিতীয় বার জাতি যুদ্ধার্থে রাজ্যের  
ন বসিয়াছেন। যুদ্ধে রাজ্যকে দেখাইয়া  
যা সাপিনাক কর্তব্যকে বসিয়াছেন। এখানে  
দ্রিও পাব বসিওর সেনাদল প্রস্তুত করিবার  
আবেদন প্রাপ্ত হইতে না। ইংলণ্ডের মহান  
তরঙ্গিত বড় হওয়াতে অনেক যোদ্ধার  
নষ্ট ও বিস্তর জাতি জয়যাত্রা হইয়াছে। যুদ্ধ  
টোকার পর (১) বড় হওয়াতে বসিওর  
ন জুনিয়র বড় ভেদ হওয়াতে জাতি  
হইয়াছে।

[illegible]

নিউইয়র্ক ২২ এ ডিসেম্বর। ওয়াশিংটনে মন্ত্র  
নতার বড় গোলামোগ উপস্থিত হইয়াছে। সে  
ই মন্ত্রীর বাথিংগট্রাংক করে, জন মতা এই  
অভিযোগ একাধিক করিয়াছেন যে, মন্ত্রীর  
প্রতি তাঁহারিগের বিশ্বাস নাই। নিউইয়র্কে  
প্রতি তাঁহারিগের বেশ অধিক। নিউইয়র্কে  
তৎক্ষণাৎ, আগামী কর্ম পরিচালনা করেন।  
তাহারপর হোকারি আরো বেশ হাইব্রড-ইউগ  
করিয়াছেন কিন্তু মন্ত্রীর নিবন্ধ তাঁহারিগে-

কর্ম পরিচালনা করি। এটা কারন সাই-  
পারসারী হাটবিশেষের নিজ নিজ কার্যে বাইতে  
করিয়াছেন। সেনাপতি বরন সাইড অফ জে-  
ডব্লিউএফ সৈন্যগণ লইয়া, যাইবার তার এ-  
কর্ম করিয়াছেন। সত্যপতি লিফলম উপকূলস্থ  
প্রদেশ সকলের কর্মটিকে এই কথা জানাইয়া-  
ছেন তিনি সৈন্যগণকে যুক্ত করিয়া দিয়া যেন  
আবণা করিয়া দেন। তাহা হইলে তিনি যোগ  
করিয়া দিয়া উত্তর কনসারভেটর কিছু বধন  
দিলেও কল কলস, তখন তিনি উত্তর পার-  
শ করিলেন। হেমবর অফ কনসারভেটর সংক্রান্ত  
এক বিল প্রস্তুত করিয়াছেন। তাহাতে মন পত  
মিলিয়ন ডলর কর্তৃক কবিবার অসুখাধ করিয়া  
ছেন। কর্তৃক র'ল ট'কা পাওয়া যাইবে তাহার  
এই সংস্কার করিয়াছেন।

নাইট ইয়ার্ড ২৩ এ ডিসেম্বর। সেনাপতি বরন সাইড  
প'কড্যাগেব প্রস্তাব করিয়াছিলেন 'কন-  
সারভেটর লিফলম সেই প্রাচীন প্রাচীর কবিত্তে  
সংস্কার হইয়াছেন। কেহ কেহ অসুখাধ করিতে  
ছেন উত্তরাংশের সন্ত্রাসপ্রাণ পরিবর্তন হইবে।  
সনাপতি হালেক ও টাউনের উপর সংস্কারে  
যেহেতু দিন দিন বর্ধিত হইতেছে। সত্য-  
পতি লিফলম ও সেনাপতি হালেক ও টাউন  
হারা মেরেটন উইতে কেউ বকসবর্ণ আফ-  
গ করিতে করিয়া ছিলেন কিছু সেনাপতি বরন  
উত্তর হা। না করিয়া কাল যাইতে হইতে আ-  
রমণ করেন। একথা তিনি অধিকার করিয়াছেন।  
তার ১১ নং টেনা হস্ত ও ২২ নং আফগ হই-  
তে একপে তিন অসুখাধ করেন এক প্রসঙ্গ-  
বর্ণমেষ্টেনম্য সেনাপতি পরিচালনা করিয়া  
কনসারভেটর প্রবণতা আক্রমণ করিতে  
সমর্থন।

নাইট ইয়ার্ড ২৪ এ ডিসেম্বর। ২০০ পতনল কাফু  
প্রস্তাব করিয়া একটা বিল বিধিবদ্ধ হইয়া-  
ছে। টেক্সার অধিক এক বিল প্রস্তুত করিয়াছে  
। তাহা নিম্নলিখিত মতে ৯ কোটি ডলর কর্তৃক  
বিবার অসুখাধ করিয়াছেন। তিনি অধিক  
অধিক টেক্সার মোট প্রচলিত করিবার কোন  
মত করেন নাই। ১২ই জানুয়ারি উত্তর হাউ-  
সেই কার্যে হইয়াছে। আবেদনার উত্তরাং  
সেনাপতি কটার পোলকসবর্ণ ও উত্তর কা-  
পালিনা অধিকার করিয়াছেন এবং রেজিওর  
কর্তৃক নিউইয়ার্ডে প্রত্যাগমন করিয়াছেন।

নাইট ইয়ার্ড ২৭ এ ডিসেম্বর—মিসেস সিন্টি-  
নর। হেমবর যে টেনা ও তাহা হা আ হ, নকি  
হেমবর সেনাপতি তাহা। বিনট করিবার চেউ  
হইতেছেন। সেনাপতি সিউয়াড সজির অতি-  
থাবে একটা সভা করিবার আর্থনা করিয়াছেন।  
সুজিরকসবর্ণ তিন হা জারেরও অধিক দক্ষি-  
শের সৈন্য বিনট হইয়াছে। দক্ষিণাংশের  
মাত্রা পটময়ক পাই হইয়া সেটলাও থিয়া-  
এবং ওয়াশিংটনের সহিত টেলিগ্রাফের যে  
খা ছিল তাহা গুপ্ত করিয়াছে।

সত্য ১১ ই জানুয়ারি, যে ৮ বিকস বাফ  
কি কাল হইবে, তাহা জানিবার দোষ সপ-  
ন হইয়াছে। কনসারভেটর বিয়া ইংলও হইতে তার  
মের টেলিগ্রাফ আবেদন আরও হইবে।

নাইট ইয়ার্ড ৮ ই জানুয়ারি। ডেপুটি অফ-  
গ'ড লেকম'টন মগবে গ'চমি'নর গুজর হু-  
জের পর বিয়া হা পবাকিত ইয়া হ। গবর্ণ-  
মেন্টের সেনারা বিকসবর্ণ আক্রমণ করিতে গিয়া  
হুইয়া হইয়াছে। জীতদ'সহি'র পর সুক্তি যোন  
ন। নিরম বিকস বালিয়া মতাল তাহা হইতে মনুই  
হয় নাই।

সত্য ১০ ই জানুয়ারি। আবেদিকা হইতে  
কিছুই নতন সংস্কার আইসেন ট। গবর্ণমে-  
ন্টের সেনারা দক্ষিণ পশ্চিমদিশে বিপ'ল পতি  
তে পাবে এইরূপ আশঙ্কা হইতেছে। বিস্তারি  
বা পুনঃপ্রাণ দেয়া হইবে। অধিকার করিয়া সে-  
নাপতি প্রাচীর স্থলস্থানে বাইবার পর বন্ধ ক-  
রিয়াছে। কর্তৃক নিগেব কুজ কুজ সেনাপতি কো-  
টিকর অন্তর্গত প্রাচীরে ৭৭৭ অধিকার করিয়া-  
ছে। বিজোহীরা উইতে উই। তাগ করিয়াছে।  
কুরকসেবে যন্ত্রপরিবর্তনের যে আশঙ্কা হই-  
তাহা হুই হুই হইয়াছে। ৫ ই ডেপুটি হাউসে  
সংস্কার অধিবেশন হইবে। সকলে অসুখাধ ক-  
রিতেছেন দুই এক বিবয়েন পরিবর্তন করিয়া সভ-  
পতি লিফলম ১ল। আফগারি জীত দাল'ম'র  
সুক্তি যোন। প্রকাশ করিয়াছেন। নাইট ইয়ার্ড এক  
জন প্রাকৃত তত্ত্ব শ্রিয় লাসন কর্তা হইবার মত  
বনা হওয়াতে সকলে উত্তর হইয়াছে।

সত্যপতি ডেবিস বৈরন'বাতনাবী হইয়া  
সেনাপতি বটলর ও তাহা আফিসরদিগেব  
বিহা এক ঘোষণা করিয়াছেন। সনাপতি  
আফিসরবা। কাউন্টি লইয়া বিস্তর টাকা অল-  
লাপ করিয়া হুই হইয়াছেন। আলিবারা তাহা-  
ক ভারতবর্ষীয় ও চীন মনুজ্ঞে আশিবে। শ্রিয়  
অব ওয়েলসের বিয়া মার্চ মাসে হইবে বি-  
হ হইয়াছে তাহার ৭৭ তিনি ও তাহার জী ইং-  
লওবর্ষীয় প্রতিনিধি অরুণ বরবান (সত্য)  
করবেন। কাউন্টি বারডনো, ওয়ালাসির পর-  
ভে টিউরিনে হুই হইয়াছেন। ইংলণ্ডের গবর্ণ-  
মেন্ট গেজেটে প্রকাশ করিয়াছেন। জীসদে-  
নীয়েবা বহি আটোনীর্ খীপ মনুজ উত্তমরূপে না-  
সন করিতে পারেন ও তুরকের স্থলতানকে আ-  
ক্রমণ না করেন তাহা লইলে তাহার উত্তর খী-  
প সকল প্রাপ্ত হইবেন। সেনাপতি ব্যাডস বট-  
লারের পরিবর্তন নাইট আল'স'র'সের লাসন কর্তা  
হইয়াছেন। ২০ নং মন্ত্রী পা তাগে করিয়াছেন  
সমুদ্র নেপোলিয়ন মনাস্তার বক্তৃতা করিয়া  
গতবৎসরের ঘটনা সকল উল্লেখ করিয়াছেন।

## গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন।

বালগামেশীয় সেন্টেন'গবর্ণরের  
আদেশাভ্যাসী নিয়োগ।

১২ ই জানুয়ারি—করিদপুরের ডেপুটি মা-  
নিকৌট ও ডেপুটি কালেক্টর দাবু কনসারভেটর  
বহু এই জেলার মালিকৌটের মনুর্গ কমতা প্রা-  
প্ত হইয়াছেন।

২৬ ই জানুয়ারি—লেপ্টেনেন্ট জি. এম. বিল  
সত্যব কিছু দিনের জন্য মিডল ইন্ডিয়ান  
কালেক্টর প্রতিনিধি জিজিলাস হইয়াছেন।

২৭ ই জানুয়ারি—ডবলিউ. কেবল সাই-  
কিউরিনের জন্য বালগামেশীয় বিজ্ঞাপন  
প্রাপ্ত হইয়া ১৮ ৫৪ অক্টো ১০ আইনকে  
খাতিয়াসারে কার্য করিবার কমতা পাইবেন  
ও ১৮ ৬১ অক্টো ২৫ আইনকে ৩৮ আইন  
অসুখাধে প্রাধানতম বিচারালয়ে কার্য করিবার  
উপযুক্ত মোকদ্দমা ও মোকদ্দমা কর্তৃক  
তদ্বিষয়স্থান করিবার কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

১৮ ই জানুয়ারি—জি. বি. মেরেট কর্তৃক  
কিউরিনের জন্য বালগামেশীয় বিজ্ঞাপন  
প্রতিনিধি সুপরিবর্তিত হইবেন।

দাবু কালীপ্রসাদ সেন কিউরিনের জন্য  
কৌকসন বালগামেশীয় বিজ্ঞাপন কর্তৃক  
১৮ ৫৩ অক্টো ১০ আইনকে ১৭ আইনকে  
কার্য করিবার কমতা প্রাপ্ত হইবেন।  
১৮ ৬১ অক্টো ২৫ আইনকে ৩৮ আইনকে  
প্রাধানতম বিচারালয়ে কার্য করিবার  
মোকদ্দমা ও মোকদ্দমা কর্তৃক  
স্থান করিবার কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

২১ ই জানুয়ারি—ডবলিউ. কেবল সাই-  
১৮ ৪৩ অক্টো ১৫ আইনকে অসুখাধে  
প্রতিনিধি ডেপুটি মালিকৌট ও ১৮ ৬১ অক্টো  
কোর ৯ মিয়নাসুনারে কার্য করিবার  
সেন্টেন হইবেন এবং ২৪ পারসারী ১৮ ৬১ অক্টো  
কোর ২৫ আইনকে ২২ পারসারী ১৮ ৬১ অক্টো  
করীম মালিকৌটের কমতা পাইবেন।  
ডে বিলিট সাহেব এবং এ. উ. সত্য  
অধ্যাপক হইবেন এবং লর. সত্য এবং  
কার আর এক জন অধ্যাপক হইবেন।

দাবু সোমনাথ সুখোপাধ্যায় অধ্যাপক  
কারী অধ্যাপক হইবেন।

২৬ ই জানুয়ারি—নোটারীয়াসি ডেপুটি  
জিউট ও ডেপুটি কালেক্টর এইচ. বি. দাবু  
সাহেব ১৮ ৬১ অক্টো ২৫ আইনকে ৩৮ আইনকে  
স্থানারে প্রাধানতম বিচারালয়ে কার্য করিবার  
ক মোকদ্দমা ও মোকদ্দমা কর্তৃক  
করিবার কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

২৯ ই জানুয়ারি—ডবলিউ. কেবল সাই-  
বের অসুখাধে কাল পর্যন্ত দাবু কালীপ্রসাদ  
ঘোষ বরবনসিংহের ১৮ ৫৩ অক্টো ১০ আইনকে  
র অসুখাধে ডেপুটি মালিকৌটের ১৮ ৬১ অক্টো  
অক্টো ৯ মিয়নাসুনারে কার্য করিবার  
প্রতিনিধি হইবেন এবং ২৪ পারসারী ১৮ ৬১ অক্টো  
অসুখাধে না। কর. কতলি ১৮ ৬১ অক্টো ২৫  
আইনকে ২২ পারসারী ১৮ ৬১ অক্টো ২৫  
খীর অধীন মালিকৌটের কমতা প্রাপ্ত হই-  
বেন।

ডবলিউ. আর. ডেভিস সাহেবের অসুখাধে  
কাল পর্যন্ত পুরীকৃত আইনাসুনারে কনসার-  
বের ডেপুটি মালিকৌট ও ডেপুটি কালেক্টর  
প্রতিনিধি হইবেন এবং ২৪ দিন অন্য কোন  
অসুখাধে না। কর. কতলি ১৮ ৬১ অক্টো ২৫  
আইনকে ২২ পারসারী ১৮ ৬১ অক্টো ২৫  
খীর অধীন মালিকৌটের কমতা প্রাপ্ত হই-  
বেন।

৩১ ই জানুয়ারি—পুলিবেস ইন্সপেক্টর  
লেপ্টেনেন্ট জি. বি. অসকোন সাহেব  
হইতে ২৪ দিন হইয়া নতুন নিয়োগ



পুলিশের সহকারি কন্সটেবল টি. গিলিট লবিয়ার সাহেব বদল হইয়া শিলা-  
ইইতে বদল গিয়াছেন।

আসান পুলিশের সহকারী কন্সটেবল এ.  
ইইতে বদল সাহেব বদল হইয়া গিয়াছেন।

ডাক্তার বিটমেন সাহেব বদল হইয়া আশেন  
বদল হইয়া অন্য কোন অফিসে না হইতে বদল  
হইয়া, এম. সিংহের সাহেব বদল হইয়া গিয়াছেন।  
সহকারী সাবরেকর্ডার জি. বি. ক্রুপে কার্য করি-  
বেন।

২ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহ, টেলর-  
সাহেব বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৩ নং কন্সটেবল—ইইবেন এম. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৪ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

৫ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৬ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৭ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৮ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
৯ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১০ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১১ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১২ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১৩ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১৪ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

জি. বি. সিংহের বদল কোন অফিসে না হইতে  
বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।  
১৫ নং কন্সটেবল—জি. বি. সিংহের বদল কোন  
অফিসে না হইতে বদল হইয়া কন্সটেবল হইবেন।

—৩৩—

### পত্র প্রেরণের প্রতি

কেন্দ্রীয় চক্রান্তের পর অসংলগ্ন বোধ হই-  
তে পরিত্যক্ত হইল।

১১ ই মার্চ শুক্রবার বাহু মোবিলিটি টা-  
ক্সের গৃহে ত্রাকসিগের বে সাধুসংস্কৃত উ-  
দা হইতে উৎসাহিত ত্রাকসিগের বিবোধী বে  
পর আশ্রিতগের হস্ত হইয়াছে, তাহা আমি  
নিগের প্রকাশ করিবার উদ্দেশ্যে।

—৩৪—

### প্রেরিত।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক  
মহাশয়েষু।

গবর্ণমেন্ট সংস্থাপিত বিচারালয়ের কার্য  
প্রণালীতে নির্দ্ধারিত হইবার উদ্দেশ্যে এবং বাহী  
প্রতিবাদীগণকে কট সহ না করিতে হয় এই  
অভিপ্রায়ে দ্রুতগতির গবর্ণমেন্ট যে ১৮৭২  
সালের ৮ আইন প্রচার করেন তাহা অনুসারে বি-  
চারপ্রণালী কার্য করিলে বহী প্রতিবাদী উ-  
ভয়ের মঙ্গল হয় সন্দেহ নাই কিন্তু পূর্বে  
দেশীয় হাকিম বিচারপ্রণালী অত্যন্ত সাক্ষর  
সাক্ষা না লেখাতে পুনরায় সর্জনগামী আবলি-  
খন যে কিপর্যন্ত অগাচার করিতেছে তাহা  
বলিয়া জানান যায় না। বিচারপ্রণালী তাহা  
ভেদিয়াও দেখেন না। তাহারা কেবল কত  
করশনা হইল তাহা প্রতি লক্ষ্য করেন। বাহী  
প্রতিবাদীর সর্জনগামী হইতে না কেন তাহারা  
কতগুলি মোকদ্দম নিষ্পত্তি করিলেন নিয়া  
রাহি এই চিন্তা করিতে থাকেন। কার্য গব-  
র্ণমেন্ট সংস্থাপিত প্রতি দৃষ্টি করিয়া পদক্ষেপ কর-  
বেন। কিয়দিক জাগরিত।

৩০ জানুয়ারি ১৮৩৩।

সিদ্ধান্ত ব্রজব্রহ্মণ্য।

১১ লং বং।

—৩৫—

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক  
মহাশয়েষু।

দুর্ভাগ্যে এখানে নিবন্ধিত জ্ঞান ও কল্যাণ

এই দুর্ভাগ্য হইতেছে। আর এই দুর্ভাগ্য হইতেছে  
কোন না কোন বাটতে সিদ্ধান্ত বাহীতেছে  
গত ১১ তারিখে অর্থাৎ এক মাসের মাস  
কাটিয়া অনেক টাকার অর্থাদি অপব্যয় করি-  
য়া কএক দিনের জন্য ওকালত। জিরোহিত হই-  
য়াছিল আবার গত মাসীতে এক বেলায় মাস  
গৃহে অভিভাবক এক সিদ্ধান্ত করিয়া বহু-  
লা অর্থাদি এক হস্তে নিষ্কৃত বাহীতে, আনন্দ  
করিত ছিল, এমন সময় গোলা জাগরিত হইয়া  
চীৎকার করিতে তৎপরগণ আশ্রিত হইয়া  
এখানে করিয়াছে। এসকল দেখিয়া তৎপরগণ  
আশ্রিতগের নগররক্ষকগণ মগন বসিয়া ভি-  
দ্যায় বসিয়া হইতেছে না। ইহার পূর্বে (এ-  
গারটা হইতে আরটা পর্যন্ত) এক মাসের জন্য  
কিৎ হো হা করিয়া অবলীলাক্রমে শরণ করি-  
য়া কুৎসিত নিত্রা বাহী কিছু মাস গত হইতে কা-  
সাধা নির্দ্ধারিত টাকাসহ এক গারগা কম দিবে  
সম্পাদক মহাশয়! নগর রক্ষকগণের দৈবধিমে  
কেবল যে এই একমাত্র আশ্রিত সকার হইতে  
ছে একপ নচে। ইহারিগের অননোযোগে ক-  
তক গুলি দুই লোক রজনী ২। ৩ দুইটি ত্রিভু-  
ব সমন্বিত হইয়া আবার আশ্রিত সাগাইয়া  
পোড়িতে আরম্ভ করিয়াছে। এত বিবস্ত্রন যে  
ত লোককে কত কতি লক্ষ্য করিত হইতেছে তা-  
হা বলিয়া শেষ করা হইতে পারে না। সেদিক  
প্রতিবর্তার সময়ে কোন এক পূর্ত এখকার এ-  
খন তাহা উত্তর হইয়া অশ্রিত সাগাইয়া গৃহস্থানি-  
নীকে সমস্তানো পোড়াইয়া দেয়া করিয়াছিল।  
কিন্তু গৃহস্থানি সাগাইয়া মৌজাবাসস্থিত এক-  
কটি মধ্যম মন্দির পরিত্যক্ত পাইয়াছে। আর  
অর্থাদি তৎসম হইয়াছে। এ মেলার পূর্বে  
বাহী-ইউট্রী যুক্ত বোকেটে সাহেব এই একটি  
হুত নিয়ম করিয়াছিলেন, যে চৌকিদারের  
সে দুইটি বা অন্য কোন একরকম আশ্রিত  
তিনি ২৫ ফনাং সেট চৌকিদারকে বরতন  
করিয়া। করিতে, এখান চৌকিদারের  
কালে অশ্রিত বস্ত্র ও মতর্কট, সহকারে  
কর্তব্য সম্পাদন করিত অতঃপর তৎকালের  
দুর্ভাগ্য হইল। যাহা হইক আশ্রিতগের বর্তমান  
বাহী-ইউট্রী সাহেব এই রূপ একটি নিয়ম সংস্থাপ-  
ন করিয়া। নগররক্ষকগণকে তাহা প্রদর্শন  
করিলে আশ্রিতগের মঙ্গল নাই।

পাঠক! এখান বাহী।

১১ ই-মার্চ ১৯৩৩ সাল।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সঙ্গীত

মহোদয়ের।

সঙ্গীত মহোদয়! কাল সময়ের কর্তব্য  
কর সঙ্গীতময় এতদূর হলে পরিণতি হই-  
তে চলিল, ইহা কেবল কর্তব্যবিশুদ্ধ কতকগুলি  
কার্যকারকের দ্বারা বই আর কি বলিব। বদ্যপি  
সকলেই স্ব স্ব কর্তব্য কার্য বদ্যাপিত সঙ্গীত-  
ময় বস্তু হইতেন, তাহা হইলে একের দ্বারা-  
রোপ ও অন্যের গুণাবলি করণে কখনই লেখনী  
ধারণ করিতাম না। আমি এই অলপাইত্তি  
মোকায়ে কখনও ৫ ব.সর অবস্থিতি করি-  
সেছি, এবং ৬।৭ জন পোলি'বর হারোগী দে-  
বিলাম, কেবল অল্পপুত্র ছিলেন না, কিন্তু দু-  
রিকার্য। তাহা হইতে নিরাকরণের কোন সম্ভাব্য  
এ পর্যন্ত কাহার দ্বারা হয় নাই বরং ধানার অ-  
বা, ১৩ জনপদ সমূহে মধ্যে মধ্যে চুরি হওয়া  
অবস্থানের কারণে হইয়াছে। অত্যাতি  
শ্রীত ইতরবচন চক্রবর্তী মল্লধর বিন এই ধা-  
না ব'রোগী'গিরি গদে বদ্যপি চইরা আশ্রিত।  
হেন তাঁহান অধাবনার এবং আন্তরিক যত্নে এক  
কালে দুটুকুল নিপুল হইয়া আসিয়াছে বালি-  
লে ও বস'বার। তিনি এখানে সমাপ্ত হইয়া  
২।১০ মাস মধ্যে প্রায় ৬০।৭০ জন বদ্যায়স  
লোক মৃত করিয়াছেন এবং তাহা'গিরে মধ্যে  
অধিকাংশ লোক হও পাইয়াছে। ব'লিত উহা  
হারোগী মহোদয়ের কর্তব্য কর্ম বটে কিন্তু তিনি  
বে তাঁহার পূর্বপদে বদ্যাবিগের, দুটোকে  
অল্পপদ করে নাই ইত্যাদি তাঁহাকে ধনা-  
দার দেওয়া গেল অলমতিবিস্তরণ।

তা' ১৩ই মার্চ ১৯৬২।

কম্যাটিং সোমপ্রকাশ পাঠক  
অলপাইত্তি

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সঙ্গীত  
মহোদয় মহোদয়ের।

২০এ অগ্রহায়ণের শুধাকবে দেখিলাম যে  
শুধাকবে সঙ্গীতময় তাঁহার মজিলপুরে সংবা-  
দ দাতার সংবাদ অল্পদূরে লিখিয়াছেন "আ-  
ম'গিরে অজিলপুত্র, সংবাদদাতা। লেখেন  
মজিলপুরের বালিকা বিদ্যালয়ের সাহায্য  
বলিগাতার অনেক বিদ্যালয়সাহায্য বিশেষ  
.মসিভেনি কালেক্টর অনেক দ্বারা যে তাঁহা  
একজন কলেক্টর তাঁহা উক্ত বালিকা বিদ্যালয়ের  
কার্যাবলি সাহায্য করেন এবং সেই সকল টাকা  
বিদ্যালয়ের কোন কার্যে ব্যয়িত হয় না ইত্যাদি

এই অলীক, শুধাকবে সঙ্গীতময় মজিলপুর-  
হ সংবাদদাতা। যে কি সময়সতঃ এইরকম সা-  
বাদ দিয়াছেন তাহা উক্ত সঙ্গীতময় ও তাঁহার পা-  
ঠকগণ নিম্নে বর্ণনা পাঠাই জানিতে পারিবেন।  
শুধাকবে তাঁহা শুদ্ধ বালিকা বিদ্যালয়ের ব্যয়ের  
নয়া সংগৃহীত হয় না। বরং তাঁহা সংগৃহীত হয়  
তাহার কিয়দংশ কতকগুলি মজিলপুরে হরিএ  
লেকের বিদ্যালয়, কিয়দংশ মদনপুরে মাঠা-  
। এত বদ্যবিদ্যালয়ে, কিয়দংশ মজিল-  
পুরের বালিকাবিদ্যালয়ে, ও কিয়দংশ  
দানিয়া বিদ্যালয়ে এবং এই সকল বিদ্যালয়ের  
পারিতোষিক প্রদান প্রভৃতি দেশহিতকর  
কর্মে ব্যয়িত হয়। অন্যান্য বিষয়ে কোথায়  
পরিমাণে দেওয়া হয় তাহা আমি বিশেষ  
বগত .মসি কিন্তু বালিকাবিদ্যালয়ে যে  
বিমাণে দেওয়া হয় তাহা লিখিলাম। যে  
খনি আমি বালিকাবিদ্যালয়ের সঙ্গীতময়  
ব'র গ্রহণ করিয়াছি অর্থাৎ ১৮৬০ সালের সে  
মসি হইতে গত ডিসেম্বর মাস পর্যন্ত এই বালি-  
ক বিদ্যালয়ে উক্ত টাকা হইতে ১২, টাকা পাওয়া  
গিয়াছে। এতদ্বাতিত তাঁহার টাকা হইতে কিছু  
টাকা বালিকাবিদ্যালয়ের বিদ্যালয় নির্মা-  
ণে নিমিত্ত রাখা হইয়াছে। শুধাকবে সঙ্গীতময়  
ম মজিলপুরবাসী হইয়া এ একরকম শুদ্ধতর বিব-  
র শুধাকবে না করিয়া কিপ্রকারে একপ লি-  
খি ছেন ইহাও আমি অতিশয় বিস্মিত হই-  
লাম। বাহা উক্ত তাঁহার শুধাকবে যদি একরকম  
সঙ্গীতময় বারবার কলকিত হয় তবে কবে  
শুধাকবে স্বাভাবিক কলক আরও বৃদ্ধি পা-  
উর সমস্ত জোড়ি লোপ করিবে। উক্ত সঙ্গী-  
তময় হাশর তাঁহার শুধাকবে এই কথা অনি-  
ষ্টক রীতিমত চুরি করিয়া পাঠকসমূহকে এই  
সমস্ত ঘটনা জানাইলেন। যদি কাহারও মনে স-  
ন্দেহ জন্মিত থাকে তবে তাহা অবিলম্বে ছা-  
র হই। বাইবেক।

শ্রীচরণাচরণ মিত্র মজিলপুর  
বালিকাবিদ্যালয়ের সঙ্গীতময়।

মসি ১৭৮৩

১৮ মাস মজিলপুর

মহোদয় মহোদয়ের।

হাশর! একপে কতিপয় ব্রাহ্মহাশরের  
বর্ণনা তাঁহা দেখি। অন্যান্য অনেক ব্রাহ্মকে

তাহাতে বিশেষ বিচার প্রকাশ করিতে  
আমি অতিশয় ভীত হইয়া বদ্যাপন  
পাঠ আন করিয়া আবার তাঁহা বদ্যাপন  
দ্বারা নিরাকরণ উপদেশ প্রার্থনা করি।  
যদি আর অতিশয় প্রকাশ করত তাহা  
হইতে আত্মা হইবেক।

শৈলকালাবধি পৌত্তলিক ধর্ম প্রবর্তন  
পরি হইয়াছে অত্যাধিক ও অবিদ্যমান  
মজিলপুর ইত্যদে এটি অচলা ভক্তি  
প্রতিষ্ঠানদ্বারা উপদেশ সকল প্রাপ্ত  
পাঠ করিয়া আমি তদনুসারে উপদেশ  
। থাকি, কিন্তু এপর্যন্ত কোন বিশেষ  
পাঠিত না হওয়ায় বিধি বিধার লোপ  
। অপ্রকাশিত রহিয়াছে। একপে  
মজিলপুরে ব্রাহ্ম অবস্থা তাহাতে বোধ  
হইয়া ইহা লোক পরিচয় করিবেন।  
কুরানী আমার মনের বিধান  
পারিয়া আর সর্বদাই আমাকে  
কেন সে "আমার বৃত্তা হইলে কি  
ব'বে" তাহাতে আমি কি করা কর্তব্য  
পাঠিতে না পারিয়া এই রূপ  
ব'বা হই "বাহা হইয়া উঠে তাহা  
হি হ'বাতা একপ উত্তরে ব'ব' না  
থ কেন।" দেখো বাপু পিওটা  
ন ও রীতিমত আঁট্টা করিত।

মহোদয়! আপনাকে বদ্যাবধি  
যা পি একপ ঘটনাই বটে তাহা  
কি ব'ব' হইতে না পারিয়া  
ক তে আঁট্টা হইতে একপ  
কা ত, আপনাকে প্রবীণ, বিজ্ঞ ও  
কা তা বদ্যাপনের নিকট এই  
আমি অত্যাধিক প্রকাশিত  
এই ব'ব' উপদেশ প্রকাশিত  
অপোচাবদ্যতেই বা কিরূপ  
এব আঁট্টা বা ভিত্তিকারে  
ব'ব' বদ্যাপনের সর্বদা  
কা প্রকাশ করিলেই আমি  
পাঠ করিয়া সকল

১৯ ইংলিশ কোঃ এক ব্রাহ্ম।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সঙ্গীত  
মহোদয়ের।

বেদম সঙ্গীত এখানকার  
হাশর ত এক অতিশয়  
হাশি নহোদয়-রেলওয়ে



বহু করিয়াছেন । গত শনিবার ৪০টি মোকদ্দ-  
ম, অধিক নিষ্পত্তি হইয়াছে, এতদ্ভাতিরিজ  
অধিক মোকদ্দম জবানবন্দী হইয়া গিয়াছে,  
এতে বেরাপ হুজুর বিচার হইতেই বিচারক  
কমিটির বিদিত হইবেক । এতলে এই মাস ব-  
হা বার কোড়া তার ভোগ বৈদ্যের কি, আ-  
লেকার আর হুজুর আছে । ইংলণ্ডের মোদি সঙ্কট  
র বিষয় কিঞ্চিৎ লিখিতে মানস করিয়াছি ।  
হা এই, ইংলণ্ডে ১৮৬১ অব্দে প্রতিশত করা  
অপরাধের মধ্যে ২৮টি জ্রীলোক, ইহাতে এ  
ক ৪৪৪৪ অপরাধের মধ্যে ১টি জ্রীলোক হই  
ছে । গুরুতর অপরাধে মোদী সংখ্যা ১৩৩৪২  
এবং ৩২৭৭ জ্রীলোক, অট্টা জ্রী সংখ্যা ৩১  
০০, জ্ঞান হত্যাব্যতিরিক্ত অন্যবিধ মোদপ্রাপ্ত  
জনীর জ্রীলোক সংখ্যা মোট ৪২৯৮১ অর্থাৎ  
ইংলণ্ডের সমুদয় জ্রী সংখ্যা মধ্যে ৮২৬০৩  
ন অপরাধী অর্থাৎ প্রত্যেক ১০০ জনের এক  
নমোদী ।

প্রাক্ষর  
মোঃ আমতা

জীবন্ত মর চার্লস ট্রিবেল্যান মহোদয়  
প্রতি নিবেদন ।  
তুমি ট্রিবেলন মহামতি ।  
কত আশা করি তোমা প্রতি ।  
হও তুমি মহাপ্রভ, বিচক্ষণ মহোদয়,  
ভারতের বিতকারী প্রতি ॥ ১ ॥  
তুমি হে অশেষ গুণধাম ।  
পুর দীপ্তভারতের কাম ।  
কাতরে ভারত চায়, বহি তার চর চায়,  
চিরকাল রবে তব নাম ॥ ২ ॥  
বিদীত ভারতবাসিগণ ।  
কত দুঃখ সহ্য অকাবণ ।  
হুকেতে বিস্ত্রোহ করে, শিটে কত আশে মরে,  
শিটে কত সজিছে এখন ॥ ৩ ॥  
প্রবলের কণ্ড অত্যাচার ।  
সজিছে ভারত অনিবার ।  
আবার জীকরণ, এয়ে নাম মোহন,  
হুম বস করিছে বিস্তার ॥ ৪ ॥  
আব এক হুয়েছে বিবদ ।  
কাল ইনকম সঙ্গণ ।  
আবি লোকে কর, বিজনে লামান্য মর,  
হরিজেন মনে ছোট বস ॥ ৫ ॥  
হুমের একে কস আট ।  
ভায়ে ইনকম কিংবা দার ।

অমটন বার মাস, এবে লাঞ্চার মাস,  
কণদারে দেখেতে চৈবায় ॥ ৬ ॥  
কত লোকে ইনকম তরে ।  
গোপের কতই হুতি করে ।  
ছেলের ছন্দব মেন, কাপড় ধারিতে কেনা,  
খিল দিতে মোস থাকে ঘরে ॥ ৭ ॥  
পাঁচ শত চান মায় দার ।  
বটে পাশ মুক্ত দেহ দার ।  
কিন্তু কতু সিডিউল, চক্ষে তার বর্ষে শূল,  
কেরে কেনে অশেষ প্রকার ॥ ৮ ॥  
সত্য বটে বীরা ধনিবর ।  
ইনকমে নাহি পাম তর ।  
কিন্তু আর জানাইতে, সেই হারে গুণে দিতে,  
মর্দাস্তিক তাঁব ও কাতর ॥ ৯ ॥  
এত কটু সহ্যে কি কাবণ ।  
ভাবতবর্ষের প্রজাগণ ॥ ১০ ॥  
সিদ্ধ সম রাজ আর, ইনকম বিন্দু আর,  
কিনে ঘোচে তাতে অমটন ॥ ১১ ॥  
রাজ্য সংসারে মিছা ব্যর ।  
জান তুমি কতইত হর ।  
সেই ব্যর প্রদমনে, ছাড় হুগি প্রজাগণে,  
হুচোমেবে তাতে গল্প কর ॥ ১২ ॥  
আর এক আছে নিবেদন ।  
বিদ্যা জানে দাঁও তুমি মন ।  
স্বাধারণ জমগণ, যাতে পায় বিদ্যাধন,  
তাতে খন কর বিনর্জন ॥ ১৩ ॥

কসটিং হুখিবালালিকনসা  
সাং কলিকাতা

### মল্যপ্রাপ্তি

জীবন্ত বাহু জীপতি তটচায়া  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আবার পর্য্যন্ত  
কোঃ  
জীবন্ত বাহু দ্বারকানাথ মল্লীক  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ পৌষ পর্য্যন্ত  
কোঃ  
১, ইখর চন্দ্র হুখোপাধ্যায়  
১২৬২ অগ্রহরণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্য্যন্ত  
কোঃ ১০  
১, তাবিনীচরণ হুখোপাধ্যায়  
১২৬২ কার্তিক হইতে চৈত্র পর্য্যন্ত  
কোঃ ৩  
১, মল্লীচন্দ্র সিদ্ধান্ত  
কোঃ ৩

১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ পৌষ পর্য্যন্ত  
কোঃ ১০  
১, রাজা কল্যাণের নিঃস  
কোঃ ৩  
১২৬২ কার্তিক হইতে চৈত্র পর্য্যন্ত  
কোঃ ৩

সোমপ্রকাশ সংকলিত  
বিশেষ নিয়ম ।

অগ্রিম সূচনা না পাইলে মকদ্দমে সোমপ্র-  
কাশ প্রেরণ করা যায় না ।

উহার অগ্রিম সূচনা বার্ষিক ১০ এবং যাগু-  
সিক ৫০ টাকা হয় যাঙ্গের সূচনে লওয়া যায় না ।

যাঁহারা সোমপ্রকাশের সূচনা টীপ টিকিট  
পাঠান তাঁহারা এক অথবা আধ আনা অধিক  
সূচনা ও রসীদে টিকিট না প্রেরণ করেন ।

যখন যিনি মকদ্দম হইতে সোমপ্রকাশের  
সূচনা পাঠাইবেন তাঁহা যেন বেফিউরি কবির  
মেন ।

পূর্বপ্রদত্ত সূচনার কাল মর্জীত হইলে সূ-  
চনা পাঠাইতে কেহ বেন অসঙ্গত বিলম্ব না  
করেন ।

যাঁহাঙ্গিরের সূচনা দিবার সময় অর্ডীত ৪  
রা বারিবে, সঙ্গতমত সময় প্রতীক, কবির  
প্রথমে সোমপ্রকাশে প্রচার করিবে, তাহা  
পর চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তা  
হাতে কোন উত্তর অথবা সূচনা না পাওয়া  
কাজ বহু হইবে । সূচনা যিনি চিঠি বেরা  
রিং পাঠান হইবে । কলিকাতা সংকলিত  
লেজে আদালতের মায়ে চিঠি আইলে অ-  
মরা নীত্র পাইব ।

যাঁহাঙ্গির যখন সোমপ্রকাশ পরিচাল্য কবির  
হইবে, হইবে চিঠি লিখিয়া না জানাই  
তাহা গ্রাহ্য করা যাইবে না ।

কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ইচ্ছা  
কবিলে তাঁহাকে প্রথম মার প্রতি পংক্তি ০  
আনা দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০ আনা ক'ন  
দিতে হইবে তাহাও পর ১০ আনা করি  
লওয়া যাইবে ।

মকদ্দমের যাঁহাঙ্গি হইবেন, তাঁহ  
দিগের অন্তত তাকমানস দিতে হইবে

০১ পত্র কলিকাতার পূর্বাঞ্চলী রেলওয়ের  
মাগুর টেন্ডার হুখিবালালিকনসা জীবন্ত বাহু  
বিদ্যাধারের হুখিবালালিকনসা সোমপ্রকাশ প্রকাশিত

# সোমপ্রকাশ

সবসংলী প্রজতিস্থিতায পার্থিবঃ সরস্বতী স্মৃতিমহতী ন খীলুগী ।

১৪২২খঃ।

{ সন ১২৬২। ৫ হ ফাল্গুন। ইং ১৮৬৩। ১৬ কেক্রয়ারি }

মাসিক মূল্য ১ টাকার  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকার

সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আমি অর্থাৎ সোমপ্রকাশের আর এক  
কর্তা রুটি হইল। অতঃপর বাঁহারা বাঁহা-  
ক মূল্য দান করিবেন, তাঁহাদিগকে ৫৫-  
৫৬ টাকার, দিতে হইবে, বার্ষিক অ-  
র্থ মূল্য (১০ টাকা) অনুপস্থিত রহিল।  
কলিকাতা প্রেসের আদালতের দ্বারা  
দেওয়ান হইবে। বার্ষিক ডাক মাসুল ৩.০০  
তরফী দিয়া দিবেন, তাঁহারা তাঁহার ব্যয়  
(আলাদা) দান পাইবেন। বাঁহারা যত  
ডাক মাসুল দিতে অসমর্থ হইবেন, জানা-  
ন, আমাদিগের অগ্রত্যয় হইলে তাঁহা-  
কে মাসুল দিতে হইবে না।

বিজ্ঞাপন।

বিদ্যাপুর জিলায় অষ্টাণ্ডী বাটকেয়ারি  
বৈদ্যপুত্র নামে যে পুত্র নি তাহুক আছে,  
সরপত্তি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
যে। বাঁহারা সেই তাহুক সরপত্তি লই  
অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কর্তার কার্তন দিনর কোম্পানির নিক  
আবেদন করিলে সর্বিশেষ রক্ষা ক্রমে

বিজ্ঞাপন।

পোর্টফোল।

১৪২২খঃ কলিকাতা শাসনায়

কর্তার বাঁহারা হুকুমাদ্বারা সর্ব-  
শেষে আদ্য করা হইতেছে যে অদ্য

তারিখ অর্থাৎ মূল্য, জাহাজ, মালবোটে,  
ভাড়া, বজরা, এবং উপর যুক্তকর নৌকা সকল  
এই উপলি নদীতে রাজস্বযোগে কলিকাতা নী  
মা মধ্যে যাতায়াতকালীন সমুখে লাটোনের  
তিতর আলো রাখিবেন অর্থাৎ লেহানে রা-  
খিলে দূর হইতে স্পষ্ট দৃষ্টি হয়, বদ্যপি উক্ত  
নিয়মের অন্যথা হয় তবে একশত টাকা  
(১০০) জরিমানা দিতে হইবেক।  
ইং ১৮৬৩।

মূল্যে প্রবেশের নিয়ম কঠিন  
কলিকাতা।

বিজ্ঞাপন।

সাম্বাদ, হরু টাকুর, রাস্তা নুসিৎ, গৌর  
বিরাট, নিত্যানন্দ বৈরাগী, ককবোহন  
টীকাধা প্রভৃতি প্রাচীন কবি-রচনাদিগের  
সুন্দর উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত  
করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য

১০ টাকার মূল্য।

কলিকাতা।

বহুবাজার স্ট্রিট ১৩ নং বাড়ি।

ঐযুক্তগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

বিজ্ঞাপন।

সকলসংসদেব গোচরার্থ প্রকাশ করা হই-  
তেছে যে, কলিকাতা গবর্ণমেন্টে ও গবর্ণমেন্টে  
হাওয়াত এবং অপর বঙ্গ বিদ্যালয়ের বাস-  
ার্গের উৎসাহার্থ গবর্ণমেন্টে বার্ষিক যে ৩ টী  
বৈতনিক হাওয়াত প্রদান করিয়াছেন তৎ-

আমাদিগকে বর্তমান বৎসরে নয় লাখত  
বিষয়ের পরীক্ষা দিতে হইবেক।

মহাবৎসরের হামবরক কলিকাতা  
কলিকাতা বিবরের পরীক্ষা দিতে

বালানামা বিজ্ঞাপন।

চারুপাঠ ১ম ভাগ, রূপকিত্তি  
ভাড়া, কথিতাপাঠ, প্রভৃতি

ব্যাকরণ।

সম্বাদ, মিল, ক্রিয়া, কারক।

ভূগোল।

পৃথিবীর চারি প্রধান বস্তুর ও  
নির্মিত লিখন।

ইতিহাস।

বালানামা ইতিহাস ২য় ভাগ

অর্থ।

ইতিহাসিক পত্রিকা।

১১, ১২, ১৩, অর্থাৎ

২য় বালকগণকে পাঠ্যবিধি  
দিতে হইবেক যথা।

বালানামা বিজ্ঞাপন।

নব প্রবন্ধসার, টেলিফোন ১৩ নং ভাগ, পত্র  
টি, প্রভৃতি লিখন ও রচনা

ব্যাকরণ।

সম্বাদ, মিল, ক্রিয়া, কারক, সমান,

ইতিহাস।

বালানামা ইতিহাস ২য় ভাগ ও হুকুমাদ্বারা  
বিবরের ইতিহাস।

ভূগোল।

তারিখীচরণকৃত ভূগোলবিবরণ  
পৃথিবীর চারি প্রধান বস্তুর ও এনিয়ার  
২য় ভাগের মানচিত্র লিখন।

অর্থ।

সামান্য ভাগাংশ পর্যন্ত।



বালক প্রতিলিপনে এবং বালক পুস্তক  
অপাবগ হইবে তাহার অন্যান্য বিষয়ে  
গ্ৰহণ করা যাইবে না । যে যে বালক প  
ইয়া এই সকল ছাত্রকে পাইবে  
বিশ্ব বা অন্য কোন গবেষণা কুলে  
বৎসরকাল পাঠ করিতে  
১৮৬৩ সাল । তারিখ ২৩  
এইচ উডে।  
বালিকা মধ্যবিভাগের কুল  
সমূহের ট্রাস্টেয় ।

## সোমপ্রকাশ ।

৫ই ফাল্গুন ।

মধ্যে মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়  
সোমপ্রকাশের প্রকাশকগণের কেত  
কেই বিস্মৃতি ক্রমে মূল্য প্রেরণ করিতে  
অসম্মত বিলম্ব করেন, তাহাতে আমাদি  
গের নিয়ম ব্যাহত ও অসুবিধা ঘটে ।  
এই নিমিত্ত আজি অবধি এই নিয়ম করা  
যাইতেছে, যে মাসে যে যে ব্যক্তির মূল্য  
কাল অতীত হইবে, তাহাদিগের স্মরণার্থ  
“প্রাপ্য মূল্য” এই শিরোনাম দিয়া তাহা  
দিগের নাম, বাসস্থান ও মূল্যনির্দেশকাল  
লিখিয়া দেওয়া হইবে । তাহার পরও  
যিনি অসম্মত বিলম্ব করিবেন, তাহাকে  
আর একবার জানান হইবে, তাহাতেও  
যদি মূল্য অথবা চিঠি না আইসে, তাহার  
সোমপ্রকাশ লওয়া অভ্যেস নয় বিবেচ  
না করিয়া কগল বন্ধ করা হইবে ।

২০—

আমরা অতিশয় দুঃখিত হইলাম, পরি  
কাল অকালে দেহ পরিত্যাগ করিয়াছে ।  
কিন্তু তাহার এক খনিও উৎকৃষ্ট নৈমি  
সময় পত্র নাই । পরিদর্শককে দেখি  
আমাদিগের কথঞ্চিৎ এই জ  
ছিল যে ইহা ক্রমে সেই ক্ষেত্রে দুঃ  
তে সমর্থ হইবে, কিন্তু তাহাও উদ্ভূ  
হইল । সম্পাদক বিরক্ত হইয়া পরি  
উঠাইয়া দিলেন । তিনি বিরো  
য যে কারণ নির্দেশ করিয়াছেন,  
গণের অনাদর উহার অন্যতর

বলিয়া উপন্যাস হইয়াছে । ইংরাজী  
সমাচার পত্রাদির ন্যায় সমাচার পত্র  
পাঠের মর্মজ্ঞ ও তাপাঠে অনুবক্ত লোক  
বাল্যালিদিগের মধ্যে আজিও অধিক  
হন নাই যথার্থ বটে, কিন্তু যদি অনু  
ধাবন করিয়া দেখা যায়, তাহাদিগের  
কক্ষে সম্পূর্ণ দোষক্ষেপ কোন ক্রমেই ন্যা  
য়ানুগত বলিয়া প্রতীয়মান হয় না । এক্ষণে  
আমরা দেখিতে পাইতেছি, বাল্যালিদিগের  
দিন দিন পাঠ ক্ষুধা বৃদ্ধি হইতেছে । কিন্তু  
সেই বৃত্তকার অনুকপ ভোজ্য লাভ ন  
হওয়াতে তাহার আবার মান্দা হইয়া যা  
ইতেছে । কসতঃ আমাদিগের সংস্কার এই  
রূপ, সম্পাদকদিগের যথার্থীতি পত্র স  
ম্পাদন ক্ষমতা বিহীন বালক সমাচার প  
ত্রের উন্নতির সমধিক প্রতিবন্ধকতা করি  
তেছে । ভাল সমগ্রী প্রস্তুত করিয়া সম্মুখে  
উপস্থিত করিলে কাহার তাহাতে লোভ  
না জন্মে : ভাল মন্দ বুঝিতে পারেন, এখন  
একুপ অনেক লোক হইয়াছেন । আমরা  
সম্পাদকের একটী সঙ্কোচ অনুচিত প্র  
তিজ্ঞা দেখিয়া যার পর নাই ক্ষুব্ধ হইলাম ।  
তিনি প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, বাল্যালি সমা  
জের একপু অবস্থা থাকিতে তিনি আর  
বাল্যালিদিগের উপকার করিবেন না । তা  
হার সদৃশ দেশহিতৈষী উদারমস্তক ব্যক্তি  
রা যদি একপু প্রতিজ্ঞা করেন, তবে কাহা  
হইতে সমাজের আবস্থা সংশোধিত হইবে;  
যে যে রূপ ব্যবহার করুক না কেন : সম্মু  
খে যত কেন প্রতিবন্ধক উপস্থিত হউক  
না, সমুদায় অতিক্রম করিয়া সৎকর্মসাধন  
করিব, মহতের এইরূপ মহতী প্রতিজ্ঞা  
চাউ । অসম্পন্ন ভ্রমোৎসাহ তাহারা আমাদি  
গের একটা নৈসর্গিক দোষ, তাহাতেই  
এদেশের উন্নতি এত পশ্চাৎপত্তি হই  
য়াছে ।

— —

বহু দিন হইল, অচিহ্নিত কর্মচারিরা  
আপনাদিগের পেন্সন বিষয়ের সুবিধা

বী হইয়া সর চার্লস উডের মিকটে এ  
আবেদন করিয়াছিলেন । সম্প্রতি শুনা  
ইতেছে, সেই আবেদন পত্র তাহার অ  
মতি সহিত রাজধানীতে উপনীত হইয়াছে  
কিন্তু আজিও গেজেটে প্রচারিত হয়  
হয় নাই । আবেদনকারিদিগের প  
বৎসর করিয়া লাত হইয়াছে । পূর্বে ২০  
৩০ বৎসরে স্ব স্ব বেতনের তৃতীয় ও অ  
ংশ পেন্সন পাঠবার নিয়ম ছিল, এখন  
১৫ ও ২৫ হইতেছে । কিন্তু এই ১৫ ও ২  
বৎসরে পেন্সন লইতে হইলে ডাক্তরে  
সর্টিফিকেট দিতে হইবে । ৩০ বৎসর হ  
লে আর সর্টিফিকেটের প্রয়োজন হই  
না । অন্য কারণে হউক আর পীড়া নি  
কর হউক, এখন ছুটিই কর্ম কালের মধ্যে  
পরিগণিত হইবে না, কেবল গার্হস্থ্য  
অনুগ্রহ করিয়া প্রিভিলেজ লীভ বলিয়া  
যে দুটি দিয়া থাকেন, তাহা পরিগণিত  
হইবে । সর্টিফিকেট পাঠ বৎসর করিয়া  
লাভ করিলেন, ইহা সামান্য লাভ নহে  
তবে আকাঙ্ক্ষার ইয়ত্তা নাই, এই ইচ্ছা  
হইতেছে, যদি বিনা ডাক্তরের সর্টিফি  
টে ২৫ বৎসর, আর সর্টিফিকেটে ২০ বৎসর  
পর্যন্ত পেন্সনের নিয়ম হইত, তাহা হইলে  
ভাল হইত । ভারতবর্ষে অবিচ্ছেদ্য অত  
শরীরে ২৫ বৎসর পর্যন্ত করা সহজ কথা নয়  
অনেকেই অদৃষ্টে ইহা ঘটনা উঠিবার  
সম্ভাবনা নাই । একটা বিষয় অশি  
অন্যায় আজ্ঞা হইয়াছে, পীড়া কাল  
কর্মকাল মধ্যে গণনা করা অতিশয় উচিত  
ছিল ।

— —

যে বিষয় যাহার নিতান্ত প্রিয় ও  
ভীত হয়, অন্যার্থ ঘটনাক্রমে সে তদনু  
ল বলিয়া গণনা করে ; আমরাও সেইরূপ  
সর চার্লস ট্রিভিলিয়ানের যাবতী  
কর্তাকে টেনকমটাওয়ার উদ্ভলন বিষয়ে  
কুল বলিয়া গণনা করিতেছি । শুনিলাম  
চার্লস ট্রিভিলিয়ান অধিক পরিমাণে

এটি প্রচলিত করিবার চেষ্টাও আছে।  
আমাদের বোধ হইল, ইহা ইনকমটাক্স  
চাইবার পূর্ব অয়োজন। ইনকমটাক্স  
চাইতে হইলে যে যে উপায় অবলম্বন  
রা, আবশ্যিক, অধিক পরিমাণে মোট  
প্রচলিত করিয়া আয় বৃদ্ধি করা তাহার  
ন্যস্তর। এ উপায়ের কোন জ্ঞানী অথবা  
প্রদায়ের বিশেষ জ্ঞানিবার সম্ভাবনা নাই।  
আমাদের প্রতি অভ্যাচার ও সন্তোষিত  
হে। গবর্ণমেন্টের এটি প্রকার যদি বি  
স পক্ষে, এ উপায় দ্বারা অর্থলাভ হুইক  
পাথ হইতেছে না। গবর্ণমেন্ট ক্রমে প্রকার  
প্রয় ও অতীকৃত কার্যের অনুষ্ঠান দ্বারা  
আনুগ ও বিশ্বাসভাজন ও হইয়া উঠিতে  
হন। যদি কে, য গৃহে নগদ টাকা অল্প  
কিছু থাকে, আর অধিক পরিমাণে মোট  
প্রচলিত হয়, আকস্মিক দুর্ঘটনা কালে  
গবর্ণমেন্টের বিপদ, পক্ষ হইবার সম্ভাবনা  
হে, এই বলিয়া অনেক যে আশঙ্কা  
করিয়া থাকেন, তাহা আমাদের নিকটে  
কিন্তু সহ বলিয়া প্রতীতমান হইতেছে না।  
আমাদের গবর্ণমেন্টে নিরবলম্বন ও নিঃ  
স্বার্থ নহেন, ইংলণ্ডের প্রসাদে ইহার।  
কণমাতে ইউরোপ যও হইতে অসংখ্য  
স্বার্থ সংগ্রহ করিতে পারেন। গত বিজ্ঞা  
ই ইহার সাধ্য দান করিতেছে।



এতদিনের পর বুঝি বিধাতা হস্তত্যা  
পক্ষেদের প্রতি এসম্ম হইলেন। এত  
দিনের পর তাঁহাদের বেতনের বিষয়ে  
গবর্ণমেন্টের দৃষ্টি নিপতিত হইয়াছে। বা  
লি সম্পাদক লিখিয়াছেন, তাঁহাদের  
ই জ্ঞানী হইবে। ২য় জ্ঞানীর ৩০০  
দ্বিতীয় জ্ঞানীর ২০০ টাকা বেতন  
হইবে। সঙ্গর আমিনের পদ উঠিয়া যাই  
ল, হুজুরেরা সেই কর্ম করিবেন। প্রমা  
কপ পুরস্কার লাভ না হওয়াতে কেবল  
মুজেরেরা তথ্যোৎসাহ ছিলেন একপ  
র, অল্প বেতন দেখিয়া লোকের ও বঁ।

হাঙ্গিরের প্রতি তদৃশ গৌরব ছিল না।  
বিশেষতঃ ইহা। এতদিন গবর্ণমেন্টের অবি  
বেচনার একটি সাক্ষি স্বরূপ ছিল।

হিলির কিস্তিগুণ্ডা গুণ।

বিধাতার তত্ত্বাভিযান দুর্বোধ, কখন  
কোন কার্য কারণতবে কি ঘটনা হয়, সমু  
দায় সহজে বুঝিয়া উঠা যায় না। বুঝিবার  
নিমিত্ত অনেক সময়ে অনেক প্রয়াস পা  
ইতে হয়। আমাদের গবর্ণমেন্টের  
গতি ইহা অপেক্ষাও অধিকতর দুর্বোধ  
হইয়াছে। অসামান্য পরিমাণ সহকারে  
ইহার কার্য কারণতাবের বক্ততর অনুসন্ধান  
করিয়াও বক্ত সঙ্গরে নিত্যস্থ বিকলচেষ্ঠ  
হইতে হয়। সম্প্রতি যে হিলির নকদমা  
হইয়া গিয়াছে, তাহারাই আমাদের বাক্য  
সংগ্রহ হইতেছে। বিধিসূত্র এই, জলে  
নাথিয়া মাছ ধরিতে গেলেই গায়ে কাঁদা  
লাগে, কিন্তু আমাদের ধর্ম্যধিকরণ বিড়  
ঘনানাটকের নায়ক হিলি সমুদায় সরো  
বর আলোড়ন করিয়া মৎস্য ধরিলেন,  
কিন্তু গায়ে অণুমাত্র পক্ষ্পর্শ হইল না।  
বিধি সূত্র এই, ছপ্পবেশ কণ্টকবনে প্র  
বেশ করিয়া কল আহরণ করিতে গেলে  
শরীর কণ্টক দ্বারা ক্ষত বিক্ষত হয়, কিন্তু  
আমাদের দয়াজ্জিহ্ব হিলি দুর্গম কণ্ট  
ক বনে প্রবেশ করিলেন, সঙ্কল্পে কল  
আহরণ করিলেন, কিন্তু গায়ে একটি আঁ  
চড়ও লাগিল না।

এতলে হিলির অসামান্য সহিষ্ণুতা ও  
গের উল্লেখ না করিলে আমাদের পাত  
কী হইতে হইবে! জুরিয়া তাঁহাকে “মট  
গিলুট” করিয়াছেন, কিন্তু তিনি এমনি  
মুজব যে গবর্ণমেন্ট তাঁহাকে বিনাপরাধে  
এতদিন যে কারাক্ষেপ দিলেন, তন্নিমিত্ত  
তিনি গবর্ণমেন্টের নামে নালীশ করিলেন  
না। তাঁহারা যদি একটা অসামান্য সহিষ্ণুতা  
গুণনা থাকিত, আমরা এতদিন লজ্জাসাহ  
বের সময়ে আটশাহেবের ন্যায় বীড়ন

সাহেবের নামে আদালতে অভিযোগ উপ  
স্থিত দেখিতে পাইতাম! বীড়ন সাহেব  
নীলকর দলের প্রিয় বলিয়া কখনই ক্ষম  
পাইতেন না! অন্যায় দণ্ডকারির  
আবার প্রেম ও প্রেম কি?

এই এসম্মে আমাদের দেশের  
লোকের নিরীহতা ও সুহৃৎসদয়তার  
প্রশংসা করিবার অবসরটি পরিত্যাগ ক  
রাও বিবেচন হইতেছে না! হিলির মকদ্দ  
মায় ইউরোপীয়েরা জুরি হইয়াছিলেন  
তাল তাঁহারা যেন এদেশের কৃষকদিগের সম  
লতা ভীকৃতা ও অনতিজ্ঞতা প্রকৃতি বিব  
অবগত নহেন, সুতরাং সাক্ষির জবানবন্দী  
দেখিয়া তাঁহারা মনে করিলেন (তাঁহারা  
হিলিকে অপরাধী জানিয়াও জাফিয়া দি  
য়াছেন, একথা অবিস্মরণকারি দেশাব  
রাই বলে) কৃষকেরা মিথ্যা কহিতেছে  
কাজে নাজেই তাঁহারা হত্যাভিযোগ হই  
তে হিলিকে মুক্ত করিলেন। কিন্তু হিলি যে  
দাদাফুলে উপস্থিত ছিল, তাহার উৎসাহ  
দানে যে হত্যাকাণ্ড, গৃহদাহ ও প্রীলে  
কের সতীত্ব হরণাদি ঘটনাছিল, তাহা  
কাহারও সন্দেহ নাই। কাউই সাহেব  
কৌশল ক্রমে অভিযোগ কালে সে অং  
যে পরে হার করিলেন, আমাদের দেশের  
লোকেরা সে বিধরে সৌম্যবলী হই  
রহিলেন কেন? এক জন অম্যার অত  
চার ও অরাজক কাণ্ড করিতেছে আমিরে  
পারিয়াও, যদি অপর কেহ তাহার অর্থ  
না হয় গবর্ণমেন্ট কি অম্যারকর্তাকে  
বিনা দণ্ডে অব্যাহতি দিবেন? এ প্রশ্নটি  
মীমাংসা করি। লওয়া কি আমাদের  
দেশের লোকের কর্তব্য নহে? এ প্রশ্নে  
যাবৎ মীমাংসা না হইবে, তাবৎ এদেশে  
লোকের ধর্ম আশা দি রক্ষার আশাস  
কি? সকল অভ্যাচারে যে অধী পাও  
যায় না, হিলির মকদ্দমাই তাহার এ  
টি উদাহরণ হল। এতদিন অর্থ না হই  
র ধন লোভাদি অনেক কারণে



উপসংহার স্থলে আমরা এতৎসংক্রান্ত আর একটি বিষয় পাঠকগণের গোচর করিতেছি। বিশ্বস্ত লোক যুগে সুনীলাম, ইংলিশ বিদ্যালয়ে লেখাতে বাঙালি সম্পাদকের নাম লাইবেল মালীশ করিবার ভয় প্রদর্শন করা হইয়াছে। সম্পাদক এখন কি করিবেন? আপনার বাক্য এমন পরিবার চেষ্টা পাইবেন? না, আর কোন উপায় অবলম্বন করিবেন? দেখিবেন কোন প্রত্যাশা না হাঙ্গে।

সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষা ভারতবর্ষে  
না হওয়া অন্যান্য ভাবেতে।

ইংলিশের একজন এডমিশ্যর  
বাবচাঁদজীকে প্রধানতম বিচারালয়ের  
পাড়বিবাক পদে প্রতিষ্ঠিত করিয়া তা  
ভারতবর্ষীয়দিগকে এই কথা জানাইয়াছেন  
যে ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট যেকোন পক্ষ  
পক্ষে দুবিত্ত যুক্তিবিরুদ্ধ ব্যবচাব করুন  
কোন, তিনি নিজে সাক্ষ্যসমক্ষে যে  
ব্যবহা হস্তাপণ করিবেন তাহাতে পক্ষপা  
দ সম্বন্ধ থাকিবে না। এতদ্ব্যতীত একটা  
অনুষ্ঠান সমাধান নিত্যস্থ আবশ্যক  
হইয়া উঠিয়াছে। সে প্রশ্ন এই—

এডমিশ্যর যখন দেশের সর্বোচ্চ বি  
চারালয়ের বিচারপতিপদ লাভের যে গা  
ইলেন তখন তাঁহারা কি জন্য মাজি  
স্ট্রেট কালেক্টর সেন্সিটাইভ ও সেক্রে  
টারির কথা প্রাপ্ত না হন? তাঁহারা প্রধান  
বিচারালয়ের বিচারাসনে আসীন  
তথা জজ, মাজিস্ট্রেট প্রভৃতির আজ্ঞার  
অনুরোধে আপীল প্রবণ, ও তদন্ত করিয়া  
বিষয়ে বিচার এবং যুক্তি ও আইন বি  
বর্তন করিতে সেই আজ্ঞা রক্ষিত করিতে  
করবেন, কিন্তু তাঁহারা স্বয়ং মাজিস্ট্রেট  
কালেক্টরদিগের পদ পাইতে পারিবেন  
ইহা সামান্য বিশ্বয়কর যুক্তিবিরুদ্ধ  
প্রবণ নহে।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে বারবার বলিয়া

আসিতেছেন উপযুক্ত হইলে তাঁহারা  
নিরপেক্ষ হইয়া প্রতিদ্বন্দ্ব ও বর্ণভেদ না  
করিয়া সকলকে তুল্যরূপে রাজপদে প্র  
তিষ্ঠিত করিবেন। ইংলিশের স্বয়ং  
নিজে ঘোষণা মতে শপথ পূর্বক এবিষয়ের  
অঙ্গীকার করা হইয়াছে। কিন্তু কার্যকা  
লে এ প্রতিজ্ঞাত বাক্য প্রতিপালিত হই  
তেছে না, কারণ কি? ইংলিশের ও  
ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের কি আমাদের  
প্রতি প্রেম নাই? তাঁহারা কি অন্তরের  
সহিত আমাদের উন্নতি সাধন চেষ্টা ক  
রেন না? এদেশে জন্মগ্রহণ এমন কেন  
ব্যক্তি আছেন যে এবিষয়ে সন্দেহ করিবে  
ন। তবে যে আমরা মাজিস্ট্রেট, কালেক্টর  
প্রভৃতির পদ পাইতেছি না, তাহার একটি  
বিশিষ্ট কারণ আছে। ইংলিশ সিভিল স  
ার্ভিসের পরীক্ষা গ্রহণ রীতিই সেই কারণ।  
ঐ রীতি আমাদের অন্তর্ভুক্ত না হওয়া  
কর্তব্যকপ হইয়াছে। উহা পরিবর্তিত হই  
য়া ভারতবর্ষে পরীক্ষা গ্রহণ প্রথা প্রবর্তিত  
হয়, এই প্রার্থনার এদেশীয়েরা বারবার  
ভারতবর্ষে চীৎকার করিয়া পরিশেষে প্রাপ্ত  
হইয়া পড়িয়াছেন। কর্তৃপক্ষ অচলবৎ  
অচলিতচিত্ত রহিয়াছেন, এ বিষয়ের  
কোন সহায়্য করিলেন না। এদেশীয়েরা  
কি অসম্মত প্রার্থনা করিতেছেন? পরীক্ষা  
যে স্থানে হউক না কেন, যে ব্যক্তি আপনা  
র ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়া পরীক্ষায় উত্তীর্ণ  
হইতে পারিবেন, তিনিই পদস্থ হইবেন,  
এই নিয়মই ম্যানুয়াল হইতেছে, নতুবা  
পরীক্ষা স্থান ভেদ করিয়া অকারণ এদে  
শীয়দিগের উন্নতি প্রতিবন্ধকতাচরণ থি  
য় হইতেছে না। কেহ কেহ বলেন, এদে  
শীয়েরা কুপমগুরু স্বরূপ, স্বদেশ পরিভ্রা  
ণ করিয়া দেশান্তরে পদক্ষেপ করিতে হই  
লে ইহাদিগের প্রাণান্ত বোধ হয়, ইংলিশ  
সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষায় নিয়ম হওয়া  
তে ইহাদিগকে অগত্যা ভিন্নদেশে গমন  
ও ভ্রমদেশ দর্শন করিতে হইবে।

ইংলিশ ও ফ্রান্স প্রভৃতি দর্শন করা যে  
শ্য কর্তব্য তাহা আমরা অঙ্গীকার করি।  
তদ্ব্যতিরেকে এদেশীয়দিগের বহুজ  
লাভ ও সাহসাদি গুণের বৃদ্ধি হওয়া  
বিষয়। কিন্তু এই কাণ্ড প্রদর্শন করি  
যে এদেশে পরীক্ষা গ্রহণ বন্ধ করা আ  
দিগের মতে কোন ক্রমেই যুক্তিসং  
বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে না। এদেশ  
দিগের ইংলিশ গমনের অনেক প্র  
মহান প্রতিবন্ধক আছে, সিভিল সার্ভিস  
পরীক্ষা দানের লোভ তদতিক্রমে সম  
নহে। তাহা হইলে এতদিন অনেক ইংল  
গিয়া পরীক্ষা দিয়া আসিতেন। সে প্র  
বন্ধকগুলি অন্য অন্য কারণ যোগে লে  
ক্রমে অন্তরিত হইবে। যাহা হউক, স  
র জপুরুষেরা একান্তই নিষ্ঠুর মনুষ্য ও  
গুণীর যুক্তির অনুসারী বোধ করিয়া অ  
নাদিগের অবলম্বিত মত পরিত্যাগ না  
রেন, অপাতত এই কপ করুন।

সিভিল সার্ভিস পরীক্ষার উপযোগ  
যে যে পুস্তক ও ভাষার পাঠ্যাবশ্যক এ  
দেশেই তদধ্যয়ন নিয়ম হউক। পরীক্ষা  
রা পাঠ সাধ হইলে ইংলিশ গিয়া পর  
ক্ষা দিয়া আসিবেন। তৎপরেই গবর্ণ  
মেন্ট এতদর্থ একটি বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা ক  
ন। বিদ্যালয়ে সিভিল ও বারিস্টার প  
লাভের উপযোগী বিষয় সকল অধ্য  
হইবে। এখানে পাঠকগণ জিজ্ঞাসা করি  
তে পারেন, এক্ষণ করিয়া বিশিষ্ট ইং  
লাভের সম্ভাবনা কি? দুটী লাভ আছে  
এক, যেসকল ব্যক্তির ইংলিশ গমনের অন  
কোন প্রতিবন্ধক নাই, কেবল একমাত্র  
প্রতিবন্ধক এই যে তাঁহারা ইংলিশ দী  
কাল বাস করিয়া আবশ্যিক ব্যয় নির্বা  
পূর্বক অধ্যয়ন করিয়া সম্পন্ন করিতে পার  
ন না, তাঁহাদিগের পক্ষে সুবিধা হইবে।  
দ্বিতীয়, ঐ বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিয়া য  
হারা ইংলিশে যাইতে ও অসমর্থ হইবেন  
তাঁহাদিগের সুশিক্ষানিবন্ধ ও গুরুত

ক'র্য নির্ধারিত ক্ষমতা অধিক; তাহা হইলে  
গর দ্বারা স্বাধীনতার আশ্রয়-পর্বসম্পন্ন  
প্রধান প্রধান কার্য নির্ধারিত হইতে পারি  
বে। এদেশে উল্লিখিত বিষয় আর এতদধিক  
ক'রিতে গেলে অধিকতর ব্যয় সংগ্রহ যে  
অবশ্যক ভেবে প'রদায়ে নিবিল  
সংক্রান্ত ব্যয় বহুক্ষেপের সম্ভাবনা। এই  
বিষয়গুলির কৃতবিদ্যা ছাড়াই। কার্যক্রম  
হইলে অধিক বেতন দিয়া আর এদেশে  
নিবিল সর্বোচ্চ আনিতে হইবে না।

আমেরিকার যুদ্ধের কথা  
কারণ কি?

আমেরিকার বর্তমান-যুদ্ধ যুদ্ধের মূল  
কারণ কি? ইহার নির্ণয় করিতে হইলে  
একটি প্রশ্নের সীমা হল। আবশ্যিক।  
তাহার সহিত তত্ত্ব জাতীয় সম্মান, বাণি-  
জীরূপ এবং মানব মণ্ডলীর মুখ অনুভূত  
কিয়াছে। তাহা এই—আমেরিকার ক্রীত  
দাসত্ব অব্যাহত থাকিবে কি না? এক  
ব্যক্তি অপর ব্যক্তিতে অসম্মতিতে বল পু-  
রীক কোন কার্য করাইয়া লইতে পারেন  
না, এই যুক্তির বলবত্তা সত্যজাতিমা-  
ন এই সীকার করিয়া থাকেন। ইচ্ছাতে হ-  
ক আর লঙ্ঘ্য পড়িয়া ইউর, ইউরোপ  
এবং যাবতীয় দেশে ক্রীতদাস রাখি-  
বার কথা ত্যাগ করিয়াছেন। কিন্তু বিশ্ব-  
যুদ্ধের বিষয় এই, উল্লিখিত উল্লিখিত নিয়মা-  
সারিণী বিশুদ্ধ যুক্তি অথবা জাহল্যমান  
কিভাবে আমেরিকার দক্ষিণ বিভাগে  
বল যে এই জঘন্য কথা অব্যাহত রহি-  
বে এমন নহে, তাহার এই একটি যাব-  
তীয় মুখের মূল ও উল্লিখিত নিয়মানুগত ব-  
ল প্রতিপন্ন হইয়া থাকে। সত্য বটে অ-  
থায় কোন কোন স্থানে ক্রীত দাস অথবা  
উৎপন্ন হয়, কিন্তু তাহাদিগের অবস্থার  
হিত কারোনিয়ার ক'র্য দাসদিগের অ-  
স্থার তুলনা করিলে সমুদ্র ও গোপনে  
ত প্রত্যেক, তত প্রত্যেক বোধ হয়। পার-

স্য, চীন, ও উত্তরদেশীয় এতদূর দাস  
দাসদিগকে পরিজন বলিয়া গণনা ও  
জান করেন, তাহাদিগের মহানাদি হইলে  
তাহারা অনেক ইলে স্বাধীনতা প্রাপ্ত হয়,  
এবং এতদূর উত্তরে কোন দাসীর গর্ভে  
সন্তান জন্মিলে সে সন্তান দাস হইয়াও  
সম্পত্তির অধিকারী হইয়া থাকে। এই সক-  
ল স্থানে দাসদিগের কিছু কিছু স্বত্ব ও  
অধিকার আছে, এতদূর তাহাদিগকে  
সহজে তাহা হইতে বঞ্চিত করেন না।  
কিন্তু আমেরিকার দাসদিগের তাহার কি  
হই নাই। তাহাদিগকে গোমেসমহিষের  
তুল্য জ্ঞান করা হয়, অতি সামান্য দোষে  
তাহাদিগের প্রাণ দণ্ড হইয়া থাকে।  
তত্ত্ব দাস প্রতি আত্মের বিষয় কে না  
অবগত আছেন? অধিকতর আশ্চর্য  
বিষয় এই, তত্ত্ব পাদ্রিসদিগের অনেকেও  
এই জঘন্য প্রথাতে বাইবেলের অনুমোদিত  
বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া থাকেন। আমে-  
রিকার দক্ষিণদেশে কি সত্যতম প্রদেশ  
মধ্যে পরিগণিত নহে?

একদম এই প্রশ্নের আর একটি প্রশ্ন উপ-  
স্থিত হইতেছে। উত্তরাংশের সত্যপতি লিঙ্ক-  
লন কি উদ্দেশ্যে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়াছেন,  
আমেরিকার দ্রুত জীৱকি দর্শনে যাঁহারা  
কাতর, তাঁহারা লিঙ্কলনের নিকৃষ্ট প্রত্ন-  
চরিতার্থতাকেই যুদ্ধ প্রবৃত্তির কারণ বলিয়া  
নির্দেশ করিয়া থাকেন। তাঁহারা বলেন লি-  
ঙ্কলন রাজ্য লোভে অন্ধ হইয়া এই অকা-  
র্য করিতেছেন। কিন্তু বাস্তবিক তাহা  
নহে। দাসত্ব প্রথার হিত করিবার চেষ্টাই  
উহার মূল। উত্তর বিভাগের লোকেরা  
বরাবর দাসত্বের প্রতি ঘৃণা ও উহার প্রতি  
বন্ধকতা করিয়া আসিতেছেন। কিন্তু এক  
দিন মহা সত্য দক্ষিণ বিভাগের প্রতিনি-  
ধি গণের অধিক ক্ষমতা থাকাতো তাঁহারা  
এই জঘন্য প্রথার উদ্ধূলনে সমর্থ হন নাই।  
একদম লিঙ্কলন সত্যপতি হওয়াতে তাঁহা  
দিগের প্রাধান্য হইয়াছে। দক্ষিণ খণ্ড

তদুপরি দাসত্বের বিপ্লব সম্ভাব্য করিয়া  
বিত্তোহে প্রবৃত্ত হইয়াছে।

অন্য এক প্রকার প্রবৃত্তির কারণ  
এই, আমরা শুনিয়া আসিতেছি হইলার  
সম্পত্তি মাঝে উত্তর প্রদেশ প্রদেশে  
কোঁরা অসম্মতিবিধিগণের সহিত একত্র হইয়া  
এক সভা করিয়া সভাপতি লিঙ্কলনকে  
এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করিয়াছেন।  
জন, কীয়ার্ট মিল সাহেব প্রভৃতি কয়েক  
জন হিতৈষী ব্যক্তির মধ্যে এই সভা হয়।  
সভার বিব্রোহিগণের কার্যের এতদ-  
বাদ ও লিঙ্কলনের সপক্ষতা করিয়াছেন।  
তাঁহারা সত্যজাতিমা-  
ন দাসত্ব উঠাইবার চেষ্টাই বিব্রোহের  
কারণ। সভাপতি আমেরিকার সমুদায়  
অংশ একত্র করিয়া র.বিব্রোহ অন্য যুদ্ধ  
করিতেছেন, রাজ্য লোভের জন্য নহে।  
দাসত্ব উঠাইয়া দেওয়া অতি কর্তব্য, সভা  
পতি লিঙ্কলন এ চেষ্টা করিয়া পুণিবার  
ধন্যবাদের পাত্র হইয়াছেন। ইংলণ্ড বা-  
সিদিগের অনেকে দাসাধিকারিদিগের  
প্রতি যে সমরুখস্বত্বতা প্রদর্শন করেন  
তিনিমিত্ত সভা আক্ষেপ করিয়াছেন। প-  
রিণামে সভার, সভাপতি শীঘ্র বিব্রোহি-  
দিগকে পরাজয় করিতে সমর্থ হন, এইরূপ  
অভিসন্দ প্রকাশ করিলেন। এতদে আর  
একটি বিষয়ের উল্লেখ করা কর্তব্য, নিউ  
ইর্ক প্রভৃতি উত্তর বিভাগের মঙ্গল সমুদে  
লাঙ্কসায়ারের কৃষ্ণকি বিপুলপন্ন ব্যক্তি  
দিগের সহায়তার জন্য বিত্তর টাকা সংগ্রহ  
হইত হইয়াছে কিন্তু দক্ষিণ বিভাগে এক  
পয়সাও হয় নাই। সভা এ বিষয়টি কৃ-  
তজ্ঞা সহকারে স্বীকার করিলেন।

আমেরিকার যুদ্ধ সম্পর্কে ইংলণ্ডে একটি  
আশ্চর্য ব্যবহার মনন গোঁচর হইতেছে  
বিদ্যায়, লোকেরা উত্তর বিভাগের শুভাকা-  
রী, কিন্তু সংবাদ পত্র মাঝেই বিব্রোহি-  
দিগের সহায়তা করেন। অপর ইংলণ্ডী  
র সাধারণ লোকে দাসত্বের প্রতি ঘৃণা প্র-



কাশ করিয়া থাকেন । এখন কি আর সন্ধ্যা সন্ধ্যার মাঝেইয়ের লোকদিগের এই প্রাথমিক কার্য সম্পন্ন করিয়া সন্ধ্যার সপক্ষতা করিবেন না ? আমরা আর এক টি বিষয়ে অধিকতর বিশ্লেষণ করিয়া দেখাই, এখানে তাহার উল্লেখ না করিয়া যৌনাবলম্বন বিধেয় হইতেছে না । আমেরিকার গৃহযুদ্ধ উপস্থিত হওয়াতে যে স্থানের লোকেরা রেশ সাগরে নিমগ্ন হইয়া ও লিঙ্কলনের সপক্ষতা প্রস্তাব করিয়া আপনাদিগের অননুকরণীয় উদ্যোগ প্রদর্শন করিতেছেন, সেই স্থানের লোকেরাই আবার তৎপূর্ববর্তী ২০শতাব্দীর বিবিধ ক্রিয়াকলাপের চেষ্ঠা পাইয়া কৃষকদিগকে নীলকর ও তুলকরের দাস করিয়া দিবার চেষ্ঠা পাইতেছেন ! আমরা স্মৃতি বুদ্ধিতে পারিতেছি, এবিধের কাহানিগের দোষ নাই, তার তবর্ষের সবিশেষ বৃত্তান্ত জানা না থাকাতাই তাহার। চূড়ান্ত লোকদিগের কুহকে পড়িয়া একপ করিতেছেন ।

পুলিস চৌকিদারদিগের  
অত্যাচার ।

২৪ পরগণার অন্তঃপাতি রাজপুরের উত্তরাংশে “বসু পুকুর” নামে একটি প্রসিদ্ধ পুকুরিণী আছে । তাহার দক্ষিণ তীরে এক পঞ্চানন ঠাকুরের স্থান আছে । শক্তি ও মদলবারে তথায় তাহার পূজার সমারোহ ও হাগ বলি হইয়া থাকে । গ্রামের অসংখ্যক বৃদ্ধেরাই গ্রাম সেই বলীকৃত হাগ বলপূর্বক লইয়া গিয়া প্রীতি ভোজন করে । হাগ ছিনিয়া লইবার সময়ে কখন কখন চোশাকেশি, মুঠা মুঠি ও মস্তাদিও হইয়া থাকে । গত পূর্ণ শনিবার পাঁচটা লইয়া এই কপ কাড়াকাড়ি হয় । কিন্তু এবারে একটি মহান কৌতুক বিষয় ও অত্যাচার করব্যাপার ঘটিয়াছে । পাঠকগণ দেখিয়া, শুনিয়া ও ভুক্তভোগী হইয়া জানিতে পারিয়াছেন সন্দেহ নাই,

বাংলাদেশের অনেক স্থানে মৃতদেহ পুলিশ চৌকিদার সৈন্য হইয়াছে । রাজপুর এ লৌতাগো বঞ্চিত হন নাই । গত মঙ্গলবার সেই চৌকিদারমহারথিদিগের হউক, আর তাহাদিগের নিরোজরিতা মহারথির হউক, হাগ মাংসে লোভ দৃষ্টি পতিত হয় । সুতরাং কয়েক জন চৌকিদার মৃত হইয়া পুজা স্থানে উপস্থিত হয় । পুজার শেষ না হইতে হইতে পাঁচটা কাড়াকাড়ি আরম্ভ হইল । এক দিকে চৌকিদার দল আর দিকে গ্রামের কয়েক জন উদ্ধত যতাব যুবক । ক্রিয়াকলাপ পরেই হস্তাহস্তি আরম্ভ হইল । গ্রামের যুবকদিগের মনে মনে অসন্তোষ এই, আমরা বরাবর হাগল ছিনিয়া লইয়া থাকি, আজি চৌকিদার লইয়া বাইবে ইহা ত হইতে পারে না । পক্ষান্তরে চৌকিদারেরা ভাবিল, আমরা একে পুলিশের লোক, গ্রামের হর্তা কর্তা বিধাতা, তাহাতে আবার মৃতদেহ কমতা পাইয়াছি, আমাদিগের হস্ত হইতে যদি অন্যোপাধি ছিনিয়া লয়, আমাদিগের জীবনে ও পুত্র প্রয়োজন কি ? এই রূপে উভয় দল মদমত্ত ও বদ্ধপরিবৃত্ত হইয়া সময়ে প্রবৃত্ত হইলেন । ঈদৃশ সময়ে বেকপ কল লাভ হয়, উভয় দলই পর্দাশ্রয় পরিমাণে তাহা লাভ করিলেন । তবে চৌকিদারেরা দলে কিছু পাতল ছিল, সুতরাং তাহাদিগের তৎকালে কিছু কলাধিকা হইল ! কিন্তু পশ্চাৎ তাহারা সে ক্ষতি কতক অংশে পূরণ করিয়া লইয়াছিল । পশ্চাৎ তাহারা বিপক্ষ দলের যে দুই এক ব্যক্তিকে দল ভ্রষ্ট ও পৃথক দেখিতে পার, তাহাদিগের উপরে আশা পূর্ণ করিয়া বৈর নির্ধাতন করে ।

এবিধের ত এই পর্যন্ত গেল, পাঠকগণ অপর বৃত্তান্ত অবগত করুন । চৌকিদারেরা এদিকে এই কাণ্ড করিয়া গিয়া বকুলপুরের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটের নিকটে অভিযোগ করিল । ডেপুটি সাহেব সরে

অনিমে তদারক করিয়া আসামীদিগকে গ্রেপ্তার করিবার পরামর্শ দিলেন । চৌকিদারেরা এককালে সিংহপ্রভাব হইয়া উঠিল । এই সময়ের অত্যাচার কাণ্ড কথা শুনিতে পাঠকগণ এককালে বিশপন্ন হইবেন । চৌকিদারেরা কেবল বৈরনির্ধাতনাথী হইয়া আসামীর অত্যাচারে প্রবৃত্ত হইল একপ নহে, তাহাদিগের উপাধিগত পুত্র ও বলবতী হইয়া উঠিল । তোমরা আসামী লুকাইয়া রাখিয়াছ বলি চল করিয়া তত্ত্বলোকের অন্তঃপুর মণ্ডল প্রবেশ করিয়া নানা প্রকার উপজব করিয়া প্রীলোকেরা মাননাশের করে মহাক্রোধ হইলেন ; অতঃপূর্ব মধ্যে তুলল গোল গ উপস্থিত হইল ; কেবল এই মাত্র নহে এই দুইয়েরা অসংখ্য প্রকারে চৌকিদার নির্যাতন দিগকে ধরিয়া টানাটানি করিয়া লানিল । আজিও পল্লীগ্রামের বেকপ বহা আছে, পল্লীগ্রামবাসিরাই তাহা বুদ্ধিতে পারেন ! এই টানাটানিতে নির্যাতন যতাব গ্রাম্য লোকেরা মণ্ডলিত হইয়া কিছু কিছু দিয়া পাপ বিচার করিয়া লানিলেন ।

একদে আমাদিগের জিজ্ঞাস্য এই চৌকিদারেরা শাস্তি সংস্থাপনার্থ নিযুক্ত হইয়াছে, তাহার। পাঁচটা কাড়াকাড়ি করিতে গিয়া শাস্তি ভবে প্রবৃত্ত হইলেন ; যদি বল তাহারা দাঙ্গা করিতে গিয়া নাই, দাঙ্গা নিবারণ করিতে গিয়া (আমরা ভাল লোকের মুখে শুনিয়া বাস্তবিক তাহা নহে) উল্লিখিত হইলেন ও তাহাদিগের দাঙ্গার লিঙ্গ হইয়া বিধেয় নাই । যখন তাহারা দেখিল, দাঙ্গা নিবারণ করিতে পারিতেছে না, তখন তাহাদের খানায় সম্মান দেওয়াই উচিত ছিল । তাহারা তাহা করিল না কেন ? তাহা কোন্ আইন অনুসারে এই কপ মকদ্দম আসামীকে গ্রেপ্তার করিবার নিমিত্ত সম্মানঃপুর মধ্যে গমন করিল ? সহসা

লোকের বাসস্থানে প্রবেশ করা সকল জাতির নিষিদ্ধ, তাহারাই সেই সাধারণ নিষেধের উল্লেখ করিয়া তত্ত্বলোকদের অমান্য করিল কেন? কোন্ আইনে শুদ্ধিতে তাগদগকে আসামী প্রেরণ করিয়া অর্থ সংগ্রহ করিতে কহিয়াছে? আমরা এখানে ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেটের নকটে এই প্রশ্ন গুলি করিয়া ফাক হইলাম, আমরা পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করিব।

### মৃত্যু গ্রন্থ।

আমরা হতভম্বতা সহকারে স্বীকার করি, তর্ক, সংস্কৃত কালেক্টর অধ্যক্ষ ই. বি. উইলস সাহেব বেখুন সোসাইটির "ইতিহাস" গ্রন্থ প্রাচীন সংস্কৃত ভাষাভাষীদের কবিতাগুলির তৎপাঠের আবশ্যিকতা ও বিশুদ্ধ উপদেশ দেন, তাহা ক্রম পুস্তকাকারে মুদ্রিত হইয়া সম্রাট প্রচারিত হইয়াছে, আর উহার এক অংশ প্রাপ্ত হইয়াছে। কাউন্সিল সাহেব এক জন বিখ্যাত পণ্ডিত ও ইতিহাসজ্ঞ, যে বিষয়ের প্রশংসা করা বাইতে চাহিতে গ্রন্থকারের অন্য গুণের পরিচয় দিবার আগে ইতিহাস বিষয়ে পাণ্ডিত্যের পরিচয় প্রদানই সবিশেষ আবশ্যিক। অনেক ইতিহাস বিষয়ে দ্বিতীয় আয়নলুড বলিয়া প্রসিদ্ধ নাম রাখা করিয়া থাকেন, এই সংস্কৃত পণ্ডিতের দ্বারাই পাঠকগণ পরিভূক্ত হইবেন। অন্য আমরা যে পুস্তকের প্রশংসা করি, তাহা অবশ্যই ক্ষুদ্র বটে কিন্তু গুণে সমৃদ্ধ। পাঠকগণ ইহা সস্ত্র পাইলে একটুকরো পরম স্তম্ভে অভিহিত করিতে পারিবেন সন্দেহ নাই।

প্রস্তাবিত গ্রন্থকর্তা বলেন, গ্রীস দেশের হিরোডোটস ইতিহাসের জন্মদাতা। তাহার পুত্র পোকে কেবল কবিতাগুলির কল্পিত বর্ণনা দিতে সক্ষম হইতেন। বর্ণনা রচনার অগ্রদূত প্রবৃত্ত হইতেন না। ভূতপূর্ব বংশীরা কি করিয়াছেন, তাহাঙ্গিগের কল্পিত বর্ণনা, কাব্য ও শাসন প্রণালী কিছু ছিল, তাহাঙ্গিগের চরিত্র চর্চনা করিয়া কিছু নীতি শিক্ষা করিতে হইবে, এবং কোন্ গর্হিত

ব্যাপার হইতেই বা বিরত থাকিতে হইবে; হিরোডোটসের পুত্রের লোকেরা এ সকল বিবেচনা করিতেন না। তাহাঙ্গিগের প্রণয় ও কল্পিত প্রকৃতি অনেকগুলি বর্ণনাই কেবল তাহাঙ্গিগের সত্যিকার প্রকৃতি হইত। হিরোডোটস পুত্রের পূর্ব ৪৮৪ অব্দে জন্ম গ্রহণ করেন। তাহার সময় অবধি বর্ণনা ইতিহাস আরম্ভ হয়। তিনি ইতিহাস নামে অল্পসংখ্যক অর্থ বুঝিয়া লন। ক'উএল সাহেব সেই অর্থই অনুবাদন করিয়াছেন। বস্তুতঃ অতি দূর অতীত কালের ঘটনার বর্ণনা রচনা নিতে হইলে অসংখ্য অধ্যবসায় ও অনিবার্য অল্পসংখ্যক আবশ্যক হয়। কিন্তু ইদানীন্তন কালে ইতিহাস অনেক উদার ও গভীরতর অর্থ হইয়াছে। ডারনিলিয়স ইহাকে চরিত্র বর্ণন দর্শন শাস্ত্র বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। বহু বীর নেপোলিয়ন সেট ফেলনার কারা-গৃহে মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্বে সশোক অহকার পূর্বক বারবার বলিয়াছিলেন, "তবিত্য-বংশীয়েরা আমার দিনের বর্ণনা বিচার করিবেন।" সন্ন্যাসী স্বনামকালের লোকদিগকে অনাদর করিয়া তবিত্য বংশীয়দিগকে আপনার আশ্রয় দিও। তিনি নিজে এক জন প্রগাঢ় ইতিহাস পাঠক ও ইতিহাসবেত্তা ছিলেন। তাহার মতে ইতিহাস তবিত্য-বংশীয়দিগের বিচার বলিয়া নির্দিষ্ট হইতেছে। অনন্তর বংশীয়রা কি উপায় অবলম্বন করিয়া সেই বিচার করিবেন, এক্ষণে এই প্রশ্ন উপস্থিত হইতেছে। কাউন্সিল সাহেব তন্নিমিত্ত স্বনামকালের ইতিহাস, জীবনচরিত্র প্রকৃতি তত্ত্ব করিয়া পাঠ করিতে অনুরোধ করিয়াছেন। অল্প বুদ্ধি পাঠকেরা কেবল ঘটনাব বর্ণনা পূর্ণ ইতিহাস পাঠ করিতেই সমাপ্তি ব্যগ্র হন পক্ষান্তরে বুদ্ধিমানেরা সন্মুখে সমুদ্রে সামান্য বর্ণনা পাঠে বিরক্ত হন। কিন্তু এটি উত্তমেরই প্রশংসা। কাউন্সিল সাহেব গিবনের চরিত্র প্রবর্তন করিয়া বলিয়াছেন, মধ্যকালে (মিডল এজ) গ্রেকের নামক এক জন উদাসীন যে এক ইতিহাস লেখেন, তাহা ইংলণ্ডের প্রাচীন ইতিহাসবেত্তা মীরস বলিয়া নির্দেশ করেন। অষ্টাদশ শতাব্দীর বিখ্যাত ইতিহাসবেত্তা ম্যুর গুলো তাহা হইতে অনেকদিন মৃত্যু আবিষ্কার করিয়াছেন। বি

শপ বরুয়াল ও গ্রোট সাহেবের মৃত গ্রীসের ইতিহাস গাঢ়তর অল্পসংখ্যক জিয়ার একটি উৎকৃষ্ট চরিত্র। তাহার পূর্বে লোকের এই সংস্কার ছিল, উক্ত দেশের ইতিহাস হ্রস্ব ও হইয়া গিয়াছে। তাহার আর কিছু ইতিহাস আবিষ্কার করিবার নাই। কিন্তু গ্রীক বুদ্ধি ব্যক্তিরা প্রগাঢ়তর অল্পসংখ্যক জিয়ার বাহা করিতে পারেন, বরুয়াল ও গ্রোটের প্রবর্তিত তাহা সমর্থন করিয়া দিতেছে।

হিরোডোটস ইতিহাস লিখিয়া পঞ্চাশতাব্দী ন করিয়া গেলে পর ইউরোপে প্রচলিত অনেক সংখ্যক ইতিহাসবেত্তা আবিষ্কৃত হন। গ্রীসের জেনোকল, থিওফ্রাস্টাস, পলি বিন্স এবং রোমের লাল্ট, লিবি টাস্কাস প্রভৃতি ব্যক্তিরা ইতিহাস প্রণয়ন করেন। রোমরাজ্য অসত্যদিগের দ্বারা পীড়িত হইলেও ইতিহাসের গৌরব তিরোহিত হয় নাই। তৎকালে বিদ্যার প্রভা বিস্তৃত হইয়াছিল বটে, কিন্তু অনেক উদাসীন ও পান্ডিত্য প্রকৃতি নিজ নিজ কালের বর্ণনা রচনা লিখিয়া রাখিতে উদাসীন ছিলেন না। কাউন্সিল সাহেব "প্রতীক" (খ্রীষ্টীয়) প্রবর্তকদিগের ইতিহাস গ্রন্থ মধ্যে লিখিয়াছেন বর্তমান সভ্যতা বিজ্ঞান বর্ণনায় অল্প অল্প করেন। প্রবর্তকেরা পূর্বতন ইতিহাস ও কাব্য প্রকৃতি বর্ণন করিয়া না থিলে এবং তৎকালের ইতিহাস না লিখিলে ইদানীন্তন কালের পণ্ডিতেরা পূর্বকালের ঘটনার প্রমাণ পাইতেন না। বস্তুতঃ অতীত হইতে লাগিল, ততই ইতিহাসের গৌরব হ্রাস হইতে লাগিল, এই উপায় দ্বারা তবিত্য বংশীয়েরা আমাদের কার্য দর্শন করিয়া আশ্রয় প্রকাশ করিবেন।

ইউরোপে বস্তু ঘটনা ঘটনা হইতে তৎকালে করাসী বিদ্যাবের বস্তু ইতিহাস ও জীবনচরিত্র প্রকৃতি পাওয়া যায় অন্য কোন দেশে এত পাওয়া যায় না। এসময়ে সমুদায় পৃথিবী খেন উৎসাহ পূর্ণ মৃত্যু জীবন প্রাপ্ত হইয়াছিল। করাসী জাতি সাধারণ কণ্ঠে রাজার মস্তক ক্ষেদন ইউরোপের দ্রুত মৃত্যু নেপোলিয়নের সমরকণ রক্তমিতে আগমন, তাহার অতীতপূর্ব চরিত্র বহিত বিগ্রহ, অল্প, ব্যবস্থা প্রণয়ন প্রকৃতি গুরুতর কাব্য অতি অল্প কা



র মধ্যে হইয়া গিয়াছে। এই সময়ে অনেক প্রকারে আপন আপন জীবনচরিত লিখিয়া গিয়াছেন। নেপোলিয়নের বিপত্তি ঘনাই যাইতে দেখিয়া বঙ্গের অভিবাসিত হইয়া গিয়া ইতিহাস ও জীবনচরিতের কাল বলি-  
অভ্যুত্থিত হয় না।

এই কণ ইউরোপে ক্রমশঃ ইতিহাসের চিত্রিত হয়। কিন্তু যখন আমরা ভারতবর্ষের চিত্রিত করি, তৎকালে সমুদায় অন্ধ অন্ধ হইয়া পড়িয়া যায়। কার্টএল সাহেব এ দেশে অতিশয় আক্ষেপ করিয়াছেন। সত্য যে সকল দেশের প্রধানকার ইতিহাস গণ্য হইয়াছে, কিন্তু অন্য দেশে ক্রমে যথার্থ ইতিহাসের প্রাচুর্য্য হইয়াছে। কিন্তু ভারত-  
ভারতবর্ষের ইতিহাস যতটা হইয়াছে। কবি-  
প্রথমে যে উপাখ্যান রচনা করেন, তাহা ও তাহা অপরিবর্তিত রাখিয়াছে। পূর্বাণ প্র-  
তি অল্প কালিক ও অলৌকিক পুণ্য। তাহা হইতে যথার্থ ইতিহাসের সত্যতা সত্যতা আসি। কার্টএল সাহেব এখানে হতাশ হইয়াছেন। ভারতবর্ষের ইতিহাস অসম্পূর্ণ নহে কিন্তু আমরা কখনো তাহা সম্বন্ধে চিন্তা করিয়া গাঢ় অন্ধকারে অনেক যত্নে বিষয়ের আশির্বাদ প্রার্থনা আছে। মুসলমানেরা এদেশে  
সিদ্ধান্ত পূর্ব্ব যথার্থ ইতিহাস আরম্ভ হয়।  
আমরা চেষ্টা করি, আবুল ফজল প্রভৃতি  
প্রথম প্রকাশ করেন। তাঁহাদের প্রথম প্রকাশিত পুস্তক 'আবুল ফজল সাহেব প্রণীত' বহিঃ  
এই সমস্ত ইতিহাস মুদ্রিত করিয়া ও  
ইউরোপ হইতে যথার্থ ইতিহাস আনয়ন করিয়া এদেশে একটি পুস্তকালয় করা কর্তব্য।  
প্রত্যেকটি উৎকৃষ্ট সন্দেহ নাহি। ঐতিহাসিক  
সিদ্ধান্ত মুসলমান ইতিহাস সকল অন্ধকার  
বিভে আরম্ভ করিয়াছেন। বর্তমান সম্পূর্ণ  
এতদেশীয় ধনী লোক ও গবর্ণমেন্টের  
কর্তৃ উপব নির্ভর করিতেছে।

আমরা কার্টএল সাহেবের বাক্যে সম্পূর্ণ  
অগ্রনোদন করিয়া এদেশীয় কৃষিকিত  
প্রত্যেক বিশেষরূপে অনুরোধ করিতেছি।  
যে তাঁহারা ইতিহাস পাঠ ও তাহার রচনা বি-  
ষয়ে বিশেষ মনোযোগ করিয়া আমাদিগের  
দেশের একটী অভাব দূর করেন। এদেশের এক  
জন গ্রন্থকার এই নিমিত্ত আক্ষেপ করিয়াছেন  
যে "অসম্পূর্ণ প্রধান পণ্ডিতেরা সকল  
শাস্ত্রের আশেচনা করিয়াছিলেন কিন্তু ইতিহাস-  
ত্বের প্রতি দৃষ্টিপাত করেন নাই। সংস্কৃত  
ভাষায় এই একটি মাত্র বিষয়ের অভাব  
আছে। এক্ষণে সেই কর্ম আমাদিগের উপরে  
পড়িয়াছে। ৩ বাঙ্গালা ভাষায় অনেক ইতি-  
হাস হইয়াছে বটে, কিন্তু তাহার অধিকাংশ  
ইংরাজীর অনুবাদ মাত্র। মূল গ্রন্থের রচনায়  
প্রাণ নাই অথচ ইতিহাসের উন্নতি হওয়া  
সম্ভবিত নয়।

প্রাপ্ত।  
বর্ধমান হুগলনগর ও যশোহর  
গুরু টে নিউ স্কুল।  
সৌমপ্রকাশ পাঠক বর্গ অবগত রাখেন  
যে আমাদের ভূতপূর্ব্ব লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বা  
হাজার দেশীয় ভাষায় উন্নতির নিমিত্ত টং  
১৮১২ ও ৬৩ খালে ৩০ হাজার টাকা প্রদান  
করিয়া যান। সেট টাকা কিরূপে ব্যয়িত হই-  
য়া সাধারণের শিক্ষা দিবার হইবে এই চিন্তা  
র ডাইরেক্টর, ইন্সপেক্টর প্রভৃতি মহোদয়ের  
বুদ্ধিমান চিন্তাকুল ছিলেন। ক্রমে ক্রমে  
উহার ২।১ ক প্রণালী উদ্ভাবিত ও হইয়াছিল  
কিন্তু কার্যকালে তাহা কলোণিয়ারী হইল  
না দেখিয়া এক্ষণে পরিত্যক্ত হইয়াছে।  
গত জুন মাসে অধিকৃত উদ্ভে। সাহেব  
বিলাত গমন করিলে বাঙ্গালার দক্ষিণ প-  
শ্চিম বিভাগের যতন ইন্সপেক্টর অধিকৃত  
জে জি মেডলিকট সাহেব প্রতিনিধি রূপে  
উদ্ভে। সাহেবের কার্য ভারগ্রহণ করেন এবং  
অধিকৃত বাবু ভূদেব মুখোপাধ্যায় মহাশয় তাঁ-  
হার সেট কার্যের সহকারিতায় নিযুক্ত  
হয়েন। উক্ত দুই মহোদয় প্রথমাবধিই পূর্ব্বো-  
ল্লিখিত ৩০ হাজার টাকা কি প্রকারে ব্যয়  
করূপে বিনিয়োগিত হইবে তদ্বিষয়ে  
নিম্ন হইলেন। ভূদেব বাবু প্রায় ১০ বৎসর  
কাল শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যে নিযুক্ত আছেন,  
নিম্নোক্তঃ তিনি প্রায় ৭ বৎসর কাল হুগলী  
নন্দাল বিদ্যালয়ে থাকিয়া বাঙ্গালা ভাষায়

প্রতি দেশীয় লোকদিগের কিঞ্চিৎ অল্প  
কিঞ্চিৎ বাঙ্গালা শিক্ষা দেশীয়লোকেরা প্রা-  
না করে, এক্ষণে কিঞ্চিৎ শিক্ষা দেওয়া তাহা  
দিগকে আবশ্যিক এবং দেশের অবস্থা এ-  
লোকের অনুরাগ অগ্রসারে কিঞ্চিৎ প্রণালী  
অবলম্বন করিলেই বা তাহা সংশোধিত হইত-  
পারে, তদ্বিষয়ে অনেক অংগত হইয়াছেন  
তিনি বিদ্যান বুদ্ধিমান চতুর ও আমাদে-  
শীয় লোক, দেশীয় লোক ব্যতিক্রমে ই-  
উরোপীয়েরা কখনও এ দেশের সম্বন্ধে অ-  
স্বা। অবগত হইয়া প্রকৃতরূপে কার্য নির্মা-  
করিতে পারেন না। মেডলিকট সাহেব ই-  
স্পেক্টর পদে প্রাপ্তির সময়ে কিছুমাত্র বাঙ্গা-  
লা জানিতেন না এবং শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যে  
সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ ছিলেন, এজন্য তাঁহার নি-  
য়োগের সময়ে অনেক সমস্যা জন্মে নাহি  
কিন্তু উক্ত মহোদয় ক'র্য্যে এক্ষণে দক্ষতা  
প্রদীপ্ত ও বুদ্ধিমান প্রদর্শন করিতেছেন  
তাঁহাতে লোকের সে অনুরোধ বোধ হ-  
অনেক অংশে তাপগত হইয়াছে। ইন্সপেক্টর  
দিগের নানাক্রমে লোকের সন্তোষ আনা  
পরিচয় করিতে হয় এবং নানাক্রমে লোক-  
দিগকে অধিকৃত্যবয়ে প্ররোচিত করা হই-  
হয়, সুতরাং তাঁহাদিগের অপরাধ ও প-  
তার সহিত সে কার্য একত্রে নিতান্ত অ-  
শাক, মেডলিকট সাহেবের এই গুণ সর্ব-  
পেক্ষা প্রণয়নীয়, যিনি একবার তাঁহা  
সংগত আলোচনা করিয়াছেন তাঁহারই তাঁহা  
উদারাম্বল মহান ও ইন্সপেক্টরের উপায়  
লোক বলিয়া, বোধ হয়, সংস্কার জন্মিয়াছে  
যাহা হইক, উক্ত সাহেব মহোদয় ও ভূদেব  
বাবু একত্রিত হইয়া পূর্ব্বোক্ত ৩০ হাজার টা-  
কার যে প্রণালী উদ্ভাবন করেন এবং গব-  
র্নমেন্টের অনুমোদিত হইয়া কিয়দিন হই-  
যাহার কার্য আরম্ভ হইয়াছে তাহা নিয়ে  
খিত হইতেছে।

বর্ধমান, হুগলনগর ও যশোহর এই তিন  
স্থানে এক একটী টে নিউ বিদ্যালয় স্থাপিত  
হইয়াছে। ২০ টাকা পাঠ্যের ব্যয় সমেত মা-  
ক ১০০ টাকা বেতনে তিন জনের অন্য তিন  
জন সব ডেপুটি ইন্সপেক্টর নিযুক্ত হইয়াছেন  
তাঁহারা যত্নে জিলায় মধ্যে গ্রামে গ্রামে প-

মণ করতঃ এই শিকার হাজি সংগ্রহ করিয়া  
দেখেন। হাজিগ্রহণের নিয়ম এই যে, গ্রা  
হ করলোকেরা। মের পাঠশালার গুরু  
হাশরকে অথবা নদি তিনি শিকাগ্রহণের অ  
পযুক্ত বয়স্ক হইলে তবে তাঁহার পুত্র, আতা-  
তনয় ক'ম সম্পূর্ণ লোক অথবা যে কোন  
প্রকৃতি মনোনীত করিয়া ট্রেনিং স্কুলে  
প্রেরণ করিবেন। কিন্তু তাহাদিগকে একপ এক  
অসীকার পত্র প্রদান করিতে হইবে যে তাঁ-  
হারা যে ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া ট্রেনিং  
স্কুলে প্রেরণ করিবেন তিনি তাঁহার অধ্যয়ন  
করিয়া প্রাপ্যপত্র সহকারে প্রত্যাগমন ক-  
লে তাঁহারা তাহাকে পাঠশালার শিকার  
গণ্যে নিযুক্ত করিয়া তাঁহার বারা পাঠশা-  
লার শিকাগ্রহণের বিষয় সমস্ত সম্ভব সম্ভ-  
ব শিক্ষা নির্বাহ করাইবেন, কোন মতে  
তাঁহার অন্যথাচরণ করিবেন না। যদি করেন  
বে এই ব্যক্তিকে ট্রেনিং স্কুলে শিকার প্রদান  
করিবার নিমিত্ত সরকার বাহাদুরের বড় টাকা  
দেয় হইবে তাহা। অর্পণ করিতে কোন মতে  
পাণ্ডিত্য করিবেন না।

জিলার সব ডেপুটি ইনস্পেক্টর ও এই অ-  
সীকার পত্র এক জন সাক্ষী থাকিবেন, তাঁ-  
হারা স্বাক্ষর সমেত এই পত্র লইয়া হাজির আ-  
লে ট্রেনিং প্রধান শিক্ষক তাহাদিগকে  
ট্রেনিং এক অসীকার পত্র প্রদান করাইয়া  
দেবেন যে তিনি যে গ্রাম হইতে মনোনীত  
করিয়া আসিয়াছেন এখানে অধ্যয়ন করিয়া  
ট্রিকিটে গ্রহণ করত সেই গ্রামের পাঠশা-  
লার হাজি শিকার কার্য গ্রহণ করিবেন এ-  
ব গবর্নমেন্ট বড় দিন রক্তি বা পুরস্কার স্বরূপ  
সিক পাঁচ টাকা তাহাকে প্রদান করিবেন  
তিনি তিনি উক্ত কার্য সুচারুরূপে নির্বাহ  
করিতে থাকিবেন।

পঞ্চমে অনেকের শঙ্কা হইয়াছিল একপ  
অসীকার পত্র গ্রহণ লোকেরা ও ভাবী  
কমহাশয়েরা কখনই স্বাক্ষর করিবেন না,  
এ সে শঙ্কা অনেকাংশে অপগত হইয়াছে।  
কম গ্রামস্থ লোকেরা গবর্নমেন্টের এই শঙ্কা  
কারণের স্বগ্রহণ করিতেছেন। তাহারা  
হইতেছেন গবর্নমেন্ট কেবল অগ্রহণ করিয়া  
হাজির সমস্তপত্রের শিকার উৎকণ্ঠাধনে-

র অন্য গ্রামে গ্রামে এক একটি পাঠশালা  
করিয়া দিতেছেন। এজন্য তাহাদিগকে হুতন  
স্বপ কোন ব্যয় দিতে হইবে না। পূর্ব গুরু  
হাশরদিগকে তাহারা যেকপ বেতন দিয়া আ-  
সিতেছিলেন একপকার শিকিত হুতন গুরু-  
হাশরকেও সেটরূপ বেতন দিলেই চলি-  
বে, কেবল তাঁহার পাঠশালার হাজি সংখ্যার  
বাহাতে রক্তি হইবে তখিবরে শিকিত জেঁদা করি-  
বেন এই মাত্র। একপ অসীকার করণে তাঁহা-  
দের শঙ্কার বিষয় কি?

ভাবী গুরু মহাশয়েরা অসীকার পত্র  
স্বাক্ষর করিতে বাস্তবিকই অনেকে ভীত  
হইয়াছিলেন কিন্তু বিশেষ বিবেচনা করিয়া  
দেখিলে তাঁহাদের ভয়ের বিষয় কিছুই দেখা  
যায় না। কারণ তাঁহারা বাবজীবন আবহ  
হইলান তাহারা ভীত হইতেছেন। কিন্তু গবর্ন-  
মেন্ট কি বাবজীবন তাহাদিগকে ৫ টাকা করিয়া  
দিবেন একপ অসীকার করিতেছেন? কিন্তু যদি  
তাহা না হইল তবে আর শঙ্কা কি? গবর্নমেন্ট  
তাঁহাদিগকে ৫ টাকা দেওয়া যদি রক্তি করে  
ন এবং তাহাদের অন্য কোন কার্যের সুবিধা  
হইতকালে অনায়াসে তাঁহারা উহা ত্যাগ  
করিতে পারিবেন। তদ্রূপ গবর্নমেন্ট কতদিন  
এ টাকা দিবেন তাহার নিরুত্তর নাই কিন্তু গুরু  
মহাশয়েরা দেখিবেন যে গবর্নমেন্ট বরাবর তা-  
হাদিগকে ৫ টাকা করিয়া দেন পরে ইহা তা-  
হাদিগের প্রাণীর্ষ হইয়া উঠিবে। কারণ ত-  
খন তাঁহারা দেখিবেন যে তাঁহারা যে কার্যে  
নিযুক্ত আছেন তাহার আয় নিতান্ত কম হই-  
বে না। গবর্নমেন্ট হইতে নিয়মিতরূপ ৫ টা-  
কা পাওয়া যাইবে, হাজির বেতন ও স্থান বি-  
শেষে ৫-৭-৮ ও ১০ মণ পর্যন্ত হইতে পারি-  
বে। বিনা বাসা খরচ বাড়িতে পরিবারের  
সামান্য খরচ তাহারা এ কার্য সমাধা করি-  
বেন। তদ্রূপ রক্তি ভ্রমারতি প্রভৃতি আর  
শাক কিছু তাহাদের বাবসায় থাকে তাহাও  
অবিবোধে চালাইতে পারিবেন। আর এই  
এক নিয়মে, বঙ্গ যে সকল লোককে শুধু ১৫  
টাকা বেতনের উপর নির্ভর করিয়া পরিবার  
চি ত্যাগ করিয়া দেশ দেশান্তরে গমন করি-  
তে হয়, গুরুমহাশয়েরা বিবেচনা করুন তাহা-  
দিগের কার্য উল্লিখিত লোক সকলের কার্য  
অপেক্ষা কতগুণে সুখকর।

য, হা হইক শ্রীযুক্ত বেঙ্গলিষ্ট নামের  
হুদেব বাবু উভয়ে মিলিত হইয়া এই গ্রাম  
প্রবর্তিত করিয়াছেন ইহা পূর্বে উল্লিখিত হই-  
য়াছে কিন্তু তাহা হইলে ও হুদেব বাবু দেশীয়  
লোক হুতরাং ইহার অধিকাংশই যে তাঁহার  
রুচিবিশুদ্ধত ইহা অনায়াসেই স্বকল্প  
হইতেছে। যে কোনরূপ হুতন গ্রামীণী গ্রাম  
প্রবর্তিত করা ব্যয় প্রবর্তিতকালে  
বদান হইয়া পুথ্যপুথ্য রূপে তাহার ভ্রম  
ন করিতে হয়, একপ হইলে সেই গ্রামীণী  
বে অংশ সমোশ বা অসম্পূর্ণ থাকে, অংশ  
হা দোষ দুই ও সম্পূর্ণ হইয়া উঠে। হুতন  
বাবু পূর্বোক্ত হুতন গ্রামীণী প্রবর্তিত  
এব গবর্নমেন্ট তাহাকে হুতন ইনস্পেক্টরী  
প-  
দে নিযুক্ত করিয়া তাঁহার প্রতি এই কার্য  
তত্ত্বাবধানের ভার প্রদান করিবার যে বাস্তব  
করিয়াছেন, তাহা তাঁহাদের প্রকৃত বিবেচনার  
কার্য হইয়াছে এবং এতদেশীয় লোকেরা  
অপনাদিগের মধ্যে এক জন হুতনীয় ব্যক্তি  
কে ইনস্পেক্টরীপদে আয়োজিত দেখিয়া  
অবশ্যই আশ্চর্য হইবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু  
শুনিতেন হুদেব বাবুর এই হুতন পদের নাম  
"স্পেনিয়ল ইনস্পেক্টর" হইবে, এই নামটি  
এক কালে আনাদের সাতিশর প্রিয় ছিল কিন্তু  
একপে উহা আনাদিগের গুরু এ শ্রমের  
মেঘের মূল্য হইয়াছে। অতএব গবর্নমেন্ট  
তাঁহার নামান্তর প্রদান করিলে অধিক সুখের  
বিষয় হইত ইতি।

সবিনয় নিবেদন -  
মহাশয়! এখানে (মেঘেরপুরে) আপ-  
নার কোন সংবাদশ্রাব্য নাই দেখিয়া অত্যন্ত  
সংবাদ লিখিতে আশার আভিলাষ হইয়াছে।  
কিন্তু উহা কতদূর সত্য হইবে বলিতে পারি-  
না। তাহা আপনার ও তবদীয় পাঠকগণের  
বিবেচ্য রহিল।  
এই স্থান নদীয়া জেলার অন্তর্গত  
হুতনগর হইতে প্রায় ১৪ ক্রোশ (২৮ মাইল)  
উত্তরে অবস্থিত। ইহার পশ্চিম পার্শ্বে টুঙ্গ-  
ব নামক এক ক্ষুদ্র শাখানদী প্রবাহিত। উক্ত  
টুঙ্গবের জল নিতান্ত নিম্ন নহে। কিন্তু এই  
গ্রামের সমুদায় লোক তাহার জল ব্যবহার



হইতে পারেন না। কারণ ইহার পূর্ব পার্শ্ব  
এইতে উহা আর অর্ধ ক্রোশ অন্তরে অবস্থি-  
ত। পূর্ব পক্ষীতে একটা বৃহৎ পুকুরিণী আছে,  
তাহার জল দ্বারা ইহা উক্ত পক্ষীর আর সমুদায়  
কাণ্ড নির্মিত হইয়া থাকে। ইহা দ্বারা  
পক্ষে তাহা উৎকর্ষিত বলিয়া বোধ হয় না।  
এই স্থানে অনেক গুলি ব্রাহ্মণ ও বৈদ্যব-  
ীর জমিদার বসতি করেন।

২। এখানে একটা ইংরেজী বাঙ্গালী বি-  
দ্যালয়, একটা পোর্ট আফিস, ও একটা থানা  
এখানে দিন অবধি অবস্থিত আছে। সম্রাতি  
কিছু দিন পূর্বে দুইটা মুলেকের কাছারি, এ-  
কটা ডিপুটি মেজিষ্ট্রেটের খন্দাসন, তিনটা  
ডিপুটি কালেক্টরের বিচারালয়, এবং একটা  
হোটআদালত স্থাপন সংস্থাপিত হইয়াছে।  
শুনিতে পাই যে, কলকাতা পূর্বে অত্যন্ত উৎ-  
কর্ষিত ছিল। কিন্তু সম্রাতি আর ইহার তাহা  
উৎকর্ষিত হইত না। পরন্তু একপে সেকপ সমু-  
দায় নাই বর্ধাৎ বটে। কিন্তু বিদ্যালয়টিকে নি-  
তান্ত নিরুৎকর্ষিত বলা যায় না। বর্তমান সময়ে  
সাক্ষর সংখ্যা ৮০। ১০০টি হইবে।

৩। প্রায় ৭।৮ বৎসর হইল এখানে এক  
টা ডাকঘর ছিল। তখন এই স্থানে পূর্বোক্ত  
বিচারালয় সকলের একটাও সংস্থাপিত  
হইত না। মধ্যে গবর্নমেন্টের কতি বোধ হও-  
য়াতে উহা অবশিষ্ট হইয়া যায়। পরে অত্র  
জমিদারগণ সকলে ঐকমত্যাবলম্বন পূর্বক  
গবর্নমেন্টের নিকট আবেদন করেন যে, পুন-  
রায় এখানে একটা পোর্ট আফিস সংস্থাপিত  
হয়, এবং যদি ইহাতে গবর্নমেন্টের কতি  
হয়, তবে আমরা কতিপূরণ করিয়া দিব।  
তদনুসারে ডাকঘর পুনর্বার প্রতিষ্ঠিত হই-  
য়াছে এবং তদবধি উহা চলিতেছে। একপে  
মেহেরপুরে অনেক গুলি বিচারালয় হওয়াতে  
উহা কাণ্ড ও পূর্বাংগে রক্ষি পাটয়াছে।  
এতদ্বারা গবর্নমেন্টের কতি হইয়াব তখন  
উঠিয়া যাইবার আর সম্ভাবনা নাই। পোর্ট  
মাঠার (ডাকঘর) বাহুটাও অতি ভদ্রলোক।  
বিচারালয় সকলের বিবরণ পরে লিখিত  
হইবে।

৪। সম্রাতি কিছু দিন পক্ষ এখানে  
অত্যন্ত ব্যস্ত হইয়াছে। ৫। ৫ দিনের

মধ্যে একটা হাগল, একটা গোবৎস, ও এক-  
টা বেব, ব্যস্তে লইয়া গিয়াছে। মধ্যে দ্বা-  
ধাতে ও মধ্যমাধাতে এক ব্যক্তির সর্কাল  
কত বিকৃত করিয়া দিয়াছে। এই ব্যক্তি এক-  
টা হাগল ব্যস্তে লইয়া গিয়াছিল। সে তাহা  
র হাগলের উদ্ধারার্থে যাওয়াতে ঐকপ-  
শা সংঘটিত হইয়াছে। যদি নিকটে লোক না  
থাকিত, তবে নিশ্চয়ই উহাকে ব্যস্তের গ্রাসে  
পতিত হইতে হইত। নিকবর্তী লোকেরা  
তাড়াতাড়ি করাতে ব্যস্ত তাহাকে পরিভা-  
গ করিয়া পলায়ন করিল। আবার অন্য চারি  
দিন হইল, ও জন কলক রাতিতে মাঠে তা-  
হাদিগের শস্য ক্ষেত্রের রক্ষণাবেক্ষণ করিতে-  
ছিল। এমন সময়ে এক বাঘ আসিয়া তাহা-  
দিগকে আক্রমণের উপক্রম করিলে দুই জন  
একবারে তরে জড়ীভূত হইয়াছিল, একব্যক্তি  
মাত্র অধি আসিয়া অত্যন্ত চীৎকার করিতে  
লাগিল। উহাদিগের আর্জমান শুনিয়া নিক-  
টবর্তী লোকেরা সমাগত হওয়াতে ব্যস্ত  
তাহাদিগের কিছুই করিতে পারে নাই।  
লোকে বলিয়া থাকে যে, মধ্যে মধ্যেই এই  
রূপ ঘটনা ঘটে। কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই  
যে, এই রূপ দেখিয়া শুনিয়াও অত্রত্য অ-  
ধিবাসীর মধ্যে কেহই ইহার প্রতিবিধানের  
চেষ্টা করিতেছেন না।

৫। এই গ্রামের অধিকোণে প্রায় দুই  
ক্রোশ অন্তরে কোলা নামে এক ক্ষুদ্র গ্রাম  
আছে, তাহাতেও এক বৃহৎ পুংলুগাল অত্য-  
ন্ত ক্ষৌরাক্য করিতেছে। এই লুগালের একপ  
সাহস যে, রাত্রিযোগে জননীর ক্রোধ হইতে  
লইয়াগিয়া দুইটা বালককে হত ২। ৩ টিকে  
আহত করিয়াছে। উহা যুবা ব্যক্তিকে দাশ-  
ন করিতেও পরাধীন হয় নাই। কলতঃ এক  
সামান্য লুগালে উক্ত গ্রাম নিতান্ত ব্যতিব্যস্ত  
করিয়া তুলিয়াছে। উহার দ্বারা এই রূপ অ-  
ভ্যচার হওয়াতে কয়েক ব্যক্তি উহাকে দাশি-  
বার চেষ্টা করিয়াছিল। কিন্তু সকল প্রকার হই-  
তে পারে নাই। কারণ লুগাল তাহাদিগের  
এই রূপ চেষ্টা দেখিয়া কোথায় পলায়ন করি-  
ল, যে কেহই তাহার অনুসন্ধান করিতে পা-  
রিল না। এই রূপ ঘটন উদ্যোগ করে, তখন-  
ই প্রায় নিশ্চয় হইয়া থাকে। এখানকার বা-

ঘের ভয়ের দ্বারা, সেখানকার লোকেরা,  
গালের ভয়েও অত্যন্ত ভীত  
রাছে। অধিক কি সে  
অন্য কেহই বাহিরে থা কতে

## বিবিধ সংবাদ ।

২৮ এ মাঘ সোমবার ।

নদীয়া বিভাগের কমিসনরের  
অনুসারে বঙ্গদেশের গবর্নমেন্টে বাঙ্গালী  
তি স্থানে ১৮৫৭ অব্দের ১৭ আইন প্রচলিত  
করিতেছেন। গবর্নমেন্টের স্বত্বস্বত্ব হইয়া  
অপসিকৃত পুকুরিণী প্রকৃতিই অত্রের প্র-  
কার। এই আইন প্রচলিত হইলে গ্রামবা-  
দিগকে আপন আপন বাজি ও পুকুরিণী প-  
কৃত রাখিতে হইবে। বাঙ্গালতের মাঝ  
তবর্ষীয় সত্তার উত্তেজনাট এতদনুষ্ঠানে  
কারণ। অন্য অন্য গ্রামেও এই আইন প্র-  
লিত করিবার চেষ্টা করা উচিত।

রেবরেন্ড এ. জি. সটলর অধ্যক্ষ হইয়া  
কীর্ত্তি হালিবরি কালেক্টর  
বর্ষীয় সিভিল সার্জিসে প্রবেশ করিয়া এই  
অধ্যয়ন করিবেন। হালিবরির নাম শুনি  
সিভিল সার্জিসের একচেটিয়ার কথাটা আ-  
দিগের ক্ষতি পথে সন্নিহিত হইল।

ডাউলিন সাহেব সর চারলস উডকে  
লিয়ার্ডেন গড শিখপ্রদুশনী সত্তার তাবত  
বীর রাজা ও সর্দারগণ যথোচিত উপ-  
সহকারে দ্রব্যাদি প্রেরণ করেন নাই তাহা  
কারণ এই তদ্বারা তাহাদিগকে কতি  
হইতে হয়। তিনি তদ্বিমিত্ত প্রস্তাব করিয়া  
ন বাঁহারা দ্রব্যাদি প্রেরণ করিবেন তৎপ  
র্থে তাহাদিগকে দ্বিলাভীয় দ্রব্য উপঢৌক  
দেওয়া উচিত। সর চারলস উড উল্লিতে  
অন্ত হইয়াছেন। এই রূপ বস্ত্র প্রস্তুত প্র-  
শিখ কাণ্ডে উৎসাহ প্রদত্ত হইলে ভারতব-  
র্ষে সকল বিষয়ের অশান্তি মধ্যে সবিনয়  
উন্নতি হইতে সন্দেহ নাই।

লাহোরের মজরদিগের সত্তার  
অন্য অর পুত্রের রাজা ৫০০০ টাকা প্রদান  
করিয়াছেন।

আমেরিকার কমিসরিএট ইহারদ্বারা  
অন্যান্য জুয়াচুরি করিয়া ধরা পড়িয়াছেন

এক ব্যক্তি এক রেজিমেন্টে সেনার সমুদায় ভূতা দিরাচ্ছে। কিন্তু এক খানিতেও ত্রুটি না প্রেরণ নাই। রুটি প্রকৃতিতে অন অন্ত্রব্য বাহির হইয়াছে। কট্টাটের অবস্থা সর্বশ্রেষ্ঠ সমান।

চাকা প্রকাশ সম্পাদকের নামে মাসিক ৩ খেব হুতপূর্ণ ডেপুটি মাসিষ্ট্রেট লাইবেরালিয়া কোলকারিতে নালীপ করিয়াছেন। এইরূপ দুইএকটি লাইবেরাল মককমা হওয়া ভাল, তাহা হইলে বিচারপতিদিগের চেষ্টা হয়।

উক্তপত্র তথ্য জুরাতির মনিসেশ প্রকৃতি প্রসঙ্গ করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। এই ব্যক্তি চাকরীর লোভে এক জাল জমীদারের সহিত ভাস খেলিতে গিয়া কয়েকটি টাকার জাল দিয়াছেন। খুঁজিয়া নানা ছলে টাকা লইয়া থাকে। কলিকাতার জুরাচে এখন দিন কত বড় জাল হইয়াছিল কিন্তু ওয়াকোপ সাহেবের প্রসঙ্গে তাহা এখন করিয়া গিয়াছে।

দিল্লী ইনস্টিটিউট জর্জাল বলেন সম্রাতি তথ্য প্রচুর রহি হইয়াছে।

ভারতবর্ষের রেটলওয়ে কোম্পানি হই। আপনাদিগের মত পরিসর করিয়া কম। বরিয়াছেন দিল্লী হইয়া বেলগয়ে বাইবে ন। আমরা কিছুদিকস পূর্বে এইরূপ একটি জন য প্রবণ করিয়াছিলাম তাহাতে বিশ্বাস ন। নাই কিন্তু ইহা এক্ষণে সত্য হওয়াতে দিল্লী। এতদেশীয় ও ইউরোপীয় অধিবাসীরা। চারলস উডেন নিকটে এক আবেদন করি। কোম্পানির এ প্রস্তাবের প্রতিবাদ করি। ছেন। এক্ষণে মত পার্লামেন্টের বিশেষ না। কি তাহা না জানিয়া এবিসয়ে আমাদি। প্রতিপ্রায় প্রকাশ করা বিবেচ্য হইতেছে।

সম্রাতি পাটনার যে দরবার হয়, তা। তে লেফটেনেন্ট গবর্নর তত্রতা সঙ্গীত লে। দিগকে বলিয়াছেন শ্লোকের উৎসাহ না। লেগোন গবর্নমেন্ট কোন দেশের বঙ্গম না। করিতে পারেন না। আপনাদিগে যদি নি। বিদ্যা শিক্ষা না করেন, ও নিজ নিজ সহান দিগকে তাহা না করান তাহা হইলে গবর্নমেন্টের কালেজ ও স্কুল স্থাপন করা সমর্থক। উক্তর ভারাক্রান্ত কাগ্যের উপায় না হইলে গবর্নমেন্টের তাহা প্রদান করিবার উক্ত প্র। দাশ নিকল কলেজ সাধারণ বিচারালয়ে পা। শের প্রতি বাদ হইলে কাজ হইবে না। স্ত। সর্ব সাধারণের ধর্মনীতি জ্ঞান জারী ও। র নিবারণ করিতে হইবে। আমি তা। ও আপনাদিগকে এবিসয় গুলি বিবেচনা।

বিসয়ে মত জানিতে চাই না তাহা যথেষ্টকম। সম্রাণ হইয়াছে। অন্য কিছুই অজাব থাকি। লে ও আপনাদিগের স্বার্থ ইহার প্রতিফ। হইবে। বীভন সাহেব স্বার্থ কথাই নাহিয়া। ছেন। আপনাদিগের কাজ আপনাদিগে না করি। লে স্বখন সে কাজের সম্যক উদ্ভতি হয় না। কিন্তু যতদিন সে কাজটি অবশ্য সর্বব্য বলি। এদেশীয় দিগের বোধ না হইতেছে, ততদি। গবর্নমেন্টে নিশ্চিত হইতে পারেন না।

দিল্লীগেজেট বলেন, ১৫ টি কেক্সার। লিগিড পণ্যস্তু বা পৌর খকট চলিবে। আলাহাবাদ গেজেট বলেন, রেটলওয়ে। কর্মচারীরা বিনা মূল্যে বাণীর শকটে বাইবা। স্বত্বহীনে বঞ্চিত হইতেছেন। কোম্পানির কা। বা ব্যক্তিরকে অন্য কোন কারণে তাহাদিগ। কে সিনামুল্যে বাইবে দেওয়া হইবে না। ক। চারিদিগের পক্ষে।

কিনিক বলেন ইনকম ট্যাকের আসে। দিগের পর উঠিয়া যাওয়াতে গবর্নমেন্টে উ। হাদিগকে পূর্বকার পক্ষে কিবিদ্যা বাইবার। জা দেন। কিন্তু অনেকের পূর্ণ পদ ব্যব। ক্ষেপ ইপনকে উঠিয়া যাওয়াতে তাহা। বসিয়া আছেন। এক্ষণে গবর্নমেন্ট কি প্র। রে তাহাদিগের কতি পূরণ করিবেন তা। বিবেচিত হইতেছে। আপনাদিগের মতে। হাদিগকে কত কোন কর্ম দেওয়া কর্তব্য। যে কয়েক মাস তাহারা বসিয়া আ। তাহারা তাহার বেতন পাইতে পারেন, তবে যাঁহারা এককালে কর্ম হইতে অবস্র হ। হইতেছেন তাহাদিগকে পেনশনের বো। হইলে পেনশন নচে। ছা মাসের বেতন প। আর স্বসং দেওয়া কর্তব্য।

হিন্দুপেট্রিয়ার্ট বলেন রাজকুমার গো। ম। নহমেন্দর অন্য র মিনাকরিতে টেলি। ন। সম্পাদকের নামে প্রকাশিত বিচারালয়ে না।

২২ এম এম মকলবার।

ইংলিসমেন বলেন বোম্বাই বিপবিত্র। রে। সংস্কৃত ও লাতিন শিক্ষাদানের প্রস্তাব। বাছে।

তিনি আরও বলেন রাজপুতনার সব। দিগের বিরোধ উপস্থিত হওয়াতে বি। ই। মাকায় গবর্নমেন্ট একদল অধ্যাপকী ই। ন্য। প্রেরণ করিয়াছেন। দাবধান হওয়া সর্ব। তা। বে বিবেচ্য।

তিনি আরও বলেন জাহঙ্গিরি মাসে। ম। খ্যে কলিকাতার ১০০০০০০ টাকা আ। যা। ছে তদ্বধ্যে ১০০০০০ টাকা অন্যান্য।

তিনি আরও বলেন ১৮৫৮ অব্দে। হোহিরা জায়গার। বাদে খজ হইয়াছে। প্রমাণ হওয়াতে তত্রতা বিচারপতি তা। বাহি। গের বাণীবিন দীপান্তরিত করিয়াছেন।

দিল্লীগেজেট বলে বড়কলে একর। কসিয়া প্রবেশ করিয়া বৃষ্ট আরও করিয়াছে। গবর্নমেন্টের একদল টেনা যাওয়াতে তাহা। রা পলায়ন করিয়াছিল কিন্তু আবার সেইরূপ। উপদ্রব আরও হইয়াছে।

কিনিক বলেন রূপপুরের রাজা এত দিন। গবর্নমেন্টের অধীনে ছিলেন, এক্ষণে স্বাধী। হইয়া স্বদেশ গমনে অগ্রযাত্রা পাইয়াছেন। বড়দিন না তাহার বয়ঃপরিণাম ও স্ব। র্ণিতা না হয় তত দিন এক জন কার্যক্ষম ক। র্ণ চারী রাখা হইবে স্থির হইয়াছে। মুরশিদাবাদের এক জন ডেপুটি মাসিষ্ট্রেট। মাসিক ২০০ শত টাকা বেতনে এক। নিযুক্ত হইবেন।

হরকরা বলেন সি এম জাকন সাহেব। ইংলণ্ডে গমন করিয়াছেন এবং লেডি। তাহার সঙ্গে নিযুক্ত হইয়া নীগ্রট এখানে। আসিবেন।

লাহোর ক্রনিকেল বলেন ৩১ এ জাহঙ্গি। রি জলপরে তরকার খজ হইয়া গিয়াছে। এমন কি রকের পত্র সমুদে পথ রহ। য়াছিল।

রোসডমিলো নামে বিবি এক রজনীকানুলী। যের নামে এই বলিয়া অভিযোগ করে যে। এই ব্যক্তি আগার সাল ফুরি করিয়াছে কিন্তু। কানুলী সী এলিল আধিপাচ আমার পরস। পাইব বলিয়া গল কাড়িয়া লইয়াছিল। তা। হাতে মককমা প্রদান হইয়াছে।

৩-এম বখবার।

কিনিক বলেন বালগা। মপটনকে গবর্নর। কাশীহইতে আলিপুরে প্রত্যর্পণ করিয়াছেন।

টাইমস অব ইন্ডিয়া বলেন, তত্রতা এলদি। নিটোন কালেজ ও বিশ্ববিদ্যালয়ের বাটী নি। র্ণাণ প্রস্তাব হইতেছে। অনেক দিন হইল। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের বাটী নির্মাণ প্র। ত্তাব হইয়া তাহা নিবিয়া গিয়াছে।

হরকরা বলেন পাতিয়ালায় হুতন মহারাজ। তাহারদিগের প্রাণ্ডীর অব উত্তিয়া উপাধি। চিন গবর্নমেন্টে প্রত্যর্পণ করিয়াছেন।

হাওলদার কালীচরণ আসামের অন্তর্গ। ত বড়পোখার গ্রামে এক দল নানার সহিত। বৃহ কালে বিবেশ সাধন প্রদর্শন করাতে। তাহাকে তৃতীয় শ্রেণীর সম্মান চিক দেওয়া। হইয়াছে।

পারস্যদেশ জাশন। সম্যকতর হইতেছে। মাদুদ না চিহরণ হইতে লণ্ডনে দূত হইয়া। গমন করিতেছেন। বাণিজ্য সংক্রান্ত সমি।



সেই তাহাঙ্গিরের প্রকৃত : তৎক্ষণাতঃই হই  
রাছেন :

হরকর। তাই 'ন জুবদিগকে গালি দিত।  
একটা শ্রমীর 'লিখিয়াছেন। আগামি বারে অ.ম  
স। এশ্বরে আগামি গর আঁতশীর ব্যস্তক  
রিব।

বীজনসারের বাজান, গবর্নমেন্টের সেক্রেটারি  
বিদগের প্র'ত এই আদেশ করিয়াছেন, তাহা-  
কাইখান প্রধানেয় বিজান-সারের জজ দিগকে

পূন্য দি লিখবেন, এখন বেন সম্মতিক্রম  
সহকারে লিখুন। আরও বেন করিতাম, অন্য  
ব্যক্তিরা রাজসম্পর্ক হইলেই উদ্ধৃত হইত।  
সেইকরে লিখিত হইত। বাণেশ্বর করে তাহা নয়।  
রাজসম্পর্ক বিহীন ব্যক্তিদিগেরও চিত্রকে দিক্ত

কবিরা জ্বল। এই 'মিড'ই আমার, মচরাচর দে  
থতে পাই মকমল আদামত সতি মন্থাঙ্ক বা  
জ্বিকের লিখির। খাচেন "তো নাকলেখা বা  
তুমি জ্বালতে জ্বির হইয়া" ইত্যাদি। বীড়-  
লাহের এই অবকাশে এ গিথগেও কিছু মনো-  
এ ন' করেন কেন?

ইউরোপের অধিকাংশ দেশে, পর্বতের স্রোতের  
একদিন কালীতে গান করিয়া আসিয়াছিল। গান  
করিয়াছেন। পর্বতের তথ্য ইউরোপের  
যা ১০ টি তথ্য ইউরোপের গিয়াছেন : সে  
থানে কিছুদিন থাকিয়া বাক্য আশীর্বাদ  
করিয়াছেন।

ট. ইমাম আব ই'ঈদ, বয়েন, মস্জিদুল হুসন,  
সিংহাবিল্লাহে সবাহন জিঞ্জলের কন্যার জা  
একক করিলে:

৩২. কাকদ্বন্দ্ব শব্দবাহ  
কিনিক বসেন শরৎকাল কট্টাটে বিলম্ব  
বিধি এক করিষ্যৎ নিবেশ বিবরক পদ্য লিখিয়া-  
ছিলেন কলিয়া উৎসাহবান্ধু ভাবত বীর বন্ধু  
সরস্বতী লয়ে সর্ব সৌন্দর্য্য কবি এবং তিনাত  
শ্রদ্ধতি আমাকে তাহা কখনাও এতাদৃশ করি-  
য়াছেন। পক্ষপাত খুনা স্বাভাবিক ব্যক্তিমাত্রেই  
প্রকাশ করিবেন সন্দেহ নাই।

আলাহাবাদ :—কট বেলন পৰ্বত জোনে-  
ল তথ্য উল্লেখিত মতে, উক্ত বাবাক নির্মাণ  
কাজে মনসম কবিতা গিয়াছেন বেঙ্গল কায়  
দেবিবাব অভিযুক্ত ছিল কিন্তু সমগ্রাভ্যে ত  
মঙ্গল হয় নাই।

উক্ত পণ্ডিত আরো বলেন কর্ণেল ডিকেন  
সেন মহাশয় খাল নিষ্কাশনের যে প্রস্তাব করিয়া-  
ছিলেন সন্থা কর্তৃক কটন ও লেভিগু ডাউন  
তে গিয়াছিল।

আমোখাংগেলেট বসেন বাঙ্গপুতমার অশ-  
ক লেপে পড় সজ্জাৎ লক্ষ্যেতে অনিচ্ছা-  
লেন পাবে কাশীতে গবীর জেনবলের পি-  
সাক। কহিতে পিতাছেন।

সমাপ্তাব্য হিম্মাহানি বলেন ১০ ই প্রধানে  
 নীতি সর্ব সময়ে সীতাপুবে গিয়াছেন, এবং  
 সেখা হইতে গজর ভেদবলেন।

উক্ত পত্র আবেদন করেন সেটকর কালেক্টর মেধনেন্দ্র সন্তান এবেশ কসান্তে তত্ত্বা হুইয়ে। অগমান বোধ করিয়া ইতিপূর্বে কালেক্টর পরি-  
ত্যাগ করেন। সম্রাতি তাৎপা তিটোরিয়া নামে একটি কালেক্টর পদ পদ করিয়াছেন।

আর তিন বৎসর অতীত টকল বৈফল্য টা  
একটি ইংলিজ বাক্স। বিদ্যালয় স্থাপিত হ-  
ইয়াছে। গণপরিষদ ১৩ দিনের পর অগ্রকুল হই  
তাহার মাসিক ৩৫ টাকা সাহায্য প্রদান  
করিতেছেন।

উক্ত পত্র আবেদন করেন মহারাজ ম'নসি  
খত কলা লক্ষ্যে পৌছিয়াছেন তথা হইতে গণ  
পরিষদের মেম্বার মতিত সাফাৎ মাম স কানপ-  
দে পাইবেন।

দিল্লীপেজেট বলেন কাপ্তেন আবদুল ক  
হ'তে পণ্ডিত হইয়া ৩৪টির মধ্যে কবাল  
কালে পণ্ডিত হইয়াছেন। ও লেড আবদুল  
আবদুল আদিত হইয়াছেন কিন্তু তাহা আ  
পদ

—৩৩—

### ইউরোপীয় সমাচ'ব।

লন্ডন ১৯ এ অক্টোবর। একপা কিংডমী  
৫ লাভ'পার্মেন্ট, সব ট'বলস উড ও ইলিস,  
মক'ম ব'লস, ওয়েট ওয়ার্থ, পোমোটি এবং  
ক'ল হো'ব বাউট এট ক'র পাক্তিকে পৌর  
প্রদানার্থে অগ্রদেব। করিয়াছেন। প্রিগেডি  
জেনে'রল ট্রা'ন সাহেব চাঁনলেন্ড মেন  
সহেব 'সি'ক হইয়াছেন। সব ট'বলস উড  
হালফে ট'বলস ও টুলার এবং একটি  
প'ড ক'র হইয়াছেন। মনিটর বলেন আবেদিকা  
১১টি ২২৭ হইয়াছে। অবজারবন বলেন  
মহা'জী হইয়া পদার্থ আ'মরিকার মতি  
৩৭ ব'ল হইয়াছেন এবং যে জনতা হয় তা  
৫৫। আবেদিকা উড সাহেব ট'বলস, ১৮  
ম' ও হুই মদগানেন এক'সি'নালি ও লুইস-  
ত ল' মদগানেন ল'লয়ে ভ'ল স'মি'ক মে-  
'ল'ন ব'গের দু'ল হ'ল স'মি'ক ৫০০ ১১ অ'ব  
৫০০ ম'ট হইয়াছে এবং ১১০ ১২০০  
লাক বিলি হইয়াছে।

ল'ল'হ'ত জাতি ও ক'ল'ন' ক'ল'ক ম-  
ন'ব'ল'ক'k'  
স'মি'ক ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'

এবং অনেক আ'ক'স'র আপন আপন পদ প  
মি'ত্যাগ করিয়াছেন। ও'ইয়ার এ'ডিনি'ক  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'k'

—৩৪—

### ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা।

রূপার ১১ই ফেব্রুয়ারি।

অনরোবল হাবিটন সাহেব গবর্নমেন্টের  
বাক্স বিবরণ আটন সংশোধন করবার বিলে  
সিলেট কমিটি প্রদত্ত রিপোর্ট প্রদান করিলেন  
এবং মিসরুর মেলাব তত্ত্বাবধি মেম্বা ও নিত  
পুত্র সাধাবধিনিয়মাদীন করবার বিলে সিলেট  
কমিটির রিপোর্ট সভায় প্রদান করিলেন।

অনরোবল মেইন সাহেব সিল্পপুর অঞ্চতির  
মিউনিসিপাল কমিশনের দিগের সময় হুজি করি-  
বার বিল সভায় উপস্থিত করিলেন। তিনি আবও  
অপরাধী ব্যক্তিদিগকে হুজিবা'র বা সাধারণ  
মেলা বন্ধ করিতে প'বিবার বিবরণ বে'বাইয়েব  
প্রধান ম'ল'ক'ক'ক'ক'ক'k'  
বিবরণ দিগের ক'ল'ক'k'  
ক'ল'ক'k'  
ক'ল'ক'k'

অনরোবল হাবিটন সাহেব বলিলেন এদে-  
শীয় ব'ল'ক'ক'ক'k'  
ক'ল'ক'k'  
ক'ল'ক'k'  
ক'ল'ক'k'

অনরোবল মেইন সাহেব বলিলেন দীর্ঘজি-  
ও প্রদেশের বিচার প'লী সংশোধন করবার  
বিলে সিলেট কমিটি যে রিপোর্ট করিয়াছেন,  
তাহা এক্ষণে বিবেচিত হইক। অনন্তর উহা  
সংশোধিত হইয়া বিধিবদ্ধ হইল।

### গবর্নমেন্ট বিজ্ঞা

বালগাভেশ্বর সেন্টমেন্টসকলেজ  
আদেশাদ্যসারী নিয়োগ।

২১এ জাহুয়ারি—বাবু কুসুম বাহাদুর  
পাইশালার এডিসনাল ইনস্পেক্টর হইবেন।

৩১এ জাহুয়ারি—বাবু আব্দুল বেহাউ  
১৮৩৩ অ'ক'ব ১৫ আইনের অনুসারে ক'ল'ক'k'  
তাপের ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের এডিনি'ক

৩৩ অ'ক'ব ৯ নিয়মাদ্যসারে তথাকার ডেপু  
কালেক্টর হইবেন এবং বালেব'হে' ব'ল'ক'k'  
১৮৩১ অ'ক'ব ২৫ আইনের ২২ ধারা অনুসারে  
তথাকার ২২ জেণার অধীন মাজিস্ট্রেটের ক'ল'ক'k'  
তা পাইবেন।

৪১এ জাহুয়ারি—পাইশালার ছোট আদালতের  
জজ, ডবলিউ, রাইট সাহেব কিংবিনের  
এ মেলাব মালিক মদ্যবেজের এডিনি'ক  
জিটর হইবেন।

ডবলিউ ডিগাট সাহেব প্রেসিডেন্সি ক'ল'ক'k'  
জের ইতিহাসের ও বার্তাশাস্ত্রের সহকারী  
ধ্যাপক হইবেন।

দক্ষিণ বিভাগের রেভিনি  
বি, আর্ট সাহেব ১৮৩৩ সালের ৯ মি'ল'ক'  
রে ডেপুটি কালেক্টরের কমতা প্রাপ্ত হইবে  
গড়বেতার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডে  
কালেক্টর বাবু কমলাকান্ত বশাখ ব'ল'ক'k'  
খেহারে গিয়া মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ কমতা পাই  
বেন।

গড়বেতার বিভাগের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট  
ডেপুটি কালেক্টর সি, ডি, ডিবেটন সাহেব ব'ল'k'  
হুজা ও বেহিনীপুরের মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ  
মতা পাইবেন।

মৌলবী ওয়াহি উল্লা ১৮৩৩ অ'ক'ব ১৫  
আইন অনুসারে বীরভূমের এডিনি'ক মাজি-  
ক্টেট ও ১৮৩৩ সালের ৯ম নিয়মাদ্যসারে  
তথাকার ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং এই মেলাব  
মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ কমতা পাইবেন।

পূর্ণিয়ার এডিনি'ক ডেপুটি কালেক্টর মৌল-  
বী আজিমুদ্দিন মহম্মদ তাকার ব'ল'ক'k'  
হইয়াছেন।

মৌলবী অনোরুদ্দিন মহম্মদ পূর্ণিয়ার ডে-  
পুটি কালেক্টরের এডিনি'ক হইবেন।

ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর ডেব  
হিউম সাহেব ১৮৩১ অ'ক'ব ২৫ আইনের ২২  
ধারাদ্যসারে ও পরগণার ১ম জেণার অধীন  
মাজিস্ট্রেটের কমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন।



ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মো  
রী সৈয়দ আলি হোসেন, উক্ত আইন অন্  
বেষণের ১ম প্রণীত অধীন মাজিস্ট্রেটের  
যত্ন পাইবেন ।

১ ই কেরারি উক্ত কাছাড়ের এডিনিথি সহ  
রী কমিসনর লেপটেনেন্ট ডাবলিউ সি এস স্কা  
সিমাতে এই জেলা মাজিস্ট্রেট ও সদর আমিন  
নর কনফারেন্স হইয়াছেন ।

১৩ই মৌলবী আবদুল আলিম অফিসি  
কাল পর্যন্ত বাবু গোবিন্দচন্দ্র বসু ১৮৪৩ অব্দে  
১০ আইন অন্বেষণে ত্রিপুরার মাজিস্ট্রেটের  
এডিনিথি এবং ১৯৩৩ অব্দে ৯ম নিয়মাবলী  
বে তথাকার ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং যত  
দিন অন্যকোন অফিসি না হয় তত দিন  
১৮৬১ শালের ২৫ আইনের ২২ ধারার অন্বে  
ষণে তথাকার ২য় প্রণীত অধীন মাজিস্ট্রেটের  
কাৰ্য্য করিবেন ।

এইচ ই ককস সাহেব রাজসাহির ডাক্তারের  
এডিনিথি হইবেন ।

প্রেরিত ।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয়েষু ।

নিবেদন, যত পনিবার বাগ্মিতে আমতা নি  
নী শ্রীযুক্ত মহেশচন্দ্র বিশ্বাসের পালাবাটীর  
লানের দ্বারের ও সিঁড়ির দুই দ্বারের কবচের  
অবস্থা ভাঙ্গিয়া লোহার সিঁড়ির চাপি আঁচ  
ভগ্ন করিবার অস্ত্র ও যন্ত্র প্রস্তুত একদল দিবা  
সন্টার আবেশ করিয়া উপর দ্বারের ক  
বাটের সুরসাতাধিার উপকরণ নিকট প্রত  
ীসীর নিয়ন্ত্রণ হইবার চোবের। ভয়ে যত্নাদি  
কলিয়া পলায়ন করিয়াছে। পবে উক্তবিধাস  
করি স্থান এই সমস্ত পাটয়া আপন পুত্রের  
ক। এই সমস্ত নিকট থানায় জানাইবার  
কাগজি শুভাগমন পুত্রক দুটি পাত করিয়া এই  
কাল বস্ত্রাদি থানায় লইয়া গিয়াছেন, থানায়  
থাকিব অবস্থা ভাঙ্গ। তিন অন্য উপকার হয় নাই  
এই কোটা কাটা ও আটরন চৌকি কাটা যন্ত্র  
দেখিয়া সিঁদালভোবের পিতা ও কখন দেখেন নাই।  
থান। দাবদা মহালয় আর কিছুদিন থাকিলে  
এইরূপ ঘটনায় অনেক যন্ত্র দুটিগোচর হই বক  
আমার উনি মালিকের বাটীতে একটা সিঁদ চুবি  
হইয়া গিয়াছে সহ্য নিধা। পুত্র। নেন। মহালয়  
নিধিহীন দেখেইরি। উপভোগ  
বিক্রমকালে হইলে প্রত্যয় হইতে পারি  
না। তবে কোন একটা ইচ্ছা হইয়া জারির

আটরন বলবৎ থাকিতেও গোপনে ২ যবে বলে  
একপ একালাদি জারি হইয়া একতরকা ডিকী  
হইয়া অনেকের সন্ধান ( ১ ) হইতেছে ।

অন্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয়েষু ।

সম্পাদক মহাশয়েষু! অত্যন্ত পবিত্রাণিত হই  
সান্নিহ লিখিত প্রস্তাবী আপনকার সমীপে  
প্রবেশ করিতেছি । অতঃপূর্ব করিয়া ভবলীর  
কুবনবিধাঃ সোমপ্রকাশে প্রকাশ করত পাঠ  
কগণের গোচরীকৃত করিল। নিত্য অস্ত্রযৌ  
চট্টব। মতঃপ্র। বস্ত্রাদিমাঃদি অস্ত্র পবর্নমেট  
ইকরেজী, সিঁদালগৈব পধান শিককের কর্হা  
কয়ে অনব।নিত। প্রতী।তবতা ও কুসংক  
ব-নিবন্ধন-প্রত। ৩-দম্ভে-ন বিজ্ঞ।নক। স। টি  
না। প।ন। নিম্নাবল প্রাণ করিয়া আসিত  
ছি প্রথমতঃ তাহ। নিত্য অস্ত্রযৌ-অলীক  
বলিয়া প্রতীতি ছিল। সুতরাং তাহার তথ্য  
কুসংকালে প্রবৃত্ত হইতেও কোন কাশেই প্রত  
হয় নাই। ক্রমে ক্রমে যখন দেশলায় প্রা  
কান প্রায় সমস্ত কৃতবিদ্য। লোকেই একবা  
হইয়া মান। কালে কেবল এই বিবরণই অন্বে  
লন করিয়া পাবনার নিত্য অস্ত্রযৌ বিবেচনা  
যৎপরোয়ান্তি পবিত্রাণিত হইতেছেন ও ভুয়ে  
ভুয়ে দীর্ঘ নিশ্বাস পরিত্যাগ করিতেছেন, ত  
খন আর তাহ। শ্রুতক বলিয়া উপেক্ষা করিতে  
পারিলাম না। তদবধি কয়েক মাস সাংলিখ প্র  
বৃত্ত মতঃপ্র। একান্ত মনে কেবল এই বিবরণই  
বাংবাংগুসংকালে প্রবৃত্ত হইল। মহাশয়েষু ।  
অনুসন্ধান স্বাঃবাঃ স্ববগত হইয়া প্রতী  
তে নিশ্চয় প্রতীত হইতেছে, উক্ত মহাশয়েষু।  
নেব উৎকর্ষ সম্পাদনর এক মুহূর্ত অস্ত্রযৌ  
হইয়াছেন এবং এই দুর্ভাগ্য অস্ত্রযৌ অন্বে  
কিতে অসমর্থ হইয়া প বনাস্থতী অন্বেষণ  
রী বিমোহন্যসী মনঃবগণ নিবন্ধন অস্ত্রযৌ  
নয় অনিভূত হইলেও তদীয় ক্রম বেননা। প  
কঃপ্র। প্রকাশকপে ৩২প্রতি বিধানার্থ প্রত  
বিবরণে হস্তাক্ষণ করিতে সাহসী চেষ্টেছেন  
না। বাস্তবিক সম্পাদক প্রদত্ত। এই মহানিষ্ঠক  
প্রবৃত্ত বিবরণ প্রতীকারে আপনাদি। ( সম্পাদ  
করা ) দেখনী ধারণন করিলে এখানকার  
কলী লেন ক্রমট বক পার না। এজিলাতে  
আমার গতি শুভাঃ এই ক্রমের দ্বারা মান।

( ১ ) থানা দা। ইন্তেহাদ জাবির নিয়ম  
হইলে এই অনিকে নিবন্ধনের সমধিক সম্ভাবনা  
থাকে। স

প্রকার উপকারের আশা বাধি। সম্প্রতি  
নের খোপা ছববতা হইয়াছে, তদন্তঃ কে  
রূপেই নিশ্চিত ও নিশ্চেষ্ট থাকিতে ইচ্ছা  
তেছে না। তাহার দ্বববতঃ কারণ আপনাদি  
পের পোচর করিয়া ৩২প্রতীকারে দ্বববান  
বাব নিমিত্ত অন্বেষণ সমস্ত প্রাধান মনোর  
এক বাক্য আমাকে পুনঃ পুনঃ উপদেশ প্রদ  
করিতেছে। এক প্রাচীন পঞ্জিকা। বলিয়া  
হইছেন " অসম্ভাব্য ন বস্ত্রাঃ প্রত্যক্ষঃ  
বৃশতে " কেবল এই বাক্যটি স্মরণ করিয়া এ  
ল পর্যন্ত তাহা করি নাই। কারণ ছেড মাই  
এক জন কৃতবিদ্য। লোক। তিনি কুসংক  
পবত হইয়া, মতঃপ্রাঃ প্রতীকৃতকঃপ্রব  
কর্হা কর্হে প্রতী। প্রদর্শন করেন, আপন  
৩৩ নিত্য অস্ত্রযৌ অন্বেষণ বলিয়া  
শাই তত্তঃ সমাজে গণিত চেষ্টে গাঃ। কিন্তু  
অস্ত্রযৌগৈব এবং চাই ৩২প্রতি প্রাধান পনি  
কে, পাবনার ২ বাদদাঃ ও পবতঃপ্রব  
নগের কথাক্রম নকঃপ্র। অন্তঃ ৩২প্রতি  
১০৩ চপ্রতি প। প। কৃত, কুসংকাল  
হিঁটৌ বলিয়া দাব পন নাই সমাজে ৩২প্র  
নিত হইয়াছেন। তদন্তঃ আমাঃ সেই যম  
যা সম্প্র সমাজ নিবন্ধিত। চট্টব। ৩। এক  
আঃ ৩২প্রতি প। করিতে কোন পব  
ইতেছে না। বিশেষতঃ সম্প্রতি প্রতী  
লগী, কেবল। পাবনার কো, এই প  
এক মাত্র প্রাধান শিকারের প্রবৃত্ত  
এবং বিনটে প্রায় ৩২প্রতি অস্ত্রযৌ  
আঃ কাল বিলম্ব। সিঁদাল অস্ত্রযৌ  
মায় নিশ্বাস চিহ্ন প্রবৃত্ত হইয়া অবিবল  
বর্গন করিতে প্রবৃত্ত হইল। তাহাঃ কি  
ব অস্ত্র অন্বেষণ চেষ্টা মতঃপ্রাঃ  
উৎকর্ষঃ দাব্য যে মহা কঃপ্রাঃ  
কবেন, প্রাঃ শিকার তাঃপ্রাঃ  
হইয়া দাঁড়ান। প্রাক্কাম প্রবণ  
শরীরে কটক প্রবেশ কলে। শিকার  
কে পবতঃ ও সমাজচুঃ করিবেন; কিন্তু  
জক, বিদ্য। লগৈব সমাজচুঃপ্রবণ। উপ  
হইবে, কিন্তু বিবরণে প্রচাঃপ্রাঃ  
কলপ্রবৃত্ত ও অপাতঃপ্রবৃত্ত হইবেন; এবং  
পেট ন, প্রাঃপ্রাঃ তাঃপ্রাঃ মতঃপ্রাঃ  
লগী হইয়া কেবল এক মাত্র তাঃপ্রাঃ  
প্রীকার করিবেন, তাঃপ্রাঃ নিবন্ধিত এই  
কালকোপ করাই তাঃপ্রাঃ এক প্রাধান নিত  
হইয়াছে। বাহ। চট্টক এই সকল বিবরণ  
হেও আমাঃ তত্তঃ বেদিতঃ অস্ত্রযৌ  
তাব না। শিকার প্রবণ তাঃপ্রাঃ  
একপ প্রাঃ এক প্রবন্ধন করিলে, শিকার

দেব দিতে না পারেন, সর্বপ্রধান দেশ গণনা-  
কালে আমাদিগের দেশ দ্বিতীয় বিন-  
গিত না হয়, সর্বদা আমাদিগের এই বাসনা।  
এই প্রত্যাশাপূরণ হইয়াই আমরা স্বদেশের  
লোকের অম এমাদানি দর্শন করিলেই তাঁহা  
প্রকাশ করিয়া তৎসংশোধন চেষ্টা পাই, কাহা-  
কে অপদস্থ করা, অপদা কাহার অন্তিষ্ঠাচরণ  
করা আমাদিগের অতিশ্রেয় নহে। তাঁহু অম-  
না অতিশয়ের আমাদিগের হৃদয়ে স্থান পাই-  
বার কোন কারণ দেখা যাইতেছে না। লোক  
সার্থে সমস্ত বাধাত মুক্তাবনা না হেতিলে কখন  
কাহার অনিষ্ট করেনা। ব্রাহ্মদিগের হইতে  
আমাদিগের কি সার্থবাধাত মুক্তাবনা আছে ?  
নি তাঁহাবা বলেন, আমরা তাঁহাদিক্রমে অম-  
দস্থ কবিতা বশোলাভের অর্থী হইরাছি, তহুত-  
বে আমাদিগের বক্তব্য এই, আমাদিগের সে  
প্রার্থনা নাই, কেবল তাঁহাদিগের বিষয়ে কেন,  
তাহারা ভাল করিয়া পরীক্ষা করিয়া দেখিবেন,  
আমাদিগের কোন বিষয়েই বশোলাভ প্রার্থনা  
নাই। সে প্রার্থনা থাকিলে তাঁহারা আমাদিগ-  
কে সমস্ত প্রকারে হাননমহ। আড়ম্বরের সহিত  
সম্মুখে উপস্থিত দেখিতে পাইতেন। সর্ব-  
দা অপরিচ্ছাদ রূপে অবস্থান করাই আমাদি-  
গের অভিপ্রেত। আমরা যে কিছু কাজ করি  
কর্তব্য বোধে ও দেশের উন্নতি কাহনাতেই ক-  
রি, যদি, আমাদিগের তৃতীয় উদ্দেশ্য নাই।



ব যদি ত্রাহাঙ্গিনের জাতনাবে ইচ্ছাশূন্যকেই  
একরূপ হইয়া থাকে, তবে যখন বাটীতে ত্রাহা-  
ঙ্গিন কেহ ছিল না, তখন কেই বা পত্রপ্রেরক  
দীন বাবুকে “প্রিয়তম” সম্বোধনে পূজার লং-  
বাস দিতে আসিবে। এরূপ ক্ষেত্রে মিথ্যা অপবাদ  
বটনা কবিয়া কেশব বাবুর নির্মল অকপট চরিত্র  
হে মোনা-রোপ করিবার অভিসন্ধি ত্রিমা আর  
কিছুই প্রতীয়মান হয় না। অনেক ভাবিয়া দীন  
বাবু বৈরনির্বাতনের উত্তম উপায় আবিষ্কৃত  
করিয়াছেন। এই তো চাই। নানা স্থানে নানা  
প্রকার আবিষ্কৃত হইতেছে, বাঙ্গলাদেশে কি  
কোন আবিষ্কৃত হইবে না।

দীন বাবু লিখিয়াছেন যে “সেখানে (কে-  
শব বাবুর বাটীতে) ‘আমু দেও’ ‘দেও’ ‘পা-  
র্থনা’ ‘শুনিলাম’” কিন্তু “জগদীশ্বর” পুস্তক  
খানিতে তো ইহার কিছু দিগন্তও দূরে উঠে  
না। যদি মুদ্রাক্ষরের সময় দেবেজ বাবু বা কে-  
শব বাবু শঠত, করিয়া থাকেন, ভাল নীতি।  
জাতকর্ণ উপস্থিত ছিলেন, তাঁহারি ও উ-  
ভায় কিছুই সন্দেহ নহে। “আর্পণং ভবতঃ”  
এক স্থানে আছে “তিনি (জগদীশ্বর) যেমন  
সব— এই শব্দকে আপন ক্রোড়ে রক্ষা  
করিয়াছিলেন, ও তৎপরে যেমন স্বয়ং খাতি  
হইয়া ইহার প্রথম ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়াছিলেন,  
তেমনি তিনি সত্যের মাত্র ইহাকে রক্ষণা রক্ষা  
করুন, ইহাকে ক্রমে জী, সৌন্দর্য্য ও সাধুত্বে বি-  
ভূষিত করুন”। বোধ হয় দীন বাবু ইহাকেই  
“আমু দেও জী দেও” লক্ষ্য বাধ্য করিয়াছে-  
ন। কি কোতের বিবরণ! প্রিয়তম! বিবেচনা  
করিয়া দেখুন, সেই মঙ্গলময়ের মঙ্গল কার্য্য দে-  
খিয়া যখন প্রার্থনাকারী মনোহার উদ্ভাটিত  
করিয়া প্রার্থনা করেন, তখন একপা প্রার্থন-  
সহজে নির্গত হয় কি না নৃপকটীই দেখিতেছি  
যে জগদীশ্বর সকলকেই রক্ষণ। স্রেষ্ঠতরে রক্ষা  
করিতেছেন, এবং “তাহাঙ্গিনের মঙ্গল সাধনে  
যজ্ঞধাম রহিয়াছেন যজ্ঞত তাহাঙ্গের সাধুতা-  
গেব হুজি কর তাহাই বাহ্য, কবিতেছেন, তখন  
যে তিনি শব্দকে রক্ষা করিছেন ও তাহাকে  
জীবাশু করিয়া তাহার সাধুতাব প্রসূর করিবেন  
তাঁহার আর সন্দেহ কি? শব্দীও সত্যে সত্যে  
যতই প্রসূর কর যতই তত উন্নত ও তত ধর্ম প-  
থে অগ্রসর হইতে সক্ষম হয়। রূপ, অর্থ, বিনা,  
অর্থ, পণ্য, ব্যক্তি বস্তু রূপ অধ্যবসায়শীল হইয়া  
বন্দগণে অগ্রসর হইতে পারেন, ত্রিটিও বলি-  
ত, সর্বাঙ্গ সৌভব বিশিষ্ট ব্যক্তি চেতন করিলে  
তাহা অলঙ্কার অধিক হয় অগ্রসর হইতে পা-

বিবেচনা, ইহা তো এক প্রকার নির্ধারিতই  
আছে, তবে তখন ও প্রকার প্রার্থনার স্থান  
নির্ধারিত। তাহাঙ্গিনের নিকট “আর্পণ-  
ং, রক্ষাই” “জগদীশ্বর, যে তাহাঙ্গিনের  
অপ্রীতিকর হইবে তাহাঙ্গিনের জগদীশ্বর কি? কিন্তু  
তাঁহা, বলিয়াই প্রার্থনা, বিবোধনিকার মিথ্যা।  
কথ প্রার্থনা বস্তু কর্তব্য নহে। তাহা হউক একপা  
কর্ষো দীন বাবু কখন প্রার্থনা, ধর্ম হইবে না  
বসং এতদা তিনি সাধু সমাজ রক্ষিত হইবেন।  
প্রিয়তম সম্পাদক! সাধু ব্যক্তির অকপট চরিত্রে  
অকারণে হেয়রোপ দেখিয়া সুখিতান্ত্রবে  
এত মিথিলাস এজন্য বিরক্ত না হইয়া ভবনীর  
বিবাহিত সোমপ্রকাশে এই ক্ষুদ্র পত্র খানি প্র-  
কাশ করিয়া বাধিত করিবেন।

কলিকাতা } একান্তিক বাধ্য  
২ ফেব্রুয়ারি } জীবাশুসহনাকমসা

### প্রাপ্য ন্যায়

নিম্ন লিখিত মঙ্গল গ্রাহকগণের এমত  
মূল্য মাঘ মাসে নিঃশেষিত হইয়াছে।  
শ্রীযুক্ত বাবু রত্নাবনচন্দ্র বসু বর্কমান  
মণিরাশ বাসি  
“রাজা কালীপ্রসন্ন দাস রজেন্দ্র মধ্যপাঠ  
জমিদার মেদিনীপুর গড়গুণাই  
“নাটোর ‘সুপ্রকাশের সম্পাদক নাটোর  
“মোহনচন্দ্র সিকদার করিমপুর  
“শ্যামাকান্ত চৌধুরী ঢাকা  
“হ’ বড়াল সিংহ ব্রহ্মসিদ্ধাবাদ  
“হরিকৃষ্ণ মল্লিক জেলা নদীয়া মেধেরপুর  
“গোকুলনাথ বসু বহরমপুর মৈত্রাবাদ  
“জুবনমোহন চৌধুরী পূর্ব কাছাড়  
“রূপনাথায়ণ দাস গিরিটি হুগুলা  
ইংরাজী স্কুল

### প্রাপ্তমূল্য

শ্রীযুক্ত বাবু মতিলাল মৈত্র শান্তিপুর  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আনা চ পয়সা ৫ টাকা  
“ “ মোহনচন্দ্র বসু শান্তিপুর  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আনা চ পয়সা ৫ টা  
“ “ মঙ্গলাল চট্টোপাধ্যায়  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আনা চ পয়সা ৬৫০  
“ “ বাজীবনোচন রায় কলিকাতা  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ পৌর পয়সা ১০  
মঙ্গলাল স্কুল কলিকাতা

১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পয়সা ১০  
মঙ্গলাল পত্রিকা প্রথম প্রবর্তক সভা। রত্নপুর  
১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আনা চ পয়সা ৫০  
“ “ সুপারিন্টেন্ডেন্ট বঙ্গোপাধ্যায় বর্কি  
১২৬২ আনা চ হইতে অগ্রহায়ণ পয়সা ৫০  
“ “ ছাত্রকল্যাণ বসু বলীমানী  
১২৬২ কার্তিক হইতে চৈত্র পয়সা ৫

সোমপ্রকাশ সংক্রান্ত কয়েকটি  
বিশেষ নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মঙ্গলমাসে সোম  
কাগ প্রেরণ করা যায় না।  
ইহার অগ্রিম মূল্য কার্তিক ১০ এবং বর্ষা-  
নিক ৫০ টাকায় হয় মঙ্গল মাসে লওয়া যায় না।  
সাঁহার সোমপ্রকাশের মূল্য কোম্প টিকিট  
পাঠান তাঁহার এক অথবা আশ আশা অধিক  
মূল্যে ও রমীয়ের টিকিট না প্রেরণ করেন।  
যখন যিনি মঙ্গল হইতে সোমপ্রকাশের  
মূল্য পাঠাইবেন তাহা সেম বেজিউদি করিয়া  
দেন।

পূর্ব প্রাপ্ত মূল্যের কাল অতীত হইলে মূ-  
ল্য পাঠাইতে কেহ যেন অসম্মত বিলম্ব না  
করেন।

বঁহাঙ্গিনের মূল্য দিবার সময় অতীত উ-  
ঠা যাউবে, সঙ্গতমত সময় প্রতীক্ষা করিয়া  
এখানে সোমপ্রকাশে প্রচার করিয়া তাহার  
পর চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তা-  
হাতে কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া যায়  
কাগজ বন্ধ হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিঠি বেদা-  
রিং পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃতনা-  
লেজে আনাঙ্গিনের নামে চিঠি আউলে অ-  
মরা শীঘ্র পাইব।

বঁহাঙ্গিন যখন সোমপ্রকাশ পরিচালনা কবি-  
র উচ্চ হইবে চিঠি লিখিয়া না জানাইল  
তাহা প্রত্যাখ্যাত হইবে না।

কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ইচ্ছা  
কবিলে তাঁহাকে প্রথম বার প্রতি পয়সা ১০  
আনা দ্বিতীয় বার ১০ আনা তৃতীয় বার ১০  
আনা দিতে হইবে। তাহার পর ১২০ টাক  
কমিসন বাদ দেওয়া যাইবে।

মঙ্গলমাসের বঁহাঙ্গিনা সঙ্গ হইবেন, তাঁহা  
দিগের অন্তত তাকমাঙ্গিল দিতে হইবে।

এই পত্র কলিকাতার পূর্ব মঙ্গল। রেলওয়ের সো-  
নাপুর ঠেকনের হাঙ্গিণ চাকরিদাতার ঐহাঙ্গিনা  
বিদ্যাবুদ্ধির বাটীতে প্রতি সোমবার আকাশি ২৮।

# সোমপ্রকাশ

“ প্রবর্তাণাং সত্যলিঙ্গিনাং যথার্থঃ স্বরস্বতী মূলিনহরী ন নীলতা । ”

৫ তাং।  
১৫ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ১২ই ফাল্গুন। ইং ১৮৬৩। ২৩ ফেব্রুয়ারি }

মাসিক মূল্য ১ টাকা  
বার্ষিক মূল্য ১০ টাকা

সোমপ্রকাশের অবয়ব বৃদ্ধি  
সংজ্ঞাস্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবধি সোমপ্রকাশের আর এক  
নতুন হুজুং হইল। অর্থাৎ গরু বাঁহারা বাগ্গা-  
নর দুলা কান করিবেন, তাঁহাদিগকে ৫০  
পাইতে হইবে, বার্ষিক অ-  
গ্রহ মূল্য ১০ টাকা। অপরিবর্তিত রহিল  
অগ্রহের গ্রাহকদিগকে অতঃপূর্বে ডাক মাগুল  
দিতে হইবে। বার্ষিক ডাক মাগুল ৩০ টকা,  
অগ্রহ বাঁহারা দুলা প্রেরণ সংজ্ঞাস্ত চিঠি-রে  
হইবে করিয়া বন, তাঁহারা তাহার বাহ  
চাবি ৫/১০) কান পাটবেন। বাঁহারা হাত  
ডাক মাগুল দিতে অসমর্থ হইবেন, জানা  
হইবে আমাদিগের সংজ্ঞাস্ত হইলে তাঁহা-  
দিগকে মাগুল দিতে হইবে না।

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা জিলায় অতঃপাটী ২০ ফেব্রুয়ারি  
১২৬২ সনের নামে যে পত্রনি ডাকের আছে,  
তাঁহা করপত্ৰনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। বাঁহারা সেই ডাকের করপত্ৰনি লই  
কেন অথবা ক্রয় করিবার উচ্চা আছে, তিনি  
কলিকাতার ডাক নং ফিনের কোম্পানির নিক  
তে আবেদন করিলে সর্বিশেষ রাস্তা জানিতে  
পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

পোর্টফল।

অর্থাৎ অঙ্গপথে কলিকাতার নীলামার  
বাঁহারা হইতে নিম্ন।

সরকার বাঁহারা হইতে কলিকাতায় নর  
পোর্টফল হইতে যে সত্য

তারিখ অবধি হুজুং, জাহাজ, মালবোট,  
ফক, বজরা, এবং উপর যন্ত্রকের নোকা সকল  
এই হুজুং নদীতে হাজিরযোগে কলিকাতা নী-  
মা মধ্যে বাঁহারা কালীন সময়ে লাভের  
ভিত্তি আলো রাখিবেন অর্থাৎ যেখানে রা-  
খিলে দুই হইতে সাত টকা হইবে, বরাপি উচ্চ  
নিয়মের অন্যথা হয় তবে একশত টাকা  
১০০) জরিমানা দিতে হইবেক।

(১৮৬৩।

অঙ্গপথে প্রবেশের নিয়ম কর্তা  
কলিকাতা।

বিজ্ঞাপন।

সামবায়, ৬ টাকার, রাস্তা মুসিংহ, গৌর  
কবিরাজ, নিত্যানন্দ বৈরাগী, হুমায়ুন  
কট্টাচার্য প্রভৃতি প্রাচীন কবিগোলাদিগের  
উচ্চ উচ্চ গানগুলি সংগ্রহিত ও একত্রিত  
করিয়া মন্ত্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য  
১ এক টাকা মাত্র

কলিকাতা

সত্যবাজার ট্রেড ১ নং বাগী।

ক্রীতগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা বণিক উন্নয়ন এজেন্সি সোসাই-  
টির যে সকল পুস্তক, বাইবল, ডিপজিটরিভে  
ক্রীতগোপাল চট্টোপাধ্যায় ১০ টাকা ক্রয়  
স্বার্থে বিক্রয় হইত, সম্রাতি ঐ সকল পুস্তক  
কলিকাতা মিউজিয়াম এমার্সন ট্রেড ১ নং  
মিসম'কলে ক্রীতগোপাল চট্টোপাধ্যায়  
১০ টাকা

সামবায়ের যোগাযোগ

ক। কলিকাতা বাসে বিক্রয় হইবেক  
হে, মালিক  
সেইকাল

সোমপ্রকাশ

১২ই ফাল্গুন

কলিকাতার বাবদায়ক সত্যবাজার

বিবরণ হইতে হইল, যাহা  
ঠাকুরের এবং  
হাজির, যখন  
হইবে তাহা  
ডাকনা থাকে, তিনি  
লে সাধা ৪ সত্য  
তাঁহার বক্তব্য  
হইল, অথ। তাঁহার  
র উপস্থিত হইয়া  
পারিবেন। যাবদায়ক  
অবধি উহা সত্য  
শব্দার রক্ত করিয়া  
সেই দ্বারা উল্লিখিত  
হে। যখন যে বিষয়  
তাঁহার সমুদায়  
ক্রমেই শোধিত হইয়া থাকে।

বালি পত্র আমাদিগের

কর সহায় দিতে আরম্ভ  
তিনি শুনিয়াছেন, সর  
কৃত কথচারিদিগের  
রাজ কাণ্ডার সমর্পণ  
হইয়াছে



বোর সাধুর্যা ও সৌন্দর্য্য ইংলণ্ডের রাহা  
কবিতা লইলেন। গতসংখ্য হিন্দুপো  
স্টে আমরা ইংলণ্ডের একটি সভার কা  
বিবরণ পাঠ করিয়া অত্যন্ত পরিভ্রম লা  
করিয়াছি। সভা দিগের উদ্দেশ্য, মনো  
ভাব ও ভারতবর্ষের ঐতি সম্বন্ধে দুটি, এ  
গুলি আদ্যাদিগের অনির্বচনীয় হইবে  
কাবণ হইয়াছে। সম্প্রতি লণ্ডনে সর  
লরেন্স, সর ক্রেডরিক হালিডে, বঙ্ক  
নের ভূতপূর্ব কমিসনার ইলিয়ট সাহেব  
কুকনগরের মিসনারি সর সাহেব, চর্চনি  
নারি সোসাইটির সেক্রেটারি ও আর  
য়েক জন ভূতপূর্ব সিবিలిয়ান ও ভদ্র  
ক এক ব্যক্তি ইত্যাদি কাটোক্ত মিলার প্র  
বাস করিবার নিমিত্ত এক  
হিলেন। তাঁহারা সকলেই একমত  
হোজারের কহিয়াছেন, ঐ আঠে অহা  
অনিষ্টকর। যে সর জন লরেন্স, নিকি  
মলের দেবতা স্বরূপ, তিনিই গুলিগা  
এপ্রকার আইন করিলেন তা, ১৮৩৫ বিজ্ঞ  
ঘটনা ও ইংরাজদিগের নামে কলকর  
হইবে, আরো তিনি স্পষ্টাভিধানে বর্ণি  
ন নীচকর প্রভৃতি প্রজাদিগের উপরে  
আচার করেন, অতএব যা  
বিধিবদ্ধ করা আবশ্যিক হয়, তাহা নীচ  
অত্যাচারের সহায়তার জন্য না  
জাতিগণে পীড়ন হইতে রক্ষা করি  
অন্য করাই কর্তব্য। হালিডে সাহেব  
পূর্ণ রূপে ইহার পোষকতা করিয়া ব  
লেন, ১৮৩০ অব্দ অবধি ১৮৩৫ অব্দ প  
ত এই প্রকার ফৌজদারি দণ্ড বিধা  
করার ভঙ্গের আইন ছিল, কিন্তু তাহা  
করানক অত্যাচার হওয়াতে ভারতবর্ষ  
গবর্ণমেন্ট তাহা রহিত করেন। ১৮৩৫  
অব্দে ১৮৩৬ অব্দ মাসের জন্য যে  
ইন আইন, তৎকালে স্পষ্টাভিধানে  
হইয়াছিল, তাহার আইন আর হইবে না  
অতএব ১৮৩৬ অব্দে, বিলের প্র  
করিতে ভারতবর্ষে

কৃত ওজিহা তর করা হইয়াছে। অন্য  
মনা সত্যেরাও নীলকরমিগের দেব ও  
অজ্ঞানিগের নিদোষতা সিরের, সিরে  
করিয়া শেষে এক বাটো এই প্রকার করি  
লেন যে, সর চারলস উভ দুই ধার এই আ  
ইন রহিত করিয়া যথার্থ রাজনীতি তত্ত্বতা  
প্রদর্শন ও মায়ানুগত কার্য করিয়াছেন।  
অতএব তাঁহার কার্যের অনুমোদনার্থ তাঁ  
হাকে এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করা  
কর্তব্য। অনন্তর সর জন হারেল পুনরায়  
বলিলেন যদি সর চারলস উভ এ কার্য  
না করিতেন, তাহা হইলে তিনি ভারতবর্ষী  
র সেক্রেটারি হইবার বেলা হইতেন না।  
সত্যেরা সকলেই হৃদয়কণ্ঠে কহিলেন, তা  
রতবর্ষীর গবর্ণমেন্ট কর্তৃক আইনের প্রস্তা  
ব করিয়া, অতিশয় অমায়িক করিয়াছেন।  
আমাদিগের দেশের সেক্রেটারি বের  
এই শুভ সংবাদটি শুনিয়া নিশ্চিহ্ন হইয়া  
পুনরায় সুখপ্রসাদ সেবন করেন না। ক  
ট্টাভি বিস্তার এখনও অতিম কাল উপ  
স্থিত হয় নাই। ইহা লইয়া একটি ঘোরত  
র বাগ্যান হইবার সম্ভাবনা আছে। এক  
দিকে মার্কস্ট্রেটের ও ভারতবর্ষের, ত্রিহুজি  
কারি দল এ হইলসুখী টোরি দল, অন্য  
দিকে সর চারলস উভ ও হইল দল বহুপরি  
কর হইবেন। এদেশীয়দিগের কায়মনো  
বাক্যে চেষ্টা লাইয়া সর চারলস উভের  
দলের দল হুজি করা অবশ্য কর্তব্য।

—

কী

হরকরা ও প্রভঞ্জনীয় জুরি।

এক ব্যক্তি ইংলণ্ডের বিক্টোরিয়ার  
১৭ বৎসর বয়সে চেষ্টা করিয়া দুই হইলে  
কলে তাহাকে সিজাসা করিলেন, তুমি  
এ অমায়িক প্রাণ সংহার চেষ্টা করি  
ছিলে। সে অমায়িকবদনে বলিল “বিধাত  
ইহার জন্য।” এইরূপ হরকরার ভূত  
সম্পাদক কর্তৃক সত্যের ও অজ্ঞানকে  
সর করিয়া চেষ্টা লাইয়া বিধাত  
ইহার জন্য।

সম্পাদক এই পত্রীতে পদার্থ করি  
য়াছেন। সত্যের একমাত্রী জুরিদিগের  
বিষয়ে হরকরার এক ওভার নিশ্চিত হই  
য়াছে, যেহিঁহা অমায়িক বিস্মিত হইয়াছি।  
সম্পাদক এখনও তত্ত্বের নিদোষতা  
রাজ্যের, বর্ষ, সত্যের, ও রাজনীতি সংক্রান্ত  
নিদোষতার প্রস্তাব করিয়া নিবিরাজেন, “যে  
হরক (জুরি) ইংলণ্ডে জুরিগণের, তাহা তা  
রতবর্ষে হইতে পারে না; এদেশে লোক  
রা প্রকৃত জুরিগণ অজ্ঞান তিমিরে আবদ্ধ  
হইয়া আছেন, তাহা কহার সাধা কে হর  
করিবে, বরং সত্যের মায় হত্যার হইতে  
হয়; বর্ষের কোন জাতি তাহা অবস্থা হইতে  
পতিতকম, তাহা তাহা পুনরায় নের আর  
কোন সম্ভাবনা থাকে।” সম্পাদক যদি  
যথার্থ রূপে ইতিহাস পাঠ করি। থাকেন,  
তাহা হইলে একটি বিদ্যা জামিতে পারিবে  
ন, কেহ কখনই অগ্রে গালি দিয়া আ  
মোৎসর্গ লাভ করিতে পারেন নাই; তা  
রা কেবল পরাজিত জাতি কেহনকে  
জয় করিতে শিখা য়ে। ভারতবর্ষের ই  
দানীকম সত্যের নিদোষ লইয়া সম্পাদ  
কের সহিত আমাদিগের দ্বন্দ্ব বিতণ্ডার  
প্রয়োজন নাই। সম্পাদকের প্রতি আমা  
দিগের এক মাত্র বক্তব্য এই, যে দেশ পূর্  
তম উচ্চতম অবস্থা হইতে অধঃপতিত হয়,  
তাহার পুনরুদ্ধানের সম্ভাবনা আছে কি না,  
বর্তমান ইটালিই তাহার নিদর্শন হল। তা  
হা কি সাহিত্য, বিজ্ঞান, বাণিজ্য, ও না  
নাগ্রহাণ শিল্প বিদ্যা নিবীতাব প্রাপ্ত হয়  
নাই; তথাপি কি স্বাধীনতা প্রযুক্তি বলবতী  
হয়না; খ্রীস্টের দিকে একদার দৃষ্টি পাত  
কর, আর এক দৃষ্টান্ত দর্শন করিবে। তবে  
ভারতবর্ষের পূর্বাভাস লাভ অথবা তদপে  
ক্ষা অধিকতর উন্নতি লাভের বাধ্য কি? হর  
করা সম্পাদক বলেন সম্পূর্ণ বাধ্য আছে।  
ত্রিহুজিকারিদল কি সেই বাধ্য গবর্ণমেন্ট  
যদি এদেশীয়দিগের শিষ্ট মনোভাবতা  
না করেন

কৃত ওজিহা তর করা হইয়াছে। অন্য  
মনা সত্যেরাও নীলকরমিগের দেব ও  
অজ্ঞানিগের নিদোষতা সিরের, সিরে  
করিয়া শেষে এক বাটো এই প্রকার করি  
লেন যে, সর চারলস উভ দুই ধার এই আ  
ইন রহিত করিয়া যথার্থ রাজনীতি তত্ত্বতা  
প্রদর্শন ও মায়ানুগত কার্য করিয়াছেন।  
অতএব তাঁহার কার্যের অনুমোদনার্থ তাঁ  
হাকে এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করা  
কর্তব্য। অনন্তর সর জন হারেল পুনরায়  
বলিলেন যদি সর চারলস উভ এ কার্য  
না করিতেন, তাহা হইলে তিনি ভারতবর্ষী  
র সেক্রেটারি হইবার বেলা হইতেন না।  
সত্যেরা সকলেই হৃদয়কণ্ঠে কহিলেন, তা  
রতবর্ষীর গবর্ণমেন্ট কর্তৃক আইনের প্রস্তা  
ব করিয়া, অতিশয় অমায়িক করিয়াছেন।  
আমাদিগের দেশের সেক্রেটারি বের  
এই শুভ সংবাদটি শুনিয়া নিশ্চিহ্ন হইয়া  
পুনরায় সুখপ্রসাদ সেবন করেন না। ক  
ট্টাভি বিস্তার এখনও অতিম কাল উপ  
স্থিত হয় নাই। ইহা লইয়া একটি ঘোরত  
র বাগ্যান হইবার সম্ভাবনা আছে। এক  
দিকে মার্কস্ট্রেটের ও ভারতবর্ষের, ত্রিহুজি  
কারি দল এ হইলসুখী টোরি দল, অন্য  
দিকে সর চারলস উভ ও হইল দল বহুপরি  
কর হইবেন। এদেশীয়দিগের কায়মনো  
বাক্যে চেষ্টা লাইয়া সর চারলস উভের  
দলের দল হুজি করা অবশ্য কর্তব্য।





আমরা একটি চরকার চকতিতেছি, ওরূপকার আর সকল বিধেই ইহুদি ল' ধন চেয়ে। এরূপে কীরূপে বটে, কিন্তু এক একটি অমতসাহসিক মনসেই আছে সবে আছে, কেবল যেই মনসে কামিও ইহুদি ল'দের বা'বা'জ' কামিওতেই ইহুদি ল'দের, অমনক চেয়ে বিকল হয়ে। বাহিওতেই . আশা'দনের ধর্ম'দ'ম'ও এই মূল ওরূপে নিহুদ'ল' সংকে বিধ' অমে গতি' হইয়াছেন। অ'প' দ্বারে অধিক লোককে শিক্ষা দিওন বলি। যে তাঁ' হামিগের এক ইচ্ছা হইয়াছে, তাহাই তাঁ' হামিগের এ ম' মের মূল। এতদ্বারা নিবন্ধনই তাঁ' হামি' দু' কিতে গা'দিতোছেন না যে তাঁ' হামিগের চেঁটা বিকল অথবা অ'প' কল' ম'স' কা' রিণী হইবে। এই ৩০০০০ টাকা সাহা'য্য'দ'ন' কা'র' অথবা ন'র'দ'ল' দু'লে ব্যক্তি' হইলে অধিকতর উপকার দর্শিত ম'ন্দে' ম'াই। এখন দিন দিন দেখা বাহিওতেই ওরূপেই অ'ম'দ'গের অতি লো'দ'র' বিরাগ কামিওতেছে, সেই বিরাগ কামে' আশা'দ'গের রাজ' পুরুষেরা অর্থ ব্যয় করি। সেই হুত'র' ম'লের সংখ্যা বৃদ্ধি করিতে চলিলেন।

পায়েন এই মোড়ক খুলে  
 কিনা খনন হাটুয়া-সেবা নই  
 মিষ্ট হ'ল যাই নাও। ক. হাটুয়া  
 কাছাকাছি এত দূর হ'লে  
 এত দূর হ'লে এত দূর হ'লে  
 এত দূর হ'লে এত দূর হ'লে

କାହା ଶିକ୍ଷି କହ। ଆସିବେ କି।  
 ଗଡ଼େ କୁଳିକିର କହା କି।  
 କେଣେ ମହା ଶାସ୍ତ୍ର ଓ କାହିଁକି  
 ବିଦ୍ୟା ଶାସ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ର କହା କି।  
 କାହାଣୀ କାହାଣୀ କାହିଁକି।

হর, গদ্যবৈদ্যের আভিষ্কার  
কবিতা প্রকাশিত। কাঠামানিবেদ।  
কণা কবিতা প্রকাশিত।  
কিষ্কিন্ধ্যা উৎসাহক গ্রন্থ। কবিতা  
কবিতা প্রকাশিত। কবিতা  
কবিতা প্রকাশিত। কবিতা  
কবিতা প্রকাশিত। কবিতা  
কবিতা প্রকাশিত। কবিতা  
কবিতা প্রকাশিত। কবিতা

কর সেখানেই থিওরিটিক্যাল

র এ আশ্রিত হইয়া থাকিবেন, কিন্তু  
 ভবিষ্যৎ আর নাই। আর—  
 মহাপ্রাণবিশেষের দ্বারা  
 লেন এসেছেন। ইহা কি  
 পুরুষের। এতদংশের ইহা কি  
 কি, র. কা হইবে। এতদংশের ইহা কি  
 হা, অতএব সেই শিখা সেই হইল।  
 এই বলিয়া কোমর ফাটাইয়া দিয়া  
 পশ্চাৎ, আশ্রিত হইবে। আর লোকদিগকে  
 সুশিক্ষা দিওঁয়া আবশ্যিক। কিন্তু যদি  
 র. মহাপ্রাণবিশেষের নিকটে শিখা আশ্রিত হইল,  
 ইহা হইবে। সেই সুশিক্ষা গব এ  
 দ্বিত হইবে। এক বৎসর শিখা  
 কি র. মহাপ্রাণবিশেষের চরিত্র  
 দ্বিত হইবার সম্ভাবনা। আর  
 র. হইবে শিখাকে সফল হইতে



১০০  
 ১০১  
 ১০২  
 ১০৩  
 ১০৪  
 ১০৫  
 ১০৬  
 ১০৭  
 ১০৮  
 ১০৯  
 ১১০  
 ১১১  
 ১১২  
 ১১৩  
 ১১৪  
 ১১৫  
 ১১৬  
 ১১৭  
 ১১৮  
 ১১৯  
 ১২০  
 ১২১  
 ১২২  
 ১২৩  
 ১২৪  
 ১২৫  
 ১২৬  
 ১২৭  
 ১২৮  
 ১২৯  
 ১৩০  
 ১৩১  
 ১৩২  
 ১৩৩  
 ১৩৪  
 ১৩৫  
 ১৩৬  
 ১৩৭  
 ১৩৮  
 ১৩৯  
 ১৪০  
 ১৪১  
 ১৪২  
 ১৪৩  
 ১৪৪  
 ১৪৫  
 ১৪৬  
 ১৪৭  
 ১৪৮  
 ১৪৯  
 ১৫০  
 ১৫১  
 ১৫২  
 ১৫৩  
 ১৫৪  
 ১৫৫  
 ১৫৬  
 ১৫৭  
 ১৫৮  
 ১৫৯  
 ১৬০  
 ১৬১  
 ১৬২  
 ১৬৩  
 ১৬৪  
 ১৬৫  
 ১৬৬  
 ১৬৭  
 ১৬৮  
 ১৬৯  
 ১৭০  
 ১৭১  
 ১৭২  
 ১৭৩  
 ১৭৪  
 ১৭৫  
 ১৭৬  
 ১৭৭  
 ১৭৮  
 ১৭৯  
 ১৮০  
 ১৮১  
 ১৮২  
 ১৮৩  
 ১৮৪  
 ১৮৫  
 ১৮৬  
 ১৮৭  
 ১৮৮  
 ১৮৯  
 ১৯০  
 ১৯১  
 ১৯২  
 ১৯৩  
 ১৯৪  
 ১৯৫  
 ১৯৬  
 ১৯৭  
 ১৯৮  
 ১৯৯  
 ২০০



তাহারা অশ্রুতিত অশ্রুতিত আশ্রয় করি-  
 তেন, ইহা দ্বারা উন্নত ও পবিত্র জাতিধর্মের  
 সুরক্ষা ও অশ্রুতিত জাতিধর্মের সুরক্ষা  
 হইবে, তাহাতেই তাহারা অশ্রুতিত জাতি  
 তিত ও পরিভ্রান্ত হইয়াছি। এমনকাল ক  
 পের তাহাদের সর্বমুখ আশ্রয় করিয়া তা-  
 হাদের, তাহাতেই তাহারা অশ্রুতিত অশ্রু-  
 তের অনবধারিতা দেখিতে পাইতেছেন  
 তাহারা যেমন জাতিধর্মের সুরক্ষা জাতকর্মের  
 সুরক্ষা করিলেন, তেমনই জাতিধর্মের সুরক্ষা  
 জাতিধর্মের সুরক্ষা করিতে  
 রিবেন ত। তাহা যদি তাহাদের অশ্রুতিত  
 ত হয়, তাহা হইলে জাতিধর্মের সুরক্ষার সুরক্ষা  
 অশ্রুতিত জাতিধর্মের সুরক্ষা উপসংহত  
 হইবে ত। তাহা হইলে জাতিধর্মের সুরক্ষা  
 সুরক্ষা করিতে পারিবেন ত। তাহা হইলে জাতিধর্মের সুরক্ষা

[illegible][illegible]



[illegible]







আজিও একইরকম  
অবস্থায় অবস্থিতি করিতেছেন।

কিছুকাল পরেই বলাইল।

কিছুকাল পরেই বলাইল।

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

অন্যোপায় নেই

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

মহীন্দ্র রেকর্ডার বলেন

আজিও একইরকম

আজিও একইরকম

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন

তিনি আরো বলেন

তিনি আরো বলেন

বোম্বাই সাইডে

১ ই কারেন বুখার :

বিভিন্ন বলেন

চাকা নিউসের

জিওগেজেট বলেন

২ ই লেকচারি

হরকরার

কলিকাতা-সেক্রেটারি

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

১ ই কারেন বুখার :

হরকরার

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত পক্ষ আরো বলেন

উক্ত পক্ষ আরো বলেন



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । श्रीकृष्णार्चनम् ।  
श्रीकृष्णाय नमः । श्रीकृष्णाय नमः । श्रीकृष्णाय नमः ।





नमो भगवते वासुदेवाय

**অ:হ্যাবল্লেয় !**

**आदर्श**

बहुरूपीय नवीकरण

[illegible]

अहोरात्रं मयी

महाराष्ट्र : आगमक २४ है न...  
मिशन... का... मिशन...  
का... का... का...  
का... का... का...

[illegible]



‘अहं भद्रं कर्माणि भविष्यन्तीति श्रद्धां नयेत्’ इति श्रुतिः। अतः भद्रं कर्माणि भविष्यन्तीति श्रद्धां नयेत्। अतः भद्रं कर्माणि भविष्यन्तीति श्रद्धां नयेत्।

# সোমপ্রকাশ

“সমসংসারী সমস্তাং হিতাং পার্থিবঃ স্ব-স্বসী কুতিলংহনো ন স্বীকরোতি।”

৫ ভাগ।  
১৬ সংখ্যা।

{ সন ১২৬৯। ১২এ কালপুর্ন। ইং ১৮৬৩। ২ মার্চ } দাঃ

সোমপ্রকাশের অবয়ব বৃদ্ধি  
সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য  
১ এক টাকা মাত্র।

উপর চিকিৎসা ও তা  
বের বহি পাইবেন ই।

কলিকাতা।

বক্তব্যের টিউ ৭৬ নং বাটী।

জীবনমোক্ষোপায় চট্টোপাধ্যায় এবং কো.

...

বিজ্ঞাপন।

দ্রুত মহাশয় মনমোহন তর্কালঙ্কার প্রণী-  
ত বাসবদত্তা গ্রন্থ কেহ হুপাইতে পারিবেন  
না। কারণ তদীয় পিতৃব্য - রামরত্ন তট্টাচা-  
র্য মহাশয়কে উক্ত পুস্তক তিনি দান করিয়া-  
ছেন। তৎপুত্রের আমরা তাঁহার পিতৃব্যের উ-  
ত্তরাধিকারী বর্তমান আছি। আমরা তির  
বাসবদত্তার দান বিক্রয়ের অধিকার অন্য  
কাহারও নাই। অতএব জীবন্ত বাণু রামদাস  
সেন মহাশয় নিখিল প্রযত্ন হইতে এই আশা-  
দিগের অনুরোধ।

জীবনমোক্ষোপায় চট্টোপাধ্যায়  
কুমিল্লা

১২৬৯। ১ কাশ্বিন

বিজ্ঞাপন।

ডাক্তর হানিং বরজর সাহেবের এসিষ্ট  
ওলাউঠার ডিস্পেন্সারি একপে খন্দল্লা বাজা  
রের উত্তরে সাহাজাদার মসজিদের নিজ প-  
শ্চিমে কসাইটোলা টিউ টের ৩৬ নং বাটী-  
তে স্থাপিত হইয়াছে। বাহার ঔষধ কিম্বা ও-  
লাউঠ। রোগের চিকিৎসার আরোজন হইবেক  
উক্ত বাটীতে আমার নিকট আইলে অথবা  
সংবাদ পাঠাইলে অবিলম্বে এবং অল্প মূল্যে

২০৫ সোমও

১২৬ মো

কলিকাতা সংক

বিক্রয় প্রকৃতি অধ্যয়ন  
তাঁহারিগকে এবিবে  
কেন? কারণ এই বি-  
উপস্থিত হইয়াছে।  
জিও ইহার সীমাংসা  
একটি বিবেচনার বি-  
হার এক পক্ষে মুক্তি,  
তন সংকার, এ উত্তরে  
মুক্তি কাহারো প্র-  
কৃতি কার্যতে করিয়ে  
সংকার সকলকে প্র-  
ভেদে না। কারণ প্র-  
বনা কার্য। আশি কা-  
রপ একাধিপত্য প্র-  
ভেদে, তাহারও প্রত্যবি-  
পক্ষ ব্যাহত হইবে,  
লক্ষিত হইতেছে না।  
হার পূর্বে কালেক্সে  
তাঁহার কার্যও মুক্তি  
ভেদে।

এখন বর্ধন সংক

ইং, তৎপুত্রের জীবন

বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিলার অন্তঃপাতী বাটেকোয়ারি  
মহবতপুর নামে যে পঞ্চনি তালুক আছে,  
তাঁহা দরপত্তানি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
বাইবে। বাহার সেই তালুক দরপত্তানি লই-  
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার জার্ডন কিনার কোম্পানির নিক-  
টে আবেদন করিলে সখিশেখর ব্রহ্মাচার্য আনিতে  
পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

রামবাবু, হরু তাঁকুর, রামু মুনিংহ, গৌর  
কবিরাজ, মিত্যানন্দ টেবরাণী কুমারমোহন  
তট্টাচার্য প্রকৃতি প্রাচীন কবিগুরানাঙ্গিণের  
উত্তম উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত



বিবাহের উচিত বিবেচনা হইয়াছে সন্দেহ  
কর্তব্য হইবে।

—

কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটি  
আইন প্রণয়ন উচিত।

এদেশের উন্নতির অন্তরায় গণনা ক-  
রিতে গেলে বহুবিবাহ প্রধান পদ-লাভ  
করিবে সন্দেহ নাই। এই কুসংস্কৃত প্রথা নি-  
বন্ধন ঘদেশের যে যে অপকার হইতেছে,  
অনেকে অনেক বার তাহার গণনা করি-  
য়াছেন, তাহা এক প্রকার পুরাতন হইয়া  
গিয়াছে, তদ্বিষয়ে আমাদের মতন বক্তা  
বা নাই। বিজোহ ঘটনার পূর্বে এই সম-  
স্যা প্রথার উন্মূলনার্থ এক বার চেষ্টা হই-  
য়াছিল, কিন্তু তাহাতে ফলোদয় হয় নাই।  
সম্প্রতি এদেশীয় এক জন প্রধান সমাজ  
সংস্কারক পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করি-  
য়াছেন এবং ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার  
অন্যতর সভা এতৎসংক্রান্ত এক বিল বা-  
বস্থাপক সভার উপস্থাপিত করিবেন, অস্বী-  
কার করিয়াছেন। আমাদের দেশের লো-  
কেরা রাজসহায়তার অপেক্ষা না করিয়া  
স্বয়ং সমাজ দোষ সংশোধন করিবেন, আ-  
জিও একপ আশার অবকাশ হয় নাই। রা-  
জবিধি দ্বারা বলপূর্বকই ইংল্যান্ডকে তদ্বি-  
ষয়ে প্রবর্তিত করিতে হইবে। এবিষয়টি অন্য  
অন্য বিষয়ের ন্যায় ধর্মসম্বন্ধ নহে। অতএব  
ইহাতে হস্তক্ষেপ করিয়া সাধারণ প্রজার বি-  
ষেয়ভাজন হইবার সম্ভাবনা নাই। বহুবিবাহ  
নিবন্ধ হইলে কেবল যে আমাদের দেশের স-  
মাজ একটি মহত্তর অপকর্ষ হইতে মুক্ত  
হইবে একপ নহে, অনেকসংখ্য হতভাগ্য  
রমণী অসহ বস্ত্রণার হস্ত হইতে পরিত্রাণ  
পাইবেন সন্দেহ নাই। সেই বস্ত্রণা এক  
বিধ ও একজাতীয় নহে। অনেকে এক  
কাণে আমি সৌভাগ্য ও সংসার সুখে  
বঞ্চিত হয়। অনেকে চিত্ত দৌর্বল্য হেতু  
আপনাকে ও পিতৃ কুলকে চির কদাক্ত  
করে। সেই সেই হতভাগ্যদের জন্য

পিতামাতাকে অসংখ্য ক্লেশ ভোগ করিতে  
হয়। অদ্য আমরা নিগের এবিষয়ের প্রস্তাব  
করিবার উদ্দেশ্য এই, এই সঙ্গে সঙ্গে  
কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটি আইন করা  
আবশ্যক।

বহুবিবাহের ন্যায় কন্যা বিক্রয় বিষ-  
য়েও রাজ হস্তক্ষেপ অবৈধ হইতেছে না।  
সমাজের অনিষ্ট ও নিকর্ষকারিতা পক্ষে  
বহুবিবাহের ন্যায় ইহারও বিলম্ব নহে।  
ইহা কেবল ভিক্ষুশাস্ত্র প্রতি-  
ষিদ্ধ নয়, এদেশীয় ভক্তলোকদিগেরও  
নিষ্ঠাস্ত বিদ্রিষ্ট। যে বিষয়ে অধিকাংশ  
লোকের ও ধর্মের বিষয়ে আছে, তদ্বিষয়ে  
হস্তক্ষেপ করিয়া নিরাপত্তা ভাজন হইবার  
সম্ভাবনা কি? কন্যা বিক্রয়ের দোষ এক  
প্রকার নহে। প্রথম, পিতামাতা কন্যাকে অর্প-  
নোত্তে গো মেঘ মহিষের ন্যায় বিক্রয়  
করেন, কিন্তু সেই বিক্রয় যে কতদূর যুক্তি-  
সিদ্ধ, তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি  
না। দ্বিতীয়, পিতামাতার কন্যার উপরে  
প্রভুত্ব আছে যথার্থ বটে কিন্তু সেই প্রভু-  
ত্ব বলে এক স্বাধীন জীবকে হেয়ভা-  
বে বিক্রয় করা কিরূপে সম্ভব হইতে পারে-  
যাহারা কন্যা বিক্রয় করে, তাহাদিগের ব-  
রের রূপ গুণ ও অর্থ সম্বন্ধের বিষয় বি-  
বেচনা করা নাই, পরিণামে কন্যার কি  
দশা হইবে, তাহাও এক বার বিবেচনা  
করা হয় না, যে অধিক টাকা দিতে পারে  
সেই বিক্রয়তার প্রিয় পাত্র হয়। এতটা  
প্রসিদ্ধ কথাই আছে, কন্যা বিক্রয়কারিণী  
কন্যা জন্মিলে তাহার এক কালুক লাভ  
হইল, জ্ঞান হয়।

কন্যা বিক্রয়কারিণী সচরাচর যে সকল  
ল ব্যক্তির হস্তে কন্যা সমর্পণ করে, তাহা-  
র দুই একটি উগ্রহরণ প্রদর্শিত হইতে  
ছে, তাহারাই ইহার অনর্থকারিতা পরি-  
ষ্কৃত রূপে প্রাণকণের হুমকি হইবে।  
বোধ কর এক ব্যক্তির ৫ বিধা মাত্র ত-  
থাকার কুলি ছিল। সে তাহা বিক্রয় করি

১০। পশ্চিম  
বিবাহের কালেক  
হয়। এখন নিগম  
হার উল্লেখিত হই  
হার আংশিক রূপ  
চন্দ্রসং ব্যবহার  
বেবেচনা কী। আর  
ময় বেদপাঠ নিষেধ  
কাজ বলিয়া ভংগা  
। কিংবা এখন সেই  
কার্য প্রকৃতিকে  
জাতিকে মওয়া না  
। মৃত্যুর পদ মন  
চূনাতিরেক করেন  
নীচে হউক, আর  
উত্তর মনেই তুল্য  
াবনা। যাহা হউক,  
একটি প্রকৃতি  
উপস্থাপিত হইয়াছে,  
মেটের নিষ্কপ

কন্যা উত্তর পশ্চিমা  
ধর্মের পদের মধ্যে  
সেইছিলেম। ইহা  
বকে, কেহ হারিও  
বা অন্যকে এই পদ  
হিসেন। আমরা নি  
বর্ষীয় প্রধান কৌজি  
বিস্তারিত সভা হারিও  
এইয়াছেন।  
এদেশে অনেক দিন  
কাল বারুর অনেক বিধ  
হয়; তাহার কার্যেও  
হয়। অতএব তাহাকে  
পদ দান করা প্রবর্তনে

না বিবাহ করিল। তাহার বড় উপার্জন  
 কসতা, বিদ্যা ও বুদ্ধি, এক ভূমি বিক্রয়  
 দ্বারা সে সমুদায়ের পরিচর্য্য হইল।  
 তাহার নিজের উপার্জন কসতা মাই।  
 তাহার যে পৈতৃক সঞ্চিত বস্তুকিদিগে অ  
 র্থের সংস্থান ছিল, তাহাও গেল। এখন  
 সে কি রূপে আপনায় ও পরিবারের প্রতি  
 পালন করে? কিন্তু সেই বা তাহার সম্ভাব  
 নত্বটির লেখা পড়া হয়? তাহারা যে, পরিণী  
 ত পনের গলগ্রহ হইয়া উঠিবে, তাহা যেরূপে  
 মনে হয়? কিন্তু এইরূপে যে বি  
 বাহ নির্বাহ হয়, তাহাতে সম্ভাবনাগণের  
 প্রায় লেখা পড়া হয় না। তাহারা পৈতৃক  
 সম্পত্তির মধ্যে কেবল পিতার নিঃস্বতা ও  
 পুত্রতার অধিকারী হয়। এতদ্ব্যতীত নিষিদ্ধ  
 পুত্রতা অনেক গৃহকে অধিকার করিয়া  
 আছে, যেখানে পাওয়া যায়। এতদ্বারা  
 কি প্রতিপন্ন হইতেছে না যে কন্যা বিক্রয়  
 কেবল কন্যার সাংসারিক সুখের কণ্টক  
 নয়, সমাজেরও একটি বিষম কণ্টক স্বরূ  
 প হইয়া আছে। যে কন্যা বিক্রীত হয়,  
 সাংসার ধর্ম্মে আবৃত্ত হইয়া প্রায় তাহাকে  
 মনস্ত চরবস্থা ভোগ করিতে হয়, বোধ  
 হয়, অনেকে স্বচক্ষে ইহা দর্শন করি  
 য়াছেন।

২০৭

209

অপর. कन्याविक्रय" बार्तापत्रेण ए  
 कान्त अननुमोदित । बार्तापत्रे सकल  
 क. अम करिया जीविका अर्जन करिते  
 रहे, किन्तु कन्या विक्रयकारिण तादृश जी  
 विका अर्जने प्रयोजन হয় না । कन्याई  
 ताहादिपेण जीविका, कन्याई ताहादिपेण  
 नहल । ये कन्या विक्रयेण एत दोष, तन्नि  
 कारणार्थ राज विधिं दारुण कृतबलधन कि  
 यावन्नाक मरः उपसंहार खले आसरा  
 यवहापकणके এই মাত্র অনুরোধ করি  
 তছি, তাঁহাদিগের কন্যা বিক্রয়ের অন্য  
 য দোষানুসন্ধানে প্রয়োজন নাই, তাঁহারা  
 কবল এই বিষয়টা বিবেচনা করুন, পি  
 তাভ্যক্ত লোক প্রকৃতির চরিতার্থতার

নিমিত্ত কন্যার স্বাধীনতায় সাংসারিক  
বুথে বিসর্জন হয় কেন? তাদৃশ কন্যাপণ  
আমাদিগের সমাজ সংস্কার ও স্বাধীনতা  
কগণের কি কৃপার পাত্র আছে? আমরা  
প্রতীক্ষা করিয়া রহিলাম, বহু বিবাহ বি  
লের পরেই যেন কন্যাবিক্রয় বিলম্ব  
স্থাপক সভায় প্রবেশিত হয়।

ভারতবর্ষের ইতিহাস  
প্রথম পঞ্চক ৭০

আজি কালি “ ভারতবর্ষে ভারতবর্ষ শাসন ” ও “ ভারতবর্ষের ঐহিক সাধন ” এই দুটি মনোহর বাচ্য অনুকণ আমাদিগের অরণ্য গোচর হইতেছে । অনেক ব্যাখ্যার মধুর সংগীত দ্বারা হৃদয়বন্দীকরণের ন্যায় এই দুই মনোহর বাক্যের পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ দ্বারা লোককে মোহিত করিয়া স্বার্থ সাধন করিতেছেন । অধিক কোত্তের বিষয় এই, ভারতবর্ষের ঐহিক সাধনের এককৃত পথের আবিষ্করণে অঙ্গ লোককে উদ্ধৃত দেখা যাইতেছে । ভারতবর্ষের ঐহিক সাধনের এককৃত পথ কি, তন্নির্ণয়ে প্রবৃত্ত হইতে হইলে, আগে ভারতবর্ষ শব্দের অতিথ্যে নির্ণয় আবশ্যিক । এখানে ভারতবর্ষ শব্দে ভারতবর্ষ বাসী লোক বুঝাইতেছে । ভারতবর্ষে এক্ষণে অনেকবিধ লোকের বসতি হইয়াছে, সে সমুদায়ই ভারতবর্ষ শব্দের বাচ্য সন্দেহ নাই । কিন্তু যখন ঐহিকের অন্বেষণ করা হইতেছে, তখন তাহাদিগের মধ্যে বাহাদিগের ঐহিকের অঙ্গতা আছে, তাহারাই এখানে ঐ শব্দের মুখ্য অর্থ । এইরূপে মুখ্যার্থ গ্রহণ করিলে অত্রতা হিন্দু ও মুসলমানেরাই নিঃসংশয় ঐহিকের লক্ষ্য হয়, ইউরোপীয় ও আমেরিক প্রভৃতি লক্ষ্য হয় না । কারণ শব্দে ‘ঐহিক’ ব্যক্তিরা ঐহিক শোভিত হইয়া এখানে আসিয়াছে, বিশেষতঃ এ দেশে তাহাদিগের ভাগ অতি অঙ্গমাত্র দৃষ্ট হয় । সেই অঙ্গ সংখ্য লোকের ( ৩০ বা ৩০ হাজারের ) নিমিত্ত অধিকসংখ্য লোকের

कार्यो विनियोजनार्थ १०००००  
सेई १० कोटि रु. अङ्गिकृत  
सेई १० रु. १०००००००  
कराई देउछु ।

পতিত ভূমি বিক্রয় হইলেও  
 জিহ্বি হইবে, কথা উঠিল ; তা  
 বিক্রয়ের নিয়মাদি একটিকে  
 সেই বিক্রয় কার্য দ্বারা বিধ  
 বা ইংরেজীতে কে অধিকতর  
 হইলেন? ভারতবর্ষে বাহুল্য  
 ভুলার চাব হইলে ভারতবর্ষে  
 হইবে, কথা উঠিল ; ভুলোপচার  
 মি অধিক হইল, চাব-আলত হই  
 সময়ে দ্বারা ঘাটী একটিকে  
 হইতে লাগিল, তাহাতে অধিকতর  
 বান কে হইল? ভারতবর্ষে  
 সময়ে উৎকর্ষ লাভ করিতে পারেন  
 কণ্ট্রি ছিল বিধিবদ্ধ করিলেন  
 সেই উৎকর্ষ তাহা দ্বারা হইল  
 এই ভাব করিয়া তাহা বিধিবদ্ধ  
 চেতা হইল, কেউকেও তাহা  
 ভাবা দী হইলেন, অতএব  
 পদচ্যুত করিবার উদ্দেশ্যে  
 ভারতবর্ষে লাগিল, তাহা  
 চেতা হইতে লাগিল, যদি  
 সকল হয়, কে তাহারা অধিক  
 বান হইবে? ভারতবর্ষে  
 তির সহিত এতদূর লম্বা বিরোধ  
 বলে ছোট আকালত হইলে ভার  
 জিহ্বি হইবে, অসম্মত হইল ; ছোট  
 ছোট আকালত প্রতিষ্ঠিতও হই  
 তাহারা কে অধিকতর ল.ত.ব.ন.  
 বিভিন্ন সর্বিসের পর, আর  
 করিয়া হইলও তাহা হই  
 হইলে ভারতবর্ষে জিহ্বি হই  
 হইল ; তৎপ্রাণ তথায় প্রতিষ্ঠিত  
 তাহারা কে সমধিক লাভবান  
 এহলে অনেক



ইউরোপীয়েরা কি এদেশীয়দিগের  
উল্লিখিত বিষয়ের কল ভোগ ক-  
রিবার ? করিয়া রাখিয়াছেন ? কেহ  
ইউরোপীয়ের সাক্ষাৎসম্মুখে কল  
ভোগ নিবেদন করেন, তাই বখাৰ্খ  
কি পরাম্পরা সম্মুখে নিবেদন করা  
হইত। ইউরোপীয়েরা এদেশীয়দিগের  
কল অনেকবিধে প্রাধান্য লাভ করি-  
য়াছে। তাহাদের বর্ষ ও আচার ব্যবহা-  
র একবিধেই তাহাদিগের অনেক  
কল আছে; অতএব তাহাদিগের সহিত  
এদেশীয়দিগের প্রতিযোগিতা হইলে এদেশ  
যে কলভোগে বঞ্চিত হইবেন স-  
ন্দেহ নাই। উল্লিখিত কলগুলি বিবরণ কেবল  
ইউরোপীয়ের সুবিধা উদ্দেশ্য করিয়াই  
ইহা থাকে, তদ্বারা এদেশের মানুষ  
যে যৎকিঞ্চিৎ উপকার লাভ হয়,

যে বিষয় দ্বারা এ দেশের জীবিত  
জনা আছে, তত্ত্ববিষয়ে এ দেশী  
সাক্ষাৎ সম্মুখে প্রবর্তিত করা,  
সেই বিষয়ে ইহাদিগকে শিক্ষা  
দেওয়াই এদেশের জীবিত সা-  
ধকত-পথ। এদেশে রেলওয়ে হই-  
কত এদেশীয়েরা আরোহণাদিৰূপ  
সামান্য কল বিনা সুখ্য কল ভোগে  
বঞ্চিত হইতে পারেন না; রেলওয়ে  
এদেশে হয় নাই, ইহারা কল প্রকৃতির  
ও চালনাদি বিষয়ে তখন যেমন অজ্ঞ  
ছিলেন, এখনও সেইরূপ রহিয়া  
ছে। ১২ বৎসর হইল, এদেশে  
রেলওয়ে হইয়াছে, এপৰ্য্যন্ত এদেশের  
লোকের কল ভোগ কল প্রকৃত করি-  
য়াছে। এদেশের কল ভোগ লোকে  
কি নিধিরাইছেন ? একে কল ভোগ  
সহজে আসিয়া পৰ্য্যাপ্ত করিয়া  
প্রসঙ্গ কাণ্ডে ব্যাপ্ত হইতে  
হইল, তাহাতে আবার কাহার উৎ

সাহ দেওয়া নাই, এতদ্বারা অনুৎসাহ দেও  
আছে। এদেশীয়েরা তত্ত্বকাণ্ডে সমর্থ হই-  
বেন না বলিয়াই অনেকে নিষ্পত্ত করিয়া রা-  
খিয়াছেন। যাহার বুদ্ধি আছে, তাহাকে নি-  
ধিরাইলে নিধিতে পারে না, একিঞ্চিৎ কথা ?  
শিক্ষা ও কল না করিলে কি কখন কাহা-  
র বুদ্ধি সার্জন, শরীর পাটব, সাহস ও  
বল বীৰ্য্যাদির বৃদ্ধি হয়? রেল গাড়ির কল  
ও তদুপকরণ ইংলণ্ডে প্রস্তুত হয়, আর  
এখানে প্রস্তুত হইতে পারে না, ইহা বুদ্ধি  
যা লওয়া সহজ নহে। চেষ্টার অসাধ্য  
কোনু করণ আছে ? এদেশে চেষ্টা নাই  
বলিয়া সমুদায় বিষয়েরই অসম্পত্তি। বা-  
লিয়া যে যে কারিজিয়া করিতে পারেন,  
সাঁওতালেরা কি তাহা করিতে সমর্থ ? তা-  
হাদিগের সে অসামর্থ্যের কারণ কি ?  
তাহাদিগের শিক্ষা ও চেষ্টা নাই। এদেশে  
শে জুলা জন্মিতেছে, কিন্তু সে জুলা ইংল-  
ণ্ডে গিয়া বৃদ্ধ ও বয়স হইয়া আসিতেছে,  
গভীরতার জাহাজ ভাঙা লাগিতেছে; এ-  
দেশীয়েরা কেবল মজুরী করিয়া তাহার  
উৎপাদন করিতেছেন মাত্র, সেই জুলা  
প্রস্তুত কলভোগী হইতে পারিতেছেন না।  
এদেশে জুলা জন্মিয়া ইংলণ্ডে চলিয়া  
গেল, তাহাতে এদেশের কি জীবিত হই-  
ল ? এদেশীয়দিগের মজুরী লাভ, ইহাই  
কি জীবিত জীবিত ? এদেশীয়েরা কি  
জুলা পরিষ্কার করিবার ও বয়স প্রস্তুত ক-  
রিবার কল করিতে শিক্ষা করিয়াছেন ?  
ইহারা কি সেই কল দ্বারা বয়স প্রস্তুত  
করিতেছেন ? এদেশে সেই কল প্রস্তুত  
করিলে এবং ইহাদিগকে সেই কল প্রস্তুত  
করিতে শিক্ষাইলে কি এদেশের মজুরী  
জীবিত হইত না ?

আমরা উপরে উদাহরণরূপ কেবল  
কয়েকটি বিষয়ের প্রসঙ্গ করিলাম, এদেশ  
ীয়দিগকে কাজে প্রবর্তিত করিবার শিক্ষা  
দিবার অনেক বিষয় আছে, ইহারা যাহা  
সেই গুলি বয়স ও বয়সে সম্বন্ধে করি

তে সমর্থ না হইবে, তাহা এ দেশের  
মজুর জীবিত লাভ সম্বন্ধে নাই। মজুর  
দের যে তত্ত্ববিষয়ে শিক্ষাদান ও উৎসাহ  
দানের ভার, সে কথা বলা বাহুল্য। পিতা  
পুত্রাদিগের শিক্ষাদান তাঁর গ্রহণ করেন  
যে পিতা বয়স পণ্ডিত হন, তিনি কখন  
পুত্রকে অজ্ঞান জ্ঞান ও বয়স পণ্ডিত দেখিয়া  
নির্ভৃত হইতে পারেন না। আমাদিগের  
মজুরদের যদি অজ্ঞ হইতেন, আর এদেশ  
ীয়েরা শিক্ষা রসজ্ঞ হইতেন, আমরা  
তাহাদিগকে উত্তেজনা করিতাম না। তি-  
স মজুরদের এ দেশের শিক্ষা, রক্ষা এ-  
বৃদ্ধি যাবতীয় বিষয়েরই তাঁর গ্রহণ করিয়া  
ছেন। এখন সেই গুলি ত আরোচিত কাৰ্য্য  
না করিলে তাহাদিগকে কর্তব্যের অনন-  
তান জনাও তাহার ভাগী হইতে হইবে

— — —

এল, এল, উপাধিধারিরা প্রধানতম  
বিচারালয়ে ওকালতী করিতে  
পারিবেন কি না ?

সম্প্রতি সব বার্নেস পিকক এই প্রশ্ন  
টি উত্থাপিত করিয়াছেন, যে সকল ছাত্র  
বিশ্ববিদ্যালয় হইতে বি. এল. এবং এল.  
এস উপাধি প্রাপ্ত হইয়া ওকালতি করিতে  
আসিতেছেন তাহাদিগের উত্তর জেনারেল  
একবিধ বয়স ও ক্ষমতা দিয়া প্রধানতম বিচ-  
রালয়ে ওকালতী করিতে দেওয়া উচিত  
কি না ? এই প্রশ্ন উপলক্ষ করিয়া অনেক  
বি. এল, সমবায়সারী এল, এল, উপাধি  
ধারিদিগের বিরুদ্ধে চিৎকার আরম্ভ করি-  
য়াছেন। তাহারা বলেন তাহারা এখন  
বি, এ, উপাধি প্রাপ্ত হইয়া আইনের  
পরীক্ষা দিয়া বি, এল, উপাধি প্রাপ্ত হন  
কিন্তু এল, এলেরা কেবল এল, এ, পর-  
ীক্ষা দিয়া ব্যবস্থা অধ্যয়ন করেন। পরীক্ষা  
মহরও সমান নহে। বি, এলদিগের প্রা-  
বিষয়ে সমুদায়ের অর্ধেক নম্বর লইয়া  
হয়, পক্ষান্তরে এল, এলেরা তৃতীয়াংশ  
প্রাপ্ত হইলেই অংশ পক্ষ পাইয়া থাকে

। এদিকে এক বৈলক্ষ্যে বিল কল্যাণে  
বলক্ষ্য মাই। অতএব সেই কল্যাণে  
বলক্ষ্য হওয়া উচিত।

এই সকল ব্যক্তির স্বার্থপরতা আমা  
দের চিত্ত বিরাগ উপাদান করিয়াছে  
স্বার্থ বটে, কিন্তু আমরা তাঁহাদিগের এ  
নির্ভর্য্যতাকে অসম্মত বলিয়া স্বীকার  
করিতে পারিতেছি না। পরোক্ষা অংশে  
এই বৈলক্ষ্য লক্ষিত হইতেছে, তখন  
কল্যাণ বৈলক্ষ্য হওয়াও উচিত সন্দেহ  
কি? পুরস্কার গত ইতর বিশেষ না থাকি  
ল লোকে সচরাচর অধিকতর জ্ঞান স্বীকা  
র উদ্ধৃতি হইবে কেন? কলতা: বি, এল ও  
এস, এল, উভয়ের ক্ষম ও অধিকারবিষয়ে  
বলক্ষ্য থাকা অসম্মত নয়। কিন্তু এলএল  
দের প্রধানতম বিচারালয়ে ওকালতী  
করিবার পথ রেখের যে চেষ্টা হইতেছে,  
আমরা তাহার অনুমোদন করিতে পারিতে  
ছি না। এল, এলেরা যদি প্রধানতম অ  
দালতে। নিয়মানুগত স্বকর্তব্য সাধন ক  
রিতে পারেন, তাঁহাদিগকে বঞ্চিত করা  
কল্পে ন্যায়ানুগত হইতে পারে? বি,  
এলদিগের সম্মানস্বার্থ প্রণীত ভেদ করি  
লই হইতে পারে।

এখানে আমরা এল, এলদিগকে এক  
পরাশ্রম দিতেছি, তাঁহারা তাহার অনু  
রণ করুন। তাঁহারা মকবল আদালতে  
উন, তথায় তাঁহাদিগের প্রতিষ্ঠা লাভ  
কারে বিলক্ষণ অর্থ লাভ হইবে সন্দে  
হই। তথায় অজ্ঞ অথবা অস্পষ্ট উক্তি  
দেরই একাধিপত্য। এল এলেরা ত  
র উপস্থিত হইলে (অজ্ঞ ও অস্পষ্ট  
কীলেরা) নিঃসংশয় আপনাদিগের রা  
জ্যকে স্থির পদ রাখিতে পারিবেন না,  
রাজ লাভে প্রজাদের ন্যায় মওক্কে  
সরা বিক্রোদী হইবে সন্দেহ নাই। মক  
বল আদালত সকলেরও কিঞ্চিৎ আদে  
শ লাভ হইবে।

পতিত ভূমি, বিক্রয় সংক্রান্ত  
আইন।

১৪ ই ফাল্গুনের ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থা  
পুত্র সভার হারিংটন সার্ভেয় পতিত ভূমি  
বিক্রয় সংক্রান্ত বিল উপস্থিত করিয়াছি  
লেন।-উহা অবিলম্বে বিধিবদ্ধ হইয়া  
হে। পতিত ভূমি বিক্রীত হইয়া বনপূর্ণ  
ভূমি পরিভূত ও তথায় নামাবিধ শস্য ও  
চা প্রভৃতি উৎপন্ন হয়, গবর্নমেন্টের এই  
নিষ্ঠাত অতিলাভ। [তদ্বারা ভারতবর্ষের  
মঙ্গল হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে।  
কিন্তু এংলীর দোষে গবর্নমেন্টের সেই  
উৎকৃষ্ট মনোরথ সকল হইবার ব্যতিক্রম  
ঘটিতেছে। লোকে তন্নিমিত্ত তাঁহাদিগের  
নিকট কৃতজ্ঞ হইতেছেন না। পাঠকগণ কি  
মনে করিতেছেন, আমরা এই কথা বলি  
তেছি যে এদেশের অধিকাংশ ভূমি বন  
পূর্ণ থাকুক? না, আমাদিগের সে ইচ্ছা  
নয়। আমরাই সমুদয় ভূমি লইব, অন্য  
জাতিকে বিশেষতঃ ইউরোপীয়দিগকে এ  
দেশে কৃষি কার্য্য করিতে দিব না। ইহাও  
আমরা এক দিনের জন্য মনে করি না।  
ইউরোপীয়েরা আহুন, কৃষকদিগকে উৎকৃ  
ষ্টরূপে কৃষি কার্য্য প্রভৃতির শিক্ষা প্রদান  
করুন এবং সাফাৎ সহজে হটক আর  
পরস্পর সহজে হটক দেশের ধন ও সৌ  
ভাগ্য বৃদ্ধি করুন এইছা কোন্ ভারতবর্ষী  
য়ের না হইবে? এহলে আমাদিগের কে  
বল বহুত্ব এই, এদেশীয়দিগের উপরে  
তজ্জনা অত্যাচার না হয়, এবং গবর্নমেন্ট  
নিজে অবিচার না করেন। ২০৯

হারিংটন সার্ভেয়র বিলের মর্ম এই,  
পতিত ভূমির উপর কাহার স্বত্ব থাকিলে  
তিনি তাহা বিক্রীত হইবার অনতিপূ  
র্বে জেলার কালেক্টরের নিকটে জানা  
টাবেন। কালেক্টর সে বিষয়ের নীতি  
(সম্মতি) বিচার ও নিষ্পত্তি করিবেন।  
অর্থাৎ যদি তাহাতে অসম্মত হন, তাহা হ  
ইলে উক্ত আদালতে আপীল করিতে পা

রিবেন। এই বিচার্য্য আইন  
তি সেই আদালতের দ্বারা স্থগিত  
দিয়ের আজাই হইয়াছে। হারিংটন  
হার। যদি কোম বিক্রয় এই আইন  
বোধ হইবে, এংলীশদিগের  
দালতের মত গ্রহণ কর এই আইন  
ক্রয় হইলে যদি কোম বিক্রয়  
করেন, আর তাঁহার প্রার্থনায়  
নিষ্ঠ ও তাঁহার বিক্রয় দ্বারা  
হয়, তথাপি তিনি বিক্রীত হইয়া  
হইবেন না; গবর্নমেন্টের  
তাহার মূল্য প্রদান করি। পাইকে

যে যে কারণে সর।  
কালেক্টর পতিত ভূমি হইতে  
পরিবর্তন করেন, তদ্ব্যতীত  
একটি প্রদান। উক্ত আইন  
অন্য অন্য সম্পত্তির ন্যায়  
স্বত্ব ও কামাদি আইনে পরি  
কর্তব্য। হারিংটন সার্ভেয়র  
দ্বারা গবর্নমেন্ট বলেন, নিম্ন  
ব্যক্তি টাকা দিয়া ভূমি  
হাতে মূলধন বিনিবেশ  
বতী করিয়া ভুলিগেন  
তাঁহা হইতে বঞ্চিত হন,  
র অতিশয় কষ্টের হইবে  
বাহার যে সম্পত্তির  
স্বত্ব আছে, সে তাহা  
করিলেও যদি তাহাতে  
না দেওয়া হয়, সেটী  
কষ্টের হইবে না? তাহা  
দ্বারা ব্যবহার নয়? সর্বদে  
এই নিয়ম হইয়া আসি  
যাহার স্বত্ব প্রমাণ হইবে,  
কে অবশ্যই দিতে হইবে,  
কিছু লওয়া আর না  
কোম দেশের কোন  
অনাগমোপভোগের  
রেন মাই। ভারতবর্ষীয়  
ব্যবস্থাপক সভা ইচ্ছামত



ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট এক্ষণে অতিশয়  
 যত্নসহকারে করিতে চলিলেন। কন্ট্রোল বিল  
 রহিত হইবার পর অবধি তাঁহারা মানা  
 কৌশলে ইউরোপীয়দিগের সহায়তা কাষে  
 প্রবৃত্ত হইয়াছেন, তদর্থ তাঁহারা এক্ষে  
 শীদিগের প্রতি অবিচার করিতেও ভীত  
 ও সঙ্কুচিত নহেন। তাহার এই পক্ষপাত  
 একটবে ঘোষিত হইয়াই বারবার ইংল  
 ঙ্গীয় গবর্ণমেন্টের স্পষ্ট আজ্ঞা লঙ্ঘন  
 করিতেছেন। যাহা হউক তাঁহারা কি  
 ইহাতে কৃতকাৰ্য হইতে পারিবেন? ইং  
 লণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কি তাঁহাদিগের কৃত এই  
 পক্ষপাত দূষিত ব্যবহার অনুমোদন করি  
 : কন্ট্রোল বিলের ম্যার কি ইহার দূর

যা-উত্তর পশ্চিম প্রদেশে অধিকতর অবশিষ্ট  
অধিকার কারণ কি? পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
নিরবিত ব্যাধিাদির অসুস্থতা নিবৃত্তি-বল  
বিকারী ভাষার কারণ। ইংরাজ, কন্নড়ী কনি  
য়, পাঠান, শিব, প্রভৃতি জাতিরা কি কারণে  
এতদূর বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হয়? তাহারা খাদ্য  
প্রধান স্থানে বাস করে, ইহাই কি এক  
মাত্র কারণ? উল্লিখিত পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
ব্যাধিাদির কি কারণতা নাই? খাদ্য প্রধান  
প্রদেশবাসিন। বহিঃ বাসালিগের মতর অ-  
নার ও অল্প পরিমিত দ্রব্য ভোজন ও বি-  
ক্রিয় ও নিরীহ হইয়া কাল হরণ করে, তাহা-  
রা কি ক্রমে বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হইয়া যায় না?  
তাহাদিগের বংশে কি আর তাহাদিগের মতর  
সবল ও চক্ৰাকার লোক জন্মে? তাহাদিগের  
বংশ্যলোকদিগকে কি ক্রমে আর তজ্জাতীয়  
বলিয়া বোধ হইবে। খাদ্য প্রধান লো-  
কেয়া আহারাদির ব্যতিক্রম করিলে বহিঃ তা-  
হাদিগের বলবীর্ণ সাহস ও অবরবাসির ব্য-  
তিক্রম হটে; তবে বহুদেশে বাসিরা আহার  
ও ব্যাধিাদির উৎকর্ষ সাধন করিলে, ঐ সকল  
বিবরণ উৎকর্ষ লাভিত না হইবে কেন? আমরা  
বলকর উপায় অবলম্বনেরই প্রস্তাব করিতেছি,  
যাহাঙ্গর উপায়ালব্ধনের প্রসঙ্গ করিতেছি  
না। পরিভূত স্থানে বাস করিলে ও নিরবিত  
রূপে আহার, পান ও পরিভ্রম করিলে শরীর  
সুস্থ হয় বটে, কিন্তু বলিষ্ঠ হয় না। এক ব্যক্তি  
কলিকাতার নিকর্বে কোন উদ্যানে বাস ক-  
রিয়া নিরবিতরূপে আহার পান ও পরিভ্রম  
করিলে স্বাস্থ্য লাভ করিতে পারেন, কিন্তু  
তিনি যদি পুষ্টিকর ও অধিক পরিমিত দ্রব্য  
ভোজন ও ব্যাধিাদি না করেন, তাহা হইলে শ-  
রীর কখন বলিষ্ঠ হইবে না। কিন্তু সেই ব্যক্তি  
বহিঃ লগুন বা মিরটের কোন মনোরম স্থানে  
গিয়া বাস করেন, তাহা হইলে শরীর যে কেবল  
সুস্থ হইবে একপ নহে, বলিষ্ঠ হইয়া উঠিবে।  
এতদ্ব্যতীত যে সকল ব্যক্তি লগুন বা উত্তর  
পশ্চিম প্রদেশের কোন স্থানে কিছুকাল বাস  
করিয়া কলিকাতায় প্রত্যাবর্তন করেন, লগুন  
চর তাহাদিগের শরীর সুস্থ ও বলিষ্ঠ। এই  
উত্তর শুণে স্পষ্ট হইতেছে। এবিধ ইয়ল-  
কণ্য কারণের অসুস্থতানে প্রভু হইলে উদ্ভি-

এতদ্ব্যতীত এক ব্যক্তি লগুন গিয়াছি-  
লেন, তিনি বলেন, তথায় অবস্থিতি কালে  
য পরিমাণে পরিভ্রম করিতে পারিতেন, ক-  
লিকাতায় প্রত্যাবর্তন করিয়া তাহার অর্ধেক  
পরিভ্রম করিতে পারিতেন না। আর এক  
ব্যক্তি উত্তর পশ্চিম প্রদেশ হইতে লিখিয়া  
উলেন যে কলিকাতায় অপেক্ষা তথায় উৎ-  
কর্ষেরা বিগুণ, ও ত্রিগুণ অধিক পরিভ্রম  
করিতে পারেন। কলিকাতায় অপেক্ষা লগুনে  
(১) এতদ্ব্যতীত দুই সুশিক্ষিত ব্যক্তি ল-  
গুনে উপনীত হইয়া ইংরাজদিগের অমাত্য  
গণের নিকট গিয়া বিনয়পূর্ণ হইয়াছিলেন।  
তাহারা বলেন ইংরাজেরা বাসালিগের  
মতরূপে গণ্য হইতে কাল হরণ করিতে নিতান্ত  
অসুখ। এতি নিরুত তাহারা কোন না কোন  
কারণে নিরুত থাকে। অর্থোপাধ্যান বিবরণে  
তাহাদিগের মত অসম্মত, বোধ হয়, আর  
কোন জাতি পৃথিবীতে নাই।

খাদ্য, কারণই, পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
নিরবিত ব্যাধিাদির অসুস্থতা নিবৃত্তি-বল  
বিকারী ভাষার কারণ। ইংরাজ, কন্নড়ী কনি  
য়, পাঠান, শিব, প্রভৃতি জাতিরা কি কারণে  
এতদূর বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হয়? তাহারা খাদ্য  
প্রধান স্থানে বাস করে, ইহাই কি এক  
মাত্র কারণ? উল্লিখিত পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
ব্যাধিাদির কি কারণতা নাই? খাদ্য প্রধান  
প্রদেশবাসিন। বহিঃ বাসালিগের মতর অ-  
নার ও অল্প পরিমিত দ্রব্য ভোজন ও বি-  
ক্রিয় ও নিরীহ হইয়া কাল হরণ করে, তাহা-  
রা কি ক্রমে বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হইয়া যায় না?  
তাহাদিগের বংশে কি আর তাহাদিগের মতর  
সবল ও চক্ৰাকার লোক জন্মে? তাহাদিগের  
বংশ্যলোকদিগকে কি ক্রমে আর তজ্জাতীয়  
বলিয়া বোধ হইবে। খাদ্য প্রধান লো-  
কেয়া আহারাদির ব্যতিক্রম করিলে বহিঃ তা-  
হাদিগের বলবীর্ণ সাহস ও অবরবাসির ব্য-  
তিক্রম হটে; তবে বহুদেশে বাসিরা আহার  
ও ব্যাধিাদির উৎকর্ষ সাধন করিলে, ঐ সকল  
বিবরণ উৎকর্ষ লাভিত না হইবে কেন? আমরা  
বলকর উপায় অবলম্বনেরই প্রস্তাব করিতেছি,  
যাহাঙ্গর উপায়ালব্ধনের প্রসঙ্গ করিতেছি  
না। পরিভূত স্থানে বাস করিলে ও নিরবিত  
রূপে আহার, পান ও পরিভ্রম করিলে শরীর  
সুস্থ হয় বটে, কিন্তু বলিষ্ঠ হয় না। এক ব্যক্তি  
কলিকাতার নিকর্বে কোন উদ্যানে বাস ক-  
রিয়া নিরবিতরূপে আহার পান ও পরিভ্রম  
করিলে স্বাস্থ্য লাভ করিতে পারেন, কিন্তু  
তিনি যদি পুষ্টিকর ও অধিক পরিমিত দ্রব্য  
ভোজন ও ব্যাধিাদি না করেন, তাহা হইলে শ-  
রীর কখন বলিষ্ঠ হইবে না। কিন্তু সেই ব্যক্তি  
বহিঃ লগুন বা মিরটের কোন মনোরম স্থানে  
গিয়া বাস করেন, তাহা হইলে শরীর যে কেবল  
সুস্থ হইবে একপ নহে, বলিষ্ঠ হইয়া উঠিবে।  
এতদ্ব্যতীত যে সকল ব্যক্তি লগুন বা উত্তর  
পশ্চিম প্রদেশের কোন স্থানে কিছুকাল বাস  
করিয়া কলিকাতায় প্রত্যাবর্তন করেন, লগুন  
চর তাহাদিগের শরীর সুস্থ ও বলিষ্ঠ। এই  
উত্তর শুণে স্পষ্ট হইতেছে। এবিধ ইয়ল-  
কণ্য কারণের অসুস্থতানে প্রভু হইলে উদ্ভি-

খাদ্য, কারণই, পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
নিরবিত ব্যাধিাদির অসুস্থতা নিবৃত্তি-বল  
বিকারী ভাষার কারণ। ইংরাজ, কন্নড়ী কনি  
য়, পাঠান, শিব, প্রভৃতি জাতিরা কি কারণে  
এতদূর বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হয়? তাহারা খাদ্য  
প্রধান স্থানে বাস করে, ইহাই কি এক  
মাত্র কারণ? উল্লিখিত পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও  
ব্যাধিাদির কি কারণতা নাই? খাদ্য প্রধান  
প্রদেশবাসিন। বহিঃ বাসালিগের মতর অ-  
নার ও অল্প পরিমিত দ্রব্য ভোজন ও বি-  
ক্রিয় ও নিরীহ হইয়া কাল হরণ করে, তাহা-  
রা কি ক্রমে বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হইয়া যায় না?  
তাহাদিগের বংশে কি আর তাহাদিগের মতর  
সবল ও চক্ৰাকার লোক জন্মে? তাহাদিগের  
বংশ্যলোকদিগকে কি ক্রমে আর তজ্জাতীয়  
বলিয়া বোধ হইবে। খাদ্য প্রধান লো-  
কেয়া আহারাদির ব্যতিক্রম করিলে বহিঃ তা-  
হাদিগের বলবীর্ণ সাহস ও অবরবাসির ব্য-  
তিক্রম হটে; তবে বহুদেশে বাসিরা আহার  
ও ব্যাধিাদির উৎকর্ষ সাধন করিলে, ঐ সকল  
বিবরণ উৎকর্ষ লাভিত না হইবে কেন? আমরা  
বলকর উপায় অবলম্বনেরই প্রস্তাব করিতেছি,  
যাহাঙ্গর উপায়ালব্ধনের প্রসঙ্গ করিতেছি  
না। পরিভূত স্থানে বাস করিলে ও নিরবিত  
রূপে আহার, পান ও পরিভ্রম করিলে শরীর  
সুস্থ হয় বটে, কিন্তু বলিষ্ঠ হয় না। এক ব্যক্তি  
কলিকাতার নিকর্বে কোন উদ্যানে বাস ক-  
রিয়া নিরবিতরূপে আহার পান ও পরিভ্রম  
করিলে স্বাস্থ্য লাভ করিতে পারেন, কিন্তু  
তিনি যদি পুষ্টিকর ও অধিক পরিমিত দ্রব্য  
ভোজন ও ব্যাধিাদি না করেন, তাহা হইলে শ-  
রীর কখন বলিষ্ঠ হইবে না। কিন্তু সেই ব্যক্তি  
বহিঃ লগুন বা মিরটের কোন মনোরম স্থানে  
গিয়া বাস করেন, তাহা হইলে শরীর যে কেবল  
সুস্থ হইবে একপ নহে, বলিষ্ঠ হইয়া উঠিবে।  
এতদ্ব্যতীত যে সকল ব্যক্তি লগুন বা উত্তর  
পশ্চিম প্রদেশের কোন স্থানে কিছুকাল বাস  
করিয়া কলিকাতায় প্রত্যাবর্তন করেন, লগুন  
চর তাহাদিগের শরীর সুস্থ ও বলিষ্ঠ। এই  
উত্তর শুণে স্পষ্ট হইতেছে। এবিধ ইয়ল-  
কণ্য কারণের অসুস্থতানে প্রভু হইলে উদ্ভি-

উপরে যে কণ্য প্রস্তাব হইয়াছে  
স্বাভাবিকভাবে হইতে পারে। যে নিরবিত  
আহার পানাদি বিবেচনা করিয়া লাভ  
সেই মনুষ্য ক্রম ক্রমে বলিষ্ঠ হইয়া যায়।  
বিধানবিধিপদ্ধতিবদ্ধ-বসন্ত-পুষ্টিকর  
ও ব্যাধিাদি দ্রব্য পরিভ্রমকর দ্রব্য  
শরীর বলিষ্ঠ ও চক্ৰাকার হইতে পারে।  
কর করিতে পারেন। ইংরাজ কোন  
সেই পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন ও ব্যাধিাদি  
বহিঃ বসন্ত হইয়া উঠে, আর কোন  
তাহা হয় পাইয়া থাকিবে। এই হইতে হয়।  
ও কনিয়া আকপান, প্রভৃতি গীতন  
হাসিয়া পুষ্টিকর আহার ও কোন না কোন  
প্রকার ব্যাধিাদি দ্রব্য অধিকার কার্যে  
হয় কিন্তু তাহারা পারীক্ষিক নিরসন সংক্রান্ত

(২) এতদ্ব্যতীত মোটঃ বাহক, আর বা  
কাদির প্রতঃ হুটিপাত কার্য বিবেচনা করি  
বে আবাদিগের দ্বারা সংস্থাপন হইবে।



এক কেসিওরী অর্থাৎ বসন করে নাই।  
হট্টেট সত্যক অসত্যাবস্থায় ছিল,  
কর্মক নিরুদ্বাহিত জ্ঞান তৎপ্রদেশে  
পুটি কাটোবিত্ত হইয়া নাই, তখনও ইং  
ক কিছু পুষ্টিকর প্রত্য তখনও প্রভুত  
ম নীলকর্মে। অম্যান্য শীতল হেমবা-  
বধন প্রক্তি মুষ্টিপাত করিলে স্পষ্ট  
জাবে যে ইংলণ্ডবাসিন্দিগের ন্যায়  
পাতি শারীরবিধানবিৎ পণ্ডিতগণের  
বিচা হইয়াও সমল শরীর হইবার উ-  
তাহার অবস্থা ন করিয়াছে।

কিঃ জল বা ও মুষ্টিকারির উপরে  
ভবিষ্যৎ আশাবিগ্নের শারীরিক  
মু কীমতা : নির্ভর করে, তদ্বিনয়ে  
।। শারীঃ বিধানবিৎপণ্ডিতেরাও  
সিদ্ধান্তক রাইছেন। এতদ্বিনয়ে স-  
অমূল্য কে শীত সাহেব বাবা বলেন  
সার ভাষি বিয়ে সত্যগিত হইল।  
লেন " মন্তু : যে যে দেশে বাস করে  
ই দেশের ম বাবু মুষ্টিকারির তার-  
কু বাহন্য : ইয়াতে তাহার শারীর-  
নসিক শাি ইতর বিশেষ হয়।  
ও, লার্গী প্রভৃতি দেশে অভ্যস্ত  
তা ও প্রা মৎসর হয় বাস আর  
মর অভ্যস্ত বিবর্তন তত্ত্বদেশবাসিরা  
ও দুর্জল :ংলণ্ডে বিধিষ্ট হয়।  
গামি অণে ণ অঙ্গ শীতল দেশবা-  
মাযার বিলক্ষণ সলকার ও মাসিক  
বিধিষ্ট হয়। ৪৪ ও ৩৩ ডিক্রী  
রখার মধ্যে স্থাপিত দেশবাসিরা ইহা-  
ণ, তাহারাই পৃথিবীত সকল আতি  
ম হুতকার ও দেশ সত্য অগ্নিতে সল-  
বসকল দেশে সর্কল ঋতু পরিবর্তন  
দেশবাসিগণেরও ভৌতিক ও মান  
মের বিলক্ষণ প্রাদুর্ভাব হয়। বখা- ডে-  
ইউডেন, ইংলণ্ড ও তৎসমিহিত জী-  
ও কোলমার্গ সাহেব আরো বলেন  
ল তুমি সমুদ্রের অণেকা অধিক  
শ্রুতাহির নিকটস্থ, সেই সকল স্থান  
বিলক্ষণ হুতকার হইয়া থাকে। তা-  
য়াদি উপ কার্যে বিলক্ষণ রুত এবং  
সিঃ সুবিহ যোড়ের অণেকা

অধিকতর শীতলীকী হয়। তাহাদিগে।  
জীলনাটক। অধিকতর সত্যপ্রভু ও সর্গ  
শরীরিক হইয়া থাকে।

এতদ্বারা কাঠ প্রতীকমান হইতেছে যে  
বাস্তবকর মল বাবু মুষ্টিকারি বিধিষ্ট দেশে  
বাস করিলে লোকের স্বভাবতই পুষ্টিকর প্রত্য  
তখন প্রভৃতি হইয়া থাকে। অপর, হুত  
কার হয় বলিয়াই তাহার স্বভাবতঃ (৩)  
আত্মানিক বলোপার্জন প্রভুত হয়। তাহা-  
দিগের বেশি স্বভাবতঃ হয়, আশাবিগ্নকে  
তাহা চেষ্টা করিয়া করিতে হইবে। কিন্তু কি  
রূপে সে চেষ্টা করিতে হইবে, আশা-  
বি বারে পাঠকগণের গোচর করিব।

### মুতন পুস্তক ও পত্রিকা।

কয়েক সপ্তাহ হইল, কয়েক খানি মুতন  
পুস্তক ও পত্রিকা আশাবিগ্নের হস্তগত হই  
রাছে। অবকাশ বিস্তরে আমরা কেবল যে  
গ্রন্থকার ও পত্রিকা প্রণয়নকারিগণকে প্ৰা-  
মসোত্তর করিতে অসমর্থ হইয়াছি এরূপ মনে,  
আপনারাও স্বকর্তব্য সাধন করিয়া তাহাদিগের  
নিকটে ঋণ যুক্ত হইতে পারি নাই। অল  
কিয়ৎ পরিমাণে ঋণ শোধে প্রকৃত হইলাম।

১। শীতল অবেশণ। পদ্যময় গ্রন্থ। ঢাকা  
বাল্যল বাজার ব্রাহ্ম কুলের পণ্ডিত জীবদন  
মোহন মিত্র প্রণীত। ইহা ঢাকা মুতন বয়ে  
মুদ্রিত হইয়া প্রচারিত হইয়াছে। ইহাতে রা-  
নের বিরহ ও বিলাপ বর্ণিত হই হইল। আ-  
মরা কয়েক স্থান আনন্দ সহকারে পাঠ করি-  
লাম। রচনা সম্পূর্ণরূপে নির্দোষ হয় নাই ব-  
টে, কিন্তু সলিত হইয়াছে। গ্রন্থকারের কাব্য  
রচনা শক্তি আছে, তাহা স্পষ্ট বোধ হইল।  
কয়েকটি কবিতা উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ-  
কগণ স্বরংই কবির সম্ভবতঃ পরীক্ষা করুন  
উদ্ধৃত কবিতা কয়েকটি এই—

করি রান উর্ধ্ব বিলোকন,  
বলে অচেতন দেখে ভেবে সচেতন,  
তুনি যে জীবন স্বাতা, জীবের জীবন পাতা,  
এই বার বাঁচাও জীবন।

(৩) দ্যায়ানি দ্বারা যে বলোপার্জন  
হয়, তাহাকে আত্মানিক বল বলে।

আমি নই মল্লের প্রণয়ী,  
যেই মল্লের শত খায়েছিলে পানি,  
সহ্য বন্য প্রাণে, তখন বিবেচনা প্রসে,  
মুষ্টিকারি সন্নিহিত মাপি  
তুমি না কি উতাপ বাবু ?  
আমার উতাপ কেন কর মী মোচন,  
তোমার অণেক আছে, গিরা প্রভৃতির কাছে  
জানাইতে হুবেব বহুঃ  
যে বারিহ। বারি বিবেচন,  
কত মল্লী মল পূর্ণ কর অণে করণে,  
মোর বাঁচাপূর্ণ কর, হইয়া সচেতন হয়,  
বাও প্রাণ-প্রায়ার অমলঃ  
বিদ্যে বলিও প্রেরণীয়ে,  
তব প্রেরণীম সলা তালে মেহনীয়ে,  
আর কি শিখাঃ আমি, বা মেহতাৎকমাবী  
তাই বদল এম বেয়ে কিরে।”

২। পদ্য পাঠ প্রথমভাগ দ্বিতীয়বার মু-  
দ্রিত। জীবুজ বর গোপাল চট্টোপাধ্যায় ইহা  
র সঙ্কলন করিয়াছেন। ইহা নামকনিগের পা-  
ঠার্থ সংগৃহীত হইয়াছে। বিদ্যালয়ে পদ্যপ্র-  
বিরল প্রচার, বহু বাবুর এই গ্রন্থ অনেক আ-  
শে সেই অভাব দূর করিতে সমর্থ হইয়াছে  
বহু বাবু যে গুলি স্বরং না করিয়াছেন, এ-  
বং যে গুলি সংগ্রহ করিয়াছেন, উত্তরেতে  
তাহার সম্ভবতঃ পরিচর হইয়াছে।

৩। ধর্মচর্চা। ইহাতে গ্রন্থকারের না-  
অথবা কোন্ বয়ে মুদ্রিত হইয়াছে, তাহা নি-  
খিত নাই। বোধ হয়, কলিকাতা ব্রাহ্ম সমা-  
হইতে ইহার মুদ্রণ ও প্রচারণ ক্রিয়া সম্পন্ন হ-  
ইয়াছে। ইহাতে ব্রাহ্ম ধর্ম বটিত কয়েকটি উ-  
পদেশ আছে। একটি উপদেশ এতল উদ্ধ-  
হইল।

পুণ্ডের প্রতি পিতার উপদেশ।  
যে প্রিয়পুত্র! তুমি ইহাবকে লক্ষ্য করিয়া সক-  
কার্য সম্পন্ন কর, তিনি তোমার পিতা, যাত  
সুস্থান, সকল স্থানে সকল অবস্থাতে তিনি তো-  
মার একমাত্র সত্যর ও গতি, তাঁহাকে শ্রদ্ধা  
কর, সমুদার জীবন তাঁহার কার্যে নিয়ো-  
কন, এক মুহূর্তের জন্য তাঁহাকে বিমুত হই-  
বা কিও না তাঁহার জ্যোতি মুষ্টি করিয়া আপ-  
নাকে উজ্জল কর, সর্করা সেই জুমানন্দ উ-  
ভোগ কর, সংসারের কুটিলতা পারিতা-  
গ করিয়া সেই পবিত্র জুজ্ঞাপণেব সন্নিহিত দিন দি-  
সন্নিহিত হও। আমি যখন তোমাকে জাল  
পানদ কাররাছিলাম, তখন আমার মনে এ-  
আপা ছিল, যে পনমেষেরেব প্রতি অস্বস্ত  
হইয়া তুমি আমার পূর্ব উজ্জল করিবে, আমি  
সেই আশা পূর্ণ কর। ইহর তিন তোমার আ-  
শক্তি নাই, তিনিই তোমার একমাত্র পরম, তাঁ-  
হাতে আতি করিবে, অস্বাণেব সন্নিহিত তাঁহা  
প্রিয় কার্য সাধন করিবে, এইজন্য তুমি এ-  
পুণিবীতে মল প্রাণ করিগছ; অতএব তুমি

একদিনকার সুখি  
নীল, জিনী, লক্ষণ, ২  
একটি মাকারিখ মল  
রিকেল ও শুভাক ও  
কল বাহু মিজার, আন  
বোমাকর্ষণ ক্ষতি অন্য  
হইতে পারে না। পুকা  
কল পাওয়া যায়, বি  
পারে না, বদীর মধ্যে  
হুতরাং সকলেই নদী  
হয়। এই সকল ও  
বাহু কামরায় কামরায়, ২  
লকর কেনি সাহেবের  
নীলকর কেনি সাহেব  
সুখ সত্যেন্দ্র একার।  
তাহা বর্ণন করা যায়  
সাহেবের অনর্থের সুখি  
এই মীল একেতনর নদী  
অবলোকন করিলে না  
অন্তঃকরণে কোত ও  
তাহার সন্দেহ নাই।  
সাহেব একাদিগের উণ  
রি করিতে আঁটি করিতে  
হোট আদালতের অজ  
মীলকরদিগের এতি পু  
হিলেন, খোখ করি তাহা  
হইরা, খালি দেই, ৩ সাহেব



বিশ্ববিদ্যালয় নগর একটি ১০ বছরের  
স্বাধীন বালক আর একটি বালকের সহিত

মিলন সেখের ছদ্মনামের কথা জানি  
পাসা উভয় কপে হোকা, শাল, কহিলেন  
তিনি, অব্যাহত, যেখানেই যাই  
হইতে হোক, তাই নই। আপনার ব্যক্তি  
করিয়া গিয়াছেন। সত্যি বিবেচনা  
হিগের অধ্যয়ন সময়ে, তিনি কহিল  
যে তিনি দিনটি বিশেষ কাব্য কহিল  
মতঃ নিজের ব্যক্তি নির্ধারণ, মাঝার  
কেন, এবং সুলভানের মত নই।  
করিবেন। পাসা বলধর্মক মত  
করিয়াছেন। সত্যের খাতিরে  
বিশেষ যত্ন নাই।









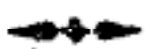
১৮ বাঙ্গালী জাহাজ আইন হইতে যে ৫ আনিতেছিল তাহা জলদগ্ধ হইয়াছে । হরীশচন্দ্রকে তাহা রক্ষা পাওনাই । কলিকাতা নাবিক জাহাজ আমেরিকা হই-  
লিবরপুলে লাক্সেমবার্গের মজুরদিগের  
খাদ্য আনয়ন করিয়াছে । এই জাহাজ-  
করাণী গবর্ণমেন্টে ওয়াশিংটনের কর্তৃপ-  
ক এই বন্দী পত্র লিখিয়াছেন তাহার। হর-  
ীশচন্দ্র সজি করুন, সচেষ্ট সাফাফ সব  
হস্তক্ষেপ গ্রহণ করিয়া যুদ্ধ শেষ করুন ।  
লাগেব বিজ্ঞাপকের সম্পূর্ণ বিবরণ জানা  
নাই ।

অসিয়ার মহাসভার অধিকাংশ রাজার  
কক্ষে এড্রেস দিতেছেন । রাজা কে এড্রেসের  
হিত তাহাদিগের এতিমিধিগণকে গ্রহণ করি-  
তে অস্বীকৃত হইয়াছেন । উহা একটি সামান্য  
জের ন্যায় প্রেরিত হইয়াছে । করাণী মহাসভা  
পুটিকে অভিমতান পর দিতেছেন, এজন্য  
পালিয়ন কেবল তাহাতে অসম্মত । ক'নস্ট উঠা  
বার অম্মোদনার্থ সঠিকের লোকেরা বিশেষ  
এক একাংশ করিয়াছেন । পিউবেলার সমুদয়  
রাণী সেমারা বেক্সিকীয়দিগকে আক্রমণ করি-  
তে প্রস্তুত হইতেছে । পিউবের সজা করা হইয়া  
ছে ।

কতকগুলি ধর্ম পূরিপূর্ণ জাহাজ ব্রিজিলের  
টী জলদগ্ধ হওয়াতে ততত্যা লোকেরা তাহা  
করে, তদ্বিধিত ততত্যা গবর্ণমেন্টে ও ইংলান্ড  
তর সজিত বিতরণ হইয়াছে ; ইংলান্ড রণতবিব  
ধাক পাট খানি জাহাজ খুঁজ করাতে  
জিল গবর্ণমেন্টে ২০টি পূরণ করিতে সী-  
ত হইয়াছেন । জর্জ গাবেল কলিকাতার প্রধান  
ম বিচারালয়ের বিচারপতি হইয়াছেন । তার  
দেবের তুল্য উপলক্ষে যাকেউয়ের বণিক সম্মত  
এক সভা করেন । এই সভা কলিকাতার গবর্ণ-  
মেন্টের বিরুদ্ধে অভিযোগ একাংশ করিয়াছেন ।

ওরাটব লু (১) লাউবরগের আলভারমান হ-  
য়াছেন । ওরাটব ক'টের পরিবর্তে অলভারবা  
হইয়াছেন । ক'বিট পদত্যাগ করিয়াছেন । ওরা  
তে শান্তি স্থাপিত হইয়াছে । ১৮৫১ অব্দের  
প্রথম শ্রমণী সভার সম্মানার্থ চিহ্ন এই জুন প্রিন্স  
ওয়েলসের দ্বারা স্থাপিত হইবে । লক সাহে  
মান জীপের সেপাটনটে গবর্ণর হইয়াছেন  
প্ৰটিন সাহেবের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত  
র প্রধান কার্য্যকারক হইয়াছেন ।

নিউউইক ২৪এ জ. জুয়ারি ।  
অভিশর হুটি হওয়াতে বৎসবাইত রাপান  
নদী খান এইটে ৫ পাবেন নাই ।



## গদগ্ন মন্টে বিজ্ঞাপন ।

বাক্সারসদস্যের সেপ্টেম্বের গবর্ণরের

আলোচনাসমীক্ষা নিয়োগ ।

১৮ ই জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

১৬ ই জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

১৬ ই জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

১৭ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

এক ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

আর এ বার্ক সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

মেসিনোপুয়ের ছোট আদালতের জজ বাবু  
বেণীমাধব সোম ১৮৬১ অব্দের ২৫ আইনের ২২  
ধারা অনুসারে তথাকার ২২ জেনীর অধীন মাজি-  
স্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন ।

উত্তর বিভাগের রেবেনিউ সলভের আর.  
বি. মার্ট সাহেব ১৮৬৩ অব্দের ৯ নিয়ম অনু-  
সারে তথাকার ডেপুটি কলেজের ক্ষমতা পাই-  
য়াছেন ।

এক, জে. আলেককণ্ড সাহেব কীকুনিয়ের  
জনা তগলপুয়ের এতিমিধি মাজিস্ট্রেট ও কলে-  
জের হইবেন ।

১৮ ই জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

১৯ ই জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

১৯এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

এক, আর ককবেল সাহেব মেসিনোপুয়ের  
মাজিস্ট্রেট ও কলেজের হইবেন ।

সি. জে. মাকেন্স সাহেব বেহাভের মাজিস্ট্রেট  
ও কলেজের হইবেন ।

আসামের পুলিশ সহকারী জুগারন্টেগেলে  
সি ডি মাকসুইন সাহেব ২২লি হইয়া মিনাক-  
পুরে গিয়াছেন ।

১৯এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

মৌলবী মহম্মদ কবিউদ্দিন খাঁ এবং মুন্সি  
হিরালাল সাবের শিকাসংক্রান্ত লোকাল  
কমিটির খেবর হইবেন ।

মজলদিস অতিরিক্ত সহকারি কমিসনর  
সি. পি. ক্রস সাহেব ১৮৬৩ অব্দের ৯ আইনের  
১৮ ধারা অনুসারে তথাকার ২২ জেনীর অধীন মাজি-  
স্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন ।

সি. বেথুন সাহেব ১৮৬২ অব্দের ৫ আইনের ২২  
ধারা অনুসারে তথাকার ২২ জেনীর অধীন মাজি-  
স্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন ।

২০এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

২১এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

এইচ. এস. টমসন সাহেব কিসমতীর জে.  
আলমতের জজ হইবেন, কিন্তু যে পর্য্যন্ত  
কোন অল্পমতি না হয় তত দিন বাকরণ  
এতিমিধি লিখিল জজ থাকিবেন ।

২৪এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

২৪এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

২৪এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

২৪এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

২৪এ জে. জে. স্টোন ওয়ার্থ সাহেব জাহাজ সম্পান  
ক হইবেন ।

## পত্রপ্রেরকের প্রতি ।

শিবপুর পত্র প্রেরণে গুলি উৎকৃষ্ট হয় নাই  
কবিরূপের মজলদিস অতি সামান্য ।

সবিশেষ না জানিয়া বাকুইপুর নিবাসিন  
এটার কথা বিধেয় হইতেছে না ।

গোপালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়ের পত্র প্রেরণ  
যোগ্য নহে ।

স্বরূপ বিদ্যার কারিকুয়াটি আমাদে  
বনোমিত হইল না ।

পূর্ণচন্দ্র সাহেবের পত্র প্রকাশ করা হইত  
হইত না ।



## থেরিত ।

## ঈশ্বর সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহোদয়ের ।

ঈশ্বরসাহেব সেম বছরমণ্ড ইতি  
একটি বিজ্ঞাপন বিগত ৭ই মাঘেব আপন  
র পত্রিকায় প্রকাশিত দেবির বিজ্ঞাপন

চট্টোপাধ্যায়। তিনি কবিবর ৬ বছরমোহন তর্কালঙ্কার এখনি পদ্যময় বাসবদত্ত। এই দুজিও কবিভেদেই। এ কি কথা? তিনি কাঁটার নিকটে এই পুস্তক দুজিও করিবার অসমর্থ পাইলেন। তিনি কি জানেন না যে তর্কালঙ্কার মহাশয় রচিত বাবদত্ত পুস্তক তর্কালঙ্কার পরিবারের একমাত্র জীবমোহনময় অরূপ। তৎসময়র আশ্রয়গেহে স্থল ধন। তাই ৬৭৭ কবিতে চতুঃসংস্করণ করা নিভাত্ত মায় বিকল্প কার্য সম্পন্ন নাই। বোধ হয় সেন মহাশয় বিশেষ না জানি এই একটা কথ্যে হস্তক্ষেপ করিয়াছেন। এক্ষণে সেন মহাশয়কে আমরা জানাইতেছি। কাব্য প্রাক্তন মহাশয় যখন জীবিত ছিলেন, তৎকালে তাঁহার পিতৃব্য মহাশয় বাসবদত্ত। পুস্তক দুজিও করিবার নিমিত্ত তাঁহাকে কুপ্য ভূয়ঃ অসমর্থ করিয়াও সম্পত্তি লাভে সমর্থ হন নাই। যেহেতু তর্কালঙ্কার মহাশয়ের পঠনপাঠ বাসবদত্ত। অসমর্থ হইয়াছিল, পরে উক্ত দুজিও কবিত্তে তাঁহার মজা। বোধ হয় তাতে তাঁহার পিতৃব্যকে বান্ধিয়া রাখিয়াছিলেন। তাঁহার পিতৃব্য সত্য ৫ কালেকের লেখক ছিলেন। যজ্ঞবিজ্ঞেব প্রভৃতি ১২৬৪ সালে তিনি পদ্যভাষ্য ২২ এই সবতে তর্কালঙ্কার মহাশয় স্বপ্নদাবাদ প্রভৃতি বাসবদত্ত পণ্ডিত ছিলেন। তিনি বা টিতে কিয়দিক নিবাস করিয়া থাকিয়া অর্থের কামজি হওয়াতে যুবপিতৃদাদে পক্ষ লিখিয়া উক্ত পুস্তক খানি ছাপাটবার মত চাহিয়াছিলেন। তৎকালে প্রভৃতির পরে তর্কালঙ্কার মহাশয় এই কথা লিখিয়াছিলেন যে বাসবদত্ত অপনাকে দেওয়া পেন, উঃ আগমন নামে ছাপাইবেন। আমায় যত্নে ছাপা হইতেছে। কপ এক শ না হয়। ইত্যাকব লিখন মজাতে পুস্তক ছাপাইতে তাঁহার অসমর্থ বিবেচনা করিয়া তর্কালঙ্কার পিতৃব্য ফালন। তাঁহার যে বিষয় সম্বন্ধেই মহাশয় তাহা আমায় করিতে এয়াবৎ সাহসী হই নাই। এক্ষণে সেন মহাশয়কে জানা সেই পুস্তক ছাপাইতে যত্ন হইয়াছেন। এক্ষণে তাঁহাকে সম্প্রদায় নিমিত্ত তিনি সত্যকরণ বিষয় কিছু ব্যয় করিয়া থাকেন তবে সেই ব্যয় আমায় দিব, তিনি নাহ, সেনের পুস্তক সোমপ্রকাশ যজ্ঞে পণ্ডিত। ৬৭৭, ৭৭৭৭ লিখিয়া অধিক গোলাগোলে আশ্রয়ক ৬ ৭ ৮।

১২৬২ } আশা, বলস চট্টোপাধ্যায়  
ইক এন } এভেড উক্ত ৮।  
বিবরণ }

ঐযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয় সমীপেয়।

১২৬২ সনের সোমপ্রকাশে কুণ্ডল  
লিখিয়াছি ঐযুক্ত চট্টোপাধ্যায় তর্কালঙ্কার  
টাকা ১২৬৭ সনে কলিতে বাগদান নির্বাহ  
লিখ টাকার করিয়াছেন, তদ্বিধে এখন আ  
১২৬৭ সনে কপা বসিবার প্রয়োজন নাই, ১২৬৭

র উত্তর বিদ্যাভূষণ দিলেই ভাল হয় (১)। তর্কালঙ্কার মহাশয় কুতূহল পাত্রে কন্যার বাগদান নিবেদক মহাবচনকে অগ্রসূতপ-বলিয়া স্বীকার করিতেই আমায় পরিচোষ করিয়াছে। তদ্বিধে বাহ্য বস্তব্য এক্ষণে ডাকা একাল কবিত্তেছি।

আমাদিগের দাক্ষিণাত্য বৈদিক জৈনীর মধ্যে কিরূপ আদান প্রদান তেহে কুলীন, বংশজ ও মৌলিকের ব্যবহার তেন প্রচলিত আছে তাহা জ্ঞাত করা আবশ্যক, অতএব তাহা লিখিতে হইল। আমাদিগের কুলীনে কুলীনে আদান প্রদানে বাগদান ব্যতীত গতাশ্রয় নাই। উঃ কন্যা পাত্রে একমাস বয়স্কবের পরেই কন্যা পান দিব করিয়া সম্পাদিত হইয়া থাকে, তাহাতেই কন্যা পাত্রে সমান বয়সে বিবাহ হয়। অতএব ডাকা অর্থে কুলীন ব্যবহার। এ ব্যবহারটি মৌলিক ও বংশজদের নাই, তাহারিগের র অন্যান্য জৈনীর ও অপরাপর জাতির মায় বিবাহের পূর্বে কন্যা পান দিব করিয়া বিবাহ হয়। এই ব্যবহারটি কেবল কুলীনের ব্যবহার বলিয়াই আশ্রয়। উঃ কন্যা কুলসম্বন্ধ বলিয়া থাকি তাহাতে কুলীনে কুলীনে আদান প্রদানে কুতূহল কুলীন পাত্রে কুলীন কন্যার বাগদান হইয়াবৎ কোনরূপেই সম্ভাব্য নাই। কুলীনের বিবাহের পূর্বেই হউক বা পরেই হউক এই বাগদত্ত কন্যা অনাগা হইলে সেই পাত্রে বংশজ ও মৌলিকেরা কন্যাদান করে এবং বিবাহের পূর্বেই পাত্রে অনাগা হইলে সেই কুলীনকে ন্যাক আন কুলীনেরা গ্রহণ করে না, মৌলিকেরাই বিবাহ করে, তদ্বিধে মৌলিকেরা মৌলিকের কন্যাও গ্রহণ করিয়া থাকে। বংশজদিগের কুলীনের সন্ততি আদান প্রদান উত্তর ব্যবহার হয় না, তাহারা উক্তরূপ কুলীন পাত্রে কন্যার কিছু মৌলিকের কন্যা গ্রহণ করে। আমাদিগের কুলীন, বংশজ ও মৌলিকের এইরূপ তিন প্রকার ব্যবহার প্রচলিত আছে।

আমি আমাদিগের কুলসম্বন্ধ প্রথা পবিত্র বিবরণ প্রস্তাব পুস্তকে যে কুতূহল পাত্রে কন্যার বাগদান নিবেদক মহাবচন প্রমাণ দিয়াছি, সে নিবেদনটি যদি অগ্রসূতপ হইল, তবে স্মৃতি পাত্রে যে দ্বিতীয় কুতূহল বার বিবাহের বিধি আছে, অবশ্য তাহাকে অগ্রসূত বলিতেই হইবে। অতএব আমাদিগের বংশজ ও মৌলিকেরা বা অন্য অন্য জৈনী ও অপরাপর জাতির যে কুতূহল পাত্রে কন্যার বাগদান করে, তাহা যদিও স্মৃতি মতে, লিখ, প্রমাণ ও নহে, তাহাকে অগ্রসূত বলিতেই হইবে। যদিও এই নিবেদনটি অগ্র

(১) যেহেতু গত ৩১৭ ভারতব সোমপ্রকাশে বিদ্যাভূষণ স্বরং লিখিয়াছেন যে “বাস্তবিক পক্ষে তর্কালঙ্কার জান কর।” “বিবাহের জন্য অন্য যত্ন বহন করিত হইবে, তখনও বাসবদত্ত বহিত হইবে না। আমি আমার কন্যার অমৃতবে পূজের সন্ততি বিবাহ দিব, এপ্রতিজ্ঞা তখনও করিতে হইবে সন্দেহ নাই। বিবাহ উত্তীর্ণ না গেলে এ প্রতিজ্ঞা উত্তীর্ণ নাইবার সম্ভাবনা কি?”

পত্র নিবেদন হইতে, তাহা লিখি। কুল দাক্ষিণাত্য বৈদিক জৈনীর মধ্যে বংশজ ও মৌলিকের ব্যবহার তেহে কুলীনে কুলীনে আদান প্রদানে কন্যার বাগদান করিবার সম্ভাবনা এই অগ্রসূত নিবেদনটি আশ্রয়। পক্ষে প্রকৃত নিবেদনকে স্মৃতি তর্কালঙ্কার মহাশয় বিবেচনা করি নেন উপস্থিত করিবেন ইতি

১৫ কালুজ ১৭৮৪  
ঐযুক্ত সোমপ্রকাশ

ঐযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
মহাশয় সমীপে

হয় মাস অতীত হইল, আমি পানি আদান করিয়াছি। এ অকালের দুই ন মগরীতে অবস্থিতি করিয়া তৎকালে বিষয় অবগত হইয়াছি। গরুড় জৈনী শোভা, অধিত্যক কের বকসিদ্ধ বার লতা উঃ জৈনের অভ্যাসার্থ্য সৌন্দর্য, অপেক্ষাকৃত অস্বাক্ষর ও ইত্যাদি বিবিধ সৌন্দর্য অবলোকন করিয়া কিত হইয়াছি। বাবদত্তের একমাত্র, গরুড় করিয়া যদিও এ অকালের উক্তম স্থান বলা যায় বটে কিন্তু এ নান্য বিষয় অবলোকন করিলে “হাস” একথা বলিতে আর ইচ্ছা হইবে। বোর কর্তৃক কেহের এটি মেলাপাতি তিনের মতল ও বিধি হইতে হয়। র বীতি মতি, কি আচার পদ্ধতি, ধর্ম প্রণালী যে দিকেই যে বিষয়েই বর্ণ করা যায় তাহাতেই সুশিক্ষিত হইতে হয়, বিশেষতঃ এতৎ বাসবদত্ত কুলগণের বিষয় পর্য্যবেক্ষণ করিতে আত্যন্তিক কোতের উদয় হইতে হইবে। মের আচার ব্যবহার কাব্য প্রণালী লাব ধারণ করিয়াছে। আমাদিগের কুলসম্বন্ধ হইয়াছে হস্তকিরণ, পুত্রবাণে পুত্রবাস্তব হইয়াছে এবং ইহার, কি কি নিমিত্ত করিতে পারিয়াছেন বটে কিন্তু তাহাতে সত্যের নজল হওয়া হইবে থাকুক কেবল কুলসম্বন্ধ পণ করিতেছে তাহাতে পরিবর্তন হইয়া দিবারিত হইয়া অধ বর্জিত নাই হইয়া বহু তাহাতে বহু পায়বার ক্ষীণ করিতেছে। এই বহু সম্প্রদায়ের বাহ্য মতাতা বেশ কবার অধিক সাধাভিক ভক্ততা এবং মৌলিক মততা দেখিলে আপ ভঃ আশ্চর্য হইতে হয়, তখন বোধ হইতে থাকে যেন ভারতের সৌন্দর্য্য হইয়াছে হইয়াছে কিংবা কি পরিচাপ! যখন উঃ জৈনের চরিত্রের অপবাণ্য স্মৃতি পথে উপস্থিত হয়, তখন আমাদের সকল আশা সমস্ত সান্নিভেদ হইতে থাকে। সে তাহ কেবল পণ্ডাং আচরণে কলকিত দেখা যায়। ইত্যাদি



|      |                      |                     |
|------|----------------------|---------------------|
| ১১   | মেদিনীপুর লাইব্রেরি. | মেদিনীপুর           |
| ১২৬৯ | অগ্রহারণ হইতে ৭০     | দৈনিক পত্রিক        |
|      |                      | কোং ৫০              |
| ১২   | মহেশচন্দ্র বিশ্বাস   | কলিকতা কলেজ         |
| ১২৬৯ | কাঙ্ক্ষা হইতে ৭০     | দৈনিক পত্রিক        |
|      |                      | কোং ২৫০             |
| ১৩   | ললিতময় রায়         | মেলা, কলিকতা        |
| ১২৬৯ | মাঘ হইতে ৭০          | আবার পত্রিক কোং ৫০  |
| ১৪   | মহাশয় চৌধুরী        | মহাশয় চৌধুরী       |
| ১২৬৯ | শ্রী ২ হইতে ৭০       | দৈনিক পত্রিক কোং ৫০ |
| ১৫   | কালীকান্ত রায়       | চট্টগ্রাম           |
| ১২৬৯ | মাঘ হইতে ৭০          | আবার পত্রিক কোং ৫০  |

অগ্রিম মূল্য না পাঠান হকবলে মোদপ্রকাশ প্রেরণ করা যায় না।  
 উহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ টাকা মত  
 নিক ৫৫ টাকা, ছয় মাসের মধ্যে মূল্য লওয়া  
 যায় না।  
 বাঁকাবা মোদপ্রকাশের মূল্য কোম্পানিটি  
 পাঠান তাঁহারা এক অর্থবা আধ আনার অর্থ  
 মূল্যের ও রসীদের টিকিট না প্রেরণ করে।  
 যখন যিনি মকসদ হইতে মোদপ্রকাশ, ব  
 মূল্য পাঠাইবেন তাহা দেন রেজিস্ট্রি  
 দেন।

যাঁহাদিগের মূল্য দিবান সময় অতীত হই  
 য়। যাঁহা, সঙ্কটময় সময় প্রতীক; কবির  
 প্রাণে লোমপ্রকাশে, প্রচার করিয়া; তাঁহা  
 পর চিহ্ন লিখিয়া জীবান হইবে, যমভা-  
 হাতে কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাও যাঁ  
 কাগজ বন্ধ হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিহ্ন বেয়া-  
 বিং পাঠান হইবে। জলিকাতা সঙ্কট  
 কোষে আবাদিগের নামে চিহ্ন আটক  
 করা শীত পাউষ।

কেন্দ্র সোমবারে বিজ্ঞাপন দিতে টক  
কবিলে জীহাকে প্রথম বার প্রাপ্ত পত্র ১০  
আন দ্বিতীয় বার ১০ আন। তৃতীয় বার ১০  
আন দ্বিতীয় বার ১০ আন। চতুর্থ বার ১০  
আন দ্বিতীয় বার ১০ আন।

এই পত্র কলিকাতার পুর্বে মাঠের। বেল ৩৫৭  
মাণ্ডুর টেনমেন্টে লক্ষিত চাকরিদেতার ঐক্যবাদের  
বিদ্যাক্ষেপের ব্যক্তিগত প্রতি সোমবার প্রকাশিত।

৫ ই কাকুন } শ্রীজয়গোপাল বন্দ্যোপাধ্যায়  
১২৬২ } বহরদপুর।

|  |              |
|--|--------------|
| শ্রীযুক্ত বাবু ভবভূষণ ঘোষাল            | কটেগড়       |
| ১২৭০ টৈলাখ অবাধ টেজ পদ্যান্ত কোং ১৩০   |              |
| " তারিণীচরণ চট্টোপাধ্যায়              | পটলডাঙ্গা    |
| ১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্যন্ত | কোং ১০ ঐ     |
| " কালিদাস বন্দ্যোপাধ্যায়              | দেবগ্রাম     |
| ১২৬৯ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্যন্ত            | কোং ৫ ঐ      |
| " সুর্গানন্দন দাস                      | বিদিশাল      |
| ১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্যন্ত | কোং ১০ ঐ     |
| " রাধাগোবিন্দ দত্ত                     | মলৌকুশপুর    |
| ১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত         | কোং ৫        |
| " কালীচরণ চট্টোপাধ্যায়                | দিনাজপুর জুল |
| ১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত         | কোং ৫ ঐ      |
| " মহিমচন্দ্র দাস                       | চুনাগলি      |
| ১২৬৯ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্যন্ত            | কোং ৫ ঐ      |
| " হুম্মাবনচন্দ্র দাস                   | মণিরাম বাটী  |
| ১২৬৯ কাছন্দ হইতে ৭০ মাঘ পর্যন্ত        | কোং ১৩       |
| " জীপতি হুগোপাধ্যায়                   | শান্তিপুর    |
| ১২৬৯ কাছন্দ হইতে ৭০ মাঘ পর্যন্ত        | কোং ১৩       |

পূজসম্বোধে সোমপ্রকাশে শত্রুনাথ বাবুর  
আইকোর্টের বিচারালয়ে আসীন হইবার সংবাদ  
জ্ঞাপিত হইয়া বার পর নাই আক্লান্বিত হই  
লেন। ইহা হইল বা কেন, ইহা অপেক্ষা অক্লান-  
বিত্ত হইবার আর কি হইতে পারে? বোধ হয়  
আইকোর্টের বিচারালয়ে বা জেলগে তিন সহস্র  
বাবুই এই সংবাদে আক্লান্বিত হইরাছেন।  
এই নিরোধ দ্বারা চিত্তিত ও অচিত্তিত কর্মচারী  
বলিয়া যে একটা নির্ভীত জন আছে তাহাব কি-  
ছু ভয় হইল হইল হইল, কিছু লোক একান্তে ভয়  
হইল না, বোধ হয় সে আশা পূর্ণ হইবার সময়  
এখনও উপস্থিত হয় নাই। বাহা হউক, শত্রু  
বাবু যে সকল লোকের পরামর্শের অধিকারী হ  
ইয়া দীর্ঘকাল জুখাতির সহিত সময় আদা-  
লতে ওকালতী করিয়া উক্ত জন আদালতের বি-  
চারপতি হইয়া উক্ত সহস্র টাকা বেতন পাইতে

# সোমপ্রকাশ

“সবর্ব্যাপী হুজুর্নিস্‌সায়া মাখ্‌সিবঃ খবরুল্লী মুতিনুল্লী ন হীযত্‌তা।”

৫ জরি।  
১৭ নং পাতা।

সন ১২৬৩। ২৬এ কালশুন। ইং ১৮৬৩। ২ মার্চ

মাসিক মূল্য ১ টা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০

সোমপ্রকাশের অবস্থা

সংক্ষাৎ বিজ্ঞাপন।

সোমপ্রকাশের আর এক করসা হুজি  
ইরছে। অতঃপর বাহারী যাহানিক  
ম্য দাস করিয়েন, তাহারিগকে ৫০০ সারফ  
৮৮ টাকা দিতে হইবে, বার্ষিক অগ্রিম  
ম্য ১০ টাকা। অপরিবর্তিত রহিল।  
কবলের প্রাক্তিগকে ৫০০ ডাক বাহুল  
দিতে হইবে। বার্ষিক অগ্রিম ১০০ ডাক,  
কব বাহারী মূল্য প্রেরণ সংক্ষাৎ চিত্রি রে  
জটরী করিয়া নিমেন, তাহারি তাহারি যত  
চারি আশা) বাব পাইবেন। বাহারী দত  
ডাক বাহুল দিতে অসমর্থ হইবেন, আশা-  
বেন আশাধিগের সংক্ষাৎ হইলে তাহারি-  
গকে বাহুল দিতে হইবেন না।

বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিলায় পতঃপাতী বাটকেয়ারি  
মহম্মদপুর নামে যে পতনি তালুক পঃ  
তালা করপতনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। বাহার সেই তালুক করপতনি লই  
বার অথবা অন্য করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার জাজ্‌ন জিন্দ কোম্পানির নিক  
ট আবেদন করিলে সবিশেষ রক্ষা অনিতে  
পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

রাববার, হকু উকুর রাস্তা মুসিৎ, গোব  
বিরাণ, মিড্যান্স টেবলগী, ককমোহন  
উইচিং প্রকৃতি প্রাচীন কবিত্তালাদিগের  
অন্য উত্তম গান্ধুলি সংকলিত ও একত্রিত।

করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য  
১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

বহুবাক্য টিউ ৩৬ নং বাটী।

জীবদুগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

বিজ্ঞাপন।

দুত মহাশয়। মানমোহন তর্কালতার প্রৌ  
ত বাসবদত্তা এই কের ছাপাইতে পারিবেন  
না। কারণ তর্কাল পিতৃবা ৮ হাজার ৮০০ টা-  
বা মহাপ্রকৃতি উক পুস্তক ক্রিদি জান করিয়া  
ছেন। তৎপরে আমরা তাহার পিতৃবের উ-  
ত্তরাধিকারী বর্তমান আছি। আমরা তির  
বাসবদত্তার দান বিক্রয়ের স্বাধিকার অন্য  
কাহারও নাই। অতএব জীবদুগ বাব রাবদান  
গেন মহাশয় নিখিল প্রবর হউন এই আশা  
দিগের অন্তরে।

জীবদুগোপাল চট্টোপাধ্যায়  
মুদ্রিত।

১২৬৩। ২ কাশুন

বিজ্ঞাপন।

ডাক্তর হানিগ বরজর সাহেবের এসিষ্ট  
ওলা টঠার ডিম্পলারি একপে খবরতলা বাজা  
বের উত্তরে দালাদাদার মসজিদের নিক প  
নিমেন কসাইটোলা টিউ টের ৩৬ নং বাটী-  
তে স্থাপিত হইয়াছে ৭ বাহার উবখ কিদা ও  
লাউঠ। রোংগর চিকিৎসার প্রয়োজন হইবেক  
উক্ত বাটীতে আমার নিকট আইলে অথবা  
নবান পাঠাইলে অরিলখে এবং অল্প মূল্যে  
উবখ চিকিৎসা ও ডাক্তর হানিগ বরজর সাহে  
বের বাহি পাইবেন ইতি

আবদুল আলিম  
অধ্যক্ষ

বিজ্ঞাপন।

টবলু হার্ক এও মল ম'হে আ  
বীলবীজ বিক্রয়ের আবেদনী কুটী  
খোলায় হাল আমদানী পাকিস ৭  
উত্তম দুতম বীলবীজ বিক্রিয়াই  
আছে বাহার বাহা আবেদন সি  
চিত্ত মূল্যে পাইবেন।

হার্ক ও ৩

সোমপ্রকাশ।

১৭ এ নোববার।

বেডিকাল কালেকের বালালা

ও মধ্যম টীবর্স।

কলিকাতা বেডিকাল কালেক  
জিলাল নরজাণ টীবর্স তত্ত্ব বা  
সের এতি বেকপ অনাধ্য আট  
রাহেন, তাহা আশাধিগের পা  
অরণ আছে সন্দেহ নাই। লেপে  
র্নর বালালা কালেকের হাজনিগের  
পরিচালন মহাশয় মুদ্রিত অকথিত  
ডিয়ার একাল করিয়াছেন যে  
পাল কলিকাতা পুস্তকাল কা  
৭ করেন। কিন্তু তাহার ধনুর্ডন  
রাহে, তিনি কোন রূপে সে চি  
তে চাহেন না। তিনি এত দিন  
ন করিয়া কাটাইরাহিলেন। অ  
কপ শুনিলাম, আর তাহার তে  
করিয়া সারিবারও পথ বন্ধ হইয়া  
সোমবার লেপেন্টনর্ট গবর্নর সার্ট  
আজ্ঞা করিয়াছেন যে তিনি



পুনঃ অবশিষ্ট করেন। পাঠক

১২৫৫ সূনিয়া কি মনে করিলেন, তদ্বিগত আশার করিরাছেন ? তাহা করেন নাই ; এখনও তিনি বিবেচনায় যদি কোন উপায়ে ট গবর্ণরের আজ্ঞার ঠিকলা স পরিতে পারেন।

ব্যবহার দ্বারা দুই বিষয় সম্ভব। এক, প্রিজিপালের স্বত্বসম্বন্ধ মোব আছে, অন্যথা তিনি কেন লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের আজ্ঞার মণ করিবেন ? দ্বিতীয়, তাঁহার মোবেই বাঙালী ক্লাসের হা লজ পরিচাল্য করিরাছে। তাহা হইবে, তিনি তাহানিগের প্রতি প্রশংসা করিতেছেন কেন ? গবর্ণর হইতেছে তিনি এক সম্মানে লিখিরাছিলেন, তিনি ক্লাসের প্রতি চূর্বাবহার করেন ত্রা কুলোকে কুমন্ত্রণার তদ্বশ করিতেছে। কিন্তু তিনি যদি না করিরা থাকেন, তাহানিগের হার শত্রুকার কথিবার কোন হা যাইতেছে না ; তাহারা নির্ভু তঃ অন্যের পরামর্শের অনুসরণ পনাশিগের বালকতার পরিচর লিঃ। তাহানিগের প্রতি কল্পণাই গারে, যাহার ও তি কল্পণা জমে তি কি নির্দর ব্যবহার সম্বন্ধ হইবে, নর্থাল চীফস এক দুই যদি পোপনে লেপ্টেনেন্ট গব ঞ্চায় জাত হইয়া কার্য করি হইলে নিঃসংশয় মানে মানে পারিতেন। বোধ হয়, এইবারে জা হইল, তিনি ইহার পর অবশি হইয়া কল করিবেন। এই ত্রিভ হইবার উপক্রম সময়ে মিলাম গভ স্ত্রাবার হাজিগতক আকান করা হইরাছে।

চাকপ্রকাশ সম্পাদকের দণ্ড।

মানিকগঞ্জের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট বাবু শ্যামচাঁদ নাথ উক্ত সম্পাদকের দণ্ডস বে অভিযোগ করেন, তাহাতে সম্পাদকের ১০০ টাকা দণ্ড হইরাছে। পাঠকগণ এ সম্বন্ধ গত বারের বিবিধ াহায়ে দেখি রাছেন। কিন্তু এবারে আমরা ঢাকাপ্রকা শে দেখিলাম, তদ্ব্যতীত জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট অন্যান্য করিরা সম্পাদকের দণ্ড করিরা ছেন। এখন, ঢাকাপ্রকাশ বলেন, শ্যাম চাঁদ নাথ ঢাকাপ্রকাশের নামে উৎকোচ গ্রহণ সংক্রান্ত অভিযোগ করেন, কিন্তু ঢাকাপ্রকাশে শ্যামচাঁদ নাথকে উৎকোচ গ্রাহী বলিরা কুজাপি লিখিত হয় নাই। অভিযোগ একরূপ ও বিচার অন্যরূপ এ সামান্য অদ্বুত নয়। অথবা অদ্বুতই বা কি ? অনেক আদালতেই আজি কালি ঐচ্ছিক বিচার হইতেছে। হিলির বিষয়ে কি হইল ? তাহার দালা হলে উপস্থিত থাকিবার অভিযোগ আদালতে উপস্থিতই হইল না। বিশেষতঃ রাজসংক্রান্ত তথ্যচা রির প্রতি রাজকথচারির কিছু রেহ হইরা থাকে। উপস্থিত হলে শ্যামচাঁদ নাথ ডে পুটি মাজিষ্ট্রেট অভিযোক্তা, আর বিচাব কর্তা জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট। তাহানিগের প- রম্পার রেহবান হওয়া অযুক্ত নহে। তা হারা যদি পরম্পরের প্রতি রেহন্বা হন, অন্য অনারাদে পরাক্রম করিতে পারে। অপদেহের নিকটে পদেহের পরা ত্ব কিরূপে সম্ভব হয় ?

দ্বিতীয়, জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট ঢাকাপ্রকা শের বক্তব্য এবং তাঁহার পক্ষসমর্থনকা রির বাক্য যথোচিতরূপে গ্রহণ করেন নাই। তিনি পূর্বাধিই শ্যামচাঁদের নিকৈ চলিরাছিলেন। যাহা হউক, ঢাকাপ্রকাশ কোনরূপে বেন তদ্রোৎসাহ না হন। এই রূপে যদি বিচার কার্য অব্যাবিধি নির্ভা হই, সবিচার প্রত্যাশা কি ?

গুরুট্রেনিঙ স্কুল।

আমরা ১২ই ফাল্গুনের বোম্বাইতে একসংক্রান্ত যে প্রকাশ লিখিরাছিল তাহা উক্ত বিদ্যালয়-পক্ষপাতী এক ব্যক্তি হার প্রস্তাব করিরা এক পত্র জেরণ করিরাছেন। পত্র যথাহানে প্রকটিত হইল। পত্রপ্রেরক বলেন যে সকল াক্য হাশয়ের কোন ক্রমেই প্রচুরিবার সম্ভাবন নাই, তাহার প্রত্যাখিত গুরু ট্রেনিঙ স্কুলে অব্যয়ন করিতে বাইবে না। ১৬। ১৭ বৎ সর প্রবৃদ্ধি ৩০। ৩২ বৎসর পর্যন্ত বয়স ব্যক্তিরাই ঐ বিদ্যালয়ে অব্যয়ন করিবেন আর এক বৃৎস লিখিরাছেন “নর্থাল স্কুল সকল বেকপ উপাদানে নির্মিত হইরা থাকে। ট্রেনিঙ স্কুল সকলও সেইরূপ উপাদানে নির্মিত হইতেছে। নর্থাল স্কুলের ভূতপূর্ব শিক্ষকেরাই ট্রেনিঙের শিক্ষকতা করিয়া নিযুক্ত হইরাছেন।” এত দ্বারা প্রতীক্ষমান হইতেছে, গুরু ট্রেনিঙ স্কুলকে কপান্তর নর্থাল বিদ্যালয় বলিরা প্রতিপন্ন করাই পত্রপ্রেরকের অভিপ্রায়। ইহা যদি কপান্তর নর্থাল বিদ্যালয় হয়, তথাপি আমাদের আপত্তি নিরাকৃত হই তেছে না। বক্তব্য এযে প্রয়োজন কি যে কয়েকটি নর্থাল বিদ্যালয় আছে তা হার উন্নতি করণ, গুরু ট্রেনিঙ বিদ্যালয় যার্ষ প্রদত্ত অর্থ (৩০০০০) প্রদান করি লে ট্রেনিঙ বিদ্যালয় অপেক্ষা বহুগুণে অধিক কল লাভ হইতে পারে। গুরু ট্রেনিঙ স্কুলের নিমিত্ত বক্তব্য ইনস্পেক্টর নি যোজিত হইরাছেন ; ইহার নিমিত্ত একটি অতিরিক্ত ইনস্পেক্টর পটদর স্থিতি হই রাহে, ইহার গৃহের ব্যয় ও বক্তব্য সর জামি খরচ লাগিবে, অথচ এখানে নর্থাল স্কুলের ন্যায় শিক্ষা হইবে না। শেষত পত্রপ্রেরক স্বয়ংই স্বীকার করিরাছেন। একপ যদি হইল, বক্তব্য ট্রেনিঙ স্কুল করি রা হুধা অধিক-ব্যয় স্বীকার করিবার প্র য়োজন কি ? জজাবরানের ব্যয় ও বাজে

সৌম্যকাম ।

માહુ એમનિન સ એલકેમી  
 માહુનગ ।

সকলেরই দৃষ্টি নিপতিত রহিয়াছে এবং তাঁহার বাক্যে দেশের ভবিষ্যৎ শুভাশুভ অনুভূত রহিয়াছে । কাশী ও কানপুরে তিনি সর্দারদিগের বিজয়ে যে বক্তৃতা করেন, তাহাতে সকলেই আশ্চর্য প্রকাশ করিয়াছেন । কিন্তু আমরা অতিশয় চমকিত হইয়া কহিতেছি, তাঁহার আশ্রয় রায় বক্তৃতা সে প্রকার হয় নাই । ঐ স্থানের দরবারে মহারাজ সিদ্ধিলা, ছুপাঙ্গের রাণী, রামপুরের নবাব, ভরতপুরের রাজা প্রভৃতি উপস্থিত ছিলেন । রাজগণ সভাস্থ হওয়াতে তাঁহাদিগকে সভাস্থ করিয়া লাভ এলগিন বলিলেন ।

“আমার এ কথা বলা অনাবশ্যক যে  
সৌভাগ্য ক্রমে ভারতবর্ষে দিন দিন শান্তি  
বিস্তারিত হইতেছে। গৃহশান্তি দুরীভূত  
হইয়াছে, এবং বহিঃশান্তিও ইংলণ্ডের  
সেনাপতির প্রত্যাবর্তন ও বলবায়ের সহি  
মা অবগত হইয়াছে। ৩ তৎপরে তাঁহাদিগকে  
বীর বীর রাজ্যে বিদ্যা ও সজ্জতা এবং  
শ্রম এবং সহমরণ ও কন্যাহত্যা প্রভৃতির  
নিবারণ বিষয়ে উৎসাহ দান করিয়া শেষে  
গবর্ণর জেনরল অফিসার পূর্বক কর সম্মান  
ন করিয়া বলিলেন “ ভারতবর্ষের প্রধান  
অধীশ্বরীর প্রতিমূর্তি স্বরূপ এদেশে শান্তি  
রক্ষা করা আমার প্রধান কর্তব্য। ই  
হার জন্য ইংলণ্ডের অধীনে  
এক বৃহৎ ও সাহসী সেনাদল রাখিয়াছেন  
অতএব যে ব্যক্তি অসম্মান পূর্বক সাধা  
বণ শান্তি তৎপদ কার্যে প্ররম্বিত হইবে, তাহার  
দমন ও যাবতীয় বিশৃঙ্খলা নিবারণ বিষয়ে  
আমি অণুমাত্র বিলম্ব বা সঙ্কোচ করিব  
না। আবশ্যক হইলে এই সেনাদলকে  
আমি নিয়োগিত করিব। ”

অদ্বিষ্ট মাই । বিক্রম কালে  
মৌল্য অতিবৃদ্ধি কল কাল  
বিল্লাও আমায়ীরাহেন  
কল কারিগিরের ১ পরিচালনা  
সে কল্য এখানে কেন ? কল্য  
অপমান করিবার জন্য  
হইরাছিল ? তাঁহার। অত্যন্ত  
শেষে দান ইহা কি তাঁহাদিগের  
বার্হাৎ না বলিলেন নয়  
কি এতদ্বিত্তর উদ্দেশ্য  
এ দেশের রাজগণ অনেক  
কের দ্বারা অসম্মানিত হইরাছে  
লাভ এলেন আসিয়া যত  
কে ভালুক প জানিয়া এবং  
জীবিত হইরাও যে এক  
করিলেন ইহাই আশ্চর্য । জীবিত  
বলেন ভারতবর্ষের রাজগণকে  
নাশ বাহ্য করা উচিত । লাভ  
রাজগণের নিকট বিনয় ও সৌজন্য  
করিয়াছেন বলিয়া জীবিতকারি  
এক জন রাজ বিত্ত হইরাছেন  
শ্রীতিথানে এ একার রাজগণ  
বাণ করিতেছি । অতিশয়  
এই ইংরাজেরা যাবতীর গুণে  
রাও পরাজিত শত্রুর এতি উদ্ভাষ  
করিতে জানেন না । নেপোলিয়ন  
জোর হত হুজ তুপতি ইহার  
গল বংশের শেষ ব্যক্তিকে রেপু কোলে  
নির্জল কাঁঠ কুটীরে অন্ন বিনা ইহুগ  
করিতে হইরাছে ।

এসেলোরেরা কিংটিরকাল হত ১৭২৭ খ্র  
সমুচিত করিয়া রাখিবেন, কে বা  
এই ভারতবর্ষ আশাদিগের গোলক  
নুধাবন করিয়া দেখিলে আশাদিগের  
ভূমির একত অধিকারী। আশাদিগের  
এ দেশের রাজকীর কার্যে বাহে।  
অধীনতাধার উচিত। আশাদিগের  
মিন শ্রদ্ধা সাধন করিয়া ইহাদিগের



এরা তুল্য কর্তব্য। কিন্তু কার্যে পরীত ঘটনা দেখিতেছি। তার সুমি ক্রমে ক্রমে জীৱন্তিকারি মত হইতেছে। তাঁহারা রাজস্বীয় আমাদিগের স্বাধীনতা লাভের অসাহায্য। তারতবর্ষের এ অমরা পুন্যপুত্র দেখিতেছি। এদেশ নিম্ন জীৱন্তি হইতেছে একথা নহে। কিন্তু তাহা প্রকৃত তারতবর্ষের সহজ হইতেছে না। একপাশে মরণ কি? করণ অনেক আছে। তাঁর সার্বকালিক উদার ব্যবহার গবর্ণমেন্ট ঘুমে বাহা বলুন কালে শেষের সহায়তা করেন; আইন ইলেও বিচারালয় পৃথক থাকতে এককলোপধারী হইতেছে না। এতকাল আমাদিগের আলস্য, সৎক্রিয়া ইংলিস্তাদি সমাজগত কবেকটি মহৎ গালা ছে। এখন আমরা বোম্বাইয়ের হাঙ্গামের এতি দুটিপাত কর, এখন হার ঠান্ডাদিগের দেশ ভ্রমণ, বাণিজ্য, ব্যবহার ও কার্যদক্ষতা দর্শন কর, কিন্তু তাঁমাদিগের কি হুঁ ও বিব দ উত্তর দেও হয় না? এখন স্বদেশীয় এক কলোপধারী এখন, সৌভাগ্য ও সম্মানলাভ করিয়াছেন, তখন আমাদিগের অজ্ঞানতা আছে আমরা দেখিতেছি আর কোন ক্ষেত্রে আমাদিগের দুর্ভাগ্যের অনুসরণ কখন হয় না? এখন আমাদিগের বিবাদ ও বাস্তবতা নহে।

করিয়াছেন। পূর্বে মনে পড়েছিল যে আমরা অসহিষ্ণু করিয়া বসিয়াছিলাম, যখন আমরা তাঁহাদের উপযুক্ত ও যথার্থ প্রত্যাশিত করিতে। হইলে এক ব্যক্তি এক প্রকার শিষ্ট পূর্ব জীৱন্তি হইতে পারে। এখন আমরা ত্রুটি গত হইক না। হটক বাণিজ্যের প্রতি প্রতি অল্প কালের মধ্যে আমরা তাঁর দ্বিত্ব হইতে পারি। গবর্ণমেন্ট লেন্ডে এক সকল বিষয়েই সহায়তা করুন।

একথা বলিতে আমরা ইচ্ছা করি না; আমরা কিংবদন্তি সমাজের বাস্তব অবস্থা তাহাতে সত্যকথানে উৎসাহ দান ও কোন কোন স্থলে সহায়তা করা অভিশপ্ত আবশ্যক। এই জন্যই আমরা বারবার এদেশে তুল্য প্রকৃতির কল করিবার বিষয়ে উৎসাহ দানের কথা কহিয়া আসিতেছি। মাইকেলসনের সহায়তার জন্য গবর্ণমেন্ট যেমন রাজ্য প্রকৃত করণ, উৎকৃষ্ট তুল্য উপাধিকারী পুরস্কার দান এবং কোন কোন স্থলে স্বয়ং জীৱন্তিকারি তার অর্থ করিয়াছেন, সেই প্রকার আমরাও প্রত্যাশা করিতেছি, আমাদিগের বাণিজ্যাদি হুজির জন্য তাঁহারা একপাশে দান করুন। গবর্ণমেন্টের নিকটে মূলধন প্রার্থনার কথাই নাই, তাঁহারা রেমণ্ডের কোম্পানিদিগের ন্যায় আমাদিগেরও অংশের এতিম হউন, আমরা এতখানি বলিতে চাই না। আমরা কেবল একমাত্র উৎসাহ দান প্রার্থনা করিতেছি। যত দিন সে উৎসাহ দান না হইতেছে, তত দিন আমাদিগের বাণিজ্যাদির সবিশেষ জীৱন্তির আশা করি না। গবর্ণমেন্ট পুরস্কার প্রদান প্রকৃতি দ্বারা এতবিষয়ে উৎসাহ দান করিতে পারেন সন্দেহ নাই। গবর্ণমেন্ট যদি কেবল এক বাণিজ্য বিষয়ে সঞ্চারিত উৎসাহ দান করেন, স্থাপত্য মতো এদেশের আশাধিক জীৱন্তি দর্শন করিতে পারেন সন্দেহ নাই। বাণিজ্যই যে দেশের মঙ্গলের প্রধান কারণ, তাহা সকলেই স্বীকার করেন। যে জাতি বাণিজ্য রত তাঁহাদিগের অর্থ বল ও ক্ষমতা অসীম বলিলে হয়। ফরাসী বিপ্লব ঘটিত মুক্তকালে এক ইংলণ্ড ইষ্টের পের সমুদয় গবর্ণমেন্টকে অর্থ দ্বারা সাহায্য করিয়াছিলেন। এক্ষণে আমেরিকায় এতিম বৎসর ইংলণ্ডের ১৩০ কোটি টাকা ব্যয় হইতেছে। বাণিজ্য হীন কোন জাতিবিশেষ অর্থবল ও ক্ষমতা আছে? সাহস ও মনুষ্য কোন বাণিজ্যের অনুচর। আমাদিগের জাতিতেও প্রকৃতপক্ষে এত সমাজগত দোষ

দেখিয়া অনেকের মিজাবা করিতে পারেন। এক অবস্থায় আমাদিগের দেশে বাণিজ্য করা সম্ভব কি না? ইচ্ছা উত্তর এই, বার্থের নিকটে উপস্থিত পরা হয়। লোক কি এক্ষণে ইংলণ্ডে বাণিজ্য ও সি বিলিয়ান হইতে গমন করিতেছেন না? গবর্ণমেন্ট যদি যথার্থ তারতবর্ষের মঙ্গল চাহেন, এক্ষণেই বাণিজ্যকে নিজে রত করিতে চেষ্টা করুন। কলিকাতা পিটার নিজ বার ও নিজ দুর্ভাগ্য দ্বারা আমাদিগকে শিষ্ট ও বাণিজ্য দ্বিধা হইরাছেন। এতদেশীয়রা নিশ্চয় জানিতেন, তাঁহারা যাবৎ এই ব্যবসায় অবলম্বন না করিবেন, তাবৎ যথার্থ সৌভাগ্যশালী ও মতাবান হইতে পারিবেন না। আমাদিগের এক্ষণে বাণিজ্য নাই বলিলেই চলে। তারতবর্ষের বাহিরে কোন স্থানে হিন্দু মুসলমানদিগের ব্যবসায় আছে। উপস্থিত স্থলে আমাদিগের বক্তব্য এই, আমরা গবর্ণমেন্টকে সাহায্য দানে অনুরোধ করিলাম ধটে, কিন্তু এদেশীয়েরা উদ্যোগী না হইলে কখন সেই সাহায্য লাভ সমর্থ হইবেন না। আমরা পুনরাবৃত্তি করিতেছি, তাঁহারা আব কত দিন হুঁ পদ দি সঙ্কুচিত করিয়া রাখিবেন।

অনুচিত অনুভবকারী প্রজা ও তাঁহাদিগের সহায়ত ইংল্যান্ড মিররের জরাজীর্ণ

এলা মার্চের ইণ্ডিয়ান মিরর পুস্তক বক্তব্যের হইয়া সমস্ত ভূমিতে অবতী হইরাছেন। এবারে তিনি একাকী নহেন এক জন পত্রপ্রেরক পশ্চাতে থাকিয়া তাঁহাকে অভ্যর্থনা করিতেছেন। আমরা কখনই যোদ্ধার ক্রোধোদ্দীপন দেখিতে পাইতেছি। একপাশে অসহিষ্ণুতা নহে স্বতন্ত্রের বিরুদ্ধে আচরণ করিতে গেলে নিত দর্শ কাল প্রকৃতিই থাকে না।

অনুচিত অনুভবকারী প্রজা ও তাঁহাদিগের সহায়ত ইংল্যান্ড মিররের জরাজীর্ণ

[illegible]



সেমানা করিয়া যে অনুচিত অনুষ্ঠান প্রব-  
 ক করিতেছেন, তাহা যদি সর্বত্র আদৃত  
 ৭) যাকিনকার ন্যায় ভারতবর্ষের অর্থ  
 ৮) নিজেই হইবে বলিয়া আমরা যে আ-  
 ৯) রিমানাহিলান, ইঞ্জিয়ান মিত্র তাহাও  
 ১০) করিয়াছেন করিতে পারেন নাই।  
 ১১) যিনি বলেন জাতকর্মানিতে এক পরমা-  
 ১২) নতাবনা নাই; সত্য, আমরা বর্ত-  
 ১৩) তমান ক্রমের বিষয়ে সে শঙ্কা করি-  
 ১৪) উপায় দ্বারা জাতকর্মানি কিছু নয়  
 ১৫) ও মনে লোক বোহদার উক্ত অনুষ্ঠান  
 ১৬) করিতেছেন। অতএব  
 ১৭) নাকিগর কন বুধা ব্যর করিবেন? আমরা  
 ১৮) তাহা জ্ঞানবিগের বিষয়েই সে শঙ্কা  
 ১৯) সেমানা জ্ঞান; তাহার অনুচিত অনুষ্ঠান  
 ২০) প্রাচীনকালিগের অভিধার বুঝিতে না  
 ২১) গানের অবশ্যকর্তব্য বোধে সমারোহে  
 ২২) অনুষ্ঠান করিবেন, সুতরাং বুধা  
 ২৩) একা হইয়া যাইবে।

১০ দলের রাম নিয়র এক স্থানে লিখিয়াছে  
 'মরা ওরা বিবেক বশতঃ ভ্রাতৃদ্বিগকে  
 'নুতানতেছি। যাঁহার অনুমত ও অপর  
 'ন অনুষ্ঠানের সঙ্গতা করিতে প্রবৃত্তি  
 উপদিহ, তাঁহার একপ অনুমত সংকার  
 'খ্যেী ও আশ্চর্যের বিষয় নহে। এ  
 'রিতে আমরা তুর্কীস্তান অবলম্বনকেই  
 'ও যশস্বী বিবেচনা করিলাম।

জেলী ভ্রংশেযে মিররের একটি পরম কো  
 রিতেছে বাকোর উল্লেখ না করিয়া এ  
 হুইবে উপসংহার করা বিধেয় হইতেছে  
 আনি বলেন আমর। আর্চান আচর  
 কে কু প্রাণির সপক্ষ, অতএব উৎসাহের  
 - এর প্রতি আমরদিগের কান কথা  
 ইন, চিহ্নিত নহে। এই লেখাটী দেখিয়া  
 হিরদাগের একটি গল্প শ্রবণ হইল।  
 সমস্ত এক উৎসব দিবসে এক জন আম  
 হুই সখ দিয়া বাইতেছিল, পথের ভূই  
 উৎসব দর্শনার্থ যে সকল লোক  
 না হইয়াছিল, দেখা হইয়াছে।

রা কেলিয়া দিতে লাগিল, তাঁহা দেখিয়া এক  
 জন সেই পাগলকে বলিল, কেনন হে  
 তুমি ত বড় খারাব লোক, সকলকে এমন  
 করিয়া কেলিয়া দিতেছ কেন ? তাহাতে  
 পাগল উত্তর করিল, উত্তর। পাগল, আ  
 মার কথা শুনে না, তাই আমি কেলিয়া  
 দিতেছি। আমাদিগেরও সেই কপ গুট  
 না হইয়াছে। বাঁহারা একান্তরূপে অমর্থ  
 কর অনুষ্ঠান রক্ষা করিতেছেন, তাঁহারা  
 সমাজ সংস্কারক ও উন্নয়নবাদী হইলে  
 ন। আর আমরা অংশপরিভাগ করিয়া উন্ন  
 ত বর্ষের অনুমোদিত উন্নত জিনিসানুষ্ঠান  
 অবলম্বন চেষ্টা পাইতেছি, আমরা অনুদান  
 হইলাম।

আর এক স্থলে ইশিরান যিরর কি  
 কিং উপহাস রসিকতা প্রকাশ করিয়াছে  
 ন, তিনি বলেন, " আমরা ( সোমপ্রকাশ  
 সম্পাদক ) বার বার পরাস্ত হইতেছি,  
 তথাপি আবার কীৰ্ত্ত হত্য বালালি বাল  
 কের ন্যায় করিতেছি. টেক পরাস্ত কর  
 দেখি । " ইহার আর কি উত্তর দিব : যা  
 হাঃ যেটু ও মাকাল পূজা কবে, তাহাদি  
 গের নিকটে কি আমরা পরাস্ত নই ? ও  
 বাপি তাহাদিগকে কি আমরা পুনঃ পুনঃ  
 তৎপরিত্যাগ করাইবার চেষ্টা পাঠিতেছি  
 না ? সম্পাদক কি আমাদিগকে মচন্দ্রমের  
 ন্যায় তরবারি ধারণ করিতে কহেন ? আ  
 মাদিগের সহপাঠ্যই এক মাত্র অস্ত্রশস্ত্র ও  
 মস্তল ।

এইসঙ্গে মিয়র সম্পাদকের নিম্নটে  
করেকটা প্রশ্ন করা আবশ্যিক বোধ হইল।  
যে অনুষ্ঠান দ্বারা জগতের অপকার তির্য  
উপকার সত্তাবনা নাই, তাহা বিস্তৃত ব্রাহ্ম  
ধর্মের অনুমোদিত হইতে পারে কি না ?  
কতিপয় ব্রাহ্ম জাত কথ্যানির যে অনুষ্ঠান  
আরম্ভ করিয়াছেন, তদ্বারা জগতের কোন  
উপকার লাভের সত্তাবনা আছে কি না ?  
যে সমস্ত অনুষ্ঠানকে তাঁহারই এক জন  
পত্রপ্রেরক ঐচ্ছিক বলিয়া বিবেচনা করিয়া

হেন, তদাচরণের আশঙ্কায় কি? উ  
খিত অনুষ্ঠান করিয়া প্রাচীরে কি কে  
উপর, হু হিন্ধকে খসতে আনিতে না  
সংযম ?

কেন্দ্রীয় পরিচালক মহোদয়  
বাইবল উদ্যোগ।

গত করে যেহেতু প্রদর্শিত হইয়াছে, তাহা  
রা স্পষ্ট সপ্রমাণ হইতেছে, বহুবা যে সে  
বাস করে, সেই ঘোষণা জল, বায়ু ও মৃত্তিক  
নির গুণ ঘোষ হেতু সর্বল অথবা তর্কাল হয়  
(১) বঙ্গদেশের এই সকল বিষয়ে যত্ন-বত  
দোষ আছে. অতএব (২) বঙ্গদেশবাসি  
গের কি সর্বলকার হইবার উপায় নাই? এ  
প্রশ্নের উত্তর এই হইতে পারে যে বঙ্গদেশে  
র জল বায়ু মৃত্তিকাদির নিরীক্ষার গুণ নি  
র্ভী হইয়া বাহ্যতে বীর্ণ্য হইবার গুণ উৎপা  
দয় একটা উপায় অবলম্বন করা বাধ্যতাবি

(১) পদ্মাদিও এই নিয়মাবলীতে বহিষ্কার  
হবে। বঙ্গদেশীয় গাতি, ছোটকাতি অপেক্ষ  
উত্তর পশ্চিম প্রদেশীয় গাতি, ছোটকাতি  
বে অধিকবল ও ঘোঁসকার হয় ইহা কেন  
জানেন?

(২) বঙ্গদেশের জল বাধু স্থিতিকারি  
যে নিকরীয়ায়, তাহা কাহার অবস্থিত  
নাই। উক্ত জাহাজ প্রাণ কল। অস্বা-  
স্থ্যক, কিন্তু এ স্থলে আমরা দুই বিষয়  
উল্লেখ না করিয়া ফাট থাকিতে পারি না  
না। বাঙালি সাহেব বলেন যে মোগলদিগের  
রাজত্বকালে কে ন কর্ণচাত্রী সম্রাটের  
পে পণ্ডিত হইলে তাহাকে দণ্ড দিবার জন  
বঙ্গদেশে বাস করিবার অনুমতি হইত ॥ মো-  
গল সম্রাটেরা বঙ্গদেশকে অতি অস্বা-  
স্থ্যক করিতেন। তাহাদিগের মধ্যে যং  
এক কালকার, প্রতিনিবাস, পীড়ার উপর  
হান এবং বঙ্গদেশে বসিয়া উক্ত হইত  
বঙ্গদেশে টাঙ্গ সাহেব কহেন যে বঙ্গদেশ  
অস্বাস্থ্যক করিবার চেষ্টা না করিলে তাহা অস্বা-  
স্থ্যক বস্তু লগ্ন্য হইয়া উঠিবে ও পৃথিবীর  
মঙ্গল স্থানকে আগুন সংক্রামক রোগে ব্যাধ  
করিবেক।

গর উচিত। ডাক্তার এক, সি. হীজ (৩) প্রভৃতির সহায়তসহকারে কার্য করিতে পারিলে সন্দেহের জল বাধুর দেশ অনেক পরিমাণে নিরাকৃত হইতে পারে বটে কিন্তু বোম্ব হুজির গুণের উৎপত্তি ৪০৭। সহজ নয়। বিশেষতঃ হুজুরতাপ ও মুক্তিকা খটত দাস দুইরকম করিবার উপায় এখন পর্যন্ত আবিষ্কৃত হয় নাই। এই সকল চিন্তা করিয়া কি আমরা ত্যাগ হইয়া নিশ্চেষ্ট ও নিষ্কিয় হইয়া থাকি-  
(১) জগদীশ্বর কি আমাদের বলবীণাদি জির কোন উপায় করিয়া দেন নাই? তিনি আমাদের প্রতি এত নিদারুণ হইয়াছে-  
(২) যাহার অজ্ঞতা করুণাবারি আমাদের প্রতি অনবরত পতিত হইতেছে, যিনি আমাদের পিতা, মাতা অপেক্ষা অধিক প্রেম সহিত লালন পালন করিতেছেন, যাহার অক্ষমতার সহ্যের অর্থ, মুখ্য প্রকৃতি সমান মান মধ্যে প্রায় (৪) সমসংখ্যকরূপে সংঘটিত হইতেছে, তিনি কি আমাদের বলবীণাদি হুজির কোন উপায় সংগঠন করিয়া দেন নাই?

মাধ্যম স্বভাব ও অত্যাধিক এই উত্তরের সবটীক হইয়া যাবতীয় কানোর অগ্রদূত ক-  
রা থাকে। স্বভাবের শক্তি ভাঙে, বলবতী, অত্যাধিক শক্তিও বড় হয় নাই। অত্যা-  
ধিক বলে বেশ, দুঃ, ও অর্থ স্বভাবতঃ নিরা-  
প (৫) তৌজী হইয়াও মাংস ভক্ষণ ক-  
রা শুধু শরীরে থাকিতে পারে, অত্যাধিক-  
লে সন্ধ্যা পৌরাকর পদার্থের আত্মা লই-  
তে বেশ প্রকৃতি হুজুর হইত হুজুর অত্যা-  
ধিক বলেই এত বেশী বোগিরা কঠোর যোগ

(৬) ডাক্তার হীজের দত্ত কালকাতা টপো-  
কি নামক পুস্তক দেখিবেন এবং ডাক্তার  
দাস চীফ এডভোকেট সাধারণ অনগ্রের  
রীতির স্বত্ব। বিবরণ যে প্রস্তাব বেখুন  
গালাইটিতে পাঠ করেন তাহা দেখিবেন।

(৭) পক্ষ অস লাইক ইনগ্রাফ নাম  
ক পুস্তক পাঠ করিবেন।

[৮] বাহ্যিক সহিত মান্য প্রকৃতির  
বিচারের প্রথম ভাগ ২২৬ ও ২২৭ এর  
ক দেখিবেন।

(৯) সাধনে সর্বা হইতেন, অত্যাধিক বলে  
পারস্য, চীন, কালিকিয়া প্রভৃতি দেশীয়  
লোকেরা (১) পতীত সমুদ্রের ৪৫ হুজুর নিয়ে  
অর্থ স্বভাবতঃ নিরাকৃত হইতেন, মুক্তাধি  
সংগ্রহ করিতেছে, অত্যাধিক বলেই এক  
মহা লিখ শাওল প্রকৃতি (৮) মাত করি-  
রাছিল। অত্যাধিক এতদূর পরাক্রম বখন  
নয়ন গোচর হইতেছে, তখন তাহার শর-  
লইলে যে আমরা মুক্ত হইতে পারিব না,  
ইহা কিভাবে সম্ভাবিত হইতে পারে? এখানে  
কেবল বাহ্যিকাদির অত্যাধিক প্রসঙ্গ করা আ-  
মাদের উদ্দেশ্য নয় পুষ্টির আহাতিদের  
অত্যাধিক প্রভাবই প্রধান বলে অতিশ্রুত।

নিবাসিত তৌজর অপেক্ষা সারিব তৌ-  
জন বে অধিকতর পুষ্টির তাহা প্রায়  
সমুদায় দেশের সমুদায় শরীরবিদ্যায়  
বিং পতিত স্বীকার করিয়াছেন কিন্তু মহা  
স্বভাবতঃ নিরামিত তৌজী অর্থ নিরামিত  
ও আবিষ্কৃত তৌজী এতদধিক লইয়া  
বততর বততর দূর হয়। নিরামিত তৌজন

(১০) বোগীরা যে কেবল অত্যাধিক বলে  
অত্যাধিক বলে যোগ সাধনে সর্বা হইতেন, প-  
শ্যাবিত গ্রন্থ পাঠে প্রতীক্ষমান হইবে।  
“এ, টিউজ অস দি যোগ কিসকি এন,  
সি পাল সব আসিষ্টে সন্নয়ন”।

(১১) তিল কিসকি অস দিলিজন,  
পাঠ ১০২।

(১২) অনেক দিবস হইল আমরা এক  
নংবার পাঠে পাঠ করিয়াছিল, যে এক  
ন্যায়ী কোন প্রকারে এক মহা লিখ সন্ধান  
প্রভৃতি হইত। আপন শাবকদের স-  
হিত তাহাকে লালন পালন করে। যাজীর হুজ-  
পাল করিয়া যাজীর শাবকদের সহিত মাং-  
সাদি ভক্ষণ করিয়া সে বালক ব্যাঘ্রের সমস্ত  
প্রকৃতি প্রাপ্ত হইয়াছিল। ব্যাঘ্রের ব্যত হুজ-  
পদ ভূমিতে নিবেশ করিয়া জতবেগে চলি-  
তে পারিত, ব্যাঘ্রের ন্যায় বাকুলিহীন  
মহাশয়দের আক্রমণে তৎপর ও মোহা-  
ত হইয়াছিল, কিন্তু লালন বিশিষ্ট হয়  
নাই। (১) পৌরাকর এই শাওল প্রকৃতি  
প্রাপ্ত মহাশয়কে হুজুর করিয়া মহাশয়দের  
আসিয়াছিল।

সম্পর্ক পতিত হুজুর  
একটি হুজুর (১) বতীত করিয়া  
সে বতীত এই।

“সমুদায় দেশেই  
সমুদায় সম্প্রদায়, শাওলোব  
মোপোলী বমোপোলী  
হইয়া থাকে। মোপোলী  
গোদুর, শুভাচারি শাওল  
প্রকার কল মূল অপব্যক্তি  
মাংস অপেক্ষা শস্য ও কল  
রতবীর্যদের শরীর হুজুর ও  
এবং নিরবধি মাংস আহাতি  
হয়। ১০ ইংরেজদের দেশ  
পেক্ষা শীতল, তথায় শস্য  
মহিলাদি পত্নী অধিক করে, এই  
সহ তাহাদের এখান খাদ্য।  
দেশ তৎপেক্ষা উত্তর, তথায়  
জলে, তেমন গরু হইয়া। সেই  
কার লোকে ইংরেজ ও  
অপ মাংস আহাতি করিতে  
কার থাকে। এক জন  
লেন, ইংরেজেরা বত মাংস  
করাশিরা তাহার বত  
উত্তর মহাশয়দের শরীর  
প্রদেয় অর্থ; এ মহাশয়দের  
পান্যাদি শস্য উৎপন্ন হয় না।  
করা কেবল মাংস ভক্ষণ  
করে। তথায় যেমন কল  
সেইকণ শীতের প্রভাবে  
কটিও হয় না। অপেক্ষাকৃত  
সকল ব্যক্তি তথায় গমন  
(১৩) এই বতীত উত্তর  
পার্থ এই যে আমরা পূর্বে  
মহাশয় যে দেশে বাস করে  
বাহু মুক্তিকারিণী মোহ ও  
বা দুর্বলকারি হুজুর, সেইকণ  
বাণ হইবে যে মহাশয় যে  
দেশের বলবতীর উৎপন্ন  
রিয়া শস্য ও বলিষ্ঠ হয়।  
আহাতি করা মহাশয়ের  
তথায় ও আমাদের বত  
হইবে।



জানিতব্যক্যকল মূল ও শস্য পুরি  
 ত্ত ক কেবল বাৎস আহার অবলম্বন  
 হয়, গাছিল। এই সকল বিষয় প্রথমে প্র-  
 কালে অপর্যাপ্ত পত্র, পুঁকী ও  
 হওয়া যায়। তাহাতেই লোকের  
 আহারের সংগ্রহ হয়। তাহারা  
 আর বেশ ও হালু খুঁচ করিয়া  
 নীতহালে তাহা অস্থাপনের  
 করেন। কোমর করে (১০)। ২ এই মত  
 মান আহার অতিপ্রায়ে মিষ্টামিষ ভোজন  
 নাই, বলেন - যে সকল দেশে শস্যাদি  
 আনিয়াই বা, কৃষি শক্তি সম্পদ বুদ্ধিমান  
 সকল সে দেশে অবস্থিতি করাই বা  
 তাঁহারা ক নিম্ন ২০ - ভবিষ্যতে বিজ্ঞান  
 প্রচার প্রচুর্য্যব হইয়া সে সকল  
 করিয়া। বধায় ভোজী ব্যক্তিদিগের বাস  
 প্রবর্তন। জলসম্পত্তি নহে। এক্ষণেও  
 মাক আভিষার নীতল দেশের  
 পারিয়া। প্রাচ্যেণ বব, রাই ওট এই  
 ই সকল এবং গোমসার মধ্যে উৎপন্ন  
 টাকার এক প্রকার হরিণ আছে,  
 ইতিও পান করা যায় (১১)। ২  
 ক আদ্য উক্ত পাকের মত উক্ত  
 নু-সি মাধিবারে আপনাদিগের বক্তব্য  
 পুঁকীকে।

### জল পুস্তক ও পত্রিকা।

লিকাতা সংস্কৃতকালেজের প্রিন্সি  
 কাউন্সেল সাহেবের কৃত্যচর্চাক  
 গ্রামী অনুবাদ। ইহা মাধবাচার্য্যের  
 রূপর্ন সংগ্রহ হইতে সংকলিত  
 যে সমস্ত সেবণ সমস্তীয় অম্ববর  
 তি-নিবৃত্ত জন, তৎকালে কলির অনু-  
 তিত, তৎকালিগের সাক্ষ্য হয়,  
 তাবলম্বী তৎকালে ছিলেন তাহার  
 বক্তাদিগের কথোপকথন হয়। ঐতিহ্য  
 ও উক্তর মৈবণে চার্কাক মত কুলি  
 কুলস কনট্রিটিউন অক্ষ ম্যাম না  
 হার এই মত।

মাধবসত্তর লিখিত মানব প্রকৃতির  
 তির ৩য় বিচার। প্রথম ভাগ ২৩৩  
 রিমান-পাত।

হায়েন। কাউন্সেল সাহেব বক্তব্য প্রচারের  
 শেষভাগে তাহাও উল্লিখ করিয়াছেন।

চার্কাকের। পৃথিবী, জল, অগ্নি ও বায়ু  
 এই চারি দ্রুত স্বীকার করে। তাহারা বলে  
 এই চারি দ্রুতের মধ্যে দেহ হৃদি ও সেট দে  
 তের চৈতন্য শক্তি উৎপন্ন হয়। তাহাদিগের  
 মতে দেহাতিরিক্ত আত্মা ও লোকান্তর নাই,  
 এবং বাগবজ্যাদি জীবিকার্থ হই হইয়াছে।

রহস্যময় মৈত্রেয়দিগের মোহনার্থ এই মতে  
 র হৃদি করেন বলিয়া নির্দেশিত হইয়াছে  
 "চার্কাক ২ এটি সাধারণ সংজ্ঞা। এতদ্ব্যতী  
 বলধী বাবতীর ব্যক্তিকেই চার্কাক বলা যায়  
 এতৎ সম্প্রদায় প্রবর্তনিত। চার্কাক নামে এক  
 ব্যক্তি ছিলেন তাহার নাম হইতেই সাধারণ  
 নাম হইয়াছে।

২। রহস্য সম্পর্ক। ইহা একখানি মা-  
 সিক পত্রিকা। কলিকাতা কলরুত সোসাইটি  
 ও ড্যানিকিউলার লিটরেচার সোসাইটির আদে  
 শাস্ত্রসারে ইহা প্রচারিত হইতে আরম্ভ হই-  
 য়াছে। বিবিধার্থ সংগ্রহ রক্ষিত পূরণ করাই  
 পত্রিকা প্রচারকদিগের উদ্দেশ্য।

প্রথম সংখ্যাসমূহ আম দিগের হস্তগত  
 হইয়াছে। এখন ইহার গুণদোষ বিচার করি  
 যার আনাদিগের ইচ্ছা নাই। আনাদি  
 গের মতে কেবল দেখিয়াই গুণ দোষ পরী  
 কাসাহস স্বীকার বিধের নহ। তবে আপা  
 ততঃ আমরা ইহার প্রথমসংখ্যায় এই মাত্র  
 বলিতে পারি, লেখকেরা যদি অধ্যবসায় স  
 ম্পন্ন হন, তবে ইহা বিবিধার্থ সংগ্রহের পদ  
 প্রাপ্ত হইতে পারিবে। এতলে সম্পাদককে  
 একটি বিষয়ে সাবধান করা আবশ্যক হইল,  
 তাহাকে কিছু অতিরিক্তাশ্রয় বলিয়া বোধ  
 হইতেছে। "কুণ্ড কি ২ এই নিরোনাম দিয়া  
 যে প্রস্তাবটি লিখিত হইয়াছে, তাহাতে এম  
 নি অতিরিক্তাশ্রয় প্রদর্শিত হইয়াছে যে  
 মূল কথায় অম্ম অধিকার। প্রস্তাব লেখক  
 কথাকেই বাক্য প্রসাদ নির্মাণ ও রাজ্য অক  
 দির হেতু বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। উহার  
 হেতু বক্তব্য। সেক্ষণে প্রস্তাবের উপক্রম  
 উপসংহার করা হইয়াছে তাহাতে এখানে  
 কুণ্ড। শেষ ইচ্ছাযুক্ত বৃদ্ধিহইতে ন।

৩। ভূতিমালা। ইহা কলিকাতা প্রাচ্যসমা  
 জ হইতে সাহসবলে মুদ্রিত হইয়া প্রচারিত

হইয়াছে। ইহাতে কবরের উপাসনা প্রা  
 ও ভূতি প্রকৃতি আছে।

### আগন্ত।

২৬এ মাঘ মঙ্গলবার।

অগস্ত্যব্রতের কি আশঙ্ক্য হৃদি। তাহ  
 হৃদি বিবর পর্য্যালোচনা করিলে কে না  
 অগাপন করেন : হৃদিয়া হইতে হৃদিয়া  
 খিলান ধীপের ন্যায় এক এক খানি গ্রাম  
 তত্ত্বিসকলি জল ও মক ভূমির ন্যায় প্রম  
 চড়া। এখানে আনাদিগের আর এখন পা  
 যার ও বজ্রবাক্যদিগের কথা বনে মাটি  
 এখানে এখন কেবল প্রকৃতিদেবীর সন্ধি  
 পরিচর হইতেছে। অজ্ঞ আনাদ্যা নামক  
 কলী কুল বন্দরে রাতি আভিহিত করিয়া  
 ৩০এ বুধবার প্রাতে পূর্বাতিমুখে গমন  
 করিয়া পাবনা জেলার অন্তর্গত নাজিরগ  
 উপস্থিত হইলাম, তথায় শুনিলাম এতল ম  
 হেবের একটি নীল কুঠা এবং নীলকরদিগে  
 প্রথা অনুসারে তাহার প্রজাদিগের প্রতি অ  
 ত্যাচর করা আছে। এখানকার জল বায়  
 তত উৎকৃষ্ট নহে। ইহার নিকটে কামার  
 হাটি পসিকেউ সেপুর প্রকৃতি কতকগুলি  
 গ্রাম নীলকর ও আর একজনকে পত্নি দে  
 ওয়াতে প্রজাদিগের অত্যন্ত কষ্ট হইয়াছে  
 এখানে কৃষক ও সামান্য ব্যবসায়ী অধিন  
 চাকরে অতি অল্প। লেখা পত্রার অনুশীল  
 নাই বললেই হয়। বুধবার আমবেড়ে নাম  
 স্থানে অবস্থিতি করা হইল। ১লা কাছ  
 রহস্যময়তার পাবনা হৃদিয়া বনুনা দিয়া ক  
 রিমপুর ডান হাতে রাখিয়া ঢাকা জেলা  
 প্রবেশ করিলাম। অজ্ঞ গোয়ালু পাঠার অ  
 বস্থিতি হইল। ২ রা কাছন শুক্রবার নৌক  
 হৃদিয়া বাশিকগঞ্জে উপনীত হইলাম।

এই স্থানের উক্তর নীনা জাগীর, পার্শ্ব  
 নবগ্রাম, দক্ষিণ রক্তগ্রাম, পূর্বে খলেশ্বর  
 নদী এই নদী বনুনা হইতে নিগত হইয়া  
 সাবার ও কুলবেড়ে দিয়া বৃদ্ধি গকার পতি  
 হইয়াছে। এখানকার জল বায় বাস্যক  
 ভূমি বাস্যক। বালি সংযুক্ত মণীর জল  
 মাখিত হইয়া পল্লবপৃষ্ঠের অত্যন্ত ব্যাধাত  
 করিয়া থাকে।

চৌকিদারী বাহির লিখিত মানিকগ

মানার অধীনে ১২২৮ বর বসতি। বহুব  
১২২৮। আর ৩১২০। জৈকিনারের সংখ্যা  
১২২। এখানে হিন্দু মূলদ্বার দুই প্রকার  
হাতি বাস করে। অল্পসংখ্যক হিন্দুর তাগ অ-  
ধিক, কুমকোলা নিত্য পণ্ডিতের পরামর্শ লভ্য।  
কিন্তু অনেক লোক বাবসারী, ৪ আনা। চাকরে  
১২২ ৪ আনা। লোক রুচি কণ্ঠ করিয়া জীবিকা  
সংগ্রহ করে। এখানে অনেক সংস্কার লোক  
নাহেন বটে কিন্তু তাঁহারা সর্বদা বাস্তব  
কাজ করিতে পারেন না। বস্ত্রা বস্ত্রের সম-  
ধিক উন্নতি হইতেছে না। এখানকার  
মহিকায় লোক বিদেশী বস্ত্রের সহিত  
যোগাযোগ করিতে ভাল বাসেন। রাজ্য  
গত প্রকৃতি ভদ্র উৎসর্গ না হইক কিন্তু গভ-  
বনাথিত বস্ত্র বিক্রয় হইয়া থাকে। অনেকই  
সামান্য হস্তের কার্জের ব্যাপ্তি দেখিয়া  
কি এই কথা পরিচালনা করিতে এবং  
হইতে দেখিতে লাগিলেন।

খাদ্যে দুইজন আনিয়াছেন। দেখ করি ইহার  
সুবিচারে কখন সকলেই সজ্জা হইতে পারে।  
অতঃপর আনলাগিদের (সকলের) দাওয়া  
হইতে উক আছে। এখানকার কোমলতার  
সেইসেতারারের কিকিং প্রায়শঃ আশ্রিত পা-  
তলা যায়। শুধা গেল এখানকার দুইজনক  
পাকা লোক নহেন। তাঁহার বিচারে তেল-  
দুই নহে। অতঃপর নাথের দাওয়ায়।  
হিন্দুধর্মের তাঁহার বিলকন আশ্রা আছে। এত  
যাশিগকে আর চলিখ আনিয়া আশ্রিত হই  
বে যুৎ দাওয়া হইয়া অতঃপর বিলকন  
হইয়া গিয়াছে। এখানে শিবদাশি উপাসকে  
একটী মেলা হইয়া থাকে। তাহাছে ৮-১-১০  
দিন পর্যন্ত নানা প্রকার বিক্রয় এবং  
সমাগম হয়। এখানে রাবিকক দুইজন  
একজন সম্পদ দেবতা বাড়ীতে  
নিবসন করিয়া বিদেহ চাকরী করিতে  
হেন, কিন্তু বাড়ী বাকের। তাহা  
করিতেছে না।

[illegible]

২। একদা অধিক লোকের মত  
১-ই কাছাকাছি গিয়ে দেখা গেল  
গলিতে লম্বা লম্বা লোকেরা  
আছে। লোকেরা লম্বা লম্বা  
বিশেষতঃ এই লোকেরা  
সংস্কৃত হওয়াতে লোকের  
কান্নাকাটি বিশেষ সাহস  
কারণ উক্ত সময়ে অধিকাংশ লোক  
ছিল। সুতরাং লোকেরা  
না পারাতে সমস্ত লোক  
বনের মধ্যে গিয়েছে। এই  
৩। ১২-১৩ পৃষ্ঠায় আছে। সোভিয়েত  
যে এক ব্যক্তির ও আশে পাশে



অবোধা! নেকোট বনেন রেওয়ার ৫১৬ ক  
প্রজা রেওয়ার রাজার নামে ব্রিটিশ খবরমেণে  
র নিকটে অভিযোগ করিয়া ছিল বলিয়া রাজ  
তাহাবিগেখ বস্তুক জেনার ও সমস্ত সম্পত্তি রাব  
তাওবি পত্ত করিতে আশ্রয়িত করিয়াছেন। কথ  
র কথায় তাঁনির কথা শুনিবল তাঁরতবর্ষের  
প্রজাবাহার আরও হত।





1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

পত্রপ্রেরকের প্রতি।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

"প্রাক" এই প্রকাশিত পত্রাংশে প্রাক-  
সময়কাল মিশ্রিত কথা। ইহা হইতে, এই কারণে উক্ত  
পত্রাংশ হইল।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

কেন্দ্রীয় বাবু শঙ্কর সমর্থন করিয়া যেনো  
পত্র হইতে যে পত্র আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

প্রেরিত।

প্রিয় সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহোদয়

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

প্রিয় সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহোদয়

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রাংশে আমি আশা-  
করিয়া যেনো নীতি হইল না।



সে সমস্তই নিত্যমহোপকারক। তিনি  
তাঃ ও সামবেদের টীকা করেন; ব্যবহার  
ক এক খানি গ্রন্থ লিখিয়া গিয়াছেন। পাণি-  
নিবন্ধের টীকা এবং সর্বদর্শন সংগ্রহ  
ক সমস্ত কিছু দর্শনের সার গ্রন্থ করিয়া  
খানি গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়াছেন এতদ্ভি-  
ত্মি পণ্ডিত যগুলীর প্রচুর রূপে উৎসাহ  
ন করিয়াছিলেন। তাঁহার কালে সংস্কৃত  
পুণর্জীবন সঞ্চার হয়। এখানে ইহাও  
গত হওয়া আবশ্যক যে এই সময়ে  
১৪০ খৃঃাব্দ) ইউরোপে সাহিত্যের আ-  
চমার পুনরারম্ভ হয়। কিন্তু ভারতবর্ষে অণে-  
ইউরোপের সমধিক উপকার হয়। তাহার  
তু এই যে, ভারতবর্ষে বিদ্যাচর্চার পুনরারম্ভ  
লে পর সেই পুণ্যতম বিষয়েরই আন্দোলন  
হইল। কোন মূর্তন ভাষার সমাগম হয়  
ই। সুতরাং কোন অভিনব বিষয়ের আবি-  
দ না হইয়া কেবল সেই পুরাতন বিষয় এক  
মূর্তন রূপে মাত্র ধারণ করিয়াছিল। ইউরো-  
বিদ্যাচর্চার সঙ্গে মূর্তন বিষয়ের ক্রমশঃ স-  
ম হইয়াছিল। তাহাঙ্গিণের বিদ্যা গ্রীস,  
পেরসিয়ার এবং বোগদাদ মগর হইতে  
অংশে আসিত হইয়াছিল। বার্তাশাস্ত্রে কথিত  
হু যে, কোন জাতির ধন কেবল দেশীয় উৎ-  
পাদ সামগ্রীর বিক্রয়ে এবং অনাদেশে প্রেরণ  
হয় না। অপরদেশীর উৎপাদিত সামগ্রী  
পে আনিয়ন করিতে হয়। বিন্যাবিধেরও  
রূপ। কেবল আদেশীয় পুণ্যতম ভাব সমূহে  
বালোচনা করিলে বিদ্যার প্রচুর পরিমাণে  
হয় না। অপরদেশীয় মন মন উৎকৃষ্ট ভাব  
আদেশীয় বিদ্যার সাহায্যে কনিত্ত হয়, তা  
হইতে দেশীয় এবং অনাদেশীয় অভিনব  
একত্র হইয়া তাহার এক মূর্তন রূপ হয়।  
দেও বিদ্যাচর্চার পুনঃসঞ্চার করিবার জন্য  
পুরাতন বিদ্যা ও ইউরোপীয় অভিনব  
বিষয়ক অবজ্ঞা সমস্ত সংশ্লিষ্ট করিয়া  
কনিত্ত হইতে উদ্ভাবন বিষয়ে অগ্রতা যুবক  
সমীক্ষকরণে অভিনিবেশ হইয়া মিলা-  
মত ও মতান্তর পরিগ্রহ করা কর্তব্য। তৎপরে  
দর্শন বিষয়ের প্রস্তাবেন কিয়দংশ পাঠ  
হইল।

সার বক্তৃতা সমাপন হইলে বাক্য কালীক  
একটি বক্তৃতা করিলেন, তৎপরে  
এই বিষয়ে কিছু বলিয়া সভা ভাঙ  
হইল।

জীবনচন্দ্র হাজরা  
শ্রী কালীঘাট

স্বাভাবিক সৌন্দর্য্যের সঙ্গীত  
মহাশয় সঙ্গীতপু।

কথা আমাদিগের স্বাভাবিক হস্তি, এই আ-  
বিক হস্তির অঙ্গপ্রাণী হইয়া আশ্রয় সুধাভি-  
অম, পাপাঙ্ককে কল এবং বিপদকে আশ্রয়

একান করিয়া থাকি। মনুষ্য যগুলীর মধ্যে না-  
না একরকম ধর্ম এবং বহুবিধ সংস্কার আছে,  
কিন্তু এমন কোন ধর্ম বা সংস্কার নাই দ্রিষ্ট-  
কে সাহায্য না করা যাচার উপদেশ। যে যে প্র-  
কারের লোক চউক না কেন, তাহা কি-  
কিৎ দান আছেই আছে, এমন কি কিছু  
ভিক্ষা দ্বারা উপার্জিত ধন বা সামগ্রীও অন্য  
দ্রিষ্টকে দিয়া সাহায্য করিতেছে। অতএব প-  
রের দুঃখ নিবারণ যে মনুষ্যের স্বাভাবিক ধর্ম  
তাহাতে কোন সন্দেহ নাই এবং এই বিষয় স-  
ইহাও কোন বিবাদ হইতেছে না। এক্ষণে ভিজা-  
না এই যে কি প্রকারে দান করিলে যথার্থ হুঃখ  
দিগের প্রকৃত উপকার হয়? এই প্রশ্ন কনিত্তে  
অতি সামান্য, কিন্তু ভিজ ব্যক্তিকে ইহার উত্তর  
এমন করিতে হইলে তাঁহাকে যে কত চিন্তা  
করিতে হয় তাহা তিনিই জানেন।

একণে কিছু সময়ের মধ্যে দুই একবার  
লোক আছে, শাস্ত্রশিষ্য আটীনহিন্দু এবং অ-  
শিক্ষিত ও কুসংস্কার বর্জিত নব্য সংস্কার। এ-  
বনোক্ত ব্যক্তির শাস্ত্রের দ্বারা ইতিবা কেবল ব্রা-  
হ্মণ সেবাই প্রবৃত্ত ধর্ম বলিয়া জানেন, অন্য  
জাতীয় লোককে ধনদান করিলে ব্রাহ্মণকে  
ধনদানের তুল্য কল মাই এই তাঁহাঙ্গিণের শি-  
খা, কিন্তু শেখোক্ত যুক্তি, ন ধীরে, সকল ম-  
নুষ্যই বহুলায় অগমীধরের পুত্র, সকলের স-  
হিতই আমাদিগের আত্ম মজ্ঞ, চণ্ডাল একজন  
আমাদিগের যেমন আত্মীয়, ব্রাহ্মণ তাহা অ-  
পেক্ষা অধিকতর আত্মীয় নহে ইহা জানিয়া  
কেবল যথার্থ দ্রিষ্ট, যথার্থ অসার্থ এবং যথার্থ  
বিপদকে রক্ষা করেন, কে জানে সে ব্যক্তি ব্রা-  
হ্মণ বা ক্ষত্রিয় সূত্র বা যবন। কিন্তু এই নব্য স-  
ংস্কারেরও এই বিষয়ে আমি ভাল মনোযোগ  
দেখিতেছি না। এই দানক্রিয়া একাকী অপেক্ষা  
অন্যের সহিত মিলিত হইয়া করিলে যে বিশেষ  
উপকার হয় তাহা এখনও তাঁহাঙ্গিণের হৃদয়ঙ্গম  
হয় নাই। আপনাত আপনাতর সমুখে দ্রিষ্ট প-  
ড়িলে সকলেই সাধ্যানুসারে তাহাকে দান ক-  
রিয়া থাকেন বটে, কিন্তু ইহা অপেক্ষা সাধারণ  
ধন হইতে দানক্রিয়া চলিলে কি অধিকতর উত্ত-  
কর কল উৎপন্ন হয় না?

এরূপ অনেক ব্যক্তি আছে যে তাহাঙ্গিণের  
পরিগ্রহের শক্তি এক বাবেই ব্যর্থ নাই। তাহা-  
বা দিবসের ১২ ঘণ্টা পরিগ্রহ করিতে পারে না  
কিন্তু দুই ঘণ্টা কাল যে কোন এক কর্ম করিতে  
পারে, কিন্তু এমন ব্যক্তিদিকে কে ক-  
র্ম নিযুক্ত করে, সুতরাং তাহার। কিংকি প-  
রিগ্রহশক্তি থাকিতেও কার্যভাবে পরাধীন  
ভিক্ষুক হইয় পড়ে। এমন অনেক ভ্রষ্ট পরিবার  
আছে, বাক্যন কর্তা লোকান্তরিত হইয়াছে তা-  
হার সমস্ত মস্তি এককালে দ্রিষ্ট হইলে পু-  
ত্র হয়। অনেক লোককে এরূপ দেখা বাইতেছে  
যে তাহার। ব্যবসায়ী লোক হইয়াও পুত্রের অ-  
ভাবে ব্যবসায় কালোত্তরে না পারিয়া স্ত্রী পুত্র,  
কন্যাধিককে তরুণ পোষণ করিতে অক্ষম হইয়।  
মিডান্ত কটে কাল কাটান করিতেছে। এই সকল  
ব্যাপার কি ভরসার মধ্যে হইয়া অরণ করিয়া আ-

মাদিগের মনে কি ছায়া হয় না? লাঞ্ছনায়ুগে  
যজুরদিগের কর্মীতাব হওয়াতে অস্বাভাবিক দান  
কল্প হইতেছে অতএব তাহাঙ্গিণকে এক  
আমাদিগের সাহায্য করা উচিত। এই কথা  
করিয়া আমাঃ সকলেই ববাসাধা না হায়া  
রণ করিতেছি, উত্তম, ইহা না করিলে বহুলা  
বক্ষ, হয় না, কিন্তু লাঞ্ছনায়ুগের যজুরদিগে-  
মার অস্বাভাবিক আমাদিগের দেশের যে কত লো-  
ক মানব লীলা সমরণ করিতেছে তাহার কি ভা-  
বে? এখানে বাক্য করা উচিত নহে কিন্তু  
বলিলেও মনের ক্ষোভ যায় না। বিজাতি দ্রিষ্ট  
বলে কি এত আশ্রয়?

একণে আমার এত লিখিবার উদ্দেশ্য  
মহাশয় এই প্রস্ত করিতে পারেন। আমাদিগের  
প্রায় বিদ্যাঃসাহী মহাশয়গণ যে কল উদ্ভা-  
হইয়। প্রাসে গ্রীসে চীনে, করিয়া এবং পূর্ব  
কীরস হ্যাং লাইর বিদ্যাঃসহ স্থাপন করিত হ-  
ন, ধর্মমতি স যুগযুগে বৈষ্ণব স্তাঃপ্র প্রচা-  
জনা কারননোবাকো চেষ্টা করিয়া, ব্রাহ্মণ স-  
স্থাপন করিতে হন, সেউরুপ ভিন্ন ভিন্ন ধ-  
দয়ঃপ্রচলিত সাধু মহাশয়গণ ( বিশেষতঃ ভূ-  
ধিকারিগণ ) পরম্পরের সাহায্যে মূল ধন সং-  
হ করিয়া প্রকৃত প্রস্তাবে দ্রিষ্ট দুঃখ মোচন  
কর। কতকগুলি বুদ্ধিমান সঙ্কল্প সাধু কে  
লিখ কও সোসাইটির নেতৃব হউন, এক জন  
ক্রেটারি হউন, এবং এক এক গ্রাসে এক এক  
পরিদর্শক রূপে থাকিয়া তদ্রূপ লোকের অ-  
হা সত্তার স্থাপন করিয়া, সাহায্য প্রার্থন, তরু-  
র্থে কোন পরিবারকে ৪। ৫ বা ১০ টাকা কনি-  
মায়ায়ে দিলে তাহার। সমুদ্র কাল যাপন  
বিতে পারে তাহাঙ্গিণকে তাহাউ দেওয়া উ-  
য ব্যক্তি পুত্র অভাবে কোন কার্যাব চ-  
ইহা দিনপাত করিতে পারিতেছে না, তাহা  
উল্লিখিত সাহায্য রিলিফ হইতে পুত্র  
ওয়া হউক, এই রূপ সাহায্য দাতা অতঃপ্র  
কে তাহা সুবিচার ও অশুখল, পূর্বক প্রস্তু  
ক। চীনা দ্বারা যে মূল ধন সংগৃহীত হই-  
তাহা কোন ব্যাকে জমা না রাখিয়া তাহা  
কোন কারবার চালাইলে তাহার। অনেক  
ক প্রতিপা সত হইতে পারে। এইরূপ  
হানে রিলিফ কও সোসাইটি হইলে পর তব  
কর লোকের হুঃখরাশি বিলক্ষণ থরু হইয়  
র এবং ইহা হওয়াও হুঃখ, যা নহে যে  
সকলে স্থাপন আপন দান একত্রিত  
প্রস্তাবিত বিষয় সম হইতে, পারে উতি।

২৬ এ ক্রেটারি।  
১৮৬৩ সাল।

একাংশবদ  
জিরাধাঃগোবিন্দ চন্দ্র

সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাপ্রভু সন্ন্যাসিন।

গুরু টেমিঙ কুল।

উপর লিখিত শিখোমাম দিয়া ১২৫ কা-  
জনের সোমপ্রকাশে আপনি একটি উত্তর প্রবন্ধ  
লিখিয়াছেন। ঐ প্রবন্ধ পাঠ করিলে শিক্ষা স-  
কাজ কার্যে গবর্ণমেন্টের বিরুদ্ধ আভিপ্রায়, তাঁ-  
হার। একাধিককে বিরুদ্ধ শিক্ষা দানে উদ্বৃত্ত  
হইয়াছেন এবং বিরুদ্ধ শিক্ষা দেওয়াই বা উচ্চ-  
ত্ব ইত্যাদি নাম। বিষয় জামিতে পাতা বার এবং  
উত্তর দলে আপনি যে সকল বচন বিদ্যমান করি-  
য়াছেন তাহাও সুস্থিত হইতে ও সারবৎ বলিয়া  
হুত্বজন্য হয়, কিন্তু আপনি গুরু টেমিঙ কুল  
অবলম্বন করিয়া বেক্রপ আক্ষেপ করিয়াছেন  
সেক্রপ আক্ষেপ করিবার কোন প্রকৃত বিষয়  
আছে কি না তাহা বিবেচনা করাই আ-  
মার এই পত্রের মুখ্য উদ্দেশ্য।

আপনি লিখিয়াছেন “প্রাচীন তন্ত্রের গুরু  
মহাপ্রভুদিগের দ্বারা প্রকৃত শিক্ষা নাম কার্য  
নাম সন্যাসিত নয়” এবং “এক বৎসরের  
মহাপ্রভু করা হইলে থাকুক পাঁচ বৎসরের  
ও মনোহর গুরুমহাপ্রভুদের বাজনা তাহা ভাল  
করণ শিক্ষা করিবার সম্ভাবনা নাই” একথা  
ব্যর্থ তাহার সন্দেহ নাই এবং আপনার  
প্রবন্ধ দেখা দেখা বাইতেছে আপনি ঐ তি-  
ন্ত্র উপনয় নিষ্ঠুর করিয়া প্রবন্ধের অধিকাংশ  
চর্চনা করিয়াছেন। কিন্তু আপনার ভিত্তি তা-  
ল দৃঢ় হইতেছে না। আপনি বোধ করিতে  
হয় যে, প্রাচীন পাকড়ী বাৎ, গুরুমহাপ্রভুদিগে  
বহু ওজস্বী ভাগ করিয়া গুরু টেমিঙ কুলে  
অধ্যয়ন করিতে আবৃত্ত করিয়াছে। কিন্তু বাস্ত-  
বিক তথ্য নহে। নর্মাল স্কুলে একজন ছাত্রের  
মহাপ্রভু একটি হয়, ইহাও অধিকাংশই প্রায়  
মইরূপ হইত, ইহাও অধিকাংশই বয়ঃক্রম  
১০-১২ হইতে ১৫। ৩২ পর্যায়েই মধ্যে এবং  
মহাপ্রভু অনেকই অল্প বয়সের ও সচ্ছন্দ  
ত বিজ্ঞান প্রকৃতিতে বাঞ্ছনীয়। তাহা কিংব  
দিক শিক্ষা করিয়াছে। ওম্বোধা কয়েকটি  
গুরু মহাপ্রভু (যাহাদের পাঠশালা ছিল)  
সঙ্গে বটে কিন্তু তাহারাও এতাদৃশ পুণ্ডিত  
নাই যে তাহাদের গুরু জ্ঞান করিতে পার-  
েন না। কলকাতা প্রাচীন তন্ত্রের গুরু মহাপ্রভু-  
দিগের দ্বারা ভাল কাজ হয় না বলিয়া আপনার  
আপনারই বা কেন সচেতন ব্যক্তি যাহারকে  
সংস্কার আঁছে গুরু টেমিঙের কার্য যে স-  
কালের প্রতিবাদ করিতেছে না।

স্বল্প বয়সে অধিক লোককে শিক্ষা দিবার  
গবর্ণমেন্টের যে ইচ্ছা হইয়াছে এবং সেই ইচ্ছা  
১৮৬০ অনেক কার্য ইচ্ছাকৃত হইতে হইবে  
তাহারই বা কে আপত্তি করবে? কিন্তু টে-  
মিঙ কুল সম্বন্ধে আপনার সেই কথা সম-  
স্ত হইতেছে না। কারণ বিবেচনা করিয়া  
আপনি লিখিয়াছেন “ঐ ৩০০০ টাক। সাহায্য  
নাম তাহা অসম্ভব নর্মাল স্কুলে ব্যয়িত হইলে  
একজন উপকারী শিক্ষিত সন্তান নাই।” এখানে  
আমার আপত্তি এই যে টেমিঙের ছাত্রেরা

আমের প্রাচীন পাঠশালা করিয়া উত্তর দলে তা-  
হার কার্য নির্বাহ করিতে পারিলে গবর্ণমেন্ট  
আইনগতকৈ বাস্তবিক ৫ টাক। করিয়া প্রদান  
করিলে, ইহা কি নাযাত্রতঃ সম্ভব হইত? আম  
এই নমুনা ২ মা ঐ সকল পাঠশালাই ছাত্রেরা  
সহ সাহায্যকৃত স্কুলের ছাত্রদিগের নাম শিক্ষা  
লাভ করবে না? আমার মতে ঐ ৫ টাকাকেই  
সাহায্য দান এবং ঐ সকল পাঠশালাকেই স্কুল  
সাহায্যকৃত স্কুল বলা হইতে পারবে, তবে  
ঐ সাহায্য অর্থ অল্প না হইত। আরও কিছু অ-  
ধিক হইলে ভাল হইত এবং অল্প অধিক  
কিন্তু তাহা হয় নাই বলিয়াই যে, প্রাচীনটিই  
একবারে নিষ্ঠুর জ্ঞান স্কুল হইয়াছে তাহা  
কোন মতে স্বীকার করা যায় না। তন্ত্রের আপ-  
নি লিখিয়াছেন যে ঐ টাক। নর্মাল স্কুলে  
ব্যয়িত হইলে অধিক উপকারী হইত। কিন্তু  
এখানে এই প্রশ্ন উত্থিত হইতেছে যে নর্মাল  
স্কুল ও গুরু টেমিঙ কুল ইহার। কি সম্পূর্ণরূপে  
পৃথক পদার্থ? তবে গবর্ণমেন্ট গুরু টেমিঙের  
নর্মাল নাম প্রদান করিলে বোধ হয় আর  
কোন রূপ আপত্তি উত্থিত হইত না। কারণ  
পূর্বেই উক্ত হইয়াছে যে নর্মাল স্কুল সকল  
বেক্রপ উপাদানে নির্মিত হইয়া থাকে টেমিঙ  
স্কুল সকলও সেইরূপ উপাদানে নির্মিত হই-  
তেছে, নর্মাল স্কুলের তত্ত্বপূর্ণ শিক্ষকেরাই  
টেমিঙের শিক্ষকতা কার্যে নিযুক্ত হইয়াছেন  
এবং নর্মালে যে সকল বাচ্চারা পুণ্ডক অধ্যা-  
পিত হইয়া থাকে। টেমিঙে তাহারই কতিপয়  
অংশ অধ্যাপিত হইবার কল্পনা হইয়াছে।  
তবে নর্মালে সংস্কৃত গণিত প্রভৃতি যে সকল  
বিষয় অধিক দূর পর্যন্ত গঠিত হয় টেমিঙে  
তাহা হইবে না। যদিও শিক্ষকের পক্ষে বহু  
অধিক জ্ঞান থাকে ততই ভাল, তথাপি বিশে-  
ষ বিবেচনা করিয়া দেখিলে বিলক্ষণ বোধ হই-  
বে যে নানান্য স্কুলের শিক্ষকদিগেরও সকল  
বিষয় না জানা থাকিলেও বিশেষ কার্য দান  
হয় না।

২৩৬

টেমিঙ কুলের ভাল নিয়মের প্রতি কটাক্ষ  
করিয়া আপনি যে কথা বলিয়াছেন তাহা অব-  
শ্য লিখাযায়। টেমিঙ ছাত্রদিগের এক বৎসর  
মাত্র পাঠ কাল নিয়ম করা সম্যক সুস্থিত হয়  
নাই। ঐ কাল অন্ততঃ দুই বৎসর করিয়া দিলে  
ভাল হইত। কিন্তু ঐ দিবসের সোমপ্রকাশেরই  
প্রথম পৃষ্ঠায় “যখন যে ধর্মীয় মৃতদেহ হয়, এক  
কালে তাহার সমস্ত সোম সংশোধিত হয় না,  
কিন্তুই শোধিত হইয়া থাকে।” এই মহাপ্রভু  
ও বিষয়ের এক প্রকার উত্তর প্রদান করিতেছে।  
টেমিঙ কুলে অল্পকাল নিয়ম করিতে গবর্ণ-  
মেন্টের যে দোষ হইয়াছে ক্রমে তাহা যে স-  
ংশোধিত হইবে তাহাই বা অসম্ভব নাকি? ২  
নর্মাল স্কুলও যখন প্রথমে স্থাপিত হইয়াছিল  
তখন যে ৬ ক’ল ছাত্রেরা তথায় অধ্যয়ন ক-  
রিয়া গঠিত হইয়া বহির্গত হইত তাহা বোধ  
হয় অনেকেরই শ্রুতি আছে। ততএব যদি  
তখনই বৈশিষ্ট্য এভাবে নর্মাল স্কুলের কর্ম  
প্রবর্তন সম্যক কার্যকারিতা লাগিয়া থাকে তবে

এখনও টেমিঙ কুলের সেইরূপ বৈশিষ্ট্য  
বিচার কি বাধা আছে।

আরোও তাহা দেখি কখনো বিচার  
সমাপন করিতেছি যে, টেমিঙের ছাত্রেরা  
মিকট কৃষক সমাজেরই পক্ষ করিয়া  
নেমাই বা পক্ষ করিয়াছে, বোধ হয়, তাহা  
হইবার সম্ভাবনা নাই। তবে গুরুমহাপ্রভু  
নামের উপর যদি কাহারও কটাক্ষ হয়, তাহা  
তখন আপনি গবর্ণমেন্টের নিকট আপত্তি  
করিয়া যে তাঁহার অত্যাচার, আপনাদিগের  
উদ্ধারের নিমিত্ত গুরু টেমিঙের পাঠশালা  
নাম স্কুল এবং তত্বে ছাত্রদিগের নাম  
নামের পরিবর্তে গঠিত মহাপ্রভু নাম  
কল্পনাইতি।

সমাপ্ত

গুরু টেমিঙ পক্ষপাতিন

সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাপ্রভু সন্ন্যাসিন।

সম্প্রদায় মহাপ্রভু! আপনি কোন দিগে  
কোন দিগে যান। পত্রের দেখিতেছি। আপ-  
নার যে পত্রিকাতে উত্তরোত্তর শিক্ষাকার্য  
পাঠ করা করি, সে পত্রিকা পত্রিকা নহে। এক  
আপনি কি কেবলই নর্মাল? না আপন-  
কে কুণ্ডে পাঠিয়াছে? এ কুণ্ড কি কখন? উত্তর  
পত্রিকার নিম্নাবলি। এত বড় নামের  
কি অবশ্য নহেন যে, পূর্বে মহাপ্রভুর কতি-  
বিশেষকে একত্রে দেখি। কেহ কিছু বলিলে  
সকলই মিশ্রন কি সর্ববাস্তব হইবে? তখন  
ইচ্ছাশক্তিগতকৈ কোন কথা জিজ্ঞাস্য তাহা  
হইতে পারে। আপনি কখন হইয়া? কখন  
বিচারে তাহার ত আর কখনো নাই, তাহা  
তে আর প্রত্যয় করিবেন না। এত বড় নামের  
আপনি উপর বাধা আছে যে, আপনাদিগের  
পীঠ (নিষ্ঠুর হইলেও) কোনদিকে কখনো  
কি কোথাকার প্রয়োগ করি। আপনাদিগের  
হাত করিতেছি, আপনি কখন হইয়া? আপ-  
নের পক্ষে, বর্তমান কালকে, কখনো  
বর্ণিত আছে তাহা কি শিক্ষা? তাহা হইলে আপ-  
নি দেশের এক জন প্রবর্তনকারী। আপনি  
কিছু দিন আগে বীজিয়া ব্যক্তিগত বক্তৃতা  
অনেক উপকারী হইবে। একজন প্রবর্তনকারী  
হি। আবার বোধ হইতেছে যে এক উপপাত্ত  
কেবল আপনাদের সচিবতা। এক কিছুই না  
বলিয়া হইতেছে। আপনাদিগের একটি সচি-  
কৃত্তার দৃষ্টান্ত প্রদান করিতেছি, এতদ্বারা  
কিছু কষ্ট হয়। সকল স্থানের বিচারপতি  
বিচারের কথা তা আপনাদের পত্রিকার একটি  
হইতে দেখিতেছি, আপনি সত্য করিয়া ব-  
লিয়া আপনাদের মেজিনীপুত্রের কোন বি-  
ব্র কথা কখন আপনাদের কি জন্য কোন  
প্রকৃতি হইতে দেখিয়াছেন? সত্য হইলে  
গেয় কখন সচিবতা? সত্য হইলে আপনাদের  
পত্রিকাতে বাস্তব প্রয়োগ কখনো  
হি তখন, তাহা কিছু না বলিয়া আপনি



বাহ্য দিতে পারিলাম না। এখানেই প্রায় ৩ সপ্তাহ অধিক থাকায় সচরাচর জুতার প্রয়োজিত হাল না বাঁধাইলে চলেনা। কয়েক দিন হইল। ইট সাহেবের কাছারির ভিতর গুই জামা-কাপড়ের এই রূপ জুতার ঠক ঠক শব্দ শ্রবণ হইত। ইটরোপীর হলে টেরটা পোড়ন) জাহাঙ্গিরকে ৫।৫ টাকা জরিমানা ওদখাবে এক এক লাখ করেদের হুকুম দিয়াছেন। জাহাঙ্গির জামা-কাপড় বসিতে পারি না। কাছারি না বসাক- ওরুতর পাশ না হইলে সেখানে কেহ যায় না। অন্যতর অভ্যাচার সহ্য করিতে না পারি। সুখীসোকেয়া সাহেবের দিকট দরখাস্ত দিলে অর্থাৎ বাস্তবসাধা দিলে, সাহেব তিন-তিন পনের দরখাস্তকারীকে দুইবার, দুইবার সে দি বাহিরে থাকে অথবা একটুই অন্তরে থাকে যে তাহার বাইরে বাইরে অথবা উপস্থিত হলেও দরখাস্ত ছিড়িত। কেলেম। সাহেব কর্তে ২।১ টার পর আসিতেন এখন ঠিক দশ-দশ কাছারিতে আইসেন। কিন্তু এখন আসুন দি না হইলে জামা কুটতে পসন করেন না। অর্থাৎ থাকিতে যত্নে লাগায়। বোধ করি নিবেদিত। কিন্তু কিসের সাধা তিনবার বাইরা কু-তে থাকা বাইরা আসা নিবেদন। মজা-য়। একে নীতকাল তাতে হইল। প্রায় ১৫-১৫ নীতখিকা হইয়া থাকে, তাতে আবার মজাটা হইতে রাতি ৮।৯ টা পর্যন্ত অন্য-তর ও গামালা বস্ত্রে থাকা লোকের পক্ষে তরুণকর। সোজার ও আমলা মজা-তর। কাদের দ্বারা খাল, হোশালা এবং জলখা-ন আনাইয়া থাকেন। প্রতিবেশ উপায় কি? প্রকল্প মৌকহা ধরিয়া বসেন এই আশা-ও করে তাহার। অধিকারের ন্যায় কীকিয়া-কে। সাহেবের হুকের ডাব দেখিলে বনকে লিতে হয়।

অধিকাংশ মোকহাই তিন দিন। আর ক-ত কথায় লোকের জরিমানা ও গলাবাঁকা। ন্য বিচারকের। বিচার দ্বারা শাস্তি স্থাপন ক-রা থাকেন ইনি জরিমানার তাহা সাধেন। ত ছোট ছোট, ইহা হইতে বড় বড় ঘটনা। ইহা-কে। কই এতে ও আমাদের এখানকার এক-টি ভিতর ও অসন্তুষ্ট নহে? এমন কি আমাদের খানে বিচার কার্য একচেটিয়া হইয়া পড়িয়া-হ। বাজিয়েট সাহেব সুতন লোক। প্রেস-দামানের কত বরদাস্ত। এতেও যদি আপনায়-নু জাম না হয়, তবে পুনবার বাজিয়া বাজিয়া। কলকরারি বিচারকদিগের গণ বাধ্য ও আ-দায়ের সহিত। বাস্তব করিব।

২। গত সোমবার এক জন গাজোরাম গা-ন উপর একটা হুহু কাঠ উত্তোলন করিতে-হল, তাহা ও তাহার। তাহার মন্তকোপরি তাতে মন্তক চুপ হইয়া সে প্রাণ ত্যাগ করি-য়াছে। নিবেদন ইতি।

১৮৬৩। ২২এ কেজারি। একান্তবাধা মেদনীপুর।

### মান্যবর জীবুজ সোমপ্রকাশপ্রকাশক মহাশয় সমীপে।

যত ২৮এ মাঘের সোমপ্রকাশে প্রকাশিত হইয়াছে সে "লাফেসারারের জর্জিক ইরীক-নাথ বাজুইপুরে একটি মতা হয় এবং উক্ত মতার মাছু রাজকুমারি রায় চৌধুরী এক শত টাকা প্রাকরিত করেন।" যে ব্যক্তি আপনায় সমী-পে প্রকাশ প্রেরিত প্রেরণ করিয়াছেন, বোধ হয় তিনি রাজকুমারি বাজুর বিশেষ অনুরোধ পাঠ হইবার জন্য প্রকাশ লিখিয়াছেন। বাজুইপুর বানী মকনেই ইহা। সর্বশেষ জাত আছে যে, বাজকুমার বাবু ১০০ টাকা প্রদান করেন নাই। তিনি মতা দিবসে সে হুমে উপস্থিতই ছিলেন না। অতএব প্রকাশ লিখা। সংবাদ জনসমাজে প্রচার করা উক্ত পর প্রেরকের কেবল লিখা। বাস্তব। প্রকাশ পাঠিতেছে সন্দেহ নাই। যে কয়েক জন মহাশয় ব্যক্তি "লাফেসারারের জর্জিকপ্রকাশ" মন্তব্যাদিগের দ্বারা মোচনার্জ অর্থ প্রদান করিয়াছেন, তাহাদিগের নাম ২২ এ মা-ঘের পরিদর্শকে প্রকাশ হইয়াছে। আপন কি উক্ত দিবসের পরিদর্শক সৃষ্টি করেন নাই? অ-থবা পরিদর্শকের সংবাদ দাতাকে লিখা। বানী বিবেচনা করিয়াছেন? বাহা হউক, এক্ষণে আ-পনায় সংবাদ দাতার লিখা। বাস্তব। প্রকাশ প্রকাশ (১) সেই সকল ব্যক্তির নাম নিম্নে প্র-কাশ করা গাইতেছে যথা—

|                              |            |
|------------------------------|------------|
| জীবুজ বাবু সনাতন রায় চৌধুরী |            |
| বাজুইপুর                     | ১০০        |
| " " কৃষ্ণমোহন মিত্র          | জয়নগর     |
|                              | ১০০        |
| " " হরিদাস মজুমদার           | বকীলপুর    |
|                              | ১০০        |
| " " নবীনচন্দ্র বোদ           | হরিনাতি    |
|                              | ২৫         |
| " " শ্যামাচরণ বিদ্যাল        | গোবিন্দপুর |
|                              | ২৫         |
| " " কেশবচন্দ্র রায় চৌধুরী   |            |
| রাজপুর                       | ১৬         |
| মম ১২৬৯ সাল। ২২ই কাছন        |            |
| কসাইত বাজুইপুর নিবাসিনঃ      |            |

(১) আমায় সর্বশেষ অনুসন্ধান করিয়া কা-লিলাস, যিনি আমাঙ্গিকে পূর্বে সংবাদ দেন, তাহার বালকতা প্রকাশ করা হইয়াছে। সস্ত্র-ভিকার পত্রপ্রেরকের একটি বিষয় বিশেষ করিয়া-না লেখা ভাল হয় নাই। জীবুজ বাবু সনাতন-রায় চৌধুরী যদি এরকারী টাকা হইতে দিয়া-থাকেন, তাহা হইতে রাজকুমার বাবুর অংশ-আছে। ন

### প্রাপ্ত মূল্য :

জীবুজ বাবু হরিনুজ মিত্র মোহের পর ১২৬৯ কাছন হইতে ৭০ আদণ পণ্য।

" " সীলকন্যা বলাব। ট্রু-  
১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ বৈশাখ পণ্য।  
" " টমস ক্লক মজা। জয়নগর পণ্য।  
১২৬৯ পৌষ হইতে ৭০ অগ্রহায়ণ পণ্য।  
" " মণি তহবালী। আলী।  
১২৬৯ কাছন হইতে ৭০ আদণ পণ্য।  
" " রেবরের সেবাল ডাইন। সা-  
ফকন।  
১২৭০ বৈশাখ হইতে চৈত্র পণ্য।  
" " রসনাথ তর্কবাণী। বেদী।  
১২৬৯ আদণ হইতে পৌষ পণ্য।

### সোমপ্রকাশ সংগ্রহ করেকটি বিশেষ নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পায়েলে মন্তব্যেলে সোম-প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না।  
ইহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ এবং বার্ষিক-মিক ০।১ টাকা। হয় মাসের মূলে মূল্য ল-  
যায় না।

বাঁহা। সোমপ্রকাশের মূল্য উপস্থ টি-পাঠান তাঁহা। এক অর্থ। আদ আনায় অ-মূল্যের ও রসীয়ে টিকিট না প্রেরণ করেন।

যখন যিনি মন্তব্য হইতে সোমপ্রকাশের মূল্য পাঠাইবেন তাহা যেন রেজিস্ট্রি করি-দেন।

পূর্বে প্রাপ্ত মূল্যের কাল অতীত হইলে-মূল্য পাঠাইতে কেহ বেন অনন্ত বিলম্ব-করেন।

বাঁহা। প্রেরণের মূল্য দিবার সময় অতীত ৫-টা হইবে, সন্ততমত সময় প্রতীকা কবি-অর্থমে সোমপ্রকাশে প্রচার করিয়া তাহ-পর চিঠি লিখিয়া আপনায় হইবে, যদি তা-হাতে কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া য-কাগত বক্ত হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিঠি বের-রিং পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃত-মেজে আমাঙ্গিরের নামে চিঠি আইলে অ-মরা পত্র পাইব।

বাঁহা। যখন সোমপ্রকাশ পরিভাগ কবি-র হইয়া হইবে চিঠি লিখিয়া না জানাই-তাহা প্রাণ করা গাইবে না।

কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ই-করিলে তাঁহাকে প্রথম দান প্রতি পণ্য ৫-আদ। দ্বিতীয় বার ১০ আদ। তৃতীয় বার ১৫ আদ। দিতে হইবে। তাহার পর ১২০ টা-কমিলন বাব দেওয়া হইবে।

মন্তব্যের বাঁহা। মন্তব্য হইবেন, তাঁ-বিষয়ের অন্তর তাকমান দিতে হইবে।

এই পত্র কলিকাতার পূর্বে মাতলা রেলওয়ের-মাণ্ডুর টেনরের দক্ষিণ চাকড়িপোতার জাহাঙ্গির-বিজ্ঞাপনের দ্বারা প্রেরিত। সোমবার প্রকাশিত ক-

# সোমপ্রকাশ

২৩৭

সর্বস্বত্ব অধিকারিণী পত্রিকা: সরকারী মুদ্রিত দলীল নথীভুক্ত।

সন. ১২৩২। ১২এ ফাল্গুন। ইং ১৮৬৩। ২ মার্চ

বাসিক মূল্য ১  
বার্ষিক আদায় ১০ টাকা

## সোমপ্রকাশের অবদান বৃদ্ধি সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবধি সোমপ্রকাশের আর এক  
মহা বৃদ্ধি হইল। অতঃপর যাঁহারা বাগ্মী  
ক মূল্য দান করিবেন, তাঁহাদিগকে ৫০  
ফে পাচ টাকা দিতে চাইবে, বার্ষিক আ  
দায় মূল্য (১০ টাকা) অপরিবর্তিত রাখিল।  
অতঃপর গ্রাহকদিগকে স্বতন্ত্র ডাক মান্ডল  
দেও চাইবে। বার্ষিক ডাক মান্ডল ৩০ টক,  
অতঃপর যাঁহারা মূল্য প্রেরণ সংক্রান্ত চিঠি রে  
খাই করিয়া দিবেন, তাঁহারা তাহার ব্যয়  
(বি আনা) স্বাক্ষর পাইবেন। যাঁহারা স্বত-  
ন্ত্র ডাক মান্ডল দিতে অনবধি হইবেন, আনা  
দান আদায়ের প্রয়োজ্য হইলে তাঁহা-  
দিগকে মান্ডল দিতে হইবে না।

## বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিলার অন্তঃপাতী বাটকেমারি  
করতপুর নামে যে পত্তনি ডালুক আছে,  
হা করপত্তনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। যাঁহারা সেট ডালুক করপত্তনি লই  
র অথবা অন্য করিবার ইচ্ছা আছে তিনি  
লিখিত আবেদন জিহর কোম্পানির নিক  
আবেদন করিলে সনিশ্চয় হস্তান্তর জানিতে  
পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

বামনাবু, হরু টাকর, রাস্তা মুসিংহ, গৌর  
দেবাজ, মিডামাখ টেবরাজী, কুমারমহন  
জিয়ার প্রভৃতি প্রাচীন কবিগোষ্ঠাদিগের  
৩০ টি - গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত

করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য  
এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

বহুবাজার স্ট্রিট ৭৬ নং বাড়ি।

জীবনগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

—১১—

## বিজ্ঞাপন।

মৃত মহাশয় মনমোহন তর্কালঙ্কার এম  
ত বাসবদত্তা প্রভৃতি কেহ ছাপাইতে পারিবেন  
না। কারণ তাঁদের পিতৃব্য - রামব্রহ্ম ভট্টাচার্য  
বা মহাশয়কে উক্ত পুস্তক তিনি দান করিয়া  
ছেন। তৎপরে আমবা তাঁহার পিতৃব্যের উ-  
ত্তরাধিকারী বর্তমান আছি। আমরা তিন  
বাসবদত্তার দান বিক্রয়ের স্বাধিকার অন্য  
কাহারও নাই। অতএব জীবন বাহু রামদাস  
সেন মহাশয় লিখিল প্রবন্ধ হইল এত আমা-  
দিগের অনুরোধ।

জীবনলাল চট্টোপাধ্যায়

১২৬৩ ১ ফাল্গুন

কুমিল্লা

## বিজ্ঞাপন।

ডাক্তার হানিগ বরজর সাহেবের প্রসিদ্ধ  
ওলাউঠার ডিম্পেন্সরি একশ্রেণী ঔষধমা বাজা  
রের উত্তরে সাহাজাদার মসজিদের নিজ প-  
ল্লিতে কলাইটোলা টেক্টরের ৩৬ নং বাড়ি  
তে স্থাপিত হইয়াছে। যাকার ঔষধ কির্মা ও  
লাউঠ রোগের চিকিৎসার প্রয়োজন হইবেক  
উক্ত বাড়িতে আমার নিকট আইল অথবা  
সংবাদ পাঠাইলে অবিলম্বে এবং অল্প মূল্যে

ঔষধ চিকিৎসা ও ডাক্তার হানিগবরজর সাহেব  
বের যদি পাইবেন ইতি

আবদুল আজিজ

## সোমপ্রকাশ।

১২এ ফাল্গুন।

কলিকাতা সংস্কৃত কালেক্টর

নিক প্রভৃতি অধ্যয়ন করিতে পারি  
তাঁহাদিগকে এবিষয়ে বঞ্চিত করা হইবে  
কেন? সুতরাং এই বিষয় লইয়া আবেদন  
উপস্থিত হইয়াছে। সেক্ষেত্রে গবর্ণর  
জিও ইহার মীমাংসা করেন হই।  
একটি বিবেচনীয় বিষয় সন্দেহ নাই।  
এক পক্ষে যুক্তি, আর এক পক্ষে  
কেন সংস্কার, এ উভয়ের বিরোধ নাই  
যুক্তি কাহারো এতি বিদ্যালয়ে  
রক্ষা করিতে কহিতে হইবে না।  
সংস্কার সকলকে লক্ষ্য রাখিতে  
হইবে না। উপস্থলে জরুরীকরণ  
করা কার? জি কানি যুক্তির সর্বত্র  
একটি পক্ষের পক্ষে গোয়া  
হইবে, আরোহে। প্রাপ্ত হইলে  
পক্ষ ব্যাহত হইবে। তাঁহার কোন  
লক্ষিত হইতেছে না। চিন্তনতঃ  
হার পূর্বে কালেক্টর অধ্যক্ষ  
তাঁহার কার্য ও যুক্তিরই সপক্ষতা  
হইবে। ২৩৭

প্রথম বর্ষ সংস্কৃত কালেক্টর

হর, তৎকালে জ্ঞান ও বৈদ্য ব্যতিরিক্ত



জাতিকে কালেজে গ্রহণ করিবার নি  
ছিল না । অপর, তৎকালে অষ্টমী ও  
চপদে কালেজ বন্ধ থাকিত । পশ্চাৎ  
রক্ত ও নবশাক গ্রহণ ও রবিবারে কালেজ  
র থাকিবার অনুমতি হয় । যখন নিয়ম  
প অর্গল তখন হইয়া যার উল্লেখিত হই  
ছে, তখন আর সেই যার আংশিক রক্ত  
গিয়া কতকগুলির প্রতি নৃশংস ব্যবহার  
কর ? এখানে ইহাও বিবেচনা কর । আব  
ক, শাস্ত্রে খ্রী ও যুজের বেদনাট নিষেধ  
আছে, ব্যাকরণাদি বেদাদ বলিয়া তৎপা  
ও প্রতিষিদ্ধ হইয়াছে । কিন্তু যখন সেই  
বেদে উল্লেখ করিয়া কায়স্থ প্রভৃতিকে  
দীক্ষা হইল, তখন অন্যজাতিকে লওয়া না  
কেন ? শাস্ত্রকারেরা যুজের পদ সম্বন্ধে  
নুসারে নিষেধের স্থানাতিরেক করেন  
হই । জলের এক হাত নীচে হউক, আর  
হাত নীচে হউক, উভয় স্থলেই তুল্য  
প্রাণবিয়োগ সম্ভাবনা । যাহা হউক,  
বনিক ও যুজধর প্রভৃতি কয়েকটি  
লোক একত্রে উদয়শীল হইয়াছে,  
দিগের প্রতি গবর্ণমেন্টের নিকূপ  
হই উচিত হয় না ।

—

ক্রমিক সম্পাদকেরা উত্তর পশ্চিমা  
দেশের লেফটেনেন্ট গবর্ণর পদের পথে  
বিনিয়োগ করিয়া আসিতছিলেন । ইহা  
কেহ বীতন সাক্ষ্যকে, কেহ হারিড  
সাক্ষ্যকে কেহবা অন্য এক পদ  
দিতে উদ্যত হইতছিলেন । আমরা নি  
কর সুবিধার, তাহাদের প্রধান কৌশল  
সম্পন্ন হইত সত্য হারিড  
পদ প্রাপ্ত হইয়াছেন ।  
ইষ্টন সাহেব এদেশে অনেক দিন  
আছেন; এদেশের জল বায়ুর অনেক বিধ  
পরিবর্তন সহ্য করিয়াছেন; তাহার টোনাও  
বিলক্ষণ প্রতিষ্ঠা আছে । অতএব তাহাকে  
পুরস্কার স্বরূপ এই পদ দান করা গবর্ণমে

ন্টের উচিত বিবেচনা হইয়াছে সন্দেহ  
নাই ।

কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটি

আইন হওয়া উচিত ।

এদেশের উন্নতির অন্তরায় গণনা ক  
রিতে গেলে বহুবিবাহ প্রধান পদ দাত  
করিবে সন্দেহ নাই । এই কুসংস্কৃত প্রথা নি  
বন্ধন এদেশের যে যে অপকার হইতেছে,  
অনেকে অনেক বার তাহার গণনা করি  
য়াছেন, তাহা এক প্রকার পুরাতন হইয়া  
গিয়াছে, তদ্বিষয়ে আমাদের মতন বক্ত  
ব্য নাই । বিজোহ ঘটনার পূর্বে এই জঘ  
ন্য প্রথার উন্মূলনার্থ এক বার চেষ্টা হই  
য়াছিল, কিন্তু তাহাতে ফলোদয় হয় নাই ।  
সম্প্রতি এদেশীয় এক জন প্রধান সমাজ  
সংস্কারক পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করি  
য়াছেন এবং ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার  
অন্যতর সভ্য একতঃসংক্রান্ত এক বিল ব্যব  
স্থাপক সভার উপস্থাপিত করিবেন, অঙ্গী  
কার করিয়াছেন । আমাদের দেশের লো  
কেরা রাজসহায়তার অপেক্ষা না করিয়া  
স্বয়ং সমাজ দোষ সংশোধন করিবেন, আ  
জিও একপ আশার অবকাশ হয় নাই । রা  
জবিধি দ্বারা বলপূর্বকই ইহাদিগকে তদ্বিষ  
য়ে প্রবর্তিত করিতে চাইবে । এবিষয়টি অন্য  
অন্য বিষয়ের ন্যায় ধর্মসম্বন্ধ নয় । অতএব  
ইহাতে হস্তক্ষেপ করিয়া সাধারণ প্রজার বি  
ষে ভাজন হইবার সম্ভাবনা নাই । বহু বিবাহ  
নিষিদ্ধ হইলে কেবল যে আমাদের দেশের স  
মাজ একটি মহত্তর অপকর্ষ হইতে মুক্ত  
হইবে একপ নয়, অনেকসংখ্য হতভাগ্য  
রমণী অসম্মত সঙ্গার হস্ত হইতে পরিজ্ঞান  
পাইবেন সন্দেহ নাই । সেই যজ্ঞা এক  
বিধ ও একজাতীয় নহে । অনেকে এক  
কালে স্বামি সৌভাগ্য ও সংসার সুখে  
বঞ্চিত হয় অনেকে চিত্ত দৌর্বল্য হেতু  
আগমনকে ও পিতৃ কুলকে চির কলঙ্কিত  
করে । সেই সেই হতভাগ্যাদিগের জন্য

পিতামাতাকে অসংখ্য ক্লেশ ক্লোণ করি  
হয় । অন্য আমাদের দেশের এবিষয়ের এ  
করিবার উদ্দেশ্য এই, এই সময়ে  
কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটি আইন  
আরম্ভক ।

বহু বিবাহের ন্যায় কন্যা বিক্রয়  
রেও রাজ হস্তক্ষেপ অবৈধ হইতেছে ।  
সমাজের অনিষ্ট ও নিকর্ষকারিতা পা  
বহু বিবাহের ন্যায় ইহারও বিলক্ষণ  
ক্ষতা আছে । ইহা কেবল চিন্তাশাস্ত্র প্র  
বন্ধ নয়, এদেশীয় তত্ত্বলোকদিগের  
নিতান্ত বিরুদ্ধ । যে বিষয়ে অধিকা  
লোকের ও ধর্মের বিঘ্ন আছে, তদ্বিষ  
হস্তক্ষেপ করিয়া বিরূপ ভ্রম হইতে  
সম্ভাবনা কি ? কন্যা বিক্রয়ের দোষ এ  
প্রণ নহে । প্রথম, পিতামাতা কন্যাকে  
লোভে গো মেঘ মজিমের ন্যায় বিক্র  
করেন, কিন্তু সেই বিক্রয় যে কতদূর মু  
সিদ্ধ, তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি  
না । দ্বিতীয়, পিতামাতার কন্যার উপ  
প্রভুত্ব আছে যথার্থ বটে কিন্তু সেই প্র  
ভু বলে এক স্বাধীন জীবকে খেজান  
বিক্রয় করা কিরূপে সম্ভব হইতে পারে  
যাহাবা কন্যা বিক্রয় করে, তাহাদিগের  
য়ের রূপ, গুণ ও অর্থ সম্বন্ধি বিষয়  
বেচনা করা নাই, পরিণামে কন্যার বি  
দশা হইবে, তাহাও এক বার বিবেচনা  
করা হয় না, যে অধিক টাকা দিতে পা  
সেই বিক্রেতার প্রিয় পাত্র হয় । এবং  
প্রসিদ্ধ কথাই আছে, কন্যা বিক্রয়কারি  
কন্যা জন্মিলে তাহার এক ডালুক  
হইল, জ্ঞান হয় ।

কন্যা বিক্রয়কারিরা সচরাচর যে  
ল ব্যক্তির হস্তে কন্যা সমর্পণ করে, তা  
র চুই একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতে  
ছে, তদ্বারাই ইহার অনর্থকারিতা  
সুট রূপে পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম হইতে  
বোধ কর এক ব্যক্তির ৫ বিঘা মাত্র  
ক্ষেতর স্ত্রী ছিল ! সে তাহা বিক্রয় ক

রা বিবাহ করিল। তাহার বড় উপার্জন কমতা, বিদ্যা ও বুদ্ধি, এক ভূমি বিক্রয় দ্বারা সে সমুদায়ের পরিচয় হইল। তাহার নিজের উপার্জন কমতা নাই, তাহার যে পৈতৃক লব্ধি যৎকিঞ্চিৎ অল্পের সংস্থান ছিল, তাহাও গেল। এখন সে কি রূপে আপনায় ও পরিবারের প্রতি পালন করে? কিরূপেই বা তাহার সন্তান সমৃদ্ধির লেখা পড়া হয়? উহারা যে পরিণামের পরের গলগ্রহ হইয়া উঠিবে, তাহা যেরূপে মনে হয় কি? কলতঃ এইরূপে যে বিবাহ নির্বাহ হয়, তজ্জাত সমুদায়গণের প্রায় লেখা পড়া হয় না। তাহার পৈতৃক সম্পত্তির মধ্যে কেবল পিতার নিম্নতা ও মূর্খতার অধিকারী হয়। এতদ্ব্যতীত নিম্নতা মূর্খতা অনেক গুণে অধিকার করিয়া আছে, দেখিতে পাওয়া যায়। এতদ্বারা কি প্রতিপন্ন হইতেছে না যে কন্যা বিক্রয় কেবল কন্যার সাংসারিক সুখের কণ্টক নয়, সমাজেরও একটি বিষম কণ্টক স্বরূপ হইয়া আছে। যে কন্যা বিক্রীত হয়, সংসার ধর্মে প্রবৃত্ত হইয়া প্রায় তাহাকে অনন্ত চরবস্থা ভোগ করিতে হয়, বোধ হয়, অনেকে স্বচক্ষে ইহা দর্শন করিয়াছেন।

২৩৭

অপর, কন্যাবিক্রয় বার্তাশাস্ত্রের একটা অননুমোদিত। বার্তাশাস্ত্র সকলকে জ্ঞান করিয়া জীবিত অর্জন করিতে কহে, কিন্তু কন্যা বিক্রয়কারির তাদৃশ জীবিকা অর্জনে প্রয়োজন হয় না। কন্যাই তাহাদিগের জীবিকা, কন্যাই তাহাদিগের সম্বল। যে কন্যা বিক্রয়ের এক লোভ, তন্নিবারণার্থ রাজ বিধির দ্বারা হস্তাবলম্বন কি আবশ্যক নয়? উপসংহার স্থলে আমরা ব্যবস্থাপকগণকে এই মাত্র অনুরোধ করিতেছি, তাহাদিগের কন্যা বিক্রয়ের অন্য না দোষানুসন্ধানে প্রয়োজন নাই, তাহারা কেবল এই বিষয়টি বিবেচনা করুন, পিতাভাতার লোভ প্রভৃতির চরিতার্থতার

নিমিত্ত কন্যার যাবজ্জীবন সাংসারিক সুখে বিসর্জন হয় কেন? তাদৃশ কন্যাগণ আমাদিগের সমাজ সংস্কর্তা ও ব্যবস্থাপকগণের কি কুপার পাত্তি নহে? আমরা প্রতীক্ষা করিয়া রহিলাম, বহু বিবাহ বিলের পরেই যেন কন্যা বিক্রয় বিল বাবস্থাপক সত্তার প্রবেশিত হয়।

ভারতবর্ষের জীবিত  
প্রভুত পথ কি?

আজি কালি " ভারতবর্ষে ভারতবর্ষ শাসন " ও " ভারতবর্ষের জীবিত সাধন " এই দুই মনোহর বাবু অনুক্ষণ আমাদিগের আবেগ গোচর হইতেছে। অনেকে ব্যাধের মধুর সংগীত দ্বারা মগ্নবশীকরণের ন্যায় এই দুই মনোহর বাক্যের পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ দ্বারা লোককে মোহিত করিয়া স্বার্থ সাধন করিতেছেন। অধিক কোত্তের বিষয় এই, ভারতবর্ষের জীবিত সাধনের একমুখ পথের আবিষ্করণে অস্পষ্ট লোককে উৎসাহ দেয়া যাইতেছে। ভারতবর্ষের জীবিত সাধনের একমুখ পথ কি, ভবিষ্যৎ প্রবৃত্তি হইতে হইলে, অগ্রে ভারতবর্ষ শব্দের অতি ধর্ম নিগম আবশ্যক। এখানে ভারতবর্ষ শব্দে ভারতবর্ষ বাসী লোক বুঝাইতেছে। ভারতবর্ষে এক্ষণে অনেকবিধ লোকের বসতি হইয়াছে, সে সমুদায়ই ভারতবর্ষ শব্দের বাচ্য মনে হয় নাই। কিন্তু যখন জীবিত সাধন করিয়া হইতেছে, তখন তাহাদিগের মধ্যে যাহাদিগের জীবিত সাধনের অস্পষ্টতা আছে, তাহারাই এখানে এই শব্দের মুখ্য অর্থ। একরূপে মুখ্যার্থ গ্রহণ করিলে অজ্ঞতা, হিংসা ও দুসলমানেরাই নিঃসংশয় জীবিত সাধন হয়, ইউরোপীয় ও আমেরিক প্রভৃতি লক্ষ্য হয় না। কারণ শ্রেষ্ঠোক্ত ব্যক্তিরা জীবিত সাধিত হইয়া এদেশে আসিয়াছে, বিশেষতঃ এ দেশে তাহাদিগের ভাগ অতি অসম্প্রদায় দৃষ্ট হয়। সেই অস্পষ্ট সংখ্যা লোকের (৫০ বা ৬০ হাজারের) নিমিত্ত অধিকসংখ্যা লোকের

(১৮ কোটির) জীবিত সাধন করিয়া হইবে, কখন উঠিল; অবিলম্বে বিক্রয়ের নিয়মাবলি প্রকটিত হইল; সেই বিক্রয় কার্য দ্বারা হিন্দু, মুসল বা ইউরোপীয় কে অধিকতর লাভ হইলেন? ভারতবর্ষে বাহ্যিক পণ্য দ্বারা চাষ হইলে ভারতবর্ষের জীবিত হইবে, কখন উঠিল; ভুলোপযোগিনী মি অধিষ্ঠিত হইল, চাষ আরম্ভ হইল, সমস্ত রাজ্য ঘাট প্রভৃতির উৎকর্ষ সাধ হইতে লাগিল, তাহাতে অধিকতর লাভ বাস কে হইল? ভারতবর্ষের জীবিত সাধন সম্বন্ধে উৎকর্ষ লাভ করিতে পারেন না; কণ্ট্রি বিল বিধিবদ্ধ করিলে সর্বত্র সেই উৎকর্ষ তাহাদিগের হস্তগত এই ভাণ করিয়া তাহা বিধিবদ্ধ করিতে হইল, ভেটসেজেক্টারি তাহার তিহাদী হইলেন, তৎকালে তাঁহা পদচ্যুত করিবার উদ্দেশ্যে " ভারতবর্ষ শাসন " রূপ উঠিল; সেই চেষ্টা হইতে লাগিল, যদি সেই চেষ্টা সফল হয়, কে তাহারা অধিক লাভবান হইবেন? ভারতবর্ষে মীলকর প্রভৃতির সহিত এতদূর নদা বিরোধ হয়, মনে হোটে আদালত হইলে ভারতবর্ষের জীবিত হইবে, অস্পষ্ট হইল, স্থানে স্থানে হোটে আদালত প্রতিষ্ঠিত হইল, কিন্তু তাহারা কে অধিকতর লাভবান হইলেন? সিবিগ সর্বিসের পরীক্ষার দ্বারা উদ্ভাটিত করিয়া ইংলণ্ডে তদ্রূপ রীতি প্রবর্তিত হইলে ভারতবর্ষে জীবিত হইবে, প্রবর্তিত হইল; তৎকালে তদ্রূপ প্রবর্তিত হইল, কিন্তু তাহারা কে সমধিক লাভবান হইলেন? এখানে অনেক দিভাসা করিতে



ন. ইউরোপীয়েরা কি এদেশীয়দি-  
গে উল্লিখিত বিষয়ের কল ভোগ ক-  
রিবার করিয়া রাখিয়াছেন? কেহ  
দীপদিগের সাক্ষাৎসরূপে উক্ত বি-  
কল ভোগ নিষেধ করেন আই বধ্য  
কিন্তু পরস্পরা সহজে নিষেধ করা  
হইতে পারে না। ইউরোপীয়েরা এদেশীয়দিগের  
কল অনেক বিষয়ে প্রাধান্য লাভ করি-  
য়াছেন, তাঁহাদিগের ধর্ম ও আচার ব্যব-  
হার উৎকর্ষনিবন্ধন তাঁহাদিগের অনেক  
কল আছে; অতএব তাঁহাদিগের সহিত  
এদেশীয়দিগের প্রতিযোগিতা হইলে এদেশ-  
ীয়রা যে কলভোগে বঞ্চিত হইবেন সু-  
খ হইবে; কিন্তু কতকগুলি বিষয় কেবল  
এদেশীয়দিগের সুবিধা উদ্দেশ্য করিয়াই  
হইয়া থাকে, তদ্বারা এদেশের আনু-  
শঙ্গিক যে যৎকিঞ্চিৎ উপকার লাভ হয়,  
সেইটুকুই।

যে যে বিষয় দ্বারা এ দেশের জীবিক  
প্রাপ্তি আছে, তদ্বিষয়ে এ দেশী  
কল সাক্ষাৎ সরূপে প্রবর্তিত করা,  
সেই সেই বিষয়ে ইংল্যান্ডকে শিক্ষা  
দেওয়াই এদেশের জীবিক সা-  
ধারণ প্রকৃত পথ। এদেশে রেলওয়ে হই-  
তেছে, কিন্তু এদেশীয়েরা আরোহণাদিরূপ  
সাধারণ সামান্য কল বিনা সুখ্য কল ভোগে  
বিকারী হইতে পারেন নাই; রেলওয়ে  
খন এদেশে হয় নাই, ইংল্যান্ড কল প্রকৃতির  
প্রাধান্য ও চালনাদি বিষয়ে তখন যেমন অন-  
ভূক্ত ছিলেন, এখনও সেইরূপ রহিয়া  
ছেন। ১১। ১২ বৎসর হইল, এদেশে  
রেলওয়ে হইয়াছে, এপর্যন্ত এদেশের  
কল জন লোকে কল খন কল প্রকৃত কল  
হইয়াছেন। এদেশের কল জন লোকে শকট  
কল হইয়াছেন। এদেশের কল জন লোকে  
কল কাজ শিখিয়াছেন। একে ক এদেশ  
কল লোকে সহজে আলস্য লভ্য। পরিচা-  
কলিয়া অসমর্থ্য কার্য ব্যাপ্ত হইলে  
উৎসাহ নহেন, তাহাতে আবার কাহার উৎসাহ

সাহ দেওয়া নাই, প্রকৃত অনুৎসাহ দেও  
আছে। এদেশীয়েরা তদ্ব্যবহারে মগ্ন হই  
যেন না বলিয়াই অনেকে শিক্ষা করিয়া রাখা  
খিয়াছেন। বাহ্যিক বুদ্ধি আছে, তাহাকে শি-  
খাইলে শিখিতে পারেন না, একি রূপ কথা  
শিক্ষা ও কাজ না করিলে কি কখন কাহা  
র বুদ্ধি মার্জনা, শরীর পাটন, সাহস ও  
বল বীজ্যাদির বৃদ্ধি হয়? রেল গাড়ির কল  
ও তদ্রূপকরণ ইংল্যান্ডে প্রকৃত হয়, আর  
এখানে প্রকৃত হইতে পারে না, ইহা বুদ্ধি  
য়ালওয়া সহজ নহে। চেষ্টার অসাধ্য  
কোনু কর্ম আছে; এদেশে চেষ্টা নাই  
বলিয়া সমুদায় বিষয়েরই অসম্পত্তি। বা-  
লিয়া যে যে কারিকিয়া করিতে পারেন,  
সাঁওতালেরা কি তাহা করিতে সমর্থ? তা-  
হাদিগের সে অসামর্থ্যের কারণ কি?  
তাহাদিগের শিক্ষা ও চেষ্টা নাই। এদেশে  
শে তুল্য জমিতেছে, কিন্তু সে তুল্য ইংল-  
ণ্ডে গিয়া ক্ষুদ্র ও বহু হইয়া আসিতেছে,  
গভীরতর জাহাজ তাকা লাগিতেছে; এ  
দেশীয়েরা কেবল মজুরী করিয়া তাহার  
উৎপাদন করিতেছেন মাত্র, সেই তুল্য  
প্রকৃত কলভোগী হইতে পারিতেছেন না।  
এদেশে তুল্য জমিয়া ইংল্যান্ডে চলিয়া  
গেল, তাহাতে এদেশের কি জীবিক হই-  
ল? এদেশীয়দিগের মজুরী লাভ, ইহাই  
কি প্রাধান্য জীবিক? এদেশীয়েরা কি  
তুল্য পরিষ্কার কলিবার ও বহু প্রকৃত ক-  
লিবার কল করিতে শিক্ষা করিয়াছেন?  
ইহারা কি সেই কল দ্বারা বহু প্রকৃত  
করিতেছেন? এদেশে সেই কল প্রকৃত  
করিলে এবং ইংল্যান্ডকে সেই কল প্রকৃত  
করিতে শিখাইলে কি এদেশের মজুরসী  
জীবিক হইত না।

আমরা উপরে উদাহরণরূপ কেবল  
কয়েকটি বিষয়ের প্রসঙ্গ করিলাম, এদেশ-  
ীয়দিগকে কাজে প্রবর্তিত করিবার শিক্ষা  
দিবার অনেক বিষয় আছে, ইহারা যাবৎ  
সেই জলি যত্ন ও সহজে সম্পাদন করি

তে সমর্থ না হইবেন, তাবৎ এ দেশের  
ম.ক জীবিক লাভ সম্ভাবনা নাই। গবর্ণ-  
মেন্ট যে তদ্বিষয়ে শিক্ষাদান ও উৎসাহ  
দানের ভার, সেকথা বলা বাহুল্য। পিতা  
পুত্রদিগের শিক্ষাদান ভার গ্রহণ করেন  
যে পিতা যত্ন পণ্ডিত হন, তিনি কখন  
পুত্রকে অজ্ঞান ক্ষম ও দুর্বল পালন দেখিয়া  
মিষ্ট হইতে পারেন না। আমাদিগের  
গবর্ণমেন্ট যদি অজ্ঞ হইতেন, আর এদেশ-  
ীয়েরা শিক্ষা রসজ্ঞ হইতেন, আমরা  
তাঁহাদিগকে উত্তেজনা করিতাম না। তি-  
স গবর্ণমেন্ট এ দেশের শিক্ষা, রক্ষা ও  
ভূতি ব্যবসায় বিষয়েরই ভার গ্রহণ করিয়া  
ছেন। এখন সেই গৃহীত ভারোচিত কা-  
না করিলে তাঁহাদিগকে কর্তব্যের অন-  
ভূক্তানা ও তাহার ভণী হইতে হইবে

এম, এম, উপাধি দ্বারা প্রধানতম  
বিচারালয়ে ওকালতী করিতে  
পারিবেন কি না?

সম্প্রতি সর বার্নেস পিকক এই প্রশ্ন  
টি উত্থাপিত করিয়াছেন, যে সকল ছাত্র  
বিদ্যালয় হইতে বি, এল, এবং এল  
এল উপাধি প্রাপ্ত হইয়া ওকালতি করিতে  
আসিতেছেন তাহাদিগের উত্তর জেনারেল  
একবিধ স্বত্ব ও ক্ষমতা দিয়া প্রধানতম বি-  
চারালয়ে ওকালতী করিতে দেওয়া উচিত  
কি না? এই প্রশ্ন উপলক্ষ করিয়া অনেক  
বি, এল, সমবাসসারী এল, এল, উপা-  
ধিদিগের বিরুদ্ধে চিৎকার আরম্ভ ক-  
রিয়াছেন। তাঁহারা বলেন তাঁহারা এখন  
বি, এ, উপাধি প্রাপ্ত হইয়া আইনে  
পরীক্ষা দিয়া বি, এল, উপাধি প্রাপ্ত হ-  
কিন্তু এল, এলেরা কেবল এল, এ, প-  
ক্ষা দিয়া ব্যবস্থা অধ্যয়ন করেন। পরীক্ষা  
নয়ও সমান নহে। বি, এলদিগের প্রা-  
বিষয়ে সমুদায়ের অধিক নয় লই-  
কর, পক্ষান্তরে এল, এলেরা তৃতীয়া  
প্রাপ্ত হইলেই প্রশংসা পত্র পাইয়া থাকে

১। এমিকে এত বৈলক্ষ্য বিহীন কলাংশে বৈলক্ষ্য মাই। অতএব সেই কলাংশে বৈলক্ষ্য হওয়া উচিত।

এই সকল ব্যক্তির স্বার্থপরতা আমা-  
দিগের চিত্ত বিরাম উপাদান করিয়াছে  
যথার্থ বটে, কিন্তু আমরা তাঁহাদিগের প্র-  
দর্শিত যুক্তিকে অসম্মত বলিয়া বীকার  
করিতে পারিতেছি না। পরোক্ষ অংশে  
যখন বৈলক্ষ্য লক্ষিত হইতেছে, তখন  
কলাংশে বৈলক্ষ্য হওয়াও উচিত সন্দেহ  
কি? পুরস্কার গত ইত্যর বিশেষ না থাকি-  
লে লোকে সচরাচর অধিকতর জম খীকা-  
রে উদ্বুদ্ধ হইবে কেন? কলতঃ বি, এল ও  
এস.এল, উভয়ের স্বত্ব ও অধিকারবিষয়ে  
বৈলক্ষ্য থাকা অসম্মত নয়। কিন্তু এসএল  
দিগের প্রধানতম বিচারালয়ে ওকালতী  
করিবার পথ রোডের যে চেঁচা হইতেছে,  
আমরা তাহার অনুমোদন করিতে পারিতে  
ছি না। এল, এলেরা যদি প্রধানতম আ-  
দালতে। নিয়মানুসঙ্গ স্বকর্তব্য সাধন ক-  
রিতে পারেন, তাঁহাদিগকে বঞ্চিত করা  
কি রূপে মায়ানুগত হইতে পারে? বি,  
এলদিগের সম্মানসার্থ জেদী ভেম করি-  
লই হইতে পারে। ২৬২

এখানে আমরা এল, এলদিগকে এক  
ই পরামর্শ দিতেছি, তাঁহারা তাহার অনু-  
মরণ করুন। তাঁহারা মকদ্দম আদালতে  
উঠেন, তখন তাঁহাদিগের প্রতিষ্ঠা লাভ  
হকারে বিলক্ষণ অর্থ লাভ হইবে সন্দেহ  
নাই। তখন অজ্ঞ অথবা অস্পষ্ট উক্তি  
দিগেরই একাধিপত্য। এল এলেরা তা-  
হার উপস্থিত হইলে (অজ্ঞ ও অস্পষ্ট  
কীলেরা) নিঃসংশয় আপনাদিগের রা-  
জ্যকে স্থির পদ রাখিতে পারিবেন না,  
রাজ লাভে প্রমাণের ন্যায় যত্নে  
গরা বিস্তারী হইবে সন্দেহ নাই। মক-  
ল আদালত সকলেরও কিঞ্চিৎ আলো-  
লাভ হইবে।

পতিত ভূমি বিক্রয় সংক্রান্ত  
আইন।

১৪ ই কালুওনের ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থা  
পক সভার হারিংটন সাহেব পতিত ভূমি  
বিক্রয় সংক্রান্ত বিল উপস্থিত করিয়াছি-  
লেন। উহা অবিলম্বে বিধিবদ্ধও হইয়া  
ছে। পতিত ভূমি বিক্রীত হইয়া বনপূর্ণ  
ভূমি পরিষ্কৃত ও তথায় মানাবিধ শস্য ও  
চা প্রভৃতি উপস্থিত হয়, গবর্ণমেন্টের এই  
নিষ্ঠার অভিলাষ। [তদ্বারা ভারতবর্ষের  
মঙ্গল হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে।  
কিন্তু এখানকার দেশে গবর্ণমেন্টের সেই  
উৎকৃষ্ট মনোরথ সকল হইবার ব্যতিক্রম  
ঘটিতেছে। লোকে তন্নিমিত্ত তাঁহাদিগের  
নিকট রুতজ হইতেছেন না। পাঠকগণ কি  
মনে করিতেছেন, আমরা এই কথা বলি-  
তেছি যে এদেশের অধিকাংশ ভূমি বন  
পূর্ণ থাকুক? না, আমাদেরই সে ইচ্ছা  
নয়। আমরাই সমুদয় ভূমি লইব, অন্য  
জাতিকে বিশেষতঃ ইউরোপীয়দিগকে এ  
দেশে ভূমি কাষ্য করিতে দিব না। ইহাও  
আমরা এক দিনের জন্য মনে করি না।  
ইউরোপীয়েরা আসুন, কৃষকদিগকে উৎকৃষ্ট  
রূপে ভূমি কান। প্রভৃতির শিক্ষা প্রদান  
করুন এবং সাফল্য সহজে হউক আর  
পরম্পরা সহজে হউক দেশের ধন ও সৌ-  
ভাগ্য বৃদ্ধি করুন এই কথা কোন ভারতবর্ষী  
যের না হইবে? এখানে আমাদেরই কে-  
বল বড়বা এই, এদেশীয়দিগের উপরে  
তদ্ব্যন্থ অত্যাচার না হয়, এবং গবর্ণমেন্ট  
নিজে অবিচার না করেন।

হারিং টন সাহেবের বিলের মর্ম এই,  
পতিত ভূমির উপর কাচার স্বত্ব থাকিলে  
তিনি তাহা বিক্রীত হইবার অনতিপূ-  
র্বে জেলার কালেক্টরের নিকটে জমা  
ইবেন। কালেক্টর সে বিষয়ের খীত্র  
(সম্মতি) বিচার ও নিষ্পত্তি করিবেন।  
অর্থাৎ যদি তাহাতে অসন্তুষ্টি হয়, তাহা হ-  
ইলে উক্ত আদালতে আপীল করিতে পা-

রিবেন। এই বিচারালয়স্থিত কোন  
পতি সেই আদালত করিবেন  
দিগের আজাই চূড়ান্ত হইবে। ই-  
হাও যদি কোন বিষয়ের খীত্র  
বোধ হইল, প্রধানতম অর্থের  
দালতের সত্তা গ্রহণ করিবেন।  
কর হইলে যদি কেহ আপত্তি  
করেন, আর তাঁহার সেই আপত্তি  
নিষ্পত্তি ও তাঁহার স্বত্ব উভয়কে  
হয়, তখনই তিনি বিক্রীত ভূমি পূর্ণ  
হইবে না; গবর্ণমেন্ট কোন-  
তাহার মূল্য প্রদান করিবেন।  
২৪২ যে কারণে সর চান্সলর  
কানিংহাম পতিত ভূমি সংক্রান্ত  
পরিবর্তন করেন, তদ্ব্যন্থ স্বত্ব  
একটা প্রধান। উক্ত মন্ত্রী  
অন্য অন্য সম্পত্তির ম্যার পতিত  
স্বত্বও জামাদি আইনের অন্তর্ভুক্ত  
কর্তব্য। হারিংটন সাহেব  
যদিও গবর্ণমেন্ট বলেন, যোধ ক  
ব্যক্তি টাকা দিয়া ভূমি জয় করি-  
হাতে মূলধন বিনিবেশ করিয়া  
বতী করিয়া ফুলিলেন, তাহারপর  
তাহা হইতে বঞ্চিত হয়, তাহা হই-  
র অতিশয় কঠোর হইবে। সত্য-  
যাহার যে সম্পত্তির উপর  
স্বত্ব আছে, সে তাহা বহু বর্ডে  
করিলেও যদি তাহাতে তাহার আ-  
না বেওয়া হয় সেটা কি তাহার অধি-  
কর্তের হইবে না? তাহা কি যুক্তি  
ব্যবহার করুন? সর্বদেশে চির  
এই নিয়ম হইয়া আসিতেছে, আদ-  
যাহার স্বত্ব প্রমাণ হইবে, সে স্বত্ব  
কে অবশ্যই দিতে হইবে, তৎপরিব-  
কিছু লওয়া আর না লওয়া তাঁহার ইচ্ছা  
কোন দেশের কোন ব্যবস্থাপকই সহ  
অনাগমোপভোগের প্রমাণ সংস্থাপন  
রেন নাই। ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট অং-  
ব্যবস্থাপক সভা ইচ্ছামত এতৎপরিবর্তে,



ন। আইনের কথা বুঝে থাকুক, নু  
বা কি বলিতেছে, তাহাও প্রত্যক্ষ  
না করা উচিত। কেহা পাহে সন্দেহ  
এই ভাবে বিবল হইয়া যুক্তিও কি  
অধিকারিও বহু গোপে সন্দেহিত কি  
এই নিয়ম সকল সন্দেহিত উপ  
কবে ত? বোধ কর, একজনকে এক  
আমি আর অন্যকে বিচার করিলা  
রে বর্ধার অধিকারী সীমিত করি  
পহার স্বয়ং সঙ্গ্রাম করিল। তখন  
যদি তাঁহাকে যদি তোমার তা  
মি পাইতে না, কিন্তু আমি তোমা  
ক্য দিতেছি। আমার নে' কথা  
হইবে-ত? কৌশলী আদালত আ  
তদ্বিষয়ে অপ'রণকারী বলিয়া চো  
ও দিবেন না ত? দেওয়ানী আদা  
মার সম্পত্তি করিবেন ত? তাহা  
পারেন, গবর্ণমেন্ট কি, যুক্তিতে  
নিবর নিজে বিচার করিতে উদ্যত  
এ নিয়মকানুন প্রবৃত্ত হইতেছে  
এ কার্য সাধারণ মোকদ্দম  
দ্ব্যস্তি হয়, গবর্ণমেন্টের পক্ষে  
কেন? অপর এক্ষেত্রে ইহাও বিবেচ  
নাব্যবসায়িক, বর্ধার অধিকারিও  
সেইও কেহাও অসম্মত করে  
একিঞ্চি স্থল্য লইয়া স্বাধীনতা  
দিত হওয়া সহজ, অথবা যিনি  
আগমে পরের ভূমি গ্রহণ করিল  
ত স্থলধন বিনিয়োগ ও পরিচর  
হেন তাঁহার সেই বিনিয়োগিত  
ও পরিচরমের পুরস্কার লইয়া  
রিভাগ সহজ? কেহা যদি এ অসু  
সহ্য করিতে না চাহেন, তাহা হইলে  
ই সম্পত্তিগ্রহণ করিবার পূর্বে বিশে  
প জানা কর্তব্য এতাবিত, ভূমির  
অধিকারী আছেন কি না? তাঁহার  
একাল হইলে কি বর্ধার অধিকারী  
র হস্তান্তর করিবেন? বাহার জম  
তাহারই ক্ষতি হয়, ইহাই আমরা বরা

বরা শুনিয়া আনিতোহি, কিন্তু বাহার জম,  
তাহার লাভ, অন্যের ক্ষতি একথা আমরা  
এই মুকম শুনিলাম।

এই বিলের প্রতি আমাদিগের আর  
এক বিশেষ আপত্তি আছে,  
আমাদিগের বিচারালয়ের অবস্থা  
হয় নাই। মাজিস্ট্রেট কালেক্টর প্রভৃতিও  
অনেক সময়ে পক্ষপাত প্রাকৃত্য ও জা  
তি বৈর প্রেরিত হইয়া কার্য করেন আম  
লাদিগের ত কথাই নাই। টাকা ব্যয় করি  
লে এক ব্যক্তি অন্যরাসে একজনকে নামে  
ডিক্রী লইতে পারেন, অথচ প্রত্যর্ষী ডি  
ক্রীজারির পূর্বে তাহার বিন্দু বিসর্গও জা  
নিতে পারেন না। একপ স্থলে গোপনে  
লোকের সম্পত্তি বিক্রয় হওয়া অসম্ভাবিত  
নয়। বিশেষতঃ ব্রিটিজ, বিদেশবাসী, খ্রী  
লোক ও অপ্রাপ্তবয়স্কদিগকে নিম্নলিখিত  
সর্বস্বত্ব হইতে হইবে। অপর, স্বত্বাসত্ত্বের  
মোকদ্দমার বিচার তার কালেক্টরদিগের  
হস্তে দেওয়া অত্যন্ত অন্যায়। একাদশ মো  
কদ্দমা দেওয়ানী আদালতেরই অধিকার।  
দেওয়ানী আদালত ব্যতিরেকে অন্যত্র  
এবধি মোকদ্দমার বর্ধার ও মুকম বিচার  
হইবার সম্ভাবনা নাই।

ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট এক্ষণে অতিশ  
ব অন্যায় করিতে চলিলেন। কলিকাতা বিল  
রহিত হইবার পর অবধি তাঁহারা নানা  
কৌশলে ইউরোপীয়দিগের সহায়তা কাষে  
প্রবৃত্ত হইয়াছেন, তদ্বধ তাঁহারা একজন  
দীর্ঘদিনের প্রতি অবিচার করিতেও তীত  
ও সঙ্কুচিত নহেন। তাহার এই পক্ষপাত  
এতাবৎ মোহিত হইয়াই বারবার ইংল  
ণ্ডের গবর্ণমেন্টের সল্ট আফা লজেন  
করিতেছেন। বাহা হটক তাঁহারা কি  
ইহাতে কৃতকাব্য হইতে পারিবেন? ইং  
লণ্ডের গবর্ণমেন্ট কি তাঁহাদিগের কৃত এই  
পক্ষপাত সুবিধ ব্যবহার অনুমোদন করি  
বেন? কলিকাতা বিলের প্রতি ইহাও হয়

বহা হইবে না? দেখা যাইবে, পরে চারজন  
উক্ত কি করেন।

কলিকাতা ওয়ার্ড

সমাজের পক্ষে দুইটী কলিকাতা  
ওয়ার্ড হ' অপ্রাপ্ত বয়সের রাজকুমারদিগের  
র তত্ত্বাবধান করা ও জম অধিকারিক ত  
তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত হইয়াছেন। তদ্বধ  
রমানাথ ঠাকুর ও হরেন্দ্রকৃষ্ণ বাহার  
এদেশীয়, আর ৩ জন ইউরোপীয়। আ  
মরা অনেক দিন অবধি ওয়ার্ডের দুর্নী  
ন অবগত করিতেছি, অনেক অ'হ ও জম  
কালেক্টর প্রভৃতি এই স্থানে অপ্রাপ্ত ব  
রকদিগকে প্রেরণ করিতে আনিচ্ছ হই  
য়াছেন। তাঁহাদিগের অনিচ্ছা নিস্কারণ  
নহে। বাহা হটক গবর্ণমেন্ট যে তত্ত্বাব  
ধায়ক নিয়োগ করিতেছেন, ইহাতে আ  
মরা অতিশয় আশঙ্কিত হইলাম। তত্ত্বাব  
ধায়কেরা বালকদিগের চরিত্র শিক্ষার  
প্রতি কিঞ্চিৎ বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন।  
তাঁহাদিগের চরিত্রগত গুণ দোষের উপ  
পর অনেক এতেনের সুতানুত নির্ভর  
করিতেছে। এখন ত এই স্থল একটী  
জনরত্ব উঠিয়াছে, অপ্রাপ্ত বয়স রাজকু  
মারেরা ওয়ার্ডে কেবল আবকারির জি  
জ্ঞা শিক্ষা করিতে আইসেন। আমাদি  
গের দেশের জমীদার ও রাজকুমারের  
যদি অপদার্থ ও অবিদ্বৎকারির ম্যায় ইতি  
র সেবা ও আশ্রয়ের হস্তে সময় সমর্পণ  
না করিয়া কৃতবিদ্যা ও সচ্চরিত্র হইয়া  
স্বদেশের উন্নতি স্বকর্তব্য সাধন করেন  
জিহ্বা কি প্রাত্যহিক অরুণকিরণবল  
শৌধর্য্যার ম্যায় ভারতবর্ষের এতি  
হের স্বাধীনতা সম্পাদন করিতে বি  
দীর্ঘকাল উদ্যমী ব্যক্তি

বাঙ্গালিদিগের অধিকতর মুক্তকার  
হইবার উপায় কি?

স্বাধীনতা আন্দোলনের এক প্রধান কারণ





মোগলদিগের দ্বারা ভয়ভঙ্কন করে নাই।  
১৬ বছর অত্যন্ত অসত্যাবস্থায় ছিল,  
শারীরিক নিরুৎসাহিত্য জ্ঞান তৎকালেই  
গর মধ্যে উদ্ভূত হয় নাই, তৎকালে ইং-  
লান্ডে পুষ্টিকর ব্যবস্থা তৎকালে ও অসম্ভব  
এরূপ ছিল। অন্যান্য শীতল দেশবা-  
সিনেরও প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে স্পষ্ট  
হইবে যে ইংল্যান্ডবাসিনদের ন্যায়  
আমরাও শারীরবিকারিত পদ্ধতিগণের  
বর্জ্য নাই। সর্বল শরীর ইহঁদের উ-  
ত্তম নিয়ম অবলম্বন করিয়াছে।

কলতঃ অল বাহু ও মুক্তিকাসির উপরে  
ক প্রতিক্রিয়া আশ্রয়িতার শারীরিক  
ও ক্রিয়াকলাপে নির্ভর করে, তাহা  
নাই। শরীর বিধানবিপ্লবিতেরাও  
হয় সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। এতদ্বিধে স-  
রসেব স কোপলাও সাহেব বাহা বলেন  
সার ভাষা নিম্নে সন্নিবিষ্ট হইল।  
লেন 'বহু' যে যে দেশে বাস করে  
সেদেশের কল বাহু মুক্তিকাসির তার-  
ু বাহ্য পরিমাণে তাহার শারীর-  
সিক শক্তির ইতর বিশেষ হয়।  
, লিপিকাও প্রকৃতি দেশে অত্যন্ত  
এ প্রতি বৎসর হয় যান প্রায়  
এর অত্যন্ত বিবর্তন তৎকালেবাসিন।  
ও দুর্বল ম্যংসপেশী বিশিষ্ট হয়।  
দি অপেক্ষা অস শীতল দেশবা-  
সিনের বিলম্ব সবলকার ও মানসিক  
বিশিষ্ট হয়। ৪৫ ও ৬০ ডিগ্রী  
রখার মধ্যে স্থাপিত দেশবাসিন। ইহা-  
ণ, তাহারাই পৃথিবীর সকল জাতি  
কা দৃষ্টক, ও ক্রম সহ্য করিতে সক্ষ-  
ম নক দেশে সকল কষ্ট পরিবর্তন  
তৎকালেবাসিনেরও ভৌতিক ও মান-  
বলের বিলম্ব প্রকৃতিব হয় যথা- ভে-  
হইতে, ইংলণ্ড ও তৎসম্বন্ধিত দী-  
১৮ কোপলাও সাহেব তাহারা বলেন  
সকল কৃষি সবুজের অপেক্ষা অধিক  
ও পরিতাপের নিকট, সেই সকল স্থান  
রা বিলম্ব দৃষ্টকার হইয়া থাকে। তা-  
ব্যাপ্যাদি কণ কার্যে বিলম্ব রূপ এবং  
ও সিংহ কৃষি লোকের অপেক্ষা

অধিকতর শীঘ্রজীবী হয়। তাহাদিগে-  
লীলোকেরা অধিকতর সন্তানপ্রসূ ও ধর্ম  
পন্থায় হইয়া থাকে।

এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীকমান হইতেছে যে  
আমাদের অল বাহু মুক্তিকাসি বিশিষ্ট দেশে  
বাস করিলে লোকের স্বাস্থ্যতাই পুষ্টিকর ব্যব-  
স্থায় প্রভূতি হইয়া থাকে। অপর, দৃষ্ট  
কার হয় বলিয়াই তাহার শরীরভার (৩)  
আভ্যাসিক বলোপার্জন প্রভূত হয়। তাহা-  
দিগের বেশী স্বভাবতঃ হয়, আমাদিগকে  
তাহা চেষ্টা করিয়া করিতে হইবে। কিন্তু কি  
রূপে সে চেষ্টা করিতে হইবে, আমরা আগা-  
নি বারের পাঠকগণের গোচর করিব।

### মুত্তন পুস্তক ও পত্রিকা।

কয়েক সপ্তাহ হইল, কয়েক খামি মুত্তন  
পুস্তক ও পত্রিকা আমাদিগের হস্তগত হই-  
য়াছে। অবকাশ বিস্তরে আমরা কেবল যে  
গ্রন্থকার ও পত্রিকা প্রণয়নকারিগণকে পূর্ণ  
মনোযোগ করিতে অসমর্থ হইরাছি এরূপ নহে,  
আগনারাও প্রকটব্য সাধন করিয়া তাঁহাদিগের  
মিকটে কণ দৃষ্ট হইতে পারি নাই। অস-  
কিয়ৎ পরিমাণে কণ শোষে প্রণয় হইল।

১। সীতার অশ্রবণ, পদ্যবর গ্রন্থ, ঢাকা  
বাল্য বাজার ব্রাহ্ম কুলের পণ্ডিত জীমদন  
মোহন দ্বারা প্রণীত। ইহা ঢাকা মুত্তন যন্ত্রে  
দ্রুত হইয়া প্রচারিত হইয়াছে। ইহাতে রা-  
মের বিবাহ ও বিলাপ বর্ণিত দৃষ্ট হইল। আ-  
মরা কয়েক স্থান আমল সহকারে পাঠ করি-  
লাম। বচন সম্পূর্ণরূপে নির্দোষ হয় স্রষ্টা ব-  
টে কিন্তু ললিত হইয়াছে। গ্রন্থকারের কাক-  
রচনা শক্তি আছে, তাহা স্পষ্ট বোধ হইল।  
কয়েকটি কবিতা উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ-  
কগণ স্বরাংই কবির সজদরতার পরীক্ষা করুন  
উদ্ধৃত কবিতা কয়েকটি এই—

করি রায় উর্দ্ধে নিলোকন,  
বলে অচেতন মেঘে তেবে সচেতন,  
তুমি যে জীবন দাতা, জীবের জীবন পাতা,  
এই বার বাঁচাও জীবন।

(৩) ব্যাখ্যানিক দ্বারা যে বলোপার্জন  
হয়, তাহাকে আভ্যাসিক বল বলে।

আমি কই কই কই কই  
মোর গুলমে নত খায়ে বহে বারি,  
মহা মনোহর বলে, কখন নিরুৎসাহ বলে,  
যদি মরি মরিতে মা পারি  
কৃষি না কই উত্তাপ কারণ  
আমার উত্তাপ কেন কর মা মোচন,  
তোমার অপেক্ষা আছে, তিরা প্রেরণীর কা-  
লামাইতে দুঃখ বহন।  
যে বারিহা বারি বহিঃখ,  
কত নদী মন পূর্ণ কর কণে কণে,  
মোর বাহ্যপূর্ণ কর, কইরা সন্দেশ হয়,  
বাও প্রাণ-প্রায়ের নবদেহ।  
বিনয়ে কলিও প্রেরণীরে,  
তব মেঘাধীন সরা তাসি বৈদ্যদেহ,  
জার কি শিখাও আদি, যা মের চাকর-  
তাই বলে এস বেয়ে কিরে।

২। পদ্য পাঠ প্রথমভাগ দ্বিতীয়বার  
দ্রুত। জীবুত বহু গোপাল চট্টোপাধ্যায় ই-  
র সন্ধান করিয়াছেন। ইহা সালকজিগের  
ঠান সংগৃহীত হইয়াছে। বিদ্যালয়ে পদ্য-  
বিলম্ব প্রচার, বহু বাহুর এষ্ট গ্রন্থ অনেক  
শে সেই অত্যন্ত দ্রুত করিতে সমর্থ হইয়াছে  
বহু বাহু যে গুলি বহু র মা করিয়াছেন  
বং যে গুলি সংগৃহ করিয়াছেন, উত্তরে  
আহাৎসহস্রতার পরিচয় হইয়াছে।

৩। ধর্মচর্চা। ইহাতে গ্রন্থকারের  
অথবা কোন্ বহু মুদ্রিত হইয়াছে, তাহা  
খিত নাই। বোধ হয়, কলিকাতা এষ্ট সম-  
হইতে ইহার মুদ্রণ ও প্রচারণ ক্রিয়া সম্প-  
ইয়াছে। ইহাতে ব্রাহ্ম ধর্ম বর্জিত কয়েকটি  
পদ্য আছে। একটি উপদেশ এষ্টে উ-  
হটল।

পুস্তক প্রতি পত্রিক উপদেশ।  
হে প্রিয়পুত্র! তুমি ইহুদকে লক্ষ্য করিয়া,  
কার্য সম্পন্ন কর, তিনি তোমার পিতা, মা-  
বুদ্ধ্য; সকল স্থানে সকল অবস্থায় তিনি  
মার একমাত্র সত্য ও গতি, তাঁহাকে  
কর, সমুদায় জীবন তাঁহার কার্যে নি-  
কর, এক গ্রন্থ তাঁহার জ্ঞানকে নিশ্চয়  
খাতিও ন। তাঁহার জ্যোতি দৃষ্টি করিয়া  
মাকে উজ্জল কর, সর্বদা সেই ভূমানে  
ভোগ কর, সংসারের কুটিলতা  
পরিহার্য সেই পবিত্র স্বাক্ষরপত্র সহিত  
সম্মিলিত হও। আমি যখন তোমাকে  
পালন করিয়াছিলাম, তখন আমিই মনে  
আমি ছিল, যে পূর্বমেঘের প্রতি অ-  
হইয় তুমি আমার গৃহ উজ্জল করিবে,  
সেই আশা পূর্ণ কর। ইহুদ তিন ভোমা  
গতি নাই, তিনিই তোমার একমাত্র  
হাতে প্রীতি করিবে, অত্যাচারের সহিত  
প্রিয় কার্য সাধন করিবে, এইজন্য পু-  
ন্থিত্রীতে অস্ব প্রবণ করিয়াছি; অতএব

ভাষে কথাকে কথিত কর। সেই পরম শিতাকে  
কথন বিন্দু ৩ ৩৩৩ ৩৩ : ৩৩৩৩ ৩৩৩৩ ৩৩৩৩  
কানো খাতিয়া উত্তর হইতে হইবে তিনিই ২ ১  
মাক অমলকর, তিনিই জোয়ার জীবন, সেই প-  
রম জীবনকে কথন কথন হইতে অমর করিও  
না। যে পরমেশ্বর ১ ৩৩ ৩৩ এই পুস্তকে আমার  
জ্ঞান করিয়াছে, ইহার কথন কথনের  
একি বেন সর্জনাই জোয়ার হুটি থাকে, তুমি  
ইহার কোমল, কথন বিন্দু কর।

৩। আদিব্রহ্মলার গবর্ণমেন্ট সংক্রান্ত  
বল বিজ্ঞানসম্মত তৃতীয় সাংসদিক পরীক্ষা  
বিবরণ। এই বিজ্ঞান ১৮৫৩ অব্দে স্থাপিত  
হয়। ইহার জন্ম উদ্ভূত হইতেছে। পরীক-  
করণ পরীক্ষা করিয়া সত্যোৎপাদন করিয়া  
ছেন। ইহা অধ্যক্ষ ও শিক্ষকগণের প্রাণসার  
বিষয় সন্দেহ নাই।

আগন্ত।

১৮-এ মাঘ সোমবার।

জেলা মদীরা।

অন্য স্থানখাট হইতে কুটিয়াতে আসি  
বার সময় ১ বনো, ২ ককগর, ৩ রামনগর,  
৪ চুয়াডাঙ্গা, ৫ আলমডাঙ্গা হইয়া কুটিয়াতে  
আসিয়া উপস্থিত হইলাম। ইহার মধ্যে বে  
ক একটা পোল আছে, তন্মধ্যে একটা পোল  
অতিবৃহৎ। ককগর পর্যন্ত মধ্যে মধ্যে অনেক  
অবুজ পতিত ভূমি আছে। শুনিলাম নীলকর  
মহাশয়দিগের দৌরাখাই ভূমি পতিত হইবার  
প্রধান কারণ। ককগর হইতে আলমডাঙ্গা  
পর্যন্ত খেজুর, খানা, ধব, ও নানা প্রকার ক  
ডাই মন্দির লক্ষ্য প্রভৃতি অনেক দ্রব্য এবং  
স্থানে স্থানে ইক্ষু ও উৎপন্ন হইয়া থাকে।  
ইহার মধ্যে মধ্যে শুই একটি নীলকরীও দে-  
খতে পাওয়া যায়। কিন্তু প্রজাবা নীল বুনন  
করাতে উহার অনেক গুলি অমনি পতিত  
হইয়াছে।

কুটিয়া।

এই কুটিয়া, মদীরা জেলার অন্তর্গত।  
লিকাতা হইতে এস্থান ৫২ কোশ এই  
স্থানের উত্তরে গড়ুই নদী। এই নদী আম-  
দার বিল হইতে নির্গত হইয়া উত্তরাভিমুখে  
রস পূর্বক পাহার সজিত মিলিত হইয়া অত্য-  
প্রবল ভাব ধারণ করিয়া পূর্বদিকে গমন  
করিতেছে। সুতরাং ইহাকে কেহ কেহ পাহা

কহিয়া থাকে। এক্ষণে এই স্থান পাহা-  
র শব্দে গমনাগমন করিতেছে। বাকি  
পাহা উত্তর হইতে দক্ষিণবাহিনী হইয়াছে  
যথার্থ বটে, কিন্তু স্থানে স্থানে অত্যন্ত বক্র  
ভাব ধারণ করিয়াছে। উহার উত্তরে কুটিয়া  
নামক একখানি গ্রাম আছে। এই স্থানে একটি  
খান ছিল। খান দক্ষিণ পাশে আসিতে এ-  
ক্ক্ষণে এই স্থানকেই গ্রাম সকলে কুটিয়া এবং  
সামান্য মোকে ছোট কলিকাতা কহে। ইহা  
তে বোধ হয় এই স্থান সময় ক্রমে ছোট ক  
লিকাতা নামে প্রসিদ্ধ হইতে পারিবে। এথা-  
নের উত্তর ও পশ্চিম সীমা গড়ুই নদী  
(এই নদী এখানে অতি অপ্রবল,  
ইহার পশ্চিমে কলমাপুর গ্রাম) দক্ষিণ  
মহলমপুর। পূর্বে বাহাদুরখালি গ্রাম। ইহার  
কিছু দিন পূর্বে এই স্থান পাহারা জেলার অ-  
ন্তর্গত ছিল। এক্ষণে মদীরার শাখিল হইয়া-  
ছে। পাহা অতি তরানক নদী। ইহার গর্ভে  
অনেক স্থান প্রবিষ্ট হইয়া অনেকের আশঙ্ক  
কতি হইয়া গিয়াছে। এখন এই মদীকে  
স্থানে স্থানে জন অতি অল্প। ইষ্টেনন হইতে  
ইশান কোণে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে বোধ হয়  
যেন বাতুকানর বরুহুনি দুখ করিতেছে এবং  
এ সকল চড়ার মধ্যে মধ্যে ক্রবকেরা খান্য  
রোপণ করিতে আরম্ভ করিয়াছে, টেকাঠ  
হাসের প্রান্তে কাটিতে উপলব্ধ করিবেক।  
উক্ত চড়া বর্ষাকালে প্রাণিত হইয়া সাগরের  
ন্যায় আকার ধারণ করিবেক।

কুটিয়ার নিউটনগ্রাম।

ইষ্টেননের উত্তর পুরাতন কুটিয়া, কুক  
দেবপুর, গোপীনাথপুর ও শিয়ালমহ। এই  
সকল গ্রামে কামার কুমার চাণাখোপা শুদ্ধি  
কৈবর্ত প্রভৃতিই অধিকাংশ। ইহার মধ্যে কু  
টিয়াতে ৩। ৪ বর প্রাচীন আছে। পশ্চিমে  
গড়ুই নদীর উত্তর তীরে মলমবেকে হস্তক  
পূব কড়ামিনগর সাকটে ও উলিবাড়ি। এই  
সকল গ্রামে প্রাচীন ও কারুণ্ড তেলি ও শুদ্ধি  
প্রভৃতি অনেক প্রকার জাতি বাস করে।  
তন্মধ্যে উলিবাড়িতে প্রাচীরের সন্ধ্যা অধিক।  
দক্ষিণে চোডকাস ও জগতী। এই দুই গ্রামে  
প্রাচীন কারুণ্ড ও তেলি প্রভৃতি সকলই কিছু  
কিছু আছে। তাহার মধ্যে কারুণ্ডের প্রাণ অ-

ধিক। পূর্বে কলিমাংসের  
এই দুই গ্রাম প্রাচীন পাহা  
গোপীনাথপুর অত্যন্ত প্রাচীন। এই  
মধ্যে মধ্যে কলমাপুর প্রাচীন  
যথাক্রমে কুটিয়া এবং  
এক কোশে অপর গ্রাম প্রাচীন  
হাতিয়ার প্রাচীন। এবং  
৩০০০ হাতিয়ার প্রাচীন।  
সোকেবিগের অংশে, প্রাচীন  
প্রাচীন অতি প্রাচীন। কলি  
খানকার মোকবিগের বিজ্ঞানসম্মত  
কিছু-এই ও পুরাণবিগের প্রাচীন  
বিবরণে তত্ত্ব সাধন। আদিব্রহ্ম  
বিবেশিত অতি প্রাচীন।  
থাকে।

এসারকার কুটিয়া অতি প্রাচীন।

১। কলি, সর্জন, বহু এবং

অনুজি আকাখি বহু উৎপন্ন।  
রিটকল ও তরাক জাতি বিহু  
অল-মহা-জিহা, আকাখি বহু  
রোলাকর্ষ অতি অল্প, এমিলি  
হইতে পাহা বা। পুষ্কিনী প্রাচীন  
অল পাওয়া যায়, কিন্তু তাহা  
পারে না, মদীর মধ্যে অপ্রাচীন  
সুতরাং সকলেরই মদীর অল যা  
হয়। এই সকল গ্রাম কতক  
বহু প্রাচীন হইতে, কতক  
সকল কলি গায়েবের আকাখি  
নীলকর কলি সায়েবের অধি  
স্থান সকলের প্রজাবা কলিমাংস  
তাহা বর্ণন করা বাধ্য হইয়া।  
সায়েবের অন্তরে কুটিয়া একটি নীল  
এই নীল প্রদেশের দক্ষিণ প্রজাবি  
অবলোকন করিলে সমস্ত ব্যাপি  
অপ্রাচীন কোত ও করুণা হু  
তাহার সন্দেহ নাই। এখনও  
সায়েব প্রজাবিগের উপর এক  
রি করিতে কতি করিতেছে, প্রাচীন  
ছোট আদালতের দেয় ও রা  
নীলকরদিগের অতি পূর্বে  
ছিলেন, বোধ করি তাহার  
হইয়া; দাকিটেট সায়েব তদুপ



[illegible][illegible]

वेविध मंत्राणि

২ ই কালিদাস সে'বক

হিন্দুস্থানী অযোধ্যায়  
 ৪ স্ব অভিনন্দন পত্র প্রাপ্ত হইয়া  
 উদ্বার কানপুরে লাগু করিয়া  
 আ. করেন । অযোধ্যার  
 টি. গবর্নর জেনরল স্যার  
 কলিঙ্গকে বলিলেন আশঙ্কিত  
 অধিনেত্রী উৎকর্ষ সাধন  
 নতুন প্রকল্পকে ব. অধিনেত্রী  
 সন্দেহ করিয়া বিশেষ সংশয়  
 উল্লিখিত লাগু করিয়া  
 প্রাপ্তব্যাক্রমকে বলিলেন তাঁহা  
 ডাক্তার সকল উৎকর্ষ সাধিত  
 তিনি ২ ( গবর্নর জেনরল )

ମହର୍ଷି କବିସାହେବ । ଜଗତର ଭେଦରାଜ କଳିକାଞ୍ଜୀ-  
 ତୁ ଶ୍ରୀକାଶ୍ୟପ କବିସାହେବ ମହର୍ଷି ନବୋ ଦର୍ଶନ  
 କବିସାହେବ । ଆମିଦେବ ଅକୀକାର କବିସାହେବ ।

দিল্লীগেজেটের এক জন পত্র প্রেরক হ্রাফ  
 "পুস্তকাঙ্ক" বন্দিকনিগের অসমত ব্যক্ত করি-  
 নার জেটীর প্রতিবাদ করিয়াছেন। কলিকাতা-  
 য় যে সকল দ্রব্য ২০০ টাকার (৭) ওয়া যার তা-  
 হা তথায় ১৪০০ টাকার বিক্রীত হইয়া থাকে।  
 অজ্ঞাত হ্রাফ। এই সকল পুস্তকনিগের দ্বারা  
 প্রস্তাবিত হন। এতদেশীয় হ্রাফ। বিবেচনা  
 করেন, উক্তমূল্যে দ্রব্য ক্রয় করা মহতের কাব্য।  
 দিল্লীগেজেট বলেন, পলাবের রেইল ও-  
 বেকমিটারিরা অতিশয় অত্যাচার আরম্ভ  
 করিয়াছেন। ইহারা সকল স্থানেই সমান মুক্তি  
 দান করিয়া থাকেন।

বকুললাইট বেগার খরিবার আতিবাদ করি-  
 য়াছেন। উক্ত শশিমাখালে বেনাগণকে স্থানীয়  
 জমিদার করবার সময়ে যুটীয়া ও গরুর গাড়ির  
 আড়োয়ানদিগকে আতিশয় কষ্ট সহ করিতে  
 কর, কথক ফাহারা উচিত ভাড়া পাওয়া।  
 এই অকল্যাণপ্রাপ্তী ক্রমশঃ অসম হইতেছে।  
 বেগার নিবারণের জন্য যে নিম্ন অর্পণ করা  
 হয় তাহার কি হইল ?

পুনা। অবজারবর হসেন বে হুদাখরকে  
ছোট আদালতের জজ কানবা রুজু করিয়াছি-  
লেন সে আপীল করিয়া মুক্ত হইয়াছে। পুনা  
র সেনিটর জজ বারন মার্শেট কানবার অ-  
ফ্রাচ্চার বিধর প্রধানতম বিচারালয়কে অ-  
বগত করিয়াছেন। ইনি ২১ ই অক্টোবর এক  
জন উপযুক্ত বিচারপতি ;

আজাদীদার গেজেট বহন কৈলুস মারে-  
ব মধ্যকারিহবর্ধের কুনির এজেন্সি-খের করি  
হাটহন । ইতিমি একটং লখন লুয়ে আটহন ।

বিলাস, জেমরা, টিউরিং প্রভৃতি স্থানে  
 বৃক্ষ কাটকটকবরের একটি প্রত্যেকের প্রাতিমু-  
 তি হইতেছে। টিউরিং উক্ত রাজনীতিজ্ঞ-  
 মন্ত্রণার আদর্শ একটি বাড়ী হইতেছে।  
 জেমরা জলাশয় ও হস্তিদের প্রদর্শন একটি সা-  
 ধার্মিক বাড়ী নির্মাণ করিতে সমর্থ হইলেন।  
 প্রবীণ রাজব্যবস্থার সমাজের মূলধনের অভা-  
 বের জন্যে তাহার সাধারণের মধ্যে উচ্চ  
 আর্থিক অবস্থার। এই সমাজের বিস্ত-

২. উপকার করিতেছেন, অতঃপর উভয়বিধে  
সাহায্যই সমানভাবে কিছু কিছু প্রকৃত্য কর্তব্য।

কিনিলে এক জন স্বেচ্ছায় খসড়া হইতে  
 লিখিয়াছেন অত্রস্ত বনোয়া মালাসী কটোয়া  
 সিগকে বন করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। লক্ষ্য  
 পিত্ত কয়েক জন ইষ্ট্রোপীয়া মালাসী এক এক  
 ঘোড়ার কয়েদি এক স্থান পারিত্যক্ত করিয়া  
 গমন করে। এইমতঃ বনোয়া আত্মীয় বন্ধু  
 ব প্রদর্শন করিয়া তাহারিগণের সহায়তা ক  
 রাহিল কিন্তু হঠাৎ এক জন মালাসী হস্ত হ  
 য়াতে কয়েকজন বন্যকে গুলি করা হয়। তা  
 হারা ভবিষ্যৎ আত্মীয় দৌরাঙ্গা আরম্ভ ক  
 রাহে। হত্যাকারিকে ধৃত করিতে মালাসী  
 তাহার সহচরদিগকে বধকরা আতি অন্য  
 হইরাহে। এইপ করিলে বনোয়া কখনই ব  
 তাব প্রকাশ করিবেন।

ঢাকাপ্রাকাল বলেন বিক্রমপুর নিবাসী  
সান্নিভৌম উপাধিধারী এক পণ্ডিত হই  
পুত্রের উদ্ধার জিয়া নিম্পাদসমর্থ একটি দ্রাব  
কন্যাকে হুরিকরিয়া আনাতে মারুগার নিক  
তাহার আত্মীয়েরা নাশিস করেন। ব্রাহ  
ত্মনিমিত্ত সেই কন্যাকে উদ্ধারিণের হস্তে  
সমর্পণ করিতে বাধ্য হন। ঢাকাপ্রাকাল  
লেন যে কেবল দুনিতে পণগ্রহণ প্রথাই সাধ  
ভৌম মহাপ্রবরের তাহুল অসলচরণের দু  
কারণ। আমাদিগের হস্তে সম্রাটের দু  
কৌলীন্য।

আমরা জঙ্গিরা অতিশয় সুখিত হই  
লাম চট্টগ্রামের বিদ্যালয়ের অধিকাংশ  
মঙ্গ হইয়াছে। বিস্তর বেক কেনারা প্রাচুর্য  
নষ্ট হইয়াছে। সৌভাগ্যবশতঃ পুস্তকালয়  
রক্ষা পাইয়াছে।

१७ ई साक्ष्यमयम् ।

চাকা নিউস বলেন রোটা: দু'গের পা  
কোণে ঘুরিয়ে শোণ নদে এক টুকর  
সেই নির্মিত হয়ে, ইহাতে দুইজন টা  
হয়ে অবস্থান করা হয়েছিল। ইহা  
কিন্তু আরও হয়েছিল।

শোণসমের থিকটে প্রভুরের পথ  
 নিশি পথের লক্ষ্যে বহিবে।

ଦିଲ୍ଲୀରେ ଯେଉଁ ଦେଶର ଏକଟି ୧୦ ବର୍ଗମିଟର  
 ଜମାଦାନର ସମ୍ପତ୍ତି ଆସ ଏକଟି ବାଲିକେର ମୂଲ୍ୟ

স্বাক্ষর করিয়া পাঠ্যক। প্রেরণ করিয়া দিয়া  
সংগঠিত করিয়াছেন। অধিকার হস্ত রাখিলে পি  
তা মাতা গবর্ণমেন্ট নিকটে আবেদন করিলে  
গবর্ণর কার্যক্রম সহিত পরামর্শ করিয়া বলিলে  
এক লক্ষ হস্তা করিব বনে করিয়া অপর বা  
লকর প্রাপ্য সংহার করে মাই, অতএব উহার  
প্রাপ্য ১০০ টাকা, লক্ষ করা গে  
ল। গবর্ণর এই শিশুর শিশুসম্পত্তি আনয়ন  
করিলে তিন ভাগে বিভক্ত করিতে করিলেন।  
এক ভাগ শিশুশিল্পের পিতা মাতাকে দেওয়া  
হল। আর এক ভাগ হস্তা করি বালকের  
ভাতার রহিল। আর এক ভাগ রাজ্য ভাণ্ডারে  
প্রদত্ত হইল। শিশুর অপরাধে শিশুর পিতা  
সম্পত্তি গেল। এই চরমকার বিচার।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন চাকার অ-  
ধারিত হইয়া গিয়াছে।

ফিনিক্স বলেন পোর্ট আফিসের বে হুডন  
মণি হইবার কপন। আছে, জাহা এবৎসর  
প্রবৃত্ত হইবে না। ইহাতে প্রায় ১০ লক্ষটাক  
গয় হইবে।

তিনি আরো বলেন, ১৭ ই ফেব্রুয়ারি গ  
বর্ণর জেনারেল আগরার একটি দরবার করি-  
লেন। তথায় গোরালিগরের মহারাজ  
মহাতি অনেক উপস্থিত ছিলেন।

তিনি আরো বলেন, জয়পুরের মহারাজ  
সংগন মন্ত্রী ও অগ্রচরণের সহিত কলিকা  
তা যাত্রা করিয়াছেন। আসিবার সময় আ-  
সাবাদ ও বেনারস দিয়া আসিবেন, এবং  
১৭ হইতে ত্রিশারে জনসংখ্য দেখিতে বাই  
১২

আলহাবাদ গেজেট বলেন তথায় শীত  
ক সুস্থিবে। তথায় একটি হস্ত কুঠী  
১০০ সেই স্থানেই ইহার কার্য হইবে।

১০ জন লোক খিদিরপুর হইতে নৌ  
যাত্রায় বঙ্গবাজারের বাটে বাটতেছিল,  
গবর্ণর রাজি হওয়াতে মাজিরা অফিসের  
উপস্থিত না পাওয়াতে নৌকা দুপ্তির  
গে বাটতে লাগিল, অতঃপর অত্যন্ত প্রবল  
প্রবল এই নৌকা ভাঙ গিয়াছিল। ফ্রাটের কা-  
নের গলে আটকাইয়া লকলেই রক্ষা পাই-  
ছেন। কেবল এক হস্ত প্রাণকে পাওয়া  
হইল।

১৪ই কাছন বুধবার

ফিনিক্স বলেন, লাক্ষনারের দুর্ভিক্ষ  
নিবারণার্থ কলিকাতা হইতে প্রায় ৩৮০০০০  
টাকারও অধিক প্রেরিত হইয়াছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন, গবর্ণর জেনারেল-  
র দরবার মিলাতে না হইল। মিলাটে হইবে।  
উক্ত বিবেচনা হইয়াছে, তথায় দরবার করি-  
লে মিলাত অবমাননা করা হইত।

উক্ত পত্র অর্থাৎ আর বিচার কার্য সংক্রা  
ন্ত প্রচারিত রিপোর্ট দেখিয়া লিখিয়াছেন  
১৮ ১১। ৩২ অর্থাৎ তথায় পুলিশ কার্য মিলা  
হার্শ প্রায় ২৭১৩৫০২ টাকা ব্যয় হইয়াছে।

১২ই জানুয়ারি সম্রাট নেপোলিয়ন একটি  
বক্তৃতা করিয়া ক্রান্তের ব্যবস্থাপক সভার  
কার্য আরম্ভ করিয়াছেন। উহার বক্তৃতা  
লোকে সন্তোষ প্রকাশ করে মাই।

রাইরড কেণ্ড বলেন, স্প্যান্ড রোডে  
পুরাতন পোর্ট আফিসের নিকটে প্রধানতম  
বিচারালয়ের বাড়ি নির্মাণ শীঘ্র আরম্ভ  
হইবে। কলিকাতার ডেপুটি কালেক্টর অগ্র  
যতি সিদ্ধান্তে যে অধ্যাবধি ১৫ দিনের মধ্যে  
তত্ত্বতা লোকসিগকে উদ্ভিগা বাটতে হইবে।  
গবর্ণমেন্ট প্রধানতম বিচারালয়ের অন্য এই  
কৃষি কার্য করিলেন।

উক্ত পত্র ইন্ডিয়ান ফিল্ড দেখিয়া লিখি  
রাছেন মন্ত্র বাট। গ পিকক সাহেব ভূতপূর্ব স  
দর আদালতের সিরিজাদারের গল উঠাইবার  
জন্য গবর্ণমেন্টে অভিযোগ করিয়াছেন।

সমাচার হিন্দুস্তানী বলেন গবর্ণর জেন  
রাল প্রত্যাহৃত হইতেছেন। এক দিন রাজিতে  
ভাষ্যমহল আলোকপূর্ণ হইয়াছিল। লর্ড  
এলগিন ও লেডি এলগিন তদ্বশমর্শ গিয়া  
ছিলেন। তথায় অধিক সংখ্য লোকের সমা  
গম হইয়াছিল।

তিনি আরো বলেন করাসী গবর্ণমেন্টে  
তত্ত্বাবধিগের মুখ ক. বণ আনিব'র বিভিন্ন  
মন্ত্রকে আদেশ করিয়াছিলেন। তিনি বলেন  
এক ভিপার্টমেন্টে তলার অভাবে প্রায়  
৩০০০০০ লোক নিরুপা হইয়া রহিয়াছে।  
পারিসে চাকার ৮০০০০ টাকা বাজ উঠি  
য়াছে।

১৫ ই কাছন শুক্রবার।  
গবর্ণমেন্ট চাকারেরা চাকার বীজ ও চাকার  
হুডন হুডক সিগকে বিনা হুডো প্রদান করিয়া-

র লক্ষ্য করিয়াছেন, উহারিগের  
মাসুলারে গবর্ণর গবর্ণমেন্ট বীজ ফ্রাট  
র টাক প্রত্যাহরণ করিবার আদেশ  
হল। আর একটি আনিব'র সংখ্য  
তথায় কয়েক জন এতদেশীয় চাকার  
হল। কয়েক জন বীজকর হইয়াছেন।  
বের চাকার ক্রমশঃ বর্ধিত হইতেছে।  
বিবর বঙ্গদেশে সর্বশেষে হইবে।

বঙ্গদেশে মীলের চাকার এক প্রকার বঙ্গ  
তে কলিকাতার বীজকর কোম্পানি লিখ  
শে এক জন কর্মচারিকে প্রেরণ করিয়াছেন।  
তথায় মীল হইতে প'রে কি না ইয়া আ-  
র্থাৎ বিবের অতিশ্রুত : আর্থাৎ বিবের  
য়ে উক্ত প্রদেশে বিবের মীল অধিক। মীল  
হুডকিগের লাক হেখাইয়া না দিতে পা-  
লে মীলকরেরা কোনহায়েই হুডকার্য হই  
পারিবেন না। ২৪৭

আটবার পেপার বলেন, মেজাজের উপ  
শে এক খানি এতদেশীয় আহার টেলিও  
কের তার ও কয়েক জন এতদেশীয় বর্জা  
দ্রী আনিতেছিল। উপস্থলে প্রায় মাজিরা  
নিমিত্ত আলাপ লাগাইলে টেলিগ্রাফ  
চারিরা বলপূর্বক মাজিরাগের বর্জা  
সাইয়া লইয়াছিল। এবিষয়ে মাজিরা কঠিন  
তে গবর্ণমেন্টে ইহার অহমজ্ঞান করিতে  
ম। একদে প্রকাশ পাইতেছে এক জন  
রসোর দোষে এই অভিচার হইয়াছিল।  
মাজিরা হুড প্রায় হইয়াছে। একজন জাহা  
প্রতি দে.নারোপ করা মহল লক্ষ্যবর্তী  
উক্ত পত্র আরও বলেন, সিদ্ধান্তে  
রীর গজপালের উপস্থ হইয়াছে।

মিসর দেশের হুডন শাসন কর্তা  
পাসা উক্ত হুডে রাজ্য শাসন করিতে  
তিনি স্বাভাবিক প্রেক্ষাপট মাধ্যম  
হইতে টাকা না লইয়া আপসার ব্যয়  
করিয়া লইয়াছেন। 'সম্রাতি বিবেচনা'  
মিসর অধ্যক্ষেরা সর্বদা তিনি বর্জ  
যে তিনি তিনটি বিশেষ কার্য করি-  
বক্তা মিসরের ব্যয় নির্ধারণ, সাধারণ  
কেন, এবং হুডতানের মজ লইয়া রা  
করিবেন। পাসা বলপূর্বক বক্তুর  
করিয়াছেন। হুডেজের খালের বিব  
বিশেষ বঙ্গ মাই



পরিবার আলিগড় পর্যন্ত রেইলওয়ে  
হ।

বার্টল কিয়ার কানার জুতন বন্দর  
র পক্ষ দর্শনার্থ গমন করিয়াছেন।

হারাজ সিংহিয়া বোম্বাই দর্শনের ক-  
এও হইয়াছেন। লেপ্টেনেন্ট এ, জি, সে  
গার সঙ্গে বাইবেন।

জাজ এমিলিয়ন বলেন দুসাগলে ন-  
হারদরাবাগে মাজাজ ও বোম্বাইয়ের  
নওয়ে মিলিত হইবার সজ্জনা আছে।

ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্টের বিবেচনা-  
প করা হইয়াছে। এমিকে খল গ্রাম প্যা  
ইলওয়ে হইয়াছে। বর্ধাকালের পূর্বে

পুরের রেইলওয়ে মলনাপুর পদ্যজ খল  
দুর হইয়াছে। সাতক তিন বৎসরের মধ্যে

জাজ ও ভারতবর্ষীয় রেইলওয়ে ককলপুরে  
সত হইবে। যুগ্মপুর পদ্যজ রেইলওয়ে

বার বে কথা ছিল তাহার ও যুনা সেতুর  
দুর হইল।

ম্পনা হইতেছে পক্ষাবের নিবিলিগানের  
মণ্ডীর ব্যবস্থা বিদ্যালয়ে শিক্ষা করিবার

সাত বৎসর কর্ম করিয়া তিন বৎসরের  
সর পাইবেন। এখনই সুন্দর কপে বা

পক হইয়া নিযুক্ত হইলে কি স্যরের সাধব  
পরিষদ বিচার ক্রিয়া সম্পাদিত হয় না?

সর বিপাত বনিক গ্রিণ সাহেবের মৃত্যু  
তাঁহার ভুল্য ধনী বনিক ইংলণ্ডে

আছেন।  
আপানের ধনী ব্যক্তিরা কয়েক খানি বা-

আহাজ ক্রম করিয়া বাণিজ্য আরও ক  
আছেন। তথা হইতে প্রকপে বিস্তর নীল

চাউল প্রকৃতি রঙানী হইতেছে। বিশেষ  
বৈজ্ঞানিক আবশ্যকতা সকলেই বুঝিতেছেন

তদনুসারে কার্য করিতেছেন। কিন্তু এবি  
বুঝিমান মূর্খ কেবল বক্তদেশেই পাওয়া

ইংলিসমান বলেন, গবর্নমেন্টে বাবডীয়  
ডেলির মিলেটারি অফিস কণ্ড বহুস্তে

করিতেছেন।  
এক অব ইণ্ডিয়া বলেন জারাকান, রে

মৌলবিনের লোকেরা মিউনিসিপাল  
অসমুদ্র হইয়াছেন। তথায় কলিকা

ব্য বাটীর কর অর্থাৎ শস্ত করা ৭৪  
হইতেছে। রেজুণের গাড়ীর টাক

বিগুণ। নিরম কর্তার অবিবেচনা  
অতি হিতকর বিষয়ও লোকের

হ হেতু হইয়া উঠে।  
মারক এক জন ইউরোপীয় আপন

খাতার আল খরচ লিখিয়া পলায়ন  
হাকে খত ক'বার জন্য পুলিস

সংবাদ আসিয়াছে আনামে বিদ্রোহ উপ-  
স্থিত হইয়াছে। করানীদিগের হস্তে কেবল

সেগন নগর মাত্র আছে বিদ্রোহীরা তাহাও  
আক্রমণ করিবার উদ্যোগ করিতেছে। করানী

খীরা ১৮৫৭ অব্দের পূর্বে ভারতবর্ষীয় গব-  
র্নমেন্টের ন্যায় অতি লোভপ্রযুক্ত এই সত

টে পড়িয়াছেন।  
১৬ই কাশ্মীর শুক্রবার।

কিনিক বলেন গবর্নমেন্ট ভারতবর্ষের ব  
র্তমান বলশিষ্টের সৈন্য দিগকে ১৮৫৭ অব্দের

২৩ আইনের অধীন হইবার আদেশ করিয়া  
ছেন।

তিনি আরো বলেন উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের  
কানারগের ব'র নির্দাহার্য ২১০০০ টাকা কর্ত্ত

হইয়াছে। তথায় প্রায় ১০০ জন জেল আছে।  
টাইমস অব ইণ্ডিয়া বলেন বরোদা রে-

লওয়ে কোম্পানির কললটিও ইন্ডিয়ান ক-  
পে'ল কেনেডি আগামি মেলে ইংলণ্ড হইতে

আনিবেন।  
সিঙ্গিনেটি ইনকোয়ারার বলেন, ৬৯ বৎ

সর বয়স এক বছর জীর গর্ভে একটা সন্তান  
জন্মিয়াছে। তাঁহার স্বামির বয়স ৭৪ বৎসর।

সিঙ্গিনেটি ইনকোয়ারারের লাকো সন্দেহ করা  
আমাদিগের উচিত হয় না, কিন্তু বোধ হয়,

অনেকে এই কাণ্ডকে অসম্ভব বোধ করিয়া  
তাঁহার বাক্যে অনাদর করিবেন।

চাকাবাধ্যাক্ষমিকা বলেন মালিকগণকে  
র ডেপুটী মাজিষ্ট্রেট ডাকপ্রকাশ সম্পাদকের

নামে আইটে মাজিষ্ট্রেটের নিচটে যে লাই-  
বেল নালিশ করেন, আইটে মাজিষ্ট্রেট তাহা

তে সম্পাদকের ১০০ টাকা দণ্ড করিয়াছেন।  
বাস্ত্যাক্ষমিকা বলেন, মাজিষ্ট্রেট পক্ষপাত

করিয়াছেন। আমরা চুপে আছি, পক্ষপাতের  
কথায় অগ্রদোষন করিতে পারি না, কিন্তু

আমরা একথা বলিতে পারি, ডাকপ্রকাশ  
ডেপুটী মাজিষ্ট্রেটের যে নিন্দা করিয়াছেন,

তাহা কেবল ভেদমূলক মত।  
১৭ই কাশ্মীর শনিবার।

১৭ দেশ হইতে মহাদ আসিয়াছে, সি  
কিরাও প্রদর্শন বিদ্রোহিদিগের সজিত রাজ

সেনাগণের এক বৃদ্ধ হয়। তাহাতে রাজ সে-  
নাগণ সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত হইয়াছে। করানী

আফিসরেরা রণ স্থলে রাজ সেনাগণকে লই-  
য়া যায়। একটা কামান কাটরা তিন জন আ-

ফিসরের প্রাণ বিয়োগ হয়।  
গবর্নর জেনরল স্থানে স্থানে দরবার ও

স্থানে স্থানে বক্তৃতা করিতেছেন। কিন্তু তা

হার আগার বক্তৃতাটা আমাদিগের নিন্দা

ক অপ্রীতিবিহারী হইয়াছে। সেনাপিয়ার

অথবা প্রমাণের দ্বারা ক'র প্রমাণ করা  
দরবার করিবার উদ্দেশ্য নয়, ইংলণ্ডের প্র

তিনিহি সত্য বলে দরবার ও রাজগণ-  
আজ্ঞান করিয়া সশ্রম বর্ধন করিলে ঐটি

গবর্নমেন্টের প্রতি তাহাদিগের তক্তি  
প্রীতি হইবে ইহাই দরবার করিবার উদ্দেশ্য

কিন্তু গবর্নর জেনরলের আগার বক্তৃতা  
বারা রাজা ও সদস্যগণের অধমনিদা করা

হইয়াছে। আগামি বারের আমরা কিফি, বি  
স্তারিতরূপে এ বিষয়ের পুন্য প্রসঙ্গ করিব।

কিনিক বলেন বোম্বাইয়ের এখনতম বি  
চারালয়ের কর্মচারিরা পূর্বমত কী না পাট

নির্দ্ধারিত বেতন পাটবেন টেলর সাহেব ম  
নে ১৭০০ এখন রেজিষ্টার কান্সট্রক্টর ম

২৫০০ এবং আপিলেট কোর্টের যেজি  
পিনহি ২১০০ সহকারী জজের মাসিরটি

টাকা পাটবেন। ইন্সপেক্টরদিগের ও বেত  
রদি হইলে।

তিনি আরো বলেন জগপুরের ২০৭৭  
অপনার প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত শিবদীন

এজেন্ট কর্ণেল ব্রুক সাহেবের মতি ৭৭৭৭  
তদ্রূপে গবর্নমেন্টে কালেক্ট দর্শন করিয়া

কার উন্নতির নিমিত্ত ১০ প্রদান করি  
ছেন।

তিনি আরো বলেন হুস্পতিবার গব  
জেনরল ও লেপ্টেনেন্ট গবর্নর ডাকপ্রকাশের

দান দেখিতে দিয়াছিলেন, সেখানে গ  
৭০০ ৮০০ ডাক উপস্থিত হইয়াছিল।

বোম্বাইয়ের সত্য সেক্রেটারি জগদ  
সত্য গণের সম্মতি ক্রমে, সর চ'রলস ট

লিখনকে ভারতবর্ষীয় ব্যস্ততাক স  
কিনাকিহাস মেঘর হইয়াছেন বলিয়া এক

নি অ'তনগন পক্ষ প্রদান করিয়াছেন।  
চারলস টি'বিলিয়নও সাহেব তাহা প্রদান

রা তাহাদিগকে পদ্যবার প্রদান করিয়াছেন।

বদলেশীর ব্যবস্থাপক সভা  
১০ই কাশ্মীর শনিবার।

আগাম, কাছাড় ও ... মত ...  
বিলে সিঙ্গেলকমিটি যে রিপোর্ট করিয়া

ইডেন সাহেব তাহা সভায় অর্পণ করিলে  
অনেক দর্শন বিতর্কের পর এই বিল সা

র মোচর্য্য প্রকাশিত হইল। দুই সপ্তাহ  
ইহা পূর্বকার বিবেচিত হইয়া

...

ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা।

১৪ ই ফাল্গুন বুধবার।

পূর্ণিমার মঙ্গলদিবস উপর গবর্ণমেন্টের পক্ষ  
পরিচালিত বিষয়ক বিলে সিলেক্ট কমিটি যে  
রিপোর্ট করিয়াছেন, বঙ্গদেশীয় স্বেচ্ছাসেবক  
সভার সভার অর্পণ করিলেন। উহা বিধি-  
ভুক্ত হইল।

ব্যক্তিগত অথবা সংস্থার বিশেষত্ব সাধারণের  
তরফ কর্তৃক অন্য ক্রমি কইবার বিলে সিলেক্ট  
কমিটি যে রিপোর্ট করিয়াছেন, ভারতীয়  
সেবক সভার অর্পণ করিলেন। উহা বিধি-  
ভুক্ত হইল।

যে সমস্ত ক্রমপত্রি হইতে সদর মালভকাবে  
১৪ ই ফাল্গুন। বিষয়ক যে বিল হইয়াছে  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

১৪ ই ফাল্গুন ১০ আইন সংশোধন বিষয়ক  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

এছাড়াও আরও আরও আরও আরও আরও  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

আর সৈন্য ইহার তারিখের বিষয়। সেক্ষেত্রে  
সৈন্যের ক্রিয়ার আওতা গ্রীষ্মের সিংহাসন  
এবং ক্রিয়ার পদ্ধতি ও টাঙ্ক। ভিসকাউন্ট  
হইয়াছে।

পীয়ার পদ প্রদানের যে অনুরোধ, তাহা  
মলিক বলিয়া প্রতিপন্ন করা হইয়াছে।  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির  
সিলেক্ট কমিটির

নীতি করিতে সমর্থ হইয়াছেন।  
ভেদে বিজ্ঞানী মহামতি  
পরিচালিত আধুনিক  
হইতে পারে না।

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা

সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা  
সমস্যা









১২৬২ বিপরীত তাব খাবণ কেন, ইহা-  
 ১২৬২ যুগান্তর উপস্থিত বোধ হয়  
 ১২৬২ পক্ষ বিবর্তিত হইয়া কেবল ইজিয়  
 ১২৬২ কিয়া স্ব স্ব অতাবকে মন্দীভূত  
 ১২৬২ তিক্তকৃত্য ৩১ বিস্ময় বইয়া যথেষ্ট  
 ১২৬২ হইয়া, ৩১ প্রকল্প কনিত্তে যেম সংকল্প করিয়া  
 ১২৬২ হার! ইহাদের কি বিপরীত সংস্কার ঘ-  
 ১২৬২ াছে!  
 ১২৬২ সম্পাদক মহাশয়! যখন এই বঙ্গবাসিগণ  
 ১২৬২ যোরাধা লক্ষ লক্ষনীর মেহ পাশেছন করি-  
 ১২৬২ এগর ভাঙ্গন সূত্র নগের গ্রাম শূন্য তেদ  
 ১২৬২ রিয়া জরজরিত পরিত্যাগ পূর্বক বিদেশান্তর-  
 ১২৬২ গর চাননা করিতে থাকিলেন, তখন ইহা  
 ১২৬২ কি মান্য করিয়াছিলেন? অর্থোপার্জন ক-  
 ১২৬২ রা। পিতামাতার সুখে মোচন, অদ্বৈত  
 ১২৬২ রক্তি সাধন, স্বকীয় সৌভাগ্য বর্জন, অন্য  
 ১২৬২ ত্রৈব সুখে নিবারণ এবং প্রকারান্তর ইহা। যে  
 ১২৬২ কালে ইহাদের অন্তরে বলবতী ছিল ইহা-  
 ১২৬২ বোধ হইতে পারে না। কিন্তু কি কোতের বি-  
 ১২৬২ ! একে সে সকল পবিত্র তাব কেন অন্তর্ভা-  
 ১২৬২ হইল? একে কি অতিমত অর্থ উপার্জনে  
 ১২৬২ কন হইল? তাহার বর্থাৎ ব্যবহার বিস্মরণ হ-  
 ১২৬২ া তাহাকে মহানর্থে কারণ করিয়া ফেলিলে  
 ১২৬২ ? বরোক্তি সহকারে জানোমতি হওয়াতে ক-  
 ১২৬২ য়ের কন উত্তর রূপে জাগিতে পারিয়া তৎসা-  
 ১২৬২ ন্তিক হইয়া উঠিয়াছেন? ইজিয় সেবার  
 ১২৬২ ক অর্থের সার্থক্য সাধন হয়?  
 ১২৬২ কয় করাই কি বর্থাৎ সমুদা-  
 ১২৬২ ক মহাশয়! ইহা বিদেশে আসিয়া  
 ১২৬২ প্রকার স্বাধীনতা প্রাপ্ত হইয়াছেন,  
 ১২৬২ স্বাধীনতাই ইহাদের উল্লিখিত অসং কা-  
 ১২৬২ র্ত্তনের এক প্রকার মূলভূত কারণ বলি-  
 ১২৬২ য়া বাইতে পারে। সম্পাদক মহাশয়!  
 ১২৬২ য়াপনাকে একটি কথা জিজ্ঞাসা কবি,  
 ১২৬২ না নিতা সমুদায় দেশ-বস্ত্র প্রধান অধি-  
 ১২৬২ ০ ই স্বাধীনতাই কি এই প্রকার?

**শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক  
 মহাশয়েষু।**

১২৬২ সম্পাদক সোমপ্রকাশে শ্রদ্ধাংশ বাবুর  
 ১২৬২ টের বিচারাসনে আসিয়া হইবার সংবাদ  
 ১২৬২ হইয়া বার পঃ নাই আশ্চর্য্যমিত হই-  
 ১২৬২ া হইয়া কেন, ইহা অপেক্ষা অজ্ঞা-  
 ১২৬২ য় আর কি হইতে পারে? বোধ হয়  
 ১২৬২ ারিষলভ্য বাস্তবিক ত্রিগ সন্ধান  
 ১২৬২ া এই সংবাদে আশ্চর্য্যমিত হইয়াছেন।  
 ১২৬২ াই প্রাণ দ্বারা চিকিত্ত ও অচিকিত্ত কর্ণচাষী  
 ১২৬২ য়ি একটি গর্জিত জব আছে তাহাব কি-  
 ১২৬২ ই হইল বটে, কিন্তু সত্যক প্রকাশে হুব  
 ১২৬২ হইয়া, বোধ হয় সে আশা পূর্ণ হইবার সময়  
 ১২৬২ এখন উপস্থিত হয় নাই। বাহা হউক, পঃ,  
 ১২৬২ াই সকল সন্ধান পরস্পর অধিকারী হ-  
 ১২৬২ া কাল অধ্যাত্তির সহিত সঙ্গর আদা-  
 ১২৬২ তেওলতী কনিয়া উক্ত সঙ্গর আদালতের নি-  
 ১২৬২ বণ হইয়া পীঠ সহস্র টকা বেতন পাওক

১২৬২ লাগিলেন, সেই প্রকার সঙ্গ ও বোগ্যতা বিবেচ-  
 ১২৬২ নাহ জেলা আদালতের উকীলেরা এক কালে  
 ১২৬২ প্রধাম সঙ্গর আদালতী পক্ষ ও চারিগত টকা বেতন  
 ১২৬২ ন না পান কেন? এই বিষয়ে আমি জেলাস্থিত  
 ১২৬২ বোগ্যউকীল গণকে সম্বোধন পূর্বক এতৎ পূর্ব-  
 ১২৬২ কাহার নিবেদন করিতেছি, অতঃপর তাঁহারা  
 ১২৬২ সমবেত হইয়া এত বিষয়ের জন্য হাটিকোর্টের  
 ১২৬২ দ্বারা পক্ষগোষ্ঠী প্রার্থনা করুন, তাহা হইলে  
 ১২৬২ উচ্চাধিকার জামিনার সিদ্ধি পক্ষে বড় বিসম-  
 ১২৬২ হইবেক না। তদ্বারা দ্বিবিধ উপকার সাধিত  
 ১২৬২ হইবেক। অদৌজ্ঞাত জবনা বেতনে জবনা মত  
 ১২৬২ স্বন গ্রামে গাইতে আনিছ! বসন্ত সে সকল  
 ১২৬২ মহা ব্যক্তি মুন্সেফী কার্যে বিবত হইয়া জেলা  
 ১২৬২ কোর্টের ওকালতী কবিত্তেছেন, তাঁহারা অসা-  
 ১২৬২ ধারণ ওগর বোগ্য ও বিচারকম হইলেও কখন  
 ১২৬২ বিচারপতি হইতে পারেন না, এই সে অনাথ  
 ১২৬২ নিগম আঁচ, তাহা বহিঃ হইলে তাঁহারাও ই-  
 ১২৬২ ছ! পূর্বক ঐ পক্ষ স্বীকার করিবেন। এবং বাসি  
 ১২৬২ টংগর ক্ষুদ্র মোকদ্দমার আদালতের জজ ও  
 ১২৬২ গার ন্যায় জেলা কোর্টের উকীল প্রবীর গৌরব  
 ১২৬২ বর্জিত হইয়া জেলাকোর্টের উকীলপদ একটি স-  
 ১২৬২ জ্ঞাত পদ হইয়া উঠিবে। দ্বিতীয় (১) কেবল আ-  
 ১২৬২ মার গণে পুলে মুখ দেখাব না, (২) অমূল্য  
 ১২৬২ মুন্সেফগণ কেহবা আদালতের কেহবা উকীলের  
 ১২৬২ কেহবা পক্ষ পক্ষান্তরের সমুদায়ের সাহায্যে  
 ১২৬২ বিচার কার্য সমাধা কবিয়া পক্ষগণের চক্ষে  
 ১২৬২ ধুলি দিয়া যে উচ্চ পদ প্রাপ্ত হইতেছেন তখন  
 ১২৬২ আন ইকপ না হইয়া যে'না ও উপযুক্ত পাত্রের  
 ১২৬২ পুরস্কার হইবে। একান্ত বশমত

১২৬২ ৫ ই ফাল্গুন } শ্রীমদগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায়  
 ১২৬২ বহরমপুর

**প্রাপ্ত মূল্য।**

১২৬২ শ্রীযুক্ত বাবু ভবতচন্দ্র ঘোষাল কুন্তেগড়  
 ১২৬২ ১২৭০ টংগাধ অবধি টংগে পর্য্যন্ত কোং ১৩০  
 ১২৬২ " তারিণীচরণ চট্টোপাধ্যায় পটলডাঙ্গা  
 ১২৬২ ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্ত্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ কোং ১০ ট  
 ১২৬২ " কালিদাস বন্দ্যোপাধ্যায় দেবপ্রাণ  
 ১২৬২ ১২৬২ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্য্যন্ত কোং ৫ ট  
 ১২৬২ " জগদীশচন্দ্র দাস বরিশাল  
 ১২৬২ ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্ত্তিক পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ কোং ১৩ ট  
 ১২৬২ " ব্রাহ্মগোবিন্দ দত্ত মজুমদারপুর  
 ১২৬২ ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্য্যন্ত কোং ৫১০  
 ১২৬২ " কালীচরণ চট্টোপাধ্যায় দিনাজপুর জুল  
 ১২৬২ ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্য্যন্ত কোং ৫১০  
 ১২৬২ " মহিমচন্দ্র দাস চুমাগলি  
 ১২৬২ ১২৬২ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্য্যন্ত কোং ৫ ট  
 ১২৬২ " রত্নাবনন্দ্র রায় মণিলাল বাটী  
 ১২৬২ ১২৬২ ফাল্গুন হইতে ৭০ মাঘ পর্য্যন্ত কোং ১৩০  
 ১২৬২ " শ্রীযুক্ত ব্রজোপাধ্যায় শান্তিপুর  
 ১২৬২ ১২৬২ ফাল্গুন হইতে ৭০ মাঘ পর্য্যন্ত কোং ১৩০

১২৬২ " মেদিনীপুর লাইব্রেরি মেদিনীপুর  
 ১২৬২ ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে বৈশাখ পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ কোং ৫  
 ১২৬২ " মহেশচন্দ্র বিদ্যালয় মজুমদার কাল  
 ১২৬২ ১২৬২ ফাল্গুন হইতে ৭০ আষাঢ় পর্য্যন্ত  
 ১২৬২ কোং ৫  
 ১২৬২ " শশিভূষণ রায় জেলা রাজসাহী  
 ১২৬২ ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্য্যন্ত কোং ৫  
 ১২৬২ " শ্যামচরণ ঘোষ বশোত্তর চৌধুরা  
 ১২৬২ ১২৬২ পৌষ হইতে ৭০ জ্যৈষ্ঠ পর্য্যন্ত কোং ৫  
 ১২৬২ " কালীকান্ত রায় চট্টগ্রাম  
 ১২৬২ ১২৬২ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্য্যন্ত কোং ৫

**সোমপ্রকাশ সংক্রান্ত কয়েকটি  
 বিশেষ নিয়ম।**

১২৬২ অগ্রিম মূল্য না পাউলে কখনো সোমপ্রকাশ  
 ১২৬২ প্রেরণ করি যাই না।  
 ১২৬২ ইহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ এবং বাণী  
 ১২৬২ মিক এর টাক ১ হয় যাদের মূল্যে মূল্য লও  
 ১২৬২ যাই না।  
 ১২৬২ যাঁহারা সোমপ্রকাশের মূল্য বীক্ষা টিকি  
 ১২৬২ পাঠান তাঁহারা এক অর্থক আর্থ আদায় অধি  
 ১২৬২ মূল্যের ও রগীদের টিকি না প্রেরণ করেন।  
 ১২৬২ যখন যিনি মকদ্দম হইতে সোমপ্রকাশে  
 ১২৬২ মূল্য পাঠাইবেন তাহা সেন রেজিষ্টারি কনি  
 ১২৬২ দেন।  
 ১২৬২ পূর্বপ্রস্তুত মূল্যের কাল অতীত হইলে  
 ১২৬২ লা পাঠাইতে কেহ যেন অসম্মত হিলে  
 ১২৬২ করেন।  
 ১২৬২ যাঁহাদের মূল্য দিবার সময় অতীত হই  
 ১২৬২ তা বাইবে, সঙ্গতমত সময় প্রতীক্ষা কবি  
 ১২৬২ এগুয়ে সোমপ্রকাশে প্রচার কবিয়া তাহা  
 ১২৬২ পক্ষ চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি ত  
 ১২৬২ হাতে কোম উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া  
 ১২৬২ কাগজ বহু হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিঠি বে  
 ১২৬২ রিং পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃত  
 ১২৬২ লেজে আনাজিগের নামে চিঠি আউলে  
 ১২৬২ মরা শীত্র পাউব।  
 ১২৬২ যাঁহা যখন সোমপ্রকাশ পরিচালক কনি  
 ১২৬২ বইকা হইবে চিঠি লিখিয়া মা জানাই  
 ১২৬২ তাহা প্রাচ করা বাইবে না।  
 ১২৬২ কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ইচ্  
 ১২৬২ করিলে তাঁহাকে প্রথম বার প্রতি পংক্তি ০  
 ১২৬২ আন, দ্বিতীয় বার ১০ আনা তৃতীয় বার  
 ১২৬২ আনা দিতে হইবে। তাহার পর ১২১০ টাক  
 ১২৬২ কমিসন খাদ দেওয়া বাইবে।  
 ১২৬২ মকদ্দমের যাঁহারা লম্বা হইবেন, তাঁহা  
 ১২৬২ মিগের স্বতন্ত্র ডাকমান্দা দিতে হইবে।  
 ১২৬২ এই পত্র কলিকাতার পূর্ব বাতলা রেলওয়ের  
 ১২৬২ মাপুর ষ্টেশনের দক্ষিণ চাকরিগোড়ায় শ্রীযুক্ত  
 ১২৬২ দ্বিজানন্দ্র রায়ের বাটীতে প্রতি সোমবার প্রকাশিত হয়

# সোমপ্রকাশ

“সমর্থন প্রদানহিতৈষী পার্থিবঃ স্বরাজ্যী স্মৃতিমহনো ন স্বীকৃত্য।”

৫ তীর্থ।  
১৮ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২ । ৪ ঠা চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ১৬ মার্চ }

{ বার্ষিক মূল্য ১ টা  
বার্ষিক অগ্রিম ১০ । }

## বিজ্ঞাপন।

মাননীয় বারু রামলাল চট্টোপা-  
ধ্যায় ও শ্যামলাল চট্টোপাধ্যায় মহাশয়  
সমীপে।

## সবিশেষ নিবেদন--

কবিতার নমসম্বোধন (কলিকাতার প্রসিদ্ধ  
বাসবদত্তা) অতি উত্তম গ্রন্থ বলিয়া আমায়  
অতিশয় বড় কতিয়াদিগকে যে উচ্চ পুস্তক  
লব্ধকের মত হইয়াছে, গ্রন্থকারের পুণ্যান্ড  
কহ নাই, আত্মীয়গণ যদিও বর্তমান  
সময়ে উহার ও প্রথম উচ্চ মূল্যে ক্রি-  
য়ন না, ততএব আপনি এই বহি সাহিত্য  
সংসারের উপকারার্থে পুনর্বার ছাপাটতে  
আরেন, ইহাতে বোধ হয় কেহ আপত্তি করি-  
ল না। আমি তাঁহানিগের এই অর্থে সেই  
পুস্তক ছাপাটতে হি। এই পুস্তক ৫০০ পত-  
ক মুদ্রাকর্মের জন্য আজ্ঞা প্রদান করিয়াছি  
উহার ছাপা প্রায় শেষ হইল। আমার মত  
মতে এই পুস্তকের মূল্য ২৫০ টাকা বস-  
ইয়াছে। আপনি আমাকে এই ব্যয় প্রদান  
করিলে সমস্ত মুদ্রিত পুস্তক আপনানিগের  
মধ্যে সোমপ্রকাশ সম্পাদকের সমীপে পাঠা-  
ইব। তাহার পর আপনাদি পুস্তক বিক্রয়ে যে  
মূল্য চাইবেক তাহা গ্রহণ করিতে পারেন।  
কিন্তু আপনাদি যদি এই পুস্তকের স্বল্প বিক্রয়  
করিতে ইচ্ছা করেন, তবে আমি তাহা ক্রয়  
করিতে প্রস্তুত আছি ইহা নিমিত্তার্থে নিম্নে  
স্বাক্ষরিত।

১৮৬৩ ফাল্গুন  
৩০ মাস

ঐরামলাল সেন  
সংগ্রহস্থান

## বিজ্ঞাপন

কলিকাতা জিলায় অধ্যাপক বাটলেনারি

মহম্মদপুর নামে যে পটনি ভাণ্ডার আছে,  
তাঁহা মগপটনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। যাহার সেই ভাণ্ডার মগপটনি নই  
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার কার্ডেন ক্রিম কোম্পানির নিক-  
টে আবেদন করিলে সবিশেষ রক্ষা লাভিতে  
পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

২৫৩

রাধাবানু, হরু ঠাকুর, দ্বারু চন্দ্রিক, গৌর  
কবিরাজ, নিত্যানন্দ দেবগোপী, কুমারমোহন  
তত্ত্বার্থ প্রভৃতি প্রাচীন কবিগোলাদিগের  
উত্তম উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত  
করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য  
১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

সকলজার টিউ ৭৬ নং বাজি।

ঐরামলাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

## সোমপ্রকাশ।

২৫৩

চৈত্র মাসের।

জয়পুরের মহারাজ নিজ মন্ত্রী ও অ-  
ন্যান্য কর্মচারি সমভিব্যাহারে ২৭ এ কা-  
লুগুন কলিকাতা সংস্কৃত ও প্রেসিডেন্সি  
কালেক্টর দেখিতে অসিয়াছিলেন।

— ০০ —

কিছুদিন অবধি কলিকাতার ওয়াড-  
লইয়া গোলযোগ চলিয়াছে। এই উত্তি-  
য়া যায়, অনেকে একপ চেষ্টা করিতেছেন।  
কিন্তু আমাদের মতে এ চেষ্টা ইচ্ছাকৃত

কারিণী নহে। এ বিষয়ে কিছু কিছু  
যে অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা  
তাহার সম্পূর্ণ অনুমোদন করিতেছি।  
প্রাপ্ত বরক পিচ্ছীস ধর্মি, নানা  
যদি পূর্ববৎ নিজ নিজ কামের  
লিখিত ব্যবস্থা হয়, তাহাকে সমিতি  
ইউনিটির সম্মুখীন করিতে। যদি  
নবিশের বিদ্যা ও চরিত্র  
কর অনেক। উহার কর্তৃত্ব  
সেই প্রতিবন্ধক রাখা পারিবারিক  
হয়। উহার চিরস্থায়ী হইয়া  
নেকের স্বার্থসিদ্ধির পথ  
মকমলে লিখিত বিরম হইবে।  
চরিত্রের স্বার্থের ব্যক্তিগত  
প্রাপ্তি হইয়া উঠিবে। হারার  
হাতিগের বিরুদ্ধে অনুষ্ঠিত ও  
তা এই অপ্রাপ্তব্যবহার শিষ্টাচার  
পৈতৃক সম্পত্তির মত বিদ্যা ও  
লিখিত ও সংহারকারিণী হইবে।  
গকে কলিকাতার রাধিক লিখিত  
বিরম করা হইয়াছে, তাহা উচ্চ  
নাই। নগরের ন্যায় পল্লীগ্রামে উ-  
কালান্ত সম্ভাবিত নয়। তবে  
ওয়াডের ভাষাধার বিবরে  
রাহিলাম, অন্য তাহার  
তোহি। বাহাতে ওয়াড হাতিগ  
সম্প্রদায়িক পাপক্রিয়ার অনু-  
না করে, সর্বতোভাবে সেই চে-  
ক। সেই পাপ ক্রিয়ার  
সত্যতা বিবেচ্য আছে, তাহা



ত করা হউক এবং সেই তত্ত্বাবধান  
বিলাত ভাবে সম্পাদিত না হয় ।

পত্র লিখিয়াছিলেন, তাঁহার নাম আমা-  
দিগের নিকটে আছে । বাহা হউক আমরা  
তাঁহাকে পুনরায় সাবধান করিয়া দিলাম,  
তিনি যেন সতর্ক হন ।

পরসার চতুর্বাংশ অধিক দিতে হইবে  
অধিকতর কীভূত হয় একপ বহুস  
লোক আছে ।



ইনকম টাক্স ও তাহার শত্রু ।

এমাহ্ গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের প্রধা-  
শিকের অসাধু ব্যবহারের কথা বারবার  
বাতে দিগেঃ প্রতি গোচর হইতেছে, মধ্যে  
মধ্যে তাঁহার বিপক্ষ ও মপক্ষ উভয়বিধ  
পত্রও আমদিগের হস্তে আসিতেছে ।  
আমরা হাতে অতিশয় অনুবৃত্ত হইয়া  
ছি । ঐ প্রধান শিক্ষক এক জন শিক্ষি-  
ত যে, তিনি যে আপনার শিক্ষার অনু-  
বরণ করিয়া বিকল্প আচরণ করিতেছে  
নাই, ইহা সন্দেহের কারণে কোতের হইবে  
নাই । দুই বিষয়ে আমরা তাঁহার  
অতিশয় অসন্তুষ্ট হইলাম । এক, তিনি  
আমরা বিদ্যালয়ের প্রতি সন্তোষ  
করিয়া থাকেন, এমন কি তাহা উ-  
ল্লিখিত তিনি আন্তরিক চে-  
তনায় করিয়াছেন । দ্বিতীয়, গবর্ণমেন্ট বি-  
দ্যালয়ের প্রতি তিনি নিদারুণ  
বিরোধিতা করিয়াছেন । শিক্ষিত ব্যক্তিরা  
বিরোধী আচরণ, ইহার তুল্য অ-  
স্বাভাবিক আছে । একে আমরা  
বর্ণের অধঃপতনের অবস্থা সন্তোষ  
করিতে পারিতেছি না, ইহা সন্দেহের  
কারণে মহানুভব ব্যক্তি তাহা  
সম্মত করেন, আমরা তাহারও  
অনুমতি করিব । দ্বিতীয় বিষয়ে  
( তাহার অসাধু ব্যবহা-  
র আমরা প্রথমে প্রত্যয় করিয়া  
ছি ) তাঁহার মপক্ষে যে পত্র আমাদি-  
গের নিকটে আসিয়াছে, তাহারাই সপ্রমা-  
ণ হইয়াছে । তিনি কেবল বিশেষ বসবস্তু  
কিন্তু উক্ত পদচ্যুতির কারণ হইয়া  
উক্ত পত্রের সোমপ্রকাশে তাঁ-  
হাদের পত্র প্রকটিত হয়, তাঁহার  
রিত পত্র দ্বারা প্রতীক্ষমান হই-  
তে মনে করিয়াছেন, সেই পত্র  
প্রকাশিত হইল । কিন্তু বাস্তবিক  
ভাবে লিখিত নয়, তিনি সে

সর চার্লস ট্রিবিলায়ান এপ্রেল  
মানে আরবার সংক্রান্ত একটি হিসাব  
প্রদান করিবেন । সেট দিন দিনদিন স-  
মীপত্তরবর্তী হইতেছে । ইনকম টাক্সের  
কি দশা হইবে ? এই প্রশ্ন লইয়া অনেক  
বিধ আলোচন উপস্থিত হইয়াছে । অনেক  
অনুমান অনেক প্রকার সিদ্ধান্তও করিতে  
ছেন । কেহ কহিতেছেন, চার্লস ট্রিবিলা-  
য়ান লেভ সাহেবের ন্যায় এককালে ইন-  
কম টাক্স রহিত না করিয়া আপাততঃ বা-  
র্ষিক সহস্র মুদ্রাকে সীমা করিবেন, কেহ  
কহিতেছেন, এককালে উহা উঠাইয়া দি-  
বেন । কিন্তু আমাদিগের বোধ হইতেছে,  
ট্রিবিলায়ান সাহেব এককালে উহা উঠাই-  
য়া দিতে পারিবেন না । ইহার একটি প্র-  
ধান শত্রু উপস্থিত । ম্যাকডেলের আমদানী  
কর রহিত করিবার প্রার্থনার চীৎকার আ-  
রম্ভ করিয়াছেন । সর চার্লস ট্রিবিলায়া-  
ন যে এক কালে উভয়বিধ কর রহিত ক-  
রিয়াও রাজ্যের আর ব্যয়ের সমতা বিধান  
সমর্থ হইবেন, ইহা সন্দেহিত নহে । অত-  
এব ম্যাকডেল বোধ হইতেছে, ইনকম টাক্স  
রহিত করা তাঁহার আন্তরিক ইচ্ছার বিষয়  
হইলেও তিনি তদ্বিষয়ে কৃতকাব্য হইতে  
পারিবেন না । তবে কেহ কেহ সবণের  
কর রহিত করিয়াও যে ইনকম টাক্স রহিত  
করিবার পরামর্শ দিতেছেন, আমরা কে-  
ন ক্রমে তদনুমোদনকারী নহি । কতক  
গুলি লোকের কষ্ট নিবারণ করিতে গিয়া  
স্বাভাবিক প্রকার বিশেষতঃ দরিদ্র ব্যক্তি-  
দিগের সাহায্য সম্বন্ধে কষ্ট হুজি করা  
বিশেষ নয় । সবণে প্রযোজন হয়  
না, এমন কেহই নাই, এবং সেই সবণে

উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের লেপ্টেনেন্ট  
গবর্ণর ।

আমরা পূর্বে হারিংটন সাহেবের  
উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর পদে  
অতিষ্ঠিত হইবার সম্বাদ দিরাছিলাম,  
বরে আবার তাঁহার তৎপদ অস্বীকার  
ও ত্রুণ্ড সাহেবের তৎপদ লাভ  
সম্বাদ দিতেছি । তিনি ঐ পদ গ্রহণ  
করেন নাই, তাহার কারণ এই, তিনি ব-  
ন, লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর পদে অধিক ক্ষমতা  
যোগ্যতা ও পরিচয় আবশ্যক করে, নি-  
জ হার শরীর সুস্থ না থাকিতে তাঁহার  
দৃশ্য যোগ্যতা ও পরিচয়ক্ষমতা নাই  
আজি কালি ভারতবর্ষে একপ ন্যায়পর-  
তা, সাধু ও স্বার্থ লোক অতি বি-  
রল । উক্ত পশ্চিমাঞ্চল বঙ্গদেশ  
অপেক্ষা বহুতর স্বাধিকার, পদটি অ-  
( বার্ষিক লক্ষ টাকা বেতন ) ও গৌরব  
উভয় সম্বন্ধেই লোভনীয় । অ.পনার ক্ষ-  
তা বিবেচনা করিয়া এ সকল লোভ পদ-  
পের আকর্ষণ ছেদন সহজ নয় । অপর, হা-  
রিংটন সাহেবের পরিচয় ক্ষমতার কিঞ্চিৎ  
হ্রাস হইয়াছে বটে, কিন্তু ঐ পদে যে যে গুণ  
আবশ্যক, তদংশে তাঁহার ক্ষমতা নাই ।  
তিনি রাজনীতি ও রাজবিধি  
দক্ষ, রাজস্ব সংক্রান্ত কার্যে অপর-  
নহেন । উক্ত কারণে উক্ত পদ পরিত্যাগ  
করাতেই তাঁহার ন্যায়পরতাদিগুণ  
সবিশেষ পরিচয় হইয়াছে ।  
পেচেন্ট হইয়াছে কিনা, আমরা সেজেটানি  
ই, ত্রুণ্ড সাহেব ঐ পদ গ্রহণ হইয়াছেন ।  
ইনি হারিংটন সাহেবের অপেক্ষা সত-  
বিষয়েই নিকট । ইনি কিনা দিরাং সে-  
টারি ছিলেন বটে, কিন্তু সচরাচর সুনিষ্ঠ  
পাণ্ডায়া দার, ইহার তদ্বিষয়ে তাদৃশ ক্ষমতা

অন্যদূর প্রাচীন কালীকৃষ্ণ হাথুর ও  
স্বাধ করিটনন, সর চারলস রেড করিটন



পার্বতীকুমার ঠাকুর তৃতীয় অধ্যায়  
 : ইন্দ্রেন । ইহার অর্থ এই, স্বামীঃ গবর্গ  
 মনোবল্লভঃ যথোচিত্তঃ স্বামীমতাঃ ও নর

— — — — —

২য় নিম্নোক্ত—

— — — — —

কেন্দ্র জরুরী

তে জাফপ না করিয়া অবশ্য কর্তব্য  
বোধে স্বকর্তব্য সাধন করেন, তাঁহারা  
বুদ্ধিপ্রাপ্তিবেশ, কর্তব্য সাধনের সঙ্গে  
পুরস্কার লাভ আছে। বাহা ইউক, এই অতি  
মন্দনপত্র প্রদানের অনুষ্ঠানটি কিংবা পূর্বে  
হইলো জান হইত। বাহা ইউক এরা শু  
নিলাম গত মেইলে সভার মুক্তি কাণ্ড বি  
বরণের কয়েক শত খণ্ড ইংলণ্ডে বিতরণের  
জমা প্রেরিত হইয়াছে, এবং আলেক  
জান্ডিয়া হইতে টেলিগ্রামকে অভিমুখ  
পত্রের মধ্য প্রেরিত হইবে, তাহা হইলে  
তাৎক্ষণিক চিনি নাই। পার্লিয়ামেন্টে সর্ব  
অধিবেশনে বন্ধ হইবার পূর্বে ইহা :  
চার্লস উডের হস্তগত হইবে : এবং  
মহাসভায় তারতম্য, ডুল্লা ও কল্ট  
নিম্ন লিখিত জ্ঞান সম্বন্ধে হউক :

পাঠকগণের অরণ্য অ'ছে, 'যা'ম  
পূর্বে রাক্ষুসের পাঁচটা হইয়া দানব ক  
লিখিয়াছিল। বাবুইপুরের মৃতদ ( ই  
যে কেবল বাবুইপুরে মৃতদ আশ্রিত  
একপ নহে, ইনি এ কাণ্ডে মৃতদ ত্র  
হইয়াছেন ) ডেপুটি মাজিস্ট্রেট দা  
রিদগের গুরু দণ্ড করিয়াছেন । বি  
চৌকিদারেরা আশামীর অবস্থার ক  
কনের বাটী মধ্যে যে প্রবেশ করিয়াছি  
তজন্য যে মালিশ হয়, তাহা অগ্রাহ  
বিদ্যমান । মাজিস্ট্রেট দা

যে প্রথমতঃ প্রিয়তমের মতামত অনুসরণ  
হইত। এই প্রকারে বিবাহ হইত  
যদিও কতিপয় ক্ষেত্রেও বৈবাহিক  
তত্ত্বের পরিচালনা সম্পূর্ণ স্বাধীন  
হইত। কিন্তু যিনি অসামান্যরূপে  
বিবাহবিগতকে বিবাহের আয়োজিত  
জন।

আমরা জানিত্তেই যে রাণী ও অমর  
রূপে চিত্রিত হইত। বেবিলিয়াম। যিনি  
সুখি বিবাহের আয়োজনাৎ বে চিত্রিত  
বৈবাহিক, আশীর্বাদে অমর সন্তানকর।  
চিত্রিতও চিত্রিত। এতলে উক্ত  
হিতোক্ত।

“আমহু ধর্মবট করিয়া আসারীআন  
এক মোক্ষমার মিত্রবী হওয়ার ও পা  
ত্রাওরালী নিযুক্ত হওয়ার একজন আ  
মর পন্থা কুসংসার রাণী কটন সন্তান  
হইতে না পারি। তাহাশিগের ও আমা  
শিগের কেবল ও দুর্ভাগ্যে বৈবাহিক এই  
বৈবাহিক নালিন উপস্থিত করি। আপনরাই  
এ আমাশি মিত্রবী হইয়া মোক্ষ  
কিবেক না। বিবাহবিগত অসামান্য  
চিত্রিত পুণ্য নিযুক্ত থাকি। ই এক  
মকে মার পীঠ ও বাসি মতো একজন  
বৈবাহিক মোক্ষমার উপর উঠিয়া চাতিতাল  
না ও দুর্ভাগ্যে বৈবাহিক মিত্র করি  
র অসামান্যতা ও তাহা করে মাই।  
ম কেবল দুর্ভাগ্য করা মাত্র।”

আমহু ধর্মবট করিয়াছে বলিয়া  
যুক্তি একজন হইত। ইহা ও  
কিই মর, ইহা পুরাতন কলী। অহরী  
যুক্ত চিত্রিত আমের অসম লোকদি  
গের রাণী কটন কুসংসার করিবার বাধা  
যিহাছে, তাহাশিগের আমহু ধর্মবট  
কিয়া পাহারাওরালীমিত্রকে জন্ম করি  
র আমন মিত্র মালী করিয়াছে।  
সুখি মালীমিত্র মরী সন্তানদের লোক  
ইহা কিহলে এই কটন এতর ও আ  
ম করিলেন। কুসংসার মর হইলে

মের বাধীরা কটনকে অসম হইল। অমর  
আমহু ধর্মবট করিয়া দেবি মাই। মালী  
কিই মর, ইহা পুরাতন কলী। অহরী  
যুক্ত চিত্রিত আমের অসম লোকদি  
গের রাণী কটন কুসংসার করিবার বাধা  
যিহাছে, তাহাশিগের আমহু ধর্মবট  
কিয়া পাহারাওরালীমিত্রকে জন্ম করি  
র আমন মিত্র মালী করিয়াছে।  
সুখি মালীমিত্র মরী সন্তানদের লোক  
ইহা কিহলে এই কটন এতর ও আ  
ম করিলেন। কুসংসার মর হইলে

চৌকিদারের বাসি মতো একজন  
করিয়া মিত্রবী বা চিত্রিতকে মিত্রবী  
এতর করিবে কেন? অর কেবল বা অম  
সামগ্রী মর ও চাতিতাল তর করিবে?  
এই বিবেচনা করা। বাহীরা একজন মর  
অসামান্যশিগের মনের তাহ অসম মর  
ম, তাহাশিগের ইহা মর মর দুর্ভাগ্য ও  
মার অসম কুসংসার মর কটন। একজন  
র অনতিম লোকদিগের এই একজন  
মামক মর মাই, অমৃত্তির যোগ  
না কিয়া বধামর হুতাক বধম করি  
আমালতে মরমরা গ্রাহ মর না, আ  
মদিগের আমালতের অসমতা এইমপ  
বটে। এই মর মর মরমরা আর  
কিহু কিহু মিত্র যোগ কিয়া অতিবোধ  
করিয়া থাকে। মালীমিত্র অমৃত্তির মর  
ম দেবিবন, যে যে হলে এইমপ মিত্র  
যোগ আছে, বাহীরা বধামর তর ও মিত্র  
কে মর করে। অমর মর না  
তাহাশিগের কুসংসার আর অমর মর।

মোক্ষমিত্রের মরমরা একজন  
মরমিত্র মর। তাহাশিগের  
কটন মালী করিবে মিত্র  
কটন মিত্র একজন মরমরা  
মর মর। চৌকিদারের  
মর মর মর মর মর  
মিহু, পুরাতন মিত্র মর  
করী মোক্ষ করে মর। অমর  
রা বাধিবে, তাহাশিগের  
অমৃত্তির যোগ মর মর।  
মিত্রের যে অমিত্র মর  
মাই, মরমিত্র মর মর  
মরমার মর মর মর  
মরমি মালীমিত্র মরমিত্র  
মরমরা মরমিত্র মরমিত্র  
মরমিত্র মরমিত্র মরমিত্র  
মরমিত্র মরমিত্র মরমিত্র

এই মরমিত্র মরমিত্র  
মরমিত্রের কিছু মর  
মরমিত্র। একজন মরমিত্র  
মরমিত্র আছে, পাহারা  
যে তাহা অসম মরমিত্র  
মাই। কিন্তু তাহাশিগের  
মরমিত্র মরমিত্র মরমিত্র  
মরমিত্র মরমিত্র মরমিত্র  
মরমিত্র মরমিত্র মরমিত্র



[illegible]

কেন্দ্রীয়বিশেষ উপরে অসাধারণ প্রভাব  
করিতেছেন। গবর্ণমেন্ট উৎসাহান্বিত  
পুস্তক বা সংবাদ পত্র প্রণীতার আশ্রিতে  
নিবেদন করিয়াছেন। তাহা কিছু সফল হই  
নোপায়। তাহার সংবাদ পত্র পাঠ করিয়া  
থাকেন। এই সকল কারণে মিল প্রণীতার  
স্বার্থবিরোধ হওয়া ও অনন্তর মনে। আ  
লেকজান্ডার হারকন বর্তমান রাজসংকে  
রাজ্যচ্যুত করিবার নিমিত্ত দুই ম. ফণ ক  
রিয়াছেন।

একদে আন একটি প্রজা হইতে  
হে, ইংলও ও ফ্রান্স পোলাণ্ডকে এপ্র  
কার নিপীড়িত হইতে দিবেন কি না? স  
ম্রাট নেপোলিওন ক্রমশঃ পৈতৃক শত্রু  
দ্বিপকে পরাজিত করিতেছেন, বিশেষতঃ  
তিনি লাভপামরউনের ম্যারশলটাকরে ক  
বিল্লছেন যাবতীর জাতিই নিরস্ত্র আসন  
কর্তা দ্বারা আশ্রিত হওয়া উচিত। একদা  
রা ম্পট প্রতীক্ষমান হইতেছে পোলাও  
সাহাবাণী হইলে তিনি তৎকালে পরাধীন  
হইবেন না। তবে এক কথা এট, তিনি  
ইংলওকে পরিত্যাগ করিয়া একাকী সহ্য  
রতা করিতে যাইবেন, একদা বোধ হয়  
না। ইংলওরও এবিধের সহায়্য দান  
বিমুখ হওয়া বিধেয় নয়। উল্লিখিত ত্রয়  
মক অত্যাচার হইতে বেধিবাও ইংলও  
যদি উদাসীন থাকেন, পাপপ্রসূ হইবেন  
সন্দেহ নাই

২৫৩

### একদে নীতিবিশেষের সবলকার হইবার উপায় কি?

অগভীরতার ম্যারপরতা ও সকলের  
প্রতি সমান করণা প্রভৃতি প্রতিপন্ন হবার  
উদ্দেশ্যে সুবিখ্যাত কৃষ্ণ সাহেব বলিয়াছেন  
যে যে দেশে শস্য উৎপন্ন না হয়, তথায় প-  
খাদি প্রচুর পরিমাণে করে। তদ্রূপে নিম্ন  
সেই পদ্ধতির মাংস তরুণ করিয়া শুষ্ক ও  
মিষ্ট হইয়া থাকে। এই বাক্য দ্বারা প্রমাণ  
যতাবতঃ নিরাশ্রিত ও আশ্রিত উভয় পক্ষ  
তোমার ইহা আশ্রিত কণে প্রতিপন্ন

বলিয়া নিরাশ্রিত তোমার তথায় প্রভাব  
ইহা হইয়া বিবিধ বৃত্তি প্রদর্শন করিয়াছেন।  
এক, তাহার বলেন যে যে দেশে শস্য  
না হয়, তথায় মনুষ্যের বাস করা অ-  
চিহ্নিত। দ্বিতীয়, তৎসংবাদে কিছু না ও খাদি-  
ভোর এ দুর্ভাগ হইয়া শস্যাদি আশ্রিতের আশ-  
ভাবনা নাই। এ বৃত্তি আশ্রিতের মিত্র  
অগভীর বলিয়া প্রতীক্ষমান হইতেছে না  
যে দ্বাদশ মনুষ্য বাস না করে তথায় সাহিত্য  
বিজ্ঞানাদি প্রাচীন হইবার লক্ষ্যনা কি?  
অগ্রে বাস করিয়া মনুষ্যকে বিজ্ঞানাদির উ-  
ন্নতি করিয়া শস্যাদির উৎপাদন করিতে হই-  
বে মনুষ্যেরা, কিন্তু বর্তমান সেই বিজ্ঞা-  
নাদির উন্নতি না হইবে তত দিন মনুষ্য ত-  
থায় কি তরুণ করিয়া? নিরাশ্রিত তোমার  
বলি বলেন যে যে দেশে শস্যাদি না হয়,  
তথায় মনুষ্যের কোন কালে বাস করা উচিত  
নহে, তাহা হইলে লাগল্যও দেশে রেশতি-  
য়ার হরিণ হুটি ও মনুষ্যের বাস হুটি হইল  
কেন? লাগল্যও দেশের রেশতিয়ার হরিণের  
স্বাস্থ্য অনেকটাই অসুস্থ আছে। যে দেশে  
শের লোকে উহার বাস, লোম ও দুগ্ধ দ্বারা  
মান্য প্রকার আশ্রিতের কাঁচ সাধন করে।  
লাগল্যও দেশে যদি মনুষ্যের বাস না থাকে  
না হইত, তাহা হইলে বোধ হয় সেই মনুষ্য  
মহা উন্নতি হইবারও হুটি করিতে না।  
প্রসিদ্ধি বিষয়ে শ্রীর বিজ্ঞা নিম্নারম্ভ প্র-  
কৃত জেহু কোলাও সাহেব যে বৃত্তি প্র-  
দর্শন করিয়াছেন, তাহারও কিরূপে প্রমাণ  
স্বরূপ এ স্থলে গৃহীত হইতেছে। (১) তিনি  
বলেন যে যে দেশের লোকে আশ্রিত ও নিরা-  
শ্রিত বিবিধ পদ্ধতি দ্বারা করিয়া শুষ্ক থাকে  
তথায় উভয় পক্ষই প্রচুর পরিমাণে প্রাণ  
হওয়া হয়। এবং যে দেশে কেবল আশ্রিত  
দ্বারা লোক সুস্থতা রক্ষা করে তথায় আশ্রি-  
তের পক্ষের পক্ষাদির সংখ্যা অধিক হইয়া  
থাকে। আর যে দেশে মাংস অপেক্ষা শস্য-  
দি তরুণ শ্রীর সুস্থ থাকে, তথায় শস্যাদিই  
প্রচুর পরিমাণে উৎপন্ন হয় এবং তথায় আ-

(১) তাহার রচিত ডিক্শনারি অক প্রা-  
কটিক্যাল মেডিসিন পুস্তকের দ্বিতীয় ভাগের  
৩৪৫। ৩৪৭ পৃষ্ঠ দেখিবেন।

হাওয়া প্রভাবী তথায়  
করিয়া একদা প্রমাণ করিয়াছেন  
যে, ইংলও ও ফ্রান্স পোলাও  
সাহাবাণী হইলে তিনি তৎকালে পরাধীন  
হইবেন না। তবে এক কথা এট, তিনি  
ইংলওকে পরিত্যাগ করিয়া একাকী সহ্য  
রতা করিতে যাইবেন, একদা বোধ হয়  
না। ইংলওরও এবিধের সহায়্য দান  
বিমুখ হওয়া বিধেয় নয়। উল্লিখিত ত্রয়  
মক অত্যাচার হইতে বেধিবাও ইংলও  
যদি উদাসীন থাকেন, পাপপ্রসূ হইবেন  
সন্দেহ নাই

(২) উক্ত সাহেবের মতেই  
উন কৃষ্ণ মি টপোগ্রাফি এক আশ্রিত  
টিক অক কলিকাতা পুস্তক সেল  
(৩) এক দিন অস্তর চারি হুটি  
মিত মাংস দেওয়া হইত।



বনভোজ্যাদি-পাণ্ডিত্যের মাংসাদি-র  
আবশ্যক, জাহাজে অপর, প্রমাণ এই, "বীর  
বন্দ্য" উক্ত-রক্ষণ করা অতি আবশ্যিক।  
উক্তি-অনেক-আধিবে-অধিকতর (১) উক্ত-  
আবশ্যক। শীতলহেমে অধিকতর শীতলহেমে  
বিষয়ই প্রাথমিক উক্ত। হুস হইয়া যায়,  
উক্ত-অবশ্যক প্রচুর পরিমাণে মাংসাদি-র  
প্রমাণ প্রচলিত হইয়াছে। এমতেনে বিলম্ব  
উক্ত। আছে, অতএব এখানে উক্তি-অপে-  
ক-অপাধি-অবশ্যক-বিধি হুঁ হুঁ (২)।

আমরা রক্তাক্ত। সহকারে স্বীকার করি—  
ভেছি, মিয় লিখিত পুস্তকগুলি আমাদের  
হস্তগত হইয়াছে।

১ ভারতবর্ষের সত্তার বার্ষিক কার্য; বিবরণ।  
দেশহিতৈষী যাত্রেরই এই সত্তার কার্যের  
প্রতি দৃষ্টি আছে। এই সত্তার দ্বারা এনে  
শের বহুতর জের; লাভন হইয়াছে, আরো  
হইবার সম্ভাবনা আছে। এই নিমিত্তই  
আমরা কোন বিষয়ে সত্তার উদাসীন্য অথবা

হাঙ্গল মধ্যে কোন দ্রব্যে কত পরিমাণে পুষ্টি-  
কর-পদার্থ আছে তাহা স্থলজ: বুদ্ধিতে  
পাশা-যাই।

(৮) অর্দ হার্টেল বোধ্যত হাঙ্গরুক ২২০  
পাতক ও ভাষ্কর্য নর্দ্যাল টীবর্ন লিখিত  
সামান্য অন্নগণের সারীকৃত অন্নতা বিবরণ  
প্রদর্শন দেখিবেন।

(২) মঙ্গলসংহিতার আবিষ্কারকণের বি-  
ধি দৃষ্ট হয়। মাংসাহারে নিবৃত্তি প্রদত্তি উক্তে  
কিঞ্চ ন। হয় এই অতিপ্রায়ে, বোধ হয় তিনি  
উদাহারের অন্য পঞ্চাঙ্গিণিত বিধি প্রদান  
করিয়াছেন। “যজ্ঞ করিয়া মাংস ভোজন  
করিবে অর্থাৎ যজ্ঞীয় মাংস ভোজন করণকে  
টনব অনুষ্ঠান বলা যায়, আপনাই অন্য পঞ্চ  
মারিত্তা মাংস ভোজন প্রদত্তিকে ব্রাহ্মণী  
প্রদত্তি বলা যায়। ৩১ শ্লোক ৫ম অধ্যায়।  
কোন্ কোন্ পঞ্চ পঞ্চাঙ্গির মাংস ভোজন  
করা উচিত, তাহার বিস্তারিত উপদেশ মঙ্গ-  
লসংহিতায় দৃষ্ট হয়। ৫ম অধ্যায়ের ২১ অবধি  
২৩ পর্য্যন্ত সমুদায় শ্লোক দেখিবেন।

ইন্দ্রিয়সমূহের কার্যে আত্মকর্মে করে  
উৎসাহ ও উদ্যোগ দেখিলে আত্মাবিস্ময়  
হই। আমরা যে কার্য বিবরণ প্রাপ্ত হইয়া-  
ছি, তাহার মূল মর্ম এই—

গত বৎসর ভারতবর্ষীয় ও স্থানীয় ব্যব-  
স্থাপক সভাসকলের এবং প্রধানতঃ বিচারী-  
সমূহের কাছা' ভারত হক' সভা প্রধানতঃ বি-  
চারালয়ের কার্যে সম্মিলিত 'সভা'য়  
প্রকাশ করিয়াছেন। ব্যবস্থাপক সভায় ১৮৪২  
অবদের ১০ আইন সংশোধন বিল (১৮৪২ অ.  
নং ৩ আইন) ও জমিদারি ডাকের বিল  
এই দুই বিধিবদ্ধ হইয়াছে। একমোট আইন  
দুই এতদধীন বিধিবদ্ধ করা হয় যে ভারতবর্ষীয়  
সভা প্রত্যেক আপনাদিগের সভা প্রকাশ করি-  
বার অবসর পান নাই। অতএব তাঁহারা ব-  
লেব "এ প্রকার প্রত্যেক আইন হইলে সা-  
ধারণের স্বার্থের সম্মিলিত হানি সম্ভাব্য।  
তিকা গাড়ি পালকী ও মিউনিসিপাল বিল  
অন্যাপিও ব্যবস্থাপক সভায় প্রকাশ  
হইয়াছে। ভারতবর্ষীয় সভা এ দুইটিই  
প্রকাশ করিয়াছেন। কলিকাতা বিল ও গা-  
জীয়াসের সাকার বিল প্রভৃতি হওয়াতে সভা  
আজ্ঞান প্রকাশ করিয়াছেন। ভারতবর্ষীয়  
অপেক্ষা দেড়কোটি টাকা অধিক আয় হওয়া  
তে ও তহাকের কর রহিত এবং ইনকম ট্যাকের  
শুল্ক হওয়া দুই টাকা কমিয়া বাওয়াতে সভা  
আজ্ঞানিত হইয়াছেন। ভারতবর্ষীয় সভার  
চেঁড়াতেই তহাকের কর রহিত হইয়াছে।  
সম্মিলিত সভা ইনকম ট্যাক ও ব্যবস্থাপ-  
ক সভার কার্যের প্রতিবাদ করিয়াছেন।  
ব্যবস্থাপক সভা সর্বদা সকল বিষয় প্রকাশ  
করেন না, তাঁহাদের আভ্যন্তরীণ অধিকার  
সম্মান। কলিকাতা প্রভৃতি ও স্থানীয়  
সম্মিলিত সভার প্রত্যেক উল্লিখিত হইয়াছে।  
সভা যেই চেঁড়া আছেন। লর্ড ক্যানিং  
ও প্রিন্স লিওপোল্ডের গমন, লর্ড এলগিন ও  
সর চার্লস ট্রিভিটের আগমনের বিষয়ও  
রিপোর্টে লিখিত হইয়াছে।

২। প্রেমসাগর। ইহা বাজনা মাইক, কালীঘাটস্থ শ্রীকৃষ্ণ বাবু, গুরু-প্রবর বন্দ্যোপা-  
ধ্যায় এফও এমএল করিয়াছেন।

এইরাহিল বিকৃত, কিছু  
 ৭. জন্মিবার, অতিপ্রাচ্য  
 মিত্র, স্তম্ভারের অস্ত্র  
 ভাষাতে গীতা ও ব্রহ্মা  
 তিরিবারণার্থ নবনামেই পু-  
 এরের আত্মা প্রকাশ করে  
 স্তম্ভার অতীত সিদ্ধি হয়।  
 ১০. ও স্তম্ভিকারিণ-যে  
 ১১. অস্ত্র, উক্ত অস্ত্র  
 ব্রহ্মা পূর্বক অস্ত্র বাস  
 নমেক পরিবর্তে তাহার  
 রে। স্তম্ভার বিদ্যার স্তম্ভার  
 যে আত্মিকের স্তম্ভার  
 ১২. ও স্তম্ভিকার, এই জি-  
 ১৩. অস্ত্র ১. (১) বাহিরিণ  
 ১৪. ও বাহুর পুষ্টি হয়  
 ১৫. ও পুষ্টিসাধন প্রক্রিয়া  
 ১৬. ও স্তম্ভিকার (৩)  
 ১৭. অস্ত্র প্রকাশ জিহ্বা যোগে  
 ১৮. পুষ্টিসাধন করে। এই তিন  
 ১৯. ও স্তম্ভিকার অধিকতর  
 ২০. স্তম্ভার উদ্ভিদ অঙ্গের  
 ২১. অস্ত্র। মিত্র একটি  
 ২২. ও স্তম্ভিকার অঙ্গের এই

| क्र.सं. | विवरण | प्रमाण |
|---------|-------|--------|
| १.      | ...   | ...    |
| २.      | ...   | ...    |
| ३.      | ...   | ...    |
| ४.      | ...   | ...    |
| ५.      | ...   | ...    |
| ६.      | ...   | ...    |
| ७.      | ...   | ...    |
| ८.      | ...   | ...    |
| ९.      | ...   | ...    |
| १०.     | ...   | ...    |

নিম্নোক্ত তালিকায় ক্যাশিয়ারের লেটা-  
ক্যাশিয়ার, পুস্তকের ৩৩৩৩৩৩৩ নং

ଆକେଶନ ଜର୍ନଲ କର୍ତ୍ତୃକ ବିଗ୍ରହରେ କେ-  
କରନ, ମାଉସ୍ ଶୁଦ୍ଧକ ଦେଖିବେନ ।

বগবন্ত, ভিক্রমনারি অক ভবনটিক  
নাথে গুহ মেখিবেন ।

தமிழகம் கிராம கிழிதிரை டெலிவரி





হইবে না। কবে ইহকব-  
তছে।

তদন্তর এক বহুবার করেন।  
ইহ হইয়াছিল। যোগ্য ব-  
রাজধানীর অবমাননা করা

সহ্য আগ্রহের আর্টোমনেন্টে  
ক বাণী কর করাত্তে দিল্লীপে-  
তগার করিয়াছেন, উগাতে ও  
র আভে দা কি?

পেজেন্ট বসেন, সত্যত্ব কচ-  
নিক ১ এক কর্ম খালসী ক-  
চত হইয়াছে।

উপহার এক জন পত্রাঙ্গের  
দ্বারা জালকের ধর্মীলোক  
অর্থ ক্রমশঃ বর্ধিত হইতেছে,  
সাবিত্রী সখা প্রভৃতি হইতেছে। বস-  
ন ও বোম্বাইয়ের শুভারের  
বণিকেরা কানুন বিদ্যা ক্রমক  
ক করিয়া প্রেক্ষিতে ডাটার  
পবনা সংশোধন করিয়া উঠিতে  
প্রাণক বিবাহ মান এই অমিত  
পাত্র পাঠ।

প্রত্যক্ষানন্দ সংবাদ জাতি বলে  
উপ সাভিনয় প্রাক্কর্ষ হইতে-  
কুরি হইতেছে।

প্রেরক সমাজতন্ত্রবর্ষের সত্য  
চন্দ্রনবক বিচারালয়ে গঠিত  
চন্দ্র লিখরাছেন। এক সমস

মণ্ডল নিকট আর্টের হটাৎ চীৎ  
গমীত্ব নিভিল খে, (মথির পাঠক)  
বেরা এক ছুরি দ্বারা বিবহার

খি সৎকারী কামসনব এই ক্রাও  
খি জালাম করিলেন। কিন্তু কয়েক  
খি সাইক্লার সময় আঘাত প্রাপ্ত হই

খি পুন্নির সেনাদা এই সংবাদ  
খি প্রাক্কর্ষ চক্কাইয়া ডালাকে  
খি হত্যাকাণ্ডী পুন্নির এক তোণে

খি সে সেইখানে সেই ছুরি দ্বারা  
খি কয়েকবারে আঘাত করল।  
খি কয়েক জন নিপাতীক কুন্নিতে

খি তৎকালে পলায়ন করিল সে-  
খি ডালাকে গুলি-করবার আভা  
খি গারে এক জন নিপাতী ডালাকে

খি ডালা কানে এই ব্যক্তিকে এই নিউ  
খি ডালা করাত্তে সে বলিল যে এ-

ক মোক্ষপ্রকাশ সে বিব্রল ঐক্যে কিছু উৎকোচ  
দিয়াছিল, কিন্তু তিনি অম্বা পকের নিকটে অধি  
কতর টাণ্ডা হইয়া ডালা বিবরে কিছুমান খ-  
নোমোদী হন নাই। সে ডালাকে সর্ধাঘাত হই  
চাছে। একজনকে ডালার জীবিত থাকা হুখা  
এই বিবেচনা করিয়া সে সেই ধৃত আদলাকে  
বধ করিয়া নিজ প্রাণত্যাগ করিল ইহা অখারি  
গেহ বিচারালয়ের ক.ধোর একটি টিকা। কবে  
আখারিদের দুর্ভাবহার হুর হইবে।

কাকালার দাকার মোক্ষপ্রকাশ খেব হইয়া-  
ছে। ক জন পুন্নির নিপাতী হইয়াস অবধি  
হুর মাস পর্যন্ত মেয়াদ চেষ্টাছে।

যাফ্রা টাইমস বসেন নর উইলিয়ম ডে-  
নিমস পুন্নির পুন্নি সর্ধাঘাতে বাণীতে আসি  
তেছেন। তথা হইতে সর্ধাঘাতে বাণীর  
আফিস পুন্নির দুর্ভাবনা যাইতেছে। বোধ চ-  
তে-ক ডালা ও বর্ধীর সর্ধাঘাতে মীল গরিতে মৃতম  
বাণী প্রাপ্ত করিবার বিবরে সন্ত হন নাই।

অধুবার রাণীর কানী হইয়াব আভা হইয়া-  
ছে। ডালা কনিষ্ঠা ডালা এক জন সাধন্য জ-  
নিহারের সর্ধা ব্যক্তিভাষ্যে লিখ হওয়াতে  
রাণী লোক মাহামি পত্রাঙ্গের। খীরা জাহাব  
সংবাদে রাণীকালে ডালার আণ বধ করেন ডা

চার মৃতদেহ এক কলাপাঙ্কের মীতে সমাধিত ১৩  
এক কর্ম নর্থকী হত্যার রাণিতে রাণীর বাণীত  
হিলেন। সে মাজেট্টে সর্ধাঘাত মেওলাতে মৃত  
বেধ ব্যক্তি কর। বহ। সেলিমস জল রাণী ও ডা

চার ডালা ও আর হুই জমের কানী ও এক জ-  
নকে হাতবৎসর জীপান্তর প্রেরণের আভা দেন।  
মাজেট্টের প্রধানতম বিচারালয় ইহার পরিবর্  
করিয়া রাণী ও ডালা জাহাব কানী সহচর হুই  
জমের জীপান্তর ও অপর ব্যক্তির হুতির আভা  
দিয়াছেন। এই আভা হওয়াতে অনেকে বিস্ময়।

গর হইয়াছেন একজন বিচার বিবরেরই বটে  
পত্রবিবহার অবধি মোক্ষপ্রকাশ বেলগরিয়া ও  
সমসবার কৌশল পুন্নিয়াছে। যদি কখনও সত্য  
হুর, পুন্নি কাকালার রেইলওয়ে কলাপি রবিবা-  
রেও রাণীর শকট চালাইবেন। উৎসাহে ইহা  
অবিবাহে চলিয়া থাকে কিন্তু তারতর্ঘ্যে লাভ  
বিশপই প্রথার বিবন বিবোধী।

২৭ এ কাকালার পুন্নিয়াহ।

কিনিস বসেন নর চারলস ট্রিবিয়ান কলি-  
কাতার কয়েকটি দাভা ডিকিৎসালর উঠাইয়া  
ইবারি প্রস্তাব করিয়াছেন। কলিকাতার একধে  
হুই ও ডালাপুত্র প্রাক্কর্ষ কয়েক দানে আর ক-  
কৌশল আছে। একপেবে বীতিতে দাভা ডিকিৎ

সালরের কাণী হইয়া থাকে, আদ্যতে উঠিয়া বে-  
লে লোকের বড় কতি নাই, অধিক দুর্ভাবনা  
কিছু লাভ হইতে পারে বটে কিন্তু অল্পধাম  
করিয়া বেধিলে এই গুলি উঠাইয়া বিবরে বড়  
অমায় হইবে, যাতে উঠাই অম্বা সংশোধিত  
হইয়া উঠা হুরিজের পক্ষে কলোগদারী বহ,  
সেই চেষ্টা কর।

নিম্ন লিখিত সর্ধাঘাতে ১৮৬০। ৬১। ৬২  
অধে নিম্ন লিখিত পরিবরণ টিকা উঠাই  
হইয়াছে।

| সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে | সর্ধাঘাত সর্ধাঘাতে |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |
| ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               | ১১৩৬               |

বোম্বাই সর্ধাঘাতে বিবিড বসেন নীচ গেজি  
জুলার অর্ধেকটল কোলাসর এপি পুন্নি  
হইতে বেল আনিবার তার সমর্পিও হইবে, উ-  
লও হইতে জাহাব আলিলেই কাণী আরিত  
হইবে।

সাহারকমিকেল বসেন ১৮৬২ অধে  
পত্রাঙ্গ প্রেরণের ছেটআদলাত সর্ধাঘাত ৩,০০১  
মোক্ষপ্রকাশ উপস্থিত হইয়াছিল। তদন্তে লাভ  
কে ৫০০ অমৃতসবে ২৫ বীতিতে ৫০০ পেনো-  
হারে ৫০০ নিমলায় ৫০০ সর্ধাঘাত বিচার হই  
রাছে। অপ্রতি সর্ধাঘাত আভিও নিম্ন  
হুর নাই।

নিম্ন আভা বসেন, নর চারলস ট্রিবিয়ান  
যম রাজসংক্রান্ত কাণী বহ, প্রাপ্ত এক জন  
নিবিয়ানকে নিম্ন করিবার আভিলাষ করি-  
রাছেন। এ, ৩ বিডিং সর্ধাঘাত ইয়াব আভির  
কল্লু হত্যাবাদ।

১। স্বতন্ত্র স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ২। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৩। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৪। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৫। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৬। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৭। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৮। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ৯। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের  
 ১০। স্বদেশীয় লোকেরা স্বদেশীয় লোকের

১। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
২। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৩। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৪। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৫। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৬। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৭। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৮। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
৯। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর  
১০। ন ফিল্ড: বেলন বর্জিত: এর কালেক্টর

[illegible]

| क्र.सं. | विवरण     | प्रमाण   |
|---------|-----------|----------|
| १       | १९९९-२००० | १२४२५०५० |
| २       | २०००-२००१ | ७७५८५९०  |
| ३       | २००१-२००२ | ४६२७२०   |
| ४       | २००२-२००३ | ७७५८५९०  |
| ५       | २००३-२००४ | ७७५८५९०  |
| ६       | २००४-२००५ | ७७५८५९०  |
| ७       | २००५-२००६ | ७७५८५९०  |
| ८       | २००६-२००७ | ७७५८५९०  |
| ९       | २००७-२००८ | ७७५८५९०  |
| १०      | २००८-२००९ | ७७५८५९०  |
| ११      | २००९-२०१० | ७७५८५९०  |
| १२      | २०१०-२०११ | ७७५८५९०  |
| १३      | २०११-२०१२ | ७७५८५९०  |
| १४      | २०१२-२०१३ | ७७५८५९०  |
| १५      | २०१३-२०१४ | ७७५८५९०  |
| १६      | २०१४-२०१५ | ७७५८५९०  |
| १७      | २०१५-२०१६ | ७७५८५९०  |
| १८      | २०१६-२०१७ | ७७५८५९०  |
| १९      | २०१७-२०१८ | ७७५८५९०  |
| २०      | २०१८-२०१९ | ७७५८५९०  |
| २१      | २०१९-२०२० | ७७५८५९०  |
| २२      | २०२०-२०२१ | ७७५८५९०  |
| २३      | २०२१-२०२२ | ७७५८५९०  |
| २४      | २०२२-२०२३ | ७७५८५९०  |
| २५      | २०२३-२०२४ | ७७५८५९०  |
| २६      | २०२४-२०२५ | ७७५८५९०  |
| २७      | २०२५-२०२६ | ७७५८५९०  |
| २८      | २०२६-२०२७ | ७७५८५९०  |
| २९      | २०२७-२०२८ | ७७५८५९०  |
| ३०      | २०२८-२०२९ | ७७५८५९०  |
| ३१      | २०२९-२०३० | ७७५८५९०  |
| ३२      | २०३०-२०३१ | ७७५८५९०  |
| ३३      | २०३१-२०३२ | ७७५८५९०  |
| ३४      | २०३२-२०३३ | ७७५८५९०  |
| ३५      | २०३३-२०३४ | ७७५८५९०  |
| ३६      | २०३४-२०३५ | ७७५८५९०  |
| ३७      | २०३५-२०३६ | ७७५८५९०  |
| ३८      | २०३६-२०३७ | ७७५८५९०  |
| ३९      | २०३७-२०३८ | ७७५८५९०  |
| ४०      | २०३८-२०३९ | ७७५८५९०  |
| ४१      | २०३९-२०४० | ७७५८५९०  |
| ४२      | २०४०-२०४१ | ७७५८५९०  |
| ४३      | २०४१-२०४२ | ७७५८५९०  |
| ४४      | २०४२-२०४३ | ७७५८५९०  |
| ४५      | २०४३-२०४४ | ७७५८५९०  |
| ४६      | २०४४-२०४५ | ७७५८५९०  |
| ४७      | २०४५-२०४६ | ७७५८५९०  |
| ४८      | २०४६-२०४७ | ७७५८५९०  |
| ४९      | २०४७-२०४८ | ७७५८५९०  |
| ५०      | २०४८-२०४९ | ७७५८५९०  |
| ५१      | २०४९-२०५० | ७७५८५९०  |
| ५२      | २०५०-२०५१ | ७७५८५९०  |
| ५३      | २०५१-२०५२ | ७७५८५९०  |
| ५४      | २०५२-२०५३ | ७७५८५९०  |
| ५५      | २०५३-२०५४ | ७७५८५९०  |
| ५६      | २०५४-२०५५ | ७७५८५९०  |
| ५७      | २०५५-२०५६ | ७७५८५९०  |
| ५८      | २०५६-२०५७ | ७७५८५९०  |
| ५९      | २०५७-२०५८ | ७७५८५९०  |
| ६०      | २०५८-२०५९ | ७७५८५९०  |
| ६१      | २०५९-२०६० | ७७५८५९०  |
| ६२      | २०६०-२०६१ | ७७५८५९०  |
| ६३      | २०६१-२०६२ | ७७५८५९०  |
| ६४      | २०६२-२०६३ | ७७५८५९०  |
| ६५      | २०६३-२०६४ | ७७५८५९०  |
| ६६      | २०६४-२०६५ | ७७५८५९०  |
| ६७      | २०६५-२०६६ | ७७५८५९०  |
| ६८      | २०६६-२०६७ | ७७५      |

[illegible]

কিন্তু বালেন অন্তঃকরণে ।। ইতিমধ্যে  
 চব্বি টেরোণ প্রায় ১ বছরের অবকাশ  
 পূর্ণিমা আবেশন করিয়াছেন । বিনিমি বোটে  
 র সের্জিওনি এইচ এল ডিওরির সাহায্য  
 বহু/প্রাণী প্রাণকালক সত্যক - ১০০০ ১০০০ ১০০০  
 ম'বন। আছে । ১১ -

তিন আলা বসেন, কান্দু'র বে'ল'গান  
 লোকা'র খানার ক'তক জন ক'র্ষক'ানক'কে কো'র  
 খ'ল'ব'া'র'ে' ক'তক: ক'ক'আ'ল'গ'তে বি'চ'ার'্য' আ'  
 জ'ান' কর' হ'য়, জ'ান' আ'বে'দ' অ'জ'ে'র' 'আ'গ'ান' উ'  
 দি'ও' হ'ই'ল' বি'চ'ার' ক'রি'ল'ো'জ'িল'ন, ই'তি'হ'াস'  
 হ'য়, জ'ান' আ'গ'ান'দ'ন' নি'ক'ট'ী' বী'চ' হ'য়, এক'ক'  
 টে'ব'ল' হ'ই'তে এক'জ'ন' ল'গ'িয়া' বি'চ'ার'ক'কে' জ'ান'  
 হ' অ'হ'ার' ক'রি'ল'ো'। এ' এক'টি' ক'ত'ন' স'গ'ান' ।

[illegible]

১। অবজানবদ্ধ বসন্ত এক জন পুলিশ চৌ  
দার ১৮ই ফেব্রুয়ারি ৪৪ গণিত বেজিনেন্টে  
জন টেন নকের প্রতি মির্জা বাহাদুর কবিয়া  
এক জন টেন নকের পাঁকেটে একটি মদের গোর  
ছিল। ঢেঁকীদারেরা জাহা চাচ্ছে, সে হাতে  
গমত হস্তচাড়ে জাহা চাচ্ছে ২৭ নং জাহা  
জুগমন করে, পাঁচাৎ কজ্জলি লে কে জাহা  
হাতে এসে বোতলটী জাহাৎ, ফেলল, ক  
তে সমস্ত জাহাৎ জাহাৎ জাহাৎ জাহাৎ জাহাৎ

[illegible]

সাতটার অর্ধেকের মধ্যে এই ৩০০  
 নামের ইয়াদাহে জাতিভেদে ১০০  
 রকি ইয়াদাহ। ও ২০০টি বাগিচা  
 আর ১৫০০ বাগিচা কেন্দ্রীয় বাগিচা।  
 তেহে আর ১০০ টেনিও জুয়েল আর ৪০০  
 শিকার কর ক বা শিকার করিতেছে। এত  
 মানা অবশ্যম্ভাব্য- সাধারণ লোক জল  
 ও বাগে অবশ্যম্ভাব্যের এত সাধারণিক  
 তার টাকা ব্যয় হয়। তৎপন্ন সন্তান দুই  
 কুল দাপি ৫ ইয়াদাহ আর গাভীরা  
 অধ্যয়ন করিতেছে।

ବାହାଲି ମହାଲକ୍ଷ୍ମୀ ଯେଉଁଠି  
 ଶ୍ରୀ ୭୭, ୭୭, ୭୭ ଟାକାର ଉପରେ ଥିବା  
 ଗାଈ ।  
 ଶିବ ଶାସ୍ତ୍ରୀ ଯେଉଁଠି ଶାସ୍ତ୍ରୀ  
 ଶ୍ରୀ ୭୭, ୭୭, ୭୭ ଟାକାର ଉପରେ ଥିବା ।

১৩ এ কাক্সন হুগ্গস ডব্লিউ. এ.  
 গভীর রেইলওয়ে খোলা  
 হিন্দু লোক কুড়ীত প্রেরণ। এক  
 মাদ্রাস ভাড়া করিয়া উক্ত  
 গমন করিতেছেন। রেইলওয়ে  
 প্রাথমিকেন স্বতন্ত্র ও চতুর্থ  
 এই এক কানীতেই বীজার।  
 জিন ক্রিষ্টে গাতিবেন।  
 দাক্ষিণ্যনর এক বাতি  
 ন জান করিয়া এক কানীর  
 বিরাহে। সে দাক্ষি  
 এমন সকল লোক

আমরা, নতুন। এতদিন স্থায়ী হয়ে  
 তুলি। বোম্বাই নগরে প্রেরিত ইচ্ছা  
 চাওয়া হইল। অনেক তুলি। লিখা  
 সিদ্ধি। আশা। বিবেক। এক। নতুন।  
 লাভ। বামে। অপরাধ। তুলি।  
 ককট। বিবেক। মাঝ।  
 এক। নতুন।  
 নতুন।  
 হইতেছে।  
 নতুন।

গতবৎসর জিগটে ও ব. হাক  
কুলি যোগিত হইয়াছে। ইহা নিগের  
কর কীৰ্ত্তি পাবে, তাই এক্ষণে  
উচিত।



[illegible]





পরিণামে একটি বাণী। নঃ লিখিত।  
নীকে কোন প্রকারেই পরিভাষণ করি. ত গা  
ভেছি না। নীলকমরের। যে প্রকার নঃ মঃ  
কবিগোছেন, সেই প্রকার গাট: লিখিত হই  
৮. ১০ বৎসর পূর্বে মন্দিরাছে। (বহুত  
কমখ্যা ওরূপও হইয়াছে) অথচ, তত  
নীলকমর' গকে সেই বোকখ্যা উঠাই।  
বার অপ্রাতি মন্দিরাছেন। মন্দিরক - ১০  
মন্দির 'পাখিত হইবার ৮. ১০ বৎসর  
যে মন্দির মন্দির হইয়াছে তাহাৎ 'ক  
কোন মন্দির দাখিল হইলে তাহাৎ মন্দির  
লীল বল. বার কি না? এবং এট 'ক  
লীল আদালতে দাখিল করিলে ১. ১০  
রাগ কর কি না? এবং কোন বাজারি ব  
রূপ মন্দির দাখিল আদালতে দাখিল করি  
তাৎ 'কি' মন্দির মন্দির না করি ম  
পাইতেন কি না? আলমিই বসুন। তা  
পনি বসিলেই যে নীলকমর নাচেন, মন্দি  
চার আবার অপরায় কি? মন্দির 'কি' ১  
না হইয়াছে এমন মন্দিরই নাই. ১০  
মন্দির হইলেন, তখন এক 'কি' ১  
মন্দির দাখিল করিলে আর কত বড় অ  
ইবে? মন্দির যে প্রকার মন্দির উপায়  
হাছে, তাহাৎ আর কোন প্রকারেই





[illegible]

মহাপুত্র। সং প্রতি কএক দিনের মাধ্য উক্ত  
খানার গৌমাত্তপত মাছিরপুর, গোবিন্দপুর,  
জিতারপুর ও শঙ্করপুর এই চারি গ্রামে ডাকা-  
ইতি হইয়া গিয়াছে। অন্য খানার গৌমার ম-  
ধ্যেও এক আশাটী হইয়াছে। এতদ্ভিন্ন চোর  
ও বাত ছেঁচোর মহাপুত্রের। আছেন, তাঁহারা  
দিনে দুপরে দেখে তোর না দেখে ঘোর করিতে  
ছেন, ( দুপরের বিবর এই যে এতদেও কর্ত্তা ম-  
হাপুত্রের পদ হৃদ্ব হইতেছে না, নীচ হইবার  
আকার বটে, ইহাতে লোক লোক মন্থিত হ  
ইয়াছে, ধনী লোকের। অতিরিক্ত গ্রহণী নিমু-  
স্ত কবিত্তেছেন, কখন কি বর এই আশঙ্কার মত  
লেই সর্ব্বদ, উৎকৃষ্ট এবং স্ব স্ব প্রকার নি-  
মিত্ত ব্যতিবাহ হইতেছে। এখনি এই, স্তম্ভন পু-  
ল্লিব বন্দবস্তে খানার মাধ্য। কদ হইলে না কা-  
নি জারো কি হবে। এখনই বা না হবে কেন—  
বাছাদের ঘরে অত। কক্ষ নাহি, তাঁহাদের কা-  
চাবো এশী কাচাবো বা দুটি তিনটি জলপাত  
আছে, তাঁহাব উপর আনার দেশাটিও করা আ-  
ছে প্রমাণাটিও খেল। আছে, ভাল বুতি খানি  
ভাল চানব খানি ভাল জুতা জোতাটা না। ই-  
লেও ভাল দেখার না সুত্তরাংএমিক ওমিক টান  
টোন মা দিল কেনন করিয়া চলে। এমিকে  
আবার একমকার দারোগা মহাপুত্রের। দেশ  
পাসিত হইয়াছে ডাবিয়া নিমিত্ত আছেন, খা-  
না হইতে গ্রার ব্যতিব হওয়া মাছে, কেবল ম-  
মোনীত তদারকটী উপস্থিত হইলেই নিজ। ১৮  
হয়। ব্রহ্মক নিজায় অভিকৃত্ত থাকিলে মন্ত। ত-  
করের। নিজর না হইবে কেন? তাঁহারা ঘাট  
আলসা পনিভ্যাগ করিয়া হমনীযোগে স্ব স্ব  
নীমার মধ্যে কোন স্থানে অরং কোন স্থানে না-  
য়েব দারোগী। কোন স্থানে জবাদার বরকন্দাজ  
একুত্ত নিয়ম মতে রৌদ্রপত করেন ও বাছা-  
দের প্রাত্যহিক ঐম ব্যতীত খোদার পুরণের  
সংস্থান মাছি এবং বাছাদের মাধ্য মতে মাসিক  
উর্জ সংস্থা হই কিন উৎকৃষ্ট অধিক উপার্জন  
হয় বা বাছাদের মাসিক আট কদ টাকা বর

সত্যকামিনী কন্যা  
মোঃ হেঁচা।

শ্রীযুক্ত কৃষ্ণলাল পাণ্ডে বোক্তার বহরমপুর  
 শ্রীযুক্ত বাবু যোবিন্দচাঁদ দত্ত ইন্ডাবন  
 শ্রীযুক্ত বালা প্রাণকান্তী রায় বহরমপুর মাজব  
 শ্রীযুক্ত জীবন্তলাল রায় হুগলি  
 চাঁদমাণ্ডান মৈত্রেয় মাউন্টব্রেরি সল্লানক  
 শ্রীযুক্ত বাবু বিশ্বকর সিংহ পানিগড় কবিরপুর  
 করিমপুর বিদ্যালয়ের শিক্ষকগণ করিমপুর  
 শ্রীযুক্ত ডঃ রিণীচরণ হুগোলাখার হুগলি  
 উইলিয়াম মেরে মিউনিসিপ্যাল রায়পুর বোয়ালদি  
 হুগোন লাল রায় বর্জমান  
 শ্রীভারিণীচরণ দেব মাজী ব  
 লক্ষ্মীকান্ত চক্রবর্তী বাগবগল  
 শ্রীমোপীমোহন বোম  
 কাপী  
 আবিসহী লাল দাস বরিশাল  
 জিল্লিড মোহন রায় চৌধুরী চৌধুরী

[illegible]

এই গল্প কলিকাতার পূর্ব দাঙলী রোড-৪৫৪  
 মাধব কৈশোরের মল্লিক চাকরিদারদের জিয়ারত  
 বিহারকুসুমের বাগিচা এটি সৌন্দর্য্য অসাধারণ

# সোমপ্রকাশ

“স্বর্নমতা সত্যনিহিতায পার্থিবাঃ বরুণী স্মৃতিমহনা ন স্বীকৃতাঃ।”

৫ ভাগ। { সন ১২৬৩ । ১১ ই চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ২৩ মার্চ } দৈনিক মুদ্রা ১ টাকা  
১৯ সংখ্যা। { দৈনিক অগ্রিম ১২ টাকা

## বিজ্ঞাপন।

ফরিদপুর জিলার অফ.পাটী বাটকেসারি  
কম্পনীর নামে যে পত্রনি তাহা আফে,  
হা দরপত্রনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
হইবে। বাহার সেই তাহুক দরপত্রনি লই  
র অথবা ক্রয় কারবার ইচ্ছা আছে, তিনি  
লকাতার জাতি ম কিসর কোম্পানির নিম  
কাবেদন করিলে সবিশেষ বুঝাও জানিতে  
পারিবেন।

## বিজ্ঞাপন।

বামবাবু, কক গাভুর, রাস্তা দান হ, গোর  
বয়াল, নিতানন্দ বেরাণী কুমারসে, জন  
কীচাণ। এত্ৰি প্রাচীন ১৮৬৩ খ্রিস্টাব্দে  
কুমার উত্তম গানপন সংগৃহীত ও একত্রিত  
করা পত্রিত করা গিয়াছে। পত্রকে গুরল  
এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

সংখ্যা ১১৩০ বাট।

ঐযুক্তগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং বোঃ

## সোমপ্রকাশ।

ই ১৮৬৩ সালের।

কলিকাতা সংস্কৃত কলেজে মুদ্রণ  
ক প্রকৃতির গ্রন্থানুমতি হইয়াছে।

—

চিহ্ন যী বর্ণনাঃ

‘সামরা’ অনেক দূর সোমপ্রকাশে চির  
যী বর্ণনাবস্তুর জন্ম করিয়াছে। একত্রে  
ই দ্বিধা লইয়া অনেক স্থানে আন্দোলন  
হইতেছে। তারতবর্ষে যে যে প্রদেশে এ  
বন্দোবস্ত নাই, সর চারলুস উড তত্ত্ব

দ্বলেও ইচ্ছা প্রবর্তিত কবিবার অনুমতি  
দিয়াছেন। ইহা যে এদেশের আত্মস্বত্ব  
উন্নতিব একটা প্রধান কারণ, তাহা  
অনুমাত্র সংশয় নাই। ইহা সর্বত্র প্রবর্তিত  
হইলে গবর্ণমেন্টও লাভবান হইবেন। তা-  
হাদিগকে মধ্যে মধ্যে কর প্রণালী পরিব-  
র্তিত করিয়া আপনাদিগের সহিত প্রজাগ  
ণকে উদ্বেজিত করিতে হইবে না। কিন্তু  
বঙ্গদেশে যে প্রণালীতে যী বন্দোবস্ত  
করা হইয়াছে, আমরা ইহার সম্পূর্ণ  
অনুমোদনকারী নহি। এতদ্বারা আশানু-  
কূল কল লাভ হইতেছে না। জমিদারেরা  
গবর্ণমেন্টের ও আপনাদিগের প্রাপ্য সং-  
গ্রহে যেকূল যত্নবান, ভূমির উর্বরতা ও  
বর্ধনে সেকূল নহেন। প্রজাদিগের সহিত  
চিরস্থায়ী বন্দোবস্তই বিধেয়। তাহাদিগের  
ফল ভূখণ্ডে প্রদান উচিত। যুক্তিও  
তাহাদিগের সপেক্ষতা কবিতোছে। তাহা-  
দিগের সন্তিত বন্দোবস্ত হইলে তাহারা  
শাণপণে আপন আপন ভূখণ্ডকে উর্বর  
করয়া তুলবে সন্দেহ নাই।

বঙ্গদেশের বর্তমান চিরস্থায়ী বন্দো-  
বস্ত প্রণালী যে কারণে ভ্রমঃ ও প্রেবো-  
বোধে লাভ করণওরালিস ও তদানীন্তন  
ভিরেকের সত্তর একান্ত অনুমোদিত হয়,  
তাহা উল্লিখিত হইতেছে। তাহারা তৎ-  
কালে এদেশে গরনবাগত, সুতরাং এদেশের  
সমুদায় বিষয় সমাক রূপে অবগত ছিলে-  
ন না। তাহারা দেখিলেন তারতবর্ষে  
মোগল সম্রাটদিগের সময়ে যে কদম্ব

প্রণালীতে রাজা নির্ধারিত-  
হইত, তাহার পরিবর্তন  
করা নিতান্ত আবশ্যক  
ন্যায় তৎকালে নির্ধার  
রাজস্ব সংগ্রহের তার  
কিন্তু ভূমির উপ-  
কার নির্দিষ্ট থা ছিল  
ভূমির উৎপাদে তৃতীয়াংশ  
কোন স্থানে অর্ধ ন রাজস্ব  
ছিল। ভূমির কৃষক  
রাজ্যের আর বণীক  
আর নির্দিষ্ট হইত  
শাসন কার্য হইত  
নহে। সুতরাং রাজ্যের  
তাহার নির্ণয় ক ইংরাজ  
গের প্রধান সভা হইয়া  
হারা এই বৃহৎ পক্ষে  
মীদার ও কৃষক  
মূল অনুসন্ধান করিয়া  
রাজস্ব সম্বন্ধে পরিবর্তিত  
বোধ করিলেন। তাহারা  
ক্রে বর্তমান ভূমি ও রাজস্ব  
সকল দেখিয়া সিতেছে  
লেন তারতবর্ষে যে কপ  
চিরস্থান সংস্কারপ্রার্থী  
মনে হওয়াও মৈসর্গি  
হউক, তাহা ইচ্ছাঃ  
পরিশেষে দেখিলে মো  
রাজস্ব সংগ্রহে  
গের ভূখণ্ডের দ্বারা



করমেণির অনেক সংখ্যা প্রকাশে  
কাধিকার প্রণালী আছে। সেই সকল  
কেশের মধ্যে পাঁচটিমুঠ সবিসেষ সম

মালী। এইরূপে হাইলিট ইংলণ্ডের অনু-  
মানিত বিবরণিত অন্য কিছুই অনুসরণ  
করেন করেন না, তিনিও এই ২০  
শতাব্দীর প্রণালীর প্রণয়ন করিতে ক্রটি  
করেন নাই। তিনি বলেন এই দেশের  
কৃষকেরা অন্যান্য দেশের কৃষকদিগের  
আগে ভূসম্পত্তি বিক্রীত করে, তাহারা যে  
ভূমি কর্ষণ করে, তাহা তাহাদিগের সম্পত্তি  
ই; এই নিমিত্তই তাহারা সমধিক সৌভাগ্য  
সম্পন্ন হইয়াছে।

কৃষকদিগের প্রণালীর উপযোগিতা বেল-  
জিয়াম দেশে দেখা যায়, একপ  
অন্য দেশে অল্প দূরত্ব। ইউ-  
রোপ খণ্ডের সমুদ্রের দেশ অপেক্ষা এই  
দেশের ভূমি অনুর্বর, কিন্তু এ দেশের কৃষ-  
কগণ উর্বর ভূমি চাহে না। যত কদম্ব  
ভূমি হউক না কেন, এক গ্রাম সাহায্যে  
তাহারা তাহাকে শস্যশালিনী করিয়া তুল-  
েন। কাল সহকারে তাহাদিগের নিকট  
ভূমির অপকর্ষ বিলুপ্ত হইয়া যায়। তত্বে  
কৃষকেরা অতিশয় মিতব্যয়ী, তাহারা ক্রমে  
ক্রমে অর্থ সংগ্রহ করিয়া সুযোগ পাইলেই  
ভূমি ক্রয় করে। ভূমি বিক্রয়ের নাম শু-  
নবামাত্র তাহারা অতিমাত্র ব্যয় করিয়া  
দেয়। এইরূপে প্রতিযোগিতা দ্বারা এই  
দেশের ভূমির মূল্য এত বৃদ্ধি হইয়াছে  
যে কেহ তাহা কিনিলে তাই টাকা লাভ  
করিত। ইংলিস সাগরস্থ দ্বীপ সমূহেও এই  
রূপ কৃষি পদ্ধতি প্রচলিত আছে। এই  
দ্বীপ সমূহে উইলিয়াম থরনটন বলিয়া  
একজন গবেষকজি তাঁহাকে যত শ্রম বিক্রী  
করেন, তত সমুদ্র ইংলণ্ডে হয় না।  
তিনি বলেন, যে এই দ্বীপ দ্বীপবাসিরা  
কৃষি সুখী, একপ সুখী লোক আন-  
ন্দ লাভ করে দেখি নাই। সব অর্থ হেতু  
কিনায়েত, পণ্ডিতেরা যে দিকে নেতপাত  
করেন, কৃষকদিগের মূল সম্বন্ধেই  
কিছু হইবেক।

উপরে বর্ণিত প্রদর্শিত হইল তাহারা

একদিক দিকে হইতেছে, কৃষকেরা ভূমি  
লাভ করিলে কেবল যে ভূমির উর্বরতা  
সম্পাদনে যত্নবান হয় একপ নহে তাহারা  
ভূমির স্বামি লাভে একান্ত ব্যগ্র। আমা-  
দিগের দেশের কৃষকেরা এক বে অল্প  
বলিয়া এসিদ্ধ, ইহাদিগেরও যে ভূমিতে  
নিজ স্বয়ং আত্ম তত্ত্ব করিয়া দায়িত্ব  
ইহাদিগের তত্ত্ব আলস্য হইয়া উঠে  
না। এতদ্বিধ, ইহারা ভূমির স্বামি লাভ  
বিষয়ে একপ ব্যগ্র যে ভূমি ক্রয়ের সুযোগ  
পাইয়া উৎসাহিত হইলে ইহারা আপনাদিগের  
আর্থনৈতিক নিত্য ব্যয় বন্ধ করিয়াও তাহা  
করিত। "অতএব ইহাদিগের সহিত যে  
একটি চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত হয় তাহা একা-  
ন্ত প্রার্থনীয় মনে হয় নাই। তাহা করিলে  
এ দেশের সবিশেষ মঙ্গল হইবার সম্পূর্ণ  
সম্ভাবনা আছে। তবে যদি বাহ্যিক দেশের  
ব্যয় মধ্যস্থলে জমীদার বলিয়া এক জীবী  
রাখা হয়, তাহা হইলে আমাদিগের তত্ত্ব  
আপত্তি নাই। কারণ পদার্থমণ্ডলের নিত্য  
মুত্তর কর সংগ্রহক নিয়োজিত করা অ-  
পেক্ষা চিরকালের মত একবিধ কর সং-  
গ্রহক থাকিলে প্রকারে প্রতি তাহাদিগের  
কৃষিক্রমে হইয়া যাবার সম্ভাবনা থাকে।

২৭৩

১৮৬১-৬২ অব্যয় শিক্ষা সংক্রান্ত  
রিপোর্ট।

১৮৬১-৬২ অব্যয় শিক্ষা সংক্রান্ত  
রিপোর্ট প্রকাশিত হইয়াছে। ইহা পাঠ  
করিয়া আমরা বাস্তবিকপন না হউক অপেক্ষা  
কাকূত অধিকতর সন্তোষ লাভ করিলাম।  
প্রতি বৎসর আমাদিগের দেশের বিদ্যা-  
লয় ও ছাত্রের সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে।

১৮৬১-৬২ অব্যয় বৎসরে বিদ্যা  
শিক্ষার জন্য সমুদায় ১১০১৪৬৬ টাকা  
ব্যয় হয়। বাহ্যিকদিগের বেতন ও দান  
প্রভৃতি হইতে লক্ষ ২২০,৬৮৮ টাকা  
তাহার অন্তর্নিবেশিত আছে, তাহা বাদ  
দিলে ৮,৮০,৭৭৮ টাকা মাত্র সাধারণ রা-

জনা হইতে পারে হইয়াছে।  
মিঃ এই ব্যয়ের তালিকা  
হইতেছে।  
বেতন  
পুরস্কার প্রভৃতি  
সংস্কার প্রভৃতি  
কাগজ প্রভৃতি বাজে ব্যয়  
আনুকূল্য

মোট টাকা

পূর্ব বৎসরে ৮২৬ টি  
৫০,৭১৪ জন ছাত্র সংখ্যা ছিল।  
বৎসর ১৮৬৫ টি বিদ্যালয় ৫,৫৭২  
ছাত্র হইয়াছে। ইহার মধ্যে  
যে অজিত বিদ্যালয়ে বিদ্যা  
নাই। ডিরেক্টর আটকিলান  
ন এই সকল বিদ্যালয়ের  
পাঠাইতে হইল নহেন। ২৭২

সমুদায় বৎসরে ছাত্র  
কর রক্ষা, আটকিলান সাহেব  
ইহার মধ্যে অল্প ৪০ লক্ষ নি-  
বালক শাক্ষাৎ চিহ্নিত। কিন্তু এ  
শিক্ষা প্রাপ্ত হইতেছে না।  
এই শোচনীয় কলম-বর্নন করা  
কাহার কাছে এই মোহ মিত্তি  
একবিংশতের উপায় কি। বৎস  
১৫ কোটি টাকা আদায় হয়,  
যে ৮,৮০,৭৭৮ টাকা মাত্র  
জন্য দেওয়া হইতেছে। অন্য  
জাতিবৈব বিবন্ধন অনেক মত  
বটে কিন্তু সমুদায় ভারতবর্ষ  
হইয়া শিক্ষা কার্যে অধিকতর  
জন্য চিন্তা করিতেছেন।  
এই টাকা সমুদায় ভারতবর্ষের  
কিছু উপকার হয়। কিন্তু একপ  
২১ লক্ষ মাত্র দেওয়া হইতেছে।  
এই পণ্ডিতেরা এক এক বিদ্যা  
হইতেছে, যত দিন কৃষক ও  
সম্প্রদায়ের বিদ্যা শিক্ষা না  
দিলে দেশের সম্পূর্ণ মঙ্গল



তাঁহাই জমাই আমরা সর্বদা গবর্ণমেন্টে  
কিন্তু জমায় পরিমাণে সর্বত্র আনুকূল্য  
এবং বিবরণে উৎসাহনা করিয়া থাকি।  
বটোক তরুণ তরুণাজির ন্যায় সাহায্য  
বকেবদ্যালয় ও মধ্যে মধ্যে গবর্ণমেন্টে  
টিং একটি উচ্চশিক্ষার বিদ্যালয় থাকা  
শু আবশ্যিক। গবর্ণমেন্টের বিদ্যা  
গায়ে সাধারণ সমাজে হস্তক্ষেপ পরিচালনা  
গাছিত ও উপস্থিত হয় নাই। তাহা  
উপস্থিত হয়, এই আমাদিগের প্রাণ  
ল কিন্তু বাছিয়া পরিমাণে সাহায্য দান  
নাই অবলম্বন না করিলে সে অতীত  
হইবার সম্ভাবনা নাই।

৭<sup>ম</sup> মধ্যে বারাসত ব্যতিরিক্ত  
এ গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের উন্নয়ন  
হইল। সমুদায় বঙ্গদেশের  
গবর্ণমেন্ট ও বারাসতেই অত্যন্ত  
হয়। এই বিভাগে আনুকূল্য  
ও তাজের সংখ্যা অধিক, কিন্তু  
ইবার পর অবধি বারাসতের  
ঘটিয়াছে। অন্য অন্য জেলারও  
উন্নতি দৃষ্টি গোচর হইল।  
৮ প্রাপ্ত বয়সের বিদ্যালয়ের  
প্রবেশিকা পরীক্ষায় কৃতকাৰী  
হইল। আমাদিগের অনঙ্গ আ  
বিষয় আমাদিগের বিষয় এই যে  
উন্নতি শিক্ষার কিছু মাত্র  
নাই বলিলে অত্যাধিক হয় না।  
সম্প্রতি কয়েকটি বিদ্যালয় হই  
।

মেন্টের। যে যে রিপোর্ট করি  
তাহা আমরা মার্টিন সাহেবের  
দেখিয়া অধিকতর সন্তোষ লাভ  
। বিদ্যা শিক্ষার যে সমস্ত প্রতি  
ও তাহা হইতে উদ্ভূত হইবার যে  
উপায় আছে, তিনি স্মরণ করিয়া  
উল্লেখ করিয়াছেন। এক বিষয়ে  
তাঁহার সহিত আমাদিগের মতের  
হইতেছে না। আমরা একটা নিমি

শাহিনাজ ডেপুটি ইনস্পেক্টরের সংখ্যা ক  
মাইয়া দিয়া সেই টাকা দ্বারা শিক্ষাদানের  
উপায় বৃদ্ধি করিলে অধিক উপকার দর্শে।  
তিনি তদন্তের রিপোর্ট মধ্যে লিখিয়াছেন  
“পূর্বকালে পরিদর্শনের জন্য অধিকতর  
ডেপুটি ইনস্পেক্টর নিয়োগ আবশ্যিক,  
অথবা যদি স্বচক্ষে উক্ত বিভাগের অবস্থা  
দর্শন করিতাম, তাহা হইলে ডেপুটি ইন  
স্পেক্টরের সংখ্যা কমাইব ও প্রস্তাব না  
করি। তাহার বৃদ্ধি করিবারই প্রস্তাব ক  
রিতাম।” যে স্থলে ডেপুটি ইনস্পেক্টর  
সংখ্যা বৃদ্ধি করা আবশ্যিক, তাহার বৃদ্ধি  
না করা আমাদিগের অতিমত নহে। আ  
মাদিগের সেবাকোষ দুটি তাৎপৰ্য্য আছে।  
এক, ডেপুটি ইনস্পেক্টরদিগের আনন্দ  
যথোচিত রূপে কাজ করেন না। দ্বিতীয়,  
সকল স্থলে উপযুক্ত শিক্ষক নিয়োজিত  
না থাকাত তত্ত্বাবধান ক্রিয়া সমাজ ফলা  
পথাবিনী হইতেছে না। কিন্তু যদি ভাল শি  
ক্ষক ও কাৰ্য্যক্ষম অনঙ্গ ইনস্পেক্টর ও  
ডেপুটি ইনস্পেক্টর রাখা হয়, তাহা হইলে  
কি অঙ্গসংখ্যা মোকের তত্ত্বাবধান অ  
ধিক পরিমাণে ফলোৎপাদক হয় না। যে  
শিক্ষকে পদার্থ নাষ্ট, কেবল এক তত্ত্বাব  
ধান দ্বারা কি তাহা হইতে অধিকতর ফল  
লাভ প্রত্যাশা করা যাইতে পারে? পক্ষ  
স্তরে যে শিক্ষকে পদার্থ আছে, তাহার  
সহিত অঙ্গ তত্ত্বাবধান যোগ হইলেই  
তাহা শুদ্ধ শমীৰ্ণক অণুমাত্র অগ্নি সং  
যোগের ন্যায় অধিকতর কাৰ্য্যকারী হয়।  
পরিণামে আমরা স্মরণ করিয়া কহিতে  
ছি, আমাদিগের বাক্যের শূন্য তাৎপৰ্য্য  
এই, অনঙ্গ ও অনঙ্গ ইনস্পেক্টরের  
সংখ্যা কমাইয়া যদি সেই টাকা কার্য্যক্ষম  
ও উপযুক্ত শিক্ষক নিয়োগ বিষয়ে ব্যয়িত  
হয়, সমধিক উপকার দর্শে সন্দেহ নাই।  
ভাল শিক্ষক রাখিতে হইলে অধিক ব্যয়  
আবশ্যিক হয়। পর্যাপ্ত পুরস্কার লাভ না  
হইলে ভাল লোকের গুরুতর ক্ষয় হইবে  
এবং হইবে কেন?

মার্টিন সাহেবের ন্যায় উন্নতি সাধনের  
রিপোর্ট ও আমাদিগের আশঙ্ক্য কর হই  
ছে। আমরা যেহা ও আমাদিগের ইনস্পেক্ট  
রের রিপোর্ট দেখিয়া সন্তুষ্ট হইলাম না  
কিন্তু আমরা তাঁহাদিগের সম্পূর্ণ দোষ নিবে  
হিনা। তত্বে সমাজ কাজে উৎসাহিত  
হয় নাই, তত্বে লোকেরা কুসংস্কার জাল  
অঙ্কন হইতে আছে। সুতরাং তত্বে ইনস্পেক্ট  
রদিগের মার্টিন ও উদ্ভেদ সাহেবের  
ন্যায় কৃতকাৰ্য্য হওয়া সম্ভব নহে।

রিপোর্টের বিষয়ে আমাদিগের  
একটি বক্তব্য আছে, ত্রিমা  
তীয় ব্যক্তি বিশেষ প্রতিষ্ঠিত ও গুরুত্ব  
শাসনদিগের পাঠশালায় সবিশেষ বৃদ্ধি  
রিপোর্ট মধ্যে একাধিত হয়। আমরা  
স্বদেশীয়দিগকে অনুপ্রাণিত করিতেছি য  
হারা গবর্ণমেন্টে সাহায্য না লইতেছেন  
তাঁহারাও যেন ডিরেক্টরের নিকটে আপ  
দিগের বিদ্যালয়ের বৃদ্ধি প্রেরণ করেন  
এবং ডিরেক্টর ও যত্নবান হইয়া তা  
আনা হইয়া লন। ইহা তাৎকালিক সমাজে  
মান্য সক মানচিত্র। ইহাকে সম্পূর্ণ ক  
অতিশয় আবশ্যিক।

বঙ্গ সমাজের কলিকাতার  
শোভা।

কবিগণ বঙ্গকে প্রতিরমণী  
নলিনী বর্ণন করিয়াছেন। কবি বর্ণিত  
লিখাই আমরা “রমণী” বিশেষণ দা  
ইহার গুণ গৌরব বৃদ্ধি করিতেছি না,  
কিন্তু ইহার গৌরবতা গুণ আছে। শী  
কালে জগৎ গৌরব জালে আচ্ছন্ন  
ইয়া থাকে। কতিপয় উদ্ভিদ তিন্ন তর  
তাদি সমুদায়ই প্রায় শীত প্রভাবে  
তা হীন হয়; জীব জন্ত সকলের ক্ষু  
ধাকে না; গগন প্রাণ নিরত কাল তুষা  
হৃত হুঁট হয়; জল ও চন্দ্রনা শীতত  
তীত হইয়াই যেমত জল ও মলিন ত  
ধারণ করে। কিন্তু বঙ্গ সমাজ হই

কলকাতা হতে যুক্ত হইয়া  
; তৎকালীন মনোহর কল  
; তাঁর অঙ্গ সর্বত্র উৎসাহ পূর্ণ  
হইয়া উঠে ; গগনতল নির্মল  
কলকাতা দীপ্তিমান হইল। যে কালে  
গগনে ও গগনের এত সৌন্দর্য  
উৎসাহ হইল, তৎকালে কে রক্ষণীয় না  
বেস ?

এই সময়ের কালে পল্লীপ্রাঙ্গণের কি  
মহিমা উজ্জ্বল হইল ! চকুদিকে মনোহর প  
ল্লী প্রাঙ্গণ না গিয়া পোতা মনোহর পল্লীপ্রাঙ্গণ  
নির্ভরতা : এটি উৎসাহের কণ্ঠস্বর ; নানা  
ধাতীর কুমুদার স্নেহ মালা বিবর অমো  
ঘিত হইল ; কোকিলের কাকলীশব্দে জীবন  
হরণের পর নাই এতিন্দ্রিয় করে ; সুশী  
তল বীজের কুচ স্নেহে বৃষ্টি প্রায় এত  
বোধিত হইল : আমরা যখন এই সকল সুখ  
অনুভব করি, কলকাতার মহিমা কতই  
আমাদিগের হৃদয়ে উদ্ভিত হইয়া অনির্ঘট  
নীত মনো উপস্থিত করিয়া দেয়। এতি  
রূপে, এতি লভ্য ও এতি কীর্বে সেই  
অধিকারের রচনা কৌশল, তাঁহার করুণা,  
ও তাঁহার মহিমার পরিচয় পাইয়া চিত্ত  
মানসমাগণের নিবৃত্ত হইয়া নিঃসঙ্গ হইয়া  
পড়ে। উৎকালে আমাদিগের বোধ হই  
ত থাকে আমরা বেন অন্য এক অদ্ভুত  
প্রিয়লোকে প্রবর্তিত হইয়াছি ; আমরা বেন  
পূর্ববিধ জীবন প্রাপ্ত হইয়াছি ; আমরা  
বন আর এক অধিপতির অধিকার উপ  
—

কিন্তু কলিকাতা এ সময়ে বিপন্নিত  
ধারণ করিয়াছে। জীবন আর ঘরা ও  
রংকালের ন্যায় সৌখ ও অটু লিকার  
বত, পীত, নীল ও মোড়িতার প্রাঙ্গ  
প্রাঙ্গণের হা নী। মনোহর পল্লী যত  
দান হইতেছে, ততই প্রাঙ্গণ প্রাঙ্গ  
কলের ইষ্টকরে কুমুদারের নী  
তীয়মান হইল। নগরকে কেবল এক  
বিত্ত বর্ণ করিয়া তুলিতেছে। বিমি

একবার ২৫ লিটেলের একটি "স্বাভাবিক  
অবস্থা" কাল জন্ম করেন, তাঁহাকে চি  
নিয়া লওয়া যায় হইল। এম বাসকেই  
উৎকর্ষে তদবধি দেখিলে তরে বিএ  
হইল। জননীকে ফেড় অজ্ঞার করে সন্দেহ  
মাই। কলিকাতার বসন্তকালে নগরপ্রাঙ্গণের  
প্রীতিলাভ্য ত এইকথা গেল, অন্য  
অন্য ইষ্টকরেও তুলি হইল না এমন নয়,  
রাজ্য বাহির হইলে আরই দীর্ঘতম ও স  
কিত মনোহর হইল গর্ভে বেল নানা  
বিবর নব মনোহরও বর্ণিত করি। তুল  
কলিকাতার কোকিলে অধিকার লাভের, কা  
ক তাহার পদ প্রেরণ করিয়া মিত্রের সুখ  
র বরে গান করিয়া অবশেষে আনন্দ বিধান  
করিয়া থাকে। উৎ ও বিহীন গান দর্শন ও  
মনোহরকে সমস্তবাহারে লইয়া তুলি  
লিটেলের বেরতর সুখ উপস্থাপিত করে।  
বসন্তকালে পল্লী প্রাঙ্গণে গমন করিলে অ  
রাম ও উদ্যানাদি দর্শন করিয়া যেকোন  
সেই অবিচারে অলৌকিক মহিমার প  
রিচয় পাওয়া যায়, কলিকাতারও সেইরূপ  
রাজ্য ও মনোহর ও তুলি দর্শন করিলে মি  
উনিসিপাল কমিশনারিগের মহিমা অপর  
চিত থাকে না। এতদ্বারা, কমিশনারিগের  
মহিমার পরিচয় পাইবার আরো অনেক  
অসাধারণ প্রমাণ আছে। এই নগরের তি  
তরে একপ অনেক স্থান আছে তথায়  
অপেক্ষাপরিহারকদিগের মাসের মধ্যেও  
তাই এক ধারণা ধুলি পড়ে না। সেই সেই  
স্থানের পুষ্টিগন্ধ কলকাতা রাশি উন্নত মি  
রা হইল। অসাধারণ রূপে কমিশনারিগের  
পরিচয় দিতেছে।

পরিশোধে কমিশনারিগের আর  
একটি মাহাত্ম্য বর্ণন না কেঁদয়া এ প্রকারে  
র উপসংহার করা বিধেয় হইত। না।  
একত কলিকাতার লোকসংখ্যানরূপ স  
ফল প্রাপ্তকর বিশুদ্ধ জল পাওয়া যায়।  
যে বহুকটি দীর্ঘিকা আছে, তাহাও আ  
গত প্রায় চারশ নির্দোষ প্রশংসনীয়

এই বসন্তকালে কলকাতা  
পূর্বে লোকসংখ্যা বর্ণনা  
র কলকাতার কলকাতা  
কলকাতার কলকাতা  
উৎকর্ষে তদবধি দেখিলে তরে বিএ  
হইল। জননীকে ফেড় অজ্ঞার করে সন্দেহ  
মাই। কলিকাতার বসন্তকালে নগরপ্রাঙ্গণের  
প্রীতিলাভ্য ত এইকথা গেল, অন্য  
অন্য ইষ্টকরেও তুলি হইল না এমন নয়,  
রাজ্য বাহির হইলে আরই দীর্ঘতম ও স  
কিত মনোহর হইল গর্ভে বেল নানা  
বিবর নব মনোহরও বর্ণিত করি। তুল  
কলিকাতার কোকিলে অধিকার লাভের, কা  
ক তাহার পদ প্রেরণ করিয়া মিত্রের সুখ  
র বরে গান করিয়া অবশেষে আনন্দ বিধান  
করিয়া থাকে। উৎ ও বিহীন গান দর্শন ও  
মনোহরকে সমস্তবাহারে লইয়া তুলি  
লিটেলের বেরতর সুখ উপস্থাপিত করে।  
বসন্তকালে পল্লী প্রাঙ্গণে গমন করিলে অ  
রাম ও উদ্যানাদি দর্শন করিয়া যেকোন  
সেই অবিচারে অলৌকিক মহিমার প  
রিচয় পাওয়া যায়, কলিকাতারও সেইরূপ  
রাজ্য ও মনোহর ও তুলি দর্শন করিলে মি  
উনিসিপাল কমিশনারিগের মহিমা অপর  
চিত থাকে না। এতদ্বারা, কমিশনারিগের  
মহিমার পরিচয় পাইবার আরো অনেক  
অসাধারণ প্রমাণ আছে। এই নগরের তি  
তরে একপ অনেক স্থান আছে তথায়  
অপেক্ষাপরিহারকদিগের মাসের মধ্যেও  
তাই এক ধারণা ধুলি পড়ে না। সেই সেই  
স্থানের পুষ্টিগন্ধ কলকাতা রাশি উন্নত মি  
রা হইল। অসাধারণ রূপে কমিশনারিগের  
পরিচয় দিতেছে।

উৎকর্ষে তদবধি দেখিলে তরে বিএ  
হইল। জননীকে ফেড় অজ্ঞার করে সন্দেহ  
মাই। কলিকাতার বসন্তকালে নগরপ্রাঙ্গণের  
প্রীতিলাভ্য ত এইকথা গেল, অন্য  
অন্য ইষ্টকরেও তুলি হইল না এমন নয়,  
রাজ্য বাহির হইলে আরই দীর্ঘতম ও স  
কিত মনোহর হইল গর্ভে বেল নানা  
বিবর নব মনোহরও বর্ণিত করি। তুল  
কলিকাতার কোকিলে অধিকার লাভের, কা  
ক তাহার পদ প্রেরণ করিয়া মিত্রের সুখ  
র বরে গান করিয়া অবশেষে আনন্দ বিধান  
করিয়া থাকে। উৎ ও বিহীন গান দর্শন ও  
মনোহরকে সমস্তবাহারে লইয়া তুলি  
লিটেলের বেরতর সুখ উপস্থাপিত করে।  
বসন্তকালে পল্লী প্রাঙ্গণে গমন করিলে অ  
রাম ও উদ্যানাদি দর্শন করিয়া যেকোন  
সেই অবিচারে অলৌকিক মহিমার প  
রিচয় পাওয়া যায়, কলিকাতারও সেইরূপ  
রাজ্য ও মনোহর ও তুলি দর্শন করিলে মি  
উনিসিপাল কমিশনারিগের মহিমা অপর  
চিত থাকে না। এতদ্বারা, কমিশনারিগের  
মহিমার পরিচয় পাইবার আরো অনেক  
অসাধারণ প্রমাণ আছে। এই নগরের তি  
তরে একপ অনেক স্থান আছে তথায়  
অপেক্ষাপরিহারকদিগের মাসের মধ্যেও  
তাই এক ধারণা ধুলি পড়ে না। সেই সেই  
স্থানের পুষ্টিগন্ধ কলকাতা রাশি উন্নত মি  
রা হইল। অসাধারণ রূপে কমিশনারিগের  
পরিচয় দিতেছে।



সকল উৎসাহ করিয়া এ কার্যে  
যে পরীক্ষাধীরা হাজিরিকে উপাধি  
এবং প্রদান করা এবং আরও করিলেন  
এম এ, এম এ. বি এল, বিএ, উপা  
ধীরা-পড়ার মধ্যে তাঁহার নিকটে উ  
চিত হইতে লাগিলেন। কালেজের অধ্য  
ক্ষ আপনাপন বিশ্ববিদ্যালয়ের হাজিরি  
কালপত্রের বিয়া দিলেন। সভাপতি  
উপাধি প্রদান কালে এটি ব্যক্তকে ব  
লিলেন “খানি বিশ্ববিদ্যালয়ের এইস  
কালপত্র, সেই সময় নুসারে আনি তো  
ক উপাধি প্রদান করিলাম এবং তোমা  
র হস্তেছি যে তুমি এই উপা  
ধি পাইবে। সকল কার্য সম  
পূর্ণ।” উপাধি প্রদান সমাপ্ত  
হইলে সভাপতি সকলকে সম্বোধন  
করিলেন।

আমাদের কি আশঙ্কায় দিন,  
যা আমাদের কাছে হইয়াছে, এবং সর  
ইল। আমাদের আশা প্রথম এক ডি  
গ্রি এম এ, উপাধি প্রদান করিলাম। এ  
র তিনি ইংলণ্ডে গিয়া প্রথমে এক  
খানি লিখিত করেন, তিনি আমাদের  
হিত অঙ্গ উপবেশন করিয়াছেন।  
এই আশঙ্কায় সমস্তও কয়েক বা  
খানি পত্র হইয়া আমাদের পত্র  
কর উদয় হইতেছে। যে মহাত্মা  
ঢালয়ের সৃষ্টি অর্থ গুরুত্বপূর্ণ প  
ত্রাঙ্গের কাব্য সম্পন্ন করিয়া  
গিয়াছেন, সেই উদয়পত্রের সার্থ  
ক আমাদের পরিচালনা করিয়া  
ছিলেন। তিনি ইংলণ্ডে গমন কালে  
রা গিয়াছিলেন নানা ছুটিয়া বসন্ত  
বিদ্যালয়ের কাব্য তাদৃক মনোযোগ  
হইতে পারেন নাই কিন্তু ইংলণ্ডে  
তিনি বিশ্ববিদ্যালয়ের কথা জুলি  
য়া রুমারসান রায় এবং কর্ণে  
উ নিখুঁত পত্রবৎসর লোকান্তর  
হইল।

কোনোইরূপে অত্যন্ত ক্ষতি হইয়াছেন  
সংগ্রহ নাই।

বিশ্ববিদ্যালয়ের নির্দিষ্ট গৃহ না থাকা  
তে সমস্ত সমস্ত বিশ্ববিদ্যালয়কে নানা  
প্রকার অসুবিধা ভোগ করিতে হয়।  
যেহেতু অত্রিক বিন আর্থ-আমা  
নিককে এ নিমিত্ত গবর্ণমেন্টের নিকটে যো  
জন করিতে হইবে না, খোজাই আমাদের  
প্রার্থনা পূর্ণ হইবে। কত কেবল গৃহ হই  
লেই হইবে না, মনোহর স্থানে গৃহটি স  
হাশিত করিতে হইবে এবং সমগ্র ভূম  
খ গৃহকে সুবিত্ত করিতে হইবে। পুস্তকা  
লয় না প্রকার পুস্তক ও হস্ত লিখিত  
রচনা প্রভৃতি সংগ্রহ করিতে হইবে। স্থা  
নে স্থানে উপাধি ধারিদের নাম অঙ্কি  
ত করিয়া রাখিতে হইবে। এই সকল হই  
লে বিশ্ববিদ্যালয় গৃহ বর্জন করিয়াই লো  
কের মন বিদ্যার প্রতি ধারমান হইবে।

বিশ্ববিদ্যালয়ে যে যে নিয়ম আছে  
তাহার অনেকগুলির সংশোধন আবশ্য  
ক। বিদ্যালয় সে বিষয়ে উদ্যোগী হইলেন।  
প্রথমতঃ যাহারা যেতীকাল রিয়া ইঞ্জিনি  
য়ারিং কালেজের প্রধানতম উপাধি লাভ  
র বাসনা করেন, বি এ উপাধি না লইয়া  
এ সকল উপাধি লইতে পারেন না কিন্তু  
বি এ উপাধি পাইয়া অতি অল্প লোকেই  
মেডিকেল কালেজ প্রভৃতিতে অধ্যয়ন  
করেন। যাহাতে বি এ না পাইয়া তাঁহা  
রা এই সকল উপাধির অধিকারী হইতে  
পারেন, তাদৃশ চেষ্টা করা হইতেছে।  
বিত্তীয়তা, তাহাতে যাহারা এম এ, পরী  
ক্ষা দিবার অতিলাভ করেন, তাঁহাদের  
পক্ষে এক্ষণে অত্যন্ত কঠিন নিয়ম আছে,  
সংস্কৃত ও ইংরাজি উভয় ভাষাতে সমাক  
রূপে পণ্ডিত অর্জন সাধাবণ ব্যাপার নয়,  
এই জন্য এই নিয়ম করিবার প্রস্তাব হই  
তেছে যে দেশীয় ভাষা শিক্ষা জুল হই  
তেই শেষ করিয়া আনিয়া কালেজে সং  
স্কৃত ভাষা প্রভৃতি আলোচনা করা হইবে।

আমরা বিশ্ববিদ্যালয়ের যে  
বেশিভেদে, তাহাতে আমরা  
ভরসা করিয়াছি যে অত্যন্ত  
ইহা প্রদান পদ লাভ করিবে  
ন পূর্বে যখন রামা রামমোহন র  
বেটিক মেট্রিক প্রভৃতি বিদ্যা  
প্রথম সুতপাত করেন, তখনকার  
একজন অবতার জুগা করিবে।  
কি এক অনির্ভরীয় আশঙ্কায় উদয়  
১৮৬১ খ্রিষ্টাব্দে বিশ্ববিদ্যালয় জন্ম গ্রহণ  
করিয়াছেন, ইহার মধ্যেই দুই হাজার  
অধিক ছাত্র এদেশিকা পরীক্ষার উত্ত  
হইয়াছেন, আর ৮৭ জন বি এ উপাধি  
লাভেছেন, ৫৭ জন বি এল হইয়াছেন, ৩ জন  
এম এ এবং এক জন এম ডি উপাধি পাই  
য়াছেন। ক্রমশই পরীক্ষাধীরা হাজার  
সংখ্যা বৃদ্ধি পাইতেছে। ইহার মধ্যে  
হিন্দুই অধিক এবং বঙ্গদেশ যাতীই অনেক  
ক। মুসলমানেরা এসকল উপাধি লাভে  
ক্ষমতান বহন এবং অন্য অন্য দেশ  
বাসী অধিক লোকও ইহার জন্য আগ্রহ  
হন নাই। কিন্তু অতীত হিন্দুরা যেন এক  
গ মনে করেন না যে ইউরোপীয়দিগের  
সহিত সমান উপাধি লাভ করিয়াই তাঁহা  
রা ইউরোপীয়দিগের সমকক্ষ হইলেন  
ইউরোপে কত কাল হইল বিশ্ববিদ্যা  
লয়ের সৃষ্টি হইয়াছে, কত কাল হইল  
ইউরোপীয়েরা বিশ্ববিদ্যালয়ের কল তোল  
করিতেছেন, এদেশের লোকের তাঁহা  
দিগের সমকক্ষ হইবার অনেক বি  
আছে। অতএব এক্ষণে এদেশের লো  
ক তাহাদিগের জুল্য ক্ষমতা লাভ করি  
বাসনা বৃদ্ধি ও ন্যায়ানুমানিক বলি  
প্রতীক্ষমান হইতেছে না।

প্রথমাবধিই জমিদারদিগের বি  
শিষ্টতা জন্ম গবর্ণমেন্ট সাক্ষর যন্ত্র  
আছেন, কিন্তু কোতের বিষয় এই, জ  
মিদারেরা অধ্যাপিত বিদ্যার রসাদ্রাবনে  
মর্ষ হইলেন না। এক জন জমিদার বি





এই ভাষা লিখি নাই।  
এই উপস্থিতি নাই।  
একটি অসুস্থতা বাহির  
কি হিল না, কতএব  
পুস্তক দেখিয়া কি হই  
ক কিঞ্চিৎ অতিবিশেষ  
সের সোমপ্রকাশ পাঠ  
র মেথার এই ভাষা  
সম হইবে। এখানে একটা  
উপস্থিত হইয়াছে, তৎ  
হইতেহে না। অথবা প্র  
ইবে? মিরর সম্পাদক বে  
কতন, তাহার উত্তর  
তাঁহার সে শুণী বিলকল  
ক, প্রেরণ করা উচিত। সে  
এখন এমনি একমত অব  
জ্ঞাপন করিয়া

ন এসময়ে মিরর সম্পাদকের  
ভ্রমত মরল তার প্রকাশ পা  
শব্দক পুস্তক লিখিয়াছিলেন,  
সম্পাদক পুস্তকে যজ্ঞোপবীত  
আই, কিন্তু উপস্থিত ব্যক্তির  
কি বিলা করিতে হইবে, তা  
কৌতুক করিয়া জিজ্ঞাসা করি  
ন, এ কত বয়সে ত্রাণেরা লিখিয়া  
আচার্যের নিকটে বাইবেন এবং কত  
বা ত্রাণেরা করিবেন? সম্পাদক মর  
কৌতুক বুঝিতে পারেন নাই।  
বেদের কথা অতিশয় ক্রম হইয়া  
কিছু আশ্রয় ত্রাণসময়ে কই বেদের  
কিছু দেখিতে পাই না। তাহা হইলে  
যেহেতু ত্রাণের গিত শ্রাব কালে  
গত। কতকগুলি এই বৈদিকমত পাঠ  
যেহেতু? সম্পাদক অত ক্রম হইলে  
বে? পুর্বাগত ব্যবস্থিততা চাই।  
আচার্যের প্রস্তাব বিতর্ক মতের অংশ  
বিতর্ক মতের আসন্নতা এই এসম  
মিরর কতকগুলি প্রস্তাব বাক্য প্রেরণ  
হেন, তাহার উত্তর মনি যোগ্য নহে।  
পুস্তকের মতে মিররের কোণ উপস্থি  
অতিবিশেষ করিয়াছে। তাহার প্রস্তাবের

কতকগুলি মতের আশ্রয় প্রাপ্তি  
কিছু নহে। জাতকর্ম্মদিহারা অগতের কি  
উপকার লাভ নহে। আছে, যদি এই ক  
খাতি তিনি সাধারণতঃ বুঝাইয়া দিবার চেষ্টা  
করেন, তাহা হইলেই আমরা অগ্রহণকারী  
প্রাণের প্রাতি যে মোহাভ্রাণ করিয়া উ  
তাঁহা সমর্থন হইবে। বাঁধারা পুস্তক  
অগ্রহণের নিমিত্ত কতি ও কই সহ্য করেন,  
তাঁহা মিরর কি উপস্থিত নিমিত্ত অতি সহ্য  
করা হয়? অতিক্রমের অগ্রহণই কি বর্ধ  
মত? অনর্থক অগ্রহণই কি উপস্থিত প্র  
পদার্থ? মিরর অগ্রহণই কি অগতের ক  
লাপনিধান? উপস্থিত অগ্রহণের নিমিত্তই  
কি ত্রাণেরা ত্রাণের আশ্রয় গ্রহণ করি  
রাহেন? তাহা অপেক্ষা কি উত্তর অগ্রহণ  
নাহ? আম নিগের চেপেব লোকের অগ্রহণ  
তিনিহে আশ্রয় হইয়া রাহিয়াছেন, তাহা  
গের অনেকে কষ্টব্যাকর্ষণ যোগে অগ্রহণ  
হইয়া পুস্তক অগ্রহণ জীবনধারণ করি  
তেছেন, তাহা মিরর অনেকের পারিত্রিক ও  
মানসিক উত্তরবিধ ত্রাণসত দুই হইতেছে যে  
অগ্রহণ দ্বারা তাঁহা মিরর অবস্থা সংশো  
ধিত হইয়া উন্নতি লাভ হয়, তাহা কি ত্রাণ  
মিরর আশ্রয় নহে? অতিক্রমের  
অগ্রহণের অগ্রহণে মত হইয়া দেউ দেউ  
মত অগ্রহণ বিস্তৃত হওয়া কি ত্রাণের  
উচিত? ত্রাণেরা কি মধ্যে মধ্যে আশ্রয়  
ত্রাণের অবস্থা প্রাপ্ত করিয়া থাকেন?  
তাঁহা স্মৃতিপন প্রাপ্ত হইলে কি আর অ  
লোক অগ্রহণ মইয়া আশ্রয়িত থাকিতে  
ইহা হয়? সেই হতভাগ্য ত্রাণের অবস্থা  
উন্নতি সম্পাদক কি দুঃখজনক আশ্রয়  
অপেক্ষা প্রশাস্ত অগ্রহণ নহে?

এই প্রস্তাবের উপস্থিতি কালে আমরা  
বিরর পুস্তক মিরর সম্পাদককে একটা প্র  
জিজ্ঞাসা করিতেছি, তিনি বেন অগ্রহণ ক  
রিয়া উত্তর দেন। মিরর সম্পাদক আশ্রয়  
গের নার ত্রাণের কালক্রমে অগ্রহণের এক  
মাত্র বর্ধ হইবে বলিয়া সত্যকরা করেন নহে  
হনাই। কিন্তু কতিপয় ত্রাণ বে অগ্রহণ  
অগ্রহণ প্রবর্তন চেষ্টা করিতেছেন তাহা কি  
ত্রাণের বিবর্তন হইয়া বাস্তবিক

হইবে না? অন্য অন্য আশ্রয় প্রাপ্তি  
কালে ত্রাণের অগ্রহণ অগ্রহণ প্রাপ্তি  
সমত হইবে কিনা তাহা কি বাস্তবিক  
অগ্রহণের মিরর মিরর আশ্রয়কে  
উত্তর প্রাপ্তি বলিয়া তৎকালে অগ্রহণ কর  
তে পারিবেন?

আগত ।

১২ চৈত্র ১২৬৩ ।

চৈত্র ।

কলিকাতার বহুভাষার, দীর্ঘাচার,  
মিরর প্রাপ্তি বেন মরল তার প্রকাশ  
বিশেষ নহে আছে। সেই কপ এই চৈত্র  
মধ্য মসপোনা পাখায়াই বাহুর বাহুর প্র  
তুটি ১৬৭ টি (মহা) ) মিরর নাম আছে।  
কলিকাতার বহুভাষার মনো বেন মরল  
আছে সেইকপ এখানেও একটি বেন মরল  
চক আছে। এই চকের মধ্যে প্রাপ্ত একটি  
কামান ইষ্টক দ্বারা গাঁথা আছে। এই মর  
কেন্দ্রী আশ্রয় চৌকিদারী বহির বি  
নাগে লোকানার সমত প্রাপ্ত ১২২৩৮ মর  
লোকের মন এবং মরল মিরর মইয়া  
প্রাপ্ত ১০০০ লোক মরল হইবেক। এখা  
নে মরল মরল মরল অগ্রহণ হইবেক।  
তাঁহা ও মরল মরল মিত্র কর নহে।  
তাঁহা অতি বেন মরল কতকগুলি মর  
মরল দ্বারা অগ্রহণের চৈত্র বহুর  
করিয়া থাকে। মরল মরল মিরর মরল  
তুই মরল মরল মরল। এমল মরল মরল  
অগ্রহণ মরল মরল, প্রাপ্ত অনেকটা মর  
মরল ও অগ্রহণের মিরর মরল মরল  
মরল। মরল মরল মরল মরল এক মর  
মরল আছে কি না মরল মরল।

এখানে মরল মরল মরল মরল মরল  
মরল, কিন্তু মিরর ও মরল মরল অগ্রহণ। মরল  
কাতার মরল প্রাপ্তি মরল মরল মরল মরল  
মরল মরল মরল, এখানে তাহার মরল  
মরল মরল মরল, প্রাপ্ত মরল মরল মরল  
অগ্রহণ হইয়া থাকে। মিরর মরল কলিকাতা  
প্রাপ্তি মরল মরল মরল মরল মরল  
মরল মরল মরল মরল মরল মরল  
মরল মরল মরল মরল মরল মরল  
মরল মরল মরল মরল মরল মরল

এক জন চাকী হইতে নিম্নোক্ত  
পানীয় বসন্তের অতিশয় প্রভাব  
আগন্তর সেকি জন কালে  
ত্রেয়া একটি বস্ত্র কাপড়  
এটা কেবল ছাত্রদের  
প্রকাশিত হইয়াছে, বোম্বাই  
ইউরোপীয় বনিক জাল  
করিয়া নিষ্কৃত করেন।  
প্রাচীন শিখ কোম্পানি  
একান্তে নিম্নিত হইবার  
হেন। এইসকল বিষয়  
পাঠে আগন্তর  
রও অনিষ্ট করিতেছেন।  
কিছুত, অর্থাৎ  
অর্থাৎ  
আগন্তর  
ন।



১১টি সাহেব গবর্ণমেন্টের আজ্ঞায়  
দুই নিবাসের নিবন্ধে লিখিয়াছেন  
পেচা পূর্ণিতে অধিকতর গ্রীষ্ম হ-  
ক উহাতে আশ্চর্য্য দেখ করিবেন,  
বাস্তবিক কথা ।

গেজেট বলেন জরপুত্রের বাজা বাণী  
লিকাভায় বিশেষ উৎসে আসিয়া-  
ইমিড ১১,০০০ টাকা ভাড়া দেন ।  
ম্পানির কেরানী ও ব্যক্তিগকেও  
কিঞ্চিৎ অর্থ পুঙ্খানুপুঙ্খ দিয়া চেন । এম-  
কানেজের কুতূবিন্দ্য ছাড়াও হোলি  
আমোদ করেন নাই, বরং অন্যক  
ইতে বিবর্ত করিবার চেষ্টা করিয়াছে  
কানীর ন্যায় কুসংস্কারবিশিষ্ট দ্বা-  
ধর হুৎকের হইতেওহু, আনানিগে  
বাৎসর্য্যে প্রাপ্ত হইবে ।  
হেন কেন ?

এক জন দিল্লী হইতে লিখি-  
তৃত্য লোকহিন্দে আসিবার অন্ত-  
র্গত এমপিন দিল্লী হইয়া রেইলওয়ে  
বিষয়ে সন্দেহ হইয়াছেন । তাঁহা-  
জে যমুনার নিকটস্থিগে টেসনের  
পিত্ত করিয়াছেন । গবর্ণর জেনেরেল  
চীন রাজধানীর উন্নতির জন্য আ-  
করিয়াছেন । কিন্তু এক মেম্বী উ-  
নগরটি এক কালে সমৃদ্ধি করি-  
ত ।

৮ টাইমস্ তৃত্য সরকারী দুইখা-  
লম করিয়াছেন । উহারা জানা  
আহাজ নীলকার খোপের নিকটে  
তৃত্য অধীকার ও অধিবাসির  
গেই প্রতি বিশেষ সম্বোধনক-  
ক গবর্ণমেন্ট তাঁহাদিগকে ধনা-  
করিয়াছেন । ৪৮ অশেচা তাহা-  
পুঙ্খানুপুঙ্খ দেওয়া উচিত ছিল ।

এবিমিত্ত বলায় সম্রাতি সব  
বিলিয়ান সেক্রেটারি বেলি সাহে-  
অন্তসারে মাস্তাজ গবর্ণমেন্ট ও  
সম্রাটকে ইষ্টাঙ্গ আইন, টে-  
৯ কোথাউয়ের সহিত ডাকের  
দু তাহাদিগের অতিপ্রায় প্রকা-

লিহান বলেন, যে, প্রাপ্তিতে অপরিমিত  
ইষ্টাঙ্গ আইন থাকে । ইষ্টাঙ্গ আইন সং-  
শোধন করা তাহান অতিশ্রুত । যখন হারি-  
টন সাহেব এবিষয়ে বিন কারন, তৎসঙ্গে  
বাজ. বিনকর রাও তাহার প্রতিবাদ করিয়া  
ছিলেন কিন্তু এতদ্বারা লিগা তাহার ক-  
বা স্বাধীনতার কল্যাণে দেখাইয়াছেন ।  
আদালতে কোন বিষায়নকল লইতে হইলে  
ফোট ফোট ইষ্টাঙ্গ জুয়া লইতে হয়  
কেন ? এমি কি অর্থ উপার্জন করিয়া মর-  
নে, ও চারলস্ আলেক জগুর না  
মর্কট্টই ব্যক্তি তাহাওঁর রেইলওয়ে কো-  
ম্পানির প্রযা অপহরণ করাত ইষ্টরোণী-  
বের চারি বৎসর পরিচালনা করিয়াস হউ-  
রাছে । কিন্তু কিরূপে আদালতের  
সত বৎসর তাঁহাদের বাস করিতে হইবে ।  
মত্তের এ প্রকার নিমিত্ত কেন ?

অত্যাধি বেলা ৭ ঘটিকার পর বাণকো-  
র্ড সাহেব আসিয়াটিক সোসাইটি বাটতে  
কুতূহ বিব্রক উপদেশ দিবেন । কয়েক দিব-  
সাবধি ইহা পরিচ হইবে । বাহারা তাহা জবাব  
করিতে চাহেন তাহাদিগকে দশ টাকা করিয়া  
কি দিতে হইবে । এট সকল উপদেশকরিগ  
কে উৎসাহ দেওয়া কণ্য ।

হিন্দুপেট্রিগট প্রবণ করিয়াছেন ১৮১৩ ।  
৩৮ বছরের ব্যয়ের হিসাব প্রকৃত না হইলে  
ভ্রম ও সাহেব উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে গমন করিতে  
পাখিনে না ।

জুভন কলেবর খারী মসজিদ পর আনানিগের  
হস্তগত হইয়াছে । তাহাদের বিষয় এই ই-  
ত একগে আর কোন অঙ্গীল বিষয় লি-  
খিত হইবে না । সম্পাদক তাহাকে সাহিত্য  
পত্র লিখেন কখনা করিয়াছেন । তাহা হউক  
ইহাও নাচজিতে ও আনানিগের অলুচি জন্মি-  
রাছে । সম্পাদক এট সঙ্গে নাচজিও পরিবর্ত  
করুন ।

৫ টি চৈত্র মঙ্গল ধর্ম ।  
হরকরার কাছাড়র মধ্যস্থতা বলেন । তত-  
চা চার কাণো নিয়ুক্ত জলির । লাক্ষ্যসাহেবের  
ইতিহাস বিপদাপন্ন ব্যক্তিদেবের সাহায্য প্র-  
ত্যেক ও আনানিগের দিয়া ২৫০ টাকা প্রদান  
করিয়াছে ।  
চাকারী-একান্তিক । বলেন, তৃত্য এক

গতি বস্তুকেও ভাল লাগিয়া থাকে ।  
হু, নিম্ন কে ওঁর কবিস আ'ব কোথা হইতে  
আসিল ১৮১৩ নিম্নের দর নাই ।

কিন্তু গবর্ণর একগে অনেক অর্থের আ-  
দান হইতেছে ।  
৩ ঘটি, ৫স, ৫ইতে ৪০০০০ টাক  
ব্রাজিল ৫ইতে ৫৩৭০০  
মেল ৫স, ৫ই, ৩ ১৪০০০  
৫ই, ৫স, ৫ই, ৩ ২০০০০  
নউউউউউউউউ ১২,০০০  
পোর্ট লায় ৫ইতে ৫০০০০

আলেক জাগুর হইতে ৭,৫০০ টাকার পু-  
আনানিগ হইয়াছে এবং ও'গটক'ওস চই-  
১৪০০০০ টাকার কল্যাণ ও আনানিগ হইয়াছে  
তত্বাধা কেরল ইংলও ব্যাকে ১২,৫০০০০ টাক  
র অর্থ বিক্রীত হইয়াছে ।

লাহোরি ক্রমিকেল বলেন, তাহাওঁর ব্য-  
দাপক মত, ও চিহ্নন ন মে ব অনবদ্য এ-  
বমার্টন স. ব পল্ল বের প্রধান ওম 'ডাবলিও  
র ওচ হইয়াছেন ।

বোম্ব ইমটতে 'বিবউ বলেন প্রধান সেনা-  
গতি বোম্ব'ওরে প্রাত/ কুত হউয়াছেন, ও'বাবা  
তে'হু আ'ব'ব' লী'প্রই পুন, গবম করিবেন ।

ইংলসম'ও হ.চম'ব'ও'হ' মহাদর্শ'ত  
বলেন তথাবাদ এক জন প্রাক্ত, গোপনে রা-  
সাহেবের পক্ষে ছিল বলিয়া হু'ত হইয়াছে ।

বাজালি সম্পাদক বলেন বাজালিও লেপট-  
নর্গ গব'ব' আ'জ' কর'র ছেন, ই. টি ট্রেব  
এইচ এল ডে'রর রাজা প্রতাপচন্দ্র সিং  
মহারাজ মতীও চ'র রাজ বাহাদুর লায় ব'ম  
নাব তাঁহুর কুনার হরের কু'র বা'হ'হ' ই'ব'ব'  
চন্দ্র বিদ্যাসাগর এবং সাধারন শিক্ষাক্ষে-  
তাইবেক'ও রে বিলিউ কবিসনবের, ও'গ'ও  
র তত্বাবধারক হইবেন ।

উত্তরপার আনো বলেন সব বাটল কি'র'র  
গাধী মে মালে (মুদ্রা) ম'ফ'র্ন'ব'ব'ব'ব'ব'ব'ব'  
ভিনায কর'র'ছেন ।

ই লিসন, ন বলেন এক জন কাছাড় মাস-  
মী মহারাজ মর অজবাহারকে লিখি'র  
মে 'উ ন হির'টে বিজ্ঞাপি প্রদান কিতো, ও'ম'ব'  
কে দেখিয়াছেন এবং তিনি মামা ও ক'ল'র'  
প'ব'ব'র গ'গ'র প'র বাহক ছিলেন এক-  
তিনি সেই ও'ল পথে ক'র'ই'র ক'ল'র'ছেন  
৮ই চৈত্র সুদবার ।

কিন্তু বলেন, জরপুত্রের মগারাজ মে  
উকাল কালেমে ১০০০ টাকা প্রদান করিব

তুহকদেবীর জুলতান তুজার  
প'তত জু'ব মিকর' এহান কটির  
নগরে এক কো'শনি-চইর' হইব ।  
জুল'খব ৫০ জনক তাঁরা । আশা  
কানী বাহাজুরেরা কট'রাউ' বিলস  
হইল আছেন ।



ଅଗଷ୍ଟ ୧୨ର ଦିବ୍ୟାବଳୀ ସମ୍ପର୍କୀୟ ନାମାବଳୀରୁ ଏହି  
ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି  
ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି ନାମାବଳୀରୁ ଏହି





যত্নসহ : গচ্ছতি এতদ্ব্যপনমধো এতদী  
মহা হুত্বম্ভুত উৎপত্তি হইয়াছে। তদ্ব্যপন  
ই, একটি অংশ (ভুক্ত) উৎপত্তি হইয়াছে যে  
বরজালা নিব নী টেম্পলানোথ প্রাচীন এক  
ভুক্তির একটি অংশ অল্পবয়স্ক (প্রায় তিনবৎসর  
হইবে) শিশু গচ্ছতি, তৎকালেই দেবেন আদিত্য  
দেব, মৃত্যু, খনির পূর্বক শাসন, লাল, এতদ্ব্যপন  
নান। রং এবং লাল প্রকার উৎপত্তি (শিশু) হই  
বির কসিত হইছে এবং সেই উৎপত্তি যোগ্যতম  
নীকে অধিন করিতেছে, যে ১০০ হইকন  
কেন, সেজন্য গতি তাহাঁর, যে ১০০ হইকনে  
অবত, কাহারও নিবট (এইই লকিতোছ ন  
এই উৎপত্তি সেবনের বাবদ, মাতৃকৃত পানের ম  
ত খাতির। পুত্রবর্গের জ্ঞান করিয়া, জাগি  
কয়। মন, বার দ্বিগুণ ১০০ এই অমূল্য হইত।  
পুত্রবর্গ ও প্রচারিত হইয়াছে তদ্ব্যপন খাতির  
পোষকতায়। ও এতৎ পুত্রবর্গী অন্যান্য প্রাচীন  
বাবতীয় কৃষ্ণকায়াল পুত্রের জনগণ (তৎকালে  
ই হইত তৎকালে মধ্যবিত্ত গৃহস্থবিশেষের লী লোকের  
তাই অধিক) প্রাচীনকাল অধি মধ্যস্থায়ী,  
অবিভাগ্য জেদীবন্ধ হইয়া তদ্ব্যপনুৎপত্তি গচ্ছতি  
কসিত হইত। কয়েক নিবন হইল, আমবা কোন  
কোপলকে, পোষকতায় গচ্ছতি করিয়াছিল।  
পরে এই কসিত হইয়া গচ্ছতি বিশেষ লক্ষণ  
য জন্ম কোষকাবিত্য হইয়া এই কসিত। কসি  
লাল, কসি হইল। পুত্র হইয়া বৈধি, প্রাচীনকালের  
বাড়ী লোকেরা, লাল, হইত, যুবক প্রাচীনকাল

১০০  
 ১০১  
 ১০২  
 ১০৩  
 ১০৪  
 ১০৫  
 ১০৬  
 ১০৭  
 ১০৮  
 ১০৯  
 ১১০  
 ১১১  
 ১১২  
 ১১৩  
 ১১৪  
 ১১৫  
 ১১৬  
 ১১৭  
 ১১৮  
 ১১৯  
 ১২০  
 ১২১  
 ১২২  
 ১২৩  
 ১২৪  
 ১২৫  
 ১২৬  
 ১২৭  
 ১২৮  
 ১২৯  
 ১৩০  
 ১৩১  
 ১৩২  
 ১৩৩  
 ১৩৪  
 ১৩৫  
 ১৩৬  
 ১৩৭  
 ১৩৮  
 ১৩৯  
 ১৪০  
 ১৪১  
 ১৪২  
 ১৪৩  
 ১৪৪  
 ১৪৫  
 ১৪৬  
 ১৪৭  
 ১৪৮  
 ১৪৯  
 ১৫০  
 ১৫১  
 ১৫২  
 ১৫৩  
 ১৫৪  
 ১৫৫  
 ১৫৬  
 ১৫৭  
 ১৫৮  
 ১৫৯  
 ১৬০  
 ১৬১  
 ১৬২  
 ১৬৩  
 ১৬৪  
 ১৬৫  
 ১৬৬  
 ১৬৭  
 ১৬৮  
 ১৬৯  
 ১৭০  
 ১৭১  
 ১৭২  
 ১৭৩  
 ১৭৪  
 ১৭৫  
 ১৭৬  
 ১৭৭  
 ১৭৮  
 ১৭৯  
 ১৮০  
 ১৮১  
 ১৮২  
 ১৮৩  
 ১৮৪  
 ১৮৫  
 ১৮৬  
 ১৮৭  
 ১৮৮  
 ১৮৯  
 ১৯০  
 ১৯১  
 ১৯২  
 ১৯৩  
 ১৯৪  
 ১৯৫  
 ১৯৬  
 ১৯৭  
 ১৯৮  
 ১৯৯  
 ২০০



এই গল্প কলিকাতার পুষ্টি খামকা। হেমচন্দ্রের  
কান্না শুনে মাতা মৃত্যু করেছিলেন।  
কিন্তু মৃত্যু করেছিলেন।

# সোমপ্রকাশ

সর্বস্বতাঁ মঙ্গলমিহিতায় পার্থিবঃ সর্বস্বতী স্মৃতিমহনী ন স্বীকৃতা । ৩

৫ ভাগ ।  
২০ সংখ্যা ।

১/১ মন ১২৬৩ । ১৮ ই চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ৩০ মার্চ

১/১ মাসিক মূল্য ১  
বার্ষিক মূল্য ১০

## বিজ্ঞাপন ।

করিমপুর জিলার অন্তঃপাতী দাটকেয়ারি মহকুমার নামে যে পাহানি তালুক আছে, তাহা দরপতনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা যাইবে। বাহার সেই তালুক দরপতনি নই বাহ অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি কলিকাতার জাডন কিনব কোম্পানির নিকটে আবেদন করিলে সর্বশেষ রূপান্তর জানিতে পারিবেন

## বিজ্ঞাপন ।

রাবাবু, হকু উকুর রাস্তা মুসিহ, গোরু বিলাজ, নিত্যানন্দ টেবরাণী, রুকমোহন ভট্টাচার্য প্রভৃতি প্রাচীন কবিগুরুগণের উত্তম উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা

প্রকাশক হিউ টি ৬৭ নং বাড়ী।

শ্রীযুক্তগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং বৈ

## সোমপ্রকাশ !

১৮৬৩ চৈত্র সোমবার।

১৮৬৩ অক্টোবর ৪৫ আইনে ( ভারত বর্ষের ১৯ বিধিতে ) বহুবিবাহকারির দণ্ডের যে বিধান করা হইয়াছে, তাহাতে মধ্যে মধ্যে অনেকের ভ্রম জন্মে। সমস্ত আমানদিককে এক জন জিজ্ঞাসা করিলাম, "তারা হিন্দুদিগের বিদগে খাটিবে ইহার উত্তর দামহলে আমাদিগকে এই, বহুবিবাহ নিষেধক বি

ধির মর্ম্ম এই, যাহা হিন্দুদিগের আচার ব্যবহার ও শাস্ত্রে বহুবিবাহের নাজেহ নাহি, তাঁহারা বহুবিবাহ করিয়া দণ্ডভোগী হইবেন না, আর যাহা হিন্দুদিগের শাস্ত্রানুসারে নিষেধ আছে, তাঁহারা করিলেই দণ্ডভোগী হইবেন। হিন্দু জাতির বহুবিবাহ প্রথা অচলিত আছে, অতএব ইংল্যান্ডের নিষেধ সত্তা বলা কি? উহা যদি দণ্ডবিধি দ্বারা নিষিদ্ধ হইত, তাহা হইলে আর এদেশীয় সমাজ মঙ্গলকরদিগকে বহুবিবাহের নিষেধার্থ যত্ন প্রয়াস পাইতে হইত না। অধিক দিন অবধি এবিষয়ের চেষ্টা হইতেছে প্রত্নকারক অরণ করিয়া দেখিবেন, কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটা যত্ন বিধি বিধান আবশ্যক বলিয়া সোমপ্রকাশে যে একটা প্রস্তাব লিখিত হয়, তাহাতে এই বিষয়ের প্রমাণ করা হইয়াছিল।

উল্লিখিত দণ্ডবিধিতে যে বহুবিবাহের নিষেধ আছে, তাহা যে সকল জাতির উপর নাহ, তাহার অপর প্রমাণ এই, মঙ্গলি পারসীদিগের যে ব্যবহাসংগ্রহ হইতেছে, তাহাতে বহুবিবাহ নিষেধের একটা বিশেষ প্রস্তাব করা হইয়াছে। সে এত—“যদি কোন পরসী পুরুষ আপনার দুইসঙ্গে ও পারসী স্ত্রীলোক পতিসঙ্গে বিধি বোধিত পরিচয় পত্র না লইয়া অপর বিবাহ করে, তাহাকে ভারতবর্ষের দণ্ডবিধির নিষিদ্ধ দণ্ডভোগী হইতে হইবে।” বহুবিবাহ নিষেধক দণ্ডবিধি সংস্থা

রূপ হইলে একদল যত্ন প্রয়োজন কি? উক্ত প্রত্নকারকের করা কর্তব্য, যে বিষয়ে পরম্পরাগত আচার ব্যবহাসংগ্রহে লিখিত হইয়া আমাদিগকে তদ্বিচারার্থ বিবেচ্য বিধি যে সামান্য বিধি দ্বারা হইবে, ইহা কোন প্রমাণ যত্ন প্রয়াস পাই হইবে।

২৮৬

রেজিষ্টারি বি

২৫ এ কেবলগারির অধিবেশন দিবসে ইন্ডিয়ান সল্টসবেজের রেজিষ্টারি কমিটির রিপোর্ট অর্পণ ৫৭ অর্কে সল্টসবেজের ফর্মস সাহেব হুক ব্যবহাসংগ্রহে রেজিষ্টারি সংক্রান্ত লেখা উপস্থিত করিয়াছি। ঐ কমিটি তদ্বিষয়ে রি এখন রেজিষ্টারি সভা তাহা ঐচ্ছিক এবং তদনন্তর সমাক নিবারণ হইবে বিশেষে ইহার হুজি। প্রস্তাবিত আইনের প্রস্তাবিত আইন



এক জন সাধারণ রেজিষ্টার ( রে-  
জিষ্টার ) হইবেন । স্থানীয় গব-  
র্নমেন্ট এই পদে এক জন যত্ন  
স্বতন্ত্র নিযুক্ত করিতে অথবা রেবে  
র হস্তে এই কার্যের ভার প্র-  
দান করিবেন । প্রত্যেক জেলায়  
একজন রেজিষ্টার ( ডিষ্ট্রিক্ট রে-  
জিষ্টার ) এক জেলাধিপতির অধীনে ছোট  
জেলার জজ বা অন্য কোন কর্মচারী  
রেজিষ্টার হইতে পারিবেন । গব-  
র্নমেন্টে অপর ব্যক্তিদিগকেও  
ইচ্ছা করিতে পারিবেন । এ  
বার শেষত এক এক জন রেজিষ্টার  
হইবে । ডেপুটি রেজিষ্টারেরা কি  
নো দলিল রেজিষ্টার করিতে  
কোন দলিল রেজিষ্টার  
রেজিষ্টারদের মধ্যে তদ্বিষয়ে ডি-  
ষ্ট্রিক্ট রেজিষ্টার নিকটে আ-  
লিখিত হইয়া দলিল রেজিষ্টার  
রেজিষ্টার হইবে । কিন্তু  
রেজিষ্টার প্রদর্শিত হয়, রেজিষ্টার  
রেজিষ্টার বাটতে থিরা রেজিষ্টার  
বিশেষতঃ উইল, দান পত্র  
লইবার ক্ষমতা প্রদান  
হইবার কালে রেজিষ্টারে  
নে গমন বিতান্ড আদায়  
হইলে তিন মাসের  
বিত্ত হইবে । কিন্তু উ-  
ইল এ নিয়ম নহে । ১০০  
লোর অধিক বস্তু বিক্র-  
য় দলিল রেজিষ্টার না  
গমনী আদালতে প্রাচ্য  
হইতে এই প্রকার দলিল  
বিচার হয় সত্ত্বেও পরে  
প্রদর্শিত ।

যদি হইয়াছে, সম্পত্তি  
রেজিষ্টারের এলা-

হইলে এক

র নিকটে তাহা রেজিষ্টার করিলে চলি-  
বে । কিন্তু একপ হলে ডেপুটি রেজিষ্টার  
দলিলের মকল ডিষ্ট্রিক্ট রেজিষ্টারের নিক-  
টে প্রেরণ করিবেন, তিনি উহা নিজ পুস্ত-  
কে লিখিয়া লইয়া অন্য অন্য ডেপুটি রে-  
জিষ্টারের (যাঁহাদিগের এলাকার সম্পত্তি  
র অন্য অন্য অংশ আছে, তাহাদিগের )  
নিকটে প্রেরণ করিবেন । রেজিষ্টার করি-  
বার সময়ে কয় বিক্রয়াদিকারী উত্তর ব্য-  
ক্তিকে উপস্থিত হইতে হইবে । যাঁহারা  
প্রতিনিধি দ্বারা কার্য করিবার ইচ্ছা  
করিবেন, তাঁহাদিগকে তাহার যথার্থের  
বিষয় ডেপুটি রেজিষ্টারের স্পষ্ট হৃদয়  
দয় করিয়া দিতে হইবে । গবর্নমেন্টে  
কোন দলিল রেজিষ্টারী করিতে হই-  
লে তৎক্ষণাতঃ পত্র কর্মচারী নিজে অথবা  
পত্র দ্বারা আপন সম্পত্তি জানাইলে রে-  
জিষ্টার হইতে পারিবে । যে কোন দলি-  
ল হউক, রেজিষ্টারকে ভাল রূপে জানি-  
তে হইবে যে আবেদনকারীরা বখার্ব কয়  
বিক্রয়াদিকারী কি না ।

দলিলের কোন সাক্ষীকে উপস্থিত ক-  
রিতে হইলে রেজিষ্টার তাঁহাকে পররূপে  
দিয়া আনিতে পারিবেন । কেহ মিথ্যা  
সাক্ষ্য দিলে দণ্ডবিধির ১৯২ খারানুসারে  
তাঁহাকে ফৌজদারিতে সমর্পণ করা হই-  
বে । যদি দেওয়ানী আদালতে কোন দ-  
লিল জাল সাক্ষ্য হয়, তাহা হইলে এই আ-  
দালতকে এ বিষয়ের সংবাদ ডেপুটি রেজি-  
ষ্টারের নিকটে দিতে হইবে । তিনি নিজ  
পুস্তকে এই বিষয় লিখিয়া রাখিবেন । ১০০  
টাকা পর্যন্তের রেজিষ্টারী খতের টাকা  
আদায় করিতে হইলে তদ্বিষয়ে হুতন  
মোকদ্দমা করিতে হইবে না । দেওয়ানী  
আদালতে তাহা অর্পণ করিলে আদালত  
তাহা তিরিয়াগিব মাসে প্রত্যর্ষিক এক  
পূররূপে দ্বারা অবশ্য করিয়া জিজ্ঞাসা  
করিবেক তিনি বখার্ব অধিকার কার্য

হইলে এক

বক্সেন তিনি এই খত লিখিয়া দিরাছেন  
তাহা হইলে এক কালে তাঁহার সম্পত্তি  
বিক্রীত করিয়া অথবা অন্য উপায়ে টাকা  
আদায় করা হইবে । যদি প্রত্যর্ষী হই-  
তাপ করিয়া পলাইবার চেষ্টায় থাকেন  
তাহা হইলে অগ্রেই তাঁহার সম্পত্তি ফৌজ-  
দারী অথবা তাঁহাকে হাজতে দেওয়া  
পারিবে । কিন্তু একপ হলে টাকা  
হইবার এক বৎসরের মধ্যে নালিশ করা  
উচিত । অর্থাৎ যদি ইচ্ছা করেন, তাহা  
কালের মধ্যে নালিশ করিতে পারিবেন,  
কিন্তু এক বৎসর অতীত হইলে উল্লিখিত  
রূপে মোকদ্দমার শীঘ্র নিষ্পত্তি হইবে  
না । উইল ও দলিল লইবার অনুমতি  
প্রদান রেজিষ্টারী হইলে রেজিষ্টারের  
কিসে তাহা রাখিতে হইবে । রেজিষ্টার  
সেই সকল একপ বাস্তব মধ্যে রাখিবেন  
তাহা অগ্নিতে বিনষ্ট না হয় । উইলকারী  
র হস্তের পর সম্পত্তির উত্তরাধিকারী আ-  
বেদন করিলে তাঁহাকে তাহার এক মকল  
দেওয়া হইবে । অন্য অন্য ব্যক্তিও  
বেদন করিলে কি দিয়া তাহার মকল  
হইতে পারিবেন । প্রতি বৎসর তত দলিল  
রেজিষ্টারী হইল তাহার এক এক তালিকা  
আকিসের প্রকাশ দ্বারা রাখিতে হইবে ।

উপর উক্ত রেজিষ্টারী সংক্রান্ত আ-  
ইনের পাণ্ডুলেখাটী অনেক অংশে উত্তর  
হইয়াছে । উহার আপত্তিযোগ্য অংশ  
গুলি সংশোধিত হইয়া বিধিবদ্ধ হইল  
উহার দ্বারা সম্পূর্ণরূপে না হউক, অনেক  
ক অংশে জাল নিবারণ সত্ত্বেও আছে  
জজ প্রভৃতির বিস্তরকাজ অতএব তাঁহা  
দিগের প্রতি রেজিষ্টারীর ভার দিলে ক-  
র্য সুসম্পন্ন হওয়া কঠিন । যাঁহারা  
পাতক্য গবর্নমেন্টের কর্তব্য করিতেছেন  
তাঁহাদিগের হস্তে না দিয়া এই কার্য  
কর্মচারীর হস্তে দেওয়া কর্তব্য । যাঁ-  
হারা দলিল রেজিষ্টারী করিতে  
তাঁহারা একক ব্যক্তি কি না

আহার অনুসন্ধান করিয়া রেজিষ্ট্রারের  
পাশে কর্তব্য। যে সে সাক্ষির উপরে  
বর্তন করিলে যথার্থ নির্ণয় সম্ভাবিত  
হয়। যাবৎ সাক্ষিদেয় সংশোধিত না  
হইতেছে, তাবৎ তত্ত্বনির্ণায় চুটী  
উপায় অবসরন করিতে চইবে। এক  
রেজিষ্ট্রার স্বয়ং আবেদনকারি বাস-  
স্থানে গিয়া তত্ত্ব করেন, অথবা প্রা-  
ম্য পীচ জন তত্ত্ব নোককে জিজ্ঞাসা  
করা হয়। রেজিষ্ট্রারি আবেদন হইলে  
মহতঃ চুই সপ্তাহের নিয়ম দিয়া এক  
পর্যায় আবেদনকারিগণের বাটতে,  
সাক্ষিসে, ও এক একাশা স্থানে এটকিয়া  
দেওয়া কর্তব্য। এই কালের মধ্যে যদি  
কোন আপত্তি না করেন, দলিল  
রেজিষ্ট্রারী হইবে। কেহ আপত্তি করিলে  
তদ্বিষয় নিকটস্থ বেওয়ানী আদালতে মীমাং-  
সার্থ প্রেরিত হইবে। একপত্র ক্রিয়াতে  
কিছু বিলম্ব হইবে বটে, কিন্তু এতদ্বারা ত  
বিষয়ের অনিষ্ট বিচারণ হই আর সবিশেষ  
সম্ভাবনা আছে। প্রীলোক আবেদনকা-  
রী হইলে আহার মোস্তারকে দাখা ক-  
রিয়া উল্লিখিত একপত্রে অনুসন্ধান লইতে  
হইবে। বিষয় বিশেষে কমিসন নি-  
যুক্ত করা আবশ্যিক। আমাদিগের দেশী  
গণ মোস্তার। আর হুজুর কালেই উইল ক-  
রিয়া থাকেন। এই সকল উইল লইয়া  
করানক বিবাদ উপস্থিত হয়। একপত্র  
লিখিত হইবার তাহা  
রেজিষ্ট্রারের নিকটে প্রেরণ করিতে হই-  
বে। রেজিষ্ট্রার যদি বিশ্বাসী সাক্ষী গান,  
তাহা হইলে আপন সাক্ষিসে তাহা রেজি-  
ষ্ট্রারী করিয়া রাখিবেন। এতৎ তিনি নি-  
জে গিয়া অথবা বিশ্বস্তলোকের দ্বারা  
আহার অনুসন্ধান করিবেন।

রেজিষ্ট্রারী করা গত সালের নালী  
শের বিষয়ে আমাদিগের একটা মহতী আ-  
পত্তি আছে। আইনের প্রণয়নকর্তা ব-  
লেব, ডিক্জিয়ারির ন্যায় উহার কাজ করি-

লে সকলকার শীঘ্র নিষ্পত্তি হইবার ও  
কর্মচারিগণের সময় বাঁচিবার সম্ভাবনা  
আছে। সকলকার শীঘ্র নিষ্পত্তি হইবে,  
ইহা একান্ত প্রার্থনা। সন্দেহ নাই কিন্তু  
কর্মচারিগণের অবসর সাধারণ বিতের  
ভ্রাম্যমাণ হইতে পারে না। বিচারপতির  
পরামর্শ ও সময় সংক্ষপ হইবে বলিয়া  
সাধারণকে দাখা বিষয় হইতে বঞ্চিত  
করা বিধেয় হইবে না। রেজিষ্ট্রারী কালে  
যদি অনুসন্ধানকর্তার দোষে রেজিষ্ট্রারী  
যথার্থ না হয়, তাহা হইলে ডিক্জিয়ারির  
ন্যায় রেজিষ্ট্রারী খত প্রকৃতির সকলকার  
হইলে বহুতর অনর্থ ঘটবে সন্দেহ নাই।  
একপত্র না করিয়া একপত্র আইনের অনু-  
সারে উক্ত রীতিমত সত্বর সকলকার  
করাই উচিত। পরিশেষে আর একটা  
কথার উল্লেখ অতিশয় আবশ্যিক। স্থাবর  
বিষয়ের ক্ষয় বিক্ষয়াদির দলিলের ন্যায়  
অস্থাবর বিষয়ের খত প্রকৃতির রেজিষ্ট্রারী  
করাও যে অসমীচীন করা হইতেছে, ইহা  
যুক্তি সম্মত হইছে না। একপত্র করিলে  
নিজ কর্তব্য ক্ষয় বিক্ষয়াদি ব্যবহার কাব্যে  
মহাবিশ্বাস জন্মবে সন্দেহ নাই। আমরা  
স্বাক্ষর করে কহিতে পারি এ আইন কোন  
ক্রমেই চলিত হইবে না। অতএব অস্তা-  
বর বিষয়ে রেজিষ্ট্রারী করবার প্রস্তাব প-  
বিত্যাগ করা কর্তব্য। অপর, রেজিষ্ট্রারী  
কি অতি অপকথা আবশ্যিক; অন্যথা  
লোকে রেজিষ্ট্রারী করিবার বিষয়কে অত্য-  
চার ও অর্থোপার্জননের একটা উপায়  
বোধ করিবে।

২৮৭

১৮ই চৈত্র ১২৬৩।

১৮ই চৈত্র ১২৬৩। পূর্বে দেশের প্রতি  
উল্লেখ করিয়া এই নাম দিয়া এক পু-  
স্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছেন। পু-  
স্তক খনি পাঠ্য বইলে তাঁহার লিপি চাতু-  
র্যের ভূয়সী প্রদর্শন করিতে হয়। তিনি  
আপনার প্রকৃত অভিপ্রায়কে একপত্র আ-  
ক্ষর করিয়া রাখিয়াছেন যে বাঁহারা তাঁহাকে

১৭শে ফেব্রুয়ারি জানেন, তাঁহা  
তাঁহার আপনাদের সাধুতা ও উৎসাহ  
করিয়া মোহিত হইবেন সন্দেহ নাই।  
আপনার অপকথা প্রচারিত হইবে  
একপত্র প্রচার উপক্রম ও  
করিয়াছেন যে তাঁহার পরিচিতি  
তদ্বর্ণনে নিতান্ত বিখ্যাত হইবে।  
তাঁহার প্রচার আদি অর্থ ও  
স্থানে পাঠ করিবে, সেইখানেই বো-  
বে, কেউ সেক্রেটারি সব চারলস  
অজ্ঞান করা ও জীবিকাকারিগণে  
হতা করা তাঁহার এক এচারের  
দেশ। প্রথমে তিনি ইংল্যান্ড  
গিয়া উক্ত জাতিকে মহা আশা  
পাখা ও পুণ্ডির মধ্যে স-  
পাইবার যোগ্য বলিয়া বর্ণি-  
তৎপরে রাজা মিনকর রাও, ম-  
হ ও বৈবনায়াবন সিংহের প্রদ-  
ছেন। তাঁহার প্রদর্শনার বিষয়  
হোলডস মস্তার দাসীভূত ইহার  
হরকরা ও তেও অব ইংল্যান্ড গিয়া  
এ কথা বলেন না যে ভারত  
কখন কখন হইবে না। বরং  
তাঁহাকে স্বীকার করিয়াছেন  
শীঘ্র সেই পুণ্ডর উক্ত  
প্রাপ্ত হইতে পারিবেন। এই  
হইবার জন্য তাঁহার মতে  
সবিশেষ আবশ্যিকতা আছে।  
তিনি বিত্তীয় সুশাসন।  
শান্তির বিধান যে  
এই অভিপ্রায় একপত্র করি  
লাড ডেসহোসি ভারতবর্ষীয়  
রাজ্য প্রদর্শন করিয়া শান্তির  
মূল্য কাটা যে  
রিয়া গিয়াছেন। তাঁহার এই  
কতদূর যুক্তিসিদ্ধ, তাহা  
বিত্তোহ ও নিরপেক্ষ ইংল্যান্ড  
বাহ্য্য পরিমাণে সমাধা  
হে। যদি কোন সমুদ্র  
বাসিগণের সর্ব্ব করণ করিয়া  
পরিচালন করিয়া সাধন



তাহার সেই সমুদায় প্রকল্প, প্রকল্পসমীক্ষা  
হয়, অন্যান্য রাজ্যে হরণ করিয়া অপনায়  
রাজ্যের শক্তি স্থাপন বিষয়ক লাত্ত ডেল  
হৌসিংস ও লেজ সাহেবের তদনুমোদন  
সেইকপা দরগীর ও প্রকল্পসমীক্ষা সম্বন্ধে  
নাই ।

হে সাহেব ভারতবর্ষে ভারত বর্ষ শা  
সন, শ্রুতি বিল, ও পতিত ভূমি বিক্র  
য়, প্রভৃতি বিষয়ে যে যে আভিচার ও কা  
ব, পাঠে, তাহার পুনরুজ্জীব পুনরু  
জ্জীবন ।

পাঠ: ধন তত্ত্ব: বিষয় বহুবা  
মমপ্রকাশে প্রদেয়িত মর্শন  
ও তত্ত্ব সকল বিষয়ে লেজ সাহে  
ও তত্ত্ব, সেই একই যুক্তি  
বহুবা হইতেছে । বিশেষের  
বহুবা নম্রাঙ্করে করিয়াছেন ।

যাচিহ্ন দানন দিয়া প্রদেয়  
রহিছে তাহা করিয়া প্রতিক্রিয়া  
সহিত এ ব্যক্তির অসুস্থতা  
এই হইয়াছে, অতএব তৎসমীক্ষা  
করা বিকল ।

তার নিমিত্তে-৪ প্রতিক্রিয়াবলের সহায়  
করিয়াছেন, যে প্রতিক্রিয়া প্রকল্প, প্রতিক্রিয়া  
কিমে বলেন তাহার অপর প্রমাণ এই,  
রোপীয়াসিদ্ধি " অতঃ, রাজপুরুষের  
নাই, তাহার মতের প্রাবল্য ও প্রমাণ  
মনে করেন কীংবল; পাঠে এদেশীয়েরা  
করিয়াছেন, তাহা দিগের প্রতি পক্ষপাত  
গোলাবিশয় য এই ভাবে গবর্ণমেন্ট তাহা  
কিন্তু আমরা বিধি বিবেচনা করেন না ।  
হাদিগের তা দেখিতে পাই, গবর্ণমেন্ট তা  
গের উদ্ভিষ্টায় অনেক সময় এদেশীয়  
বিরোধী আচরণ করেন ।

অন্যেইউনিয়ন বিল ।  
অদেশীয় ল আসি ইডেন সাহেব  
রিচার নিবন্ধাপক সভার কলিকাতার  
নসি পাল রা ও শোভা দি বর্জমার্শ মিউ  
নসেন্ট ক'বিলের যে প্রস্তাব করেন, তাহা  
চিহ্ন হইতে সমর্পিত হইয়াছে ।

সিলেট কমিটি তাহা প্রকাশিত করিয়া  
সাধারণের মত গ্রহণার্থী হইয়াছেন । আ  
মরা পূর্বে এই বিলের সারমর্ম পাঠ্যগণের  
গোচর করিয়াছি । অন্য এ বিষয়ে আমা  
দিগের যে যে বক্তব্য আছে, ব্যক্ত করা  
হইতেছে । ব্যবস্থাপক সভা আইনসভিক  
মাজিস্ট্রেট মিগকে নগরের মিউনিসিপাল  
কায়ে নযুক্ত করিবার প্রস্তাব করিয়াছে  
ন, কিন্তু ইহা আমাদিগের অনুমোদিত  
হইতেছে না । নগরের ধনী লোকের এই  
ক্ষেত্রে আইনসভিক মাজিস্ট্রেট পক্ষে প্রতি  
ষ্ঠিত আছেন, মধ্যম শ্রেণীর প্রায় বহুই  
নাই । কিন্তু মধ্যম শ্রেণী তত্ত্বো নাথা  
নিলে যথাবিধি কার্য সম্পন্ন ও উচ্চ  
উদ্ভিষ্ট হইবার সম্ভাবনা অতি অল্প । ধনী  
বক্তারা এখন প্রায়শঃ পোত, তাহারা  
মধ্যম ও উচ্চ শ্রেণীর অবস্থা সনক অ  
বশত নহেন । কর নিকপণাদি কালে তা  
হাদিগের হইতে ব্যতিক্রম ঘটবার অস  
ম্ভাবনা নাই । অপর, ইংলণ্ডীয় গবর্ণ  
মেন্ট ও মহাসভা বাহ্যিক বলিয়া  
আসিতেছেন ক্রমে এদেশে ইংলণ্ডের  
নগর স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রদর্শিত করা  
হইবে । তাহা করিতে হইলে অত্র মিউ  
নিসিপাল সম্বন্ধে স্বাধীনতা প্রদান এবং  
মধ্যম শ্রেণীকে তাহার অন্তর্নিবেশিত করা  
আবশ্যক, অন্যথা ইন্টেলিজেন্স ওয়া সত্তা  
বিকল নগ । ইউরোপের ব্যবহার এদেশে  
একমে বর্গায়দিয়ে ( মধ্যম শ্রেণীর )  
স্বাধীনতা হয় । সেই স্বাধীনতা কোন বা  
হ্যচারী হইয়াও অদ্যাপি হরণ করিতে পা  
রেন নাই । কলিকাতারও অত্র সেইকপ  
স্বাধীনতা দেওয়া কর্তব্য ।

গবর্ণমেন্টে প্রায় মিউনিসিপাল সভা  
র সভা নিয়োগ তার গ্রহণ করিতে  
ছেন, কিন্তু আমাদিগের নিকটে একা  
ধাতি যুক্তিসিদ্ধ বলিয়া প্রতীতমান হ  
ইতেছে না, নগরবাসিদের হইতেই এ  
কার দেওয়া বিধেয় হয় । অন্যতম

নেপোলিয়ন এত যে ক্ষমতায়, তিনি  
নগরবাসিদের এই ক্ষমতার প্রতি হস্ত  
প করেন নাই । বিলের যে অংশে সামান্য  
পাইকেলদিগের সংগতি পত্র লইবার বিধি  
করা হইতেছে, তাহা আমাদিগের মতে  
উত্তম কল্প বিনোদ বোধ হইতেছে না  
অনেক পরিভ্রম কৃত্যক মধ্যে মধ্যে তরকারী  
প্রভৃতি আনিয়া নগর দিফা করে, তাহা  
দিগের উপর বরং ধাৰ্য করা নিতুর্ন  
সন্দেহ নাই । যতদূর চিরস্থায়ী ব্যবস্থা  
আর বাহারা অতঃ, এ. বি. ও. স. ও.  
টাকা উৎসর্জন করে, তাহা ভিত্তিক্রম  
কেন ক্ষুদ্র বহুসীর নিকটে কর লওয়া  
উচিত নহে । গ ডী প্রভৃতির করের বিষয়ে  
আমাদিগের কোন অ. প. নাই । কি  
কর্তৃস ( বিচারপতি ) দিগের অতঃ  
প্রতিক্রিয়া গ্রহণ হইতে প্রস্তাব করা হইতে  
কেন ? যখন গবর্ণমেন্টের নিজে ইনক  
টা প্রদিত হইল, তখন অন্য ব্যক্তির  
ধারণ করা হইতে মুক্ত হইয়া বিধেয়  
না ।

যে পরিমাণে বাটার কর গ্রহণ প্রস্তাব  
করা হইয়াছে তাহা কিছু অধিক বেশ  
হইতেছে । ইহাতে পরিভ্রম লোকদিগের  
বিশেষ কষ্ট হইবার সম্ভাবনা আছে । য  
তীর একাধারের প্রস্তাব প্রণালী ক  
মা রাজ্যের জন দিবার উপায় করা অতি  
আবশ্যক । এক্ষণে রাজধানীর অবস্থা  
ও তত্ত্ব তাহা হইয়া উঠিয়াছে । নত্যাতি  
লিক. ত. প্র. যে প্র. ও প. ও প্রণালী অগ্রস্ত  
হইয়াছে, তাহা সম্বন্ধে সম্পন্ন হওয়া কঠি  
অতএব এ প্রকল্প পরিচালনা করিয়া য  
দিনে ছইবার সিদ্ধি । যারা নগর প  
কার করান হ. এবং প্রস্তাব ছই ধা  
প্রণালী করিয়া যথাবিধি রথার চ  
সংস্থার করা হয় এবং স্থানে স্থানে  
কর্মসম্পন্ন করিয়া । নগরবাসিদের বিমল  
লাভের উপায় করা হয়, যখন ব্যয় ক  
কাতা অধিকতর প্রায়শঃ হইয়া উঠি  
সন্দেহ নাই ।

জুয়াখেলার।

ইহাদিনিগের আরও গল্প আছে, শর-  
ভান এক সেগলারক, সিংহ ও পুতুর বধ  
করিয়া তাহা, বগের শোণিত মি খর্চ করা-  
তে জ্বাকারুক ও মনের সুই হয়। ইহাও  
জাংপা এই, লোকের কথা তামেব শিকুর  
তার নম্র থাকে, সুবাপান করিতে সিংহের  
চাম চকল হয়, পরিশেষে পুতরের নায়  
নার পক্ষে ও মীচ প্রকৃতি হয়। কিন্তু এই  
এককর সুরা সেবন অপেক্ষাও অব  
একটি অধিকতর অনিষ্টকর বিষয় আছে,

লোকে স্বপ্ন কাল মধ্যে সর্বস্বত্ব  
হয়। সে বিষয়টি—জুয়াখেলা। এই খেলায়  
কবে সৃষ্টি হয়, তাহার নির্ণয় হয় নাই, কিন্তু  
সর্বকালে লোকে এতমূলক অনিষ্ট নিব-  
ন্ধন আশ্রয় করিয়া আসিতেছেন। এসে  
শে সুরাপানের সহিত এই ভয়ানক ক্রীড়ার  
সবিশেষ প্রাচুর্য্যব হইতেছে। মধ্যে  
করের বৎসর পুলিষের এ বিষয়ে কিছু  
কৃতি হওয়াতে ইহার কতক নিবারণ হইয়া  
ছিল। কিন্তু এক্ষণে ইহা পুনর্বার পূর্ব রূপ  
ধারণ করিতেছে।

জুয়াখেলা মনো অবয়বে বিতরু।  
যেমনা, কুপন, (১) চাপু চামড়া, ও

(১) কুপন খেলায় একটি কার্টা, দুটি  
আকে, তাহা ঘুরাইয়া এক সর্বস্ব নিষ্কপ করা  
হয়, কোন্ বিশেষ উপরে থা কিসের কী-  
কারীত্ব জিত হয়। এই ক্রীড়া মাতনর ভয়  
ভয়। চাপুতে চাটের ফলাফলি বন পালে  
সত্তরকের ন্যায় ইহার কতক বংশ  
ইহা। ইহাতে বিশেষ ক্রীড়া ক্রীড়া আ-  
ল্যক। এইনিমিত্ত টিন্সা ফলি ক্রীড়ার  
ন্য অগ্রে প্রতিদ্বন্দ্বিকে তাহা কলনে পূর্ব ভগ  
জ করে। চামড়ার খেলায়  
শর্পকুপলীর ন্যায় করা, ইহাও  
যে ক্রীড়ক অমূল্য মা পাটি  
কই জয় হয়। যেহেতু ইহার অনেক জা-  
নেন। যেজিফাক এচ। চামড়ার পালের  
ক্রীড়া, ইহাতে ১০০ কখন কখন ১০০ মানি  
ভাঁস থাকে। কলিকাতার কলিকা, ডেবিটির

গেজিফাক। কলিকাতার যাবতী চণ্ডুর  
দোকানে এবং অধিকাংশ চানের বাজীতে  
কুপন, চাপু, ও চামড়ার খেলা হয়। চী-  
নেয়া অত্যন্ত দুঃসঙ্গ। অধিকতর ধূম  
পান ও দ্রুতক্রীড়া ইহা দিগের জীবনের  
প্রধান উদ্দেশ্য বলিলে হয়। ইহাদিগের  
রক্তিত চণ্ডুর দোকানে রাজ্যের জুয়া চোর,  
পাঁইট কাটা কয়েক খালানী, ডাকাইত  
প্রভৃতি একত্রিত হয়। ইহারা অতিশয় খুঁচ,  
প্রথমে এসকল ব্যক্তিকে গুলি ও চণ্ডুর  
মত্ত করিয়া পরিশেষে তাহাদিগের সর্বস্বত্ব  
হরে। উক্ত জুয়া চোর চৌদ্দদিগের এক  
নি একা, যে এক চণ্ডু বিক্রতার দোকানে  
চত্বাকও হইলেও অন্য ব্যক্তি তাহা প্র-  
কাশ করে না, সুতরাং পুলিষের চক্ষের  
উপর ও রাজধানীর বক্ষা স্থলে থাকিয়াও  
ইহারা অনায়াসে ভয়ানক ব্যবসায় চালা  
ইয়া সমাজের মহা অনিষ্ট সাধন করিতে  
ছে। কলিকাতা ও মকরুলের আর যাবতীর  
গুলির আত্মতা ও শুড়ির দোকানে প্রমা-  
রার প্রাচুর্য্যব আছে। এতদ্বিধ অনেক  
ভক্তলোকের দাঁটিতেও এই ক্রীড়া হইয়া  
থাকে। ২৪ পরগণা ও ভগলীতে যেমনা  
বাজের সংখ্যা অধিক। সচরাচর এতি  
রবিবারে এবং যাবতীর পর্ব, বিশেষতঃ  
শিবরাত্রি, চতুর্দশ, বধ ও পূজার সময়ে  
এ ক্রীড়ার সবিশেষ প্রাচুর্য্যব হয়।

কিছদিনস হইল ২৪ পরগণার অন্তঃ  
গতি আগড় পাড়া পুপনের নিমিত্ত খ্যাতি  
লাভ করিয়াছে। এই ভায়ে বিলম্ব মাতাল  
কলিকাতার ও জুয়াচোরের বসতি। ইহাদি-  
গের জাবিকা নির্বাহ, বিশেষতঃ ইজি।  
মেবায় অন্য কোন উপায় না থাকতে  
ইহা এই ক্রীড়াতে নিতান্ত আসক্ত হইয়া  
কাল হরণ করিতেছে। চতুর্দশ, বর্জি  
প্রভৃতির যত কল্যাণ লোক এই আত্মতার আ-  
নাদার, টালিগড় ও রূপাখালায় এই খেলা  
র আত্মতা। মুগলমানদিগের মধ্যে যাহারা  
ধূম, ডাকাইত এই খেলা কবিতা থাকে।

নির্বাচন থাকে। ২৪ পরগণার  
৫০০৭১০ টাকা জীয়াখেলার  
কর। অধিক নিম্নে ৩০, ৩০০  
সংরক্ষা আছে। নিগের

অমরা আগড় পাড়া পুপনের  
ধর বর্ণন করিয়া বসতি। ইহা  
বিষয়ে ২৪ পরগণার জীয়াখেলার  
গড়প. ডাকাইত। পুলিষের  
কইত, এক্ষণে তাহা কই  
এত হুঁজি হইতেছে। ইহা  
তার পুণিবে জুয়াখেলার  
বটে, কিন্তু দুঃসঙ্গ হইয়া  
কিৎ জরিমানা দিয়া নি-  
সামান্য দণ্ড দ্বারা এই  
সম্ভাবনা নাই। যাহারা কলি-  
হাদিগের এবং যাহার বাজী  
হার কারাবাস দণ্ড বিধান করিয়া  
কারী অপেক্ষা বাটির অধিকার  
দেয়। তাহার প্রকারেই ইহা  
থাকে। চোর অপেক্ষা চোরের  
কারীর ন্যায় জুয়াখেলার  
দিগের অধিকতর দণ্ড ২৪  
২৪ পরগণার মাজিকোটের  
দিগের অনুরোধ এই, তিনি  
দিগে দৃষ্টিপাত করিয়া ইহা  
চিত দণ্ড দেন। একে ও জাবিকার  
মাদিগের সমাজের বহুতর নিব-  
তেছে, জুয়াখেলা যদি আর  
যত্ন করে তাহা হইলে ও দিগের  
২৪

বোম্বাইয়ের পানস। গর  
নিমিত্ত ৩০০০  
স ২০০।

আজি কালি বোম্বাইতে পানস  
কেবল তাবৎবর্ষে নয়, ইহা  
অন্য ২০০০ বিলম্ব খ্যাতি  
লাভ করিয়াছেন। আর যাবতীর  
তাহাদিগের দৈনন্দিন জীবন  
হইতেছে, বিশেষতঃ বাণিজ্যিক



(৩) এই কার্য সম্পন্ন সাপেক্ষে প্রকৃতি  
 তত্ত্ব পীতলমেশবাসিন্দা বর্জ্যাবস্থা বিনীত।

১৭ টি চৈত্র ১২৬২।  
 ২০৩  
 সোমপ্রকাশ।  
 ২৭৫

এবিধে লাভ হার সাহেব বলেন যে পশুদি-  
 গের মাংস হাড়ের আম মাংস আহার পথ্য  
 নয়, তাহারা আর নংবোনে পাক করিয়া  
 মাংস ভক্ষণ করিবে ইহা যখন স্থির হইতে-  
 ছে, তখন আর উক্ত আপত্তির স্থল কোথায়  
 (৩) পাঠকগণ যদি ওক্ত ঠিকি অক রেডি  
 সির নামক গল্প পাঠ করেন উক্ত আপত্তির  
 অধিকতর সহোদকর উক্ত পাঠে পারি-  
 বেন, ও সাহেব লিখিয়াছেন যে মস্তবোয়  
 অত্র মাংসানী পশুর আপেক্ষা দীর্ঘ ও মিঠা  
 মিষ ভোজি পশুর আপেক্ষা দুই বলিয়াই  
 মনস্য আদি ও নিমামিষ উভয় পক্ষার্থ ভো-  
 জী জীব বলিয়া শিরীষত হইতেছে।

শস্ত্র ও কল মলাদি ভোজিয়া বলেন  
 মাংস ভক্ষণ করিলে বুদ্ধি মনিস ও মন্দীভূত  
 হয়, আর কল মল ও মস্যাদি ভোজন করিলে  
 বুদ্ধি সতেজ বিবেচনা শক্তি বৃদ্ধি এবং প্র-  
 থান প্রধান মনোভি পরিচ্ছন্ন হয়। ৭ এ  
 কথা বুদ্ধিনিহ কি না, বিবেচনা করা আব-  
 শ্যক। হিন্দুস্থানী ইংরেজ কয়ানী প্রকৃতি  
 ভাতিদিগের প্রতি মননপাত করিলে এবিধ-  
 যের সহজে মীমাংসা হইতে পারে। হিন্দু-  
 স্থানীরা নিরবহির শস্ত্র ভোজী হইয়াও যে  
 প্রকার মন্দবুদ্ধি তাহা কাহার অবিদিত নাই।  
 ইংরেজাদি জাতিরা মাংসানী হইয়া যে প্র-  
 কার বুদ্ধি শক্তিসম্পন্ন তাহা সকলেই অবগত  
 আছেন। আমাদিগের সংস্কার এই যে বি-  
 ন্যাসোচনা ব্যতিরেকে কি মাংস ভোজী কি  
 শস্ত্র ভোজী কাহারই বুদ্ধি ও বিবেচনা শক্তি  
 প্রকৃতি সতেজ হয় না। তবে এবিধে এক  
 কথা আছে, জাম্বুরেল নামোই সাহেব বলে-  
 ন। ৭, যাহা সত্য বলিয়া পরিগ্রহ করেন,  
 তাহাদিগের অল্প পরিমিত মাংস আহার  
 করা উচিত, আর তাহারা অধিকতর পাঠ ও  
 চিন্তাদি করেন, তাহাদিগের মাংস ভক্ষণ  
 পথ্য নয়। এপ্রকার বিধানের কারণ এই যে  
 হস্ত পদাদি চালনা দ্বারা অধিক পরিশ্রম  
 করিলে যে পরিমাণে পুষ্টিসাধন দ্রব্য ভোজন

৩। শিখা ম অফ শায়স এক আর্ট  
 নামধের পুস্তকের খটম তাম পাঠ করিবেন।  
 [৭] উক্ত সাহেব কর্তৃক সাহেব অফ লাইক  
 নামক পুস্তক পাঠ করিবেন।

আবশ্যক করে, তাহার অন্য এই যে উক্ত  
 পরিমাণে আবশ্যক করে না। ১০৫, যেহেতু ইহা-  
 রা পাঠের চিন্তাদি দ্বারা মনস্তিক পরিষ্কার  
 করেন তাহারা মাংস ভক্ষণ করিলে মনো-  
 প্রকার রোগাক্রান্ত হয় (৮) অল্প মাংস  
 ব্যক্তিদিগের অল্প আদিব আহার উচিত  
 বলিয়া ডাক্তার ইদ্র আপেক্ষা অধীমুখ্য  
 রাবানিদিগের মধ্যে কাহার প্রবল হয় তাহা  
 ইহা, তাহাদিগকে এক মিন কর্তৃক চর্চা হইয়া  
 আর বাহার অম শূন্য হও পাইত তাহা  
 গকে এক মিন অত্র হই, ইত্যাক পুষ্টি  
 আদিব ভক্ষণের অন্তিমতি দিয়া হইলেন।

২০৩  
 আগস্ট  
 ১৮ই কাছন ১২৬২  
 ঢাকা মহর ও বেলায়  
 খিত কর্তী বিদ্যালয় আছে।  
 ঢাকা কলেজ সর্বপ্রধান, তাহা  
 কলী, বাঙ্গালী মনটী বাঙ্গালী  
 বিবাহিতা মহিলাগণের শিক্ষা  
 লয় আছে। মফসসল ইংল্যান্ড  
 সার্ভিসার বাঙ্গালী ১৮ টী  
 কা বিদ্যালয় আছে। এতদ্বি-  
 যের নির্যাসবাগি (সকল) ও  
 হাশের পাঠশালা আছে।  
 ময় উপলক্ষে এই মেসার  
 ৩, ৭৫ টাকা ব্যয়িত হইয়া  
 কালেজের মধ্যে ঢাকা কলেজ  
 অপেক্ষাকৃত প্রাধান্য লাভ  
 কালেজ অন্যান্য ১৫০ টী  
 অব্যাপকের পদস্থ হই  
 তাহা হইয়াছে। আরো  
 সংস্কৃত কালেজের আদি  
 সোমনাথ সুখোপাধ্যায় উক্ত পথে নিযুক্ত হই  
 যাহেন। গোপেন্দ সাহেবের স্থাপিত বিদ্যা  
 লয়টি নিতান্ত মন্দ নহে। ইহার সেকল ইমারি  
 দূর হইতেছে বোধ হয় পাঠা পুস্তকের মত  
 বস্ত্র ভাল হইলে সমধিক প্রমতি হইত।  
 মহরের মধ্যে যে করেকা গবর্নমেন্ট  
 [৮] এম. সি. পাকবুদ্ধি  
 ফিলসফি নামক পুস্তকের ২২ টমার পাঠ  
 যেন।

নিরামিষ ভোজিয়া বলিয়া থাকেন আ-  
 দ্য ভোজন করিলে মস্তিষ্ক ক্ষয় হইয়া  
 মানা প্রকার রোগ উৎপন্ন হয়। তাহারা  
 হার এই উদ্ভাষণ দেন যে "এতদেশীয়  
 হিন্দুদিগের আপেক্ষা মুসলমানদিগের মধ্যে  
 অধিকসংখ্য লোক বৃদ্ধি বিব্রোদহার অক্রান্ত  
 হইয়া, তাহারা বলেন মাংস ভক্ষণ তাহার  
 এক কারণ। একথা শুনিয়া মাংসানী ব্যক্তি-  
 রা বিস্ময়াপন্ন হন না। কারণ তাহারা জানেন  
 মাংসজিহ্ম মাংসভোজে বোগ জন্মে (২)  
 মলমলানেরা তৎক পরিমাণে সেই পোষ্য  
 হিত মাংস ভোজন করে।  
 নিরামিষ ভোজিয়া আর একটী কথা বলে  
 যে মস্তিষ্ক সাক্ষর ও মস্তিষ্ক দীপ্ত প্র-  
 কৃতি জন্মে। বিশেষে উক্ত ভোজী পুষ্টি  
 মস্তিষ্ক সহিত যথেষ্ট মনোভা আছে কিন্তু  
 মাংসানী পশুদিগের মাংস ভক্ষণ নাই।  
 [৩] কোন বন্ধু পদালা ব বদ মৌখিক  
 মাংসভোজী কাঁচা মাংস ভক্ষণ বল দীর্ঘক  
 ক্ষিত পরিগ্রহ করিলে ১০। ১৩০ একবল  
 মিষ ভোজন করিয়া ১০০ পরিগ্রহ করিতে  
 পারিতেন না।  
 [৪] ডাক্তার মর্মান চী। বচিত মর্মান কো  
 নাহে, কুস্ত পুস্তক ৫. ১ করিবেন।



এই সাহ চ্যুত বাঙ্গালী বিদ্যালয় আর  
প্রদেশের সুযোগ ইনস্পেক্টর মাটির সাহে  
দ অনিচ্ছিত যৎ ও পরিচয় দ্বারা উক্ত  
বিদ্যালয় সূত্রে দ্বারা সুনিয়মে নির্মাণ হই  
ছে । মাটির সাহেব অতি অমায়িক, লোক  
কক ও ক.ব.দক সুতরাং তাঁহার সহকারি  
তাঁহার উৎসাহ প্রোৎসাহিত হইয়া তাঁ  
র মর্জুমদারা কার্য করিতে ক্রটি করিতে  
ন না । মাটির সাহেব ও অত্রতা ব্যক্তিদি  
র যৎ উপরি উক্ত বালিকা বিদ্যালয় গুলি  
মাটির জীবিত আছে কিন্তু সংসদ হইতেছে  
হোঁচালানোর মূলত অতির প্রতিজ্ঞতা  
মাটির উৎসাহোদ্ভূত হইতে পোকে হে-  
। কা বোধ হইয়াছে পারিবে না, কারণ  
স গা' মিলের নিকটস্থ জাত বি  
বেশ ও মনোবোগ দেখিতে পা  
ইয়া পুর জাতিপাচার বিদ্যালয়  
এই জীবিত আছে নির্মাণ হইয়া  
। মাটির বিবল উক্ত সময়ে গিয়া দে-  
। ১১ জন বালিকার মধ্যে ২১ জন উপস্থিত  
। ২১ জন মধ্যে ১ জন বালিকা তাঁহার  
। ১ জন কনিষ্ঠ ছাত্র উত্তমরূপে পাঠ  
। ১ জনকে গুলি প্রেরণ উত্তরক-  
। ১ জনকে একপ সিঁথিয়াছে যে  
। ১ জনকে অঙ্গের মিলিত অন্যের  
। ১ জনকে হইবেক না । লালবা  
। ১ জনকে ১ জন বালিকা আছে । আমি  
। ১ জনকে বোধ হই, সে দিন ১৬ জন বালিকা  
। ১ জনকে বালিকাগুলি স  
। ১ জনকে বালিকাদের মধ্যে জা-  
। ১ জনকে উক্তি হইতেছে না, বিবাহি  
। ১ জনকে বিবাহিত কত বয় হইতেছে,  
। ১ জনকে জানিতে পাব। সহস্র নহে  
। ১ জনকে জানিবে অগতঃ উপকার সত্যব-  
। ১ জনকে তাহা বর্ণন করা বাহুল্য । এ  
। ১ জনকে মিলের নিকটে একজন বিদ্যালয়  
। ১ জনকে কইলেই ভাল হয় । যে সকল বালিকা  
। ১ জনকে অন্যান্য কার্যে ব্যস্ত থাকে তা-  
। ১ জনকে প্রতিবেশী কারিবার নিমিত্ত একজন  
। ১ জনকে (কইউইকুল) আছে, এই বিদ্যা  
। ১ জনকে অন্যান্য কার্যে ব্যস্ত করিয়া  
। ১ জনকে বালিকা ইকুলে অন্যান্য

বালিকা ইকুল কোন বিষয়ে পবাস্ত করিতে  
পারে না, প্রত্যুত এখানকার নিকটস্থ জাত  
বালিকাগুলি অতি উৎকৃষ্ট । যে বালিকা নিত  
সত্য ও স্বতঃসিদ্ধ বলিয়া কৃতবিদ্যা ব্যক্তিদি-  
গের সংস্কার অধিভেদে, বাহ্যর অভাবে এ-  
দেশের লোকে এত কষ্ট পাইতেছে, তাহা অ-  
বলম্বন করিলে মানবগণ নির্মম অনন্স উপ-  
ভোগ করিতে পাবে, সেই লক্ষ্যেই এই  
শীলনার্থে ১২ই ফাল্গুন মাসের এখানে এক  
জন বালিকা বিদ্যালয় স্থাপিত হইয়াছে, এ বিষয়ে  
এখানকার ডেপুটী মাজিষ্ট্রেট জি.বুস্ত বাবু ও  
মহোদয় ২য় এবং ডেপুটী ইনস্পেক্টর জি.বুস্ত  
ও কান্টনমেন্ট সুখোপাধ্যায় মহোদয়গণের  
বিশেষ যত্ন আছে । এই ভেদেই প্রায় ৬০০  
হাজার লোক লেখাপড়া করিতেছে, মঙ্গলমা-  
নদিগের অধিকার সময়েই সহিত বর্তমান স  
ময়ের তুলনা করিয়া দেখিলে বেশ যুগান্ত  
হইয়াছে বোধ হয় ।

সহরের মধ্যে ১৮ জন মকদ্দম ও ১ জন  
বিচারাসভ আছে । বিচারপতির সংখ্যা ২২  
জন, ডায়েরি সহস্র ৩৩ মকদ্দমে ১৩ জন  
খানা আছে তন্মধ্যে ১৮ জন মকদ্দমা এবং  
২২ জন মকদ্দম মকদ্দমা আছে । আদালত ও  
পুলিশে যেকোন বিচার হইয়া থাকে তাহা সম-  
চার পত্র সম্পাদকদিগের আগোচর নাই, বিচার  
পত্রগুলিগের অনেক আপন আপন কর্তব্য  
সময় সুনিয়মে নির্মাণ করিবার চেষ্টা করিয়া  
যা'কেন কিন্তু কতকগুলি স্বার্থপর লোক সেই  
কর্তব্যের দায় রুদ্ধ করিয়া রাখিয়াছে । বাহ  
কর্তব্য এখানকার সদরদালা ও মাজিষ্ট্রেট সা-  
হেব বিচার বিষয়ে প্রসঙ্গ লোক করিয়াছেন,  
এখানকার আইন্ট মাজিষ্ট্রেটের বিচারে ১২ই  
ফাল্গুন চাকা প্রকাশ সম্পাদকের ১০০ কত  
টাকা করিয়াছে তদভাবে ও সস্তাহ কারাবা-  
সর হস্ত হইয়া গিয়াছে : সম্পাদক অনেক  
নিকটে আপীল করিয়াছেন । বার্ষিক গভের  
ডেপুটী মাজিষ্ট্রেট ল্যান্সিং ম্যাজিস্ট্রেট  
কি'না-তাহা জজ সাহেবের নিকট বিলম্ব  
প্রতিপন্ন হইবার সম্ভাবনা আছে । যদি বর্ষা  
বিচারে অন্যান্যকারী হন তাহা হইলে আইন্ট  
মাজিষ্ট্রেট কি'কর্ম পরিচালন করিয়া বিলাতে  
গমন করিবেন, না, সম্পাদককে টাকা গুলি

কি'না দিয়া তাহা বোধ হইবে না করিবেন? এবং  
নে তিনিই সম্রাট আছে তাহা বোধ হইবে  
উপহার হইতেছে তাহা বর্ণন করা বাহুল্য  
হইবে ।

### প্রাপ্ত ।

রেলওয়ে জমণ ।

আমি সপ্তাহি পূর্ব দক্ষিণ বাঙ্গালী রেল  
বোডে আসমভেদী পবাস্ত বেড়াইতে গিয়া  
ছিলাম, আর এক ট্রেন আসে গেলেই রেল  
রোডের বর্তমান পূর্ব উত্তর সীমা কুর্চ পধ্য  
যাওয়া থাকে । কলকাতা পধ্য করিয়া  
বেলেঘাটার পোল পার হইলেই ক্রমে পধ্য  
গ্রামের দূর দেখিতে পাওয়া যায় । মগরে  
কোলাহল অঙ্গ অঙ্গ অঙ্গ হইতে থাকে  
বাস্তার দুলে বাতাসের সঙ্গে উড়িয়া ও অ-  
আমিগকে ধরিতে পায়ে না এবং বস্ত্র  
ইষ্টকাল সকল ও ক্রমে ক্রমে চকুর বহিষ্ক  
হয় । কিছু দূর পধ্য করিয়া তাহা সপ্তাহ  
দিগের কুই এতখানি মগান মধ্যে মগনে  
পথে পথিত হইয়া মগরে তাহা মগন কর  
ইয়া দেয়, গরে তাহা তাহা ক্রমে অ-  
হিত হইয়া যায় । মগরে খেনোমাঠ, মগ  
গা' ও এতদো পুষ্কর দৃষ্টি পথে পথিত  
মগনমগন হইয়া ১৮ই ফাল্গুন মাজিষ্ট্রেট  
কাত বাতাস প্রায় ৬ইয়া শরীর শীতল  
আমিগান এ মগনমগন দেখিয়া চকুর পী  
দুরীকৃত হয় এবং বীদর জন্তর বাসস্থান  
চল এক ঘাটী বস্ত্র বস্ত্র খাটোবস্ত্র ও মগন  
(কাপা) পাচার প্রতিরূপ টুট বেলে  
বোটা ঘর সকল দেখিতে পাইয়া গাটী ও  
ঘের পথিত প্রায় ৬ইয়া বাত । যে দা  
কোন গ্রামের মধ্য দিয়া বাঙ্গালীর রূপ গ-  
করে সেখানে প্রতি মগ ও প্রতি মগ হইয়া  
আবল বুদ্ধ বহিতাকে ব্যস্ত সমস্ত হইয়া  
দুই অমিগিক মেয়ে গাটী প্রতি মেয়ে  
করিতে দেখা যায়, তাহা প্রতি দিন  
বেলা বস্ত্র বস্ত্র গাটী বস্ত্র বস্ত্র বস্ত্র  
করিয়া দেখে কিন্তু তাহা তাহা মগের  
ও গাটী দেখিতে দ্রুতি অঙ্গ না তাহা  
যে রোজ রোজ বস্ত্র ও প্রকার হা করে  
যেবে কিছুই দ্রুতিতে পাওয়া যায় না সেই

০২ নং পাতা, সেই লোকের ভিত্তি সেই কালের  
যারা, ইচ্ছাতে যে তাহাদিগের প্রতি দিন  
কৃত্রিম বোধ হয় তাহাদিগেই এজিতে পারে।  
কিন্তু কোণের বোঁটকেও গব্যক হইতে ঘো-  
টা খুলিয়া এতাই দুটি বেলা থাকি দেখি-  
ত হইবে। শুমিসাহি ওপারের রেলস্ট্রাডের  
দূরের কোন কোন গ্রামের মধ্যে গাড়ি বাই  
যার পূর্বে না দেখা, চুল বাধিবার ও কা-  
ক পরিবার তাড়াতাড়ি পড়ে। 'আনারেব  
মধ্যে মেয়েদের আবক বড়। গাড়ি বাই  
তা জোবা পেলেও তার প্রায় কেউ একটু  
রসু সরোবরেও স্নান করিবার বা গাযোগার  
কম স্বীকার করেন না, আর লক্ষ্যস কথার  
তা কাছই নেই, এদিকে সঙ্গককা পুণীর চি-  
র একোষ্ট মধ্যে একলা বসে থোমটা মেওয়া  
দিকে গাড়ির দাঁরে, হাটের মাঝে দেশী-মে  
লোকের সাঁকাতে . . . . . ফল কথা  
মানক গ্রামের নিকট উপ লোককে চকু মুদ্রিত  
রিয়া বাইতে হয় নতুনই নাই। বাহা হটক,  
ইকনে খেনো মাঠ, খোঁকো জনি, আম  
খান, বাশক'ক ও মধ্যে মধ্যে এক এক  
নি গ্রাম অতিক্রম করিতে করিতে রাণী  
ট পর্যন্ত প্রায় এক তাবেই বাওয়া যায়।  
বে ইহার মধ্যে বাণ ক'ম্বরেব ট্রেননে সা-  
ব বিবির গোলে এবং অপর প্রকার লো-  
ব ভিত্তি জিওয়ে মতা দেশী শোধ হয়, সেন  
কুলিকাতা কলিকাতা গঙ্গ হাটে . . .  
এদিকে সাহেবসেব হালায় . . . এদিকে বি-  
ম্বের ফুলো গাটন রেবিয়া একটু জড়সড  
কিতে হয়। র বাবা . . . করিলেই  
যার এক ডাব . . . জরে গান . . . সমান কম  
টকা মাঠের তাগ বেশী চইয়াত মাঝ, পারে  
ক এক স্থানে গার পালা পর্যন্ত নিকটে  
খিতে পাওয়া যায় মা কোন গাি বিব  
কোর মাঠ মধনেজিরের একমাত্র বিব  
ইয়া 'মতি শীতাই অশ্রীতি' . . . ইয়া  
মিকে যেমন করে মাঠের . . .  
ইকল টিকরোত্তর লেজের জাত . . . ইয়া  
ইতে থাকে। কুণা তুকা কনে . . . ইয়া  
টে। কিন্তু কুখা অশ্রীতি . . . ইয়া  
লাকে অত্যন্ত কাতর হয়, সর্দেহ . . . কল  
কিতে . . . কোন স্থানে এক বিলু পান করি

স্বা কেহ কাতরতা ছুর করিতে পারে না। সাহেবদের সকল কামাইই স্বা। যে টেননে গাড়ি লাগে সেট খাটেই কমে করে সাহেবদের জন্য। এক জা জা লইয়া সকল গাড়ির নিকটে নিকটে দেড়ায়, ইং পরিণত অপর মোটরও মোটর হয় সে অল পাইতে পারেন কিন্তু যার ফাকে চেতের ভয় তাই সে জলের দিকে ভাকাবার ঘোষি? প্রায় কুজোওয়ানা সাহেবই চাপ দাড়ি ছতরাং সাহেবেবা যখন জল বাত খাওয়া তখন ব্যাল ল্যাল করে চেত্রে থাকি। কেউ যে গাড়ি লেকে নেমে গিরে কোন পাচা ভেঁবাঁয় জল খেয়ে প্রাণ বাচিয়ে আনিবে? ততদূর গদ্যদ্বন্দ্ব দারো করণা হয় না, কি জামি কখন কোন লিগ দিতে "ঘটা মারো" এর উল্লিখে আর জম নি বাসার নখের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার দেহ হইতে প্রাণ প্রত্যক্ষ প্রাণ করিবে। তাল কথা মনে পড়েছে, রেলরোড হইতে আমা দের এদেশের অনেক বিষয়েরই উন্নতি হইতেছে, তার পথত উন্নতি দেখা বাইতেছে। আগে এদেশে "ডানিবারো" "জাত মারো" ইত্যাদি গুটিকত মারো কথা ছিল, রেলরোড হইয়া একপে "ঘটা মারো" এই একটি ছুতন মারো কথাই হইতেছে। এখন প্রায় সকল টেননেতেই পানের খিলি বিক্রীত হইবার প্রথা হইয়াছে। উত্তর মধ্যে কোন কোন জায়গায় খালে বনে থাকানো কদোর মত জিনিষি এবং পুবাণী গোল জালুর মত মশেক বিক্রয় করিতেও দেখা যায় কত জিনিষি পদেশে পদেশে গেলে বিশেষ জমকতম কোন রকম পাবার জিনিষ মকে থাকিলেও পাবার পো হয় না, কোন মনে "পিপাসা" শাস্তি শব্দেই মনে করি গা "পানের খিলি" কিনিয়া খান এবং অনেকেও "প" উৎপাদন করেন "কত আমার বোধ হয় যে সে সময় দুশো পাচশো খিলি তৈরি এক চোক জলের কল করে না, এই কখন বিজ্ঞ বাবুনা যে পানের খিলিতে জাম করিতে উৎসাহ করেন না কেন বলা যায় না,

विशेष मंत्रादि :

११८ टैटल लोपिकात् ।

[illegible]

গোবাইয়ের পার্শ্বস্থিত বন্যহাট ও  
প্রস্তুত হইয়াছে। ইং. হা. প্রকৃতিবিদ্যের  
জীলোকদিগেবও সঙ্গ ৬ মি. দূর  
বিধান করিয়াছেন। জী ৪/১০ ৬ ত  
তের আঁজা হারা হইবে। ১৩৫

২১ এ জিলেটের চিরায়ে, খরক  
হইয়া গিয়াছে। ইহা আর দেখ  
বিভিন্ন বাসি ভগ্ন হইয়াছে। মগরা  
আটোরের বাহিরে গমন করিয়াছিল  
মাথোরে অব ও ওলটিটার আশ্র  
রাছে। কলিকাতার উই। বেবা দি  
নদীয়া বিভাগে সন্ধ্যাযুক্তি  
আজ্ঞা হইয়াছে। জিহভের ডিক্ট  
ওল্ট কাপ্তেন রিভলি ডেপুটি ইন্স  
বল হইয়াছেন। কাশীক সাইরেব  
হইতে প্রত্যাগমন করিলে ইন্স  
গিরোমিড হইবেন। জমলিড  
পুলিস হইবে। সে বিবল ভাষা  
গ। কবিতা কথ্যাকাক্যোবিগদক  
বল। হইয়াছে। ১

মিউনিসিপাল বিল বিবেচনা  
(আগামী কলা) ক সমিতিতে নিম্ন  
অধিবেশন হইবে। তাঁহার। ঐ নব  
আগন্ত প্রবেশ করিবেন।

অযোধ্যা গেজেট বলেন আলিম  
আহমদ আলী ও আব্দুল বেগ নামক দুই  
জিকের লাইটলি নামক এক জন কিস্তি  
পরিবারের ২৩১৮৮১ বালিকা আলিম  
লক্ষ্মী ১৩২৮টি কমিসনরের আদালত  
প্রথম বিচার হইয়া আহমদ ও  
দে অর্পণ করা হইয়াছে। আলিম  
রূপে সপটি প্রমাণ না থাকায় সে











! বে' মকর

(১) বঙ্গবাসী-দেশ বাসিন্দা শিক্ষককে জ্ঞান-  
বল্যাক বেঁধে কনাই ও সন্দোহিত করণ । পত্র-  
লেখক জানেন যে উৎসাহী শ্রমিক নিযুক্ত হইলে তাঁ-  
হাদের ছাড় টেরা দ্বিগুণ পূর্বেই বড় শিক্ষকদিগকে  
কার্যা বিভাগ করিয়া দিলে কি চেষ্টা না?









নবমাসের পঁচিশিরা নবম হইবে, তঁহা-  
দিখের আশ্রয় তাৎকালিক সিদ্ধ হইবে।

1. The first part of the document is a letter from the Secretary of the Department of the Interior to the Secretary of the Department of the Army, dated 1900. The letter is addressed to the Secretary of the Department of the Army, and is signed by the Secretary of the Department of the Interior.

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वार्डिक प्रमाण १०० दिनांक

লাভ, দিবা, বুদ্ধি ও ক্রমতা অংশে  
কেহই স্থান নহেন। কিন্তু যেমন  
কে আমরা আশ্রয় প্রদান করি  
তাহার কারণ এই। সর চার্লস  
রূপ ও ভক সাহেবের এক এক  
দোষ আছে। বিশ্ব বিদ্যালয়  
সেই দোষ অমর্তের নিমিত্ত হইতে  
চার্লসকে ট্রিনিটিয়ন প্রদান  
ও এ দেশের দাবতীর ভাবকে  
অন্তর মুক্তি করিবার জন্য  
বার চেষ্টার আছেন। তাঁহার  
লয় সম্পর্ক হইলে এই বিষয়ে  
বিভিন্ন উপস্থিতি হইয়া উঠিত।  
ব খুঁট খর্ষে মস্তপ্রাণ। তাঁহার  
লয় সহজ হইলে সমুদায়  
সম্পন্ন হওয়া সম্ভাবিত নহে।  
ব তাঁহারিদের দ্বারা কোন  
হেন। তিনি অপকৃপা  
করিয়া সমুদায়  
করিতে সমর্থ হইবেন

महेश्वर भक्तिन ७ धामधरनी कादम्बरी

মানবসমাজ কালেজের অধ্যক্ষ মিঃ জা  
হেব জর্জসার নহম্বর মলিম 'কালজি  
উঠাইয়া দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। মিঃ  
বলেন আরবী ও পারসী ভাষা শিক্ষার্থী  
লিখাতার এক মাত্র বিদ্যালয় থাকিলে  
যথেষ্ট হইবে,। মৌলবী আবদুল হক  
যু সনম সমাজের প্রতিদ্বন্দ্বিতা

অমরেন্দ্র সি. জে. আর্যসিং সাহেব  
বোম্বাইয়ের কল হওয়াতে বিশ্ব বিদ্যালয়-  
য়ের সহকারী সভাপতি (বাইস চ্যান্সেল-  
রের) পদ শূন্য হয়। সমাচারপত্রস-  
ম্পাদকেরা এই পদে আপনাদিগের মনে-  
মত্ত লোক নিয়োজিত করিবার নিমিত্ত  
বাস্তব হইয়াছিলেন। কেহ সর চার্লস  
টুর্ভিলিয়নকে, কেহ গবর্ণর জেনারলের  
কৌন্সিল সভার ব্যবস্থাক্ত সভ্য অমরেন্দ্র  
সমন্তর মেইন সাহেবকে, কেহ প্রসিদ্ধ ডা-  
ক্টর ডক সাহেবকে এই পদে বরণ করিয়া  
ছিলেন। একপক্ষের গবর্ণমেন্ট কৃত নি-  
য়োগ দ্বারা সকল পক্ষেই মনোমুগ্ধ হওয়া  
কঠিন। কিন্তু গবর্ণমেন্ট যে ব্যক্তিকে তা-  
পদে নিয়োজিত করিয়াছেন, বোধ হয়,  
২।১ জন ব্যক্তিরেকে সকল পক্ষেই  
তাহাতে সন্তোষ জন্মিয়াছে। মেইন সা-  
হেব সেই পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন।

ডাঃ ২৪ জেজ  
 ১২৫০ মাল  
 জৈরামলাল মেন  
 সাং বহরমপুর

ফরিসপুর জিলার অলংপাড়া বাটকেশারি  
নহকতপুর নামে যে পুত্ৰ তালুক আছে  
তাহা দরগাহনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা  
বাইবে। বাহার সেই তালুক দরগাহনি চাই  
বাব অথবা ক্রয়-ক্রিয়ার ইচ্ছা আছে, তিনি  
কলিকাতার জার্ডন হিলের কোম্পানির নিম্ন  
তে আবেদন করিলে সবিধেয় হুজুর জানিতে  
পারিবেন।

१६६ ई.स. ८५५-८६६

আমরা শুনিয়া আশঙ্কিত হইলাম,  
 অবশীশুরের যে সকল দরিদ্র শাস্তির  
 হইতেই সর্বদা হইয়াছে, হই কোর্টের  
 এক বাহু নতুন পণ্ডিত উদ্যোগী হইয়া  
 গণহিতের সাহায্য চান। করিয়াছেন।

आवालाकाय आता आवा म्हणजेच आवा



নলেন মহম্মদ মসিন আরবী ভাষায় অনু-  
ধীন জনা নিজ নামে কালেজ স্থাপন  
করিয়া বিস্তর অর্থ দিয়া যান, এখানে  
সেই বিদ্যালয় উঠাইয়া দিলেন দাতার উ-  
দ্দেশ্যের বিরুদ্ধ কার্য হইবে, গবর্ণমেন্ট  
দ্বারা ও মুক্তি অনুসারে, এ কার্য করিতে  
সক্ষম হইল না। মোলবী আবদুল লতিফ  
এই প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহা সহ  
বিস্তর করা যায় না বটে, কিন্তু যদি অ-  
ন্য কার্য দেখা যায়, তাহা অখণ্ডীয়  
করা ও প্রেরমান হয় না। মহম্মদ মসিন  
লোকের উপকারার্থই অর্থ দান করিয়া  
ছিলেন। এ কার্য দ্বারা অধিকতর উ-  
ন্নতি সাধনা আছে, তাহা বিষয়ে  
সেই প্রদর্শনিত হইলে তাহার অধীত  
অধিকার সাধনা কি? এ অর্থ যদি সা-  
ধারণ শিক্ষার্থ প্রদত্ত হয়, দেশের অধি-  
কার উপকার হইবে, তাহা হইলে তাহার  
অধিকতর প্রীতি না জন্মিবে কেন? তবে  
গবর্ণমেন্ট এই টাকা শিক্ষা কার্যে না দিয়া  
কার্যে ব্যয় করেন, তাহা হই-  
লে লতিফ যে আপত্তি করিতে  
হেন, তাহা অবশ্যই আদরনীয় হইবে।

গণনা করিয়া যদি কার্যাকা-  
র্য, বোধহয় বৈধ হয়, তাহা হইলে আমা-  
দিগের মতে কেবল মহম্মদ মসিনের  
কাজেই কেন মাদরাসা উঠাইয়া দেওয়াও  
বিবেচনীয়। এই উত্তর কালেজ হইতে এ-  
পর্যন্ত মাদরাসার কোন উপকার হয় নাই,  
হইবেও এই একপ সম্ভাবনা নাই। কয়জন  
মুনিফিক্ট হাজ এই বিদ্যালয় হইতে বা-  
হির হইয়া নিজে ঘণ্টালাভ ও দেশের  
উপকার সাধন করিয়াছেন? আরবী ভাষা  
মুসলমানদিগের কেবল ধর্মার্থ শিক্ষা করা,  
এই ভাষার কোরাণ লিখিত আছে বলিয়া  
তাঁহারা তাহা শিক্ষা করেন। এই ভাষা  
ভারতবর্ষীয় ভাষা নহে। মুসলমানদিগের

না নাই। সংস্কৃত ভাষা হইতে যেমন ভারত  
বর্ষের ব্যবহারী মতন ভাষা উৎপন্ন হইয়া  
ছে, আরবী হইতে কি সে প্রকার কোন  
মতন ভাষা মুক্তি হইয়াছে? উহার দ্বারা  
কি কোন ভাষার উন্নতি সাধন সম্ভাবনা  
আছে? ফলতঃ এক্ষণে এ দেশবাসী দু-  
সলমানেরা বাঙ্গালি হইয়া পড়িয়াছেন।  
তাহাদিগের ইংরাজী ও বাঙ্গালী উভয়  
ভাষা শিক্ষা করিলে যথেষ্ট উপকার দর্শি-  
বার সম্ভাবনা আছে, আরবী ও পারসী  
ভাষা শিক্ষায় তাহার কোন প্রকার এক-  
উপকার সম্ভাবনা নাই। এক্ষণে মাদরাসার  
প্রতিবেশ ৩৫,২০০ ও মহম্মদ মসিনে  
৫৩,৭১২ টাকা ব্যয় হইতেছে। এই এক  
লক্ষ টাকা কি অন্য প্রকারে ব্যয় করিলে  
অধিক উপকার হয় না? এই এক লক্ষ  
টাকা প্রতিবেশের সাধারণ শিক্ষাকার্যে  
ব্যয়িত হইলে মহত্তর উপকার দর্শিতে  
পারে। তবে মুসলমানদিগের স্বতন্ত্র  
বাঙ্গালী ও ইংরাজী শিক্ষার্থ কলিক-  
তুল নামে যে দুখটি আছে উল্লিখিত মুদ্রা  
খন হইতে কিছু অর্থ লইয়া উৎকর্ষ  
করিয়া তুল্য উচিত। পারসী ও আরবী  
ভাষা এক কালে উঠিয়া যায় আমাদের এ-  
কপ অভিজ্ঞতা নহে। বিশ্ববিদ্যালয়ে যদি  
এই দুই ভাষার এক এক জন অধ্যাপক হয়  
তাহা হইলেই চরিতার্থতা হইল। এট  
দুটি বিদেশীয় ভাষার জন্য এক ব্যয় ও  
এক আড়ম্বরের কোন প্রয়োজন নাই।

—  
বেনা।

বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্টের সেক্রেটারি  
গেজেটে প্রকাশ করিয়াছেন, ১৮৬: অফিসের  
জানুয়ারি মাসে আলীপুরে লেপ্টেনেন্ট গব-  
র্ণরের বাটীর সম্মুখে কুবি জাতীয় দ্রব্য  
প্রদর্শনার্থ একটা মেলা হইবে। গবর্ণমে-  
ন্টের আয়োজনে কুবিসমাজ এ বিষয়ে সা-  
হায্য করিতে সম্মত হইয়াছেন। ইহা

নিম্ন লিখিত ব্যক্তিরা এই সভার অধিনি-  
বিলি হইবেন।

এ গ্রোট সাহেব।  
ব্রিগেডিয়ার জেনারেল সাউথাম, সি বি।  
সি, এক মর্টেম।  
সি পি হব গোস।  
অনরেবল এ. হেডেন।  
লেপ্টেনেন্ট কর্ণেল এচ, সি, জেমস।  
টি অগার্সন এম, ডি।  
জে. বেক উইথ।  
ডব্লিউ. জাওয়ার্থ।  
ডগলাস ক্যাট।  
এস, পি. প্রিকিথ।  
বাবু প্রসন্নকুমার ঠাকুর।  
রামগোপাল ঘোষ।  
মোলবী আবদুল লতিফ।

গো. দেব, মহিষ, পক্ষী, ও অন্য অন্য  
পোষিত কুক, কান্দর গরু ও অশ্ব, ও মাঝা  
প্রকার কৃষিকাজ দ্রব্য প্রদর্শিত ও উৎ-  
পাদিত তাহা বিক্রীত হইবে। আমাদিগের  
দেশের লোকের বিধর বিশেষে বিলক্ষণ  
জিহীয়া আছে। উহা যদি এ বিষয়ে প্র-  
দর্শিত হয়, এদেশের অনেক বিদ্য উৎকর্ষ  
লাভ করিতে পারে। আমাদিগের দেশে  
কুবি সাধন গোঁই মাফাতাব সময়ের লাজ  
রহিয়াছে। সেই অস্থি চর্খাবশিষ্ট বস্তু  
রহিয়াছে। সেই প্রম কাতর ক্ষীণজীবী কুস-  
রহিয়াছে। প্রতিযোগিতা হইলে এই  
সকল বিষয়ে উন্নতি হইবার বিলক্ষণ  
সম্ভাবনা আছে। আমাদিগের ইচ্ছা এই  
মকসসে দ্রব্য সংগ্রহ ও কুবি প্রভৃতির উ-  
ৎকর্ষ সাধন জন্য এক ওহটি সভা হয়।  
জমীদারেরা কৃষিকার্যের উন্নতি সাধনার্থ  
কেমন উৎসাহ দেন, এই বাতের তাহার  
রীক হইবে।

বীতন সাহেব কলিকাতা বিলের প্রস্তাব  
করিয়া লোকের যেমন বিরাগ জন্ম হই-  
য়াছিল, এই সকল কার্য দ্বারা তে-  
মাদের মনোভাব, ভাবনা, চিন্তা, আশা





১৮৬২ খ্রিস্টাব্দে পাইলট পোস্ট অফিস  
স্থাপন করিয়া (সেইসময় হাটখোলায়  
উৎকর্ষ পরীক্ষা করুন।  
নীচের ক্রিয়াকার পূর্বই আম  
উপর এই একটা উৎকর্ষ  
ন করিতেছি যে ইংলিস্তান  
র প্রতি বিদ্যে প্রকাশ করি  
প্রথমে এই বলিয়া আবেদন  
যে কলিকতা ৩০ জন ইউ  
১৮ জন মাত্র এদেশী। অবৈতনিক  
কর্তৃপক্ষ আছেন, তাহাচ এদেশী। কর্তৃপক্ষ  
সংখ্যাই অধিক, অতএব সংখ্যা সমান  
করিলে জটিল (বিচারপতিদিগের)  
দ্বারা কার্য নির্বাহের যে প্রস্তাব  
হইয়াছে, তাহা সঙ্গত হইতেছে না।  
পর, জটিল সত্তা দ্বারা সতাপতি  
সহকারী সতাপতি নিয়োগের যে প্র  
স্তাব করা হইয়াছে, তাহারই পরিচয়  
পার্লমেন্ট উদ্যোগকে নিরোদ্ধিত করেন,  
ই প্রণয়ন করাই উচিত। তাহা না  
করিলে এই কর্মচারিদিগকে মনোমীত ক  
রার সময়ে উক্ত জাতীয় জটিলদিগের  
অপার বিবাদ ও অন্যান্য উপায় অবল  
ম্ব করিয়া মত প্রকাশ চেষ্টা হওয়া অসম্ভ  
বিত হয়। সত্তা এখানে ইংলণ্ডীয় মত  
ভার প্রতিনিধিগণের উৎকোচ দিয়া  
সত্তা হইবার চেষ্টার বিষয় ইতিমধ্যে উল্লেখ  
করিয়াছেন। সত্তা আরো বলেন, মিউনি  
সিপাল সতাপতির হস্তে পুলিশের ভার  
দেওয়া অনুচিত। উক্তকর্ম করিচ্ছগিয়া  
তিনি কোন কর্ম সুচারুরূপে নির্বাহ করি  
তে পারিবেন না। আর, সতাপতিকে ২০০৬  
৭ সহকারীকে ১০০০ টাকা বেতন দিলেই  
পর্যাপ্ত হইবে। এই বেতনে একগণ উপ  
যুক্ত বিজ্ঞানবিৎ লোক পাওয়া যাইতে  
পারে; বিশেষতঃ ২০০০ টাকা এক জেলা  
মজুর বেতনের সমান।  
কার্য প্রণালীর বিষয়ে সত্তা

ব করিয়াছেন, অতঃপর আট জন জটিল  
উপস্থিত না থাকিলে জটিল সত্তার  
কার্যবস্ত হইতে পারবে না, একপ নিয়  
ম করা কর্তব্য। আফিসের সমান্য কার্য  
র তার সতাপতিব হস্তে না দিয়া সহকারী  
সতাপতি ও সেক্রেটারির হস্তে দেওয়াই  
কর্তব্য। সতাপতি নগরর অবস্থা দর্শন  
বিবরণ। বাৎসরিক আয় বাবের উপরে  
সেপ্টেম্বর গবর্ণরের ক্ষমতা বাকী উচিত  
নাহ, নগরর ১০ বিতরণের অবস্থা ও  
অন্য অনুসার সংযুক্ত অর্থব্যয় করা  
কর্তব্য। দোকানের কয়েক বসন্তে তাঁহারা  
বতন, কেট মরমায়ের উপরে বাৎসরিক  
আট টাকা কর ধার্য না করিয়া জবোর  
মূল্য ধরিয়া করিলে তাহা হয়। অর্থাৎ  
চুই শত অথবা অধিক টাকার দোকানে  
আট টাকা ও তাহার মানে তিন টাকা  
করা কর্তব্য। পাইলট কড়, তরকারী  
ওলা প্রভৃতির উপর কর ধার্য করা স  
ত্তার নিত্য অনতিমত। এবিষয়ে আমরা  
যাহা বলিয়াছিলাম, তাঁহারাও সেইরূপ  
করিয়াছেন।  
বাটীর কর একগণ বাৎসরিক সতাপতি  
ভার শতকরা সাড়ে সাত টাকা লওয়া  
হইয়া থাকে। বিলে মূল টাকা পর্য  
ন্ত ক্রয়কার প্রস্তাব হইয়াছে। সত্তা।  
স্পর্শাতিথানে ইহার প্রতিবাদ করিয়াছে  
ন। গত বৎসর যে কমিসন নিযুক্ত হইয়া  
ছিলেম, তাঁহারা যখন শতকরা সাড়ে সাত  
টাকা শেব সীমা বলিয়া নির্দেশ ক  
রিয়াছিলেন, তখন আর হুজি করা যুক্তি  
সিদ্ধ নহে। বিলের এক স্থানে লিখিত হই  
য়াছে বাটীর নিকটে যে পতিত স্থান  
থাকিবে তাহার কর দিতে হইবে। এই প  
তিতি স্থান কাহাকে বলে? যদি অদল  
থবা উদ্যোগ উহার অর্থ হয়, তাহার কর  
লওয়া অনায়াস, উহার দ্বারা অধিকারীকে  
হই একাধি কর দিতে হইবে। অপর,  
সত্তার অর্থ হইতে তাহার কর দিতে হইবে।

তবে কি একাধি কর এক প্রকার ভাড়া ল  
ওয়া বিষয় হইবে? সত্তা এই নিমিত্ত  
প্রস্তাব করিয়াছেন যে অদল হইতে  
জটিল করবা একজন বিশেষ কর্মচারী  
স্বতন্ত্রে সমুদায় দর্শন করিয়া স্থান ভেদে  
করভেদ করেন। সত্তা আরো বলেন, ধর্ম  
লগের নাম 'হিন্দু' লিখে হুজা কালে থাকি  
বার ধর্ম (গজপেশী) ঘব) প্রভৃতির কর  
ওলা উচিত না। এখানে মুসলমানদিগের  
কর হানের এই রূপ কর যুক্তি প্রার্থনা  
করা সত্তা উচিত ছিল। মিউনিসিপাল  
বিলে পূনা ২ টির আর্দক কর লইবার  
প্রস্তাব হইয়াছে, সত্তা তাহার প্রতিবাদ  
করিয়াছেন। তাঁহারা বলেন তাহ হইলে  
তাহার বাটী করিয়া মূলধন বিনিয়োগে  
র ব্যাঘাত জন্মিবে। কোন ব্যক্তি অনুপ  
স্থিত তাড়াতাড়ি লোভে আশ্রয় কর দিয়া জটিল  
সহ্য করিবেন? পরঃ প্রণালীর বিষয়ে সত্তা  
বলেন হিন্দুরা এই জল ব্যবহার করিতে পা  
রেন না। অতএব তাঁহাদিগের নিকটে  
অন্য অন্য প্রণালীর মাধ্যম সমান কর লওয়া  
অন্য, তাঁহা দগের নিমিত্ত স্তম্ভন পুষ্  
করী প্রভৃতি ধমন করা ও পুরাতন পুষ্  
করীর সংস্কার করা উচিত।  
সেই বিষয়ে সত্তা বলেন যদি এই  
নির্বুদ্ধি কার্য করাই প্রণয়ন হয়  
তাহা হইলে এই টাকার ভারতবর্ষীয় ধনাগার  
হইতে দেওয়া কর্তব্য। ভারতবর্ষের  
ধান রাজধানীর পোস্তার ও আহার্য জন  
সাধারণ ধনাগার হইতে দেওয়া অনায়াস  
নহে। যদি ভারতবর্ষীয় গবর্ণরকে আপন  
করেন তাহা হইলে কিয়দিকের জন  
অর্থাৎ বহু দিন এই কার্য সম্পূর্ণ না হ  
তক দিনের জন্য বিশেষ কর লওয়া উ  
চিত। এই কর সকল কর প্রণালীর নিব  
হইতে সমান রূপে লওয়া উচিত নহে  
বিতরণের লোকদিগের আর্থিক উপক  
হইবে তাঁহারা এই টাকা দিবেন। মিউ  
নিসিপাল সত্তা যে কর করিতেছেন, তাহা

পরিশোধ করিবার জন্য এতি বৎসর বেঙ্গল টাকা রাখা উচিত । নগর রাস্তা মিউনিসিপাল সম্পত্তি করা উচিত, তথ্য বাণিজ্যের কর স্বরূপ যে টাকা আদায় হইবে তাহা নগরের শোভার জন্য ব্যয় করা আবশ্যিক । সভা খালের মাসুল লইয়াও মিউনিসিপাল করের অন্তর্নিবেশিত করিতে কহিয়াছেন । ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্টের খাল খননে যে ব্যয় হইয়াছে, সভা ক্রমশঃ তাহার পরিশোধ করিতে প্রস্তুত আছেন । সভা নগরের লোক সংখ্যা, জন্ম ও মৃত্যুর হিসাব করিবার প্রস্তাবে অনুমোদন করিয়াছেন । তবে তাহারা বলেন এতদধীন প্রীতগোকের নাম প্রকাশ করিবার রীতি না থাকিতে সংখ্যা ও বয়স দিলে পক্ষান্তর হইবে । আর, মৃত্যু সংবাদ আট দিনের মধ্যে না দিয়া ছয় সপ্তাহের মধ্যে দিবার নিয়ম করিতে ভাল হয়, এই সময়ে মধ্যে অশৌচান্ত ও আত্মাতির গোল শেষ হইয়া যাইবে । কব দিতে বিলম্ব হইলে এক বিজ্ঞাপন দেওয়া হইবে । পাঁচ দিনের ভিতর না দিলে এক টাকা জরিমানা দিবার হইয়াছে । সভা বৎসর জরিমানা দিবার নিয়ম না করিয়া মিউনিসিপালের উপর এই বিষয়ের বিবেচনার ভার দিলে ভাল হয় । কারণ একপ অমেক অনাথ স্ত্রীলোক ও পিতামাতাহীন বালক আছে যে তাহারা আইন জানিতে পারে না, অতএব তাহাদিগের অর্থ দত্ত বিধেয় নহে । পুরাতন বাটী ভগ্ন করিবার পূর্বে অন্ততঃ দুই জন জাতিসের তাহা দর্শন করিতে যাওয়া কর্তব্য । কারণ ভগ্নবিদ্ধন অনেক অশান্তিচার হয় । পরিশোধে সভা কং কিছু কমান্বয়ের অনুমোদন করিয়াছেন । তাহারা বলেন গাড়ী ঘোড়া প্রভৃতি গণনা বাবতীর কর ধরিত্ত করিলে নগরবাসিন্দগকে শতকরা প্রায় ৩০ টাকা দিতে হইবে । এতদ্বিত্ত ইনকম টাক্স আছে ।

উপস্থিত করিয়াছেন তাহার অধিকাংশই আমাদিগের অনুমোদিত, কেবল আমাদিগের কয়েকটি বিষয়ে তাহাদিগের অনুমোদন হইতে পারি নাই । মিউনিসিপাল প্রস্তাবে স্বাধীনতা আবশ্যিক কি না ? যদি স্বাধীনতা হয়, সভাপতি নিয়োগের ভার গবর্ণমেন্টের হস্তে দেওয়া তাহার নিজস্ব বিবেচ্য সন্দেহ নাই । কোন বিষয়ের স্বত্বভোগ হইতে গেলে যদি প্রথমে কিছু গোলযোগ কট হইবার সম্ভাবনা থাকে, তাহা বা প্রা কি আমরা তাহা ত্যাগ করিব ? সকল সময়ে জুরির বিচার ভাল হয় না, তাহা বলা কি এই প্রথা উঠাইয়া দেওয়া কর্তব্য ? সুখ আছে বলিয়া খান্য কাহার উপেক্ষণীয় হয় ? সভা ব্যয়ের বিষয়ে গবর্ণমেন্টের সম্পর্ক রহিত করিবার প্রস্তাব বহুবার অপর্যায় গমন করিয়াছেন । এবিষয়ে গবর্ণমেন্টের কিছু কিছু ক্ষমতা থাকা উচিত, অন্যথা জেণী বিশেষের সুবিধা হেতু পলী বিশেষের উন্নতির প্রস্তাবে তাহারা যে গোলযোগের আশঙ্কা করিয়াছেন, তাহা মিথ্যা উঠবে ।

জলের করের ভারতমা করাও আমাদিগের অতিমত নহে । পরমালা হইতে তাহাতে সকলেরই উপকার দর্শিবে সন্দেহ নাই । পান ব্যতিরেকে জলের কি অন্য ব্যবহার নাই ? তাহাতে রাস্তার কিসুবিধা হইবে না । ইউরোপীয়ের বিপর্যাসার জলই পান করেন : সর্বা সাধারণ রাজস্ব হইতে কলিকাতার উন্নতির নিমিত্ত টাকা দিবার যে প্রস্তাব করিয়াছেন, আমরা তাহারও অনুমোদনকাঃ মছি । কলিকাতা উপকার ভোগী হইবে না সাধারণ সে টাকা দিবেন কেন ? কেটি বিষয়ে সভা অতি শিশুবৎ বাকপ্রবর্তন করিয়াছেন । বৃত্ত স্ত্রীলোকদিগের হস্ত প্রকাশ করিলে ক্ষতি কি ? আমরা আপন আপন স্ত্রীর নামে সম্পত্তি করিয়া স্ত্রীলোকদিগের নামে নি মোকদ্দম চর না

আমরা স্বাধীন বিচার যে কাল পর্যন্ত সাধারণ বিচার তাহা করিবার কাপটি সভা আর আর বাহ্য মিথিয়ারে সম্পূর্ণ যুক্তিসিদ্ধ । ইংরাজী পক্ষের কেরা থাকা বলুন এতদধীন স্বত্বভোগ যদি কলিকাতার স্বার্থ উন্নতি করিতে চাওন, ভারতবর্ষের সভার জালি গ্রাহ করিবেন ।

গোলভের বিবরণ ।

এক জন ইংরাজ কবি বলিয়াছেন “ স্বাধীনতা লাভের ইচ্ছা এক বার আরম্ভ হইলে যত বার পরাধীন হইতে কেন, শেষে নিঃসংশয় আর লাভ হইবে এই স্বাধীনতা লাভার্থ যত প্রয়াস হইতে আরম্ভ হইয়াছে । ইংরাজী রাজ্যে মহান রাষ্ট্র বিপ্লব হইয়াছে ২০-৩০ তাহারা যে কয়েকটি উন্নতিবিরম প্রচেষ্টা করিবার চেষ্টা পান, তাহাও প্রায় জাতির স্বাধীন নামের প্রকাশের অধঃ থাকিবার প্রস্তাবটা প্রধান । যে মেমোরি সের নাম কলঙ্কিত করিবার এক পাওয়া হইয়াছে, তিনি স্বাধীনতা জন প্রদান প্রতিশ্রুতি করিয়া ইংলণ্ড তৎকালে ইংলণ্ড ও মহাবীরের অভ্যুদয়ের অভিধা কবেন, সেই ইংলণ্ড একদেব স্বাধীনতা রণ স্বাধীনতার প্রদান বহু হইয়াছে মেসিকো ও ব্রেন্সিল প্রভৃতি প্রদেশ স্বাধীন হইয়া স্বীকার করা এবং গ্রীক ইটালিয়ান স্বাধীনতা প্রদান করা ইহার প্রদান দৃষ্টান্ত হল । অন্য পোল প্রভৃতি উন্নত করিয়া আমরা এতৎ প্রসঙ্গে প্রবৃত্ত হইয়াছি ।

আমরা পূর্বে এক বার পোল প্রভৃতি বিব্রতের বিষয় লিখিয়াছিলাম । ত পর উক্ত দেশে বহুতরী হইয়া উঠিয়াছে । রুশির গবর্ণমেন্ট বন্দবান যুবকদিগকে বন্দপূর্বক



বিত্তোদ্ধারের চেষ্টা পাওঁয়াতে বিজ্ঞা  
১। কি উক্ত ভূমিমান হয়। প্রথমতঃ ধন  
তালমীদারেরা এই কার্যের অনুমো  
দিত নাই। ইংলণ্ড ও ফ্রান্সের  
সাম্রাজ্যেরা এই বিজ্ঞা চেষ্টাকে আ  
নুকূল্য দিয়া অমান্য প্রকাশ করিয়া  
ছিলেন। কিন্তু বিজ্ঞাচারিরা ক্রমশঃ প্রবল  
হইয়া উঠিতেছে। আর যাবতীর নগর  
সেত নেমা 'মহা ও যুদ্ধ সামগ্রী যাইতে  
। সেনাপতি লাম্বুইক্স নামক একজন  
যোদ্ধা ( যিনি ১৮৩০ অব্দের যুদ্ধ  
প্রাপ্ত করেন ) দেশের প্রধান শাসন  
কর্তা এবং সেনাপতি মারারোলফি প্রধান  
সেনাপতি হইয়াছেন। ইহার মধ্যে নয়  
হইয়া গিয়াছে। সকল যুদ্ধই  
প্রাপ্ত হইয়াছে। অসম্ভব করিয়াছে। তা  
একান্ত রূপে সমুদ্র যুদ্ধ করিতেছে  
১। কিন্তু বসন্ত থাকিয়া সুযোগ ক্রমে  
যুদ্ধ যুদ্ধ বল বহু হইয়া যুদ্ধ করিতেছে।  
'শিয় সেনারা' তাহাধিগের কিছুই করিয়া  
ঠিক পারিতেছে না। স্পষ্টতঃ যে টেল  
মাধিয়াছে, তাহারা জানা গেল বিজ্ঞা  
'র ক্রমশঃ বল ও বল বৃদ্ধি হইতে  
মাধিগের আর একটি সুবিধা  
গাছে। এমিরার বর্ষেছাচারী  
হাছ নিবারণ বিষয়ে মিশিয়ার  
'দানাবী' হন, কিন্তু তাহারা এম  
'ইয়াতে অসম্ভব হইয়াছে। ইংলণ্ড,  
ফ্রান্স, ইতালী ও ইটালী ইহার প্রতিবাদ  
করিয়াছেন। এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীতিমান  
হইতেছে এমির গবর্নমেন্ট যদি মিশিয়  
'র কোন একান্ত সাহায্য দান করেন  
'তা হইলে ইংলণ্ড, ও ফ্রান্স এই দুই অস্ত্র  
'১ করিতেই সক্ষম হইবে।

অস্ত্রিয়ারা মিশিয় পল্লিকাগ করিতেছেন  
১। ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন। পোল  
কুর্ভিৎসে নিঃসন্দেহ করিয়াছেন।  
একান্ত করে, সত্যটি আলোক  
হইয়া নিজ জাতি কনকটী

নকে উক্ত দেশের স্বাধীন রাজা করিয়া  
'বার প্রস্তাব করিয়াছেন। এ সম্বন্ধ  
২। বি সত্য হয় : আর, মিশির গবর্নমেন্ট  
১৮৩৫ অব্দের সন্ধির ম্যার যদি ইহার অ  
নু, বাচরণ না করেন, তাহা হইলে পোলাণ্ড  
নিঃসংশয় পুনর্বার স্বাধীন হইবে। বিশেষ  
যত্ন : সত্য জর্জনি, মুক্তপ্রিয় ও উদারপ্রিয়  
তু স, এবং স্বাধীন ইংলণ্ডের যাবতীর  
কে কে তাহাধিগের শুভাকাক্ষী হইয়াছে  
ন যাহা হউক, মিশির গবর্নমেন্টের কর্তৃ  
বা, তাহারা নিশ্চয় বিনীত ও মজ্জ ভাব  
অনুশ্রবন করেন। আসিয়ার বন্য জাতি  
গত : সত্য করা উক্ত দেশীয় গবর্নমেন্টের  
পক্ষে সহজ বটে, কিন্তু তাহারা পরাক্রান্ত  
মত, লোকসিগের সমোরঞ্জন করিতে পা  
রেন না। পোলাণ্ড স্বাধীন হইলে জর্জনির  
পক্ষে সবিশেষ উপকার মিশিয়ার সম্ভাব  
না আছে। তখন আর মিশিয়েরা ইচ্ছা  
করিলেই জর্জনি আক্রমণ করিতে সমর্থ  
হইবে না। অতএব জর্জনির পোলাণ্ডের  
সাহায্য দান করা সবিশেষ আবশ্যিক।  
পোলাণ্ডের স্বাধীনতা জর্জনির রক্ষার  
উপায় আমরা নিঃসন্দেহরূপে বলিতে  
পারি, উক্ত দেশ স্বাধীন ও মিশিয়ার ক্রম  
তার হ্রাস হইলে সমুদ্র জর্জনি ইটা  
লির ম্যার স্বাধীন ও এক জাতিসাধারণ  
গবর্নমেন্টের অধীন হইতে পারিবে।

ইউরাসিয়ার মিররের বক্ত পরিবর্ত।

আমরা ১ লা এ প্রেলের ইণ্ডিয়ান  
মিরর দেখিয়া পরিতোষ লাভ করিলাম।  
যদি এইমিররের মিররের লেখার মার  
গ্রহণ কর যার, নিঃ সন্দেহরূপে নির্দেশ  
করা হইত পারে, আমরা এক দিন তা  
হার জ্ঞান সঞ্চার যে চেষ্টা পাইয়াছিলা  
ন, তাহাধিগের কৃতকাব্য হইয়াছে। তিনি  
সকল ভাঙা বীকার না করুন, কিন্তু তিনি  
আমাদিগের মত একটুকু হইয়াছেন। তিনি  
স্পষ্টতঃই নিশ্চয় হইয়াছেন, মারের ( কৃষ্ণ

কর্ণাধি মারের ) নিশ্চিত তাহাধিগ  
নাই। আমরা যে বরাবর বাধ্য আত্মবিরোধ  
এতি বিবেচ্য প্রকাশ এবং ধর্মের নামে  
উৎসব ক্রিয়ায় বৃথা ব্যয় নীলতার যে প্র  
তিবাদ করিয়া আসিতেছি, তিনি তাহা যু  
ক্তি, সম্ভবলিঃ। বীকার করিয়া লইয়াছেন।  
ধর্মকে সামসারিক বিষয়ের সহিত মিশ্রিত  
করিলে আমরা যে অনিষ্ট অশঙ্কা করিয়া  
ছিলাম, তিনি তাহা সমুলক বলিয়া বীকা  
র করিয়াছেন। ধর্মকে আমোদ প্রমোদে  
পণ্য বসিত করিলে তাহার মহত্ত্ব ও উদার  
ধাতক না বলিয়া আমরা যে দৃঢ়নোপন্যাস  
করিয়াছিলাম, তিনি তাহা মুক্তিমহাবলিয়া  
গ্রহণ করিয়াছেন। তবে আর তাহাধিগের স  
হিত আমাদিগের মতের অটুটতা কি ?  
তাহার যে অনুষ্ঠান আরম্ভ করিয়াছেন,  
তাহা হইতে উল্লিখিত সমুদায় লোকগুলি  
ঘটিবার সম্ভাবনা আছে বলিয়াই আমরা  
এক আপত্তি করিতেছি।

একটি বিষয়ে কেবল তাহাকে আনা  
মিররের মতের অনুমোদনকারী দেখা যা  
ইতেছে না। সে অননুমোদনের কারণ আ  
মাদিগের এই বোধ হয়, সে বিষয়ে তিনি  
এখনও পর্যাপ্ত আনুমানিক অতিপ্রায়  
বুদ্ধিতে পারেন নাই। তিনি মনে করিয়া  
ছেন, আমরা সকলকে এই উপদেশ দি  
তেছি যে কেহ ধর্মকে সংসার সম্বন্ধে না  
আনিয়া কেবল মনোমধ্যে রাখেন। আমা  
দিগের সে অতিপ্রায় মত। ধর্মকে যদি  
সংসার সম্বন্ধে না আনা যায়, তাহারা জন  
তের কি উন্নতি সম্ভাবনা আছে ? ত্রাস  
ধর্মকে যে সংসার সম্বন্ধে আনিতে হইবে,  
তদ্বিষয়ে সংশয় কি ? তবে তাহাধিগের যে  
প্রকার এক শূন্যপ্রভ অনুষ্ঠান সৃষ্টি করিয়া  
সংসার সম্বন্ধে আনিতে চাহিতেছেন, আ  
মরা সেরূপে আনিতে চাহিতেছি না।  
আমাদিগের মত এই, ত্রাসধর্ম মানুষের  
যাবতীর কার্যের শাসনকর্তা স্বরূপ হই  
বেন, মানুষকে তাহার আত্মানুসারী হইয়া

মতীরা কাজ করিতে হইবে ; মানুষের  
মন যে কার্যে প্রবৃত্তি জড়িত, তখনই  
হাকে তাবিত্তে হইবে ত্রাণার্থ তাঁহার  
মুখে সওয়ায়মান আছেন ; তাঁহার আ-  
লি পথের অণুমান অতিক্রম করিলে ৭৫  
পাৎ বস্তুভাগী হইতে হইবে। এই চিন্তা  
বস্তুর মানুষের অন্তরে জাগরু : থাকিবে।  
হই কি একমাত্র প্রার্থনীর দর ? জগ-  
তের সমুদায় লোকেরই যদি ধর্ম এই-  
পন হুতু তত্ত্ব থাকে, কেহ যদি প্রাণ-  
ও ধর্মপদ পরিত্যাগ না করে, পৃথিবী  
দুর্ভাগ্য হইবে না ?

মিরর সম্পাদকের আর আর কথা  
তর দানে আমাদিগের ইচ্ছা নাই।  
ধা তর্ক ও উপহাস রসিকতা প্রদর্শন  
রিয়া জয়লাভ করিবার নিমিত্ত আমরা  
বিচারে প্রবৃত্ত হই নাই, তত্বে পয় ত্রাণ  
অভি বশতঃ অকিঞ্চিৎকর অনর্থকুল  
তর্কবিধ অনুষ্ঠান প্রবর্তিত করিয়া জগ-  
তের অনিষ্ট সংশোধন প্রবৃত্ত হইয়াছেন।  
সেই জ্ঞান নিরাকরণই আমাদিগের এই  
বিচার প্রবৃত্তির কারণ।

যাহা হউক, আমরা ইণ্ডিয়ান মিররের  
ত পরিবর্ত্ত লেখিয়া যেমন ক্রুদ্ধ হইলাম,  
তমনি রাইয়ত ক্রেণ্ডের হুতন মন্ত্রণে  
ারণ দেখিয়াঃ হুত্বিত হইলাম। এই উত্তর  
গানেই তাঁহার বাক্যেরও উত্তর দান  
ইল। তাঁহার সম্প্রদায় হইবার নিমিত্ত  
দার আমাদিগের স্বতন্ত্র রূপধূলি মাখিবার  
ক্ষমতা নাই। “অনুষ্ঠান ধর্ম নয়” “অনু-  
ষ্ঠান ধর্ম নয়” “অনুষ্ঠান ধর্ম নয়” আ-  
মরা তিনবার তাঁহাকে শুনাইলাম, তিনি  
প্রথম কান্দ হইল, আমরা দোহ-বলবন  
করিলাম।

উপসংহার স্থলে ইণ্ডিয়ান মিরর স-  
ম্পাদককে আমাদিগের স বিশেষ অনু-  
বোধ এই, তিনি যেন আর অনুচিত অনু-  
কারী ত্রাণদিগের পক্ষ সমর্থন করি-  
ত্বাদিগকে প্রোৎসাহিত না করেন।

ত্রাণদিগের হুখা অনুষ্ঠানের আদোষে  
কাল হরণ করিবার সময় নয়, তাঁহাদিগের  
কক্ষে অনেক মহৎ কর্তব্য সাধনের তার  
পতিত হইয়াছে। তাঁহারা সেই সকল  
বিষয়ে মনোনিবেশ করুন।

### এতদেশীয়দিগের সবলকার হইবার উপায়।

আমিষ ভোজন বিরোধিতা, আর দুগ্ধ আ-  
পত্তি করিয়া থাকেন। প্রথম, মাংসাহারে জি-  
হাংসা প্রকৃতি নিহত প্রভৃতির প্রবলতা হয়।  
বিতীর্ণ, উপচিকীর্ষা হস্তির কাঁপতা হইয়া  
থাকে। ইহার সংক্ষিপ্ত উত্তর এই, আমরা  
জগতের প্রায় বাবতীর লোককে, আমিষ  
ভোজী দেখিতে পাই, কেহ মৎস্য কেহ বা  
পশু পক্ষ্যাদির মাংস ভোজন করেন, আমি-  
ষাদির সহিত নিরামিষাদির সংখ্যা করিলে  
জগতে নিরামিষাদী নাই বলিলে অসত্যি হয়  
না। কিন্তু আমরা জগতে উপচিকীর্ষা হস্তির  
হাস ও জিহাংসা হস্তির প্রবলতা দেখিতে  
পাই না। তবে যে দেশ কাল, পাত্র ভেদে স-  
ময়ে সময়ে জিহাংসা হস্তিকে বলবতী দেখা  
যায়, তাহার কারণ স্বতন্ত্র। জগতের সমুদায়  
লোকে আমিষ ভোজন ত্যাগ করিলেও এইরূপ  
দেখা বাইত। যখন আমাদিগের ক্রোধাঙ্গি  
আছে, তখন উহার কারণের কি অসঙ্গতি  
আছে? বাস্তবিক যথার্থ কারণ নয় এমনও  
নয়। কোন কোন দ্রব্য আহার করিলে কামো  
প্রেক হয়, আর কোন কোন দ্রব্য ভক্ষণ করিলে  
ক্রোধ প্রকটি হয়। এই নিয়মগতসারে মাংসাহা-  
রে উৎকর্ষলতা, সাহস উদ্যোগনীলতা ও  
উগ্রতাতির রহি হইয়া থাকে আর নিরামিষ  
আহারে, তীক্ষ্ণতা, ক্রমসহন কাঁপতা, আল-  
সা প্রভৃতি প্রবল হয় (১)। বিদ্যাভ্যাসীমাদির  
জ্ঞানভিত্তিক ইহার বহু ব্যতিক্রম লক্ষিত হ-  
ইয়া থাকে। বিদ্যাচর্চার অপভ্রাতা হেতু তীক্ষ্ণ-  
জ্ঞানিগের শঠতা। প্রভাবশালি অতি শীচ-  
রুতি সকলের প্রাক্ত্যব হুত্ব হয়, আর উগ্র-  
ব্রতাব জ্ঞানিগের নিষ্ঠুরাচরণ প্রকৃতি প্র-

(১) বাহু বস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির  
সম্বন্ধ বিচার প্রথম ভাগের ২০৪ ও ২০৫  
পাত দেখিবেন।

বল দেখা যায়। বিদ্যার উন্নতি হইলে উত্তরে-  
রই : তরাইন যোব হুস হইবে। প-  
কাতরে উগ্রব্রতাব জ্ঞানিগেরই একই ব-  
হু শুণ প্রকান পায়, তীক্ষ্ণ জ্ঞানিগের দ্বারা  
প্রকান পায় না। ইহা এক প্রকার নিষ্ঠুর  
বাক্য যে উগ্রপ্রকৃতি জ্ঞানিগের বিদ্যার উন্নতি  
বেষণ উদ্যোগ, দয়া, মিত্রপ্রভৃতি প্রকৃতি  
উদার শুণে বিকৃতিত হুত্ব হয়, প্রকৃতি প্রকৃতি  
হু জ্ঞানিগা লোক নয়। (২)। পূর্বে উক্ত  
ইয়াছে যে উত্তর অণেকা আমিষে প্রবৃত্ত  
র উক্ত পদার্থ আছে। সত্যাবস্থায়, যখন  
ব্রতাব জ্ঞানিগা অধিকতর দয়া, কমা, প্রেম  
কির পরিচয় প্রদান করিয়া থাকে, আর উত্তর  
অণেকা মাংসে যখন উক্ত কর পদার্থ প্রবৃত্ত  
তর আছে প্রমাণ হইয়াছে, তখন জ্ঞানিগ  
র প্রবৃত্ত পাও প্রকৃতিই এতদেশবাসির  
পরিমিত আমিষ ভক্ষণ করিলে আমিষ আ-  
রা যে অধিক ইষ্টলাভ হইবে তাহিরই সন্দেহ  
হ কি? ৩০৭

একদে আমরা ব্যারামের আক্রমণ  
প্রদর্শন ও গুণবর্ণনে প্রবৃত্ত হইলাম। প্রাণিক  
ও মাংসপেশী আমাদিগের শারীরিক বলের  
মুখ্য কারণ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। সে-  
নিত ও মাংসপেশীর অবস্থানিবহন আত্মা  
গের শরীর সবল বা দুর্বল হইয়া থাকে।

ত হইবে এবং মাংসপেশী বেদন গু-  
হইবে তদুপাসারে শারীরিক বল হুতি  
এতদ্বিধের প্রবিখ্যাত ভাষ্য (৩)। আত্মা  
সাহেব বাহা বলেন তাহার কোন কোন অংশ  
পাঠকদিগের গোচরার্থ আমরা নিম্নে উদ্ধৃত  
করিলাম। তিনি বলেন “সর্বত্র মাংসপেশীর  
সকলম জায়া আমরা জীবন ধারণ করি-  
তেছি। ৩০৮। সকল মাংসপেশী যারা নিবান

(২) প্রকৃতি প্রকৃতি লোকে যখন  
চর উত্তর শুণে বিকৃতিত হয় না বলিয়া  
প্রবৃত্তাব্রিত ব্যক্তির গুণপ্রকৃতি অসমর্থ  
ইয়া তাহার দোষ কীর্তনে আশ্রয়  
করেন।

(৩) তাঁহার নিরচিত কিম্বদন্তি  
পায়েত ই হে লুৎ এও এতু কেশন নামক  
লেখিবেন।



পাশ প্রভৃতি জিরা সম্প্রতি হইতেছে, তাহারা যদি কয়েক নিমেষ কাল স্থগিত থাকে তাহা হইলে অবিলম্বে মৃত্যু উপস্থিত হয়। মাংসপেশীর সহায়তা ব্যতিরেকে মস্তিস্কের প্রতিক্রিয়া ও মানসিক উচ্চতর জীব সকল গায়ে কখনই পরিণত হইতে পারে না। সজ্ঞান ও কণ্ঠ বিরোধ এবং অন্যান্য ঘোড়ার রূপে পতিত হইয়া মস্তব্য মাংসপেশীর ল ব্যতিরেকে খোর অস্তর বেরনা প্রকাশ করতে সক্ষম হয় না। মাংসপেশীর সঞ্চালনেই আমরা শারীরিক বল প্রাপ্ত হই। কোন একটা মাংসপেশী পরিমিত রূপে সংশ্লিষ্ট হইলে তাহাতে অধিক পরিমিত রক্তের জোড় প্রবাহিত হয় সুতরাং তাহার উত্তর ৩০ হুতা প্রভৃতি হুতি হয়। পরি-  
 পূর্ণ জ্ঞান নিবন্ধন কেবল মাংসপেশী সঞ্চালিত প্রাপ্ত হয় এতদ নহে, রক্তেরও পরিমাণ হ্রাস হয়। মাংসপেশীর মধ্যে রক্তাধার সকল সংস্থাপিত রহিয়াছে, মাংসপেশীর সঞ্চালনে সেই সকল রক্তাধার হইতে শাখিত নির্গত হইয়া বেগবতী জোড়বতী-  
 ন্যায় শরীরস্থ নানা স্থানে প্রবাহিত হয়। মাংসপেশী ও রক্ত এই দুই পদার্থের পরস্পর যোগ যেমন প্রত্যেক হুই হয় সেদপ-  
 অন্য কোন বস্তুতে নয়নগোচর হয় না। মাংসপেশী সঞ্চালিত হইলে শরীর মধ্যে রক্তের বেগ ও পরিমাণ হুতি হয়। রক্ত প্র-  
 ক্রম পরিমাণ হুতি হইলে যে যে স্থানে সঞ্চালিত হয় সেই সকল স্থান পুষ্টি পাইয়া, পরিভ্রম করিলে রক্তের পুষ্টিসাধক পেশের হ্রাস হয় সেট ক্ষতি পূরণ করিবার জন্য অধিক পরিমাণে ভোজন করিতে হয়। এই অতিরিক্ত আহার পবিপাক করিবার জন্য ক্ষুধা ও পাকশক্তি হ্রাস হয়। সুতরাং শাখিত এই প্রকারে প্রাপ্ত হইয়া শীত শো-  
 খিত হইবে মলিয়া পরিভ্রম কালে 'আমাদি-  
 গের নিশ্বাস প্রবাস হুতি হয়। এই রূপে শো-  
 খিত শোখিত হইয়া শরীরস্থ সঞ্চিত অম্ল প্র-  
 ক্রম হুতন বল বীৰ্য প্রাপ্ত হয় সুতরাং মস্ত-  
 অধিকতর পরিভ্রম পূর্বক কাব্য করিতে সক্ষম হয়। ৩

পদ প্রক, বাহারোহণ, ব্যায়াম প্রভৃতি

নানা উপায় দ্বারা শরীর সঞ্চালিত হইয়া থাকে। ইহার মধ্যে মস্তিষ্ক দ্বারা মাংসপেশী সঞ্চালন অধিকতর হুত হয়। শরীর বিধান বিৎ পণ্ডিতেরা সুস্পষ্ট রূপে ইহার কারণ নি-  
 র্দেশ করিয়াছেন। বিখ্যাত আণ্ড্রু কুথ সাহেব বলেন "পরিভ্রম কালে নানা প্রকারে যত শরীর সঞ্চালিত হইবে, তত তির তির মাংস পেশীর শোখিত বেগ হুতি হইবে সুতরাং মাংস পেশী সঞ্চালিত না হইলে বাহ্যিক কল্যা-  
 তের সজ্ঞান থাকে না। শরীরের যে অঙ্গ-  
 পরিভ্রম করিবে কেবল সেই অঙ্গের মাংসপেশী সকল সঞ্চালিত হইবে। কিন্তু শরীরের এক মল নির্যত সঞ্চালিত হইলে সেই অঙ্গের মাংসপেশী ক্ষান্ত ও দুর্বল হইয়া পড়ে কখন পরিভ্রম, কখন বিজ্ঞান এই নিয়মানুসারে মাংসপেশীদিগকে সঞ্চালিত করিলে শরীর সুস্থ ও বলিষ্ঠ হয়। ২ ব্যায়ামের অত্যাস হ-  
 রা কুথ সাহেবের এই সকল উপদেশ যে রূপ পালন করা হয়, অন্য কোন প্রকার শারীর প-  
 রিভ্রম দ্বারা সেক্ষণ হয় না।" বাহারি কখন কুস্তির আখড়ায় গমন করিয়াছেন তাঁহারা আমাদিগের মতের পোষকতা করিবেন সন্দেহ নাই। এতেনে যে রীতির অনুসারে (৩) ব্যায়াম করা হয় তাহাতে প্রাপ্তি কল লা-  
 তের সজ্ঞান অম্প, প্রত্যুত কখন কখন অ-  
 নিষ্ঠ হইয়া থাকে। কেবল শীত কালে না ক-  
 রিয়া, প্রতি দিবস প্রত্যুত—শীত কালে অ-  
 ধিক, গ্রীষ্ম ও নবা কালে অম্প—ব্যায়াম ক-  
 রিলে আশাশ্রিত ইষ্ট কল্যাণ ও হয়। উদাহরণ স্বরূপ একটা বিষয়ের উল্লেখ করা বাইতেছে, এদেশের এক তরলোক বাল্যাবধি চতুর্দশ বৎসর বয়স্ক পণ্ডিত অত্যন্ত রুগ ও দুর্বল ছিলেন। ১৫ বৎসরের সময় তিনি ব্যায়াম আরম্ভ করিলেন। তিনি যে বৎসর কুস্তি-  
 র আখড়ায় প্রবেশ করিয়াছিলেন তাহা-  
 র পর বৎসরে তাহার শরীর এমনি শীত ও সবল হইয়া উঠিল যেখিয়া একটা বীরের মত বোধ হইতে লাগিল। তাহার অবস্থা হুতির

৩ বাল্যালি দিগের মধ্যে অত্যন্ত লোকে ব্যায়ামাভ্যাস করিয়া থাকেন, বাহারি কুস্তি করেন তাহা দিগের মধ্যে অনেকেই কেবল শীত কালে করেন।

সঙ্গে সঙ্গে, সাহস গুণেবও বিলম্ব হুতি হইয়া উঠিল। এতলে আর একটা উদাহরণ প্রদর্শন আবশ্যক হইল। এক ব্যক্তি বাল্যকাল অবধি শ্যায়ন অত্যাস করেন। ৮০ বৎসর বয়স্ক কালে প্রায় বাল্যলী মাত্রেয়ই শরীর লেল হয়। নিম্ন উল্লিখিত ব্যক্তির অশীতি বৎসরেও যাবৎ প্রতি দৃষ্টি কপ না করিয়া কেবল শরীরে প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে উ-  
 হাকে ২০ বা ৪৫ বৎসরের অধিক বয়স্ক বলিয়া বোধ হইত না। তিনি সেই পূর্ণ বয়স্ক শরীর ও অম্প পরিমাণে কুস্তি কবিতেন।

পরিভ্রম কালে চিত্তের প্রতিক্রিয়া ও উৎসাহ থাকি অতিশয় আবশ্যক। আন দিগের মনে অবস্থার প্রতি পরিভ্রমের ফলাফল অনেক পরিমাণে নির্ভর করে। এ ৫ দিবসে কুথ সাহেব যে যে কথা বলিয়াছেন তাহা এতলে উল্লেখ হইতেছে। পরিভ্রমের শুরু কল চোখে কারণ আমাদিগের নানা মধ্যে নিহিত আবেগ তাহার প্রতি হতাশ হইয়া পরিভ্রম করিলে আমাদিগের শরীরকে প্রবণতা করা হয় মাংসপেশী সকল মনের অধীন। মনের আ-  
 জ্ঞা বহন করিবার জন্য তাহারা হুই হইয়া ছে। ৪ কুথ সাহেব এট মতপোষক এক দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়াছেন। তিনি বলেন "কো রণক্ষেত্রে যখন শত্রু উপস্থিত না থাকিত করানী সেনাগণ নিরুপায় ও দুর্বল হইত। কিন্তু রুলিয়দিগের তাণ্ডান তান-  
 দিগের কণ কুহরে প্রবেশ করিয়া ন'ত্র ত হ-  
 রা যেন কোথা হইতে প্রতন বস প্রাপ্ত হইত। কিস্তি পূর্বে তাহারা যে সমস্ত গল্প বহন করিতে অত্যন্ত রূপ বোধ করিত, পার-  
 বদনে সেই সেই অঙ্গ পত্র পুষ্টি বহাবে নিক্ষেপ করিত।

বয়স্ক, বল, শরীরের অবস্থা এক পূর্ণাঙ্গ, এ সমস্তের অনুসারে পরিভ্রম করা উচিত। এ এক'র নিয়ম অবলম্বন করিবার কারণ কুথ সাহেব সুস্পষ্টরূপে লিখিয়াছেন। তিনি বলেন "শরীর অনবরত ৫ ও পুষ্টি হইতেছে; যখন কোন অঙ্গ পরিভ্রম

৫ নিশ্বাস প্রবাস অঙ্গ চালনাধি নিব-  
 শরীর অঙ্গ এবং আহারাদি দ্বারা পুষ্টি হই-  
 থাকে।





ভারতবর্ষীয় গণপরিষদে তৎকালে যেমন  
রুলস উল্লেখ আছে, 'দয়াদেব প্রায়ঃ ১৮৮০  
সালের প্রধান বিচার পণ্ডিত ও কলিকতা জাজ  
সাহেবসহ অন্যান্য এক সম্মেলন বিদায় পা-  
রেন, বিদায়ের সময়েরে ডাঃ/পিগকে ৫০০০  
১০০০ টাকা দেওয়া হইবে।' 'মিরশিয়ার'  
পের বিদায়ের বিষয় যে নিগম আছে তা  
সালে দেওয়া হইবে। অন্য অন্য রকমে অ-  
ক যেতেনে টিকিৎসকের সার্টিফিকেট হয় না  
গনহ মাস বাৎসরিক মাস সহস্র টাকা  
নে বিদায় লইতে পারিবে, উক্তর অ-  
কাল অধিকার থাকিলে কথং থাকিবে না।  
শেখ কার্খান্দারে যে ১৮৮০ সালে

না লকলকে বিদ্যা দেওয় হাট । বদায়ের  
ল পোন্দমের সময় কাই । হাট । পবি  
ডিউইন ।

[illegible]

টাইমস অফ ইন্ডিয়া'র এক জন প্রজ্ঞাপন  
মত এক জন মন্ত্রী, 'লোক কঠি হই'  
বলি শুভ কবিতা হই। অনেক দ্বন্দ্ব এক  
কালই এই প্রকারে মনুষ্য হইতেছে  
হিম্মত আছে। অনেক মন্ত্রাজ্ঞা ওলাউঠা  
হইতেছে।

२७५ ई० : अग्निवर्ष ।

পঞ্চ কলা টাউনহাউসে ফল গুল প্রকৃতি দ্রা  
খাদ্যকে দেখান হয়েছিল।

উৎসাহময় বক্তব্যে আশ্রিত হওয়াটাই সত্য-  
তার তুল্য জলধি। হঠাৎ বেঁচেই যে আসিতে  
লাগে। সেইদিকে উদ্দেশ্য ও নিষ্ফলতা  
একান্তিঃ সমস্ত তত্ত্বাবধান চলেছে।

পাবনা হঠাৎ এক বা, ৬ লিখিয়াছেন.  
এ বৎসর পাবনা নগরে যে কণ্ঠ ভয়ানক  
ছিক;ও হইল, বাই:ভায়ে, তাহা প্রবল করিলে  
,পনি টমংকুত হইলেন। ঐহ পতাহট প্রব-  
খটিক! সহকায়ে এ গা লাগিয়া ২০। ২৫  
না বাড়ী কন্যাশালব করিতেছে। ১৪ই টেং  
জ' তিনি ষটীর সময় সহসা বাধা লগবে  
খু লাগিয়া, বাধা'লগর ছোট শালগাড়িয়া  
২ শিবরামপুর এই 'ভনটী স্থান একেবারে  
ব খার করিয়া গে'লিয়া'ছ। একটা হুঙ্ক বিধবা  
একটা বালক এবং এটি গরু অর্ধদণ্ড চই  
ছে, তাহা'নিগের আয়ন হকার বড় ভরসা  
হই।

এছাড়াও পাবনা জেলা সার্বজনীন উন্নয়ন কমিটি  
একটি জিওগ্রাফিক্যাল মেমোরি বই প্রস্তুত  
করেছে। এছাড়াও পাবনা জেলা সার্বজনীন উন্নয়ন  
কমিটি একটি জিওগ্রাফিক্যাল মেমোরি বই প্রস্তুত  
করেছে। এছাড়াও পাবনা জেলা সার্বজনীন উন্নয়ন  
কমিটি একটি জিওগ্রাফিক্যাল মেমোরি বই প্রস্তুত  
করেছে।

একাংশ সন্নিহিত হইল এবং বলিয়া। যাহা হইল, যে  
এই বালিকা বিদ্যালয়ের উন্নতি ও উন্নতি সাধন  
জন্য তিনি যথোচিত সহযোগিতা করিবেন।”

ইউরোপীয় ব্রিটিশ বেলেন সাক্ষ্যমান স'কেব  
আকাশ লওয়াতে বারু ক্ষেত্রবোচম চট্টোপা-  
ধ্যায় বাঙ্গলাদেশের প্রতিনিধি সিবিল জাতিটর  
চট্টোপাধ্যায় ।

## ইউরোপীয় সমাধার

লগুন ১০ই ম'চ—সব জে ম'অ টেব্রাম  
কালগ্রামে গতিত হইয়াছেন। ইংলণ্ডে  
পোল গের বিবয়ে মধ্যস্থতা হইয়া  
ক'র'ব সজ্ঞান করিয়াছেন। তুল। অত্যন্ত  
মহার্জ ১৫ইয়া হ।

নাইটবর্ক ২৭৫ ফেব্রুয়ারি—৩১ মার্চ মে  
বি। বাপালগ মদীৰ পদ পাবে গমন কৰিয়া ছ।  
দক্ষিণাংশৰ মেম্বাৰা কেটিক ও অলাগাৰাত  
পৰা জিত হইয়াছ।

নিউইয়র্ক ২৮ এ কেব্রুয়ারি—দ' কণাংশের  
জন ১-ক্লবগে থাঙ্কসগে করিয়া উত্তরঃ ১২শন এক  
খানি কাহাজে অধিকার কনিয়াছে। উত্তরঃ ১২শন এক  
মনাগণ নিউঅ'ল'এ কন কিবিয়া আ'নিয়াছে।  
এক'প'তি লিঙ্কলনের উপর উত্তরঃ ১২শন বি-  
জি'গন লে,কনিগেন বিচ্ছেদ ভাব হুঙ্কি হইয়া  
ছে। স্ববর্ণে ১২ টিকা প্রি'মিয়ম হইয়াছে।

১৯এ মার্চ—মেইলযোগে চীন-মশ হটত  
মশ আ ময়াকে বিক্রয় করা। টেবাম ও শাও-  
ইতে জরুরীত করিয়াছে।

সমুদ্রের বিক্ষুব্ধ সেনারা পুনর্বার পাহা  
জিত হইয়াছে। পিকিন হইতে কোন সন্ধান পা-  
ওয়া যায় নাই। জাপান গবর্ণমেন্টের যুদ্ধ সং-  
ক্রান্ত বিষয় দিন দিন উৎসাহ বৃদ্ধি হইতেছে।

ক্রিকে। ১১ই ফেব্রুয়ারি—সেনাপতি জ।  
ফ্রিউইজ আপনাকে পোন্ডিচের ডিক্টেটর ও  
জাতিসংঘের গবর্নমেন্টের প্রধান বলিয়া  
ঘোষণা করিয়া দিয়াছেন।

মিউইজর্ক ২৮এ লেক্সারি—সেনাপতি হা-  
লেক হাণ্ডিলড ও আবকেনসন নগর দখ-  
ল করিয়াছেন। এই যশে বিশ্বাস্তা যে সেনাপতি  
বসনমাইড পোর্ট হালে ৩টা রকেট বিমান দ্বি-  
ত্যাছেন।

লগুন ৭ই মার্চ—উত্তরান কোজিল সভার  
অতিথিত কর্তৃপক্ষারিদিগের আবেদনের বিষয়  
বিবেচনা হইতেছে।

আমেরিকা ২১ এ যাত্রা — মিউজিক টা-  
ইমন বলেন, অন্য কোন গবর্ণমেন্টে স্বাধীনতা  
কে যদি স্বাধীন বলিত! স্বীকার করেন আমের  
রিকার গবর্ণমেন্ট এই নিষেধনা করিবে যে  
তাহারা আমেরিকা সশস্ত্র বুদ্ধ ধোবন। সশস্ত্র  
বিলেন যে মহাদ গজ এই রূপ অনুমান করেন  
যে ক্রীক দুইবারের মধ্যে স্বাধীনতা কে স্বাধীন  
বলিত! স্বীকার করিত পাটোন। স্বাধীনতা

কলেস সভায় প্রস্তাব চাইয়াছে যে, আসামি, মে  
স'স পর্যায় যে পদার্থেই হকিননাথকে আশী  
বলিয়, স্বীকার না করিবেন তাহার হকিননাথকে  
যে একেই আছেন তাহাকে তথা হইতে আ-  
স্থান করা চাইবে। উক্তবাংলার মেসার্সা বিন  
'হন চাবলটন ও চেভানা অ্যাকসনকে চেষ্টা  
করি'তছে। বিরূপর্ণে অত্যন্ত গীতার প্রাধিকার  
হইয়াছে। সুসংগত প্রকৃতি উপকূলক মেন  
সকল নি'সিলিপি মদীন ক'ল প্রা'বিত হইয়াছে।  
'জনা'গ'ব নিকটে উক্তবাংলার অনেক কামাক  
র হয়'হ। পোল কা'র্ডনাল একোমেসিল'র কপ  
প'তিভা'গের আবেদন অগ্রাহ্য করিয়াছেন।

কুমিল্লায় চাইতে সমান পানি পান্যে যে কুমিল্লা  
র সমস্ত পানি পান্যে একটা পানি পান্যে  
বেন। ডিউক কনটোলইষ্টান উভার পানি পান্যে  
স পুরুত্ব হইবে।

সকল ওরা বার্তা—ইতিহাস আকিসমরিত  
আব একখানি আনন্দন পত্র পালি  
সত্য সত্যিও ইতিহাসে।

সর জি, সি লুটেন ব'লগাহেন যে ১৮-৯-৪৭-  
ক'রীম বেশ লুটেনে যে অর্থ লাভের ব্যক্তি তাঁর  
এখন আর তাঁর পরিচয় নেওকা লুটেনে না।

কর্ণেল নর্থ জিহাদা করিতে ৭২ ডায়ালস  
উত্ত বলিয়াছেন বর্ণাধার মুঠ এষ্ট আর্থ ৩ ১/২  
বিভাগ করিয়া দেওয়া চাইবে।

বিজ্ঞান-কালে বাঙ্গালদেশের যে সমস্ত  
শ্রীমন্তর আফিসার প্রাণত্যাগ করেন, তাহাদি  
ন স্মরণার্থ চিত্র নীচ, কলিকাতায় পাঠ  
হউবে।

52

গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন ।

বাল্যাক্রমণীয় লেপ্টোমাইনোগ্রাফের  
আবেশনায়গারী নিয়োগ।

১৮-ই মার্চ—রোববারে ৩ টি মি. কিল. সাং  
মেন্দীপুৰৰ বিবাদকাৰ্য্যকৰি সেশ্বিন্টৰ -  
হেন।

এইট এসে যে ওয়েইলস্‌ যশোহর-রত  
কান-জাঁও লোপাল ক'ছটির মেঘর হুইং  
জাণনা-মোহর 'ভারপ্রাপ্ত' ভেগুটি -  
হুইট ও ভেগুসে কালেক্টর 'মোমারী' দী-  
হগলি ও ব'জ্জি-মোহর 'মাজি-হুইটের' সন্মু-  
তা পাউবেন ।

মর্গা বিভাগেও তেপুজি মাজিঃ হুট ও ১৮৬১  
জালেটের মৌলবী মহম্মদ আলি ধা ১৮৬১ অক্টো  
২০ আইনের ২২ ধারা ও ১৮৬১ অক্টো ১০ আই-  
নের ১ ধারা অনুসারে মেদিনীপুরের ১৫ জে-  
মীর অধীন মাজিঃ হুটের ক্ষমতা পাইবে  
এবং উক্ত আইনের ৩৮ ধারা অনুসারে, যাহা  
নতম বিচারালয়ে আনিবার উপযুক্ত ধরনের  
বা মোবিয়াতির এখন ক্ষমতাসম্পন্ন হ  
পারিবেন, আদালত ১৮৬৬ অক্টো ১  
২ ধারা ও ১৮৬১ অক্টো ১৬ মিলন ও  
অক্টো ২৩ আইন অনুসারে, সি. ১৮৬৬



পন্থা পিতৃ পুত্রি মৃত্যুকে স্বাধীনতা।  
অনুলা অধিকার প্রদান করিয়াছেন, তিনি  
পুত্রি অনেকই মৃত্যু মৃত্যুর প্রদান করিয়া  
যাছেন, অমর। অমর। এম এম এম এম এম  
তাঁহাধিকারকে মৃত্যুতত্ত্ব করিয়া ফেলিয়াছেন।  
তাঁহা করিলে অবশ্যই তাঁহাধিকারকে পুত্রি  
ও মৃত্যুকে মৃত্যু পুত্রি। অতএব অমর মৃত্যু  
র প্রতি নির্ভর করিয়া পুত্রি কর্তৃক মৃত্যুকে  
তাঁহা, মৃত্যু, উহা, হইতে অমরকে পুত্রি হইলেন  
তাঁহা হইলে মৃত্যুর অমরবোধ পরিভ্রম করিয়া  
আমি মৃত্যু লৌকিক অমরবোধ রক্ষার জন্য  
হইতে হইবেক না। দেখুন অমরবোধ মৃত্যু  
পন্থা হইলে অধিক পন্থা সমর্থন করিয়াছেন, অ  
পন্থাকে বহু সংখ্যক লোকের উপর আধিপত্য  
প্রদান করিয়াছেন, অমর। সেই অমরবোধ  
কমতামৃত্যু উপত্যকের জন্য তাঁহার নিক  
মৃত্যু করিয়াছেন। তিনি বাহ্যিক মৃত্যু  
তাঁহার নিকট হইতে তাঁহা করিয়াছেন এই  
তাঁহা মৃত্যু অমর। অমর, ওমরবোধী ক  
করুন। অমরবোধী মৃত্যু করিয়াছেন কি অমর। হই  
মৃত্যু। তাঁহার পুনরুত্থান করিতে সক্ষম ন  
মৃত্যু কি অমরবোধী মৃত্যু করিয়াছেন? যে সে করিয়া  
আমি হই, ইচ্ছা করিয়া হই, অমর। হইবেক

২। দৈনিক জেনার প্রধান কুলীমজি-  
কৃতদার পায়েব নার দ্বিতীয় পায়েব কন্যা  
বাস্তান প্রথা নাহি। তাঁহারা যদি দ্বিতীয় পাত্র  
কন্যাদান স্বীকার করেন, কৃতদার পাত্র  
স্বীকার করিতে পারিবেন না। তাহাও আমরা  
স্বীকারে পারিলাম না, পাত্রের কোন স্বত্ব  
কৃতদার পায়ে কন্যাদানের দিকের নাই।  
পত্র চক্ষে দ্বিতীয় পাত্র আর কৃতদার পাত্র  
আমাদের ব্যবহারও আছে, যিনি কুলীমজি  
দ্বিতীয় পায়ে কন্যাদান করেন, তিনি  
হইয়া বান, ঐরূপ যিনি কৃতদার পায়ে কন্যা  
দান করিবেন, তিনিও ছোট হইয়া বাইরের  
বেলাতনগণের মিশ্রপুত্রকের যে স্থানে দ্বিতীয়  
পাত্র ও কৃতদার পাত্রের এসম্মত করিয়াছেন, তা  
স্থানটি খুলিয়া দেখিবেন, তাহা কুলীমজি  
দিগের বর্তমান ব্যবহার বিষয়ে স্মৃতিস্তম্ভ  
নাই, বর্তমান ব্যবহার পরিবর্তিত হইয়া  
ব্যবহার এতলিত করিবার প্রচেষ্টা হইয়া  
তদ্বিষয়েই হইয়াছে। বেলাতনগণের  
আমা প্রাচীন উত্তর দান ইচ্ছাও নাই  
হাছে, আর বর্তমান উত্তর দিবার প্রাচীন



শ্রীমৎ কবিরাজ চন্দ্রদাস বসুসাহেব ৩ পৃ.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

২। টেলিক প্রেমের প্রধান কুলীনদিগের  
কৃতদান পাত্রের ন্যায় দ্বিতীয় পাত্রেও কন্যা  
বান্ধন প্রথা নাই। তাঁহাদের দ্বিতীয় পাত্র  
কন্যাদান স্বীকার করেন, কৃতদার পাত্র  
স্বীকার করিতে পারিবেন না তাহাও অসম্ভব  
কৃতদার পাত্রে কন্যাদানের নিবেদন নাই।  
প্রের চক্ষে দ্বিতীয় পাত্র আর কৃতদার পাত্র দুই  
আমাদিগের ব্যবহৃত ও আছে বিনী কুলীন  
রা দ্বিতীয় পাত্রে কন্যাদান করেন, তিনি ছে  
হইয়া বান, একপ বিনী কৃতদার পাত্রে কন্যা  
দান করিবেন, তিনিও ছোট হইয়া যাইবেন।  
বেলাকবানীশ নিজপুস্তকের যে হাদে দ্বিতীয়  
পাত্র ও কৃতদার পাত্রের এসম কবিতা আছে, সেই  
হাদটি খুলিয়া দেখিবেন, তাহা কুলীন টেলিক  
দিগের বর্তমান ব্যবহার বিদ্যে লিখিত  
নাই, বর্তমান ব্যবহার পরিবর্তিত হইয়া  
ব্যবহার এতলিত করিবার ক...  
তদ্বিষয়েই হইবে।



যেন যুগ্ম প্রাচীর করতঃ উদ্ভবিত  
সেইকারণ যথার্থ উক্ত প্রাচীরে বিরত না  
হইবে।

আমার কুলস্বজ্ঞ প্রাণ পরিবর্তন বিষয়ক  
কৃত্তকে বিজ্ঞানভাষ্যেব ভাষ্যিণি যে দুইটি বিষয়ে  
নিপতিত আছে, তাহার প্রথমটি এই, তিনি  
যাহের অব্যবহিত পূর্বে বাগদান করিতে  
হেন। তদ্বিষয়ে আমার প্রাণ এই যে, কুলীন  
কুলমৌলিকের বাগদান ভেদরূপ সামাজিক  
ব্যবস্থা করিয়া কুলস্বজ্ঞ পরিবর্তন পূর্কক  
কৃত্ত প্রাণ প্রবর্তিত কৰা করিয়া কি না।  
২ সামাজিক লোকের একত্ব লৌকিক যুক্ত  
লোক। ৩ সামাজিক যুক্তের বল অধিক কি  
না।

১৯এ চৈত্র মঙ্গলবার  
শ্রীজানশচন্দ্র বেদান্তবাগীশ

### শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়গণ।

কলুটোল, চৈতন্য মঠ।

প্রায় দুই বৎসর অতীত হইল এই কলুটোল  
মঠে কালে কোন মণ্ডারান ভবনে চৈতন্য না-  
ম একটি মঠ সংস্থাপিত হইয়াছে, এত রবি-  
র অগত্যাতে শ্রীযুক্ত বৈষ্ণবচরণ বাবাজী  
কর্তৃক ও চৈতন্যচরিতামৃত পাঠ করিয়া নাম  
কীর্তন করিয়া থাকেন, এবং উক্ত মঠে  
ও অভিনবির আচলারী হইয়া ইতি পূর্বে  
তত্ত্ববিশেষ গলদেলে দীর্ঘ। নাকিরা সভান-  
গর মন উন্নতিসত্ত কবিয়া নিজ অতীত নিষ্ঠ  
হাছেন। প্রায় এক মাস অতীত হইল উক্ত  
মঠের কোন সহচর এত অগুরু স্বপ্ন দেখিয়া  
হল, সেই স্বপ্ন হস্তান্ত অতি চমৎকার, তাহা  
মহাশয় প্রভি রবিবারে ঐ বাবাজীর পাঠ  
করিবার নিমিত্ত উক্ত সভার অধিষ্ঠিত হন  
পশুত্ব আশনাভাবে স্তম্ভারমান থাকেন,  
অগুরু পাঠ প্রবণে একমুগ্ধ হইয়া  
সম্মতিতে করিতে অস্বস্তি হন। সহচর  
হইয়া বৈষ্ণবচরণকে আদোষপাত  
বর্ণনা করিলেন, তিনি শুনিবার  
চৈত্রে শকটারোহণ করিয়া তত্ত্বগণের হানে  
মন পূর্কক সমস্ত ব্যক্ত করিলেন। তত্ত্বেরা  
কলুটোলে যয় হইয়া আসন গোলাব ও পু-  
র মঠের আয়োজন করি ত আদেশ কবি-  
য়া উক্ত মঠে গিয়া সতীতে প্রতি রবিবারে হা-  
ত থাকে। তত্ত্বগণের তত্ত্বের প্রবলভাতে  
১৯ই চৈত্র রবিবার দিবা পাঁচ ঘটিকার সম-  
য়টিক বস্তু সমভিঘ্যাহারে শকটারোহণে সভা-  
উল্লসিত হইয়া বাজ বৈষ্ণব মন সমুদয়ে বি-  
মলসে বসাইলেন অমলসে তিনি যোগবলে  
সত্তে পারিলেন চৈতন্য প্রভু দেহ ধারণ করি-  
য়া গিয়াছেন। অতএব তিনি তত্ত্ব গদ্যাদ ও  
কবিতা করিলেন এতদ্বারা ১৭ আপ-  
ন্য কবি কলুটোল মঠে ১৭ আপ-  
ন্য কবি কলুটোল মঠে ১৭ আপ-

সম্পাদক মহাশয়। আদোষপাত একল লোক  
কলিকাতার মন করিতেছে। হায়! এসকল লো-  
কের কত মন চৈতন্য হইবে। এতাবকেরা আ-  
জিও উচ্চারণক অনার্য্যে এ কলিকাতা বড়  
ইয়া। কলুটোল বড়িতে গাবিতেছেন না।  
কলুটোল। } আগমনকার নিতাও বসন্ত  
২৭ মার্চ, ১৩১০। } বটবাগান

সম্পাদক মহাশয়। আদোষপাত একল লোক  
কলিকাতার মন করিতেছে। হায়! এসকল লো-  
কের কত মন চৈতন্য হইবে। এতাবকেরা আ-  
জিও উচ্চারণক অনার্য্যে এ কলিকাতা বড়  
ইয়া। কলুটোল বড়িতে গাবিতেছেন না।  
কলুটোল। } আগমনকার নিতাও বসন্ত  
২৭ মার্চ, ১৩১০। } বটবাগান

### মহাশয় শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয় সমীপে।

মহাশয় অমূল্য পূর্কক নিম্নলিখিত পত্রি-  
কা ধানি আপনার আগামী সংখ্যায় প্রকাশ  
করিলে অভ্যন্তরীণ হইবে।  
আপনার একান্ত বশব্দ  
আর এস মার্চ।  
বঙ্গ দেশের পূর্কক বিভাগস্থ বিদ্যালয়  
সমুহের ইন্সপেক্টর।

বঙ্গদেশের পূর্কক পূর্কক বিভাগস্থ বিদ্যালয়  
সমুহের ইন্সপেক্টর বোঃ আর, এস, মার্চিন  
সাহেবের প্রতি।

মহাশয়! আপনার ১১ ফেব্রুয়ারি দিবসীয়  
১২২৯ বছরের পত্রিকাতে ভেলা কবিতাপুস্তকের  
অন্তর্গত কালীকান্দিপুর নিবাসী বাবু বরদাকান্ত  
শিকদারের ভাষায় পদ্যমেট বঙ্গবিদ্যালয়ে  
তিন বছরের নিমিত্ত চারি টাকার একটি ছাত্র  
হস্তি প্রদানের সম্বন্ধ প্রাপ্ত হইয়া অভ্যন্তরীণ  
হইলাম। উক্ত মহাশয় বোঃ পূর্কক অর্থ ও  
কমতা দ্বারা আপনার অজ্ঞাতের কাম বর্জনে  
অগ্রসর হইয়াছেন দেখিয়া বৎসরেমালি প্রীত  
হইলাম। ইহা আমার সম্পূর্ণ ইচ্ছা সে একবিধ  
ছাত্রহস্তি ও পুরস্কার দাতাগণের নাম করণ হয়।  
আপনি অমূল্য করিয়া বাবু বরদাকান্ত শি-  
রকে আমার ধন্যবাদ জানাইয়া করি।  
আমি ভরসা করি তিনি এই ছাত্রহস্তি এক  
তত্ত্ব বিত্ত দ্বারা চিরস্থায়ী করেন।  
তাহার নাম অনন্তরবৎসরগণের  
দেবহিষ্টমী বলিয়া পরিগণিত হইবে।

আপনার একান্ত  
ভবনিত, এসু এট  
প্রাচীর বিদ্যাভাগনে

যশোবন্তের পুস্তকালয়  
১২৩৯ মার্চ হইতে ৭০ পৌষ ১২।  
টোপা বাহন মৈত্র  
১২৩৯ চৈত্র হইতে ৭০ ফাল্গুন ১৩।  
বাক্স, হি আনন্দ, মাপ সাধু, পু। (ম)  
১২৩৯ মার্চ হইতে ৭০। (ম)।  
ছাত্রসংস্থা বঙ্গ  
১২৩৯ মার্চ হইতে ৭০। (ম)।  
মহাশয় আশুতল বঙ্গ  
১২৩৯ চৈত্র হইতে ৭০। (ম)।  
গোবিন্দনাথ গুহ  
১২৩৯ কাঙ্ক হইতে ৭০। (ম)।  
তোলানাথ গাল বি  
১২৩৯ মার্চ হইতে ৭০। (ম)।  
শাসন বঙ্গ বায়চৌধুরী  
১২৩৯ চৈত্র হইতে ৭০। (ম)।  
শ্রীচন্দ্র সাধন পুস্তকালয়  
১২৩৯ মার্চ হইতে ৭০। (ম)।

### সোমপ্রকাশ সংগ্রহ করণের

অগ্রিম মুদ্রা ও পটলে দক্ষবলে সমস্ত  
কাল প্রবেশ করা যায় না।  
ইহার অগ্রিম মুদ্রা বাবু ১০ এবং ২০ পু-  
ষিক ও টাক ছয় মাসের মধ্যে সমস্ত।  
বাক্স। যান একাধারে সমস্ত টাক, টাকি  
পাঠান তাহারা এক অর্থ, আধ আনার অর্থ  
মুল্যের ও রম্যের টাকি না প্রেরণ করেন।  
বঙ্গের বিনিময়কাল হইতে সোমপ্রকাশের  
মুদ্রা পাঠাইবেন তাহা বোঃ বৈষ্ণবের করণ  
হেন।  
পূর্কক প্রদত্ত মুল্যের কাল অতীত হইলে মু-  
দ্রা পাঠাইতে কেহ সেন আশুতল বিলম্ব না  
করেন।  
বাক্স, মুল্য দ্বিবার সমস্ত অতীত হই-  
য়া বাইবে, ২০ মাস সমস্ত অতীত করিয়া এ-  
বঙ্গে সোমপ্রকাশে প্রচার করিয়া তাহার  
চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তাহাতে  
কোন উত্তর অথবা মুল্য না পাওয়া যায় কাল  
বঙ্গ হইবে। মুল্যের নিমিত্ত চিঠি প্রেরণ  
পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃত কলেজে  
আমাদিগের নামে চিঠি আইলে আমবা শীঘ্র  
পাইব।  
বাক্স, বঙ্গ সোমপ্রকাশ পরিচালক  
বার ইচ্ছা হইবে চিঠি লিখিয়া মাঝে মাঝে  
তাঁহা প্রেরণ করা হইবে না।  
মকললের বাক্স। সমস্ত হইবেন, ১০  
নিগের খাত দাকমা। লি। ১৩  
কেহ সে প্রাণে গন হই  
মিলে তাঁহা। (ম)।  
দ্বিতীয় বা  
মিলে হই-  
সন বাহ













